श्री महामति प्राणनाथ प्रणीत

# श्री तारतम वानी

★

# श्री कुलजम स्वरूप

श्री प्राणनाथ प्रकाशन
१०ए/१२ शक्तिनगर, दिल्ली ७

प्राप्तिस्थान

१. श्री मणि लाल कुवंर जी
द्वारा लालजी राजा एण्ड सन्स
बाँकुड़ा (पश्चिमी बंगाल)

२. के० के० मेहता, मंत्री
श्री प्राणनाथ प्रकाशन
१०ए/१२ शक्ति नगर
दिल्ली-७



द्वितीय संस्करण २००० प्रतियाँ
न्योच्छावर [illegible]-००

रु. 100/-



श्री बुद्ध जी शाके २९४
विक्रमसंवत २०२९
विजया दसमी
१७ अक्टूबर १९[illegible]२



मुद्रक
प्रकाश चन्द्र मिड्ढा
मिड्ढा प्रेस
८ए, दरियाबाद ( कल्यानी देवी )
इलाहाबाद-३

श्री प्राणनाथाय नमः

# महामति प्राणनाथ प्रणीत

# तारतम बानी

# कुलजम स्वरूप

## परिचय

### ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि (सांस्कृतिक संघर्ष एवं समन्वय) :—

कुलजम स्वरूप (तारतम बानी) के प्रणेता महामति प्राणनाथ (१६१८–१६९४) ई० का अवतरण भारतीय इतिहास के मध्ययुग में उस समय हुआ जिस समय दिल्ली की केन्द्रीय सत्ता औरंगजेब के हाथ में थी। उत्तर पश्चिमी भारत में गुरु गोविन्द सिंह का राजनैतिक और सांस्कृतिक प्रभुत्व था। महाराष्ट्र की बागडोर शिवाजी के हाथ में थी और बुन्देल खन्ड में चंपत रायबुन्देला के पुत्र छत्रसाल हिन्दू राज्य की स्थापना के लिए जी जान से प्रयत्न कर रहे थे। सत्तरहवीं शताब्दी के भारत में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई तीन संस्कृतियों का संघर्ष दिखाई पड़ता है। इनमें भी पहली दो को ही प्रबलता थी। ईसाई सभ्यता का उस समय प्रवेश मात्र हुआ था इस सांस्कृतिक संघर्ष के युगमें तीन प्रकार की चिन्तन धारा हमारे सामने प्रवाहित होती दिखाई पड़ती है। एक तो वे हिन्दू और मुसलमान लोग थे जो अपने कर्मकांड या शरिअत को धर्म या संस्कृति को सर्वे सर्वा मानकर इतर विचारधाराओं तथा सम्प्रदायों को हेय मानते हुए अपने सम्प्रदाय की प्रभुता को दूसरों पर लादने में अपनी श्रेष्ठता समझते थे। अपने रहन-सहन, वेष-भूषा, खान-पान तथा सम्प्रदायों को श्रेष्ठ मानने वाले हिन्दू, मुसलमान और ईसाइयों को मलेच्छ यवन या असुर की संज्ञा देते थे। अपनी संस्कृति की शुद्धता की रक्षा करने के लिए कर्मकांड का किला बना कर अन्ध विश्वासों की चहार दीवारी में बन्द हो गए थे। छुआछूत ऊँचनीच, वेष-भूषा तथा आचार विचारों को ही धर्म मान बैठे थे। दूसरी ओर कर्मकांडी उग्रतावादी मुसलमान हिन्दुओं को बुत परस्त काफिर समझते थे। तलवार की धार से शरिअत पर आधारित 'इसलाम' का प्रचार करते थे। मन्दिरों को तोड़ना, हिन्दुओं को बलात् मुसलमान बनाने में ही 'सवाब' मानते थे। एक धर्म मन्दिर की चहार दीवारी और दूसरा मस्जिद के बुर्ज पर जड़ी भूत हो गया था। धर्म का शरीर तो सक्रिय था उसकी आत्मा मर सी गई थी। आवश्यकता थी कि धर्म की इस रूह को जिंदा (खड़ा) किया जाय। 'वेद' और कतेब' के आन्तरिक (बातिन) अर्थों की व्याख्या करके धर्म को वास्तविक रूप में सामने लाया जाए।

दूसरे धर्म और संस्कृति के चिन्तकों का वह वर्ग था जिसे उदारतावादी धार्मिक कहा जा सकता था। ये लोग कर्मकांड पर अधिक बल न देकर हृदय की शुद्धता और आत्म जागृति पर अधिक बल देते थे। अपने सम्प्रदाय को सर्व श्रेष्ठ मानते हुए भी दूसरे की निन्दा नहीं करते थे। पर धर्म विरोधी नहीं थे। हिन्दुओं के सगुणोपासक राम कृष्ण भक्त इसी वर्ग में आते हैं।

मुसलमानों में भी उदारवादी मुसलमान (सूफी आदि) ईश्वरीय प्रेम (इश्कहकीकी) पर बल देते थे। अपने धर्म पर आस्था रखते हुए, कर्मकांड निभाते हुए भी इतर धर्मों के नियमों का खण्डन नहीं करते थे। उदारवादी होते हुये भी इस इस वर्ग की सीमाएं थीं। एक दूसरे के धर्म ग्रन्थों का पठन और

पूजा स्थलों में जाना उन्हें स्वीकृत नहीं था। परम वैष्णव मन्दिर में कुरान नहीं पढ़ सकता था और न सूफी मस्जिद में गीता, भागवत का पाठ कर सकता था। धर्मों के बीच बनी खाई को पाट कर, शास्त्रीय समन्वय की आवश्यकता थी।

तीसरा वर्ग उन चिन्तकों या धार्मिकों का था जो समन्वय के आधार पर समन्वयात्मक संस्कृति का विकास करते थे। मध्यकालीन भारतीय इतिहास में, भारतीय संस्कृति के समन्वय की साधना महात्मा कबीर से आरम्भ होती है। समन्वय का वह बीज महामति प्राणनाथ के हाथों तक पहुँच कर एक विराट् वृक्ष के रूप में विकसित हुआ जिसकी शीतल छाया में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई एक साथ बैठ कर अपने-अपने धर्म ग्रन्थों से धर्म की हकीकत (मर्म) और मारिफत (पूर्ण पहचान) का मार्ग पा सकते थे।

कबीर, धर्म या संस्कृति की आत्मा तक पहुँचते हैं इसलिए धर्म के शरीर कर्म कांड को ही नहीं धर्म ग्रन्थों को भी निरर्थक मानते थे। साधना की पराकाष्ठा पर होने पर भी उनकी अपनी सीमाएं थीं। दर्शन और उपासना की दृष्टि से हिन्दू मुसलिम एकता का समर्थन करते हुए भी हिन्दू और मुसलमानों के बीच जो शास्त्रीय सिद्धान्तों की दीवार थी उसे वे गिरा न सके। प्राणनाथ भी साधना को पराकाष्ठा पर पहुँचाते हैं। वेद (वेद, उपनिषिद् गीता, भागवत) और कतेब (जंबूर-तौरात, अंजील, कुरान) की दोनों परम्पराओं को नकारने की अपेक्षा दोनों में एक व्यापक समन्वय स्थापित करने का व्यावहारिक प्रयास करते हैं। केवल राम-रहीम, हिन्दू-मुसलिम एकता की बात न करके गम्भीर शास्त्रीय ज्ञान तथा आध्यात्मिक अनुभूति के आधार पर केवल दार्शनिक (Philosophical) ही नहीं अपितु धार्मिक (Theological) एकता स्थापित करने का निश्चित सुझाव[1] देते हैं। तारतम ज्ञान के आधार पर वे हिन्दुओं की देव मन्डली और मुसलमानों के फिरिश्तों के गिरोह को एक सिद्ध करते हैं। वेद और कतेब के कथानकों में समानता दर्शाते हैं। इन्हीं की अनुपम देन को अपनी मां (श्रीमती पुतली बाई) के द्वारा प्राप्त करके जाने-अनजाने महात्मा गांधी ने आधुनिक भारत के लिए धर्म संस्कृति और आचार विचारों का समन्वयात्मक मार्ग[2] प्रशस्त किया।

कबीर राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रथम संत कवि हैं। उन्होंने संस्कृत की तुलना में हिन्दी का जोरदार समर्थन किया "संस्कृत है कूप जल भाषा बहता नीर" उन्होंने सामान्य लोगों की बोल चाल की भाषा में 'वाणी' कही।

गुजरात निवासी होते हुए भी महामति की अधिकतर वाणी खड़ी बोली पर आधारित हिन्दी या 'हिन्दुस्तानी' भाषा में अवतरित हुई। हिन्दुस्तानी को सहज रूप में धर्म प्रचार का माध्यम और राष्ट्र भाषा के रूप में स्वीकार करते हुए उन्होंने कहा :—

सबको प्यारी अपनी, जो है कुल की भाख।
अब कहूँ मैं किनकी, यामें तो भाषा कै लाख॥
बोली जुदी सबन की, और सबका जुदा चलन।
सब उरझे नाम जुदे धर, पर मेरे तो कहना सबन॥
बिना हिसाबें बोलियां, मिने सकल जहान।
सब को सुगम जान के, कहूँगी हिन्दुस्तान॥
बड़ी भाषा एही भली, जो सब में जाहेर।
करने पाक सबन को, अन्तर माहें बाहेर॥

सनंध प्र० २

---

१. देखिए "तारतम वाणी खुलासा किताबें में दो नामा"।

२. "महात्मा गांधी" प्रारम्भिक जीवन, प्रखंड, भाग दो, अध्याय ९, पृष्ठ २१३

हिन्दी-हिन्दुस्तानी की इसो व्यापकता, सुगमता और सर्वबोध गम्यता के कारण ही महात्मा गांधी ने इसे राष्ट्र भाषा और राज भाषा के लिए उपयुक्त समझा। इस प्रकार धर्म समन्वय, साहित्य, समाज सुधार, भाषा, राजनीति सभी दृष्टियों से महामति का अपूर्व महत्व है। सांस्कृतिक समन्वय के पथ में कबीर से आगे और महात्मा गांधी के मार्ग निर्देशक हैं।

## महामति प्राणनाथ

### जीवन वृत्त :—

महामति प्राणनाथ के लौकिक जीवन के सम्बन्ध में भारतीय इतिहास तथा हिन्दी साहित्य के इतिहास के लेखक मौन रहे हैं। महामति प्राणनाथ और छत्रसाल के सम्बन्ध में छत्रसाल के दरबारी कवि गोरे लाल रचित छत्र प्रकाश द्वारा यत् किंचित प्रकाश पड़ता है जिससे इतना ही सिद्ध हो जाता है कि महामति प्राणनाथ छत्रसाल के राजगुरु आध्यात्मिक जीवन के प्रेरक थे। छत्रसाल की राज्य शक्ति, धन शक्ति, या लोक शक्ति देने का श्रेय महामति प्राणनाथ को ही है। किन्तु छत्रसाल और महामति प्राणनाथ के मिलन के पूर्व का इतिहास प्रणामी धर्म की "बीतकों" में लिखा होने पर भी साहित्यिक वर्ग और इतिहास लेखकों को आंखो से ओझल है। इतिहास लेखकों ने इनका परिचय औरंगजेब के युग में होने वाले एक संत के रूप में कुछ ही पंक्तियों में दिया है जिससे विदित होता है कि प्राणनाथ छत्रसाल के पास रहते थे। ग्राऊज महोदय ने प्रणामी सम्प्रदाय को भारत का एक उपेक्षित सम्प्रदाय (नेग्लेक्टेड सेक्ट इन इण्डिया) कह कर इसका संक्षिप्त परिचय दिया है। वे इस बात पर आश्चर्य प्रकट करते हैं कि भारतीय धर्मों और सम्प्रदायों के इतिहास लेखकों ने प्रणामी सम्प्रदाय जैसे प्रगतिशील सम्प्रदाय को भुला क्यों दिया। समन्वयात्मक भारतीय संस्कृति के इतिहास में महामति का योगदान अमिट अक्षरों में अंकित होना चाहिये। आवश्यकता है भारतीय इतिहास लेखक प्रणामी साहित्य के प्रामाणिक स्रोतों का आधार लेकर महामति प्राणनाथ को इतिहास में उचित स्थान दें।

हिन्दी साहित्य लेखकों को भी महामति प्राणनाथ का परिचय नहीं मिल पाया। नागरी प्रचारणी सभा की खोज रिपोर्ट में इनका कुछ विवरण मिलता है किन्तु वह प्रणामी साहित्य के आधार पर नहीं केवल अनुमान और जन श्रुति के आधार पर ही लिखा गया है।

प्रणामी मन्दिरों में महामति प्राणनाथ के विषय में लिखे प्रमाणित जीवन के वृत्तों को प्रतिवर्ष पढ़ने की परम्परा प्रचलित है परन्तु वे जीवन वृत (बीतकें) भी साहित्यकारों द्वारा अनदेखे ही रह गए।

गत १५ वर्षों से प्रणाली साहित्य शोध प्रकाशन का कार्य हुआ है जिसमें प्रणामी तथा इतर विद्वानों का सहयोग रहा है।

### जन्म तिथि अवतरण जन्म स्थान :—

महामति प्राणनाथ का जन्म जामनगर (गुजरात) में वि० सं० १६७५, आश्विन कृष्ण चतुर्दशी रविवार प्रथम प्रहर के शुभ मुहूर्त में हुआ था। इनके पिता श्री केशव ठाकुर लोहाड़ा जाति के क्षत्रिय थे। अपने समय में जामनगर राज्य के प्रधान मन्त्री थे। माता का नाम धनबाई था जिनके माता पिता सिन्ध प्रदेश के थे। दोनों शिक्षित तथा उच्च संभ्रान्त कुल में थे। इनके तीन भाई और थे। इनकी बाल्यावस्था का नाम मिहिरराज या मेहराज ठाकुर था। धर्म में दीक्षित होने के पश्चात् उनकी आत्मा का नाम 'इन्द्रावती' परखा गया। मेहराज के नाम से कुछ ही पद मिलते हैं। इनकी आरम्भिक वाणी में कलश तक 'इन्द्रावती' का नाम है। मध्यकालीन और उत्तर कालीन जीवन में महामति के नाम

की छाप है। महामति "परमात्मा की महान बुद्धि" का प्रतीक है। परमात्मा की पंच शक्तियों से प्रेरित वाणी का अवतरण होने से मेहराज ठाकुर और इन्द्रावती का व्यक्तित्व महामति में विलीन हो गया। महामति के समकालीन प्रवीण शिष्य लक्ष्मण सेठ "लाल दास" जी कृत बीतक के प्रकरणों के अन्त में कहे "श्री महामति" की ही छाप है। ग्रन्थकार स्वयं शोभा न लेकर महामति की प्रेरणा उनके नाम को ही महत्व देते थे। परमात्मा की शक्तियों का अवतरण इनके स्वरूप में जान कर इनके शिष्यों ने इन्हें प्राणनाथ कहा। प्राणनाथ नाम इतना प्रचलित हुआ कि इनका जन्म का नाम गौण हो गया। प्रणामी समाज या इतर इतिहासकार अथवा विद्वानों में इनका नाम 'प्राणनाथ' ही जाना जाता है।

वास्तव में 'प्राणनाथ' एक उपाधि या सर्वे सर्वा परमात्मा के स्वरूप के लिए ही प्रयुक्त हुआ। श्री देवचन्द्र जी ने परमात्मा श्री कृष्ण को पति रूप में पहचान कर प्राणनाथ कहा। श्री मेहराज ठाकुर ने श्री देवचन्द्र जी को प्राणनाथ कह कर सम्बोधित किया और 'सुन्दर साथ' के लिए मेहराज ठाकुर 'प्राणनाथ' बन गये। इस प्रकार "महामति प्राणनाथ" एक ऐतिहासिक उपाधि है जो इनके लिए सर्वथा उपयुक्त है।

## दीक्षा :—

बारह वर्ष की आयु में वि० सं० १६८७ में मेहराज ने श्री निजानन्द सम्प्रदाय (जो कालान्तर में प्रणामी सम्प्रदाय के नाम से प्रसिद्ध हुआ) के प्रवर्तक श्री देवचन्द्र जी से दीक्षा ली। दीक्षा के पश्चात् श्री मेहराज अपने सत्गुरु के परम प्रिय शिष्य और अनन्य भक्त बन गये। वे उनके इतने निकट आ गए कि श्री देवचन्द्र जी ने अपने चालीस वर्ष की कठोर तपस्या, लगन और साधना से अर्जित अध्यात्म ज्ञान और अपने अनुभव का सार उन्हें सौंप दिया। श्री देवचन्द्र जी के औरस पुत्र विहारी जी उनके लिए गौण हो गए। अपने धाम गमन के समय उन्होंने मेहराज को बुला कर धर्म प्रचार का कार्य भार सौंप दिया और स्वयं अपनी समस्त शक्तियों सहित उनके मन में विराजमान हुए। उन्हें छोड़कर उनकी आत्मा परमधाम नहीं जा सकी।

## विदेश यात्रा :—

सद्‌गुरु श्री देव चन्द्र जी की आज्ञा से कार्यवस मेहराज ठाकुर सं० १७०३ में चालीस दिन की जलपोत की यात्रा करके अरब देश में गए। वहां उन्हें पांच वर्ष रहना पड़ा। वहां प्रचलित भाषा रीत रिवाज तथा धर्म का उन्हें अच्छा परिचय मिल गया। वहां के तत्कालीन सुलतान शेख सल्ला से भी वे मिले। महामति ने अरब में बसे भारतीयों को धर्म का परिचय कराया और वहां के मुसलमानों से भी धर्म चर्चा का अवसर उन्हें मिला। विदेश से लौटने पर सं० १७१० से ३५ वर्ष की आयु में आप घरोल राजा के प्रधान मन्त्री बने। वहां कल्ला जी नामक राजा राज्य करता था। दो वर्ष आठ माह उपरान्त सद्‌गुरु के आह्वान पर आपने मन्त्री पद से मुक्ति ले ली। पुनः श्री देवचन्द्र जी के परमधाम गमन के पश्चात् आपने अपने पिता के स्थान पर जामनगर का प्रधान मन्त्री पद स्वीकार किया। राज्य संचालन तथा धर्म प्रचार दोनों कार्य साथ-साथ करते रहे।

## बंदी गृह यात्रा :—

अपने जीवन में आपको जेल की यातनाएँ भी सहनी पड़ीं। जामनगर के राजा ने चुगलखोरों की बात पर विश्वास करके, कि मेहराज ठाकुर राज्य कोष का रुपया धर्म प्रचार पर लगा रहे हैं, उनको नजर बन्द कर दिया। अरबी भाषा में जेल को 'हब्सा' कहा गया। वहां महामति को सद्‌गुरु और सुन्दर

साथ से अलग रहना पड़ा। तथा निरपराध जेल में जाने के दुःख से आत्मा संसार से विरक्त होकर अन्तर्मुखी हो गई। विरह की ज्वाला में मन निर्मल हुआ और अक्षरातीत परमात्मा तथा उनकी अर्द्धांगी आनन्द अंग श्यामा का स्वरूप देखा। वहीं हब्सा में 'श्री मुख से 'तारत्तम बानी' का अवतरण प्रारम्भ हो गया। "हब्सा" को "बीतक" में 'प्रबोध पुरी" कहा गया। सर्व प्रथम इनके छोटे भाई (ऊधव) ने जो इनके साथ ही नजर बन्द किए गए थे बानी को कोयले से दीवारों पर लिखा। इनकी जोश पूर्ण, विरह और भावनाओं से पूर्ण बानी को सुन कर 'रानियों ने' इनके लिए कागज कलम तथा अन्य सुख सुविधा के साधन जुटा दिए। जाम राजा युद्ध के लिए चले गए थे। वापिस लौट कर मेहराज को पहचान कर उन्होंने उन्हें सादर मुक्त कर दिया।

## स्वतंत्र धर्म प्रचार :—

श्री देवचन्द्रजी की गद्दी पर स्वयं मेहराज ठाकुर ने बिहारी जी को बिठाया। बिहारी जी संकीर्ण भावनओं के रूढ़िवादी हिन्दू थे। उनके कठोर और कटु स्वभाव के कारण मेहराज ठाकुर अपने उन्मुक्त विचारों का प्रचार न कर पा रहे थे। अछूत नीच जातियों, विधवा स्त्रियों को दीक्षित न किया जाय, तथा सब को दीक्षा देने का अधिकार नहीं है बिहारी जी का ऐसा मत था, विवाद बढ़ा और मेहराज ठाकुर ने बिहारी जी से अलग रह कर अपने सद्गुरु के ज्ञान प्रचार को जीवन का लक्ष्य बना लिया। सूरत में मेहराज ठाकुर" को गद्दी पर बिठा कर इन्हें 'प्राणनाथ' कहा गया। यहीं 'प्राणनाथ' ने जाति पांति, स्त्री पुरुष, राजा रंक का भेद भाव मिटा कर विश्व में एक धर्म स्थापना का संकल्प लिया।

सैकड़ों साथियों को लेकर आप सारे देश की धर्म प्रचार यात्रा पर निकल पड़े। आवागमन के साधनों का अभाव था। पैदल या जो भी सवारी मिली महामति अनेक कष्टों को सहन करके भी जन जागरण का उपाय करते रहे। वे धर्म के नाम पर प्रचलित कुरीतियों को मिटा कर सत्य धर्म का मार्ग प्रस्तुत कर रहे थे। राजस्थान के नगरों में घूमते हुए मेरता में एक दिन मुल्ला की अजान सुनी :—

"ला इल्लाह इलिल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" सुनकर अचानक उनके हृदय में प्रकाश हुआ कि 'मुहम्मद' क्षर अक्षर मे परे अक्षरातीत का संदेश देने वाले हैं। वे तो हमारे ही घर की बात करते हैं। बस वहीं से महामति के मन में धर्म समन्वय का विचार दृढ़ हो गया। धर्म के नाम पर युद्ध न हो धर्म की हकीकत को लोग समझें इसी बात के प्रचार के लिए वे दृढ़ता से आगे बढ़े।

## दिल्ली में धार्मिक सत्याग्रह :—

महामति प्राणनाथ मथुरा से आगरा होते हुए औरंगजेब से मिलने के लिये दिल्ली आये शिष्यों (सुन्दर साथ) की एक बड़ी जमात उनके साथ थी। यहाँ कुरान का अर्थ स्पष्ट करने के लिए और धर्म के नाम प्रचलित रूढ़ियों और कुरीतियों का निराकरण कर मुसलिम धर्म का वास्तविक स्वरूप समझाने वाली बानी सनंध के रूप में अवतरित हुई। हिन्दी बानी को फारसी लिपि में तैयार करवा कर पांच पत्र (रुक्के) औरंगजेब के बड़े राज कर्मचारियों के पास भेजे। शेख इसलाम प्रधान मन्त्री, शेख निजाम औरंगजेब का उस्ताद, आकल खां और रिजवी खान काजी और सिद्दी पोलाद नगर कोतवाल था। इनके पास महामति के शिष्यों ने संदेश पहुँचाया श्री प्राणनाथ के दस हिन्दू और दो मुसलमान शिष्यों ने उसे निमाज के लिये जाते हुये बानी सुनाई और महामति का संदेश दिया। इमाम मेहदी का नाम सुनकर इनके नूर भरे मुख को देखकर और हकीकत का ज्ञान सुनकर औरंगजेब चौका परन्तु उसके राज कर्मचारियों ने हिन्दुओं की एक चाल कह कर उसे शंका में डाल दिया। तो भी उसने इन "मोमिनों" को २ माह नजर बन्दी के पश्चात् १०० दिरम राह का खर्च देकर सादर विदा किया।

## हरिद्वार कुम्भः—

दिल्ली निवास करते हुए प्राणनाथ जी ने संवत् १७२५ के कुम्भ मेला के अवसर पर हरिद्वार की यात्रा की। वहाँ लगभग सभी सम्प्रदाय के विद्वानों से उनका शास्त्रार्थ हुआ। उन लोगों ने इनके ज्ञान और सत्य धर्म के सिद्धान्त को सुनकर एक मत से "विजियाभिनंद निष्कलंक बुद्ध" अवतार स्वीकार किया।

## राजस्थान से पन्ना :—

औरंगजेब की धर्मान्ध कट्टर नीति से निराश होकर आपके मन में समस्त हिन्दू राजाओं को मिलाने की महती आकांक्षा जाग उठी। पीड़ित हिन्दू वर्ग को एक सूत्र में पिरो कर वे अन्यायी सम्राट् की सत्ता को भंग करना चाहते थे। एक ही स्तर पर दोनों जातियों को लाकर उन्हें सत्य धर्म ज्ञान से एक सूत्र में पिरोने का स्वप्न उन्होंने देखा। सं० १७३६ में पन्ना में छत्रसाल उन्हे मिले। इनकी प्रेरणा, और प्रोत्साहन से छत्रसाल ने अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त की। उन्हें राजगुरू के पद पर आसीन किया। महामति ने उन्हें तलवार भेंट करके आशीर्वाद दिया और उनकी शारीरिक, आत्मिक शक्ति को बढ़ा कर, पन्ना में हीरा का वरदान देकर उन्हें महाराजा बना दिया। अब तक महामति के साथ पांच हजार शिष्यों का समुदाय था जो अपने वर्ग और जातीय भेद भाव को भूल कर 'धामी' कहलाने लगे। महाराजा छत्रसाल ने महामति के वचनों को जीवन में अक्षरशः उतारी। एक ओर तो वे आततायी सम्राट् से युद्ध करते रहे दूसरी ओर प्रजा के लिये धर्म समन्वय पारस्परिक ऐक्य और शान्ति पूर्वक प्रेममय जीवन व्यतीत करने का वातावरण बनाते रहे। स्वयं महामति बीच में विराजमान रहते श्री केशव दास और श्री लालदास जी दोनों ओर क्रमसे भागवत और कुरान लेकर बैठते। महामति नित्य प्रति चर्चा में दोनों धर्म वालों के सिद्धान्तों का मिलान करके धर्म के सत्य के रूप की पहचान कराते थे। कथनी और करनी का इतना महान समन्वय, विशेष रूप से सर्व धर्म समन्वय की दृष्टि से मध्यकालीन इतिहास की अद्वितीय घटना है।

## परमधाम गमन :—

पन्ना में ही ७५ वर्ष ४ माह २० दिन की आयु में सम्वत् १७५१ (१६६४ ई०) में श्रावण कृष्ण चौथ शुक्रवार के दिन महामति प्राणनाथ ने अपने नश्वर कलेवर का त्याग किया। उनकी आत्मा आज भी उनकी बानी के माध्यम से जन जागरण, मोक्ष और विश्व शान्ति का संदेश दे रही है।

## बानी प्रतिष्ठा :—

उनके धाम गमन के उपरान्त उनके शिष्यों ने उनकी गद्दी पर वि० सं० १७५१ श्रावण कृष्णा पंचमी के दिवस 'कुलजम' स्वरूप को उनका स्वरूप मान कर अभिषिक्त किया। तब से आज तक 'श्री मुख बानी' को उनका स्वरूप मान कर प्रणामी मन्दिरों में उसकी पूजा को जाती है। सिंहासन में तारत्तम बानी का ही 'प्रकाश' होता है।

उनके बाद श्री लालदास, श्री मुकुन्द दास जी महाराज छत्रसाल जी तथा अन्य प्रवीण शिष्यों ने उनके अनुपम सिद्धान्तों का प्रचार किया। उन्हीं के प्रयासों के फल स्वरूप आज लगभग सभी प्रान्तों के छोटे बड़े नगरों प्रणामी मन्दिर बन गए हैं। 'सुन्दर साथ' उनकी बानी का नित्य पाठ करते हैं।

## महामति प्राणनाथ का दर्शन, चिन्तन— क्षर-अक्षर, अक्षरातीत :—

महामति प्राणनाथ ने पूर्ण ब्रह्म अक्षरातीत सच्चिदानंद उत्तम पुरुष को ही एक मात्र सर्वोपरि परम सत्ता (पुरुष) स्वीकार किया है। लीला भेद से उसके तीन स्वरूप माने हैं। इस सिद्धान्त के लिए

उन्होंने गीता और भागवत को प्रमाण के रूप में स्वीकार किया है। अक्षरातीत, अक्षर और क्षर तीन पुरुष हैं। अक्षरातीत अनादि अखंड चेतन स्वरूप है। उनके आनन्द अंग से ब्रह्म आत्माओं और तेज से परमधाम का प्रकाश है। अक्षर पुरुष अनादि पुरुष के सत अंग हैं। इनके नूर से ईश्वरीय सृष्टि का विकास है। क्षर पुरुष नारायण की माया से नश्वर ब्रह्मांड और जीव सृष्टि की रचना होती है। अक्षरातीत ब्रह्म और अक्षर ब्रह्म अनादि, अविनाशी, अखंड स्वरूप हैं। क्षर-पुरुष (विराट) महाप्रलय के समय अक्षर ब्रह्म की मूल प्रकृति में विलीन हो जाता है।

कुरान के सिद्धान्त को स्वीकार करते हुए महामति •ने पांच प्रकार की उत्पत्ति भी स्वीकार की है। ब्रह्मात्माएं उनके अंग से प्रकटी हैं देवों या फिरिश्तों की सृष्टि नूर से हुई। संसार में उत्पन्न तीन तरह की पैदाइश हैं। उन्चजीव को खुदा ने दो हाथों से बनाया, मध्यम एक हाथ से और निकृष्ट 'कुन' 'होजा' कहने से अर्थात् माया से उत्पन्न हुए। प्रथम प्रकार के जीवों में ब्रह्मात्माओं का और दूसरी तरह के जीवों में ईश्वरीय सृष्टि का अवतरण हुआ। ब्रह्म सृष्टि परमात्मा के प्रेम में मग्न है। ईश्वरीय सृष्टि उपासना, ज्ञान और सयंम से पूर्ण जीवन व्यतीत करती है। माया के दास जीव अपने कर्मों के फलस्वरूप जन्म मरण के चक्करों मे फिरते हैं। ब्रह्म सृष्टि परमधाम की स्वामिनी है। ईश्वरीय सृष्टि का घर अक्षर धाम हैं। जीव सृष्टि ब्रह्म सृष्टि के समान प्रेम करके या ईश्वरीय सृष्टि की तरह संयम पूर्ण जीवन से बहिश्तों में मुक्त सुख प्राप्त करती है।

## सृष्टि रचना का कारण:—

संसार क्यों बना, इसमें इतना आकर्षण और विविधता क्यों है—इसके विषय में महामति के बड़े मौलिक, तर्क पूर्ण और हृदयग्राही हैं। प्रकाश ग्रन्थ की प्रकटबानी में इन्हें स्पष्ट किया गया है। जब क्षर ब्रह्मांड की रचना नहीं हुई थी तो अविनाशी लोक परमधाम में अक्षरातीत परमात्मा अपनी आनंद अंग श्यामा और उनकी बारह हजार कलाओं (अंगी आत्माओं) के साथ आनंद लीला में मग्न थे। उनके सत्य स्वरूप अक्षर ब्रह्म अपने विज्ञान और कल्पना के बल पर अनेकों ब्रह्मांडों की रचना करके मिटा देते थे। इन दोनों को एक दूसरे की लीला का परिचय दिलाने के लिए इस अद्भुत अनुपम विश्व की रचना की गई। ब्रह्मात्माओं ने काल माया रचित बृज भूमि मे गोपी-कृष्ण के रूप में तथा योग माया द्वारा निर्मित रास लीला के ब्रह्मांड में प्रेम की पराकाष्ठा में अनन्त मिलन का आनन्द अनुभव किया। दुःखमय विश्व को देखने की चाह से तृतीय बार फिर घोर कलिकाल में काल माया के ब्रह्मांड में उनका अवतरण हुआ। यहां वे इकट्ठी किसी एक प्रदेश में नहीं सभी वर्णों सभी देशों तथा सभी धर्मो में अवतरित हुई, श्यामा श्री देवचन्द्र जी में प्रकटीं। उनके और महामति के जीवन के विषय में प्रकाश डाला जा चुका है। परमधाम में सदैव आनंद, पूर्ण प्रेम और चैतन्य का अनुभव रहता है, वहां सत्य है। दुःख, विचारों, जड़ता और झूठ से पूर्ण यह विश्व एक नई और आकर्षक वस्तु थी। इसमें ब्रह्मात्मायें अपना वास्तविक स्वरूप परमात्मा और परमधाम को सर्वथा भूल गईं। संसार से उन्हे लगाव हो गया, वे साधारण जीवों की तरह दुनियां में व्यवहार करने लगीं। परमात्मा श्री कृष्ण ने श्री देवचन्द्र जी को दर्शन देकर उन्हें तारत्तम मंत्र तथा अपना परिचय दिया। उनकी आत्मा का स्वरूप बताया और अन्य आत्माओं को जगा कर परमधाम लौटा लाने की प्रेरणा दी।

## परमधाम सिद्धांत :—

शास्त्रों में बैकुन्ठ और गोलोक धाम का मधुर वर्णन है। बैकुन्ठ धाम अक्षर ब्रह्म की महा प्रलय में मूल प्रकृति में समा जायेगा। गोलोकधाम बेहद भूमिका हैं। उसके भी पार अक्षर और अक्षरातीत के धाम परधाम का महामति ने अपने परिक्रमा ग्रन्थ में इतना सुन्दर वर्णन दिया है कि पढ़ने मात्र से एक

सुन्दर लोक का बुद्धि में चित्रण हो जाता है । आत्मा एक अपूर्व अनुभूति में खो जाती है, मन नश्वर और सीमित का मोह छोड़ अविनाशी असीम में छलांग भरता है । संसार के सुन्दरतम दृश्य फीके और परम ऐश्वर्य के साधन नीरस जान पड़ते हैं । आत्मा परमात्मा से मिलने और अपने परम धाम को पा लेने के लिए मचल उठती है ।

परमधाम असीम है सीमा में बाँध कर शब्दों में वर्णन करना कठिन है । तो भी चिन्तन और मनन के लिए उसे सांसारिक वस्तुओं के उदाहरण देकर जन साधारण की भाषा में कह देना पड़ा । कहने को उसका पच्चीस खंडों में वर्णन किया है परन्तु प्रत्येक खंड विशालता में स्वयं एक लोक है । 'नूर' तत्व से प्रकट प्रत्येक वस्तु नूर मयी शीतलता सुगन्धि और नरमाई के गुणों से पूर्ण है महामति की परिक्रमा किताब प्रणामी सम्प्रदाय में प्रचलित श्री लाल दास तथा श्री जुगल दास की वृत्त में परमधाम का विशद वर्णन है ।

**परमात्मा का स्वरूप :—**

महामति ने परमात्मा को किशोर गौर स्वरूप माना तथा ब्रह्म सृष्टि की आयु भी किशोरावस्था की बताई । इसके लिए इन्होंने वेद, कुरान, बाइबिल की गवाही भी दी ।

"सब एक नूर का अर्श" कह कर उन्होंने परमात्मा के उस 'वाहैद' 'अद्वैत' स्वरूप का परिचय दिया जिसके अंग ब्रह्म सृष्टि और प्रकटी करण 'जहूर' परमधाम है । प्रेम लक्षणा भक्ति द्वारा जीवन्मुक्त की अवस्था पूर्ण पहचान (मारिफत) की सर्वोच्च मंजिल को पाने का सहज सुलभ मार्ग दर्शाया । भागवत, कुरान (देवी देवता-फरिश्ते कथानक) ।

हिन्दू धर्म ग्रन्थों में अंतिम भागवत और कतेब में अन्तिम कुरान है । दोनों के अवतरण काल में बहुत थोड़ा अन्तर है । इन दोनों में पहले अवतरित ग्रन्थों का सार है । देवी देवताओं और फिरिश्तों का वर्णन है । कुछ एक कथानक हैं जिनमें सृष्टि उत्पत्ति तथा प्रलय सम्बन्धी वर्णन हैं । महामति ने अपने 'खुलासा' ग्रन्थ के दो नामा के प्रकरणों में उन कथानको में समानता बताई है । देवी देवताओं और फिरिस्तों के दोनों भाषाओं में नामों की लंबी तालिका बना दी है । इस प्रकार इन्होंने स्पष्ट कर दिया कि परमात्मा एक है । धर्म एक है । संसार का संचालन करने वाले देवी देवता और फिरिश्ते एक सी शक्तियों के अलग भाषा में नाम हैं । वृज और रास लीला का वर्णन संकेतों में है तथा अन्तिम अवतार बुद्ध निष्कलंक इमाम मेहदी के विषय में भविष्य वाणियां की हैं जो कि महामति के अवतरण से सत्य सिद्ध हुईं ।

**वेद-कतेब, कर्मकांड —**

महामति की बानी वेद और कतेब के ज्ञान मन्दिर का कलश है । वेद और कतेब दोनों में धर्म के दश मूल-अधार भूत नियमों की ओर संकेत करते हुए उच्च मानव की तरह संसार में जीने की कला सिखाई गई है । महामति ने कहा "विभिन्न प्रकार के कर्मकांड अलग देश काल और भाषा के कारण अलग प्रतीत होते हैं । वास्तव में उनमें विशेष अन्तर नहीं ।" कालान्तर से उनमें कुछ शिथिलता और बुराइयाँ घुस आती हैं उन्हें दूर करने के लिए महामति ने तलवार की तरह कठोर शब्दों का व्यवहार किया (दे० कीर्तन "हो भाई मेरे" और सनंध "खंडनी जाहेरियों" की) उन्होंने धर्म के मूल भूत नियमों का मर्म बताया । कर्म कांड से ऊपर उठ कर ज्ञान की हकीकत को जीवन में लाकर मारिफत द्वारा मुक्त होने का उपाय सुझाया ।

**कियामत की अभिनव व्याख्या :—**

कियामत का अर्थ साधारण तथा प्रलय या संसार का नाश ही लिया जाता है । कियाम शब्द का अर्थ खड़े होना (प्रार्थना के लिए) है । महामति ने नश्वर का मोह त्याग कर आत्मा का जाग जाना ही

रूहानी कियामत कहा है । कियामत के सात निशानों का स्पष्टीकरण करते हुए बातिनी (अभिप्रेत) अर्थ बताया है । इनका संक्षिप्त परिचय परिशिष्ट में दिया है । महामति के मारफत सागर ग्रन्थ में कियामत के सात निशानों की हकीकत जानकर आत्म जागृति के लिए 'मारफत' (पूर्णपहचान) से परमात्मा के चरणों में जीवन समर्पित कर देने का उपाय बताया है । नश्वर शरीर रूपी कबर में मृतक समान सोई आत्मा जाग जाती है तब ही उसकी कियामत हो जाती है । संसार उसकी नजर में नहीं रहता वह कीचड़ में उगे कमल की तरह शुद्ध पाक रहती हुई परमात्मा की ओर उन्मुख हो जाती है । संसार के लोगों के गुण अंग इन्द्रिय उन्हें गर्त में ढकेलने वाले होते हैं मोमिनों (जागृत आत्माओं) के "पांच पच्चीसों पाक" होते हैं । पांच तत्व पच्चीस गुण सब परमात्मा की राह में साधन और सहायक बन जाते हैं । कियामत के समय के विषय में कुरान के सूरा अलफज्र, सूरा अल बुरुज आदि में दिये संकेतों से प्रमाणित करते हुए दसवीं, ग्यारहवीं और बारहवीं सदी मुहम्मदी को बताया है । उनके जीवन काल में ब्रह्म सृष्टि की कियामत (जागनी) हो गई । ईश्वरीय सृष्टि भी मारिफत के दर्जे को पहुँची । जीव सृष्टि के लिए 'तारतम बानी' मार्ग प्रशस्त करती रहेगी ।

## महामति की साधना पद्धति :—

महामति प्राणनाथ ने साधना पथ पर चलते हुए शरीर को कष्ट देने का निषेध किया है । व्रत, उपवास, त्याग, तपस्या और समस्त साधनाओं का उद्देश्य मन को शुद्ध, शान्त और एकाग्र करके परमात्मा के चिन्तन में लगाना है । यह सब कर लेने पर भी प्रायः मन एकाग्र नहीं हो पाता—हाँ कष्टों को सहन करते हुए शरीर अवश्य दुर्बल हो जाता है । महामति ने अपने प्रकाश ग्रन्थ के 'गुण फिराए हैं' के प्रकरण में सभी गुण अंग इन्द्रियों को विवेक से जागृत करके, सत्य आनन्द की पहचान करवा कर परमात्मा की ओर लगाने का बड़ा सुन्दर सुझाव दिया है । जिन्हें अवगुण कहा गया उन लोभ-लालच-मोह, तृष्णा, काम क्रोध आदि को भी महान शक्तियों के रूप में स्वीकार किया । इन्हें साध कर मन को एकाग्र करके चिन्तन में सहायक बनाने की प्रेरणा दी । महाराजा छत्रसाल, विद्वान स्वामी लालदास और नवरंग स्वामी तथा समाज के हर स्तर के मनुष्यों को अपने-अपने कार्यों और कर्त्तव्यों को करते हुए जीवन को धर्ममय बना कर मन को परमात्मा का "अर्श" बना लेने का आदेश दिया । "परमात्मा के लिए प्रेम उत्पन्न हो आपको वही उपाय बताती हूँ" :—

"इश्क जिन बिध उपजे, मैं सोई देऊँ जिन्स ।
तब इश्क आया जानियो, जब इन रंग लागा रस ॥
ताके पलपल में ढिग होइये, सुख लीजे जोश इश्क ।
तब तब देह दुःख उड़सी, संग तज मुनाफक ॥
एह बल जब तुम किया, तब अलबत बल सुखधाम ।
अरस परस जब यों हुआ, सुख देवें श्यामा श्याम ॥
खिन खिन में सुख होयसी, धनी याद किए असल ।
ए सुख आए इश्क, बेर नहीं एक पल ॥

परमात्मा का प्रेम आ जाने से मन उनका मन्दिर बन जाता है । उठते-बैठते, चलते-फिरते, खाते-पीते मन उन्हीं के चरणों में रमण करता है । मन अर्श बन जाए तो कहीं जाना नहीं होता । जीवन रहे या न रहे फिर कोई अन्तर नहीं पड़ता ।

इस अवस्था को प्राप्त करने के लिए नियमित, संयमित और संतुलित जीवन जीने की आवश्य-कता तो रहती है परन्तु तपस्या से शरीर सुखाने का उन्होंने निषेध किया है :—

"जिन दे आल आकार को, धनी मिलना अंग इन ।
दौड़ चढ़ पहाड़ झांप खा, कायर होवे जिन ।।"

कलश के जागनी के प्रकरण में अपने साथियों को शुद्ध करने के लिए अपूर्व ढंग खोजा है :—

"गालूँ ताओ दिए बिना, करूँ सो रस कंचन ।
पूर चलाऊँ प्रेम के, ज्यों दोऊ पेर करूँ धनधन ।।"

## अनन्य प्रेम लक्षणा माधुर्य भाव भक्ति :—

संसार में व्यक्ति का परिचय सम्बन्ध सापेक्ष है । परमात्मा की भक्ति, उपासना करने के लिए भी कोई न कोई सम्बन्ध जोड़ लिया जाता है । भक्ति नौ प्रकार की मानी गई । श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य और आत्म निवेदन । गोपी कृष्ण प्रेम, माधुर्य, (सखी भाव) की भक्ति संसार में सर्वोत्कृष्ट स्वीकार की गई । कृष्ण प्रियतम को पूर्ण प्रेम से रिझाना यही माधुर्य भाव है । संसार के सभी सम्बन्धों में कुछ अन्तर रह जाता है—पति-पत्नी के रूप में ही एकात्म भाव जागृत होता है । पति के लिए सर्वस्व अर्पण करके, अनन्य भाव से प्रियतम में खो जाना ही स्त्री की सार्थकता और धन्यता है । महामति ने भी अक्षरातीत परमात्मा को पति रूप में मान कर उसकी अर्द्धांगी के रूप में उनमें अपना अस्तित्व मिटा दिया । यही माधुर्य भाव प्रधान, प्रेम लक्षणा—दशधा भक्ति है ।

"पुरुष पणे ए निध न आवे-अबला पणे लीजे अंग ।"

और

"पुरुष नहीं या बिन कोई दूजा ।"

परमात्मा ही एक मात्र सत्ता 'पुरुष' हैं । ब्रह्म आत्माएँ उनकी अर्द्धांगी श्यामा की कलाएँ अंग हैं जो पूर्ण ब्रह्म को रिझाने के लिए नित्य आयोजन करती हैं—और श्री कृष्ण प्रियतम उनके आनन्द को बढ़ाने के लिए नित्य नवीन लीला रचाते हैं । इस ब्रह्मांड की रचना भी इसी प्रयोजन से हुई । परमात्मा से सम्बन्ध जोड़ना ही है तो परम गोपनीयता और अति निकटता का सम्बन्ध ही उसके आनन्द की पूर्ण अनुभूति के अनुरूप हो सकता है । पिंड (शरीर) और ब्रह्मांड (नश्वर संसार) को भूलकर, इनसे ऊपर उठकर अवि-नाशी से सम्बन्ध जोड़ा जाता है :—

"दोस्त कहूँ हकबका को, धर ऐसा झूठा तन ।"

नश्वर का अविनाशी से नाता जुड़ता है तो परमात्मा को वरण करके जीव का 'गोत्र' बदल जाता है "जीवटल होसी आत्म" कीट भी भ्रमरी के संग से भ्रमर बन जाता है । जीव अपनी सीमा त्याग असीम का अधिकारी बन जाता है—जड़ अपनी केंचुली उतार चेतन स्वरूप में एक हो जाता है । संसार के सम्बन्ध बताए बिना, संसार के शब्द दिए बिना चिन्तन सम्भव नहीं । जब मन नश्वर का मोह त्याग एकाग्र चिन्तन में लीन हो जाता है तो अविनाशी ब्रह्म का स्वरूप उसके सामने आ जाता है । तब सांसारिक सम्बन्धों से परमात्मा को पहचानने की आवश्यकता नहीं रहती । तब जो है—वह उसके सामने आ जाता है ।

## महारास :—

'रास' एक ऐसा विषय है जिसको लेकर दो सर्वथा विरोधी मत प्रचलित हैं । एक वर्ग विशेष के लिए वह परम पूजनीय लीला है तो दूसरे वर्ग के लोग उस विषय में नाना प्रकार की शंकाएँ करते हैं—

महामति प्राणनाथ ने अपने 'रास' ग्रंथ और 'कलश' के 'योगमाया' के प्रकरण में सभी वर्ग के लोगों के लिए रास लीला का स्पष्टीकरण और अन्तर्निहित अर्थ बताया है—जो सत्यता है वह सामने आ गई है।

रास किसी भी अवस्था में इस संसार के पुरुष और स्त्री का मिलन या शास्त्र विहित प्रेम सम्बन्ध नहीं है। सबसे प्रथम बात तो यह है कि इस पिंड ब्रह्मांड से ऊपर उठ कर उस लीला का चिन्तन, मनन और अनुभव किया जा सकता है। सांसारिक सम्बन्धों को पूर्णतया त्याग देने पर भी उनके लिए लगाव तो नहीं है इस बात को कसौटी पर कसा जाएगा ( रास 'उथला' )। तब कहीं उस मण्डल में प्रवेश सम्भव होता है। रास लीला इस शरीर की लीला नहीं—योगमाया के ब्रह्मांड में योगमाया रचित चेतन, नित्य शरीरों द्वारा वह लीला हुई—

"योगमाया ने देह धरी, श्री श्यामा जी थैयां तैयार।
तत्क्षण तिहां तेणेठामे, मारे साथें कीधो सिनगार" ( रास )

इस संसार से 'परे और परमधाम से अलग इस लीला का आयोजन हुआ। अक्षर ब्रह्म की बुद्धि में और पुरुषोत्तम अक्षरातीत ब्रह्म का आवेश श्री कृष्ण थे और गोपिकाएं उनकी ब्रह्मात्माएं थीं। संसार देखने की अभिलाषा से गोपिकाओं में ब्रह्मात्माओं का अवतरण हुआ था। श्री कृष्ण उनके प्रियतम हैं यह न जानते हुए भी बृज लीला में उनके प्रति उनका प्राकृतिक, सहज स्वभाविक लगाव था। वह लगाव स्नेह और प्रेम में परिवर्तित हुआ तो इस संसार में परमधाम का आनन्द देने के लिए 'रास मण्डल' की रचना हुई। वहां की लीला—उसका आनन्द संसार के जीवों के लिए सहज प्राप्य बनाने के लिए उनके सम्बन्धों के उदाहरण दे कर उन्हीं के शब्दों में रास लीला का वर्णन हुआ, काम क्रोधादि विकारों का उस लीला में स्थान नहीं। अब भी स्त्री पुरुष का भाव मिटा कर—आत्मभाव से श्री कृष्ण परमात्मा को अनन्य भाव से पूर्ण समर्पण कर दें इसलिए रास लीला के प्रशस्त मार्ग पर चलना पड़ता है:—

"एणे पगलें आपण चालिए, पगला एरे परमाण सुन्दर साथ जी।
पहेले फेरे आपण जेम नीसरया, तमें जाण थाओ तेचित आणजी।
चित्त आणी ने रंग माणों, सुन्दर साथ जी।"

ब्रज में गोपियों की जो मनोदशा थी वैसा प्रेम हमें परमात्मा को पाने के लिए दिखाना पड़ेगा। संसार के सभी कार्य करते हुए मन श्री कृष्ण में रमा रहे। आठ पहर चौसठ घड़ी उनकी प्रतीक्षा रहे। जब उनकी कृपा होगी वे मधुर वंशी में हमारा नाम ले कर हमें पुकारेंगे तब संसार का मोह छूटते देर न लगेगी और आत्मा चेतन ब्रह्मांड में महारास के आनन्द का अनुभव कर पाएगी।

रास लीला अक्षर ब्रह्म के मन ( सदाशिव लोक ) में अखंड हो गई। भक्त जन अनन्य भाव से चिन्तन करके उस लीला के आनन्द का अनुभव करते हैं।

## ग्रन्थकार का नाम :—

तारतम बानी जिस स्वरूप द्वारा अवतरित हुई उसे महामति प्राणनाथ कहा गया जब कि उनका आरम्भिक नाम श्री मेहराज ठाकुर था। श्री देव चन्द्र जी ने उनमें परमधाम की आत्मा 'इन्द्रावती' को परखा। 'बानी' के एक दो प्रकरणों के अन्त में 'मेहराज' नाम है। कलश ग्रंथ तक इन्द्रावती के नाम से हैं शेष बानी पर 'महामति' की छाप है। इस से यही स्पष्ट होता है कि परमात्मा की पंच शक्तियों का प्रवेश होने से मेहराज का अस्तित्व मिट गया—इन्द्रावती आनन्द अंग श्यामा में खो गई और श्यामा ने परमात्मा का जोश, नूर हुक्म और बुद्धि द्वारा प्रेरित बानी कही।

"धनी जी का जोश आतम दुल्हिन, नूर हुक्म बुद्ध मूल वतन
ए पांचों मिल भई "महामत", वेद कतेबों पहोंची सरत"

पंच शक्तियों का अवतरण इन्द्रावती द्वारा 'मेहराज ठाकुर' में हुआ तभी वे वेद कतेब में वर्णित कार्य को, उनकी भविष्य वाणियों को सत्य सिद्ध कर पाए। परमात्मा के साक्षात् स्वरूप का उनमें दीदार पा कर ही "सुन्दर साथ" ने उन्हें प्राणनाथ कहा।

## ग्रंथ का नाम :—

महामति प्राणनाथ प्रणीत ग्रंथ का प्राचीनतम नाम 'कुलजम' है। अरबी शब्द* 'कुलजम' का अर्थ दरिया या सागर है। वि० सं० १७५१ में महामति प्राणनाथ के धाम गमन के पश्चात् कुलजम ग्रन्थ को ही गद्दी पर आसीन करा दिया गया। इस प्रकार कुलजम ही अक्षरातीत परमात्मा श्री कृष्ण प्राणनाथ का स्वरूप मान लिया गया। प्रणामी इसे कुलजम स्वरूप, स्वरूप साहिब के नाम से सम्बोधित करते हैं। प्राचीन प्रतियों के आरम्भ में तो यह नाम नहीं मिलता परन्तु ग्रन्थों की समाप्ति पर "किताब कुलजम" सम्पूर्ण लिखा जाता है। वि० सम्वत् १७५१ में कुलजम स्वरूप के प्रथम सम्पादक श्री केशवदास जी ने 'श्री मुख बानी' के चौदह ग्रन्थों का संकलन किया। मारिफत सागर ग्रन्थ के प्रकरणों को उन्होंने ही क्रम बद्ध किया। उसी ग्रन्थ के आरम्भ और अन्त में लिखा 'मंसौदा (मसविदा) सारे ग्रन्थ को प्रमाणित सिद्ध करने के लिए बड़ी ही भाव भीनी भूमिका के रूप में "तारत्तम बानी" में संकलित है।

"सो कलाम ज्यों आवते गए त्यों यारों ने लिखे। और हादी फेर प्यार से सुनते गए। सो अब हक हादी के हुक्म से मोमिनों ने इसके बाब बांधे है माफक अक्ल अपनी के। पर ये जो चौपाई हादी ने फुरमाई थी तिनमें एक हर्फ भी ज्यादा या कम नहीं किए।" इससे यह स्पष्ट है कि प्रथम सम्पादक श्री केशव दास जी ने 'बानी' में एक शब्द का परिवर्तन परिवर्धन नहीं किया। यही ज्यों की त्यों' प्रति 'उतार' लेने की परिपाटी आज तक चली आती है। हस्त लिखित होने से उसमें कोई अशुद्धि रह गई हो तो बात अलग है। बानी को यथा शक्ति ज्यों का त्यों उतारने का प्रयास रहा है। समस्त हिन्दी साहित्य या धर्म ग्रन्थों में संभवत: पाठ परंपरा की दृष्टि से इतना प्रमाणित ग्रन्थ अन्य कोई नहीं मिलता। मारफत सागर को छोड़ अन्य सभी ग्रन्थों का संकलन महामति के सामने हो चुका था और मारिफत सागर को उनके धाम गमन के तुरन्त बाद संकलित कर लिया गया। अन्य सभी सन्तों की बानियां और धर्म ग्रन्थ उनके रचयिता के कई वर्ष उपरान्त प्राय: शिष्यों से सुन कर ग्रन्थ रूप में लिपि बद्ध किए जाते रहे हैं।

प्रतिलिपि कारों ने ग्रन्थ को बहुत मोटा समझ कर पठन की सुविधा के लिए कहीं कहीं 'प्रथमार्ध' और द्वितीयार्ध' दो भागों में विभक्त कर दिया है। परन्तु अधिकतर वे एक ही प्रति 'कुलजम' में संकलित रहते हैं।

पठन पाठन के लिए उपलब्ध प्रतियों में सबसे प्राचीन प्रति वि० सं० १७५८ की पन्ना में सुरक्षित है। ग्रन्थ के अन्त की पुष्पिका में ग्रंथ का नाम कुलजम स्वरूप दिया गया। यथा "संवत् १७५८ चेत वदी ११ एतवार मुकाम परना किताब कुलजम फेर के जिल्द बनवाई। श्री राज ने। हुकुम साहेब के से। सुधारी बांदा खाकी ब्रह्म सृष्टि हक हादी रूहों की पाऊं खाक निसबती किताब सुधार तल बीरजी"।

इस ग्रंथ का 'कुलजम' नाम श्री लाल दास जी की बीतक तथा वृतान्त मुक्तावली में भी आया है। "बानी श्री मुख की सरल, कुलजम लीला रूप।

"लहो चहें जो नर दरस, देखे प्रकट सरूप" (वृज भूषन वृतान्त मुक्तावली प्रकरण ६६ चौ० १४)
इस प्रकार इस ग्रंथ का नाम 'कुलजम सरूप' अति प्राचीन, सार्थक और मान्य है।

---

*परिशिष्ट में देखिए।

कुलजम के अतिरिक्त महामति प्राणनाथ की बानी के लिए अन्य नाम भी प्रचलित हैं। उनके सम कालीन शिष्य और अनन्य भक्त श्री मुकुन्द स्वामी (नवरंग स्वामी) ने अपनी बानी में इसे तारत्तम बानी कह कर सम्बोधित किया। अनेक स्थानों पर यह शब्द प्रयुक्त हुआ है। कुलजम स्वरूप में भी इस ज्ञान को तारत्तम बानी की संज्ञा दी गई है। वैसे 'तारत्तम' मंत्र का नाम है जो बानी के मोतियों में धागे की तरह पिरोया हुआ जान पड़ता है। इसलिए 'कुलजम' की तरह ही इस ग्रंथ के लिए 'तारत्तम वाणी' नाम उपयुक्त है। अज्ञानान्धकार को नष्ट कर मारफत ज्ञान का प्रचंड प्रकाश फैलाने वाली यह तारत्तम बानी है।

"कहों कितने मैं श्री मुख बोल, कहे बानी में सबही खोल।
रीति तारत्तम वाणी एक, स्वरूप लक्षको एह विवेक ॥

बृज भूषन बृतान्त मुक्तावली प्र० २६ चौं० १०५

## प्राणनाथ वचनामृत :—

'कुलजम' 'तारत्तम बानी' का प्रथम संस्करण जो इलाहाबाद से सन् १९६५ ई० में प्रकाशित हुआ था उसमें इस ग्रन्थ का नाम प्राणनाथ वचनामृत रखा गया था। प्रणामी सम्प्रदाय में इस बानी को "श्री मुख बानी" भी कहा जाता है हो सकता है, इसी का रूपान्तर करके इसे "प्राणनाथ वचनामृत" कहा गया हो। यह नाम प्राचीनता से रहित और किसी भी प्रमाणित ग्रंथ में उल्लिखित न होने के कारण इस संस्करण से निकाल दिया गया।

## प्रकरण सूची :—

"तारत्तम बानी" के सूची पत्र में प्रकरणों के नाम के स्थान पर प्रथम चरण ही लिखा गया है। बानी में कई स्थानों पर प्रकरणों के नाम हैं तो भी सूची में प्रकरण का प्रथम चरण ही रखने की परिपाटी को हमें भी निभाना पड़ा है। प्रत्येक प्रकरण अपने में पूर्ण भाव लिए हुए अपने में मौलिक हैं और उसका प्रथम चरण प्रकरण में निहित भाव को व्यक्त करता है तभी यह परिपाटी चल पड़ी ऐसा प्रतीत होता है।

## संपादन :—

मूल पाठ का संरक्षण संपादक का परम लक्ष्य है। मूल लेखक या कवि के मुख से जो बानी जिस उच्चारण में जिस व्याकरणिक स्वरूप में प्रस्फुटित होती है उसको ज्यों का त्यों पाठकों के सामने प्रस्तुत करना ही सम्पादक का धर्म है।

सम्पादक का कार्य अति सरल हो जाता है यदि मूल लेखक द्वारा की हुई प्रति मिल जाती है। किन्तु यदि लेखक की मूल प्रति नहीं मिलती है तो प्रतिलिपिकारों द्वारा तैयार की हुई प्रतिलिपियों के आधार पर ही मूल पाठ के संरक्षण का प्रयास किया जाता है।

तारत्तम बानी के ग्रंथों का संकलन महामति प्राणनाथ के जीवन काल में हो गया था। मारिफत सागर के प्रकरणों को प्रथम सम्पादक श्री केशव दास ने उनके परमधाम गमन उपरान्त तुरन्त ही सङ्कलित किया और सम्पूर्ण ग्रंथ को उनके स्थान गद्दी पर आसीन करा दिया। वह मूल प्रति किसी को दिखाई नहीं जाती उनके सात वर्ष बाद की प्रतिलिपि प्राप्य होने से उसे ही देखने का सौभाग्य मुझे मिला है।

कुलजम (तारत्तम बानी) प्रणामियों का उपास्य ग्रंथ है। प्रत्येक मन्दिर में इसकी पूजा होती है अतएव इस बानी को ज्यों का त्यों रखने का प्रयास प्रत्येक प्रतिलिपिकार करता है। श्री केशव दास

जी ने इस बात का ध्यान रखा था कि महामति की बानी ज्यों की त्यों रहे । एक हरफ का भी परिवर्तन उसमें न किया जाए । केशवदास जी के पदचिह्नों पर चलकर ही प्रस्तुत सम्पादन कार्य किया गया है । अपने से एक शब्द भी नहीं परिवर्तित किया गया ।

प्रस्तुत बानी लगभग ३१४ वर्ष पूर्व अवतरित हुई थी । तब से आधुनिक युग तक हस्तलिखित परम्परा ही मिलती है । आज के युग में मुद्रण की सुविधा के कारण बानी जन-जन तक पहुँच सके और महामति का सन्देश विश्व के कोने-कोने में पहुँच सके इसी उद्देश्य से तारत्तम बानी को प्रकाशित करने की अभिलाषा हम लोगों के मन में सन् १९५४ ई० से बनी हुई थी । तब से ही मेरा बानी से परिचय हुआ । इस अभिलाषा की पूर्ति के लिए प्रथम बार श्री बल्लभ जी लाल जी, बांकुराँ वालों ने अपनी आर्थिक सेवा अर्पित की । भागीरथ प्रयास करके इस ग्रंथ का प्रथम बार १९६५ ई० में प्रथम संस्करण प्रकाशित किया गया । प्रथम संस्करण के प्रस्तुतिकरण में सैकड़ों प्रतियों को देखने का अवसर मिला । उन सब में महाराज रत्न दास जी द्वारा प्रस्तुत प्रति सर्वाधिक प्रामाणिक प्रतीत हुई । अतएव मूल आधार के रूप में उसी का प्रयोग किया गया । जहाँ कहीं अर्थ स्पष्ट नहीं हो पाया वहाँ मोटा मोरार दास जी (संवत् १७६१) तथा गरीबदास जी द्वारा प्रस्तुत प्रतिलिपि (संवत् १७७२) तथा बीर जी द्वारा प्रस्तुत प्रतिलिपि (संवत् १८०५) तथा अन्य और प्रतियों से सहायता ली गई । जो भी पाठ प्रस्तुत किया गया है वह प्रतिलिपिकारों द्वारा दिया गया है । सम्पादक की ओर से एक शब्द भी नहीं मिलाया गया ।

प्रथम संस्करण से द्वितीय संस्करण में विशेषता यह रही कि महामति की बानी के संक्षिप्त परिचय के रूप में एक छोटी सी भूमिका दी जा रही है । अनेक भाषाओं में अवतरित बानी को हिन्दी भाषा समझने वाले पाठक आसानी से समझ सकें इसके लिए श्रीमती विमला मेहता ने अनेक भाषा भाषी विद्वानों की सहायता से फुटनोट पर अर्थ तैयार किए । वेद और कतेब के कथानकों के पात्र और पारिभाषिक शब्दों को स्पष्ट करने के लिए साहित्यिक शब्दकोश ( परिशिष्ट ) का संकलन किया । श्रीमती लक्ष्मी बाई रूपारेल, श्रीमती छाया देवी, डा० चन्द्रकान्त मेहता ( गुजराती विभाग, देहली विश्व विद्यालय ) ने गुजराती शब्दों के अर्थ लिखने में सहयोग दिया । कुरान के सम्पादक और अनुवादक श्री मुहम्मद फारुख खां ने अरबी, फारसी, उर्दू शब्दों के अर्थ तथा साहित्यिक शब्द कोश तैयार करने में सहायता दी । पं० कृष्णदत्त जी शास्त्री ने परिशिष्ट लेखन तथा प्रकाशन सम्बन्धी सुझाव दिए । कुमारी लक्ष्मी शिवदासानी तथा प्रो० छुगानी से सिन्धी भाषा के अर्थ लिखने में सहायता मिली । श्री पन्नालाल नंददास जी तथा श्रीमान भगत कश्मीरी-लाल जी ने अर्थों की जाँच करके, प्रथम संस्करण की भूलों को सुधार कर सम्पादन और प्रकाशन कार्य में सहयोग दिया । महाराज पं० कृष्ण-प्रियाचार्य जी से बीतक तथा तारत्तम बानी के शोध कार्य में अनेक प्रकार से सहायता और प्रेरणा मिली मैं इन्हें हृदय से प्रणाम करता हूँ ।

मेरे प्रिय छात्र डॉ० बृज नारायण पाण्डेय, एम० ए०, डी० फिल्० ने फुट नोट और साहित्य-कोश की प्रेस कापी तैयार करने में बड़े मनोयोग से कार्य किया अतः वे मेरे धन्यवाद के पात्र हैं । श्याम विहारी दुबे और पुजारी परमलाल जी ने भी यथाशक्ति इस महानयज्ञ में आहुति डाली श्री मणिलाल कुँवर जी तथा श्रीमान् के० के० मेहता जी द्वितीय प्रकाशन के लिए धन एकत्र करके हमारे प्रयास को सफल बनाया । इलाहाबाद प्रणामी कमेटी तथा सुन्दर साथ ने इस कार्य में महान सहयोग दिया ।

प्रकाश चन्द्र जी मिड्ढा तथा मिड्ढा प्रेस के कर्मचारियों ने बड़ी लगन से प्रथम तथा द्वितीय संस्करण का मुद्रण किया ।

हिन्दी विभाग, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के अध्यक्ष तथा प्रोफेसर डा० लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय एम० ए०, डी० फिल्०, डी० लिट्, तथा डॉ० पारसनाथ तिवारी, एम० ए०, डी० फिल, एवं

डॉ० आशा गुप्ता एम० ए०, डी० फिल्० प्रवक्ता हिन्दी विभाग से मैं अनेक परामर्शों से लाभान्वित हुआ हूँ अतः वे सब मेरे धन्यवाद के पात्र हैं !

परिचय में तारत्तमबानी, दर्शन और साधना का अंश श्रीमती विमला मेहता ने दिया है इन सब के प्रयास से यह द्वितीय संस्करण ऐसे लोगों के लिए उपयोगी बन गया है जिनका प्रणामी साहित्य से पूर्व परिचय नहीं है ।

इस संस्करण को पूर्णरुपेण शुद्ध रूप से मुद्रित करने का प्रयास किया गया है । फिर भी जो भूलें रह गई हों उसके लिए पाठकों से करबद्ध प्रार्थना है कि हमारी भूलों का हमें दिग्दर्शन कराएँ जिससे हम शीघ्रातिशीघ्र शुद्धि पत्र प्रकाशित करवा कर जिज्ञासु वर्ग की सहायता करने में सक्षम हो सकें ।

महामति प्राणनाथ तथा सुन्दर साथ को कोटिश: प्रणाम—

प्राणनाथ का एक सेवक,
माता बदल जायसवाल
रीडर, हिन्दी विभाग
इलाहाबाद यूनिवर्सिटी
इलाहाबाद ।

निर्देशक :—अनुसंधान तथा प्रकाशन
श्री प्राणनाथ प्रकाशन
श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर
१० ए/१२, शक्ति नगर
दिल्ली ७.

**नोट —रास के कठिन शब्दों के अर्थ तारत्तम बानी के अन्त में देखिए ।**

— o —

# रास के शब्दों का अर्थ

अ

अंगना = अर्धांगिनी, पत्नी
अंगराखी = संभल कर (संकोचपूर्वक)
अंधारूं = अन्धकार
अंबार = ढेर
अक्लकर = रेशम पर रंग चढ़ाने वाला पौधा
अखंड = जो नष्ट न हो, अभंग
अखोड़ = अखरोट
अख्यात = प्रकट, खुलकर
अगाध = अथाह
अघात = तृप्त होना
अचंभ = हैरानी
अजवालुं = उजाला
अजवास = प्रकाश, ज्योति
अजाण्यूं = अनजाना
अड़बड़सू = लड़खड़ाऊंगी
अतिसारी = बहुत अच्छी
अत्यारे = अभी
अथाना = अचार
अदाय = अदा, तरह
अधकेरी = थोड़ी अधिक
अनंग = कामदेव
अनची = अनुचित
अनभव्यूं = अनुभव हुआ
अनित = नाशवान
अनियाला = बांका, अनोखा
अनुपम = बेमिसाल
अन्तराय = दूरी, अन्तर
अन्तर्गत = अन्तः करण में
अपाए = दिया जाये
अबूझ = ना समझ
अभाग = दुर्भाग्य
अमजतणी = हमारी
अमथी = हमसे
अमपणूं = आत्मगौरव
अममां = हममें
अमृत = मिठास, मधुर रस
अरणी = हवन काष्ट
अर्थसरे = काम बन जाय
अर्धो क्षण = आधा क्षण
अलगो = अलग, न्यारा
अलवेल = नटखट, अनोखा
अलवी = दुखी, उदास
अवाय = आया जाना
अविचल = सदा रहने वाली
अस्तुति = स्तुति
अस्थन = स्तन
अस्थिर = न टिकने वाली
अस्त्री = स्त्री
अहिनिश = दिन रात

आ

आंखडिएं = आंख में
आंखड़ी चढाविए = गुस्से से देखना, नजर फेर लेना
आंगूलियो = उंगली में
आंझो = विश्वास
आंधलो = अंधा
आंबलियो = इमली
आंबो = आम
आंमलियो = अंगूठी का शीशा
आंहीं = यहीं
आऊध = हथियार
आंकंध = कंधे उचका कर
आकसेत्र = आक
आखल पाखल = आस पास
आगल = आगे
आघा = आगे

| | | |
|---|---|---|
| आछो | = | स्वच्छ, निर्विकार |
| आड़ी उभो | = | सामने खड़ा |
| आड़ो | = | रुकावट |
| आणीगभा | = | इधर से |
| आणूं | = | लाऊं |
| आतुर | = | उतावली |
| आदू | = | अदरक |
| आधार | = | आश्रय (स्वामी) |
| आप्यूं | = | दिया |
| आपो | = | दे दो |
| आपो पूं | = | अपना आप |
| आभरण | = | आभूषण |
| आयत | = | चाह, उमंग |
| आरोग्या | = | भोजन पाया |
| आल | = | खेंच |
| आलिंघन | = | गले मिलना |
| आवसे | = | आयेगा |
| आवार | = | इस बार |
| आव्यो | = | आया |
| आसाधार | = | असाधारण |
| आसो | = | आश्विन |
| आसो पालव | = | अशोक वृक्ष |

इ

| | | |
|---|---|---|
| इच्छागमे | = | मनचाहे |
| इज्जत | = | मान, मर्यादा |
| इन्द्रावती | = | महामति प्राणनाथ की आत्मा का नाम |
| इहांज | = | यहीं |

उ

| | | |
|---|---|---|
| उघड़ी | = | खुली |
| उचार | = | बोल, शब्दोच्चारण |
| उछरंग | = | आनन्द |
| उछाए | = | उत्सुकता |
| उछाह | = | उमंग |
| उजाइयें | = | भाग जाइये |
| उजाए | = | उल्लसित |
| उजाण्यो | = | बिना सोचे समझे |
| उठाड़े | = | उठाए |
| उडाड़जे | = | उड़ा दो |
| उतरी | = | उतरती, कम होती |
| उत्कंठा | = | तीव्र अभिलाषा |
| उत्पात | = | ऊधम |
| उथलां | = | उल्टे, रोष भरे |
| उन्मद | = | मस्ती भरा |
| उपज से | = | उत्पन्न होगो |
| उपनी | = | प्रकट हुई |
| उपाई | = | उपजाई |
| उछाड़ | = | खोल |
| उपाड़ी | = | उठाई |
| उपापला | = | उदास |
| उभराणो | = | उबल गया |
| उभली | = | खड़ी |
| उमर | = | कदम्ब |
| ललट | = | उमंग |
| उल्सया | = | उमड़ पड़ा |
| उलासज | = | उल्लास, हर्ष |

ऊ

| | | |
|---|---|---|
| ऊंचूं | = | ऊंचा |
| ऊखल | = | ऊखली |
| ऊभूं | = | खड़े खड़े |
| ऊभर | = | गूलर |

ए

| | | |
|---|---|---|
| एकान्त | = | अकेले में |
| एकीगमा | = | एक ओर |
| एवड़ो | = | इतना |

ओ

| | | |
|---|---|---|
| ओचरे | = | कहे |
| ओ छूं | = | छोटा, कम |
| ओरो | = | निकट |
| ओलंगवू | = | नियम तोड़ना |
| ओलखंतू | = | पहचानती |
| ओलखान | = | पहचान |
| ओलवे | = | बुझा दे |
| ओलीगमा | = | उधर से |
| ओसक | = | संकुचित |

ओसरे = पीछे हटे
ओसीकल = शर्मिन्दा करने वाले

क

कंचन रंग = सुनहरी
कंचुकी = चोली
कंठ वलाई = गले लग कर
कंठ सरी = कंठी
कखूंबर = कुकंबर
कट = कमर
कटलंकाल = पतली कमर
कटाख्में = कटाक्ष, तिरछी निगाह
कड़ला = पांव का कड़ा
कणां = किनारी
कपूर कांचली = एक दवाई
कमल काकड़ी = कमल गट्टा
करंजी = करौंजी
कर करियां = सोने का चूड़ा
करताल = ताली बजाना
करमवी = करौंदा
करमाना = कुम्हलाया
करार = चैन, आराम
कलकलते = व्याकुल
कलहो = झगड़ा, कलह
कसकसती = कसी हुई
कसवी = कशीदा की हुई
कसवटिएं = कमर में खोसी हुई
कसों = बंध
कहवराव = कहलाता है
कहीस = कहूँगी
कहेवाणी = कहलाई गई
क्याहें = कहीं भी
कांइक = कुछ भी
कांकनी = कंगन
कांकसा = बगुले सा सफेद
कांजी = चिपटना
कांठला = गले का कंठा
कांठे = नदी किनारे
कांडा = कलाई
कांनियां = मगजी
कांबी = पांव का कड़ा
काढ़िया = निकाला
कायाएं = शरीर का
कालजड़ू = कलेजा, दिल
कारज = कार्य
करेली = कारेला
कालेरा = एक राग
किव = कवि
किहे = किस
कीधो = किया
कुन्दन = शुद्ध सोना
कुच = स्तन
कुमारिका = ईश्वरी सृष्टि अक्षर ब्रह्म की आत्माएं, वेद ऋचाएं
कुरली = चुन्नट
कुलवंती = कुलीन
कुलांभ = छलांग
कुलाहल = शोर
कुली = कलियुग
कुसम प्रेमल = पुष्प पराग
कुसल = कुशल
कूकम = कुँकम
कूप = कुआं ( सीमित )
केटला = कितना
केड़ = कमर, पीछा
केड़ बांधी = कमर कस कर
केणी पेरे = किस तरह
केने = किसका
केम करीस = कैसे करूंगी
केवे = किसके
केसू = टेसू
कोटिल = कुटिल
कोड़ = हर्ष
कोड़ामणा = आनन्द और आकर्षण से भरे
कोणीयां = कोहनी

कोमल = नरम, नम्र
कोरे = किनारे
कोलियो = ग्रास
क्रण कांत = किरण की ज्योति

ख

खंडी खांडी = तोड़ मरोड़ देना
खजुरिया = खजूर
खड़पा = चोली में लगा जोड़
खड़बूची = खरबूजा
खम्या = सहन किया
खमाय = सहन होवे
खरड़ी = रगड़ दी
रवरी = सच्ची
खरं = सत्य
खसबोय = सुगन्धि
खससो = सरकोगे
खांडाधार = तलवार की धार
खांत = उल्लास, सावधानी
खाखर = पलाश
खार = ईर्ष्या, दुश्मनी
खिन = क्षण, पल
खीजे = नाराज होवे
खाटलड़ी = टीका, लौंग
खादड़ी खुदावी = गत बना देना
खीर = दूध
खेव = चाह
खोटा = झूठा
खोड़ = दोष
खोलिए = ढूँडिए

ग

गढ़ = किला
गजा सारुं = शक्ति अनुसार
गत = हालत, गति
गमे = भावे
गलकी = तोरी
गलिया = गल गया
गह्वर = गहन, दुर्गम
गोंठिया = गूँथा हुआ
गाढो = गहरा
गायूँ = गीत
गारुणी = आकाश जितनी ऊँची
गाली लाली = गाल लाल हुए
गुंगल = गुगल
गुलबांस = बांस के फूल
गूँदी = गूँदा, चीड़
गेहलपन = शरारत
गेहेला = अलमस्त दीवाना
गोताए = ढूंडा जाए
गोपद वच्छ = गाय के बछड़े के पांव के निशान
गोंफनड़े = गुम्फन, केश विन्यास
गोरस = दूध
ग्रही = ली
ग्रहीती = पकड़ी गई

घ

घणी = बहुत
घणुज = बहुत ज्यादह
घण्वे = बहुत करके
घरतणी = परमधाम की
घसलाती = घिसटती हुई
घसे = मले
घाट = जड़ाई, घड़ाई
घातो = दाव पेच
घारण = बेहोशी की नींद
घुट्यो = सोता रहा
घूंटी = घुटना
घूमड़ले घूमिए = चक्करी खेलें
घोघरेघाटड़े = मोटे स्वर से
घोनियां = बटलोही
घालिकां = मटकी

च

चंग = मृदंग
चंचल = न टिकने वाली

चख = चक्षु, आंख
चटकाँसू = चमक कर हटना, छुड़ा लेना
चनी चनौटी = गुंजा
चपल = फुर्तीली
चरचित = रचा हुआ
चरण आंटी = पाँव की आंटी देना
चरणियां = लंहगा
चाकला = आसन
चाचरो = हिलाओ
चारेगमा = चारों ओर
चारोली = चिरौंजी
चलिए = चलिए
चाले = चले
चित ऊपर = मनोनुकूल
चितवणी = ध्यान, चिन्तन
चित्राम = चित्रकारी
चीड़तणी = मंगल सूत्र के मोती
चीन = चुन्नट
चीभड़ी = खरबूजे की बेल
चीमी चीमी = ढूंड ढूंड कर
चुन = ओढ़नी
चूक्या = भूला
चूड़ = चूड़ियां
चेहन = लक्षण, चिह्न
चेहरों = मुख, शक्ल
चोलंता = मलते हुए
चोली (चौरी) = लोबिया
चौकड़ो = चौकोर
चौकस = सावधान

छ

छपवो = छिपने के लिए
छवके = आनन्द में उछलकर
छल = कपट, माया
छाना = छिपा, गुप्त
छास = मट्टा, लस्सी
छेके = काटकर दूर करना
छेड़े = पल्लू
छेतरी = छल ली
छेतरुं = छल लूं
छेलाई = छैले पन से

ज

जंखी = लालसा से
जदीप = यद्यपि
जरड़ी = थक गई
जवदानी = जौ के दाने जैसी
ज्यारे = जब
जवेर = जवाहिरात, रत्न
जांबू = जामुन
जाण = समझ, पहचान
जामंत = जमती है, दमकती है
जास री = जाती है
जिम्याएं = जिह्वा से मुख से
जुई = अलग
जुए = देखे
जुओ = देखो
जुजवी = अलग
जुगत = युक्ति, विधि
जुध = युद्ध, लड़ाई
जुवती = युवती
जे = जो
जेटली = जितनी
जेम = जैसे
जेवी = जैसी
जेहणूं = जिसका
जो जो = देखो
जोई जोई = ढूंड ढूंड कर
जोईये = देखिए
जोग बाई = साधन (शरीर)
जोगमाया = योगमाया, अक्षर ब्रह्म की वह शक्ति जिससे रास मण्डल की रचना हुई
जीड़ = बराबरी
जोयूं = देखा, परखा
जोंरे = जोर से, बल पूर्वक

| | | |
|---|---|---|
| जोवंता | = | देखते हुए |
| जोवाय | = | देखा जाए |
| जोसूं | = | देखूंगी |
| **झ** | | |
| झंपावी | = | झपट कर |
| झकझोल | = | मस्ती भरा। |
| झलाए | = | पकड़ में आए |
| झलाबोल | = | ज़ोर से मिलना |
| झलूबे | = | झूल रही है |
| झाँप | = | झपट कर गिरना |
| झाड़ चीभड़ी | = | तरबूज की बेल |
| झाल | = | आग की लपटें |
| झालया | = | पकड़ा |
| झाली | = | पकड़ी |
| झीना | = | महीन |
| झीलना | = | स्नान करना जल क्रीड़ा |
| झुंझार | = | आगे बढ़ी हुई, चतुर |
| **ट** | | |
| टलवली | = | तड़प उठी |
| टली | = | हट गई |
| टांकरण | = | गूंथे हुए |
| टाणे | = | अवसर, मौका |
| टालणो | = | टालने का |
| टाल्यो | = | बुझा दिया |
| टालो | = | लुढ़का दिया |
| टिडूरी | = | टिंडोरा |
| टीलड़ी | = | बिंदी |
| **ठ** | | |
| ठरंत | = | शीतल होती है |
| ठाम | = | ठिकाना |
| ठालिया | = | गिरा कर |
| ठेक | = | ठुमका देकर |
| ठेलन | = | धकेलने |
| **ड** | | |
| डाड़म | = | अनार |
| डाल | = | टहनी |
| डीठी | = | देखी |
| **ढ** | | |
| ढंपाए | = | ढंक दें |
| ढाले | = | बहाए |
| ढोली | = | गिरा कर |
| ढेले | = | डुलाए, हिलाए |
| **त** | | |
| तजारक | = | दंड |
| तत्काल | = | उसी समय |
| तत्र सहु | = | सब तत्व, पांच तत्व पच्चीस अंग |
| तम | = | अन्धकार |
| तम आगल | = | आपके सामने |
| तम कने | = | तुम्हारे पास |
| तम थकी | = | तुम से |
| तमारड़ी | = | आपकी |
| तमारा | = | आपका |
| तरुवर | = | वृक्ष |
| ताणी ग्रहे | = | खींच ले |
| ताणो तान | = | खींचा खींची |
| ताप | = | गर्मी |
| तामस | = | उग्रता, जोश |
| तारत्तम | = | अन्धकार से प्रकाश की ओर लेजाने वाला ज्ञान, ब्रह्म ज्ञान |
| तारी | = | तेरी |
| तारुणी | = | युवा स्त्री |
| तिमर | = | अन्धकार |
| तेड़सूं | = | बुलाऊँगी |
| तेड़वा | = | बुलाने |
| तेणे ताय | = | उसी समय |
| तेणे ताल | = | उसी क्षण |
| तेतां | = | वह तो |
| तेवरिया-तुवरिया | = | अरहर |
| तेवा | = | वैसा ही |
| तेहज | = | वही |
| तोहज | = | तौहीन, अपमान (असावधानी) |

तोहे = तो भी
त्रट = किनारा
त्राटकड़े = टुकड़े
त्रूटें = टूटें
त्रूठा = प्रसन्न, सन्तुष्ट

थ

थंतरी = होता है
थकी = से
थड़ = चबूतरा
थबकला खाधा = जोर से बैठ गई
थरहरे = काँप रही है
थाए = होता है
थासे = होगा
थोभे = मुग्ध होता है

द

दंत नी कथा = सुनी सुनाई बात
दमया = नियंत्रण किया, रोका
दही = जल गई
दाझी = जली
दाझें = अग्नि, जलन
दाड़िम = अनार
दातार = दाता
दान लीला = दूध दही का कर मांगने का खेल
दामनिएं = मथानी की रस्सी
दावानल = दशों दिशाओं में फैली भयंकर आग
दीठड़े = देखने से
दीठों = देखा
दीरघ = दीर्घ-लम्बा स्वर
दीवें = दीपक
दुष्टें = नीच ने
दुरमति = मन्द बुद्धि
दूधेली = दूध देने वाली गाय, दूध वाला वृक्ष
देवरानां = देवर इत्यादी
दैत-दैत्य = राक्षस
दोरो = डोरा-धागा
दहुंती = दुहती,
द्रस्ट = दृष्टि, नजर
द्रस्टांत = उदाहरण
द्रस्ट थकी = नजर से
द्राख = अंगूर

ध

धनवट = स्वामी पन (रक्षा)
धनिएं = स्वामी ने
धन अविनाशी = अखंड निधि-ब्रह्म ज्ञान
धरा = पृथ्वी
धवरावे = दूध पिलावे
धात = धातु
धान = चावल
धायो = भागा
धारुनी = धरतौ
धुतारो = छलिया, धोखेबाज

न

नख = नाखुन
न माव्या = न समाया
नमी = झुक कर
नयना = आँखें
नर सैयां = नरसी भगत
नव = नौ
नवघटे = उचित नहीं
नव घरी = नौ लड़ियों का हाथ का आभूषण
नव टली = बाज न आई
नव पाटली = नौ पट्टियों का आभूषण
नवराविया = नहलाया
नवल = नया, नवीन
नव सर = नौ लड़ियों का हार
नसों चढ़ावी = नसें तन गईं
नाका = छेद
नाखी = डाली
नाखे छे = डालती

नारंगी = सन्तरा
नार = माया नारी
नारियरी = नारियल
नासतियों = भागती हुई
नासी = भागी, दूर हुई
नाह्या = नहाया
नाहो = स्वामी, पति
निगमया = गँवाया
निघात = चोट, प्रहार, जोर से वार
निजनाम = अपना नाम, (परम आत्मा का नाम)
( प्रणामी धर्म का मंत्र )
निठुर = निष्ठुर, ढीठ
नितप्रते = प्रति दिन
नितारी = पानी के ऊपर से उतारना
निद्रा = नींद
निध = निधि, खजाना
नि:कलंक = बे दाग
निमख = पल भर
निरत = नृत्य, नाच
निरधारयो = निश्चित किया, ब्योरा दिया
निरमान = हिसाब
निरमूल = जड़ से उखाड़ना
निरवान = मुक्ति
निरांत = चैन, आराम
निराकार = जिसका आकार न हो, अप्रकट अवस्था में, अक्षर ब्रह्म की मूल प्रकृति
निलवट = मस्तक
निवार = दूर हटा
निसन = बालक, ना समझ
निसरे = निकले
निसां = निशा, रात्री
निसांचारी = निशाचार, जंगली पशु
निहाले = देखे।
नीलास = नीलिमा
नेम = नियम
नेवरी = दारचीनी
नेह = स्नेह, प्रेम
नेहड़ो = स्नेह,लगाव
नेहचल = स्थाई, स्थिर
नेहचे = निश्चय
न्यात = नाती, सम्बन्धी

प

पंखीड़ा = पक्षी
पंपाल = झंझट, प्रपंच, (माया)
पकवान = स्वादिष्ट व्यंजन
पखाज = पखावज
पखाल्या = धोया
पगले = चाल चरण चिन्ह
पच्चीस = परमधाम के पच्चीस खंड शरीर के गुण अंग इन्द्रीय
पछेड़ी = पिछौड़ी
पटोली = पटुका
पड़ताल = ठुमका देकर
पण = परन्तु
पतंग = लाल
पत = पति
पतन = गिरावट, गिरना
पतीत = पतित, नीच
पधारया = विराजे हैं
पयोधर = स्तन
परखो = पहचानो
परवरी = मुक्त होकर
परवाली = गहरा लाल
परस्पर = आपस में
पर हरी = छोड़ दी

परियानी = सलाह से
पल = क्षण, पलक झप-कने की देर
पलासी = पलाश
पसाय = प्रताप, कृपा
पहेलां फेरा = (ब्रज में अवतरण)
पांत = पंक्ति, कतार
पांसा = पसली
पाऊँ = दूं
पाखल = बाजू
पाखल वाड़ = घेरा
पाखल पलाए = पीछे भागे
पाखालू = टहनी वाला
पाछा ओसरूं = पीछे हटूं
पांछू = पीछे
पाटूं = ठोकर
पाड़ = दोष
पाड़ बुंब = चिल्लाना
पाडी = डाली, गिरा दी
पानी = हाथ, चमक, जल
पानी ना जेम = पानी की तरह
पानी बल = बुलबुला, हाथ पकड़ने वाले स्वामी
पाधरा = स्पष्ट, साफ
पाधरी दोर = सीधी
पाना = पन्ना, रत्न
पापन = आँख की पुतली
पापिष्ट = पापी, अधम
पामसे = पाएगा
पामी मृत = मर गया
पात्र = बर्तन
पारखूं = परीक्षा, परख
पालखी = पालकी
पास = पाश, बन्धन
पिंगल = व्याकरन और काव्य शास्त्र
पिंड = काया
पिंडड़ा = शरीर

पीड़ी = पिंडली
पीड़ें = दुःख देवे
पीपलो पारस = पारस पीपल
पुखराज = पोखराज, एक रत्न
पुरे = गाँव
पुस्तक = धर्म ग्रंथ, ज्ञान
पुरवा = पूर्ण करते हैं
पूरे = देवे, पुरावे
पेखे = देखे
पेर = तरह
पेस = दाव पेच
पैयां = अन्त, राह
पोहोंची = कलाई का आभूषण
पोहोंचे = पूर्ण हो
पोहोंती = पूरी हुई
पोहोरा = बेला, समय
प्रकाशी = प्रकट करूं
प्रगट रमें = खुलकर खेले
प्रघल पूर = तेज प्रवाह
प्रदक्षिणा = परिक्रमा
प्रसेवे = पसीने वाले
प्रसंन = प्रसन्न, खुश

फ

फजीती = फजीहत, अपमान
फड़कला = क्रोध और घबराहट में फड़फड़ाना
फनां = पंजा
फनसतूत = कटहल
फरतन फेर = गोल घेरे की
फरतां = फिरते हुए
फरवूं = फिरते
फरी = फिर
फरी वली = घेर लिया
फूदड़ी फरिए = दोनो ओर
फूली = कली
फेरवी लीधी = फिरा दी

ब

बंगे = टेढ़ाई
बंधड़ा = बन्धन
बंधेज = नियम
बने नो = दोनो का
बरनवाय = कहा जाए
बले = जले
बांक = कमी
बांसली = बांसुरी
बांहोड़ी = बाहें
बातड़ी = बात
बाथ = बाहों में भरना
बापड़ी = बेचारी
बारम्बार = बार बार
बाहंत = बहती है
बिध = विधि, तरीका
बीजा = दूसरा
बीड़ी = पान का बीड़ा
बीतक = जीवनी
बुन्दे = कान का आभूषण
बुंब पाडूं = चिल्लाऊँ
बुद्ध सारुं = बुद्धि अनुसार
बेसर = नथ
बेसवाना = बैठने का
बेहू गमा = दोनो ओर
बोरड़ी = बेर
बोल सरी = मौल श्री
बोलाणु = बोल जाना
ब्रह्मादिक = ब्रह्मा, विष्णु महेश आदि देवता

भ

भटकी = ठोकर खाई
भनियों = पढ़ी हैं
भमया = घूमा
भमरी = चक्कारी का खेल
भमे = घूमें
भमाड़या = घुमाया
भरजो = हाथों में भरकर उठाना
भरत = कशीदा
भरतार = पति, स्वामी
भरना = आना
भली पेरे = अच्छी तरह
भव रोगी = जन्म जात रोगी
भांडा = बर्तन
भाखे = कहे
भाजवा = पूरी करने के लिए
भामना = बलैयां
भारे = सारयुक्त
भाली = देखी
भीड़ा मीड़ = जोर से गले मिलाना
भीसीं = कस लेना
भुजतानी = भुजाओं में बाँध लिया
भूंडा = दुष्ट, मूर्ख
भूला हूँ = भूल गए
भूलवनी = भूल भुलैयां
भूलवी = भूल गई
भूलिसमां = भूलना मत
भूसी = गर्व हरना
भेदयूँ रे पास = स्पर्श न हुआ
भलां = साथ
मोंभ = भूमि, पृथ्वी
भोला ढालनी = सीधे पन की
भ्रांत = भ्रम, शंका

म

मंभार = में
मकरंद = पुष्प पराग
मचकासूं = मरोड़ना मोच खा जाना
मचिया = मस्त हुआ
मछराल = मत्सर, गर्व
मणां = कमी
मत = सलाह
मदमाती = मस्ती भरी
मथी = मथकर, सार ग्रहण करना

मन गमतां = मनोनुकूल
मनोरथ = चाह
मरकलडे = मुस्कराते हुए
मरजाद = मर्यादा
मरड़ी = मरोड़ कर
मरम-मर्म = रहस्य, भेद
मरसूं = मरूँगी
मरी = काली मिर्च
मलयागर = चन्दन
म लावो = न लगावो
मली ने मली = घुल मिल गई
मलया = मिला
मलवा = मिलने के लिए
महुड़ा = महुआ
मांड्यूं = रचाया
मांडी = रचाई
माटे = लिए
माण्यूं = माना
मानज = मान, मर्यादा
मानस = मनुष्य
मानिक दे = श्री प्राणनाथ जी का रास मण्डल का नाम
माम = मैं पन, अहंकार
मारूं = मेरा
मारे = मुझे, मेरै
मीचजो गाढो = जोर से बन्द करो
मीट = दृष्टि, नजर
मीना = मछली
मुकावे = छुड़ावे
मुझाए = घुटता हैं
मूकंता = छोडते हुए
मूकसो = छोड़ोगे
मूक्या = छोड़ा
मूने = मुझे
मूलगां = मूल के
मोकले = खुले
मोटूं = बड़ा
मोड़ी = मरोड़ कर
मोहजल = भव सागर, माया
मोहन बेल = मोहिनी बेल
मोहलिए = मोहरी
मोहबड़ = सामने, आगे
मोहिए = मोहित हों
मोही = मुझसे
मोंहें = मुँह से
मोहे मां = मोह में

र

रंग = आनन्द
रंगणा = आनन्द से
रखे = कदाचित
रखोपूं = रखवाली
रमतां = खेलते हुए
रमाड़या = खेलाया
रलियामनां = सुहाना
रलियाली = मोहक
रस = स्वाद
रसाल = मधुर
रहो = ठहरो
राखड़ली = बाजू बंध
राती = लाल
रामत = खेल
रायन = खिरनी
रीस = गुस्सा
रुत = ऋतु, मोसम
रुद्राख = रुद्राक्ष
रूढ़ा = अच्छा
रूढ़ी रीतें = अच्छी तरह
रूप = शक्ल
रेख = आन
रोवंता = रोता हुआ

ल

लख्मी = लक्ष्मी
लघु = ह्रस्व, छोटा अक्षर
लड़थड़े = लोट पोट हो जाए
लड़सड़ती = सुस्ता कर
लपतो = छिपते हुए
लवो = लव मात्र, थोड़ा

| | | |
|---|---|---|
| लक | = | पावे |
| लांक | = | कमर |
| लाग | = | अवसर, हक |
| लाधे | = | मिले |
| लालक | = | लाली |
| लिबड़ा | = | नीम |
| लिबोई | = | नींबू, नारंगी |
| लूंब | = | गुच्छा |
| लोपावी | = | दूर की |
| लोयूं | = | पोंछा |
| व | | |
| वकोर | = | रुदन |
| वगाड़े | = | बजावे |
| बचिक्षण | = | चतुर, कुशल |
| बचे | = | बीच में |
| वछूटतां | = | छूटकर भागना |
| वछूटे | = | अलग होवे |
| वटकी | = | झटक कर |
| वधारी | = | उतारी |
| वर | = | पति |
| वरनवी | = | कही |
| बरसां सूं | = | वर्षों से |
| वरसूं | = | वरण करूंगी |
| वल | = | टेढ़ाई |
| वलगती | = | झगड़े वाली |
| वलगना | = | भिड़ना, उलझना |
| वलाइये | = | गले मिलिए |
| वलाका | = | वल, पेच चक्कर |
| वली | = | फिर |
| वली गया | = | बिगड़ा |
| वल्लमा | = | प्रीतम |
| वसेके | = | विशेष रूप से |
| वहियो | = | चल पड़ी |
| वहे | = | लादता है, ढोता है |
| व्यापियो | = | समाया है |
| व्याल | = | सर्प |
| वांछा | = | चाह, इच्छा |
| वाइयो | = | वजी |

| | | |
|---|---|---|
| वाक | = | वाक्य, बोल |
| वागा | = | पोशाक |
| वाछड़ड़ा | = | बछड़ा |
| वानी | = | श्री मुख के बोल |
| वाय ने वेगें | = | वायु वेग से |
| वारुं छूं | = | रोकूं, मना करती हुँ |
| बारे | = | रोके |
| वालपन | = | स्वामी के लिए स्नेह और मान |
| वालम जी | = | प्रियतम जी |
| वाला | = | स्वामी, प्यारा |
| वाली | = | प्यारी |
| वासो | = | पीठ |
| विकल | = | व्याकुल |
| विकसिया | = | खिल उठा |
| विकार | = | दोष |
| विख्यात | = | प्रसिद्ध, प्रकट |
| विगत | = | व्योरा, वर्णन |
| वितीत | = | व्यतीत, बीती |
| विदयाएं | = | ज्ञान के बल पर |
| विधो गते | = | विधि पूर्वक |
| विनती | = | विनय, प्रार्थना |
| विमासण | = | चिन्ता |
| विमासयूं | = | चिन्तित |
| विमासी | = | विचार किया |
| विलंब | = | देर |
| विलसूं | = | विहार करूं |
| विलास | = | परमात्मा में रमण करना |
| विवेक | = | समझ |
| विसेक | = | विशेष रूप से |
| विस्तार | = | फैलाव |
| विस्व | = | संसार |
| विहार | = | जगह, ठिकाना |
| विहीजिए | = | डरिए |
| वींटियो | = | घिर जाना |
| वीटी | = | अँगूठी |

| | | |
|---|---|---|
| वीटो रही | = | लिपटी रही |
| वृद्ध | = | वृद्धि, बढ़ती |
| वेगमां | = | जल्दी में, तेज चाल |
| वेगला | = | अलग, दूर |
| वेगें | = | जल्दी |
| वेढ़ | = | जिद |
| वेण | = | चोटी |
| वेणां | = | टीका |
| वेणा | = | सारंगी |
| वेणु | = | बंशी |
| वेराट | = | ब्रह्मांड, चौदह लोक |
| वेल | = | देरी |
| वेहेकार | = | महक |
| व्रह | = | विरह, वियोग |

स

| | | |
|---|---|---|
| संघाती | = | सम्बन्धी |
| सन्देह | = | शंका |
| संधाए | = | प्रकट करके |
| संधान | = | जोड़ |
| संभार | = | सम्भल जा |
| संवाद | = | बात चीत |
| संसार दिशा | = | सांसारिक अवस्था ( माया जनित अशान्ति) |
| सगाई | = | रिश्ता जोड़ना |
| सघली | = | सब |
| सटके | = | सटती है |
| सणगटड़ा | = | घुँघट |
| सदाय | = | सदा के |
| सनंध | = | विधि, तरीका |
| सबलो | = | बलवान |
| सम | = | कसम, सौगध |
| समझन | = | समझ |
| समरथ | = | समर्थ, बलवाण |
| समाध | = | शान्ति, समाधि |
| समो | = | ठीक अवसर |
| सर | = | लड़ी |
| सरखी | = | बराबर, एक जैसी |
| सरवालो | = | सब का जोड़ |
| सरवे | = | सब |
| सरस | = | रस युक्त, स्वादिष्ट |
| सरस | = | सरसों |
| सराड़े चढे | = | बन जाए, सीधा हो जाने |
| सरीखड़ा | = | जैसा |
| सरूओ | = | जल्दी सुनने वाला |
| सस | = | चन्द्रमा, शशि |
| सहसूं | = | सहूँगी |
| स्या | = | क्यों |
| स्याने | = | क्यों कर |
| सांचरया | = | रम गया |
| सांभलतां | = | सुनते ही |
| सांभलो | = | सुनो |
| सारव | = | गवाही |
| साख्यात | = | साक्षात |
| साग-शाक | = | हरी सब्जी |
| साटे | = | बदले में |
| साढ़ सोलूं कंचन | = | सौ बार तपा कर शुद्ध किया सोना |
| साथ | = | सुन्दर साथ, धाम की साथी आत्माएं |
| सामटो | = | सिमट आया |
| सामा | = | सामने, सामान |
| सामूं | = | सामने |
| सायर | = | समुद्र |
| सार | = | असल बात |
| सार | = | खबर, सुधि |
| सारा | = | अच्छा |
| साले | = | दुःख देता है |
| सासर वेड़ | = | ससुराल |
| सास्त्र | = | शास्त्र, धर्म ग्रंथ |
| साहे | = | अनुकूल, सहाई |
| सिखामण | = | सीख |
| सिध्यूं | = | सफल, फलीभूत |
| सिनगार | = | शृंगार, सजना |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सिव | = | शिव, महादेव | हमची, खुदिए | = | नाचते हुए ताली बजाना |
| सीमम | = | शीशम | हरखूं जी | = | खुश होती हूँ |
| सुकजी | = | शुकदेव मुनि | हरवटी | = | ठोडी |
| सुख्यम | = | सूक्ष्म | हरवरी | = | हड़बड़ाहट |
| सुतलिया | = | अच्छा तला हुआ | हरी | = | छीन ली, उठा ली |
| सुनेरी | = | सुनहरी | हलवा | = | हलका, ओछा |
| सुहाग | = | सौभाग्य, प्रिय | हलवे | = | धीरे |
| सूकड़ | = | चंदन | हवड़ा | = | अभी |
| सूड़ा | = | तोता | हवे | = | अब |
| सूफ़ | = | सौंफ | हसे | = | होगा |
| सूरन | = | जिमीं कंद | हाऊं हाऊ | = | बस बस |
| सूल | = | सम्बन्ध | हाकली | = | छोटा, बेबसी |
| सेक्यां | = | सेंका हुआ, भूना हुआ | हाण | = | हानि |
| सेरड़ी | = | गन्ना | हाम | = | चाह |
| सोभंत | = | शोभा देता है | हित | = | नेह |
| सोसी लीधा | = | चूस लिया | हीचें | = | झूलती हैं |
| सोहामणां | = | सुहाना | हूँ | = | मैं |
| सोहेली | = | आसान, सहज | हेजे | = | झुक जाना |
| ह | | | हेल | = | बोझ, कठिनाई |
| हजी | = | अभी | हैडा | = | हृदय |
| हडफटे | = | चपेट में आकर गिरना | होड़ | = | मुकाबला |

संयोजक
पन्नालाल पुजारी

# सूची पत्र

| प्रकरण | विषय | चौपाई | पृष्ठ |
|---|---|---|---|

नम्बर **षटऋतु** ( प्रकरण १५ ) २३०



| प्रकरण | विषय | चौपाई | पृष्ठ |
|---|---|---|---|

नम्बर **कलस गुजराती** (प्रकरण १२) ५०६



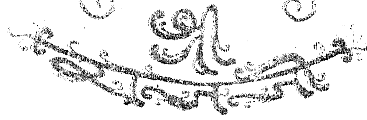
| प्रकरण | विषय | चौपाई | पृष्ठ |
|---|---|---|---|

नम्बर **प्रकाश हिन्दी** (प्रकरण ३७) ११८५

| प्रकरण | विषय | चौपाई | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| नम्बर | **कीर्तन** (प्रकरण१३३) | २१०२ | |

## सांकेतिक चिह्न

| | |
|---|---|
| संख्या | फुटनोट में अर्थ |
| सितारा * | परिशिष्ट मैं देखिए |
| कोष्ट ( ) | अभिप्रेत अर्थ |
| मु० सा० | महंमद साहिब |
| म० प्रा० | महामति प्राणनाथ |
| सदी० मु० | मुहंमद साहब के बाद से |
| वि० सं० | विक्रमी सम्बत |



निजनाम श्रीकृष्णजी, अनादि अक्षरातीत ।
सो तो अब जाहिर भए, सब विध वतन सहीत ॥
श्री स्यामाजी वर सत्य हैं, सदा सत सुखके दातार ।
विनती एक जो वल्लभा, मों अंगनाकी अविधार ॥
वानी मेरे पीउकी, न्यारी जो संसार ।
निराकारके पारथें, तिन पारके भी पार ॥
अंग उत्कण्ठा उपजी, मेरे करना एह विचार ।
ए सत वानी मथके, लेऊं जो इनको सार ॥
इन सारमें कैसत सुख, सो मैं निरने करूँ निरधार ।
ए सुख देऊँ ब्रह्मसृष्टि को, तो मैं अंगना नार ॥
जब ए सुख अंगमें आवहीं, तब छूट जाए विकार ।
आयो आनंद अखण्ड घरको, श्रीअक्षरातीतभरतार ॥

रास
षटऋती
सनंध
खुलासा
परिक्रमा
सिनगार
मारफत सागर
प्रकाश
कलस
किरतन
खिलवत
सागर
सिधी
कियामत नामा
वेद
शास्त्र
उपनिषद
भागवत
जबूर
तौरेत
अंजील
कुरान

निजनाम श्रीकृष्णजी, अनादि अक्षरातीत ।
सो तो अब जाहेर भये, सब विध वतन सहीत ॥

श्री देवचन्दजी सत्य छे, सदा सत सुखना दातार ।
विनती एक जो वल्लभा, मों अंगनानी अविधार ॥

वाणी बालाजी तणी, अलगी जे संसार ।
निराकारने पार थी, ते पारने वली पार ॥

अंग उतकंठा उपनी, मारे करवो एह विचार ।
आ सत वाणी मथी मांहें थी, लेवो छे सर्वे सार ॥

ए सार मांहें कै सत सुख, ते निरणे करूं निरधार ।
ए सुख देऊँ म्हारा साथने, तो हूँ अंगना नार ॥

ज्यारे ए सुख अंगमां आवसे, त्यारे छूटी जाए विकार ।
आव्यो आनन्द अखंड घर तणो, श्री अक्षरातीत भरतार ॥

# श्री रास (अंजील)

चाल

हवे पेहेलां मोहजलनी कहूँ वात, ते तां दुखरूपी दिन रात ।
दावानल बले कै भांत, तेणी केटली कहूँ विख्यात ॥ १

विस्वने लागी जाणे आध, मांहें अगिन बले अगाध ।
ते तां पीडे दुस्ट ने साध, नहीं अधखिणनी समाध ॥ २

कृपा करोछो अमज तणी, सिखामण देओ छो अतिघणी ।
अहि निस लेओछो अमारी सार, तो मोहजल उतरसूं पार ॥ ३

ए माया छे अति बलवंती, उपनी छे मूल धणी थकी ।
मुनि जनने मनाव्या हार, *सिव ब्रह्मादिक न लहे पार ॥ ४

*सुक *सनकादिक ने नव टली, लखमी* नारायण ने फरीवली ।
विस्नु वैकुंठ लीधां मांहें, सागर सिखर न मूक्यां क्यांहें ॥ ५

ए ऊपर हवे सूं कहूँ, बीजा नाम ते केहेना लेऊं ।
एणे वचने सरवालो थयो, ब्रह्मांडनो धन सरवे आवयो ॥ ६

तत्व सहूए एणीएं जीती लीधां, *चौदे लोक पोतानां कीधां ।
वली लीधो तत्व मोह, जे थकी उपन्या सहू कोए ॥ ७

साखी—कहे *इंद्रावती वल्लभा, ए माया छे अति छल ।
हवे जुध मांड्यूं छे अमसूं, एहेनो कह्यो न जाए बल ॥ ८

एहेना आउध अम्रत रूप रस, छल बल वल अकल ।
अगिन कोटिल ने कोमल, चंचल चतुर चपल ॥ ९

चाल—हवे एहेनो केटलो कहूँ विस्तार, जोरावर अति अपार ।
मोसूं जुंध मांड्यू आसाधार, जुध करे छे बारंबार ॥ १०

एहेने लाग्यो कोई एवो खार, मारो केड न मूके नार ।
में बांध्या सामा हथियार, तो जाण्यू जोपे एहेनो मार ॥ ११

एणे समे जे अममां बीती, केटली कहूँ तेह फजीती ।
में तो रुडी रीतें ग्रहीती, पण मुने लीधी जीती ॥ १२

बांहें ग्रही लेई निसरी, में त्रण जुध कीधां फरी फरी ।
पछे गत मत मारी हरी, लेई वस पोताने करी ॥ १३

तमे अनेक सिखामण कही, भरम आडेसें कांई नव ग्रही ।
मोसूं एवी तोहज थई, जो वाणी तमारी में नव लही ॥ १४

तमे पेरे पेरे समझावी, मुने तोहे बुध न आवी ।
जुगते करीने जगावी, लेई तारतमे लगावी ॥ १५

तमे अंतरगतें दीधां द्रस्टांत, त्यारे भांगी मारा मननी भ्रांत ।
हवे तमे आव्या एकांत, संसार दसा थई सांत ॥ १६

ज्यारे धणी धनीवट करे, त्यारे बल बेरी ना हरे ।
वली गया काम सराडे चढे, मन चितव्या कारज सरे ॥ १७

साखी—मायाना मुख माहें थी, जुगतें काढी जोर ।
दई तजारक अतिघणी, माया कीधी पाधरी दोर ॥ १८

धणीना जेम धनीवट, लीधी भली पेरे सार ।
आ दुखरूपणीना मुख मांहें थी, बीजो कोण काढे विना आधार ॥ १९

चाल—तमे क्रपा कीधी अतिघणी, जाणी मूल सगाई घरतणी ।
माया पाडी पडताले हणी, बल दीधूं मूने मारे धणी ॥ २०

वली गत मत आवी सुधसार, छल छूटो ने थयो करार ।
दयानो नव लाधे पार, त्यारे अलगो थयो संसार ॥ २१

हवे आव्यूं धन अविनासी, दुख दावानल गयूं नासी ।
रुदे ग्रहूँ लीला विलासी, हवे ते हूँ करूं प्रकासी ॥ २२

हवे ए धन में जोपें जाण्यूं, जिम्याएँ न जाए वखाण्यूं ।
मारा हैडा मां आण्यूं, अम विना कोणे न माण्यूं ॥ २३

साखी—बल नथी आहीं अमतणूं, नहीं अमारे वस ।
ए निध आवी तम थकी, ते में चित कीधूं चोकस ॥ २४

में चित माँहें चितव्यूं, जाण्यूं करसूं सेवा सार ।।
मल्यो धणी मूने धामनो, सुफल करूँ अवतार ।। २५
जे मनोरथ मनमां, रह्यो मारा धणी श्रीराज ।
खरुं करतां खोटा मांहेंथी, पण नव सिध्यूं एके काज ।। २६
में मारूं बल जाण्यूं, हूँ तो छूँ अति मूढ ।
थाए सरवे धणी थकी, ते में कीधूं दृढ ।। २७
चाल—मूने दुख साले ए मन मांहें, नव जाए कह्यूं ते क्यांहें ।
गमे तमने तेहज थाए, बीजे सामूं कोणे न जोवाए ।। २८
ए दुख लाग्यूं मूने सही, ए उत्कंठा मारा मनमां रही ।
एणी दाभे ते मूने दही, निध हाथथी निसरी गई ।। २९
जाण्यूं लाभ मायानो लेसूं, निद्राने वासो देसूं ।
धणीने चरणे रेहेसूं, माया केहेसे ते सरवे सेहेसूं ।। ३०
एणे समे वली फेरवी लीधी, मायाए सिखामण दीधी ।
धणी थकी बेमुख कीधी, पाणीना जेम पीधी ।। ३१
एहेवो छल करी छेतरी, मन मूल मांहें थी फेरी ।
एणे तो आप सरीखी करी, चित चितवणी बहुविध धरी ।। ३२
मन माहें सवलूं देखे, जाणे माया सुख अलेखे ।
धणीना सुख ना पेखे, विष अम्रत लागे विसेखे ।। ३३
जुओ भूलवो छेतरे केम, आगे छेतरी मूने जेम ।
*सुकजी तो पुकारे एम, जे छल पुरी ए भरम ।। ३४
आंहीं सोहेली थई तम थकी, एहेने ओलखतूं कोए नथी ।
*सुकदेवें तो कांईक कथी, बीजा रह्या मथी मथी ।। ३५
एहेने निरमूल करी नाखी तमें, हजी जोपें जाणी नथी अमें ।
एहेना रमाड्या सहू रमे, मांहें बंधाणा सहू को भमे ।। ३६
ए वचन तो आहीं केहेवाए, जो अमे नव बंधाऊँ मायाए ।
एहना बंध पड्या सहू कायाए, अमे छूटा धणीनी दयाए ।। ३७

एम *चौद लोकमां कोई नव कहे, जे पार मायानों आ लहे ।
मोटी मत धणीमां रहे, बीजा भार पुस्तक केरा वहे ।। ३८

साखी—सास्त्र पुराण वेदांत जो, *भागवत पूरे साख ।
नहीं कथा ए दंतनी, सत वाणी ए वाक ।। ३९

आ वेराट माहें दीसे नहीं, पार वचन सुध जेह ।
लवो मुख बोलाए नहीं, तो केम पार पामे तेह ।। ४०

चाल—हवे मायानों जे पामसे पार, तारतम करसे तेह विचार ।
व्रह्मांड मांहें तारतम सार, एणे टाल्यो सहूनो अंधकार ।। ४१

लोक चौद मायानों फंद, सहू छलतणा ए बंध ।
समझा विना सहुए अंध, तारतम केहेसे सहू सनंध ।। ४२

नहीं राखूं संदेह एक, पैया काढ़ूं सहूना छेक ।
आ वाणी थासे अति विसेख, कहूँ पारना पार विवेक ।। ४३

न केहेवाए माया मांहें वाणी, पण साथ माटे केहेवाणी ।
साथ आवसे रुदें आंणी, ते में नेहेचे कह्या जाणी ।। ४४

भारे वचन छे निरधार, साथ करसे एह विचार ।
जो न कहूँ सतनो सार, तो केम साथ पोहोंचे पार ।। ४५

साखी—साथ मलीने सांभलो, जागी करो विचार ।
जेणे अजवालूं आ करयूं, परखो पुरुष ए पार ।। ४६

आपण हजी नथी ओलख्या, जुओ विचारी मन ।
विविध पेरे समझावियां, अने कही निध तारतम ।। ४७

नित प्रते सहू साथने, वालो दिए छे ए सार ।
दया करीने वरणवे, आपण आगल आधार ।। ४८

व्रजतणी लीला कही, वली विसेखे रास ।
श्री धामतणा सुख वरणवे, दिए निध प्राणनाथ ।। ४९

हवे एह धणी केम मूकिए, वली वली करो विचार ।
मूल बुध चेतन करी, धणी ओलखो आ वार ।। ५०

आ जोगवाई छे जाग्या तणी, अने विचार मांहें समझण ।
जे समझो ते जागजो, पण अवसर अरधो खिण ॥ ५१
आगे धणी पधारया अममां, अमें करी न सक्या ओलखांण ।
ए निखरपणे निध निगमी, थई ते अति घणी हांण ॥ ५२
आव्या धणी न ओलख्या, अमें भूल्या एणी भांत ।
विना विचारे न समझ्या, निगमी निध साख्यात ॥ ५३
चाल—जोए विचारिए एक वचन, तो अलगां थैऐ पासेथी केम ।
दीजे प्रदक्षिणा रात ने दिन, कीजे फेरो सुफल धंन धंन ॥ ५४
दीवें टाल्यो ज्यारे सुंन सोहाग, त्यारे पतंग पाम्यो वेराग ।
कां झंपावी ओलवे आग, कां कायानों करे त्याग ॥ ५५
जुओ जीवतणी ए रीत, नव छोड़े अंधेरनी प्रीत ।
धणी *अमारो *अक्षरातीत, अमें तोहे न समझा पतीत ॥ ५६
हवे घर मांहें ऊँचूं केम जोसूं, हंसी कही वात न करी वरसूं ।
ए धणी विना केने अनुसरसूं, हवे अमें रोई रोईने मरसूं ॥ ५७
ए अमारी वीतकनी विध, मूने मरडी कीधी बेसुध ।
अमने छेतरया एणी बुध, तो गई अखंड अमारी निध ॥ ५८
जो पाणी वल अलगां जाए, तो खिणमात्र वरसां सो थाए ।
धणी विना केम रेहेवाए, जो कांईक निध ओलखाए ॥ ५९
मीन जल विना जेणी अदाए, अंतर व्रह न खमाए ।
तो व्रह आपण केम सेहेवाए, जो एक लवो समझाए ॥ ६०
अमें व्रह धणीनो खम्या, जे दिन व्रथां निगम्या ।
अमें भरम मांहें भम्या, जो अगनी व्रह ना दम्या ॥ ६१
साखी—एणे मोहे माहूं करया, करी न सक्या विचार ।
सुनाई आवी सहूने, तो आडो आव्यो संसार ॥ ६२
जो विध लहूं वचननी, तो संसार अमने सूं ।
एणूं कांई चाले नहीं, जो ओलखूं आपोपूं ॥ ६३

आगल एम कह्यूं छे, जे आंधलो चाले सही ।
ज्यारे भटके भीत निलाटमां, तिहां लगे देखे नहीं ॥ ६४

ते तां अमने अनभव्यूं, अमें तोहे न जाणी सनंध ।
घन लाग्यो कपालमां, अमें तोहे अंधना अंध ॥ ६५

आंखां तोहे न उघडी, वाले कही अनेक विध ।
अंध अमें एवा थया, निगमी बेठा निध ॥ ६६

अंधने आंख रुदे तणी, पण अमने मांहें न बाहेर ।
तो निध खोई हाथथी, जो कीधूं नहीं विचार ॥ ६७

चाल—अंधने आंख रुदे तणी होए, पण अमने नव दीसे कोए ।
अमें तो रह्या निध खोए, टांणे भूल्या सूं थाए रोए ॥ ६८

गए अवसर सूं थाए पछे, धन गए हाथ सहू घसे ।
मांहें हांण बाहेर सहू हंसे, ते तो मांहेनी मांहे रडसे ॥ ६९

साथ ए पेर अमसूं थई, निध हाथ आवी करी गई ।
दिन घणां अम मांहें रही, अमें दुष्टें जाणी नहीं ॥ ७०

दुरमती करे तेम कीधूं, अमृत ढोलीने विष पीधूं ।
धणी सेहेजे आव्या सुख न लीधूं, कारज कोई नव सिध्यों ॥ ७१

हवे ए दुख केणे कहिए, अंग मांहें आतम सहिए ।
कीधूं पोतानुं लहिए, हवे दोष कोणे दैए ॥ ७२

तोहे धणिएं हाथथी मूक्या नहीं, तो वली आपणमां आव्या सही ।
ए निध मुखथी न जाए कही, आंहीं अम ऊपर दया थई ॥ ७३

धन गयूं ते आव्यूं वली, गयो अंधकार सहू टली ।
सुखना सागर माहें गली, एने बीजो न सके कोए कली ॥ ७४

हवे में सुख अखंड लीधां, मनना मनोरथ सीधां ।
वाले आप सरीखडा कीधां, फल वांछाथी अधिक दीधां ॥ ७५

साखी—कृपा कीधी अति घणी, वली आव्या ततकाल ।
तेहज वाणी ने तेहज चरचा, प्रेम तणी रसाल ॥ ७६

वली वचन सोहांमणा, वली वरणवनी विध विध ।
आव्या ते आनंद अतिघणे, ल्याव्या ते नेहेचल निध ।। ७७

ए निध निरमल अतिघणी, दिए साथने सार ।
कोमल चित करी लीजिए, जेम रुदें रहे निरधार ।। ७८

*पचबीस पक्ष छे आपणा, तेमां कीजे रंग विलास ।
प्रगट कह्या छे पाधरा, तमे ग्रहजो सहू साथ ।। ७९

आपणू धनतां एह छे, जे दिए छे आधार ।
रखे अधखिण तमे मूकतां, वालो कहे छे बारंबार ।। ८०

पक्ष पचबीस छे अति भला, पण ए छे आपणो धरम ।
साख्यात तणी सेवा कीजिए, ए रुदे राखजो मरम ।। ८१

चित ऊपर वली चालिए, धणी तणे वचन ।
ए वाणी तमे चित धरो, हूं कहूं छूं द्रढ करी मन ।। ८२

देई प्रदक्षिणा अति घणी, करूं डंडवत परणाम ।
सहू साथना मनोरथ पूरजो, मारा धणी श्री धाम ।। ८३

मनना मनोरथ पूरण कीधां, मारा अनेक वार ।
वारणे जाए *इंद्रावती, मारा आतमना आधार ।। ८४

।। प्रकरण ।। १ ।। चौपाई ।। ८४ ।।

माया गई पोताने घेर, हवे आतम तूं जाग्यानी केर ।
तो मायानो थयो नास, जो धणिएं कीधूं प्रकास ।। १

केम जाणिएं माया गई, अंतर जोत ते प्रगट थई ।
हवे आतम करे कांई बल, तो वाणी गाऊं नेहेचल ।। २

लघु दीरघ पिंगल चतुराई, एह तो किवनी छे बड़ाई ।
एनू अरथ हूं जाणू सही, पण आ निधमां ते सोभे नहीं ।। ३

मारे तो नथी कांई किवनुं काम, वचन केहेवा मारे धणी श्री धाम ।
जे आंहीं आवीने कह्या, गजा सारूं मारे चितमां रह्या ।। ४

साथ आगल कहीस हूं तेह, पेहेलां फेराना सनेह ।
धणिएं जे कह्या अमने, सांभलो साथ कहूं तमने ॥ ५

तमे जोपे ग्रहजो द्रढ मन करी, हूं तमने कहूं फरी फरी ।
साथ सकल ले जो चित धरी, हूँ वालोजी देखाडूं प्रगट करी ॥ ६

श्री देवचंद जी ने लागूं पाए, जेम दुस्तर जोपे ओलखाए ।
दई प्रदक्षिणा करूं परणाम, जेम पोहोंचे मारा मननी हाम ॥ ७

जेटली सनंध कही छे तमे, ते द्रढ करी सरवे जोईए अमें ।
लीला तमे कही अपार, तेह तणो नव लाधे पार ॥ ८

चौद भवन माया अंधार, पार नहीं मोटो विस्तार ।
तमने पूछूं समरथ सार, हूं केणी पेरे करूं विचार ॥ ९

तमे तारतमना दातार, अजवालूं कीधूं अपार ।
साथ तणां मनोरथ जेह, सरबे पूरण कीधां तेह ॥ १०

तारतमतणे अजवास, पूरण मनोरथ कीधां साथ ।
तमतणें चरण पसाए, जे उतकंठा मनमां थाए ॥ ११

जेटली मनमां उपजे वात, ते सहू आतम पूरे साख ।
मन जीवने पूछे जेह, त्यारे जीव सहू भाजे संदेह ॥ १२

ए निध बीजे कोणे न अपाए, धणी विना केहेने सामूं न जोवाए ।
एणें अजवालें थए सूं थाए, आ पोहोरामां धणी ओलखाए ॥ १३

आप तणी पण खबर पडे, घर पर आतम रुदें चढे ।
ए अजवालूं ज्यारे थयूं, त्यारे वली पाछूं सूं रह्यूं ॥ १४

ए सूं माया करे बल, फेरवे कल करे विकल ।
अजवालामां न रहे चोर, जागतां नव चाले जोर ॥ १५

जदीपें जीते विदचाए, पण एने अजाण्यूं न जाए ।
ज्यारे वालोजी साहे थाए, भख मारे त्यारे मायाए ॥ १६

ते माटे तमे सुणजो साथ, एक कहूं अनूपम वात ।
चरचा सुणजो दिन ने रात, आपणने त्रूठा प्राणनाथ ॥ १७

वचन कह्या ते मनमां धरो, रखे अधखिण पाछा ओसरो ।
आ पोहोरो छे कठण अपार, रखे विलंब करो आ वार ॥ १८

आ जोगवाई छे जो घणी, साहे आपणने थया धणी ।
जेठा आपण मांहें कहे, पण साथ मांहें कोई विरलो लहे ॥ १९

साथ मांहें आजवालूं थयूं, पण भरम तणूं अंधारूं रह्यूं ।
ते टालानों करूं उपाए, तो मनोरथ पूरण थाए ॥ २०

जे मनोरथ मनमां थाए, ततखिण कीजे तेणें ताए ।
आ जोगवाई छे पाणी वल, आपण करी बेठा नेहेचल ॥ २१

नेहेचल जोगवाई नहीं एने ठाम, अधखिणमां थाए कै काम ।
इंद्रावती कहें आ वार, निद्रा नव कीजे निरधार ॥ २२

॥ प्रकरण ॥ २ ॥ चौपाई १०६ ॥

राग मारू

भूंडा जीव जागजेरे

कांई धणी तणें चरण पसाए, तूं भरम उडाडजे रे ॥ १

आपण निद्रा केम करूं रे, निद्रानो नथी लाग ।
भरमनी निद्रा जे करे, कांई तेहेनो ते मोटो अभाग ॥ २

आ जोगवाई छे आपणी, नहीं आवे बीजी वार ।
हाथ ताली दीधे जाए छे, भूंडा कां न करे हजी सार ॥ ३

धणी रे आपणमां आवया, भूंडा कां नव जागे जीव ।
पेरे पेरे तूंने प्रीछव्यो, तूं हजी करे कां ढील ॥ ४

धणिएं धणवट जे करी, तूं तां जोने विचारी तेह ।
आ पापणीने पर हरी, तूं कां न करे सनेह ॥ ५

आपणने तेडवा आवया, आ दुस्तर माया मांहें ।
ओलखीने कां ओसरे, भूंडा एम थयो तूं कांए ॥ ६

धणिएं आपणसूं जे करी रे, तूं तां जोने विचारी मन ।
कोडी ते हाथथी परी करी, तूंने दीधूं छे हाथ रतन ॥ ७

जीवडा तूं धारन केही करे, भूंडा घुटचो दिन अनेक ।
जोवंतां जोगवाई गई, भूंडा हजिएं तूं कांए न चेत ॥ ८

आपण ऊपर अति घणी, दया करे छे आधार ।
आपणें काजे देह धरचा, भूंडा हजी तूं कां न विचार ॥ ९

भरम भूंडो तमे परहरो, जेम थाए अजवालूं अपार ।
वचन वालाजीतणे, तूं मूलगां सुख संभार ॥ १०

आ वालो ते आवया, ए सुखतणा दातार ।
आपण मांहें तेहज बेठा, जोई अजवालूं संभार ॥ ११

दुरमती तूं कां थयो, हूं तो पाडूं ते बुंब अपार ।
आंहीं आव्या न ओलख्या, पछे केही पेरे मोंहों उपाड ॥ १२

आंख उघाडी जो जुए, जीव लीजे लाभ अनेक ।
आंहीं पण सुख घणां माणिए, अने आगल थाए वसेक ॥ १३

आ अजवालूं जो जोईए, जीव तारतम मोटो सार ।
वालाजी ने ओलखे, तो तूं नव मूके निरधार ॥ १४

वालो वदेसी आवी मल्या, कांई आपणने आ वार ।
दुख मांहें सुख माणिए, जो तूं भरमनी निद्रा निवार ॥ १५

आ जोगवाई छे खिण पाणी वल, केटलूं तूंने केहेवाए ।
पण अचरज मूने एह थाए छे, जे जाण्यूं धन केम जाए ॥ १६

आगल आपण सूं करचूं, ज्यारे अजवालें थई रात ।
आ तां वालेंजीएं वली कृपा करी, त्यारे तरत थयो प्रभात ॥ १७

एवडी वात देखी करी, ते तां जोयूं तारी द्रष्ट ।
हजी तूं भरममां भूलयो, तूंने केटलूं कहूं पापिष्ट ॥ १८

अजवालें वालो ओलख्या, त्यारे पाछल रह्यूं सूं ।
जाणी बूझीने मूढ थयो, भूंडा एम थयो कां तूं ॥ १९

पेरे पेरे में तूंने कह्यूं रे, सुण रे धणीना वचन ।
अधखिण वालो न वीसरे, जो तूं जुए विचारी मन ॥ २०
अनेक वचन तूंने कह्या, मान एकनो करे विचार ।
अरध लवे तारो अरथ सरे, भूंडा एवडो तूं कां केहेवराव ॥ २१
हवे रे तूंने हूं जे कह्यूं, ते तूं सांभल द्रढ करी मन ।
पचबीस पक्ष छे आपणा, तेमां झीलजे रात ने दिन ॥ २२
ए मांहेंथी रखे नीसरे, पलमात्र अलगो एक ।
मनना मनोरथ पूरण थासे, उपजसे सुख अनेक ॥ २३
साख्यात तणी सेवा कर रे, ओलखीने अंग ।
श्री धाम तणा धणी जाणजे, तूं तां रखे करे तेमां भंग ॥ २४
मुखथी सेवा तूंने सी कहूं, जो तूं अंतर आडो टाल ।
अनेक विध सेवा तणी, तूंने उपजसे ततकाल ॥ २५
पेहेले फेरें आपण आवियां, ते तो वालें कह्यूं छे विवेक ।
ते तां लाभ लेईने जागियां, हवे आपण करूं रे विसेक ॥ २६
पेहेले फेरें थयूं आपणने, गौपद वछ संसार ।
एणे पगलें चालिए, जे तूं पेहेलो फेरो संभार ॥ २७
एटला माटे आ अजवालूं, वालेंजीऐं कीधूं आ वार ।
नरसैयां वचन प्रगट कीधां, कांई व्रज तणा विचार ॥ २८
कहें इंद्रावती नरसैयां वचन, जो जोईए करीने चित ।
धणिऐं जे धन आपयूं, कांई करी आपणने हित ॥ २९

॥ प्रकरण ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ १३५ ॥

राग धन्यासरी

प्रेम सेवा वाले प्रगट कीधी, व्रज तणी आ वार ।
वचन विचारीने जो जोईए, कांई नरसैयां तणा निरधार ।। १

श्री धामतणां साथ सांभलो, हूं तो कहूं छूं लागीने पाए ।
जे रे मनोरथ कीधां आपणे, ते पूरण एणी पेरे थाए ।। २

व्रजमां कीधी आपण वातडी, ते तां सघली मांहें सनेह ।
काम करतां अति घणों, पण खिण नव छोड्यो नेह ।। ३

विविध पेरे सिणगार जो करता, मन उलासज थाए ।
मनना मनोरथ पूरण करतां, रंग भर रैणी विहाए ।। ४

उठतां बेसतां रमतां, वालो चितथी ते अलगो न थाए ।
ज्यारे वन पधारतां, त्यारे खिण वरसां सो थाए ।। ५

मांहों मांहे विचारज करतां, वातज करतां एह ।
आतम सहूनी एकज दीसे, जुजवी ते दीसे देह ।। ६

निस दिवस वालाजीनी वातों, रामत करतां जाए ।
खिणमात्र जो अलगां थैऐ, तो विछोडो खिण न खमाए ।। ७

विविध विलास वालाजीसूं करतां, पूरण मनोरथ थाए ।
ज्यारे वाछरडा लेई वन पधारे, त्यारे रोवंता दिन जाए ।। ८

दाणलीलानी रामत करतां, माथें मही माखणनों भार ।
वचन रंगना उथला वालतां, रमतां वन मंझार ।। ९

व्रज नरसैऐं प्रगट कीधूं, अति घणें वचन विवेक ।
ए वचन जोईने चालिए, तो आपण थैऐ विसेक ।। १०

व्रजलीला अति मोटी छे, जो जो नरसैयां वचन प्रमाण ।
ए पगला सरवे आपणां, तमे जाणी सको ते जाण ।। ११

कहें इंद्रावती सुणो रे साथजी, इहां विलंब कीधांनी नहीं वार ।
ए अजवालूं कीधूं मारे वालें, आपणने आ वार ।। १२

।। प्रकरण ।। ४ ।। चौपाई ।। १४७ ।।

राग धन्यासरी

एणे पगलें आपण चालिए, पगला ए रे परमाण, सुंदर साथजी ।
पेहेले फेरें आपण जेम नीसरया, तमे जाण थाओ ते चित आंज ।
चित आंगीने रंग मांणो, सुंदर साथजी ।। १

रास नरसैएं रे नव वरणव्यो, मारे मन उत्कंठा एह ।
चरण पसाए रे वालातणे, तमे सांभलो कहूं हूं तेह ।। २

धणिएं जे रे वचन कह्या, ते में सांभलया रे अनेक ।
पण में रे मारा गजा सारूं, कांई ग्रह्या छे लवलेस ।। ३

सरद निसा रे पूनम तणी, आव्यो ते आसो रे मास ।
सकल कलानो चंद्रमां, एणी रजनीएँ कीधों रे रास ।। ४

रास तणी लीला कहूं, जे भरचा आपणें पाए ।
निमख न कीधी रे निसरतां, ततखिण तेणे रे ताए ।। ५

संझाने समे रे वेण बाईयो, कांई वृंदावन मोंझार ।
एणे समे सहू ऊभूं मूकयूं, तेहेने आडो न आव्यो रे संसार ।। ६

नहीं तो कुलाहल एवडो हुतो, पण चितडा वेध्या रे प्रमाण ।
साथ सहुए रे वेण सांभल्यो, बीजो श्रवण तणो गुण जांण ।। ७

कोए सखी रे हुती गाए दोहती, दूध घोणियों रे हाथ मांहें ।
एणे समे वेण थई वल्लभनी, पडी गयो घोणियों रे तेणे ताए ।। ८

कोई सखी रे काम करे घर मधे, आडो ऊभो ससरो पत जेह ।
वेण सुणी रे पाटू देई निसरी, एणी द्रष्टमां सरूप सनेह ।। ९

कोई सखी रे वात करे पतसूं, ऊभी धवरावे रे बाल ।
एणे समे वेण थई वल्लभनी, पडी गयो बाल तेणे ताल ।। १०

कोए सखी रे हुती प्रीसणें, हाथ थाली प्रीसे छे धान ।
एणे समे वेण थई वल्लभनी, पडी गई थाली ते तान ।। ११

कोए सखी रे एणे समे निसरतां, एक पग भांडां मांहें ।
बीजो पग पतना रुदे पर, एणी द्रष्टें न आव्यूं रे कोई क्यांहें ।। १२

कोए सखी रे वेगें वाछूटतां, पड्यो हडफटे ससरो त्यांहें ।
आकार बहेरे घणजे उतावला, चित जई बेठूं वालाजी मांहें ।। १३

मात पिता पत सासु ससरो, रोवतां न सुणियां रे बाल ।
वाएने वेगें रे वछूटियो, वेण सांभलतां तत्काल ।। १४

वस्तर विना सखी जे नाहती, तेणें नव संभारियां रे अंग ।
वेण सांभलतां रे वाला तणी, एणे वेगमां न कीधों रे भंग ।। १५

कोए सखी रे हुती नवरावती, हाथ लोटो नामे छे जल ।
सुणी स्वर पड्यो लोटो अंग ऊपर, न बोलानूं चितडे व्याकुल ।। १६

गौंपद बछ रे एणे समे, सुकजीएं निरधारयो ते सार ।
त्राटकडे रे त्रटका करया, कांई बंधडा हता जे संसार ।। १७

संसार तणा रे काम सरवे करतां, पण चित्तमां न भेदयो रे पास ।
विलंब न कीधी रे बछूटतां, ए तामसियोंना प्रकास ।। १८

कोए सखी रे सिणगार करतां, सुणी तेणे वेण श्रवण ।
पाएना भूषण काने पेहेरया, कान तणां रे चरण ।। १९

एक नैणे रे अंजन करयो, बीजो रह्यूं रे एम ।
वेणनो स्वर सांभल्या पछी, राजसियों रहे रे केम ।। २०

राजसिएं रे कांईक नैणे डीठो, पण विचार करे तो थाए वेल ।
तामसियों रे मोहोवड थैयो, राजसिएं न मूक्यो तेहेनो केड ।। २१

स्वांतसिएं रे विचार करयो, तेने आडा देवराणां रे वार ।
कुटम सगा रे सहू टोले मल्या, फरीने वल्या भरतार ।। २२

त्यारे मनमां वचन विचारयां, ए कां आडा थाए दुरिजन ।
ए सूं जाणे वर नहीं एणूं वालैयो, तो जातां वारे छे वन ।। २३

धिक धिक पडो रे संसारने, कां न उठे रे अगिन ।
व्रह तामस रे भेलो थयो, त्यारे अंगडा थया रे पतन ।। २४

वासनाओं बहियो रे वेगमां, वार न लगी रे लगार ।
वस्त खरी रे केम रहे वाला विना, तेणे साथ समो कीधों सिणगार ।। २५

व्रजवधू कुमारकाओंनी, कही नहीं सुकजीएं विगत ।
ते केम संसे राखूं साथने, तेनी करी देऊं जुजवी जुगत ॥ २६
जेटली नाहती कातिक कुमारिका, ए वासना नहीं उतपंन ।
एनी लज्या लोपावी हरीने वस्तर, तेसूं कीधों वाएदो वचन ॥ २७
जे सखी हुती *कुमारका, घर नहीं तेहेना अंग ।
सनेह बल दया लीधी धणीतणी, ते मलीने भली साथने रंग ॥ २८
साथ दोडे रे घणवें आकलो, मननी न पोहोंती हाम ।
*जोगमाया सामी आवी जुगतसूं, सिणगार कीधों एणे ठाम ॥ २९
सुणोजी साथ कहें इंद्रावती, जोगमायानों जुओ विचार ।
ए केणी पेरे हूं वरणवूं, साथ तणो सिणगार ॥ ३०
वचन धणीतणां में सांभल्या, मारा गजा सारूं रे प्रमाण ।
एक स्यामाजीने वरणवूं, बीजो साथ सकल एणी पेरे जाण ॥ ३१

॥ प्रकरण ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ १७८ ॥

## श्री ठकुराणीजीनों सिणगार

### राग धन्यासरी

अखंड सरूपनी अस्थिर आकारे, सोभा कहूं घणवे करीने सनेह ।
जोई जोई वचन आंणूं कै ऊंचा, पण न आवे वाणी मांहें तेह ।
सोभा सिणगार, स्यामाजीनों निरखूंजी ॥ १
ए सोभा न आवे वाणी मांहें, पण साथ माटे केहेवाणी ।
ए लीला साथना रुदेमां रमाडवा, तो में सबदमां आणी ॥ २
चरण अंगूठा अति भला, पासे कोमल आंगलियों सार ।
रंग तो अति रलियामणो दीसे, नख हीरा तणां झलकार ॥ ३
हीरा ते पण तेहज भोमना, आ जिभ्या तिहां न पोहोंचाए ।
आंणी जिभ्याएं जो न कहूं साथने, तो रुदे प्रकास केम थाए ॥ ४

फणा तो रंग पतंग छे, कांकसा नसो निरमल निरधार ।
कूंकम रंगे पाणी सोभे, चरण तली वली सार ॥ ५

लांक तो दीसे अति लेहेकतो, रेखा सोभित अति पाए ।
टांकण घूंटीने कांडा कोमल, पींडी ते वरणवी न जाए ॥ ६

कुंदन केरा अनवट सोहे, विछुडा करे ठमकार ।
मानक मोती ने नीला पांना, जुगते अति जडाव ॥ ७

कांबी कडला रण भ्रण बाजे, घूंघरी तणां घमकार ।
हेम तणां वाला मांहें गंठया, भ्रांभ्रर तणां भ्रमकार ॥ ८

कांबिएं नंग आसमानी फूल वेल, जुगते कुंदन जडाव ।
जडाव लाल नंग नीला पीला, कडले सोभा अति थाए ॥ ९

घूंघरडीनों घाट जुगतनों, कोरे करडा कुंदन ।
मांहें मोती फरतां दीसे, मध्य जड्या नीला नंग ॥ १०

भ्रांभ्ररिया एक जुई जुगतना, कोरे लाल जडाव कांगरी ।
एक हार बे हीरा तणी, बीजी मध्य दरपण रंग दोरी ॥ ११

भूषण चरणे सोभंता, अने बोलंतां रसाल ।
जुजवी जुगतना जवेरज दीसे, करे ते अति भ्रलकार ॥ १२

वस्तर केणी पेरे वरणवुं, एतां साएर अति सरूप ।
मारा जीवनी खेवना भाजवा, हूं तो कहूं गजा सारूं कूप ॥ १३

नीली ते लाहिनो चरणियो, अने मांहें कसवनी भांत ।
कोरे कोरे कांगरी, इंद्रावती जुए करी खांत ॥ १४

कांगरी केरी जुगत जोईए, द्रढ करीने मन ।
माणक मोती हीरा कुंदन, नीला ते पांच रतन ॥ १५

भांत तो भली पेरे वरणवुं, मांहें वेल सुनेरी सार ।
वस्तर समियल बनियल दीसे, नव सूभ्रे कोए तार ॥

अनेक विधना फूलज दीसे, मांहें जवेर तणां भ्रलकार ।
नाडी तो अति सोभा धरे, जेमां रंग दीसे अग्यार ॥ १७

नीलो पीलो सेत सेंदुरियो, मांहें कसबनी भांत ।
स्याम गुलालियों अने केसरियों, मांहें जांबू ते रंगनी जात ॥ १८

जुगत एक वली जुई छे, ऊभी लाखी लिबोईनी दोर ।
मानकदे द्रढ करीने जुए, सोभित बंने कोर ॥ १९

चीण चरणिऐं जोईए, मांहें वेल मोती झलकंत ।
राती नीली चुंनी कुंदनमां, भली पेरे मांहें भलंत ॥ २०

ए ऊपर जे सोभा धरे, कांई तेहेनो न लाभे पार ।
अंग चरणियों प्रगट दीसे, साडी माहे सिणगार ॥ २१

छूटक छापा कुंदन केरा, साडी सेंदुरिऐं रंग ।
हीरा माणक मोती लसणियां, मध्य पांच वाणीना नंग ॥ २२

सोभा तो घणुऐं सोहांमणी, जो द्रढ करी जोईए मन ।
झीणा वस्तर ने अति उतम, कांनिऐं दोरी त्रण ॥ २३

मांहें मोती कोरे कसबी, त्रीजी नीली चुंनी सार ।
अनेक विधनी वेल जो सोभे, छेडे करे झलकार ॥ २४

सुंदर लांक सोहांमणों, वासो दीसे साडीमां अंग ।
वेंण तले कंचुकीनो कसो, जुगते सोहे बंध ॥ २५

अंगनो रंग निरख्यो न जाए, क्यांहें न माए क्रण क्रांत ।
पेट पांसा उर कंठ निरखतां, इंद्रावती पामे स्वांत ॥ २६

अंगनो रंग अजवास धरे, तिहां स्याम चोली सोभावे ।
सुंदर सरव सिणगार सोहावे, तहां लेहेर भूषण क्रण आवे ॥ २७

कसकसती चोली ने कठण पयोधर, पीला खडपा सोभंत ।
कस ठामे जे कांगरी, तहां नीला जवेर झलकंत ॥ २८

भरत भली पेरे सोभित, कांई पचरंग चुंनी सार ।
अनेक विधना फूल वेल, खसबोए तणां वेहेकार ॥ २९

कंचुकी जडाव छे जुगत जुजवी, ऊपर आभरण भली भांत ।
सुंदर सरूप जोई जोईने, मारो जीव थाए निरांत ॥ ३०

कंठ केणी पेरे वरणवुं, मारा जीवने नथी कांई बल ।
पांच हार तिहां प्रगट दीसे, सोभित दोरे वल ॥ ३१
एक हार हीरा तणो, बीजो पांच वरण रतन ।
त्रीजो हार मोती निरमलनो, कांई चौथो हेम कंचन ॥ ३२
हेम तणो हार जुई रे जुगतनो, नव सर नव पाटली ।
जडाव हीरा पाच रतन मोती, मांहें माणक ने नीलवी ॥ ३३
उतरी त्रण सर सोभंती, कांई दोरो जडित अचंभ ।
हूं केणी पेरे वरणवुं, मारी जिभ्या आंणे अंग ॥ ३४
कंचुकीना कांठला ऊपर कोरे, दोरे तेज अपार ।
सात रंगना नंग पाधरा, जोत करे झलकार ॥ ३५
मांहें मोती माणक हीरा, पाना ने पुखराज ।
कुन्दन मांहें रतन नंग झलके, रमवा सुंदरी करे साज ॥ ३६
कांठले माणक ने वली मोती, कुन्दन मांहें पांना नंग ।
चीडतणी चारे सर सोभे, कोई धात वसेकना रंग ॥ ३७
ए ऊपर वली निरखी जोईए, तो कंठसरी भली गई अंग ।
कंठसरी केरी कली जुजवी, कांई जुजवा छे तेहेना नंग ॥ ३८
कंठसरी जडाव जुगतनी, मांहें राती नीली जवेरोंनी हार ।
सकल सिणगार स्यामाजीने सोभे, कुन्दनमां मोती झलकार ॥ ३९
नख थकी कर वरणवुं, एह जुगत अति सार ।
आंगलियों अंगूठा कोमल, नख हीरा तणा झलकार ॥ ४०
झीणी रेखा हथेलिएं दीसे, पोहोंचा सोभित पतंग ।
आंगलिएं बीसा बीस दीसे, कोमल कलाई अति रंग ॥ ४१
वीटी जडाव छे छो आंगलिएं, सातमी अंगूठी सार ।
आभलियो ने फरतां पांना, दरपणमां मूख झलकार ॥ ४२
बे वीटी ने हीरा मोती, बीजी बे रंग बे रतन ।
पांच रंगनी पाच एकने, एकने करडा कंचन ॥ ४३

पोहोंची ने नवघरी दीसे, ऊपर ऊँचा नंग ।
माणक मोती पांना कुन्दन, ए सोभे पोहोंचीना नंग ॥ ४४
नवघरी ने निरमल मोती, हीरा ने रतन ।
कुन्दन मांहें पांना पुखराज, चूड मांहें नव रंग ॥ ४५
नव रंगना नंग जुजवा, तेहेना ते जुजवा रूप ।
हूं मारी बुध सारूं वरणवुं, पण एह छे अदभूत ॥ ४६
नीलवी लसनियां सोभित, पांना ने वली लाल ।
माणक मोती हीरा कुन्दन, मांहें रतन तणां झलकार ॥ ४७
कोणी आगल कांकणी, जांबू रंग नंग जडाव ।
कुन्दनना करकरियां सोंभे, जोत करे अपार ॥ ४८
मोहोलिएं मोतीनी कांगरी, नीली राती चुंनी कुन्दन ।
वेल मांहें हीरा हार दीसे, इंद्रावती जुए द्रढ मन ॥ ४९
सुंदरने सोभे अति जुगते, झणबाजे रसाल ।
चूड केरा छापा अति सोभे, उर पर लटके माल ॥ ५०
गाल तणो रंग कह्यो न जाए, अधुर परवालीनी भांत ।
दंत सोभे रंग दाडिमनी कलियो, हरवटी अधुर वचे लांक । ५१
मुख चौक सोभित अति मांडनी, अने झलके काने झाल ।
जडाव माणक मोती ने हीरा, कुन्दनमां पांना लाल ॥ ५२
नासिका वेसर लाल मोती लटके, आंखडिएं अंजन सोहे ।
पापन चलवे ने पीउजीने पेखे, चतुराईए मन मोहे ॥ ५३
नयणां चपल अति अणियाला, ने रेखा सोभित मांहें लाल ।
बेहूगमा भ्रकुटीनी सोभा, टीलडी ते मध्य गुलाल ॥ ५४
मारा साथ सुणो एक वातडी, आ सरूप ते केम वरणवाए ।
एक भूषणतणी जो भांत तमे जुओ, तो आंणे देह जीव न खमाए ॥ ५५
एक वेसर ऊपर लालज दीसे, लालकनो न लाभे पार ।
जेटला मांहें मीट फरीवले, एटले दीसे झलकार ॥ ५६

खीटलडी जडाव भली पेरे, मांहें लाल हीरा सुचंग ।
माणक मोती हीरा पांना, मांहें पांच वाणीना नंग ।। ५७
करण लवने जे सोभा धरे, ऊपर साडीनी कोरे ।
सणगटडा मांहें पीउजीने पेखे, आडी द्रष्टें हेरे ।। ५८
निलवट वेणा चोकडो, पांच मोती तिहां सोभे ।
लाल पाच कुंदन मांहें सोभित, जोई जोईने जीव थोभे ।। ५९
पटली सामी छे फूली दीसे, मध्य सेंदुरनी रेखे ।
बेहूगमां मोती सर सोभे, इंद्रावती खांत करी पेखे ।। ६०
चार फूली ते फरती दीसे, बे फूली अणियाली ।
मध्य लाल मोती फरतां पांना, ए जुगत क्यांहें न भाली ।। ६१
राखडलीमां रतन नंग झलके, हीरा पांना बेहू भांत ।
माणक मोती फरतां सोभे, वेण चुए गूंथी अख्यात ।। ६२
पांच रंगना पांचे फुमक, सोहे मूल वेंगने बंध ।
गोफणडे फुमक जे दीसे, तेहनो स्याम कसबी रंग ।। ६३
गोफणडे घूघरडी फरती, बोलंती रसाल ।
फरतां पांना दोरी बंध सोभे, वेंग लेहेके जेम व्याल ।। ६४
मुख मांहें बीडी तंबोलनी, मंद मरकलडो सोभे ।
इंद्रावती नयणेसूं निरखे, अति घणूं करीने लोभे ।। ६५
मुखडूं निहाले अंगूठीमां, सोभा धरे सरवा अंग ।
सणगटडो सिणगार सोभावे, श्री कृस्नजी केरी अरधंग ।। ६६
मुखथी वाणी जे ओचरे, कांई ए स्वर अति रसाल ।
एक मात्र कणका जो वर्दे आवे, तो थाए फेरो सुफल संसार ।। ६७
सुख्यम सरूप ने उनमद अंगे, केणी पेरे ए वरणवाए ।
मारी बुध सारूं हूं वरणवुं, इंद्रावती लागे पाए ।। ६८
पांउं भरे एक भांतसूं, स्यामाजी सोभे एणी चाल ।
जीव निरखीने नेत्र ठरे, इंद्रावती लिए रंग लाल ।। ६९

ए सिणगार जोईए ज्यारे निरखी, त्यारे सूं करे मायानों पास ।
साथ सकल तमे जो जो विचारी, वली ते आव्या साख्यात ॥ ७०
सुंदर सोभा स्यामाजी केरी, निरखी निरखी ने निरखुं ।
अंतर टालीने एक थया, इंद्रावती कहे हूं हरखुं ॥ ७१

॥ प्रकरण ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ ३४६ ॥

## श्रीसाथनों सिणगार

### राग धन्यासरी

जोगमायानों देह धरीने, श्री स्यामाजी थया तैयार ।
ततखिण तिहां तेणे ठामे, मारे साथें कीधों सिणगार ॥ १
सोभा सागर साथ तणी, केणी पेरे ए वरणवाए ।
हूं रे अबूझ कांई घणूं नव लहूं, एनों निरमाण केम करी थाए ॥ २
कोटान कोट जाणे सूरज उदया, ब्रह्मांड न माए झलकार ।
प्रघलपूर जाणे सायर उलटयो, एक रस थई सरवे नार ॥ ३
एक नखतणी जो जोत तमे जुओ, तेमां कैने सूरज ढंपाए ।
केम करी सोभा वरणवुं रे सखियो, मारो सबद न पोहोंचे त्यांहें ॥ ४
वली गुण जो जो तमे नखतणां, हूं तेहनों ते कहूं विचार ।
सूरज द्रष्टें तापज थाए, आंगे अंग उपजे करार ॥ ५
साथतणी रे साड़ियों ज्यारे जोईए, तेमां रंग दीसे अपार ।
अनेक विधना जवेरज दीसे, करे ते अति झलकार ॥ ६
तेवा सरूप ने तेवा भूषण, तेज तणां अंबार ।
ए अजवालूं ज्यारे जीव जुए, त्यारे सूं करे संसार ॥ ७
मांहों मांहें वालाजीनी वातों, बीजो चितमां नथी उचार ।
ततखिण वेण सांभलतां वल्लभ, खिण नव लागी वार ॥ ८
मन उमंग वालाजीसूं रमवा, आयत अति घणी थाए ।
आनंद मांहें अति उजाए, धरणी न लागे पाए ॥ ९

भूषण स्वर सुहामणां, मुख वाणी ते बोले रसाल ।
ए स्वरने ज्यारे श्रवणा दीजे, त्यारे आडो न आवे पंपाल ॥ १०
साथ सकल मारा वाला पासे आव्यो, मन आंणी उलास ।
विविध पेरे वालाजीसूं रमवा, चितमां नथी मायानों पास ॥ ११
रस भर रंग वालाजीसूं रमवा, उछरंग अंग न माए ।
इंद्रावती बाई कहें धामना साथने, हूं नमी नमी लागूं पाए ॥ १२

॥ प्रकरण ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ २६१ ॥

## *श्रीराजजीनों सिणगार

पेहेलो सिणगार कीधों मारे वालेंजीएं, तेहेनो ते वरणवुं लवलेस ।
पछे संवाद *वालाजी साथनो, ते मारी बुध सारूं कहेस ॥ १
सोभा रे मारा *स्याम तणी, सखी केणी पेरे वरणवुं एह ।
सवदातीत मारा वालाजीनी सोभा, मारी जिभ्या आंणी देह ॥ २
चरण तणां अंगूठा कोमल, नख हीरा तणां झलकार ।
रंग तो जोई जोई मोहिए, पासे कोमल आंगलियों सार ॥ ३
फणा नसो अने कांकसा, अति रंग घणूं रे सोहाए ।
जीव थकी अलगां नव कीजे, राखिए चरण चित मांहें ॥ ४
चरण तले पदमनी रेखा, करे ते अति झलकार ।
पाणी लांक लाल रंग सोभे, इंद्रावती निरखे करार ॥ ५
टांकन घूंटी ने कांडा कोमल, कांबी कडला बाजे रसाल ।
घूंघरडी घम घम स्वर पूरे, मांहें झांझर तणो झमकार ॥ ६
कांबी कडला जुगते जडिया, सातवाणी नंग सार ।
लाल पांना हीरा माणक नीलवी, कुन्दनमां मोती झलकार ॥ ७
झांझरियां जडाव जुगतना, करकरियां सोभंत ।
घूंघरडी करडा जडतरमां, झलहल हेम करंत ॥ ८

कणक तणां वाला मांहें गंठिया, निरमल नांकां झलकंत ।
झांझरियांमां जुगते जडियां, भली पेरे मांहें भलंत ।। ९

पीडी ऊपर पाएचा, ने झीणी कुरली झणवार ।
केसरिए रंग सूथनी, इंद्रावती निरखे करार ।। १०

मोहोलिएँ मोती ने वली नेफे, वेल टांकी बेहू भांत ।
नाडी मांहें नव रंग दीसे, माणकदे जुए करी खांत ।। ११

सेत स्याम ने सणिएँ सेंदुरिए, कखूंवर बंने कोर ।
नीलो पीलो जांबू गुलालियों, ए सोभा अति जोर ।। १२

पीली पटोली पेहेरी एक जुगते, मांहें विविध पेरे जडाव ।
जीव तणों जीवन ज्यारे जोईए, त्यारे नव मूकाए लगार ।। १३

कोरे वेल जडाव जुगतनी, मध्य जडावना फूल ।
जडाव झलहल जोर करे, चीर कानियांनी कोरे मस्तूल ।। १४

माणक मोती ने नीली चूंनी, फूल वेल मांहें झलकंत ।
सोभा मारा स्यामजीनी जोई जोई जोईए, मारी तेणे रे काया ठरंत ।। १५

नीलो ने कांई पीलो दीसे, कणा तणो रंग जेह ।
कांणी छेडा जडाव जुगते, लवलेस कहूं हूं तेह ।। १६

छेडे हेम हीरा ने पुखराज पांना, कोरे माणक नीलवी ने मोती ।
कांणी छेडा जुजवी जुगतें, इंद्रावती खांत करी जोती ।। १७

अंगनो रंग कह्यो नव जाए, जाणे तेज तणो अंबार ।
पेट पांसा उरकंठ निरखतां, इंद्रावती पामे करार ।। १८

रतन हीराना वे हार दीसे, त्रीजो हेम तणो जडाव ।
चौथो हार मोती निरमलनो, करे जुजवी जुगत झलकार ।। १९

उतरी जडाव सर बे सोभंती, चंनी राती नीली जुगत ।
निरखी निरखी ने नेत्र ठरे, पण केमे न पामिए त्रपत ।। २०

रंग सेंदुरिएँ पछेडी, अने मांहें कसवनी भांत ।
छेडे तार ने कसवी कोरे, इंद्रावती जुए करी खांत ।। २१

अंग ऊपर आंणी बंने चौकडी, छेडा बंने पांसे लटकंत ।
नवल वेष लीधों एक भांतनों, जोई जोईने जीव अटकंत ॥ २२
कोमल कर एक जुई रे जुगतना, जो वली जोईए रंग ।
झलकत नख अंगूठा आंगलियों, पोहोंचा कलाई पतंग ॥ २३
झीणी रेखा हथेली आंगलिऐं, सात वीटी सोभंत ।
त्रण वीटी ऊपर नंग दीसे, अति घणूं ते झलकंत ॥ २४
अंगूठिऐं लाल चूंनीनी जडतर, बे वीटी हीरा रतन ।
एक वीटी ने नीलू पांनूं, बीजा बांकडा वेलिया कंचन ॥ २५
कोमल कांडे कडली सोभे, नीली जडित अति सार ।
कडली पासे पोहोंची घणूं ऊँची, करे ते अति झलकार ॥ २६
मध्य माणक ने फरतां मोती, पाच तणो नीलास ।
किरण ज्यारे उठतां जोईए, त्यारे जोत न माए आकास ॥ २७
कोमल कोणी चंदन अंग चरचित, मणि जडित बाजूबंध ।
कंचन कसबी फुमक बेहू लटके, सूं कहूं सोभा सनंध ॥ २८
जोइए मुखारविंद गाल बंने गमां, तेज कह्यो नव जाए ।
अधख्यण जो अलगां रहिए, त्यारे चितडा उपापला थाए ॥ २९
हरवटी सोहे हंसत मुख दीसे, वली जोईए अधुरनो रंग ।
दंत जाणे दाडिमनी कलियों, अधुर परवालीनों भंग ॥ ३०
मुख ऊपर मोती निरमल लटके, वेसर ऊपर लाल ।
काने करण फूल जे सोभा धरे, ते तां झलके मांहें गाल ॥ ३१
करण फूल छे अति घणूं ऊँचा, राती नीली चुंनी सार ।
निरखी निरखी जीव निरांते, मांहें मोतीडा करे झलकार ॥ ३२
खीटलडी वालाजी केरी, जीव करे जोयानी खांत ।
माणक मोती हीरा पुखराज, कुंदन मांहें जडिया भांत ॥ ३३
आंखडली अणियाली सोभे, मध्य रेखा छे लाल ।
निरखत नयण कोडामणां, जीवने ताणी ग्रहे ततकाल ॥ ३४

मीठी पापन चलवे एक भांते, तारे तेज अपार ।
बेहूगमां भ्रकुटीनी सोभा, इंद्रावती निरखे करार ॥ ३५
निलवट सोभे तिलकनी रेखा, नीली पीली गुलाल ।
बेहूगमां सुन्दर ने सोभे, रेखा मध्य बिंदका लाल ॥ ३६
मस्तक मुकट सोहांमणों, कांई ए सोभा अति जोर ।
लाल सेत ने नीली पीली, दोरी सोभित चारे कोर ॥ ३७
ए ऊपर जव दाणानी सोभा, एह जुगत अदभूत ।
ते ऊपर वली फूलोंनी जडतर, तेणां केम करी वरणवुं रूप ॥ ३८
बीजा अनेक विधना फूल दोरी बंध, करे जुजवी जुगत झलकार ।
माणक मोती हीरा पुखराज, पिरोजा पांना पांचो सार ॥ ३९
लाल लसणियां नीलवी गोमादिक, साढ सोलू कंचन ।
फूल पांखड़ियों मनि जवेरनी, मध्य जड्या रतन ॥ ४०
मुकट ऊपर ऊभी जवेरोंनी हारों, तेमां रंग दीसे अपार ।
अनेक विधनी किरणज उठे, ते तां ब्रह्मांड न माए झलकार ॥ ४१
चार हारना चारे फुमक, तेहेना जुजवी जुगतना रंग ।
लाखी लिबोई ने स्याम सेत, सुंदर ने ए सोभंत ॥ ४२
वेंण गूंथी एक नवल भांतनी, गोफणडे विविध जडाव ।
फरती फरती घूंघरडी, ने बोलंती रसाल ॥ ४३
गोफणडे फुमक जे दीसे, तेनो लाल कसवी रंग ।
जडाव मांहें माणक ने मोती, पांना पुखराज नंग ॥ ४४
वासा ऊपर वेंण लेहेकती, सोभा ते वरणवी न जाए ।
खुसबोए मांहें रंग भीनो, बीडी तंबोल मुख मांहें ॥ ४५
नवल वेष ल्याव्या एक भांतना, कसवटिऐं बांसली लाल ।
अधुर धरीने ज्यारे वेण वगाडे, त्यारे चितडा हरे तत्काल ॥ ४६
वेण तणी विगत कहूं तमने, कोरे कांगरी जडाव ।
मोहोवड नीला मध्य लाल, छेडे आसमानी रंग सोहाए ॥ ४७

वस्तर वरणव्या सबद माहें सखियो, वली वरणवी भूषणनी भांत ।
रेसम हेम कह्या में जवेरना, पण ए छे वसेक कोए धात ॥ ४८

सज थया सिणगार करीने, रास रमवानूं मन मांहें ।
साथ सकल मारा पिउ पासे आव्यो, इंद्रावती लागे पाए ॥ ४९

दई प्रदख्यणा अत घणी, साथें कीधां डंडवत परणाम ।
हवे करसूं रामत रंग तणी, अने भाजसूं हैडानी हाम ॥ ५०

॥ प्रकरण ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ ३११ ॥

उथला—राग मेवाडो

हवे वालैयो वाणी एम उचरेजी, कहे सांभलजो सहू साथ ।
पतिव्रता स्त्री जे होए, ते तो नव मूके घर रात ॥

रे सखियो सांभलो ॥ १

तमे साथ सकल मली सांभलो, हूं वचन कहूं निरधारजी ।
तमे वेण मारो श्रवणे सुण्यो, घर मूक्या ऊभा वारजी ॥ २

कुसल छे कांई *व्रजमांजी, केम आवियो आणी वेरजी ।
उतावलियों उजाणियोंजी, कांई मूक्या कारज घेरजी ॥ ३

किहे रे परियाणे तमें निसरचाजी, कांई जोवा वृंदावंन ।
जोयूं वन रलियामणूं, कांई तमे थया प्रसंन ॥ ४

हवे पुरे पधारो आपणेंजी, कांई रजनी ते रूप अंधार ।
निसाचारी जीव वोलसेजी, त्यारे थासे भयंकार ॥ ५

निसाएं नारी जे निसरेजी, कांई कुलवंती ते न केहेवाए ।
न्यात पर न्यात जे सांभलेजी, कांई चेहेरो तेमां थाए ॥ ६

सखियो तमे तो कांई न विमासियूंजी, एवडी करे कोई वात ।
अणजाणे उठी आवियूंजी, कांई सकल मलीने साथ ॥ ७

ससरो सासु मात तातनीजी, कांई तमे लोपी छे लाज ।
तमे सरम न आंणी केहेनी, तमें ए सूं कीधूं आज ॥ ८

तमे पति तो तमारा ऊभा मूकियांजी, कांई रोता मूक्यां बाल ।
ए वचन सुणीने विनता टलवली, कांई भोम पडियो तत्काल ॥ ९

तेमां केटलीक सखियो ऊभी रहियो, कांई द्रढ करीने मन ।
बाई बांक हसे जो आपणोजी, तो वालोजी कहे छे वचन ॥ १०

वचन वाले सामा तामसियों, राजसियों फडकला खाए ।
स्वांतसिऐं बोलाए नहीं, ते तां पडियो भोम मुरछाए ॥ ११

एणे समे मही सखी ऊभी रही, कहे सांभलो धणीना वचन ।
सखियो कुलाहल तमे कां करोजी, कांई ऊभा रहो द्रढ करी मन ॥ १२

सखियो भूलां छूं घणवें आपणजी, अने वली कीजे सामा रुदन ।
कलहो करो भोमे पडोजी, कां विलखाओ वदन ॥ १३

पीउजी पधारचा प्रभातमां, आपण आव्या छूं अत्यारे ।
ते पण तेडीने वाले काढियां, नहीं तो निसरतां नहीं क्यांरे ॥ १४

पाछल आपण केम रहूं, जो होए कांई वालपण ।
केम न खीजे वालैयो, ज्यारे सेवा भूल्या आपण ॥ १५

*वालाजी केहेवुं होए ते केहेजो, कांईं अमने निसंक ।
अमे तम आगल ऊभा छूं, कांई रखे आंणो ओसंक, वालैयो सांभलो ॥ १६

सखियो तम माटे हूं एम कहूं, कांई तमारा जतन ।
रखे कोए तमने बांकूं कहे, त्यारे दुख धरसो मन ॥ १७

सखियो तमे जेम घर ऊभा मूकियां, तेम माणस न मूके कोए ।
एम व्याकुल थई कोई न निसरे, जो ग्यान रुदेमां होए ॥ १८

सखियो तमे पाछा वलो, अधखिण म लावो वार ।
मनडे तमारे दया नहीं, घेर टलवले छे बाल ॥ १९

ए धरम नहीं नारी तणोंजी, हूं कहूं छूं बारंबार ।
हवे घरडे तमारे सिधाविएजी, घेर बाटडी जुए भरतार ॥ २०

वालैया हजी तमारे केहेवुं छे, के तमे कहीने रह्या एह ।
ते सरबे अमे सांभल्यूंजी, तमे कह्यूं जुगते जेह ॥ २१

सखियो हजी मारे केहेवुं छे, तमे श्रवणा देजो चित ।
मरजादा केम मूकिए, आपण चालिए केम अनित ।। २२

हवे वली कहूं ते सांभलो, कांई मोटूं एक द्रष्टांत ।
वेद पुराणे जे कह्यूं, कांई तेहेनूं ते कहूं व्रतांत ।। २३

भवरोगी होए जनमनो, जो एहेवो होए भरतार ।
तोहे तेणे नव मूकवो, जो होए कुलवंती नार ।। २४

जो पत होए आंधलो, अने वली जड होए अपार ।
तोहे तेणे नव मूकवो, जो होए कुलवंती नार ।। २५

जो पत होए कोढियो, अने कलहो करे अपार ।
तोहे तेणे नव मूकवो, जो होए कुलवंती नार ।। २६

जो पत होए अभागियो, अने जनम दारिद्री अपार ।
तोहे तेणें नव मूकवो, जो होए कुलवंती नार ।। २७

जो पत होए पांगलो, बीजा अवगुण होए अपार ।
तोहे तेणे नव मूकवो, जो होए कुलवंती नार ।। २८

खोड होए भरतारमां, अने मूरख होए अजाण ।
तोहे तेणे नव मूकवो, एम कहे छे वेद पुराण ।। २९

ते माटे हूं एम कहूं, जे नव मूकवो पत ।
ततख्यण तमे पाछा वलो, जो रुदें होए कांई मत ।। ३०

हवे साथ कहे अमें सांभल्या, कांई तमारा वचन ।
हवे अमें कहूं ते सांभलो, कांई द्रढ करीने मन ।। ३१

पत तो *वालैयो अमतणो, अमें ओलखियो निरधार ।
वेण सांभलतां तमतणी, अमने ख्यणनव लागी वार ।। ३२

अमें पीहर पख नव ओलखूं, नव जाणूं सासर वेड ।
एक जाणूं मारो वालैयो, नव मूकूं तेहेनी केड ।। ३३

पत तो केमे नव मूकवो, तमे अति घणूं कह्यूं रे अपार ।
तमे साख पुरावी वेदनी, त्यारे केम मूकूं आधार ।। ३४

तमे कह्युं पत नव मूकवो, जो अवगुण होए रे अपार ।
तमे रे तमारे मोंहें कह्युं, तमे न्याय रे कीधों निरधार ॥ ३५

अवगुण पत नव मूकवो, तो गुण धणी मूकिए केमजी ।
तममां अवगुण किहां छे, तमे कां कहो अमने एमजी ॥ ३६

एवा हलवा बोल न बोलिए, हूं वारूं छूं तमने ।
ए वचन केहेवा नव घटे, कांई एम केहेवुं अमने ॥ ३७

अमे तो आव्या आनंद भरे, कांई तमसूं रमवा रातजी ।
एवा बोल न बोलिए, अमने दुख लागे निघातजी ॥ ३८

अमें किहां रे पाछां वली जाईए, अमने नथी बीजो कोई ठामजी ।
कहोजी अवगुण अमतणां, तमे कां कहो अमने एमजी ॥ ३९

अमे तम विना नव ओलखूं, बीजा संसार केरा मूलजी ।
चरणे तमारे वालैया, कांई अमारा छे मूलजी ॥ ४०

फल रोप्यो आंबो तमतणो, बाड कांटा कुटंम पाखल ।
बीजो झांपों रखोपूं करे, कांई स्यो रे सनमंध तेसूं फल ॥ ४१

फूल फूल्या जेम वेलडी, ते तां विकसे सदा रे सनेह ।
वछूटे ज्यारे वेलथी, त्यारे ततखिण सूके तेह ॥ ४२

जीव अमारा तम कने, कांई चरणे बलगा एम ।
फूल तणी गत जाणजो, ते अलगां थाए केम ॥ ४३

तेम जीव अमारा बांधिया, जेम पडिआ मांहें जाल ।
ख्यण एक सांमू नव जुओ, तो पिंडडा पडे ततकाल ॥ ४४

जीव अमारा चरणे तमतणे, ते अलगां थाए केम ।
जल मांहे जीव जे रहे, कांई मीन केरा वली जेम ॥ ४५

*वाला तमे अमसूं एम कां करो, अमे वचन सह्या नव जाए ।
ख्यण एक सांमूं नव जुओ, तो तरत अद्रष्ट देह थाए ॥ ४६

निखर अमारी आतमा, अने निठुर अमारा मन ।
कठण एवा तमतणां, अमे तो रे सह्या वचन ॥ ४७

अम मांहे कांई अमपणूं, जो होसे आ वार ।
तो वचन एवा तमतणां, अमें नहीं सांभलूं निरधार ॥ ४८

सखिएं मनमां वचन विचारियां, कांई प्रेम वाध्यो अपार ।
जोगमाया अति जोर थई, कांई पाछी पडियो तत्काल ॥ ४६

ततखिण वालें उठाडियों, कांई आवीने लीधी अंग ।
आनंद अति वधारियो, कांई सोकनो कीधो भंग ॥ ५०

वालोजी कहे छे वातडी, तमे सांभलजो सहू कोए ।
में जोयूं तमारूं पारखूं, रखे लेस मायानो होए ॥ ५१

ओसीकल वचन वालें कह्या, कांई ते में न कहेवाए ।
*सुकजीएं निरधारियूं, पण ते में लख्यूं न जाए ॥ ५२

ए वचन श्रवणे सुणी, कांई मनडा थया अति भंग ।
वाला एम तमे अमने कां कहो, अमें नहीं रे खमाए अंग ॥ ५३

कलकलती कंपमान थैयो, कांई ततखिण पडियो तेह ।
आवीने उछरंगे लीधियो, कांई तरत वाध्यो सनेह ॥ ५४

आंखडिएं आंसू ढालियां, तमे कां करो चितनों भंग ।
आंसूडा लोऊं तमतणां, आपण करसूं अति रंग ॥ ५५

सखी पूरूं मनोरथ तमतणां, कांई करसूं ते रंग विलास ।
करवा रामत अति घणी, में जोयूं मायानों पास ॥ ५६

सखी *वृन्दावन देखाडूं तमने, चालो रंग भर रमिएं रास ।
विवधि पेरेनी रामतो, आपण करसूं मांहों मांहें हास ॥ ५७

तमे प्राणपें मूने वालियो, जेम कहो करूं हूं तेम ।
रखे कोए मनमां दुख करो, कांई तमे मारा जीवन ॥ ५८

।: प्रकरण ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ ३६६ ॥

## वृंदावन देखाडयूं—राग धन्या

जीवन सखी वृंदावन रंग जोईएजी, जोईए अनेक रंग अपार ।
विगतें वन देखाडूं तमने, मारा सुंदर साथ आधार ।। १

आंबा आंवलियो ने आसोपालव, अंजीर ने अखोड ।
अननास ने आंवलियो दीसे, चारोली चांपा छोड ।। २

साग सीसम ने सेमला सरगू, सरस ने सोपारी ।
सूफ सूकड ने साजडिया, अगर ऊंचो अति भारी ।। ३

बड पीपल ने बांस वेकला, बोलसरी ने वरणां ।
केवडी केल कपूर कसूंबो, केसर झाड अति घणां ।। ४

मेहेंदी नेवरी ने मलियागर, डाडम डोडंगी द्राख ।
बीयो बदाम ने बीली बिजोरी, रुद्राख ने भद्राख ।। ५

पीपली पारस ने पारजातक, साले ने सीसोटा ।
फणसतूत ने तीन तेवरिया, ताड छे अति मोटा ।। ६

रायण रोइण रामण रायसण, लिवडा लिवोई लवंग ।
तज तलसी ने आदू एलची, वाले अति सुगंध ।। ७

केवडो काथो ने कपूर कांचली, भरणी ने भारंगी ।
सेवण सेरडी सूरण सिगोटी, नालियरी नारंगी ।। ८

अरणी ऊंमर वेहेडा दीसे, जांबू ने वली जाल ।
गूंदी गूंदा गुंगल गंगोटी, गहुला ने गिरमाल ।। ९

ऊंवरो अगथ ने आंवलियो, अकलकरो अम्रतजी ।
करमदी ने कगर करंजी, कदम छे अदभुतजी ।। १०

बूंद बकान ने कोठ करपटा, नेगोड ने वली नेत्र ।
मरी पानरी ने मरुओ, अकोल ने आकसेत्र ।। ११

कमल कांकडी ने झाड चीभडी, बोरडी ने वली बहेडा ।
हिरवण हीमज हरडे मोटी, मोहोला ने वली महूडा ।। १२

धामणां धावडी ने बरीआली, सफल जल भोज पत्र ।
खसखस फूल दीसे एक जुगते, छोत्रा ऊपर छत्र ॥ १३

माया मस्तकी ने बरस बडबोहोनी, सकरकंद संदेसर ।
करोड भरोड ने पलासी, अगथ ने आक सुंदर ॥ १४

टेवरू कुदरू ने कंबोई, कांकसी ने कलूंभ ।
खेजड खजूरी ने खाखर दीसे, केसू तणी अति लूंब ॥ १५

परवती परवाली ने पाडर, पान वेल अति सार ।
आल अकोल ने बेर उपलेटा, दुधेला ने देवदार ॥ १६

चंबेली ने चनी चनोटी, चंद्रवंसी चोली चीभडी ।
गलकी ने गिसोटी गोटा, गुलबांस ने गुलपरी ॥ १७

जाई जुई ने जासू जायफल, जाए ने जावंत्री ।
सूरजवंसी ने सणगोटी, सूआ ने सेवंत्री ॥ १८

कोली कालंगी ने कारेली, तुवडी ने तडबूची ।
कोठवडी ने चनक चीभडी, टीडूरी ने खडबूची ॥ १९

गुलाबी ने कफी डोलरिआ, दूधेली ने दोफारी ।
कमल फूल ने कनीअल केतकी, मोगरेमां भ्रमरी ॥ २०

ओलिया वालोलिया ने परवालिया, इसक फाग वेल सार ।
आरिया तो अति उत्तम दीसे, जाणे कलंगे रंग प्रतकाल ॥ २१

सेहेस्त्र पांखडीनों दमनो दीसे, सोवरण फूली मकरंद ।
वन सिणगार कीधो वेलडिएं, जुजवी जुगतना रंग ॥ २२

साक फल अंन अनेक विधना, कंदमूल मांहें सार ।
सारा स्वाद जुजवी जुगतना, वन फलिया रे अपार ॥ २३

वन ऊपर वेलडिओ चढिओ, जो जो ते आ निकुंज ।
मंदरना जेम जुगते दीसे, मांहें अनेक विधना रंग ॥ २४

व्रध आडी तरवरनी डालो, जुगते वन कुलंभ ।
भोम ऊपर ऊभा फल लीजे, केटली कहूं एह सनंध ॥ २५

बीजी विध विधनी वनसपती मोरी, केटला लेऊं तेना नाम ।
जमुनाजीना त्रट घणूं रूडा, रूडा मोहोल बेसवाना ठाम ॥ २६

बेहू कांठे वनसपती दीसे, झलूबे ऊपर जल ।
नेहेचल रंग सदा विध विधना, ए वन छे अविचल ॥ २७

कांठें जल ऊपर बेलडियो, तेमां रंग अनेक ।
फूलडे जल छाह्यो छे जुगते, विध विधना विसेक ॥ २८

जमुनाजीना जल जोरावर, मध्य वहे छे नीर ।
वेहेतां जल बलेरे खजूरिआ, दरपण रंग जाणे खीर ॥ २९

व्रंदावन फूल्यूं बहू फूलडे, सोभा धरे अपार ।
वन फल उत्तम अति घणूं ऊंचा, कुसमतणां वेहेकार ॥ ३०

रेत सेत सोभा धरे, कांई व्रंदावन मंझार ।
सकल कलानो चंद्रमां, तेज धरा धरे अपार ॥ ३१

गुंजे भमरा स्वर कोयलना, घूमे कपोत चकोर ।
सूडा बपैया ने वली तिमरा, रमे ते वांदर मोर ॥ ३२

मांहें ते मृग कस्तूरिया, प्रेमल करे अपार ।
बीजा अनेक विधना पसू पंखी, ते रमे रामत अति सार ॥ ३३

छूटक थड़ ने घाटी छाया, रमवाना ठाम अति सार ।
इंद्रावती बाई अति उछरंगे, आयत करे अपार ॥ ३४

आरोग्या वन फल स्वादें, जल जमुना त्रट सार ।
व्रंदावन वालें जुगतें देखाड्यूं, आगल रही आधार ॥ ३५

एह सरूपने एह व्रंदावन, ए जमुना त्रट सार ।
घरथी तीत ब्रह्मांडथी अलगो, ते तारतमे कीधों निरधार ॥ ३६

॥ प्रकरण ॥ १० ॥ चौपाई ४०५ ॥

## रामत पेहेली—राग कालेरो

वालें वेष लीधों रलियामणों, कांई करसूं रंग विलास ।
आयत छे कांई अति घणी, वालो पूरसे आपणी आस
सखीरे हम चडी ॥ १

वृंदावन तो जुगते जोयूं *स्याम *स्यामाजी *साथ ।
रामत करसूं नव नवी, कांई रंग भर रमसूं रास ॥ २

सखी मांहों मांहें वात करे, आज अमें थया रलियात ।
वेष निरखीने नेत्र ठरे, आज करसूं रामत निघात ॥ ३

वेष नवानों बागो पेहेरचो, तेडचा वृंदावन ।
मस्तक मुकट सोहामणों, वेष ल्याव्या अनूपम ॥ ४

भली भांतना भूषण पेहेरचा, वेण रसालज वाए ।
साथ सकलमां आवीने ऊभो, करसूं रामत उछाए ॥ ५

तेवा भूषण ने तेवो बागो, नटवरनों लीधों वेष ।
घणां दिवस रामत कीधी, पण आज थासे वसेक ॥ ६

रास रमवाने वालेंजी अमारे, आज कीधों उछरंग ।
नयणे जोई जोई नेह उपजावे, वारी जाऊं मुखारने विंद ॥ ७

सखी इंद्रावती एम कहे, चालो जैऐ वालाजी ने पास ।
कंठ वलाई मारा वालाजी संगे, कीजे रंग विलास ॥ ८

एवी वात सांभलतां वालेंजी अमारे, आवीने ग्रही बांहें ।
कहो सखी पेहेली रामत केही कीजे, जे होए तमारा चित मांहें ॥ ९

सखी मनोरथ होए ते केहेजो, रखे आंणो ओसंक ।
जेम कहो तेम कीजिए, आज करसूं रामत निसंक ॥ १०

पूरूं मनोरथ तमतणां, करार थाए जीव जेम ।
सखी जीवन मारा जीव तमे छो, कहो करूं हूं तेम ॥ ११

रासनी रामत अति घणी, अनेक छे अपार ।
सघली रामत संभारीने, अमने रमाडो आधार ॥ १२

अमे रंग भर रमवा आवयां, कांई करवा विनोद हांस ।
उतकंठा अमने घणी, तमे पूरो सकलनी आस ॥ १३
अमें अवसर देखी उलासियों, कांई अंगडे अति उमंग ।
कहे इंद्रावती अमने, तमे सहूने रमाडो संग ॥ १४

॥ प्रकरण ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ ४१९ ॥

चरचरी

वालैऐं करी उमंग, सखी सरवे तेडी संग ।
रमाडे नव नवे रंग, अदभुत लीला आज री ॥ १
सखियो मली संघात, सोभित चांदनी रात ।
तेज भूषण अख्यात, मीठे स्वरें बाज री ॥ २
जोतां जोत व्रंदावन, अंगे रंग उतपन ।
सामग्री सखी जीवन, नवलो सरवे साज री ॥ ३
अंगे सहू अलवेल, करे रे रंगना रेल ।
विलास विनोद हांस खेल, लोपी रमे लाज री ॥ ४
वचे वचे वाए वेण, रंग रस ख्यण ख्यण ।
उपजावे अति घंण, पूरवा पूरण काज री ॥ ५
रमवुं उनमद पणें, वालाजी सूं रंग घणें ।
कर कंठ धणी तणे, विलसूं संगे राज री ॥ ६
वाणी तो बोले मधुर, करसूं ग्रही अधुर ।
पिए वालो भरपूर, राखी हैडा मांझ री ॥ ७
रमती इंद्रावती, घातो घणी ल्यावती ।
वालैया मन भावती, मुखमां मरजाद री ॥ ८

॥ प्रकरण ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ ४२७ ॥

राग धन्यासरी

वालैयो रमाडे रे, अमने नव नवे रंग ।
जेम जेम रमिऐं, तेम तेम वाधे रे उमंग ॥ १

सकल मलियो रे साथ, सोभे वालैआ संघात ।
जाणिएं उदयो प्रभात, तिमर भाजयो रात, सोहे व्रंदावन ॥ २

भूषण झलहलकार, नंग तो तेज अपार ।
जोत तो अति आकार, वस्तर सोहे सिणगार, मोहे वालो मन ॥ ३

सिणगार सरवे सोहे, वालोजी खंत करी जुए ।
जाणिए मूलगां होए, तारतम विना नव कोए, जाणे एह धंन ॥ ४

वालोजी अति उलास, मन मांहें रलियात ।
पूरवा सुंदरीनी आस, मरकलडे करे हांस, उलट उतपंन ॥ ५

सुख तो वालाजीने संग, अरधांग लिए अंग ।
जुवती करती जंग, रमे नव नवे रंग, घणूं जसंन ॥ ६

सुंदरी वल्लभ बंने, करे इछा मन गमे ।
रीस तो कोए न खमे, नीच तो भाखे न नमे, बोले बल तन ॥ ७

चालती चतुरा रे चाल, मुख तो अति मछराल ।
सोहंती कट लंकाल, चढती जाणे घंटाल, प्रेम काम सिंध ॥ ८

छेलाईएं अति छेल, वल्लभ संघाते गेहेल ।
प्रेम तो पूरो भरेल, स्याम संगे रंग रेल, वाले बांहोंडी बंध ॥ ९

वाणी तो बोले विसाल, रमती रमती आल ।
कंठ तो झांक झमाल, अंग तो अति रसाल, सोहंती रे सनंध ॥ १०

गावती सुचंग रंग, आंणती अति उमंग ।
स्वर एक गाए संग, अलवेली अति अंग, वास्नाओ सुगंध ॥ ११

वल्लभ कंठ वलाए, लिए रंग धाए धाए ।
रामत करें सवाए, पाछी नव राखे कांए, ऊभी रहे रे ओकंध ॥ १२

इंद्रावती अंगे आप, वालाजीसूं करे विख्यात ।
मुखतो मेले सघात, अंमृत पिए अघात, सुख तो लिए रे सुंदर ॥ १३

॥ प्रकरण ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ ४४० ॥

## राग श्री कालेरो

आवो रे सखियो आपण हमची खूंदए, वालाजीने भेलां लीजे रे ।
रामत करतां गीतज गाईए, हांस विनोद रंगडा कीजे रे ॥ १

मारा वालैया ए रामत घणूं रुडी, हमचडी रलियाली ।
कालेरामां कंठ चढावी, गीत गाईए पडताली ॥ २

हमचडीनो अवसर आव्यो, आगे कह्यूं नहीं अमे तमने ।
एवो समयो अमने क्यांहें न लाधो, हामडी रहीती अमने ॥ ३

जे रस छे वाला हमचडीमां, ते तो क्यांहें न डीठो रे ।
जेम जेम सखियो आवे अधकेरी, तेम तेम दिए रस मीठो रे ॥ ४

वचन सरवे गाईए प्रेमना, अरथ अंगमां समाए ।
ते तां अरथ प्रगट पाधरा, हस्तक वाला संग थाए ॥ ५

अंमृत पीजे ने चुमन दीजे, कंठडे वालाने वलाइए ।
हमचडीमा त्रण रस लीजे, रेहेस रामतडी गाईए ॥ ६

ए रामतमां विलास जे कीधां, ते केहेवाए नहीं मुख वाणी ।
सरवे सुखडा लेई करीने, रह्या रुदयामां जाणी ॥ ७

जेटला वचन गाया अमे रमतां, ते सरवेना सुख लीधां ।
कहें इंद्रावती केम कहूं वचने, अनेक सुख वालें दीधां ॥ ८

॥ प्रकरण ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ ४४८ ॥

## राग मारू

*वाला आपण रमिए आंख मिचामणी, ए सोभा जाए न कही ।
निकुंजना मंदर अति सुंदर, आपण छपिए जुजवा थई ॥ १

एवुं सुणीने साथ सहू हरख्यो, ए छे रामतडी सारी ।
पेहेलो दाव आपणमां कोंण देसे, ते तमे कहोने विचारी ॥ २

सहू साथ कहे वालो दाव देसे, पेहेलो ते पीउजीनो वारो ।
जो पेहेलो दाव आपण देऊं, तो ए झलाए नहीं धुतारो ॥ ३

आवो रे वाला हूं आंखडी मीचूं, आंखडी मीच जो गाढो ।
अमे जईने वनमां छपिए, पछे तमे खोलीने काढो ॥ ४

सखियो तमें छाना थई छपजो, भूषण ऊँचा चढाओ ।
रखे सखी कोई आप झलाओ, मारा वालाजीने खीदडी खुदावो ॥ ५

छेलाईएं छांना थई छपजो, रखे कोई बोलतूं कांई ।
ए काने सरूओ छे सबलो, हमणा ते आवसे आहीं ॥ ६

लपतो छपतो आवे छे, सखियो सावचेत थाईए ।
आंणीगमां जो आवे वालो, तो इहां थकी उजाईए ॥ ७

जो कदाच वालो आवे ओलीगमां, तो आपण पैऐ जैऐ ।
दाव रहे जो वालाजी ऊपर, तो फूली अंग न मैऐ ॥ ८

ते माटे सहू आप संभारी, रखे कोई प्रगट थाए ।
जो दाव आपण ऊपर आवसे, तो ए केमे नहीं झलाए ॥ ९

अमे निकुंज वनथी निसरया, आवी थवकला खाधा ।
वाले वनमां चीमी चीमी, श्री ठकुराणीजी लाधा ॥ १०

सखियो जाओ तमे छपवा, हूँ देऊं दाव स्यामाजो सांटे ।
हूं रमी सूं नथी जाणती, तमे स्याने देओ मूं माटे ॥ ११

रामतमां मरजाद म करजो, रमजो मोकले मन ।
नासी सको तेम नासजो, तमे सुणजो सरवे जन ॥ १२

स्यामाजी आंखडो मीचीने ऊभा, सखियो वनमां पसरी ।
सहू कडछीने रमे जुजवा, भूषण लीधां ऊंचा धरी ॥ १३

आनंद मांहें सहुए सखियो, पैऐ जाए उजाणी ।
भूषण न दिए बाजवा, एणी चंचलाई जाए न वखाणी ॥ १४

उलास दीसे अंगों अंगे, श्रीस्यामाजी ने आज ।
ठेक देई *ठकुराणीजीएं, जईने झाल्या श्री *राज ॥ १५

ए रामत घणूं रूडी थई, मारा वालाजीने संग ।
कहे इंद्रावती निकुंज वन, घणूं रमतां सोहे रंग ॥ १६

॥ प्रकरण ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ ४६४ ॥

राग अडोल गोरी—चरचरी

सखी *व्रषभान—नंदनी, कंठ कर क्रस्ननी ।
जोड एक अंगनी, रमती रंगे रास री ॥ १
स्याम स्यामाजी जोड सुचंगी, जुओ सकल सुंदरी ।
सोभा मुखारविंदनी, करे मांहों मांहें हांस री ॥ २
भूषण लटके भामनी, कांई तेज करण कामनी ।
संग जोड स्यामनी, वनमां करे विलास री ॥ ३
पांउं भरे एक भांतसूं, रमती रंगे खांतसूं ।
जुओ सखी जोड कान्हसूं, कांई सुंदरी सकला परी ॥ ४
फरती रमे फेरसूं, *सुंदरबाई घेरसूं ।
हजार बार तेडसूं, आवी वालाजी पास री ॥ ५
वल्लभें लीधी हाथसूं, सुंदरबाई बाथसूं ।
रामत करे निघातसूं, जोरे मुकावे हाथ री ॥ ६
बेहूगमां बे भामनी, वचे कान्ह कंठें कामनी ।
कंठ बांहोंडी बंने स्यामनी, एम फरत प्राणनाथ री ॥ ७
आखल पाखल सुंदरी, केटलीक कंठे बांह धरी ।
एक ठेकती फरती भमरी, एम रमत सकल साथ री ॥ ८
झणके झण झांझरी, घूघरी घमके मांझ री ।
कडला बाजे मांहें कांबीरी, बिछुडा स्वर मिलाप री ॥ ९
धमके पांउं धारुणी, रमती रास तारुणी ।
फरती जोड फेरनी, न चढे कोंणे स्वांस री ॥ १०
चंद चाल मंद थई, जोई सनंधे थकत रही ।
गत मत भूली गई, देखी थयो उदास री ॥ ११
आनंद घणों इंद्रावती, बांहोंडी कंठ मिलावती ।
लटकती चाले आवती, वालाजी जोडे जास री ॥ १२

॥ प्रकरण ॥ १६ ॥ चौपाई ॥ ४७६ ॥

## राग सिधूडो

ओरो आवो वाला आपण फूदडी फरिए, फरिए ते फेर अपार ।
फरतां फरतां जो फेर आवे, तो बांहोंडी न मूकसो आधार ।। १
बांहोंडी मूकसो तो अडवडसूं, त्यारे हांसी करसे सहू साथ ।
ते माटे बल करीने रमजो, फरतां न मूकवो हाथ ।। २
तमे तो वालाजी फूदडी फरो छो, फरो छो आप अंग राखी ।
ए रामतडी करतां मारा वालैया, फरिए पाछां अंग नाखी ।। ३
जुओ रे सखियो तमे आ जोड फरतां, रामत करे घणें बल ।
इंद्रावतीना तमे अंगडा जो जो, मारा वालाजीसूं फरे केवे बल ।। ४
जुओ रे सखियो एम गातां फरतां, वालाजीने देऊँ चुमन ।
भंग न करूं फेर फूदडी केरो, तो देजो स्याबासी सहू जन ।। ५
फरतां फूदडी लीधी कंठ बांहोंडी, वली फरे छे तेमना तेम ।
देई चुमन ने थया जुजवा, वली फरेतें फरतां जेम ।। ६
एम अंग वालीने रमजो रे सखियो, तो कहूँ तमने स्याबास ।
एम लटके रंग लेजो वचमां, तो हूँ तमारडी दास ।। ७
हूँ तो सांचूं कहूँ रे सखियो, तमने तो कांईक मरजाद ।
सांचूं कहे अने प्रगट रमे, इंद्रावती न राखे लाज ।। ८

।। प्रकरण ।। १७ चौपाई ।। ४८४ ।।

## राग कालेरो

भूलवणीनी रामत कीजे, वाला तमे अम आगल थाओ ।
दोडी सको तेम दोडजो, जोइए अम आगल केम जाओ ।। १
भूलवणीमां भूलवजो, देजो वलाका अपार ।
भूलवी तमारी हूँ नव भूलूं, तो हूं इंद्रावती नार ।। २
जुओ रे सखियो वालें भूलवी मूने, पण हूं केमे नव टली ।
अनेक वलाका दीधां मारे वालें, तो हूं मलीने मली ।। ३

रहो रहो रे वाला मारे वासे थाओ, हूं तम आगल थाऊं ।
सांची तो जो भूलवुं तमने, मारा साथ सहू ने हंसावूं ।। ४
सखियो तमे सावचेत थाजो, रखे कोई मूकतां हाथ रे ।
हमणा हरावुं मारा वालाजीने, जो जो तमे सहू साथ रे ।। ५
भूलीस मा रे वचिख्यण वाला, आवी मारे वासे वलगो ।
अनेक वलाका जो हूँ देऊं, पण तूं म थाएस अलगो ।। ६
एक वलाका मांहें रे सखियो, वालो भूल्या ते प्रथम मूल ।
दिए सखी ताली पडी आलोटे, हँसी हँसी आवे पेट सूल ।। ७
सहू साथ मलीने साबत कीधो, इंद्रावती विविध विसेक ।
घणी थई रामत ने वली थासे, पीउ भूलवतां राखी रेख ।। ८

।। प्रकरण ।। १८ ।। चौपाई ।। ४६२ ।।

## राग कल्याण चरचरी

आज राज पूरण काज, मन मनोरथ सुंदरी ।
मन मनोरथ सुंदरी, सखी मन मनोरथ सुंदरी ।। १
विध विधना विलास, मगन सकल साथ ।
मरकलडे करे हांस, रेहेस रामत विस्तरी ।। २
कह्यो न जाए आनंद, अंग न माए उमंग ।
विकसिया अमारा मन, रहियो सरवे हरवरी ।। ३
आ समेनों वृंदावन, जुओ रे आ सोभा चंद ।
फूलडे अनेक रंग, रमे साथ परवरी ।। ४
काबर कोयल स्वर, कपोत घूमे चकोर ।
मृगला बांदर मोर, नाचत फेरी फरी ।। ५
स्यामना उलासी अंग, उलट अमारे संग ।
मांहों मांहें मकरंद, व्यापियो विविध पेरी ।। ६
रामत करे कामनी, विलसतां वाधी जामनी ।
सखी सखी प्रते स्याम घन, दिए सुख दया करी ।। ७

रमतां दिए चुमन, एक रस जुवती जन ।
करी जुगत नौतन, चितडा लीधां हरी ॥ ८

कंठ बांहों वली वली, अनेक विधे रंग रली ।
लिए अंमृत मुख मेली, पिए रस भरी भरी ॥ ९

रस घणों उपजावती, सखी मीठड़े सुर गावती ।
नव नवा रंग ल्यावती, इंद्रावती अंग धरी धरी ॥ १०

॥ प्रकरण ॥ १९ ॥ चौपाई ॥ ५०२ ॥

## राग पंचम मारू

रामत गढतणी रे, हाथ मांहें हाथ दीजे ।
बल करीने सहू ग्रहजो बांहोंडी, तो रामत रस लीजे ॥ १

प्रथम पाधरूँ कहूं रे सखियो, ए रामत छे मदमाती ।
दोडी न सके तेणी बांहोंडी न छूटे, ते आवसे पाछल घसलाती ॥ २

ते माटे बंध बांहों खरो ग्रही, करजो जोरमां जोर ।
पछे दोड़सो त्यारे नहीं रे केहेवाए, थासे अति घणों सोर ॥ ३

पेहेली चाल चालो कीडीनी, हलवे पगला भरजो ।
पछे वली कांईक अधकेरा, वधतां वधतां वधजो ॥ ४

वली कांईक व्रध पामतां, मचकासूं मालेजो ।
हजी लगे आकला म थाजो, लडसडती चाल चालेजो ॥ ५

हवे कांईक पग भरजो प्रगट, सावचेत सहू थाजो ।
साथ सकल तमे आप संभाली, मुखडे पुकारीने गाजो ॥ ६

लटके चटके छटके दोडजो, रखे पग पाछां देतां ।
हांसी छे घणी ए रामतमां, दोडतणो रस लेतां ॥ ७

कहे इंद्रावती ए रामतडी, मारा वालाजी थई अति सारी ।
दोड करतां तमे पाछूं नव जोयूं, अमें बांहोंडी न मूकी तमारी ॥ ८

॥ प्रकरण ॥ २० ॥ चौपाई ॥ ५१० ॥

## राग श्री काफी

रामत करतालीनी रे, एमां छे वलाका विसमां ।
बेसवूं उठवूं फरवूं रमवूं, तालो लेवा साम सामां ॥ १

तम सामी अमें ऊभा रहीने, हाथ ताली एम लेसूं ।
बेसतां उठतां फरतां, सामी ताली देसूं ॥ २

बेसतां ताली देईने बेसिए, उठतां दीजे ताली ।
फरतां ताली देई करीने, वचे रामत कीजे रसाली ॥ ३

रामत करतां अंग सहू वालिए, सकोमल जोड सोभंत ।
अंग वाली वचे रंग रस लीजे, भंग न कीजे रामत ॥ ४

ए रामतडी जोई करीने, सहू साथने वाध्यो उमंग ।
सहू कोई कहे अमें एणी पेरे, रमसूं वालाजीने संग ॥ ५

साथ कहे वाला रमो अमसूं, ए रामत सहू मन भावी ।
सहूना मनोरथ पूरण करवा, सखी सखी प्रते लेओ रंग आवी ॥ ६

हाथ ताली रमे छे वालो, सघलीसूं सनेह ।
रंगे रमाडे रासमां, वालो धरी ते जुजवा देह ॥ ७

कहे इंद्रावती ए रामतडी, मारा वाला जी थई अति सारी ।
सघली संगे रमया रंगे, एक पीउ एक नारी ॥ ८

॥ प्रकरण ॥ २१ ॥ चौपाई ॥ ५१८ ॥

## राग केदारो—चरचरी

उमंगे उदयो साथ, रंगे तो रमवा रास ।
रासमां करूं विलास, सखियो सुख लेत री ॥ १

भोमनी किरण भली, आकासे जईने मली ।
चांदलो न जाए टली, उजलीसी रेत री ॥ २

रुत निस नवो सस, दीसे सहू एक रस ।
प्रकासयो दसो दिस, न केहेवाए संकेत री ॥ ३

सूं कहूं वनंनी जोत, पत्र फूल झलहलोत ।
वृंदावन उदद्योत, सामग्री समेत री ।। ४

पसू पंखी अनेक नाम, तेना विचित्र चित्राम ।
निरखतां न भाजे हाम, जुजवी जुगत री ।। ५

रमतां भूषण किरण, ब्रह्मांड लाग्यो फिरण ।
सखियो उलासी तन, कमल विकसेत री ।। ६

एणी पेरे करूं रामत, मनडा थया महामत ।
खंत खरी लागी चित, वालाजीसूं हेत री ।। ७

प्रेमना प्रबल पूर, सूरो मांहें अति सूर ।
पिए रस मेली अधुर, सघली सुचेत री ।। ८

इंद्रावती करे रंग, रामत न करे भंग ।
रमती फरती वाला संग, छबके चुमन देत री ।। ९

।। प्रकरण ।। २२ ।। चौपाई ।। ५२७ ।।

राग सिंधूडो

ओरो आवो वाला आपण घूमडले घूमिए, वाणी विविध पेरे गांऊं ।
अनेक रंगे रस उपजावीने, मारा वालैया तूंने वालेरी थाऊं ।। १

घोघरे घाटडे स्वर बोलाविए, बीजा अनेक स्वर छे रसाल ।
झीण झीणा झीणा झीण झीनेरडा, मीठा मधुराने वली रसाल ।। २

घूमडलो घूमवानो रे वालैया, मूने छे अति घणो कोड ।
साम सामा आपण थैने घूमिए, मारा वालैया आपण बांधीने होड ।। २

ए रामत अमे रब्दीने रमसूं, साथ सकल तमे रेहेजो जोई ।
हूं हारूं तो मोपर हंसजो, मारो वालोजी हारे तो हंस जो मां कोई ।। ३

घूमडलो वालो मोसूं घूमे छे, वचन मीठडा रे गाए ।
अंग वस्तर भूषण मीठडा लागे, वचे वचे कंठडे रे वलाए ।। ४

पीउ हारचा हारचा कहे स्वरमां, हांसी हरखे उपजावे ।
हूं जीती जीती कहे घोघरे, साथ सहूने हंसावे ।। ६

ए रे घूमडले हांसी रे साथने, रहे नहीं केमे झाली ।
लडथडे पडे भोम आलोटे, हंसी हंसी पेट आवे रे खाली ॥ ७
ए रामतडी जोई कहे सखियो, इंद्रावतीएं राखी रेख ।
साथ सहूने वालो घणूं लागी, मारा वालाजीने वली विसेख ॥ ८

॥ प्रकरण ॥ २३ ॥ चौपाई ॥ ५३५ ॥

राग वसंत

कोणियां रमिए रे मारा वाला, गाईए वचन सनेह ।
मनसा वाचा करी करमना, सीखो तमने सीखवूं एह ॥ १
ए रामतडी जोरावर रे, दीजे ठेक अंग वाली ।
रमता सोभा अनेक धरिए, गाईए वचन कर चाली ॥ २
करें रमिएं कोणियां रमिएं, चरण रामतडी कीजे ।
वली रामतमां विलास विलसी, प्रेम तणां सुख लीजे ॥ ३
जुओ रे सखियो वालो कोणियां रमतां, भांत भांत अंग वाले ।
सखियो रामत बीजी करी नव सके, उभली जोड निहाले ॥ ४
कर मेलीने कोणियां रमिएं, कोणी मेलीने करे ।
अंगडा वाले नयणा चाले, मनडा सकलना हरे ॥ ५
ए रामतना रस कहूं केटला, थाए निरतना रंग ।
हस्त चरणना भूषण सर्वे, बोले बंनेना एक बंग ॥ ६
लटके गाए लटके नाचे, लटके मोडे अंग ।
लटके रामत रेहेस लटके, लटके सांईं लिएं संग ॥ ७
मारा वालाजीमां एक गुण दीसे, जाणे रामत सीख्या सहू पेहेली ।
इंद्रावतीमां बे गुण दीसे, एक चतुर ने रमतां गेहेली ॥ ८

॥ प्रकरण ॥ २४ ॥ चौपाई ॥ ५४३ ॥

राग कालेरो

आवो वाला रामत रासनी कीजे, आपण कंठडे बांहोंडी काहांन लीजे ॥ १
आ वेष केम करी ल्याव्या रे वालैया, अमने थयो अति मोह ।
खयण एक अमथी अलगां म थाजो, अमें नही खमाए रे विछोह ॥ २

आ वेष अमने वालो घणूं लागे, वेष रसाल अति रंग।
द्रष्ट थकी अलगां म थाजो, डीठडे ठरे सरवा अंग ॥ ३

आ वेष अमने गमे रे वालैया, लीधों कोई मोहन वेल।
नयणे पल न आवे रे वालैया, रूप दीसे रंग रेल ॥ ४

रामत करतां रंग सहू कीजे, ख्यण ख्यण आलिंघण लीजे।
अधुर तणो जो रस तमे पीओ, तो अमारा मन रीझे ॥ ५

उलट अंग न माए रे वालैया, कीजे रंग रसाल।
पल एक अमथी न थाओ जुआ, रखे कंठ बांहोंडी टाल ॥ ६

तम सामूं अमें ज्यारे जोईए, त्यारे जोर करे मकरंद।
बाथो बथिया लीजे रे वालैया, एम थाए आनंद ॥ ७

रामत करतां आलिंघण लीजे, ए पण मोटो रंग।
साथ देखतां अमृत पीजे, एम थाए उछरंग ॥ ८

आलिंघण लेतां अमृत पीतां, विनोद कीधां घणां हांस।
कठण भीडा भीड न कीजे रे वालैया, मुझाए अमारा स्वांस ॥ ९

॥ प्रकरण ॥ २५ ॥ चौपाई ॥ ५५२ ॥

छंदनी चाल

सखी एक भांत रे, मारो वालोजी करे छे वात रे।
लेई गले बाथ रे, आंणी अंग पासरे, चुमन दिए चितसूं ॥ १

मारा वाला मांहें कल, अंगे अति बल।
रमे घणें बल, रंग अविचल, वल्लभ अति वितसूं ॥ २

आ जुओ तमे स्याम, करे केवा काम।
भाजे भूसी हांम, राखे नहीं मांम, हरवे घणें हितसूं ॥ ३

मारा वालासों विलास, स्यामा करे हांस।
सूधो रंग पास, करी विस्वास, जुओ जोपे खंतसूं ॥ ४

स्याम स्यामा जोड, करतां कलोल।
रमे रंग रोल, थाए झक झोल, बंने एक मतसूं ॥ ५

बेहू सरखा सरूप, मेली मुख कूप ।
पिए रस घूंट, अमृतनी लूट, लिए रे अनितसूं ॥ ६

आलिंघण लिए, रंग रस पिए ।
बंने सुख लिए, लथबथ थिए, आ भीनी स्यामा पतसूं ॥ ७

इंद्रावती वात, सुणो तमे साथ ।
जुओ अख्यात, बंने रलियात, रमतां इजतसूं ॥ ८

॥ प्रकरण ॥ २६ ॥ चौपाई ५६० ॥

## राग सामेरी

रामत आंबानी कीजे मारा वालैया, आवी ऊभा रहो लगतां रे ।
सखियो ज्यारे बल करे, त्यारे रखे कांई तमे डगतां रे ॥ १

तमे आंबला ना थड़ थाओ, अमें चरण झालीने बेसूं ।
मारो आंबो दहीए दूधें सींचूं, एम केहेसूं प्रदख्यणा देसूं ॥ २

केटलीक सखियो आंबलो सींचे, अमें चरण तमारे वलगां ।
द्रढ करीने अमें चरण ग्रह्या, जोईए कोंण करे अमने अलगां ॥ ३

बल करीने तमे ऊभा रेहेजो, खससो तो हंससे तम पर ।
जो अमें चरण ग्रही नव सकूं, तो सहू कोई हंससे अम पर ॥ ४

ते माटे रखे चरण चाचरो, थिर थई ऊभा रेहेजो ।
जो जोर घणो आवे तमने, त्यारे तमे अमने केहेजो ॥ ५

अनेक सखियो चरणे वलगी, खसवा नहीं दीजे रे ।
वालो सखियो सहू थाजो सावचेत, ओलियो ऊपर सामी हांसी कीजे ॥ ६

जे सखी सांची थईने वलगी, ते तां बछोडतां नव छूटे रे ।
ओलियो सखियो बल करी करी थाकी, ते तां उठाडतां नव उठे रे ॥ ७

जे सखी चरणें रही नव सकी, ते पर हांसी थई अति जोर ।
इंद्रावती वालो ने सखियो, दिए ताली हांसी करे सोर ॥ ८

॥ प्रकरण ॥ २७ ॥ चौपाई ५६८ ॥

## राग आसावरी

रामत उडन - खाटलीनी, मारा वालाजी आपण कीजे रे ।
रेत रूडी छे आंणी भोमे, ठेक मृग जेम दीजे रे ।। १
सखियो मनमां आनंदियो, ए रामतमां अति सुख ।
साथ सहू रव्दीने रमसूं, मारा वालाजी सनमुख ।। २
पेहेलो ठेक दीधों मारे वालें, पछे जो जो ठेक अमारो ।
तो मारा वचन मानजो सखियो, जो देऊं ठेक वालाजीथी सारो ।। ३
जुओ रे सखियो तमे वालोजी ठेकतां, दीधी फाल अति सारी ।
निसंक अंग संकोडीने ठेक्या, जाऊं ते हूं वलिहारी ।। ४
हांऊं हांऊं रे सखियो तमे ठेक वखाण्यो, ए तो दीधों लडसडतां ।
एवा तो ठेक असें सहू कोई देतां, सेहेजे रामत करतां रे ।। ५
रहो रहो रे सखियो तमे ठेक वखाण्यो, हवे जो जो अमारो ठेक रे ।
एवी तो फाल साथे केटलीक दीधी, तूं तो मोही उडाडतां रेत रे ।। ६
कोंणे हंसिए कोंणें वखाणिए, ए रामत थई अति रंग ।
एणी विधें दीधां असें ठेक, मारा वालाजीने संग ।। ७
ए रामतडी जोई करीने, हवे निरतनी रामत कीजे ।
रूडी रामत इंद्रावती केरी, जेमां साथ वालो मन रीझे ।। ८

।। प्रकरण ।। २८ ।। चौपाई ५७६ ।।

## राग कल्याण

वाला तमे निरत करो मारा नाहोजी, अमनें जोयानी खांत ।
साथ जोई आनंदियो, कांई वेष देखी एक भांत ।। १
तमे निरत करो रे भामनी, निरत रूडी थाए नार ।
तमे वचन गाओ प्रेमना, पासे सुर पुरूं रसाल ।। २
सुणो सुंदर वल्लभजी मारा, निरत केणी पेरे थाए ।
अमने देखाडो आयत करी, कांई उलट अंग न माए ।। ३

जेणी सनंधे पांउं भरो, अने अंग वालो नरम ।
भमरी फरो जेणी भांतसूं, अमें नाचूं फरूं तेम ॥ ४
हस्त करी देखाडिए, अने ठमके दीजे पाए ।
वचन गाईए प्रेमना, कांई तेना अरथज थाए ॥ ५
कंठ करीने राग अलापिए, कांई स्वर पूरे सकल साथ ।
वेण वेणा रबाबसों, कांई ताल बाजे पखाज ॥ ६
करतालमां बाजे झरमरी, कांई श्री मंडल हाथ ।
चंग तंबूरे रंग मले, वालो नाचे सकल साथ ॥ ७
भूषण बाजे भली भांतसूं, धरती करे धमकार ।
सबद उठे सोहांमणा, उछरंग वाध्यो अपार ॥ ८
निरत करी नरम अंगसूं, कांई फेरी फरचा एक पाए ।
छेक वाले छेलाईसूं, तता थेई थेई थाए ॥ ९
एक पोहोर आनंद भरी, कांई रंग भर रमिया एह ।
साथ सकलमां वालेजी, रमतां कीधां सनेह ॥ १०
आनंद घणों इंद्रावती, वालाजीने लागे पाए ।
अवसर छे कांई अति घणों, वाला रासनी रामत मांहें ॥ ११
ते सरवे चित धरी, अमसूं रमो अति रंग ।
कहें इंद्रावती साथने, रमवानी घणी उमंग ॥ १२

॥ प्रकरण ॥ २९ ॥ चौपाई ॥ ५८८ ॥

## चरचरी छंद

मृदंग चंग, तंबूर रंग, अति उमंग, गावती सखी स्वर करी ॥ १
करताल ताल, बाजे विसाल, वेण रसाल, रमत रास सुंदरी ॥ २
नार सिणगार, भूषण सार, संग आधार, निरत करे सनंधरी ॥ ३
घम झणा झण, जोड रणा रण, विछुडा ठणा ठण, छेक वाले फेरी फरी ॥ ४
वचन गाए, हस्तक थाए, भाव संधाए, देखाडे वालो खंत करी ॥ ५
हांस विलास, सकल साथ, लेत बाथ, मध्य रामत हेत करी ॥ ६

वेष वसेख, राखी रेख, सुख लेत, बाहंत मुख बांसरी ॥ ७
धमके धारुणी, गाजती, गारुणी, चांदनी रैणी, जोत करे जामंत री ॥ ८
रंग वनमां, सोभित जमुना, पसू पंखीना, सबद रंगे थंत री ॥ ९
पसू पंखी, जुए जंखी, मिले न अंखी, सुख देखी रामत री ॥ १०
निरत करे, खंत खरे, फेरी फरे, इंद्रावती एक भांत री ॥ ११
वालती छेक, अंग बसेक, रंग लेत, छबके चुमन देत री ॥ १२

॥ प्रकरण ॥ ३० ॥ चौपाई ॥ ६०० ॥

## राग कालेरी

### हम चडी सखी संग रे

आपण रमसूं नवले रंग, सखी रे हम चडी ॥
रामतडी छे अति घणी, करसूं सघली सार ।
विविध पेरे सुख देऊं रे सखियो, जेम तमे पामो करार ॥ १
अमने वेण बजाडी देखाडो, जेवो पेहेलो वायो रसाल ।
वेण सांभलतां ततख्यण वालैया, अमें जीव नाख्या तत्काल ॥ २
जुओ रे सखियो वालो वेण बजाडे, अधुर धरी अति रंग ।
वेण सांभलतां ततख्यण तमने, काम वाध्यो सर्वा अंग ॥ ३
सुणो रे सखियो हूं वेण बजाडूं, वेण तणी सुणो वाणी ।
ख्यण एक पासेथी अलगो न करूं, राखूं हैडामां आंणी ॥ ४
उलट तमने अति घणों वाध्यो, वली रंग उपजावुं निरधार ।
जेटली रामत कहो रे सखियो, ते रमाडूं आ वार ॥ ५
मान घणो मानवंतियोंने, तामसियों झुंझार ।
प्रेम घणो अंग आ संगे, एणे व्रह नहीं लगार ॥ ६
तामस मांहिं तामसियों, एणी वातडी कही न जाए ।
कहे इंद्रावती सुणो रे साथजो, वालें एम कीधां अंतराए ॥ ७

॥ प्रकरण ॥ ३१ ॥ चौपाई ॥ ६०७ ॥

## रामत अंतरध्याननी

*वृंदावनमां रामत करतां, जुजवो थयो सरवे साथ ।
वली आवी ततख्यण एक ठामे, नव दीसे ते प्राणनो नाथ ॥
मारो जीव जीवनजी, लेई गयो हो स्याम ॥ १

काया केम चाले तेह रे, कालजडूं कांपे जेह रे ।
ऊभी केम रहे देह, बांध्या जे मूल सनेह ॥
त्राटकडे दीधां छेह, मारो जीव जीवनजी लेई गयो हो स्याम ॥ २

सखियो मलीने विचारज कीधो, पूछिए स्यामाजी किहां स्याम ।
रामतनों रंग हमणा वाध्यो, मन मांहें हुती मोटी हाम ॥ ३

साथ मांहों मांहें खोलतां, नव दीसे स्यामाजी त्यांहें ।
त्यारे जुजवी दोडी जोवा वनमां, ए बंने सिधाव्या क्यांहें ॥ ४

जोवंतां जुजवा वनमां, स्यामाजी लाध्या एक ठाम ।
स्यामाजी स्याम किहां छे, मारूं अंग पीडे अति काम ॥ ५

साथ स्यामाजीने देखी करी, मनडा थया अति भंग ।
स्यामाजी तिहां बोली न सके, जेमां एवडो हुतो उछरंग ॥ ६

घडी एक रहीने स्यामाजी बोल्या, आपणने मूक्या निरधार ।
दोस डीठो जो आपणो, तो वनमां मूक्या आधार ॥ ७

वचन सांभलतां स्यामाजी केरा, ख्यण नव लागी वार ।
जे जेम आवी दोडती, ते तां पाछी पडी ततकाल ॥ ८

तेमां केटलीक सखियो ऊभी रही, उठाडे सरव साथ ।
आपणने केम मूकसे, मारा प्राणतणो जे नाथ ॥ ९

सखी वृंदावन आपण खोलिए, इहांज हसे आधार ।
जीवतणो जीवन छे, ते तां नहीं रे मूके निरधार ॥ १०

सखी ए रे आपणने मूकी गयो, एणे दया नहीं रे लगार ।
हवे आंहीं थकी केम उठिए, मारा जीवन विना आधार ॥ ११

सखी केही रे सनंधे चालिए, मारा लेई गयो ए प्राण ।
सखियो अमने सूं रे कहो छो, अमें नहीं रे अवाए निरवाण ।। १२

मारो जीव कलकले आकलो, अने काया थरके अंग ।
कहोजी अवगुण अमतणां, जे कीधां रंगमां भंग ।। १३

सखी दोस हसे जो आपणो, तो वालें कीधूं एम ।
चित ऊपर जो चालतां, आपण केहेतां करतो तेम ।। १४

हाय हाए रे दैव तें सूं करचूं, केम रहे रे कायामां प्राण ।
जीवनजी मूकी गया, नव कीधूं ते अमने जाण ।। १५

हाए हाए रे विधाता पापनी, तें कां रे लख्या एवा करम ।
दैवतणी तूंने बीक नहीं, जे तें एवडो कीधो अधरम ।। १६

हाए हाए रे दैव तूंने सूं कहूं, तें वारी नहीं विधाता ।
एणी पापणिएं एम केम लख्यूं, वालो मूकसे कलकलतां ।। १७

सखी गाल देऊं हूं दैवने, के देऊं विधाता पापिष्ट ।
एणे लेख अमारा एम केम लख्या, एणे दया नहीं ए दुष्ट ।। १८

सखी दैव विधाता सूं करे, एम रे थैयो तमे कांए ।
दोष दीजे कांई आपणे, जे चूक्या सेवा मांहें ।। १९

सखी सेवा चूक्या हसूं आपण, पण वालो करे एम केम ।
आपणने एम रोवंतां, वालो मूकी गया छे जेम ।। २०

सखी चूक्या हसूं घणूं आपण, हवे लागी कालजडे झाल ।
फिट फिट भूंडा पापिया, तूं हंजिएं न आव्यो काल ।। २१

एम रे सखियो तमे कां करो, बेहेनी द्रढ करो कां न मन ।
आपणने मूके नहीं, जेहेनूं नाम श्री क्रस्न ।। २२

सखी जोईए आपण वनमां, एम रे थैयो तमे कांए ।
जेनूं नाम श्री क्रस्नजी, ते बेठा छे आपण मांहें ।। २३

सुंदरबाई कहे साथने, सखी एम रे थैयो तमे कांए ।
केड बांधो तमे कामिनी, आपण जोईए व्रंद्रावन मांहें ।। २४

वन वन करीने खोलिए, वालो बेठा हसे जांहें ।
आपणने मूकी करी, जीवनजी ते जासे क्यांहें ॥ २५
एक पडे एक लडथडे, एक आंसूडा ढाले अपार ।
केम चाले काया बापडी, मारा जीवन विना आधार ॥ २६
कठण वेला मूने जाए रे बेहेनी, जेम रे निसरतां प्राण ।
काया एम थरहरे, अमें नहीं रे गोताए निरवाण ॥ २७
एम रे सखियो तमे कां करो, ए छे आपणो आधार ।
नेहेचे आपणने नहीं रे मूके, तमे जीवसूं करो रे करार ॥ २८
विकल थई पूछे बेलडीने, सखी क्यांहें रे दीठा तमे स्याम ।
जीव अमारा लेई गया, मननी न पोहोंती हाम ॥ २९
ए हँसे छे आपण ऊपर, जो न देखे आपणमां सनेह ।
जुओ वीटी रही छे वरने, अधख्यण न मूके एह ॥ ३०
जुओ रे वलाका एहना, अंगो अंग वाल्या छे बंध ।
ते हंसे छे आपण ऊपर, आपण कीधी न एह सनंध ॥ ३१
आ वचन बोले वेलडी, सखी मांहों मांहें करे विचार ।
ए खबर न दिए कोंणे कामनी, पोते रात्री रही भरतार ॥ ३२
वन गेहेवर अमें जोईयूं, आगल तो दीसे अंधार ।
हवे ते किहां अमें जोईए, मूने सुध नहीं अंग सार ॥ ३३
सखी पगला जुए प्रीतम तणां, साथ खोले व्रंदावन ।
नेहेचे आपणने मूकी गयो, हजी पिंडडा न थाए पतन ॥ ३४
सखी नेहेचल नेहडा आपणां, त्रूटे नहीं केमे तेह ।
आंणे अंगे मलसूं प्रीतम, सखी आस न छूटे एह ॥ ३५
हाए हाए रे बेहेनी हूं सूं करूं, मूने भोम न दिए विहार ।
संधान सरवे जुआ थया, ए रेहेसे केम आकार ॥ ३६
कलकले मांहें कालजू, चालो न सके देह ।
प्राण जीवनजी लेई गया, जे बांध्या मूल सनेह ॥ ३७

तेमां केटलीक सखियो ऊभी रही, मांहों माहें करे विचार ।
कलकलतां केम मूकसे, कांई आपणने आधार ॥ ३८

आंझो आवे मूने धणीतणों, एम वालो करसे केम ।
वली रामतडी कीजिए, आपण पेहेली करतां जेम ॥ ३९

केम रे रामतडी कीजिए, काया केम रे चाले विना जीउ ।
रामतडी केम थाएसे, उठाए नहीं विना पीउ ॥ ४०

एम रे सखियो तमे कां करो, ए छे आपणो आधार ।
मूल रामतडी कीजिए, ए नहीं रे मूके निरधार ॥ ४१

साथ कहे छे अमने रे बेहेनी, इंद्रावती कहो छो सूं ।
आंणे नयणे न देखूं वालैयो, तिहां लगे केम करी उठूं ॥ ४२

एणे समे इंद्रावती बाईऐ, तामसियों भेली करी ।
पडे राजसियो स्वांतसियों, करे ऊभियो अंक भरी ॥ ४३

आंझो आंणों तमे धणी तणों, हाकली चित करो ठाम ।
रामत करतां आवसे, सुंदरबाई झाले बांहें ॥ ४४

मांहों मांहें विनोद घणो, उठो रामत कीजे रंग ।
तरत वालोजी आवसे, आपण जेना अंग ॥ ४५

लीला कीधी जे वालैएं, आपण लीजे तेहेना वेष ।
अग्यारे बरस लगे जे रम्या, कांई रामत एह विसेख ॥ ४६

॥ प्रकरण ॥ ३२ ॥ चौपाई ॥ ६५३ ॥

राग सामेरी

आनंदे रोतां रमिऐ एम, जेने कहिए ते लछण प्रेम ।
तेना उडी गया सरवे नेम, रमतां कीधां कै चेहेन ॥ १

सखी प्रेम ध्वजा केहेवाए, जेनूं प्रगट नाम कुली मांहें ।
ए तो प्रेम तणां जे पात्र, आपणथीं अलगो न थाए ख्यण मात्र ॥ २

ए अलगो थाए केम, अमें कहूं करे वालो तेम ।
अमें आतम सखियो एक, रमतां दीसे अनेक ॥ ३

असें परस पर कीधां परियाग, सखियो ते सरवे सुजाण ।
आपण लीधां वेष अनेक, जे कीधां वालैएं वसेक ॥ ४

आपणमां थई वेष एक स्याम, जेंणे निरखे पोहोंचे मन काम ।
वली थई वेष एक *नंद, ते कान्हजी लडावे उछरंग ॥ ५

सखी वेष *पूतना नार, भर जोवन आवी सिणगार ।
विष भरचा तेना अस्थन, आवी धवरावे कपटे मन ॥ ६

चेहेन कीधां पामी मृत, विष बालाने थयूं अमृत ।
सोसी लीधी पूतना नार, गोकलमां जै जै कार ॥ ७

वेष लीधां सखियो विचारी, दैत लीधां ते सहू संघारी ।
अंग आडो दीधो कै वार, व्रज लोक ते सकल करार ॥ ८

एक जाणे *जसोदा होए, *कान्हजी माखण मांगे रोए ।
उहां दूध चूल्हे उभराए, मातानूं मन कलपाए ॥ ९

कान्हें छेडो ग्रह्यो उजातां, जसोदाजी थया रीसे रातां ।
कान्ह कहे माखण आपो पेहेलूं, त्यारे जाणे लागूं माताने गेहेलूं ॥ १०

जोरे छेडो लीधो तत्काल, नसो चढावी निलाट ।
जसोदाजी गया उजाई, आगल दूध गयूं उभराई ॥ ११

कान्हजीने रीस अति थई, पेहेलूं माखण देई न गई ।
ते तां झाली न रही रीस, घोलीना कीधां कटका बीस ॥ १२

तिहां दोडीने आवी मात, देखी कान्हूडानो उतपात ।
दामणूं लीधूं जसोदाए, कान्हजी पाखल पलाए ॥ १३

आगल कान्हजी उजाए, जसोदाजी वासे धाए ।
माताने श्रम अति थयो, तिहां कान्हजी ऊभो थई रह्यो ॥ १४

कट दामणिएं न बंधाए, तसू चार ते ओछूं थाए ।
वली दामणूं बीजूं लिए, गांठों अनेक विधें दिए ॥ १५

एम लीधां दामणां अपार, तसू घटे ते चारना चार ।
वली देखी मातानूं श्रम, कान्हें मूक्या दामणां नरम ॥ १६

त्यारे एक दामणें बेहू हाथ, बांधी कट ऊखल संघात ।
एवो बांध्यो दामणिएँ बंध, जुओ कान्हजी रुए अचंभ ॥ १७

त्यांहां रोतो रीकतो जाए, रह्यो व्रख ऊखल भराए ।
तिहां थी निसरवा कीधूं जोर, पड्या व्रख थयो अति सोर ॥ १८

तेमां पुरष बे प्रगट थया, अंग मोडीने ऊभा रह्या ।
कर जोडीने अस्तुत कीधी, तेणे तरत वालें सीख दीधी ॥ १९

इहां आवी जसोदा उजाणी, कान्हजी भीडी रहा भुज ताणी ।
स्वांस मांहें न माए स्वांस, मुख चुमती आस ने पास ॥ २०

एक धरे ते गोवरधन, हरष उपजावे मन ।
इंद्रनों कीधो मान भंग, एम रमे ते जुजवे रंग ॥ २१

लेई चारे वाछरू वन, मांहों मांहें गोवाला जन ।
हाथ मांहें बांसली लाल, मांहें रामत करे रसाल ॥ २२

आपणमां कोईक कामनी वेष, एक वेष वालोजी वसेख ।
वालो पूरे कामनीना काम, भाजे हैडा केरी हाम ॥ २३

एक दाणलीला वेष नार, मही मांथे मटुकी भार ।
वालो करे तेसूं हांस, लिए माखण ढोले छास ॥ २४

कहे वचन सामां कामनी, गाल जुगते दिए भामनी ।
तेणी लिए मटुकी उजाए, वालो गोरस गोवालाने पाए ॥ २५

वालो व्रजमां रम्या जे जुगते, अमें सहू वेष लीधां ते विगतें ।
पीउड़ो तोहे न दीसे क्यांहें, कालजडूं कांपे मांहें ॥ २६

राजसिएँ कीधों व्रह जोर, रुए पाडे बुंब बकोर ।
स्वांतसियों बेसुध थाए, तामसियोंने आंभो न जाए ॥ २७

एक वेख वालें वेण वायो, साथ सहू जोवाने धायो ।
जाणे वेण वालानों थयो, सोक रुदया मांहेंथी गयो ॥ २८

सहूने सरूप रुदेमां समानों, आवी आनंद अंग उभराणो ।
उलस्या मलवाने अंग, मांहें थी प्रगटचा उछरंग ॥ २९

वली मांडी ते रामत जोर, गाए गीत करे अति सोर ।
त्यारे हरष वाध्यो अपार, आव्यो जुवतीनों आधार ॥ ३०

दोडी वलगी वालाने वसेख, जाणे पीउजी हुता परदेस ।
सघलीना हैडा मांहें, हाम मलवानी मन मांहें ॥ ३१

वालेंजीएं कीधों विचार, केम मलसे सघली नार ।
त्यारे देह धरया अनेक, सखी सखी प्रते एक ॥ ३२

सखी सहूने मल्या एकांत, रम्या वनमां जुजवी भांत ।
वालें पूरण मनोरथ कीधां, अनेक विधें सुख दीधां ॥ ३३

इंद्रावती ने आनंद थाए, उमंग अंग न माए ।
वली रमे नाना विध रंग, कांई वाध्यो अति उछरंग ॥ ३४

॥ प्रकरण ॥ ३३ ॥ चौपाई ॥ ६८७ ॥

## राग कालेरो

उछरंग अंग सुंदरी, हेत चित मन धरी ।
सुख ल्याविया वालो वली, सुख ल्याविया वालो वली ॥ १

कर मांहें कर करी, सकल मली हरवरी ।
बाहें न मूके स्यामतणी, अलगी न जाए कोए टली ॥ २

एक एक लिए आलिंघण, एक एक दिए चुमन ।
बांहोंडी वाली जीवन, खेवना भाजे मली ॥ ३

जीवन मन विमासियूं, सखी केम भाजसे खेवना ।
आतां पूर जाणे सायरतणां, एम आव्या हली मली ॥ ४

पछे एक वालो एक सुंदरी, एम रमूं रंगे रस भरी ।
लिए आलिंघण फरी फरी, दाझ अंगतणी गई गली ॥ ५

विनोद हांस अतिघणों, वालें बधारयो सुखतणों ।
कामनी प्रते कंथ आपणों, एणे सुखें दुख नाख्या दली ॥ ६

अधुर अमृत पीवतां, कठण कुच खूचतां ।
स्याम संगे सुख लेवतां, ए लीला अति सबली ॥ ७

साथ माँहें इंद्रावती, वालातणे मन भावती ।
रस रंगे उपजावती, कांई उपनी छे अति रली ॥ ८

॥ प्रकरण ॥ ३४ ॥ चौपाई ॥ ६६५ ॥

## राग मलार

आपण रंग भर रमिए रास, वालोजी वली आविया ।
कांई उपनूं अंग उलास, सुंदर सुख ल्याविया ॥ १
सखी दियो रे मांहों मांहें हाथ, वचे जोड लीजिए ।
स्याम स्यामाजी पाखल वाड, सखियो तणी कीजिए ॥ २
हवे रामत रमिएं एम, खरो ग्रहीजिए ।
आपण एणी पेरे बंधेज, सहू रहीजिए ॥ ३
एनूं रुदे अति कठोर, ए थकी विहीजिए ।
हवे ए अलगो एक पल, आपण न पतीजिए ॥ ४
फरतां रमतां रास, चुमन मुख दीजिए ।
लीजिए रस अधुर, अंमृत पीजिए ॥ ५
एणे भीडिए अंगों अंग, कुचों वचे आणिए ।
एना विलास अनेक भांत, मोहन वेल माणिए ॥ ६
मुख माँहें देई अधुर, जीवन सुख जाणिए ।
अदभुत एहेना सनेह, ते केम वखाणिए ॥ ७
वाले सांभलया रे वचन, भरी अंक लीधियों ।
वालें चितडू देईने चित, सरीखी कीधियों ॥ ८
एना मनोरथ अनेक पेर, उपाया अमने घणां ।
सनेह उपाईने आण्या, सागर सुख तणां ॥ ९
सखी सागरनी सी वात, सुणो सुख स्यामनी ।
मारी जिभ्या आंणे अंग, न केहेवाए भामनी ॥ १०
वाले चितडू देईने चित, ताणी लीधां आपणां ।
पछे वनमां कीधां विलास, न रही केहेना मणां ॥ ११

कहे इंद्रावती आनंद, वालो रंगे गाए छे ।
हजी रामतडी वृध, वसेके थाए छे ॥ १२

॥ प्रकरण ॥ ३५ ॥ चौपाई ॥ ७०७ ॥

### राग वेराडी चरचरी

रमत रास करत हांस, कान्ह मोहन वेल ।
कान्ह मोहन वेल, सखीरी कान्ह मोहन वेल ॥ १
रासमां विनोद हांस, हांसमां करूं विलास ।
पूरतो अमारी आस, करे रंग रेल ॥ २
वालैयो वन विलासी, गयो तो अमथी नासी ।
कठण करीने हांसी, दीधां दुख दोहेल ॥ ३
सखियो करती मान, तेणें व्रहना कीधां पान ।
विसरी सरीर सान, एवो कीधो खेल ॥ ४
मन तामसियो हरती, मान माननियो करती ।
अंगे न व्रह धरती, तो अमपर थई हेल ॥ ५
आतुर करी सरवे जन, मीठडा बोले वचन ।
हेतसूं हरतो मन, एवो अलबेल ॥ ६
हवे न मूकूं अधख्यण, धुतारो छे अतिघण ।
पल ना वालूं पापण, भूलियो पेहेल ॥ ७
इंद्रावती कहे साथ, हवे न कीजे विस्वास ।
ख्यण न मूकिए पास, एवी बांधो वेल ॥ ८

॥ प्रकरण ॥ ३६ ॥ चौपाई ॥ ७१५ ॥

### राग धोलनी चाल

जुओ रे सखियो तमे वाणी वालातणी, बोले ते बोल सुहांमणां रे ।
मीठी मधुरी वात करे, हूं तो लेऊं ते मुखना भामणां रे ॥ १
हावसुंभाव करे वालो हेते, गुणने घणां वालातणां रे ।
रामत करतां रंग रेल करे, झकझोल मांहे नहीं मणां रे ॥ २

जुओ रे सखियो मारा जीवनी वातडी, मारा मनमां एमज थाए ।
नयणां ऊपर नेह धरी, हूं तो धरूं वालाजीने पाए ॥ ३

सुण सुंदरी एक वात कहूं खरी, ए ते एम केम थाए ।
नयणां ऊपर केम करीस, ए तो नहीं धरवा दिए पाए ॥ ४

जो हूं एम करूं बेहेनी, मारा जीवनी दाझ तो जाए ।
कोए विध करी छेतरूं वालो, तो मूने केहेजो वाए वाए ॥ ५

सुणो रे वालैया वात कहूं, तमारा भूषण बाजे भली भांत ।
लेई चरणने निरखूं नेत्रे, मूने लागी रही छे खांत ॥ ६

जुओ रे सखियो मारा भूषण बाजतां, झांझरिया ते बोले रसाल ।
लेनी पग धरूं तुझ आगल, बीजी म करजे आल ॥ ७

लेई चरणने भेला नयणां, वालें जोयूं विचारी चित ।
वटकी चरणने लीधा वेगला, जाणी इंद्रावती रामत ॥ ८

वालें वेगें लीधी कंठ बांहोडी, बेठा अंग भीडीने हेतमां ।
नेह थयो घणों नयणांसुं, दिए नेत्रने चुमन खांतमां ॥ ९

रंग रेल करी रस बस थया, सखी स्याम घणां अमृतमां ।
लथबथ थई कलोल थया, ए तो कूपी रह्या बेहू चितमां ॥ १०

कहे इंद्रावती सुणो रे साथजी, वालें सुख दीधां घणां घणां ।
नवलो नेह बधारचो रमतां, गुण किहा कहूं वालातणां ॥ ११

॥ प्रकरण ॥ ३७ ॥ चौपाई ॥ ७२६ ॥

राग केदारो

बलियामां दीसे बल, अंग आछो निरमल ।
नयणां कटाख्ये बल, पापण चलवे पल, अजब अख्यात ॥ १

जनम संघाती जाण्यो, मन तो ऊपर माण्यो ।
सुंदरी चितसुं आण्यो, विविध पेरे वखाण्यो, वालानी विख्यात ॥ २

वालोजी वसेके हित, चालतो ऊपर चित ।
इछा मन जे इछत, खरी साथनी पूरे खांत, भलो भली भांत ॥ ३

इंद्रावती कहे खरूं, मूलनो संघाती वरूं ।
ए धन रुदयामां धरूं, अंगथी अलगो न करूं, खरी मूने खांत ।। ४

वरजीने देऊं बीड, भीडतां न करूं जीड ।
अंग मांहें हुती पीड, काम केरी भाजूं भीड, जो जो मारी वात ।। ५

बांहोंडी कंठमां घाली, एकी गमां लीधों टाली ।
लेई चाली अणियाली, सखी मुख हाथ ताली, जोई रह्यो साथ ।। ६

रामत करती रंगे, चुमन देवंती वंगे ।
उमंग आवयो संगे, भेली मुख भीडे अंगे, मूके नहीं बाथ ।। ७

रंगना करती रोल, भीलती मांहें भकोल ।
करी मुख चकचोल, जोरावर भलावोल, लेवा न दे स्वांस ।। ८

पीउना अधुर पिए, अमृत घूंटडे लिए ।
सामा वली पोते दिए, देवंतां मुख नव विहे, अंग प्रेम वास ९

वली इछा जुई धरे, फूदडी फेरसूं फरे ।
जोर अति घणों करे, इंद्रावती काम सरे, रमे पीउ रास ।। १०

फूदडी मेलीने हाथ, चटकासूं घाली बाथ ।
रामत करे निघात, कंठ बांहोंडी फरे साथ, रंगे प्राणनाथ ।। ११

वली लिए हाथ ताली, फरती देवंती वाली ।
बेठंती उठंती वाली, रामत वचे रसाली, विविध विलास ।। १२

छटके रामत मेली, वालाजी संघाते गेहेली ।
आलिंघण लिए ठेली, चुमन दिए पीउ पेहेली, मुख आस पास ।। १३

सरवे जोवंता सुंदरी, रामत तो घणी करी ।
पीउ कंठ बाहों धरी, इंद्रावती वालें वरी, कोंण मुकावे हाथ ।। १४

।। प्रकरण ।। ३८ ।। चौपाई ।। ७४० ।।

### केसरबाईनो भगडो

आवी केसरबाई केहे रे बेहेनी, सुणो वात करूं तमसूं ।
भली रामत वालासूं रंगे करी, हवे मूको रमे अमसूं ।। १

हूं तो नहीं रे मूकूं मारो नाहोजी, तमे जोर करो जथा वाक्य ।
आवी वलगो वालाजीने हाथ, आतां देखे छे सैयर साथ ॥ २

इंद्रावती कहे अमसूं रमतां, केसरबाई करो एम कांए ।
तमे हाथ आवी वालाजीने वलगो, पण हूं नव मूकूं बांहें ॥ ३

हूं कंठ बांहोंडी वालीने ऊभी, मारो प्राणतणो ए नाथ ।
नेहेचे सखी हूं नहीं रे मूकूं, तमे कां करो वलगती वात ॥ ४

अनेक प्रकार करो रे बेहेनी, हूं नहीं मूकूं प्राणनो नाथ ।
बीजी रामत जई करो रे बेहेनी, आतां ऊभो छे एवडो साथ ॥ ५

केम रे मूकूं कहे केसरबाई, तमने रमतां थई घणी वार ।
हवे तमे केम नहीं मूको, मारा प्राणतणों आधार ॥ ६

सुणो केसरबाई वात अमारी, इंद्रावती कहे आ वार ।
लाख वातों जो करो रे बेहेनी, पण हूं नहीं मूकूं निरधार ॥ ७

कहे केसरबाई अमसूं इंद्रावती, कां करो एवडूं बल ।
एटला लगे तमे रामत कीधी, हवे नहीं मूकूं पाणोवल ॥ ८

बीजी सखी इहां नहीं रे बापडी, आंहीं तो इंद्रावती नार ।
जोर करो जोईए केटलूं केसरबाई, केमने मुकावो आधार ॥ ९

एटला दिवस थया अमने रमतां, पण कोंणे न कीधूं एम ।
भोला ढालनी वात जुई छे, जोईए जोर करी जीतो केम ॥ १०

वेढ देखीने वालोजी हँसिया, वलगे मांहों मांहें नार ।
कोई केने नमी न दिए, आतां बंने जाणे झुंझार ॥ ११

सिखामण दिए रे वालोजी, कोई न नमे रे लगार ।
त्यारे रूप कीधां रंगे रमवा, संतोषी सरवे नार ॥ १२

केसरबाई जाणे अमकणे आव्या, इंद्रावती जाणे अमपास ।
सघलीसूं सनेह करी, वन मांहें कीधां विलास ॥ १३

*इंद्रावती *केसरबाई मलियो, बंने कहे एम ।
ओसियाली थैयो मन मांहें, जुओ आपण कीधूं छे केम ॥ १४

भीडीने मलियो बंने उछरंगे, भाजी हैडानी हाम ।
इंद्रावती कहें केसरबाई, वालें पूरण कीधां मन काम ॥ १५

॥ प्रकरण ॥ ३९ ॥ चौपाई ॥ ७५५ ॥

राग केदारो

छेडो न छूटके, अंग न अटके, भरे पांउं चटके, मानवंती मटके ॥ १
लिए रंग लटके, घुटावे अधुर घटके, वली वली सटके, ॥
खांत घणी खटके, रमवा रंगे रास री ॥ २
रमती रास कामनी, जामती चंद्र जामनी ।
मली वल्लभे माननी, भलंती रंगे भामनी ॥ ३
स्यामाजी संगे स्यामनी, बांहोंडी कंठे कामनी ।
ताणती अंगें आमनी, मुख बीडी सोहे पाननी ॥
एम रमत सकल साथ री ॥ ४
मारो साथ रमे रे सुहामणो, कांई रामत रमे रंग ।
वालाजीसूं वातों, करे अख्यातो, उलट भीडे अंग ॥ ५
बांहोंडी वाले भूषण संभाले, रखे खूंचे कोई नंग ।
लिए बाथों वालाजी संघातो, उन्मद बल अनंग ॥ ६
छटके रमे पाखल भमे, रामत न करे भंग ।
छेलाईएं छेके अंग वसेके, सखी सरवे सुचंग ॥ ७
केटलीक सुंदरी उलट भरी, आवी वालाजीने पास ।
उमंग आंणे आप वखाणे, व्रह विनता गयो नास ॥ ८
गीत गाए रंग थाए, विविध पेरे विलास ।
जुजवी जोडे एकठी दोडे, मारा वालाजीसूं करवा हांस ॥ ९
वालैएं विमासी अंग उलासी, देह धरया अनेक ।
सखियो सघली जुजवी मली, मारा वालाजीसूं रमे विसेक ॥ १०
अंगडा वालें नयणां चाले, उपजावे रंग रेल ।
बोले बंगे आवे रंगे, जाणे पेहेलें भणियो पेस ॥ ११

अति उछरंगे वाध्यो संगे, उमंग अंग न माए ।
वालाजीनी बांहें कंठ वलाए, रमतां ताणी जाए ॥ १२
बांहोंडी झाली वनमां घाली, रामत रमे अति दाए ।
वनमां विगते जुजवी जुगते, रंग मन इछा थाए ॥ १३
एक निरत करे फेरी फरे, छेकवाले तेणे ताए ।
एक दिए ठेक वली विसेक, रेत उडाडे पाए ॥ १४
एक घूमे घूमरडे कोईक दोडे, वचन गाए रसाल ।
एक लिए ताली दिए वाली, साम सामी पडताल ॥ १५
एक चढे बने इछागमे, हींचे हिचोले डाल ।
एक कोणियां रमे गाए गमे, प्रेमतणी दिए गाल ॥ १६
एक फरे फेरी कर धरी, बांहोंडी कंठ आधार ।
एक फूदडी फरे रामत करे, रंग थाए रसाल ॥ १७
मोरलिया नाचे रंगे राचे, सबद करे टहुंकार ।
बांदरडा पाए ऊभा थाए, लिए गुलांटों सार ॥ १८
पसूपंखी वासे मन उलासे, आनंदियों अपार ।
वन कुलांभे वेलो आवे, फूलडा करे वेहेकार ॥ १९
चांदलियों तेजें जुए हेजें, नीचों आवी निरधार ।
जल जमुनाना वाध्या घणां, आघा न वहे लगार ॥ २०
पडछंदा बाजे भोम विराजे, पडताले धमकार ।
सघली संगे उमंग अंगे, अजब रमे आधार ॥ २१
भूषण बाजे धरणी गाजे, व्रंदावन हो हो कार ।
अंमृत वा वाए लेहेरों लिए वनराए, अंग उपजावे करार ॥ २२
एम केटलीक भांतें रमया खांते, रामत रंग अपार ।
कहे इंद्रावती एणी पेरे लीजे, वालो सुख तणो सिरदार ॥ २३

॥ प्रकरण ॥ ४० ॥ चौपाई ॥ ७७८ ॥

राग मारू

ऊभाने रहो रे वाला ऊभाने रहो, हजी आयत छे अति घणी ।
रामत रमाडो अमने, उलट जे अमतणी ॥ १
अनेक रंगे रमाडिया, केटला लेऊं तेना नाम ।
सखी सखी प्रते जुजवा, सहूना पूरण कीधां मन काम ॥ २
आ भोमनो रंग उजलो, कांई तेज तणों अंबार ।
वस्तर भूषण आपना, सूं कहूं सरूप सिणगार ॥ ३
नेहेकलंक दीसे चांदलो, नहीं कलातणो कोई पार ।
उठे अलेखे किरणे, सहू झलकारों झलकार ॥ ४
वन वेलडियों छाईयों, रलियामणां फूल कै रंग ।
वाए सीतल रंग प्रेमल, कांई अंगडे वाध्यो उमंग ॥ ५
वली रस वनमां छे घणां, मीठी पंखीडानी वाण ।
ए वन मुकाए नहीं, रूडो अवसर ए प्रमाण ॥ ६
अनेक विलास कीधां वनमा, मली सहुए एकांत ।
ए सुखनी वातों सी कहूं, कांई रमियां अनेक भांत ॥ ७
हवे एक मनोरथ एह छे, आपण रमिएँ एणी रीते ।
बाथ लीजे बंने बल करी, जोईए कोंण हारे कोंण जीते ॥ ८
झलके झीणी रेतडी, नहीं कांकरडी लगार ।
थाए रूडी इहां रामत, आपण रमिए आधार ॥ ९
सखियो तमे ऊभा रहो, जेवुं होए तेवुं केहेजो ।
बंने लेऊं अमें बाथडी, तमे साख ते सांची देजो ॥ १०
दोडी लीधी कंठ बांहोंडी, बंने करी हो हो कार ।
सखियो मनमां आनंदियो, सुख देखी थयो करार ॥ ११
चरण आंटी भुज बंध वाली, कोई न नमे रे अभंग ।
बाथो लिए बंने बल करी, रस चढतो जाए रंग ॥ १२

वालो वलाका देवाने, नीचा नमाव्या चरण ।
हो हो वालोजी हारिया, हंसी हंसी पडे सहू धरण ॥ १३
सखियो कहे अमे जीतियों, सुख उपनूं आसाधार ।
ताली देई देई हरखियो, लडथडे पडे सहू नार ॥ १४
अणची कां करो रे सखियो, हूं जाणूं छूं तमारूं जोर ।
जीत्या विना एवडी उलट, कां करो एवडो सोर ॥ १५
हारचा हारचा अमने कां कहो, आवो लीजे बीजी बाथ ।
जे हारसे ते हमणा जोसूं, तमे सांची केहेजो सहू साथ ॥ १६
आवो वली बाथो लीजिए, एक पूठीने अनेक ।
हमणा हरावूं तमने, वली हंसावूं वसेक ॥ १७
कहे इंद्रावती हूं बलवंती, सुणजो सखियो वात ।
नेहेचे तमने ऊंचूं जोवरावूं, वली रामत करूं अख्यात ॥ १८

॥ प्रकरण ॥ ४१ ॥ चौपाई ॥ ७९६ ॥

छंदनी चाल

एणे समे रामत गमे, वालो विलसी लिए सोंसी ।
अधुरी मधुरी, अंमृत घूटे, छोले छूटे, लिए लूटे ॥ १
लथ बथ, हथ सथ, अंग संग, रंग बंग चंग, चोली चूंथी,
भाजी भूसी, हांसी सांसी, जाणी पाणी, नैणे माणी,
वदूं वाणी, रहोजी होजी, माजी कांजी, भाखूं जाखूं,
राखूं रंगे, समारूं सिणगार ॥ २
वली वसेखे, राखूं रेखे, लेऊं लेखूं, जोऊं जोखूं,
प्रेमे पेखूं, धसी मसी, आवी रसी, हंसी खसी बसी,
भीसी रीसी खीसी, जरडी मरडी, करडी खरडी ॥ ३
खंडी खांडी, छांडी मांडी, मेली भेली, भूमी चूंमी, गाली लाली,
लोपी चापी, लाजी भाजी, दाभी काढी, आंजी हांजी,
जीती जोपे, रूडी रीते, उठी इंद्रावती आ वार जी ॥ ४

॥ प्रकरण ॥ ४२ ॥ चौपाई ॥ ८०० ॥

राग धन्या छंद

छेल छंछेरीने लीधी बाथ जुगते, रामत कीधी अति रंगजी ।
स्याम सुंदरी बंने सरखी जोड, जाणिऐं एकै अंगजी ॥ १

वली रामत मांडी एक जुगते, जाणिऐं सघली अभंगजी ।
रामत करतां आलिंघण लेतां, लटके दिए चुमनजी ॥ २

रमतां भीडे कठन कुचसों, छबकेसूं रंग लेतजी ।
अंमृत पिए वालोजी रमतां, अधुर इंद्रावती देतजी ॥ ३

अधुर लेई मुख मांहें मारे वालें, आयत कीधी अपारजी ।
भूषण उठया उठया अंगों अंगे, रहो रहो समरथ सार आधारजी ॥ ४

रम्या रम्या मारा मारा वाला वाला, पाछी पाछी रामत कोए न रही ।
हवे ने हवे आधार, आयत पूरण थई ॥ ५

समसम देऊं देऊं स्याम स्याम सुणो सुणो, ममभम भीडो एणी भांतजी ।
बोली बोली न न सकूं बलियारे बलिया, पूरी पूरी मारी मारी खांतजी ॥ ६

देई देई सम सम थाकी थाकी तमने, कां करो भीडा भीडजी ।
आयत आयत आवे अंगों अंगें, त्यारे न देखो पीडजी ॥ ७

मन मन मनोरथ पूरया पूरया वाला वाला, वली वली लागूं पाएजी ।
केही केही पेरे पेरे कहूं कहूं तमने, स्वांस स्वांस हैडे मुझाएजी ॥ ८

कर कर जोडी जोडी कहूं कहूं वाला वाला, वली वली मानज मांगूंजी ।
मेलो मेलो मुखथी वात करूं, नमी नमी चरणे लागूं जी ॥ ९

जेवी अमने आयत हुती, तमे तेवा रमाड्या रंगजी ।
साथ सकलमां एम सुख दीधां, इंद्रावती पामी आनंदजी ॥ १०

॥ प्रकरण ॥ ४३ ॥ चौपाई ॥ ८१० ॥

राग मलार

सखी सखी प्रते स्याम, वालेंजीऐं देह धरया ।
कांई वल्लभसूं आ वार, आनंद अति करया ॥ १

मारा पूरण मनोरथ जेह, थया वरसूं मली ।
कांई रही नहीं लवलेस, वालाजीसूं रंग रली ॥ २

अमें जेम कह्युं वाले तेम, कीधी रामत घणी ।
हाम हुती हैडा मांहें, वालें टाली अमतणी ॥ ३

एणे समे जे सुख, थया जे साथमां ।
कां जाणे वल्लभ, कां जाणे मारी आतमां ॥ ४

जेहेना मनमां जेह, उछाह हुता घणां ।
सुख दीधां तेहेने तेह, पार नहीं तेहतणां ॥ ५

एम रामत कीधी वन मांहें, रमीने आवियां ।
ए सुख आ वन मांहें, भला भमाडियां ॥ ६

कहे इंद्रावती साथ, एणी वातों जेटली ।
न केहेवाए कोटमों भाग, मारे अंग एटली ॥ ७

॥ प्रकरण ॥ ४४ ॥ चौपाई ॥ ८१७ ॥

राग गोडी—झीलणां

अणी हांरे झीलण रंग सोहांमणां रे, आपण झीलसूं वालाजीने साथ ।
रामत रमी सहू आवियां, कांई पूरण थयो रंग रास ॥ १

श्री राज कहें स्यामाजी सुणो, कांई तमारा मनमां जेह ।
साथ सहूने मनोरथ, कांई रह्यो छे एक एह ॥ २

अंगे उमंग उपाईने, भेला नाहिए ते भली भांत ।
झीलणां कीजे मन गमतां, खरी पूरूं तमारी खांत ॥ ३

वेलडिएं कुसम प्रेमल, कांई वन झलूवे वाए ।
फले रस चढचा कै भांतना, भोम सोभा वाधंती जाए ॥ ४

जल उछले उछरंगमां, लेहेरडियों ले रे तरंग ।
पसूपंखीना सबद सुहांमणां, कांई उलट पसरचो अंग ॥ ५

साथ मलीने भेलो थयो, आव्यो आनंद मांहें ।
अमें सखियो त्रट ऊपर, वालाजीनी ग्रही बांहें ॥ ६

वागा वधारी कांठे मूकियां, कांई वस्तर पेहेरचा झीलण ।
सखी एक बीजीने आनंदमां, जल मांहें लागी ठेलण ॥ ७

त्रट जोईने जलमां संचरया, साथ वालो स्यामाजी संग ।
परियाणीने थया सहू जुजवा, जल मांहें कीजे आनंद ॥ ८

एकीगमां साथ स्यामाजी, कांई बीजी गमां प्राणनाथ ।
क्रीडा कीजिए जलमां, विलसिए वालाजीने साथ ॥ ९

जल उछाले उछरंगसूं, सहू वालाजीने छांटे ।
वालोजी छांटे एणी विधसूं, त्यारे सरवे नासंतियों कांठे ॥ १०

वली साम्ही थाए सखियो, जल छांटतियों छोले ।
वालोजी उछाले जल जोरसूं, त्यारे नासंतियों टोले ॥ ११

वली आवतियों उमंगसूं, वालो बीटयो ते चारे गम ।
सूझे नहीं कांई जल आडे, आंखें आवी गयो छे तम ॥ १२

एणे समे हवे जे थयूं, बाई इंद्रावतीनूं काम ।
विधे विधे विलसी वरसूं, भाजी हैडानीं हाम ॥ १३

एम जल क्रीडा करी, पछे नाह्या ते पीउजी ।
घणां रस लीधां अंग चोलतां, वालैयाने विलसी ॥ १४

स्यामाजीने नवराविया, पेरे पेरे ते घणी प्रीत ।
साथ सहू एणी विधे, कांई नाह्यो छे रूडी रीत ॥ १५

*सुंदरबाई *इंद्रावती, कांई *रत्नावती संग ।
*लालबाई पेहेले निसरया, सिणगार कीधा सरवा अंग ॥ १६

वस्तर भूषण स्यामाजीने, पेहेराव्या भली भांत ।
अधवीच आवीने वालैयें, वेण गूंथी करी खांत ॥ १७

सिणगार सरवे सजी करी, *स्यामाजी घणूं सोहे ।
दरपण लेईने हाथमां, मन वालानूं मोहे ॥ १८

*आसबाई *कमलावती, कांई *फूलबाई मल्या ।
*चंपावती चारे मली, सिणगार कीधां भेला ॥ १९

चार सखी मली *श्रीराजने, कराव्या सिणगार ।
वस्तर भूषण विधोगतें, कांई सोभ्या ते प्राण आधार ॥ २०

एक बीजीने करावियां, सिणगार सरवे एम ।
चितडूं देईने में जोईयूं, कांई साथनों अतंत प्रेम ॥ २१

प्रसेवे वस्तर साथना, नाहवा समे उतारचा जेह ।
श्रीराज बेठा तेह ऊपर, तमे प्रेम ते जो जो एह ॥ २२

जमुनाजीने कांठडे, कांई द्रुमवेलीनी छांहें ।
साथ सहू मलीने सामटो, आव्यो ते आनंद मांहें ॥ २३

बेठा मली आरोगवा, सोभित जुजवी पांत ।
सो सखीसों इंद्रावती, थया प्रीसने भली भांत ॥ २४

॥ प्रकरण ॥ ४५ ॥ चौपाई ॥ ८४१ ॥

## राग वेराडी—भोग

फरतण फेर वाजोटिया, रंग पाकी परवाली ।
कांवी पडगी जे कांगरी, जाणे रहिए निहाली ॥ १

चारे गमां वाल्या चाकला, बेठा वाली पलाठी ।
सोभा मारा वालाजीनी सी कहूं, जे आतमाएं डीठी ॥ २

श्रीठकुराणीजी श्रीराजसों, भेलां बेसे सदाए ।
*आसबाई *सुंदरबाई, बेठा एणी अदाए ॥ ३

हाथ पखाल्या पात्रमां, जुजवी जुगतें ।
पासें साथ बेठो मली, सहू कोए एणी विगतें ॥ ४

ऊपर वन रंग छाईयो, जाणे मंडप रचियो ।
प्रीसणे साथ जे हुतो, ते तो रंग मांहें मचियो ॥ ५

थाली धात वसेकनी, जुगतें अजवाली ।
लाल जडाव लोटे जल, लेई प्रेमें पखाली ॥ ६

बाटका फूल कचोलिया, ते तो जुगतें जडिया ।
अजवालीने पखालिया, थाली मांहें मलिया ॥ ७

वली नितारी अजवालिया, रूमाल संघातें ।
प्रीसे छे सारी सूखडी, विध विध कै भांतें ॥ ८

बाई *भागवंती भली पेरे, प्रीसे सूखडी सारी ।
कहूं केटली घणी भांतनी, सरवे मूकी संभारी ॥ ९
पकवान सरवे प्रीसी करी, साक मूक्या छे घणां ।
कंदमूल भांत भांतनां, अलेखे अथाणां ॥ १०
साक सूकवणी तणां, कै सेक्या सुतलिया ।
विध विध मेवा बन फल, अति उत्तम गलिया ॥ ११
आरोग्या अति हेतसों, राज साथ संघातें ।
प्रीसंतां प्रेम जे में दीठो, ते न केहेवाए भांतें ॥ १२
कंचन रंग झारी भरी, जल विच मांहें लीधों ।
श्री इंद्रावतीजीने कोलियो, राजें मुख मांहें दीधों ॥ १३
हरख थयो जे एणे समे, साथें सरव कोए डीठो ।
हँसिया रमिया साथसों, घणों लाग्यो छे मीठो ॥ १४
आरोग्या आनंदसों, जेणे जे भाव्या ।
दूध दधी ते ऊपर, लाडबाई लेई आव्या ॥ १५
ते लीधां चल्लू करावियां, बेठा वासें तकियो देई ।
थाल बाजोट उपाडिया, लोयूं मुख रुमाल लेई ॥ १६
फोफल काथो चूना जावंत्री, केसर कपूर घाली ।
ऊपर लवंग देई करी, पांन बीडी वाली ॥ १७
बीडी ते लेई आरोगिया, वली लीधी सहू साथ ।
साथ हुतो जे प्रीसणे, सखियोंने प्रीसे प्राणनाथ ॥ १८
आरोग्या सहू अति रंगे, बीडी लीधी श्री मुख ।
बेठा मली वातों करवा, वाणी लेवा सुख ॥ १९
कहे इंद्रावती साथजी, वालें विलास जो कीधां ।
चढी आव्या अंगे अधिका, वचे व्रह जो दीधां ॥ २०

॥ प्रकरण ॥ ४६ ॥ चौपाई ॥ ८६१ ॥

## राग गोडी रामग्री

वाला वालमजी मारा, जीरे प्रीतम अमारा ।। टेक

तमे रास रंगे रमाडिया, पण सांभलो मारी वात ।
अम ऊपर एवडी, तमे कां कीधी प्राणनाथ ।। १

अवगुण एवडा अमतणां, क्यांह हुता वालम ।
एम अमने एकला, मूकी गया व्रंदावन ।। २

तमे अमथी अलगां थया, त्यारे व्रह थयो अति जोर ।
तमे वनमां मूकी गया, अमें कीधां घणां बकोर ।। ३

तम विना जे घडी गई, अमें जाण्या जुग अनेक ।
ए दुख मारो साथ जाणे, के जाणे जीव वसेक ।। ४

ए दुखनी वातों केही कहूं, जीव जाणे मन मांहें ।
जे अम ऊपर थई एवडी, त्यारे तमे हुता क्यांहें ।। ५

हवे न मूकूं अलगों वाला, पलमात्र तमने ।
तमारा मनमां नहीं, पण दुख लागे अमने ।। ६

पालखी अमे करूं रे वाला, तमे बेसो तेहज मांहें ।
अमें उपाडीने चालिए, हवे नहीं मूकूं ख्यण क्यांहें ।। ७

हूं अलगों न थाऊं रे सखियो, आपणी आतमां एक ।
रामत करतां जुजवी, कांई दीसे छे अनेक ।। ८

सखियो वात हूं केही करूं, जीव मारो नरम ।
वल्लभ मारा जीवनी प्रीतम, अलगी करूं केम ।। ९

तमथी अलगों जे रहूँ, ते जीव मारे न खमाए ।
एक पल मांहें रे सखियो, कोटान कोट जुग थाए ।। १०

व्रह तमने दोहेलो लाग्यो, मूने तेथी जोर ।
मुख करमाणां नव सहूं, तो केम करावुं बकोर ।। ११

जेम कहो तेम करूं रे सखियो, बांध्या जीव जीवन ।
अधख्यण अलगों न थाऊं, करार करो तमे मन ।। १२

एवडा दुख ते कां करो, हूं देऊं एम केम छेह ।
तमे मारा प्राणना प्रीतम, बांध्या मूल सनेह ॥ १३

प्राणपें वल्लभ छो मूने, एम करूं हूं केम ।
में व्रंदावन मूक्यूं नहीं, तमे कां कहो अमने एम ॥ १४

चित ऊपर चालूं रे सखियो, तमे मारा जीवन ।
जेम कहो तेम करूं रे सुंदरी, कां दुख आंणो मन ॥ १५

आतमना आधार छो मारा, जीवसूं जीव सनेह ।
करूं वात जीवन सखी, मुख माहेंथी कहो जेह ॥ १६

में तां एम न जाण्यूं रे वाला, करसो एम निघात ।
नाहोजी हूं तो नेह जाणती, आपण मूल संघात ॥ १७

एम आंखडी न चढाविए तेने, जे होए पोतानों तन ।
जाणिएं मेलो नथी जनमनों, उथले रास वचन ॥ १८

अमें तूंने जोपें जाणूं, बीजो न जाणे कोए जंन ।
अमसूं छेडा छोडीने ऊभो, जाणिए नेह निसन ॥ १९

सांभलो सखियो वात कहूं, में जोयूं मायानूं पास ।
केम रमाए रामत रैणी, मन उछरंगें रास ॥ २०

ते मांटे बोल कह्या कठण, जोवाने विस्वास ।
नव डीठो कोई फेर चितमां, हवे हूं तमारे पास ॥ २१

एनो तमे जवाब दीधों, केम रोतां मूक्या वन ।
नहीं विसरे दुख व्रहना, अमने जे उतपन ॥ २२

घणूज साले व्रह वालैया, जे दीधूं तमे अमने ।
केटली वात संभारू दुखनी, हवे सूं कहूं तमने ॥ २३

कां जाणो एवडो अंतर, हूं अलगों न थाऊं ।
तमने मेली वनमां, हूं ते किहां जाऊं ॥ २४

व्रह तमारो नव सहूं, गायूं तमारूं गाऊं ।
अंग मारूं अलगूं न करूं, प्रेम तमने पाऊं ॥ २५

अमें ठाम सघला जोया रे वाला, क्यांहें न दीठो कोए ।
जो तमे हुता वनमां, तो व्रह केणी पेरे होए ॥ २६

वन वेलडियो जोई सरवे, घणें दुखें घणूं रोए ।
घणी जुगतें जोयूं तमने, पण केणे न डीठो कोए ॥ २७

तमे कहो छो वनमां हुता, तो कां नव लीधी सार ।
अमें वन वन हेठें विलखियों, त्यारे कां नव आव्या आधार ॥ २८

जो तमे ना होता वेगला, तो कां नव सुणी पुकार ।
अमने देखी रोवंतां, केम खम्या एवडी वार ॥ २९

बोलो ते सरवे वात झूठी, वनमां ना होता निरधार ।
नेहेचे जाणूं नाहोजी, तमे झूठा बोल्या अपार ॥ ३०

जो व्रह अमारो होए तमने, तो केम बेसो करार ।
तम विना ख्यण जुग थई, वन भोम थई खांडा धार ॥ ३१

दाझ घणी थई देहमां, लागी कालजडे झाल ।
जाणूं जीव नहीं रहे, निसरसे ततकाल ॥ ३२

एवो व्रह खमी रह्यों, में जाणूं जीवनी नाल ।
आसा अमने नव मूके, नहीं तो देह छाडूं तत्काल ॥ ३३

तमे केहेसो जे एम कहे छे, नेहेचे जाणो जीव मांहें ।
तमारा समजो तम विना, एक अधख्यण में न खमाए ॥ ३४

सखियो तमे सांचूं कह्यूं, ए बीती छे मूने वात ।
तमने व्रह उपनूं मारो, हूं कहूं तेहेनी भांत ॥ ३५

आपण रंग भर रमतां, ब्रख आडो आव्यो ख्यण एक ।
तमे प्रेमें जाण्यूं के जुग बीत्या, एम दीठां दुख अनेक ॥ ३६

ज्यारे पसरी जोगमाया, में इछा कीधी तमतणी ।
हूं वेण लेऊँ तिहां लगे, मुझपर थई घणी ॥ ३७

एक पल मांहें रे सखियो, कलप अनेक वितीत ।
ए दुख मारो जीव जाणे, सखी प्रेमतणी ए रीत ॥ ३८

भीडी ते अंग इंद्रावती, सखी कां करो तमे एम ।
जीवन मारा जीवनी, दुख करो एम केम ।। ३९

चित चोरी लीधूं देई चुमन, सखी कहो करूं हूं तेम ।
मारा जीव थकी अलगी नव करूं, जुओ अलवी थैयो जेम ।। ४०

सखियो मारी वात सुणो, कां करो ते एवडा दुख ।
पूरूं मनोरथ तमतणां, सघली वातें देऊं सुख ।। ४१

मारूं अंग वालूं तमतणे, वचन वालूं जिभ्या मुख ।
बोलावुं ते मीठे बोलडे, जोऊं सकोमल चख ।। ४२

हवे वाला हूं एटलूं मांगूं, ख्यण एक अलगां न थैऐ ।
जहां अमने व्रह नहीं, चालो ते घर जैऐ ।। ४३

मांगी दुख सुखनी रामत, ते वालें कीधी आ वार ।
मन चित रंगे रमाडियां, कांई आपणने आधार ।। ४४

व्रंदावन देखाड्यूं, रास रमाड्या रंग ।
पूर्व जनमनी प्रीतडी, ते हवणा आंणी अंग ।। ४५

इंद्रावती कहें अमने वाला, भला रमाड्या रास ।
पछे ते घर मूलगे, वालो तेडी चाल्या सहू साथ ।। ४६

वाला वालमजी मारा, जीरे प्रीतम अमारा ।।

।। प्रकरण ।। ४७ ।। चौपाई ।। ९०७ ।।

इति श्री, महाप्रभू श्रीप्राणनाथजी प्रणीत
'तारतम बानी' का पहला अंग ग्रंथ

रास—सम्पूर्ण

निजनाम श्री कृष्णजी, अनादि अक्षरातीत ।
सोतो अब जाहेर भए, सबबिध वतन सहित ।।

# ❀ प्रकाश गुजराती ❀

कांई[१] एणी पेरे कीधूं रास, रमीने[२] जागया ।
कांई आपण[३] आ अवसर, फरीने[४] मांगया ।। १

कांई तेणी घडी तत्काल,[५] आपण आंहीं आवियां ।
पेहेला फेराना लवलेस,[६] आपण आंहीं ल्यावियां ।। २

वालेंजी तेणी ताल, *सुंदरबाई मोकल्या[७] ।
सखी तमे लेई चालो आवेस, म मूकूं एकला[८] ।। ३

इंद्रावती लागे पाए, सुणो तमे साथजी ।
कांई आपणने अवसर, आव्यो छे हाथजी ।। ४

।। प्रकरण ।। १ ।। चौपाई ४ ।।

श्री *साथनो प्रबोध—राग धन्यासरी

संभारो[९] साथ, अवसर आव्यो छे हाथजी ।
आप नाख्या[१०] जेम पेहेले फेरे, वली नाखजो एम निघातजी[११] ।। १

*सुंदरबाई आपण माटे,[१२] आव्या छे आंणी वारजी ।
ए आपणने अलगां नव करे, कांई मोकल्या छे प्राण आधारजी ।। २

सुपनांतरमां[१३] ख्यण न मूके, तो साख्यात अलगां केम थाएजी ।
क्रपा वालाजीनी केही कहूं, जो जुए जीव रुदया[१४] मांहेंजी ।। ३

---

१. कुछ । २. खेल कर । ३. हम । ४. फिर । ५. उसी क्षण । ६. जरा सी (धुंधली स्मृति) । ७. भेजा । ८. अकेला । ९. याद करो । १०. डाल दिया (समर्पण किया) । ११. निःसंकोच । १२. लिए । १३. स्वप्न में (रास लीला में) । १४. हृदय में ।

एवडी वात वालो करे रे आपणसूं, पण नथी कांई साथने सारजी[1] ।
भरम उडाडी जो आपण जोईऐ, तो बेठा छे आपणमां आधारजी ॥ ४

सुपनांतरमां मनोरथ कीधां, तिहां पण वालोजी साथजी ।
सुंदरबाई लेई आवेस धणीनों, नव मूके आपणो हाथजी ॥ ५

तिलमात्र दुख नव दिए रे आपणने, जो जोईऐ[2] वचन विचारीजी ।
दुख आपणने तोज[3] थाए छे, जो संसार कीजे छे भारीजी ॥ ६

अंतरध्यान समे दुख दीधां, ए आसंका[4] मन मांहेंजी ।
एणे समे संसार भारे नव कीधूं, साथें दुख दीठां एम कांएजी ॥ ७

दुखतां केमे न दिए रे वालोजी, एतां विचारीने जोईएजी ।
सांभरे वचन तोज रे सखियो, जो माया मूकतां[5] घणूं रोईऐजी ॥ ८

वचन सांभरवा काजे मारे वालें, दुख दीधां अति घणांजी ।
आपण मनोरथ एहज[6] कीधां, वालें राख्यां मन आपणांजी ॥ ९

आपण मायानी होंसज[7] कीधी, माया तो दुःख निधानजी[8] ।
ते सांभरवाने काजे रे सखियो, वालो पाम्या अंतरध्यानजी ॥ १०

नहीं तो अधख्यण ए रे आपणों, नव सहे विछोहजी ।
एतां विचारीने जोईऐ रे सखियो, तो तारतम भाजे[9] संदेहजी ॥ ११

एणे समे तारतमनी समझण, ते में केम केहेवाएजी ।
अनेक विधनूं तारतम इहां, तेणे घर लीला प्रगट थाएजी ॥ १२

ओलखवाने[10] धणी आपणो, कहूं तारतम विचारजी ।
साथ सकल तमे ग्रहजो चितसूं, नही राखूं संदेह लगारजी ॥ १३

पेहेले फेरेतां ए निध न होती, अजवालूं[11] तारतमजी ।
तो आ फेरो थयो साथने, साथ जुओ विचारी मनजी ॥ १४

उत्कंठा नव रहे केहेनी, जो कीजे तारतम विचारजी ।
तारतमतणूं अजवालूं लेईने, आव्या आपणमां आधारजी ॥ १५

---

१. सुधि । २. देखिये । ३. तभी । ४. संदेह । ५. छोड़ते । ६. यही । ७. उमंग । ८. खजाना, घर । ९. निवारण करे । १०. पहचान कराने । ११. प्रकाश ।

एणे अजवालें जो न ओलख्या, तो आपणमां अति मणांजी[1] ।
चरणे लागी कहें इंद्रावती, वालो नव मूके गुण आपणांजी ॥ १६

॥ प्रकरण ॥ २ ॥ चौपाई ॥ २० ॥

सकल साथ, रखे[2] वचंन विसारोजी ।
धणी मल्या आपणने मायामां, अवसर आज तमारोजी ॥ १

सुंदरबाई अंतरगत कहावे, प्रकास वचन अति भारीजी ।
साथ सकल तमे मली[3] सांभलो, जो जो तारतम विचारीजी ॥ २

साथ एणे पगलें[4] चालजो, पगला एह प्रमाणजी ।
प्रगट तमने पेहेले कह्यूं, वली कहूं छूं निरवाणजी[5] ॥ ३

हवे रखे माया मन धरो, तमे जोई अनेक जुगतजी ।
कै कै पेरे कह्यूं में तमने, तमे हजी न पाम्या त्रपतजी ॥ ४

जिहां लगे तमे रहो रे मायामां, रखे ख्यण मूको रासजी ।
*पचबीस पक्ष लेजो आपणां, तमने नहीं लोपे मायानों पासजी[6] ॥ ५

अनेक विध में घणुए कह्यूं, हवे रखे ख्यण विहिला[7] थाओजी ।
रासतणी रामतडी जो जो, जे भरियां आपण पाएजी ॥ ६

रास रामतडी रखे ख्यण मूको, जे आपण कीधी परमाणजी[8] ।
तमे घणुए नव मूको माया, पण हूं नहीं मूकूं निरवाणजी ॥ ७

कहे इंद्रावती वचन वालाना, जे सुणया आपण सारजी ।
हवे लाख वातों जो करे रे माया, तो हूं नहीं मूकूं चरण निरधारजी[9] ॥ ८

॥ प्रकरण ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ २८ ॥

## चौपाई प्रगटी

न कांई मनमां न कांई चित, न कांई मारे रदें एवडी[10] मत ।
एक वचन समूं[11] नव केहेवाए, एतां आव्यो जाणे पूरतणो दरियाए ॥ १

---

१. कमी । २. मत, न । ३. मिल कर । ४. चाल । ५. स्पष्ट । ६. रंग ।
७. विमुख । ८. प्रमाणित । ९. निश्चित । १०. इतनी । ११. सीधा ।

श्री सुंदरबाई लेई आवया, इंद्रावती पर पूरण दया ।
रुदें बेसी[1] केहेवराव्युं एह, साथ माटे कह्या सनेह ।। २

वचन एक केहेतां निरधार, अमें घर जईने लेसूं सार ।
अद्रष्ट थईने कहे वचन, साथ सकल तमे ग्रहजो मन ।। ३

आपण पेहेलां पगला भरियां जेह, वली जे कीधां प्रेम सनेह ।
ते प्रगट कीधां आपण माट, धोक[2] मारग ए आपणी बाट ।। ४

आपणने ए प्रगट करी, साथ सकल लेजो चित धरी ।
तमे रखे हलवी[3] करो ए बान, पूरण दयाएं कह्यां निरवान ।। ५

प्रमोध[4] वचन ते सदा केहेवाए, पण आ वचन कांई प्रगट न थाए ।
ते माटे तमे सुणजो साथ, आपणमां बेठा प्राणनाथ ।। ६

आपणने सिखामण कहे, पण भरम आडे रुदें नव रहें ।
ते भरम उडाडो[5] जोई रास, जेम ओलखिएं आपणों प्राणनाथ ।। ७

विहिला थयानी नहीं ए वार, तेडवा आपणने आव्या आधार ।
प्रगट पुकारी कहे छे सही, आ वचन कहाव्या अंतरगत रही ।। ८

एक वचन न आवे अस्तुत, सोभा दीधी जेम कालबुत[6] ।
अस्तुतनी इहां केही वात, प्रगट थावा कीधी विख्यात[7] ।। ९

फल वस्त जे भारे वचन, जीव पण न कहे आगल मन ।
ते प्रगट कीधां अपार, जे कांई हतो आपणो सार ।। १०

सगाई कीधी प्रगट, आपण घणुए राखी गुपत ।
वचन एक ए छे निरधार, श्री सुंदरबाई केहेतां जे सार ।। ११

आ लीला थासे विस्तार, सूरज ढांक्यो न रहे लगार[8] ।
आ लीला केम छानी[9] रहे, जेहेने रास धणी एम वचन कहे ।। १२

ते माटे तमे सुणजो साथ, जे प्रगट लीला कीधी प्राणनाथ ।
कोई मनमां म धरजो रोष, रखे काढो मेहेराजनो दोष ।। १३

---

१. बैठ कर । २. आकाश मार्ग । ३. हल्की । ४. उपदेश । ५. उड़ा दो । ६. नश्वर शरीर । ७. प्रकट वर्णन । ८. जरा भी । ९. छिपी ।

एटलू तमे जाणो निरधार, आ वचन मेहेराजें प्रगट न थाए ।
आपण घरनी नहीं ए वात, जे किव करी मांडिऐ[1] विख्यात ॥ १४

हूं मन मांहें जाणूं घणूं, जे किव नहीं ए काम आपणूं ।
आ तां नथी कांई किवनी वात, रुदे बेसी केहेवराव्युं[2] प्राणनाथ ॥ १५

वचन सरवे आवेसमां कह्या, *उतमबाईऐं जोपे करी ग्रह्या ।
एम कह्यूं देई आवेस, जे प्रगट लीला कीधी वसेख ॥ १६

में मन मांहें जाण्यूं एम, जे किव[3] थासे त्यारे रमसूं केम ।
किव पण थई आ वचन विचार, रमी इंद्रावती अनेक प्रकार ॥ १७

सघला कारज थया एम सिध, श्रीसुंदरबाईऐं सिखामण दिध ।
रुदें बेसी केहेवराव्युं रास, पेहेलो फेरो कीधो प्रकास ॥ १८

ते माटे तमे सुणजो साथ, आपण काजे कीधूं प्राणनाथ ।
रखे जाणो मनमां रहे कांई लेस, ते माटे कीधो उपदेस ॥ १९

आपण पेहेला पगला भरियां सार, एम चालो म लावो वार[4] ।
वली जो जो आ पेहेलां वचन, प्रेम सेवा एम राखो मन ॥ २०

तारतम वचन कहूं वली फरी, तमने कह्यूं छे अनेक विध करी ।
वली तमने कहूं प्रकास, सुणजो एकमने[5] ग्रही स्वांस ॥ २१

पेहेले फेरे श्री वैकुंठ नाथ, इछा दरसन करवा साथ ।
साथतणे मन मनोरथ एह, जे माया रामत जोईऐ तेह ॥ २२

त्यारे भगवानजी मन विमास्या[6] रही, श्रीधणीजीऐं इछा कीधी सही ।
लाधूं सपन दीधूं आवेस, माया रामत कीधी प्रवेस ॥ २३

ए आवेस लेईने करी, प्रगटया गोकल नंद घरी ।
साथ सपन एम लाधूं सही, जे गोकल रमया भेला थई ॥ २४

अग्यारे बरस लगे लीला करी, कालमाया इहांज परहरी[7] ।
जोगमाया करी रमया रास, आनंद मन आंणी उलास ॥ २५

---

१. रचिए । २. कहलाया । ३. कविता । ४. देर । ५. दत्त चित्त ।
६. विचारते । ७. छोड़ दी ।

रास रमी घेर आव्या एह, साथ सकल मन अधिक सनेह ।
कांईक उत्कंठा रही मन सार, तो आपण आव्या आंणी वार ॥ २६

वली एक वचन कहूं सुणजो साथ, दया करी कहें प्राणनाथ ।
आ किव करी रखे जाणो मन, भरम टालवा कह्या वचन ॥ २७

भरम टले ओलखाए[1] धणी, अने सेवा थाए मारा वालाजी तणी ।
ओलखाए वल्लभ तो टले माया पास, एटला माटे प्रगट थयो रास ॥ २८

पेहेला फेराना अवतार, ते तारतमें कह्या विचार ।
पेहेले फेरेतां खबर न पडी, तो आपण आव्या आंहीं वली[2] ॥ २९

कांईक मन मांहें रह्यो अंदेस,[3] ते राखे नहीं धणी लवलेस ।
हवे आ फेरानो जो जो विचार, अजवालूं लेई आव्या आधार ॥ ३०

साथने रखे उत्कंठा रहे, तारतम वचन पाधरा[4] कहे ।
लेई तारतम आव्या आ वार, मेहता मतू घेर अवतार ॥ ३१

*कुंअरबाई मातानूं नाम, उत्तम काएथ उमरकोट गाम ।
श्री *देवचंदजी नगर आवया, आवी वचन भागवतना ग्रह्या ॥ ३२

चौद बरस लगे नेष्टा बंध, वचन ग्रह्या सघली[5] सनंध[6] ।
एणे समे गांगजी भाई मल्या, धनबाई ऊपर पूरण दया ॥ ३३

सनंधें सरव कह्या वचन, ग्रह्या गांगजी भाईएं जोपें मन ।
एटला लगे कोंणे नव लह्या, ते गांगजी भाई घेर परगट थया ॥ ३४

पधराव्या[7] पोताने[8] घेर, जुगतें सेवा कीधी अनेक पेर ।
त्यारे श्रीमुख वचन कह्या प्राणनाथ, जे खोली काढवो[9] छे आपणों साथ ॥ ३५

प्रवेस कीधो छे माया मंझार, तेडी आपणने जावुं निरधार ।
अमे आव्या छूं एटले काम, तेडवा[10] साथ घरे श्री धाम ॥ ३६

त्यारे गांगजी भाई पाम्यां अचरज मन, जे किहां छे साथने आवसे केम ।
आ वचन वेहदना कोण मानसे, केणी पेरे ए साथ आवसे ॥ ३७

---

१. दिखाने से पहिचान । २. फिर । ३. संदेह । ४. साफ । ५. पूरी, सारी । ६. रीति । ७. रखा । ८. अपने । ९. ढूंड निकालो । १०. बुलाने ।

आ माया पूर बहे निताल,[1] नख मूक्यो लेई जाए ततकाल ।
लेहेर ऊपर आवे छे लेहेर, मांहें दीसे भमरीना[2] फेर ।। ३८

आडा ऊंचा वेहेवट[3] घणां, अने विकराल जीव माहें जलतणां ।
ऊंचोआडो ऊभोऊंडो अतांग,[4] पोहोरो[5] कठिण नथी केहेनो लाग ।। ३९

नव सूझे हाथने हाथ, माया अमले छाक्यो साथ ।
नव ओलखे आपने पर, सुध नहीं सरीर न सूझे घर ।। ४०

त्यारेबेहेरद्रस्टनोकह्योविचार, एकमोटो आडीको[6] थासेनिरधार ।
अंतरगते आवसे धणी, वसतों आपणने देसे घणी ।। ४१

आपण मांहें आंहीं आरोगसे,[7] साथतणी द्रस्टें आवसे ।
थासे छेडा ग्रह्या लगण, मानसे मन त्यारे अति घंण ।। ४२

आवसे साथ उछाह[8] अति घणां, तमे वचंन मूको रखे तारतमतणां ।
बेहेर द्रस्टतणो जोई अजवास,[9] आनंद मंन उपजसे साथ ।। ४३

त्यारे वचनतणां करसूं विचार, खरी वस्त जोसूं ततकाल ।
बासना ओलखी लेसूं सही, माया जीवने वचन भारे केहेसूं नहीं ।। ४४

ए आडीको कीधो उत्तंम, पण घरनी निध ते कही तारतम ।
जेथी ओलखिए आधार, वली जीवने टले अंधकार ।। ४५

त्यारे गांगजी भाई पाम्या उछरंग, कीधां क्रतब[10] अति घणे रंग ।
साख्याततणी सेवा कीधी सही, अंग पाछूं कोई राख्यूं नहीं ।। ४६

हवे साथ खोली काढूं आ वार, तेतां तमने में कह्यो प्रकार ।
श्री सुंदरबाई तणो अवतार, पूरण आवेस दीधों आधार ।। ४७

आपणने तेडवा आवया, साथ ऊपर छे पूरण दया ।
अनेक वचन आपणने कह्या, पण भरम आडे रुदे नव रह्या ।। ४८

त्यारे अनेक विध आपणने कही, पण भरम बेठो चित आडो थई ।
अनेक आपणने कह्या द्रस्टांत, तोहे बेठा अमे ग्रही स्वांत ।। ४९

---

१. प्रखर प्रवाह । २. भंवर । ३. प्रवाह । ४. अथाह । ५. समय । ६. चमत्कार । ७. भोजन करेंगे । ८. उमंग । ९. प्रकाश । १०. कर्त्तव्य ।

अनेक आपणसूं कीधां उपाए, तोहे आपणों सुभाव न जाए ।
अनेक विधें कह्यूं तारतंम, तोहे आपणों न गयो भरम ।। ५०

अनेक आपणसूं कीधां विचार, कही कही बांक[१] टाल्यो आधार ।
अनेक पखे समझाव्या सही, आपणने टांकी[२] लागी नहीं ।। ५१

अनेक आडीका मेल्या आधार, तोहे आपणने न वली सार ।
अनेक प्रकार करी करी रह्या, पक्ष पचबीस आपणने कह्यां ।। ५२

ते पण आपण रह्या सही, तोहे भरम उडाड्यो नहीं ।
तोहे आपण ऊपर अति दया, व्रज तणां सुख विगतें[३] कह्या ।। ५३

वली वसेखे वरणव्यो रास, पेहेला फेरानों कीधों प्रकास ।
तोहे आपण हजी तेहना तेह, वली वरणव्या श्री धाम सनेह ।। ५४

दया आपण ऊपर अति घणी, परगट लीला कीधी घरतणी ।
सेवा कीधी धनबाईएं ओलखी धणी, सोभा साथमां लीधी अतिघणी ।। ५५

साथसों हेत कीधां अपार, धंन धंन *धनबाईनो अवतार ।
कांईक लेहेर लागी संसार, त्यारे अडवडती[४] ऊभी राखी आधार ।। ५६

बेहेबट[५] पूर खमाए[६] नहीं, त्यारे बांह ग्रहीने काढी सही ।
पण न वली सुध आपणने केमे, मोहजल गुण नव मूक्यो अमे ।। ५७

त्यारेबढ्याआपणसूं पोतावट[७]करी, तोहेभरमनिद्रानवमूकीपरहरी ।
त्यारे अनेक पेरे आंसूवालीने[८] कह्यूं, पण एणेसमेअमेकांईनवलह्यूं ।। ५८

त्यारे वली धणीजीएं कीधो विचार, जे साथ घेर तेडी जावुं निरधार ।
त्यारे संवत सतरे बारोतरे[९] वरष, भादरवो मास अजवालो पक्ष ।। ५९

चतुरदसी बुधबारी थई, सनंधे सरवे श्री विहारीजीने कही ।
मध्यरात पछी कीधों परीआंण[१०], विहारीजीने कांईक थईजांण ।। ६०
हूं तेणे समे थई बेठीअजांण, मूनेफजीत[११] गन्याने[१२]कीधीनिरवांण ।
घेरथी तेडी मूने दीधी निध, तोहे न मूकी जोवें मोहजल बुध ।। ६१

---

१. दोष । २. चोट । ३. विवरण से । ४. लड़खड़ाते हुए । ५. तेज प्रवाह । ६. सहन होना । ७. अपना पन । ८. रो कर । ९. बारह । १०. धाम गमन । ११. अपकीर्ति । १२. ज्ञान ने ।

मूने हतो मायानी लेहेर, तो न आव्यो जीवने बेहेर[१] ।
त्यारेमारीनिध गई मांहेथी मारे हाथ,श्रीधाम घेर पोहोंता[२] प्राणनाथ ॥ ६२

आंहीं अम मांहेंथी अद्रस्ट थया, अमें सारा साजा बेसी रह्या ।
जो कांई जीवने आवे भाए, तो आ वचन केम काने संभलाए ॥ ६३

ते तां में जोयूं मारी द्रस्ट, अने जीव थई बेठो कोई दुस्ट ।
नहीं तो विछोडो केम खमाए, पण दुस्ट भरम बेठा मन मांहें ॥ ६४

एक वचनतणो नव कीधो विचार, न कांई ओलखीया आधार ।
सांभलो [*]रतनबाई ए कीहू परकार, एवी बुध केम आवी आ बार ॥ ६५

एणे समे अमने सूं थयूं, सगाईतणो[३] सुख कांई नव लह्यूं ।
जुओ रे बेहेनी[४] अमें एम कां थया, एवडा दुख अमे खमीने रह्या ॥ ६६

ए दुखनी वातों छे अति घणी, पण ए अग्या मारा वालाजीतणी ।
एणे समे जो निध नव जाए, तो आवेस सरूपें केम मुकाए[५] ॥ ६७

आवेस धणी ओलखाए, ओलखे ख्यण जुआ[५] न रेहेवाए ।
ते माटे जो एम न थाए, तो आ वाणी केम केहेवाए ॥ ६८

हवे फिट फिट रे भूंडी तूं बुध, तें नव दीधी जीवने सुध ।
महादुस्ट अभागणी तूं, जांण जीवने कां नव करयूं ॥ ६९

एवडी बात तें केम करी सही, के तूं घर मूकीने गई ।
के तूं विकल थई पापणी, विना खबर निध गई आपणी ॥ ७०

हवे तूंने सी[६] देऊं रे गाल, तें नव लाध्यो अवसर आंणी वार ।
हवे फिट फिट रे भूंडा तूं मन, तें कां कीधो एवडो अधरम ॥ ७१

जीव समो[७] तूं बेठो थई, तुझ देखतां ए निध गई ।
एवडी उपमा बेठो लेई, अने बेठो छे काया धणी थई ॥ ७२

तें नव कीधूं जीवने जांण,[८] नेठ खोटो ते खोटो निरवांण ।
आ क्रोध हतो सबलो समरथ, पण नव सरयूं तूं मांहें थी अरथ ॥ ७३

---

१. प्रतीति । २. पहुँचे । ८७. सम्बन्ध । ३. बहन । ४. छोड़ा जाय । ५. अलग । ६. क्या । ७. समान । ८. समझ ।

गुण सघले घारण[1] आवयो, अने जीव कायामां बेसी रह्यो ।
सघला गुण काया[2] मंझार, कोंणे नव लाध्यो अवसर आंणी वार ॥ ७४
फिट फिट रे भूंडा जीव अजांण, तारी सगाई हती निरवांण ।
रे मूरख तूंने सूं थयूं, ए निध जातां कांई पाछूं नव रह्यूं ॥ ७५
एटला दुख तें केम करी सह्यो, अनेक विध तूंने घणवें[3] कह्यो ।
निबल जीव तूं थयो निरधार, तें नव कीधी घरनी सार ॥ ७६
एवो अबूझ अकरमी थयो तूं कांए, कांई न विमास्यूं[4] रुदया मांहें ।
बुध मन सारूं बेठो थई, निध जातां तोहे घारण न गई ॥ ७७
एवो कठण कोरडू तूं कां थयो, आवडी अगने हजी नव चड्यो[5] ।
पांच बरसनो होए जे बाल, ते पण कांईक करे संभाल ॥ ७८
हवे तूंने हूं केटलूं कहूं, अवसर आवें कांई नव लह्यूं ।
तारी दोरी कां न टूटी ततकाल, फिट फिट भूंडा किहां हतो काल ॥ ७९
आतां केहेर मोटो जुलम थयो, अने जाणिएं तो केम जाए सह्यो ।
ते तां में मारी मीटे[6] जोयूं, धरम अमारू कांई नव रह्यूं ॥ ८०

॥ प्रकरण ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ १०८ ॥

विलापकरचा छे—राग रामग्री

जुओ रे बेहेनी हूं हाए हाए, करती हीडू[7] त्राहे त्राहे ।
वालोजी विछडतां, जीव कडका[8] न थाए ॥ १
फिट फिट रे भूंडा[9] तूं सबद, केम आवी मुख वाण ।
वाए न आव्यो ते दिसनो, धणी भेला चालतां मारा प्राण ॥ २
केम वली जिभ्या मारी, ए केहेतां वचंन ।
समूली[10] न चुटांणी,[11] जिहां थकी[12] उतपंन ॥ ३
श्री धणीजी सिधावतां, केम रही वाचा[13] अंग ।
उखडी न पड्या दंतडे, घण घाए[14] मुख भंग ॥ ४

१. गहरी नींद । २. शरीर । ३. बहुत ज्यादा । ४. विचारा । ५. गला । ६. नजर । ७. चलती । ८. टुकड़े । ९. दुष्ट । १०. मूल से । ११. खिंच गई । १२. से । १३. बोली । १४. हथौड़े की चोट ।

केम न सुणियां रे, ए वचन तें श्रवणां ।
तें सूं न हता सुणया, वचन धणी तणां ॥ ५

ए रे लवो[1] सुणतां, तूंने दाझ न आवी ।
एणे रे लवें अगिननी, झालमां[2] कां न झंपावी[3] ॥ ६

निबल नयणां रे भूंडा, तमे द्रस्टें नव जोयूं ।
वालोजी रे विछडतां, तमे लोही नव रोयूं ॥ ७

सूं रे थयूं तूंने, तमे लोही[4] नव रडिया ।
एवो व्रह देखी ततख्यण, निकली न पडिया ॥ ८

ए वचन तणी तूंने नासिका, न आवी रे प्रेमल[5] ।
वालैयो रे विछडतां, तें नव दाख्यूं[6] रे बल ॥ ९

फिट फिट रे प्रेमल, नासका केम रही ।
ए निध जातां अंगथी, विछडी नव गई ॥ १०

प्रेमतणी रे धणी, गोली बांधतां काम ।
तेहेमां सूं न हता रे गुण, तमे चतुर सुजांण ॥ ११

फिट फिट रे गुण तमने, ए अंग ना प्रेम कांम ।
नव लाधो व्रह विछडतां, ए धणी श्री धाम ॥ १२

एवडी वात तें केम सही, अंग ऊभो केम रह्यो ।
रोम रोम हेठे[7] कां, गली नव पडिओ ॥ १३

अगिनडी न उठी रे, कालजडे रे झाल ।
ए व्रेहे[8] अंग लेई कां, ऊभो रह्यो रे चंडाल ॥ १४

हाथ पग सहू अंगना, सरवे रे संधांण[9] ।
जुंजवा[10] कां नव थया, आथभते[11] ए भांण ॥ १५

भांण वचन रे कांई, वालाने न केहेवाए ।
धणीतणी रे जोत, कोट ब्रह्मांडे न समाए ॥ १६

---

१. जरा सा । २. ज्वाला । ३. कूद पड़ता । ४. लहू । ५. प्रेम की सुवास । ६. दिखाया । ७. नीचे । ८. विरह । ९. जोड़ । १०. अलग । ११. अस्त होते ।

जोत ने प्रगट थई, नव झाली[1] रहे विना ठाम ।
ब्रह्मांड अखंडोमां नीसरी,[2] जई पोहोंती घर श्री धाम ॥ १७

ए जोत जोसे रे सखी, सकल मलीने साथ ।
वचन ए प्रगट थासे, रास ने प्रकास ॥ १८

नसो न त्रूटी रे, तूं केम रही तन तुचा[3] ।
रूप रंग लेई कां न थई, तिल तिल जेवडा[4] पुरजा ॥ १९

हाड मांस रे तमे, केम रह्या रे भेला ।
कांए न सूकूं रे मारूं, लोही तेणी वेला ॥ २०

फिट फिट रे तुबली,[5] भूंडी केम रही साजी ।
साखला[6] न थई रे, एहेरण[7] घण वचे लागी ॥ २१

अंग मारा रे अभागी, तमे कां भूको[8] नव थया ।
ए धणी रे चालतां, अधरमी कां ऊभा रह्या ॥ २२

केम ने रह्यूं रे मारा, अंग मांहें बल ।
तें जीवने नव काढचूं रे, निध जातां नेहेचल[9] ॥ २३

नेहेचल निध रे जातां, तूं कहां हती बुध ।
धिक धिक रे चंडालनी, तूं कां थई रे असुध ॥ २४

गनांन भूंडा एणे समे, नव कीधो अजवास ।
एवी सी मुने भुलवो[10] रे, में कीधो तारो विस्वास ॥ २५

गुण ने सघला मली रे, तमे मोसूं थया अवला[11] ।
मारो धणी रे चालतां, तमे कां नव थया सबला[12] ॥ २६

ए वालो रे चालतां, गुण हता अंग मांहें ।
काम न आव्या रे तमे, मारे अवसर क्यांहें ॥ २७

धिक धिक पडो रे तमने, सूं न हती ओलखांण ।
जीवनूं धन रे जातां, तमे कां नव काढचा प्रांण ॥ २८

१. पकड़ी । २. निकल गई । ३. त्वचा चमड़ी । ४. जितना । ५. तुंबी (खोपड़ी) । ६. नष्ट न हुई । ७. निहाई । ८. चूरा । ९. स्थाई । १०. भुला दिया । ११. उल्टा । १२. सीधा ।

कांए न नीसरिओ[१] रे, भूंडा जीव एणी बार ।
फिट फिट कालिआ[२] अवसर, चूक्यो रे चंडाल ॥ २९

नीच अधरमी जीव, एवो अधरम कोई करे ।
श्री धणी धाम चाल्या पछी, आकार कोंण धरे ॥ ३०

केही पेरे करूं जीव तूंने, तूं चूक्यो रे चंडाल ।
जो तूंने अगिन न उठी रे, कां न झंपाव्यो झाल ॥ ३१

भेरव[३] न झंपाव्यो रे जीव, एवो थयो कां कायर ।
तरवारे न ताछयो अंग, धणी जातां सुखना सायर[४] ॥ ३२

गुण धणी जातां रे जीव, तहारो किहां हतो काल ।
करम कोढियो ढेड[५] तूं, थयो रे चंडाल ॥ ३३

हवे केटलूं कहूं रे दुस्ट, तें नव ग्रह्यो वासो[६] ।
अवसर भूले रे घणों, पडियो रे वरांसो[७] ॥ ३४

खरी रे वस्तनो, तूंने हतो रे तेज ।
तें कां नव राख्यो रे, धाम धणीसूं हेज[८] ॥ ३५

ए धणी रे विछडतां, केम रह्यो रे अंग पास ।
कांए न समाणो रे तूं, तेजसूं जोत प्रकास ॥ ३६

हवे हूं केम करूं रे, वचन वाणी धणी किहां ।
वालैयो वोलावी करी, हूं पाछी रही इहां ॥ ३७

हवे किहांने सुणीस[९] रे, ए वचन वल्लभ ।
श्रीमुख वांणी रे मूने, थई छे रे दुरलभ ॥ ३८

तारतम तणां विचार, कोंण करी देसे हेत ।
केमने साभलसूं, व्रज रास अखंडना विवेक ॥ ३९

उत्तम आडिकाने[१०] वली, उतंम द्रस्टांत ।
कोणने विचारसे, धणी विना करी खांत[११] ॥ ४०

---

१. निकला । २. काल । ३. भयानक । ४. सागर । ५. नीच । ६. पीठ ।
७. पछतावा । ८. स्नेह । ९. सुनेगा । १०. चमत्कार । ११. लग्न ।

चौद बरस लगे नेस्टाबंध, भागवत कोंण लेसे ।
एहेनो सार काढी अमने, ततखण कोंण देसे ॥ ४१

दूध पाणी ना विछोडा, कोंण करीने देसे ।
हवे आ वेहेवट[1] मांहेंथी, बांहें ग्रहीने कोंण लेसे ॥ ४२

एक सो ने आठ, कहिए जे पक्ष ।
ते जुजवा[2] वरणवी, अमने कोंण देसे रे सुख ॥ ४३

*नरसैया *कबीर *जाटी, वचन कोंण लेसे ।
एहेना अरथ अमने, कोंण करी देसे ॥ ४४

महाने प्रले लगे, कोई करे अभ्यास ।
सरवे विद्या सास्त्रनी, लिए करी विसवास ॥ ४५

तोहे केमे न आवे रे, विद्या एवी रे वांण ।
ते ख्यंण मांहें देई करी, वालो करतां चतुर सुजांण ॥ ४६

अबूझ टालीने हवे, कोंण करसे वचिख्यंण[3] ।
नेहेचल निध निज धामनी, कोंण देसे ततख्यंण ॥ ४७

खीजी बढीने[4] ए निध, बीजो कोंण देसे ।
जीवना सगा जांणी, आंसूवाली कोंण केहेसे ॥ ४८

अनेक पेरे अमने, एम कोंण प्रीछवसे[5] ।
देखाडवा आ रामत, एणी पेरें देह कोंण धरसे ॥ ४९

आ ब्रह्मांडने रामत, बीजो कोंण केहेसे ।
ए रामत देखाडी ए थकी, अलगां राखी कोंण लेसे ॥ ५०

विध विधनी रे चरचा, हवे किहां रे सांभलसूं ।
एह रे वाणी विना, हवे आपण केम गलसूं ॥ ५१

गल्या पखे बीजो घाट, केम करी थासे ।
बीजा घाट विना मोहजल, केम रे मुकासे[6] ॥ ५२

---

१. प्रवाह । २. अलग । ३. विज्ञ । ४. डांट कर । ५. समझाएगा । ६. छोड़ा जाय ।

पांच पचीस तेहने, बीजो कोण ओलखावसे ।
वचन धणीना पखे, ए सवलो[1] केम थासे ।। ५३
जीवता गुण ते हवे, केणी पेरे मरसे ।
दुखी टालीने सुखी, बीजों कोंण करसे ।। ५४
श्रवणां ने अंग इंद्री, टालसे कोंण अवला[2] ।
ए धणी बिना बीजो कोंण, करी देसे सवला । ५५
आतम ने परआतमां, भेला कोंण करसे ।
आ सागर मांहेंथी, बीजो कोंण लेई तरसे ।। ५६
नख त्रोड पूरतणांता, बांहें ग्रहीने कोंण बालसे[3] ।
एवा लाड अमारा, हवे बीजो कोंण पालसे ।। ५७
सागर जीव खोली—करी,[4] वासना कोंण परखसे ।
खोलतां लाधे वासना, एम कोंण हरखसे ।। ५८
हवे कोंणने वरणवसे, ब्रज रास ने श्री धांम ।
ए सुख देई कोंण भाजसे,[5] कोंण मारा जीवनी हांम[6] ।। ५९
जीवने जगावी ए निध, बीजो कोंण देसे ।
श्रवणां उघाडी[7] जीवना, एम वचन कोंण केहेसे ।। ६०
नेहेचल निध देई करी, सूतो जीव कोंण जगाडसे ।
ब्रह्मांड फोडीने श्री धाम, उपरवाडे[8] कोंण पोहोंचाडसे ।। ६१
उपरवाडे बाट खिण मांहें, ए घर केम रे लेवासे ।
ए भोईया[9] विना आ भोम, केम रे मेलासे ।। ६२
अचेत अबूझ साथने, कोंण सुधारी लेसे ।
जीवना सगा जांणी करी, ए निध बीजो कोंण देसे ।। ६३
सुतेज सत सागर मांहेंथी, धन आवतूं अविचल ।
बही गयूं रे पूर, लेहेर आवतियों छोल ।। ६४

१. सीधा । २. उलटा । ३. रक्षा करेंगे । ४. ढूंढकर । ५. पूर्ण करना । ६. साहस । ७. खोल कर । ८. आसमानी मार्ग । ९. मार्ग दर्शक ।

ए निध बेहेनी रे हूं, बेठी रे खोई ।
भरम मूने गेहेन[१] हुतो, तेणे हूं रही जोई ॥ ६५

एवडूं अंधारूं थातां, तूं केम रही रे जोई ।
फिट फिट रे पापणी, ए निध केम रही खोई ॥ ६६

धिक धिक रे जीवडा, तें खोई निध हाथें ।
धणी धाम चालतां, तूं न चाल्यो साथें ॥ ६७

खुटी[२] न आवी रे भूंडी, तूं वल्लभ विछडतां ।
हजी न जाए रे जीव, ए वचन सांभरतां ॥ ६८

फिट फिट भूंडा जीव, ए तें कीधूं रे सूं ।
ए व्रह देखी अंगथी, उडी न पडियो तूं ॥ ६९

हाए हाए करूं रे बेहेनी, वालें दीधों मूने छेह[३] ।
भसम न थयो रे, मारा जीवसूं देह ॥ ७०

घणुंए कह्यूं रे बेहेनी, मूने मूल सनेह ।
पण हूं निगमी[४] बेठी रे, निध हाथ आवी जेह ॥ ७१

घणुए जणावियूं, निध देई चालतां एकांत ।
पण में खोई निध पापणी, ग्रही बेठी हूं स्वांत ॥ ७२

हवे सबदातीत निध, कोंण देसे रे वांण ।
व्रतमाण[५] तणी रे, कोंण केहेसे जांण ॥ ७३

उठतां बेसतां[६] रमतां,[७] खबर कोंण देसे ।
वन पधारचा रे सखी, सिणगार कोंण वरणवसे ॥ ७४

वस्तर भूंषणनी, विगत[८] कोंण लेसे ।
ए धणी विना रे ए सुख, हवे बीजो कोंण देसे ॥ ७५

मूल तारतम तणी, कोंण प्रीछवसे[९] रे बडाई ।
धांम धणीसूं मूने, कोंण करी देसे रे सगाई ॥ ७६

---

१. गहन । २. मौत । ३. वियोग । ४. गंवा । ५. चलन । ६. बैठते । ७. खेलते । ८. विधिपूर्वक वर्णन । ९. समझाएगा ।

मूल तारतमतणां, कोंण करसे विचार ।
आसा - मुखी हती *इंद्रावती, मारा प्राणना आधार ॥ ७७

॥ प्रकरण ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ १८५ ॥

भाषा सिंधी जाटी

मूजी[1] सैएल[2] रे, सजंण हुअडा[3] मूं गरें[4] ।
मूं न सुजातां[5] सिपरी,[6] हल्यां कारचूं[7] घणूं करे ॥ १
सजंण आया मूं गरे,[8] मूं न सुजातां सेंण[9] ।
गाल्यूं केयाऊं हेतमें, घणां भली भली 'जा वेण ॥ २
मूंके जा घारंण आबईं, जे आंईं पसो साथ ।
त खरे बपोरे[10] सेज सोझरे,[11] मूंके थेईं रात ॥ ३
सजंण आया न सुजातम, मूंके चेयाऊं घणां वेण ।
कंन अंखियूं फुटियूं, व्या फूटचा हिएजा नेण ॥ ४
सजंण! बिया[12] निकरी,[13] हांणें आंऊं करियां कीं ।
अवसर व्यो मूंजे हथ मंझां, हांणें रूअण रातो डींह ॥ ५
पिरी हल्यां[14] प्रभातमें, आंऊं उथिस[15] अबेरी[16] ।
कीं बंजांईयां[17] वलहो, जे हूंद जागां सबेरी ॥ ६
जीव मूहीजो जे तडे जागे, त अवसर बंजाईयां कीं ।
हूंद साथ न छडियां सजणे, आडी लेहेर माया थेईंनी ॥ ७
हांणें डिसूनी[18] डोंहे[19] निहारीयां,[20] तां जर भरया अतांग[21] ।
महें लेहेरचूं मेर[22] जेडियूं, मछे पेरां न्हाए मांग ॥ ८
महें घूमरियूं[23] जर जुजवा, व्या परी परी जा पूर ।
हिक बेर न बेहेजे[24] सुख करे, हेतां डिसे डुखे संदा मूर ॥ ९
हिक घोर अंधारो व्यो अंखे न सुझे, त्रेओ हिएडो न्हाएम हंद ।
पिरी आया मूंके पार उतारण, एहेडी धारा मंझ ॥ १०

---

१. मेरी । २. सखी । ३. आए । ४. घर । ५. पहचाना । ६. प्रीतम । ७. पुकार । ८. घर में । ९. साजन । १०. दोपहरे । ११. प्रकाश । १२. गए । १३. निकल । १४. चले । १५. उठी । १६. देर से । १७. जाता । १८. दिशाओं में । १९. दशों । २०. देखती हूँ । २१. अथाह । २२. पर्वत । २३. भंवर । २४. बैठकर ।

मूं कारण सैएल मूंहजी, हिनमें बिधाऊं[१] पांण[२] ।
कूकडियूं[३] करे करे, नेठ[४] उथी बियां निरवांण[५] ।। ११

हांणे कीं करियां केडा बंजां,[६] केहेडो मूंजो हांणे हंद ।
पिरी न पसां अंखिएं, मूं कारण आया माया मंझ ।। १२

।। प्रकरण ।। ६ ।। चौपाई ।। १९७ ।।

## बीजी बलामणी

सजंण बिया मूंजा निकरी, मूं तां सुजातां न सारे रे ।
मूंके चेयाऊं[७] घणवे पुकारे रे, न कीं न्हारयो मूं दिल विचारे रे ।।
से सजण हांणे कित न्हारियां ।। १

अदी[८] रे पिरिए पांणसे[९] जा केई, आऊं से जे संभारियां साथ ।
पांणजे काजें हिन मायामें, कींए बिधाऊं आप ।। २

हिक अधगुण संभारजे, अदी त पण लभे[१०] साह[११] ।
गुण संभारींदे[१२] सजणें, अजां को न उडे अरवाह ।। ३

अदी रे सजण सांणें हलया, घणूं धाएडियूं[१३] पाए ।
खुई[१४] मूंहजो जिदुओ,[१५] जे अजां अंख न उघाडे ।। ४

परी परी मूंके चेयाऊं, मूंके सल्लेथा[१६] से वेंण ।
अंखडियूं पांणी भरचाऊं, आंऊं तोहे न खणां[१७] मथा नेण ।। ५

अंखडियूं भरे असांसे, बांह झल्ले[१८] केयाऊं गाल ।
फिट फिट रे मूंजा जिदुआ, अजां जेहेजो उही हाल ।। ६

हांणेंनी आंऊं कीं करियां, मूंजानी केहा हवाल[१९] ।
केहे मोंह गिनीने रे[२०] अदियूं, आंऊं करियां आंसे[२१] गाल ।। ७

अदीबाईनी सुणो गालडी, मूंके रूअण[२२] रातो डींह ।
पाणीनी पिरी गिनी बेयां, हांणें फडकां[२३] मछी जींह ।। ८

१. बंध गए । २. स्वयं । ३. पुकार । ४. निश्चय ही । ५. मुक्तावस्था । ६. जाऊं । ७. कहा । ८. सखी रे । ९. हम से । १०. मिले । ११. स्वामी । १२. याद करते । १३. शोर । १४. आग लगे । १५. जीव । १६. खटकते हैं । १७. उठाए । १८. पकड़ कर । १९. हाल । २०. लेकर । २१. आपसे । २२. रोना । २३. तड़पूं ।

वेण चई चई वलहो मूंहजो, बरया घर मणे ।
हलया मूंजे डिसंदे,[1] अदी कारचूं घणूं करे ॥ ९

पिरी मूंजानी हलया, आंऊं कीं चुआं जिय्या ।
सजंण वेर न बिसरे, मूंके लगा तरारी[2] जा घा ॥ १०

॥ प्रकरण ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ २०७ ॥

खुई सा परडेहडो,[3] जित सांगाए[4] न्हाए सिपरी ।
पिरी पुकारेनी हलया, मूंजी माया मत बेई फिरी ॥ १

मूंजो जीव बढ़े[5] कोरा[6] करे, महें मिठो[7] पाताऊं[8] ।
सजंण संदो सूर[9] ईं मारे, मंझा जीव करे रे धांऊं ॥ २

जेरोनी[10] लगो जर उथई, जीव कर करे मंझ ।
वलहे संदोनी व्रह ईं मारे, मूंके डिनाऊं डूरण[11] डंझ[12] ॥ ३

मूं पिरी से जा केई, अदी एडी न करे व्यो कोए ।
सजंण आया मूं कारंण, आऊं अंख न खणियां[13] तोए ॥ ४

कीं करियां आऊं गालडी, मथां उखणियां कीं मोंह ।
मूं हथां एहेडी थेई, खल लाहियां चोटी नोंह[14] ॥ ५

तरारे गिनी तन ताछियां, हडे करियां भोर ।
पेहेलीनी खल उबती[15] लाहियां, जीव कढां ईं जोर ॥ ६

भालें तरारी कटारिएं, मूंके बढे बिधाऊं झूक[16] ।
मूं अंग मूंहीं डुभ्रण थेयां, जीव करे रे मंझ कूक ॥ ७

सजंण सुजाणी करे, कडे समीसई[17] न कीएम गांल ।
ए डुख आंऊं[18] कीं झलींदी,[19] मूंजा केहा हवाल ॥ ८

सूर तोहेजा घणूज सुहामणां, जेतो डिना रे डंझ ।
सूरेनी घणूं सुखाईस, पेई पचारे[20] हांणें मंझ ॥ ९

१. देखते । २. तलवार । ३. परदेश । ४. पहचान । ५. काट कर । ६. टुकड़े । ७. नमक । ८. डालूं । ९. दर्द । १०. आग । ११. कठिन । १२. दुःख । १३. उठाया । १४. नख । १५. उलटी । १६. झोंक । १७. सामने होकर । ८. मैं । १९. सहन करती हूं । २०. मग्न हो गई ।

सूर तोहेजा हेडा सुखाला, त तो सुखें हूंदो केहेडो सुख ।
पण मूं न सुजातां मूंजा सिपरी, आंऊं झूरां[1] तेहेजे डुख ।। १०

अंग मूंहीं जे अडाए[2] तरारी, झूक करे करियां झोरां[3] ।
घोरेबंजां[4] आंजी डिस मथां, त को लाईम[5] सजणें थोरो ।। ११

हडेनी करियां अंगीठडी, मूंजो माहनी[6] होमियां[7] मंझ ।
नारिएर हंदें ल्हाए रखां मथां, मूंके तोहे न भजेरे डंझ ।। १२

जरो जरो मूंजे जीव संदो, मूंके ब्रह पाताऊं वढ[8] ।
इंद्रावती चोए चेताए, मूंके माया मंझानी कढ[9] ।। १३

।। प्रकरण ।। ८ ।। चौपाई ।। २२० ।।

## चौपाई प्रगटाणी

हवे एक लवो जो सांभरे सही, तो जीव रहे केम काया ग्रही ।
सांभलो साथ कहूं बिचार, चूक्या अवसर आपण आंणी वार ।। १

ए आपण खमीने[10] रह्या, त्यारे वली धणीजीएं कीधी दया ।
बाई *रतनबाईनी वासना, श्री *लीलबाईने उदर उतपना ।। २

श्री *देवचंदजी पिता प्रमांण, निरखी आवेस दीधों निरवांण[11] ।
नहीं तो ए आवेस छे अपार, पण धणीतणां वचन निरधार ।। ३

मारी वाणीएं ब्रह्मांडज गले, तो[12] वासना केम वचनथी टले ।
वासनाओ माटे बांध्या बंध, कई भांते अनेक सनंध ।। ४

ए वचनों मांहें छे निध घणी, आगल प्रगट थासे धणी ।
हरखे साथ जागसे एह, रेहेसे नहीं कोई संदेह ।। ५

साथ सकलने तेडूं सही, माया मांहें मूकूं नहीं ।
वली वाणी श्री देवचंदजीतणी, साथ सकलने ताणे[13] घर भणी[14] ।। ६

वली तेह चरचा ने तेहज वांण, वचन केहेतां जे प्रमांण ।
व्रज रास ने वली श्री धाम, सुख साथने दिए निधान ।। ७

---

१. कल्पती हूं । २. काट के । ३. झोंक दूं । ४. बलिहारी जाऊं । ५. वास्ते । ६. मांस को । ७. हवन करूं । ८. काट कर । ९. निकाल । १०. सहन करना । ११. परम पद । १२. आत्मा-ब्रह्मसृष्टि । १३. खेंचे । १४. ओर ।

*पचबीस पक्ष वरणवनी जेह, वल्लभ वली सुख आपे तेह ।
अंतरध्यान समे जेम थया, वली वालो ततख्यण आवया ॥ ८

पेहेले फेरे थयूं छे जेम, आंहीं पण वालेंजीऐं कीधूं तेम ।
आ ते वालो ने तेहज दिन, विचार करी जुओ तारतम ॥ ९

आ तेह घडी ने तेहज[1] ताल, माया दुस्ट पाडी विचाल[2] ।
आपणने नव अलगां करे, विना आपण नव डगलूं[3] भरे ॥ १०

अधख्यण एक नथी थई वार, मायाऐं विछोडो पाड्यो आधार ।
*मारकंड माया द्रस्टांत, धणीकने मांगी करी खांत ॥ ११

जोजो मायानों वरतांत, ए अलगी थाए तो उपजे स्वांत ।
ततख्यण कंपमाण ते थयो, अने माया मांहें भलीने[4] गयो ॥ १२

कलपांत सात ने छियासी जुग, माया आडी आवी बुध ।
नव पडी खबर लगार, रिषीस्वर[5] दुख पाम्यो निरधार ॥ १३

त्यारे नारायणजी कीधों प्रवेस, देखाडी माया लवलेस ।
जुए जागीतां तेहज ताल, दया करी काढचो ततकाल ॥ १४

मायानीतां एह सनंध,[6] निरमल नेत्रे थैए अंध ।
ते माटे कीधों प्रकास, तारतमतणों अजवास[7] ॥ १५

ते लेईने आव्या धणी, दया आपण उपर छे घणी ।
जाणे जोसे माया अलगां थई, तारतमने अजवालें[8] रही ॥ १६

भले तारतम कीधों प्रकास, सकल मनोरथ सिध्यां साथ ।
वचने सरव अजवालो करचो, अने बीजो देह माया मांहें धरचो ॥ १७

॥ प्रकरण ॥ ९ ॥ चौपाई ॥ २३७ ॥

## विनती—राग धन्यासरी

हवे विनती एक कहूं मारा वाला, सुणो पिउजी वात ।
परगट तमे पधारया, आकार फेरो छो नाथ ॥ १

---

१. उसी क्षण । २. अन्तर डालने वाली । ३. पांव । ४. मिल कर । ५. ऋषीश्वर । ६. विधि । ७. प्रकाश । ८. उजाला ।

श्री देवचंदजी अम कारणे, रुदें तमारे आवया ।
वचन पालवा आपणां, साथ सकल पर कीधी दया ॥ २

जनम अंध अमे हतां, ते तमे देखीतां करचा ।
वासो[१] वछूटो हाथथी, जमपुरी जातां वली[२] कर ग्रह्या ॥ ३

हवे अम मांहें अमपणूं, जो कांई होसे लगार ।
तो निद्रा उडाडी तमे निध दीधी, हवे नही मूकूं निरधार ॥ ४

आगे तो अमे नव ओलख्या, ते साले[३] छे मंन ।
चरचा करी करी प्रीछव्या,[४] अने कह्या ते विविध वचंन ॥ ५

॥ चाल ॥

एहेवा अनेक वचंन कह्या अमने, जेणे एक वचने ओलखूं तमने ।
पेरे पेरे करी प्रीछव्या सही, अमें निरोध तोहे उडाड्यो नहीं ॥ ६

त्यारे हंसो बढी आंसूवालीनेकह्यूं , पण एणे समेअमें कांई नव लह्यूं ।
त्यारे तारतम कही घर देखाड्या सही, पण अमे तोहे ओलख्या नहीं ॥ ७

त्यारे अम मांहेंथी अद्रस्ट थया, मूल वचन रदयामां रह्या ।
एणे समे जो खबर न लेवाए, तो दुस्तर[५] अमने घणूं दोहेलूं[६] थाए ॥ ८

एम जाणी आव्या अम मांहें, आवी बेठा प्रगटचा तम जांहें ।
आपण जेम पेहेलां व्रजमां हतां, नित प्रते वालाजीसूं रंगे रमतां ॥ ९

अनेक रामत कीधी आपणें, पूरण मनोरथ कीधां समे तेणें ।
अग्यारे बरसनी लीला करी, कालमाया ईहांज परहरी[७] ॥ १०

जोगमायामां आपण रासज रम्या, तेतांसाथ सकलने घणूं घणूं गम्या[८] ।
वचन संभाखाने[९] अद्रस्ट थया, त्यारे अमे व्रह कीधां जुजवा[१०] ॥ ११

ते देखीने आव्या जेम, वली आंहीं प्रगट थया छे तेम ।
धणी ज्यारे धणीवट[११] करे, त्यारे मन चितव्या[१२] कारज सरे ॥ १२

---

।१ पीठ । २. फिर । ३. दुःख देता है । ४. समझाया । ५. असाध्य । ६. कठिन । ७. छोड़ दी । ८. भला लगा । ९. याद दिलाने । १०. अलग । ११. स्वामीपन । १२. चाहा ।

तेणें समे धाख[1] रहीती जेह, हवणां[2] पूरण कीधी तेह ।
हवे वालाजी कहूं ते सुणो, अने अति घणों दोष छे अमतणों ।। १३

तमारा मनमां न आवे लेस, पण साख पूरे मारूं मनडूं वसेख ।
वारी फरी नाखूं[3] मारी देह, तमे कीधां मोसूं अधिक सनेह ।। १४

वार वार हूं घोली घोली[4] जाऊं, एक वचन तणां न ओसीकल[5] थाऊं ।
ओसीकल वचन ते तो केहेवाए, जो अमें बेठा मोहजल[6] मांहें ।। १५

अनेक वार जाऊं वारणे, तमे जे कीधूं ते आपणपणें ।
भामणां[7] उपर लेऊं भामणां, पण दोष साले जे में कीधां घणां ।। १६

हवे ए दोष केम छूटीस हो नाथ, सांचूं कहूं मारा धामना साथ ।
तमे साथ मांहें देओ छो उपमां, पण हूं केम छूटीस ए "वज्रलेपणां[8]" ।। १७

तमे गुण कीधां मोसूं घणां, पण अलेखे अवगुण अमतणां ।
तमे गुण करो छो ते ओलखी करी, पण मोहजल लेहेर मूने फरी वली ।। १८

हवे हूं बलिहारी जाऊं मारा धणी, मारा मनमां एक हाम छे घणी ।
अछतां[9] मंडलमांहें लाभ छे घणों, अने आंभो[10] छे माहरा धणी तमतणों ।। १९

जे मनोरथ कीधां श्री धाम मांहें, ते द्रढ सघला आंहीं थाए ।
जे पेर सघली कही छे तमें, ते द्रढ कीधी सरवे जोईए अमें ।। २०

श्री धामना सुख जे दीसे आंहें, ते जीव जांणे मंन मांहें ।
आ देहनी जिम्या केणी पेरे कहे, वचन कहूं ते ओरूं[11] रहे ।। २१

ए सोभा सबदातीत छे घणी, अने सबद मांहें जिभ्या आपणी ।
ए सुख विलसी निरदोष थाऊं, तम दयाएं फेरो सुफल करी जाऊं ।। २२

एटले मनोरथ पूरण थया, जे थाए ते वालाजीनी दया ।
दयानों तो कहूं छूं घणूं, जो करी न सकी बस आपोपणूं ।। २३

हवे मनसा वाचा करमणां करी, हूं नही मूकूं[12] निध परहरी[13] ।
नैणे निरखूं निरमल चित करी, हूं रुदे राखूं वालो प्रेम धरी ।। २४

---

१. प्रबल चाह । २. अब । ३. डालूं । ४. बलिहारी । ५. आभारी । ६. माया । ७. बलैया । ८. अमिट लेप । ९. असत्य । १०. भरोसा । ११. इधर ही । १२. छोड़ूं । १३. त्याग दी ।

करी प्रणाम लागूं चरणें, सेवा करीस हूं वालपण[१] घणें ।
डंडवत करी जीव ने मन, देऊं प्रदख्यणा रात ने दिन ।। २५

क्रपा करो छो सहू साथजतणी, वली क्रपा साथने करजो घणी घणी ।
इंद्रावती चरणें लागे आधार, धणी लिए तेम लीधी सार ।। २६

।। प्रकरण ।। १० ।। चौपाई ।। २६३ ।।

हवे आपणमां बेठा आधार, रामतडी जोई आ वार ।
माया कोटान कोट करे प्रकार, पण आपणने नव मूके निरधार ।। १

तेडी[२] आपणने जाए घरे, वचन कह्या केम पाछां फरे ।
मनना मनोरथ पूरण करे, नेहेचे धणी तेडी जाए घरे ।। २

जो आपण ओलखिए आ वार, तो जीव घणूं पांमे करार ।
साथ ऊपर दया अति करी, वली जोगवाई[३] आवी छे फरी ।। ३

वली अवसर आव्यो छे घणों, अने वखत उघड्यों साथज तणों ।
आपणें नव मूकवा[४] हीडूं संसार, धणी आपणों विछोडो न सहे लगार ।। ४

तारत्तम[५] पखें विछोडो नहीं, सुपनमां माया जोईए सही ।
सुपन विछोडो धणी नव सहे, तारतम वचन पाधरा[६] कहे ।। ५

लेई तारतम अजवालूं सार, वली श्रीजी आव्या आ वार ।
जांणे रखे[७] केहेने उतकंठा रहे, साथ ऊपर एटलूं[८] नव सहे ।। ६

श्री धणीतणां गुण केटला कहूं, हूं अबूझ कांई घणूं नव लहूं ।
पाधरा गुण दीसे अपार, धणिएं जे कीधां आ वार ।। ७

आपणी मीटे[९] दीठां सही, पण आंणी जिभ्याएं केहेवाए नहीं ।
भोम कणका[१०] जो गणाए, साएर[११] लेहेरे उठें जल मांहें ।। ८

मेघ पण गाजे वली पडे, वनसपति पत्र कोई नव गणे ।
जदिप[१२] तेहेनो निरमांण[१३] थाए, पण धणीतणां गुण केणे न गणाए ।। ९

---

१. स्वामी की तरह। २. बुला कर। ३. साधन। ४. छोड़ कर चलना। ५. अन्धकार से उबारने वाला ज्ञान। ६. स्पष्ट। ७. न। ८. इतना। ९. दृष्टि। १०. कण। ११. सागर। १२. यद्यपि। १३. हिसाब।

न गणाए आ फेरा तणां, गुण आपणसूं कीधां अति घणां ।
पेहेला फेरानी केही कहूं वात, गुण जे कीधां धणी प्राणनाथ ॥ १०
ते आंणी जोगवाईएं केम गणूं आधार, पण कांईक तोहे गणवा निरधार ।
इंद्रावती कहे हूं गुण गणूं, कांईक दाखूं[1] आपोपणूं ॥ ११

॥ प्रकरण ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ २७४ ॥

श्री धणीजीना गुण लख्या छे—राग धनासरी

हवे गुणने लखूंजी तमतणां, जे तमे कीधां अमसूं अति घणां ।
जोजन[2] पचास कोट प्रथवी केहेवाए, आडी ऊभी सरवे ते मांहें ॥ १
चौद लोक बेकुंठ सुंन जेह, भोम समा हूं करूं वली तेह ।
पाधरा पाथरी[3] करूं एक ठांम, बांक चूक टालूं ए मांहें ॥ २
कागल परठवूं[4] में एहनूं नाम, गुण लखवा मारा धणी श्री धाम ।
चौद भवननी लेऊं वनराए,[5] तेहेनी लेखणो[6] मारे हाथ घड़ाए ॥ ३
घड़तां कोसर[7] करूं अति घणी, रखे मोटी छोही[8] पडे तेहतणी ।
झीणी[9] टांको मारे हाथों थाए, अणियों मांहें नहीं मूकूं मणाए[10] ॥ ४
तोहे कोसर करूं घडतां घणी, जाणूं जेम झीणी थाए अति अणी ।
हवे धरती उपला[11] लेऊं सर्वजल, बीजा पण भरया सात पातालना तल ॥ ५
बीजा छे लोक तेहेना लेऊं जल, नहीं मूकूं किहां टीपूं[12] अवल ।
सर्व जल मेलवी[13] लेऊं मारे हाथ, गुण लखवा मारा श्री प्राणनाथ ॥ ६
स्याही करूं अति जुगते करी, रखे कांई मांहेंथी जाए परी ।
ए लेखणो स्याही आ कागल करी, मांहें झीणां आंक[14] लखूं चित धरी ॥ ७
गुण जे कीधां मोसूं मारा वालैया, ते आंणी जिभ्याए नव जायकह्या ।
देह सारूं[15] हूं लखूं प्रमांण, एक अर्ध अणूंमात्र काढूं निरवांण ॥ ८
हवे लखूं छूं तमे जोजो साथ, हूं गजा[16] सारूं करूं प्रकास ।
घणूं चीफूं[17] आंक लखतां एह, रखे कांई मीडा[18] मोटा थाए तेह ॥ ९

१. दिखाऊं । २. योजन । ३. एक जैसी, समतल । ४. रखा । ५. जंगल । ६. कलमें । ७. संकोच । ८. छिलका । ९. बारीक । १०. कमी । ११. ऊपर का । १२. बूंद । १३. मिलाकर । १४. अंक । १५. अनुसार । १६. सामर्थ्य । १७. संकोच करना । १८. बिन्दु ।

हवे प्रथम एकडो काढूं एक चित, अडतूं[१] मीडूं धरूं भिलत ।
मारे हाथे अख्यर पोहोला[२] नव थाए, अने बीहूं जांणूं रखे घेलाए[३] ।। १०

एम करतां ए दसज थया, मीडूं मूकीने[४] सो गणाया ।
वली एक मूकूं नव करूं वार, जेम गुण गणूं मारा धणीना हजार ।। ११

हवे मीडूं मूकूं लगतो एक, जेम गुण गणूं दस हजार बसेक ।
वली एक मूकतां लाख गणाए, हवे मूकूं जेम दस लाख थाए ।। १२

कोट थाए मीडूं मूके सातमूं, दस कोट करूं वली मूकी आठमूं ।
नव मूकीने करूं अबज, गुण गणती जांऊ करती कबज[५] ।। १३

दस मूकीने करूं अबज दस, ए गुण गणतां मूने आवे घणों रस ।
अग्यार मूकीने करूं खरब एक, लखतां गुण धणी ग्रहूं बसेक ।। १४

बार करीने दस करूं खरब, आगे कोणे नव गणया एव[६] ।
तारतम जोतां बीजो कोंण गणसे, अम टाली कोई हुओ न होसे ।। १५

हवेगुण गणूं मारा धणीतणां, पण कागल स्याही लेखणो मांहें मणां[७] ।
मणां तोकहूं छूं जो बेठी माया मांहें, नहीं तो मणां मूने नथी कोई क्यांहें ।। १६

साथ माटे हूं करूं पुकार, जोऊं वासना चौद लोक मंभार[८] ।
मेली वासनाओने[९] रास रमाडूं,[१०] धणीना गुण हूं गणी देखाडूं ।। १७

नील करूं मीडा मूकीने तेर, ए गुण गणतां मूने टली गयो फेर ।
हवे चौद करूं दस नीलने काज, गुण गणवा मारा धणी श्री राज ।। १८

पनर[११] करीने करूं गुण पार, दस पार करूं सोल गुणने आधार ।
पदम करवाने करूं सतर, हूं अरधांग मारो धणी ए घर ।। १९

अढार[१२] करीने दस करूं पदम, मूने वाला[१३] लागे धणीना गुण एम ।
खोईण करूं करीने नव दस, गुणने बंधाई वालो आव्यो मारे वस ।। २०

बीस करीने दस करूं खोईण, एकबीस करूं जेम थाए गुण जोण ।
दस जोण करूं मूकीने दस वार, गुण गणतां घणूं जीती आधार ।। २१

---

१. जुड़ा हुआ । २. विरला । ३. मिल जाए । ४. रख कर । ५. पचाना (ग्रहण) ६. ऐसा । ७. कमी । ८. में । ९. आत्माओं । १०. खेलाऊं । ११. पन्द्रह । १२. अठारह । १३. प्यारा ।

अंक करूं गुण लखीने त्रेबीस, दस अंक करूं मीडा मूकीने चोबीस ।
हवे पचवीस कीधे गुण एक संख थाए, रदे रे मोटो गुण घणां समाए ॥ २२

हवे छबीस करीने करूं दस संख, वली लखतां लखतां चीफूं निसंक ।
सुरिता करूं मीडा मूकी सताबीस, ए गुण धणी जोई हूं पगला भरीस ॥ २३

अठाबीसे दस सुरिता थाए, बीस नव करूं जेम पती गुण ग्रहाए ।
दसपती गुण हूं त्रीसज करूं, ए गुण गणी मारा चितमां धरूं ॥ २४

एकत्रीसे एम अंत केहेवाए, वली लेखणो कागल स्याहीनी चिंता थाए ।
जाणूं रखे खपी[1] जाए अधविच, त्यारे केम गुण गणी ग्रहीस मारे चित ॥ २५

बत्रीस करीने दस अंतज करूं, ए गुण एकांत मारा चितमां धरूं ।
मध करूं त्रेतीसज करी, रखे कागल स्याही लेखणो जाए वरी ॥ २६

हवे दस मध करूं करीने चोंत्रीस, गुण मारा वालाना चितमां ग्रहीस[2] ।
हवे एकडा उपर पांत्रीस मीडां धरूं, परारध[3] करीने लेखो[4] मारो करूं ॥ २७

एणे लेखे कांई गणती न थाए, माराधणीतणां गुण एम न गणाए ।
हवे लेखो करूं साथ जोजो विचार, लखवा गुण मारा प्राणना आधार ॥ २८

एक मीडे थाए प्रारध गणां, एणी सनंधें वाधे बीजे एह तणां ।
एम करतां ए जेटला थाए, वली एहेना एटला गुण गणाए ॥ २९

ए गुण मारा जीवमां ग्रहाए, पण बीहती[5] लखूं रखे कागलें न समाए ।
लेखणोंनी मूने चिंता थाए, जाणूं घडतां घडतां रखे उतरी जाए ॥ ३०

हूं तां स्याहीनी पण करूं छूवाण,[6] जाणूं रखे लखतां न पोहोंचे निरवाण ।
एम मूकतां मूकतां मीडा रह्या भराए, कागल स्याही लेखणो खपी जाए ॥ ३१

ए कागल एम रह्यो भराई, कोर[7] मेर[8] सघली[9] रही समाई ।
कोडी पग मूंक्यांनो नथी क्यांहें ठाम, किहां मूकूं मीडूं जेहेनूं नाम ॥ ३२

हवे ए गुण गण मारा जीव तूं रही, जेम जाणजे तेम राखजे ग्रही ।
ए गुणतां में घणुए गणाए, पण मारा धणी तणां गुण एमा न समाए ॥ ३३

---

१. खत्म हों । २. ग्रहण करूं । ३. एक संख्या । ४. हिसाब । ५. डरती हूँ । ६. कंजूसी ।
७. किनारा । ८. कोना । ९. सब ।

हवे वली करूं बीजों लखवानो ठांम, लखवा गुण मारा धणी श्री धाम ।
जेटला गुण ए मांहें थया, एटली दांण[१] एवा कागल भरया ॥ ३४

ए कागल एवी स्याही लेखण, मांहें भीणा आंक लख्या अति घण ।
ए लेखणोंनी में जोई अणी, हजी कांई करी न सकी अतंत घणी ॥ ३५

जेटला गुण ए गणतां थाए, ए गुण मारा जीवमां समाए ।
लेखणो करवाने बुध करे छे बल, घडूंने समारूं सहू काढीने बल ॥ ३६

कथुवाना[२] पगनो गुण जेटलो भाग, लेखणोंनी टांको चीरियों जोई लाग ।
एणी टांके आंक लख्या एम करी, एटली दाण एवा कागल फरी फरी ॥ ३७

एम लखी लखीने में गणया गुण, पण मारा धणीना गुण छे अतिघण ।
ए गुण मलीने जेटला थया, तेतां में मारा जीवमां ग्रह्या ॥ ३८

ए लखतां मूने केटली थई वार, हवे एहेनो निरमांण[३] काढवो निरधार ।
गुण जेतमों भाग एक खिणनो आधार, एटली थई मूने लखतां वार ॥ ३९

एम लखी लखीने में लख्या अपार, हवे वली जोऊं केटली थई वार ।
गुण जेटला महाप्रले थाए, एम लख्या में तेणें ताए ॥ ४०

वचमां स्वांस न खाधो एक, वेल न कीधी कांई लखतां वसेक ।
एहेनो में सरवालो[४] किध, श्री सुंदरबाईएं सिखामण दिध ॥ ४१

जोजो साथ लेखूं एम लख्यूं जोर, तोहे मारा जीवनी हाम[५] नीनचंपाणी[६] कोर ।
जीव छे मारो मोटो पात्र, हजी जीव जाणे लख्यूं तुछ मात्र ॥ ४२

गुण तो पाछल हजी[७] भरया भंडार, गुण जेटला भंडार गणियां आधार ।
गणतां गणतां पाछल दीसे अपार, तेहेनो निरमाण काढवो निरधार ॥ ४३

हूं न काढूं तो बीजो काढे कोंण, निरमाण काढी ग्रहूं धणीतणां गुण ।
पाछला भंडारनूं लेखूं देऊं वल्लभ, ए लेखूं करतां मूने नथी रे दुरलभ ॥ ४४

सर्वे गुण गणी जीवें कीधां मारे हाथ, हूं तां प्रगट कहूं छूं मारा प्राण नानाथ ।
सर्वे तो कहूं जो गुण उभा[८] थाए, गुण मननी पेरे वाधता[९] जाए ॥ ४५

---

१. बार । २. एक कीड़ा । ३. हिसाब । ४. सब का जोड़ । ५. हौंस । ६. दबी । ७. अभी । ८. खड़े । ९. बढ़ते ।

एक ख्यणमां बेहेच्यू[1] मारा श्री राज, गुण जेटला कीधां तेहेना भाग ।
तेहेवां एक भागना में ए गुण कह्या, ए सरवे मारा जीवमां ग्रह्या ॥ ४६

ए गुण गणतां मारा कारज सरयां, भलेमायामां आपण देह धरयां ।
आखा[2] अवतारनी केही कहूं वात, कांईकप्रेमलमूनेआवीप्राणनाथ ॥ ४७

एगुण गणया में निद्रा मंभार, नहींतोएम केम गणूं मारा जीव ना आधार ।
हवे वातडियो[3] करसूं ईछा तम तणी, आंहीं जाग्यानी मूने हांम छे घणी ॥४८

वाला तमे आव्या छो माया देह धरी, साथतणी मत मायाएं गई फरी ।
अनेक हांसी थासे जाग्या पछी घरें, ज्यारे साथे माया मांगी कहे अमने सूं करे॥४९

तमे ततखण लीधी अमारी खबर, लेई आव्या तारतम देखाड्या घर ।
आपण जाग्या पछी हांसी करसूं जोर, घरने विसारी मायाएं कीधां चोर ॥ ५०

हवेने करसूं जाग्या पछी वात, कांई अमल चढयूं साथने निघात[4] ।
तारतम केहेतां हजी वलेनसार, नहींतोअनेकविधेकह्युं प्राणनेआधार ॥ ५१

इंद्रावती लिएभामणां[5] गुण जेटला, तमेआंहीसुखदीधां अमने एटला ।
घरना सुखनी आंही केही कहूं वात, हवे सुख घरना नी घेरे[6] करसूं विख्यात[7] ॥५२

चरणे लाग कहे इंद्रावती, गुण न देखे किन एक रती ।
धणी जगावी देखाडसे गुण, हांसी थासे त्यारे अति घण ॥ ५३

॥ प्रकरण ॥ १२ चौपाई ॥ ३२७ ॥

सांभलो[8] साथ मारा सिरदार, वचन कहूं ते ग्रहो निरधार ।
एटला गुण आपणसूं करी, बेठा आपणमां माया देह धरी ॥ १

भरम भाजो[9] वचन जोई करी, निद्रा घेण मूको परहरी ।
श्री धामतणां धणी केहेवाए, ते आवी बेठा आपण मांहें ॥ २

हवे सेवा कीजे अनेक विध करी, अने आपण काजे आव्या फरी ।
वली अवसर आव्यो छे हाथ, चेतन करी दीधों प्राणनाथ ॥ ३

---

१. बांटे । २. पूरा । ३. बातों में । ४. जोर दार । ५. वलैयां । ६. घर में । ७. जाहिर । ८. सुनो । ९. निवारण, दूर करो ।

ए ऊपर हवे सूं कहूं, श्री बालाजीना चरणज ग्रहूं ।
कर जोडी करूं विनती, अने अलगी[१] न थाऊं चरण थकी ॥ ४

॥ प्रकरण ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ ३३१ ॥

## जाटी भाषामें प्रबोध

मूजा अंध अभागी जीव जोर रे, तूं कीं सुतो हित ।
पर[२] पर धणिएं जगाईया, तोके[३] घर न सूझे कित ॥ १

अगेनी तूं कुरो[४] केओ, जडे पिरी हल्या सांणे[५] ।
से अजां न उथिए अकरमी, भूंडा सुते हित केही सांगाएसे[६] ॥ २

पर[७] पोतेजी[८] न्हार तूं निखर, वलहो न डेसे अजां छेह[९] ।
अवगुण न डिठे पांहिजा, पिरी मेहेर करी वरी एह ॥ ३

बभिरकां[१०] पिरी तो कारंण, आया माया मंझ ।
को न सुजाणे सिपरी, न तां थींदिए डूरण[११] डंझ[१२] ॥ ४

पांण पांहिजो[१३] पस तूं, अंख उघाडे न्हार ।
खीर[१४] पाणीजी परख पधरी, हिन तारतम महें विचार ॥ ५

अगेनी अंखियूं फूटियूं, भूंडा हांणें तूं कींक[१५] सांगाए ।
ही जोगवाई हथ न रेहेदी, पोए पर न थिंदिए कांए ॥ ६

अगेनी अकरमी थेओ, भूंडा हांणे तूं पांण संभार ।
पिरी पले पले तोके थका,[१६] भूंडा अजां न बरे[१७] तोके सार ॥ ७

केही सांगाएसे निद्र करिए, केहो तोहिजो हिए हंद ।
बभिरकां पिरी तो कारंण, हांणें आया माया मंझ ॥ ८

धांउ[१८] पाईंदे पिरी बभिरकां, तोके थीअण आई संझ ।
अंग मरोडे न उथिए, पासें फजर[१९] पसी हींए भंझ ॥ ९

पोए कारी रातमें कीं न सुझे, से तां डुखें सदांनी[२०] डंझ ।
तारतम तूं न्हार विचारे, जो पिरी आंदो[२१] तो कारंण ॥ १०

---

१. अलग । २. फिर-फिर । ३. तुझे । ४. क्या । ५. घर । ६. पहचान । ७. विधि । ८. अपनी । ९. वियोग । १०. दूसरी बार । ११. कठिन । १२. दुःख । १३. अपना । १४. दूध । १५. कुछ । १६. थक गए । १७. आती । १८. शोर मचाते । १९. सुबह । २०. की । २१. लाए ।

हेतरा भठ बरंदे[1] मथें, त के अजां सा न बंजे घारण ।
मूजा अंध अभागी जीव जोर रे, भूंडा हित सुते केंही सांगाएसे ॥ ११

॥ प्रकरण ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ ३४१ ॥

मूंहजा[2] जीव अभागी रे, हाणें[3] तूं जिन चुके हिन वेर ।
तोकेनी[4] हिन अंधारें मंझां, ईं बेओ[5] कढंदो केर ॥ १

गुण तूं हिकडो न्हार संभारे, संदो सिपरिएन[6] ।
जाग तूं मूंजा जीव अभागी, को सुते सारूंथी मंन ॥ २

पेरो[7] वेण तो केहा कढया, से कुरो मथिएण[8] मन संभा ।
बुध मन तोहिजा बेही रेहेंदा, हांणें क्रोध कढंदे साहा[9] ॥ ३

जीव निरजो[10] को थिए, तोके अजां न लगे घा ।
सिपरी संभारे करे, भूंडा को न उडाईए अरवा ॥ ४

जे तूं चुके जीव हिन भेरां, त तां सुणज मूंजी गाल ।
जीव कढंदुस[11] जोरे तोके, करे भुछा[12] हवाल[13] ॥ ५

अगेनी तो भुछी केई, जीव हांणें तूं पांण संभाल ।
सजण तोके सांणें[14] कोठींनथा,[15] खिन्ली[16] करींनथा गाल ॥ ६

हो *ससुई[17] सापण ईं चोए, आंऊं डियां कोड[18] मथां[19] ।
*पुंनूं[20] संदी बधाई को आंणे, ते के डियां ल्हाए हथां ॥ ७

ईंय[21] वेण न न्हारिए, फिट फिट रे जीव भूंडा ।
तो जो ओठो[22] पण बेओ को न्हारे, हिन गालें बेओ घणूं लहा ॥ ८

तोहे तोके सांगाए[23] न बरे, तूं थेओ को ईं ।
न्हार संभारे पांण पांहिजो, जे गाल[24] करींनथा पिरीं ॥ ९

से वेण तूं को बिसारिए भूंडा, जे पिरी चेया तोके पांण ।
जे वेण विधारिए हिकडो, त हूंद[25] न छडिए निरवांण[26] ॥ १०

१. जलते । २. मेरा । ३. अब । ४. तुझे । ५. दूसरा ६. प्रीतम । ७. पहले । ८. विचारे । ९. श्वास । १०. निर्लज्ज । ११. निकालूं । १२. बुरा । १३. हाल । १४. घर में । १५. बुलाते हैं । १६. हंस कर । १७. ससी (पंजाबी प्रेमगीत की नायिका) । १८. करोड़ों । १९. सिर । २०. ससी का प्रेमी । २१. यह । २२. निमूना । २३. पहचान । २४. बात । २५. ठिकाना । २६. मोक्ष ।

अभागी तोके चुआं अकरमी, जे न पसां तोमें हाल ।
सत दांण[१] तोके चुआं सुहागी, जे करिए कीं कीं भाल[२] ॥ ११

॥ प्रकरण ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ ३५२ ॥

## वीवलामणी

मूंजा जीव सुहागी रे, हांणें जिन छडिए पिरी पेर ।
बभेरकां[३] तो कारण, पिरी आया हिन वेर ॥ १

पिरिए संदां गुण संभारे, झल्ल[४] तूं पिरिए पेर ।
सांणे तोके सुखे पुजाइंदा, बेओ कोठे ईंअ केर ॥ २

खिल्ली कूडी[५] कर गालडी, सुजांण पोतेजा पिरी ।
तोजे काजे आप बिधाऊं, बिनी भेरां न्हार[६] कीं ॥ ३

सजण ए कीं छडजे, तूं तां न्हार केडा आईन ।
पिरिएं तोसे पांण[७] न रख्यो, से न संभारजे कीं ॥ ४

कोड करे तूं केड[८] बांधीने, थी पिरिए जे पास ।
सिपरी तू सुजाण पांहिजा, छड बेओ मंडे[९] साथ ॥ ५

पाणजे साथ के परमें चोएज, जे तो उकले[१०] वेण ।
साथ तां कीं न सांगाए सुहागी, तोहे पांहिजा सेण ॥ ६

॥ प्रकरण ॥ १६ ॥ चौपाई ॥ ३५८ ॥

मूंजा साथ सुहागी रे, हांणें आंईं को न सुजाणे सिपरी ।
पेरोनी पांण न सुजातां, आईडा[११] से वरी रे ॥ १

सेई सजण सेई गालड्यूं, सेई कारच्यूं[१२] करीन ।
पांहिजे काजे पिरी पांणजा, पांणी अखें भरीन ॥ २

सेई सिखामण डिएन सिपरी, तांणीन घर मणें ।
पांण पांहियूं[१३] कीं ओसरूं,[१४] वलहों आव्यो वरी करे ॥ ३

१. बार । २. संभाल । ३. दो बार । ४. पकड़ । ५. हर्ष में । ६. विचारों । ७. अपना आप । ८. कमर । ९. सकल (मनुष्य) । १०. खुले । ११. आए हैं । १२. पुकार । १३. अपने । १४. भूलते हैं ।

कूकडियूं करीन पेहेलीनीयूं,[1] हांणें को न सुजांणो साथ ।
न तां खरे बपोरे सेज सोझरे, हांणें थींदीए रात ॥ ४

पोए हथ हणंदा[2] पटसे,[3] हैडे डींदा घा ।
सजण सूरे[4] में बेही न रेहेंदां, हल्लीवेदानी[5] हथ मंझां ॥ ५

धाएडियूं[6] करीन पिरी, परी परी चए वेण ।
पांणजे काजे पिरी बभेरां, पाण त्रेमाईन नेण ॥ ६

मायातां डिठियां मंझ पेहीने, सोझरे[7] सिपरिएंन ।
भती भतो जी रांद डेखारण, पिरी आंदो[8] तारतंम ॥ ७

जा माया आं मोंहें मंगई, सा डिठियां बी वार ।
साथ हांणें पिरी साथ हल्लजे, जीं पिरी पेराईन[9] करार ॥ ८

बभेरें पिरी पांणजे काजें, साएर[10] में बिधाऊं आप ।
पांणजे काजें पांण बिधाऊं, हांणें को न सुजाणो साथ ॥ ९

आकारतां आंईं भले पसो था, पण पसो मंझियों[11] तेज ।
पिरी पांहिंजा पांण पांणसे, घणूं करोनथा हेज[12] ॥ १०

हांणें केही पर करियां आंसे, को न सुजाणों सेंण ।
सजण सेईं पुकार करीन, आंके निद्र अचे कीं नेण ॥ ११

नेणेंनी मंझां निद्र न बंजे, जेहेडी मथां थेई ।
सेणेंसे[13] आंईं साथ न हल्यां, पोरचां[14] कुरो कंदा रही ॥ १२

हिंनी डुखे मंझा को न निकरचो, केहो डिसोथा भाल ।
जडें हली बेदां हथ मंझां, तडे केहा थींदा हवाल ॥ १३

पांणके हिन पिरी धारा, बेओ चोए ईं केर ।
साथ संभारे न्हारचो दिलमें, जिन चुको हिन वेर ॥ १४

हिकडी आर[15] चुके मांहडू,[16] तेके बी आर अचे बुध ।
हेतरा भठ बरंदे मथे, आंके अजां न बरे सुध ॥ १५

---

१. पहले जैसे । २. पटकोगे । ३. धरती से । ४. दुःख भरे विश्व में । ५. निकल जाएँगे । ६. चिल्लाना । ७. उजाले । ८. ल्याए । ९. पाएँ । १०. सागर । ११. अंदर का । १२. स्नेह । १३. संदेशा । १४. पीछे । १५. बार । १६. मनुष्य ।

हिक वेर म थीजा[1] बिसरचां, हित न्हाए बेठें जो लाग ।
अंख उघाडे ढंकजे, कोडमी पांतीमें थिए अभाग ॥ १६

आंऊं खीजी आंके कीं चुआं, सा न वरे मूंजी जिभ ।
पण आंईं हिन माया मंभ्फां, केही कढंदा निध ॥ १७

वेण बिगो[2] आंके चुआं, सा बढिया[3] मूंहजी जिभ ।
पण अंईं हिनमें पई रह्या, हिन मंभ्फां कां न थिंदियां सिध ॥ १८

हिन सोभ्फरे जे न सुजातां, बभेरकां हींअ ईं ।
पोए सांणेंनी[4] सिपरिएन अग्यां, मोंह खणदियूं[5] कीं ॥ १९

पेरोनी पांण नजर न्हारींदे, व्यो अवसर हथां ।
जडे हथे मंभ्फा हली बेयां, तडे केहेडी थेईनी पांण मथां ॥ २०

हींय हंद[6] एहेडो आए, हिक वेरमें थिए वेणां[7] ।
साथ तां आए सभे समभ्फू, न्हाए केहेमें मणां ॥ २१

अंईं कीं कीं न्हारचो संभारे, गुण म छडो मो करे[8] मोए[9] ।
इंद्रावती चोए पेरे लगी, फिरी फिरीने केतरो[10] चोए ॥ २२

॥ प्रकरण ॥ १७ ॥ चौपाई ॥ ३८० ॥

## विनती—राग धनासरी

हूं तां पीउजीने लागूं छूं पाए, जेम आ फेरो सफल मारो थाए ।
जेम पीउजी ओलखाए मारा वाला, सुणोने अमारी वालाजी विनती ॥ १

अमे पेहेला नव ओलख्याराज, अमने भरम गेहेने आण्या बाज ।
भवसागरना जल छे अपार, तेतां तमे सेहेजे उतारचा पार ॥ २

तमे भली पेहेलीने कीधी मारीबाहार,[11] धणी लिए तेमलीधीसार ।
चौद भवननी गम आंही, तेतां लखी सर्व सास्त्रों मांही ॥ ३

ते तमे कीधी छे प्रकास, तेहेनी तारतम पाए पुरावी साख ।
तमेअमनेजुगतेमाया रामत देखाडी, तमेअमनेघेरपोचाड्यासागर उतारी॥ ४

१. होना । २. टेढ़े । ३. काट दूं । ४. घर । ५. उठाएगी । ६. ठिकाना । ७. नुकसान । ८. न करो । ९. मोह । १०. कितना । ११. सुधि ।

अमें मनोरथ कीधां हता जेह, तमे पूरण कीधां सर्वे तेह ।
तमे अमने मनोरथ करतां वारचा,[1] तोहे कारज अमारा लेई सारचा ।। ५

अमने लागी हती जेहेनी रढ,[2] ते तमे पूरण कीधी आंही आवी द्रढ ।
तमे अमने रामत देखाडवाने काज, अम पेहेलाने पधारचा श्रीराज ।। ६

एवा मारा लाड पूरण कोण करे, बीजी दांण[3] देह मायामां कोण धरे ।
तमे मोसूं गुण कीधां छे अनेक, तेतां लख्या मारा रुदयामां लेख ।। ७

तम ऊपर थी तिल तिल करी नाखूं मारी देह, तमे कीधां मोसूं अधिक सनेह ।
हूं तो भामणियां[4] लेई लेई जाऊं, तमसूं सरखरूं केणी पेरे थाऊं ।। ८

तमे छो अमारडा धणी, तो आसडी पूरो छो अमतणी ।
इन्द्रावती चरणे लागे, कृपा करो तो जागी जागे ।। ९

।। प्रकरण ।। १८ ।। चौपाई ।। ३८९ ।।

अखंड डंडवत करूं प्रणाम, हैडे भीडी[5] भाजूं हांम ।
प्रेमे देउं प्रदख्यणा, फरी फरी वली अति घणां ।। १

वारी वारी जाऊं मुखारने विंद, वरणवुं सोभा सरूप सनंध ।
ओ वारणां लेऊं आखडियों तणां, सीतल द्रस्ट मांहें नहिं मणां ।। २

भामणां ऊपर लेउं भांमणां, सुख अमने दीधां अति घणां ।
वली वली लागूं चरणें, सेवा करीस[6] हूं वालपण[7] घणें ।। ३

वारी फरी नाखूं मारी देह, इंद्रावती वली एम कहे ।
अति वखाणमें[8] थाए नहीं, पोताना[9] घरनी वातज थई ।। ४

पोते पोताना करे वखांण, तेहेने सहू कोई कहे अजांण ।
पण जेवडी वात तेहेवा वखांण, वचंन ग्रहेसे जोईने जांण ।। ५

श्री धणींतणां वचन प्रमांण, प्रगट लीला थासे निरवांण ।
चौद भवननो कहिए भांण,[10] रास प्रकास उदे थया जांण ।। ६

---

१, रोका । २. जिद । ३. बार । ४. बलैया । ५. मिला कर । ६. करूंगी । ७. प्यार से । ८. प्रशंसा । ९. अपने । १०. सूर्य ।

चौद भवननो नहीं आसरो,[१] उदेकार अति घणो थयो ।
सबदातीत ब्रह्मांड कीधां प्रकास, ए अजवालूं जोसे साथ ॥ ७

रासतणां वचन निरधार, जे जोईने करसे विचार ।
आगल ए थासे बिस्तार, जीव घणां उतरसे पार ॥ ८

ए लीला जे जोसे विचार, सूं करसे तेहेने संसार ।
प्रगट पाईयो[२] कीधों एह, अंबारत[३] थासे हवे तेह ॥ ९

हवे सुणजो सहुए साथ, चरणे तमने लागे मेहेराज ।
ए वाणी श्री धणिएं कही, वली वली तमने कृपा थई ॥ १०

एहेवो पकव[४] प्रवीण नथी कांई हूं, तो सिखामण तमने केम देऊं ।
हूं घणुएं एम जाणूं सही, जे जीव मारो समझावुं रही ॥ ११

पण धणी तणी कृपा अति घणी, वली वली दया करे साथ तणी ।
तो वचन तमने केहेवाए, नहीं तो कीडी मुख कोहलूं[५] न समाए ॥ १२

हवे रखे वचन विसारो एक, साथ माटे कह्या विसेक ।
वचन कह्या छे करजो तेम, आपण पेहेलां पगला भरिया जेम ॥ १३

वली अवसर आव्यो छे हाथ, चरणे लागीने कहूं छूं साथ ।
हवे चरणे लागूं श्रीवालाजी, तमे वहार मारी भली कीधी ॥ १४

आ माया घणूं जोरावर हती, पण हलवी[६] थई माराधणीतम थकी ।
मायाने तजारक[७] थई, ते ऊपर आ विनती कही ॥ १५

ते विनतडी जोजो सार, माया दुख पामी निरधार ।
धणी लिए तेम लीधी सार, मुख मांहेंथी काढी ततकाल ॥ १६

तमारा गुणनी केही कहूँ वात, तमे अनेक वार कीधी मारी वहार ।
पोतावट[८] जांणी प्रमांण, इंद्रावती चरणे राखी निरवांण ॥ १७

चरण पसाए[९] सुंदरबाईने करी, फल वस्त आवी रदे चढी ।
चरण फल्या निध आवी एह, हवे नहीं मूकूं चित चरण सनेह ॥ १८

---

१. पर्याप्त । २. नींव । ३. इमारत । ४. दृढ़ । ५. काशीफल । ६. आसान । ७. फटकार ।
८. अपनी । ९. प्रताप ।

चरण तले कीधों निवास, इंद्रावती गाए रास ।
भाजी भरम कीधों अजवास, पांमे फल कारण विस्वास ।। १९

विसवास करीने दोडे जेह, तारतमनूं फल लेसे तेह ।
ते माटे कहूं प्रकास, जोपें जागी लेजो साथ ।। २०

एटले पूरण थयो रास, इंद्रावती धणीने पास ।
मूने मारे धणिएं दीधी बुध, हवे प्रकास करूं तारतमनी सिध ।। २१

।। प्रकरण ।। १९ ।। चौपाई ।। ४१० ।।

## हवे प्रकास उपनो छे

हवे करूं ते अस्तुत आधार, वल्लभ सुणो विनती ।
आटला दिवस में नव ओलख्या मारा वालैया, मायानी लेहेर मूने जोर हती।। १

जीव जगावो भाजी भरम, श्री वालाजीने लागूं पाए ।
सोभा तमारी तीत सबद थकी, मारी देह आ जिभ्या सबद मांहें ।। २

केणी पेरे हूं करूं अस्तुत, मारा जीवने नथी कांई बल ।
मारी जोगवाई[1] सर्व अस्थिर वस्तनी, केम वरणवुं सोभा नेहेचल ।। ३

आगल जीवें कीधी अस्तुत, भगवानजीनी भली भांत ।
पंडताई चतुराई ने प्रवीणाई, किवता[2] मांडे[3] छे करी खांत ।। ४

ते प्रवाही[4] वचन ज्यारे जोईए, तेहेमां को को छे भारे वचन ।
एतां दिए अचेत थका उपमां, पण मुने साले ते मन ।। ५

अजांण थके दिए एवडी उपमा, त्यारे जाण्यानो कीहो प्रमाण ।
एक वचन जो पडे मुख प्रवाही, ते नव जाण्यूं निरवाण ।। ६

नव में सांभल्यूं वेद पुराण, नव सांभली किव चतुराई ।
एक बे वचन श्री जी ना मुख थी सांभलया, तेणे एम जाण्यूं आ पुष्टओ प्रवाही।। ७

ते पण चित देई नव सांभल्या, नहीं तो पूर बूढयो प्रघल ।
आडा गुण सघला जोध जुजवा, तेणे नव लेवा दीधूं टीपू जल ।। ८

---

१. साधन । २. कविता । ३. रचना । ४. साधारण ।

हवे ते गुणने केही दीजे उपमा, फिट फिट भूंडी बुध ।
प्रथम तूं मोहोवड[1] मंडाणी, तें कां न लीधी ए निध ।। ९

सागर पूर वह्यूं रे सनंधे, तें कां न लीधूं ए जल ।
तें बुध पापणी हूं मेलूं[2] परहरी, जे थई मोसूं निबल ।। १०

हवे रे बुधडी हूं कहूं तूंने, तूं थाए बुधनो अवतार ।
श्री वालाजीने वल्लभ करे, एक ख्यंण म मूके लगार ।। ११

बीजी बुध केही आवे अम सम बड, हूं बुध माहें बुध अवतार ।
बुधें करी वालाजीने वल्लभ करीस, ए बुध नहीं मूकूं लगार ।। १२

बुधजी रह्या छे आसरे, जे छे बुध अवतार ।
ए बुधजी विना बीजा बापडा,[3] कोंण काढे ए सार ।। १३

सार काढे सुध करीने, वाणी बेहद गाए ।
धंन अवतार ते बुध तणो, जे रह्यो आवीने पाए ।। १४

ते नहीं वैकुंठ नाथने, जे रस बुध अवतार ।
चरण ग्रह्या वालातणां, कांई ए निध पांम्यो सार ।। १५

सार पांमे सुख उपनूं, धंन धंन ए अवतार ।
आज लगे ब्रह्मांड मांहें, कोई एम न पांम्यो पार ।। १६

ए अवतारनी उपमा, कांई लीला अखंड थासे ।
वचन एहेना विधें विधें, कांई वाणी ब्रह्मांड गासे ।। १७

हवे रे श्रवणां कहूं हूं तूंने, तूंने धणिएं कह्या वचन ।
कां न लीधां तें वचन वचिख्यण,[4] फिट फिट भूंडा करण ।। १८

मंडाण[5] तुझ ऊपर रे श्रवणां, लेवाए तारे बल ।
धणिएं धन रेढतां[6] नव जोयूं, नेठ कां न थया निबल ।। १९

हवे श्रवणां तूं संभार आपोपूं, थाए वचिख्यण बीर ।
वाणी जे वल्लभतणी, तूं ग्रेहजे द्रढ करी धीर ।। २०

---

१. सबसे आगे । २. छोड दूं । ३. बेचारा । ४. ज्ञान पूर्ण । ५. भरोसा । ६. उंडेलते हुए ।

विध विधना वचन सुणयाजी, श्रवणां कहे संभारी ।
जे मनोरथ हता मारा जीवने, ते पूरी वालें आस अमारी ॥ २१

हवे सुणीस[1] हूं जोपें करी, नव मूकूं एक वचंन ।
ऐ वाणी घणूं हूं वल्लभ[2] करीस, जेम सहू को कहे धंन धंन ॥ २२

हवे तूंने हूं कहूं रे निद्रा, तूं नीच निबल निरधार ।
गुण सघला आडी तूं फरी वली, नव लेवा दीधी निध आधार ॥ २३

तू तां केवल माया रूप पापणी, वोल्या लेई तें बाथ ।
श्रवणांए तें सांभलवा न दीधां, आलस बगाई[3] तारे साथ ॥ २४

घारंण घणी विध आवी जीवने, जेम मीन बीटचो[4] मांहें जाल ।
जेणे नेत्रें निध निरखूं निरमल, ते नेत्रें आडी थई पाल ॥ २५

फिट फिट भूंडी दुस्ट पापणी, हवे तजूं तुझने निरधार ।
आगे तें अवसर चूकवयो, हवे निरखूं जीवनो आधार ॥ २६

आगे निद्रा थई निबल मोसूं, घारण हुती घणी पर ।
हवे तूं जीवने म आवीस ढूकडी,[5] कर संसार मांहें घर ॥ २७

निंद्रा कहे ज्यारे जीव जाग्यो, त्यारे में केम रेहेवाए ।
चरण फल्या ज्यारे धणीतणां, त्यारे जाऊं छूं लागीने पाए ॥ २८

अरुचडी तूं त्यारे आवी, ज्यारे मल्या मूने श्री राज ।
फिट फिट भूंडी उहन[6] अकरमण, तूं सरजी स्याने[7] काज ॥ २९

फिट फिट भूंडी तें दा चूकवयो, हवे करे कांईयक तूं बल ।
जीवनजी मलया जीवने, तूं थाए संसारमां नेहेचल ॥ ३०

अरुचडी कहे हूं बलवंती, मूने न लखे कोए ।
छानी[8] थईने आवूं जीवमां, भाजूं ते साजूं नव होए ॥ ३१

ज्यारे धणी पोते घर संभारे, त्यारे चोरी करे केम चोर ।
हवे अवला[9] मांहेंथी सवलूं[10] करूं, जई बेसूं संसार मांहें जोर ॥ ३२

---

१. सुनूंगी । २. प्यारा । ३. जम्हाई । ४. फंसी । ५. निकट । ६. ऊंध । ७. किस । ८. छिपकर । ९. उलटा । १०. सीधा ।

मूने मारो वल्लभ मल्या वालेसरी,[१] जाणूं सेवा कीजे हरकांत[२] ।
तेणे समे आवी ऊभी तूं अकरमण, फिट फिट भूंडी स्वांत ।। ३३
ए निध आवे केम स्वांत कीजे, केम बेसिए करार ।
दोड कीजे सघला अंगसूं, स्वांत कीजे संसार ।। ३४
स्वांत कहे हूं तहां लगे हुती, जां जीवने निद्रा हती जोर ।
हवे जाऊं छूं संसार मांहें, तमे करो धनीसों कलोल ।। ३५
हवे रे तूंने कहूं लोभ लालची, फिट फिट भूंडा अजाण ।
नव कीधों लोभ खरी निधनो, जेथी अरथ सरे निरवाण ।। ३६
हवे म थासो तमे माया टूकडा, मारा लोभ लालच बंने जोड ।
लोभ आवो मारा वालाजीमां, जेम करूं रात दिन दोड ।। ३७
लोभ लालच कहे स्यो बांक अमारो, जां न वले जीवने सार ।
हवे जे तमे कह्यूं अमने, ते जोजो केम ग्रहूं छूं आधार ।। ३८
फिट फिट भूंडी त्रस्ना अभागणी, तूं निबल थई निरधार ।
बीजा गुण सघला त्रपत थाए, पण तूंने कोई भावठनां[३] भंडार ।। ३९
हवे तूंने केम काढूं रे त्रस्ना, तोसूं मारे घणूं काम ।
त्रस्ना आवो मारा वालाजीमां, जेम वस करूं धणी श्री धाम ।। ४०
त्रस्ना कहे हूं केमे नव मूकूं, जे आतमाएं देखाड्या आधार ।
तमे जई बीजा गुण संभारो, ए हूं नहीं मूकूं निरधार ।। ४१
मोह कहूं सुन वातडी मारी, मूने मल्यातां मारो आधार ।
फिट फिट भूंडा दुरमती, तें तोहे न छाड्यो संसार ।। ४२
हवे रे आव तूं वालाजीमां, मायासूं करजे बिछोह ।
फरी जोगवाई आवी मारा हाथमां, हवे केवो जोध जोईए मारो मोह ।। ४३
मोह कहे मारो वात छे मोटी, मूने जांणे सहू कोए ।
जेणे ठामें हूं बेसूँ, तिहांथी अलगो न करी सके कोए ।। ४४

१. प्रियत्तम । २. लग्न से । ३. इच्छाओं का ।

जे निध देखाडी तमे मूने, तेने जड थई बलगूं[1] हूं अंध ।
म्हारी विधतां एकज छे, बीजी न जाणूं सनंध ॥ ४५
हरख सोक तमे थयारे मायाना, फिट फिट अभागी अजाण ।
धणी मले तूं हरख न आव्यो, चाले सोक न आव्यो निरवाण ॥ ४६
निखर तमे निबलाई घणीं कीधी, एवा अंध थया अभागी ।
हवे तमने हूं सूं कहूं, जे जीवें न वारचा जागी ॥ ४७
हवे आवो तमे खरी निधमां, आगे चूक्या अवसर ।
एक लीजे लाहो श्रीवालाजीनो, बीजो हरखे जागूं म्हारे घर ॥ ४८
हरख कहे हूं सूं करूं, जां धणी न लिए खबर ।
सोक कहे जां धणी नव कहे, तां अमें करूं केही पर ॥ ४९
जोध अमे बंने छऊं बलिया, हवे जोजो अमारी भांत ।
धणी तमे देखाड्या अमने, अमें ते ग्रहूं छूं हरकांत ॥ ५०
मद मतसर[2] अहंमेव अहंकार, तमे दोड कीधी संसार ।
फिट फिट गुण भूंडा एवा बलिया, तमे बिछोह पाड्यो मारे आधार ॥ ५१
तमे त्रणें जोधा एक सम थई, कां नव कीधी समी वात ।
ज्यारे जीवनजी मल्या जीवने, त्यारे तमे कां न कीधों उलास ॥ ५२
हवे रे तमे म्हारे पासे थाओ, मुने वली मल्या म्हारो आधार ।
बलें जुध करजो बुधें करी, जेम छांटो न लागे संसार ॥ ५३
त्रणें जोधा अमे जोरावर, चालूं एकी बाट ।
वालाजीने ग्रही करी, जीवने भेला करी देऊं साथ ॥ ५४
हवे एवा जोध सबल तमे बलिया, मल्या मोसूं खोटे भाव ।
जोगवाई[3] गई मारे हाथ थी, पण तमे न गया सेहेज सुभाव ॥ ५५
मायाने मलीने रे मूरखो, मोसूं थया तमे कूडा ।
फिट फिट भूंडा दुस्ट अभागी, एणी वातें न थया रूडा ॥ ५६

१. लिपट जाऊँ । २. डाह । ३. साधन ।

सेहेज सुभाव बंने सरखी जोड, मारा जोध सबल तमे ज्वान ।
जेहेनी गमां[1] तमे थाओ, ते जीते निरवाण[2] ॥ ५७

हवे तमने हूं खीजी कहूं छूं, मारा सबल थाजो सुजाण ।
सेहेज सुभाव करजो वालाजीसूं वालपण, ला मागजो केहेनी आंण ॥ ५८

सेहेज सुभाव बंने अमे बलिया, जो करे कोई कोट उपाए ।
जे अमे वात ग्रहूं जोपें करी, ते केणें नव पाछी थाए ॥ ५९

हवे जोजो तमे जोर अमारो, वालोजी ग्रहूं करी खांत ।
पूरो पाल देई रंग चोलनो,[3] पाडूं[4] पटोले[5] भांत ॥ ६०

ममता तूं मायातणी, निबल थई निरवांण ।
फिट फिट भूंडी दुस्ट पापणी, कीधी मुझने घणी हांण ॥ ६१

हवे ममता आव मारा वालाजीमां, बीजो मूके सरव संसार ।
सबल संघातण[6] थाए मुझ पासे, मूने मल्या छे मारो आधार ॥ ६२

हूं संघातण छऊं जो तमारी, तमे लेओ ए निध ।
ए निध अलगी थावा न देऊं, करो कारज तमे सिध ॥ ६३

हवे तूंने हूं कहूं रे कलपना, फिट फिट भूंडी अकरमंण ।
फोकटियाणी[7] फजीत तें कीधी, कांई अमने अति घंण ॥ ६४

हवे करमण था तूं आव कलपना, सेवा मांहें कर विचार ।
वालैयो वालाजी मुझने मल्या, लाभ लेऊं आवी मांहें संसार ॥ ६५

कहे कलपना ए काम म्हारो, हूं करूं विध विधना विचार ।
अंग एके नव राखूं पाछो, सेवानी सेवा दाखूं[8] सार ॥ ६६

वेर राग तमे जोध जुजवा, साम सामा सिरदार ।
वेर कीधूं तमे वल्लभजीसूं, राग कीधों संसार ॥ ६७

तमे मोसूं भूंडी अति कीधी, तमने देऊं कटारी घाए ।
एवो अवसर आव्यो मारा हाथमां, पण तमे भूलव्यो मूने दाए ॥ ६८

---

१. ओर । २. निश्चित । ३. पक्का लाल । ४. डालूं । ५. ओढ़नी । ६. साथिन । ७. बेकार । ८. दिखाऊँ ।

म्हारे संडाण[1] छे तम उपर, तमे कां थया मोसूं एम ।
हवे हुंकारी[2] आवो अम पासे, हूं लाभ लेऊं वालाजीनो जेम ।। ६९

जोर करो तमे जोध जुजवा, राग आवो मांहें आधार ।
वेर विधे विधे कठणाईसूं, जई बेस मांहें संसार ।। ७०

वेर कहे स्यो बांक अमारो, जां धणी पोते घर नव राखे ।
अमें आफरवा[3] केम करी ग्रहूं, जां जीव चींधी[4] नव दाखे ।। ७१

राग कहे हूं रूडी पेरे, हलमल[5] करूं आधार ।
जीव धणी वचे अंतर टालूं, तो वखाणजो[6] आ वार ।। ७२

हवे वेर कहे मारी विध जोजो, केवी कठणाई करूं संसार ।
कोई जो जीवसूं जोर करे, तो उतरी बढूं[7] तरवार ।। ७३

फिट फिट भूंडा स्वाद कहूं तूंने, मूने मल्याता मीठा आधार ।
एह स्वाद मेलीने सोखिया,[8] तूं स्वाद थयो संसार ।। ७४

हवे रे स्वाद थाए सुहागी, जोजे वल्लभनो मिठास ।
ज्यारे तूं आव्यो ए मांहें, त्यारे कहिए न कर बीजी आस ।। ७५

स्वाद कहे ज्यारे ए सुख लाध्यो, त्यारे अभख[9] थयो मोहजल ।
अवल[10] हतो ते टली गयो, हवे सवलो आव्यो बल ।। ७६

हवे रे कहूं तूंने गुणना उतार, तें वल्लभसूं कीधो क्रोध ।
में तूंने जाण्यो हतो सुहागी, फिट फिट कमल फेरण क्रोध ।। ७७

क्रोध में तूंने जाण्यो पोतानो, पण नव सिध्यूं तूं मांहेंथी काम ।
फिट फिट भूंडा दुस्ट अभागी, रही मारा हैडा मांहे हांम ।। ७८

हवे क्रोध कमल[11] फेरी नाख तूं ऊंधो,[12] ऊंधो फेरजे कमल संसारे ।
एहेवो अकरमी कां थई बेठो, तेम कर जेम सहू को संभारे ।। ७९

क्रोध कहे हूं घणुवें जोरावर, पण धणी विना करूं हूं केम ।
हवे कोई गुण जीवने चंपावे,[13] तो त्यारे तमे कहेजो मूने एम ।। ८०

---

१. आश्रय । २. ललकार । ३. अपने आप । ४. संकेत से । ५. हिल मिल । ६. प्रशंसा करना । ७. काट दूं । ८. शौकीन । ९. त्याज्य । १०. उल्टा । ११. चक्र । १२. उल्टा । १३. दबावे ।

हवेने कहूं तूंने चाक चकरडा, तूं चढो बेठो जीवने माथें ।
आपोंपूं नव ओलखयो अभागी, फोकट[1] फेरव्यो[2] जीव निघातें ।। ८१

अंध एवो कां थयो रे अभागी, तें नव सुण्यो आटलो पुकार ।
फिट फिट भूडा फेर न राख्यो, ज्यारे मलया मुझने आधार ।। ८२

मन समरथ सबल तूं बलियो, तारा वेगनो[3] कीहो कहूं विस्तार ।
सुज[4] सबल मांहे तूं फरतो, आडो ऊभो द्रोड[5] अपार ।। ८३

हवे तूं मांहें काम म्हारे छे अति घणों, जोसूं तारो जोर मेवार[6] ।
पचबीस पक्ष मांहें तूं फरजे, रखे अधख्यंण रहे लगार ।। ८४

संकलप विकलप छे तूं माहीं, ते तूं कर सेवानी ।
मन उमंग आण तूं अति घणी, श्री धाम धणी मलवानी ।। ८५

मन कहे म्हारी वात छे मोटी, अने सकल विध हूं जाणूं ।
गजा[7] पखे चढी बेसूं माथें, जीवने जोपे बस आणूं ।। ८६

ज्यारे जीव पोते जाग्रत न थाए, त्यारे करूं केम अमे ।
जोर अमारूं त्यारे चाले, ज्यारे सामा जागी बेसो तमे ।। ८७

हवे पेर जोजो तमे म्हारी, करूं म्हारा बलनो विस्तार ।
निध लेईने देऊं ततख्यण, तो केहेजो गुण सिरदार ।। ८८

कोई जो केलवी[8] जाणे अमने, तो फल लेई देऊं ततकाल ।
सेवानी सनंधो ते देखाडूं, जेणे धणी न थाए अलगा कोई काल ।। ८९

भरम भ्रांत कीधी तमे भूंडी, एम न करे बीजो कोए ।
तारतम अजवाले वालोजी ओलख्या, तमे आडा फरी वल्या तोहे ।। ९०

जो आकार तमारो होत रे अभागी, तो कटका करूं तरवारे ।
पींजी पींजी[9] पुरजा करी, वली वली काढूं हेठल[10] धारे ।। ९१

हवे जोपें थईने जाओ संसार मांहें, ए छे तेवा थाओ तमे ।
जेम अजवाले श्री वालोजीने ओलखी, एमां मूल जोत देखूं जेम अमे ।। ९२

---

१. खाली । २. फिरना । ३. तेज चाल । ४. सीधा । ५. दौड़ । ६. मन । ७. सामर्थ्य ।
८. कद्र । ९. बारीक काटना । १०. नीचे ।

भरम भ्रांत कहे सांभलो जीवजी, अमने मारो तरवारो ।
कीहे ठिकाणे निद्रा करो, ते आपोपूं कां न संभारो ॥ ९३
जेहेनो धणी पोते निध पामे, ते केम सुए[1] करारे[2] ।
आप पोते खबर नव राखे, अने फोकट अमने मारे ॥ ९४
ज्यारे तमे जाग्या जोरावर, त्यारे अमे जाऊं छूं संसार ।
भले मल्या धणीजी तमने, हवे करो अजवालूं[3] अपार ॥ ९५
फिट फिट लज्या तूं थई लोकिकनी,[4] बीजा बांध्या कुटमसों करम ।
धाम धणी मुने तेडवा आव्या, तहां तूं न आवी सरंम ॥ ९६
दुस्ट पापणी तें सूं कीधूं, आगल करीस हूं केम ।
केही पेरे हूं मोंहों उपाडीस,[5] मारा धणी आगल न आवी सरंम ॥ ९७
हवे रे सरमडी कहूं हूं तूंने, तूं जोजे मूल सगाई ।
आगे अवसर मोटी चूकी, हवे फरी आवी जोगवाई ॥ ९८
लज्या कहे हूं घणुएं भूली, हवे वालाजीसूं मुख केम मेलूं ।
दुस्तर[6] ऊपर आग उठो, जेणे भूलवी मूने पेहेलूं ॥ ९९
फिट फिट भूंडी आसा तूं थई सागरनी, धणी मेला विसारी ।
जीवने सफल जे हाथ लागूं, भूंडी ते तूं बेठी हारी ॥१००
एह फल तें मूकी करीने, नीच वस्त कां लीधी ।
ए दोष सरवे जीवने बेठो, तूंने सिखामण नव दीधी ॥१०१
हवे आस धणीनी घणूं मोटी, थाईस हूं विचारी ।
मणां[7] नहीं राखूं कोई आसडी, हवे लेजो सुफल संभारी ॥१०२
अचेत गुण तूं आव्यो अकरमी, धाख थावा नव दीधी ।
जीवने जे निध हाथ लागी, भूंडा तें ते जूई कीधी ॥१०३
ए निधनी केही वात करूं, भूंडा फिट फिट गुण अचेत ।
तुझ बेठा तिवरता[8] न आवी, नहीं तो ए निध हूं लेत ॥१०४

१. सोए । २. चैन से । ३. उजाला । ४. दुनिया की । ५. उठाऊंगी । ६. कठिन । ७. कमी । ८. फुर्ती ।

अचेत कहे हूं सागरनो, ते जाऊं छूं सागर माहें ।
निध तमारी तमे पामो, ग्रहूं हूं तिवरता बांहें ॥१०५

फिट फिट भूंडा गुण कहूं तिवरता, सूने मल्याता धाम धणी ।
एवो अवसर कोई निगमे, तें कीधी मोसूं भूंडी घणी ॥१०६

वली अवसर आव्यो छे हाथमां, हवे तिवरता तूं संभारे ।
रात दिवस तूं जीवने दोडावे, एक पाव पल मा विसारे ॥१०७

तिवरता कहे हूं बलवंती, जीवने देऊं हूं जोर ।
बस करी आपूं धणी तमारो, करूं पाधरा दोर ॥१०८

सील संतोष हवे आवजो ढूकडा,[1] बांधो सागर आडी पाल ।
गुण सघला केहेसो तेम करसे, नथी कांई बीजी जंजाल ॥१०९

सील कहे संतोष सुनो, आपणने कीधां छे पाल ।
परवत तांणे पूर सागरना, मांहें वेहेवट[2] छे निताल[3] ॥११०

आमलिया[4] अलेखे दीसे, लेहेरों मेर[5] समान ।
मछ जोरावर मांहें छे मोटा, पाल करवी एणे ठांम ॥१११

हवे बांधिए पाल खरो करी पाईयो, जेम खसे नहीं लगार ।
पछे जल पोते ज्यारे ठाम ग्रहेसे, त्यारे सामूं सोभा थाए अपार ॥११२

हवे पाल अमे बांधसूं जीवजी, पण तमे थाओ ततपर ।
आ अवसर बीजी वार नहीं आवे, सोभा साथ मांहें ल्यो घर ॥११३

हवे जाग जीव तूं जोपे बलिया, तूंने केही देऊं गाल ।
में तूंने घणुऐं फिटकारचो, पण चूक्यो अवसर नी नाल[6] ॥११४

कठणाई में जोई जीव तारी, अति खरो निखर[7] अपार ।
धणी धमी[8] धमीने थाक्या, पण नेठ[9] नव गलियो निरधार ॥११५

॥ प्रकरण ॥ २० ॥ चौपाई ॥ ५२५ ॥

---

१. निकट । २. प्रवाह । ३. प्रखर । ४. भंवर । ५. पर्वत । ६. उपयुक्त । ७. निफट । ८. धौंकना । ९. ढीठ ।

सांभल जीव कहूं वरतांत, तूंने एक देऊं द्रस्टांत ।
ते तूं सांभल एके चित, तूने कहूं छूं करीने हित ॥ १

परीछते एम पूछयो प्रस्न, सुकजी मूने कहो वचन ।
चौद भवन मांहें मोटो जेह, मुझने उतर आपो[1] तेह ॥ २

त्यारे सुकजी एम बोल्या प्रमाण, ग्रहेजो वचन उतम करी जांण ।
चौद भवनमां मोटो तेह, मोटी मतनो धणी छे जेह ॥ ३

वली परीछतें पूछयूं एम, जे मोटी मत ते जाणिए केम ।
मोटी मतनो कहूं विचार, ग्रहेजो परीछत जाणी सार ॥ ४

मोटी मत ते कहिए एम, जेहेना जीवने वल्लभ श्रीक्रस्न ।
मतनी मततां ए छे सार, वली बीजी मतनो कहूं विचार ॥ ५

एह विना जे बीजी मत, ते तूं सर्वे जाणे कुमत ।
कुमत ते केही केहेवाए, नीछारा[2] थी नीची थाए ॥ ६

एवडो तेहेनो स्यो वरतांत, तेहेनूं कांईक कहूं द्रस्टांत ।
सांभल परीछत कहूं वली तेह, एक मोटी मतनो धणी छे जेह ॥ ७

मोटी मत वल्लभ धणी करे, ते भवसागर खिण मांहें तरे ।
तेहेने आडो न आवे संसार, ते नेहेचल सुख पामें करार ॥ ८

ओली[3] कुमत कहिए तेणे सूं थाए, अंध कूप पड्यो पचे[4] मांहें ।
ए सुकजीना कह्या वचन, जीव विमासी[5] जुए जोपें मन ॥ ९

विमासणनी नहीं ए वात, तारो निरमाण[6] बांध्यो स्वांसों स्वांस ।
तेहेनो पण नथी विस्वास, जे केटला तूं लेईस ए स्वांस ॥ १०

ए ख्यणमां कई वार आवे जाए, त्यारे* कात्यूं[7] बोछयूं[8] कपासिया[9] थाए* ।
ते माटे सुणजे जीव सही, मोटी मत में तुझने कही ॥ ११

जे जोगवाई छे तारे हाथ, ते आंणी जिभ्याएं केही कहूं वात ।
आटला दिवस तें जाण्यूं नव जाण, मूरख करे तेम कीधूं अजांण ॥ १२

---

१. दीजिए । २. नीची । ३. उस । ४. घुलता है । ५. विचार करना । ६. हिसाब । (७. काता (किया) । ८. किया कराया । ९. बिनौलें ।) ७ से ९. किया कराया मिट्टी हो गया ।

हवे ए वचन विचारजे रही, सुकजी पाए साख पुरावी सही ।
हवे एक वचन कहूं सुणजे जीव सही, वालाजीना चरण तूं ग्रहेजे रही ।। १३
सुणजे वली धणीनां वचन, वाणी कहे ते ग्रहेजे मन ।
रखे पाणीवल[१] विहिलो[२] थाए, आवो नहीं लाभे रे दाए ।। १४
भरम भांजवा कह्या वचन, मोटी मत ग्रहे जेम थाए धंन धंन ।
हवे ओलखजे जोपे करी, भरम भ्रांत सूको परहरी[३] ।। १५
मुख माहेंथी वचन कह्या तो सूं, जो हजी न छेक[४] निकलियो तूं ।
आगे किव मांडी छे अनेक, तें पण कांईक कीधी विसेक ।। १६
पण सांचो तो जो समझे जीव, तो वाणी भले मुखथी कही पीउ ।
ए वाणी नथी कांई किवना जेम, मारा जीवने खीझवा कह्या वचन ।। १७
जीव छे मारो अति सुजांण, ते धणीना चरण नहीं मूके निरवांण ।
पण सांचो तो जो करे प्रकास, जोत जई लागी आकास ।। १८
आंणी जोगवाईएं तो एम थाए, चौद भवनमां जोत न समाए ।
एम अमें न करूं तो बीजो कोणकरे, धणी अमारे काजें बीजीदाण[५] देह धरे ।। १९
एणी किमे[६] नव थाए सरम, एणी द्रस्टे केम न थाए नरम ।
जीव छे मारो खरी वस्त, ते कां नव करे अजवालूं अत ।। २०
श्री सुंदरबाईने चरणज थकी, वली मोसूं गुण कीधां बाई *गुणवंती ।
मारे माथें दया *रतनबाईनी घणी, एहेनी कृपाएं जोपें ओलखीस धणी ।। २१
एहेनी दयाएं जोत एम करीस,[७] चरण धणीना चितमां धरीस[८] ।
इंद्रावती चरणे लागे आधार, सुफल फेरो करूं आ वार ।। २२

।। प्रकरण ।। २१ ।। चौपाई ।। ५४७ ।।

हवे द्रस्ट उघाडी जो पोतानी, निरख धणी श्री धाम ।
प्रेमल[९] करी पोते आप संभारी, बांध गोली प्रेम काम ।। १

---

१. बुलबुला । २. जल्दी मिटना । ३. छोड़ दो । ४. छेद कर । ५. दोबारा । ६. कैसे ।
७. करूंगी । ८. धरूंगी । ९. सुगन्धि ।

प्रेमतणी गोली बांधीने, अमल करूं जोजो छाक[१] ।
चौद भवन मांहें किरण कुलांभी,[२] फोडी जाऊं ब्रह्मांड पीउ पास ।। २

हवे वाचा मुख बोले तूं वाणी, करजे हांस विलास ।
श्रवणा तूं संभार तहारी, सुण धणीनो प्रकास ।। ३

जीवना अंग कहे परियाणी,[३] तमे धणी देखाड्या जेह ।
प्रले ब्रह्मांड जो थाए प्रगट, अमें तोहे न मूकूं ख्यण एह ।। ४

हवे जाग जीव सावचेत थई, वालो ओलखे[४] आंख उघाडी ।
कर अस्तुत विनती वल्लभसूं, नाख[५] अंतर पट टाली ।। ५

आटला दिवस में नव ओलख्या मारा वालैया, में कीधूं अधमनूं कांम ।
महाचंडाल अकरमी अबूझ, में न ओलख्या धणी श्री धाम ।। ६

धिक धिक पडो मारा जीव अभागी, धिक धिक पडो चतुराई ।
धिक धिक मारा गुण सघलाने, जेणें नव जांणी मूल सगाई ।। ७

धिक धिक पडो ते तेज बलने, धिक धिक पडो रूप रंग ।
धिक धिक पडो ते गणानने,[६] जेहेने नव लाध्यो परसंग[७] ।। ८

धिक धिक पडो मारी पांचो इन्द्री, धिक धिक पडो मारी देह ।
श्री धाम धणी मूकी करी, संसारसूं कीधूं सनेह ।। ९

धिक धिक पडो मारा सर्वा अंगने, जे न आव्या धणीने काम ।
में ओलखी नव बावरचा,[८] मारा धणी सुंदर श्री धाम ।। १०

तमे तमारा गुण नव मूक्यां, में कीधी धणी दुष्टाई ।
हूं महा निबल अति नीच थई, तमे नव मूकी मूल सगाई ।। ११

।। प्रकरण ।। २२ ।। चौपाई ।। ५५८ ।।

हवे वारी जाऊं वनराए[९] वल्लभनी, जेहेनी सकोमल छाया ।
गुण जोजो[१०] तमे ए वन ओखदी,[११] दीठडे दूर जाए माया ।। १

१. मस्ती । २. फैल गई । ३. सलाह । ४. देख । ५. डाल । ६. ज्ञान । ७. परमात्मा का लगाव । ८. प्रयोग में आया । ९. महान वृक्ष । १०. देखो । ११. दवा ।

हवे वारणां लेऊं आंगणियों वेलू, जहां बेसो छो संझा समे साथ ।
परियाण करो धाम चालवा, घर लाटडी देखाडो प्राणनाथ ॥ २

वलीं वारणां लेऊं आंगणियां, अने आस पास सहू साज ।
जहां बेसो उठो ऊभा रहो, वल्लभ मारा श्री राज ॥ ३

धणी विधें हूं घोली घोली जाऊं, मंदिर ने वली द्वार ।
भामणां लेऊं ते भोमतणां, जहां बेसो छो मारा आधार ॥ ४

वारी जाऊं पलंग पाटी उसीसा,[१] तलाई सिरख ओछाड ।
वली वारी जाऊं चंद्रवा, जिहां पोंढो सुख सिज्याए ॥ ५

हवे घोली घोली जाऊं झीलाने[२] चाकला,[३] घोली जाऊं मंदिरना थंभ ।
जेणे थंभें कर धणी पोताने, जुगतें वाल्या बंध ॥ ६

बेसो छो जिहां बलवंत बलिया, जाऊं वलिहारी तेणे ठाम ।
साथ सकल सवारो आवी बेसे, वरणवो धणी श्री धाम ॥ ७

मंदिरों मांहें अनेक विध दीसे, जोगवाई पूरण सरवे ।
अनेक वार लेऊं तेना भामणां[४] मारी वारी नाखूं जीवसूं देह ॥ ८

भले तमे देह धरचा मुझ कारण, करी अजवालूं टाल्यो भरंम ।
जीव मारो घणों कठण हतो, तमे नेत्रें गाली कीधो नरंम ॥ ९

हवे चरंण कमलना लेऊं भामणियां, अने भामणां लेऊं सरवा अंग ।
हस्त कमलने वारणें, वारी जाऊं मुखार ने विंद ॥ १०

वस्तर ऊपर वारी वारी जाऊं, भामणां लेऊं भूषण ।
नेत्र निरमलने वारणें, जेहेनी द्रस्टें फल पामिएं ततख्यंण ॥ ११

जाऊं वलिहारी नासिका, अने दुखाणां[५] लेऊं सरवणां ।
सुंदर सरूप सकोमल ऊपर, जीव लिए भामणां घणां घणां ॥ १२

सेवा करे छे बाई *हीरबाई, ओछव रसोई जांहें ।
अंतरगतें तमे नित आरोगो, हूं लेऊं भामणां घणां घणां तांहें ॥ १३

---

१. तकिया । २. गलीचा । ३. गादी । ४. बलैया । ५. बलैयां ।

घोली घोली जाऊं ते वाणी ऊपर, जे वचंन कहो छो रसाल[१] ।
साथ सकलने चरणे राखी, सागर आडी बांधो छो पाल[२] ॥ १४

हवे सेवा करीस हूं सर्वा अंगे, देऊं प्रदख्यणा रात ने दिन ।
पल न वालूं[३] निरखूं नेत्रे, वालपण करूं जीव ने मन ॥ १५

मूं जेहेवा अजांण अबूझ दुस्ट होए अप्रीछक,[४] अधम नीच मत हीन ।
ते एणे चरणे आवी थाए जांण सिरोमण, सुघड सुप्रीछक[५] प्रवीन ॥ १६

तेना जीवने जगावी निध देओ छो निरमल, करो छो वासना प्रकास ।
ते जीव वचिख्यंण[६] वीर थई, चौद भवंन करे अजवास ॥ १७

हवे गुण केटला कहूं मारा वालैया, जे अमसूं कीधां आ वार ।
आंणी जोगवाईएं न केहेवाए, पण लखवा तो निरधार ॥ १८

हवे आंहीं उपमां केही देऊं मारा वालैया, ए सबद न पोहोंचे तमने ।
वचंन कहूं ते ओरूं[७] रहे, तेणे दुख लागे घणूं अमने ॥ १९

एक वचने मारी दाझ[८] भांजे, ज्यारे कहूं छूं धणी श्री धांम ।
एक एणे वचने मारो जीव करारचो, भांजी हैडानी हांम ॥ २०

कहे इंद्रावती अति उछरंगे, फोडी ब्रह्मांड करूं प्रकास ।
विगतें[९] वाट देखाडूं घरनी, जेम सोहेलो[१०] आवे मारो साथ ॥ २१

॥ प्रकरण ॥ २३ ॥ चौपाई ॥ ५७९ ॥

हवे अस्तुत ऊपर विनती कहूं, चरण तमारा जीव नेत्रें ग्रहूं ।
एणे चरणे मूने थई छे सिध, पेहेली निध मूने सुंदरबाईएं दिध ॥ १

ए बंने[११] सरूपमां जोतज एक, ते में जोयूं करी विवेक ।
इंद्रावती करे विनती, तमे निध दीधी मूने तारतम थकी ॥ २

मारो आसरो कांई न हतो मारा धणी, मूने बंने सरूपें दया कीधी घणी ।
सेवा मांहें न हती सरीख,[१२] नव जांणूं मूने निध दीधी केम करीस[१३] ॥ ३

---

१. मधुर । २. दीवार । ३. मूंदूं । ४. मूढ़ । ५. समझदार । ६. चतुर । ७. इधर ही । ८. जलन । ९. विधि पूर्वक । १०. सहज ही । ११. दोनों । १२. शरीक । १३. कैसे करके ।

क्रतव[1] चितवणी जे सेवा करे, अवला[2] गुण मोहजल परहरे[3] ।
तेपण मनसा वाचा करमणां करी, अने दोड करे घणूं वालपंण[4] धरी ॥ ४

पण जिहां लगे दया तमारी नव थाए, तिहां लगे सर्व तणाणूं[5] जाए ।
ते पारखूं[6] में जोयूं निरधार, साथ सकलना वचंन विचार ॥ ५

जे खरो थई जीव जुओ मन करे, कपट रती रदे नव धरे ।
एम थैने जे तमने सेवे, अने वचंन विचारी तमारा ग्रहे ॥ ६

सांचो सनकूल[7] करे तमारो चित, अने भ्रांत मेली करे जीवने हित ।
चित ऊपर खरो चालसे जेह, सोभा घेर साथमां लेसे तेह ॥ ७

ए निद्रा उडाडीने कह्या वचंन, श्री धाम धणी जीव जाणी मन ।
वली जां जोऊं तमने जोपें करी, तां हजीमें निद्रा नथी मूकी परहरी ॥ ८

आ वचंन कह्या में निद्रा मंझार, जां जोपें करी जोऊं जीवना आधार ।
नहीं तोएह वचंन केम कहूं मारा धणी, पणकांईक तासीर[8] दीसे अस्थानक[9] तणी

वली जोऊं ज्यारे घरनी दिस तमने, त्यारे वली एम थाए अमने ।
आ धामनां धणीने में किहा कह्या वचन, त्यारे जीव विचारी दुख पाये मन ॥ १०

केम कहूं सबद न पोहोंचे तमने, मारी जिभ्या थई माया अंगने ।
वाला तमे थया छो सबदातीत, मारी माया देह ऊभी सरीख ॥ ११

धणी जुगतां वचन कहीस आवी धांम, त्यारे भाजीस मारा जीवनी हांम ।
आ तां वचन में साथ माटे कह्या, ए वचंन जोई साथ मूकसे माया ॥ १२

इंद्रावती कहे साथ तेडो ततकाल, ए माया कठण छे निताल[10] ।
आ दुस्तर[11] मांहें दुख देखे घणूं, नव ओलखाए कांई आपोपणूं ॥ १३

में तां ए लवो कह्यो मायाने सनमंध, हूं देखीती नव देखूं अंध ।
एम कहिए तेने जेनव लिए सार, तमे ततख्यंण खबर लेओ छो आधार ॥ १४

ते माटे वचन कह्या में एह, रखे अधख्यंण साथ विसारो तेह ।
अधख्यंण रखे तमारी थाए, तो तेहेमां कै कलपांत वही जाए ॥ १५

---

१. कर्त्तव्य । २. उल्टे । ३. छोड़े । ४. स्नेह । ५. खिंचा । ६. परख । ७. प्रसन्न । ८. असर । ९. स्थान । १०. प्रखर । ११. कठिन ।

मारा धणी हूं तो कहूं जो तमे अलगा हो, एक पावपल अमथी अलगां नव रहो ।
में एम तां कह्यं जोमारी ओछी[1] मत, तमेअम माटेकेटलो करोछो खप[2] ।। १६

तमे आंही आव्या अम माटे देह धरी, दया अम ऊपर अति घणी करी ।
तमेसामाआव्याआगलअममाट[3], लेईआव्या तारतम देखाडीघर बाट ।। १७

साथें माया मांगी ते थै अति जोर, तमे साद[4] कीधां घणां करी बकोर ।
पण केमे न वली अमने सुध, त्यारे ब्रह देवा[5] सरूपजी अद्रस्ट किध ।। १८

तोहे न वली अमने सार, त्यारे वली बीजो देह धरयो ततकाल ।
ततख्यंण आवी अम भेला थया, वली वचंन सागरना पूर ल्यावया ।। १९

में साथने कह्यं ते केम तमने केहेवाए, कहिए तेहेने जे अलगां थाए ।
एटलूं घणुएं हूं जाणूं सही, ए वचन धणीने केहेवाए नहीं ।। २०

मारा मन मांहे एम आवी थयूं, साथ रखे जांणे अम माटे नव कह्यं ।
जो एम न कहूं तो खबर केम पडे, धणी साथ ऊपर दया एम करे ।। २१

साथने जणाववा[6] माटे कह्या ए वचंन, धणी तमारी दया हू जाणूं जीवने मन ।
साथ चरणे छु तेतां वचिख्यंण वीर, वली भले वचंन विचारे द्रढ धीर ।। २२

पण घणों खप करूं साथ पाछला माट, साथ जोई वचंन आवसे आंणी वाट ।
साथ जो जो तमे दया धणी तणी, ए दयानी वातों छे अति घणी ।। २३

ए दयानी विध हूं जाणूं सही, पण आंणी जिभ्याएं केहेवाए नहीं ।
जो जीवसूं वचन विचारसो रास, तो ततख्यंण जीवने थासे प्रकास ।। २४

*इंद्रावती *सुंदरबाईने चरणें, श्री वालाजीनी सेवा करीस वालपण घणें ।
सेवा जेवो बीजो पदारथ नथी, जांण जोई लेसे वचनज थकी ।। २५

।। प्रकरण ।। २४ ।। चौपाई ।। ६०२ ।।

### कत्तण जो द्रस्टांत

खुई सा निद्रडी रे, जा अजां न छडे जीव रे ।
तोहेनी सांगाए न वरे, जे पसां मथे हेडी भाईयां ।। १

१. तुच्छ । २. मेहनत । ३. हमारे लिए । ४. बुलाया । ५. देने के लिए । ६. बताने के लिए ।

आंके निद्र उडांणके अदीयूं[१] मूजीयूं,[२] आंऊं डियां हिकमी[३] साख ।
अंई अगई[४] पर पसी करे, हांणें मान सांगायो[५] साथ ॥ २

आतण[६] मंझे जे आवयो, जेडियूं[७] हेरे[८] मिडी ।
किनी कींझो[९] कतयो, किने न भगो[१०] भीडी ॥ ३

कपाईतियूं[११] आवयूं, कतण कोड करे ।
केहे केहे संनो[१२] कतयो, घणों नेह धरे ॥ ४

के बेठीयूं मए विच थेई, पण नाडी तंद न चढे ।
कतंणके जे विसरयूं, से उथियूं ओराता[१३] धरे ॥ ५

किनी कतया सोहागजा, सुतर भरया सेर ।
के बेठियूं मए विच थेई, पेर[१४] मथे चाडे[१५] पेर ॥ ६

के तंदू चाडीन तकडूं, लधाऊं ही वेर ।
के नारींदयूं[१६] भूं अडूं, के मथे चढयूं सिर मेर ॥ ७

हिक तंदू नारींदे वीयंनज्यूं,[१७] जमारो[१८] समे वेई ।
हिक फेरा डींदे फुटरयूं,[१९] पण हथ न छुताऊं पई ॥ ८

के अची आतंण मंझा, सुतीयूं सुख करे ।
उथियूं से उचाटमें, जडे सुतर संभारे ॥ ९

जिनीनी कींझो कतयो, तनके, ता[२०] डेई ।
सा जोर करे महें जेडिएं; मरके[२१] मंझ बेही ॥ १०

जिनी जाचो[२२] कतयो, फारी फुकारे ।
सा माले[२३] मंझ सरतिएं,[२४] सुहाग लधाई घरें ॥ ११

जडे सुतर सभनी न्हारयो, बीयन[२५] हथ पाए ।
जिनी मूर न कतयो, पोएसे[२६] मोहों लिकाए[२७] ॥ १२

सुतरवारीयूं सुहागण्यूं, न्हारीन कर खणी[२८] ।
हिक डिनी स्याबासी जेडिएं, व्यो मान लधाऊं धणी ॥ १३

---

१. सखियों । २. मेरी । ३. एक । ४. आगे । ५. समझो । ६. कातने का स्थान । ७. सहेलियों ८. बुला कर । ९. बारीक । १०. तोड़ी । ११. कातने वाली । १२. सुन्दर । १३. उदास । १४. पांव । १५. चढाए । १६. देखती हैं । १७. दूसरों की । १८. उमर । १९. खाली । २०. जोश । २१. मुस्कराती । २२. ऊंचा । २३. खुश होगी । २४. होडवालियों । २५. दूसरी २६. पीछे से । २७. छिपा कर । २८. उठा कर ।

हिक फेरीन अरट[1] उतावरो, तनके ता डेई ।
राती कन उजागरा, सुत्र कतींदीयूं पण सेई ॥ १४

जे कंन गाल्यूं विचमें, तंद न उकले[2] तिन ।
पई रही तिन हथमें, पोए बेठ्यूं फेरीन मन ॥ १५

सभा विच सरतिऐं, गाल्यूं कंदियूं वेही ।
पण जिनी कीं न कतयो, तिनी पर केही ॥ १६

न कीं कत्यो रातमें, न कीं कत्यो डींह ।
से सांणे मंझ सरतिऐं, मोंह खणदियूं कींह ॥ १७

अदी रे संनो थूलो[3] अघयो,[4] जे कीं कत्याऊं ।
पण किनी विचथी विसरचो, पई हथ न छुताऊं ॥ १८

तिनी सांणे विच सरतिऐं, पोए मिहीणां[5] लधाऊं ।
न तां चेताणवारिऐं[6] बंग[7] लाथा, परी परी करे धाऊं ॥ १९

आंके धांऊं सुणंदे धणीज्यूं, जमारो सभे बेई ।
अंईं अगियां थींदियूं अणोसरचूं,[8] अंईं कतो को न बेही ॥ २०

जिनी अज न कतयो, सारींदियूं[9] सेई ।
जडे गाल्यूं कंदचूं पांणमें, जेडियूं सभे बेई ॥ २१

हिक गिनंदचूं सुहाग सुरतानजा, सुहागणियूं सेई ।
से कर खणी गालियूं, कंदियूं विच बेही ॥ २२

जिनी कीं न जाणयो, ते हथ न छुती पई ।
कोड करे घणवें आवईं, पण उंनी हांम रही ॥ २३

॥ प्रकरण ॥ २५ ॥ चौपाई ६२५ ॥

खुईसो भरम जो घेंण, जो लाथो लहे न कींअ ।
अंख उघाडे सओ कुछण,[10] पुन वरीतींअ ज्यूंतींअ ॥ १

१. चरखा । २. निकले । ३. मोटा । ४. अधिक । ५. ताना । ६. चेताने वाली । ७. दोष । ८. उदास । ९. रोवेंगी । १०. करना ।

हिक त्रकू[१] झोरीन[२] ताअसें, फोकट फेरा डींन ।
हिक झगड़ा लगाईन पांणमें, अदी रे उंनी न जातो कींन ॥ २

हिक पांण त्रकू सारीन[३] वीयनज्यूं, हकले कताइंन ।
हिक जेडियूं जांणे जोर करे, पांण आएतूं कराइंन ॥ ३

हिक खोटी करीन पांण वीयनके, त्रके पाईन वर ।
जडे उथींदियूं आतंण मंझां, तडे गाल्यूं थिदयूं घर ॥ ४

हिक त्रकू झोरीन वियनज्यूं, ते पर थींदी कींअ ।
कतंण उंनी पूरो थेई, पण मिहीणां लेहेंदियूं नींअ ॥ ५

जा झोडा[४] लगाए पाणमें, सा कंदी उचाट घणी ।
मनसे भाए कोए न पसे, पण महे बेठो सुणे धणी ॥ ६

जीव करे मनसे गालडी, सा सभे थींदी घर ।
पाए न रेहेंगी तिर जेतरी, अंईं जिन विसरो हिन पर ॥ ७

हिक कतंण महे माठ[५] थेई, सेहन भिने[६] रे वेंण ।
तंदू चाडीन तकड्यूं, नीचा ढारे नेंण ॥ ८

सा गिनंदी सुहाग धणीजा, जेडिऐं विच वेहीं ।
सा उथींदी आएत[७] मंझां, पेर पडतारो[८] डेई ॥ ९

घणों सा गेहेंदी[९] हथडा, जा चुकंदी हेर ।
निद्र लथे ओरातवी,[१०] पण वरी हथ न ईंदी हीअ वेर ॥ १०

हित अंख उघाडींदी जोरसे, ईं नसूं चढाए निलाड ।
जा हित थींदी निद्र खरी, सा घर उथींदी ओलाड[११] ॥ ११

जा हित लाहिंदी निद्रडी, सा घर उथींदी छिडकाए ।
हिन आतण संदियूं गालियूं, कंदीसा[१२] कोड मंझाए ॥ १२

अंख भुसींदी[१३] जा उथींदी, केही गाल कंदीसा ।
कोड करे घणवें आवईं, पण निद्र न कढई नेण मंझां ॥ १३

---

१. तकला । २. तोडें । ३. संवारें । ४. झगडा । ५. चुप । ६. मजाक के । ७. चाह । ८. नाचती । ९. पटकेंगी । १०. न सकी । ११. ऊंघती । १२. करेगी । १३. मलती ।

इंद्रावती चोएनी अदियूं, अंईं को करचो ईंअ ।
कोड करे अंईं आवयूं, अदी हांणे को अंईं हींअ ॥ १४

सांणें[1] सिपरिएनसे,[2] अंईं गाल्यूं कंदियूं कींअ ।
पांण संभारे न्हारयो, आंके ही वेर न रेहेंदीअ ॥ १५

कतण के उतावरचूं, अंईं आतण आवयूं ।
कतण निद्रडी विसारचो, हांणें लूडो लाड गेहेलियूं[3] ॥ १६

पिरी कोठणके[4] आवया, सुणियो सजण वेंण ।
को न सुजाणो सिपरी, मथे खणी नेण ॥ १७

हीं आतण थींदो अलखामणों,[5] हलंदा सजण सांणे ।
निद्र ल्हाए न्हारयो, हिन वलहे जे वेंणे ॥ १८

खुई करचो ही निद्रडी, ही हंद ओखो[6] घणूं आए ।
जे हिंनी वेंणें न उथियूं, ते केही पेर कंदियूं[7] ताए ॥ १९

पर पसो पिरिएनजी, पांणसे के के पर करे ।
इंद्रावती चोए अदियूं, अंईं हांणे हलोनी घरे ॥ २०

धणी मंझ अची करे, आंके बेठा वेंण चाए ।
विएनके[8] मतु[9] डिए, पण तो पर केही आए ॥ २१

॥ प्रकरण ॥ २६ ॥ चौपाई ॥ ६४८ ॥

हांणे[10] तूं म भूलज रे, भोरडी सुजाणें[11] तूं सेंण[12] ।
सांणे तो डिठां सिपरी, भोरी तोहेनी तोहजडे नेंण ॥ १

वेंण बडानी[13] मोंहें कढे, भोरी तूं ता तोहेनी जाग ।
कींझोनी कत तूं धणीजो, अंईं तंद पेराईंदी आघ[14] ॥ २

तें ता पा न कतयो, हुत घुरवो[15] सेर ।
जडे उथींदी आतण मंझां, तडे घणूं घुरंदी हीअ वेर ॥ ३

---

१. घर । २. प्रीतम । ३. पगली । ४. बुलाने । ५. दुखदाई । ६. कठिन । ७. करोगे । ८. दूसरी को । ९. सलाह । १०. अब । ११. पहचान कर । १२. प्रीतम । १३. बड़े । १४. ज्यादह १५. चाहिये ।

हे जे डींह वंझाईयां,[१] भोरी विसरी विच बेही ।
हांणे हलंण संदा डींहडा, भोरी आया से पेही ॥ ४

रे कते जे उथिऐ, त तो पर केही ।
कां कंनी ही निद्रडी, भोरी घरें साथ नेई[२] ॥ ५

अजां न जागे जोर करे, जे हेडी मथां थेई ।
पिरी वभेरकां[३] आईया, तोजी सिध[४] को ईं वेई ॥ ६

त्रक तूं सारे सई कर, जोपे कर जोत्रा[५] ।
माल तूं बंध मूरडे करे, पई म छड हथां ॥ ७

अरट फेर उतावरो, तन के डेई ता ।
तूं तां गिनंदी सुहाग धणीएजो, तोजे संने हिन सुत्रा[६] ॥ ८

कतण रेहेंदो अधविच, आए डींह मथां ।
कतण वारयूं हलयूं, डिसे न तूं पासां[७] ॥ ९

हांणे जिन थिए बिसरी, कत तूं कोड मंझां ।
सुहाग संदो सुत्रडो, संनो थींदो तो हथां ॥ १०

हांणे तूं म किज निद्रडी, निद्रडी डेरे दुहाग[८] ।
तूं जागी जोर करे, गिन तूं वंजी सुहाग ॥ ११

ही सुत्र घणों सुहामणों, मोघो[९] थींदो जोर ।
सुजाणी तूं सिपरी, जीव मथांईं घोर ॥ १२

गिन स्याबासी जेडिऐं, कर कां एहेडी पर ।
हांणे को थिए विसरी, जे तो पिरी सुजातां घर ॥ १३

॥ प्रकरण ॥ २७ ॥ चौपाई ॥ ६६१ ॥

भोरी तूं म भूल इंद्रावती, हींअ वेर एहेडी आए ।
पिरी पांहिजडो[१०] गिनी करे, भोरी वीए तूं कां मसलाए[११] ॥ १

---

१. गंवा देगी । २. ले जाएगी । ३. दोबारा । ४. खबर । ५. अदवान । ६. सूत । ७. पास में । ८. दुःख । ९. महंगा । १०. अपना । ११. सलाह देना ।

ही पिरी तोके कडे मिडंदा, गिन तूं सुजाणी सुहाग ।
एहेडी एकांत तूं कडे लेहेनी, आए तोहेजडो लाग[1] ॥ २

हींअ वेर घणूं सुहामणी, जा पिरिएं डिनी मूंके पांण ।
जगायाऊं जोर करे, सुहाग डिएनके सुरतांन ॥ ३

अंख उघाडे ढंकजे, भोरी जिन चुके हितरी वेर ।
रातो डींहा राजजो, सुत्र संनो कत सवा सेर ॥ ४

नेणे सेनी नेह धरे, मूंजे चस्मे[2] से कतां ।
सुत्र संनो हीं कती करे, मूंजी अंखिएं भर अचां ॥ ५

भले सो कतंदी हीं सुत्रडो, अदी भले लधिम[3] हींअ वेर ।
भले सो भगी हीं निद्रडी, मूंके भले धणी मिड्या हेर ॥ ६

धणी धारा[4] हीं निद्रडी, व्यो ल्हाए ईअ केर ।
पिरी उतां जिदुओ[5] अदी, आंऊं घोरे[6] वंजां हिन वेर ॥ ७

मुंनी कारण मूजी अदियूं, पिरी डिना हित पेर ।
जिनी पेरे आया अदियूं, आंऊं घोरे वंजां हिन सेर ॥ ८

अदी तूं धणी गिनी बेठी मूहजो,[7] बेओ न पसे कोए ।
पस तूं गिना धणी पांहिजो, अदी त तूं भाईज[8] जोए ॥ ९

इंद्रावती चोए अदी मूहजी, मूंके मिड्यां मूजा पिरी ।
जिनी कोडे आंऊं आवईं, से पूरण केआं उंनी ॥ १०

*रतनबाई अदी मूहजी, आंऊं करियां आंसे गाल ।
सुहाग मूके डिनाऊं धणों, अदी थेईस आंऊं निहाल[9] ॥ ११

मूं पर मंगई हिकडी, पिरी सुख डिना घणो पर ।
हिनी सुखे संदियूं[10] गालियूं, अदी कंदासी[11] वंजो[12] घर ॥ १२

॥ प्रकरण ॥ २८ ॥ चौपाई ॥ ६७३ ॥

---

१. मौका । २. आंखों । ३. पाया । ४. बिना । ५. जीव को । ६. बलिहारी जाऊं । ७. मेरा । ८. जानी जाय । ९. खुश । १०. की । ११. करूंगी । १२. जा कर ।

## ॥ श्री लखमीजीनूं द्रस्टांत ॥

हूं जाणूं निध एकली लेऊं, धणी तणां सुख सघला लहूं ।
ए सुख बीजा कोणे नव देऊं, वली वली तमने स्याने कहूं ॥ १

ए वचंन कांई एम न केहेवाए, जीव मारो मांहें दुःखाए ।
मूने घणूं विमासण[1] थाए, पण जाव्यो[2] मारो नव जकाए ॥ २

धणी कहावे तो हूं कहूं, तो ए निध कांई एम न देऊं ।
देतां मारो जीव निसरे, ए वचंन कांई मूने न विसरे ॥ ३

में लीधां कठणाई करी, श्री धणी तणें चरणें चित्त धरी ।
हूं घणुएं राखूं अंतर, पण सागर पूर प्रगट करे घर ॥ ४

धणी कहावे अंतरगत रही, कह्यानी सोभा कालबुतने[3] थई ।
नहीं तो ए वचंन केम प्रगट थाए, केहेतां घणूं कालजुं कपाए[4] ॥ ५

रखे जाणो वचंन कह्या अचेत, केहेतां जीवें दुख दीठां अनेक ।
ज्यारे जीवसूं विचारी जोयूं मंन, जे आ हूं केहा कहूँ छूं वचंन ॥ ६

एक लवो मारी बुधें न निसरे,[5] पण धणी आपोपूं प्रगट करे ।
हवे जो साथ करो कांई बल, तो पूरण सोभा लेओ नेहेचल[6] ॥ ७

भारे वचंन छे जो घणूं, जो कांई ग्रेहेसो आपोपणूं ।
ए वचंन ऊपर एक कहूं विचार, सांभलो साथ मारा धामना आधार ॥ ८

धडथी मस्तक कोई अलगूं करे, तो अरध वचंन मुखथी नव परे ।
जो कोई सारे सघला संधांण,[7] तो अरध लवो न केहेवाए निरवांण ॥ ९

साथ माटे कहूं सगाई जांणी, धणी ओलखजो घर रुदे आंणी ।
एम हाथ झालीने बीजो कोई नव दिए, अने एम देतां अभागी नव लिए ॥ १०

तमे साथ मारा सिरदार, हवे आ द्रस्टांत जो जो विचार ।
पाधरो[8] एक कहूं प्रकास, सुकजी पाए पुरावुं साख ॥ ११

---

१. चिंता । २. रोका । ३. शरीर । ४. कटता है । ५. निकले । ६. अविनाशी । ७. जोड़, अंग । ८. स्पष्ट ।

एह जोईने टालो भरंम, जीव कांईक हवे करो नरंम ।
वचंन जीवसूं करो विचार, त्यारे ततख्यंण जीव ओलखसे आधार ।। १२

ओलखीने टालो अंतर, आपोपूं संभारो घर ।
हवे घर तणी केही कहूँ वात, वचंन विचारी जो जो प्रकास ।। १३

हवे सांभलो आ पाधरूं द्रष्टांत, जीव जगावी जो जो एकांत ।
चौद भवननो कहिए धणी, लीला करे बेकुंठ विषे घणी ।। १४

लखमीजी सेवे दिन रात, एहेनी छे मोटी विख्यात ।
जे जीव वांछे[1] पोते हेत घर, ते सेवे श्री परमेश्वर ।। १५

ब्रह्मादिक नारद छे देव, बीजा सुर नर अनेक करे एनी सेव ।
ब्रह्मांड विषें केटला लेऊं नाम, सहू कोई सेवे श्री भगवान ।। १६

सेवतां न पामे पार, ए लीला अनेक छे अपार ।
आगे सेवा कीधी छे घणें, ते जो जो वचन सुकजी तणें ।। १७

एह छे एवो समरथ, सेवकना सारे अरथ ।
हवे एह तणो जो जो गनांन, मोटी मतनो धणी भगवान ।। १८

एक समे करि बेठा ध्यांन, बिसरी सरीर तणी सुध सांन[2] ।
ए सदीवें[3] चितवणी करे, पण बाहेर केहेने खबर न पडे ।। १९

एणे समे ध्यान थयो अति जोर, प्रेम तणी चंपाणी[4] कोर ।
लखमीजी आव्या एणे समे, मन अचरज पाम्या विसमे ।। २०

आवी लखमीजी ऊभा रह्या, श्री भगवानजी तिहां जाग्रत थया ।
लखमीजी करे विनती, अमे बीजो कोई देखतां नथी ।। २१

केहेनो तमे करो छो ध्यांन, ते मूने कहो श्री भगवान ।
मारा मनमां थयो संदेह, कही प्रीछवो[5] मूने एह ।। २२

किहां वसे ने कीहो ठांम, ते मूने कहो श्री भगवांन ।
ए लीला सांभलूं श्रवणें, वली वली लागूं चरणें ।। २३

१. चाहे । २. सुधि । ३. सदा । ४. दबी । ५. समझावो ।

सांभलो लखमीजी कहूं तमने, ए आगे सिवे पूछयूं अमने ।
पण ए लीलानी मूने खबरज नथी, तो केम कहूं तमने मुख थकी ॥ २४

कहूं तमने सांभलो मारी वात, ए वचंन रखे मुखथी करो प्रकास ।
लखमीजी तमे कहो तेम करूं, म्हारू[१] आप नथी कांई तमथी परूं[२] ॥ २५

मुखथी वचंन रखे ओचरो,[३] नहीं तो घणूं थासे खरखरो[४] ।
चौद भवननी पूछो वात, ते तमने कहूं विख्यात ॥ २६

रखे आसंका आंणो एह, एह रखे राखो संदेह ।
लखमीजी तमे करो करार, मारा मुखथी वचंन न आवे बाहर ॥ २७

त्यारे लखमीजी दुखाणां घणूं, मनसूं जांणे हूं केही पेर करूं ।
मोसूं तां राख्यो अंतर, हवे करीस हूं केही पर ॥ २८

नेणें आंसूं बहु जल झरे, वली रमा विनती करे ।
धणी ए अंतरतां में न खमाए, जीव मारो आकुल व्याकुल थाए ॥ २९

ए दुखतां में सह्यो न जाए, अने कालजडूं मारूं कपाए ।
कंपमान थई कलकले, करे निस्वांस जीव बहु गले ॥ ३०

हवे जो धणी करो मारी सार, तो ए वचंन केहेवुं निरधार ।
तमे घणवें मूने वारचा[५] सही, अनेक पेरे सिखामण कही ॥ ३१

पण मारो जीव केमे नव रहे, लखमीजी वली वली एम कहे ।
त्यारे वली बोल्या श्री भगवांन, लखमीजी तूं नेहेचे जांण ॥ ३२

जो कोटाण कोट करो प्रकार, तो एटलूं तमे जांणो निरधार ।
मारी जिभ्याएं न वले एह वचन, ए द्रढ करो जीव ने मन ॥ ३३

हवे लखमीजी कहे सांभलो राज, मारा जीवने उपनी अति दाझ[६] ।
स्यो[७] बांक[८] तमारो धणी, कांई अप्रापत[९] दीसे अम तणी ॥ ३४

हवे सरीर मारो केम रहे, जीव मारो मूने घणूं दहे[१०] ।
हवे अग्यां मागूं मारा धणी, करूं आरंभ तपस्या तणी ॥ ३५

---

१. मेरा । २. अलग । ३. कहो । ४. संताप । ५. रोका । ६. जलन । ७. क्या । ८. दोष । ९. अयोग्यता । १०. जले ।

त्यारे भगवांनजी बोल्यां ततकाल, लखमीजी म लावो वार ।
त्यारे कलप्यो जीव दुख अनंत करी, उपनो[1] वेराग सोक मन धरी ।। ३६
जीवने आसा पूरण हती घणी, जाणूं मूने छेह नहीं दिए मारो धणी ।
चरणे लागी लखमीजी चाल्या, अने रुदन करे जाए पाला[2] पल्या ।। ३७
एणे समे ब्रह कीधो अति जोर, ते हूं केटलो कहूं वकोर[3] ।
एक ठामे बेठा दमे देह, श्री भगवांनजीसूं पूरण सनेह ।। ३८
वाए तडको[4] टाढक[5] नव गणें, करे तपस्या जोर अति घणें ।
सनेह धरी बेठा एकांत, एटले सात थया कल्पांत ।। ३९
त्यारे ब्रह्मा ने खीर सागर मली, आव्या बैकुंठ भगवांनजी भणी ।
एवडो स्वामी स्यो उतपात,[6] लखमीजी तप करे कल्पांत सात ।। ४०
त्यारे भगवांनजी एम बोल्या रही, जो बांक अमारो कांईए नहीं ।
स्वामी तोहे वचंन तमने केहेवाए, जे लखमीजी घणूं दुखी थाए ।। ४१
एवडो रोष तमे मां धरो, लखमीजी पर दया करो ।
तमे स्वामी मोटा दयाल, लखमीजी दुख पांमे बाल ।। ४२
अधख्यण एक म लावो वार, लखमीजी तेडो ततकाल ।
चरण ग्रह्या तिहां खीर सागरें, वली वली ब्रह्मा विनती करे ।। ४३
लखमीजी लगें चालो सही, तेडी आविए तिहां लगें जई ।
त्यारे आव्या चाली श्री भगवांन, लखमीजी बेठा जेणें ठांम ।। ४४
त्यारे लखमीजीएं कीधां परनांम, त्यारे वली बोल्या श्री भगवांन ।
लखमीजी तमे चालो घरें, त्यारे वली रमा वाणी ओचरे[7] ।। ४५
म्हारा धणी तमे कहो तेज वचंन, जीव घणूं दुःख पांमे मंन ।
जो तप करो कल्पांत एकबीस, तोहे न वले जिभ्या एम कहे जगदीस ।। ४६
पण देखाडीस[8] हूं चेहेन[9] करी, त्यारे तमे लेजो चित धरी ।
त्यारे ब्रह्मा ने खीर सागर बे, लखमीजीने वचंन कहे ।। ४७

---

१. उत्पन्न हुआ । २. पैंदल । ३. रोना । ४. गर्मी । ५. शीत । ६. ऊधम । ७. कहे । ८. दिखा दूंगा । ९. संकेत ।

लखमीजी उठो ततकाल, दया कीधी स्वामी दयाल ।
हवे रखे तमे हठ करो, आनंद मनमां अति घणों धरो ।। ४८

त्यारे लखमीजी लाग्या चरणें, एम तेडी[1] आव्या आनंद अति घणें ।
ब्रह्मा ने खीर सागर वल्या, चरणे लागी अस्थानक[2] आवया ।। ४९

हवे एह विचारी तमे जोजो साथ, न वली जिभ्या वैकुंठ नाथ ।
ग्रही वस्त भारे करी जांण, नेठ वचंन नव कह्या निरवांण ।। ५०

नहीं तो वैकुंठ नाथने केही खबर, विना तारतम सूं जांणे घर ।
बीजी खबर कांई नव कही, तो पण निध भारे करी ग्रही ।। ५१

भारे विना भार नव उपडे,[3] मुखथी वचंन जुआ केमे नव पडे ।
ज्यारे थयो क्रस्न अवतार, रुकमणी हरण कीधूं मुरार ।। ५२

माधवपुर परण्या[4] रुकमणी, धवल मंगल गाए सुहागणी ।
गातां गातां लीधूं व्रज नांम, त्यारे पाछां भोम पड्या भगवांन ।। ५३

त्यारे सहू कोई पाम्यो मन अचरज, एम लखमीजीने देखाड्यूं व्रज ।
समा[5] थई बेठा भगवांन, लखमीजीनी एम भांजी हांम ।। ५४

ए विचार तमे जो जो रही, ए लीला सुकजीएं कही ।
जे लीला कीधी जगदीस, ए मांहें आपण हुता सरीख ।। ५५

तो वचंन तमने केहेवाए, नहीं तो अरध लवो नव प्रगट थाए ।
आ व्रजवालो वालो ते एह, वचंन आपणने कहे छे जेह ।। ५६

रास मांहें रमाड्या जेणें, प्रगट लीला कीधी तेणें ।
श्री धामतणां धणी केहेवाए, ते आवी बेठा आपण मांहें ।। ५७

ते माटे तमने कह्यूं द्रस्टांत, जीवसूं वचन विचारो एकांत ।
ठेकाणूं वैकुंठ विसराम, केहेवावालो श्री भगवांन ।। ५८

लखमीजी तिहां श्रोता थया, केटलूं खप[6] करीने रह्या ।
तोहे न पाम्या एक वचंन, अने तमे कीहू लेई बेठा छो धन ।। ५९

---

१. बुलाना । २. स्थान । ३. उठाया जाय । ४. विवाह हुआ । ५. सीधे । ६. मेहनत ।

हजीए न टालो तमे भरंम, अने जीव कांए नव करो नरंम ।
आ नौतनपुरी कहिए नगरी, जिहां श्री देवचंदजीएं लीला करी ॥ ६०

आ प्रगट वचन कीधां अपार, तोहे न वली तमने सार ।
अमल उतारो तमे जोपें करी, अने जीव जगाओ वचन चित धरी ॥ ६१

माया जुओ तमे अलगां थई, तारतमने अजवाले रही ।
जे वाणी श्री धणिएं कही, ते जीवने वचन केम दीजे नहीं ॥ ६२

हवे गुण सघलाने करो हाथ, अने ओलखो प्राणनो नाथ ।
हवे एटलो जीवसूं करो विचार, जे केहा वचन कह्या आधार ॥ ६३

जिहां लगे जीव न विचारे मन मांहें, तो चोपडे[1] घडे जेम छांटो थाए ।
हवे इंद्रावती कहे सांभलो वात, चरणें लागूं मारा धामना साथ ॥ ६४

वली वली नहीं आवे अवसर, रखे हाम[2] लेई जागो घर ।
थोडा मांहें कह्यूं छे अति घणूं, जाण्यूं धन कां निगमों[3] आपणूं ॥ ६५

आगे आपण विहिला[4] थया, तो श्री देवचन्दजीएं वंचया[5] ।
नहीं तो केम वंचे आपणने एह, जो राख्यो होत आपणें सनेह ॥ ६६

हवे वली आव्या बीजी देह धरी, आपण ऊपर दया अति करी ।
चेतन करी दीधों अवसर, लेई लाभ ने जागिए घर ॥ ६७

मनोरथ सर्वे पूरण थाए, जो आ दृष्टांत जुओ जीव मांहें ।
ते माटे इंद्रावती कहे फरी फरी, जो धणिएं कृपा तमने करी ॥ ६८

॥ प्रकरण ॥ २६ ॥ चौपाई ॥ ७४१ ॥

## प्रगटवाणी प्रकासनी—राग सामेरी

सुईने सुई सूता सूं करो रे, आ विषम[6] ठिकाणा मांहें जी ।
जागीने जुओ उठी आप संभारी, एणी निद्राए लेवाणां[7] कांए जी ॥ १

एणी निद्राएं जे कोई लेवाणां, नहीं ते आपणां साथी जी ।
एणी रे भोमे घणां छेतरियां,[8] तमे उठो ईहां थकी जी ॥ २

---

१. चिकने । २. चाह । ३. गंवाओ । ४. विमुख । ५. छोडा । ६. कठिन । ७. लेना । ८. ठगा ।

नहीं रे निद्रा कोई घेण घारण,[१] निद्रा होए तो जगव्यो जागे जी ।
उठाडी जीवने ऊभो कीजे, वली न मूके पोतानो मांग जी ॥ ३

तेज गेहेन ने तेहज घारण, तेज घूटन[२] अधको आवे जी ।
एणी भोमने ए निद्रा मांहेंथी, धणी विना कोंण जगावे जी ॥ ४

एणे ठेकाणेतां कोई न उगरियो,[३] तमे सूता तेणें ठाम जी ।
ए ठाम घणूं विषम लागसे, प्रगट कहूं गत भोम जी ॥ ५

विषनी भोम अने विष पाथरियूं,[४] आहार करे विष वेल जी ।
सरीर विषनूं मांहेंली जोगवाई विषनी, एक मांहें ते जीव नेहे केवल[५] जी ॥ ६

विषनी तलाई ने विषना ओढना, विषनो ढोलियो[६] ढोलाए जी ।
विषनो ओसीसो[७] ने विषनो ओछाड, वली विजणे[८] ते विषनो वाए जी ॥ ७

जागतां विषने सुपने विष, निद्रामां विष निरवांण जी ।
बाहेर तणो विष केही पेरें कहूं, तेतां वाए ते विष उधाण जी ॥ ८

वस्तर विषने भूषण विषरे, सरवा अंगे विष साज जी ।
ए विष जीवने गेहेन घारण रे, ते केम टले विना एक राज जी ॥ ९

जोर करी तमे जगवो रे जीवने, नहीं सूतानी आ भोम जी ।
जेमने सोईए तेम वाधे विस्तार, पछे नहीं उठाए केमे जी ॥ १०

ए भोमलडी तमे कांए नव मूको, हजी नथी घारण जाती जी ।
एणी भोमे दुखडा दीसे घणां रे, ते तमे जुओ कां आघी[९] जी ॥ ११

आघी जुए दुख अनेक उपजसे, ते माटे उठो ततकाल जी ।
जलना जीवनो घर जल मांहें, जेम रहे करोलियो[१०] मांहें जाल जी ॥ १२

सहू कोई जाली गूंथे पोतानी, अने मांहेंना मांहे मुझाए[११] जी ।
मुझाणां पछीं दुख अनेक देखे, घणूं दुखें जीवड़ो जाए जी ॥ १३

घणूं दुख देखे जीव जातां, वली ते गूंथे ततकाल जी ।
केम दोष दीजे करोलियाने, एहेना घर थया मांहें जाल जी ॥ १४

---

१. गहरी नींद । २. दम घुटना । ३. उबरा । ४. बिछौना । ५. मुक्त । ६. पलंग । ७. सिरहाना । ८. पंखा । ९. अधिक । १०. मकड़ी । ११. उलझना ।

आपणां घर तां नहीं एणे ठामें, चौद भवनमां क्यांहें जी ।
ते माटे वालोजी करे रे पुकार, केहे स्याने सूता छो आंहें जी ।। १५

ओला[1] दुखना घर ते पण मेले नहीं, तमे सुखना घर न संभारो जी ।
सघला ग्रंथ पाए साख पुरावी, साथ हवे तो दोष तमारो जी ।। १६

वेहद घर ने वेहद सुख रे, वेहद मारा श्री राज जी ।
अविचल[2] सुख अनन्त देवाने, हूं जगवुं तमारे काज जी ।। १७

पीऊजी पुकार करी करी थाक्या, तमे कांए न जागो मारा साथ जी ।
ऊगीने दिन आथमवा[3] आव्यो, अने पछें ते पडसे आडी रात जी ।। १८

रात पडी त्यारे कोई नव जागे, कोई न करे पुकार जी ।
निसाएं निद्रा जोर थासे, पछे वाधसे विष विस्तार जी ।। १९

संझा लगें रह्या धणी आपण मांटे, ते तमे कांए न संभारो जी ।
ओलखी धणीने सुखडा लीजिए, तमे आपोपूं वारणे वारो जी ।। २०

पुकार करतां रात पडी रे, वालो रात न रहे निरधार जी ।
जेणे रे तमने एवा भूलवया, ते वेरीडा कां न अविधारो[4] जी ।। २१

आ भोम मूकतां जे आडी करे, घेर जातां जे कोई वारे जी ।
ए वेरीडा तमारा प्रगट पाधरा, ते तां जुओने विचारी जी ।। २२

ए वेरीडा घणूं विष भरियां, जेणे खाधो ते सर्वे संसार जी ।
ते तमने भूलवे छे जुई भांते, तमे रखे लेवाओ आ वार जी ।। २३

वली तमने देखाडूं दुरजन, जेणे नव मूक्यो कोए जी ।
ते तमने प्रकासूं प्रगट, तारा मांहेंला गुण तूं जोए जी ।। २४

वली अंग इंद्री जुओ रे जातां, जे अवला[5] वहे संसार जी ।
ए वेरीडा विसेखें आपणां, ते तमे कांए न मारो जी ।। २५

मारी मरडी[6] भाजी करीने, वली जगवी करो तमे जोर जी ।
गुण अंग इंद्री ज्यारे जीव जागसे, त्यारे करसे ते पाधरा दोर जी ।। २६

---

१. वे (जीव) । २. स्थाई । ३. सांझ । ४. पहचानों । ५. उल्टा । ६. मरोड़ कर ।

वास्ना जाणीनें कहूं छूं वचन, आ जलना जीवने कोंण कहे जी ।
वचन सुणी जे होए वास्ना, ते आंणी भोमे केम रहे जी ॥ २७

ए दुस्तर भोम घणूं दोहेली,[१] वली वसेखें दुख रात जी ।
ते माटे हूं करूं रे पुकार, मारो भली गयो मायामां साथ जी ॥ २८

ततख्यण रातडी आवी देखसो, मांहें प्रगट थासे अंधेर जी ।
जीव अंधेर ज्यारे देखी मुझासे, त्यारे विषना ते आवसे फेर जी ॥ २९

विष चढे फेर अनेक उपजसे, करम केरा जे दुख जी ।
वली फरसे फेर अनेक काया, आखी[२] रात चढसे फेर विष जी ॥ ३०

मारो साथ होए ते तमे सांभलो, रखे आंही पाडो रात जी ।
ए रातना दुख घणां दोहेला, पछे निद्रा उडसे प्रभात जी ॥ ३१

प्रभात थासे अति वेगलो[३] रे, रात छेडो केमे न आवे जी ।
दुखनी रात घणूं जासे दोहेली, पछे वहाणूं[४] ते केमे न वाए जी ॥ ३२

महाप्रले काल ज्यारे थासे, तिहां लगे रेहेसे अंधेर जी ।
ते माटे पीऊजी करे रे पुकार, तमे आवजो ते आंणे सेर जी ॥ ३३

तारतमनूं अजवालूं लेईने, वालो आव्या छे बीजी वार जी ।
फोडी ब्रह्मांडने पाडयो मारग, इहां अजवालूं अपार जी ॥ ३४

पीऊजी पधारया तेडवा[५] तमने, तो थाए छे आटलो पुकार जी ।
एम करतां जो नहीं मानो, तो वालो नही रहे निरधार जी ॥ ३५

विषम वाट जल मांहें अंधेरी, तमने लागसे लेहेर निघात[६] जी ।
वसेकें जीव बेसुध थासे, नहीं सांभलो ते घरनी वात जी ॥ ३६

मछ गलागल मांहें छे सबला, अने पूरतणां प्रवाह जी ।
दिस एके नव सूझे सागरमां, तमे रखे ते विहिला[७] थाओ जी ॥ ३७

तमे उठो ते अंग मरोडीने, म जुओ मायानो मरम जी ।
धणी पधारया छे तम माटे, तमने हजी न आवे सरम जी ॥ ३८

---

१. कठिन । २. सारी । ३. दूर । ४. प्रभात । ५. बुलाने । ६. जोर । ७. विमुख ।

ऐ निद्रा तमें केम रे उडाडसो, जहाँ नहीं करो कोई पर जी ।
ओलखी धणी तमे आप संभारी, जागी जुओ तमे घर जी ।। ३९

ए रे अमल तमने केम उतरसे, जे जेहेर चढ्यूं अति भारी जी ।
जहाँ लगे जीवने वाण न लागे, थाक्या ते धणी पुकारी जी ।। ४०

हवे जो जांणो घर पांमू पोतानूं[१], तो राखजो वेरागनो सेर[२] जी ।
सर्वा अंगे सुध सेवा करजो, एम जागसो पोताने घेर जी ।। ४१

जो जाणो जीवने जगवुं रे आंही, तो तां जोजो ते रास प्रकास जी ।
एम केहे जो जीवने आ कह्यूं सरव तूंने, त्यारे जीवने थासे अजवास[३] जी ।।४२

एणे अजवालें जेहेर उतरसे, त्यारे जीव ते करसे जोर जी ।
पर आतम ने आतम जोसे, त्यारे टलसे ते तिमर[४] घोर जी ।। ४३

एणी पेरे तमे जीव जगवसो, त्यारे थासे ते जोत प्रकास जी ।
प्रेमतणां पूर प्रघल आवसे, थासे अंधकारनो नास जी ।। ४४

कोमल चित करी वचन रुदें धरी, जोजो ते सरव संभारी जी ।
खरा जीवने वचन कह्या छे, माया जीवने थासे भारी जी ।। ४५

माया जीव इहां टकी न सके रे, तेणें नहीं लेवाए ए वचन जी ।
ए वचन घणुएं लागसे मीठा, पण रेहेवा न दे खोटानूं[५] मन जी ।। ४६

ब्रह्मांड मांहेंलो जीव जे होए रे, ते तां जाजो पोतानी वाट जी ।
वेहद जीव जे होए रे अमारो, आ वचन कह्या ते माट[६] जी ।। ४७

वास्नाने तां जीव न कहिए, घणुएं दुख मुने लागे जी ।
खोटानी संगते खोटूं कह्यूं छे, पण सूं करूं मान केमे जागे जी ।। ४८

कठण वचन हूं तोज कहूं छूं, नहीं तो केम कहूं वासनाने जीव जी ।
रखे दुख देखे वास्ना ते माटे, ए प्रगट वाणी में कही जी ।। ४९

रास वाणी तमे जोजो जोपें करी, रखे मूको ते एक वचन जी ।
द्रढ करी तमें देजो जीवने, लेजो ते मांहेलूं धन जी ।। ५०

१. अपना । २. पथ । ३. प्रकाश । ४. अंधकार । ५. झूठा ६. लिए ।

ए धननो ते लेजो अरथ, त्यारे प्रगट थासे प्रकास जी ।
एणे अजवालें जीव जागसे, त्यारे व्रथां न जाए एक स्वास जी ॥ ५१

प्रगट वाणी प्रकासी कही छे, इंद्रावती चरणे लागे जी ।
ते लाभ लेसे बंने ठामनो, जेहेनो जीव आंहीं जागे जी ॥ ५२

॥ प्रकरण ॥ ३० ॥ चौपाई ॥ ७६३ ॥

## वेहद वाणी लखीछे

वेहदी साथ तमे सांभलो, बोली वेहद वाणी ।
मोटा[1] मोटेरा थई गया, कोणे नव जाणी ॥ १

अनेक उपाए कीधां घणें, केमें न कलाणी[2] ।
कोणे न ओलखांणी ए निध, बुध बिनां कोणें न जाणी ॥ २

आव्या ते बुधना सागर, बुध रुदें भराणी ।
भगवानजी ने महादेव जी, पूछे वेहद वाणी ॥ ३

ब्रह्मांड कोट वही गया, कोंणे न सुणाणी ।
चौद भवननां जे धणी, खंते[3] खोलाणी[4] ॥ ४

सुकजी सनकादिक ने कबीर, रह्या घणुएं तांणी[5] ।
कोणे न आवी एणी प्रेमल,[6] रह्या रुदेमां आंणी ॥ ५

एक लवाने कारणे, लखमी जी राणी[7] ।
सात कल्पांत लगे तप करया, तोहे न केहेवाणी ॥ ६

ए रसनी जे वासना, केहेने न अपाणी[8] ।
ते ब्रज सुन्दरी सुखमां, अणजाणे माणी ॥ ७

ए निध पोताना घरतणी, एम बोले वाणी ।
श्री धाम धणीसूं रामत, रमे धणियाणी[9] ॥ ८

अणू[10] चोंच पात्र एह विना, बीजा कोंणे न देवाणी ।
दोड़ कीधी मोटे धणी, कोणे न लेवाणी ॥ ९

१. बड़ा । २. पहचानी । ३. श्रम से । ४. खोजा । ५. खेंची । ६. सुगन्ध । ७. रानी ।
८. दिलाई । ९. पत्नी । १०. कण भाग ।

साथ सुपने आवियो, इछा रामत जाणी ।
वेहद धणी पधारिया, वेहद वात वंचाणी[1] ।। १०

तेडी सिधावसे[2] साथने, प्रगट थासे वाणी ।
बुधतणो अवतार कहिए, मोटी बुध जणाणी[3] ।। ११

जेणें ए निध खोली खंत करी, रुदयामां आंणी ।
धंन धंन कहिए मोटी बुध, निध ए निरखांणी[4] ।। १२

नौतन पुरीमां ए निध, सारी सनंधें गोताणी[5] ।
निरखी गोती नेहकरी, साथमां संभलाणी ।। १३

वेहद केरी वाटडी, जोजो तमे साथ ।
तारतम तेज छे निरमल, जोत अति अजवास ।। १४

प्रगट थासे पाधरी, जोजो रास प्रकास ।
ग्रंथ सघलानी[6] उतपन, वाणी वेद व्यास ।। १५

रुदें एहना सुततणे, भागवत अभ्यास ।
वेहद वाटें आवियो, सुकजी पूरवा साख ।। १६

ब्रह्मांड विषे वाणी घणी, केहेना नाम लेवाए ।
साख पूरे सहू ए वाटनी, जो जीवें जोवाए ।। १७

ए वाणी ए वाटडी, कहीएं प्रगट न थई ।
धणी ब्रह्मांडने खप करया, रह्या जोई जोई ।। १८

ए वाट वाणी जोई घणें, केहेने हाथ न आवी ।
नांम ब्रह्मांडना धणी कह्या, बीजा सूं करूं सुणावी ।। १९

ते वाट प्रगट पाधरी, कीधी आ वार ।
धंन धंन ब्रह्मांड ए थयो, धंन धंन नर नार ।। २०

धंन धंन जुग ते कलजुग, जेमां ए निध आवी ।
धंन धंन खंड ते भरथनो, लीला ए पधरावी[7] ।। २१

---

१. पढ़ी गई । २. चले जाएंगे । ३. जानी गई । ४. देखी गई । ५. ढूंढी । ६. साफ । ७. सबकी । ८. स्थापित हुई ।

धंन धंन गोकुल जमुना त्रट, धंन धंन ब्रजवासी ।
अग्यार वरस लीला करी, चौद भवन प्रकासी ।। २२

चौद भवन सुपन तणा, जोवा[1] आव्यो छे साथ ।
ए ब्रह्मांड मुगत पामसे, सोणों[2] जागे समासे[3] ।। २३

वली जोगमायानो ब्रह्मांड, कीधों रमवा रास ।
रामत रमे श्री राजसूं, साथ सकल उलास ।। २४

रास रामत छे नित नवी, केमे नव थाए भंग ।
साथ रमे सुपनमां, जोगमायाने रंग ।। २५

जुए साथ सुपन विषे, रामत रमे छे जेम ।
एक पखे साथ जागियो, रामत तेमनी तेम ।। २६

वली ते ब्रह्मांड उपनो, जेमां आपण आव्या ।
धाख[4] रही जोया[5] तणी, आपण तेहज लाव्या ।। २७

ब्रह्मांड त्रणें दीठां अमें, रामत अलेखें ।
जागीने करसूं वातडी, जे सुपन मांहें देखे ।। २८

वली आ ते ब्रह्मांड उपनो, जेमां राख्यो छे सेर ।
आंहीं पण कीधी वातडी, साथ सिधाव्यो घेर ।। २९

जेम हरचा ब्रह्मांए वाछरू, गोवाला संघाते[6] ।
ततख्यण नवा निपना,[7] आपोपणी भांतें ।। ३०

गोकल मांहें आप आपणें, घेर सहू कोई आव्या ।
खबर न पडी केहेने, एवी रची छे माया ।। ३१

एणें द्रस्टांतें प्रीछजो,[8] सेर[9] राख्यो ए भांतें ।
माया तणो ए बल जुओ, केवो रच्यो छे खांतें ।। ३२

साथ सकल सिधावियो, श्रीकृष्ण जी संघातें ।
ते रमे छे रामत रासनी, आंहीं उठचा प्रभातें ।। ३३

---

१. देखने । २. स्वप्न । ३. समा जाएगा । ४. होंस । ५. देखने । ६. साथ । ७. बन गया । ८. समझो । ९. राह ।

तेहज गोकल जमुना त्रट, जाणे ते व्रजवासी ।
जांणे रामत रास रमी करी, सहू उठया ओलासी ॥ ३४

जाणे तेज ब्रह्मांड ते रामत, जेम रमतां सदाए ।
आ ते ब्रह्मांड उपनूं, एणी रे अदाए[1] ॥ ३५

बंने ब्रह्मांड वचमां, सेर राख्यो छे सार ।
खबर न पडी केहेने, वेहदनो वार ॥ ३६

वेहदी साथ आवयो, एणें दरवाजे ।
आ ब्रह्मांड मायातणो, रामत जोवा काजे ॥ ३७

सूं जाणे हदना जीवडा, वेहदनी वातें ।
मांहें रमे ते रामत रातडी, आंहीं उठिया प्रभातें ॥ ३८

पाछला साथमां रामत, दिन अग्यार कीधी ।
*अक्रूड तेडी सिधावियो, जई मथुरा लीधी ॥ ३९

तिहां लगे वेष वालातणो, मुगत *कंसने दीधी ।
रास पाछली रामत, लीला जाणजो बीजी ॥ ४०

टीलू देई *उग्रसेंनने, वेष सहित सिधाव्या ।
इहांथी लीला अवतारनी, वसुदेव वधाव्या ॥ ४१

हवे एह लीला हदतणी, तेतां सहू कोई केहेसे ।
पण वेहद वाणी अम विना, बीजो कोंण देसे ॥ ४२

एणी वाटें ऊभो[2] नरसैयो, लीला वेहद गाए ।
ज़ोर करे बलियो घणों, रासमां ना पेसाए[3] ॥ ४३

जे बल कीधूं *नरसैएं, एवो करे न कोए ।
हदनो जीव वेहदनी, ऊभो लीला जोए ॥ ४४

रस काजे दोड्यो *नरसैयो, वाणी करे रे पुकार ।
रस थयो मांहेंली[4] गमां,[5] आडा दरवाजा चार ॥ ४५

---

१. तरह । २. खड़ा । ३. प्रवेश । ४. अंदर । ५. ओर ।

वारणें इन वेहद तणें, लेहेर टाढक[1] आवे ।
प्रेमल कांईक रसतणी, वारणे[2] रे जणावे ॥ ४६

एणे वारणे नरसैयो, घणूं टाढक पाम्यो ।
लीला पाछला साथमां, सुख लेईने जाम्यो ॥ ४७

सुकजीएं लीला वरणवी, व्रज रास वखाण्यो ।
वेहदनी वाणी विना, ठांम ठांम बंधाण्यो ॥ ४८

नहीं तो एम केम वरणवे, केम थाए पंच[3] अध्याई ।
अस्कंद बारे भागवतना, तेथी थाए कोट सवाई ॥ ४९

न थई प्रगट पाधरी, मुख एहेने वाणी ।
धाख रही रुदें घणी, कलप्यो दुख आंणी ॥ ५०

कलकली कम्पमान थयो, रस टलियो एथी ।
केम ते दुख खमी[4] सके, रस जाए जेथी ॥ ५१

रास वाणी कह्या तणों, हुतो हरख अपार ।
वाणी ब्रह्मांडनी सकलमां, रस रह्यो ए सार ॥ ५२

रासनी रातनो वरणव, कीधो जुओ विचार ।
नाराएणजीनी रातनों, कोईक पामे पार ॥ ५३

पण पार नहीं रास रातनों, ए तो वेहद कही ।
ए मांहें लीला वेहदनी, पंच अध्याई थई ॥ ५४

एनों अरथ कहूं पाधरो, सुणजो तमे साथ ।
रात एवी मोटी तो कही, लीला मोटी छे रास ॥ ५५

न थाए पंच अध्याई कहिएं, मारा मुनीजीनी वांण ।
पण नेठ[5] लेवाणों निध समे, रस आवे सुजांण ॥ ५६

कलकली दुख कीधों घणों, पण सूं करे जाण ।
पात्र विना पामे नहीं, रस वेहद वाण ॥ ५७

---

१. ठंडा । २. द्वार । ३. पांच अध्याय में रास । ४. सहन करना । ५. अड़ गया ।

पात्र विना तमे पामियां, मुनीजी कां करो दुख ।
आज लगे ए रस तणों, कोणें लीधो छे सुख ॥ ५८

ए कागलतां[1] अम तणों, तम साथें आव्यो ।
रामत जोवा ब्रह्मांडनी, विध सघली लाव्यो । ५९

हद वेहदनी विगत,[2] कागल मांहें विचार ।
मुनीजी हाथ संदेसड़ो, आव्यो समाचार ॥ ६०

ए सुध सघली लई करी, वालें कह्यो सरव सार ।
बीजाने ए कोहेडा, नव लाधे वार ॥ ६१

बीजा सूं जाणें वापडा,[3] जेणों होए ते जाणें ।
अम विना वार वेहद तणां, बीजो कोंण उघाडे ॥ ६२

लाख वार जुए फरी, एक कडी नव लाधे ।
ब्रह्मांडना धणियो मांहें, पग मूकतां[4] बांधे ॥ ६३

ए रे कोहेडो हद तणों, वेहदी समाचार ।
अमे देखाडूं पाधरा, वेहदना वार ॥ ६४

*सुकजीनी वाणी सोहामणी, जोत वेहद लावी ।
फेर टालो तमे मांहेलो, जुओ आंख उघाडी ॥ ६५

अस्कंद बीजो मुनिएं कह्यो, चत्र सलोकी जांहें ।
ब्रह्मांडनी जिहां उतपंन, अरथ जुओ तांहें ॥ ६६

दीसे छे द्वार पाधरो, वेहदनो वार ।
इंडाने कह्यूं सुपन, सुपन संसार ॥ ६७

वेहद घरनी वाटडी, वेहदी जाणें ।
हदनो जीव वेहदना, वार उघाडे ॥ ६८

वार उघाडवा दोडियो, सुकजी सपराणो[5] ।
साथे *परीखत चालियो, ते तां भारे चंपाणो[6] ॥ ६९

---

१. पत्र । २. वर्णन । ३. बेचारा । ४. छोड़ते । ५. फंस गया । ६. दब गया ।

बल कीधूं बलिऐं घणूं, द्वार द्वार पछटांणो ।
साथें संघाती हद तणों, ते तां पाछल[1] तणांणो[2] ॥ ७०

रास तणो सुख सागर, ते तो नव केहेवाणो ।
पाछल ताण थई घणी, अध वच्चे लेवाणो ॥ ७१

पात्र विना रस केम रहे, आवतो ढोलाणो ।
पात्र हुता ते पामियां, रस इहां बंधाणो ॥ ७२

ए रस बरस असी लगे, सारी पेरे सचवाणो[3] ।
लीधो पीधो साथमां, वखतो वखत वेहेचाणो[4] ॥ ७३

एक टीपू[5] ते बाहेर न निकल्यूं, साथ मांहें समाणो ।
जेनो हतो तेणे माणयो, मांहों मांहें गठांणो ॥ ७४

ए रस वाणी अमतणी, आंहीं आवी छलकांणो ।
छोल आवी जेम सागर, रस तो प्रगटाणों ॥ ७५

जोर कीधों घणुऐं अमे, रस केमे न रखाणो ।
प्रगट थासे पाधरो, रस बाहेर नखाणो[6] ॥ ७६

ए रस आजना दिन लगे, क्यांहें न कलाणो[7] ।
लीला राखवा पाछल, जाण होए ते जाणो ॥ ७७

साथ एणी पेरे आवसे, ए रसें तणाणो ।
वचन सरवे सांभली, आवसे बंधाणो ॥ ७८

ए वाणी वेहद प्रगटी, इन्द्रावती मुख ।
घणी विधें ए रस पिए, वेहदने सुख ॥ ७९

ए वाणीने कारणे, घणे तपस्या कीधी ।
ए वाणीने कारणे, घणे अगनज पीधी ॥ ८०

ए वाणीने कारणे, घणां देहज दमया[8] ।
ए वाणीने कारणे, घणां कष्टज खमया ॥ ८१

---

१. पीछे । २. खिच गया । ३. सींचा गया । ४. बांटा गया । ५. बूंद । ६. डाला गया । ७. पहचाना गया । ८. दमन किया ।

ए वाणीने कारणे, घणां भेरव[1] झंपावे[2] ।
ए वाणीने कारणे, तिल तिल देह कपावे[3] ॥ ८२

ए वाणीने कारणे, घणां संधाण सारे ।
ए वाणीने कारणे, सिर अगनज बारे ॥ ८३

ए वाणीने कारणे, अनेक दुख देखे ।
एणी विधें ए रसने, केटला कहूं रे अलेखे ॥ ८४

एक टीपू ते कोए न पामयो, एहेना रस तणी ।
नाथ चौद भवनना, जे ब्रह्मांडना धणी ॥ ८५

बीजां नाम अनेक छे, पण लेऊं केहेना ।
ब्रह्मांडना धणी ऊपर, लेवाए न तेहेना ॥ ८६

ए रस आंहीं उभरयो, आवी अम मांहें ।
नौतनपुरीमां जे निध, एहेवी नहीं क्यांहें ॥ ८७

जे निध गोकल प्रगटी, तेतां सुख अलेखे ।
अणजाणे सुख माणिया, घर कोई न देखे ॥ ८८

ए सुख माण्यां सुपनमां, साथ राज संघातें ।
घर दीठे भांजे सुपना, जोईए केणी भांतें ॥ ८९

सुपन भागे सुख केम थाए, माया केम जोवाए ।
घर तणों सुख जोईए, निद्रा उडीने जाए ॥ ९०

निद्रा उडे भाजे सुपन, त्यारे उथलो[4] थाए ।
सुख घेरनूं ने सुपननूं, बंने केम लेवाए ॥ ९१

एणी विधें साथ प्रीछजो, सुख घणुएं आण्यूं ।
सुख सुपने गोकल तणूं, अणजाणे माण्यूं ॥ ९२

रास तणां सुख सूं कहूं, जाणें मूलगां[5] होए ।
ए सुख साथ धणी विना, नव जाणें कोए ॥ ९३

---

१. भयानक । २. छलांग । ३. कटावे । ४. रूपान्तरण होना । ५. मूल का ।

नवलो[1] सरूप धणी तणो, नवलो सिणगार ।
नवलो नेह ते आपणो, नवला आकार ॥ ९४

नवलुं वन सोहामणो, नवलो वा वाए ।
नवला जल जमुनातणा, लेहेरों ले वनराए ॥ ९५

नवली प्रेमल वेलडी, नवी रेत सेत प्रकास ।
नवलो पूरण चांदलो, सकल कला अजवास ॥ ९६

नवला रंग पसू पंखी, वनमां करे टहुँकार ।
नवला सुख श्री राजसों, साथ लिए अपार ॥ ९७

ए सुख केरी वातडी, जीव रुदे जाणे ।
ए सुख साथ धणी विना, बीजो कोंण माणे ॥ ९८

पण सुख सहू सुपनना, नेठ निद्रा मांहें ।
ए सुख जोगमाया तणां, घर द्रस्ट न थाए ॥ ९९

एक विध कही गोकल तणी, आगल[2] जोगमायानूं सुपन ।
बंने सुख केम उपजे, विचारजो मन ॥१००

ज्यारे सुख मायाना माणिएं, घर ना आवे द्रष्ट ।
ज्यारे घरतणां सुख जोईए, नहीं सुपननी स्रष्ट ॥१०१

एम सुख सुपने माणियां, अणजाणे एह ।
बंने लीलामां घर तणी, खबर नहीं तेह ॥१०२

एणी विधें लीला बंने करी, घरें रे सिधाव्या ।
आ त्रीजो ब्रह्मांड मायातणो, आपण लेई आव्या ॥१०३

इछा हुती जोयातणी,[3] ते तां पूरण न थई ।
अणजाणें सुख माणिया, धाख एणी पेरे रही ॥१०४

केम रहे धाख[4] ते आपणी, त्रीजो ब्रह्मांड लाव्या ।
साथें धणी पधारिया, तारतम लेई आव्या ॥१०५

---

१. नया । २. आगे । ३. देखने की । ४. प्रबल इच्छा ।

तारतम जोत उद्योत छे, तेणें सूं थाए ।
एकी दृष्टें घर जोईए, बीजो माया जोवाए ॥१०६

घर दीसे छे पाधरा, बीजो बे लीला जे कीधो ।
ते ए सर्वे सांभरे, वली आ लीला त्रीजी ॥१०७

सांभरे सर्वे वातडी, जीव दृष्टें देखे ।
आ तारतम जागी जोईए, ए तां बल अलेखे ॥१०८

आ लीलानी वातडी, जिभ्याएँ कही न जाए ॥
सुख जागतां माणिए, मनोरथ पुराए ॥१०९

ए बल आ लीलातणों, सरवे वचन केहेसे ।
रास प्रकास सुणी करी, वेहद वाणी लेहेसे ॥११०

धंन धंन ब्रह्मांड आ थयो, धंन धंन भरत खंड ।
धंन धंन जुग ते कलजुग, जेमां लीला प्रचंड ॥१११

धंन धंन पुरी नौतन, जेमां ए लीला थई ।
लीला बंने पाधरी,[1] रास प्रकासे कही ॥११२

धंन धंन धणी साथसों, बीजी वार जे आव्या ।
धंन धंन तेज तारतम, प्रगट प्रकास लाव्या ॥११३

तारतम रस वेहद तणो, सरव प्रगट कीधों ।
धणी विधें सुख साथने, माया जोतां दीधों ॥११४

तारतम रस वाणी करी, हूं पांऊं[2] जेहेने ।
जेहेर चड्यूं होए भोमनो, सुख थाए तेहेने ॥११५

जे जीव निद्रा मूके नहीं, रस पाईए वाणी ।
धणी लाव्या एटला माटे, माया बल जाणी ॥११६

जेहेर उतारवा साथनूं, लाव्या तारतम ।
वेहद रस श्रवणों करी, अमें पांऊं एम ॥११७

---

१. स्पष्ट । २. पिलाऊं ।

ए रस श्रवणें जेहेने झरे, तेणें सूं करे जेहेर ।
जागतां सुपन न उपजे, देखी तां वेर ॥११८

सुपन होए निद्रातणां, बहु ब्रह्मांड अलेखे ।
जेणी खिण आंख उघाडिऐ, त्यारे कांई न देखे ॥११९

एम रस तारतम तणो, चढ्यूं जेहेर उतारे ।
निरविषी काया करे, जीव जागे करारे[1] ॥१२०

जागे सुख अनेक छे, आंहीं अलेखे ।
चार पदारथ पामिऐ, जीव द्रष्टें देखे ॥१२१

पदारथ तारतमतणां, केम प्रगट कीजे ।
आफणिऐ[2] ए देखसे, जीव जगावी लीजे ॥१२२

ए बचन प्रगट पाधरा, में तो बाहेर पाड्या[3] ।
दरवाजा वेहदतणां, अनेक उघाड्या ॥१२३

एक अख्यरनो पा लवो, कहिएं प्रगट न थाए ।
श्री धाम धणी पधारिया, वाणी तो केहेवाए ॥१२४

साथ जुए मायातणी, रमत जुजवा थई ।
तेडी घरे सिधाविऐ, वाणी ते माटे कही ॥१२५

ए रामत मायातणी, मुकाए[4] नहीं ।
ब्रह्मांडनी कारीगरी, सारी कीधी सही ॥१२६

पारेवडा[5] गुडियातणां,[6] जेम कंडिया[7] भरियो ।
फूंक मारी जुए फरी, तरत खाली करियो ॥१२७

एम बाजी मायातणी, ब्रह्मांडज रचियो ।
देखी बाजी परेवडा, साथ मांहें मचियो ॥१२८

आंबो बाबी[8] जल सीचियो, खिणमां फूले फलियो ।
विध विधनी रंग वेलडी, वन ऊपर चढियो ॥१२९

---

१. चैन । २. अपने आप । ३. निकाला । ४. छोड़े । ५. कबूतर । ६. बाजीगर । ७. टोकरी । ८. आम का वृक्ष, बोया ।

ते देखी चित भरमियो, सुध नहीं सरीर ।
विकल थई रंग वेलडी, चित न रहे धीर ॥१३०

ततखिण ते दीसे नहीं, बाजीगर हाथ ।
आंबो न कांई वेलडी, या रंग बांध्यो साथ ॥१३१

सुध सरीर विसरी गई, विसरी गया घर ।
कीडी कुंजर गली गई, अचरज या पर ॥१३२

अदभुत एक जुओ सखी, ए अचरज मोटो ।
वस्त खरी लेई गयो, जेहेनों मूल छे खोटो ॥१३३

निद्रा साथने जोर थई, एम सपन वाध्यो ।
रामत मांहेंथी बल करी, नव जाए काढ्यो ॥१३४

ते माटे वाणी वेहद तणी, कही निद्रा टालूं ।
सुपन ना देऊं वाधवा, चढ्यूं जेहेर उतारूं ॥१३५

कुंजर[1] काढूं कीडी मुख, सुध आणूं सरीर ।
वचन कही ने जुजवा, करूं खीर ने नीर ॥१३६

खोटाने खोटूं करूं, सांचा सागर तारूं ।
वाणिएं रस पाई करी, साथ कारज सारूं ॥१३७

तारतम रस पाई करी, साथ घेर पोहोंचाडूं ।
धंन धंन कहिए तारतम, जेणें थयूं अजवालूं[2] ॥१३८

ए अजवालूं साथने, रामत जोवा लाव्या ।
बीजा बंधाणां बंधसूं, विध विधनी माया ॥१३९

बीजा त्रीजा हूं तो कहूं, साथने माया थई भारी ।
साथ सुपंन जुए सत करी, तो हूं कहूं विचारी ॥१४०

विचारी सुपन मुकाविए, तो थाए बंने पेर ।
सुख ते सुपने जोईए, हरखें जागिए घेर ॥१४१

---

१. हाथी । २. उजाला ।

तारतम पक्ष बीजो कोई नथी, साथ विना सहू सुपन ।
जगवुं माया खोटी करी, धाख रखे रहे मन ॥१४२

ते माटे पेर बंने करूं, सुपन हरषें समावूं ।
चरणे लागी कहे इंद्रावती, साथ जुगते जगावूं ॥१४३

॥ प्रकरण ॥ ३१ ॥ चौपाई ॥ ६३६ ॥

॥ दूध पाणीनो विछोडों ॥

वली वण पूछे कहूं विचार, कारण साथ तणें आधार ।
रखे केहेने उत्कंठा रहे, श्री सुन्दरबाई ते माटे कहे ॥ १

आगे एम वचन केहेवाए, जे कीडी पग कुंजर बंधाए ।
डूंगरतां[1] त्रणे[2] ढांकियो, पण पाधरो प्रगट कोंणे नव थयो ॥ २

कीडी कुंजरने बेठी गली,[3] तेहेनी कोंणे खबर न पडी ।
केहेने तो कहूं छूं एम, माया भारे थई छे तेम ॥ ३

सनकादिक ब्रह्माने कहे, जीव मन बेहू भेला रहे ।
ते जुजवा करीने देओ, सनकादिक एम प्रस्न कह्यो ॥ ४

त्यारे ब्रह्मा मन विमास्या[4] रही, मन मांहें अति चिंता थई ।
ए पडउतर में नव थयो, श्री वैकुंठ नाथने सरणे गयो ॥ ५

भगवानजी त्यारे तेणे ताल, हंस रूप लाव्या ततकाल ।
हँसजीने जीवें ओलख्यूं, त्यारे मन आडो फरीने वल्यूं ॥ ६

"सनकादिक एम पूछ्यूं वचन, जीवने चांपी[5] बेठो मन ।
त्यारे हँसजीएं कीधों जवाब, समझया सनकादिक भाग्यो[6] वाद ॥ ७

वाधे[7] भारे समझावया, पण दूध पाणी नव जुजवा[8] थया ।
तेहेनो तमसूं करूं जवाब, समझावाने काजे साथ ॥ ८

समझीने ओलखो धणी, चालो आपणें घरज भणी[9] ।
ए चारेनो अरथज एह, रखे कांई तमने रहे संदेह ॥ ९

१. पहाड़ । २. तिनका । ३. निगल । ४. चिन्ता । ५. दबा कर । ६. विवाद दूर किया । ७. बहुत ज्यादा । ८. अलग । ९. ओर ।

एहेनो जे जोतां अरथ, तेहेने जवाब एम देतां ग्रंथ ।
अकल अगम वैकुंठनो धणी, ए थोडी हजी करे घणी ॥ १०
एह करतां सरवे थाए, पण ओल्यूं[1] अरथ तणाण्यूं[2] जाए ।
अरथ उत्कंठा रहे मन मांहें, समझ कोंणे नव पडे क्यांहें ॥ ११
हवे समझावुं जोजो वाणी, दूध विछोडा करी देऊँ पाणी ।
जो जीव साख पूरे आपणों, अरथ खरो तो तारतम तणों ॥ १२
हवे संभारजो जीवसूं वात, जीव तणों मोटो प्रकास ।
चौद भवन अजवालूं करे, जो जीव जीवनने हर्दे धरे ॥ १३
एह छे एवो समरथ, एहेना बलनो कहीस[3] अरथ ।
नहीं राखूं संदेह लगार, जाणी साथ घरनों आधार ॥ १४
मन तणूं नथी कांई मूल, तेथी भारे आंकडानूं[4] तूल[5] ।
एक अरधी पांखडी नथी जेटलो, पण पग थोभ[6] माटे कह्यो एटलो ॥ १५
ते बेठो जीवने ऊपर चढी, कीडी कुंजर एम बेठी गली ।
एम त्रणे डूंगर[7] ढांकयो, एम गज कीडी पग बांधयो ॥ १६
जो जीव पोते करे अजवास, तो मने न खमाए प्रकास ।
ते ऊपर कहूं द्रस्टांत, जोजो पोतानूं वरतांत ॥ १७
सुकजीना कह्या परमाण, सात सागरनो काढ्यो निरमाण ।
भव्र सागरनो न आवे छेह, सुकजी एम पाधरूं कहे ॥ १८
हवे पगला जे भरिया प्रमाण, जोजो जीव तणूं बल जान ।
पेहेले फेरे आपण नीसरया, भवसागर ते केम करी तरया ॥ १९
जेनो नव काढ्यो निरमाण, सुकजीना वचन प्रमाण ।
गोपद वछ वली सुकजीएं कह्यो, भवसागर एम साथने थयो ॥ २०
एटलो पण नथी द्रस्टे पडयो, पग थोभ माटे पुस्तक चढयो ।
जीव तणो जो जो बल, खरी वस्त कही नेहेचल ॥ २१

---

१. इधर का । २. खिच जाना । ३. कहूँगा । ४. आंक का । ५. रोएँ । ६. ठहराव । ७. पहाड़ ।

भवसागर केम एटलो थयो, जो जीव खरे जीवनजी ग्रह्यो ।
त्यारे मन एकलो बेसी रह्यो, खोटा मन खोटामां भल्यो ॥ २२

दूध लीधूं एम जुओ करी, पाणीने मूक्यूं परहरी ।
दूध पाणी जुओ विचार, जुआ[1] करी ओलखो आधार ॥ २३

आपण मांहें बेठा छे सही, चरण कमल रेहेजो चित ग्रही ।
भरम भाजी ओलखजो धणी, दया आपण ऊपर अति घणी ॥ २४

इंद्रावती कहे ओलखो आधार, तारतम जीवसूं करो विचार ।
सुफल फेरो थाए संसार, वली वली नहीं आवे आवार ॥ २५

॥ प्रकरण ॥ ३२ ॥ चौपाई ॥ ६६१ ॥

## श्री भागवतनो सार

सांभलो साथ कहूं विचार, फल वस्त जे आपणों सार ।
ते जोईने आवो घरें, रखे अमल तमने अति चढे ॥ १

ए अमलतणों मोटो विस्तार, ते नेठ नव जोवो निरधार ।
आगे आपणने वारया[2] सही, श्री मुख वाणी धणिएं कही ॥ २

ते माटे तमने देखाडूं सार, आपणा घरने आपणां आधार ।
विहिला[3] थयानी नहीं आ वार, आंहीं तमने नहीं मूकूं निरधार ॥ ३

वेदतणों सार भागवत थयो, तेहेनो सार दसमस्कन्ध कह्यो ।
दसमतणां अध्या नेऊ,[4] तेहेनो सार काढीने देऊं ॥ ४

नेऊ मांहें आध्या पांत्रीस, जे व्रज लीला कीधी जगदीस ।
जगदीस वचन एणे ना केहेवाए, एम ना कहूं तो विगत[5] केम थाए ॥ ५

ते माटे में कह्युं एम, नहीं तो रामत जे कीधी श्री क्रस्न ।
ए नामनूं तारतममें न केहेवाए, साथ संभारी जुओ जीव मांहें ॥ ६

ए आपणां घरनी वातज थई, तमने थाकी हूं कही कही ।
ए घर केम हूं प्रगट करूं, तम थकी नथी कांई परूं ॥ ७

---

१. जुदा । २. रोका । ३. विमुख । ४. नब्बे । ५. समझ ।

ते माटे में कह्युं घणुए, नहीं तो एटलूं केहेवुं स्याने[1] पडे ।
आ प्रगट कीधूं ते तम माट, नहीं तो आ वचन कांई नव केहेवात ॥ ८

हवे घर ओलखी ग्रहेजो मन, घणूं तमने कह्युं तारतम ।
ए जांणजो मन जीवतणें, पेरे पेरे तमने कह्युं विध घणें ॥ ९

ते मांटे हूं फरी फरी कहूं, जे माया अमल सबल[2] चढयूं ।
अमल उतारो प्रकास जोई करी, अने भरम गेहेन मूको परहरी ॥ १०

अनेक विधें कह्युं परबोध,[3] हवे रखे रुदें राखो निरोध[4] ।
सुणजो ए अध्या पांत्रीस, जुआ वली कीधां मांहेंथी त्रीस ॥ ११

पंच अध्याई *सुकजीएं कही, पण *परीखत नव सक्यो ते ग्रही ।
प्रस्न चूक्यो थयो अजांण, रास लीला न वरणवी प्रमाण ॥ १२

त्यारे हाथ निलाटें[5] नाख्यो सही, सुकजी कहे मुख मांहेंथी रही ।
हूं जोगी तूं राजा थयो, रासतणो सुख नव जाए कह्यो ॥ १३

ए वचन मारे मुखथी नव पडे, न कांई तारे श्रवण संचरे ।
आ जोग नथी आपण बेहू, तो ए लीला सुख केणी पेरे सहूं ॥ १४

एहेना पात्र हसे[6] ए जोग, आ लीलानो ते लेसे भोग ।
केसरी[7] दूध न रहे रज मात्र, उत्तम कनक[8] विना जेम पात्र ॥ १५

एह वचन सुणीने राए, पड्यो भोम खाए मुरछाए ।
कम्पमान थई कलकल्यो, रुदन करे रुदें[9] अंतर गल्यो ॥ १६

आलोटे[10] दुख पामे मन, अंग मांहें लागी अगिन ।
त्यारे वली सुकजी ओचरया,[11] आंसू लोवरावी[12] बेठा करया ॥ १७

सांभल राजा द्रढ करी मन, अंतरगतें केहेतो वचन ।
ते केहेवावालो उठी गयो, हूं एकलो बेसी रह्यो ॥ १८

हवे पूछीस[13] मूने तूं सूं, तुझ सरीखो[14] बेठो हूं ।
त्यारे परीखत चरण झालीने[15] कहे, स्वामी रखे उत्कंठा मनमां रहे ॥ १९

---

१. क्यों । २. जोरदार । ३. उपदेश । ४. रोक । ५. मस्तक । ६. होगा । ७. शेरनी । ८. सोना । ९. दिल । १०. व्याकुल । ११. कहा । १२. पोंछ कर । १३. पूछोगे । १४. जैसा । १५. पकड़ कर ।

मुनीजी हूं घणों दोहेलो[१] थाऊं, रखे अगिन हूं लीधे जाऊं ।
त्यारे भागे आत्रेस कही पंच अध्याए, पण रास न वरणव्यो तेणे ताए ॥ २०

हवे सुकजीना वचन हूं केटला कहूं, में सार काढवा भागवत ग्रहूं ।
सघलानो सार आ ते रास, जे इंद्रावती मुख थयो प्रकास ॥ २१

हवे प्रकासतणो सार तमने कहूं, तेतां आपणूं तारतम थयूं ।
तारतम सार आ छे निरधार, जिहां बसे छे आपणां आधार ॥ २२

घर श्री धाम अने श्रीक्रस्न, ए फल सारतणों तारतम ।
तारतमे अजवालूं अति थाए, आसंका नव रहे मन मांहें ॥ २३

मन जीवने पूछे रही, त्यारे जीव फल देखाडे सही ।
ए अजवालूं[२] कीधूं प्रकास, तारतमना वचन मांहें रास ॥ २४

ए अजवालूं जीवने करे, जे जीव घर भणी[३] पगला[४] भरे ।
पोते पोतानी पूरे साख, ए तारतमतणो अजवास[५] ॥ २५

ते लेई धणी आव्या आंहें, साथ संभारी जुओ जीव मांहें ।
एणे घर तेडे आ वल्लभ, बीजाने ए घणूं दुर्लभ ॥ २६

बीजा कहूं छूं एटला माट, जे माया भारे करो छो साथ ।
तारतम पक्ष बीजो कोए नथी, एक आव्या छो तमे घर थकी ॥ २७

आ माया कीधी ते तम माट, तारतम मांहें पाडी वाट ।
एणी वाटें चालिए सही, श्री वालाजीने चरणज ग्रही ॥ २८

एह चरन छे प्रमांण, इंद्रावती कहे थाओ जांण ।
तमे वचनतणां लेजो अरथ, आपणा जीवनो ए छे ग्रथ[६] ॥ २९

॥ प्रकरण ॥ ३३ ॥ चौपाई ॥ ६९० ॥

## *अठोतर सो[७] पक्षनो सार

हवे वली कहूँ ते सुणो, अठोतर सो पक्षज[८] तणो ।
ए विचार जो जो प्रमाण, एहेनो सार काढूं निरवांण ॥ १

---

१. दुःखी । २. उजाला । ३. ओर । ४. पांव । ५. प्रकाश । ६. पूंजी । ७. एक सौ आठ । ८. खंड ।

माया जीव कोई कोई छे समरथ, ते दोड करे छे कारण अरथ[1] ।
निसंक आपोपा[2] नाख्या[3] जेणें, निहकरम[4] मारग लीधां तेणें ॥ २

पुष्ट मरजाद[5] ने परवाह पक्ष, एह तणी कीधी छे लख ।
ते वेहेची[6] कीधां नव भाग, चढे पगथी लेई वेराग ॥ ३

वली कीधां बीस ने सात, चढतो जाय लिए एणी भांत ।
एकासी पक्ष केहेवाए, ते वैकुंठमां पोहोंतो[7] थाए ॥ ४

हवे पक्ष ब्यासिमों जे कह्यो, वल्लभाचारजें ते ग्रह्यो ।
स्याम वल्लभी एथी जोर, पण बंने रह्या इंडानी[8] कोर ॥ ५

छेक[9] इंड मांहें कीधूं सही, पण अखंड ते लेई सक्यो नहीं ।
पाछा वली पड्या प्रतिबिंब, एहोनीतां एह सनंध ॥ ६

ए ऊपर वली पक्ष छे एक, सांभलो तेहेनूं कहूं विवेक ।
त्रासिमो पक्ष परमांण, जे वासना पांचे ग्रह्यो निरवांण ॥ ७

पांचे नाम कहूं प्रगट, देऊं सिखामण जाणी घरवट[10] ।
नहीं तो प्रमोध स्याने कहूं, श्री वालाजीना चरणज ग्रहूं ॥ ८

पण साथ माटे कहूं फरी फरी, हवे पांच नाम लीजो चित धरी ।
एक भगवानजी वैकुंठनो नाथ, महादेवजी पण एणे साथ ॥ ९

सुकजीने सनकादिक बे, वली कबीर भेलो मांहें ते ।
लखमी नारायण भेला अंग मांहें, एहेनों विचार कांई जुओ न थाए ॥ १०

ते माटे ए वासना पांच, इडूं फोडी निकली जुओ द्रष्टांत ।
ए पुरुष प्रक्रति ओलंघी गया, अख्यर मांहें जई भेला थया ॥ ११

ऐ वचन पाधरा प्रगट कहे, जाण होए ते जोईने लहे ।
पक्षपचवीस ए ऊपर जेह, तारतम ना वचन छे तेह ॥ १२

एह वचनो मांहें श्री धाम, धणी आपणांने साथ सर्वेस्थान ।
ए तारतमतणो अजवास, धणी बेठा मांहें लेई साथ ॥ १३

---

१. स्वार्थ । २. अपना आप । ३. डाल दिया । ४. निष्काम । ५. मर्यादा । ६. बांट कर । ७. पहुँच जाता है । ८. ब्रह्यांड की । ९. फोड़ दिया (उलंघ गए) । १०. घर जैसा ।

हवे कां नव ओलखोरे साथ सुजांण, घणूं तेहेने कहिए जे होए अजांण ।
वचिख्यण[1] छो तमे परवीण, गलजो जेम अगिनसूं मीण[2] ॥ १४
सनेहसों सेवा करजो धणी, गलित चित थई अति घणी ।
तमे सेवाए पामसो पार, धणीतणां वचन निरधार ॥ १५
पाछला साथ छे ते आवसे केम, ते जोसे रासतणा वचन ।
चरणे छे ते तो आव्या सही, पण हवे आवसे वचन रासना ग्रही ॥ १६
धणीतणां वचन ग्रह्या मांहें रास, पाछला पार उतारवा साथ ।
आवसे साथ एणे प्रकास, अंधकारनो कीधों नास ॥ १७
आवसे साथ सकल परवरी,[3] रासतणां वचन चित धरी ।
एह वचन हवे केटला कहूं, आ लीलानो पार नव लहूं ॥ १८
ए वचन आंहीं छे अपार, पण साथ केटलो करसे विचार ।
ते माटे कांई घणूं न केहेवाए, आ तां पूरतणों दरियाए ॥ १९
एनूं एक वचन विचारसे रही, ते ततख्यण घर ओलखसे[4] सही ।
घरनी जे होसे वास्ना, नहीं मूके ते वचन रासना ॥ २०
खरी वस्त जे थासे सही, ते रेहेसे वचन रासना ग्रही ।
जे कह्यूं छे करसे तेम, ते लेसे फलतणों तारतम ॥ २१
इंद्रावती कहे सुणजो साथ, वचन विचारे थासे प्रकास ।
प्रकास करीने लेजो धन, जे में तमने कह्या वचन ॥ २२

॥ प्रकरण ॥ ३४ ॥ चौपाई ॥ १०१२ ॥

## गुणनी आसंका लखी छे

हवे कांईक हूं मारी करूं, नहीं तो तमने घणुएं ओचरूं[5] ।
वली एक कहूं वचन, रखे आसंका[6] आवे मन ॥ १
में धणीतणां गुण लखया सही, एक आसंका मारा मनमां थई ।
जे ऊंडा[7] वचन कह्या निरधार, साथ केम करसे विचार ॥ २

१. दक्ष । २. मोम । ३. निपट कर । ४. देखेगा । ५. कहूँ । ६. संदेह । ७ गहरा ।

जिहां लगे जीव न पूरे साख, तो भले प्रमोध दीजे दस लाख ।
एक वचन नव लागे केमें, जिहां लगे जीव न समझे मने ।। ३

ते माटे एम थाए अमने, रखे आसंका रहे तमने ।
एक परवाही[1] वचन एम लहे, मुखथी कहे पण अरथ न लहे ।। ४

सोएतणां नाका मंझार, कुंजर[2] के निकले हजार ।
एनो अरथ पण आवसे सही, तारतम आसंका राखे नहीं ।। ५

में गुण लखतां कहीं लेखण अणी, रखे आसंका उपजे घणी ।
कथुआना[3] पगना प्रमांण, लेखणो गढियो हाथ सुजांण ।। ६

तेह तणो वली कीधियो चीर, गुण जेटली उतार लीर ।
हवे रखे केहेने आसंका रहे, तारतम आसंका नव सहे ।। ७

ते ऊपर एक कहूं विचार, सांभलो साथ मारा सिरदार ।
आ चौद भवन देखो आकार, एहेना मूलनो करो विचार ।। ८

एणे सुकजी पण सपनातर[4] कहे, कोई जीव एनें नव लहे ।
ए सुपन मूलतां छे समरथ, एहेना मूलनो जुओ अरथ ।। ९

सुपन मूलतां निद्रा थई, जुए जागीतां कांईएं नहीं ।
एनूं मूल न रह्यो लगार, अने कथुवाना पगनो तो कह्यो आकार ।। १०

मूल विना तमे जुओ विस्तार, केवडो कीधों छे आकार ।
तो आनो तो में कह्यो आकार, तेहेनो कां नव थाए विस्तार ।। ११

एम सोएतणां नाका मंझार, ब्रह्मांड के निकले हजार ।
हवे एह तणो जो जो अरथ, गुण लखवा वालो समरथ ।। १२

हवे केटलो तमने कहूं विस्तार, एक एह वचन ग्रहेजो निरधार ।
हेत करीने कहूं छूं साथ, ओलखजो प्राणनो नाथ ।। १३

गुण लखवा वालो ते एह, आपणमां बेठा छे जेह ।
इंद्रावती कहे आ ते रे ते, जेणे गुण कीधां ते ए रे ए ।। १४

---

१. साधारण । २. हाथी । ३. एक कीड़ा । ४. स्वप्न के समान ।

तारे केहेवुं होए ते केहे रे केहे, लाभ लेवो होए ते ले रे ले ।
तारतम कहे छे आ रे आ, हजार वार कहूं हां रे हां ॥ १५
मायासूं करजे ना रे ना, फोकट[1] फेरो मां खा रे खा ।
धणीने चरणे जा रे जा, एवो नहीं लाधे दा रे दा ॥ १६
जो चूक्यो आंणें ता रे ता, तो कपालमां[2] लागसे घा रे घा ।
संसारमां नथी कांई सा रे सा, श्री धाम धणी गुण गा रे गा ॥ १७
पोताना[3] पगले था रे था, मा मूके तारो चाह रे चाह ।
तारा जीवने प्रेम तूं पा रे पा, जेम सहू कोई कहे तूंने वाह रे वाह ॥ १८

॥ प्रकरण ॥ ३५ ॥ चौपाई ॥ १०३० ॥

गुण केटला कहूं मारा वाला, अमसूं कीधां अति घणां जी ।
आंणी जोगवाई ने आंणी जिम्याएं, केम केहेवाए वचन तेह तणां जी ॥ १
व्रज तणां सुख आंहीं आवीने, अमने अति घणां दीधां जी ।
रास तणी रामतडी रमाडी,[4] आप सरीखडा कीधां जी ॥ २
भगवानजी केरी रामतडी, जोयानी हुती मूंने खांत जी ।
नौतनपुरी मांहें आवी करीने, मूने चींधी देखाड्यो दृष्टांत जी ॥ ३
श्री धामतणां सुख केणी पेरे कहूं, जे तारतमे करी तमें दीधां जी ।
नवतन पुरीमां मनोरथ कीधां, ते विध विधना मारा सिधां[5] जी ॥ ४
सेहेजल[6] सुखमां झीलतां, दुख न जाणिएं कांई जी ।
दुस्तर[7] जल सुपनमां देखी, में जांणी ते घरनी बडाई जी ॥ ५
इंद्रावती कहे अति उछरंगे, तमे लाड अमारा घणां पाल्या जी ।
निरमल नेत्र करी जीवना, तमे पडदा पाछा टाल्या जी ॥ ६
आपोपूं ओलखावी[8] करीने, पोताने पासे तेडी[9] लीधी जी ।
इंद्रावतीने एकांत सुख दीधां, आप सरीखडी[10] कीधी जी ॥ ७

॥ प्रकरण ॥ ३६ ॥ चौपाई ॥ १०३७ ॥

---

१. खाली । २. मस्तक । ३. अपना । ४. खिला कर । ५. फलीभूत हुआ । ६. सहज । ७. कठिन । ८. दिखा कर । ९. बुला लिया । १०. जैसी ।

## प्रकट वाणी लखी छे

हवे सैएरने[1] हूं प्रगट करूं, आपणों वासा[2] श्री धाममां रहूं ।
*अख्यरातीत आपणां घर, मूल बैकुन्ठ मांहें अख्यर ।। १

ए वाणी चित धरजो साथ, दया करी कहे प्राणनाथ ।
ए किव[3] करी रखे जाणो मन, श्री धणी लाव्या धामथी वचन ।। २

ते तमने कहूं प्रगट करी, मूल वचन लेजो चित धरी ।
हवे तारतम लेजो प्रकास, तिमर[4] मूलथी करूं नास ।। ३

हवे तमने कहूं मूलज थकी, अने मोह अहंकार कांईं उपनूं नथी ।
न कांई ईस्वर मूल प्रक्रती, तेणें समे आपणमां बीती ।। ४

एणे समे मूल बैकुंठ नाथ, इछा दरसन करवा साथ ।
साथ तणें मन मनोरथ एह, माया रामत जोइए तेह ।। ५

ए वात अमें श्री राजने कही, त्यारे अम बेहू[5] पर इछा थई ।
उपनूं मोह सुरत संचरी,[6] तेणे माया रचना करी ।। ६

इहां अख्यरनूं विलस्यो मन, पांच तत्व चौद भवन ।
एमां विस्नु मन बीजो मननों विलास, रच्यो एह स्वांसनो स्वांस ।। ७

एमां वास्ना आवी अम तणी, मन इछे पोतानूं धणी ।
*अख्यर वास्नां लेई आवेस, नंद घेर कीधों प्रवेस ।। ८

साथ सुपन एम दीठूं सही, जे गोकल रमया भेला थई ।
बेहू सुरत रमया कै भांत, मन वंछित करी खरी खांत ।। ९

अग्यार वरस लगे लीला करी, *कालमाया तिहां परहरी[7] ।
*जोगमाया करी रमया रास, आनंद मन आंणी उलास ।। १०

रास रमी घेर आव्या एह, साथ सकलमां अधिक सनेह ।
तामसी उतकंठा रही मन सार, तो आपण आव्या बीजी वार ।। ११

---

१. सखी । २. वास । ३. कविता । ४. अन्धकार । ५. दोनों । ६. संचार । ७. छोड़ दी ।

"मारकंडे माया दीठी जेम, घेर बेठा आपण जोईए तेम ।
ते माया सुकजीए वरणव[1] करी, त्रण अध्या कह्या चित धरी ॥ १२
हवे प्रीछजो[2] एह दृष्टांत, एणे पण मांगी करी खांत ।
जोयो मायानो वरतांत, रूखी[3] केमे न पाम्यो स्वांत ॥ १३
ततख्यण कम्पमानज[4] थयो, माया मांहें भलीने गयो ।
कल्पांत सात ने छियासी जुग, माया आडी आवी बुध ॥ १४
नहीं तो नथी थई अधख्यण वार, मारकंड दुख पाम्यो अपार ।
त्यांरे मांहें नारायणजी कीधो प्रवेस, देखाडी माया लवलेस ॥ १५
जुए जागीतां तेहज[5] ताल, दया करी काढ्यो ततकाल ।
मायानो तां एह सनंध, निरमल नेत्रे थईए अंध ॥ १६
एणी पेरे अमने रह्यो अंदेस, ते राखे नहीं धणी लवलेस ।
ते माटे वली आ सुपन, इछाएं कीधूं उतपंन ॥ १७
अखंड थयो कालमाया तणो, अंदेस भाजवाने आपणो ।
केटलीकने उतकंठा रही, ते माटे सरवने अगना[6] थई ॥ १८
ब्रह्मांड मांहें आवियों एह, मन तणां भांजवा[7] संदेह ।
साथ मांहें एक सुंदरबाई, तेणें श्री राजें दीधी बडाई ॥ १९
आवेस अंग आपो[8] आधार, देई तारतम उघाड्या वार ।
घर थकी वचन लेई आवया, ते तां सुंदरबाईने कह्या ॥ २०
साथ वचन सांभलिया एह, वास्नाएं कीधां मूल सनेह ।
ते मांहें एक इंद्रावती, केहेवाणी सहूमां महामती ॥ २१
तारतम अंग थयो विस्तार, उदर आव्या बुध अवतार ।
इछा दया ने आवेस, एणे अंग कीधों प्रवेस ॥ २२
एणी पेरे भाज्यो संदेस, समझया सहुए वातज एह ।
वचन विस्तरिया विवेक, तेणे मली रस थयो एक ॥ २३

---

१. वर्णन । २. समझो । ३. ऋषि । ४. कांप गया । ५. उसी क्षण । ६. आज्ञा । ७. मिटाना । ८. दिया ।

साथ मलीने थई जागनी, हरख्यो साथ ने रमया धणी ।
ए चारे लीला कीधी सही, पण जागनी तो अति मोटी थई ।। २४
इहां साथने थयो उलास, कह्यो न जाए तेह विलास ।
ए जागनीना सुख केणी पेरे कहिए, जाणे श्री धाममां बेठा छैए ।। २५
मली साथ वातों हरखे करी, जेवी रामत जेणे चित धरी ।
एम करतां व्रध्टें आव्यूं धाम, केहेना मनमां रही न हाम[1] ।। २६
पछे साथ उठीने बेठा थया, ए वचन आगलथी[2] कह्या ।
इंद्रावती कहे उठसे अख्यर, लेई आनंद पोताने[3] घर ।। २७

।। प्रकरण ।। ३७ ।। चौपाई ।। १०६२ ।।

प्रकरण तथा चौपाइयोंका पूरा संकलन :—प्रकरण ८४, चौपाई १८७५

इति श्री महामति श्रीप्राणनाथ जी 'तारतम बानी' का

दूसरा ग्रन्थ

## ।। प्रकाश गुजराती संपूर्ण ।।

१. चाह । २. पहले । ३. अपने ।

निजनाम श्री कृष्णजी, अनादि अक्षरातीत ।
सोतो अब जाहेर भए, सबविध वतन सहित ॥

## ❋ षटरुती[1] ❋

### वर्षा रुत—राग मलार

मारा वालाजी रे वल्लभ, कहूं एक वीनती ।
मारा करमतणी रे कथाए, सुणो मारी आप वीती ॥ १

वाला आव्यो ते मास अषाढ, के रुत मलारनी[2] ।
जाणूं करी रे वालासूं विलास, लेसूं लाण[3] आधारनी ॥ २

मारी जोगवाई[4] हुती जेह, सुफल थासे आ वारनी ।
जाणूं आवी माया मांहें, भाजसूं हाम संसारनी ॥ ३

वर्षा रुते करमे काढी वदेस, अवगुण हुता अपार रे ।
हवे एणे समे धणी विना, लेसे कोंण सार रे ॥ ४

वाला बरसे ते मेघ मलार, बीजलडीना साटका[5] रे ।
मूने वालाजी विना आ रुत, लागे अंग झाटका[6] रे ॥ ५

मोरलिया करे रे किंगोर,[7] सुणीने गरजना रे ।
मारो जीव आकुल व्याकुल थाए, सुणी स्वर कोयलना रे ॥ ६

मूने केम करी रैणी[8] जाए, बपैया[9] पीउ पीउ लवे ।
सुंदरी कहे आ वार, तेडो चरणे हवे ॥ ७

---

१. छः ॠतुएँ । २. वर्षा । ३. लाभ । ४. साधन (शरीर) । ५. चाबुक । ६. झटका ।
७. मोर की आवाज । ८. रात । ९. पपीहा ।

निस दिवस दोहेली[१] थाए, पीउजी विना अंगना रे ।
मारुं कालजडूं रे कपाए,[२] मारा वालाजी विना रे ॥ ८

अचके[३] वा वाए, उछले वन वेलडी रे ।
हूं तो वालाजी विना रे वदेस, झूरुं[४] छूं एकली रे ॥ ९

मारी वेहेली[५] ते लेजो सार, वालाजीनी हूं विरहणी रे ।
मूने दिवस दोहेला जाए, वसेके रैंणी रे ॥ १०

*इंद्रावती कहे अवगुण, विसारो अमतणां रे ।
जे में कीधां रे अपार, वालाजीसूं अति घणां रे ॥ ११

हवे बादल मलियारे मलार, सोभा लिए वनराए[६] रे ।
रुचियो[७] ते बरसे मेह, तेडी भीडो[८] अंगनाए[९] रे ॥ १२

धराए[१०] कीधों सणगार,[११] डूंगरडा[१२] नीलया रे ।
एणी रुतें रे आधार, करो सीतल काया रे ॥ १३

मारी वेहेली ते लेजो सार, नहीं तो जीव चालसे रे ।
पछे आवीने लेजो सार, काया पडी हसे[१३] रे ॥ १४

मारा अवगुण घणां रे अनंत,[१४] पण छेह[१५] केम दीजिए रे ।
एणे वचने *इंद्रावती अंग, वालो तेडी[१६] लीजिए रे ॥ १५

॥ प्रकरण ॥ १ ॥ चौपाई ॥ १५ ॥

## सरद रुत—राग सामेरी

सरदनी रुतरे सोहामणी, रलियामणी,[१७] मूने वालाजी विना केम जाए, हो०
हूंरे वदेसणना पीउजी, मूने खिण वरसां सो थाए, हो वालैया ॥ १

वालाजी रे डोहोला[१८] ते जल रेवही गया, हवे आव्या ते निरमल नीर ।
पीउजी विना हूं एकली, ते तां केम राखूं मन धीर ॥ २

वालाजी रे वन छांह्यूं द्रुम[१९] वेलडी, हवे धणी तणो आ वार ।
हूं रे वदेसणना पीउजी, मूने चरणे तेडो आधार ॥ ३

---

१. कठिन । २. कटता है । ३. रुकती है । ४. तरसती । ५. जल्दी । ६. जंगल । ७. भला लगे । ८. गले लगाओ । ९. अर्द्धांगिनी । १०. पृथ्वी । ११. श्रृङ्गार । १२. पहाड़ । १३. रहेगी । १४. बे शुमार । १५. जुदाई । १६. बुलाना । १७. रमणीय । १८. गंदला । १९. वृक्ष ।

वालाजी रे नीझर जल रे डूंगर झरे, नदी सर[1] भरिया निवाण ।
पण एक जल वालाजी विना, मारा विलखतां सूके प्राण ॥ ४

वालाजी रे जीव मारो मूने दहे,[2] अंग ते ऊपजे दाझ ।
अवगुण मारा छे अति घणां, तमे रखे मन आंणो राज ॥ ५

वालाजी रे श्रावण मासनो अस्टमी, कांई क्रस्न पक्षनी जेह ।
मूने ए रैंणी वालाजी विना, घणूं दोहेली गई तेह ॥ ६

वालाजी रे एम तमे मोसूं कां करो, मारा हो प्राणनाथ ।
आवो करूं तमसूं गुझडी,[3] मारी वीतकनी जे वात ॥ ७

वालाजी रे अस्टमी भादरवा तणी, कांई सुकल[4] पक्षनी रात ।
ए रैंणी रूडीय[5] छे, मारा जनम संगाती[6] साथ ॥ ८

वालाजी रे में तां एम न जाणीयूं, जे मोसूं थासे एम ।
जो हूं जाणूं करसो विरहणी, तो कंठ बांहोंडी टालूं[7] केम ॥ ९

वालाजी रे भादरवा मासनी चतुरदसी, कांई अति अजवाली[8] थाए ।
एह समे नव सांचव्यो,[9] मारूं तरवारे अंग तछाए[10] ॥ १०

वालाजी ए रैंणी रे सिधाविया, वालो पोहोंता ते धाम मंझार ।
एणे समे मूने एकली, तमे कांए राखी आधार ॥ ११

वालाजी रे तमे तो घणुंएं जणावियूं, पण में नव जाण्यूं हूं अधम ।
जो हूं जाणूं थासे एवडी, तो तमने मूकूं केम ॥ १२

वालाजी रे चतुरदसी आसो तणी, कांई ब्रह्मांड थयो प्रकास ।
ए रजनी मूने एकली, तमे कांए मूकी निरास ॥ १३

वालाजी रे पूनंम रातनो चांदलो, कांई वन सोभे अपार ।
रासनी रातनो ओछव,[11] मूने कां न तेडी आधार ॥ १४

वालाजी रे अवगुण मारा छे अति घणां, तमे रखे मन आंणों धणी ।
ब्रेहेणी कहे मूने तम विना, अम उपर थई छे घणी ॥ १५

---

१. तालाब । २. जलता है । ३. दिल की बातें । ४. चांदनी रातें । ५. भली । ६. साथी । ७. दूर करूं । ८. उज्ज्वल । ९. मिले । १०. कटता है । ११. उत्सव ।

वालाजी रे विनता[1] ब्रह्हणी केम कीजीए, एवडो न कीजे रोष[2] ।
जो जीव देह मूकी चालयो, तमे त्यारे थासो निरदोष ।। १६
हवे चित आंणी चरणे तेडजो, ब्रहेणी टालो आधार ।
एणे वचनें *इंद्रावतीने, वालो तेडी[3] लेसे ततकाल ।। १७

।। प्रकरण ।। २ ।। चौपाई ।। ३२ ।।

हेमंत रुत—राग सिंधूडो

रुतने आवी रे वालैया हेमनी, मेघलियो गयो पोताने घेर आप ।
रुतने सीतल रे लागे मूने दोहेली, हवे मूने कां न तेडो प्राणनाथ ।। १
अंबररियों[4] थयो रे वालाजी निरमलो, बादलियो गयो पोताने घेर ठाम ।
हजी न संभारो रे वाला तमे विरहणी, कां न भाजो रे रुदयानी हाम ।। २
हो दरसनने दीजे रे वालैया दया करी, आ रुत में न खमाए ।
जुओने विचारी रे वालैया जीवसूं, कालजडूं मांरूं मांहें कपाए[5] ।। ३
नैणांने तरसे रे वालाजीने निरखवा, श्रवणा तरसे वाणी रसाल ।
वाचाने[6] तरसे रे वालाजीसूं वातडी, जाणूं करी काढूं रुदयानी झाल ।। ४
अंगने तरसे रे वालाजीने भेटवा,[7] जीव तरसे जोवा मांहेली जोत ।
जो पेहेलूंने जाणूं रे मोसूं थासे एवडी, तो निध हाथ आवी केम खोत ।। ५
साथने मेली बेठो छो ज्यारे सामटा,[8] त्यारे अम विना तमने केम सुहाए ।
मूने रे मारा वालैया तम विना, पल ने प्रलेकाल जेम थाए ।। ६
अवगुण मारा रे वाला अति घणां, धणी विना केहेने कहूं मारा श्री राज ।
वालाजी विनारे अंग अगनी बले, देह मांहें उपजे अति दाझ ।। ७
वनने छाह्यूं रे वाला द्रुम वेलडी, सीतल धराने[9] सीतल वाए ।
सीतल जलने सीतल छांहेडी, पण मारे अंग लागे अति दाहे ।। ८
हो दाझने भाजो रे वाला मारा अंगनी, जेम मूने थाए करार ।
सुंदर धणी रे सोहामणां, ब्रह न खमाए जीवना आधार ।। ९

---

१. स्त्री । २. गुस्सा । ३. बुला । ४. आकाश । ५. कटता है । ६. जिह्वा । ७. मिलने । ८. इकट्ठा । ९. पृथ्वी ।

अणने जाण्यां रे दुख अनंत सह्या, पण जाण्यूं दुख केम खमाए ।
वालाजी विना रे हवे जे घडी, ते तां जीवने कठण घणूं जाए ॥ १०
विषम ब्रहरे वालैया आ रुतनो, ते तो सुखम थाए मले जीवन ।
हवे ने कहो रे वालैया तेम करूं, जीव दुख पामे रे मन ११
दीपनो[1] मेलो रे ओछव अति भलो, जिहां सिणगार करो धणी सर्व साथ ।
एणे रे समे वाला मूने तेडजो, जेम आवीने मलूं मारा प्राणनाथ ॥ १२
साथने सुणो रे कहूं एक वातडी, धणी मूने देतां केटलूं मान ।
ए सुख मांहेंथी काढी करी, करमे दीधूं ततख्यण रान[2] ॥ १३
रणवगडामां[3] साथ हूं एकली, विलखूं रात ने दिन ।
जो कोई मानो तो कहे इंद्रावती, रखे कोई करो भारे करम ॥ १४
आ वस्ती वसे सुंदर सोहामणी, धणी बेठा नवतनपुरी मांहें ।
एहजपुरी[4] मांहें अमें रहूं, पण करम न दिए मेलो क्यांहें ॥ १५
अनेक विधें रे साथ हूं विलखती, पण मेलो न थाए एक खिण ।
ए अचरज तमे जुओ साथ जी, करम तणां रे ए छे गुण ॥ १६
वलीने वसेके रे वज्रलेपणां[5], मारा जेम करजो मा कोए ।
एहजपुरी मांहें अमें रेहेंतां, रणवगडा जुओ केम होए ॥ १७
एणे सरवे वज्रलेषणां, दुखने दीठां रे अनेक ।
हवेने वालाजी रे दया करो, तो टले मारा वज्रलेप ॥ १८
दयाने रखे तमे विसारो, *इंद्रावती अलवी[6] रे थाए ।
एणे वचने वालोजी तेडसे, अंगना आवीने लागसे पाए ॥ १९

॥ प्रकरण ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ ५१ ॥

### रुत सीतनी—राग धनासरी

सीत रुत पीउजी तम विना, मूने अति अलखामणी[7] थाए । हो०
वाए रे उतर केरो बावरो, ते तां मारे तरवारे घाए ॥ १हो०

---

१. दिवाली । २. बीरान । ३. रेगिस्तान । ४. इसी शहर । ५. अमिट लेप । ६. दुःखी । ७. दुःखदाई ।

हो टाढीने[1] रुते रे वालाजी सीतनी, टाढीने भीनी थाए रात ।
एणी रुते केम विसारिए, अरधांग तमारी प्राणनाथ ॥ २

सीत रुतें जल जोनी जामिया, तमे हजिए[2] न ल्यो मारी सार ।
जीवने काया नहीं तो मूकसे, ते तमे जोसो निरधार ॥ ३

दुखने दोहेला घणां भोगव्या, पण ब्रह दुख में न खमाए ।
जीवडो रुए निस दिन पीउ विना, आंसूडा ते अंग न माए ॥ ४

जलने सीतल नेंणे वही गया, हवे अगिन थई अति जोर ।
निस्वासा[3] जेम धमण[4] धमें, बलतो जीव करे रे बकोर[5] ॥ ५

एवी टाढी रुतें दंतडा खडखडे[6], अंग चामी[7] चरमाए[8] ।
एकने पीउजी तम विना, कै कै आवटणी[9] थाए ॥ ६

सीत रुतें पत्र जेम हारव्या,[10] जेम वसंत विना वनराए ।
रंगने रूप रुत हरी लिए, पछे सूकीने भाखरिया[11] थाए ॥ ७

आ रुतें अगनी जोर बले, वाएने अगिन टाढी वाए ।
हेमने पडे रे बले सरव वनसपती, वलीने वसेकें दाझे दाहे ॥ ८

तेम मारा जीवने तम विना, आ रुत एणी पेरे जाए ।
हवे रखे राखो रुयण तम विना, हूं वली वली लागूं छूं पाए ॥ ९

ए रुत वाला मूने एम थई, हजी दया तमने न थाए ।
नौतनपुरी मेलो केम थासे, ज्यारे जीव निसरीने[12] जाए ॥ १०

मायानो मेलो घणूं दुर्लभ, नहीं आवे ते बीजी वार ।
रखे जाणे माया मेलो न थाए, ते माटे करूं छूं पुकार ॥ ११

मूं ब्रेहेणीनो ब्रह भाजजो, तमे छो दयावंत ।
बलबलती करूं विनती, पछे आवसे ते मारो अंत ॥ १२

वेल[13] थसे जो ए बात नी, ते तां दुख करसो निरधार ।
जो जीव काया मूकी चालसे, पछे करजो कायानी सार ॥ १३

---

१. ठंडी । २. अभी भी । ३. श्वास । ४. धौंकनी । ५. पुकार । ६. बजता है । ७. त्वचा । ८. फट रही है । ६ मुसीबतें । १०. झड़ गए । ११. सूखी रोटी । १२. निकल । १३. देर ।

जीवते निसरतां घणूं सोहेलूं[1] कांई दुख न उपजे लगार ।
पण विमासी[2] जो विचार करूं, तो माया मेलो केम छाडूं आधार ॥ १४

हवे कृपाने सागर तमे कृपा करो, जेम आवीने भीडूं अंग ।
मूं व्रेहेणीना रे वालैया, मूने तेडीने रामत करो रंग ॥ १५

जो तमे भीडो जीवने जीवसूं, तो भाजे मारा अंगनी दाभ ।
जीव थाए मारो सकोमल, जेम वसंत मोरे[3] वनराए ॥ १६

वसंत आवे वन विलंम करे, मारो जीव मोरे ततकाल ।
मूने जेणी ख्यणें वालोजी मले, हूं तेणी ख्यण लेऊं रंग लाल ॥ १७

जेम रंग लिए रे ममोलो[4], मेह बूठें[5] ततकाल ।
तमने मले हूं रंग एम लेऊं, *इंद्रावतीना आधार ॥ १८

इंद्रावती आएत[6] करे, मलवाने[7] उलास ।
एणे वचनें वालोजी तेडसे, जईकरसूं वालाजीसों विलास ॥ १९

॥ प्रकरण ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ ७० ॥

रूत वसंतनी—राग वसंत

रूतडी आवी रे मारा वाला, वसंत रूत रलियामणी ।
तम विना मारा धणी धामना, लागे अलखामणी रे ॥ १

तमे पडदा पाछा कीधां पछी, वली आवी ते आ वसंत ।
ते पछी तमसूं रमवानी, लागी छे खरी मूने खंत[8] ॥ २

हवे ततख्यण तेडजो मारा वाला, आ रूत एकला न जाए ।
धणी विना कामनीं घणूं कलपे, रोतां ते वांणूं[9] वाए ॥ ३

दिन दोहेला[10] जाए घणूं मूने, वली वसेके वसंत ।
ते तमे जाणो छो मारा वाला, जे विध जीव ने वहंत[11] ॥ ४

रुत मांहें रूत वसंत घणूं रूडी, जेमां मोरे वनराए ।
विध विधनां रंग लेरे वेलडियों वन तणें कंठ वलाए ॥ ५

---

१. आसान । २. चिन्ता । ३. प्रफुल्लित । ४. रंग बदलने वाला कीड़ा (वीर बहूटी) । ५. पड़ता । ६. चाह करती है । ७. मिलने की । ८. लालसा । ९. सुबह । १०. कठिन । ११. बीतती है ।

एणी रुते एकलडी मूने, केम मूकों छो प्राणनाथ ।
जीव सकोमल कूपल[१] मेले, रमवा स्यामलिया साथ ॥ ६
अमृत वां वाए वसंतनो, लेहेरों लिए वनराए ।
ए रुत देखी जीवन विना, ते मारे जीवें न खमाए ॥ ७
हवे केही विध करूं रे वाला, तमे कां थया मोसूं एम ।
मूने मेली एकलडी, तमे बेससो करारे[२] केम ॥ ८
जो अनेक अवगुण होए मारा, तोहे तमे लेसो सार ।
अमें कलपतां तमे दुखासो, ते नेहेचे जांणो निरधार । ९
में मारा करम भोगवतां, दीठां ते दुख अति घणां ।
पण मारूं दुख देखी तमे दुखाणां,[३] मूने ते दुख साले[४] तम तणां ॥ १०
साथ मांहें आवी मारा वाला, अंतराए कीधी मोसूं एह ।
आकार तमारों अम समोजी,[५] दुख सुख देखे देह ॥ ११
अंतरगत आवी मारा वाला, बेठा छो आकार मांहें ।
आकार देह धरच्यूं मांयानूं, ते माटे कोंणे न ओलखाए ॥ १२
ए आकार धरी अम मांहें, बेठा छो अंत्रीख[६] ।
पण केम छाना[७] रहो तमे अमथी, अमे तमारा सरीख[८] ॥ १३
हवे में तमने दीठां जुगतें, ओलखिया आधार ।
ते मांटे तमे तेडजो ततख्यण, मलो तो थाए करार ॥ १४
हुतासनीनो[९] ओछव अति रूडो, आवी रमूं अबीर गुलाल ।
चोवा[१०] चंदन अनेक अरगजा, हूं छाटी करूं वालाजीने लाल ॥ १५
सुंदरसाथ मलीने रमिए, वालाजीसूं रंग अपार ।
लोपी लाज रमूं हूं तमसूं, इंद्रावतीना आधार ॥ १६
हवे वेहेली[११] ते तेडो मारा वाला, रमवा हरख न माए ।
सुंदर धणी मारा रे तमने, हूं आवीने जीतूं तेणें ताए ॥ १७

---

१. कोंपल । २. चैन से । ३. दुःखी होते हो । ४. चुभता है । ५. समान । ६. अंतरिक्ष, अंतर में । ७. छिपे । ८. जैसे । ९. होली । १०. सुगन्धित तेल ११. जल्दी ।

*इंद्रावती अरधांग तमारी, कलपे विना धणी धाम ।
एणे वचनें ततख्यण मूने तेडसे, मलीने भाजीस मारी हाम ॥ १८

॥ प्रकरण ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ ८८

### रुत ग्रीषमनी-राग काफी धमार

वालाजी विना रुत ग्रीषम हो ॥ टेक ॥

रुत ग्रीषम वालाजी विना रे, घणूं दोहेली[१] जाए ।
पीउजी विना हूं एकली, ख्यण बरसां सो थाए ॥ १
ग्रीषमनी रुत आवी रे वाला, वेलडियों सोहे वनराए ।
फूल फल दीसे रे अति उतंम, एणी रुतें वन सुहाए ॥ २
घाटी छाह्या सोहे वननी, फूलडे रंग प्रेमल[२] अपार ।
एणी रुतें मारा वालैया, मूने तेडीने रमजो आधार ॥ ३
रमवाने जीव तरसे मारो, रूडी रमवानी आ रुत ।
खंत[३] खरी मलवानी तमसूं, लागी रही छे मारे चित ॥ ४
कोइलडी टहूंकार करे रे, सूड़ला[४] करे रे कलोल ।
एणी रुतें हूं एकलडी, रोई नेणा करूं रंग चोल[५] ॥ ५
वांदर मोर क्रीडे वनमां, आनंद देखी वनराए ।
एणे समे वालाजी विना, ब्रहसूं कालजडूं रे कंपाए ॥ ६
भमरा मदया[६] करे रे गुंजार, लेई फूलडे वेहेकार[७] ।
एणी रुतें धणी धाम विना, घडी एक ते केमे न जाए आधार ॥ ७
एणी रुतें अमने नव तेडो, तो जीव घणूं दुखी थाए ।
दिन दोहेला घणुएें निगमूं, पण रैणी ते केमे न जाए ॥ ८
कठणाई एवी कां करो वाला, हजी दया तमने न थाए ।
बीजा दुख अनेक खमूं, पण धणीनो ब्रह न खमाए ॥ ९

१. कठिन । २. सुगन्धित । ३. चाहना । ४. तोता । ५. गहरा लाल । ६. मस्ती । ७. महक ।

कलकले जीवने कांपे काया, करे निस्वासा निस दिन ।
नैणे जल आवे निझरणां,[१] कोई अखूट थया उतपंन ॥ १०

एक निस्वांसे[२] जीव निसरे, पण दुख खमूं छूं ते जुए विचार ।
ते विनती करूं रे वाला, सुणो इंद्रावतीना आधार ॥ ११

देखे जीव दुख घणूं दुरलभ, मेलो धणीनो आ वार ।
श्री धाम मधे मेलो सदीवें,[३] पण दुरलभ मेलो संसार ॥ १२

*नौतनपुरीमां धणी मलवाने, जीव न मूके काया ।
धणीनो विछोडो घेर ख्यण नहीं, विछोडो मेलो मांहें माया ॥ १३

आ मेलो दुरलभ ते माटे, नहीं आवे बीजी वार ।
ते माटे जीव कलपे मारो, नौतनपुरी मलवा[४] आधार ॥ १४

हवे न थाए मेलो श्री *देवचंदजीसों, जो कीजे अनेक उपाए ।
घरें मेलो अभंग छे, पण *नौतनपुरीएं न थाए ॥ १५

सुंदर श्रीमुख वचन सांभरे, त्यारे जीवने कालजे लागे घाए ।
पण चूकी अवसर जो हूं पहेली, 'तो न आवे हाथ ते दाए ॥ १६

हवे कलकलीने कहूं छूं रे वाला, मूने तेडजो चरणे ।
तेहेने छेह केम दीजिए रे वाला, जे आवी ऊभी[५] सरणे ॥ १७

हवे ब्रह वीटी विनता कहे, रखे ख्यण लावो वार ।
अमने आवी तेडी जाओ, जेम लेऊं लाभ मांहें संसार ॥ १८

आ मायानो मेलो छे दुरलभ, जुओने विचारी मंन ।
लेऊं लाभ मलीने तमने, जेम सहू कोई कहे धंन धंन ॥ १९

अनजाण्यूं धन गयूं रे अनंत, पण जाण्यूं ते धन केम जाए ।
जे निध गई अचेत थकी, हूं दाझूं ते तेणी दाहे ॥ २०

इंद्रावती कहे आएत[६] करी, एक वार तेडो अमने ।
जेम उलट करूं अति घणो, आवीने जीतूं तमने ॥ २१

१. झरना । २. श्राह । ३. हमेशा । ४. मिलने को । ५. खड़ी । ६. चाह ।

में अनेक वार जीत्यो छे आगे, तेतो जाणो छो चित मांहें ।
ते माटे मोसूं करो रे अंतर, पण नाठया न छूटसो क्यांहें ॥ २२
हूं जोर करीने ज्यारे आवीस[1] ईहां, त्यारे तमे करसो केम ।
एणे वचने इंद्रावतिएँ, वालोजी कीधां छे नरम ॥ २३
हवे ततख्यण तेडवा धणी आवसे, वालें सांभलिया[2] समाचार ।
ए वचन सुणीने इंद्रावतीने, वालो रुदयासों भीडसे आधार ॥ २४

॥ प्रकरण ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ ११२ ॥

## अधिक मास—राग धन्यासरी

सुणोने वालैया, कहूं मारी वीतक[3] वात ।
आवडा ने दुःख तमें कां, दीधां रे निघात ॥ १
रुत सघली[4] रे हूं घणूं कलपी, पण वालैएं न लीधी मारी सार ।
न जाणूं जीव मारो केम करी राख्यो, नहीं तो नव रहे निरधार ॥ २
सनेह वालाजीनों संभारतां, एक निस्वांसें जीव जाए ।
पण ए न जाणूं तमे केही विध करीने, जीव राख्यो काया मांहें ॥ ३
ज्यारे जीव हुतो निद्रा मांहें, तेणो ते जुओ विचार ।
पण ज्यारे निद्रा उडाडी धणिएँ, त्यारे केम रहे विना आधार ॥ ४
आपोपूं ओलखावी करी, आप रह्या अंत्रीख[5] ।
पडदा पाछां कीधां पछी, न जाणूं जीव राख्यो केही रीत ॥ ५
नहीं तो ए निध[6] दीठां[7] पछी, ख्यण एक अंतर न खमाए ।
विध सघली दीसे तम मांहें, ओवारणे[8] इंद्रावती जाए ॥ ६
षटरुत वालाजी रे वही[9] गयूं, तेनां थया ते बारे मास ।
एवडो ब्रह केम दीधो रे वालैया, तमने हजी न उपजे त्रास[10] ॥ ७
बारे मासना पक्ष[11] चौबीस, तेना त्रणसे ने साठ दिन ।
त्रणसे ने साठ वचे रात थई, तमे हजिए न सुणो वचन ॥ ८

---

१. आऊँगी । २. सुन लिया । ३. आप बीती । ४. सब । ५. अंतरिक्ष । ६. खजाना । ७. देखे । ८. बलिहारी । ९. चली । १०. डर । ११. अंधेरी-चांदनी रातें ।

एक दिन रात मांहें साठ घडी, एक घडीं मांहें साठ पाणीवल ।
एक पाणीवल मांहें साठ पल थाए, तमे एवडा रुसणा[१] कीधां सबल ॥ ९

वलीने वसेकें अपर महीनो, अधको ते आव्यो जेठ ।
हवे कसने पूरो कसोटिएं, तमे पारखूं[२] लेओ छो मारुं नेठ[३] ॥ १०

हूं अंग राखूं वालाजीसूं मलवा, नहीं तो ततख्यण देऊं निवेड[४] ।
वली मेलो न आवे नौतन पुरिएं, ते माटे करूं छू जेड[५] ॥ ११

वल्लभ तणों ब्रह न खमाए,[६] वलीने वसेकें हवणां[७] ।
प्रमोध पुरी मांहें प्रमोध दीधों, हवे मनोरथ छे अति घणां ॥ १२

ते माटे हूं ब्रह सहूं छूं, जीव राखूं समझावी मन ।
नौतनपुरी तमसूं मेलो करी, मारे सांभलवा छे श्री मुख वचन ॥ १३

जेणी रुतें मूने कीधी परदेसण, वली ते आव्यो असाढ ।
हजी विछोडो न भाजो रे वाला, जीवने थई वली वाढ[८] ॥ १४

वाढ वसेके थई जोराबर, ते ऊपर दीधूं वली लोंण[९] ।
अवगुण मारा तमे आण्या चितसूं, हवे खबर ते लेसे मारी कोंण ॥ १५

मू विलखतां तमे दया न कीधी, हवे स्यो बांक[१०] काढूं तमारो ।
दिन घणां हूं रहीस तम सारूं, हवे जोजो तमे जोर अमारो ॥ १६

आ पोहोरो छे कठण एवो, तमे थई बेठा अलगां अवल ।
कलकल्यानूं इहां काम नहीं, जीतिए पोताने बल ॥ १७

केड[११] बांधीने ज्यारे कीजे उपाए, त्यारे तमे थाओ नरम ।
आपोपूं ज्यारे नाखिए आंख मीची, त्यारे तमने आवे सरंम ॥ १८

*इंद्रावती कहे वली मनोरथ पूरजो, जो तमे राखो पोतानी लाज ।
ततख्यंण आवीने तेडी जाओ, जेम काढूं मारा रुदयानी दाझ ॥ १९

॥ प्रकरण ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ १३१ ॥

---

१. कोप । २. परखना । ३. निश्चित । ४. निपटारा । ५. विलम्ब । ६. सहा जाए । ७. अभी । ८. कटना । ९. नमक । १०. कमी । ११. कमर ।

## षटरुतीनों कलस—राग प्रभाती

वचन वालाजीना वालेरा[१] रे लागे ।
मूने मीठरडा रे लागे, संभलाओ चरचा मीठडी वांण रे ।
वचन जे तारतम तणां रे, हवे नहीं मूकूं निरवांण रे ॥ १
सुणिया जे सुंदर तणां रे, न मूकिए एह वचन रे ।
आटला दिवस में विचार न कीधों, नव लीधूं वचननूं धन रे ॥ २
घणां दिवस में न जाण्यूं मारा वाला, वचन तणी जे निध रे ।
जीवना नेत्र उघाडी करीने, तमे दया करी मूने दिध रे ॥ ३
चरचा जे श्री मुख तणी, सुंदर वांण वचन रे ।
एना विचार मोसूं करो रे वाला, मोकलो[२] मेलीने मन रे ॥ ४
पेरे पेरेनी प्रीछवनी करी रे, विध विधना कहो द्रष्टांत ।
व्रज रास ने घर तणी, मुने कहो बीतक वरतांत ॥ ५
आडीका[३] जे तमे कीधां मारा वाला, साथ मलवाने जेह ।
तेह तणो विचार करी रे, मूने जुगतें प्रीछवो[४] वली एह ॥ ६
*तारतम तणो विचार करो रे, पेहेलो फेरो थयो केही पेर[५] ।
केही पेरे मनोरथ कीधां, जाग्या केही पेरे घेर ॥ ७
आंणे फेरे अमे केम करी आव्या, तमे आव्या छो केम ।
तमे कोंण ने तम मांहें कोंण, मूने कहीने प्रीछवो वली एम ॥ ८
पोते प्रगट पधारया छो, आडा[६] देओ छो व्रज ने रास ।
*इंद्रावतीसूं अंतर कां कीधूं, तमे देओ मूने तेनो जवाब ॥ ९
आपोपूं ओलखावी मारा वाला, दरपण दाखो[७] छो प्राणनाथ ।
दरपणनूं सूं काम पडे, ज्यारे पेहेरचूं ते कंकण हाथ ॥ १०
मूने अमल मायानो जोर हुतो, तमे ते मांटे कीधो अंतर ।
हवे तमे पडदा टाल्या रे वाला, आप छपसो[८] केही पर ॥ ११

१. प्यारा । २. खुले । ३. चमत्कार । ४. समझावो । ५. तरह । ६. रुकावट । ७. दिखाते हो । ८. छिपेंगे ।

आपोपूं ओलखावी करी रे, मूने दीधो वदेस ।
अवगुण जे में कीधां मारा वाला, तेणी तमे हजी न मूको रीस ॥ १२
मूने माया लेहेर हुती जोरावर, ते माटे कीधां अवगुणो ।
अंध थको ज्यारे पडे रे कुआंमां, त्यारे केहो वांक तेहतणो ॥ १३
तमे केहेसो ज्यारे तारतम सांभल्यूं, त्यारे अंध केहेवाए केम ।
तेह तणो पडउतर देऊं, तमे सांभलो द्रढ करी मन ॥ १४
वचन सुण्यां ते ग्रह्या मन मांहें, जीवने मोह जल पूरी लेहेर ।
तो दुख तमने देवंतां, जीवने न आव्यो बेहेर[1] ॥ १५
वली केहेसोजे निरदोष थाए छे, पण नथी थाती[2] निरदोष कांई हूं ।
धणी सांमी[3] बेसी आ मोहजलमां, लेखूं[4] केणी विधें करूं ॥ १६
हवे ने कहूं ते सांभलो वाला, हूं विनता[5] वालाजी तमारी ।
अवगुण जो अनेक होए मारा, तोहे तमे लेओ ने सुधारी ॥ १७
जे में तमसूं कीधां रे अवगुण, तेणी तमें वालो छो रीस ।
आपोपूं ओलखावी करी, तमे दीधों मूने वदेस ॥ १८
एक पुरीमां आपण बेठा, मूने कीधी परदेसण ।
व्रह तणी जे वातों मारा वाला, हूं तमने आवी कहेस ॥ १९
जे व्रह तमे दीधों रे वाला, ते सिर ऊपर में सह्यो ।
अवगुण साटे तमे ए दुख दीधां, हवे पाड[6] केहेनों नव रह्यो ॥ २०
हवे हूं आवीस तम पासे, तूं जाईस नाठो क्यांहें ।
तें छेतरी घणां दिन मूने आगे, ते वार बूठी त्यांहें ॥ २१
अंग उमंग न माए रे वाला, हवे तोसूं करूं केही पर ।
पेहेलूं अंग भीडीने दाझ भाजूं, पछे तेडी जाऊं मारे मंदिर ॥ २२
जहां लगे पाड हुतो मारे माथे, तहां लगे हुती ओसियाली[7] ।
हवे मारी पेर जो जो रे वाला, हूं न टलूं तूंथी टाली ॥ २३

१. दया । २. हो रही । ३. सामने । ४. हिसाब । ५. स्त्री । ६. एहसान । ७. शरमिंदा ।

हवे हूं जीतूं तूंने जोपें करी, में ओलखियो आधार ।
में अनेक वार जीत्यो रे आगें, वलीने वसेकें रे आ वार ॥ २४

केही पेरें वाद[1] करीस तूं मोसूं, तूं छे म्हारो जाण्यो ।
जिहां जेणी पेरें कहीस रे वाला, तहां आवीस मारो ताण्यो[2] ॥ २५

जो एक पग भर राखूं तूंने, तो हूं इंद्रावती नार ।
दिन घणां तूं छपयो मोसूं, हवे नहीं छपी सके निरधार ॥ २६

हवे जेम नचवुं तेम नाचो रे वाला, आव्या इंद्रावतीने हाथ ।
ते वसीकरणनी दोरिएं[3] बांधूं, जेम देखे सघलो साथ ॥ २७

जोईए कोंण मुकावे जोरावर, ते कोए देखाडो नार ।
मारे मंदिर थकी कोंण मुकावसे, बस मारे आव्या आधार ॥ २८

जे कोई सुंदरी होए रे जोरावर, तेणे सीखवुं वसीकरणनी वात ।
विध विधनी तेणे विदद्या देखाडूं, जेणे बस थाए प्राणनो नाथ ॥ २९

देतां विदद्या कोई जोर न दाखे, तो सखी बल करी मुकावसे[4] केम ।
*इँद्रावतीने वस आव्या छों, हवे जेम जाणसे करसे तेम ॥ ३०

सेवा कंठमाला घालूं तेह सनंधनी, पोपट[5] करूं नीलडे[6] पांख ।
प्रेम तणा पांजरा मांहें घाली, हूं थाऊं साख[7] ने द्राख[8] ॥ ३१

हवे हूं कहीस तेम तूं करीस, मूने ब्रह दीधों अति जोर ।
तोहे तें मारी खबर न लीधी, में कीधां घणां बकोर[9] ॥ ३२

खार[10] हवे ते हूं वालूं रे वाला, धणां दिन हुती रुदें भ्याल ।
ज्यारे में तमने भीड्या जीवसूं, त्यारे रुदे ठरचूं ततकाल ॥ ३३

जीव सकोमल कूपल काढे, ख्यण नव लागी वार ।
फूले रंग फल फलयारे ततख्यण, रंगे रंग्यो विनता आधार ॥ ३४

*इंद्रावतीने एकांते हाथ आव्या, हवे जोजो अमारो बल ।
ते वसीकरण करूं रे तमने, जेणें अलगां न थाओ नेहेचल ॥ ३५

---

१. विवाद । २. खिंचा । ३. रस्सी । ४. छुड़ाएगा । ५. तोता । ६. हरे । ७. टपका आम । ८. अंगूर । ९. रुदन । १०. कांटा ।

हवे अधख्यण हूं अलगी न करूं, आतमाएं लीधी आतम सूं बाथ[१] ।
जीत्यो में तूंने जोर करी, देखतां सरव साथ ॥ ३६

तेजसूं तेज करूं रे मेलावो, जोतने जोत छे भेला ।
अंग सदीवें छे एकठां, परआतमने मेला ॥ ३७

अनेक वासनाओं तमें ओलखिओ, पण में ओलख्यो धाम धणी ।
तें मोसूं टाला घणुएं कीधां, पण में जीत्यो विध घणी ॥ ३८

वासना सकलने तमे परखोछो, जोई सरवेना चेहेन[२] रे ।
अंग ओलखी श्री धाम मधे, त्यारे देखो आंहीं ऊभी ऐन रे ॥ ३९

में तूंने परख्यो पूरे चेहेनें, अंग ओलख्यूं हूं अरधंग ।
में तूंने जीत्यो सघली पेरे, श्री धाम धणी हूं अभंग ॥ ४०

साथ सकलना वचन विचारी, चित ओलखो छो सर्व जाण ।
वचन पाधरा प्रगट कहे छे, जे पगला भरियां प्रमाण ॥ ४१

*श्रीजीना वचन में विचारिया, निध लीधी वचनोंनी सार ।
विविध पेरे में तूंने रे वाला, हूं जीती धाम धणी आधार ॥ ४२

चौद भवन जे सुकजीएं मथिया, वली पडदे[३] मथिया ब्रह्मांड तीत ।
तेहेनो सार तमे प्रगट करी रे, साथने दीधो रूडी रीत ॥ ४३

ते में सार तमतणों मथिया, तेहेनो सार लीधो आधार ।
हूं धणियांणी श्री धाम धणीनी, में जीत्यो अनेक वार ॥ ४४

हवे चरणे लागी अंग भीडी इंद्रावती, मूने मारे धणिएं कीधी सनाथ ।
मनना मनोरथ पूरण करी, वालें लीधी पोताने पास ॥ ४५

साथ हुतो जे *इंद्रावती साथे, वालें पूरी तेनी आस ।
सकल मनोरथ पूरण थया रे, फलिया ते रास प्रकास ॥ ४६

॥ प्रकरण ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ १७७ ॥ श्री षटरुती संपूर्ण ॥

१. गले मिलना । २. लक्षण । ३. ओट से ।

## अथ बारहमासी—राग मलार

पीउजी तमे सरदनी रुतें रे सिधाव्या, हांरे मारा अंगडामां ब्रह वन वाव्या[1] ।
ए वन ख्यण ख्यण कूपलियो[2] मूके, हां रे मारूं तेम तेम तनडूं सूके ।।
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ।। १

वाला हूं तो पीउ पीउ करी पुकारूं, पीउजी विना दोहेला घणां रे गुजारूं ।
हूं तो दुखडा मांहें ना मांहेंज मारुं, हूं तो निस्वांस अंग मां उतारूं ।।
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ।। २

वाला मारा भादरवे नदी नाला भरया, पीउजी निरमल जल रे उछलया ।
वाला मारा गिर डूंगर[3] खलखलया, पीउजी तमे एणे समे हजिए न मलया ।।
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ।। ३

वाला तमे चालतां ते चार दिनडा कह्या, हांरे अमें एणी रे आसाएं जोईने रह्या
वाला अमें वचन तमारा ग्रह्या, हवे ते अवध[4] ऊपर दिनडा गया ।।
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ।। ४

वाला मारा दिनडा आसोना आव्या, वन वेलडिएं रंग सुहाव्या ।
हांरे घेर मेघलियो बारे[5] रे सिधाव्या, पीउजी तमे एणे समे ब्रजडी कां न आव्या
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ।। ५

वाला मारा एक वार जुओ वनडूं आवी, हां रे चांदलिएं जोत चढावी ।
वेलडिएं वनसपती रे सोहावी, एणे समे ब्रहणियों कां विलखावी ।।
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ।। ६

।। प्रकरण ।। १ ।। चौपाई ।। ६ ।।

## हेमरुत—राग मलार

वाला मारा हेमालेथी[6] हेम रुत हाली, ए तो वेरण आवी रे ब्रहणियों ऊपर चाली
ब्रजडी वीटी[7] रे लीधी वचें घाली, पीउजी तमे हजिए कां बेठा आप झाली[8] ।।
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ।। १

---

१. बोए । २. कोंपलें । ३. पहाड़ । ४. अवधि । ५. बारह । ६. हिमालय । ७. घेर कर । ८. कड़ीप ।

रे ब्रेही तमे ब्रहणियोंने कां न संभारो, नंद कुंअर नेहडो छे जो तमारो ।
वाला मारा दोष घणों रे अमारो, पीउजी तमे एणी विधें अमने कां मारो ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ २

वाला मारा कारतकियो अंगडा कांपे, नाहोलिया[1] तारो नेहडो वाले मूने तापे ।
वाला मूने गुण अंग इंद्रियों रे संतापे, पीउजी बिना दुखडा ते सहू मूने आपे[2] ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ ३

वाला मारा टाढली[3] ते सहू ने वाए, हांरे अम ब्रहणियों ने अगिन न माए ।
ऊपर टाढो वावलियो[4] धमण[5] धमाए, ए रुत मूने सूतडा[6] सूल[7] जगाए ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ ४

वाला महीनो माघसरियो मद मातो, ते तो अमने मारसे रे जोनी जातो ।
तारा ब्रेहेणी रेहेसे रे वैराटमां वातो, अम ऊपर एम कां नाखी निघातो[8] ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ ५

रे वाला मारा सियालो[9] सुखणियोंमांगे, पीउजीनां सुखडामां सारी रात जागे ।
वालाजीने विलसे रे बड भागे, अमने तो मंदरियो मसांण[10] थई लागे ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ ६

॥ प्रकरण ॥ २ ॥ चौपाई ॥ १२ ॥

## सीत रुत—राग मलार

वाला रुतडी आवी रे सीतलडी लूखी,[11] वेलडियों वन जाए रे सर्वे सूकी ।
वसेकें वली वालें रे उतरियोंफूंकी, पीउजी तमे हजिए कां बेठा अमने मूकी ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ १

नाहोलिया निस्वांसा धमण धमाए, हांरे मारा अंगडामां अगिन न माए ।
वाला तारी झालडियों[12] केमें न झंपाए, पीउजी तारो एवडो स्यो कोप[13] केहेवाए
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ २

---

१. स्वामी । २. देता है । ३. ठंडी । ४. तूफान । ५. धौंकनी । ६. सोया । ७. पीड़ा । ८. चोट । ९. सर्दी । १०. श्मशान । ११. शुष्क । १२. ज्वाला । १३. गुस्सा ।

वाला मारा पोस महीनो रे आव्यो, हांरे अम दुखणियोने दुख पूरा लाव्यो ।
वेरीडो अम ऊपर आवीने झंपाव्यो, हांरे मारूं चीरी अंग मीठडे[1] भराव्यो ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ ३

वाला टाढी अगिननों वावलियो वाए, नीलाटली सूकीने भाखरियो थाए ।
पान फूल फल सर्वे झरी जाए, वाला अमें ए रुत केमें न खमाए ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ ४

वाला मारा आव्यो रे महीनों माह, जंगलियों बाले रे वनसपती दाहे[2] ।
दाहनां दाधां रुखडियो[3] केवा चरमाए, स्याम विना सुंदरियो एम सोहाए ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ ५

रे वाला मारे मंदरिएं आवीने आरोग, हांरे अम व्रहणियोंना टालो रे विजोग
हां रे सुंदर सेजडीनों आवी लेओ भोग, एतां सकल तमारो संजोग[4] ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ ६

॥ प्रकरण ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ १८ ॥

## वसंत रुत—राग मलार

वाला मारा आवी रे रुतडी वसंत, चंद्र मुख अंमृत रस रे झरंत ।
वाला वनडूं मोरचूं[5] रे कूपलियो करंत, एणे समे न आवो तो आवे मारो अंत ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ १

एणे समे अबीर गुलाल उछालियां, चोवा चंदन केसर कचोले[6] भरियां ।
नाहो[7] नारी रमे रे फागणिएं मलिया, एणे समे अमें तो घणूं कल कलिया ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ २

वाला वन फागणियों रे उछाले, पंखीडा करे रे कलोल बेठा माले[8] ।
हांरे अम ब्रहणियोंना चितडां चाले, आंगणडे ऊभियों पंथडो निहाले ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ ३

---

१. नमक । २. जलाता है । ३. वृक्ष । ४. मिलने के लिए । ५. मौर । ६. कटोरे भर ।
७. प्रीतम । ८. घोंसले ।

वाला वनडू कोल्यूं कामनी पामी करार, पसू पंखी हरख्या पाडे[1] रे पुकार ।
वाला व्रह भाजो रे व्रहणियोंना आवार, [2]एणे समेन आवो केम प्राणना आधार
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ ४

वाला मारा चैत्रतरिएं एणे मास, पीउजीसों करतां विनोद घणों हांस, ।
वन मांहें विविध पेरे रे विलास, ते अमें अहेनिस नाखूं[3] छूं निस्वास[4] ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ ५

वाला मूने एदिन केम करी जाए, पीउजी विना ख्यण बरसां सो थाए ।
वाला मूने विलखतां रैणी विहाय[5] पींउजी विना ए दुख केने न केहेवाए ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ ६

॥ प्रकरण । ४ ॥ चौपाई ॥ २४ ॥

## ग्रीषम रुत—राग मलार

वाला मारा आवी रे रुतडी ग्रीषम, अंम्रत[6] रस ल्यावी रे फल उतंम ।
वन फल पाकीने थया रे नरम, वाला तमे एणे समे न आवो केम ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ १

वाला मारा त्रट जमुना व्रंदावन, हां रे टाढी छांहेडी तले रे कदंम[7] ॥
पीउजी इहां देतां रे पावलिएं पदम,[8] ते अमे विलखूं छूं वालाने वदंन ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ २

वैसाख फूल्यो रे वेलडिएं वेहेकार,[9] भमरा मदया करे रे गुंजार ।
पंखीडा अनेक कला रे अपार, वाला वन विलस्या तणी आ वार ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ ३

वाला रवितपे अंबरियो[10] निरमल, पीउजी कारण वास्या[11] जल रे सीतल ।
वदन देखाडो रे वालैया सकोमल, पीउजी अमें पंथडूं निहालूं[12] पल पल ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ ४

---

१. करते हैं । २. इस बार । ३. निकालती । ४. आहें । ५. बीतती है । ६. आंम । ७. कदम्ब वृक्ष । ८. कमल । ९. महकते हैं । १०. अकाश । ११. वासी । १२. देखूं ।

वाला वनमां मेवो रे महीनों जेठ सार, एणे समे आवो रे नंदनाकुमार ।
पीउजी तमे सदा रे सुखना दातार, व्रजवधू विलखती पाडी रे पुकार ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ ५

सखियो तारा सुखडा संभारीने रुए,[1] हवे अम विजोगणियोंने कोण जुए[2] ।
पीउजी विना आंसूडा ते कोंण आवी लुए,[3] वाला पछे आवसो सूं अम मुए ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ ६

॥ प्रकरण ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ ३० ॥

## वर्षा रुत—राग मलार

पावसियो[4] आव्यो रे वर्षा रुत मांहें, भोमलडी ढांकी रे बादलिएँ छांहें ।
अंबरियो[5] गाजे रे वीजलडी वा वाए, पीउजी विना मारे अमने घाए ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ १

एणे समें भेला सहू घर वारी, अधख्यण अलगां न थाए नर नारी ।
परदेस होए ते पण आवेरे संभारी, पीउजी एवी केही अप्राप्त[6] अमारी ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ २

मेघलियों आवीने अषाढ धडूके,[7] सेरडियो[8] साम सामी रे ढलूके[9] ।
मोरलिया कोईलडी रे टहूंके, एणे समे कंथ[10] कामनियोंने केम मूके ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ ३

वाला मारा भोमलडी रे नीलाणी,[11] मेघलियों वली वली सींचे पांणी ।
वीजलडी चमके आभण[12] मांणी, पीउजी तमे एणे समे वेदना[13] न जांणी ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ ४

रे वाला जी श्रावणियों सलसलियो,[14] आंभलियोआवीने भोंमेंलडसडियों[15] ।
चहों दिस चमके गरजे गलियों, पीउडा तूं हजिए कां अमने न मलियो ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ ५

---

१. रोवें । २. देखे । ३. पोंछे । ४. वर्षा । ५. आकाश । ६. अयोग्यता । ७. गरजता है । ८. घटाएँ । ९. उमड़ आई । १०. पति । ११. हरी भरी । १२. आकाश । १३. पीड़ा । १४. गीलापन । १५. लिपटते हैं ।

पीउजी तमे पेहेली कां प्रीतडी देखाडी, माहेला मंदरियों कां दीधां रे उघाडी ।
पीउजी तमे अनेक रंगे रमाडी, हवे तो लेई आसमान भोमे पछाडी ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ ६

॥ प्रकरण ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ ३६ ॥

बारामासीनो कलस—राग मलार

वाला मारा षटरुतना बारे मास, हां रे तेना अहेनिस[१] त्रण से ने साठ ।
वाला तारी रोई रोई जोई में बाट, अम ऊपर एवडो कोप कीधां स्या माट ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ १

वाला मारा हुती रे मोटी तारी आस, जांणू अमने मूकसे नहीं रे निरास ।
ते तो तमे मोकल्यो[२] तमारो खवास,[३] तेणे तो आवी विछोडा[४] सांणसिएं मांस ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ २

रे वाला भलूं थयूं रे भ्रांतडी[५] भागी, हांरे तारे संदेसडे अमे जागी ।
हांरे एणे वचने रुदें आग लागी, हवे असें जाण्यूं चोकस अमने त्यागी ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ ३

रे ऊधव तूं भली रे वधामणी[६] लाव्यो, अमारे काजें सूली ने सांणसियो लेई आव्यो ।
ऊधव तें तो अक्रूड पर इंडूरे[७], चढाव्यो, ऊधव तें दुखडा घणूंज देखाड्यो ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ ४

रे ऊधवडा तूं एटलूं जाण निरधार, ऊधव तूंने नथी बीहीक[८] करतार ।
एणी मते पामीस नहीं तूं पार, तूं पण तारा धणीसों विछडीस आ वार ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ ५

रे ऊधव राख तूं कनें[९] तारूं डापण,[१०] पीउजी नहीं मूकूं अमें एवी पापण ।
ताताने मदिए वली वली तापण, सखियो हवे समझ्या संदेसडे आपण ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ ६

१. दिन रात । २. भेजा । ३. दूत । ४. नोच लिया । ५. भ्रम । ६. बधाई । ७. कलश । ८. भय । ९. पास । १०. सयानप ।

ऊधव तारे डापणिएं घणूं रे संतापी, रे मूरख तूंने ए मत कोंणे आपी ।
अमें तूंने जाण्यों नहीं एवो पापी, तें तो नाख्या अमारा अंगडा कापी[1] ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ ७
सखियो हवे दुखडा के ऊपर कीजे, आपणों *नंद कुंअर होए तो रीझे ।
आपणी वातें जदूनों राए न भीजे, सखियो ऊधव ने संदेसा स्या दीजे ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ ८
सखियों हवे आपोपूं सहूं कोई झालो, कान्हजी होए तो दौडी जईए चालो ।
ए* जदूराए[2]नहीं रे गोपियोनो वालो,सखियो हवे ऊधवने गुझडी कां आलो[3]॥
हों स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ ९
रे ऊधवडा अमारा धणी अम पासे, तारी मत लेई जारे तूं साथे ।
अधख्यण अलगोन थाए अमथी नाथ, ब्रह मांहें विलसूं वालैया संघात[4] ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ १०
रे अधवडा ब्रहमां नंदनो कुंअर, एणी अमकने[5] खरी रे खबर ।
ब्रहमां जोयूं लाधे ततपर, रे ऊधव अमें भूलूं केम अवसर ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ ११
रे* ऊधवडाअमारोधणीअममां गलियो, तम आवतां ते सांसो सरवे टलियो
ऊधव तारी वातें चित अमारो न चलियो, ब्रह वधारी ऊधव पाछो वलियो[6]
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ १२
सखियो हवे घरडा सहुए संभारो, रखे कोई वाला जीने दोस देवरावो ।
ए ब्रह मांहें ना मांहेज[7] मारो, सखियो एतो नहीं घर बार उघारो ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ १३
सखियो तमे मूको रे बीजी सहू वात, आपण ऊपर निसंक पडी रे निघात ।
दुखें केम मूकिऐ गोपीनों नाथ, हवे आपोपूं नाखो जेम रहे अख्यात[8] ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ १४

१. काट कर । २. श्री कृष्ण । ३. बताती हो । ४. साथ । ५. हमें । ६. लौटा । ७. अंदर ।
८. प्रसिद्ध ।

सखियो हवे विना घाए नाखो[1] आप मारी, वालाजीना व्रहनी वात संभारी ।
वसेकें वली राखो घर लोकाचारी, हवे एवी कठण कसोटो खमो[2] नारी ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ १५

सखियो हवे व्रहनी भारी रे उपाडो, अंग मायाना माया मांहें पछाडो ।
ए व्रह बीजा केहेने मा देखाडो, सखियो विना रखे कोंणे बार उघाडो ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ १६

सखियो मारो जीव जीवन मांहें भलियो, अमें माया ग्रही तोहे ते पलन टलियो ।
एवालो अम विना कोणे न कलियो[3], इंद्रावती कहे अमारो अमने मलियो ॥
हो स्याम पीउ पीउ करी रे पुकारूं ॥ १७

॥ प्रकरण ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ २३० ॥

इति श्री, महामति श्रीप्राणनाथजी 'तारतम बानी' का

तृतीय ग्रन्थ

॥ षटरुती संपूर्ण ॥

---

१. डालो । २. सहो । ३. पहचाना ।

निज नाम श्री कृष्ण जी, अनादि अक्षरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहित ॥

## ❀ कलस गुजराती ❀

रासनो प्रकास थयो, ते प्रकासनो प्रकास ।
ते ऊपर वली कलस[1] धरूं, तेमां करूं ते अति अजवास[2] ॥ १

मारा साथ सुणो एक वातडी, कह्यो सतनो में सार ।
ए सारनो सार देखाडी, जगवुं[3] ते मारा आधार ॥ २

श्री धणिएं आवी मूने धामथी, जगवी ते जुगतें[4] करी ।
ते विध सरवे हृदे अंतर, चित माहें चोकस धरी ॥ ३

मूने मेलो थयो मारा धणी तणो, ते वीतकनी कहूं विध ।
ते विध सरवे कही करी, देऊं ते घरनी निध ॥ ४

में जे दिन चरण परसिया[5], मूने कह्युं तेहज दिन ।
दया ते कीधी अति घणी, पण मूने जोर थयूं सुपन ॥ ५

मोहे समागम[6] पीउसों, वाले पूछियो विचार ।
आपोपूं[7] तमे ओलखी[8], प्रगट कहो प्रकार ॥ ६

आ मंडलतां तमे जोईयूं, कहो वीतकनी जे वात ।
आ भोमनो विचार कहो, ए सुपन के साख्यात ॥ ७

आ जोई जे तमे रामत, कहो रामत केही पर[9] ।
आ भोम केही तमे कोंण छो, कहां तमारा घर ॥ ८

---

१. शिखर (ज्ञान मंदिर का) । २. प्रकाश । ३. जगाऊं । ४. युक्ति से । ५. स्पर्श किया । ६. मिलन । ७. अपना आप । ८. पहचान कर ९. तरह ।

आ कीहे अस्थानक[1] तमे आवियां, जागीने करो विचार ।
नार तूं कोंण पीउ तणी, कहो एह लणो विस्तार ॥ ९

तमे वीतकनूं मूने पूछयूं, सुणो कहूं तेणी वात ।
आ मंडलतां[2] दीसे सुपन, पण थई लाग्यूं साख्यात ॥ १०

निकल्यूं न जाए ए मांहेंथी, क्यांहें न लाभे छेह[3] ।
एमां पग पंखीनों दीसे नहीं, कहूं सनंध[4] सरवे तेह ॥ ११

आ भोमने नव ओलखूं[5] नव ओलखूं मारूं आप ।
घर तणी मूने सुध नहीं, सांभरे नहीं मारो नाथ ॥ १२

आ मंडल दीसे छे पाधरा, एतां मूल विना विस्तार ।
रामतनो कोई कोहेडो, न आवे केमें पार ॥ १३

आ मंडल मोटी रामत घणी, जुओ ऊभो[6] केम अचंभ[7] ।
एणे पाईए[8] पगथी[9] जहां जोईए, तहां दीसे ते पांचे[10] थंभ ॥ १४

पांचे[11] ते जोईए ज्यारे जुजवा, न लाभे केहेनों पार ।
भेला ते करी वली जोईए, तो रची ऊभो संसार ॥ १५

मांहें थंभ एके थिर नहीं, फरे ते पांचे फेर ।
एनों फेरवणहार लाघे नहीं, मांहें ते अति अंधेर ॥ १६

पांचे ते फरे फेर जुजवा[12], थाए नहीं पग थोभ[13] ।
ए अजाडी[14] कोई भांतनी, ते नहीं जोवा[15] जोग ॥ १७

ए अजाडो बंध उथमें[16], बांधी नाखे तत्काल ।
द्रष्ट दीठें बंध पड़े, एहेवी देखीती जमजाल ॥ १८

काली ते रात कोई उपनी, सूझे नहीं सलसांध ।
दिवस तिहां दीसे नहीं, मांहें ते फरे सूरज चांद ॥ १९

दिवस नहीं अजवास नहीं, ए अंधेरना तिमर ।
एणे कोई सूझे नहीं, आ भोम आप न घर ॥ २०

---

१. स्थान । २. ब्रह्मांड । ३. पार । ४. विधि । ५. पहचानूं । ६. खड़ा । ७. हैरानी । ८. स्तम्भ । ९. सीढ़ी । १०. ११. पांच तत्व । । १२. अलग । १३. ठहरने की जगह । १४. उद्दंड । १५. देखने । १६. उलटे ।

अउट[1] कोट सूरज फरे, फरे रात ने प्रभात ।
एकबीस ब्रह्मांड इंडा मधे, एक मांहे न थाए अजवास ॥ २१
सुध एणे थाए नहीं, सामूं रुदे थाए अंधेर ।
अजवास ए पोहोंचे नहीं, दीठे चढे सामा फेर ॥ २२
फरे षटरुत उस्नकाल,[2] बरसा ने सीतकाल ।
नक्षत्र तारे फरे मंडल, फरे जीवने जंजाल ॥ २३
वाए बादल गाजे विजली, जलधारा न समाए ।
फेर खाए पांचे पाधरा, मांहेंना मांहें समाए ॥ २४
पांचे ते थई आवे पाधरा, जाणूं थासे ते प्रलेकाल ।
बल देखाडी आपणूं, थई जाए पंपाल[3] ॥ २५
पांचे ते थई आवे दोडतां, देखाडवा आकार ।
ततख्यण ते दीसे नहीं, परपंच[4] ए निरधार ॥ २६
ए पांचे थकी जे उपना, दीसे ते चौदे भवन ।
जीवन मांहें लाधे नहीं, जेनी इछाए उतपन ॥ २७
एहनूं मूल लाधे नहीं, ऊभो ते केणी अदाए[5] ।
मांहें संध कोई सूझे नहीं, एमां दिवस न देखूं क्यांहें ॥ २८
सुर असुर मांहें फरे, पसू पंखी मनष[6] ।
मछ कछ वनराए फरे, फरे जीव ने जंत ॥ २९
ग्याननी इहां गम नहीं, सबद न पामे सेर ।
ग्यान दीवो तहां सूं करे, ब्रह्मांड आखो अंधेर ॥ ३०
कोहेडो काली रातनो, एमां पग न काढे कोए ।
अनेक करे अटकलो,[7] पण बंध न छूटे तोहे ॥ ३१
तिमर घोर अंधेर काली, अने अंधेरनो नही पार ।
मोंह लगे मोहजल भरचूं, असत ने आसाधार[8] ॥ ३२

---

१. साढ़े तीन । २. गर्मी । ३. असत्य । ४. छल । ५. ढंग । ६. मनुष्य । ७. अनुमान । ८. असाधारण ।

पांचे ते उतपंन मोहनी, मोह तो अगम अपार ।
नेत नेत कही निगम वलिया, आगल सुध न पडी *निराकार ॥ ३३

एमां पग पंथज[1] जोवंतां, बंध पड्या ते जाण सुजाण ।
अनेक वचन विचार कही, नेठ[2] लेवाणां निरवाण[3] ॥ ३४

एमां जेम जेम जोई जोई जोईए, तेम तेम बंध पडतां जाए ।
अनेक उपाए जो कीजिए, प्रकास केमें नव थाए ॥ ३५

अनेक बुध इहां आछटी,[4] अनेक फरवया मन ।
अनेक क्रोधी काल क्रांत थईने, भाज्या ते हाथ रतन ॥ ३६

किहां थकी अमें आवियां, अने पड्या ते अंधेर मांहें ।
जीवन जोत अलगी थई, मांहेंथी न केमे निसराए ॥ ३७

ए मंडल धणी त्रैगुण कहावें, जाणूं इहांथी टलसे अंधेर ।
पार वाणी बोले अटकलें, तेणे उतरे नहीं फेर ॥ ३८

एनों वार उघाडी[5] पाधरूं, चाली न सके कोए ।
ब्रह्मांडना जे धणी कहावें, ते बांध्या रामत जोए ॥ ३९

बीजा फरे छे फेरमां, एने फेर नहीं लगार ।
पण बांध्या बंध जे खरी गांठें, आव्या ते मांहें अंधार ॥ ४०

ए जेणे बांध्या तेणे छूटे, तिहां लगे न आवे पार ।
पार सुध पामें नहीं, कोई कोहेडो अंधार ॥ ४१

बुध विना इहां बंधाई, पडिया ते सहू बंध मांहें ।
ए वचन सुणी करी, एणे समे ते ग्रही मारी बांहें ॥ ४२

बांहें ग्रही बेठी करी, आवेस दीधों अंग ।
ते दिन थीं दया पसरी, पल पल चढते रंग ॥ ४३

ओलखी *इंद्रावती, वालें प्रगट कह्यूं मारूं नाम ।
आ भोम भरम भाजी करी, देखाड्या घर श्री धाम ॥ ४४

१. राह । २. निश्चित । ३. मोक्ष । ४. प्रकट हुई । ५. खोल कर ।

घर देखाडी जगवी, आप आवी आ वार ।
कर ग्रहीने कंठ लगाडी, त्यारे हूं उठी निरधार ।। ४५

भोम भली खेडी[1] करी जल सींचियूं आधार ।
वली बीज मांहें बावियूं,[2] सुणो सणगानों[3] प्रकार ।। ४६

अंधेर भागी असत उड्यूं, उपनूं तत्व तेज ।
जनम जोत एवी थई, जे सूझे रेजा[4] रेज ।। ४७

कमाड[5] छाड्या कोहेडे, उघाड्या सरव वार ।
रामत थई सरव पाधरी, ए अजवालूं अपार ।। ४८

सणगूं उठ्यूं ते सतनों, असत भागी अंधेर ।
आपोपूं में ओलख्यूं, भाग्यो ते अवलो[6] फेर ।। ४९

वालें ओलखीने आप मोसूं, कीधूं ते सगपण सत ।
सनकूल[7] द्रष्टें हूं समझी, आ जाण्यूं जोपे असत ।। ५०

सनंध सरवे कही करी, ओलखाव्या एधाण[8] ।
हवे प्रगट थई हूं पाधरी, मारी सगाई प्रमाण ।। ५१

हवे साथ मारो खोली काढूं, जे भली गयो रामत मांहें ।
प्रकास पूरण अमकने,[9] हवे छपी न सके क्यांहें ।। ५२

ओलखी साथ भेलो करूं, द्रढ करी देऊं मन ।
रामत देखाडी जगवुं कही ते प्रगट वचन ।। ५३

प्रकरण ।। १ ।। चौपाई ।। ५३ ।।

## रामत देखाडी छे

आ रामतना[10] तमने, प्रगट कहूं प्रकार ।
आ भोमना बंध छोडी देऊं, जेम जुओ जोपें करार ।। १

सुपनतणी जे रामत, रची ते अति अख्यात[11] ।
मूलबुध विसरी गई, जाणे सुपन नहीं साख्यात ।। २

---

१. जोतना । २. बोया । ३. अंकुर । ४. जर्रा । ५. किवाड़ । ६. उल्टा । ७. प्रसन्न । ८. निशानी । ९. हमारे पास । १०. खेल (दुनिया) । ११. अनोखी ।

पूरूं मनोरथ तमतणां, उघाडूं रामतना वार ।
रामत देखाडी करी, करूं सतनो विस्तार ॥ ३

अरध साथ रह्यो अटकी, जेणे जोयानों हरष अपार ।
स्वांग[1] देखाडी विध विधना, पछे देऊं ते सतनों सार ॥ ४

वात सुणो मारा वालैया, साथें दीठां ते दुख संसार ।
केम थाए साथ मांहूं मारो, जहां ऊभी इंद्रावती नार ॥ ५

तमे बांकी[2] ते वाटें चलवया, विसमां[3] ते केम चलाए ।
हूं ग्रही देऊं धाम धणी, तो सुख मूने थाए ॥ ६

हवे जागी जुओ मारा साथजी, रामत छे ब्रह्मांड ।
जोपे जुओ नेहेचितसूं,[4] मध्य भरथजीने खंड ॥ ७

जहां बाविए[5] ब्रक्ष उपजे, जेनों फल बांछे[6] सहू कोए ।
बीज जेवुं फल तेवुं, करत कमाई जोए ॥ ८

भोम भली भरथ खंडनी, जहां निपजे[7] निध निरमल ।
बीजी सरवे भोम खारी, खारा ते जल मोहजल ॥ ९

ए मधे जे पुरी कहावे, नौतन जेहेनूं नाम ।
उत्तम चौद भवनमां, जहां वालानों विश्राम ॥ १०

रामत घणूं रलियामणी,[8] तमे मांगी मन करी खंत ।
विध सरवे कहूं तमने, जोपे जुओ नेहेचित ॥ ११

रामत जोईएजी, जोवा आव्या छूं जेह ।
मांगी आपण धणी कंने, आ देखाडे छे तेह ॥ १२

मोहोरा ते दीसे सहू जुजवा, अने जुजवी मुखवाण ।
स्वांग काछे सहू जुजवा, जाणें दीसंतां प्रमाण ॥ १३

विध विधना वेष ल्यावें, जाणे रामत निरवाण ।
ब्राह्मण खत्री बैस सूद्र, भली ते राणें राण ॥ १४

---

१. नकली रूप । २. टेढ़ी । ३. ऊबड़-खाबड़ । ४. निश्चित । ५. बोने से । ६. चाहे । ७. उपजे । ८. भली ।

मांहों मांहें सगा समंधी, मांहें कुटंबनों वेहेवार ।
हंसे हरखे रूए सोके, [1]चौद विदया वरण चार ॥ १५
अठारे वरण[1] एणी विधें, लोभे लाग्या करे उपाए ।
विना अगनी पर जले, अंग काम क्रोध न माए ॥ १६
अनेक सेहेर बाजार चोटा,[2] चोक चोवटा[3] अनेक ।
अनेक कसवी[4] कसव करतां, हाट पीठ वसेक ॥ १७
स्वांग सरवे सोभावीने, करे हो हो कार ।
कोई मांहें आहारें खाधां, कोई खाधां अहंकार ॥ १८
कोई मांहें वेहेवारिया[5], कोई राणां राए ।
कोई मांहें रांक[6] रोवतां, ए रामत एम रमाए ॥ १९
कोई पौढे पलंग कनकने,[7] कोई ऊपर ढोले वाए ।
वातों करतां जी जी करे, ए रामत एम सोभाए ॥ २०
कोई बेसे पालखी,[8] कोई उपाडी[9] उजाए ।
कोई करे छत्र छाया, रामत एमज थाए ॥ २१
मांहों मांहें सनमंध करतां, उछरंग अंग न माए ।
अबीर गुलाल उडाडतां, सेहेरोंमां फेरा खाए ॥ २२
आभ्रण[10] पेहेरी अस्व चढे, कोई करे छाया छत्र ।
कोई नाटारंभ करे, कोई बजाडे बाजंत्र ॥ २३
कोई सीढी बांधी आवे सामा, करे ते पोक[11] पुकार ।
ब्रह बेदना अंग न माए, पीटे मांहें बाजार ॥ २४
देहेन[12] हाथें दिए पोते, रुदन करे जलधार ।
सगा सनमंधी सहू मली, टलवले[13] नर नार ॥ २५
कोई मांहें जनम पामे, कोई पामे मरन ।
कोई मांहें हरषसों, कोई सोक रुदन ॥ २६

---

१. चौदह-विद्या चार वर्ण । २. चौक । ३. चबूतरा । ४. कारीगर । ५. व्यापारी । ६. गरीब । ७. सोने । ८. पालकी । ९. उठा कर । १०. आभूषण । ११. रोना । १२. जलाना । १३. दुःखी होते हैं ।

खरचे खाधा अहंमेवें, मांहें मोटा थाए ।
दान करी कीरत कहावे, ए रामत एम रमाए ।। २७
कोई किरपी कोई दाता, कोई जाचक[१] केहेवाए ।
कोईना अवगुण बोले, कोईना गुण गाए ।। २८
कोई चढी चकडोल[२] बेसे, आगल तुरी गज पाएदल[३] ।
विध विधना बाजंत्र बाजे, जाणे राज नेहेचल ।। २९
साम सामी करे सेन्या, भारथ[४] करे लोह अंग ।
अहंकारें आकार पछाडें, नमे नहीं अभंग ।। ३०
कोई जीते कोई हारे, हरख सोक न माए ।
दिसा सरवे जीती आवे, ते प्रथीपत केहेवाए ।। ३१
कोई भरचा लेई भाकसी,[५] उथमे[६] बंध बंधाए ।
मार माथे पडे मोहोकम,[७] रामत एणी उदाए ।। ३२
जीत्या हरखे पौरसे,[८] सूरातन अंग न माए ।
हारचा तिहां सोक पामे, करे मुख त्राहि त्राहि ।। ३३
कोई मांहें रोगिया, अने कोई मांहें अंध ।
कोई लूला कोई पांगला, रामत एह सनंध ।। ३४
कोई मांहें फकीर फरतां, उदम नहीं उपाए ।
उदर कारण कष्ट पामे, भीखें पेट न भराए ।। ३५

।। प्रकरण ।। २ ।। चौपाई ।। ८८ ।।

### रामतमां[९] वली रामत

ए रामत मांहें जे रामतो, तेनों न लाभे पार ।
ए वेषों मांहें वली वेष सोभे, स्वांग सहू संसार ।। १
कोई वेष जो साध कहावे, कोई चतुर सुजाण ।
कोई वेष जो दुष्ट कहावे, कोई मूरख अजाण ।। २

१. भिखारी । २. हिंडोला । ३. पैदल । ४. युद्ध । ५. जेल । ६. उलटे । ७. मारी । ८. पौरुष । ९. खेल ।

अनेक पगथी[१] परब परवा, दया दान देवाए ।
देखाडूं सहू करी सागर, मांहेंना माहें समाए ॥ ३

अनेक देहरा अपासरा,[२] मांहें मुनारा मसीत[३] ।
तलाव कुआ कुंड बावरी, मांहें विसामां[४] कै रीत ॥ ४

कै जुगतें जगन करतां, कै जुगतें उपचार ।
कै जुगतें धरम पालें, पण हिरदें घोर अंधार ॥ ५

कै जुगतें सिध साधक, कै जुगतें संन्यास ।
कै जुगतें देह दमे, पण छूटे नहीं जमफांस ॥ ६

कै जुगतें वेराग वरतें, कै जोग पाले सिध ।
मठवाले पिंड पाले, पण नहीं परमनी निध ॥ ७

आपने नव ओलखे,[५] नव ओलखे परमेस्वर ।
तो पार ते केम पामे, जहां सुध न पोते घर ॥ ८

षटचक्र नाडी पवन, साधे अजपा[६] अनहद[७] ।
कै त्रवेनी त्रकुटी, जोती[८] सोहं राते सबद ॥ ९

कोई षटदरसनी कहावें, धरे ते जुजवा वेष ।
पारब्रह्मने पामे नहीं, रुदे अंधेरी वसेक ॥ १०

श्रीपात पंडित ब्रह्मचारी, भट वेदिया[९] वेदांत ।
पुराण जोई सरवे पडिया, परमहंस सिधांत ॥ ११

अलप[१०] आहारी निद्रा निवारी, सबद सत विचारी ।
आचारीने नेम धारी, पण मूके नही अंधारी ॥ १२

संत महंत अनेक मुनिवर, देखीतां डिगंमर[११] ।
जाए सहुए प्रघल पूरे, कापडी कलंदर ॥ १३

सीलवंती सती कहावे, आरजा[१२] अरधांग ।
जती बरती पोसांगरी,[१३] ए अति सोभावें स्वांग ॥ १४

---

१. पग-पग । २. जैन मठ । ३. मस्जिद । ४. विश्राम-स्थान । ५. पहचाने । ६. लगातार जाप । ७. योगियों को सुनाई पड़ने वाला नाद । ८. ज्योति । ९. वेद जानने वाले । १०. कम । ११. नंगे साधु । १२. आर्या । १३. नशे वाले साधु ।

मलक[१] मुल्ला मलंग जिंदा, बांग दे मन धीर ।
पाक थै थै सहुए पढिया, मीर पीर फकीर ।। १५

कै करामात कोटल, ओलिया[२] आलम ।
बोदला बेकेद सोफी, जाणी करे जुलम ।। १६

अनेक मांहें धरम पाले, पंथ प्रगट थाए ।
आंधलाना जेम संग चाले, ए पाखंड एम रचाए ।। १७

रमें मांहों मांहें रब्दें, करे परसपर[३] क्रोध ।
मछ गलागल मांहें सघले, मूके नहीं कोई ब्रोध ।। १८

।। प्रकरण ।। ३ ।। चौपाई ।। १०६ ।।

## पंथ पैंडानी खेंचाखेंच

कोई कहे दान मोटो, कोई कहे ग्यान ।
कोई कहे विग्यान मोटो, एम वदे सहु उनमान[४] ।। १

कोई कहे करम मोटो, कोई कहे मोटो काल ।
कोई कहे अगम मोटो, एम रमें सहू पंपाल[५] ।। २

कोई कहे तीरथ मोटो, कोई कहे मोटो तप ।
कोई कहे सील मोटो, कोई कहे मोटो सत ।। ३

कोई कहे विचार मोटो, कोई कहे मोटो व्रत ।
कोई कहे मत मोटी, एम वदें[६] कै जुगत ।। ४

कोई कहे करनी मोटी, कोई कहे मुगत ।
कोई कहे भाव मोटो, कोई कहे भगत ।। ५

कोई कहे कीर्तन मोटो, कोई कहें श्रवन ।
कोई कहे वंदनी[७] मोटी, कोई कहे अरचन[८] ।। ६

कोई कहे ध्यान मोटो, कोई कहे धारण ।
कोई कहे सेवा मोटी, कोई कहे अरपण ।। ७

१. बादशाह । २. मुसलमान ऋषि । ३. आपस में । ४. अनुमान । ५. झूठ । ६. बोलें । ७. स्तुति । ८. पूजा ।

कोई कहे स्वांत[1] मोटी, कोई कहे मोटो पण ।
रमें सहुए निद्रा माहें, रुदें अंधारूं अति घण ॥ ८

कोई कहावे अप्रस[2] अंगे, कोई निवेदन ।
कोई कहे अमे नेम धारी, पण मूके नहीं मैल मन ॥ ९

कोई कहे सत संगत मोटी, कोई कहे मोटो दास ।
कोई कहे विवेक मोटो, कोई कहे विस्वास ॥ १०

कोई कहे सदासिव मोटो, कोई कहे आदनाराण ।
कोई कहे आदि सक्त[3] मोटी, एम करे ताणोंताण[4] ॥ ११

कोई कहे आतम मोटी, कोई कहे परआतम ।
कोई कहे अहंकार मोटो, जे आदनों उतपन ॥ १२

कोई कहे सकल व्यापी, दीसंतो सहू ब्रह्म ।
कोई कहे ए निरगुण न्यारो, आ दीसे छे सहू भरम ॥ १३

कोई कहे सुंन[5] मोटी, कोई कहे निरंजन ।
सार अरथ सूझे नहीं, पछे वादें वढें[6] वचन ॥ १४

कोई कहे आकार मोटो, कोई कहे निराकार ।
कोई कहे मांहें जोत मोटी, एम वढें भरचा विकार ॥ १५

कोई कहे पारब्रह्म मोटो, कोई कहे परषोतम ।
वेदने वाद अंधकारें, वादें बढतां धरम ॥ १६

प्रगट पंपाल दीसे रमतां, अति घणों अंधेर ।
कहे अमें सांचा तमे झूठा, एम फरे ते अवले[7] फेर ॥ १७

पंथ सहूना एहज पैया, जे वलगा[8] मांहें वेराट ।
ए विध कही सहू विगतें,[9] ए रच्यो माया ठाट ॥ १८

परपंचें सहू पंथ चाले, कहे लेसूं चरण निवास ।
ए रामतना जे जीव पोते, ते केम पामे साख्यात ॥ १९

---

१. शान्ति । २. शुद्ध । ३. शक्ति देवी । ४. खेंचा-खेंच । ५. शून्य । ६. लड़ें । ७. उल्टे । ८. उलझे । ९. विवरण ।

कोई भेरव कोई अगिन, कोई करवत ले ।
पारब्रह्मने पामे नहीं, जो तिल तिल कापे देह ॥ २०

अनेक स्वांग रमे जुजवा, असत ने अप्रमाण ।
मूल विना जे पिंड पोते, ते केम पामे निरवाण[1] ॥ २१

॥ प्रकरण ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ १२७ ॥

वेराटनी जाली

अनेक किव इहां उपजे, वेराट मुख वखाण ।
वचन कही मांहें थाए मोटा, पण पामे नहीं निरवाण ॥ १

बोले सहू बेसुधमां, कोई वचन काढे विसाल ।
उतपन सरवे मोहनी, ते थई जाए पंपाल ॥ २

वेराट कहे मारो फेर अवलो, मूल छे आकास ।
डालों पसरी पातालमां, एम कहे वेद प्रकास ॥ ३

दोडे सहू कोई फलने, ऊंचा चढे आसमान ।
आकास फल मले नहीं, कोई विचारे नहीं ए वाण ॥ ४

फल डाल अगोचर, आडी अंतराए पाताल ।
वेराट वेद बंने कोहेडा, गूंथी ते रामत जाल ॥ ५

विध बंने[2] दीसे विगतें, नाभ ने वली मुख ।
गूंथी जालों बंने जुगतें, मान लीधां दुख सुख ॥ ६

बंने कोहेडा[3] बे भांतना, वेराट ने वली वेद ।
ए जीव जालों जाली बांध्या, जाणे नहीं कोई भेद ॥ ७

कडी न लाधे केहेने, ए जालोंनी जिनस[4] ।
त्रगुणने लाधे नहीं, तो सूं करे मूढ मनिस[5] ॥ ८

वेखाडवा तमने, कोहेडा कीधां एह ।
उखेली[6] फेर टालों अवलो, जेम छल न चाले तेह ॥ ९

---

१. मुक्ति । २. दोनों । ३. उलझन । ४. जाति । ५. मनुष्य । ६. उखाड़ दूं ।

तांण अवलां अतांग[1] पूरा, आमलो अवलो एह ।
आतमने खोटी करे, सांची ते देखे देह ॥ १०
करे सगाई देहसों, नहीं आतमनी ओलखांण ।
सनमंध पाले देहसों, ए मोहजल अवलो तांण ॥ ११
मरदन[2] अंगे चंदन चरचें, प्रीते प्रीसे[3] पाक ।
सेज्या समारी सेवा करे, जाणे मूल सनमंध साख्यात ॥ १२
आतम टले ज्यारे अंगथी, त्यारे अंग हाथें बाले ।
सेवा करतां जे वालपणें[4], ते सनमंध एवो पाले ॥ १३
हाथ पग मुख नेत्र नासिका, सहू अंग तेहना तेह ।
तेणे घर सहू अभडावियूं[5], सेवा ते करतां जेह ॥ १४
अंग सरवे वाला लागे, विछोडो ख्यण न खमाए ।
चेतन चाल्या पछी ते अंग, उठि उठि खावा धाए ॥ १५
सगे मेंल्यूं ज्यारे सगपण, त्यारे अंगसूं उपनूं वेर ।
ततख्यण तेणे भोकी बाली[6], वेहेंची[7] लीधूं घेर ॥ १६
जीव जीवोंना सनमंध मेली, करे सगाई आकार ।
वेराट कोहेडा एणी विधें, अवला ते कै प्रकार ॥ १७
एम अवलो अनेक भांतें, वेराट नेत्रों अंध ।
चेतन विना कहे छोत लागे, वली तेसूं करे सनमंध ॥ १८
एक वेषज विप्रनो, बीजो वेष चंडाल ।
छवे[8] छेडे छोत लागे, संग बोले तत्काल ॥ १९
वेष अंतज[9] रुदें निरमल, रमे मांहें भगवान ।
देखाडे नहीं केहेने, मुख प्रकासे नहीं नाम ॥ २०
अंतराए नहीं एक ख्यणनी, सनेह सांचे रंग ।
अहेनिस द्रष्ट आतमनी, नहीं देहसूं संग ॥ २१

---

१. अथाह । २. मालिश । ३. परोसना । ४. प्रेम से । ५. छूत लगाना । ६. जला कर । ७. बांटना । ८. छूने । ९. शूद्र ।

विप्र वेष वेहेर[1] द्रष्टि, खट करम पाले वेद ।
स्याम व्रण सुपने नहीं, जाणे नहीं ब्रह्म भेद ॥ २२
उदर कुटम कारणे, उतमाई देखाडे अंग ।
व्याक्रण वाद विवादना, अरथ करे कै रंग ॥ २३
हवे कहो केने छवे छेडे, अंग लागे छोत ।
अधमतम विप्र अंगे, चंडाल अंग उदद्योत २४
ओलखाण सहूने अंगनी, आतमनी नहीं द्रष्ट ।
वेराटनों फेर अवलो, एणी विधें सहू सृष्ट ॥ २५
ए जुओ अचरज अदभुत, चाल चालें संसार ।
ए प्रगट दीसे अवलो, जो जुओ करी विचार ॥ २६
सतने असत कहे, असत सत करी जाणे ।
ते विध कहीस हूं तमने, अवलो एह ए धाणे[2] ॥ २७
आकारने निराकार कहे, निराकारने आकार ।
आप फरे सहू देखे फरतां, असतने ए निरधार ॥ २८
मूल विना वेराट ऊभो, एम कहे सहू संसार ।
तो भरमना जे पिंड पोते, ते केम कहिए आकार ॥ २९
आकार न कहिए तेहेने, जेहेनो ते थाए भंग ।
काल ते निराकार पोते, आकार सच्चिदानंद ॥ ३०
म्रगजल द्रष्टें न राचिए,[3] जेहेनूं ते नाम परपंच ।
ए छल छे माया तणो, रच्यो ते अवलो संच ॥ ३१

॥ प्रकरण ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ १५८ ॥

### वेदनी जाली

वेद मोटो कोहेडो, जेहेनी गूंथी ते झीणी जाल ।
कांईक संखेपें[4] कही करी, देऊं ते आंकडी[5] टाल ॥ १

१. बाह्य । २. निशानी । ३. मग्न होवें । ४. संक्षेप । ५. गांठ ।

वेराट आकार सुपननों, ब्रह्मा ते तेहेनी बुध ।
मन नारद फरे मांहें, वेदें बांध्या बंध बेसुध ॥ २

लगाड्या सहू रब्दें,[1] व्याक्रण वाद अंधकार ।
एणी बुधें सहू बेसुध कीधां, विवेक टाल्या विचार ॥ ३

बंध बांध्या *बेदव्यासे, वस्त मात्रना नाम बार ।
ते वाणी वखाणी[2] व्याक्रणनी, छलवा[3] आ संसार ॥ ४

बारे गमां[4] वोलतां, एक अख्यर एक मात्र ।
ते बांध बत्रीस श्लोकमां, एवो छल कीधों छे सास्त्र ॥ ५

लवा लवाना अरथ जुजवा, द्वादसना प्रकार ।
मूल अरथने मुझवी[5], बांध्या अटकलें अपार ॥ ६

अरथने नाखवा[6] अवलो,[7] गमोंगमां ताणे ।
मूढोंने समझांववा, रेहेस[8] वचमां आणें ॥ ७

एवी आंकडियों अनेक मांहें, ते ताणे गमां बार ।
रंचक रेहेस आंणी मधे, बांध्या बुधें विचार ॥ ८

अख्यर एक बारे गमां बोले, एवा श्लोक मांहें बत्रीस ।
ए छल आंणी अरथ आडो, खोले[9] छे जगदीस ॥ ९

एवा छल अनेक अरथ आडा, ते अरथ मांहें कै छल ।
अख्यर[10] अरथ भावा अरथ आडो, पछे करे भावा अरथ अटकल ॥ १०

ते बेसे पंडित विस्नु संग्रामे, एक कानाने कडका थाए ।
मांहों मांहें वढीं[11] मरे, एक मात्र न मेलाए ॥ ११

वादें वाणी सीखे सूरा, सुध बुध जाए सान ।
स्वांत न आवे सुपने, उपजे क्रोध गुमान ॥ १२

ते वाणी व्यासे कीधी मोटी, दीधूं छलने मान ।
तेमां पंडित ताणोताण करे, मांहें अहंमेव[12] ने अग्यान ॥ १३

---

१. वाद-विवाद । २. सराही । ३. छला गया । ४. ओर । ५. उलझा कर । ६. डालने । ७. उलटा । ८. गूढ़ शब्द । ९. ढूंढे । १०. शब्द ११. कट । १२. अहंकार ।

ए छल पंडित भणीने,[१] मान मूढोंमां पामे ।
ए मूढ पंडित सहू छलना, भूलव्या एणी भोमे ॥ १४
आ प्रगट जे प्राकृत, जेमां छल कांई न चाले ।
एमां अरथ न थाए अवलो, ते पंडित हाथ न झाले ॥ १५
आ पाधरी वाणी मांहें प्रगट, एक अरथ नव दाखे ।
वचन वलाको त्यारे आणे, ज्यारे छलमां नाखे ॥ १६
ए छल रामत जेहेनी ते जाणे, बीजी रामत सहू छल ।
ए छलना जीव न छूटे छलथी, जो देखो करतां बल ॥ १७
पेहेली मुझवण[२] कही वेराटनी, बीजी वेदनी मुझवण ।
ए संखेपे[३] कही में समझवा, ए छल छे अति घन ॥ १८
मुख उदर केरा कोहेडा, रच्या ते मांहें सुपन ।
सुध केहेने थाए नहीं, मांहें झीले[४] ते मोहना जन ॥ १९
वेराट वेदें जोई करीं, सेवा ते कीधी एह ।
देव तेहेवी पातरी[५] संसार चाले जेह ॥ २०
बोल्या वेद कतेब जे, जेहेनी जेटली मत ।
मोह थकी जे उपना,[६] तेहेने ते ऐ सहू सत ॥ २१
लोक चौदे जोया वेदें, निराकार लगे वचन ।
उनमान आगल कही करी, वली पडे ते मांहें सुंन ॥ २२
प्रगट देखाडूं पाधरा, पांचे ते जुजवा तत्व ।
रमे सहू मन मोह मांहें, सहू मननी उतपत ॥ २३
सकल मांहे व्यापक, थावर ने जंगम ।
सहू थकी ए असंग अलगो, ए एम कहावें अगंम ॥ २४
दसो दिसा भवसागर, जुए ते एह सुपन ।
आवरण पाखल[७] मोहनूं, निराकार कहावे सुंन ॥२५

१. पढ़ कर । २. उलझन । ३. संक्षेप । ४. मग्न । ५. शिष्य । ६. उत्पन्न ७. आसपास ।

ए ब्रह्मांडनो कोई कोहेडो, रामत चौदे भवन ।
सुर असुर कै अनेक भांते, छलवा छल उतपन ।। २६

वनसपती पसु पंखी, मनख जीव ने जंत ।
मछ कछ जल सागर साते, रच्यो सहू परपंच ।। २७

जीवों मांहें जनस जुजवी, उपनी तें चारे खान ।
थावर जंगम सहू मलीं, लाख चौरासीं निरमान ।। २८

कोई *वैकुंठ कोई *जमपुरी, कोई *स्वर्ग *पाताल ।
रमे पांचेना मांहें पुतला, बीजा सागर आडी पाल ।। २९

ए रामतनो बेपार करे, तेहेने माथे जमनों दंड ।
कोईक दिन स्वर्ग सोंपी, पछे नरक ने कुंड ।। ३०

तेरे लोकें आंण फरे, *संजमपुरी सिरदार ।
जे जाणे नहीं जगदींसने, ते खाए मोहोकम मार ।। ३१

ए रामतनी लेव देवण[1] मेली, करे वैकुंठनों बेपार ।
ए जीवोंनी मोक्ष सतलोक, कोई पार निराकार ।। ३२

चौदलोक इंडा मधे, भोम जोजन कोट पचास ।
*अष्ट कुली परवत जोजन, लाख चौसठ वास ।। ३३

पांच तत्व छठी आतमां, चार वरणमां ए मत ।
ए निरमाण[2] बांधीने, लेई सुपन कीधूं सत ।। ३४

जोया[3] ते साते सागर, अने जोया ते साते लोक ।
पाताल साते जोईया, जाग्या पछी सहू फोक ।। ३५

।। प्रकरण ।।६ ।। चौपाई ।। १९३ ।।

## अवतारोंना प्रकरण

एह छलतां एवो हुतो, जेमां हाथ न सूझे हाथ ।
द्रष्ट दीठे[4] बंध पडे, तेमां आव्यो ते सघलो साथ ।। १

---

१. देना । २. बनावट । ३. देखा । ४. देखने से ।

ते माटे *वालेंजीएं, आवीने छोड्यो साथ ।
बीज ल्यावी घर थकी[१] कीधों जोतनों प्रकास ।। २

ए रामत करी तम माटे, तमे जोवा आव्या जेह ।
रामत जोई घर चालसूं, वातों ते करसूं एह ।। ३

हवे चौद लोक चारे गमां, में मथ्या जोई वचन ।
मोहजल सागर मांहेंथी, काढ्या ते पांच रतन ।। ४

पेहेलां कह्या में साथने, पांचे तणां ए नाम ।
*सुकदेव ने *सनकादिक, *महादेव भगवान ।। ५

*नारायण लखमी विस्नु मांहें, विस्नु थकी उतपन ।
अंग समाए अंगमां, ए नहीं वास्ना अन्य ।। ६

*कबीर साखज पूरवा, लाव्यो ते वचन विसाल ।
प्रगट पांचे ए थया, बीजा सागर आडी पाल ।। ७

वली एक कागल काढिया, *सुकदेवजीनों सार ।
हदियोंना कोहेडा[२], बेहदी समाचार ।। ८

तमे रामत जोवा कारणे, इछा ते कीधी एह ।
ते माटे सहू मापियूं, आ कह्यूं कौतक[३] जेह ।। ९

अमे रामत खरी तो जोई, जो अखंड करूं आ वार ।
बुधने सोभा देऊं, सत करी प्रगट पार ।। १०

अवतार चोबीस विस्नुना, वैकुंठ थी आवें जांए ।
ते विध सरवे कहूं विगते[४], जेम सनमंध सहू समझाए ।। ११

अवतार एकबीस ए मधे, ते आडो थयो कलपांत ।
बीजा त्रण जे मोटा कह्या, तेहेनी कहूं जुजवी भांत ।। १२

अवतार एक श्रीक्रस्ननों, मूल मथुरा प्रगटयो जेह ।
*वसुदेवने वाएक[५] कही, वैकुंठ वलियो तेह ।। १३

---

१. से । २. अस्पष्ट ज्ञान । ३. तमाशा । ४. विवरण से । ५. वचन ।

गोकल सरूप पधारियो, तेहेने न कहिए अवतार ।
ए तो आपणी अखंड लीला, तेहेनों ते कहूं विचार ॥ १४

संखेपें कहूं में समझवा, भाजवा[1] मननी भ्रांत ।
एहेनों छे विस्तार मोटो, आगल कहीस[2] व्रतांत ॥ १५

कलपांत भेद इहां थकी, तमे भाजो मनना संदेह ।
अवतार ते अक्रूर संगे, जई लीधी मथुरा ततखेव[3] ॥ १६

विचार छे वली ए मधे, तमे सांभलो देई चित ।
आसंका सहू करूं अलगी, कहूं तेह विगत ॥ १७

दिन अग्यारे भेष लीला, संग गोवाला तणी ।
सात दिन गोकल मधे, पछे चाल्या मथुरा भणी[4] ॥ १८

धनक[5] भाजी हस्ती मल्ल मारी, त्यारे थया दिन चार ।
कंस पछाडी वसुदेव छोडी, इहां थकी अवतार ॥ १९

जुध कीधूं जरासिंधसूं, रथ आउध[6] आव्या जहां थकी ।
क्रस्न विस्नु मय थया, वैकुंठमां विस्नु त्यारे नथी ॥ २०

वैकुंठथी जोत वली आवी, सिसपाल होम्यो जेह ।
मुख समानी श्री क्रस्नने, पूरी साख सुकदेवें तेह ॥ २१

कीधूं राज मथुरा द्वारका, बरस एक सो ने वार ।
*प्रभास सहु संघारीने, उधाड्या वैकुंठ वार ॥ २२

दिन आटला गोप हुतो, मोटी बुधनो अवतार ।
लवलेस कांईक कहूं एहेनों, आगल अति विस्तार ॥ २३

कोईक काल बुध रासनी, ग्रही जोगवाई[7] सकल ।
आवी उदर मारे वास कीधों, वृध पामी पल पल ॥ ६४

अंग मारे संग पामी, में दीधूं तारतम बल ।
ते बल लेई वेराट पसरी, ब्रह्मांड थासे निरमल ॥ २५

---

१. दूर करने । २. कहूँगी । ३. उसी क्षण । ४. ओर । ५. धनुष । ६. अस्त्र । ७. साधन ।

दैत कालिंगो[१] मारीने, सनमुख करसे तत्काल ।
लीला अमारी देखाडीने, टालसे जमनी जाल ।। २६

आदेखो छो दैत जोरावर, व्यापी[२] रह्यो वेराट ।
काम क्रोध उनमद[३] अहंकार, चाले आपोपणी बाट ।। २७

वेराट आखो[४] लोक चौदे, चाले आपोपणी मत ।
मन माने रमे सहुए, फरीने वल्यूं असत ।। २८

एणे संघारसे[५] एक सबदसों, वार न लागे लगार ।
लोक चौदे पसरसे, ए बुध सबदनों मार ।। २९

हूं मारूं तो जो होए कांईऐं, न खमे लवानी डोट[६] ।
मारी बुधने एक लवे एवा, मरे ते कोटान कोट ।। ३०

उठी छे वाणी अनेक आगम, एहेनो गोप छे अजवास ।
वेराट आखो[७] एक मुख बोले, बुधने प्रकास ।। ३१

चालसे सहू एक चाले, बीजूं ओचरे[८] नहीं वाक ।
बोले तो जो कांई होए बाकी, चूंथी[९] उडाड्यूं तूल आक ।। ३२

हवे ए वचन कहूं केटला, एनो आगल थासे विस्तार ।
मारे संग आवी निध पामी, ते निराकारने पार ।। ३३

पार बुध पाम्या पछी, एहेनों मान मोटो थासे ।
अख्यर ख्यण नव मूके अलगो, मारी संगतें एम सुधरसे ।। ३४

अवतार जे नेहेकलंकनो[१०], ते अस्व अधूरो रह्यो ।
पुरुष दीठो नहीं नैणे, तुरीने कलंकी तो कह्यो ।। ३५

अवतार आ बुधना पछी, हवे बीजो ते थाए केम ।
विकार काढी सहू विस्वना, सहू कीधां अवतारना जेम ।। ३६

अवतारथी उत्तम थया, तहां अवतारनों सूं काम ।
कीधों सरवालो[११] सहूनो, ईहां बीजो न राख्यूं नाम ।। ३७

---

१. कलियुग । २. फैला हुआ । ३. मस्ती । ४. सारा । ५. मार देगा । ६. ठोकर । ७. सारा । ८. बोले । ९. मसला हुआ । १०. निष्कलंक अवतार । ११. जमा ।

पैया देखाड्या पारना, अविचल भान उदे थयो ।
तहां अगिया[१] अवतारमां, अजवास इहां स्यो रह्यो ॥ ३८
एणी पेरे तमे प्रीछजो, अवतार न थाए अंन ।
पुरषतां पेहेलो ना कह्यो, विचारी जुओ वचन ॥ ३९
रखे कहेने धोखो रहे, आ जुआ कह्या अवतार ।
तो ए केहेनी बुधें विस्नुने, जगवी पोहोंचाड्यो पार ॥ ४०
सुकजीएँ अवतार सहू कह्या, पण बुधमां रह्या संदेह ।
एहेनों चोख[२] करी नव सक्यो, तो केम कहे लीला एह ॥ ४१
ए तो अख्यरातीतनी, लीला अमारी जेह ।
पेहेले संसा सहू भाजीने, वली कहीस कांईक तेह ॥ ४२
वेराटनी विध कही तमने, रखे राखो मन संदेह ।
अखंड गोकल ने प्रतिबिंब, वली कही प्रीछवुं तेह ॥ ४३
अजवास अखंड अमकने, नहीं अंतराए पाव रती ।
रास रमी गोकल आव्या, प्रतिबिंब लीला इहां थकी ॥ ४४
तारतम सूरज प्रगटयो, सकल थयो प्रकास ।
लागी सिखरो पाताल झलक्यो, फोडियो आकास ॥ ४५
किरणां सघले कोलांभियो,[३] गयो वेराटनो अग्यान ।
द्रढाव चौकस लोक चौदनों, उडाड्यूं उनमान[४] ॥ ४६
वली जोत झाली नव रहे, वचमां विना ठाम ।
अखंड मांहें पसरी, देखाड्यो व्रज विश्राम ॥ ४७

॥ प्रकरण ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ २४० ॥

## गोकल लीला

**आजुओ रे आजुओ रे आजुओ रे हो साथ जी, गोकल लीला आपणी हो साथ जी**

विध सरवे कहूं विगते, व्रज वस्यो जेणी पेर ।
अग्यार वरस लीला करी, रास रमीने आव्या घेर ॥ १

---

१. पहले के । २. स्पष्टी करण । ३. फोड़ निकली । ४. अनुमान ।

गोकल जमुना त्रट भलो, पुरा वेहेतालीस[1] वास ।
पासे पुरो एक लगतो, ए लीला अखंड विलास ॥ २

वास वस्ती बसे घाटी, त्रण खूंने गाम ।
कांठे पुरो टीवा[2] ऊपर, उपनंदनो ए ठाम ॥ ३

पुरा सहू बीजी गमां, वचे वाट धेननो सेर ।
इहां रमे वालो सकल मांहें, गोवालनी घेर ॥ ४

पुरो पटेल सादूलनों, बीजी ते गमां एह ।
व्रखभानजी त्रीजी गमां, पुरो दीसे लांवो[3] तेह ॥ ५

नंदजीना पुरा सामी, दिस पूरव जमुना त्रट ।
छूटक छाया वनसपती, वृध आडी डालो बट ॥ ६

सकल वन सोहामणूं, सोभित जमुना किनार ।
अनेक रंगे वेलडी, फल सुगंध सीतल सार ॥ ७

*नंदजीना पुरा पाछल, पुरा त्रण मामाओं तणां ।
ठाट वस्ती आथे[4] पुरा, आप सूरा त्रणे जणां ॥ ८

गांगों चांपो अने जेतो, ए मामा त्रणेना नाम ।
दक्षिण दिस ने पछिम दिस, वीटी[5] बेठा गाम ॥ ९

आठ मंदिर नंदजी तणां, मांडवे एक मंडाण ।
पाछल वाडा गौतणां, मांहें आथ सरवे जाण ॥ १०

रेत झलके मांडवे, आगल दूध चूलो चरी ।
आईजी एणे ठामे बेसे, बेसे सखियों सहू घेरी ॥ ११

इहां मंदिर मोदी[6] तेजपालनो, चरी चूला पास ।
कोईक दिन आवी रहे, एनों मथुरा मांहें वास ॥ १२

सरूप दस इहां आरोगे, पाक साक[7] अनेक ।
भागवंतीबाई भली भांतें, रसोई करे ववेक ॥ १३

---

१. ४२ । २. टीला । ३. लम्बा । ४. घास का मैदान । ५. घेर कर । ६. बनिया । ७. सब्जियां ।

लाडलो नंद *जसोमती, *रोहिणी *बलभद्र बाल ।
पालक पुत्र कल्याणजी, तेहेनों ते पुत्र गोपाल ।। १४

बेहेनों बंने जीवा रूपा, भेलियां रहे मोहोलान ।
अने बाई *भागवंती, नारी घर कल्यान ।। १५

पुरो एक *वृषभाननों, उत्तर दिस लगतो ।
पासे भाई भेलो *लखमण, पुरो पूरण वस्तो ।। १६

सरूप साते भली भांतें, आरोगे अंन पाक ।
*कल्यानबाई रसोई करे, विध विध वधारे साक ।। १७

राधाबाई पिता वृषभानजी, प्रभावती बाई मात ।
नान्हों क्रस्न कल्यानजी, तेथी मोटो सिदामों भ्रात ।। १८

नार सिदामां तणी, तेहनी नणद राधाबाई ।
जाणी सगाई स्यामनी, अंग धरे ते अति बडाई ।। १९

मंदिर छे आगल मांडवें, चूले चढे दूध माट ।
*राधाबाई खोलें[1] प्रभावती, लेई बेसे ऊपर खाट ।। २०

राधाबाईनों विवाह कीधूं, पण परण्या नथी प्राणनाथ ।
मूल सनमंधे एके अंगे, विलसे वल्लभ साथ ।। २१

घुरसे गोरस हरखें हेतें, घर घर प्रते थाए ।
आंगणें वेलूं उजली, वालो विराजे सहू मांहें ।। २२

पुरा सघले वचें चौरा,[2] मांहें मेलावा थाए ।
चारे पोहोर गोठ[3] घूघरी, रामत करतां जाए ।। २३

तेजपाल मोदी वलोट[4] पूरे, व्रजमां मोटे ठाम ।
वस्त वसाणूं[5] सहू लिए, घृत दिए आखूं गाम ।। २४

घोलिया[6] इत घोल करवा, आवे व्रजमां जेह ।
वस्त वसाणूं लिए दिए, जै रहे मथुरा तेह ।। २५

---

१. गोदी में । २. चौपाल । ३. गपशप । ४. आदान-प्रदान । ५. मसाला आदि । ६. दलाल ।

गोवाला संग रमे वालो, सेर[१] पाणी वाट ।
विनोद हांसे अमें आवूं जावूं, जल भरवा सहू घाट ॥ २६

विलास व्रजमां वालाजीसूं, वरते छे एह वात ।
वचन अटपटा बेधें सहूने, अहेनिस एहज तात ॥ २७

रमे प्रेमें प्रीतें भीनो, पुरा सघला मांहें ।
रमे ख्यण जेसूं तेहेने, बीजो, सूझे नहीं कोई क्यांहें ॥ २८

रामत रंगे अमें वालाजी संगे, रमूं जातां पाणी ।
आठो पोहोर अटको अंगे, एह छब एह वाणी ॥ २९

घर घर आनंद ओछव, उछरंग अंग न माए ।
विनोद हांस वालाजी संगे, अहेनिस करतां जाए ॥ ३०

वालक सुंदर बोले मीठूं, केडे[२] करी घेर आणूं ।
ख्यणमां जोवन प्रेमें पूरो, सेजडिएं सुख माणूं ॥ ३१

वाछरडा लेई वन पधारे, आठमें दसमें दिन ।
कहीं एक गोवरधन फरतां, मांहें रमे ते बारे वन ॥ ३२

अखंड लीला रमूं अहेनिस, अमें सखियो वालाजी ने संग ।
पूरे मनोरथ अमतणां, ए सदा नवले रंग ॥ ३३

श्री राज पधारचा पछी, व्रजवधू मथुरा न गई ।
कुमारका संग रामत मसे[३], दाणलीला एम थई ॥ ३४

कुमारका रमे रामत, अभ्यास चीलो कुलतणो ।
कुलडा मांहें दूध दधी, रमे वन रंग रस घणों ॥ ३५

व्रजवधू मांहें रमवा, संग केटलीक जांए ।
वालोजी इहां दाण मसे, मारग आडो थाए ॥ ३६

दूध दधी माखण ल्यावुं, अमें वालाजीने काज ।
ते दधी झूंटी[४] अमतणों, दिए गोवालाने राज ॥ ३७

---

१. राह । २. गोदी में । ३. बहाने । ४. छीनकर ।

गोवाला नासी जाए अलगां, अमें वलगी[1] राखूं वालो पास ।
एकांते अमें वालाजी संगे, करूं वनमां विलास ॥ ३८
त्यारे कुमारका अम संग रेहेती, अमें वाला संगे रमती ।
कुमारिकाने प्रेम उतपन, मूल सनमंध इहां थकी ॥ ३९
अखंड लीला अहेनिस, नित नित नवले रंग ।
एणी जोतें सहुए द्रढ थयूं, सखियो वालाजीने संग ॥ ४०
नंद जसोदा गोवाल गोपी, धेन वछ जमुना वन ।
पसू पंखी थावर जंगम, नित नित लीला नौतन ॥ ४१
पुरे सघले रमूं अमें, अजवालिए[2] लेई ढोल ।
वालोजी इहां विनोद करे, ते कह्या न जाए बोल ॥ ४२
उलसे गोकल गाम आखूं, हरष हेत अपार ।
धन धान वस्तर भूषण, द्रव्य अखूट भंडार ॥ ४३
विवाह जनम नित प्रते, आखे गाम अनेक होए ।
थोडूक[3] कारज कांईक थाए, तहां तेडावे[4] सहू कोए ॥ ४४
अनेक बाजंत्र नाटारंभ, धन खरचे अहीर उमंग ।
साथ सहू सिणगार करी, अमें आवुं ते अति उछरंग ॥ ४५
वलगें विनोदें अमसूं, देखतां सहू जन ।
पण विचारे नहीं कोई बांकूं[5], सहू कहे एह निसन[6] ॥ ४६
वात एहेनी जाणूं अमें, कां वली जांणे एह ।
मांहेली वात न समझे बीजो, वालाजीनों सनेह ॥ ४७
ए थाए सहू अम कारणे, वालो पूरे मनोरथ मंन ।
ए समेनी हूं सी कहूं, साथ सर्वे धंन धंन ॥ ४८
गोकल आखो कीधूं गेहेलूं,[7] अने वालो तो वचिख्यण[8] ।
जहां मलूं तहां एहज वातो, हांस विनोद रमण ॥ ४९

१. घेर कर । २. चांदनी रात । ३. थोड़ा । ४. बुलावे । ५. उल्टा । ६. बालक । ७. मस्त । ८. चतुर ।

हवे ए लीला कहूं केटली, अलेखे अति सुख ।
वरस अग्यारे वास्नाओंसों, प्रेमें रम्या सनमुख ।। ५०

एक दिन गौ चारवा, वालो पोहोंता ते वृंदावन ।
गोवाला गौ लेई वल्या, पछे जोगमाया उतपन ।। ५१

कालमायामां रामत, एटला लगे प्रमाण ।
ब्रह्मांडनो कलपांत करी, अखंड कीधों निरवाण ।। ५२

सदा लीला जे व्रजनी, आ विध कही तेह तणी ।
हवे रासनो प्रकास कहूं, ए सोभा अति घणी ।। ५३

वली जोत झाली नव रहे, बीजो बेधियो आकास ।
ततख्यण लीधों त्रीजो ब्रह्मांड, जहां अखंड रजनी रास ।। ५४

जिनस जुगत कहूं केटली, अलेखे सुख अखंड ।
जोगमायाएं नयो निपायो,[१] कोई सुख सरूपी ब्रह्मांड ।। ५५

।। प्रकरण ।। ८ ।। चौपाई ।। २६५ ।।

## प्रकरण* जोगमायानूं

मारा सुंदर साथ आधार, जीवन सखी वाणी ते एह विचारोजी ।
जागनीसूं जगवुं तमने, ते साथजी कां न संभारोजी ।। १

वाणी मांहें न आवे केमें, जोगमायानी विधजी ।
तोहें वचन कहूं तमने, लीला अमारी निधजी ।। २

अमें जोऊं वृंदावन इहां थकी, रमूं वालाजी साथजी ।
करूं ते रामत नित नवी, वन मांहें विलासजी ।। ३

जोगमायानी क्यांहें न दीसे, अम विना ओलखाणजी ।
वासना पांचे अख्यरनी, भले कहावें आप सुजाणजी ।। ४

ए मायाओं अमतणी, ऐहेना अमकने विचारजी ।
बीजा सहुए एहेना उपाएल,[२] ए अमारी अग्यांकारजी[३] ।। ५

---

१. बनाया । २. उत्पन्न हुआ । ३. आज्ञाकारी ।

पेहेले फेरे रास रामतडो, जे कीधी व्रंदावनजी ।
आनंदकारी जोगमाया, अविनासी उतपंनजी ॥ ६

जोगमायानी जुगत एहेवी, एक रस एक रंगजी ।
एक संगे रेहेवुं सदा, अंगना एकै अंगजी ॥ ७

आतम सदीवें एक छे, वासना एकै अंगजी ।
मूल आवेस जोगमाया पर, सुख अखंडना रंगजी ॥ ८

एक अंगे संगे रंगे, तो अंतरध्यान थाए केमजी ।
ए सबद मां छे आंकडो,[1] ते करी देऊं सरवे गमजी ॥ ९

आंकडी अंतरध्याननी, साथ तमने कहूं सनंधजी ।
अम विना ए कोंण जांणें, तारतमना बंधजी ॥ १०

आवेस लेईने जगवया, त्यारे पाम्या अंतरध्यानजी ।
विलास व्रह चित चोकस करवा, संभारवा घर श्री धामजी ॥ ११

जुगत जोगमाया तणी, बीजो न जांणे कोएजी ।
बीजो कोई तो जांणे, जो अम विना कोई होएजी ॥ १२

जोगमायाऐ जाग्रत थाए, जल भोम वाए अगिनजी ।
पसू पंखी थावर[2] जंगम,[3] तत्व पांचे चेतनजी ॥ १३

सुतेज ससी वन पसू पंखी, तत्व पांचे सुतेजजी ।
सुतेज सरवे जोगवाई, सुतेज रेजा रेजजी ॥ १४

हेम जवेरना वन कहूं, तो ए पण खोटी वस्तजी ।
सत वस्तने समान नहीं, न केहेवाए मुख न हस्तजी ॥ १५

एक पत्रनी वरणव सोभा, आंणी जिभ्याऐं कही न जाएजी ।
कै कोट ससी जो सूर कहूं, तो एक पत्र हेठें[4] ढंकाएजी ॥ १६

ए भोमनी रेत रंचकने,[5] समान नहीं सूर कोटजी ।
द्रष्टें कांई आवे नहीं, ए रंचक केरी ओटजी ॥ १७

---

१. रहस्य । २. स्थिर । ३. चल । ४. नीचे । ५. जरा ।

हवे ते भोमना वस्तर भूषण, वचन केमे कहूं मुखजी ।
मारा घरनी हसे ते जाणसे, अम घरतणां ए सुखजी ।। १८

सुंदरता सिणगार सोभा, वचन न केहेवाएजी ।
तो सरूपना जे सुखनी वातों, लवो केम बोलाएजी ।। १९

भोमनी किरणों वननी किरणों, किरणां ससी प्रकासजी ।
ते मांहें अमें रमूं प्रेमें, पीउसों रंग विलासजी ।। २०

ए रामत रास रमी करी, अमे आव्या सहू घर धामजी ।
ब्रह्मांडनो कलपांत करी, रुदें कीधों अखंड ठामजी ।। २१

अमें अमारे धाम आव्या, अख्यर पोताने घेरजी ।
अखंड रजनी रास रमाए, रामत एणी पेरजी ।। २२

व्रज रास मांहें अमें रमूं, आंहीं पण अमें आव्याजी ।
श्री धाम मधे बेठा अमें, जोऊं छूं आ मायाजी ।। २३

व्रज रास देखाडिया, रमया ते अनेक पेरजी ।
विलास व्रह बंने भोगवी, आव्या ते आपणे घेरजी ।। २४

सुख दुख बंने जोईया, तोहे कांईक रह्यो संदेहजी ।
ते माटे वली सत सरूपें, मंडल रचियो एहजी ।। २५

ए रामत रची अम कारणे, अमें कारज एणे आव्याजी ।
बंनेना[1] मनोरथ पूरवा, अमें रचावी आ मायाजी ।। २६

संसार रची सुपनना, देखाड्या मांहें सुपनजी ।
ते जोऊं अमें अलगां रही, नहीं जोवा[2] वालो कोई अंनजी ।। २७

रामत साथने रूडी पेरे, देखाडी भली भांतजी ।
तारतम बुधें प्रकासीने, पूरी ते मननी खांतजी ।। २८

रामत अमें जे जोई, ते थिर थासे निरधारजी ।
सहू मांहें सिरोमण, अखंड ए संसारजी ।। २९

---

१. दोनों (अक्षर और ब्रह्म सृष्टि) २. देखने ।

भगवानजी आहीं आविया, जागवाने ततपरजी ।
अमें जागसूं सहूं एकठां, ज्यारे जासूं अमारे घरजी ॥ ३०

॥ प्रकरण ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ ३२५ ॥

## दयानूं प्रकरण

हो वालैया हवेने हवे,[१] दसो दिस तारी दया ।
ए गुण तारा केम विसरे, मुझथी अखंड ब्रह्मांड थया ॥ १

हवे तो गली हूं दया मांहें, सागर सरूपी खीर ।
दया सागर सकल पूरण, एक टीपू[२] नहीं मांहें नीर ॥ २

दया मुकट सिर छत्र चमर, दया सिंघासन पाट ।
दया सरवे अंग पूरण, सहू दया तणों ए ठाट ॥ ३

हवे दया गुण हूं तो कहूं, जो अंतर कांई होए ।
अंगीकार करी अंगना, ते देखे साथ सहू कोए ॥ ४

पल पल आवे पसरती, न लाभे दयानों पार ।
बीजूं ते सहू में मापियूं, आगल रही आ वार ॥ ५

आटला ते दिन अमें घर मधे, लीला ते राखी गोप[३] ।
हवे बुध तांणे पोते[४] घर भणी,[५] तेणे प्रगट थाए सत जोत ॥ ६

सबद कोई कोई सत उठे, तेणे केम करूं हूं लोप ।
गोप सरवे सत थयूं, असत थयूं उदचोत ॥ ७

हवे असतने अलगो करूं, केम थावा देऊं सत लोप ।
सत असत भेला थया, तेमां प्रकासूं सत जोत ॥ ८

असत पण करवुं अखंड, करी सतनों प्रकास ।
सनंध सतनी समझावी, अंधेरनो करूं नास ॥ ९

संसा ते सहू संघारियां,[६] असत भागी अंधेर ।
निज बुध उठि बेठी थई, भाग्यो ते अवलो फेर ॥ १०

---

१. अब । २. बूंद । ३. छिपी । ४. अपने । ५. ओर । ६. नष्ट किया ।

हवे फेर सहू सवलो फरे, सहूने सत आव्यूं द्रष्ट ।
एणे प्रकासें सहू प्रगट कीधूं, जाणी सुपन केरी सृष्ट ॥ ११

रामत जोई काल मायानी, कालमाया ने आसरी[1] ।
देखी सुख आ जागनी, जासे ते सरवे विसरी ॥ १२

आवेस मूं कने धणी तणों, तेणे करूं भेलो साथ ।
साथ मली सहू एकठो, विनोद थासे विलास ॥ १३

विलास करी विध विधना, त्यारे थासे हरख अपार ।
रामत करसूं आनंदसूं, आवसे सकुंडल सकुमार ॥ १४

त्यारे साथ सहू आवी रेहेसे, रामत थासे रंग ।
त्यारे प्रगट थासूं पाधरा, पछे उलटसे ब्रह्मांड ॥ १५

मारा आवेस मांहेंथी भाग देऊं, साथने सारी पेर ।
मनना मनोरथ पूरा करी, हरखें ते जगवुं घेर ॥ १६

साथ न मूकूं अलगो, साथ मूने मूके केम ।
कह्यूं मारूं साथ न लोपे, साथ कहे करूं हूं तेम ॥ १७

लेस छे कालमायानों, वास्नाओं मांहें विकार ।
दया द्रष्टें गाली रस करूं, मेली[2] तारतमनों खार ॥ १८

विकार काढूं विधोंगतें,[3] करी दयानों विस्तार ।
भली भांतें भाजूं भरमना, जेम आल न आवे आकार ॥ १९

सत वस्त देऊं साथने, कोई रची रूडो रंग ।
मनना मनोरथ पूरी करी, सुख देऊं सरवा अंग ॥ २०

कालमायानों लेस निद्रा, अने निद्रा मूल विकार ।
सरवा अंगे सुध थाए, करी देऊं तेह विचार ॥ २१

जुगतें जां न जगवुं तमने, तो जोगमाया केम थाए ।
निरमल वास्ना कीधां विना, रासमां ते केम रमाए ॥ २२

---

१. सहारे । २. मिलाकर । ३. विधिवत ।

क्रोधना कटका[1] करूं, उडाडी अलगों नाखूं ।
साथ मांहें न देऊं पेसवा, निद्रा ते आडी राखूं ।। २३
आमला अवला अति घणां, कालमायना छे जोर ।
बांक चूक[2] विसमां[3] टालीने, करी देऊं ते पाधरा दोर[4] ।। २४
गुण पक्ष इंद्री अवला, करूं ते सवला साथ ।
करी निरमल सुख देऊं नेहेचल, करूं ते सहूने सनाथ ।। २५
प्रक्रत सरवे पिंडनी, सवली करूं सनमुख ।
दुख दावानल[5] करूं अलगो, देऊं ते अखंड सुख ।। २६
मन चित बुध अहंमेव अवला, करूं जोरावर जेर ।
हवे हारचा सर्वे जीताडी, फेरवुं ते सवले फेर ।। २७
चोर टाली करूं वोलावो, सुख सीतल करूं संसार ।
विध विधना सुख देऊं विगतें, कांई रामततणां आ वार ।। २८
कोईक दिन साथ मोहना जलमां, लेहेर विना पछटाणां ।
वासना घणूं वल्लभ मूने, न सहूं मुख करमाणां[6] ।। ३०

।। प्रकरण ।। १० ।। चौपाई ।। ३५४ ।।

## प्रकरण हांसीनूं

मारा साथ सनमंधी चेतियो, ए हांसीनों छे ठाम ।
आप वालो घर विसरी, हवे जागी भूलो कां आम ।। १
साथजी तमने रामत, जोयानों छे ख्याल ।
जेनूं मूल नहीं तेणे बांधिया, ए हांसीनों छे हवाल[7] ।। २
तमे मांगी रामत विनोदनी, तेणे विलस्या तमारा मन ।
बात वालाजीनी विसरी, जे कह्या मूल वचन ।। ३
गूंथो जाली दोरी विना, आप बांधो मांहें अंग ।
अंग विना तमे तरफडो, कांई ए रामतना रंग ।। ४

१. टुकड़े । २. भूल । ३. कठिन । ४. रस्सी । ५. अग्नि । ६. कुम्हलाए । ७. हाल ।

आप बंधाणां आपसूं, एणे कोहेडे अंधेर ।
चढ्यूं अमल जाणे जेहेरनूं, फरे ते मांहें फेर ॥ ५

अमल चढ्यूं केम जाणिए, कोई आथडे[1] कोई पडे ।
कोई मांहें जागी करी, बांहें ग्रही पगथी[2] चढे ॥ ६

एक पडे पगथी थकी, तेहेने बीजी ते साहे हाथ ।
खाए ते बंने गडथला[3], कांई रामत ए अख्यात ॥ ७

कोई पडे पगथी विना, तेहेने बीजी ते झालवा[4] जाए ।
पडे ते बंने मोंहों भरे, ए हांसी एमज थाए ॥ ८

भोम विना ओठूं[5] लिए, अने चरण विना उजाए ।
जल विना भवसागर, तेहेमां गलचवा[6] खाए ॥ ९

अंत्रीक्ष जुओ ऊभियो, हाथ विना हथियार ।
निद्रा छे अति जागते, पिंड विना आकार ॥ १०

एक नवी[7] कोई आवी मले, ते कहावे आप अजाण ।
कोई मांहें मोटी थई, समझावे सुजाण ॥ ११

वचन करडा कोई कहे, केने खंडनी[8] न खमाए ।
पछे कलपे बंने कलकले, एने अमल एम लेई जाए ॥ १२

खंडी खांडी रडी रडावी[9], दुख जगवतां दीठां घणां ।
जाग्या पछी ज्यारे जोईए, त्यारे बंनेमां नहीं मणां[10] ॥ १३

साथ मांहें हांसी थासे, रास रामत एणी रंग ।
पूर विना तणांणियों[11], कोई आडी थाए अभंग ॥ १४

हरखे हांसी हेतमां, करसे साथ कलोल ।
माया मांगी ते जोई जोपें, रामत झलाबोल[12] ॥ १५

व्रख ऊभो मूल विना, तेहेनूं फल वांछे सहू कोए ।
वली वली लेवा दोडती, ए हांसी एणी पेरे होए ॥ १६

---

१. लड़खड़ाए । २. सीढ़ी । ३. लुड़कना । ४. पकड़ना । ५. टेका । ६. गोते । ७. नई । ८. दोष बताया । ९. रुलावे । १०. कमी । ११. खिंचे जाना । १२. चकाचौंध ।

अछतां[1] बंध छूटे नहीं, पेरे पेरे छोडे तोहे ।
ए स्वांग सहू मायातणों, साथ बांध्यो रामत जोए ॥ १७

॥ प्रकरण ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ ३७१ ॥

जागणीनूं प्रकरण

हवे जागी जुओ मारा साथजी, ए छे आपण जोग ।
त्रण[2] लीला चौथी घरतणी, चारेनों एहेमां भोग ॥ १

कह्या न जाए सुख जागणीना, सत ठोरना सनेह ।
आ भोमनां जेहेवूं केहेवाए, कांईक प्रकासूं तेह ॥ २

हवे जगवुं जुगतें करी, भाजूं भरमना बार[3] ।
रंगे रास रमाडी तमारा, सुफल करूं अवतार ॥ ३

हवे दुख न देऊं फूल पांखडी, सीतल द्रष्टें जोऊं ।
सुख सागर मां झीलावी,[4] विकार सघला[5] धोऊं ॥ ४

आगे कलकलीने कह्यूं रे सखियो, तोहे न गयो विकार ।
कठण सही तमे खंडनी, वचन खांडा[6] धार ॥ ५

ते वचन घणूं साले[7] मूने, कठण तमने जे कह्या ।
मारी वासनाओंने निद्रा माहें, मूल घर विसरी गया ॥ ६

हवे विना ताए[8] गालूं तमने, करूं ते रस कंचन ।
कसनो[9] रंग एवों चढावुं, बेहू पेरे करूं धंन धंन ॥ ७

जाणूं साथजी वदेस आव्या, दुख दीठां कै भांत ।
तें माटे सुख आंणी भोमे, देवानी मूने खांत ॥ ८

खीजे[10] वढे वास्ना न जागे, जगव्यानी[11] जुगत जुई ।
आप जाग्यानी जुगत आपूं, त्यारे केम रहे वास्ना सुई ॥ ९

खंडी खांडी[12] खीजिए, जागे नहीं एणी भांत ।
आपोपूं ओलखाविए, साख पुराविए साख्यात ॥ १०

---

१. अदृश्य । २. तीन (ब्रज, रास, जागनी) । ३. दरवाजा । ४. स्नान करा कर । ५. सब । ६ तलवार । ७. दुःख देवे । ८. गर्मी । ९. कसौटी । १०. गुस्सा । ११. जगाने की । १२. झगड़ कर ।

हवे जगावी सुख देऊं संभारणूं, करों आप अपनी वात ।
साथ सहू अम पासे बेसी,[1] करों सहू विख्यात ।। ११

आगे आवेस मूं कने धणीतणों, वली निध बीजी दीधी ।
निसंक निद्रा ऊडाडी, साख्यात बेठी कीधी ।। १२

हवे रेहेवाए नहीं ख्यण अलगां, जागणी एम जाणो ।
अहंमेव[2] जाग्यो धामनो, अम मांहें एह भराणो ।। १३

पेहेली योगमाया थई रासमां, तेहेनों ते अति अजवास ।
पण आ जे थासे जागनी, तेहेनों कह्यो न जाए प्रकास ।। १४

हवे अधख्यण अलगां,[3] साथ विना, मैं न रेहेवाए ।
आ लेहेर जे मायातणी, साथ ऊपर मैं न सेहेवाए ।। १५

साथजी आ भोमना, सुख आपीस[4] तमने अपार ।
हेतें ते हंससो हरषमां, तमे नाचसो निरधार ।। १६

मारा प्राणना प्रीतम छो, अंगनानी आतम टोली[5] ।
कलपया मन रामत जोतां, नाखूं ते दुखडा घोली ।। १७

करमाणां[6] सुखडा मनना, ते तमारा हूं नव सहूं ।
ए दुख सुखनों स्वाद देसे, तोहे दुख हूं नव देऊं ।। १८

सत सुखमां सुख देसे, आ भोमना सुख जेह ।
तमे हंससो हरषमां, रस देसे सुखडां एह ।। १९

अमें उपाई[7] आनंद माटे, रामत तो तमे मांगी ।
रामतना सुख देऊं सांचा, चालसूं आंहीं जागी ।। २०

सेहेजल[8] सुखमां रेहे सदा, अलप[9] नहीं असुख ।
तमे सुखनों स्वाद लेवा, मांगी रामत दुख ।। २१

रामत मांगी दुखनी, त्यारे कह्यूं अमें एम ।
दुखनी रामत तमने, देखाडूं अमें केम ।। २२

---

१. बैठ कर । २. आत्म गौरव । ३. अलग । ४. दूंगां । ५. जोड़ी दार । ६. कुम्हलाए । ७. उत्पन्न कीं । ८. सहज प्राप्त । ९. जरा ।

दुख तो केमें देऊं नहीं, तो रामत केम जोवाए ।
खांत[1] खरी जोया तणी, तेहेनों ते एह उपाए ॥ २३

अमें रामत जाणी घरतणी, जेम रमूं छूं सदाए ।
अमें ऊभा जोईसूं, रामत एणी अदाए ॥ २४

वस्तोगतें[2] दुख कांई नथी, जो पाछी वालो द्रष्ट ।
जुओ जागी वचने, तो नथी कांईऐं कष्ट ॥ २५

लागसो जो दुखने, तो दुख तमने लागसे ।
मूल सुख संभारसो, तो दुख पाछां भागसे ॥ २६

द्रष्ट वाली जो जुओ, तो दुख कांईऐं नथी ।
रामतना रंग करसो आंहीं, विनोद वातों मुख थकी ॥ २७

सागर सुखमां भीलतां, जहां दुख नहीं प्रवेस ।
ते माटे तमे दुख मांग्या, ते देखाड्या लवलेस ॥ २८

पोंढया भेलां जागसे भेलां, रामत दीठी सहु एक ।
वातों ते करसूं जुजवी,[3] विध विधनी विसेक ॥ २६

दुख तमारा नव सहूं, ते चोकस[4] जाणो चित ।
दुख ते सुख घणां देसे, रंग रस ए रामत ॥ ३०

साथने आ भोमना, सुख देवानो हरख अपार ।
रंगे रास रमाडीने, भेला जागिए निरधार ॥ ३१

हवे ल्यो रे मारा साथजी, आ भोमना जे सुख ।
सही न सकूं तमतणां, जे दीठां तमे दुख ॥ ३२

लेहेर लागे तमने मोहनी, ते हूं नव सकूं सही ।
खंडनी पण नव करूं, जाणूं दुखवुं केम मुख कही ॥ ३३

हवे कसोटी केम देऊं तमने, करमाणां मुख ते नव सहूं ।
ते माटे वचन कठण, मारा वालाओंने[5] केम कहूं ॥ ३४

---

१. चाह । २. वास्तव में । ३. अलग । ४. सावधान । ५. प्रियाओं (आत्माओं) ।

बांह ग्रहीने तारूं तमने, जेम लेहेर न लगे लगार ।
सुखपालमां[१] सुखे बेसाडी, घेर पोहोंचाडूं निरधार ।। ३५
अंगथी आपी[२] उपजावुं, रस प्रेमना प्रकार ।
प्रकास पूरण करी सेहेजे, टालूं ते सरव विकार ।। ३६
अंग आप्या विना आवेस, प्रेम प्रकट केम थाए ।
आवेस देई करूं जागनी, जेम मारा अंगमां समाए ।। ३७
हवे सहू भेलां तो चालिए, जो अंग मांहेंथी देवाए ।
जोगमाया तो थाए तमने, जो सांचवटी[३] वटाए ।। ३८
हवे आवतां दुख वासनाओंने, तहां आडो देऊं मारो अंग ।
सारी[४] पेरे सुख देऊं तमने, मांहें न करूं वचे भंग ।। ३९
ए लीला करूं एणी भांतें, तो रास रंग रमाए ।
विध विधना सुख देऊं विगतें,[५] व्रह वासनाओंनोन खमाए ।। ४०
जागनीना सुख देऊं तमने, रास मांहें रमाडूं रंग ।
सततणां सुख केम आवे, जहां न देऊं मारूं अंग ।। ४१
अंग आपी अंगनाने, अंगना भेलूं अंग ।
पास देऊं पूरो प्रेमनो, करूं ते अविचल रंग ।। ४२
असतथी अलगां करूं, सतसूं करावुं संग ।
परआतम सूं बंध बांधूं, जेम प्रले न थाए कहिए भंग ।। ४३
धणिएं जगावी मूने एकली, हूं जगवुं बांधा जुथ ।
दुखनी भोम दूथी[६] घणी, ते करी देऊं सत सुख ।। ४४
साथ करूं सहू सरखो,[७] तो हूं जागी प्रमाण ।
जगाडी सुख देऊं धामना, पोहोंचाडूं मूल ए धाण[८] ।। ४५
आवेस जेहेने में दीठां पूरा, जोगमायानी निद्रा तोहे ।
पण जे सुख दीसे जागतां, अम विना न जाणे कोए ।। ४६

---

१. परमधाम का वायुयान । २. दे कर । ३. सत्यता । ४. अच्छी । ५. विधि पूर्वक । ६. कठोर । ७. समान । ८. चिह्न ।

जे जागी बेठा निज धाम मां, तेहेने आवेसनों सूं कहिए ।
तारतम तेज प्रकास पूरण, तेणें सकल विधें सुख लहिए ॥ ४७

आवेसने नहीं अटकल, पण जागवुं अति भारी ।
आवेस जागवुं बंने तारतमें, जो जुओ जुगत विचारी ॥ ४८

पैया सहूना काढे प्रगट, नहीं तारतमने अटकल ।
आवेस जागवुं हाथ धणीने, एह अमारूं बल ॥ ४९

तारतमना सुख साथ आगल,[१] विध विध ना वालें कीधां ।
पछे ए सुख एकली इंद्रावतीने, दया करी धणिएं दीधां ॥ ५०

धंन धंन धणी धंन तारतम, धंन धंन सखी जे ल्यावी ।
धंन धंन सखी हूं सोहागणी, मुझ मांहें ए निध आवी ॥ ५१

मूं माटे ल्याव्या धणी धामथी, बीजा कोंणे नथी ए जाण[२] ।
में लीधूं पीधूं विलसियूं, विस्तारियूं[३] प्रमाण ॥ ५२

ए वाणी साथ मांहें केहेवाणी, पण केने न कीधों विचार ।
पछे दया करीने दीधूं वालें, अंग इंद्रावतीने आ वार ॥ ५३

घणूं धन ल्याव्या धणी धामथी, वहुविधना प्रकार ।
ते धन सरवे तोलियूं, तारतम सहूमां सार ॥ ५४

तारतमनों बल कोई न जाणे, एक जाणे मूल सरूप ।
मूल सरूपनी चितनी वातों, तारतममां कै रूप ॥ ५५

साख्यात सरूप इंद्रावती, तारतमनों अवतार ।
वास्ना हसे ते वलगसे,[४] ए वचन ने विचार ॥ ५६

सरूप साथनी ओलखाण, तारतममां अजवास ।
जोत उदचोत प्रगट पूरण, इंद्रावतीने पास ॥ ५७

वास्नाओंनी ओलखाण, वाणी करसे तेणी ताल ।
निसंक निद्रा उडी जासे, सांभलतां ततकाल ॥ ५८

---

१. आगे । २. पता । ३. व्याप्त हुए । ४. पकड़ेगी ।

एक लवो सुणे जो वास्ना, ते संग न मूके ख्यण मात्र ।
ते थाए गलित गात्र, प्रगट दीसे प्रेम पात्र ।। ५९
ए वाणी सांभलतां जेहने, आवेस न आव्यो अंग ।
ते नहीं नेहेचे वासना, तेनों करूं जीव भेलो संग ।। ६०
वास्ना जीवनों वेहेरो[1] एटलो, जेम सूरज द्रष्टें रात ।
जीव तणों अंग सुपननों, वासना अंग साख्यात ।। ६१
वली वेहेरो वास्ना जीवनो, एना जुजवा छे ठाम ।
जीवतणों घर निद्रा मांहें, वासना घर श्री धाम ।। ६२
न थाए नवो न लोपाए[2] जूनो,[3] श्री धाम एणी प्रकार ।
घटे वधे[4] नहीं पत्र एक, सत सदा सर्वदा सार ।। ६३
जदिप[5] संग थयो कोई जीवनो, तेनो न करूं भेलो भंग ।
ते रंगे भेलूं वासना, वासना सतनो अंग ।। ६४
तारतम तेज प्रकास पूरण, इंद्रावतीने अंग ।
ए मारूं दीधूं में देवाए, हूं इंद्रावतीने संग ।। ६५
इंद्रावतीने हूं अंगे संगे, इंद्रावती मारूं अंग ।
जे अंग सोंपे इंद्रावतीने, तेने प्रेमें रमाडूं[6] रंग ।। ६६
बुध तारतम भेला बंने, तहां पेहेले पधारया श्री राज ।
अंग मारे अजवास[7] करी, साधना सारया काज ।। ६७
सुख देऊं सुख लेऊं, सुखमां ते जगवुं साथ ।
इंद्रावतीने उपमा, में दीधी मारे हाथ ।। ६८
में दया तमने कीधी घणी, जो जुओ आंख उघाडी ।
नहीं जुओ तोहे देखसो, छाया निसरी ब्रह्मांड फाडी ।। ६९
मूलगी[8] आंखां देऊं उघाडी, जेम आडी न आवे मोह सृष्ट ।
सत सुखने ओलखावुं, जेम घर आवे द्रष्ट ।। ७०

---

१. अन्तर । २. छिपे । ३. पुराना । ४. बढ़े । ५. कदाचित् । ६. खेलाऊं । ७. प्रकाश । ८. मूल से ।

तारतमनो जे तारतम, अंग इंद्रावती विस्तार ।
पैया[1] देखाड्या सारना, ते पारने वली पार ॥ ७१

ब्रह्मांड बंने अखंड कीधां, तेमां लीला अमारी ।
ब्रह्मांड त्रीजो अखंड करवो, ए लीला अति भारी ॥ ७२

त्रण लीला माया मधे, अमें प्रेमें मांडी[2] जेह ।
आ लीला चौथी मांणता,[3] अति अधिक जाणी एह ॥ ७३

एक सुख सुपनना, बीजा जागतां जे थाए ।
पेहेली त्रण लीला आ चौथी कही, सुख अधिक एणी अदाए ॥ ७४

पेहेलूं द्रष्टें जे अमने आवयूं, तेटला ते मांहें अजवास ।
ते अजवास मांहें अमें रमूं, बीजा लोक सहूनों नास ॥ ७५

हवे चौद लोक चारे गमां, प्रकास करूं साथ जोग ।
जीव सहू जगवी करी, टालूं ते निद्रा रोग ॥ ७६

अमें प्रगट थईने पाधरा, चालसूं सहुए घेर ।
वेराट वली ने थासे सवलो,[4] एक रस एणी पेर ॥ ७७

हवे ए वचन केम प्रगट[5] पाडूं, पण मारे करवो सहू एक रस ।
वस्त देखाड्या विना, वेराट न आवे बस ॥ ७८

वेराट बस कीधां विना, अखंड थाए केम एह ।
अमें रामत जोई इछा करी, मांहें भंग थाए केम तेह ॥ ७९

अनेक थासे आगल, आ वाणीनों विस्तार ।
लवलेस कांईक कहूं थावा, अखंड आ संसार ॥ ८०

ए वाणी कही में विगते, ते विस्तरसे विवेक ।
मारा साथने कही में छानी,[6] पण ए छे घणूं विसेक ॥ ८१

संसार सहूना अंगमां, मारी बुधनों करूं प्रवेस ।
असत सरवे सत करूं, मारी जागनी ने आवेस ॥ ८२

---

१. राह । २. रचना की । ३. स्थापते हुए । ४. सीधा । ५. जाहिर करूं । ६. छिपी ।

बुध सरूप अख्यरनी, आवी अमारे पास ।
ब्रह्मांड जोगमाया तणों, तेणे रुदें ग्रह्यो रास ॥ ८३

मारा धणी तणें चरणे हुती, आटला ते दाडा[1] गोप ।
वचन जे सुकजी तणां, ते केम करूँ हूं लोप ॥ ८४

व्रज रास मांहें अमें रमूं, बुध हुती रासमां रंग ।
हवे आवी प्रगटी, आंहीं उदर मारे संग ॥ ८५

इंद्रावती वाला संगे, उदर फल उतपन ।
एक बुध मोटी अवतरी, बीजी ते जोत तारतम ॥ ८६

बंने सरूप थया प्रगट, लेई मांहों मांहें बाथ ।
एक तारतम बीजी बुध, ए जोसे सनमुख साथ ॥ ८७

अख्यर केरी वासना, कह्या जे पांच रतन ।
कागल लाव्यो अमतणों, सुकदेव मुनि धंन धंन ॥ ८८

विस्नु मन रामत लेई, ऊभो ते बंने पार ।
भली भांत भगवान भेला, सनकादिक थंभ चार ॥ ८९

महादेवजीएँ व्रजलीला, ग्रह्यो अखंड ब्रह्मंड ।
अख्यर चित चोकस थयो, ए एम कहावे अखंड ॥ ९०

कबीर साखज पूरवा, ल्याव्यो ते वचन विसाल ।
प्रगट पांचे ए थया, बीजा सागर आडी[2] पाल[3] ॥ ९१

अमें बुधने प्रकासी करी, जासूं अमारे घर ।
बैकुंठ विस्नुने जगवसे, बुध देसे सरवे खबर ॥ ९२

खबर देसे भली भांतें, विस्नु जागसे तत्काल ।
आवसे आंणें नेत्रे निद्रा, त्यारे प्रले थासे पंपाल[4] ॥ ९३

छर रामत इछायें करे, अख्यर आपो आप ।
एहेनी वासना पोहोंचसे इहां लगे, ए सत मंडल साख्यात ॥ ९४

---

१. दिन । २. रुकावट । ३. दिवाल । ४. झूठ ।

वास्नाओं पांचे वल्या पछी, भेली बुध वसेक विचार ।
अख्यर आंख उघाडसे[1], उपजसे हरष अपार ॥ ९५

त्यारे लीला त्रणे थिर थासे, अखंड एणी प्रकार ।
निमष[2] एक न विसरे, रुदे रेहेसे सरूपने सार ॥ ९६

उत्तम कहूं वली ए मधे, जहां तारतमनों विस्तार ।
वास्नाओं पांचे बुधें करी, साख पूरसे संसार ॥ ९७

मारी संगतें एम सुधरी, बुध मोटी थई भगवान ।
सत सरूप जे अख्यर, मारे सँग पामी ठाम ॥ ९८

मारा गुण अंग सहू ऊभा थासे, अरचासे आकार ।
बुध वास्ना जगवसे, तेणे साख पूरसे संसार ॥ ९९

बुध तारतम लेई करी, पसरी वेराटने अंग ।
अख्यरने एणी विधें, रुदें चढचो अधिको रंग ॥१००

आंही तेजना अंबार पूरा, जोत क्यांहें न झलाए ।
एणे प्रकासें सहू प्रगट कीधूं, जहांथी उतपन ब्रह्मांड थाए ॥१०१

जागतां ब्रह्मांड उपजे, पाओ पलकें अपार ।
ते सरवे में जोईया, आंहीं थकी आ वार ॥१०२

ए लीला छे अति भली, द्रष्टें उपजे ब्रह्मांड ।
ए रमे ते रामत नित नवी, एहेनी इछा छे अखंड ॥१०३

ए मंडल अखंड सदा, अख्यर श्री भगवान ।
प्रगट दीसे पाधरा, आंहीं थकी सहू ठाम ॥१०४

मोह उपनों इहां थकी, जे सुंन निराकार ।
पल मेली ब्रह्मांड कीधों, कारज कारण सार ॥१०५

ब्रह्मांड बंने अखंड कीधां, तेमां लीला अमारी ।
ब्रह्मांड त्रीजो अखंड करवो, ए लीला अति भारी ॥१०६

---

१. खोलेगा । २. पल भर ।

ब्रह्मांड दसो दिस प्रगट कीधां, अंतराए[१] नहीं रती रेख ।
सत वासना असत जीव, सहू विध कही विवेक ॥१०७
मोह अग्यान भरमना, करम काल ने सुंन ।
ए नाम सहू निद्रातणां, *निराकार *निरगुण ॥१०८
एटला ते लगे मन पोहोंचे, बुध तुरिया[२] वचन ।
उनमान आगल कही करी, वली पडे ते मांहें सुंन ॥१०९
सुपनना जे जीव पोते, ते निद्रा ओलाडे[३] केम ।
वासना निद्रा उलंघी, अख्यर पामे एम ॥११०
एणे द्रष्टांते प्रीछजो, वासना जीवनी विगत ।
असत जीव न बोले[४] निद्रा, निद्रा बोले वास्ना सत ॥१११
जुओ सुपने कै बढी मरतां, आएस[५] न आवे आप ।
मारतां देखे ज्यारे आपने, त्यारे धुजे[६] अंग साख्यात ॥११२
वास्ना उतपन अंगथी, जीव निद्रा उतपत ।
एणी विधे घर कोई न मूके, वास्ना जीवनी विगत ॥११३
चौदलोक चारे गमां, सहू सतनों सुपन ।
एणे द्रष्टांते प्रीछजो, विचारी वासना मन ॥११४
अग्यान सत सरूपने, तमे केहेसो थाए केम ।
ते विधि कहूं सरवे तमने, उपनूं छे एम ॥११५
एक तीर ताणी[७] मूकिए, तेणे पत्र कै बेधाए ।
ते पत्र सरवे बेधतां, वार पाओ पल न थाए ॥११६
पण पेहेलूं पत्र एक बेधीने, तो बीजा लगे जाए ।
तेमां ब्रह्मांड कै उपजे, वार एटली पण न केहेवाए ॥११७
तो आ वार एकनी सी कहूं, एमां सूं थयूं सुपन ।
पण सत भोमनूं असतमां, द्रष्टांत नहीं कोई अंन ॥११८

१. फर्क । २. चित । ३. उलंघे । ४.. दूर करे । ५. सुधि । ६. कांपता है । ७. खेंच कर ।

जोत बुध बंने अम कने, अमे प्रगट कीधां प्रकास ।
पूरूं आस अख्यरनी,[१] मारूं सुख देखाडी साख्यात ॥११९

अजवालूं अखंड थयूं, हवे किरणां क्यांहें न झलाए ।
जोत चाली पोते घर भणी, बुध अख्यर मांहें समाए ॥१२०

हवे जहां थकी जोत उपनी, जुओ तेह तणों प्रकास ।
अख्यरातीत मारा घर थया, इहां तेजना अंबार ॥१२१

जोत सरवे भेली थई, कांई आपने घर वार ।
मारा ते घरनी वातडी, केम कहूं मारा आधार ॥१२२

अमें घर आंहींथी जोईया[२], आंहीं अजवालूं अपार ।
विविध पेरे एणे तारतमें, देखाड्या दरवार ॥१२३

अमें विलास कीधां घर मधे, वालासों अनेक प्रकार ।
मूने दीधी निध दया करी, श्री देवचंदजी दातार ॥१२४

बीज वचन बे वालातणां, आ तेह तणों अजवास ।
जे बाव्यूं[३] मारे वालैएं, तेणे पूरचा मनोरथ साथ ॥१२५

ससी सूर कै कोट कहूं, तेज जोत प्रकास ।
ए वचन सरवे मोह लगे, अने मोहनों तो नास ॥१२६

हवे आंणी जिभ्याऐ केम कहूं, मारा घर तणों विस्तार ।
वचन एक पोंहोंचे नहीं, मोह मांहें थयो आकार ॥१२७

मोह ते जे नथी कांईएं, सत असंग सदाए ।
असत सतने मले नहीं, वाणी पोहोंचे न एणी अदाए ॥१२८

एक अरध लवो पोहोंचे नहीं, मारा घर तणों दरवार ।
जोगमाया लगे वचन न आवे, ते पारने वली पार ॥१२९

हूं वचन कहूं विध विधना, पण क्यांहें न पामूं लाग[४] ।
मारा घर लगे पोहोंचे नहीं, एक लवानो कोटमों भाग ॥१३०

---

१. अक्षर ब्रह्म । २. देखा । ३. बोया । ४. अवसर ।

हूं अंगे रंगे अंगना संगे, करूं पोते पोतानी वात ।
बोलतां घणूं सरमाऊं, तेणे न कहूं निध साख्यात ॥१३१

मारा ते घरनी वातडी, नथी कहवानो क्यांहें विश्राम ।
कहूं तो जो कोई होंए बीजो, गाम नाम ना ठाम ॥१३२

जहां नथी कांई तहां छे केहेवाए, ए बंने मोहनां वचंन ।
ए वाणी मारी मूने हंसावे, ते माटे थाऊं छूं मुंन ॥१३३

एटलूं पण हूं तो बोलूं, जो साथने भरम नों घेन ।
वचन कही विधोंगतें,[1] टालूं ते दुतिया[2] चेन ॥१३४

*इंद्रावतीसों अतंत रंगे, स्याम समागम[3] थयो ।
साथ भेलो जगववा, *इंद्रावतीने में कह्यो ॥१३५

॥ प्रकरण १२ ॥ ॥ चौपाई ॥ ५०६ ॥

प्रकरण तथा चौपाइयोंका संपूर्ण संकलन—प्रकरण १११, चौपाई २७११

इति श्री, महामत श्रीप्राणनाथजी 'तारतम बानी' का

चौथा ग्रन्थ

## ॥ गुजराती कलस संपूर्ण ॥

---

१. विधिवत । २. दुई का भाव । ३. मिलन ।

निजनाम श्रीकृष्णजी, अनादि अक्षरातीत ।
सोतो अब जाहिर भए, सब विध वतन[1] सहित ॥

श्रीस्यामाजी वर सत्य हैं, सदा सत सुखके दातार ।
विनती एक जो वल्लभा,[2] मों अंगनाकी अविधार[3] ॥

वानी मेरे पीउकी, न्यारी जो संसार ।
निराकारके पारथें, तिन पारके भी पार ॥

अंग उत्कण्ठा उपजी, मेरे करना एह विचार ।
ए सत वानी मथके, लेऊं जो इनको सार ॥

इन सारमें कै सत सुख, सो मैं निरने करूं निरधार ।
ए सुख देऊं ब्रह्मसृष्टि को, तो मैं अंगना नार ॥

जब ए सुख अंगमें आवहीं, तब छूट जाए विकार ।
आयो आनंद अखण्ड घरको, श्रीअक्षरातीत भरतार ॥

# ❋श्री ग्रंथ प्रकाश हिन्दुस्तानी (जंबूर)❋

कछु इन बिध कियो रास, खेल फिरे घर ।
खेल देखनके कारन, आईयां उमेदां कर ॥ १

उमेदां न हुईयां पूरंन, धाख[4] मनमें रही ।
तब धनीजीएँ अंतरगत, हुकम कियो सही ॥ २

तब तीसरो रचके खेल, स्यामाजी आए इत ।
तब हम भी आईयां तित, स्यामाजी खेले जित ॥ ३

स्यामाजीको धनिएँ, आवेस[5] अपनों दियो ।
सब केहेके हकीकत,[6] हुकम ऐसो कियो ॥ ४

१. परमधाम । २. प्रियतमा । ३. स्वीकार । ४. इच्छा । ५. जोश । ६. वास्तविकता ।

इन्द्रावती लागे पाए, सुनो मेरे साथ जी ।
तुम चेतो इन अवसर, आयो है हाथ जी ॥ ५

॥ प्रकरण ॥ १ ॥ चौपाई ॥ ५ ॥

साथको प्रबोध[1]—राग धन्यासरी

याद करो तुम साथ जी, हाथ आयो अवसर जी ।
आप डारचा ज्यों पेहेले फेरें, भी डारियो निसंक[2] फेरजी ॥ १

*सुंदरबाई इन फेरें, आए हैं साथ कारंनजी ।
भेजी धनिएं आवेस देयके, अब न्यारे न होंए एक खिनजी ॥ २

सुपनेमें भी खिन ना छोडे, तो क्यों छोडे साख्यातजी ।
दया देखो पीउजीकी हिरदे मांहें, बिध बिधकी विख्यातजी ॥ ३

ऐसी बात करे रे पीउजी, पर न कछु साथको सुधजी ।
नीद उड़ाए जो देखिए आपन, तो आए हैं आप ले निधजी ॥ ४

सुपनेमें मनोरथ किए, तो तित भी पीउजी साथ जी ।
*सुंदरबाई ले आवेस धनी को, न छोडे आपना हाथ जी ॥ ५

धनी न देवें दुख तिल जेता, जो देखिए वचन विचारी जी ।
दुख आपनकों तो जो होत है, जो माया करत हैं भारीजी ॥ ६

अंतरध्यान समें दुख दिए, ए आसंका उपजतजी ।
तिन समें संसार न कियो भारी, साथें दुख देखे क्यों तितजी ॥ ७

दुख तो क्योंए न देवे रे पीउजी, ए विचारके संसें खोईएजी ।
याद वचन तो आवेरे सखियो, जो माया छोडते घनों रोईएजी ॥ ८

खेल याद देनेकों मेरे पीउजी, दुख दिए अति घनेंजी ।
साथें मनोरथ एह जो किए, धनिएं राखे मन आपनेंजी ॥ ९

आपन मायाकी हौंस[3] जो करी, और माया तो दुख निधानजी ।
सो याद देनेको रे साथ जी, पीउ भए अंतरध्यानजी ॥ १०

---

१. उपदेश । २. निःसंकोच । ३. लालसा ।

नातर ए अपना रे पीउजी, अधखिन बिछोहा ना सहेजी ।
एह विचार जो देखिए साथजी, तो तारतम प्रगट कहेजी ॥ ११

इन समें तारतमकी समझन, क्योंकर कहिए सोएजी ।
अनेक बिधका तारतम, इत घर लीला प्रगट होएजी ॥ १२

पेहेचानवेकों पीउजी अपना, करूं तारतम विचारजी ।
साथ सकल तुम लीजो दिलमें, ना रहे संसे लगारजी ॥ १३

पेहेली बेर तहां ए निध ना हुती, तारतम जोत रोसन जी ।
तो ए फेरा हुआ रे साथको, तुम देखो विचारी मनजी ॥ १४

आसंका ना रहे किसीकी, जो कीजे तारतम विचारजी ।
सो रोसनाई ले तारतमकी, आए आपनमें आधारजी ॥ १५

अब इन उजाले जो न पेहेचाने, तो आपन बड़े गुन्हेगारजी ।
चरने लाग कहे इंद्रावती, पीउजीके गुन अपारजी ॥ १६

॥ प्रकरण ॥ २ ॥ चौपाई ॥ २१ ॥

## राग धन्यासरी

साथ सकल तुम याद करो, जिन जाओ वचन विसरजी ।
धनी मिले आपनकों मायामें, जिन भूलो ए अवसरजी ॥ १

सुंदरबाई अंतरगत कहे, प्रकास वचन अति भारीजी ।
साथ वचन ए चित दे सुनियो, देखियो तारतम विचारी जी ॥ २

एही चाल तुम चलियो साथजी, एही पाउं परवानजी[1] ।
प्रगट मैं तुमको पहले कह्या, भी कहूं निरवान[2] जी ॥ ३

अब जिन माया मन धरो, तुम देखी अनेक जुगतजी ।
कई कई बिध कह्या मैं तुमको, अजहूं ना हुए त्रपतजी[3] ॥ ४

जब लग तुम रहो मायामें, जिन खिन छोड़ो रासजी ।
पचीस पक्ष लीजो धामके, ज्यों होए धनीको प्रकासजी ॥ ५

---

१. प्रमाण । २. मुक्त करने के लिए । ३. तृप्त ।

अनेक बिध कही मैं तुमको, ढील करो अब जिनजी ।
पाउं भरो ए वचन देखके, पहले व्रज रास चलनजी ॥ ६

रास प्रकास छोड़ो जिन खिन, जो बीतक[1] अपनी परवानजी ।
ए छल तुमसे क्योंए न छूटे, पर मैं ना छोड़ों तुमें निरवानजी ॥ ७

कहे इंद्रावती वचन पीउके, जिन देखाया धाम वतंन जी ।
अब कोटक छल करे जो माया, तो भी न छूटे धनीके चरंन जी ॥ ८

॥ प्रकरण ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ २९ ॥

## लीलाको प्रकास होना आतमा को प्रकास उपज्यो

ना कछू मनमें ना कछू चित, ना कछू मेरे हिरदें एती मत ।
एक वचन सीधा कह्या न जाए, ए तो आयो जैसे पूर दरियाए ॥ १

श्री *सुंदरबाई[2] धनी धाम दुलहिन, *इंद्रावती पर दया पूरंन ।
हिरदें बैठ कहे वचन एह, कारंन साथ किए सनेह ॥ २

वचन एक कहते इन पर, हम घरों जाएके लेसी खबर ।
अद्रष्ट होएके कहे वचन, साथजी द्रढ करी लीजो मन ॥ ३

आपन करी जो पेहले चाल, प्रेम मगन बीते ज्यों हाल ।
ए सब किया अपने कारन, एही पैड़ा[3] अपना चलन ॥ ४

देखलाया सब प्रगट कर, साथ सकल लीजो चित धर ।
ए जिन करो तुम हलकी बान, धनी कहावत अपनी जान ॥ ५

कहिएत सदा प्रमोध वचंन, पर कबू न बानी ए उतपंन ।
तिन कारंन तुम सुनियो साथ, आपनमें आए प्राननाथ ॥ ६

बोहोत सिखापन बिध बिध कही, पर नीद आड़े कछु हिरदें न रही ।
नीद उड़ाओ देख नेहेचल रास, ज्यों हिरदें होए पीउको प्रकास ॥ ७

अब नीद किएकी नाहीं ए बेर, पीउ आए बुलावन उड़ाए अंधेर ।
पेहेले कह्या पीउ प्रगट पुकार, अंतर रहे केहेलाया आधार ॥ ८

---

१. वृत्तान्त । २. श्री देव चन्द्र जी । मार्ग ।

मोहे एक वचंन ना आवे अस्तुत, पर सोभा दई ज्यों कालबुत[1] ।
अस्तुतकी इत कैसी बात, प्रगट होने करी विख्यात ॥ ६

फल वस्त जो भारी वचंन, जीव भी ना कहे आगे मन ।
सो प्रगट किए अपार, जो हुतो अखंड घर सार ॥ १०

प्रगट करी मूल सगाई, कै दिन आपन राखी छिपाई ।
वचंन बड़ा एक ए निरधार, श्री सुंदरबाई केहेते जो सार ॥ ११

ए लीला होसी विस्तार, सूरज ढांप्या ना रहे लगार[2] ।
ए लीला क्यों ढांपी रहे, जाकी रास धनी एती अस्तुत कहे ॥ १२

ता कारंन तुम सुनियो साथ, प्रगट लीला करी प्राननाथ ।
कोई मनमें ना धरियो रोष, जिन कोई देओ महामतीको दोष ॥ १३

ए तुम नेहेचे करो सोए, ए वचंन महामती से प्रगट न होए ।
अपने घरकी नहीं ए बात, जो किव कर लिखिए विख्यात ॥ १४

ए बोहोत विध मैं जानूं घना, जो किव नहीं ए काम अपना ।
पर ए तो नही कछु किवकी बात, केहेलाया बैठ हिरदें साख्यात ॥ १५

ए वचंन सब आवेसमें कहे, उत्तमबाईऐं भली विध ग्रहे ।
यों कर कह्या आवेस दे, प्रगट लीला सबमें होसी ए ॥ १६

मैं मन मांहें जान्या यों, जो किव होसी तो खेलसी क्यों ।
किव भी हुई वचन विचार, खेली इंद्रावती अनेक प्रकार ॥ १७

कारज यों सब हुए पूरंन, श्री *सुंदरबाईकी सिखापंन ।
हिरदें बैठ केहेलाया रास, पहले फेरेके दोऊ किए प्रकास ॥ १८

सुनियो साथ तुम एह कारंन, धनी ल्याए धामसे आनंद अति घंन ।
ज्यों ना रहे मायाको लेस, त्यों धनिऐं कियो उपदेस ॥ १९

ज्यों तुम पेहेले भरे पांउं, योही चलो जिन भूलो दाउ[3] ।
भी देखो ए पेहेले वचंन, प्रेम सेवा यों राखो मन ॥ २०

---

१. नश्वर शरीर। २. थोड़ा भी। ३. अवसर।

अब कहूंगी तारतम रोसंन[1] कर, ए लीजो साथ नेहेचे चित धर ।
कहे इंद्रावती अब ऐसा होए, साथको संसे न रहे कोए ॥ २१

व्रज रास तुमको लीला कही, *तारतमसे रोसनाई कर दई ।
अब इन फेरेके कहूं प्रकार, सब साथ ढूंढ़ काढ़ो निरधार ॥ २२

॥ प्रकरण ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ ५१ ॥

श्री* सुंदरबाईके अंतरध्यानकी बीतक

श्री सुंदरबाई स्यामाजी अवतार, पूरंन आवेस दियो आधार ।
ब्रह्मसृष्ट मिने सिरदार, श्रीधाम धनीजीकी अंगना[2] नार ॥ १

कै खेल किए ब्रह्मसृष्ट कारंन, धनी दया पूरंन अति घंन ।
अनेक वचंन सैयनकों कहे, पर नीद आड़े कछू हिरदें ना रहे ॥ २

तब भी अनेक विध कही, पर नीद पेड़की आड़ी भई ।
भी फेर अनेक दिए द्रष्टांत, पर साथ पकड़के बैठा स्वांत ॥ ३

तब अनेक धनिएँ किए उपाए, पर सुभाव हमारा क्योंए न जाए ।
तब अनेक विध कह्या तारतंम, तो भी अपना न गया भरंम ॥ ४

तब अनेक आपनको कहे विचार, कै विध कृपा करी आधार ।
तब अनेक पखे समझाए सही, तो भी कछू टांकी[3] लागी नहीं ॥ ५

तब विध विध कह्या अनेक प्रकार, तो भी भई सुध न सार ।
अनेक सनंध[4] केहे केहे रहे, पक्ष पचीस आपनकों कहे ॥ ६

सो भी सह कर रहे आपन, नीद ना गई मांहें जागे सुपंन ।
तो भी धनीकी बोहोतक दया, अखंड ब्रजका सुख सब कह्या ॥ ७

भी वरन्यो सुख नेहेचल रास, पहेले फेरेके दोऊ किए प्रकास ।
रास अखंड रात रोसंन, ब्रजलीला अखंड रात दिन ॥ ८

दोऊ जुदी लीला कही अखंड, तीसरी अखंड लीला ए ब्रह्मांड ।
किए तारतमें मन वंछित काम, भी देखाया सुख अखंड धाम ॥ ९

---

१. प्रकाशित । २. अर्द्धांगिनी । ३. प्रभाव । ४. ढंग ।

दया धनीकी है अति घन, कै विध सुख लिए सैयन ।
सेवा करी *धनबाईएं[१] पेहेचानके धनी, सोभा साथ में लई अति घनी ॥ १०
साथसों हेत कियो अपार, धंन धंन धनबाईको अवतार ।
कछुक लेहेर लागी संसार, ना दई गिरने खड़ी राखी आधार ॥ ११
बेहेबट[२] पूर सह्यो न जाए, कर पकरके दई पोहोंचाए ।
तो भी सुध न भई आपन, क्योंए न छूटे मोह जल गुन ॥ १२
तब लरे हमसों अपनायत करी, तो भी नीद हम ना परहरी[३] ।
कै विध कह्या आप आंझू[४] आन, पर या समे हमको सुध न सांन ॥ १३
तब फेर धनिएं कियो विचार, साथ घरों ले जाना निरधार ।
तब संवत सत्रे[५] बारोतरे बरष, भादों मास उजाला पक्ष ॥ १४
चतुरदसी बुधबारी भई, सनंध सबे श्रीबिहारीजीसों कही ।
मध्यरात पीछे किया परियान[६], *बिहारीजीको सुध भई कछु जान ॥ १५
इन अवसरमें भई अजान, मोहे फजीत[७] करी गिनान ।
ना तो मोहे बुलाएके दई निध, पर या समे ना गई मोह जल बुध ॥ १६
इन समे हुती मायाकी लेहेर, तो न आया आतमको बेहेर[८] ।
तब मेरी निध गई मेरे हाथ, श्री धाम तरफ मुख कियो प्राणनाथ ॥ १७
तब हमसों इसारत[९] करी, कह्या धाम आड़े इंद्रावती खड़ी ।
मैं पैठ[१०] न सकों वह करे बिलाप, तब मोहे बुलाए के कियो मिलाप ॥ १८
ए कहिके साथको देखाई, ए इसारत तब हम ना पाई ।
आप भी इंत ब्रह कियो, पर मैं हिरदेमें कछू ना लियो ॥ १९
तब अदृष्ट भए हममेंसे इत, हम सारे साजे बैठे तित ।
जो कछू जीवको उपजे भाउ, तो क्यों छोड़ें हम पीउके पांव ॥ २०
सो तो सबमें देख्या दृष्ट, पर बैठा जीव होए कोई दुष्ट ।
ना तो क्यों सहिए धनीको बिछोह, जो जीव कछू जाग्रत होए ॥ २१

---

१. गांग जी भाई की रूह । २. भरपूर प्रवाह । ३. छोड़ी । ४. आंसू । ५. सत्रह सौ बारह । ६. धाम गमन । ७. अपमानित । ८. स्थिरता । ९. संकेत । १०. प्रवेश पाना ।

एक वचनका न किया विचार, ना कछू पेहेचान भई आधार ।
सुनो हो रतनबाई ए कैसा फेर, कौन बुध ऐसी हिरदे अंधेर ।। २२
ए बेसुधी कैसे आई, कछू पाई न सुध मूल सगाई ।
देखो रे सई[1] ऐसी क्यों भई, ए सुख छोड़ मैं अकेली रही ।। २३
ए दुखकी बातें हैं जो घनी, पर रह्यो जीव कछू अग्या धनी ।
इन समें जो निध न जाए, क्यों आवेस[2] सरूप सहे अंतराए ।। २४
फिट फिट रे भूंडी तूं बुध, तें क्यों ना करी अखंड घर सुध ।
महादुस्ट तूं अभागिनी, ना सुध दई जीवको जाते धनी ।। २५
ए वातें क्योंकर सही, के या समें घर छोड़के गई ।
के तूं विकल भई पापनी, विना खबर निध गई आपनी ।। २६
होए आवेस सरूप पेहेचान, पेहेचान पीछे न सहिए हान ।
तिन कारंन जो यों न होए, तो प्रगट लीला क्यों करे कोए ।। २७
अब तोकों कहा देऊँ रे गाल, तूं भूली अवसर अपनो हाल ।
फिट फिट रे भूंडे[3] तूं मन, तें अधरम कियो अति घन ।। २८
जीव बराबर बैठा होए, क्यों बैठा तूं ए निध खोए ।
एती बड़ाई तुझपर भई, तुझ देखते ए निध गई ।। २९
तें ना दई जीवको खबर, नेठ[4] झूठा सो झूठा आखर ।
ए क्रोध है बड़ा समरथ, पर आया न मेरे समे अरथ ।। ३०
गुन अंग इंद्री सबे घारंन,[5] कोई न जाग्या जीवके कारंन ।
इने सूरमों किनहूं न खोल्या द्वार, जीव बैठा पकड़ आकार ।। ३१
धिक धिक रे भूंड़ा जीव अंजान, तेरी सगाई हुती निरवान ।
रे मूरख तोकों कहा भयो, धनी जाते कछू पीछे ना रह्यो ।। ३२
एती अगनी तें क्योंकर सही, अनेक विध तोकों धनिएं कही ।
निपट जीव तूं हुआ निठोर,[6] झूठी प्रीत न सक्या तोर ।। ३३

---

१. सखी । २. व्याप्त आत्मा । ३. मूर्ख । ४. निपट । ५. नींद । ६. निष्ठुर ।

ऐसा अबूझ अकरमी हुआ इन बेर, कछू न विचारया न छोड़ी अंधेर ।
ऐसी आपसे ना करे कोए, खोया अपना परबस होए ॥ ३४
ऐसा होए खांगडू[1] जुदा पड़या, एती अगनिएं अजूं न चुड़या[2] ।
पांच बरसका होए जो बाल, सो भी कछुक करे संभाल ॥ ३५
धनिएं तोकों बोहोतक कह्या, गए अवसर पीछे कछू ना रह्या ।
तेरी दोरी[3] क्यों न टूटी तिन ताल,[4] फिट फिट रे भूंड़ा कहां था काल ॥ ३६
ए तो कहेर[5] बड़ा हुआ जुलंम, जान्या व्रह क्यों सहे खसंम ।
सो मैं अपनी नजरों देख्या, धरंम हमारा कछू ना रह्या ॥ ३७

॥ प्रकरण ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ ८८ ॥

## विलाप—राग रामग्री

ओहि ओहि करती फिरों, और करों हाए हाए रे ।
पीउजी विछोहा क्यों सहूं, जीवरा टूक टूक होए न जाए रे ॥ १
फिट फिट रे भूंड़े तूं सबद, क्यों आई मुख बान रे ।
वाओ[6] ना लगी तिन दिसकी, निकस ना गए क्यों प्रान रे ॥ २
तूं रे जुबां ऐसी क्यों बली, कहेते एह वचन रे ।
खेंच निकालूं तोकों मूल से, जहांसे तूं उतपन रे ॥ ३
ए रे पीउजी सिधावते, वाचा क्यों रही तूं अंग ।
उजड़ ना पड़े दंतड़े, घन[7] घाए मुख भंग ॥ ४
तें क्या सुने नहीं श्रवना, प्यारे पीउके वचंन ।
ए रे लवा[8] तुझे सुनते, क्यों ना लगी कानों अगिन ॥ ५
चलना पीउका सुनते, तोहे सब अंगों अगिन ना आई ।
सुनते आग झाला[9] मिने, दौड़के क्यों न झंपाई[10] ॥ ६
नीच नैंन ए तुझ देखते, आया न आंखों लोहू ।
पीउ लौकिक जिनों बिछुरे, ऐसे भी रोवें सोऊ ॥ ७

---

१. न गलने वाला दाना । २. पका । ३. स्वांस की डोरी । ४. समय । ५. घोर अत्याचार ।
६. वायु । ७. घन की चोट । ८. निमिष । ९. लपट । १०. कूद कर गिरना ।

रोवे लोहू आंखो आंझू चले, सो कहा भयो रोवनहारे ।
देखतही पीउ चलना, निकस ना पड़े तारे[१] रे ॥ ८

क्यों ना आई बास नासिका, पेहेचान के प्रेमल[२] ।
पीउ संग जीवरा न चल्या, अंदर लेता था सुगंध सकल ॥ ९

गुन अंग इंद्रियों की, पीउ बांधते गोली प्रेम काम ।
पहचान करते पोहोंचावने, सनमंध देख धनी धाम ॥ १०

गुन अंग इंद्री आकारके, आग पड़ो तुम पर रे ।
प्रेम न उपज्या तुमकों, चलते धामधनी घर रे ॥ ११

एती जोगवाई ले तूं आकार, धनी चलते पीछे क्यों रह्या रे ।
अब जलो रे उड़ो खाखडे,[३] इन समे गल पिघल न गया रे ॥ १२

अंग तोहे ब्रह अगिनकी, ना लगी कलेजे झाल[४] ।
ए ब्रहा ले अंग खड़ा रह्या, फिट फिट करंम चंडाल ॥ १३

हाथ पांउ सब अंगके, सब उजड़ ना पड़े संधान ।
अंग रोम रोम जुदे ना हुए, अस्त होते तेज भान ॥ १४

ए रे निमूना भानका, मेरे पीउजीको दिया न जाए ।
ए जोत धनी इन भांत की, कोट ब्रह्मांडसें न समाए ॥ १५

ए जोत पकड़ी ना रहे, चली इंड फोड़ सुंन निराकार ।
*सदासिव *महाविस्नु *निरंजन, सब प्रकृत को कियो निरवार ॥ १६

सबदातीत हुते जो ब्रह्मांड, जाए तिनमें करी रोसंन ।
*अख्यर प्रकाश करके, जाए पोहोंची धामके बंन ॥ १७

सब गिरदवाए[५] बन देखाएके, किए धाम मंदिर प्रकास ।
ब्रह्मानंद ब्रह्मसृष्टमें, प्रगट कियो विलास ॥ १८

हांरे ए सुख सैयां लेवहीं, मेरे पीउजीकी विरहिन ।
पीछे तो जाहिर[६] होएसी, देसी अखंड सुख सबन ॥ १९

---

१. आंख के गोलक । २. परिमल सुगन्ध । ३. सूखे पत्ते । ४. आग ५. चारों ओर । ६. प्रकट ।

ए रे धनी मेरे चलते, ना टूटी रगां[1] क्यों रही खाल[2] रे ।
रूप रंग रस लेयके, क्यों ना पड़ी आग झाल रे ॥ २०

हडी मांस रगां भेली क्यों रही, ए पकड़के अंग अंधेर रे ।
धनीका विछोहा क्यों सह्या, लोहू ना सूक्या तिन बेर रे ॥ २१

अंग मेरे आकारके, सातो[3] धात ना गई क्यों सूक रे ।
एहरन[4] घनके बीचमें, क्यों ना हुई भूक[5] भूक रे ॥ २२

नैंन नासिका मुख श्रवना, भूंडी खोपड़ी पकड़ तूं क्यों रही ।
तोड़ इनोंको जुदे जुदे, तूं क्यों उजड़ ना गई ॥ २३

ए रे पीउजी सिधावते, क्यों ना लग्या कलेजें घाए ।
काल मेरा कहां चल गया, क्यों न काढी खैंच अरवाए[6] ॥ २४

नेहचल निध रे बिछड़ते, कहां गई वह बुध ।
धिक धिक रे चंडालनी, तें क्यों भई ऐसी असुध ॥ २५

ग्यान मेरा तिन समे, क्यों ना किया वतंन उजास[7] ।
तिन समे दगा दिया मुझको, मैं रही तेरे विस्वास ॥ २६

गुन अंग इंद्री मेरे मुझसों, उलटे क्यों हुए दुसमन रे ।
जिन समे हुआ रे विछोहा, मेरे क्यों न हुए सजन रे ॥ २७

साहेब मेरा चलते, मेरी सकल सैन्या अंग मांहें ।
सो काम न आए आतमके, अवसर ऐसो न क्यांहें ॥ २८

फिट फिट रे सेन्या तुमको, क्या न हुती[8] तुमें पेहेचान ।
जाते जीवका जीवन, तुम क्यों ले ना निकसे प्रान ॥ २९

जीवन चलते जीवरा, क्यों छोड़्या ते संग रे ।
अब कहूं रे तोकों करम चंडाल, तूं तो था तिनका अंग रे ॥ ३०

नीच करंम ऐसा चंडाल, तुझ बिना कोई ना करे रे ।
श्री धनी धाम चले पीछे, इन जिमीमें देह कौन धरे ॥ ३१

---

१. नसें । २. चमड़ी । ३. रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा शुक्र आदि । ४. निहाई । ५. चूर चूर होना । ६. आत्मा । ७. प्रकाश । ८. थी ।

कौन विध कहूं मैं तुझको, कुकरमी करंम चंडाल ।
तोहे अंग न उठी अगिन, तो तूं क्यों न झंपाया झाल ॥ ३२
झांप न खाई तें *भैरव[1], क्यों कायर हुआ अवसर ।
तिल तिल तन न ताछिया[2], जाते ए सुख सागर ॥ ३३
गुन सागर धनी चलते, क्यों किया ऐसा हाल ।
*बज्रलेपी[3] रे स्वाम द्रोही, जीव क्यों चूक्या रे चंडाल ॥ ३४
दुष्ट अधरमी केता कहूँ, हुआ बेमुख देते पीठ रे ।
ऐसा समय गमाईया, निपट निठुर जीवरा ढीठ रे ॥ ३५
सबदातीतके पारके पार, तिन पार जोतका था तेज रे ।
यासों था तेरा सनमंध, पर तें कछुए न राख्या हेज[4] रे ॥ ३६
तुझमें भी तेज उन जोतका, और वाही कमलकी बास ।
वह तेज फिरते तूं तेज, क्यों न पोहोंच्या जोत प्रकास ॥ ३७
अब कहा करूं कहां जाऊँ, ए बानी धनी ढूंढों कित ।
पीउ पोहोंचाए मैं पीछे फिरी, करने बिलाप रही इत ॥ ३८
अब ए तूं बानी कहां सुनसी, मेंरे धाम धनीके वचंन ।
वरनन करते श्रीमुख, सो अब काहूँ न पाईए ठोर किन ॥ ३९
अब तारतम कौन केहेसी, कौन विचार कर देसी हेत ।
चौदे भवन में इन धनी विना, ए बानी कोई ना देत ॥ ४०
ब्रजलीला रात दिन अखंड, रासलीला अखंड रात रे ।
पीउजी विना विवेक कौन केहसी, हुआ प्रतिबिंब तीसरा प्रभात रे ॥ ४१
भेष बागेका बेवरा, रह्या अग्यारे दिन ।
सात गोकल चार मथुरा, कौन केहेसी विवेक वचंन ॥ ४२
उत्तम विचार उत्तम बंधेज[5], और कै विधके द्रष्टांतरे ।
इन धनी विना रे दया कर, कौन देसी कर खांतरे ॥ ४३

---

१. भयानक कुंड । २. छेद किया । ३. अमिट लेप । ४. लाज । ५. नियम ।

पन बांध बरस चौदेलों, सास्त्रको अरथ कौन लेसी ।
सोए प्रकास इन पीउ विना, एक साएतमें समझाए कौन देसी ॥ ४४
दूध पानी रे जुदा कर, कौन केहेसी कर रोसंन ।
मोहजल गेहेरेमें डूबते, कौन काढ़े या धनी विन ॥ ४५
अठोत्तर[1] सौ पक्षका, कौन काढ़ देसी सार रे ।
सुख अख्यर अख्यरातीतके, कौन देसी विना आधार रे ॥ ४६
नरसैयां कबीर जाटीअके, और कै साधों सास्त्र वचंन रे ।
काढ़ दे सार कौन इनका, करके एह मथंन रे ॥ ४७
महाप्रलेलों जो कोई, सास्त्र पढ़ करे अभ्यास ।
बहु विध लेवें विवेकसों, कर मन द्रढ़ विस्वास ॥ ४८
तो भी न आवे ए विवेक, ना कछू मुख बान रे ।
सो संग धनीके एक खिनमें, कर देवे सब पेहेचान रे ॥ ४९
अबूझ टाल सुबुध देअके, कौन करसी चतुर वचिख्यंन रे ।
नेहेंचल निध धनी धामकी, सो कहूं पाईए न चौदे भवन रे ॥ ५०
दूजा कौन देसी रे लड़ के, ऐसी जाग्रत बुध सुजान रे ।
साथ धामका जानके, कौन केहेसी हेत चित आन रे ॥ ५१
नीद उड़ाए जगाएके, कौन देसी घर आप पेहेचान रे ।
खेल देखाए आप देह धर, कौन काढ़सी होए गलतान रे ॥ ५२
त्रैलोकी त्रगुन माया मिने, हम बैठे थे रचके घर रे ।
सो नेहेचल धाममें बैठाएके, याको कौन देखावे खेल कर रे ॥ ५३
अब ए चरचा कहां सुनसी, मूल वचंन तारतंम रे ।
ए सुने विना हम क्यों गलसी, विना बानी इन खसंम रे ॥ ५४
और घाट बिना गले, क्यों जीव टल होसी आतम रे ।
तीन[3] दिवाल आड़ी भई, सो उड़े ना विना खसंम रे ॥ ५५

---

१. एक सौ आठ खंड । २. कुशल । ३. स्थूल, सूक्षम और कारण ।

पांच[1] पचीस[2] जो उलटे, होए बैठे दुसमन रे ।
सो नेहेचल घरमें बैठाएके, कौन कर देवे सीधे सजन रे ॥ ५६

बैरी मारके कौन जिवावसी, उलटे भानके करे सनमुख रे ।
या दुखमें इन धनी विना, कौन देवें सांचे सुख रे ॥ ५७

बीच पट आतम पर आतमा, कौन उड़ाए कर दे संग रे ।
इन दुलहे विना दुलहिनसों, क्यों होसी रस रंग रे ॥ ५८

मोहजल पूर अंधेर में, जित काहूं ना किसीकी गंम रे ।
तहां से काढ़ देवें सुख नेहेचल, ऐसा कौन विना इन खसंम रे ॥ ५९

इन भवगसार के जीवों में, वासना[3] ढूंढ़ काढ़े छुड़ाएके फंदरे ।
आतम अपनी पहचानके, कौन पावे आनंद रे ॥ ६०

अब कौन रे करसी ऐसा वरनंन, नेहेचल व्रज रास धाम रे ।
ए कौन सुख सैयोंको देयके, कौन मिलावे स्यामाजी स्यांम रे ॥ ६१

आतमको रे जगाएके, कौन खोले आतमके श्रवन रे ।
अंतर पट उड़ाएके, कौन केहेसी मूल वचंन रे ॥ ६२

फोड़ ब्रह्मांड आड़े आबरन, ताए पोहोंचावे अख्यर पार रे ।
सुख अखंड अख्यरातीतको, कौन देसी विना इन भरतार रे ॥ ६३

ऊपर वाड़े[4] बाट धामकी, कौन देखावे और रे ।
इन भेदी विना भोम क्यों छूटही, क्यों पहुँचिए अखंड ठौर रे ॥ ६४

साथ अंजान अबूझको, कौन लेसी सुधार रे ।
वासना सगाई पेहेचानके, कौंन खोल दे नेहचल द्वार रे ॥ ६५

सत सागर सुतेजमें, बतावत नेहेचल धन रे ।
सो पूर नेहरां चल गई, आवत अमोल अखंड रतन रे ॥ ६६

ए धन मेरे धनीअका, आया था मुझ कारन रे ।
सो धन खोया में नीदमें, धनी देते कर कर जतन रे ॥ ६७

---

१. पांच तत्व । २. पचीस प्रकृति । ३. आत्मा । ४. ओर ।

ए धन जाते मेरे धनीका, सो तूं देखके कैसे रही रे ।
फिट फिट भूंड़ी पापनी, तें एती पुकार क्यों सही रे ॥ ६८

फिट फिट रे मेरी आतमा, तें क्यों खोई निध आई हाथ रे ।
कर दई धनी धाम पेहेचान, तो तू क्यों ना चली पीउ साथ रे ॥ ६९

संग पीउके ना चली, क्यों रही पीउसों बिछुर रे ।
अजहूँ आहि तेरी ना उड़ी, याद कर अवसर रे ॥ ७०

त्राहि त्राहि करूं रे सजनी, पीउजी दियो मोहे छेह[1] रे ।
जल बल बिरहा झालमें, भसम ना हुई जीव देह ॥ ७१

कै विध कह्या मोहे पीउजी, पर मैं कछू ना किया सनेह रे ।
अब तो बैठी धन खोएके, हाथ आया था जेह रे ॥ ७२

धनिएँ तो कह कह देखाईया, कर कर मुझसों एकांत रे ।
पर मैं चूकी चंडालन अवसर, अब पकड़ बैठी मैं स्वांत रे ॥ ७३

अब सबदातीत निध धामकी, ए कौन केहेसी मुख बांन रे ।
श्री धामके सुखकी रे बीतक, कौन केहेसी बरतमान रे ॥ ७४

उठते बैठते खेलनकी, सुध कौन कहे एह सुकंन रे ।
बन जाए अन्हाएके, कौन केहेसी सिनगार वरनन रे ॥ ७५

वस्तर भूषनकी विगत, पीउ विना कौन लेवे रे ।
ए सुख अनभव अपना, सनमंध करके कौन देवे रे ॥ ७६

कै सुख अनभव बनके, कै सुख सातो त्रट रे ।
सुख ताल मंदिर मोहोलनके, कौन देवे उडाए अंतर पट रे ॥ ७७

तीसरी भोम[2] मोहोल सिनगार, और बैठक आरोग पौढ़न रे ॥
सुख पाल बैठ बन सिधावते, कौन केहेसी पीछला पोहोर दिन रे ॥ ७८

सुख चौथी भोम निरतके, सुख पांचमी भोम पोढ़न रे ।
ए सुख अनभव कौन केहेसी, कै विध विलास रैन रे ॥ ७९

---

१. वियोग । २. मंजिल ।

कै विध सुख तारतमके, जो कहे वचन सुख मूल रे ।
या विध हमें कौन कहें बरनन, सनमंध होए सनकूल रे ॥ ८०
देत बिछोहा धनी धामके, तुम क्यों न किया एह विचार रे ।
हुती आसा मुखी *इंद्रावती, सुख चाहती अखंड अपार रे ॥ ८१

॥ प्रकरण ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ १६६ ॥

## जाटी भाषामें विलाप

मेरी सैयल[1] रे, साह[2] आए थे मेरे घर ।
मैं पेहेचान ना कर सकी, पीउ चले पुकार कर ॥ १
पीउ आए ना पहचाने, मोहे ना परी सुध ।
वचन कहे जो हेत के, भांत भांत कै विध ॥ २
नींद ऐसी भई निगोड़ी, ए तुम देखो रे सई ।
दिन दो पोहोरे जागते, मोहे काली रैन भई ॥ ३
घर आए ना पेहेचाने, कहे विध विध के वचन ।
कांन आंखां फूटियां, और फूटे हिरदेंके नैन ॥ ४
सजन मेरा चल गया, अब रहूँगी विध किन ।
वस्त गई जब हाथ थें, अब रोवना रात दिन ॥ ५
मैं तो तब ना उठ सकी, पीउ चले बखत जिन ।
क्यों खोऊं धनी अपना, जो तब पकड़ों चरन ॥ ६
जो मैं तबही जागती, तो क्यों जावे मेरा पीउ ।
क्यों छोड़ों खसंमको, संग पीउके मेरा जीउ ॥ ७
अब तरफ दसो दिस देखिए, तो गेहेरे मोहके जल ।
मेर जैसी लेहेरों मिने, मांहें मछ गलागल ॥ ८
जल मांहें भमरियां,[3] कै विध तीखे तान ।
कहूं सुख नहीं साएतका, ए दुख रूपी निदान ॥ ९

---
१. सखी । २. साजन । ३. भंवर ।

एक घोर अंधेरी आंखां नहीं, और ठौर नहीं बुध मन ।
विषम जल ऐसे मिने, पीउ आए मुझ कारन ॥ १०
मांहें भभूके[1] आगके, खाना अमल जहर अति जोर ।
पीउ पुकारे कै विध, मैं उठी ना अंग मरोर ॥ ११
पीउ मेरा मुझ वास्ते, आए ऐसेमें आप ।
कै विध जगाई मोहे, मैं कर ना सकी मिलाप ॥ १२
अब कहा करूं कहां जाऊं, टूट गई मेरी आस ।
कहां वतंन कौन बतावे, पीउ ना देखों पास ॥ १३

॥ प्रकरण ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ १८२ ॥

पुकार चले मेरे पीउजी, मैं तो नीदेंमें उरझीअ[2] रे ।
अब ढूंढ़े मेरा जीव रे, सो सजन अब कित पाईए । १
सई[3] रे पीउकी बातें मैं कैसे कहूं, मोसों आए कियो मिलाप ।
मेरे वास्ते माया मिने, क्यों कर डारचा आप ॥ २
आए वतंनथे पीउ अपना, देखाएके चले राह ।
आधा गुन जो याद आवे, तो तबही उड़े अरवाह ॥ ३
साहेंब चले वतंन को, केहे केहे बोहोतक बोल ।
धिक धिक पड़ो मेरे जीवको, जिन देख्या न आंखां खोल ॥ ४
सई रे अनेक भांत मोसों कही, मोहे मारत है सो बैन रे ।
सो भी कह्या आंझू आंन के, पर मैं पलक ना खोले नैन रे ॥ ५
आंखों पानी भरके, हाथ पकड़ किया सोर ।
आग परो मेरे जीवको, जाकों अजहूं एही मरोर ॥ ६
सई रे अब मैं कहा करूं, मेरा हाल होसी विध किन ।
वतंन बैठ सैयनमें, क्यों कर करूं रोसन ॥ ७

१. शोले । २. उलझी । ३. सखी ।

अब सुनो रे तुम सैयां, कहूं सो बीतक बात ।
पानी तो पीउजी ले चले, अब तलफूं मछली न्यात[१] ॥ ८

कर कर सोर जो वल्लभा, फिरे जो आप वतंन ।
चले जो मेरे देखते, केहे केहे अनेक वचंन ॥ ९

दुलहा मेरा चल गया, मेरी वले न जुबां यों ।
पल पल वचंन पीउके, मोहे लगे कटारी ज्यों ॥ १०

आग पड़ो तिन देसड़े, जित पीउकी नहीं पेहेचान ।
तो भी सुध मोहे ना भई, जो हुई एती हान ॥ ११

काट जीव टुकड़े करों, मांहें भरूं मिरच लोन[२] ।
ए दरद पिया इन भांतका, अब ए मेटे कौन ॥ १२

आग लगी झाला उठियां, जीवरा जले रे मांहें ।
तलफ तलफ मैं तलफूं, पर ठंढक न दारू[३] क्यांहें ॥ १३

दुलहासों जो मैं करी, ऐसी करे न दूजा कोए ।
विलख विलख पीउजी चले, पर मैं मूंदी आंखा दोए ॥ १४

अब क्यों करूँगी मैं बातड़ी, सामी क्यों उठाऊँगी मोंह[४] ।
मेरे हाथ ऐसी भई, खलड़ी उतारूँ सिर नोंह[५] ॥ १५

काटूं तन तरवारसों, भूक करूँ हडियां तोर ।
खलड़ी उतारूँ पेहेले उलटी, जीव काढूं यों जोर ॥ १६

तरवार भालें कटारियां, मोहे काट करी टूक टूक ।
मेरे अंग हुए मुझे दुसमन, जीव करे मिने कूक[६] ॥ १७

धाम धनी पेहेचानके, सीधी बात न करी सनमुख ।
कबूं दिल धनीका मैं न रख्या, अब क्यों सहूँगी ए दुख ॥ १८

दरद मीठा मेरे पीउका, ए जो आग दई मुझे तब ।
अति सुख पाया मैं इनमें, सो मैं छोड़ ना सकों अब ॥ १९

---

१. तरह । २. नमक । ३. दवा । ४. मुख । ५. नाखून । ६. पुकार ।

एता सुख तेरे सूलमें, तो विलास होसो कैसा सुख ।
पर मैं ना पेहेचाने पीउको, मोहे मारत हैं वे दुख ॥ २०

सब अंग मेरे टुकडे करूँ, भूक करूं देह जीउ ।
सो वार डारूँ तुम दिस पर, इत सेवा हुई कहां पीउ ॥ २१

हडियां जारूँ आगमें, मांहें मांस डारूँ सिर ।
ए भूली दुख क्योंए ना मिटे, ए समया न आवे फिर ॥ २२

जरा जरा मेरे जीवका, विरहा तेरा करत ।
चरने ल्यो इंद्रावती, पेहेले जगाएके इत ॥ २३

॥ प्रकरण ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ २०५ ॥

## चौपाई प्रगटी है

एक लवो याद आवे सही, तो जीव रहे क्यों काया ग्रही ।
अब सुनियो साथ कहूँ विचार, भूले आपन समें निरधार ॥ १

गयो अवसर फेर आयो है हाथ, चेतन कर दिए प्राणनाथ ।
तब जो वासना बाई रतन, लीलबाईके उदर उतपन ॥ २

श्री देवचंदजी पिता परवान, देखके आवेस दियो निरवान ।
वचंन धनीके कहे निरधार, आवेस पोउजीको है अपार ॥ ३

इन वानिऐं ब्रह्मांड जो गले, तो वासना बानीसे क्यों पीछी टले ।
वास्ना कारन बांधे बंध, कै भांतें अनेक सनंध ॥ ४

ए बानी कही मेरे धनी, आगे कृपा होसी घनी ।
हरखें साथ जागसे एह, रेहेसे नहीं कोई संदेह ॥ ५

साथको घरों ले जाना सही, कोई मायामें ना सके रही ।
खैचे सबोंकों ए बानी, फिरसी घरों धनी पेहेचानी ॥ ६

भी वाही चरचाने वाही बान, वचंन केहेते जो परवान ।
ब्रज रास श्रीधामके सुख, साथकों केहेते जो श्रीमुख ॥ ७

पक्ष पचीस वरनवे जेह, भी सुख वल्लभ देवे एह ।
अंतरध्यान समें ज्यों भए, भी आए वचंन पिया सोई कहे ॥ ८

पेहेले हुआ है ज्यों, भी इत पियाने किया है त्यों ।
सोई पियाने सोई दिन, देखो तारतमके वचन ॥ ९

सोई घड़ीने सोई पल, मायाएँ बीच डारयो बल ।
साथकों खिन न्यारे ना करे, विना साथ कहूं पाऊं ना धरे ॥ १०

बेर ना हुई एक अधखिन, किया मायाएँ बिछोहा घन ।
*मारकंड माया द्रष्टांत, मांगी धनीपें करके खांत ॥ ११

देखो मायाको वरतांत, ए दूर होए तो पाईए स्वांत ।
ततखिन कंपमान सो भयो, माया मिने भिलके गयो ॥ १२

कल्पांत सात छियासी जुग, कियो मायाएँ बेसुध एते लग ।
कछुए ना भई खबर, अति दुख पायो रिखीस्वर ॥ १३

तब नाराएंनजीएं कियो प्रवेस, देखाड़ी माया लवलेस ।
फिरी सुरत आए नाराएन, याद आवते गए निसान ॥ १४

याद आया सरूप बैठा जांहें, तब उड़ गई माया जानों हती नांहें ।
जाग देखे तो सोई ताल, बीच मायाएँ कियो ऐसो हाल ॥ १५

मायाकी तो एह सनंध, निरमल नेत्रें होईए अंध ।
ता कारंन कियो प्रकास, तारतमको जो उजास ॥ १६

सोए लेके आए धनी, दया आपन ऊपर है घनी ।
जानें देखसी माया न्यारे भए, तारतमके उजियारे रहे ॥ १७

भले तारतम कियो प्रकास, देखाया मायामें अखंड विलास ।
तारतम वचन उजाला करया, दूजा देह मायामें धरया ॥ १८

॥ प्रकरण ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ २२३ ॥

## विनती लिखी है

साखी—विनती एक सुनो मेरे प्यारे, कहूं पीउजी बात ।
आए प्रगटे फेर कर, करी कृपा देख अपन्यात[1] ॥ १

---

१. अपनापन ।

श्रीदेवचंदजी हम कारने, निध तुमारे हिरदें धरी ।
वचन पालने आपना, साथ सकल पर दया करी ।। २
जनम अंध जो हम हते, सो तुम देखीते किए ।
पीठ पकड़ हम न सके, सो फेर कर पकर लिए ।। ३
अब जो कछू हममें, होसी मूल अंकूर ।
जो नींद उड़ाए तुम निध दई, सो क्यों छोड़ों पिया नूर ।। ४
पेहेले तो हम न पेहेचाने, सो सालत है मंन ।
चरचा कर कर समझाए, कहे बिध बिधके वचंन ।। ५
चाल —ऐसे अनेक वचंन कहे हमको, जिन एक वचने पेहेचाने तुमको ।
तुम दई पेहेचान विध विध कर, पर निरोध[1] बैठा हिरदा पकर ।। ६
तब हँस लर आंझू आनके कह्या, पर तिन समे हम कछू ना लह्या ।
तब तारतम कहे देखाया घर, हम तो भी नां सके पेहेचान कर । ७
तब हममेंसे अद्रष्ट भए, कोई कोई वचन हिरदेंमें रहे ।
जो या समें खबर ना लेते तुम, तो मोहजल दुख अति पावते हम ।। ८
यों जानके आए हम मांहे, आए बैठे प्रगटे तुम जांहें ।
ज्यों आपन पेहेले व्रजमें हते, नित प्रते पियासों प्रेमें खेलते ।। ९
अनेक खेल किए आपन, पूरन मनोरथ सब किये तिन ।
अग्यारे वरसलों लीला करी, काल माया इतही परहरी ।। १०
जोगमाया कर रास जो खेले, कै सुख साथ लिए पीउ भेले ।
करी अंतराए देनेको याद, हम दुख मांग्या पीउपें आद ।। ११
सोई देखके आए ज्यों, फेर अब प्रगट हुए हैं त्यों ।
धनी जब करे अपन्यात, मन चाह्या सुख देवें साख्यात ।। १२
तिन समें धाख रहीती जोए, अब इत सुख देत हैं सोए ।
अब सुनो पीउ कहूं गुन अपने, अवगुन मेरे हैं अति घनें ।। १३

---

१. रुकावट ।

तुमारे मनमें न आवे लवलेस, पर मैं जानों मेरे मनके रेस[1] ।
वार डारों तुम पर मेरी देह, तुम किए मोसों अधिक सनेह ॥ १४
[2]घोली घोली मैं जाऊं तुम पर, उरुनी मैं होऊंगी क्योंकर ।
उरुनी होना तो मैं कह्या, माया लेस हिरदेमें रह्या ॥ १५
अनेक बार लेऊं मैं वारने, तुम अपनी जान गुन किए घनें ।
मैं वार डारूं आतम अपनी, पर सालत सोई जो करी दुसमनी ॥ १६
क्यों छूटूंगी ए गुन्हे हो नाथ, सांचो कहूं मेरे धामके साथ ।
तुम साथ मिने मोहे देत बड़ाई, पर मैं क्यों छूटूंगी बज्रलेपाई ॥ १७
तुम गुन किए मोसों अति घंन, पर अलेखे मेरे अवगुन ।
तुम गुन किए मोसों पेहेचानकर, मैं अवगुन किए माया चित धर ॥ १८
अब बल बल जाऊं मेरे धनी, मेरे मनमें हाम है घनी ।
असत मंडलमें हासल अति बड़ी, मैं पीउजीकी उमेद ले खड़ी ॥ १९
जो मनोरथ किए मांहें श्री धाम, सो पूरन इत होए मन काम ।
जो विध सारी कही है तुम, सो सब द्रढ़ करी चाहिए हम ॥ २०
सुख धामके जो पाईए इत, सो कहूं मेरी आतम न देखे कित ।
इन अंगकी जुबां किन विध कहे, जो सुख कहूं सो उरे रहे ॥ २१
ए सोभा सबदातीत है धनी, और सबदमें जुबां आपनी ।
ए सुख विलसों होए निरदोस, होए फेर सुफल दया तुम जोस ॥ २२
इतने मनोरथ होंए पूरन, तब जानों दया हुई अति घंन ।
फेर फेर दयाको तो कह्या घना, जो कर ना सकी कछू बस आप अपना ॥ २३
अब मनसा वाचा करमना कर, क्योंए ना छोड़ूं अखंड घर ।
नैनों निरखूं निरमल चित, रूदे[3] राखूं पीउ प्रेमें हित ॥ २४
कर परनाम लागूं चरने, करूं सेवा प्यार अति घनें ।
करूं डंडवत जीवके मन, देऊं प्रदख्यना रात ने दिन ॥ २५

---

१. पीड़ा । २. न्यौछावर होना । ३. हृदय ।

कृपा करत हो साथ पर बड़ी, भी अधिक कीजो घड़ी घड़ी ।
*इंद्रावती पांउं परत आधार, धनी धामके लई मेरी सार ॥ २६

॥ प्रकरण ॥ १० ॥ चौपाई ॥ २४६ ॥

आपनमें बैठे आधार, खेल देखाया खोलके द्वार ।
अब माया कोटान कोट करे प्रकार, तो इत साथको न छोडूं निरधार ॥ १
बुलाए सैयोंको चले वतंन, क्यों न होए जो कहे वचंन ।
मनके मनोरथ पूरन कर, नेहेचे धनी ले चलसी घर ॥ २
अब जो आपन होईए सनमुख, तो धनी बोहोत विध पावें सुख ।
कै विध दया साथपर कर, सब विधके सुख देवें फेर ॥ ३
फेर कर भलो आयो अवसर, खुले भाग धनी चितमें धर ।
आपनछोड़ने न करे संसार, पर धनी धाम विछोहा न सहे लगार ॥ ४
विछोहा नहीं कछू पक्ष तारतम, सुपनमें माया देखें हम ।
सुपन विछोहा धनी ना सहे, तारतम वचंन प्रगट कहे ॥ ५
ल्याए वचंन तारतम सार, खोले पारके पार द्वार ।
जानों जिन आसंका रहे, साथ ऊपर धनी एता ना सहे ॥ ६
धनीके गुन मैं केते कहूं, मैं अबूझ कछू बोहोत ना लहूं ।
धनीके गुनकों नाहीं पार, कर ना सके कोई निरवार ॥ ७
मैं केते नजरों देखें सही, पर गुन मुखसे न सके कही ।
ना कछू किनका भोम गिनाए, सागर लेहेर गिनी न जाए ॥ ८
मेघ की बूंदे जेती परे, ना कोई वनसपती निरमान करे ।
जदिप याको निरमान होए, पर गुन धनीके ना गिने कोए ॥ ९
इन बेरके भी कहे न जांए, तो और बेरके क्यों कहूं जुबांए ।
पेहेले फेरेकी क्यों कहूं बात, गुन जो किए धनी साख्यात ॥ १०
क्यों धनी गुन गिनूं इन आकार, पर कछुक तो गिनना निरधार ।
*इंद्रावती कहे मैं गुन गिनों, कछुक प्रकासूं आपोपनों ॥ ११

॥ प्रकरण ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ २६० ॥

### श्रीधनीजीके गुन लिखे हैं

मैं लिखूं श्रीधनीजीके गुन, जो रे किए मोसों अति घन ।
जोजन पचास कोट जिमी केहेलाए, आड़ी[१] टेढ़ी खड़ी सब मांहें ।। १

*चौदेलोक बैकुंठ सुंन जोए, जिमी बराबर करूं सोए ।
मैं प्रगट बिछाए करूं एक ठौर, टेढ़ी टाल करूं सीधी दोर[२] ।। २

कागद धरचो मैं याको नाम, गुन लिखने मेरे धनी श्रीधाम ।
चौदे भवनकी लेऊं वनराए, तिनकी कलमें मेरे हाथ गढ़ाए ।। ३

गढ़ते सरफा[३] करूं अति घन, जानों बड़ी छोही[४] उतरे जिन ।
ए सरफा मैं फेर फेर करूं, अखंड धनी गुन हिरदें धरूं ।। ४

बारीक टांक मेरे हाथों होए, ऐसी करूं जैसी करे न कोए ।
कोई तो केहेती हूं जो माया लागी तुम, बोहोतक कह्या जो पेहेले हम ।। ५

तुमको माया लागी होए सत, तुम विना और सबे असत ।
इन जिमी ऊपर के लेऊं सब जल, और लेऊं सात पातालके तल ।। ६

जल छे लोकके लेऊँ लिखनहारी, एक बूंद ना छोडूं कहूँ न्यारी ।
सब जल मिलाए लेऊँ मेरे हाथ, गुन लिखने मेरे श्रीप्राननाथ ।। ७

बाकी स्याही करूँ मैं अति विगत,[५] एक जरा न जाए समारूं इन जुगत ।
ए कागद कलम मस कर, मांहें बारीक आंक लिखूं चित धर ।। ८

गुन जो किए पीउ तुम इत आए, सो इन जुबां मैं कहे न जांए ।
देह माफक मैं लिखूं परमान, एक पाओ लवेका काढूं निरमान ।। ९

अब लिखती हूँ साथ देखियो उजास, मैं गजे[६] माफक करूँ प्रकास ।
मैं बोहोत सकोडूं आंक लिखते ए, जिन जानों मीड़े[७] होंए बड़े ।। १०

प्रथम एकड़ा करूँ एक चित, लगता मीड़ा धरूँ भिलत ।
मेरे हाथ अख्यर कुसादे[८] ना होएं, मैं डरूँ जानों मिले ना दोए ।। ११

---

१. चौड़ाई में । २. समतल । ३. कंजूसी । ४. छिलका । ५. विधि से । ६. बुद्धि । ७. विन्दु । ८. खुले ।

यों करते ए दस जो भए, मीड़ा धरके एक सौ कहे ।
भी एक धरके गिनूं हजार, धनी गुन दयाकों नाहीं पार ॥ १२
भी लगता मीड़ा धरूँ एक, जीवसे गिनूं दस हजार बसेक ।
भी एक धरके लाख गिनाए, भी धरूँ ज्यों दस लाख हो जाए ॥ १३
कोट होवे मीड़ा धरते सातमां, दस कोट करूँ मीड़ा धरके आठमां ।
नवमां धरके करूँ अबज,[1] गुन गिनती जाऊँ करती कबज[2] ॥ १४
दस धरके करूँ अबज दस, गुन गिनते आवे मोहें अति घनों रस ।
अग्यारे धरके करूँ खरब एक, लिखते गुन धनी ग्रहूँ बिसेक ॥ १५
बारे धरके दस करूँ खरब, पेहेले यों गिनके किन कहे न कब ।
तारतम कहे और कौन गिने गुन, हुआ न कोई होसी हम बिन ॥ १६
मैं गुन गिनूं श्रीधाम धनीके रे, पर कमी कागद कलम मस मेरे ।
कमी तो केहेती हूँ जो बैठी माया मांहें, ना तो कमी नहीं कछुए क्यांहें ॥ १७
साथ कारन मैं करूँ पुकार, देखों वासना मोहजल वार पार ।
तेरे धरके गिनूं गुन नील, घनें समावें गुन हिरदें असील[3] ॥ १८
चौदे धरके करूँ नील दस, गुन प्रकास लेऊँ धनी जस ।
पंद्रे धरके करूँ पदंम, मेरे धनीके गुनकी मैं करूँ गंम ॥ १९
सोलह धरके करूं पदंम दस, गुन नजरों आवते हुए धनी बस ।
सत्रह धरके करूं गुन अंक, अठारे धरूं ज्यों होंए गुन संख ॥ २०
सुरिता करूं धरके उनईस, पति गुन ग्रहूं धरके बीस ।
अंत करूं धरके इकैस, मध करूं गुन दोए धर बीस ॥ २१
एकड़ा ऊपर तेईस मीड़े धरूं, प्रारध[4] करके लेखा मेरा करूं ।
लौकिक लेखे गुन ना गिनाए, मेरे धनीके गुन यों गिने न जांए ॥ २२
हिसाब करूं साथ देखियो विचार, गुन जाहेर हुए प्रानके आधार ।
प्रारध गुने एक मीड़ेसों बढ़े, दूजेसों हर एक यों चढ़े ॥ २३

१. अरब । २. ग्रहण करना । ३. असल । ४. अन्तिम संख्या ।

यों करते ए होवें जेते, इन विध चढ़ते जाएं ते ते ।
ए हिसाब मेरी आतम करे, गुन धनी हिरदे अंतर धरे ॥ २४

लिखते गुन धनी हिरदे आए, पर डरूं जानों कागदमें न समाए ।
कलमोंको मेरा जीव ललचाए, गढ़ते गढ़ते जानों जिन उतर जाए ॥ २५

सरफा करूं मैं लिखते स्याही, जिन लिखते अधबीच घट जाई ।
यों धरते धरते मीड़े रहे भराए, वार किनार यों रहे समाए ॥ २६

ए कागद यों पूरन भया सही, स्याही कलमें कछू बाकी ना रही ।
अब ए गुन गिनू मैं नीके कर, आतमके अंदर ले धर ॥ २७

ए तो गुन गिने मैं चित ल्याए, पर धनीके गुन यामें न समाए ।
भी करूं दूजे लिखनेका ठाम, गुन लिखने मेरे धनी श्रीधाम ॥ २८

ए गुन मिल जमें भए जेते, या विध ऐसे कागद लिखे एते ।
ऐसे कागद ऐसी स्याही कलम, मांहें बारीक आंक लिखे हैं हम ॥ २९

इन कलमोंको मैं देखी अनी,[1] कछू कर ना सकी बारीक घनी ।
ए गुन गिन मैं इकठे किए, सो अपने हिरदेमें लिए ॥ ३०

कलमें समारी जोस बुध बल, घडूं रास कर काढ़के बल ।
एक जीव कहियत है कथुआ,[2] ए जो जिमी पर पैदा हुआ ॥ ३१

कथुएके पांउंका गुन जेता भाग, कलमोंकी टांक मैं देखी चीर लाग ।
इन अनियों आंक लिखे यों कर, ए जेता कागद एती बेर फेर फेर ॥ ३२

यों लिख लिखके मैं गिने गुंन, पर मेरे धनीके गुन हैं अति घंन ।
ए गुण मिलाएके एकठे किए, सो नीके कर मैं चितमें लिए ॥ ३३

ए लिखते मोहे केती बेर भई, तिनका निरमान काढ़ना सही ।
जेते मिलके भए ए गुन, तेते बांटे किए एक खिन ॥ ३४

बेर भई एक बांटे जेती, ए सब कागद लिखे मांहें बेर एती ।
ए लिख लिखके मैं लिखे अपार, अब ए बेर निरने करूं निरधार ॥ ३५

---

१. नोंक । २. अनेक बारीक टांगों वाला कीड़ा ।

गुन जेते महाप्रले भए, वाही जोसमें लिख गुन कहे ।
बीचमें स्वांस न खाया एक, ढील ना करी कछू लिखते बिसेक ॥ ३६

एह जमें मैं गुनकी कही, श्रीसुंदरबाईएं सिखापन दई ।
साथ जानेलेखा जोर किया अपार, पर मेरे जीवके दरदकी न दबी किनार ॥ ३७

जीव मेरा बड़ा वतनी पात्र, अजूं जीव जानें ए लिख्या तुछ मात्र ।
गुन तो बाकी भरे भंडार, सोई भंडार गुन गिनूं आधार ॥ ३८

ए गुन गिने मैं हिरदे विचार, गुन जेते भंडार गिने निरधार ।
गिनते गिनते बाकी देखे अपार, तिनका भी करना निरवार ॥ ३९

मैं ना करूं तो दूजा करे कौन, कर निरवार ग्रहूं धनी गुन ।
बाकी भंडारका लेखा देऊं मेरे पीउ, ए मुस्किल नहीं कछू मेरे जीउ ॥ ४०

ए गुन गिन किए जीवें अपने हाथ, पलपल पसरे गुन प्राननाथ ।
ए सब तो कहूं जो गुन ठाढ़े रहे, गुन मनकी न्यात दौड़े जाए ॥ ४१

अब एता तो मैं किया निरमान, और बाकी कहूंगी मांहें फुरमान ।
एक खिनके मैं बांटे किए, ए गुण जेते भाग विचारके लिए ॥ ४२

तामें बेर एक बांटेकी कही, पिया गुन एते में ते ते किए सही ।
ए गुन गिनते मेरा कारज सरचा, आतम मूल सरूप हिरदें में धरचा ॥ ४३

सारे जनमके क्यों कहूं गुन, पिया देह धर आए किए धंन धंन ।
गुन पांच जनमके क्यों कहूं सोए, धनी दया आई धनीकी खुसबोए ॥ ४४

ए गुन गिने मैं अस्थिर आकार, ना तो यों क्यों गिनूं मेरे प्रानके आधार ।
अब बात करसी तुम अग्या केरी, मुझे आसा इत जाग उड़ाऊं अंधेरी ॥ ४५

पीउ तुम आए माया देह धर, साथकी मत फिर गई क्यों कर ।
हांसी करसी पीउ साथ पर, क्या करसी माया जब मांगी घर ॥ ४६

तुम लई खबर हमारी ततखिन, ले आए तारतम देखाया वतंन ।
पिया हांसी करसी अति जोर, भुलाए मायाएं कर बैठाए चोर ॥ ४७

अब करेंगे जाए वतन बात, माया अमल चढ्यो निघात ।
पीउ कै बिध तारतम कियो रोसन, तो भी क्योंए न भैयां चेतन ॥ ४८

लेवे *इंद्रावती वारने गुन जेते, इत सुख दिए हमकों एते ।
घरके सुखकी इत कैसी बात, घरके सुख घरों होसी विख्यात ॥ ४९

चरनों लाग कहे इंद्रावती, गुन ना देखे किन एक रती ।
धनी जगाएके देखावसी गुन, तब हांसी होसी अति घंन ॥ ५०

॥ प्रकरण ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ ३१० ॥

## साथको प्रबोध

सुनो साथ मेरे सिरदार, वचंन कहूं सो ग्रहो निरधार ।
एतें गुण आपनसों कर, बैठे आपनमें माया देह धर ॥ १

भानो[1] भरम वचंन देख कर, छोड़ो नींद रोसनी हिरदे धर ।
श्रीधामके धनी केहेलाए, सो बैठे आपनमें इत आए ॥ २

सेवा कीजे पेहेचान चित धर, कारन अपने आए फेर ।
भो अवसर आयो है हाथ, चेतंन कर दिए *प्राणनाथ ॥ ३

इन उपर और कहा कहूं, मैं श्रीधनीजीके चरने रहूं ।
कर जोड़ करूं विनती, दूर ना होऊँ बेर पाओ पल जेती ॥ ४

॥ प्रकरण ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ ३१४ ॥

## जीवको प्रबोध

मेरे अंध अभागी जीव, तूं क्यों सूता इत ।
बिध बिध धनिएं जगाईया, अजहूँ ना घर सूझत ॥ १

आगे भो तें कहा कियो, चल गए पीउ जब ।
अवगुन ना देखे अपने, पीउ मेहेर करी फेर अब ॥ २

धाम धनी तुझ कारने, आए मायामें दोए बेर ।
मेहेर ना देखे पीउकी, ऐसो हिरदे निपट अंधेर ॥ ३

आप पकड़ तूं अपना, बल कर आखां खोल ।
दूध पानी दोऊ जाहेर, देख नीके तारतम बोल ॥ ४

---

१. दूर करना ।

पेहेले तो आंखां फूटियां, अब तो कछुक संभाल ।
ए जासी अवसर हाथ से, पीछे होसी कौन हवाल ॥ ५

आगे उलटा हुआ अकरमी, अजहूं ना करे कछु सुध ।
जागत नहीं क्यों जोर कर, ले हिरदें मूल बुध ॥ ६

पुकार सुनी दोऊ पीउकी, वतन देखाया नजर ।
उठी ना अंग मरोरके, अब आई नजीक फजर[1] ॥ ७

तारतम देख विचारके, पीउ ल्याए बेर दोए ।
एती आग सिरपर जली, तूं रह्या खांगडू होए ॥ ८

प्रकरण ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ ३२२ ॥

मेरे जीव अभागी रे, जिन भूले तूं अब ।
इन मोहजलसे काढन वाला, ऐसा ना मिलसी कोई कब ॥ १

ए गुन तूं याद कर, जो किए अनेक सजन ।
तूं क्यों सूता जीव अभागी, देकर साहेबी मन ॥ २

पेहेले तें काढ़े वचंन, सो क्या मनकी दोर ।
बुध मन तेरे बैठे रेहेसी, जीवको क्रोध काढ़सी जोर ॥ ३

जीव तूं क्यों होत है निलज, तोहे अजूं ना लगे घाए ।
याद करके पीउको, क्यों ना उड़े अरवाए ॥ ४

जो अब जीवरा भूलसी, तो देखी तेरी विध ।
काढूंगी तुझे जोरसे, करके बुरी सनंध ॥ ५

पेहेले तो तूं बुरी करी, अब जिन चूके अवसर ।
पीउ तोकों वतंनमें, बुलावत हैं हंसकर ॥ ६

*ससुई[2] सो भी यों कहे, मैं हाथों अपना मार ।
*पूनोंकी[3] बधाईमें, देऊं कोट सिर उतार ॥ ७

---

१. सुबह । २. पंजाब लोक गीतों की नाइका । ३. ससीका प्रेमी ।

क्यों ना देखे ए वचन भट परो मेरे जीउ ।
तूं लेत निमूना किनका, तूं कौन कौन तेरा पीउ ॥ ८

दुनियां चौदे भवनमें, जो देखिए मूल अरथ ।
जो लेवें तेरा निमूना, ऐसा ना कोई समरथ ॥ ९

तूं निमूना माया जीवका, क्यों कर लेवे इत ।
ए दाग तेरा क्यों छूटही, ए तुझे लाग्या जित ॥ १०

अजूं सुध तोकों ना होत, तेरी क्यों हुई ऐसी रसम ।
याद कर अपना वतन, जो तें सुनी बात खसम ॥ ११

तूं भूल जात क्यों वचन[1], जो श्रीधाम धनी कहे आप ।
एक आधा सुकन विचारते, तो पलक ना छोड़े मिलाप ॥ १२

तोकों कहूं अभागी अकरमी, जो जागा ना एते सोर ।
सात बेर तोकों कहूं सोहागी, जो तूं उठे अंग मरोर ॥ १३

॥ प्रकरण ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ ३३५ ॥

मेरे जीव सोहागी रे, जिन छोड़े पीउ कदम ।
दूसरी बेर माया मिने, तुझ कारन आए खसम । १

गुन धनीके याद कर, पकड़ पीउके पाए ।
सुखें बैठ सुखपालमें[2], देसी वतन पोहोंचाए ॥ २

खेल हँस कर बातड़ी, पेहेचान अपना पीउ ।
दो बेर धनी तुझ कारने, आए जान अपना जीउ ॥ ३

हैं कैसे धनी देख तूं, तोसों करी है ज्यों ।
आप ना रख्या आपना, सो याद न कीजे क्यों ॥ ४

कर हिंमत बांध कमर, ले हुकम सब हाथ ।
पीउ पास हो पेहेचानके, और छोड़ सब साथ ॥ ५

---

१. वचन । २. इच्छाचारी विमान ।

आप कहियो अपने साथकों, जो तुझे खुले बचन ।
सुध तो नहीं कछू साथको, पर तो भी अपने सजन ।। ६

।। प्रकरण ।। १६ ।। चौपाई ।। ३४१ ।।

मेरे साथ सोहागी रे, पीउसों क्यों न करो पेहेचान ।
पेहेलें चले पेहेचान विना, फेर आए सो अपनी जान ।। १
सोई पीउ सोई बातड़ी, फेर सोई करे पुकार ।
कारन अपने पीउको, आंखों आवे जलधार ।। २
सोई नसीहत[1] देत सजन, खैंचत तरफ वतन ।
पीउ पुकारें बेर दूसरी, अब क्यों होंए पीछे आपन ।। ३
सोई कूका करे पेहेलेकी, सो क्यों ना समझो बात ।
ना तो दिन उजाले खरे दो पोहोरे, अब हो जासी रात ।। ४
फेर पटकोगे हाथड़े, और छाती देओगे घाउ ।
चल जासी पीउ हाथ से, फेर ना पाओगे दाउ ।। ५
विलख विलख कहे वचन, रोए रोए किए बयान ।
प्रेम करे अति प्रीतसों, पर साथकों सुध न सान ।। ६
माया देखी बीच पैठके, पीउके उजाले तुम ।
बिध बिध खेल देखावने, पीउ ल्याए तारतम ।। ७
ए जो मांगी तुम माया, सो देखे तीन संसार ।
अब साथ पीउ संग चलिए, ज्यों पीउ पावे करार ।। ८
पीउ पांच बेर हम वास्ते, सागरमें डारचा आप ।
सो नजरों न आवे प्रेम विना, विना मेहेर या मिलाप ।। ९
भले देखो तुम आकारको, पर देखो अंदरका तेज ।
धनी धामके साथसों, कैसा करत हैं हेज ।। १०

१. सीख ।

अब कैसी बिध करूं तुमसों, कछू ना पेहेचाने सजन ।
सोर हुआ एता तुम पर, क्यों आवे नीद आंखन ॥ ११

ना गई नीद अंदरकी, क्यों एते बान सहे ।
जाग चलो संग पीउके, पीछे करोगे कहा रहे ॥ १२

तुमें धनी विना कौन दूसरा, ए उड़ावे अंधेर ।
तुम देखो साथ विचारके, जिन भूलो इन बेर ॥ १३

एक बेर भूले आदमी, ताए और बेर आवे बुध ।
ए चोटां सहियां सिर एतियां, तो भी ना हुई तुमें सुध ॥ १४

अब ढील ना कीजे एक पल, इत नाहीं बैठनका लाग ।
एक पलकके कोटमें हिसे, हो जासी बड़ा अभाग ॥ १५

कहूं गुसा कर वचंन, सो ना बले मेरी जुबांए ।
पर इत नफा क्या होएसी, तुम रहे माया लगाए ॥ १६

टेढे सुकन तुमे कहूं, सो काट करूं जुबां दूर ।
पर इन मायाका तुमको, कहा होसी रोसन नूर ॥ १७

ना पेहेचाने इन उजाले, ए दोए साख पूरन ।
पीछे पीउ आगे वतंनमें, क्यों होसी मुख रोसन ॥ १८

पेहेले नजरों देखते, गयो अवसर टूटी आस ।
निकस गए जब हाथ से, तब आपन भए निरास ॥ १९

ए ठौर ऐसा विषम, नास होए मिने खिन ।
स्याने हो तुम साथजी, सब चतुर बचिख्यन ॥ २०

तुम स्याने मेरे साथजी, जिन रहो विषे रस लाग ।
पांउं पकड़ कहे *इंद्रावती, उठ खड़े रहो जाग ॥ २१

॥ प्रकरण ॥ १७ ॥ चौपाई ॥ ३६२ ॥

श्रीधनीजीके लागूं पाए, मेरे पीउजी फेरा सुफल हो जाए ।
ज्यों पीउ ओलखाए मेरे पीउजी, सुनियो हो प्यारे मेरी विनती ॥ १

मैं पेहेले ना पेहेचाने श्री राज, मोहे आड़ी भई मायाकी लाज ।
भवसागरकी किने पाई ना किनार, सो तुम सेहेजे उतारे पार ॥ २

तुम अपनी जान दया कर, धनी लेवे त्यों लई खबर ।
माया गम सास्त्रों मांहें, सो त्रगुन भी समझत नाहें ॥ ३

सो तारतम केहे करी रोसंन, और देवाई साख सास्त्रों वचन ।
हम मांग लई जो माया, सो पेहेचानके खेल देखाया ॥ ४

उमेद करी जो सैयंन, सो इत आए करी पूरन ।
तुम उमेद करते मने किए, तो भी खेल देखाए सुख दिए ॥ ५

हमको खेल देखनकी लागीरढ, सो इत आए देखाई कर मन द्रढ ।
तुम हमको खेल देखावन काज, हमसों आगे आए श्री राज ॥ ६

तुम विना लाड़ पूरन कौन करे, इन मायामें दूजी बेर देह कौन धरे ।
तुम मोसों गुन किए अनेक, सो चूभे मेरे हिरदेंमें लेख ॥ ७

तुम पर वार डारूं जीवसों देह, तुम किए मोसों अधिक सनेह ।
मैं वारने लेऊं तुम पर, मैं सुरखरू[1] होऊंगी क्योंकर ॥ ८

तुम हो हमारे धनी, तो पूरी आसा लाख गुनी ।
*इंद्रावती चरनों लागे, कृपा करो तो जागी जागे ॥ ९

॥ प्रकरण ॥ १८ ॥ चौपाई ॥ ३७१ ॥

अखंड डंडवत करूं परनाम, हैड़े[2] भीड़के[3] भानूं हाम[4] ।
प्रेमें देऊँ प्रदख्यना, बेर बेर अनेक अति घना ॥ १

बल बल जाऊँ मुखारके विंद, वरनन करूँ सरूप सनंध ।
वारने जाऊँ नैंनों पर, देखत हो सीतल द्रष्ट कर ॥ २

वारने ऊपर लेऊँ वारने, सुख दिए मोकों अति घने ।
बेर बेर मैं लागूं पाए, सेवा करूं हिरदें चित ल्याए ॥ ३

---

१. दोष मुक्त । २. हृदय । ३. मिला कर । ४. मन की तीव्र प्यास ।

वार फेर डारूं मेरी देह, इंद्रावती कहे अधिक सनेह ।
बोहोत अस्तुत मैं जाए ना कही, अपने घरकी बात जो भई ॥ ४
अपनी बड़ाई आप मुख होए, ताको मूरख कहे सब कोए ।
पर जैसी बात तैसा वरनंन, करसी विचार चतुर अति घन ॥ ५
वचन धनीके कहे परवान, प्रगट लीला होसी निरवान ।
*चौदे भवनका कहिए सूर, रास प्रकास उदे हुआ नूर ॥ ६
चौदे भवनमें जोत न समाए, ए नूर किरना किने पकड़ी न जाए ।
सबदातीत ब्रह्मांड किए प्रकास, देखसी साथ एह उजास ॥ ७
प्रकासके वचन निरधार, वचन सब करसी विचार ।
आगे बड़ा होसी विस्तार, अखंड सब होसी संसार ॥ ८
इन लीलाको करसी विचार, क्या करसी ताको संसार ।
प्रगट नींउ बांधी है एह, बड़ी इमारत होसी जेह ॥ ९
सुनो वचन ब्रह्मसृष्टि जाग, इंद्रावती कहे चरनों लाग ।
ए बानी मेरे धनिएं कही, फेर फेर तुमको कृपा भई ॥ १०
ऐसा पकब प्रवीन ना कछू हूँ, तो सिखापन तुमकों क्यों देऊँ ।
मैं मनमें यों जान्या सही, जीव अपना समझाऊँ रही ॥ ११
पर साथ ऊपर दया अति घनी, फेर फेर कृपा करत हैं धनी ।
तो वचन तुमकों कहे जाएँ, ना तो चींटी मुख कुम्हड़ा न समाए ॥ १२
जिन तुम वचन बिसारो एक, कारन साथ कहे बिसेक ।
बचन कहे हैं कीजो त्यों, आपन पेहेले पांउं भरे हैं ज्यों ॥ १३
फेर अवसर आयो है हाथ, चरने लाग केहेती हूँ साथ ।
अब चरने लागू धनी चितधरी, तुम खबर मेरी भली विध करी ॥ १४
ए माया बोहोत जोरावर हती, दूर करी मेरे प्रानपती ।
मायाकों तजारक[1] भई, तिन कारन ए विनती कही ॥ १५

१. फटकार ।

ए विनती सुनियो तुम सार, माया दुख पायो निरधार ।
ए माया बातें हैं अति घनी, मोहे मुखथे काढ़ी मेरे धनी ।। १६
तुमारे गुनकी कहा कहूं बात, तुम लाड़ पूरे करके अपन्यात ।
पीउने अपनी जानी परवांन, इंद्रावती चरने राखी निरवान ।। १७
श्री *सुंदरबाईके चरन पसाए, मूल वचंन हिरदें चढ़ि आए ।
चरन फले निध आई एह, अब ना छोडूं चित चरन सनेह ।। १८
चरन तले कियो निवास, इंद्रावती गावें प्रकास ।
भानके भरम कियो उजास, पावें फल कारन विस्वास ।। १९
विस्वास करके दौड़े जे, तारतमको फल सोई ले ।
तिन कारन कियो प्रकास, ब्रह्मसृष्टि पूरन करूं आस ।। २०
*इंद्रावती धनीके पास, रासको कियो प्रकास ।
धनिएं दई मोहे जाग्रत बुध, तो प्रकास करूँ तारतमकी निध ।। २१

।। प्रकरण ।। १६ ।। चौपाई ।। ३६२ ।।

## अस्तुतकर गुन फिराए हैं

अब करूं अस्तुत आधार, वल्लभ सुनो विनती ।
एते दिन मैं ना पेहेचाने, मोहे लेहेर माया जोर हुती ।। १
भान भरम मोह जो मूलको, लेऊँ सो जीव जगाए ।
करूं अस्तुत पियाकी प्रगट, देऊं सो पट उड़ाए ।। २
सोभा पीउकी सबदातीत, सो आवत नहीं जुबांए ।
जोगवाई जेती इन अंगकी, सो सब मूल प्रकृती मांहें ।। ३
अब किन बिध करूं मैं अस्तुत, मेरे जीवको ना कछू बल ।
जीव जोगवाई सब अस्थिरकी, क्यों बरनों सोभा नेहेचल ।। ४
पेहेलें जीवों करी अस्तुत, भली भांत भगवान ।
पंडिताई चतुराई महाप्रवीनी, किव[1] कर हिरदें आन ।। ५

१. कवि ।

ए किव प्रवाही जब देखिए, तामें कोई कोई भारी वचन ।
ए तो देवें सोभा अचेतमें, पर मोहे सालत है मन ॥ ६

बेसुध भए देवे एती सोभा, तो कहा करे कर पेहेचान ।
जो मुख वचन एक कहूं प्रवाही, तो सुन्या नहीं निरबान ॥ ७

ना कछू सुनिया वेद पुरान, ना कछू किव चातुरी ।
एक दोए वचन सुने मुख धनीके, तिनसे सुध सब परी ॥ ८

सो भी ना सुन्या चित देयके, ना तो जोर गया पूर चल ।
पर जो रे गुन आड़े मायाके, ताथें ले ना सकी बूंद जल ॥ ९

अब तिन गुनको कहा दीजे उपमा, धिक धिक पड़ो ए बुध ।
आगे तूं सिरदार सबंनके, तें क्यों ना लई ए निध ॥ १०

अब जागी बुध कहूं मैं तोको, तूं है बुधको अवतार ।
कर निरने माया ब्रह्मको, खोल तूं पार द्वार ॥ ११

और ना कोई बुध मुझ जैसी, मैं ही बुध अवतार ।
धाम धनी ग्रहूं इन विध, और अखंड करूं संसार ॥ १२

ए बुध रही हमारे आसरे, जो सबथें बड़ा अवतार ।
बुधजी विना माया ब्रह्मको, कोई कर ना सके निरवार ॥ १३

*सुंन *निराकार *निरंजंन, तिनके पार के पार ।
वानी गाऊं तित पोहोंचके, इन चरनों बुध बलिहार ॥ १४

जो नहीं विस्नु *महाविस्नुको, बुधजी पोहोंचे तित ।
मेरे हिरदें चरन धनीके, इन ए फल पाया इत ॥ १५

ए सार पाए सुख उपजे, धंन धंन ए बुध अवतार ।
अबलों किन ब्रह्मांडमें, किन खोल्या ना ए दरवार ॥ १६

लीला इन अवतारकी, करसी सब अखंड ।
धंन धंन इन अवतारकी, वानी गावसी सब ब्रह्मांड ॥ १७

अब कहूं तोकों श्रवना, तोकों धनिएं कहे वचंन ।
क्यों ना लई वानी बचिख्यन, फिट फिट भूंड़े करंन ॥ १८

मेरे तो मुदा[1] तुम ऊपर, लेना तुमारे जोर ।
धनिएं तो धन बोहोतक दिया, पर लिया न हरामखोर ॥ १६

अब अपना तूं संभार श्रवना, हो वचिख्यन बीर ।
वानी जो वल्लभकी, सो लीजो द्रढ़ कर धीर ॥ २०

श्रवना कहे सुने मैं नीके, विध विध के वचन ।
पूरी पीउने आस हमारी, उपज्यो आनंद घंन ॥ २१

अब वचन लेऊं सब सारके, भी यों कहे श्रवन ।
इन विध वानी ग्रहूं मैं प्यारी, ज्यों सब कोई कहे धंन धंन ॥ २२

बेसुध नीद कहूं मैं तोकों, तूं निठुर नीच निरधार ।
हुई तूं सब गुनके आड़े, ना लेने दई निध आधार ॥ २३

तूं तो माया रूप पापनी, तें डबोई ले कर बाथ[2] ।
तें श्रवना को सुनने ना दिया, आलस जम्हाई तेरे साथ ॥ २४

अनेक अंधेर दई तें जीवको, ज्यों मीन बांधे मांहें जाल ।
जिन नैंनों निध निरखूं निरमल, तिन नैंनों आड़ी भई पाल[3] ॥ २५

फिट फिट भूंड़ी दुष्ट पापनी, तोकों दई अनेक धिकार ।
पेहेले अवसर गमाईया, अब नीके निरखो भरतार ॥ २६

तूं करत मृतक समान, ऐसी निपट निखर ।
अब तूं आओ आड़ी मायाके, ज्यों निरखूं धनी निज घर ॥ २७

नीद कहे आतमा जब जागी, तब क्यों रह्यो मैं जाए ।
नीद कहे मैं जात हों, लागूं तुमारे पाए ॥ २८

अब आई तूं अरूचड़ी,[4] जब मिले मोहे श्री राज ।
ऐसी अंधी अकरमन, तूं सरजी किस काज ॥ २६

फिट फिट भूंड़ी तें भुलाई, अब कर कछू बल ।
आतम द्रष्ट जुड़ी पर आतम, हो माया मांहें नेहेचल ॥ ३०

---

१. भरोसा । २. गोद में । ३. पर्दा या दीवाल । ४. अनिच्छा ।

अरूचड़ी कहे मैं बलवंती, मोको न जाने कोए ।
छानी[1] होएके बैठूं जीवमें, भानूं सो साजा न होए ॥ ३१

धनी अपना जब आप संभारे, तब चोरी करे क्यों चोर ।
अब उलटाए करूं मैं सीधा, बैठूं मायामें जोर ॥ ३२

तलवे सेवा करूं सब अंगों, मोहे मिले धनी एकांत ।
तिन समे आए बैठी अंगमें, फिट फिट भूंड़ी स्वांत ॥ ३३

धनी मिले स्वांत न कीजे, क्यों बैठिए करार ।
जाग दोड़ कीजे सब अंगों, स्वांत कीजे संसार ॥ ३४

स्वांत कहे मैं तबलों थी, जोलों नीद हुती आतंम ।
अब मैं बैठी तरफ मायाके, बिलसो अपना खसंम ॥ ३५

अब कहूं तोकों लोभ लालची, फिट फिट मूरख अंजान ।
लोभ न लागा चरन धनीके, जासों पाईए घर निरवान ॥ ३६

अब जिन जाओ तरफ मायाके, मेरे लोभ लालच दोऊ जोड़[2] ।
जोर पकड़ो दोऊ पांउं पीउके, करो रात दिन दौड़ ॥ ३७

कहे लोभ लालच क्या गुनाह हमारा, जोलो जीव ना करे खबर ।
अब तुम पीउ देखाया हमको, तो देखो पीउ ग्रहें द्रढ कर ॥ ३८

भट परो त्रस्ना कहूं तोकों, तूं निपट निठुर निरधार ।
और सबे गुन त्रपत होवें, पर तोमें कोई भूख भंडार ॥ ३९

अब तोकों क्यों काढूं रे त्रस्ना, तोसों बड़ा मोहें काम ।
त्रस्ना लाग तूं पूरन पीउसों, ज्यों बस करूं धनी श्रीधाम ॥ ४०

त्रस्ना कहे मैं क्योंए ना छोड़ूं, जो आतमाए देखाया आधार ।
तुम जाए गुन और फिराओ, मैं छोड़ूं नहीं निरधार ॥ ४१

मूरख मोह कहूं मैं तोकों, जब आतम धनी घर आया ।
इन अवसर तूं चूक्या चंडाल, जाए बैठा मांहें माया ॥ ४२

---

१. छिपकर । २. जोड़ीदार ।

अब आवो तूं बालाजीमें, मायासों कर बिछोह ।
देखूं जोर करे तूं कैसा, सांचे सिपाही मेरे मोह ॥ ४३

बात बड़ी कहे मोह मेरी, मोको जाने प्रेमी सोए ।
मैं बैठत हूं जित आएके, तितथे उठाए न सके कोए ॥ ४४

जो तुम धनी देखाया मोको, होए लागूं मूरख मूढ़ अंध ।
एकै बिध है मेरी ऐसी, और न जानूं सनंध ॥ ४५

हरष सोक तुम भए मायाके, धिक धिक तुमको अजान ।
आए धनी हरष न आया, चले सोक न आया निदान[1] ॥ ४६

हरष सोक कहे हम निठुर, भए सो अंध अभागी ।
धनी बिगर करे कहा हम, जोलो जीव न कहे जागी ॥ ४७

अब तुम आओ नेहेचल सुखमें, जिन भूलो अवसर ।
मायामें लाहा[2] लेऊं धनीका, हरष ले जागो घर ॥ ४८

हरष कहे मैं क्या करूं, जो जीवको नहीं खबर ।
सोक कहे ना पेहेचान पीउकी, तो बिछुरे जाने क्योंकर ॥ ४९

हरष सोक कहे हम बलिऐं, दोऊ जोधा बड़े जोरावर ।
अब पेहेचान करी तुम पीउकी, अब क्योंऐ ना भूलों अवसर ॥ ५०

फिट फिट जोधा जोरावर तुमको, मद मत्सर[3] अहंकार ।
तुम अंतराए करी धनीसों, दौड़ करी संसार ॥ ५१

तुम तीनों जोधा भए क्यों उलटे, भए मायाके दास ।
जब जीवनजी मिले जीवको, तब क्यों ना कियो उलास ॥ ५२

अब तुम संगी हूजो मेरे, धनिऐं कियो मोसों मिलाप ।
सिर ल्यो सोभा धनी धामकी, दूर हो मायाथें आप ॥ ५३

तीनों जोधा बड़े जोरावर, हम तीनोकी राह एक ।
धनी आतमसे क्योंए न छूटे, जो पड़े विघन अनेक ॥ ५४

---

१. अन्त । २. लाभ । ३. जलन ।

सेहेज सुभाव फिट फिट तुमको, ऐसे सूर सुभट ।
सांचे तुम हुए मायासों, मोसों मिले कपट ॥ ५५

मूरख मूढ़ करी तुम दुष्टाई, हुए नहीं स्वाम धरमी[1] ।
मूरख मूढ़ करी तुम ऐसी, धिक धिक चंडाल अकरमी ॥ ५६

जोधा दोऊ जोरावर मेरे, तुम तरफ हो जिनकी ।
अनेक उपाए करे जो कोई, पर जीत होए तिनकी ॥ ५७

अब तुमको कहूं खीजके, तुम हूजो सावधान ।
प्रेमें पीउ रुदे लपटाओ, जिन करो किन की कान[2] ॥ ५८

सेहेज सुभाव दोऊ हम बलिए, कोई करे जो कोट उपाए ।
पकड़े बात जो हम सांची, सो लोपी[3] किनहूं न जाए ॥ ५९

अब देखियो जीव जोर हमारा, पीउ पकड़ देवे एकांत ।
पूरा पास देऊं रंग लाखी, क्योंए ना उचटे भांत ॥ ६०

ममता तूं भई माया की, हलाक[4] किए हैरान ।
फिट फिट भूंड़ी चंडालन, तें बड़ी करी मोहे हान ॥ ६१

अब ममता आवो मेरे पीउसें, तोकों पेहेले दई धिकार ।
अब संगातन हूजो मेरी, मोहे मिले पीउ सिरदार ॥ ६२

अब मैं चेरी हुई तुमारी, ले देऊं सांची निध ।
अबके ए निध क्योंए ना छूटे, करो कारज तुम सिध ॥ ६३

अब फिटकार देऊं कलपना, उलटी तूं अकरमन ।
फिराए खाली करी फजीत, आतमको अति घंन ॥ ६४

अब करमन तूं हो कलपना, कर सेवा मांहें विचार ।
धाम धनी मिले मायामें, लाभ लेऊं मांहें संसार ॥ ६५

कहे कलपना ए काम मेरा, करूं नए नए अंग उतपन ।
बिध बिधकी सेवा देखाऊं, धनी बिलसो होए धंन धंन ॥ ६६

---

१. स्वामी के अनुकूल । २. परवाह । ३. छिपाना । ४. बध करना ।

बैर राग तुम दोऊ जोधा, सूर साम सामें सिरदार ।
बैर किया तुम वल्लभजीसों, राग किया संसार ।। ६७

बुरी करी तुम अति मोसों, अब मारूं जमधर[१] घाव ।
अब अवसर फेर आयो मेरे, जो भुलाए दियो तुम दाव ।। ६८

तुम पर मेरे है मुदार,[२] ऐसी पीठ क्यों दीजे ।
आतम संग मिलाए धनीजी, धंन धंन मोहे कीजे ।। ६९

जुध करो तुम दोऊ जोधा, राग आओ धनी धाम पाया ।
बिध बिध बैर कर कठनाई, जाए बैठो मांहें माया ।। ७०

बेर राग कहे क्या गुनाह हमारा, जो जीव ना राखे घर ।
जो ना देखावें धनी विवेकें, तो हम पकड़ें क्यों कर ।। ७१

राग कहे मैं भली भांतें, पीउजीसों करूं रस रीत ।
जीव धनी बीच अंतर टालूं, गुन देऊं सारे जीत ।। ७२

बैर कहे देखियो बिध मेरी, संग ना आवे संसार ।
कोई गुन जीवसों करे लड़ाई, तो मोकों दीजो धिकार ।। ७३

धिक धिक स्वाद कहूं मैं तोकों, मोहे मिल्या था मीठा जीवन ।
सोए स्वाद छोड़ अभागी, जाए पड़्या संसार विघन ।। ७४

अब तू स्वाद हो सोहागी, ले धनीको मिठास ।
इन रंग रस आयो जब स्वाद, तब जेहेर होसी सब नास ।। ७५

स्वाद कहे जब ए सुख आया, तब अभख हुआ मोहजल ।
झूठा रंग सब उड़ गया, रस रंग भया नेहेचल ।। ७६

फिट फिट भूंड़े दुष्ट अभागी, मोहे करायो धनीसों क्रोध ।
मैं जान्या था सखा मेरा, पर तें कमल फिराया क्रोध ।। ७७

आया नहीं मायाके आड़े, तें किया न मेरा काम ।
अवसर आए चूक्या चंडाल, रेहे गई हैड़ेमें हाम ।। ७८

---

१. यम की तलवार । २. दावा ।

अब क्रोध तूं कमल फिराओ, उलटाए दे संसार ।
जोधा जोरावर अब क्या देखे, कर दे जै जै कार ।। ७६
क्रोध कहे मैं अति बलवंता, पर क्या करूं धनी बिन ।
अब उलटाए देऊं कर सीधा, फेर कबहूं ना होवे दुसमन ।। ८०
अब तोको कहूं चाक[1] चकरड़ा, तू चढ़ बैठा जीवके सिर ।
तें खाली ऐसा फिराया, रेहे ना सके क्योंए थिर ।। ८१
अंध अभागी क्यों हुआ ऐसा, तें क्या सुने ना धनी वचन ।
धनी मिले तूं थिर ना हुआ, फिट फिट भूंड़े मन ।। ८२
समरथ मन तूं बड़ा जोरावर, क्या कहूं तेरो विस्तार ।
तुझमें फैल बिध बिधके, अलेखे अपार ।। ८३
तोसों तो काम बड़ा है मेरा, मद मस्त मेवार[2] ।
फिर तूं पक्ष पचीस मांहें, बलवंता बेसुमार ।। ८४
संकलप विकलप है तुझमें, सेवा कर धनी धाम ।
उमंग अंग आन निसबासर, कर पूरन मन काम ।। ८५
बात बड़ी कहे मन मेरी, मैं सकल बिध जानों ।
मूल बिना करूं सिरदारी, जीवको भी बस आनों ।। ८६
जोलो जीव जागे नहीं, तोलो कहा करे हम ।
जोर हमारा तबहीं चले, जब जाग बैठो तुम ।। ८७
अब तुम बिध मेरी देखियो, सब विध करूं रोसन ।
धाम धनी आन देऊं अंगमें, तो कहियो सिरदार सबन ।। ८८
कोई जो कदर जाने मेरी, अंग अंदर आनूं वतन ।
अनेक विध सेवा उपजाऊँ, धनी न्यारे ना होवे खिन ।। ८९
बुरी करी तुम भरम भ्रांतड़ी, यों ना करे दूजा कोए ।
तारतम जोत उदद्योतके आगे, संसे कबूं न होए ।। ९०

---

१. अस्थिरता ( मन ) । २. मग्न हो जाने वाला ।

संसे भ्रांतके आकार, जो कदी होत तुमारे ।
टूक टूक करूं मैं तिल तिल, फेर फेर तीखी तरवारे ॥ ८१

अब जोर कर जाओ मायामें, इनके संग होए तुम ।
उजाले तारतमके पेहेचान, ज्यों मूल सरूप देखें हम ॥ ८२

अंतर भ्रांत कहे तुम फेर फेर, मार मार, देखाओ डर ।
नीद कर बैठे इन जिमीमें, सो आप ना करो खबर ॥ ८३

घरका धनी अखंड सुख पावे, सो इत क्यों सोवे करारे ।
गफलतको न छोड़े आपे, फेर फेर हमको मारे ॥ ८४

अब इन तारतम के उजाले, करूं तारतम रोसन ।
नेहेचल सुख लेओ तुम सांचे, और भी देऊँ सबंन ॥ ८५

फिट फिट लज्या तूं भई लौकिक, बांधे कबीलेसों करंम ।
धनी मेरे मोहे आए बुलावंन, तित तोहे न आई सरंम ॥ ८६

कहा कियो तें दुष्ट पापनी, ऐसी ना करे कोए ।
घर धाम धनीके आगे, करी सरमंदी मोहे ॥ ८७

अब सरमंदी कहूं मैं तोकों, तूं देख पर आतम सगाई ।
बड़ा अवसर पेहेलें तूं चूकी, अब फेर आई जोगवाई ॥ ८८

कहे लज्जा मैं पेहेले भूली, अब सरन धनी ना छोडूं ।
सिर माया का भानके, पीउसे मुख ना मोडूं ॥ ८९

फिट फिट आशा तूं भई मायाकी, बैठी मोहजलमें आए ।
मैं मायामें अखंड फल पाया, सो मोहे दियो हराए ॥१००

अखंड धनी फल छोड़के, निरफल[1] माया झूठ लई ।
ए सिर गुनाह हुआ जीवके, तोको सिखापन ना दई ॥१०१

कहे आसा मोहे दई जगाए, निकट न जाऊं मोहजल ।
इन बल मांहें कमी न राखूं, लागी आतम आसा सुफल ॥१०२

१. निरर्थक ।

गुन गरीबन आई अक्रमन, ना भई सनमुख सावधान ।
लाहा लीजे दौड़ धनीका, सो दिया गरीबी भान ॥१०३

किन विध कहूँ या सुखकी, फिट फिट भूंडे अचेत ।
तुझ बैठे न आई तिबरता[1] ना तो ए सुख लेत ॥१०४

कहे गरीबी मैं मायाकी, मैं बैठों माया मांहें ।
लीजो लाहा सुख नेहेचलका, श्री धाम धनी हैं जांहें ॥१०५

फिट फिट न आई तिबरता, मोहे मिलेथे धाम धनी ।
ऐसा विलास खोया तैं मेरा, बोहोत बुरी करी घनी ॥१०६

फेर अवसर आयो है मेरे, चित चेतन कीजे बल ।
रात दिन जगाए जीवको, जिन दे मिलने पल ॥१०७

तुझमें बल है सावचेती,[2] चित चेतन अति रोसन ।
पर आतम बस कर दे आतमां, ना होए अंतराए एक खिन ॥१०८

सील संतोष आओ ढिग[3] मेरे, बांधो सागर आड़ी पाल ।
गुन सारे हुए अग्यामें, पीछे रह्या न कछू जंजाल ॥१०९

सील कहे संतोष सुनो, आपन हुए मायाके पाल ।
कै बहावे पहाड़पूर सागरके, मांहें लेहेरे बेहेवट[4] निताल[5] ॥११०

भमरिया मांहें बेसुमार, लेहेरां मेर समान ।
मछ लड़े बड़े मोहजलके, करनी पाल इस ठाम ॥१११

अब बांधनी पाल खरी करनी, ज्यों ना खसे लगार ।
पीछे जल जोर बढ़ा ऊपर अपने, तब सामी[6] सोभा होसी अपार ॥११२

एह पाल हम बांधी जीवंजी, पर तुम जाग करो सावचेत ।
फेर नहीं आवे ऐसा समया, सोभा ल्यो साथमें इत ॥११३

जाग जीव तूं जोरावर, क्या देऊं तोकों गारी ।
तैं होए चंडाल अवसर खोया, जीती बाजी हारी ॥११४

१. जल्दी । २. सावधानी । ३. पास में । ४. तेज । ५. निरन्तर । ६. सामने ।

कठनाई मैं देखी तेरी, तूं निठुर निपट अपार ।
थके धनी तोहे धम[1] धमके, पर तें गल्या नहीं निरधार ॥११५

॥ प्रकरण ॥ २० ॥ चौपाई ॥ ५०७ ॥

जीवको प्रबोध

सुन मेरे जीव कहूँ बरतांत, तोकों एक देऊँ द्रष्टांत ।
सो तूं सुनियो एकै चित, तोसों कहत हों करके हित ॥ १

*परीक्षते[2] यों पूछयो प्रस्न, *सुक[3] जी मोंकों कहो बचन ।
चौदे भवनमें बड़ा जोए, मोको उत्तर दीजे सोए ॥ २

तब *सुकजी यों बोले परमान, लीजो वचन उत्तम कर जान ।
चौदे भवनमें बड़ा सोए, बड़ी मतका धनी जोए ॥ ३

भी राजाएं पूछा यों, बड़ी मत सो जानिए क्यों ।
बड़ी मत को कहूँ विचार, लीजो राजा सबको सार ॥ ४

बड़ी मत सो कहिऐ ताए, श्रीकृस्नजीसों प्रेम उपजाए ।
मतकी मत तो ए है सार, और मतको कहूँ विचार ॥ ५

विना *श्रीकृस्नजी जेती मत, सो तूं जानियो सब कुमत ।
कुमत सो कहिए किनको, सबथें बुरी जानिए तिनको ॥ ६

ऐसो तिनको कहा वरतांत, सो भी राजा तोकों कहूं द्रष्टांत ।
सुन राजा कहूँ सो जुगत, जासों पेहेचान होवे दोऊ मत ॥ ७

श्रीकृस्नजीसो प्रेम करे बड़ी मत, सो पोहोंचावे अखंड घर जित ।
ताए आड़ो न आवे भवसागर, सो अखंड सुख पावे निज घर ॥ ८

ए सुख या मुख कह्यो न जाए, याको अनभवी जाने ताए ।
ए कुमत कहिए तिनसे कहा होए, अंधकूपमें[4] पड़िया सोए ॥ ९

सब दुखोंमें बुरा ए दुख, कुमत करे धनीसों बेमुख ।
केतो कहं या दुखको विस्तार, जाके उलटे अंग इंद्री विकार ॥ १०

---

१. ठोंक-ठोंक कर । २. राजा परीक्षित । ३. महाराज शुकदेव । ४. अंधेरा कुआ ।

दोऊ मतको कह्यो प्रकार, ए ब्रह्मसृष्टि करें विचार ।
जाको जाग्रत है बड़ी बुध, चेते अवसर जाके हिरदे सुध ॥ ११

ए सुकजीके कहे वचन, नीके फिकर कर देखो मन ।
बोहोत फिकरकी नहीं ए बात, ए समया हाथ तालो दिए जात ॥ १२

तेरी गिनती बांधी स्वांसों स्वांस, तिनको भी नहीं विस्वास ।
केते रहे बाकी तेरे स्वांस, एक स्वांसकी भी नाहीं आस ॥ १३

स्वांस तो खिनमें कै आवें जाए, गए अवसर पीछेकछू न बसाए ।
तिन कारन सुन रे जीव सही, बड़ी मत मैं तोकों कही ॥ १४

जो जोगवाई है तेरे हाथ, सो या मुखथें कही न जात ।
एते दिन तें ना करी पेहेचान, तैंसी करी ज्यों करे अजान ॥ १५

अब ए वचन विचारो मन, साख दई सुकजीके वचन ।
भी वचन कहूं सुन मेरे जीउ, जिन छोड़े चरन खिन पीउ ॥ १६

निजघर पीउको लीजे प्रकास, ज्यों बृथा न जाए एक स्वांस ।
ग्रह गुन इंद्री भर तूं पाओ, ऐसा फेर न पाईए दाओ ॥ १७

भरंम भानके कहे वचंन, बड़ी मत ले ज्यों होए धंन धंन ।
ए भरंमकी नींद उड़ाएके दे, पेहेचान पीउकी नीके कर ले ॥ १८

मुखथे वचंन कहे तो कहां, जो छेदके अजूं ना निकस्या ।
अगलोंने किव करी अनेक, तें भी कछुक करी विसेक ॥ १९

पर सांचा तो जो होए गलतान, तो भले मुख निकसी ए बान ।
ए बानी मेरी नाहीं यों, और किव करत हैं ज्यों ॥ २०

ए गुसा किया मेरे जीवके सिर, ना तो और किवकी भांत कहूं क्यों कर ।
आतम मेरी है अति सुजान, अख्यरातीत निध करी पेहेचान ॥ २१

अब सांचा तो जो करे रोसन, जोत पोहोंची जाए चौदे भवंन ॥
ऐ समया तो ऐसा मिल्या आए, चौदे भवंनमें जोत न समाए ॥ २२

यों हम ना करें तो और कौन करे, धनी हमारे कारन दूजा देह धरे ।
आतम मेरी निज धामकी सत, सो क्यों ना करे उजाला इत ॥ २३

श्रीसुंदरबाईके चरंन प्रताप, प्रगट कियो मैं अपनों आप ।
मोंसों गुनवंती बाईऐं किए गुन, साथें भी किए अति घन ॥ २४
जोत करूं धनीकी दया, ए अंदर आएके कह्या ।
उड़ाए दियो सबको अंधेर, काढ़यो सबको उलटो फेर ॥ २५
*इंद्रावती प्रगट भई पीउ पास, एक भई करे प्रकास ।
अखंड धाम धनी उजास, जाग जागनीं खेले रास ॥ २६

॥ प्रकरण ॥ २१ ॥ चौपाई ॥ ५३३ ॥

आंखां खोल तूं आप अपनी, निरख धनी श्रीधाम ।
ले खुसवास याद कर, बांध गोली प्रेम काम ॥ १
प्रेम प्याला भर भर पीऊं, त्रैंलोकी छाक छकाऊं ।
चौदे भवंनमें करूं उजाला, फोड़ ब्रह्मांड पींउ पास जांऊं ॥ २
वाचा मुख बोले तूं वानी, कीजो हांस विलास ।
श्रवना तूं संभार आपनी, सुन धनी को प्रकास ॥ ३
कहे विचार जीवके अंग, तुम धनी देखाया जेह ॥
जो कदी ब्रह्मांड प्रले होवे, तो भी ना छोडूं पीउ नेह ॥ ४
खोल आंखां तूं हो सावचेत, पेहेचान पीउ चित ल्याए ।
ले गुन तूं हो सनमुख, देख परदा उड़ाए ॥ ५
एते दिन वृथा गमाए, किया अधमका काम ।
करंम चंडालन हुई मैं ऐसी, ना पेहेचाने धनी श्रीधाम ॥ ६
भट परो मेरे जीव अभागी, भट परो चतुराई ।
भट परो मेरे गुन प्रकृती, जिन बूझी ना मूल सगाई ॥ ७
आग परो तिन तेज बलको, आग परो रूप रंग ।
धिक धिक परो तिन ग्यानको, जिन पाया नहीं प्रसंग ॥ ८
धिक धिक परो मेरी पांचो इंद्री, धिक धिक परो मेरीं देह ।
श्री स्याम सुंदरवर छोड़के, संसारसों कियो सनेह ॥ ९

धिक धिक परो मेरे सब अंगों, जो न आए धनी के काम ।
विना पेहेचाने डारे उलटे, ना पाए धनी श्री धाम ॥ १०

तुम तुमारे गुन ना छोड़े, मैं वोहोत करी दुष्टाई ।
मैं तो करम किए अति नीचे, पर तुम राखी मूल सगाई ॥ ११

॥ प्रकरण ॥ २२ ॥ चौपाई ॥ ५४४ ॥

वारने जाऊं वनराए वल्लभकी, जाकी सुख सीतल छाया ।
देखो ए बन गुन भी ओखदी, देखें दूर जाए माया ॥ १

जाऊं वारने आंगने बेलूं, जितले बैठो संझा समे साथ ।
बातें होत चलने धामकी, घर पैड़ा देखाया प्राननाथ ॥ २

भी बल जाऊं आंगने, आगे पीछे सब साज ।
जहां बैठो उठो पाऊं धरो, धनी मेरे श्री राज ॥ ३

बलिहारी जाऊं बोहोत बेर, देहरी मंदिर द्वार ।
वारने जाऊं इन जिमीके, जहां बसत मेरे आधार ॥ ४

बलि जाऊं पाटी पलंग सिराने, चादर सिरख तलाई ।
पौढ़त पीउजी ओढ़त पिछौरी, ऊपर चंद्रवा चटकाई ॥ ५

बल बल जाऊं दुलीचा[1] चाकला,[2] बल जाऊं मंदिर के थंभ ।
जिन थंभों कर धनी अपने, जुगते दिए बंध ॥ ६

बैठत हो जित महाबलिया, बल बल जाऊं ठौर तिन ।
साथ सबेरा आएके बैठत, करो धाम धनी वरनन ॥ ७

देखत मंदिरमें कै बिध, वस्त सकल पूरन ।
टूक टूक कर वार डारो, मेरे जीवके और तन ॥ ८

भले तुम देह धरी मुझ कारन, कर रोसन टाल्यो भरम ।
जीव मेरा बोहोत सखत था, मेहेर नजरों भया नरम ॥ ९

---

१. गलीचा । २. आसन ।

बल जाऊं मैं चरन कमल की, बल जाऊं मीठे मुख ।
बलिहारी सोभा सुंदरता, जिन दरसन उपजत सुख ॥ १०
भी बल जाऊं हस्तकमलकी, बल जाऊं वस्तर ।
लेऊं बलैया भूखनकी,[1] बल जाऊं सीतल नजर ॥ ११
वार डारूं मैं नासिका पर, और वार डारूं श्रवन ।
वार डारूं मैं नख सिख पर, जो सनकूल हैं अति घन ॥ १२
सेवा करत हैं बाई *हीरबाई, उछव[2] रसोई जित ।
अंतरगत तुम नित आरोगो, मैं बल बल जाऊं तित ॥ १३
वार डारूं मैं बानी पर, जो वचन केहेत रसाल ।
साथको चरने राखके, सागर आड़ी बांधत हो पाल ॥ १४
करत हो कृपा कै विधकी, मीठी अति मेहेरबानी ।
सांचे लाड़ लड़ाए सुंदर, ल्याए वतन की बानी ॥ १५
मैं सेवा करूं सरबा अंगों, देऊं परदख्यना रात दिन ।
पल न वालूं निरखूं नेत्रे, आतम लगाए लगन ॥ १६
मुझसे अंजान अबूझ दुष्ट अप्रीछक,[3] अधम नीच मत हीन ।
सो इन चरनों आए होए दाना[4] स्याना, सुघड़ सुबुध प्रवीन ॥ १७
जीव जगाए देत निध निरमल, करत आतम रोसन ।
सो जीव बुध ले करे उजाला, सबमें चौदे भवन ॥ १८
इन जुबां क्यों कहूं बड़ाई, तुमे सबद ना पोहोंचे कोए ।
जो कछू कहूं सो उरे रहे, ताथे दुख लागत है मोहे ॥ १९
दाझ बुझत है एक सबदमें, जब कहूं धनी श्रीधाम ।
इन वचने आतम सुख पायो, भागी हैड़ेकी हाम ॥ २०
कहे *इंद्रावती अति उछरंगे, फोड़ ब्रह्मांड करूं रोसन ।
सीधी राह देखाऊं जाहेर, ज्यों साथ सुखे आवे वतन ॥ २१

॥ प्रकरण ॥ २३ ॥ चोपाई ॥ ५६५ ॥

---

१. भूषण । २. उत्सव । ३. मूर्ख । ४. बुद्धिमान ।

अब अस्तुत ऊपर एक विनती कहूं, चरंन तुमारे जीवमें ग्रहूं ।
इन चरनों मोहे सुध भई, पहेली निध श्री सुंदरबाईएं दई ॥ १
दोऊ सरूपमें जोत जो एक, सो मैं देख्या करके विवेक ।
ए चरन फले कहे इंद्रावती, तारतम जोत करूँ विनती ॥ २
मेरा बुता[1] कछू न था मेरे धनी, मोपें दोऊ सरूपों दया करी अति घनी ।
सेवामें न थी हाजर, न जानूं दया करी क्यों कर ॥ ३
क्रतब[2] चितवनी और सेवा करे, माया गुन उलटे पर हरे ।
मनसा वाचा कर करमना, करे दौड़ प्यार अति घना ॥ ४
पर जब लग दया तुमारी न होए, तब लग काम न आवे कोए ।
ए परीख्या में करी निरधार, देखे सबके सबद विचार ॥ ५
जीव खरा होए जुदा मन करे, कपट रती ना हिरदें धरे ।
यों करके तुमको सेवे, वचन विचार अंदर जीव लेवे ॥ ६
सनकूल करे तुमारा चित, संसे भान करे जीवके हित ।
पीउ चित पर चलेगा जोए, साथमें घरों सोभा लेसी सोए ॥ ७
ए नीद उड़ाएके कहे वचन, श्री धाम धनी जीव जानी मन ।
जब देख्या धनी नीके फिकर कर, तो अजूं न गई नीद है अंदर ॥ ८
ए वचन कहे मैं नीदज मांहें, जब नीके देखूं धनी धामके तांहें ।
ना तो क्यों कहूँ धनी को एह वचन, पर कछुक तासीर[3] है भोम इन ॥ ९
जब घरकी तरफ देखों तुमको, तब फेर यों होए मेरे मनको ।
ए धाम धनीको कहा कहें वचन, तब जीव विचार दुख पावे मन ॥ १०
क्या कहूं सबद तुमें पोहोंचे नांहें, मेरी जुबां भई माया अंग मांहें ।
तुम सबदातीत भए मेरे पीउ, मेरी देह खड़ी माया ले जीउ ॥ ११
धनी लगते वचन कहूँगी आए धाम, तब भानूंगी मेरे जीव की हाम ।
ए तो बानी कही मैं साथ कारंन, साथ छोड़सी माया ए देख वचन ॥ १२

---

१. शक्ति । २. कर्त्तव्य । ३. प्रभाव ।

साथ वेगे बुलाओं कहे इंद्रावती, ए कठन माया दुख होए लागती ।
ए दुख देख्या मांहें दुस्तर, कोई ना पेहेचाने अपना घर ॥ १३

ए मैं लुगा कह्या माया सनमंध, में देखीतां न देखूं अंध ।
ए ताए कहिए जो होए बेसुध, तुम खिन खिन खबर लौ कै बिध ॥ १४

ए कहूँ मैं साथ कारन, अधखिन साथ विसारो जिन ।
जिन करो तुमारी पाओखिन, तो कै कलपांत जाए मिने तिन ॥ १५

मैं तो कहूँ जो तुम न्यारे हो, पाओ पल साथकी जुदागी ना सहो ।
मैं तो कहूँ जो मेरी ओछी मत, तुम हमको कैं सुख चाहत ॥ १६

हम कारन तुम आए देह धर, तुम कैं बिध दया करी हम पर ।
तुम धनी आए कारन हम, देखाई बाट ल्याए तारतम ॥ १७

साथें माया मांगी सो भई अति जोर, तुम सबद कहे कैं कर कर सोर ।
पर तिन समे नीद क्योंए न जाए, तब धनी सरूप भए अंतराए ॥ १८

तो भी ना भई हमको खबर, तब फेर आए दूजा देह धर ।
ततखिन मिले हमको आए, सागर वतनी नूर बरसाए ॥ १९

मैं साथको कह्या सो कहिए क्योंकर, यों तो कहिए जो दूर किऐ होए घर ।
एता तो मैं जानूं जीव मांहें, जो ए अरज धनीसों करिए नाहें ॥ २०

पर साथ वास्ते दाह उपजी मन, यों जाने न कह्या हम कारन ।
यों न कहूं तो समझे क्यों कोए, कैं बिध दया धनीकी होए ॥ २१

ए साथकी चिन्हारको कहे वचन, ना तो धनी दया जीव जाने मन ।
साथ चरने हैं सो तो बचिख्यंन बीर, ए भी वचन विचारे द्रढ़ धीर ॥ २२

पर करूं साथ पीछलेकी बड़ी जतन, देख बानी आवसी इन बाट वतन ।
देखियो साथ दया धनी, ए कृपाकी बातें हैं अति घनी ॥ २३

ए दया धनी मैं जानूं सही, पर इन जुबां ना जाए कही ।
जो जीव वचन विचारे प्रकास, तो अंग उपजे धाम धनी उलास ॥ २४

कहे *इंद्रावती *सुंदरबाई चरने, सेवा पीउकी प्यार अति घने ।
और कछू ना इन सेवा समान, जो दिल सनकूल करे पेहेचान ॥ २५

॥ प्रकरण ॥ २४ ॥ चौपाई ॥ ५९० ॥

## जाटी प्रबोध-कातनीको द्रष्टांत

भट परो तिन नीदको, जिन सोहागनियां दैया भुलाए ।
तो भी निगोडी[1] ना उड़ी जो धनी थके बुलाए बुलाए ॥ १

ए नीद अमल कासों कहिए, क्योंए ना छोड़े आतम ।
तो भी बेसुधी ना टली, जो जल बल हुई भसम ॥ २

वतनथें आईयां सैयां, सबे बांधके होड़ ।
सो याद न रह्या कछुए, इन नीदें दैयां सब तोड़ ॥ ३

तुमको नीद उड़ावने, मैं देऊं एक द्रष्टांत ।
तुम बिध अगली देखके, जो कदी समझो इन भांत ॥ ४

आईयां आस कातनकी, करके उमेद दूनी ।
किनहूं कात्या बारीक, किन रूईथें न करी पूनी ॥ ५

आईयां कातन वालियां, मिनो मिने रब्द कर ।
किन किन मोहीं कातिया, सांचा सनेह धर ॥ ६

कोई बड़ाई ले बैंठियां, सो गैयां आपको भूल ।
उठियां अंग पछताएके, होए सूरत बेसूल[2] ॥ ७

किनहूं कात्या सोहागका, सूत भर भर सेर ।
कोई बैंठियां पांउ पसारके, ले बैंठी हिरदें अंधेर ॥ ८

कोई तलबें[3] तांत चढ़ावही, भले पाई इन बेर ।
कोई नीचा सिर कर रही, कोई चढ़ियां सिर मेर ॥ ९

एक सूत देखें औरके, उमर सब गई ।
फेरा देवें रूपवंतियां, कबू पूनी हाथ ना लई ॥ १०

कोई सोए रहियां आतनमें, उठियां तब उदमाद ।
दुख पाया तब दिलमें, जब सूत आया याद ॥ ११

---

१. अभागी । २. बेकार । ३. पूरी चाह से ।

जिन दिल दे मिहीं कातिया, ढील ना करी एक पल ।
सोए उठी सैयनमें, हँसते मुख उजल ॥ १२

किनहूं ऊंचा कातिया, दे फारी फुकार ।
सोए घरों सैयनमें, हुई धंन धंन कातनहार ॥ १३

जब सूत सैंयां देखिया, तब जाहेर हुईयां सब कोए ।
पर जिन कछू न कातिया, छिपाए रही मुख सोए ॥ १४

सूतवाली सोहागनी, तिन सोभा पाई घनी ।
सैयां भी कहें धंन धंन, और दियो मान धनी ॥ १५

एक फेरें चरखा उतावला, दिल बांध तांतके साथ ।
रातों भी करे उजागरा, सूत होवे तिनके हाथ ॥ १६

करे जो बातां बीचमें, सो तांत ना निकसे तिन ।
पूनी रही तिन हाथमें, बैंठी फिरावे मन ॥ १७

फजर हुई बीच सैयनमें, मिल बातां करसी सब ।
जिन कछुए न कातिया, तिन कहा हाल होसी तब ॥ १८

ना कछू कात्या रातमें, ना कछू कात्या दिन ।
सो वतन बीच सैयनमें, मुख नीचा होसी तिन ॥ १९

जो मोटा या बारीक, तिन भी पाया मोल ।
पर जिन कछुए ना कातिया, तिनका कछुए न मूल ॥ २०

हुकम धनीके बिध बिध, अनेक किए पुकार ।
जिन सुनी ना तिनकी वतनमें, बातें हुई विकार ॥ २१

सुनते पुकार धनीयकी, काल गया दिन ले ।
पीछे मुख नीचा होएसी, क्यों ना कात्या दिल दे ॥ २२

जिनो आज ना कातिया, करसी याद ए दिन ।
जब बातां करसी सोहागनी, मिल कर बीच वतन ॥ २३

जो कछुए ना समझी, हाथ ना लई पूनी ।
आई थी उमेदसें, पर उठी अलूनी[१] ॥ २४

एक लेसी सोहाग सुलतानका, सोई सोहागिन ।
सो बातां सिर उठाए के, करसी बीच वतन ॥ २५

॥ प्रकरण ॥ २५ ॥ चौपाई ॥ ६१५ ॥

झट परो नींद मोहकी, जो टाली ना टले क्यों ।
आंखां खोल सीधा कहे, फेरबली[२] त्यों की त्यों ॥ १

एक तकला भाने ताओमें[३], फोकट फेरा खाए ।
झगड़ा लगावे आपमें, हिरदे रस ना जुबांए ॥ २

एक तकले समारे औरके, लर लर कतावे ।
कहे अपनाइत जानके, समया बतावे ॥ ३

एक झगड़ा लगावे औरको, सामी तकले डालें बल ।
ए बातें होसी वतनमें, जब उतर जासी अमल ॥ ४

एक औरों को उलटावही, कहा बिध होसी तिन ।
कातना उन पीछा पड़्या, सामी धके दिए औरन ॥ ५

जो झगड़ा लगावें आपमें, ताए होसी बड़ो पछताप ।
ओ जाने कोई ना देखही, पर धनी बैठे देखे आप ॥ ६

बात उठावें जो मनसे, होसी सबे वतन ।
एक जरा छिपी ना रहे, यों कोई भूलो जिन ॥ ७

एक काते मांहें चुपकतियां, सो ताने सहे औरन ।
तांत चढ़ावे तलबें, नजर ना चूके खिन ॥ ८

ताए होसी मान धनीयको, साथ मिने रंग लाल ।
उठसी हंसती हरषमें, पांउं दे पड़ताल[४] ॥ ९

---

१. खाली हाथ । २. लौट गई । ३. जोश । ४. उछल कर ।

हाथ घससी[१] हाथसों, जो लैं इंद्रियों घेर ।
सो पछतासी आंखां खुले, पर ए समया न आवे फेर ॥ १०

जो इत आंखां खोलसी, ले इस्क या विचार ।
सो करसी बातें बिध बिधकी, सब सैयोंमें सिरदार ॥ ११

जिन इत आंखां खोलियां, करके बल बेसुमार ।
नीद उड़ाए ना सकी, सो ले उठसी खुमार ॥ १२

जिन इत उड़ाई नीदड़ी, सो उठत अंग रोसन ।
केहेसी कातनहार को, बिध बिध के वचन ॥ १३

जो उठसी आंखां चोलती, सो केहेसी कहा वचन ।
ना तो आईथी उमेद देखने, पर नीद ना गई तिन ॥ १४

सुनो सैयां कहे इंद्रावती, तुम आईयां उमेद कर ।
अब समझो क्यों न पुकारते, क्यों रहियां नीद पकर ॥ १५

तुम वतनमें धनीयसों, क्यों करसी बात अंधेर ।
रेहेसी उमेदा मनमें, ए न आवे समया और बेर ॥ १६

कातने को उतावलिया, आईयां मिलकर तुम ।
अब भूलो रहियां नीदमें, कातना भूल खसम ॥ १७

धनी आए जगावही, कहे कहे अनेक सनंध ।
नीदें सब भुलाईयां, सेवा या सनमंध ॥ १८

ए जिमी लगसी आग ज्यों, जब धनी चले घर ।
वचन पीउके लेयके, इत क्यों न जागो मांहे अवसर ॥ १९

भट परो इन नीद को, ए ठौर बुरी विषम ।
यों जगावते न जागियां, तो कौन बिध होसी तिन ॥ २०

तुम देखो भांत धनीयकी, कै बिध करी चेतन ।
सबों सुनाए कहे इंद्रावती, जागो चलो वतन ॥ २१

---

१. मलेगी ।

साहेब मांहें बैठके, बतावत हैं ठौर ।
सो घर तुमको देखाईया, जहां नहीं कोई और ॥ २२

॥ प्रकरण ॥ २६ ॥ चौपाई ॥ ६३७ ॥

अब जिन भूल आतम मेरी, पेहेचान के खसम ।
वतन देखाया अपना, जिन छोड़े पीउ कदम ॥ १

वचन कहे बड़े मुखथें, पर तूं तो समया न भूल ।
तूं कात बारीक धनीयका, एतातें पावेगी मूल ॥ २

अजूं तें पाओ न कातिया, इत चाहिएगा सेर भर ।
जब उठेगी आतन से, तब फेर चाहेगी अवसर ॥ ३

ए जो गमाए दिनड़े, गफलतमें जो गल ।
अब तोकों उठनके, आए सो दिनड़े चल ॥ ४

जो तूं उठीं काते विना, आए इन अवसर ।
कहा करेगी इन नीदको, जो ले चलसी घर ॥ ५

अजूं न जागे जोर कर, जौ ऐसी तुझ पर भई ।
धनी आए बेर दूसरी, तेरी सुध ऐसी क्यों गई ॥ ६

कर सीधा समार तकला, कस कर बांध अदवान ।
दे गांठ माल मरोर के, पूनी लगाए के तान ॥ ७

फेर तूं चरखा उतावला, करके अंग कूवत ।
तूं लेसी सोहाग धनीयको, तेरे बारीक इन सूत ॥ ८

ए रेहेसी अधबीच कातना, दिन आए समे करे भंग ।
तुझ देखत सैंयां चलियां, जो हुती तेरे संग । ९

अब हिंमत करके कात तूं, दिल बांध सूत के साथ ।
ए मोही सूत सोहाग का, सो होसी तेरे हाथ ॥ १०

अब नीद करे जिन तूं, ए नीद देवे दुहाग[1] ।
उठ तूं जाग जोर कर, दौड़ ले पीउ सोहाग ॥ ११

ए सूत है अति सोहना, मोल मोहोंगा होसी एह ।
तूं पेहेचान पीउ अपना, वार फेर जीव देह ॥ १२

अब ले स्याबासी सैयनमें, कर तूं ऐसी भांत ।
एह सूत सोहागका, रात दिन ले कात ॥ १३

॥ प्रकरण ॥ २७ ॥ चौपाई ॥ ६५० ॥

भोरी तूं न भूल *इंद्रावती, ऐसा पीउका समया पाए ।
तूं ले धनी अपना, औरों जिन देखाए ॥ १

तोहे यों धनी कब मिलसी, पेहेचानके ले सोहाग ।
ऐसी एकांत कब पावेगी, अब है तेरा लाग ॥ २

बोहोत बखत भला पाईया, धनिएं दियो तुझे आप ।
मेहेर करी मेहेबूबें, करके संग मिलाप ॥ ३

आंखां खोल के ढांपिए, जिन चूके एती बेर ।
रात दिन तेरे राजका, सूत कात सवा सेर ॥ ४

नेह कर तूं नैनो से, चसमें से कताए ।
मोहीं सूत ले उजला, आओ आंखें कर पाए ॥ ५

भले कात्या इन सूतको, भला पाया ए बखत ।
भले सो भागी नीदड़ी, भले मिले धनी इत ॥ ६

धनी विना ए नीदड़ी, टाल ना सके कोई और ।
वार डारों देह जीवसों, मोहे धनी मिले इन ठौर ॥ ७

सई मेरी मुझ कारने, पीउजी दिए इत पाए ।
वारूं तिन पर आतमा, धनी आए जिन राह ॥ ८

---

१. दुर्भाग्य ।

सईं तूं मेरा धनी ले बैठी, कोई और ना देखनहार ।
देख तूं पीउ लेऊं अपना, तो तूं कहियो सोहागिन नार ॥ ९

*इंद्रावती कहे तूं सईं मेरी, धनी मिले मुझे इत ।
पीउने सब पूरन करी, जो मैं करी उमेदा तित ॥ १०

सईं तूं मेरी बाई रतन, मोहे मिले छबीले[1] लाल ।
करी मुझे सोहागनी, अब मैं भई निहाल ॥ ११

मैं एक विध माँगी पीउपे, पीउने कै विध करी रोसन ।
बातें इन रोसन की, करसी जाए वतन ॥ १२

॥ प्रकरण ॥ २८ ॥ चौपाई ॥ ६६२ ॥

* लखमीजीको द्रष्टांत लिख्यो है

मैं जानूं निध एकली लेऊं, धाम धनी मेरे जीवमें ग्रहूं ।
ए सुख औरों काहूँ ना देऊं, फेर फेर तुमको काहेको कहूँ ॥ १

ए वचन यों कहे न जाएं, जीव दुख पावे ना कहे जुबांए ।
एह फिकर मैं बोहोतक करूं, पर देह ना पकड़े जो हिरदें धरूं ॥ २

धनी कहावे तो यों कहूँ, ना तो ए सुख औरों क्यों देऊं ।
देते मेरा जीव निकसे, ए बानी मेरे हिरदेंमें बसे ॥ ३

ये निध लई मैं कसनी कर, श्री धाम धनी चरणों चित धर ।
मैं बोहोतक करूं अंतर, पर सागर पूर प्रगट करे घर ॥ ४

ए बानी धनी अंतरगत कही, केहेनेकी सोभा कालबुतको[2] भई ।
ना तो एह वचन क्यों कहे जांए, अंदर कलेजे ज्यों लगे घाए ॥ ५

जिन जानो वचन अचेतमें कहे, ए केहेते अनेक दुख भए ।
जब मैं विचारूं चितमें आन, ए कैसी मुख निकसी बान ॥ ६

मेरी बुधें लुगा न निकसे मुख, धनी जाहेर करें अखंड घर सुख ।
अब साथ कछू करो तुम बल, तो पूरन सोभा ल्यो नेहेचल ॥ ७

---

१. बांके (प्रियतम) । २. नश्वर शरीर ।

ए बोहोत भांत है भारी वचन, जो कदी देखो आप होए चेतन ।
इन वचन पर एक कहूँ विचार, सुनो साथ मेरे धामके आधार ॥ ८

धड़थें सिर कोई न्यारा करे, तो आधा वचन न मुखथें परे ।
जो कोई सारे सकल संधान, तो कह्या न जाए पाओ लुगा निरवान ॥ ९

साथ कारन जीव सगाई जान, सेवियो धाम धनी पेहेचान ।
यों केहेके पकड़ न देवे कोए, यों देते न लेवें सो अभागी होए ॥ १०

तुम साथ मेरे सिरदार, एह द्रष्टांत लीजो विचार ।
रोसन वचन करूं प्रकास, सुकजीकी साख लीजो विस्वास ॥ ११

ए देखके नीद टालो भरम, इन वचनों जीव करो नरम ।
वचन जीवसों करो विचार, तब सुख अखंड होए आधार ॥ १२

पीउ पेहेचान टालो अंतर, पर आतम अपनी देखो घर ।
इन घरकी कहा कहूं बात, वचन विचार देखो साख्यात ॥ १३

अब जाहेर लीजो द्रष्टांत, जीव जगाए करो एकांत ।
चौदे भवनका कहिए धनी, लीला करे बैकुंठमें घनी ॥ १४

लखमीजी सेवे दिन रात, सोए कहूं तुमको विख्यात ।
जो चाहे आप हेत घर, सो सेवे श्री परमेस्वर ॥ १५

ब्रह्मादिक नारद कैं देव, कैं सुर नर करे एह सेव ।
ब्रह्मांड विषे केते लेऊँ नाम, सब कोई सेवे श्री भगवान ॥ १६

ए लीला सेवे कर सार, सेवतां न पावें पार ।
पेहेलें सेवा करी है घनें, सो देखियो सुकव्यास वचनें ॥ १७

ए तो है ऐसा समरथ, सेवक के सब सारे अरथ ।
अब तुम याको देखो ख्याल, बड़ी मतका धनी भगवान ॥ १८

एक समे बैठे धर ध्यान, बिसरी सुध सरीरकी सान ।
ए हमेसा करे चितवन, अंदर काहूं न लखावे किन ॥ १९

ध्यान जोर एक समे भयो, लाग्यो सनेह ढांप्यो न रह्यो ।
लखमीजी आए तिन समे, मन अचरज भए विस्मए ॥ २०

आए लखमीजी ठाढ़े रहे, भगवानजी तब जाग्रत भए ।
करी विनती लखमीजी तांहें, तुम विना हम और कोई सुन्या नांहें ॥ २१
किनका तुम धरत हो ध्यान, सो मोको कहो श्री भगवान ।
मेरे मनमें भयो संदेह, कहे समझाओ मोको एह ॥ २२
कौन सरूप बसे किन ठाम, कैसी सोभा कहो कहा नाम ।
ए लीला सुनों श्रवन, फेर फेरके लागूं चरन ॥ २३
सुनों *लखमीजी एह वचन, एह बात प्रकासो जिन ।
लखमीजी कहो त्यों करूं, मेरा अंग तुमथी ना परूं ॥ २४
सुनो लखमीजी कहूं तुमको, पेहेले सिवे पूछा हमको ।
इन लीलाकी खबर मुझे नांहें, सो क्यों कहूं मैं इन जुबांए ॥ २५
एह वचन जिन करो उचार, ना तो दुख होसी अपार ।
और इतका जो करो प्रस्न, सो चौदे लोकको करूं रोसन ॥ २६
जिन आसंका आनो एह, एह जिन पूछो संदेह ।
लखमीजी तुम करो करार, मुखथें वचन ना आवे बाहार ॥ २७
लखमीजी बड़ो पायो दुख, कहे ना सके कलपे अति मुख ।
मोसों तो राख्यो अंतर, अब रहूंगी मैं क्यों कर ॥ २८
नैनों आंसू बहुविध झरे, फेर फेर रमा विनती करे ।
धनी एह अंतर सह्यो न जाए, जीव मेरा मांहें कलपाए ॥ २९
अब क्यों कर राखूं जीव हटाए, कलेजा मेरा कटाए ।
कंपमान होए कलकले, उठी आहि अंतसकरन जले ॥ ३०
अब जो धनी करो मेरी सार, तो ए लीला केहेनी निरधार ।
बोहोत बेर मने किया सही, अनेक विध सिखापन दई ॥ ३१
मेरा जीव क्योंए ना रहे, लखमीजी फेर फेर यों कहे ।
तब बोले श्री भगवान, लखमीजी तूं नेहेचे जान ॥ ३२
कोटान कोट करो प्रकार, तो एता तुम जानों निरधार ।
मेरी जुबां न बले एह वचन, एह द्रढ़ करो जीवके मन ॥ ३३

लखमीजी कहे सुनो अब राज, मेरे आतम अंग उपजत दाझ[1] ।
नहीं दोष तुमारा धनी, अप्राप्त मेरी है घनी ।। ३४
अब सरीर मेरा क्यों रहे, ए अगनी जीव ना सहे ।
अब अग्या मंगू मेरे धनी, करूं तपस्या देह कसनी ।। ३५
भगवानजी बोले तिन ताओ, लखमीजी बेर जिन ल्याओ ।
तब कलप्या जीव दुख अनंत कर, उपज्यो बैराग लियो हिरदे धर ।। ३६
लखमीजीको आसा थी घनी, जानों विछोहा ना देसी धनी ।
अब चरनों लाग लखमीजी चले, प्यादे पांउं रोवे कलकले ।। ३७
इन समे विरह कियो अति जोर, बड़ो दुख पाए कियो अति सोर ।
एक ठौर बैठे जाए दमे तेह, भगवानजीसों पूरन सनेह ।। ३८
सीत धूप बरषा ना गिने, करे तपस्या जोर अति घने ।
सनेह धर बैठे एकांत, एते सात भए कलपांत ।। ३९
तब ब्रह्माजी खीरसागर, आए विस्नु बैकुंठ घर ।
ए प्रभूजी ए क्या उतपात, लखमीजी तप करे कल्पांत सात ।। ४०
भगवानजी बोले तब तांहि, दोष हमारा कछुए नांहि ।
तो भी वचन तुमको कहे जांए, लखमीजी बोहोत दुख पाए ।। ४१
एता रोस तुम ना धरो, लखमीजी पर दया करो ।
तुम स्वामी बड़े दयाल, लखमीजी दुख पावे बाल ।। ४२
स्वामीजी ए ढील करो जिन, लखमीजी बुलाओ ततखिन ।
चरन ग्रहे तब खीर सागरें, फेर फेर ब्रह्मा विनती करे ।। ४३
चलो प्रभुजी जाईए तित, बुलाए लखमीजी आईए इत ।
तब दया कर आए भगवान, लखमीजी बैठे जिन ठाम ।। ४४
लखमीजी परनाम कर आए, श्रीभगवानजी तब सनमुख बुलाए ।
लखमीजी चलो जाईए घरे, तब फेर रमा बानी उचरे ।। ४५

---

१. आग ।

धनी मेरे कहो वाही वचन, जीव बोहोत दुख पावे मन ।
जो तप करो कल्पांत एकईस, तो भी जुबां ना बले कहे जगदीस ।। ४६
देखलाऊं में चेहेन कर, तब लीजो तुम हिरदे धर ।
तब ब्रह्मा खीर सागर दोए लखमीजीकी विनती होए ।। ४७
लखमीजी उठो ततकाल, दया करी स्वामी दयाल ।
अब जिन तुम हठ करो, आनंद अंतसकरनमें धरो ।। ४८
तब लखमीजी लागे चरने, यों बुलाए ल्याए आनंद अति घनें ।
तब ब्रह्मा खीर सागर सुख पाए फिरे, दोऊ आए आप अपने घरें ।। ४९
अब ए विचार तुम देखो साथ, ना बली जुबां बैकुंठ नाथ ।
ग्रही वस्त भारी कर जान, तो भी वचन ना कहे निरवान ।। ५०
ना तो बैकुंठ नाथको कैसी खबर, बिना तारतम क्या जाने मूलघर ।
और खबर कछुए ना कही, तो भी निध भारी कर ग्रही ।। ५१
बिना भारी कौन भार उठावे, मुखथें वचन कह्यो न जावे ।
जब भया कृस्न अवतार, *रूकमनी हरन कियो मुरार ।। ५२
माधवपुर व्याही रूकमनी, धवल मंगल गावे सोहागनी ।
गाते गाते लिया ब्रज नाम, तब पीछे भोम पड़े भगवान ।। ५३
तब नैनों आंसू बोहोत जल आए, काहूपें ना रहे पकराए ।
सुख आनंद गयो कहूँ चल, अंग अंतसकरन गए सब गल ।। ५४
तब सब किने पायो अचरज, यों लखमीजीको देखाया बृज ।
सोले कला दोऊ सरूप पूरन, ए आए हैं इन कारन ।। ५५
लोक जाने आए असुरों कारन, बिस्ने कृस्न देह धर पूरन ।
ए हुकमें असुर कैं देवे उड़ाए, ऐसा बल है बैंकुंठ राए ।। ५६
क्या समझे लोक अंदर की बात, देखलावने लखमीजी को आए साख्यात ।
उठ बैठे श्री कृस्नजी पूरन किया काम, यों लखमजीकी भानी हाम ।। ५७
ए चितमें विचारो रही, ए इसारत सुकें कही ।
ए लीला सुकें नीके कर गाई, जो लखमीजीको भगवानें देखाई ।। ५८

ए व्रज लीला जो अपनी, जाकी अस्तुत करत हैं धनी ।
पेहेले जो लीला तुम व्रजमें करी, अख्यर सदा सिव चितमें धरी ।। ५९
रास लीला जो तुम वनमें किध, सो अख्यर सरूपें ग्रही जाग्रन बुध ।
ता लीला को ए प्रतिबिंब, जो *विस्नु देखाई रमाको सनंध ।। ६०
तो वचन तुमको कहे जांए, जो तुम धामकी लीला मांहें ।
व्रजवालो पीउ सो एह, वचन आपनको केहेत जेह ।। ६१
रास मिने खेलाए जिने, प्रगट लीला करी है तिने ।
धनी धामके केहेलाए, ए जो साथको बुलावन आए ।। ६२
तुम कारन मैं कह्या द्रष्टांत, जीवसों वचन विचारो एकांत ।
बैकुंठ ठौर तितका ग्यान, केहेने वाला श्री भगवान ।। ६३
लखमीजी तहां श्रोता भई, कैं विध कसनी कर कर रही ।
तो भी न पाया एक वचन, तुम धाम धनी ले बैठे धन ।। ६४
अजहूं ना तुम टालो भरम, क्यों ना करत हो जीव नरम ।
ए नौतनपुरी जो कही नगरी, श्री देवचंदजीएं लीला करी ।। ६५
ए प्रगट वचन किए अपार, तो भी ना हूई तुमें सुध सार ।
छोड़ो अमल माया जोर कर, जीव जगाओ वचन चित धर ।। ६६
ए माया देखो न्यारे होए, भई तारतमकी रोसनाई दोए ।
जो वानी धनिएं दई, सो आतमके अंदर तुम क्यों ना ग्रही ।। ६७
माया गुन सब करो हाथ, पेहेचानो प्रानको नाथ ।
अब एता आतमसों करो विचार, कौन वचन कहे आधार ।। ६८
जोलों जीव विचार विकार ना काढ़े, ज्यों छीट ना लगे घड़े चिकटे ।
*इंद्रावती कहे सुनो साथ, जिन छोड़ो अपनो *प्राननाथ ।। ६९
फेर कर ना आवे ए अवसर, जिन हाम ले जागो घर ।
थोड़ेमें कह्या अति घना, जान्या धन क्यों खोईए अपना ।। ७०
हम आगे ना समझे भए ढीठ, तो दई श्री देवचंदजीएं पीठ ।
ना तो क्यों छोडे साथको एह, जो कछू किया होए सनेह ।। ७१

अब फेर आए दूजा देह धर, दया आपन ऊपर अति कर ।
अब ए चेतन कर दिया अवसर, ज्यों हंसते बैठे जागिए घर ॥ ७२

सब मनोरथ हुए पूरन, जो ए बानी विचारो अंतसकरन ।
ए तो इंद्रावती कहे फेर फेर, जो धाम धनी कृपा करी तुम पर ॥ ७३

॥ प्रकरण ॥ २६ ॥ चौपाई ॥ ७३५ ॥

प्रगटबानी प्रकासकी—राग सामेरी

सोईने सोई सूते क्या करोजी, या अगिन जेहेर जिमी मांहेजी ।
जाग देखो आप याद करो, ए नींद निगल गई जीवके तांईजी ॥ १

ए नींद तिनको ले गई रे, जो नाहीं साथी आपनजी ।
इन ठगनी जिमिऐं बोहोतक ठगेरे, तुम जिन सोओ इत खिनजी ॥ २

नाहीं रे नींद कोई घेन घारन, नींद होए तो लीजे उठाएजी ।
उठाए जीवको खड़ा कीजे, फेर पड़े सोई उलटाएजी ॥ ३

सोई घेनने सोई घारन रे, सोई घूंटन अधको आवेजी ।
याही जिमी और याही नींद थें, धनी विना कौन जगावेजी ॥ ४

इन जेहेर जिमीं से कोई न उबरचा, तुम सूते तिन ठामजी ।
ए जेहेर जिमी अगिन उजाड़ रे, ए नही वस्ती इन गामजी ॥ ५

ए विषकी जिमी और विषके विछोने, विषैका आकारजी ।
अष्ट धात मिने सब विषके, विषैका विस्तारजी ॥ ६

गुन पक्ष इंद्री सब विषके, विषैको सब आहारजी ।
आतम निरमल एक वतनकी, सो तो कही निराकारजी ॥ ७

विषकी तलाई ने विषके ओढ़ना, विष पलंग दिया बिछाएजी ।
विषका सिराना विषका ओछाड़, विष पंखा विष वाएजी ॥ ८

जागते विष और सुपने विष रे, नीदमें विष निदानजी ।
बाहेरका विष क्योंकर कहूं रे, विष आंधी वाए अग्यानजी ॥ ९

वस्तर विषके भूषन विषके, सकल अंग विष साजजी ।
ए विष नख सिख जीवको भेदचो, सो क्योंछूटे विना श्री राजजी ॥ १०

जोर कर तुम जागो जीवजी, नहीं सूतेकी एह जिमीजी ।
ज्यों ज्योंसोईए त्योंत्यों वाढ़े विष विस्तार, पीछे दुख पावे जीव आदमीजी ॥ ११
ए जिमी तुम क्यों न छोड़ो, अजूं नाहीं नीद वाढ़ीजी ।
इन जिमी नीद दुखड़े घनें, पीछे क्योंए न जाय काढ़ीजी ॥ १२
वोहोत देखें दुख अनेक होएसी, ताथें उठो ततकालजी ।
जलके जीव को घर जलमें, ज्यों रहे मकड़ी मांहें जालजी ॥ १३
सब कोई जाली गूथे अपनी, फेर अपनी गूंथीमें उरझाएजी ।
उरझे पीछे कै दुख देखे, दुखैंमें जीव जाएजी ॥ १४
वोहोत दुख देखे जीव जाते, तो भी गूथे जाली फेर फेरजी ।
दोष नहीं इन मकड़ीका रे, इनका घर हुआ जाली अंधेरजी ॥ १५
अपने घर इत नाही साथजी, चौदे भवनमें कित जी ।
ता कारन पीउजी करे रे पुकार, तुम क्यों सूते इत जी ॥ १६
ओ दुखके घर सो भी न छोड़े, तुम याद ना करो सुखके घरजी ।
सास्त्र सबोपें साख दिवाई, तुम अजहूं ना देखो चित धरजी ॥ १७
बेहद सुख पार बेहद घर, बेहद पार श्री राज जी ।
अखयरातीत सुख अखंड देवेको, जगाऊं तुमारे काज जी ॥ १८
पीउ पुकार पुकार थके, तुम अजहूं जल विन गोते खात जी ।
दिन उगते संझा होत है, पीछे आड़ी पड़ेगी रात जी ॥ १९
रात पड़ी तब कोई न जागे, पीछे कोई ना करे पुकार जी ।
निसाए नीद जोर वाढ़ेगी, पीछे वाढ़ेगा विष विस्तार जी ॥ २०
संझा लगे धनी रेहेसी साथ कारन, तुम अजहूं ना नीद निवारो जी ।
पेहेचान पीउ सुख लीजिए, तुम अपना आप वार डारो जी ॥ २१
पुकार करते रात पड़ी, पीउ रात ना रेहेसी निरधार जी ।
जो दुसमन तुमको भुलावत हैं, सो तुम क्यों न करत विचार जी ॥ २२
माहेंए विषम भोम छोड़ते जो आड़ी करे, सो जानियों तेहेकीक दुसमनजी ।
जो लेनें न देवे सुख अखंड, सो क्यों न देखो सुन वचन जी ॥ २३

ए दुसमन तेरे विष भरे, जिन लियो संसार घेर जी ।
ओ भुलावत तुमको जुदी भांतें, तुम जिन भूलो इन बेर जी ॥ २४
भी तुमको दिखाऊँ दुसमन, जिनहूँ न छोड़चा कोए जी ।
सो तुमको दिखाऊँ जाहेर, तुमको अंदर झूठ लगावे सोए जी ॥ २५
गुन अंग इंद्री देखोरे चलते, जो उलटे लगे संसार जी ।
एही दुसमन विसेखे अपने, सो करत हैं सिरपर मार जी ॥ २६
तुम करो लड़ाई इनसों, मार टूक करो दुसमन जी ।
फेर वाको उलटाए चेतन करो, ज्यों होवें तुमारे सजन जी ॥ २७
सनमंधी साथको कहे वचन, जीव को एता कौन कहे जी ।
ए बानी सुन ढील करे क्यों वासना, सोए विषम भोम क्यों रहे जी ॥ २८
छलकी भोम को तुम समझत नाहीं, ना सुनत मेरी बात जी ।
जानत हो दिन दो पोहोर रेहेसी, पाओ पलमें हो जासी रात जी ॥ २९
अबही रात आई देखोगे, उठसी अनेक अंधेर जी ।
जीव अंधेर जब देख उरझसी, तब आवसी विषके फेर जी ॥ ३०
विषके फेर अनेक उपजसी, करम केरा जे दुख जी ।
भी फिरसी फेर अनेक विधके, कहूँ जीवको न होवे सुख जी ॥ ३१
सुनियो जो तुमहो ब्रह्मसृष्ट के, जिन आओ मांहें रात जी ।
इन रातके दुख घने दोहेले, पीछे उड़सी अंधेर प्रभात जी ॥ ३२
दूर होसी इन रातके प्रभात, रात छेह क्योंए न आवे जी ।
दुख की रात घनूं लागसी दोहेली, पीछे फजर मुख न देखावे जी ॥ ३३
महाप्रले होसी जब लग, तबलों रेहेसी अंधेर जी ।
ता कारन पीउजी करे रे पुकार, जिन भूलो इन बेर जी ॥ ३४
तारतम के उजाले कर, रोसन कियो इन सूल जी ।
कैं कोट ब्रह्मांड देखाई माया, पाया अंकूर पेड़ मूल जी ॥ ३५
पीउ पधारे बुलावन तुमको, तो होत है एती पुकार जी ।
यों करते जो नहीं मानो, तो दुख पाए चलसी निरधार जी ॥ ३६

विषम बड़ा जल मांहें अंधेर, के लगसी लेहेरें निघात जी ।
विसेखे जीव बेसुध होसी, नहीं सुनोगे निध साख्यात जी ॥ ३७
मांहें मछ गलागल, लेहेरें आड़े टेढ़े वेहेवट जी ।
दसो दिसा कोई ना सूझे, फिर वलसी अंधकार पट जी ॥ ३८
तुम हो अंग मेरे के, जिन देखो माया को मरम जी ।
धाम धनी आए तुम कारन, तुमें अजहूँ न आवे सरम जी ॥ ३९
ए नीद तुम को क्यों कर उड़सी, जोलों न उठो बल कर जी ।
सेवा करो समे पीउ पेहेचान, याद करो आप घर जी ॥ ४०
ए अमल तुमको क्यों रे उतरसी, जो जेहेर चढ़्या अति भारी जी ।
पीउजीके बान तो तोड़े संधान, पर तुमको केहे केहे हारी जी ॥ ४१
जो जानो घर पाइए अपना, तो एक राखियो रस वैराग जी ।
सकल अंगे सुध सेवा कीजो, इन बिध घर बैठो जाग जी ॥ ४२
जो जानो इत जाग चलें, तो लीजो अरथ प्रकास जी ।
जीव को कहियो ए कह्या सब तोकों, सिर लिए होसी उजास जी ॥ ४३
इन उजाले जेहेर उतरसी, तब बढ़ते बल नहीं बेर जी ।
पर आतम को आतम देखसी, तब उतर जासी सब फेर जी ॥ ४४
एह बिध कर कर आतम जगाई, तब होसी सब सुध जी ।
सुध हुए पूर चलसी प्रेम के, होसी जाग्रत हिरदें बुध जी ॥ ४५
निरमल हिरदेंमें लीजो वचन, ज्यों निकसे फूट वान जी ।
ए कह्या ब्रह्मसृष्ट ईश्वरी को, ए क्यों लेवे जीव अग्यान जी ॥ ४६
माया जीव हममें रहे ना सके, सो ले न सके एह वचन जी ।
ना तो सबद घने लगसी मीठे, पर रेहेनें ना देवे झूठा मन जी ॥ ४७
जो कोई जीव होए माया को, सो चलियो राह लोक सत जी ।
जो कोई होवे निराकार पार को, सो राह हमारी चलत जी ॥ ४८
वास्नाको तो जीव न कहिए, जीव कहिए तो दुख लागे जी ।
झूठेकी संगते झूठा केहेत हों, पर क्या करों जानों क्योंए जागे जी ॥ ४९

ए कठनवचन मैं तो केहेती हों, ना तो क्यों कहूं वासना को जीव जी ।
जिन दुख देखे गुन्हेंगार होत हो, आग्या न मानो पीउ जी ॥ ५०
प्रकास वानी तुम नीके कर लीजो, जिन छोडो एक खिन जी ।
अंदर अरथ लीजो आतम के, विचारियो अंतसकरन जी ॥ ५१
अंदर का जब लिया अरथ, तब नेहेचे होसी प्रकास जी ।
जब इन अरथे जागी वासना, तब वृथा न जाए एक स्वांस जी ॥ ५२
ए प्रगट वानी कही प्रकासकी, *इंद्रावती चरने लागे जी ।
सो लाभ लेवे दोनों ठौरको, जाकी वासना इत जागे जी ॥ ५३

॥ प्रकरण ॥ ३० ॥ चौपाई ॥ ७८८ ॥

## बेहद वानी लिखी है

बेहद के साथी सुनो, बोली बेहद वानी ।
बड़े बड़ें रे हो गए, पर काहूं न जानी ॥ १
उपाए किए अनेकों, पर काहूं ना लखानी ।
ए वानी निज बुध विना, न जाए पेहेचानी ॥ २
ना तो आए बुध के सागर, गुन खट[1] ग्यानी ।
*भगवानजी को *महादेवजी, पूछे बेहद वानी ॥ ३
विस्नु कहे सिवजी सुनो, तुम पूछत हो जेह ।
आदि करके अबलों, अगम कहियत एह ॥ ४
कोट ब्रह्मांड जो हो गए, तित काहूं ना सुनी ।
खोज खोज खोजी थके, चौदे लोक के धनी ॥ ५
फेर पूछे सिव विस्नु को, कहे ब्रह्मांड और ।
और ब्रह्मांडकी वारता, क्यों पाइए इन ठौर ॥ ६
ए बात तो सिवजी जाहेर, इत है कै भांत ।
ठौर ठौर कहे वचन, ए जो भेद कल्पांत ॥ ७

---

१. छः शास्त्रों के ज्ञाता ।

सुकजी और सनकादिक, कै और भी साध ।
तिन खोज खोज के यों कह्या, ए तो अगम अगाध ॥ ८

एक सबद के कारने, लखमी जी आप ।
नेक भी जाहेर ना हुई अंग दिए कै ताप ॥ ९

याही रस के कारने, कैयों किए बल ।
कैयों कलप्या अपना, पर काहूं न प्रेमल ॥ १०

सो रस वृज की सुंदरी, पायो सुगम ।
सो सेहेजे घर आइया, जो कहे वेद अगम ॥ ११

ए निध अपने घरकी, इन यों तो विलसी ।
अनु[1] चोंच पात्र या विना, नाही कहूं कैसी ॥ १२

अबलों कहूं ना जाहेर, श्री धाम के धनी ।
खेले आप इच्छा कर, अर्धांग जो अपनी ॥ १३

साथ इछाए सुपनमें, खेल मांहें आया ।
बेहद थें पीउ आएके, बेहद साथ खेलाया ॥ १४

ए वानी इत हम विना, और काहूं न होवे ।
आधा लुगा न पाइए, जो जीव अपना खोवे ॥ १५

साथ देखने आइया, पीउ इछा कर ।
बेहद धनी साथ को, खेलावें चित धर ॥ १६

ले चलसी सब साथको, पार बेहद घर ।
पीछे अवतार बुध को, सब करसी जाहेर ॥ १७

वैकुंठ जाए विस्नु को, सब देसी खबर ।
विस्नु को पार पोहोंचावही, सब जन सचराचर ॥ १८

खोज पाई जिन ए निध, धंन धंन सो बुध ।
द्रढ करी सनेहसों, साथ को कही सुध ॥ १९

---

१. चोंच की नोंक ।

नौतन पुरी भली पेरे, चितसों चरचानी[1] ।
साथी जो बेहद के, तिनहूं पेहेचानी ॥ २०

बेहद वाट देखावही, पीउ आएके पास ।
तारतम ले आए धनी, ए जोत उजास ॥ २१

जाहेर हुई साथमें, देखो रास प्रकास ।
तारतम बानी वतन की, जिन कियो तिमर नास ॥ २२

हिरदें आदि *नारायन के, वेद जिनको स्वांस ।
ग्रन्थ सबों की उतपन, बानी वेद व्यास ॥ २३

तामे फल श्री भागवत, सुक जी मुख भाख ।
पाती ल्याया बेहद की, साथ की पूरी साख ॥ २४

और भी नाम केते लेऊँ, इंड बानी अलेखे ।
सब साख देवे बेहद की, जो कोई दिल दे देखे ॥ २५

ए बानी ए वाटडी[2], कबू ना जाहेर ।
धनी ब्रह्मांड के खोजिया, सब मांहें बाहेर ॥ २६

एक जरा किनहूं न पाइया, इत अनेक जो धाए ।
नाम ब्रह्मांड के धनी कहे, दूजे कहा करूं सुनाए ॥ २७

सो निध जाहेर इत हुई, धंन धंन संसार ।
धंन धंन खंड भरत का, धंन धंन नरनार ॥ २८

धंन धंन पांचों तत्व, धंन धंन त्रैगुन ।
धंन धंन जुग सो कलजुग, धंन धंन पुरी नौतन ॥ २९

अब कहूँ लीला प्रथम की, सुनियो तुम साथ[3] ।
जो कबूं कानों ना सुनी, सो पकड़ देऊँ हाथ ॥ ३०

धोखा कोई न राखहूँ, करूं निरसंदेह ।
मुक्त होत सचराचर, आयो वतनी मेह ॥ ३१

---

१. कही गई । २. राह (प्रेम लक्षणा भक्ति) । ३. ब्रह्म श्रृष्टि ।

धंन गोकल जमुना त्रट, धंन धंन वृज वासी ।
अग्यारे बरस लीला करी, करी अविनासी ॥ ३२

चौदह लोक सुपन के, साथ आया देखन ।
मुक्त दे पीछे फिरे, सदा सिव चेतन ॥ ३३

और ब्रह्मांड जोग माया को, कियो खेलने रास ।
खेल करे श्री राजसों, साथ सकल उलास ॥ ३४

नौतन खेल या रास को, कबहूं ना भंग ।
खेले साथ सुपनमें, जोग माया के रंग ॥ ३५

तुम देखो साथ सुपनमें, खेल खेले ज्यों ।
एक बिधें साथ जागिया, खेल त्यों का त्यों ॥ ३६

एह ब्रह्मांड तीसरा, हुआ उतपंन ।
धाख रही कछू अपनी, तो फेर आए देखन ॥ ३७

ब्रह्मांड तीनों देखे हम, खेल बिना हिसाब ।
जाग वतन बातां करसी, जो देखो मिने ख्वाब ॥ ३८

ए जो ब्रह्मांड उपज्या, जिनमें राख्या सेर ।
साथ घरों सब पोहोंचिया, और इत आए फेर ॥ ३९

ज्यों हरे ब्रह्मांए बाछरू, गोवाल संघातें ।
ततखिन सो नए किए, आप अपनी भांतें ॥ ४०

गोकल मिने आप अपने, घर सब कोई आया ।
खबर ना पड़ी काहूँ को, ऐसी रची माया ॥ ४१

एह दृष्टांते समझियो, राह राख्या इन विध ।
ए बल माया देखियो, और ऐसी किध ॥ ४२

साथ चल्या सब वतन, अपने पीउ साथ ।
और खेले रासमें अखंड, इत उठे प्रभात ॥ ४३

सोई गोकल जमुना त्रट, जानों सोई व्रज वासी ।
रास लीला जाने खेल के, इत आए उलासी ॥ ४४

जाने सोई ब्रह्मांड, जो खेलत सदाए ।
एह ब्रह्मांड जो उपज्या, ऐसी रे अदाए ॥ ४५

दोऊ ब्रह्मांड बीच में, सेर राख्या सार ।
खबर ना पड़ी काहूं को, बेहद का बार ॥ ४६

इत फेर उठे जो प्रतिबिब, यामे साथ पीउ ।
खेल आए जाने हम नहीं, धोखा रह्या जीउ ॥ ४७

धोखा इनों का भी ना मिटचा, तो कहा करे और ।
बेहद वानी के माएने, क्यों होवे दूजे ठौर ॥ ४८

यों साथ पिछला आईया, इत इन दरवाजे ।
मूल साथ फेर आवसी, ए किया जिन काजे ॥ ४९

क्या जाने हद के जीवड़े, बेहद की बातें ।
रासमें खेले अखंड, इत उठे प्रभातें ॥ ५०

खेले पिछले साथ में, सात दिन तांई ।
*अक्रूर चल्या बुलाएके, पोहोंचे मथुरा मांहीं ॥ ५१

तोलों भेष जो पीउ का, कुबला[१] फील मारया ।
*चाडूल *मुष्टक[२] संघारके, जाए कंस पछाड़चा ॥ ५२

टीका दिया उग्रसेन को, भए दिन चार ।
छोड़ बसुदेव भेष उतारिया, या दिन थें अवतार ॥ ५३

अब इहां से लीला हदकी, सोतो सारे केहेसी ।
पर बेहद वानी हम बिना, दूजा कौन देसी ॥ ५४

*नरसैयां इन पेंडे खड़ा, लीला बेहद गाए ।
बल करे अति निसंक, मिने पैठचो न जाए ॥ ५५

जो वल किया नरसैएं, कोई करे ना और ।
हदके जीव बेहदकी, लीला देखी या ठौर ॥ ५६

---

१. कुबलिया हाथी । २. एक राक्षस ।

*नरसैयां दौड़्या रसको, वानी करेरे पुकार ।
रस जाए हुआ अंदर, आड़े दरवाजे *चार ॥ ५७

द्वारने इन बेहद के, लेहेरें आवें सीतल ।
सो इत खड़ा लेवही, रस की प्रेमल ॥ ५८

इन दरवाजे नरसैयां, प्रेमें लपटाना ।
लीला पिछले साथमें, सुख ले समाना ॥ ५९

लीला सुकें वरनन करी, वृज रास वखाना ।
बेहद की वानी विना, ठौर ठौर बंधाना ॥ ६०

ना तो ए क्यों ऐसे वरनवे, क्यों कहे पंच अध्याई ।
ए रस छोड़ और वचन, मुख काढ़्यो न जाई ॥ ६१

होवे अस्कंध द्वादस थें, इत कोट गुने ।
पर क्या करे आग्या इतनी, बस नांहीं अपने ॥ ६२

ना हुई जाहेर या मुख, बेहद की वान ।
धाख रही बोहोत हिरदें, कलप्या दुख आन ॥ ६३

कंपमान होए कलपया, रस गया याथें ।
सोए दुख क्यों सेहे सके, रस जाए जाथें ॥ ६४

बेहद के सबद कहे का, था हर्ष अपार ।
दरवाजा ना खोलिया, रह्या रस सार ॥ ६५

रास रात वरनन करी, देखो मन विचार ।
नारायनजी की रातको, कोईक पावे पार ॥ ६६

पर पार नहीं रास रात को, ए तो बेहद कही ।
तामें अखंड लीला रासकी, पंच अध्याई भई ॥ ६७

देखो जाहेर याके माएने, चित ल्याए वचन ।
रात ऐसी बड़ी तो कही, लीला बड़ी वृंदावन ॥ ६८

ए पंच अध्याई होवे क्यों कर, मेरे मुनीजी की बान ।
पर सार समे बीच अटक्या, रस आए सुजान ॥ ६९

दुख हुआ बोहोत कलप्या, पर कहा करे जान ।
पात्र विना पावे नहीं, रस बेहद वान ॥ ७०

पात्र विना तुम पाइया, मुनीजी क्यों करो दुख ।
आज लगे बेहद का, किन लिया है सुख ॥ ७१

एतो हमारा कागद, तुम साथे आया ।
खबर हद बेहद की, देकर पठाया ॥ ७२

विध सारी कागदमें, हम लिए विचार ।
तुम साथे मुनीजी संदेसड़ा, आए समाचार ॥ ७३

या सुध कागद हम लई, समझे सब सार ।
औरन को ए कोहेड़ा, ना खुले द्वार ॥ ७४

और विचारे क्या जानही, जाने जाको होए ।
हम बिना द्वार बेहद के, खोल ना सके कोए ॥ ७५

लाख बेर देखो फेर, न पावे कड़ी कल ।
पाई नही त्रगुनने, कर कर गए बल ॥ ७६

एतो कोंहेड़ा हद का, बेहदी समाचार ।
ए देखावें हम जाहेर, साथ को खोल द्वार ॥ ७७

सुकजी इत ले आइया, बेहद के बोल ।
फेर टालो अंदर का, देखो आंखा खोल ॥ ७८

अस्कंध दूजा मुनिएं कहा, चत्र श्लोकी जित ।
ब्रह्मांड की जहां उतपन, अरथ देखो तित ॥ ७९

ए द्वार देखोगे जाहेर, होसी माया पेहेचान ।
ए माएना नीके लीजियो, हिरदेमें आन ॥ ८०

मोह तत्व कह्या नींद को, सुरत अहंकार ।
सुपन को कह्या ब्रह्मांड, नाम धरे बेसुमार ॥ ८१

पैड़ा बेहद वतन का, ए वतनी जाने ।
हद का जीव बेहद का, द्वार क्यों पेहेचाने ॥ ८२

देख्यो द्वार बेहद के, सुकजी बलवंत ।
पर कल किल्ली क्यों पावही, जोर किया अनंत ॥ ८३

द्वार खोलने दौड़िया, सुकजी सपराना ।
ले चल्या संग परीक्षत, सो तो बोझें दबाना ॥ ८४

बल किया बलिएँ घना, द्वार द्वार पछटाना ।
पर साथे संघाती हद का, इत सो उरझाना ॥ ८५

रास लीला सुख अखंड, इत तो न केहेलाना ।
पाछल तान हुई घनी, अध बीच लेवाना ॥ ८६

पात्र बिना रस क्यों रहे, आवत ढलकाना ।
पात्र हुते तिन पाइया, भली भांत पेहेचाना ॥ ८७

बरस असी लग ए रस, सारी पेरे सचवाना[1] ।
लिया पिया साथ में, जिन जैसा जनाया ॥ ८८

एक बूंद बाहेर न निकस्या, साथ मिने समाना ।
जिन का था तिन विलसिया, मिनो मिने बटाना ॥ ८९

अब हम मिने थें ए रस, इत आए छलकाना ।
छोल आई ज्यों सागर, अंग थें उभराना ॥ ९०

जोर किया हम बोहोतेरा, रस रहे न ढपाना ।
ए अब जाहेर होएसी, बाहेर प्रगटाना ॥ ९१

ए रस आज के दिन लों, कित कहूं न लखाना ।
आवसी साथ इन बिध, ए रस लपटाना ॥ ९२

जान होए सो जानियो, ए क्यों रहे छाना[2] ।
क्यों कर ए छिप्या रहे, सब सुनसी जहांना ॥ ९३

ए वानी बेहद प्रगटी, *इंद्रावती मुख ।
बोहोत बिधें हम रस पिए, बेहद के सुख ॥ ९४

१. सींचा गया । २. छिपा ।

या वानी के कारने, कै करें तपसन ।
या वानी के कारने, कै पीवें अगिन ॥ ९५

या वानी के कारने, कै दमे देह ।
या वानी के कारने, कै करे कष्ट सनेह ॥ ९६

या वानी के कारने, कै गले हेम ।
या वानी के कारने, कै लेवे अंनसन नेम ॥ ९७

या वानी के कारने, कै भैरव झंपावे ।
या वानी के कारने, तिल तिल देह कटावे ॥ ९८

या वानी के कारने, कै संधान सारे ।
या वानी के कारने, कै दह जारे ॥ ९९

या वानी के कारने, करे कै बिध ताब ।
सो मुख थें केते कहूं, हुए विना हिसाब ॥१००

किन एक बूंद न पाइया, रसना भी वचन ।
ब्रह्मांड धनियों देखिया, जो कहावें त्रगुन ॥१०१

और भी नाम अनेक हैं, पर लेऊँ कहां के ।
ब्रह्मांड के धनियों ऊपर, लिए जाए न ताके ॥१०२

सो रस सागर इत हुआ, लेहेरें उछले ।
साथ सबे हम विलसही, बाहेर पूर भी चले ॥१०३

पेहेले बीज उदे हुआ, पुरी जहाँ नौतन ।
सब पुरियों में उत्तम, हुई धंन धंन ॥१०४

फेर कहूँ बिध सकल, जासों सब समझाए ।
संसा कोई साथ को, मैं राख्यो न जाए ॥१०५

जो रस गोकल प्रगटचा, सो तो सुख अलेखे ।
विन जाने सुख विलसिया, घर कोई न देखे ॥१०६

ए सुख सुपने विलसिया, साथ पीउ संघाते ।
घर देखे भागे सुपना, ना देखाए ताथे ॥१०७

सुपन भागे सुख क्यों होए, खेल क्यों देखाए ।
जब सुख वतन लीजिए, नीद उड़के जाए ॥१०८

नीद उड़े भागे सुपना, तब फेर फेरा होए ।
सुख सुपंन औंर वतन, लिए जांए ना दोए ॥१०९

या विध साथ समझियो, सुख साथ को दियो ।
यों विन जाने वृजमें, सुख सुपने लियो ॥११०

अब सुख रास कहा कहूं, जाने निज सुख होए ।
ए सुख साथ पीउ विना, न जाने कोए ॥१११

ए पीउ सरूप नौतन, नौतन सिनगार ।
नेह हमारा नौंतन, नौतन आकार ॥११२

ए बन सुंदर नौतन, नौंतन वाओ वाए ।
जल जमुना नौंतन, लेहेरां लेवें वनराए ॥११३

सुगंध बेलियां नौंतन, जिमी रेत सेत प्रकास ।
नेहेकलंक चंद्रमा नौंतन, सकल कला उजास ॥११४

नौंतन रंग पसू पंखी, वानी नई रसाल ।
नौतन बेन बजावही, नए सुख देवें लाल ॥११५

या रस सुख केते कहूं, कै रेहेस प्रकार ।
साथ पीउ संग विलास, हम किए अपार ॥११६

कै बातें या सुख की, जीव हिरदें जाने ।
ए सुख पेहेलें थें अलेखें, अति अधिकाने ॥११७

तेज सबों में मूल का, सबही चेतन ।
थिर चर चेतन ए लीला, ऐसी उतपंन ॥११८

पर ए सुख सबे सुपन में, नेठ नीद जो मांहि ।
ए सुख जोग माया मिने, द्रष्ट ना घर तांहि ॥११९

एक सुख कहे गोकल के, और सुख रास सुपन ।
सुख दोऊ क्यों होवही, विचारियो मन ॥१२०

जब लीजे सुख सुपन, नहीं वतन द्रष्ट ।
जब सुख वतन लीजिए, नहीं सुपन की सृष्ट ॥१२१

यों सुख सूपने लिए, कछुए नहीं खबर ।
इन दोउ लीला मिने, सुध नाही घर ॥१२२

या बिध लीला दोऊ करी सिधारे वतन ।
ए ब्रह्मांड जो तीसरा, ले आए आपन ॥१२३

जो मनोरथ मूल का, हुआ नहीं पूरन ।
विन सुध विरह विलास किए, यों रही धाख मन ॥१२४

धाख क्यों रहे अपनी, ए किया इंड फेर ।
साथें आए पीउजी, इत दूजी वेर ॥१२५

लीला दोऊ पेहेले करी, दूजे फेर भी दोए ।
विना तारतम ए माएने, न जाने कोए ॥१२६

एक में उपज्या तारतम, दूजे मिने उजास ।
सब विध जाहेर होएसी, जागनी प्रकास ॥१२७

तारतम जोत उदोत है, तिनथें कहा होए ।
एक सुपन दूजा वतन, जीव देखे दोए ॥१२८

वतन देखत जाहेर, दूजी दोए लीला जो करी ।
ए सब याद आवही, इत दोए दूसरी ॥१२९

याद आवें सारे सुख, और जीव नैनों भी देखे ।
तारतम सब सुख देवहीं, विध विध अलेखे ॥१३०

या लीला की बातें इत, जुबां कही न जाए ।
सुख दोऊ इत लीजिए, मनोरथ पुराए ॥१३१

या लीला को जो बल, वचन केहेसी ।
वचन माएने देखके, सब सुख लेसी ॥१३२

धंन धंन ब्रह्मांड ए हुआ, धंन धंन भर्थखंड[1] ।
धंन धंन जुग सो कलजुग, जहाँ लीला प्रचंड ॥१३३

धंन धंन पुरी नौतन, जहां लीला उदे हुई ।
केताक साथ आइया, दूजिऐं सब कोई ॥१३४

धंन धंन धनी साथसों, धंन धंन तारतम ।
पूरन प्रकास ल्याए के, सुख दिए हम ॥१३५

तारतम रस बेहद का, सब जाहेर किया ।
बोहोत बिधें सुख साथ को, खेल देखते दिया ॥१३६

तारतम रस वानी कर, पिलाइए जाको ।
जेहेर चढ़्या होए जिमीका, सुख होवे ताको ॥१३७

जो जीव नीद छोड़े नहीं, पिलाइए वानी ।
ल्याए पीउ वतन थें, बल माया जानी ॥१३८

जेहेर उतारने साथ को, ल्याए तारतम ।
बेहद का रस श्रवनें, पिलावें हम ॥१३९

ए रस श्रवनों जाके झरे, ताए कहा करे जेहेर ।
सुपन ना होवे जागते, देखी तां बेर ॥१४०

सुपन होवे नींद थें, कै इंड अलेखे ।
जिन खिन आंखा खोलिए, तब कछु ना देखे ॥१४१

एही रस तारतम का, चढ़्या जेहेर उतारे ।
निर विषी काया करे, जीव जागे करारे ॥१४२

जागे सुख अनेक हैं, इतहीं अलेखे ।
वतन सुख लीजिए, जीव नैनों भी देखे ॥१४३

सुख बड़े तारतम के, क्यों जाहेर कीजे ।
वानी माएने देखके, जीव जगाए लीजे ॥१४४

---

१. भारतवर्ष ।

ए वचन साथ के कारने, मैं तो बाहेर पाड़े ।
दरवाजे बेहद के, अनेक उघाड़े ॥१४५

आधे अख्यर का पाओ लुगा, कबूं ना बाहेर ।
श्री धाम थें ल्याए धनी, तो हुए जाहेर ॥१४६

या खेल साथ देखहीं, जुदे जुदे होए ।
तो सुख ऐसा पसरचा, नाहीं सुख विना कोए ॥१४७

ऐसा खेल छलका, छोड़ाए नहीं ।
ब्रह्मांड की कारीगरी, सारी करी सही ॥१४८

कबूतर बाजीगर के, जैसे कड़ियां भरियां ।
तबही देखे फूंक देएके, तुरत खाली करियां ॥१४९

ऐसी बाजी इन छलकी, ब्रह्मांड जो रचियो ।
देख बाजी कबूतर, साथ माँहें मचियो ॥१५०

आंबो बोए जल सींचियो, तबही फूले फलियो ।
विध विध की रंग बेलियां, बन ऊपर चढ़ियो ॥१५१

एह देख चित भरमिया, सुध नहीं सरीर ।
विकल भई रंग बेलियां, चित नाहीं धीर ॥१५२

ततखिन कछू न देखिए, बाजीगर हाथ ।
आंबो ना कछू बेलियां, या रंग वांध्यो साथ ॥१५३

बिसरी सुध सरीर की, विसर गए घर ।
चींटी कुंजर निगलियां, अचरज या पर ॥१५४

अचरज एक बड़ो सखी, देखो दिल माँहि ।
वस्त खरी को ले गई, जो कछुए नाँहि ॥१५५

जोर हुई नींद साथ को, यों सुपन बाढ़चा ।
खेल मिने थें बल कर, न जाए काढ़चा ॥१५६

ता कारन बानी बेहद, केहे नींद टालों ।
ना देऊं सुपन पसरने, चढ़चा जेहेर उतारों ॥१५७

कुंजर काढ़ों चींटी मुख, सुध आनों सरीर ।
तारतम कहे जुदे जुदे, करों खीर और नीर ॥१५८

झूंठे को झूठा करूं, सांचा सागर तारूं ।
ए रस श्रवनों पिलाएके, साथ के कारज सारूं ॥१५९

मोह जेहेर ऐसा जानके, ल्याए तारतम ।
सब बिध का ए ओखद, प्रकासे खसम ॥१६०

सब किया उजाला खेल में, साथ देखन आया ।
और जीव बंधाने या बिध, बिध बिध की माया ॥१६१

दूजे तीजे मैं तो कहे, जो साथ को माया भारी ।
तुम देखो सुपना सत कर, तो मैं कह्या विचारी ॥१६२

विचार के छल छोड़िए, तो होवे दोऊ पर ।
सुपने भी सुख लीजिए, हरखें जागीए घर ॥१६३

तारतम पक्ष दूजा कोई नहीं, विना साथ सब सुपन ।
जो जगाऊँ माया झूठी कर, धाख रहे जिन मन ॥१६४

हद के पार बेहद है, बेहद पार अख्यर ।
अख्यर पार वतन है, जागिए इन घर ॥१६५

ए दोऊ विध मैं तो कही, सुपन हरखें उड़ाऊँ ।
कहे *इंद्रावती उछरंगे, साथ जुगते जगाऊँ ॥१६६

॥ प्रकरण ॥ ३१ ॥ चौपाई ॥ ८५४ ॥

## दूधपानीका निबेरा—राग सामेरी

हो वतनी बांधो कमर तुम बांधो, सुरत पिआसों साधो ।
तीनों कांडों बड़ा *सुकदेव, ताकी वानी को कहूँ भेव ॥ १

विन पूछे कहूँ विचार, निज वतनी जो निरधार ।
जिन कोई संसे तुमें रहे, सो मेरी आतम न सहे ॥ २

एक वचन इत यों सुनाए, चींटी पांउं कुंजर बंधाए ।
तिनके परवत ढांपिया, सो तो काहूँ न देखिया ॥ ३

चींटी हस्ती को बैठी निगल, ताको काहूँ ना परी कल ।
सनकादिक ब्रह्मा को कहे, जीव मन दोऊ भेले रहे ॥ ४

ए भेले हुए हैं आद, के भेलें हैं सदा अनाद ।
कहे ब्रह्मा भेले नाहीं तित, ए आए मिले हैं इत ॥ ५

तब सनकादिक फेर यों कह्यो, तो ए जुदे करके देओ ।
फेर ब्रह्माएँ करी फिकर, देखे वचन विचार चित धर ॥ ६

ए समझ मुझसे ना होए, क्यों कर करों जुदे मैं दोए ।
तब सरन विस्नु के गए, अंतरगतें बचन कहे ॥ ७

वैकुंठ नाथे सुने वचन, हंस होए आए ततखिन ।
हंसे रूप धरो सुंदर, लिए *सनकादिक के चित हर ॥ ८

जीवें हंससों करी पेहेचान, चारों चरन लगे भगवान ।
फेर मनें यों कियो विचार, ले नजरों देख्या आकार ॥ ९

जो जीवें करी पेहेचान, सो मनने तबहीं दई भान ।
फेर सनकादिकें यों पूछिया, तुम कौन हो यों कर कह्या ॥ १०

तब हंसे कियो जवाब, समझे सनकादिक भान्यो वाद ।
चित किये चारो के धीर, पर ना हुए जुदे खीर नीर ॥ ११

आओ हंस या और कोए, पर जुदे कर ना देवे कोई दोए ।
दोऊ के जुदे वासन, यों कबहूं ना किए किन ॥ १२

अब याको कहूं समझन, जुदे कर देऊं जीव और मन ।
समझ के पेहेचानो जीव, निज वतन जो अपना पीव ॥ १३

नहीं राखों तुमें संदेह, इन चारों का अरथ जो एह ।
जो कोई साध पूछे क्यों, ताए सास्त्र सब कहेवे यों ॥ १४

अकल अगम वैकुंठ का धनी, ए थोड़ी अर्जू करे घनी ।
इन करते सब कछू होए, पर ए अरथ न देवे कोए ॥ १५

यों धोखा रह्या सब मांहि, समझ काहूं ना परी क्यांहि ।
अब समझाऊं देखो वानी, दूध विछोड़ा कर देऊं पानी ॥ १६

जो तुमें साख देवें आतम, तो सत मायने जानो तारतम ।
इन अंतर देखो उजास, या जीव को बड़ो प्रकास ।। १७

चौदे लोक उजाला करे, जो निज वतन द्रष्टें धरे ।
याको नूर सदा नेहेचल, नेक कहूँगी याको आगे बल ।। १८

ए उजाला इंड न समाए, सो इन जुबां कह्यो न जाए ।
या मन को नाहीं कछू मूल, याथें बडा कहिए आंकका तूल ।। १९

तूल का भी कोटमा हींसा, मन एता भी नहीं ऐसा ।
सोए गया जीव को निगल, यों सब पर बैठा चंचल ।। २०

यों तिनके परवत ढांपिया, यों गज चींटी पांऊं बांधिया ।
जो जीव करे उजास, तो मन को आगे ही होए नास ।। २१

अब या पर एक कहूं द्रष्टांत, देखो आपनमें व्रतांत ।
सुकजी के कहे प्रवान, सात सागर को काढ्यो निरमान ।। २२

भव सागर को नाहीं छेह, सुकजी यों मुख जाहेर कहे ।
पेहेले पाऊं भरे तुम जेह, कर साँचा मूल सनेह ।। २३

सखी बेन सुन ना रही कोई पल, देखो एह जीव को बल ।
इन आड़ा था मन संसार, पर जीव निकस्या वार के पार ।। २४

देखो पांऊँ जीवने भरे, भव सागर ए क्यों कर तरे ।
जाको ना निकसे निरमान, सुकजीकी वानी प्रमान ।। २५

सो फेर कह्यो गौपद[1] वछ, यों भवसागर हो गयो तुछ ।
एता भी ना द्रष्टें आया, पर लिखने को नाम धराया ।। २६

भव सागर क्यों एता भया, जो जीव खरें जीवन जी ग्रह्या ।
यों जीव मनथें जुदा टल्या, तब झूठा मन झूठेमें मिल्या ।। २७

खीर नीर देखो विचार, एक धनी दूजा संसार ।
दोऊ वासनमें दोऊ जुदे, यों नीके कर देखो हिरदें ।। २८

---

१. वछड़े के चरण जैसा ।

अंतरगत बैठे हैं सही, अंतर उड़ावने बानी कही ।
विचार देखो तो इतही पीउ, सागर तबहीं तूल करे जीउ ।। २९

तब इतहीं जो वतन पीउ पार, सखी भाव भजिए भरतार ।
आतम *महामत है सूर धीर, प्रेमें देखाए जुदे खीर नीर ।। ३०

।। प्रकरण ।। ३२ ।। चौपाई ।। ९८४ ।।

## श्री भागवत को सार

सुनियो साथ कहूं विचार, फल वस्त जो अपनों सार ।
सोए देखके आओ वतन, माया अमल[1] से राखो जतन ।। १

इन अमल को बड़ो विस्तार, सोए देखना नहीं निरधार ।
पेहेले आपन को बरजे[2] सही, श्री मुख वानी धनिएं कही ।। २

तिन कारन तुमें देखाऊं सार, मूल वतन के सब प्रकार ।
धनी अपनों धनी को विलास, जिनथें उपज अखंड हुओ रास ।। ३

ए सुनिओ आतम के श्रवन, सो नहीं जो सुनिए ऊपर के मन ।
वेद को सार कह्यो भावगत, ए फल उपज्यो सास्त्रों के अंत ।। ४

सो फल सार *सुकजीएं लियो, सींच के अमृत पकव कियो ।
ए फल सार जो भागवत भयो, ताको सार दशम स्कंध कह्यो ।। ५

दसम के नबे अध्या, तिनका सार भी जुदा कह्या ।
ताको सार अध्या पैंतीस, जो वृजलीला करी जगदीस ।। ६

जगदीस नाम विस्नु को होए, यों न कहूं तो समझे क्यों कोए ।
ए जो प्रेम लीला श्री *कृष्णजीएं करी, सोगोपनमें गोपियों चित धरी ।। ७

ए ब्रह्म लीला भई जो दोए, वृज लीला रास लीला सोए ।
तामे तीस अध्या जो बाल चरित्र, ए ब्रह्म लीला उतम पवित्र ।। ८

पँच अध्याई ताको जो सार, किसोर लीला जोगमाया विस्तार ।
वृज लीला को जो ब्रह्मांड, रात दिन जित होत अखंड ।। ९

---

१. नशा । २. रोके ।

*जोग माया जो लीला रास, रात अखंड सब चेतन विलास ।
ए लीला सुकें आवेसमें कही, राजा परीक्षते सही ना गई ।। १०
ए लीला क्यों सही जाए, वैकुंठ को अधिकारी राए ।
सुक के अंग हुओ उलास, जानूं वरनन करूंगो रास ।। ११
या समे प्रस्न कियो राजान, *सुक को जोस दियो तिन भान ।
प्रस्न चूक्यो भयो अजान, रास लीला ना वरनवी प्रवान ।। १२
तब हाथ निलाटें[1] दिया सही, सुकें दुख पाए के कही ।
मैं जोगी तें राजा भयो, रास को सुख न जाए कह्यो । १३
ए वानी मेरे मुख थें ना पड़े, ना तेरे श्रवना संचरे ।
ए जोग आपन नाहीं दोए, तो इन लीला को सुख क्यों होए ।। १४
याके पात्र होसी इन जोग, या लीला को सो लेसी भोग ।
केसरी दूध ना रहे रज मात्र, उतम कनक विना जों पात्र ।। १५
एह वचन सुनके राए, पड़यो भोम खाए मुरछाए ।
कंपमान होए कल कल्या, रोए बोहोत अंतस्करन गल्या ।। १६
तलफ तलफ दुख पावे मन, अंग मांहें लागी अगिन ।
तब *सुकजिएं दिलासा दिया, आंसूं पोंछ के बैठा किया ।। १७
सुनहो राजा द्रढ़ कर मन, अंतरगत केहेता वचन ।
सो केहेने वाला उठके गया, मैं अकेला बैठा रह्या ।। १८
अब राजा पूछत मोहे कहा, तुझ सरीखा मैं हो रह्या ।
तब *परीक्षत चरन पकड़ के कहे,, स्वामी ए दाझ जिन अंगमें रहे ।। १९
मुनीजी मैं बोहोत दुख पाऊं, एह दाझ जिन लिए जाऊं ।
तब भागे जोस कही पंच अध्याई, रास वरनन ना हुआ तिन तांई ।। २०
नातो पंच अध्याई क्यों कहे सुक मुन, रासलीला अखंड वरनन ।
ए लीला क्यों अध बीच रहे, एकादस द्वादस स्कंध कहे ।। २१

१. माथे में ।

ए रास लीला को छोड़ के 'सुख, आधा लुगा न निकसे मुख ।
पर ए केहेवाए धनी के जोस, सो उतर गया वचन के रोस ॥ २२
क्या करे अधवीचमें लिया, अखंड सुख पूरा केहेने ना दिया ।
दोष नहीं राजा को इत, ब्रह्मसृष्टि विना न पोहोंचे तित ॥ २३
जाको जाना वैकुंठ वास, सो क्यों सहे अखंड प्रकास ।
तो पार दरवाजे मूंदे रहे, हद के संगी खोलने ना दिए ॥ २४
अब *सुकजीकी केती कहूँ वान, सार काढ़ने ग्रह्यो पुरान ।
सबको सार कह्यो ए जो रास, एजो *इंद्रावती मुख हुओ प्रकास ॥ २५
अब कहूं इन रासको सार, जो तारतम वचन हैं निरधार ।
तारतम सार जागनी विचार, सबको अरथ करसी निरवार ॥ २६
*निराकार के पार के पार, तारतम को जागनी भयो सार ।
अख्यर पार घर अख्यरातीत, धाम के यामें सब चरित्र ॥ २७
इत ब्रह्म लीला को बड़ो विस्तार, या मुखथें कहा कहूँ प्रकार ।
ए तारतम को बड़ो उजास, धनी आएके कियो प्रकास ॥ २८
संसे काहूं ना रेहेवे कोए, ए उजाला त्रैलोकी में होए ।
प्रगट भई परआतमा, सो सबको साख देवे आतमा ॥ २९
उड़यो अंधेर काढ़यो विकार, निरमल सब होसी संसार ।
ए प्रकास ले धनी आए इत, साथ लीजो तुम मांहें चित ॥ ३०
इन घर बुलावें ए धनी, ब्रह्म सृष्ट जो है अपनी ।
खेल किया सो तुम कारन, ए विचार देखो प्रकास वचन ॥ ३१
देख्यो खेल मिल्यो सब साथ, जागनी रास बड़ो विलास ।
खेलते हंसते चले वतन, धनी साथ सब होए प्रसन्न ॥ ३२
इतहीं बैठे जागे घर धाम, पूरन मनोरथ हुए सब काम ।
उड़यो अग्यान सबों खुली नजर, उठ बैठे सब घर के घर ॥ ३३
हांसी ना रहे पकरी, धनिऍं जो साथ पर करी ।
हंसते ताली देकर उठे, धनी *महामत साथ एकठे ॥ ३४

॥ प्रकरण ॥ ३३ ॥ चौपाई ॥ १०१८ ॥

पक्ष पुष्ट मरजाद प्रवाह

अब कहूं सो हिरदे रख, अठोत्तर सौ जो है पक्ष* ।
एक विचार सुनियो प्रवान, याको सार काढ़ूं निरवान । १

माया जीव कोई है समरथ, दौड़ करत है कारन अरथ ।
निसंक अपोपा[1] डारचा जिन, निहकर्म पैंडा लिया तिन ॥ २

पुष्ट मरजाद जो प्रवाह पक्ष, याको सार बताऊं लख ।
ताके हिसे किए नौ, चढ़े सीढ़ी भगत जल भौ ॥ ३

भी ताके बांटे किए सताइस, चढ़े ऊंचे सुरत बांध जगदीस ।
सो बांटे किए असी और एक, पोहोचे बैकुंठ चढ़े इन विवेक ॥ ४

चार विध की कही मुगत, करनी माफक पावे इत ।
इतथें जो कोई आगे जाए, निराकार से ना निकसे पाए ॥ ५

पक्ष बयासिमां जो कह्या, वल्लभाचारज तहां पोहोंचिया ।
स्याम वल्लभी यों करी बड़ी दौर, एभी आए रहे इन ठौर ॥ ६

छेद इंड में कियो सही, पर अखंड द्रष्टें आया नहीं ।
आड़ी सुंन भई निराकार, पोहोंच ना सके ताके पार ॥ ७

इनों की तो एह सनंध, पीछे फेर पकड़चा प्रतिबिम्ब ।
और साध अलेखे केते कहूँ, निसंक दौड़ करी जिनहूँ ॥ ८

ग्यानी अनेक कथे बहू ग्यान, ध्यानी कै बिध धरे ध्यान ।
पर ए सबही सुंन के दरम्यान, छूट्या न काहूँ संसे उनमान ॥ ९

उपासनीनिरगुनया निरंजन, किन उलंघ्योन जाय विस्नुको कारन ।
या सास्त्र या साधू जन, द्वैत सबे समानी सुंन ॥ १०

इन ऊपर पक्ष है एक, सुनियो ताको कहूँ विवेक ।
पुरष प्रकृती उलंघ के गए, जाए अखंड सुख मांहें रहे ॥ ११

१. अपनापन ।

त्रासिमा[1] पख प्रवान, जो वास्ना पांचो लिया निरवान ।
ए पांचो कहूँ अपनाइत कर, देखांऊं सबदातीत घर ॥ १२
नातो प्रमोध काहे को कहूँ, चरन पिया के प्रेमें ग्रहूँ ।
पर साथ कारन कहूँ फेर फेर, ए पांचों नाम लीजो चित धर ॥ १३
एक भगवानजी बैकुंठ के नाथ, महादेव भी इनके साथ ।
सुकजी और सनकादिक दोए, कबीर भी इत पोहोंचा सोए ॥ १४
लखमीनारायन जुदे ना अंग, सो तो भेले विस्नु के संग ।
ए पांचों कहे मैं तिन कारन, चित ल्याए देखो याके वचन ॥ १५
देखो सबद इनो की रोसनी, पर जानेगा बड़ी मत का धनी ।
पक्ष पचीस यां ऊपर होए, तारतम के बचन हैं सोए ॥ १६
इन बचनों में अख्यरातीत, श्री धाम धनी साथ सहित ।
ए देखो तारतम को उजास, धनी ल्याए कारन साथ ॥ १७
तुम आपकोना करो पेहेचान, बोहोत ताए कहिए जो होए अजान ।
तुम जो हो इन घर के प्रवान, सुनते क्यों ना होओ गलतान ॥ १८
सनेहसों सेवा कीजो धनी, घर की पेहेचान देखो अपनी ।
तुम प्रेम सेवाएँ पाओगे पार, ए बचन धनी के कहे निरधार ॥ १९
पीछला साथ आवेगा क्योंकर, प्रकास वचन हिरदेमें धर ।
चरने हैं सोतो आए सही, पर पीछले कारन ए वानी कही ॥ २०
आवसी साथ ए देख प्रकास, अंधकार सब कियो नास ।
एह वचन अब केते कहूं, इन लीला को पार ना लहूं ॥ २१
या वानी को नाहीं पार, साथ केता करसी विचार ।
तिन कारन बोहोत कह्यो न जाए, ए तो पूर बहे दरियाए ॥ २२
याकोनेक विचारे जो एक वचन, ताए घर पेहेचान होवे मिने खिन ।
जो वास्ना होसी इन घर, सो एह वचन छोड़े क्यों कर ॥ २३

---

१. बेहद भूमिका ।

ए वचन सुनते बाढ़े बल, सोई लेसी *तारतम को फल ।
*तारतम फल जागिए इन घर, कहे *महामती ए हिरदे धर ॥ २४

॥ प्रकरण ॥ ३४ ॥ चौपाई ॥ १०४२ ॥

## गुननकी आसंका

अब कछुक मैं अपनी करूं, ना तो तुमे बोहतक ओचरूं[१] ।
भी एक कहूं वचन, तुमको संसे रेहेवे जिन ॥ १

मैं धाम धनी गुन लिखे सही, एक आसंका मेरे मनमें रही ।
मैं गेहेरे सबद कहे निरधार, सो साथ क्यों करसी विचार ॥ २

जोलों आतम ना देवे साख, तोलों परमोध[२] भले दीजे दस लाख ।
पर सोक्योंए ना लगे एक वचन, जोलों ना समझे आतम बुधमन ॥ ३

तार्थे यों दिल आई हमको, जिन कोई संसे रहें तुमको ।
एक प्रवाही वचन यों कहे, मुखथे कहे पर अरथ ना लहे ॥ ४

सूईके नाके मंझार, कुंजर कै निकसे हजार ।
ए अर्थ भी होसी इतही, तारतम आसंका राखे नही ॥ ५

मैं गुन लिखते कही लेखन अनी, ए आसंका जिन होसी घनी ।
कथुए के पाऊं प्रवान, कलमे गढ़िया हाथ सुजान ॥ ६

तिनकी भी मैं करो चीर, गुन जेती उतारी लीर ।
अब जिन किनको संसे रहे, *तारतम संसे कछू ना सहे ॥ ७

या पर एक कहूं विचार, सुनियो ब्रह्म सृष्टि सिरदार ।
ए चौदे भवन देखो आकार, याके मूल को करो विचार ॥ ८

याको सास्त्र सुपनातर कहे, कोई याको जीव याको ना लहे ।
ए सुपन मूल तो है समरथ, याके मूल को देखो अरथ ॥ ९

सुपन मूल तो नीद जो भई, जब जाग उठे तब कछुए नही ।
याको पेड़ कछू न रह्यो लगार, कथुए के पांउं का तो कहया आकार ॥ १०

---

१. कहूं । २. उपदेश ।

बिना पेड़ देखो विस्तार, एता बड़ा किया आकार ।
एतो पेड़ कह्या आकार, तो ताको क्यों ना होए विस्तार ।। ११

यों सूई के नाके मांहि, कैं लाखों ब्रह्मांड निकसे जांए ।
अब ए नीके लीजो अरथ, गुन लिखने वालो समरथ ।। १२

अब केता कहूँ तुमको विस्तार, एक एह सबद लीजो निरधार ।
फेर फेर कहूँ मेरे साथ, नीके पेहेचानो प्रान को नाथ ।। १३

गुन लिखने वालो सो एह, आपन मांहें बैठा जेह ।
इंद्रावती कहे दिल दे रे दे, जिन गुन किए सो ए रे ए ।। १४

तेरे केहेना होए सो केहे रे केहे, लाभ लेना होए सो ले रे ले ।
तारतम केहेत है आ रे आ, हजार बेर कहूं हां रे हां ।। १५

मायासों कीजो ना रे ना, नाबूंद फेरा जिन खा रे खा ।
धनी के चरने आ रे आ, ऐसा न पावे दा रे दा ।। १६

जो चूक्या अबको ता रे ता[1], तो सिर में लगसी घा रे घा[2] ।
संसार में नहीं कछू सा रे सा[3], श्री धामधनी गुन गा रे गा ।। १७

लीजो मूल को भाओ रे भाओ, जिन छोड़े अपनो चाह रे चाह ।
प्रेमें पकड़ पीउ के पांउं रे पांउं, सब कोई कहे तोको वाह रे वाह ।। १८

।। प्रकरण ।। ३५ ।। चौपाई ।। १०६० ।।

गुन केते कहूँ मेरे पीउ जी, जो हमसों किए अनेक जी ।
ए बुध इन आकार की, क्यों कहे जुबां बवेक जी ।। १

माया मांगी सो देखाए के, भानी मन की भ्रांत जी ।
सब सुख दिए जगाए के, कै बिध के द्रष्टांत जी ।। २

ब्रज के सुख इत आएके, हमको अलेखे दिए जी ।
रासके सुख इत देएके, आप सरीखे किए जी ।। ३

---

१. जोश । २. घाव । ३. सार ।

कै बिध बिध के सुख धाम के, जो हमको दिए इत जी ।
तारतम करके रोसनाई, कई बिध करी प्राप्त जी ॥ ४

सेहेजल सुखमें झीलते, कहूं दुख न सुनिया नाम जी ।
सो मायामें इत आए के, सुख अखंड देखाया धाम जी ॥ ५

कहे इंद्रावती अति उछरंगे, हमको लाड़ लड़ाए जी ।
निरमल नेत्र किए आतम के, प्रदे दिए उड़ाए जी ॥ ६

आप पेहेचान कराई अपनी, लई अपने पास जगाए जी ।
बड़ी बड़ाई दई आपथें, लई *इंद्रावती कंठ लगाए जी ॥ ७

॥ प्रकरण ॥ ३६ ॥ चौपाई ॥१०६७ ॥

## श्री प्रगटवानी लिखी है

अब लीला हम जाहेर करें, ज्यों सुख सैयां हिरदें धरें ।
पीछे सुख होसी सबन, पसरसी[1] चौदे भवन ॥ १

अब सुनियो ब्रह्मसृष्ट विचार, जो कोई निज वतनी सिरदार ।
अपनों धनी श्री स्यामा स्याम, अपना बासा है निज धाम ॥ २

सोई अखंड *अख्यरातीत घर, नित्य बैकुंठ मिने अख्यर ।
अब ए गुझ करूं प्रकास, ब्रह्मानंद ब्रह्मसृष्ट विलास ॥ ३

ए बानी चित दे सुनियो साथ, कृपा करके कहें प्राननाथ ।
ए किव कर जिन जानो मन, श्री धनीजी ल्याए धामथें वचन ॥ ४

सो केहेती हूं प्रगट कर, पट टालूं आड़ा अंतर ।
तेज तारतम जोत प्रकास, करूं अंधेरी सबको नास ॥ ५

अब खेल उपजे के कहूं कारन, ए दोऊ इछा भई उतपंन ।
विना कारन कारज नहीं होए, सो कहूं याके कारन दोए ॥ ६

ए उपजाई हमारे धनी, सो तो बातें हैं अति घनी ।
नेक तासें करूं रोसन, संसे भान देऊं सबन ॥ ७

---

१. फेलना ।

अब सुनियो मूल वचन प्रकार, जब नही उपज्यो मोह अहंकार ।
नाहीं निराकार नाहीं सुन, ना निरगुन ना निरंजन ॥ ८

ना ईस्वर ना मूल प्रक्रती, ता दिन की कहूँ आपा बीती ।
निज लीला ब्रह्म बाल चरित्र, जाकी इछा मूल प्रकृत ॥ ९

नैन की पाओ पल में इसारत, कै कोट ब्रह्मांड उपजत खपत ।
इत खेल पैदा इन रबेस,[1] त्रैलोकी ब्रह्मा विस्नू महेस ॥ १०

कै विध खेले यों प्रकत, आप अपनी इछासों खेलत ।
या समे श्री बैकुंठ नाथ, इछा दरसन करने साथ ॥ ११

*अख्यर मन उपजी ए आस, देखों धनीजी को प्रेम विलास ।
तब सखियों मन उपजी एह, खेल देखै अख्यर का जेह ॥ १२

तब हम जाए पियासो कही, खेल अख्यर का देखें सही ।
जब एह बात पियाने सुनी, तब बरजे हांसी करने धनी ॥ १३

मने किए हमको तीन बेर, तब हम मांग्या फेर फेर फेर ।
धनी कहे घर की ना रेहेसी सुध, भूलसी आप ना रेहेसी ए बुध ॥ १४

तो मने करत हैं हम, हमको भी भूलोगे तुम ।
तब हम फेर धनीसौ कह्या, कहा करसी हमको माया ॥ १५

तब हम मिलके कियो विचार, कह्या एक दूजी को हूजो हुसियार ।
खेल देखनकी हम पियासों कही, तब हम दोऊ पर आग्या भई ॥ १६

ए कहे दोऊ भिन भिन, खेल देखन के दोऊ कारन ।
उपज्यो मोह सुरत संचरी, खेल हुआ माया विस्तरी ॥ १७

इत अख्यर को विलस्यो मन, पांच तत्व चौदे भवन ।
या समे महा विस्नू मन मन थें त्रैगुन, तार्थे थिर चर सब उतपन ॥ १८

या विध उपज्यो सब संसार, देखलावने हमको विस्तार ।
जो आग्या भई हम पर, तब हम जान्या गोकुल घर ॥ १९

---

१. पद्धति ।

ज्यों नीदमें देखिए सुपन, यों उपजे हम ब्रज बधू जन ।
उपजत ही मन आसा घनी, हम कब मिलसी अपने धनी ॥ २०
जेती कोई हैं ब्रह्म सृष्ट, प्रेम पूरन धनी पर द्रष्ट ।
*कंसके बंध *बसदेव *देवकी, इत आई सुरत चत्रभुज की ॥ २१
सुरत विस्नुकी चत्रभुज जोए, दियो दरसन बसुदेव को सोए ।
पीछे फिरे केहेके हकीकत, अब दोए भुजा की कहूँ विगत ॥ २२
मूल सुरत अख्यर की जेह, जिन चाह्या देखों प्रेम सनेह ।
सो सुरत धनी को ले आवेस, नंद घर कियो प्रवेस ॥ २३
दो भुजा सरूप जो स्याम, आतम अख्यर जोस धनी धाम ।
ए खेल देख्या सैयां सबन, हम खेले धनी भेले, आनंद घन ॥ २४
बाल चरित्र लीला जोवन, कै बिध सनेह किए सैयन ।
कै लिए प्रेम विलास जो सुख, सो केते कहूं या मुख ॥ २५
ए काल मायामें विलास जो करे, पूरी नीदमें सब विसरे ।
पूरी नीद को जो सुपंन, काल माया नाम धराया तिन ॥ २६
तब धाम धनिऐं कियो विचार, ए दोऊ मगन हुए खेले नर नार ।
मूल वचन की नाहीं सुध, ए दोऊ खेलें सुपने की बुध ॥ २७
एह बात धनी चितसों ल्याए, आधी नीद दई उड़ाए ।
अग्यारे बरस और बावन दिन, ता पीछे पोहोंचे वृन्दावन ॥ २८
तहां जाए के बेन बजाई, सखियां सबे लई बुलाई ।
तामसियां राजसियां चली, स्वांतसियां सरीर छोड़ के मिलीं ॥ २९
और कुमारका व्रज बधू संग जेह, सुरत सबे अक्षर की एह ।
जो ब्रत करके मिली संग स्याम, मूल अंग याके नाहीं धाम ॥ ३०
बेन सुनके चली कुमार, भव सागर यों उतरी पार ।
इनकी सुरत मिली सब सखियों मांहि, अंग याके रासमें नांहि ॥ ३१
या विध मुक्त इनों की भई, कुमारका सखियां जो कही ।
ए जो ग्यारे बरस लों लीला करी, काल माया तितही परहरी ॥ ३२

कछू नींद कछू जाग्रत भए, जोग माया के सिनगार जो कहे ।
*जोगमाया में खेले रास, आनन्द मन आनी उलास ॥ ३३

*जोगमाया में खेल जो खेले, संग जोस धनी के भेले ।
जोग माया में बाढ़्यो आवेस, सुध नहीं दुख सुख लवलेस ॥ ३४

फेर मूल सरूपें देख्या तित, ए दोऊ मगन हुए खेलत ।
जब जोस लियो खेंच कर, तब चित चौंक भई अख्यर ॥ ३५

कौन बन कौन सखियां कौन हम, यों चौंक फिरी आतम ।
रास आया मिने जाग्रत बुध, चुभ रही हिरदे में सुध ॥ ३६

कै सुख रास में खेले रंग, सो हिरदे में भए अभंग ।
या बिध रास भयो अखंड, थिरचर जोग माया को ब्रह्मांड ॥ ३७

तब इत भए अंतरध्यान, सब सखियां भईं मृतक समान ।
जीव ना निकसे बांधी आस, करने धनीसों प्रेम विलास ॥ ३८

वृह सैयोंने कियो अत, धनी दियो आवेस फेर आई सुरत ।
तब सैयों को उपज्यो आनंद, सब विरहा को कियो निकंद ॥ ३९

आया सरूप कर नए सिनगार, भजनानंद सुख लिए अपार ।
दोऊ आतम खेले मिने खांत, सुख जोस दियो कै भांत ॥ ४०

कै विरह विलास लिए मिने रात, अंग आनंद भयो जोलों प्रात ।
रास खेल के फिरे सब एह, साथ सकल मन अधिक सनेह ॥ ४१

पीछे जोग माया को भयो पतन, तब नींद रही अख्यर सैयन ।
ब्रज लीलासों बांधी सुरत, अखंड भई चढ़ि आई चित ॥ ४२

अख्यर चितमें ऐसो भयो, ताको नाम सदा सिव कह्यो ।
ब्रज रास दोऊ ब्रह्मांड, ए ब्रह्म लीला भई अखंड ॥ ४३

ब्रज रास लीला दोऊ माँहि, दुख तामसियों देख्या नाँहि ।
प्रेम पिआसों ना करे अंतर, तो ए दुख देखे क्यों कर ॥ ४४

कछुक हमको रह्यो अंदेस, सो राखे नहीं धनी लवलेस ।
ता कारन ए भयो सुपन, हुए हुकमें चौदे भवन ॥ ४५

काल माया को एजो इंड, उपज्यो और जाने सोई ब्रह्मांड ।
ए तीसरा इंड नया भया जो अब, अख्यर की सुरत का सब ॥ ४६
याही सुरत की सखियां भई, प्रतिबिंब वेद रिचा जो कही ।
जाको कह्यो ऊधो ग्यान जोगारंभ, सोक्यों माने प्रेमलीला प्रतिबिंब ॥ ४७
जो ऊधोने दई सिखापन, सो मुख पर मारे फेर वचन ।
याही वृह में छोड़ी देह, सो पोहोंची जहां सरूप सनेह ॥ ४८
अख्यर हिरदें रास अखंड कह्यो, ए प्रतिबिंब साथ तहां पोहोंचयो ।
ए प्रतिबिंब लीला जो भई इत, सो कारन ब्रह्म सृष्ट के सत ॥ ४९
जो प्रगट लीला ना होवे दोए, तो असल नकल की सुध क्यों होए ।
ता कारन ए भई नकल, सुध करने संसार सकल ॥ ५०
सारे अरथ तब होवें सत, जो प्रगट लीला दोऊ होवें इत ।
याही इंडमें श्री कृस्नजी भए, सो अग्यारह दिन ब्रज मथुरा रहे ॥ ५१
दिन अग्यारे ग्वाला भेस, तिन पर नहीं धनी को आवेस ।
सात दिन गोकल में रहे, चार दिन मथुरा के कहे ॥ ५२
गज मल कंस को कारज कियो, उग्रसेन को टीका दियो ।
काला ग्रह में दरसन दिए जिन, आए छुड़ाए बंध थें तिन ॥ ५३
वसुदेव देवकी के लोहे भांन, उतारचो भेष किए अस्नान ।
जब राजबागे को कियो सिनगार, तब बल प्राक्रम ना रह्यो लगार ॥ ५४
आए *जरासिंध मथुरा घेरी सही, तब श्रीकृस्नजी को अति चिंता भई ।
यों याद करते आया विचार, तब कृस्न बिस्नुमें भए निरधार ॥ ५५
तब बैकुंठ में विस्नु ना कहे, इत सोले कला संपूरन भए ।
या दिन थें भयो अवतार, ए प्रगट वचन देखो विचार ॥ ५६
*सिसपाल की जोत बैकुंठे गई, समाई श्रीकृस्नमें तित ना रही ।
आउध अपने मंगाए के लिए, कै बिध जुध असुरों सो किए ॥ ५७
मथुरा द्वारका लीला कर, जाए पोहोंचे विस्नु बैकुंठ घर ।
अब मूल सखियां धाम की जेह, तिन फेर आए धरी इत देह ॥ ५८

उमेदां तामसियां रही तिन बेर, सो देखन को हम आइयां फेर ।
इन ब्रह्मांड को एह कारन, सुनियो आतम के श्रवन ।। ५९

रास खेलते उमेदा रहियां तित, सो ब्रह्म सृष्ट सब आइयां इत ।
यामें सुरत आई स्यामाजी की सार, मतू मेहेता घर अवतार ।। ६०

कुंवरबाई माता को नाम, उतम काइथ उमर कोट गाम ।
आए श्री देवचंद्रजी नौतन पुरी, सुख सबों को देने देह धरी ।। ६१

इन इत आए करी बड़ी खोज, चाहे धनी को मूल संजोग ।
अंग मूल उपजी ए द्रष्ट, सास्त्र सब्द खोजे कै कष्ट ।। ६२

चौदे बरसलों नेष्टा बंध, वचन ग्रहे सारी सनंध ।
कै जप तप किए व्रत नेम, सेवा सरूप सनेह अति प्रेम ।। ६३

कै कसनी कसी अति अंग, प्रेम सेवामें ना कियो भंग ।
कै कसौटी करी दुलहिन, सो कारन हम सब सैयन ।। ६४

पिया किए अति प्रसंन, तीन बेर दिए दरसन ।
तारतम बात वतन की कही, आप धाम धनी सब सुध दई ।। ६५

धरचो नाम बाई सुन्दर, निज वतन देखाया घर ।
इत दया करी अति घनी, अंदर आए के बैठे धनी ।। ६६

दियो जोस खोले दरबार, देखाया सुंन के पार के पार ।
ब्रह्म सृष्ट मिने सुंदरबाई, ताको धनीजिएँ दई बड़ाई ।। ६७

सब सैयों मिने सिरदार, अंग याही के हम सब नार ।
श्री धाम धनीजी की अरधंग, सब मिल एक सरूप एक अंग ।। ६८

श्री धाम लीला बैकुंठ अखंड, ब्रज रास लीला दोऊ ब्रह्मंड ।
ए सब हिरदेमें चढ़ आए, ज्यों आतम अनभव होत सदाए ।। ६९

अब ए केते कहूं प्रकार, निजधाम लीला नित बड़ो विहार ।
*अख्यरातीत लीला किसोर, इत सैयां सुख लेवे अति जोर ।। ७०

मोहोल मंदिर को नाहीं पार, धाम लीला अति बड़ो विस्तार ।
इन लीला की काहूँ ना खबर, आज लगे बिना इन घर ।। ७१

ब्रह्मसृष्ट बिना न जाने कोए, ए सृष्ट ब्रह्मथें न्यारी न होए ।
सो निध ब्रह्मसृष्ट ल्याईयां इत, ना तो ए लीला दुनियामें कित ॥ ७२

ए बानी धनी मुखथे कहे, सोए दुनियां क्यों कर लहे ।
गांगजी भाई मिले इन अवसर, तिन ए वचन लिए चित धर ॥ ७३

कर विचार पूछे वचन, नीके अरथ लिए जो इन ।
जब समझाई पारकी बात, तब धनी जी की भई पेहेचान ॥ ७४

अपने घरों लिए बुलाए, सेवा करी बोहोत चित ल्याए ।
सनेहसो सेवा करी जो धनी, पेहेचान के अपना धाम धनी ॥ ७५

तब श्रीमुख वचन कहे प्राननाथ, ढूंढ़ काढ़ना अपना साथ ।
माया मिने आई सृष्ट ब्रह्म, सो बुलावन आए हम ॥ ७६

हम आए हैं इतने काम, ब्रह्मसृष्ट लेने घर धाम ।
तब गांगजी भाई पायो अचरज मन, कौन मानसी पार के वचन ॥ ७७

कह्या ब्रह्मसृष्ट क्यों मिलसी, चाल तुमारी क्यों चलसी ।
मोहजल पूर तीखा अति जोर, नख अंगुरी को ले जाए तोर ॥ ७८

तरंग बड़ें मेर से होंए, इत खड़ा ना रेहेने पावे कोए ।
लेहेरें पर लेहेरें मारे घेर, मांहें देत भमरियां[1] फेर ॥ ७९

आड़े टेढ़े मांहें बेहेबट, विक्राल जीव मांहें विकट ।
दुखरूपी सागर निपट, किनार बेट न काहूं निकट ॥ ८०

ऊंचा नीचा गेहेरा गिरदवाए, कठन समया इत पोहोंचा आए ।
हाथ ना सूझे सिर ना पाए, इन अंधेरी से निकस्यो न जाए ॥ ८१

चढ़यो मायाको जोर अमल, भूलियां आप मांहें घर छल ।
ना सुध धनी ना मूल अकल, इन मोहजलको ऐसो बल ॥ ८२

वचन बेहद के पार के पार, सो क्यों माने हदको संसार ।
त्रगुन महाविस्नु मोह अहंकार, ए हद सास्त्रों करी पुकार ॥ ८३

---

१. भवँर, चक्कर ।

ब्रह्मसृष्ट भी धरे मोहके आकार, सो इत आवसी कौन प्रकार ।
तब श्रीधनीजीएँ कहे वचन, बेहेर द्रष्ट होसी रोसन ॥ ८४

ए बंधेज कियो अति जोर, रात मेट के करसी भोर ।
प्रतक्ष प्रमाण देसी दरसन, ए लीला चित धरसी जिन ॥ ८५

साथ कारन आवसी धनी, घर घर वस्तां देसी घनी ।
साथ मांहें इत आरोगसी, बिध बिधके सुख उपजावसी ॥ ८६

अचरा पकड़ पीउ देखलावसी, एक दूजीको प्रेम सिखलावसी ।
ए लीला बढ़सी विस्तार, साथ अंग होसी करार ॥ ८७

तब बानी को करसी विचार, सब माएने होसी निरवार ।
तब आवसी ब्रह्म सृष्ट, जाहेर निसान देखसी द्रष्ट ॥ ८८

ए बंधेज कियो उत्तम, पर धामकी निध सो कही तारतम ।
जिनसेती होवे पेहेचान, नजरों आवे सब निसान ॥ ८९

तब गांगजी भाई पाए मन उछरंग, किए क्रतब अति घनें रंग ।
सनेहसों सेवा करी जो अत, पेहेचानके धाम धनी हुए गलित ॥ ९०

साथसों हेत कियो अपार, सुफल कियो अपनो अवतार ।
मैं श्रीसुंदरबाई के चरने रहूँ, एह दया मुख किन बिध कहूँ ॥ ९१

कह्यो ताको इंद्रावती नाम, ब्रह्म सृष्ट मिने घर धाम ।
मों पर धनी हुए प्रसंन, सोंपे धामके मूल वचन ॥ ९२

आदके द्वार ना खुले आज दिन, ऐसा हुआ ना कोई खोले हम विन ।
सो कुंजी दई मेरे हाथ, तूं खोल कारन अपने साथ ॥ ९३

मोहे करी सरीखी आप, टालने हम सबोंकी ताप ।
आतम संग भई जाग्रत बुध, सुपनथें जगाए करी मोहे सुध ॥ ९४

श्रीधनीजीको जोस आतम दुलहिन, नूर हुकम बुध मूल वतन ।
ए पांचो मिल भई महामत, वेद कतेबों पोहोंची सरत ॥ ९५

या कुरान या पुरान, ए कागद दोऊ प्रवान ।
याके मगज माएने हम पास, अंदर आए खोले प्राननाथ ॥ ९६

आप भी ना खोले दरवार, मुझ से खोलाए कियो विस्तार ।
मोहे दई *तारतमकी करनवार, सो काहूँ न अटकों निरधार ॥ ९७

सब संसेको कियो निरवार, कोई संसा ना रह्या वार के पार ।
रोसन करूं लेऊं हुकम बजाए, ब्रह्मसृष्ट और दुनियां देऊँ जगाए ॥ ९८

द्वार तोबा[1] के खुले हैं अब, पीछे तो दुनियां मिलसी सब ।
जब द्वार तोबा के मूंदयो, रैन गई भोर जो भयो ॥ ९९

या भली या बुरी, जिनहूं जैसे फैल जो करी ।
तब आगूं आई सबों की करनी, जिन जैसी करी आप अपनी ॥१००

तब कोई नहीं किसी के संग, दुख सुख लेवे अपने अंग ।
करूं ब्रह्मसृष्ट को मिलाप, अखंड सूर उदे भयो आप ॥१०१

विस्व मिली करने दीदार, पीछे कोई ना रहे मिने संसार ।
ब्रह्मसृष्ट को पिया संग सुख, सो कह्यो न जाए या मुख ॥१०२

ब्रह्मसृष्ट को ऐसो नूर, जो दुनियां थी बिना अंकूर ।
ताए नए अंकूर जो कर, किए नेहेचल देख नजर ॥१०३

श्री धनीजी को दीदार सब कोई देख, होए गई दुनियां सब एक ।
किनहूँ कछुए ना कह्यो, क्रोध ब्रोध काहूको ना रह्यो ॥१०४

श्री धनीजी को ऐसो जस, दुनियां आपे भई एक रस ।
तेज जोत प्रकास जो ऐसो, काहूं संसे ना रह्यो कैसो ॥१०५

सब जातें मिली एक ठौर, कोई ना कहे धनी मेरा और ।
पियाके विरहसों निरमल किए, पीछे अखंड सुख सबोंकों दिए ॥१०६

ए ब्रह्मलीला भई जो इत, सो कबहूँ हुई ना होसी कित ।
ना तो कै उपज गए इंड, भो आगे होसी कै ब्रह्मांड ॥१०७

ए तीन ब्रह्मांड हुए जो अब, ऐसे हुए ना होसी कब ।
इन तीनों में ब्रह्मलीला भई, ब्रज रास और जागनी कही ॥१०८

---

१. प्रायश्चित ।

ज्यों नीद में देखिए सुपन, यों ब्रज को सुख लियो सैयन ।
सुपन *जोगमाया को जोए, आधी नीद में देख्या सोए ॥१०९

कछुक नींद कछू सुध, रास को सुख लियो या विध ।
जागनी को जागते सुख, ए लीला सुख क्यों कहूँ या मुख ॥११०

जागनीमें लीला धाम जाहेर, निसान हिरदे लिए चित धर ।
तब उपज्यो आनंद सबों करार, ले नजरों लीला नित बिहार ॥१११

इतहीं बैठे घर जागे धाम, पूरन मनोरथ हुए सब काम ।
धनी *महामत हँस ताली दे, साथ उठा हंसता सुख ले ॥११२

॥ प्रकरण ॥ ३७ ॥ चौपाई ॥ ११८५ ॥
११७९+६ तारतम मंत्र की

प्रकरण तथा चौपाइयोंकी कुल संख्या—प्रकरण १४८, चौपाई ३८८६

इति श्री महामति श्रीप्राणनाथ जी की 'तारतम बानी' का

पाँचवा ग्रन्थ

॥ प्रकाश 'हिन्दुस्तानी' संपूर्ण ॥

निजनाम श्रीकृष्णजी, अनादि अक्षरातीत ।
सोतो अब जाहिर भए, सब विध वतन सहित ॥

# ❋ कलस हिन्दुस्तानी (तोरेत) ❋

सुनियो बानी सोहागनी, हुती जो अकथ अगम ।
सो बीतक[1] कहूँ तुमको, उड़जासी सब भरम ॥ १

रास कह्या कछु सुनके, अब तो मूल अंकुर ।
कलस[2] होत सबन को, नूर[3] पर नूर सिर नूर ॥ २

कथियल[4] तो कही सुनी, पर अकथ ना एते दिन ।
सो तो अब जाहिर भई, जो आग्यां थें[5] उतपन ॥ ३

मुझे मेहेर[6] मेहेबूबें[7] करी, अंदर परदा खोल ।
सो सुख सनमंधिअनसों, कहूं सो दो एक बोल ॥ ४

मासूकें[8] मोहे मिलके, करी सो दिल दे गुझ[9] ।
कहे तूं दे पडउत्तर,[10] जो मैं पूछत हों तुझ ॥ ५

तूं कौन आई इत क्योंकर, कहां है तेरा वतन ।
नार तूं कौन खसम[11] की, द्रढ़ कर कहो वचन ॥ ६

तूं जागत है के नीद में, करके देख विचार ।
विध सारी याकी कहो, इन जिमी के परकार ॥ ७

तब मैं पियासों यों कह्या, जो तुम पूछी बात ।
मैं मेरी मत माफक,[12] कहूंगी तैसी भांत । ८

---

१. वृत्तान्त । २. सब धर्म ग्रन्थों का शिर मौर । ३. ज्योति । ४. कही हुई । ५. से । ६. कृपा । ७. प्रियतम । ८. प्रियतम । ९. गूढ़ बातें । १०. प्रत्युत्तर । ११. पति, स्वामी । १२. अनुसार ।

सुनो पिया अब मैं कहूं, तुम पूछो सुध मंडल ।
ए कहूं मैं क्यों कर, छल बल वल[1] अकल ।। ९
मैं न पेहेचानों आपको, न सुध अपनों घर ।
पीऊ पेहेचान भी नींद में, मैं जागत हों या पर ।। १०
ए मोहोल[2] रच्यो जो मंडप, सो अटक रह्यो अंत्रीक्ष[3] ।
कर कर फिकर कै थके, पर पाई न कहूं रीत[4] ।। ११
जल जिमी[5] तेज[6] वाए को, अवकास कियो है इंड[7] ।
चौदे तबक[8] चारों तरफों, परपंच खड़ा परचंड ।। १२
यामें खेल कै होवही, सो केते कहूं विचित्र ।
तिमर तेज रुत[9] रंग फिरें, ससि सूर फिरे नक्षत्र ।। १३
तबक चौदे इंड में, जिमी जोजन कोट पचास ।
साढ़े तीन कोट ता बीच में, होत अंधेरी उजास[10] ।। १४
उजास सूर को कहावही, सो तो अंधेरी के तिमर ।
तिनथें कछू न सूझही, जिमी आप ना घर ।। १५
जब थें सूरज देखिए, लेत अंधेरी घेर ।
जीव पसू पक्षी आदमी, सब फिरे यामें फेर ।। १६
काल ना देखें इन फेरे, याही तिमर के फंद ।
ऐ सूरज आंखों देखिए, पर याही फंद के बंध ।। १७
वाओ बादल बीज गाजही, जिमी जल ना समाए ।
ए पांचों आप देखाए के, फेर ना पैदा हो जाए ।। १८
या भांत अनेक ब्रह्मांड में, देत देखाई दसो दिस ।
ए मोहजल लेहेरां लेवही, सागर सब एक रस ।। १९
ए कोहेडा काली रैन का, कोई न पावे कल मूल ।
कहां कल किल्ली[11] कुलफ, जो द्वार न पाइए सूल ।। २०

१. टेढ़ा । २. महल ( संसार ) । ३. अधर में । ४. मार्ग । ५. पृथ्वी । ६. अग्नि । ७. ब्रह्मांड । ८. लोक । ९. ऋतु । १० प्रकाश । ११. ताला-चाबी ।

ए तीनों लोक तिमर के, लिए जो तीनों ही घेर ।
ए निरखे मैं नीके कर, पर पाइए ना कहूं सेर[१] ॥ २१

ए अंधेरी इन भांत की, काहूं सांध[२] न सूझे सल[३] ।
ए सुध काहूं ना परी, कै गए कर कर बल[४] ॥ २२

ग्यान लिया कर दीपक, अंधेर आप नहीं गम ।
जोत दीपक इत क्या करे, ए तो चौदे तबकों तम[५] ॥ २३

ए देखे ही पड़िए दुख में, कोई ब्राध[६] को रचियो रोग ।
छुटकायो छूटे नहीं, नाहिन देखन जोग ॥ २४

टेढ़ी सकड़ी गलियां, तामें फिरे फेर फेर ।
गुन पक्ष अंग इंद्रियां, कियो अंधेरी में अंधेर ॥ २५

तत्व पांचों जो देखिए, यामें ना कोई थिर[७] ।
परले होसी पल में, वैराट सचरा चर ॥ २६

ए उपजे पांचों मोह थें, और मोह को तो नाहीं पार ।
नेत नेत[८] कहे निगम[९] फिरे, आगे सुध ना परी निराकार ॥ २७

मूल बिना ए मंडल, नहीं नेहेचल निरधार ।
निकसन[१०] कोई न पावही, वार न काहूं पार ॥ २८

पंथ पैंड़े कै चलहीं, कै भेष दरसन ।
ता बीच अंधेरी ग्यान की, पावे ना कोई निकसन ॥ २९

यामें ज्यों ज्यों खोजिए, त्यों त्यों बंध पड़ते जाए ।
कै उदम जो कीजिए, तो भी तिमर न छोड़े ताए ॥ ३०

इत जुध किए कै सूरमें, पेहेन टोप सिल्हे पाखर[११] ।
बचन बड़े रन बोलके, सो भी उलट पड़े आखर ॥ ३१

ए सुध अजूं किन ना परी, बढ़त जात बिवाद ।
ए खेल तो है एक खिन का, पर जाने सदा अनाद ॥ ३२

---

१. मार्ग । २. जोड़ । ३. तह सिलवट । ४. शक्ति । ५. अंधकार । ६. जन्म जात रोग ।
७. स्थिर । ८. 'न इति'–ऐसा नहीं । ९. वेद । १०. निकलना । ११. रक्षा कवच ।

खेल खावंद[1] जो त्रैगुन, जाने याथें जासी फेर ।
ए निरखे मैं नीके कर, अजूं ए भी मिने अंधेर ।। ३३

ए द्वार कोई खोल के, कबहूं ना निकसा कोए ।
ए बुजरक[2] जो छल के, बैठे देखे बेसुध होए ।। ३४

ए जिन बांध्या सो खोलहीं, तोलों ना छूटे बंध ।
या विध खेल खावंद की, तो औरों कहा सनंध ।। ३५

निज बुध आवे अग्याएं,[3] तोलों ना छूटे मोह ।
आतम तो अंधेर में, सो बुध बिना बल ना होए ।। ३६

ए तो कही इन इंड की, पिया पूछ्यो जो प्रस्न[4] ।
कहूँ और अजूं बोहोत है, वे भी सुनो वचन ।। ३७

।। प्रकरण ।। १ ।। चौपाई ।। ३७ ।।

।। प्रकरण खोज का—राग श्री मारू ।।

पिया मैं बोहोत[5] भांत तोको खोजिया, छोड़ धंधा सब और ।
पूछत फिरों सुहागनी, कोई बतावे पिया ठौर[6] ।। १

मैं नेक बात याकी कहूँ, तुम कारन खोज्या खेल ।
कोई ना कहे मैं देखिया, जिन नीके कर खोजेल[7] ।। २

सास्त्र साधू जो साखियां, मैं देखी सबों की मत ।
पिया सुध काहू में नहीं, कोई न बतावे तित ।। ३

छोटे बड़े जिन खोजिया, न पाया करतार[8] ।
संसा सब कोई ले चल्या, पर छूट्या नहीं विकार । ४

झूठा ए छल कठिन, काहूं ना किसी की गम ।
कहां वतन कहां खसम, कौन जिमी कौन हम ।। ५

ए देखी बाजी छल की, छलकी तो उलटी रीत ।
इनमें सीधा दौड़के, कोई ना निकस्या जीत ।। ६

---

१. स्वामी । २. बुजुर्ग । ३. आज्ञा से । ४. सवाल । ५. बहुत । ६. स्थान ( धाम ) ।
७. ढूढे । ८. ईश्वर ।

मैं देख्या विचार के, चितसों अरथ लगाए ।
इस मंडल में आतमा, चल्या ना कोई जगाए ॥ ७

मेहेनत तो बोहोतों करी, अहेनिस[१] खोज विचार ।
तिन भी छल छूटया नहीं, गए हाथ पटक कै हार ॥ ८

मोहादिक के आद लों, जेती उपजी सृष्ट ।
तिन सारो ने यों कह्या, जो किनहूं ना देखा द्रष्ट ॥ ९

वरना वरनो[२] खोजियां, जेती बुनी आदम[३] ।
एता द्रढ़ किने ना किया, कहां खसम कोन हम ॥ १०

आद मध और अबलों,[४] सब बोले या विध ।
केवल विदेहो[५] हो गए, तिन भी ना कही सुध ॥ ११

वेदों कथ कथ यों कथ्या, मिथ्या चौदे लोक ।
वकते वकते यों बके, एक अनेक सब फोक[६] ॥ १२

बुध तुरिया[७] द्रष्ट श्रवना, जहांलों पोहोंचे मन ।
ए होसी उतपन सब फना,[८] जो आवे मिने[९] वचन ॥ १३

वेदांती भी कहे थके, द्वैत खोजी पर पर ।
अद्वैत सबद जो बोलिए, तो सिर पड़े उतर ॥ १४

मन चित बुध श्रवना, पोहोंचे द्रष्ट ना सब्दा कोए ।
षट प्रमान थें रहित है, सो दृढ़ कैसे होए ॥ १५

द्वैत आड़े अद्वैत के, सब द्वैतई को विस्तार ।
छोड़ द्वैत आगे वचन, किने ना कियो निरधार ॥ १६

ए अलख किनहूं ना लखी, आदै थे अकल[१०] ।
ऐसी निराकार निरंजन, व्याप रही सकल ॥ १७

चेतन व्यापो[११] व्याप में, सो फेर फेर आवे जाए ।
जड़ को चेतन ए करे, चेतन को मुरछाए ॥ १८

---

१. दिन-रात । २. वर्ण-वर्ण । ३. आदमी की सन्तान । ४. अब तक । ५. देहातीत । ६. निरर्थक । ७. चित्त । ८. नष्ट हो जाना । ९. में । १०. बुद्धि । ११. व्यापक ।

ऊपर तले मांहें बाहिर, दसो दिसा सब एह ।
छोड़ याको कोई ना कहे, ठौर खसम का जेह ॥ १९

जो कछू कहिए वचन, सो तो सब अनित[1] ।
वतन सरूप कोई ना कहे, तो क्यों कर जाइए तित ॥ २०

पेड़[2] काली किन ना देखी, सब छाया में रहे उरझाए ।
गम छायाकी भी ना परी, तो पेड़ पार क्यों लखाए ॥ २१

जाए ना उलंघी देखीती,[3] ना कछू होए पेहेचान ।
तो दुलहा कैसे पाईए, जाको नेक न सुन्यो निसान ॥ २२

खसम जो न्यारा द्वैत से, और ठौर सब द्वैत ।
किन ना कह्या ठौर नेहेचल, तो पाईए कैसी रीत ॥ २३

ए मत वेद वेदांत की, सास्त्र सबों ए ग्यान ।
सो साधू लेकर दौड़ही, आगे मोह न देवे जान ॥ २४

या विध ग्यान जो चरचहीं,[4] सो मैं देख्या चित ल्याए ।
ज्यों मनुआ सुपने मिने, बेसुध गोते खाए ॥ २५

खिनमें कहे सब ब्रह्म है, खिन मे बंझा पूत ।
मद माते मरकट[5] ज्यों, करे सो अनेक रूप ॥ २६

खिन में कहे सत असत, माया कछुए कही ना जाए ।
यों संग संसा द्रढ़ हुआ, सब धोखे रहे फिराए ॥ २७

खिन में कहे है आप में, खिन में कहे बाहिर ।
खिन में मांहें न बाहिर, याको सबद न कोई निरधार ॥ २८

खिन में कछू और कहे, खिन में और की और ।
सो बात द्रढ़ क्यों होवही, जाको वचन ना रेहेवें ठौर ॥ २९

जैसे बालक बावरा,[6] खेले हंसता रोए ।
ऐसे साधू सास्त्र में, द्रढ़ ना सबदा कोए ॥ ३०

---

१. न रहने वाला । २. माया के विस्तार का मूल । ३. दिखाई देने वाला । ४. कहते हैं । ५. बन्दर । ६. पागल ।

ए सब सींग ससिक,[१] बंझा पूत बैराट ।
फूल[२] गगन नाम धराए के, उड़ाए देत सब ठाट ॥ ३१

आप होत फूल गगन, बढ़त जात गुमान ।
देखी तां छल छेतरे,[३] हाए हाए ऐसी नार सुजान ॥ ३२

कोई ना परखे छल को, जिन छल में हैं आप ।
तो न्यारा खसम जो छल थें, सो क्यों पाईए साख्यात ॥ ३३

अटक रहे सब इतहीं, आगे सबद न पावे सेर[४] ।
ए इंड गोलक बीच में, याके मोह तत्व चौफेर ॥ ३४

सबद जो सारे मोह लों, एक लवा न निकस्या पार ।
खोज खोज ताही सबद को, फेर फेर पड़े अंधार ॥ ३५

ए ख्वाबी दम सब नींद लों, दम नींदै के आधार ।
जो कदी आगे बल करे, तो गले नींदै में निराकार ॥ ३६

तबक चौदे ख्वाब के, याको पेड़ै नींद निदान ।
नींद के पार जो खसम, सो ए क्यों करे पेहेचान ॥ ३७

बड़ी बुध वाले जो कहावहीं, सो सीतल भए इन भांत ।
ता पेहेचान छल वतन की, सो सुंन[५] गलें ले स्वांत[६] ॥ ३८

ए पुकार साधू सुनके, हट रहे पीछे पाए ।
पार सुध किन न परी, सब इतहीं रहे उरझाए ॥ ३९

जिनहूं जैसा खोजिया, सो बोले बुध माफक[७] ।
मैं देखे सबद सबन के, जो गए जाहिर मुख बक ॥ ४०

या विध तो हुई नास्त,[८] सो नास्त जानो जिन ।
सार सबद मैं देख के, लिए सो द्रढ़ कर मन ॥ ४१

जिन जानो पाया नहीं, है पावनहार परवान ।
सोए छिपे इन छल थें, वाकी मिले न कासों तान ॥ ४२

१. खरगोश । २. कल्पना मात्र । ३. छल लेती है । ४. मार्ग । ५. शून्य । ६. शान्ति । ७. अनुसार । ८. नहीं है ।

सो तो प्रेमी छिप रहे, वाको होए गयो सब तुच्छ ।
वह खेले पिया के प्रेम में, और भूल गए सब कुछ ॥ ४३

सुरत न वाकी छल में, वाही तरफ उजास ।
प्रेमै में मगन भए, और होए गयो सब नास ॥ ४४

प्रेमी तो नेहेचे छिपे, उन मुख बोल्यो न जाए ।
सबद कदी जो निकसे, सो ग्यानी क्यों समझाए ॥ ४५

सबद जो सीधे प्रेम के, सास्त्र तो स्यानप छल ।
या विध कोई ना समझही, बात पड़ी है बल ॥ ४६

साधु सास्त्र जो बोलही, सो तो सुनता है संसार ।
पर मूल माएने गुझ हैं, सोई गुझ सबद हैं पार ॥ ४७

सब कोई देखे सास्त्र को, सास्त्र तो गोरख धंध ।
मूल कड़ी पाए बिना, तोलों देखीतां ही अंध ॥ ४८

ऐसा तो कोई विरला, जो दोनों पार परकास ।
मगन पिया के प्रेम में, उधर भी उजास ॥ ४९

जो कोई ऐसा मिले, सो देवे सब सुध ।
सबदे सब समझावही, कहे वतन की विध ॥ ५०

कड़ी बतावे मूल की, सास्त्र निकाले वल ।
ठौर खसम सब केहेवही, जो है सदा नेहेचल ॥ ५१

आप ओलखावे आप में, आप पुरावे साख ।
आतम को परआतमा, नजरों आवे साख्यात ॥ ५२

और सबद भी हैं सही, पिया करसी परदा दूर ।
सब मिल कदमों आवसी, तब हम पिया हजूर ॥ ५३

आगम की बानी कही, पिया आवेंगे तेहेकीक[1] ।
तिन आसा मेरी बंधी, पूरन आई परतीत[2] ॥ ५४

---

१. निश्चित । २. विश्वास ।

मन चित बुध द्रढ़ किया, पिया न करें निरास ।
*महामती नेहेचें कहें, होसी दुलहेसों विलास ।। ५५

प्रकरण ।। २ ।। चौपाई ।। ६२ ।।

॥ ब्रह तामस को प्रकरण—राग सिधूड़ो कड़खा ॥

मैं चाहत न स्वांत इन भांत, अजू आउध[1] अंग चले, इन नैनों दोनों नेक न आवे नीर ।
दरद देहां[2] जरद[3] गरद[4] रद[5] करे, मैं क्यों धरूं धीरअस्थिरसरीर ।। १

कठिन निपट विकट घाटी प्रेम की, त्रबंक[6] बंकों[7] सूरों किनों न अगमाए[8] ।
धार तरवार परसचर सिनगार कर, सामी अंगसांगा[9] रोम रोम भराए ।। २

सागर नीर खारे लेहेरां मारे फिरें, बेटो[10] बीच बेसुध पछाड़ खावे ।
खेलें मछ मिले गले ले उछाले, संधों[11] संध बंधे अंधों यों जो भावे ।। ३

दहों[12] दसे दसों दिस सबे धखे[13], लाल झाला[14] चलें इंड न झलाए[15] ।
फोड़ आकास फिरे सिर सिखरों एफलंग[16] उलंघसंग खसम मिलाए ।। ४

घाट अवघाट सिल पाट अतिसलवली, तहां हाथ ना टिके पपील[17] पाए ।
वाओ वाए बढ़ेआगन फैलाए चढ़े, जले पर अनलें[18] ना चले उड़ाए ।। ५

पेहेन पाखर गज घंट बजाए चल, पैंठ संकोड़ सूई नाके समाए ।
डार आकार संभार जिन ओसरे, दौड़ चढ़ पहाड़ सिर झांप खाए ।। ६

बोहोत बंध फंद धंध अजूं कै बीच में, सो देखेअलेखे मुख भाख न आवे ।
निराकारसुंनपार के पार पीउ वतन, इत हुकमहाकिम विना कौन आवे ।।७

मन तन वचन लगे तिन उतपन, आस पिया पास बांध्यो विसवास ।
कहे *महामति इन भांत तो रंगरती, दै पिया अग्या जाग करूं विलास ।। ८

प्रकरण ।। ३ ।। चौपाई ।। १०० ।।

राग श्री सामेरी

पिया मोहे स्वांत न आवही, ना कछू नैनों नीर ।
पिया विना पल जो जात है, अहे निस धखे सरीर ।। १

---

१. हथियार । २. शरीर को । ३. पीला । ४. धूल । ५. बेकार । ६. शिखारा । ७. टेढ़ा ।
८. चला जाय । ९. बरछी । १०. टापू । ११. जोड़-जोड़ । १२. आग । १३. जले ।
१४. लपटें । १५. समाए । १६. छलांग । १७. हाथी का पांव । १८. हवा ।

सब अंग अगनी जलके, जात उड़ें ज्यों गरद ।
क्यों इत स्वांत जो आवही, जित दुलहे का दरद ॥ २

हाड़े हाड़ पिसात हैं, चक्की बीच जिन भांत ।
आराम ना जीवड़ा होवही, तो क्यों कर उपजे स्वांत ॥ ३

सब अंग सारन होए के, सारे सकल संधान ।
अपनी इंद्री आप को, उलट लगी हैं खान ॥ ४

उड़ी जो नींद अंदर की, परत न क्यों ही चैन ।
प्यारी पीउ के दरस की, कब देखों मुख नैन ॥ ५

पिया विन कछुए न भावही, जानूं कब सुनों पिया बेन ।
जोलों पिउ मुझे न मिले, तोलों तलफत हों दिन रैन ॥ ६

घाटी टेढ़ी संकड़ी, तीखी खांड़ा धार ।
रोम रोम सांगा सामिया, तामें चढ़ूं कर सिनगार ॥ ७

नीर खारे भवसागर, और लेहेरां मारे मार ।
वेटों बीच पछाड़हीं, वार न काहूं पार ॥ ८

तान तीखे आड़े उलटे, और लेत भमरियां जल ।
मिने मछ लड़ाईयां, यामें लेवें सारे निगल ॥ ९

ए दुनी दिल अंधी दिवानी, और बंधी संधों संध ।
हाथों हाथ न सूझहीं, तिमर तो या सनंध ॥ १०

धखत[1] दाह दसों दिस, झाला इंड ना समाए ।
फोड़ आकास पर फिरे, किन जाए ना उलंघी ताए ॥ ११

घाट पाट अतिसलवली[2], तहां हाथ ना टिके पपील पाए ।
पवने अगनी पर जले, किन चढ्यो ना उड़्यो जाए ॥ १२

इत चल तूं हस्ती होए के, पेहेन पाखर गज घंट बजाए ।
पैठ सकोड़ सुई नाके मिने, जिन कहूं अंग अटकाए ॥ १३

---

१. जल्ती है । २. चिकना ।

दीजे न आल[1] आकार को, पीउ मिलना अंग इन ।
दौड़ चढ़ पहाड़ झांप खा, कायर होवे जिन ॥ १४

बोहोत फंद बंध धंध कै, कै कोटान लाखों लाख ।
अंदर नजरों आवही, पर मुख ना देवे भाख ॥ १५

आड़े चौदे तबक मोह, निराकार निरंजन ।
याके पार पोहोंचना, इन पार पीउ वतन ॥ १६

पांव चले ना पर उड़े, बीच तो ऐसे पंथ ।
पर ए सब तोलों देखिए, जोलों ना द्रष्टें कंथ[2] ॥ १७

आतम बंधी आस पिया, मन तन लगे वचन ।
कहे *महामत कौन आवही, इत हुकम खसमके विन ॥ १८

॥ प्रकरण ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ ११८ ॥

### ब्रहके प्रकरण—राग देसाख

तलफे तारुनी[3] रे, दूलही[4] को दिल दे ।
सनमंध मूल जानके रे, सेज सुरंगी[5] पर ले ॥ १

सब तन विरहे खाईया, गल गया लोहू मांस ।
न आवे अंदर बाहेर, या विध सूकत सांस ॥ २

हाड़ हुए सब लकड़ी, सिर श्रीफल[6] व्रेहे अगिन ।
मास मीज[7] लोहू रगा, या विध होत हवन ॥ ३

रोम रोम सूली सुगम, खंड खंड खांड़ा धार ।
पूछ पिया दुख तिनको, जो तेरी विरहिन नार ॥ ४

ए दरद जाने सोई, जिन लगे कलेजे घाओ ।
ना दारू इन दरद को, फेर फेर करे फैलाओ ॥ ५

ए दरद तेरा कठिन, भूषन लगे ज्यों दाग ।
हेम हीरा सेज पसमी, अंग लगावे आग ॥ ६

---

१. ढील । २. कंत, पति । ३. युवा स्त्री । ४. प्रियतमा । ५. रंग भरी । ६. नारियल । ७. मज्जा (चर्बी)।

विरहिन होवे पीउ की, वाको कोई ना उपाए ।
अंग अपने बैरी हुए, सब तन लियों है खाए ॥ ७
ए लक्षन तेरे दरद के, ताए गृह अंगना न सुहाए ।
रतन जड़ित जो मंदिर, सो उठ उठ खाने धाए ॥ ८
ना बैठ सके बिरहनी, सोए सके ना रोए ।
राजप्रथी पांव दाब के, निकसी या विध होए ॥ ९
विरहा ना देवे बैठने, उठने भी ना दे ।
लोट पोट भी ना कर सके, हूक हूक सांस ले ॥ १०
आठो जाम विरहनी, जब सांस लियो हूक हूक ।
पत्थर काले ढिग हुते, सो भी हुए टूक टूक ॥ ११
एह विध मोहें तुम दई, अपनी अंगना जान ।
परदा बीच टालने, तार्थे विरहा परवान ॥ १२

॥ प्रकरण ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ १३०॥

## राग धन्या सेवाड़ों

विरहा गत रे जाने सोई, जो मिलके विछुरी होई, मेरे दुलहा ॥
ज्यों मीन बिछुरी जलथें, या गत जाने सोए, मेरे दुलहा ।
विरहनी विलखे तलफे तारुनी, तारुनी तलफे कलपे कामिनी ॥ १
विछुरो तेरो वल्लभा, सो क्यों सहे सुहागिन ।
तुम बिना पिंड ब्रह्मांड, हो गई सब अगिन ॥ २
विरहा जाने ब्रहनी, वाके आग ना अंदर समाए ।
सो झाला बाहेर पड़ी, तिन दियो बैराट लगाए ॥ ३
विरहा ना छूटे वल्लभा, जो परे विघन अनेक ।
पिंड ना देखूं ब्रह्मांड, देखूं दुलहा अपनो एक ॥ ४
विरहनी विरहा बीच में, कियो सो अपनों घर ।
चौदे तबक की साहिबी, सो वारूं तेरे विरहा पर ॥ ५

आंधी आई विरह की, तिन दियो ब्रह्मांड उड़ाए ।
विरहिन गिरी सो उठ न सकी, मूल अंकूर रही भराए ॥ ६

विरहा सागर होए रह्या, बीच मीन विरहनी नार ।
दौड़त हूं निसवासर, कहूं वेट न पाऊं पार ॥ ७

॥ प्रकरण ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ १३७ ॥

॥ राग सोख मलार ॥

इसक बड़ा रे सबन में, ना कोई इसक समान ।
एक तेरे इसक बिना, उड़ गई सब जहान ॥ १

चौदे तबक हिसाब में, हिसाब निरंजन सुन ।
न्यारा इसक हिसाब थें, जिन देख्या पीउ वतन ॥ २

लोक अलोक हिसाब में, हिसाब जो हद बेहद ।
न्यारा इसक जो पीउ का, जिन किया आद लों रद ॥ ३

एक अनेक हिसाब में, और निराकार निरगुन ।
न्यारा इसक हिसाब थें, जो कछू न देखे तुम बिन ॥ ४

और इसक कोई जिन कथो, इसके न पोहोंच्या कोए ।
इसक तहां जाए पोहोंचिया, जहां सुन सबद न होए ॥ ५

नाहीं कथनी इसक की, और कोई कथियो जिन ।
इसक आगे चल गया, सबद समाना सुन ॥ ६

सबद जो सूका अंग में, हले नहीं हाथ पाए ।
इसक बेसुध न करे, रही अंदर विलखाए ॥ ७

पापन पल न लेवही, दसो दिस नैन फिराऊं ।
देह बिना दौडूं अंदर, पिया कित मिलसी कहां जाऊं ॥ ८

इसक को ए लक्षन, जो नैनों पलक न ले ।
दौड़े फिरे न मिल सके, अंदर नजर पिया में दे ॥ ९

नजरों निमख न छूटहीं, तो नहीं लागत पल ।
अन्दर तो न्यारा नहीं, पर जाए न दाह बिना मिल ॥ १०

जो दुख तुमही विछुरे, मोहे लाग्यो तासों प्यार ।
एता सुख तेरे विरह में, तो कौन सुख होसी विहार ॥ ११

॥ प्रकरण ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ १४८ ॥

॥ राग श्री धन्या काफी ॥

सनभंध मूल को, मैं तो पाव पल छोड़्यो न जाए ।
अब छल बल मोहे कहा करे, मोह आद थें दियो उड़ाए ॥ १

दरद जो तेरे दुलहा, कर डार्यो सब नास ।
पर आस न छोड़े जीव को, करते तुम विलास ॥ २

विरहा न छोड़े जीव को, जीव आस भी पिउ मिलन ।
पिया संग इन अंगें करूं, तो मैं सुहागिन ॥ ३

लागी लड़ाई आप में, एक विरहा दूजी आस ।
ए भी विरहा पिउ का, आस भी पिउ विलास ॥ ४

मैं कहावत हों सुहागिनी, जो विरहा न देऊं जीव ।
तो पीछे वतन जाए के, क्यों देखाऊँ मुख पीउ ॥ ५

जो जीव देते सकुचों, तो क्यों रहे मेरा धरम ।
विरहा आगे कहा जीव, ए कहत लगत मोहे सरम ॥ ६

माया काया जीवसों, भान भून टूक कर ।
विरहा तेरा जिन दिस, मैं वारूं तिन दिस पर ॥ ७

जब आह सूकी अंग में, सांस भी छोड़्यो संग ।
तब तुम परदा टालके, दियो मोहे अपनों अंग ॥ ८

मैं तो अपना दे रही, पर तुम ही राख्यो जीव ।
बल दे आप खड़ी करी, कारज आपने पीउ ॥ ९

जीवरा भी मेरा रख्या, तुम कारज भी कारन ।
आस भी पूरी सुहागनी, और ब्रध भी राख्यो विरहिन ॥ १०

तुम आए सब आईया, दुख गया सब दूर ।
कहे *महामत ए सुख क्यों कहूं, जो उदया मूल अंकूर ॥ ११

॥ प्रकरण ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ १५९ ॥

विरह को प्रकास—राग आसावरी

एह बात में तो कहूँ, जो कहने की होए ।
पर ए खसमें रीझ के, दया करी अति मोहे ॥ १

सुनियो बानी सुहागनी, दीदार दिया पिया जब ।
अंदर परदा उड़ गया, हुआ उजाला सब ॥ २

पिया जो पार के पार हैं, तिन खुद खोले द्वार ।
पार दरवाजे तब देखे, जब खोल देखाया पार ॥ ३

कर पकर बैठाए के, आवेस दियो मोहे अंग ।
ता दिन थें पसरी दया, पल पल चढ़ते रंग ॥ ४

हुई पेहेचान पीउसों, तब कह्यो महामती नाम ।
अब मैं हुई जाहिर, देख्या वतन श्री धाम ॥ ५

बात कही सब वतन की, सो निरखे मैं निसान ।
प्रकास पूरन द्रढ़ हुआ, उड़ गया उनमान ॥ ६

आपा मैं पेहेचानिया, सनमंध हुआ सत ।
ए मेहेर कही न जावही, सब सुध परी उतपत ॥ ७

मुझे जगाई जुगतसों, सुख दियो अंग आप ।
कंठ लगाई कंठसों, या विध कियो मिलाप ॥ ८

खासी जान खेड़ी जिमी, जल सींचिया खसम ।
बोया बीज वतन का, सो ऊग्या वाही रसम ॥ ९

बीज आतम संग निज बुध के, सो ले उठिया अंकूर ।
या जुवां इन अंकूर को, क्यों कर कहूं सो नूर ॥ १०

नातो ए बातें जो गुझ की, सो क्यों होए जाहिर ।
सुहागिन प्यारी मुझ को, सो कर ना सकूं अंतर ॥ ११

नेक कहूं या नूर की, कछुक इसारत[1] अब ।
पीछे तो जाहिर होएसी, तब दुनी देखसी सब ॥ १२

ए जो बिरहा बीतक मैं कही, पिया मिले जिन सूल ।
अब फेर कहूं प्रकास थें, जासों पाईए माएने मूल ॥ १३

ए विरहा लक्षन मैं कहे, पर नाहीं विरहा ताए ।
या विध विरहा उदम की, जो कोई किया चाहे ॥ १४

विरहा सुनते पीउ का, आहि ना उड़ गई जिन ।
ताए वतन सैयां यों कहें, नाहिन ए विरहिन ॥ १५

जो होंवे आपे विरहनी, सो क्यों कहे विरहा सुध ।
सुन विरहा जीव ना रहे, तो विरहिन कहां थें बुध ॥ १६

पतंग कहे पतंग को, कहां रह्या तूं सोए ।
मैं देख्या है दीपक, चल देखाऊं तोए ॥ १७

के तो ओ दीपक नहीं, या तूं पतंग नाहिं ।
पतंग कहिए तिनको, जो दीपक देख झंपाए ॥ १८

पतंग और पतंग को, जो सुध दीपक दे ।
तो होवे हांसी तिन पर, कहे नाहीं पतंग ए ॥ १९

दीपक देख पीछा फिरे, साबित राखे अंग ॥
आए देवे सुध और को, सों क्यों कहिए पतंग ॥ २०

पर ए वचन तो तब कहे, जब लई पिया उठाए ।
जब मैं हुती विरह में, तब क्यों मुख बोल्यो जाए ॥ २१

ज्यों ए विरहा उपज्या, ए नहीं हमारा धरम ।
बिरहिन कबहूं ना करे, यों विरहा अनूकरम ॥ २२

ब्रहा नहीं ब्रह्मांड में, बिनां सुहागिन नार ।
सुहागिन आतम पीउ की, वतन पार के पार ॥ २३

१. सङ्केत ।

अब नेक कहूं अंकूर की, जाए कहिए सुहागिन ।
सो विरहिन ब्रह्मांड में, हुतो ना एते दिन ।। २४

सोई सुहागिन आईयां, पिया की विरहिन ।
अंतरगत पिया पकड़ी, ना तो रहे ना तन ।। २५

ए सुध पिया मुझे दई, अन्दर कियो प्रकास ।
तो ए जाहिर होत है, गयो तिमर सब नास ।। २६

प्यारी पिया सुहागनी, सो जुबां कही न जाए ।
पर हुआ जो मुझे हुकम, सो कैसे कर ढंपाए ।। २७

अनेक करही बंदगी, अनेक विरहा लेत ।
पर ए सुख तिन सुपने नहीं, जो हमको जगाए के देत ।। २८

छलथें मोहे छुड़ाए के, कछु दियो विरहा संग ।
सो भी विरहा छुड़ाईया, देकर अपनों अंग ।। २९

अंग बुध आवेस देए के, कहे तूं प्यारी मुझ ।
देने सुख सबन को, हुकम करत हों तुझ ।। ३०

दुख पावत हैं सुहागनी, सो हम सह्यो न जाए ।
हम भी होसी जाहिर, पर तूं सुहागनियां जगाए ।। ३१

सिर ले आप खड़ी रहो, कहे तूं सब सैंयन ।
प्रकास होसी तुझ से, द्रढ़ कर देखो मन ।। ३२

तोसों न कछू अन्तर, तूं है सुहागिन नार ।
सत सबद के मांएने, तूं खोलसी पार द्वार ।। ३३

जो कदी जाहिर ना हुई, सो तुझे होसी सुध ।
अब थें आद अनाद लों, जाहिर होसी निज बुध ।। ३४

ए बातें सब सूझही, कहूं अटके नहीं निरधार ।
हुकम कारज कारन, पार के पारै पार ।। ३५

चौदे तबक एक होएसी, सब हुकम के परताप ।
सो सोभा होसी तुझे सुहागनी, जिन जुदी जाने आप ।। ३६

जो कोई सबद संसार में, अरथ न लिए किन कब ।
सो सब खातर सुहागनी, तूं अरथ करसी अब ।। ३७
तूं देख दिल विचार के, उड़जासी सब असत ।
सारों के सुख कारने, तूं जाहेर हुई महामत ।। ३८
पेहेले सुख सुहागनी, पीछे सुख संसार ।
एक रस सब होएसी, घर घर सुख अपार ।। ३९
ए खेल किया जिन खातर, सो तूं कहियो सुहागिन ।
पेहेले खेल दिखाए के, पीछे मूल वतन ।। ४०
अंतर सैयों से जिन करे, जो सैयां हैं इन घर ।
पीछे चौदे तबक में, जाहिर होसी आखर ।। ४१
तें कहे वचन मुख थें, होसी तिनथें प्रकास ।
असत उड़सी तूल ज्यों, जासी तिमर सब नास ।। ४२
तूं लीजे नीके माएने, तेरे मुख के बोल ।
जो साख देवे तुझे आतमा, तो लीजे सिर कौल ।। ४३
खसम खड़ा है अंतर, जेती सुहागिन ।
तूं पूछ देख दिल अपना, कर कारज द्रढ़ मन ।। ४४
आप खसम अजूं गोप है, आगे होत प्रकास ।
उदया सूर छिपे नहीं, गयो तिमर सब नास ।। ४५

।। प्रकरण ।। ९ ।। चौपाई ।। २०४ ।।

।। राग श्री ।।

सत असत पटंतरों,[1] जैसे दिन और रात ।
सत सूर सब देखहीं, जब प्रगट भयो प्रभात ।। १
जोलों पिउ परदे मिने, विस्व विगूती[2] तब ।
सो परदा अब खोलिया, एक रस होसी अब ।। २

---

१. अन्तर । २. गुथी हुई ।

जोलों जाहिर ना हुते, तब इत उपज्या क्रोध ।
जब प्रगटे तब मिट गया, सब दुनियां को ब्रोध[१] ॥ ३

ए प्रकास खसम का, सो कैसे कर ढंपाए[२] ।
छल बल वल जो उलटे, सो देवे सब उड़ाए ॥ ४

दुनियां टेढ़ी मूल की, सो पेड़ से निकालूं वल ।
पिया प्रकास जो खिन में, सीधा करूं मंडल ॥ ५

सत जोत ढांप्या ना रहे, उड़ाए दियो अंधेर ।
नूर पिया पसरे बिना, क्यों मिटे दुनियां फेर ॥ ६

अब अंधेर कछू न रह्या, जाहेर हुआ उजास ।
तबक चौदे खसम का, प्रगट हुआ प्रकास ॥ ७

जोलों अंधेरी ना उड़े, तोलों सृष्ट ना होवे एक ।
तिमर तीनों लोक का, उड़ाए दिया उठ देख ॥ ८

ए प्रकास है अति बड़ा, सो राखत हों अजू गोप[३] ।
जिन कोई ना सहे सके, तार्थे हलके करूं उदद्योत[४] ॥ ९

ए जो सबद खसम के, जिन तुम समझो और ।
आद करके अबलों, किन कह्या न पिया ठौर ॥ १०

ए अकथ केहेनी खसम की, काहूं ना कथिअल[५] कोए ।
जो किनका कथिअल कहूं, तो पिया वतन सुध क्यों होए ॥ ११

केतेक ठोरों सुहागनी, तिन सब ठोरों उजास ।
पर जब इत थें जोत पसरी, तब ओ ले उठसी प्रकास ॥ १२

कोई दिन राखत हों गुझ, सो भी सैयों के सुख काज ।
जब सैयां सबे मिलीं, तब रहे न पकरचो आवाज ॥ १३

क्यों रहे प्रकास पकरचो, एह जोत अति जोर ।
जब सब उजाला इत आईया, तब गई रैन भयो भोर ॥ १४

---

१. विरोध । २. ढंकना । ३. गुप्त । ४. प्रकाश, प्रगट । ५. कही हुई ।

मैं अबला अरधांग हों, पीउ की प्यारी नार ।
सब जगाऊं सुहागनी, तब मुझे होए करार[१] ॥ १५

सैयों को वतन देखावने, उलसत मेरे अंग ।
करने बात वतन की, मावत[२] नहीं उमंग ॥ १६

नए नए रंग सुहागनी, आवत हैं सिरदार ।
खेल जो होसी जागनी, नाहीं इन सुख को पार ॥ १७

जो पिउ प्यारी आवत, ताको गुझ राखों उजास ।
बाट देखों और सैयन की, सब मिल होसी विलास ॥ १८

ए उजाला इन भांत का, जो कबू निकसी किरन ।
तो पसरसी एक पल में, चारों तरफों सब धरन ॥ १९

बात बड़ी खसम की, सो क्यों कर ढांपूं अब ।
सुख लेने को या समे, पीछे दुनिया मिलसी सब ॥ २०

ए प्रकास जो पीउ का, टाले अंदर का फेर[३] ।
याही सबद के सोर से, उड़ जासी सब अंधेर ॥ २१

और बेर अब कछू नहीं, गयो तिमर सब नास ।
होसी सब में आनंद, चौदे तबक प्रकास ॥ २२

॥ प्रकरण ॥ १० ॥ चौपाई ॥ २२६ ॥

॥ सुहागनियों के लक्षन ॥

पार वतन जो सोहागनी, ताकी नेक कहूं पेहेचान ।
जो कदी भूली वतन, तो भी नजर तहां निदान ॥ १

आसक प्यारी पीउ की, कोई प्रेम कहो विरहिन ।
ताए कोई दरदन कहो, ए लक्षन सुहागिन ॥ २

रूह खसम की क्यों रहे, आप अपने अंग बिन ।
पर पकरी पिया ने अंतर, नातो रहे ना तन ॥ ३

१. शान्ति । २. समाना । ३. चक्कर ।

ऊपर काहूं ना देखावही, जो दम ना ले सके खिन ।
सो प्यारी जाने या पिया, या विध अनेक लछन ॥ ४

आकीन[1] ना छूटे सुहागनी, जो परे अनेक विघन ।
प्यारी पिऊ के कारने, जीव को ना करे जतन ॥ ५

रेहेवें निरगुन होए के, और आहार भी निरगुन ।
साफ दिल सुहागनी, कबहूं ना दुखावे किन ॥ ६

ओ खोजे अपने आप को, और खोजे अपनों घर ।
और खोजे अपने खसम को, और खोजे दिन आखर ॥ ७

खोज सुहागिन ना थके, जोलों पार के पारैं पार ।
नित खोजे चरनी[2] चढ़े, नए नए करे विचार ॥ ८

खोज खोज और खोजही, आद के आद अनाद ।
पल पल सबद प्रकासही, श्रवनों एही स्वाद ॥ ९

सुहागिन तोलों खोज ही, जोलों पाईए पीउ वतन ।
पीउ वतन पाए बिना, विरहा न जाए निसदिन ॥ १०

ओतो आगे अंदर उजली, खिन खिन होत उजास ।
देह भरोसा ना करे, पिया मिलन की आस ॥ ११

विचार विचार विचारही, बेधे सकल संधान ।
रोम रोम ताए भेदही, सत सबद के बान ॥ १२

पार वतन के सबद, अंगमें जो निकसे फूट ।
गलित गात[3] सब भीगल, पिया सबदें होए टूक टूक ॥ १३

खिन खेले खिन में हंसे, खिन में गावें गीत ।
खिन रोवें सुध ना रहे, एही सुहागिन की रीत ॥ १४

पीउ बातें खेलें हंसे, गीत पिया के गाए ।
रोवें उरझे पीउ की, बातनसों मुरझाए ॥ १५

१. विश्वास । २. सीढ़ी । ३. शरीर ।

सुहागिन विरहा ना सहे, जब जाहिर हुए पीऊ ।
सुहागिन अंग जो पीउ को, पीऊ सुहागिन अंग जीऊ ।। १६

जोलों पीउ सुध ना हुती, तो सुहागिन अंग में पीऊ ।
जब पिया जाहिर हुए, तब ले खड़ी अंग जीऊ ।। १७

जो होए सैयां सुहागनी, सो निरखो अपने निसान ।
वचन कहे मैं जाहिर, सुहागनियों पेहेचान ।। १८

बोहोत निसानी और हैं, प्रेम सुहागिन गुझ ।
जब सैयां जाहिर हुई, तब होसी सबों सुध ।। १९

तुम हो सैयां सुहागनी, ए समझ लीजो दिल बुझ[1] ।
जब सैयां भेली भई, तब होसी बड़ा गुझ ।। २०

ए सबद जो कहती हों, सो कारन सब सैयन ।
सो सुहागिन ढांपी ना रहे, सुनते एह बचन ।। २१

ए सबद सुन सुहागनी, रहे ना सके एक पल ।
तामें मूल अंकूर को, रहे ना पकड़्यो बल ।। २२

जब खसम की सुध सुनी, तब रहे ना सुहागिन ।
ख्वाबी दम भी ना रहे, तो क्यों रहे सैयां चेतन ।। २३

मैं तुमको चेतन करूं, एही कसौटी[2] तुम ।
या विध सब सैयन का, तसोहा[3] लेवे खसम ।। २४

जो हुकम सिर लेएके, उठो ना अंग मरोर ।
पिया सैयां सब देखहीं, तुम इसक का जोर ।। २५

जो सुनते दौड़ी नहीं, तो हांसी है तिन पर ।
जैसा इसक जिन पें, सो अब होसी जाहिर ।। २६

जो इसक ले मिलसी, सो लेसी सुख अपार ।
दरद बिना दुख होएसी, सो जानों निरधार ।। २७

---

१. पहचान । २. परख । ३. कसौटी ।

जो किने गफलत[1] करी, जागी नाहीं दिल दे ।
सो इत लोक अलोक को, कछू न लाहा[2] ले ॥ २८

लाहा तो ना लेवही, पर सामी हांसी होए ।
अब ए हांसी सोहागनी, जिन कराओ कोए ॥ २९

जिन उपजे सैयन को, इन हांसी का भी दुख ।
ए दुख बुरा सुहागनी, जो याद आवे मिने सुख ॥ ३०

ए दुख तो नेहेचे बुरा, मेरी सैयोंपें सह्यो न जाए ।
जो कदी हांसी ना करे, पर जिन हिरदे चढ़ आए ॥ ३१

जिन जुबां मैं दुख कहूं, सोए करूं सत टूक ।
पर ए दुख जिन तुमें लागही, तो मैं करत हों कूक ॥ ३२

जो दुख मेरी सैयों को, तब सुख कैसा मोहे ।
हम तुम एक वतन के, अपनी रूह नहीं दोए ॥ ३३

॥ प्रकरण ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ २५६ ॥

भी कहूं मेरी सैयन को, जो हैं मूल अंकूर ।
सो निज वतनी सुहागनी, पिया अंग निज नूर ॥ १

पार पुरुष पिया एक हैं, दूसरा नाहीं कोए ।
और नार सब माया, यामें भी विध दोए ॥ २

जो रूह असलू ईस्वरी, दूजी रूह सब जहान ।
पर रूह न्यारी सुहागनी, सो आगे कहूंगी पेहेचान ॥ ३

सैयां सुख निज वतनी, ईस्वरी को सुख और ।
दुनी भी सुख होसी सदा, आगे कहूंगी तीनों ठोर ॥ ४

ए लक्षन सैयां अंकूरी, जो होसी इन घर ।
ए वचन वतनी सुनके, आवत हैं ततपर ॥ ५

---

१. असावधानी । २. लाभ ।

अटक रह्या साथ आधा, जिनो खेल देखन का प्यार ।
ए किया मूल इन खातर, जो हैं तामसियां नार ॥ ६

भूल गईयां खेल में, जो सैयां हैं समरथ ।
प्रकास पिया का मुझ पें, कहे समझाऊं अरथ ॥ ७

सबन को भेली[1] करूं, द्रढ़ कर देऊं मन ।
खेल देखाऊं खोल के, जिन विध ए उतपन ॥ ८

ए खेल है जोरावर, बड़ो सो रचियो छल ।
ए तब जाहेर होएसी, जब काढ़ देखाऊं बल ॥ ९

तुम नाहीं इन छल के, छल को जोर अमल ।
सांचो को झूठी लगी, ऐसो छल को बल ॥ १०

तुम आईयां छल देखने, मिल गैयां माहें छल ।
छल को छल न लागही, ओ लेहेरी ओ जल ॥ ११

ए झूठी तुमको लग रही, तुम रहे झूठी लाग ।
ए झूठी अब उड़ जाएसी, दे जासी झूठा दाग ॥ १२

हांसी होसी अति बड़ी, जिन देओ मोहे दोस ।
कमी कहे मैं ना करूं, पर तुमें छल हुआ सिर पोस ॥ १३

मांग लिया खसम पें, ए छल तुम देखन ।
जो कदी भूलिया छल में, तों फेर न आवे ए दिन ॥ १४

तुम मुख नीचा होएसी, आगूं सैयां सबन ।
ए हांसी सत ठौर की, कोई सैयां कराओ जिन ॥ १५

दुख ले चलसी इत थें, नहीं आवन दूजी बेर ।
तिन क्यों मुख ऊंचा होएसी, जो पीउसों बैठी मुख फेर ॥ १६

तुम सुध पीउ ना आपकी, ना सुध अपनों घर ।
नाहीं सुध इन छल की, सो कर देऊं सब जाहेर ॥ १७

---

१. इकट्ठा ।

मैं देखाऊं तिन विध, ज्यों होए पेहेचान छल ।
जब तुम छल पेहेचानियां, तब चले न याको बल ॥ १८

अब देखो या छल को, जो देखन आईयां एह ।
प्रकास करूं इन भांत का, ज्यों रहे नहीं संदेह ॥ १९

अन्धेर सब उड़ाए के, सब छल करूं जाहेर ।
खोलूं किवाड़ कल कुलफ, अन्तर मांहें बाहेर ॥ २०

॥ प्रकरण ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ २७९ ॥

## खेल के मोहोरे का प्रकरण

अब निरखो नीके कर, ए जो देखन आईयां तुम ।
माग्या खेल हिरस[1] का, सो देखलावें खसम ॥ १

भोम भली भरतखंड[2] की, जहां आई निध नेहेचल ।
और सारी जिमी खारी, खारे जल मोह जल ॥ २

इत बोए बृख होत है, ताको फल पावे सब कोए ।
बीज जैसा फल तैसा, किया जो अपना सोए ॥ ३

इनमें जो ठौर अवल[3], जाको नाम नौतन ।
जहां आए उदय हुई, नेहेंचल बात वतन ॥ ४

एह खेल तुम मांगिया, सो किया तुम खातर ।
ए बिध सब देखाए के, पीछे कहूं वतन आखर ॥ ५

मोहोरे सब जुदे जुदे, जुदी जुदी मुख बांन ।
खेले मन के भावते, सब आप अपनी तांन ॥ ६

स्वांग[4] काछे जुदे जुदे, जुदे जुदे रूप रंग ।
चले आप चित चाहते, और रहे भेले संग ॥ ७

अनेक सहर बाजार चौहटे[5], चौक चौवटे[6] अनेक ।
अनेक कसबी[7] कसब करते, हाट[8] पीठ[9] बसेक ॥ ८

---

१. चाह । २. भारत वर्ष । ३. सर्व प्रथम । ४. वनावटी । ५. चौक । ६. चौरस चबूतरा । ७. कुशल कारीगर । ८. साप्ताहिक बाजार । ९. मण्डी ।

भेष सारे बनाए के, करें होहोकार ।
कोई मिने आहार खाएं, कोई खाएं अहंकार ॥ ९

बिध बिध के भेष काछे, सारे जान प्रवीन ।
वरन चारों खेलें चित दे, नाहिन कोई मतहीन ॥ १०

पढ़ें चारों विद्या चौदे, हुए वरन विस्तार ।
आप चंगी सब दुनियां, खेलत हैं नर नार ॥ ११

वरन सारे पसरे, लोभें लिए करें उपाए ।
बिना अगनी पर जले, अंग काम क्रोध न माए ॥ १२

नाहीं पेहेचान जासों कबहूं, फेर तासों करे सनमंध ।
सगे सहोदर मिलके, ले देवें मन के बंध ॥ १३

सनमंध करते आप में, उछरंग अंग न माए ।
केसर कसूंबे पेहेर के, सेहेर[1] में फेरे खाए ॥ १४

सिनगार करके तुरी चढ़े, कोई करे छाया छत्र ।
कोई आगे नाटारंभ करे, कोई बजावे बाजंत्र ॥ १५

कोई बांध सीढ़ी आवें सामी, करे पोक[2] पुकार ।
विरह वेदना अंग न माए, पीटे माहें बाजार ॥ १६

गाढ़े जाले हाथ अपने, रुदन करे जलधार ।
सनमंधी सब मिलके, टल-वलें[3] नर नार ॥ १७

जनम होवे काहूं के, काहूं के होवे मरन ।
कोई हिरदे हंसे हरखे, कोई सोक रुदन ॥ १८

धन खरचे खाए गफलतें, आपे बुजरक होए ।
कीरत अपनी कराए के, खेल या बिध होए ॥ १९

कोई किरपी[4] कोई दाता, कोई मंगन केहेंलाए ।
किसी के अवगुन बोले, किसी के गुन गाए ॥ २०

---

१. शहर । २. चीखना । ३. दुःखी होना । ४. कृपण ।

कोई मिने बेहेवारिए,[१] कोई राणे राज ।
कोई मिने रांक रलझले[२], रोते फिरे अकाज ॥ २१

कोई पोंढ़े पलंग हेम के, कोई ऊपर ढोले वाए ।
बात करते जी जी करे, ए खेल यों सोभाए ॥ २२

कोई बैठे सुखपाल[३] में, कोई दौड़े उचाए ।
जलेब[४] आगे जोर चले, ए खेल यों खेलाए ॥ २३

कोई बैठे तखतरवा,[५] आगे तुरी[६] गज पायदल ।
अति बड़े बाजंत्र[७] बाजे, जाने राज नेहेचल ॥ २४

साम सामी करे सेन्या, भारथ होवें लोह अंग ।
लज्या बांधे होवें टुकड़े, कहावैं सूर अभंग ॥ २५

कोई मिने होए कायर, छोड़ लज्या भाग जाए ।
कोई मारे कोई पकड़े, कोई गए आप बचाए ॥ २६

कोई जीते कोई हारे, काहूं हरष काहूं सोक ।
जो तरफ सारी जीत आवे, ताए कहें पृथीपत लोक ॥ २७

कोई करे ले कैद में, बांधत उलटे बंध ।
मारते अरवाह[८] काढ़े, ए खेल या सनंध ॥ २८

जीते हरषे पोरसे,[९] सूरा तन अंग न माए ।
हारे सारे सोक पावें, करें मुख त्राहे त्राहे[१०] ॥ २९

कै फिरत हैं रोगिए, कै लूले टूटे अपंग ।
कै मिने आँधले, यों होत खेलमें रंग ॥ ३०

कै उदर कारने, फिरत होत फजीत[११] ।
कै पवाड़े[१२] करे कोटल,[१३] ए होत खेल या रीत ॥ ३१

॥ प्रकरण ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ ३१० ॥

---

१. व्यवहार करने वाला, सौदागर । २. इधर-उधर भटकना । ३. पालकी । ४. फौज । ५. (चलने वाला) सिंहासन । ६. घोड़ा । ७. वाद्य यंत्र । ८. जीव । ९. पौरुष से । १०. रक्षा करो । ११. अपमान । १२. झंझट । १३. करोड़ों ।

॥ खेलमें खेल ॥

अब देखाऊं इन बिध, जासों समझ सब होए ।
भेलें हैं सत असत, सो जुदे कर देऊं दोए ॥ १
इन खेलमें जो खेल है, सो केहेत न आवे पार ।
इन भेषोंमें भेष सोभही, सो कहूं नेक विचार ॥ २
कै देहुरे[१] अपासरे,[२] कै मुनारे[३] मसीत[४] ।
तलाव कुआ कुंड बावरी, मांहै विसामां[५] कै रीत ॥ ३
कै भेष जो साध कहावही, कै पंडित पुरान ।
कै भेष जो जालिम[६], कै मूरख अंजान ॥ ४
कै अंन नीर सबीले,[७] कै करे दया दान ।
कै तरपन तीरथ, कै करे नित अस्नान ॥ ५
कै कहावें दरसनी,[८] धरें जुदे जुदे भेख ।
सुध आप ना पार की, हिरदे अंधेरी विसेख ॥ ६
कै लूचें[९] कै मूड़े, कै बढ़ावें केस ।
कै काले कै उजले, कै धरे भगुए भेस ॥ ७
कै नेक छेदे कै ना छेदे, कै बोहोत फाड़े कान ।
कै माला तिलक धोती, कै धर बैठे ध्यान ॥ ८
कै जिंदे[१०] मलंग मुल्ला, बांग दे मन धीर ।
कै जावे पाक होए, कै मीर पीर फकीर ॥ ९
कै लंगरी बोदले,[११] कै आलम[१२] पढ़े इलम ।
कै ओलिए[१३] बेकैद[१४] सोफी,[१५] पर छोड़े नहीं जुलम ॥ १०
कै सती सीलवंती, कै आरजा[१६] अरधांग ।
जती बरती पोसांगरी,[१७] ए अति सोभावे स्वांग ॥ ११

---

१. देव मन्दिर । २. जैन मन्दिर । ३. मीनार । ४. मस्जिद । ५. विश्राम स्थल । ६. अत्याचारी । ७. प्याऊ । ८. छः दर्शनशास्त्रों के ज्ञाता । ९. नीचें । १०. साधुओं की जाति विशेष । ११. बोरी वाले साधु । १२. ज्ञानी । १३. गुरु लोक । १४. स्वतन्त्र । १५. सूफी । १६. आर्या । १७ नगेड़ी साधू ।

कै जुगते जोगी जंगम, कै जुगते सन्यास ।
कै जुगते देह दमे, पर छोड़े नहीं जमफांस ॥ १२

कै सिवी कै वैस्नवी, कै साखी समरथ ।
लिए जो सारे गुमानें, सब खेले छल अनरथ ॥ १३

कै श्रीपात[१] ब्रह्मचारी, कै वेदिए वेदान्त ।
कै गए पुस्तक पढ़ते, परमहंस[२] सिद्धांत ॥ १४

कै अवतार तीर्थंकर,[३] कै देव दानव बड़े बल ।
बुजरक नाम धराईया, पर छोड़े न काहूं छल ॥ १५

कै होदी[४] बोदी[५] पाधरी,[६] कै चंडिका चामंड[७] ।
बिना हिसाबें खेलही, जाहेर छल पाखंड ॥ १६

कै डिम्भ[८] करामात, कै जंत्र मंत्र मसान ।
कै जड़ी मूली ओषदी, कै गुटका धात रसान[९] ॥ १७

कै जुगते सिध साधक, कै व्रत धारी मुन[१०] ।
कै मठ वाले पिंड पाले, कै फिरे होए नगन[११] ॥ १८

कै षट[१२] चक्र नाड़ी पवन, कै अजपा अनहद ।
कै त्रिवेनी त्रिकुटी, जोती सोहं राते सबद ॥ १९

कै संत जो महंत, कै देखीते डिगम्बर[१३] ।
पर छल ना छोड़ें काहूं को, कै कापड़ी[१४] कलंदर ॥ २०

कै आचारी अपरसी,[१५] कै करें कीरतन ।
यों खेलें जुदे जुदे, सब पड़े बस मन ॥ २१

कै कीरतन करें बैठे, कै जाग जगन ।
कै कथें ब्रह्म ग्यान, कै तपे पंच अगिन ॥ २२

कै इन्द्री करे निग्रह,[१६] मन ल्याए कष्ट मोह ।
कै उरध ठाड़ेसरी,[१७] कै बैंठे खुद होए ॥ २३

---

१. वेषधारी । २. परम ज्ञानी । ३. जैन साधू । ४. साधु विशेष । ५. साधु विशेष । ६. पादरी । ७. चामुण्डा के उपासक । ८. आडम्बर । ९. रसायन खाने वाले । १०. मुनि । ११. नंगे । १२. शरीरस्थ छः चक्र । १३. दिगम्बर । १४. साधु विशेष । १५. छुआ-छूत मानने वाले । १६. संयम । १७. ऊँधे खड़े होने वाले ।

कै फिरे देस देसांतर, कै करे काओस[१] ।
कै कपाली[२] अघोरी,[३] कै लेवें ठंड पाओस[४] ॥ २४

कै पवन दूध आहारी, कै ले बैठत हैं नेम ।
कै कैद ना करे कछुए, ए सब छल के चेन[५] ॥ २५

कै फल फूल पत्र भखी, कै आहार अलप[६] ।
कै करे काल की साधना, जिया चाहें कलप[७] ॥ २६

कै धारा गुफा झांपा, कै जो गाले तन ।
कै सूके बिना खाए, कै करें पिंड पतन ॥ २७

यों वैराग जो साधना, करे जुदे जुदे उपचार ।
यों चले सब पंथ पैंड़े,[८] यों खेले सब संसार ॥ २८

खेले सब देखा देखी, ज्यों चले चींटी हार ।
यों जो अंधे गफलती, बांधे जाए कतार ॥ २९

कोई ना चीन्हे आप को, ना चीन्हें अपना घर ।
जिमी पैंड़ा ना सूझे काहूं, जात चले इन पर ॥ ३०

बाजीगर न्यारा रह्या, ए खेलत कबूतर ।
तो कबूतर जो खेल के, सो क्यों पावें बाजीगर ॥ ३१

अब देखो ले माएने, खेल बिना हिसाब ।
आप अकलें देखिए, ए रच्यो खसमें ख्वाब ॥ ३२

धरे नाम खसम के, जुदे जुदे आप अनेक ।
अनेक रंगे संगे ढंगे, बिध बिध करे विवेक ॥ ३३

खसम एक सबन का, नाहिन दूसरा कोए ।
एह विचार तो करे, जो आप सांचे होए ॥ ३४

खेल खेले आप रबदें,[९] मिनों मिने करें क्रोध ।
जैसे मछ गलागल,[१०] छोड़े ना कोई ब्रोध ॥ ३५

॥ प्रकरण ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ ३४५ ॥

---

१. साधना वाले । २. नर मुण्डो की माला पहनने वाला । ३. औघड़ । ४. ओस झेलने वाले । ५. चिह्न । ६. अल्प । ७. कल्प । ८. राह । ९. तकरार । १०. एक दूसरे से भिड़ना ।

## पंथ पैंड़ों की खेंचा खेंच

कोई कहे दान बड़ा, कोई केहेवे ग्यान ।
कोई कहे विग्यान बड़ा, यों लड़े सब उनमान[1] ।। १

कोई केहेवे करम बड़ा, कोई केहेवे काल ।
कोई कहे साधन बड़ा, यों लड़े सब पंपाल[2] ।। २

कोई कहे बड़ा तीरथ, कोई कहे बड़ा तप ।
कोई कहे सील बड़ा, कोई केहेवे सत ।। ३

कोई कहे विचार बड़ा, कोई कहे बड़ा व्रत ।
कोई कहे मत बड़ी, या बिध कैं जुगत ।। ४

कोई कहे बड़ी करनी, कोई कहे मुगत ।
कोई कहे भाव बड़ा, कोई कहे भगत ।। ५

कोई कहे कीरतन बड़ा, कोई कहे सरवन[3] ।
कोई कहे बड़ी बंदनी, कोई कहे अरचन ।। ६

कोई कहे ध्यान बड़ा, कोई कहे धारन ।
कोई कहे सेवा बड़ी, कोई कहे अरपन ।। ७

कोई कहे संगत बड़ी, कोई कहे बड़ा दास ।
कोई कहे विवेक बड़ा, कोई कहे विस्वास ।। ८

कोई कहे सदा सिव बड़ा, कोई कहे आद नारायन ।
कोई कहे आदें आद[4] माता, यों लरें तानों तान ।। ९

कोई केहेवे स्वांत बड़ी, कोई कहे तामस ।
कोई केहेवे पन बड़ा, यों खेलें परे परबस ।। १०

कोई कहे आतम बड़ी, कोई कहे परआतम ।
कोई कहे अहंकार बड़ा, जो आद का उतपन ।। ११

१. अनुमान । २. झूंठ । ३. श्रवण । ४. आदि शक्ति ।

कोई कहे सकल व्यापी, देखीतां सब ब्रह्म ।
कोई कहे ए न लह्या, यों लरें भूले भरम ॥ १२

कोई कहे सुंन बड़ी, कोई कहे निरंजन ।
कोई कहे निरगुन बड़ा, यों लड़े वेद वचन ॥ १३

कोई कहे आकार बड़ा, कोई कहे निराकार ।
कोई केहेवे तेज बड़ा, यों लड़े लिए विकार ॥ १४

कोई कहे पारब्रह्म बड़ा, कोई कहे परषोत्तम ।
यों वेद के बाद अंधकारें, करें लड़ाई धरम ॥ १५

जाहिर झूठा खेलहीं, हिरदे अति अंधेर ।
कहे हम सांचे और झूठे, यों फिरे उलटे फेर ॥ १६

पंथ सारों की एह मजल,[1] अनेक बिध बैराट ।
ए जो विगत खेल की, सब रच्यो छल को ठाट ॥ १७

कोई हेम गले अगनी जले, कोई भैरव करवत[2] ले ।
खसम को पावे नहीं, जो तिल तिल काटे देह ॥ १८

भेष जुदे जुदे खेलही, जाने खेल अखंड ।
ए देत देखाई सब फना, मूल बिना ब्रह्मंड ॥ १९

खसम एक सबन का, नाहिन दूसरा कोए ।
ए विचार तो करे, जो आप सांचे होए ॥ २०

खेलें सब बेसुध में, कोई बोल काढ़े विसाल ।
उतपन सारी मोह की, सो होए जाए पंपाल ॥ २१

बिना दिवालें लिखिए, अनेक चित्रामन ।
सो क्यों पावे खुद को, जाको मूल मोह सुंन ॥ २२

अनेक किव इत उपजे, बैराट सचराचर ।
ए छल मोहोरे छल को, खेलत हैं सत कर ॥ २३

॥ प्रकरण ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ ३६८ ॥

---

१. मन्जिल । २. भयानक कुंड ।

## बैंराट का कोहेड़ा

बैंराट का फेर उलटा, मूल है आकास ।
डारें पसरी पाताल में, यों कहे वेद प्रकास ॥ १

फल डारें आगोचर,[1] आड़ी अंतराए पाताल ।
बैराट वेद दोऊ कोहेड़ा,[2] गूंथी सो छल की जाल ॥ २

बिध दोऊ देखिए, एक नाभ[3] दूजा मुख[4] ।
गूंथी जालें दोउ जुगतें, मान लिए सुख दुख ॥ ३

कोहेड़े दोउ दो भांत के, एक वैंराट दूजा वेद ।
जीव जालों जाली बांधे, कोई जाने ना छल भेद ॥ ४

देखलावने तुम को, कोहेड़े किए ए ।
बताए देऊं आंकड़ी,[5] छल बल की है जेह ॥ ५

आंकड़ी एक इन भांत की, बांधी जोरसों ले ।
आतम झूठी देखहीं, सांची देखें देह ॥ ६

करें सगाई देह सों, नहीं आतमसों पेहेचान ।
सनमंध पालें इनसों, ए लई सबों मान ॥ ७

नहवाए चरचे अरगजे,[6] प्रीते जिमावे पाक ।
सनेह करके सेवही, पर नजर बांधी खाक ॥ ८

जीव गया जब अंग थें, तब अंग हाथों जाले ।
सेवा जो करते सनेह सों, सो सनमंध ऐसा पाले ॥ ९

हाथ पांव मुख नेत्र नासिका, सब सोई अंग के अंग ।
तिन छूत लगाई घर को, प्यार था जिन संग ॥ १०

अंग सारे प्यारे लगते, खिन एक रह्यो न जाए ।
चेतन चले पीछे सो अंग, उठ उठ खाने धाए ॥ ११

---

१. इन्द्रियातीत । २. धुंध । ३. वैराट का मूल । ४. वेदों का मूल । ५. उलझन ।
६. सुगन्धित लेप ।

सनमंधी जब चल गया, अंग बैर उपज्या ताए ।
सो तबही जलाए के, लियो सो घर बटाए ॥ १२

छोड़ सगाई आतंम की, करे सगाई आकार ।
बैराट कोहेड़ा या विध, उलटा सो कै परकार ॥ १३

कै बिध यों उलटा, वैराग नेत्रों अंध ।
चेतन बिना कहे छूत लागे, फेर तासों करे सनमंध ॥ १४

एक भेष जो विप्र का, दूजा भेष चंडाल ।
जाके छुए छूत लागे, ताके संग कौन हवाल ॥ १५

चंडाल हिरदे निरमल, खेले संग भगवान ।
देखलावे नहीं काहू को, गोप राखे नाम ॥ १६

अंतराए नहीं खिन की, सनेह सांचे रंग ।
अहिनिस द्रष्ट आतम की, नहीं देहसों संग ॥ १७

विप्र भेष बाहेर दृष्टी, खट[1] करम पाले वेद ।
स्याम खिन सुपने नहीं, जाने नहीं ब्रह्म भेद ॥ १८

उदर कुटंम कारने, उतमाई देखावे अंग ।
व्याकरन वाद विवाद के, अरथ करे कै रंग ॥ १९

अब कहो काके छुए, अंग लागे छोत ।
अधम तम विप्र अंगे, चंडाल अंग उदद्योत ॥ २०

पेहेचान सबों को देह की, आतम की नहीं दृष्ट ।
वैराट का फेर उलटा, इन बिध सारी सृष्ट ॥ २१

एक देखो ए अचंभा, चाल चले संसार ।
जाहेर है ए उलटा, जो देखिए कर विचार ॥ २२

सांचे को झूठा कहें, झूठे को कहें सांच ।
सो भी देखाऊं जाहेर, सब रहे झूठे रांच[2] ॥ २३

---
१. छः कर्म, पढ़ना-पढ़ाना, यज्ञ करना-कराना, दान देना-लेना । २. अनुरक्त होना ।

आकार को निराकार कहे, निराकार को आकार ।
आप फिरे सब देखें फिरते, असत यों निरधार ॥ २४

मूल बिना वैंराट खड़ा, यों कहे सब संसार ।
तो ख्वाब के जो दम आपे, ताए क्यों कहिए आकार ॥ २५

आकार न कहिए तिनको, काल को जो ग्रास ।
काल सो निराकार है, आकार सदा अविनास ॥ २६

जिन रांचो मृग—जल[1] दृष्टें, जाको नाम परपंच ।
ए छल मायाएं किया, ऐसे रचे उलटे संच ॥ २७

॥ प्रकरण ॥ १६ ॥ चौपाई ॥ ३८५ ॥

## वेदका कोहेड़ा

अब कहूं कोहेड़ा वेद का, जाकी मीहीं[2] गूंथी जाल ।
याकी भी नेक केहेके, देऊं सो आंकड़ी टाल ॥ १

वैंराट आकार ख्वाब का, ब्रह्मा सो तिनकी बुध ।
मन नारद फिरे दसो दिस, वेदें बांध किए बेसुध ॥ २

लगाए सब रबदें, व्याकरन वाद अंधकार ।
या बुधें बेसुध हुए, विवेक खाली विचार ॥ ३

बंध बांधे या बिध, हर वस्त के बारे नाम ।
सो बानी ले बड़ी कीनी, ए सब छल के काम ॥ ४

लुगे लुगे के जुदे माएने, द्वादस के परकार ।
उलटाए मूल माएने, बांधे अटकलें[3] अपार ॥ ५

अरथ को डालने उलटा, अनेक तरफों ताने ।
मूढ़ों को समझावने, रेहेस बीच में आने ॥ ६

ऐसी कै आंकड़ियों मिने, बोलें बारे तरफ ।
रेहेस रंचक धरें बीचमें, समझाए ना किन हरफ ॥ ७

---

१. रेत में पानी का भ्रम होना । २. बारीक । ३. अनुमान ।

बारे तरफों बोलते, एक अख्यर[1] एक मात्र[2] ।
ऐसे बांध बतीस स्लोकमें, बड़ा छल किया है सास्त्र ॥ ८

बारे मात्र एक अख्यर को, अख्यर स्लोक बतीस ।
छल एते आड़े अरथके, और खोज करे जगदीस ॥ ९

अरथ आड़े कै छल किए, तिन अरथों में कैं छल ।
अख्यरा अरथ भी ना होवही, किया भावा अरथ अटकल ॥ १०

जाको नामैं संस्कृत, सो तो संसेही की कृत ।
सो अरथ दृढ़ क्यों होवही, जो एती तरफ फिरत ॥ ११

सो पढ़े पंडित जुध करें, एक काने[2] को टुकड़े होए ।
आपसमें जो लड़ मरें, एक मात्र ना छोड़ें कोए ॥ १२

ए बाद बानी सिर लेवही, सुध बुध जावे सान ।
त्रास स्वांत न होवे सपने, ऐसा व्याकरन ग्यान ॥ १३

ए बानी ले बड़ी कीनी, दियो सो छल को मान ।
सो खेंचा खेंच ना छूटही, लिए क्रोध गुमान ॥ १४

ए छल पंडित पढ़हीं, ताए मान देवें मूढ़ ।
बड़े होए खोले माएने, एह चली छल रूढ़ ॥ १५

सीधी इन भाषा मिने, माएने पाईए जित ।
जो सबद सब समझहीं, सो पकडें नहीं पंडित ॥ १६

एक अरथ ना करे सीधा, ए जाहेर हिंदुस्तान ।
अरथ को डालने उलटा, जाए पढ़े छल बान ॥ १७

ए खेल जाको सोई जाने, दूजा खेल सब छल ।
ए छल के जीव ना छूटे छल थें, जो देखो करते बल ॥ १८

एक उरझन वैंराटकी, दूजी वेद की उरझन ।
ए नेक कही मैं तुमको, पर ए छल किया अति घन ॥ १९

---

१. अक्षर । २. मात्रा ।

मुख उदर के कोहेड़े, रचे मिने सुपन ।
ए सुध काहूं ना पड़ी मिने झीले मोह के जन ॥ २०
वैराट वेदों देख के, बूझ करी सेवा एह ।
देव जैसी पातरी, ए चलत दुनियां जेह ॥ २१
ए जो बोले साधू सास्त्र, जिनकी जैसी मत ।
ए मोहोरे उपजे मोहके, तिनको ए सब सत ॥ २२
तबक चौदे देखे वेदों, *निराकार लों वचन ।
उनमान आगे केहेके, फेर पड़े मांहें *सुंन ॥ २३
ए देखो तुम जाहेर, पांचो उपजे तत्व ।
ए मोह मिने मन खेलही, सब मन की उतपत ॥ २४
ए सारों में व्यापक, थावर और जंगम ।
सवन थें एक है न्यारा, याको जाने खसंम ॥ २५
दसो दिस भवसागर, देखत एह सुपन ।
आवरन गृद मोह को, निराकार कहावे सुंन ॥ २६
ए इंड सारा कोहेड़ा, खेल चौदे भवन ।
सुर असुर कैं अनेक भांते, हुआ छल उतपन ॥ २७
वनस्पती पसू पक्षी, आदमी जीव जंत ।
मच्छ कच्छ भवसागर, रच्यो एह परपंच ॥ २८
जीवों मिने जुदी जिनसे, कहिएत चारों खान ।
थावर जंगम सब मिलके, लाख चौरासी निरमान ॥ २९
कोई बैकुंठ कोई जमपुरी, कोई सरग पाताल ।
सब खेलें ख्वाबी पुतले, आड़ी मोह सागर पाल ॥ ३०
जो बनजारे खेल के, तिन सिर जम को डंड ।
कोईक दिन सरग मिने, पीछे नरक के कुंड ॥ ३१
लाठी तेरे लोक पर, संजमपुरी सिरदार ।
जो जाने नही जगदीस को, तिन सिर जम की मार ॥ ३२

ए छल बनज छोड़ के, करे बैकुंठ वेपार ।
ए सत लोक इन का, कोई गले निराकार ॥ ३३
तबक चौदे इंड में, जिमी जोजन कोट पचास ।
पहाड़ कुली अष्ट जोजन, लाख चौसठ बास ॥ ३४
पांच तत्व छठी आतमा, सास्त्र सबों ए मत ।
यों निरमान बांध के, ले सुपन किया सत ॥ ३५
देखे सातों सागर, और देखे सातों लोक ।
पाताल सातो देखिया, जागे पीछे सब फोक ॥ ३६

॥ प्रकरण ॥ १७ ॥ चौपाई ॥ ४३१ ॥

## प्रकरण अवतारों का

ए ऐसा था छल अंधेर, काहूं हाथ ना सूझे हाथ ।
बंध परे द्रष्ट देखते, तामें आया सारा साथ ॥ १
तो पिया मिने आए के, सब छुडाई सुहागिन ।
बोए के नूर प्रकासिया, बीज ल्याए मूल वतन ॥ २
ए खेल किया तुम खातर, तुम देखन आईयां जेह ।
खेल देख के चलसी, घर बातां करसी एह ॥ ३
तुम खेल देखन कारने, कियां मनोरथ एह ।
ए माय्या तुम वास्ते, कोई राखूं नहीं संदेह ॥ ४
ए खेल सांचा तो देख्या, जो अखंड करूं फेर ।
पार वतन देखाए के, उड़ाऊं सब अंधेर ॥ ५
ए दसों दिसा लोक चौदेके, विचार देखे वचन ।
मोह सागर मथ के, काढ़े सो पांच रतन ॥ ६
पेहेलें कहे मैं साथ को, इन पांचो के नाम ।
*सुकदेव और *सनकादिक, *कबीर सिव *भगवान ॥ ७
*नारायन विस्नु एक अंग, लखमी यार्थे उतपन ।
एह समावे याही में, ए नहीं वास्ना अंन ॥ ८

और एक कागद काढ़िया, *सुकदेवजी का सार ।
हदियों का कोहेड़ा, वेहदी समाचार ॥ ९

अवतार चौबीस विस्नु के, वैकुंठ थें आवें जाए ।
ए बिध जाहेर त्यों करूं, ज्यों सनंध सब समझाए ॥ १०

अवतार एकैस इनमें, तिन आड़ा हुआ कलपांत ।
और कहावें तीन बड़े, भी कहूं तिनकी भांत ॥ ११

अवतार एक *श्रीकृस्न का, मूल मथुरा प्रगटचा जेह ।
दीदार देवकी *वसुदेव को, दिया चतुरभुज एह ॥ १२

वचन कहे *वसुदेव को, फिरे वैकुंठ अपनी ठौर ।
पीछे प्रगटे दोए भुजा, सो सरूप सनंध और ॥ १३

वसुदेव गोकुल ले चले, ताए न कहिए अवतार ।
सो तो नहीं इन हद का, अखंड लीला है पार ॥ १४

ए कही सब तुम समझने, भानने मनकी भ्रांत ।
बेहद विस्तार है अति बड़ा, या ठौर आड़ा कलपांत ॥ १५

भी कहूं तुमें समझाए के, तुम भांनो धोखा मन ।
अवतार सो अक्रूर संगे, जाए लई मथुरा जिन ॥ १६

इनमें भी है आंकड़ी, विना तारतम समझी ना जाए ।
सो तुम दिल दे समझियो, नीके देऊं बताए ॥ १७

सात चार दिन भेष लीला, खेले गोवालों संग ।
सात दिन गोकुल मिने, दिन चार मथुरा जंग ॥ १८

धनुष भान गज मल मारे, तब हुए दिन चार ।
पछाड़ कंस वसुदेव छोड़े, या दिन थें अवतार ॥ १९

अब आई बात हद की, हिसाब चौदे भवन ।
सब बातें इत याही की, कहे अटकलें और वचन ॥ २०

जुध किया *जरासिंधसों, रथ आयुध आए छिन मांहि ।
तब कृस्न विस्नु मय भए, वैकुंठ में विस्नु तब नांहि ॥ २१

वैकुंठ थें जोत फिर आई, *सिसुपाल किया हवन ।
मुख समानी श्रीकृस्न के, यों कहे वेद वचन ॥ २२

किया राज मथुरा द्वारका, बरस एक सौ और बार ।
प्रभास सब संघार के, जाए खोले वैकुंठ द्वार ॥ २३

गोप हुता दिन एते, बड़ी बुध का अवतार ।
नेक अब याकी कहूं, ए होसी बड़ो विस्तार ॥ २४

कोईक काल बुध रास की, लई ध्यान में सकल ।
अब आए बसी मेरे उदर, वृध भई पल पल ॥ २५

अंग मेरे संग पाई, मैं दिया तारतम बल ।
सो बल ले वैराट पसरी, ब्रह्मांड कियो निरमल ॥ २६

दैत कालिगा[1] मार के, सब सीधा होसी ततकाल ।
लीला हमारी देखाए के, टालसी जम की जाल ॥ २७

दैत ऐसा जोरावर, देखो व्याप रह्या वैराट ।
काम क्रोध अहंकार ले, सब चले उलटी बाट ॥ २८

याको संघारसी एक सबदसो, बेर ना होसी लगार ।
लोक चौदे पसरसी, इन बुध सबदको मार ॥ २९

वैराट सारा लोक चौदे, चले आप अपनी मत ।
मन माने खेले सब कोई, ग्रास लिए असत ॥ ३०

मैं मारूं तो जो होए कछुए, ना खमें हरफ की डोट[2] ।
मेरी बुधें एक लवे से, ऐसे मरे कोटान कोट ॥ ३१

उठी है बानी अनेक आगम, याको गोप है उजास ।
वैराट सनमुख होएसी, बुध नूर के प्रकास ॥ ३२

चलसी सब एक चालें, दूजा मुख ना बोले वाक ।
बोले तो जो कछ होए बाकी, फोड़ उड़ायो तूल आक ॥ ३३

---

१. कलियुग । २. दबाव ।

अब एह वचन कहूं केते, देसी दुनियां को उद्धार ।
मेरे संग आए बड़ी निध पाई, सो *निराकार के पार ॥ ३४

पार बुध पाए पीछे, याको होसी बड़ो मान ।
अख्यर नेक ना छोड़े न्यारी, ए उदयो नेहेचल भान ॥ ३५

अवतार जो *नेहेकलंक को, सो अस्व अधूरो रह्यो ।
पुरुष देख्यो नहीं नैनों, तुरी को कलंकी तो कह्यो ॥ ३६

अवतार या बुध के पीछे, अब दूसरा क्यों कर होए ।
विकार काढ़े विस्व के, सब किए अवतार से सोए ॥ ३७

अवतार से उत्तम हुए, तहां अवतारका क्या काम ।
जहां जमे हुआ सब का, दूजा नेक न राख्या नाम ॥ ३८

जहां पैए बताए पार के, हुआ नेहेचल नूर प्रकास ।
तित अगिए अवतार में, क्या रह्या उजास ॥ ३९

समझियो तुम या बिध, अवतार ना होवे अंत ।
पुरुष तो पेहेले ना कह्यो, विचार देखो वचन ॥ ४०

॥ प्रकरण ॥ १८ ॥ चौपाई ॥ ४७१ ॥

## गोकल लीला

जिन किनको धोखा रहे, जुदे कहे अवतार ।
तो ए किनकी बुधें विस्नु को, जगाए पोहोंचाए पार ॥ १
सुकें अवतार सब कहे, पर बुध में रह्या उरझाए ।
ए भी सीधा ना कहे सक्या, तो क्यों इन कही जाए ॥ २
ए तो अख्यरातीत की, लीला हमारी जेह ।
पेहेलें संसा सबका भान के, पीछे नेक कहूं बिध एह ॥ ३
वैराट की बिध कही तुमको, जिन कछू राखो संदेह ।
अखंड गोकल[1] और प्रतिबिंब, ए भी समझाऊं दोए ॥ ४

---
१. गोकुल गाँव ।

ए खेल देख्या तो सांचा, जो अखंड करूं इन बेर ।
पार वतन देखाए के, सब उड़ाऊं अंधेर ॥ ५

अंतराए नहीं एक खिन की, अखंड हम पें उजास ।
रास लीला श्रीकृस्न गोपी, खेल सदा अविनास ॥ ६

प्रतिबिंब लीला या दिन थें, फेर के गोकल आए ।
चले मथुरा द्वारका, वैकुंठ बैठे जाए ॥ ७

*तारतम तूर प्रगटचा, तिन तेजें फोरचो आकास ।
लागी सिखर पाताल लों, अब रहे ना पकरचो प्रकास ॥ ८

किरना सबमें कुलांभियां,[1] गयो वैराट को अग्यान ।
ढ्ढ़ाए चित चौदे लोकको, उड़ाए दियो उनमान ॥ ९

अब जोत पकरी ना रहे, बीच में बिना ठौर ।
पसरके देखाईया, व्रज अखंड जो और ॥ १०

बताए देऊं बिध सारी, व्रज बस्यो जिन पर ।
अग्यारे बरस लीला करी, रास खेल के आए घर ॥ ११

गोकुल जमुना त्रट भला, पुरा ब्यालीस बास ।
पुरा पासे एक लगता, ए लीला अखंड विलास ॥ १२

बास बस्ती बसे घाटी, तीन खूंने[2] गाम ।
कांठे[3] पुरा टींबा[4] ऊपर, उपनंद का ए ठाम ॥ १३

तरफ दूजी पुरे सारे, बीच बाट धेन का सेर[5] ।
इत खेले नंद नंदन, संग गोवालों के घेर ॥ १४

पुरा पटेल सादूल का, बसे तरफ दूजी ए ।
तरफ तीसरी व्रखभानजी, बसे नाके[6] तीनों ले ॥ १५

नंदजी के पुरे सामी, दिस पूरब जमुना त्रट ।
छूटक छाया बनसपती, वृध आड़ी डालों बट ॥ १६

---

१. फोड़ कर निकल गई । २. कोने । ३. एक किनारे । ४. टीला । ५. चारागह । ६. प्रवेश द्वार ।

सकल बन छाया भली, सोभित जमुना किनार ।
अनेक रंगे बेलियां, फल सुगंध सीतल सार ॥ १७

तीन पुरे तीन मामों के, वसे ठाट वस्ती मिल ।
आप सूरे तीनों ही, पुरे नंद के पाखल[1] ॥ १८

गांगा चांपा और जेता, ए मामा तीनों के नाम ।
दखिन दिस और पछिम दिस, बसे फिरते गाम ॥ १९

नंदजी के आठ मंदिर, मांडवे एक मंडान ।
पीछे बाड़े गौओं के, तामें आथ सरवे जान ॥ २०

रेत झलके आंगने, दूध चरी[2] चूल्हा आगल ।
आईजी इन ठौर बैठे, और बैठें सखियां मिल ॥ २१

मंदिर मोदी *तेजपाल को, इत चरी चूल्हा पास ।
कोईक दिन आए रहै, याको मथुरा में बास ॥ २२

सरूप दस इत आरोगे, पाक साक अनेक ।
भागवंती बाई भली पेरे, रसोई करे विवेक ॥ २३

लाड़लो नंद जसोमती, *रोहिनी *बलभद्र बाल ।
पालक[3] पुत्र कल्यानजी, वाको पुत्र गोपाल ॥ २४

बेहेने दोऊ जीवा रूपा, भेलियां रहे मोहोंलान ।
और बाई भागवंती, नारी घर कल्यान ॥ २५

पुरो जो व्रषभान को, भेलो भाई लखमन ।
नंदजी के उत्तर दिसे, वसत वास पूरन ॥ २६

सरूप साते भली भांते, आरोगे अंन पाक ।
कल्यान बाई रसोई करे, बिध बिध के बहु साक ॥ २७

राधाबाई पिता बृषभानजी, प्रभावती बाई मात ।
सुदामा कल्यानजी, याथें छोटो कृस्नजी भ्रात ॥ २८

१. पीछे । २. चढ़ा हुआ । ३. गोद लिया पुत्र ।

कल्यान बाई नारी सुदामा, अंग धरत अति बड़ाई ।
करत हांसी कै भांतें, याकी स्यामसों सगाई ॥ २९

मंदिर छे मांडवे आगे, चरी चड़े दूध माट ।
स्यामा गोद प्रभावती, ले बैंठत हैं खाट ॥ ३०

मांगा किया राधाबाई का, पर व्याहे नहीं प्राननाथ ।
मूल सनमंधे एके अंगे, विलसत वल्लभ साथ ॥ ३१

घुरसे गोरस हेत में, घर घर होत मथन ।
खेले सब में सांवरो, मिने बाहेर आंगन ॥ ३२

पुरे सारे बीच चौरे, बैंठे गोप बूढ़े भराए ।
चारो पोहोर गोठ[1] घूघरी,[2] खेलते दिन जाए ॥ ३३

और सबे गौचारने, गोप गोवाला जाए वन ।
भोर के बन संझा लों, यों होत ब्रज वरतन ॥ ३४

तेजपाल मोदी[3] बलोट[4] पूरे, जो कछू चाहिए सोए ।
घृत लेवे बड़े बड़े ठोरों, और विरतियां होए ॥ ३५

घोलिए[5] इत घोल करने, आवत ब्रज में जे ।
फेर जाए रहे मथुरा, वस्त भाव ले दे ॥ ३६

स्याम संग गोवाल ले, खेलत जमना घाट ।
विनोद में हम आवें जाएं, जल भरने इन बाट ॥ ३७

विलास ब्रज में पियाजीसों, वरतत है एह बात ।
वचन अटपटे वेधे सब को, अहिनिस एही तात ॥ ३८

पिया प्रेमें भीगे खेलही, पुरे सारों मांहि ।
खेले खिन जासों ताए दूजा, सूझे नहीं कछुए कांहि ॥ ३९

हम संग खेले कै रंगे, जाते जमुना पानी ।
आठो पोहोर अटकी अंगे, एह छब एह बानी ॥ ४०

---

१. गोष्ठी । २. उबले चना । ३. बनिया । ४. आदान-प्रदान । ५. व्यावहारिया ।

घर घर आनंद उछव, उछरंग अंग न माए ।
विलास विनोद पिया संगे, अहेनिस करते जाए ॥ ४१

सुंदर बालक मधुरी बानी, घर ल्यावें गोद चढ़ाए ।
सेज्याएं खिन में प्रेमे पूरा, सुख देवें चित चाहें ॥ ४२

बाछरू ले वन पधारे, आठवें दसवें दिन ।
कबू गोवरधन फिरते, मांहें खेलें बारे वन ॥ ४३

अखंड लीला अहिनिस, हम खेलें पिया के संग ।
पूरे पीउजी मनोरथ, ए सदा नवले रंग ॥ ४४

श्री राज ब्रज आए पीछे, ब्रज बधु मथुरा ना गई ।
कुमारका संग खेल करते, दान लीला यों भई ॥ ४५

खेल खेलें कुमारका, चीले कुल अम्यास ।
दूध दधी छोटे बासन, करे रंग रस बन विलास ॥ ४६

ब्रज वधू मिने खेलने, संग केतिक जाए ।
सांवरो इत दान लेने, करे आड़ी लकुटी ताए ॥ ४७

दूघ दधी माखन ल्यावें, हम पियाजी के काज ।
तित दधी हमारा छीन के, देवें गोवालों को राज ॥ ४८

भाग जाएं ग्वाल न्यारे, हम पकड़ राखें पीउ पास ।
पीछे हम एकांत पिया संग, करें वन में विलास ॥ ४९

कुमारका हम संग रेहेती, पीउ खेलते सखियन ।
मूल सनमंध कुमारकाओं का, या दिन थें उतपन ॥ ५०

अखंड लीला अति भली, नित नित नवले रंग ।
इन जोत सब जाहेर किया, हम सखियां पिया के संग ॥ ५१

आवे जब उजालियां, हम खेलें लेकर ढोल ।
पिया करें विनोद हांसियां, सो कहे न जाए बोल ॥ ५२

उलसे गोकल गाम सारा, हेत हरष अपार ।
धन धान वस्तर भूषन, द्रव्य अखूट भंडार ॥ ५३

जनम व्याह नित प्रते, सारे पुरे अनेक होए ।
नेक कारज करे कछुए, तो बुलावे सब कोए ।। ५४

नाटारंभ कै बाजंत्र, धन खरचें अहीर उमंग ।
साथ सब सिनगार कर, हम आवें अति उछरंग ।। ५५

बलगें विनोदें हमसों, देखते सब जन ।
पर कोई न विचारे उलटा, सब कहे एह निसन[१] । ५६

वात याकी जानें हम, और जाने हमारी एह ।
ना समझे कोई दूसरा, ए अंदर का सनेह ।। ५७

ए होंत है हम कारने, पिया पूरे मनोरथ मन ।
इन समे की में क्या कहूं, साथ सबे धंन धंन ।। ५८

व्रज सारी करी दिवानी, और पिया तो वचिख्यन[२] ।
जहां मिले तहां एही बातें, विनोद हांस रमन ।। ५९

नंद जसोदा ग्वाल गोपी, धेन वछ जमुना बन ।
थिर चर सब पसु पंछी, नित नित लीला नोतन ।। ६०

अब ए लीला कहूं केती, अलेखें अति सुख ।
बरस अग्यारे खेले प्रेमें, सखियनसों सनमुख ।। ६१

एक दिन गौ चारने, पीउ पोहोंचे वृन्दावन ।
गोवाला गौ सब ले वले, पीछे जोग माया उतपन ।। ६२

ए लीला यामें एते दिन, कालमाया को ब्रह्मंड ।
एह कलपांत करके, फेर उपज्यो अखंड ।। ६३

सदा लीला जो ब्रज की, मैं कही जो याकी बिध ।
अब कहूं वृन्दावन की, ए तो अति बड़ी है निध ।। ६४

।। प्रकरण ।। १६ ।। चौपाई ।। ५३५ ।।

---

१. बालक । २. चतुर ।

## *जोगमाया को प्रकरन

अब जोत पकरी ना रहे, दूजा बेधिया आकास ।
जाए लिया इंड तीसरा, जहां अखंड रजनी रास ॥ १

इन दोउ थें न्यारा मंडल, जाको कहियत[1] हैं रास ।
तहां खेल स्याम सखियनका, ए लीला अविनास ॥ २

या ठौर जोगमाया रच्यो, सब सामग्री समेत ।
तहां हद सबद ना पोहोंचही, तुमे तो भी कहूं संकेत ॥ ३

जिनस[2] जुगत कहूं केती, अनेक सुख अखंड ।
जोगमायाए उपाईया[3], कोई सुख सरूपी ब्रह्मांड ॥ ४

ए बानी नीके विचारियो, अंतर माहें बाहेर ।
तुमें जगाऊं कर जागनी, देखाय देऊं जाहेर ॥ ५

क्योंए न आवे सबद में, जोगमाया की बिध ।
तो भी देखाऊं कछुएक, लीला हमारी निध ॥ ६

हम देखे वृन्दावन इतथें, तहां भी खेलें पिया साथ ।
करें विनोंद नित नए, बनहीं मिने विलास ॥ ७

काहू न पाईए जोगमायाकी, हम विना पेहेचान ।
वासना *पांचो अख्यर की, भले कहावें आप सुजान ॥ ८

ए माया हमारियां, याके हमपें विचार ।
और उपजे सब इनथें, ए हमारी आग्या कार ॥ ९

रासलीला पेहेलें करी, जो मिने वृन्दावन ।
आनंद कारी *जोगमाया, अविनासी उतपंन ॥ १०

जोगमाया की जुगत जुई, एक रस एक रंग ।
एक संगे सदा रेहेना, अंगना एकै अंग ॥ ११

---

१. कहा है । २. वस्तुएं । ३. उपजाया ।

आतम सदा एक है, वासना एकै अंग ।
मूल आवेस *जोगमाया पर, सुख अखंड के रंग ॥ १२

एक अंगे रंगे संगे, तो क्यों हुई अंतराए ।
इन सबद में है आंकड़ी,[1] बिना तारतम ना समझी जाए ॥ १३

आंकड़ी अंतरध्यान[2] की, सोए कहूं सनंध ।
कोई न जाने हम विना, इन तारतम के बंध ॥ १४

जगाए आवेस लेयके, तब इत भए अंतरध्यान ।
विलास विरह चित चौकस करने, याद देने घर धाम ॥ १५

जोगमाया की जुगतें, और न जाने कोए ।
और कोई तो जाने, जो कोई दूसरा होए ॥ १६

जोगमायाएं जाग्रत होए, जल जिमी वाए अगिन ।
थिर चर सब पसु पंक्षी, तत्व सबे चेतन ॥ १७

एक जरा तिन जिमी का, ताके आगे सूर कोट ।
सो सूरज द्रष्टें न आवही, इन 'जिमी जरे की ओट ॥ १८

हेम जवेर के बन कहूं, तो ए सब झूठी वस्त ।
सोभा जो अविनास की, कही न जाए मुख हस्त ॥ १९

बरनन करूं एक पात की, सो भी इन जुबां कही न जाए ।
कोट ससी[3] जो सूर कहूं, तो एक पात तले ढंपाए ॥ २०

सुतेज[4] ससी वन पसु पंक्षी, तत्व सबे सुतेज ।
सुतेज थिर चर जो कछू, सुतेज रेजा रेज ॥ २१

किरना बन जिमीय की, सांमी किरना ससी प्रकास ।
नूर हम पें खेले नूर में, प्रेम पियासों रास ॥ २२

वस्तर भूषन इन जिमी के, सो सुख कहे न जाएं ।
तो सुख इन सरूप के, क्यों कर इत बोलाएं ॥ २३

---

१. रहस्य । २. छिप जाना । ३. चन्द्रमा । ४. तेजोमय ।

इन सुख बातें बोहोत हैं, सो नेक कह्यो प्रकास ।
पर ए भी *जोगमाया मिने, जो कहिअत हैं अबिनास ॥ २४

या ठौर लीला करके, हम घर आए सब मिल ।
या इंड कलपांत[1] करके, फेर अखंड किए मिने दिल ॥ २५

हम तो सब धाम आए, अख्यर आपके घर ।
अखंड रजनी रास लीला, खेल होत या पर ॥ २६

हमही खेलें ब्रज रास में, हमही आए इत ।
घरों बैठे हम देखहीं, एही तमासा तित ॥ २७

देखे ब्रज रास नीके, खेल किया पर पर ।
ले भोग विरहे विलास को, हम आए निज घर ॥ २८

देखे दोऊ सुख दुख, तो भी कछुक रह्यो संदेह ।
सत सरुपें तो फेर, मंडल रचियो एह ॥ २९

ए खेल किया हम वास्ते, हम देखन आईयां ए ।
दोऊ के मनोरथ पूरने, ए रच्या तमासा ले ॥ ३०

खेल रचे सुपन के, देखाए मिने सुपन ।
ए देखे हम न्यारे रहे, कोई और न देखे जन ॥ ३१

ए खेल सुहागनियों को, देखाए भली भांत ।
तारतम बुध प्रकास के, पूरी सबों की खांत[2] ॥ ३२

खेल देख्या जो हम, सो थिर होसी निरधार[3] ।
सारों मिने सिरोमन, होसी अखंड ए संसार ॥ ३३

भगवान जी आए इत, जागवे को ततपर ।
हम उठसी भेलें[4] सब, जब जासी[5] हमारे घर ॥ ३४

प्रकास कह्यो मैं रास को, एह सुन्यो तुम सार ।
अब *महामत कहें सो सुनो, दया को विस्तार ॥ ३५

॥ प्रकरण ॥ २० ॥ चौपाई ॥ ५७० ॥

१. मिटा कर । २. चाह । ३. निश्चित । ४. इकट्ठे । ५. जाएंगे ।

## दया को प्रकरन

अब तो मेरे पिया की, दया न समावे इंड ।
ए गुन मुझे क्यों विसरे, मोसों हुए सब अखंड, सुहागनियों पिया दया गुन कैसे कहूँ ॥ १

अब गली मैं दया मिने, सागर सरूपी खीर[1] ।
दया सागर भर पूरन, एक बूंद नहीं मिने नीर ॥ २

दया मुकट सिर छत्र चंवर, दया सिंघासन पाट ।
दया सबों अंगों पूरण, सब हुओ दया को ठाट ॥ ३

अब दया गुन मैं तो कहूं, जो कछू अंतर होए ।
अंगीकार करी अंगना, सो देखे सब कोए ॥ ४

पल पल आवे पसरती, न पाईया दया को पार ।
दूजा तो सब मैं मापिया, पर होए न दया को निरवार[2] ॥ ५

एते दिन हम घर मिने, गोप राखी सत जोत ।
अब बुध[3] खेंचे तरफ अपनी, तो जाहेर सत होत ॥ ६

सबद कोई कोई सत उठे, सो भी गए असतमें भिल ।
सत असत काहूं ना सुध, दोऊ रहे हिल मिल ॥ ७

अब दूर करूं असत को, जाहेर करूँ सत जोत ।
गोप रहीथी एते दिन, सो अब होत उद्योत[4] ॥ ८

असत भी करना अखंड, करके सत प्रकास ।
सनंध सब समझाए के, करूं तिमर सब नास ॥ ९

संसा सारा भान के, उड़ाऊं असत अंधेर ।
निज बुध उठ बैठ हुई, गयो सो उलटो फेर ॥ १०

अब फेर सब सीधा फिरे, सत आया सबों द्रष्ट ।
पेहेचान भई प्रकास थें, सुपन की जाहेर सृष्ट ॥ ११

---

१. दूध । २. हिसाब । ३. परमात्म बुद्धि । ४. प्रकासित ।

खेल देख्या कालमाया का, सो कालमाया में भिल[1] ।
अब देखो सुख जागनी, होसी निरमल दिल ॥ १२

आवेस मुझपें पिया को, तिन भेली करूं सुहागिन ।
सब सुहागिन मिल के, सुख लेसी मूल वतन ॥ १३

विलास तब बिध बिध के, होसी हरख अपार ।
करसी आनंद विनोद, आवसी *सकुंडल *सकुमार ॥ १४

आए रेहेसी सब सुहागनी, तब लेसी सुख अखंड ।
पीछे तो जाहेर होएसी, तब उलटसी ब्रह्मांड ॥ १५

हींसा देऊं आवेस का, सैयन को सब पर ।
होसी मनोरथ पूरन, मिल हरखे जागसी घर ॥ १६

अब साथ न छोड़ूं एकला, साथ मुझे छोड़े क्यों ।
कह्या मेरा साथ न लोपे, साथ कहे करूं मैं त्यों ॥ १७

लेस है *कालमाया को, बढ़चो साथ में विकार ।
सो गालूं सीतल नजरों, दे तारतम को खार ॥ १८

विकार काढूं विधोगतें,[2] बढ़ाए दया विस्तार ।
भानूं भरम तिन भांतसों, ज्यों आल[3] न आवे आकार ॥ १९

सुख देऊं मूल वतन के, कोई रच के भला रंग ।
मन वांछे मनोरथ, देऊं सुख सबों अंग ॥ २०

मोह बढ़चो लेस माया को, निद्रा मूल विकार ।
सुध होए सबों अंगों, कर देऊं तैसो विचार ॥ २१

जोलों न काढूं विकार, तोलों क्यों करके जगाए ।
जागे विना इन रास को, किन निज सुख लिए न जाए ॥ २२

आमले[4] उलटे मोह के, और मोह तो तिमर घोर ।
ए घोर रैन टालूं या बिध, ज्यों सब कोई कहे भयो भोर ॥ २३

---

१. मिल । २. युक्ति से । ३. खेंच । ४. कर्म ।

गुन पक्ष अंग इन्द्री उलटे, करत हैं सब जोर ।
सो सब टेढ़े टाल के, कर देऊं सीधे दोर[1] ॥ २४

अहंकार मन चित्त बुध, इन किए सब जेर[2] ।
अब हारे सब जिताएके, फेरूं सो उलटे फेर ॥ २५

प्रकृत सबे पिंड की, सीधी करूं सनमुख ।
दुख अगनी टाल के, देखाऊं ते अखंड सुख ॥ २६

चोर फेर करूं बोलावे, सुख सीतल करूं संसार ।
अंग में सबों आनंद, होसी हरष तुमे अपार ॥ २७

कोईक दिन साथ मोह जल में, लेहेर बिना पछताने[3] ।
कहे *महामत प्यारी मोहे वासना, ना सहूं मुख करमाने[4] ॥ २८

॥ प्रकरण ॥ २१ ॥ चौपाई ॥ ५६८ ॥

## हांसी का प्रकरन

मेरे साथ सममंधी चेतियो,[5] ए हांसी का है ठौर ।
पीउ वतन आप भूल के, कहा देखत हो और ॥ १

साथ जी तुमको उपजया, खेल देखन का ख्याल ।
जाको मूल नहीं बाधे तिन, ए हांसी का हवाल ॥ २

मांग्या खेल विनोंद का, तिन फेरे तुमारे मन ।
सो सब तुमको विसरे, जो कहे मूल वचन ॥ ३

गूंथो जाली दोरी बिना, आप बांधत हो अंग ।
अंग बिना तलफत हो, ए ऐसे खेल के रंग ॥ ४

आप बंधाने आप सों, इन कोहेड़े अंधेर ।
अमल चढ़या जानों जेहेर का, फिरत वाही में फेर ॥ ५

अमल चढ़या क्यों जानिए, कोई फिसले कोई गिरे ।
कोई मिने जाग के, कर पकर सींढ़ी चढ़े ॥ ६

---

१. रास्ते । २. परास्त । ३. दुःखी हुए । ४. कुम्हलाना । ५. सावधान ।

एक गिरे पगथी बिना, वाको दूजी पकरे कर ।
सो खाए दोनों गड़[1]—थले, ए हांसी है या पर ॥ ७

एक पड़ी जिमी जान के, वाको दूजी उठावन जात ।
उलट पड़ी सो उलटी, ए खेल है या भाँत ॥ ८

ओटा[2] लेवे जिमी बिना, पांव बिना दौड़ी जाए ।
जल बिना भवसागर, यामें गलचुए[3] खाए ॥ ९

देखों अंत्रीख खड़ियां, हाथ बिना हथियार ।
नीद बड़ो है जागते, पिंड बिना आकार ॥ १०

एक नई कोई आए मिले, सो कहावे आप अजान ।
बड़ी होए दूजी मिने, समझावत सुजान ॥ ११

कोई वचन करडे[4] कहे, किन खंडनी[5] न खमाए ।
सो कलपे दोऊ कलकले, वाको अमल यों ले जाए ॥ १२

खंडी[6] खाडी रोए रोलाए, दुख देखे दोऊ जन ।
जागे पीछे जो देखिए, तो कमी न मांहें किन ॥ १३

हांसी होसी साथ में, इन खेल के रस रंग ।
पूर बिना बहे जात हैं, कोई आडी होत अभंग ॥ १४

हरषे हांसी हेत में, करसी साथ कलोल ।
मांगी माया देखी नीके, कोई नाही हांसी या तोल ॥ १५

मूल बिना ए वृक्ष खड़ा, ताको फल चाहे सब कोए ।
फेर फेर लेने दौडही, ए हांसी इन बिध होए ॥ १६

ए खेल देख्या छल का, वैकुंठ लों पाताल ।
फल फूल पात ना दरखत, काष्ट[7] तुचा[8] मूल ना डाल ॥ १७

खुले ना बंध बिना बांधे, बिध बिध खोले जाए ।
ए माया मोहोरे खेल के, उरझ रहे सब मांहें ॥ १८

---

१. लड़खड़ाना । २. सहारा । ३. गोते । ४. कडुवे । ५. डांट फटकार । ६. झगड़ना । ७. लकड़ी । ८. त्वचा ।

जागो जगाऊं जुगत सों, छोड़ो नीद विकार ।
पेहेचान कराऊं पीउ सों, सुफल करूं अवतार ॥ १९

वतन देखाऊँ पीउ का, और अपनी मूल पेहेचान ।
एह उजाला करके, धोखा देऊं सब भान ॥ २०

ए भोम हांसी देख के, आप होत सावचेत ।
मूल सुख कहे महामत, तुमको जगाए के देत ॥ २१

॥ प्रकरण ॥ २२ ॥ चौपाई ॥ ६१९ ॥

## जागनी का प्रकरन

अब जाग देखो सुख जागनी, ए सुख सुहागिन जोग ।
तीन[1] लीला चौथी घर की, चारों को यामें भोग ॥ १

कह्या न जाए सुख जागनी, सत ठौर के सनेह ।
तो भी कहूं जिमी माफक, नेक प्रकासूं एह ॥ २

अब जगाऊं जुगत सों, उड़ाऊं सब विकार ।
रंगे रास रमाए के, सुफल करूं अवतार ॥ ३

अब दुख ना देऊं फूल पांखड़ी, देखूं सीतल नैन ।
उपजाऊं सुख सब अंगो, बोलाऊं मीठे बेन ॥ ४

आगे कलकली[2] कलाए, तोहू ना गयो विकार ।
कठिन सही तुम खंडनी, वचन खांड़ा धार ॥ ५

सोए वचन मोहे सालही, कठिन तुमको जो कहे ।
सुहागनियों को निद्रा मिने, मूल घर विसर गए ॥ ६

अब गालूं ताओ[3] दिए बिना, करूं सो रस कंचन ।
कस चढ़ाऊं अति रंगे, दोऊ पेर करूं धंन धंन ॥ ७

जानूं साथजी विदेस आए, दुख देखे कै भांत ।
जो लों ना इत सुख पावही, तोलों ना मोहे स्वांत ॥ ८

---

१. वृज, रास, जागनी । २. दुःख होना । ३. तपाना ।

नैन चढ़ाए साथ न जागे, यों न जागनी होए ।
मूल घर देखाईए, तब क्यों कर रेहेवे सोए ॥ ९

खंडनी कर खीजिए, जागे नहीं इन भांत ।
दीजे आप ओलखाए के, यों साख[1] देवाए साख्यात ॥ १०

जगाऊं सुख याद देने, करूं आप अपनी बात ।
पीछे हम तुम मिलके, जाहेर कीजे विख्यात ॥ ११

आगे आवेस मोपें पिया को, दे अंग लई जगाए ।
निसंक निद्रा उड़ाए के, साख्यात लई बैठाए ॥ १२

अब रह्यो न जाए मैं नेक न्यारे, यों किए जागनी ले ।
अहंमेव[2] जाग्या धाम का, हम मिने आया जे ॥ १३

पेहेले *जोगमाया भई रास में, ताको सो अति उजास ।
पर साथ जोग होसी जागनी, ताको कह्यो न जाए प्रकास ॥ १४

अब विछोहा खिन एक साथ को, सो मैं सह्यो न जाए ।
अब नेक वाओ इन मायाकी, जानों जिन आवे ताए ॥ १५

साथजी इन जिमी के, सुख देऊं अति अपार ।
हंस हंस हेते हरष में, तुम नाचसी निरधार ॥ १६

प्रीतम मेरे प्रान के, अंगना आतम नूर ।
मन कलपे खेल देखते, सोए दुख करूं सब दूर ॥ १७

मुख करमाने मन के, सो तुमारे मैं ना सहूं ।
ए दुख सुख को स्वाद देसी, तो भी दुख मैं ना देऊं ॥ १८

सत सुख में सुख देवहीं, इन जिमी के दुख जेह ।
तुम हंसोगे हरष में, रस देसी दुखड़ा एह ॥ १९

हम उपाया सुख कारने, ए जो माग्या खेल तुम ।
दुख दे वतन बोलावही, ए इन घर नहीं रसम ॥ २०

---

१. साक्षी । २. आत्म गौरव ।

सेहेजल[1] सुख तुमें हैं सदा, अलप नहीं असुख ।
तुम सुख को स्वाद लेने, खेल माग्या ए दुख ॥ २१

खेल मांग्या दुख का, तब कह्या हम तुम ।
दुख का खेल तुमको, क्यों देखावें हम ॥ २२

दुख तो क्योंए देऊं नहीं, तो खेल देख्या क्यों जाय ।
खंत लागी खरी खेल की, तिनको सो एह उपाए ॥ २३

पिया हम खेल जान्या घरका, ज्यों खेल करत सदाए ।
हम खेल खडे यों देखसी, ए भी इन अदाए ॥ २४

वस्तोगते[2] दुख ना कछू, जो पीछे फेरो दृष्ट ।
जो देखो वचन जागके, तो नाहीं कछुए कष्ट ॥ २५

लगोगे जो दुख को, तो दुख तुमको लागसी ।
याद करो जो निज सुख, तो दुख तुमथें भागसी ॥ २६

फेर देखो जो नजरों, तो रेहेसी न्यारे दुख ।
करोगे इत खेल रंगे, विनोद बातें सुख ॥ २७

सागर सुख में झीलते, तहाँ दुख नहीं प्रवेस ।
तो दुख तुम मांगिया, सो देखाया लवलेस ॥ २८

पौढ़े[3] भेले जागसी भेले, खेल देख्या सबों एक ।
बातां करसी जुदी जुदी, बिध बिध की बिसेक ॥ २९

दुख तुमारे में ना सहूं, सो जानो चित चौकस ।
ए दुख देसी बोहोत सुख, खेल होसी रंग रस ॥ ३०

साथ को इन जिमी के, सुख देने को हरष अपार ।
रासमें रंग खेलाए के, भेले जागिए निरधार ॥ ३१

अब ल्योरे मेरे साथ जी, इन जिमी ए जो सुख ।
में तुमारे ना सेहे सकों, जो देखे तुम दुख ॥ ३२

---

१. सहज प्राप्त । २. वास्तव में । ३. सोए ।

लेहेर लगे तुमें मोह की, सो आतम मेरी ना सहे ।
अब खंडनी भी ना करूं, जानों दुखाऊं क्यों मुख कहे ॥ ३३

अब क्यों देऊं कसनी, मुख करमाने ना सहूं ।
तिन कारन सबद कठन, मेरे प्यारों को मैं क्यों कहूं ॥ ३४

अब तारूं तुमें या बिध, ज्यों लगे न लेहेर लगार[1] ।
सुखपाल में बैठाए सुखें, घर पोहोंचाऊं निरधार ॥ ३५

उपजाए देऊं अंग थें, रस प्रेम के परकार ।
प्रकास पूरन करके, सब टालूं रोग विकार ॥ ३६

अंग दिए बिना आवेस, नाहीं प्रेम उपाए ।
आवेस दे करूं जागनी, लेऊं अंग में मिलाए ॥ ३७

अब भेले तो सब चलिए, जो अंग ना काहूं अटकाए ।
तो तुमे होवे जागनी, जो सांचवटी[2] बटाए[3] ॥ ३८

अब दुख आवे तुमको, तहां आड़ा देऊं मेरा अंग ।
सुख देऊं भली भांतसों, ज्यों होए ना बीच में भंग ॥ ३९

ए लीला करूं इन भांतें, तो रास रंग खेलाए ।
बिध बिध के सुख विलसिए, विरहे जागनी सह्यो न जाए ॥ ४०

जगाए नीके सुख देऊं, रहस खेलाऊं रंग ।
सत सुख क्यों आवही, जोलों ना दीजे अंग ॥ ४१

अंगना को अंग दीजिए, अंगना लीजे अंग ।
पास[4] देऊं पूरा प्रेम का, नेहेचल का जो रंग ॥ ४२

असतसों उलटाए के, सतसों कराऊं संग ।
पर आतमसों बंध बांधूं, ज्यों होए ना कबहूं भंग ॥ ४३

पिउ जगाई मोहे एकली, मैं जगाऊं बांधे जुथ ।
ए जिमी झूठी दुख की, सो कर देऊं सत सुख ॥ ४४

---

१. जरा भी । २. सच्चा रहस्य । ३. दिया जाए । ४. लाग । (मसालारंग)

सब साथ करूं आपसा, तो मैं जागी परमान ।
जगाए सुख देऊं धाम के, मिलाए मूल निसान ॥ ४५

आवेस जाको मैं देखे पूरे, जोगमाया की नीद होए ।
पर जो सुख दीसे जागनी, हम बिना न जाने कोए ॥ ४६

जो जाग बैठे निज धाम में, ताए आवेस को क्या कहिए ।
तारतम तेज प्रकास पूरन, तिनथें सकल बिध सुख लहिए ॥ ४७

आवेस को नहीं अटकल, पर जागनी अति भारी ।
आवेस जागनी तारतम, जो देखो जुगत विचारी ॥ ४८

ए पइए बतावे पार के, नहीं तारतम को अटकल ।
आवेस जागनी हाथ पिया के, एह हमारा बल ॥ ४९

तारतम के सुख साथ आगे, बिध बिध पियाने कहे ।
पीछे ए सुख *इंद्रावती को, दया कर सारे दिए ॥ ५०

धंन पिया धंन *तारतम, धंन धंन सखी जो ल्याई ।
धंन धंन सखी मैं सुहागनी, जो मोंमें ए निध आई ॥ ५१

पिया ल्याए मुझ कारने, और न काहूं जान ।
मैं लिया पिया विलसिया, विस्तारिया परमान ॥ ५२

ए बानी साथमें पसरी, पर किया न साथे विचार ।
पीछे दया कर दई धनिएं, अंग इंद्रावती विस्तार ॥ ५३

बोहोत धन ल्याए धनी धाम थें, बिध बिध के परकार ।
सोए सब मैं तौलिया, तारतम सबमें सार ॥ ५४

तारतम को बल कोई न जाने, एक जाने मूल सरूप ।
मूल सरूप के चित की बातें, *तारतममें कै रूप ॥ ५५

साख्यात सरूप *इंद्रावती, तारतम को अवतार ।
वासना होसी सो बलगसी,[1] इन वचन के विचार ॥ ५६

---

१. लिपटना ।

सरूप साथकी पेहेचान, तारतममें उजास ।
जोत उदद्योत प्रगट पूरन, इंद्रावती के पास ॥ ५७

वास्नाओंकी पेहेचान, बानी करसी तिन ताल ।
निसंक निद्रा उड़ जासी, सुनते ही ततकाल ॥ ५८

एक लवा सुने जो वास्ना, सो संग ना छोड़े खिन मात्र ।
होसी सब अंगों गलित[1] गात्र, प्रगट देखाए प्रेम पात्र ॥ ५९

ए बानी सुनते जिनको, आवेस न आया अंग ।
सो नहीं नेहेचे वासना, ताको करूं जीव भेलो संग ॥ ६०

वास्ना जीव का बेवरा[2] एता, ज्यों सूरज दृष्टें रात ।
जीव का अंग सुपनका, वास्ना अंग साख्यात ॥ ६१

भी बेवरा वास्ना जीवका, याके जुदे जुदे हैं ठाम ।
जीवका घर है नीद में, वासना घर श्री धाम ॥ ६२

ना होए नया न पुराना, श्री धाम इन परकार ।
घटे बढ़े नहीं पत्र एक, सत सदा सरबदा[3] सार ॥ ६३

जो किन जीवे संग किया, ताको करूं ना मेलो भंग ।
सो रंगे भेलूं वास्ना, वास्ना सत को अंग ॥ ६४

तारतम तेज प्रकास पूरन, इंद्रावती के अंग ।
ए मेरा दिया मैं देवाए, मैं इंद्रावतीके संग ॥ ६५

इंद्रावती के मैं अंगे संगे, *इंद्रावती मेरा अंग ।
जो अंग सोंपे इंद्रावती को, ताए प्रेमें खेलाऊं रंग ॥ ६६

बुध तारतम जित भेलें, तित पेहेलें जानो आवेस ।
आग्या दया सब पूरन, अंग इंद्रावती परवेस ॥ ६७

सुख देऊं सुख लेऊं, सुखमें जगाऊं साथ ।
*इंद्रावतीको उपमा, मैं दई मेरे हाथ ॥ ६८

---

१. गला शरीर । २. अन्तर । ३. हमेशा ।

मैं दया तुमको करी, जो देखो नैनां खोल ।
ना खोलो तो भी देखोगे, छाया निकसी ब्रह्मांड फोड़ ।। ६९

ए खेल देख्या बैठे घरों, अग्याएँ सैयों नजर ।
जब अंतर आंखां खुली, तब द्रष्ट घरकी घर ।। ७०

निज नैनां देऊं खोलके, ज्यों आड़ी न आवे मोह सृष्ट ।
होसी पेहेचान सत सुख, निज वतन देखो दृष्ट ।। ७१

तारतमको जो तारतम, अंग इन्द्रावती विस्तार ।
पैए[1] देखावे पार के, तिन पार के भी पार ।। ७२

ब्रह्मांड दोऊ अखड किए, तामें लीला हमारी ।
तीसरा ब्रह्मांड अखंड करना, ए लीला अति भारी ।। ७३

तीन लीला माया मिने, हम प्रेमें विलसी जेह ।
ए लीला चौथी विलसते, अति अधिक जानी एह ।। ७४

एक सुख सुपनके, दूजे जागते ज्यों होए ।
तीन लीला पेहेलें ए चौथी, फरक एता इन दोए ।। ७५

पेहेलें द्रष्ट हमारे जो आईया, तेते मिने उजास ।
हम खेलें तिन उजासमें, और लोक सब को नास ।। ७६

अब लोक चौदे तरफ चारों, प्रकास होसी साथ जोग ।
जीव सब जगाए के, टालूं सो निद्रा रोग ।। ७७

हम जाहेर होए के चलसी, सब भेलें निज घर ।
वैराट होसी सनमुख, एक रस सचराचर ।। ७८

जब हम जाहेर हुए, सुध होसी संसार ।
दुनियां सारी दौड़सी, करने को दीदार[2] ।। ७९

हम सदा संग पिया के, जो रूहें सुहागिन ।
सो अग्यांएँ उठ बैठसी, सब अपने वतन ।। ८०

---

१. मार्ग । २. दर्शन ।

अवल सब सुहागनी, एक ठौर पिया पास ।
सबों सुख होसी सुहागनी, रंग रस प्रेम विलास ॥ ८१

ए जोत होसी जागनी, ए नूर बिना हिसाब ।
लोक चौदे पसरसी, तब उड़ जासी ए ख्वाब ॥ ८२

ए वानी तो करूं जाहेर, जो करना सबों एक रस ।
वस्त देखाए विना, वैराट न होवे बस ॥ ८३

वैराट बस किए बिना, क्यों कर होए अखंड ।
हम खेल देख्या इछाएं कर, सो भंग ना होए ब्रह्मांड ॥ ८४

अनेक आगे होएसी, इन वानी को विस्तार ।
ए नेक कह्या मैं करने, अखंड ए संसार ॥ ८५

ए वानी कही मैं जाहेर, सो विस्तरसी[1] विवेक ।
मैं गुझ कही है साथ को, पर सो है अति विसेक ॥ ८६

संसार सब के अंग में, मेरी बुध को करूं प्रवेस ।
असत सब होसी सत, मेरे नूर के आवेस ॥ ८७

बुध मूल अख्यर की, आई हमारे पास ।
*जोगमाया को ब्रह्मांड, तिन हिरदे था रास ॥ ८८

ए हुती पिया चरने, दिन एते गोप ।
वचन कोई कोई सत उठे, सोए करूं क्यों लोप[2] ॥ ८९

व्रजरास में हम रमे, बुध हती रास में रंग ।
अब आए जाहेर हुई, इत उदर मेरे संग ॥ ९०

इंद्रावती पिया संगे, उदर फल उतपंन ।
एक निज बुध अवतरी, दूजा नूर तारतम ॥ ९१

दोऊ सरूप प्रगटे, लई मिनो मिने बाथ[3] ।
एक तारतम दूजी बुध, देखसी सनमुख साथ ॥ ९२

१. फैलेगी । २. छिपाना । ३. गले मिलना ।

अख्यर केरी वासना, कहे जो पांच रतन ।
कागद लाया वेहद का, *सुकदेव मुनी धंन धंन ॥ ९३

विस्नु मन खेल ले खड़ा, पकड़ के दोऊ पार ।
भली भांत भेलें विस्नु के, *सनकादिक थंभ चार ॥ ९४

महादेवजीऐं व्रज लीला, ग्रह्यो अखंड ब्रह्मांड ।
अख्यर चित सदासिव, ए यों कहावे अखंड ॥ ९५

कबीर साख जो पूरने, ल्याया सो वचन विसाल ।
प्रगट पांचो ए भए, दूजे सागर आडी पाल ॥ ९६

हम बुध नूर प्रकास के, जासी हमारे घर ।
वैकुंठ विस्नु जगावसी, बुध देसी सारी खबर ॥ ९७

खबर देसी भली भांतें, विस्नु जागसी ततकाल ।
तब आवसी नींद इन नैनों, प्रले होसी पंपाल[1] ॥ ९८

अख्यर खेल इछाएं कर, छर रचके उड़ात ।
वासना *पांचो पोहोंचे इत, ए सत मंडल साख्यात ॥ ९९

पांचों बुध ले वले पीछे, तामें बुध विसेक विचार ।
अख्यर आंखां खोलसी, होसी हरष अपार ॥१००

लीला तीनो थिर होएसी, अखंड इन प्रकार ।
निमख एक ना विसरसी, रेहेसी दिल में सार ॥१०१

उतम भी कहूं इनमें, जहां तारतम को विस्तार ।
वास्ना पांचो बुध ले, साख पूरसी संसार ॥१०२

मेरी संगतें ऐसी सुधरी, बुध बड़ी हुई अख्यर ।
तारतमें सब सुध परी, लीला अंदर की घर ॥१०३

मेरे गुन अंग सब खड़े होसी, अरचासी[2] आकार ।
बुध वास्ना जगावसी, तिन याद होसी संसार ॥१०४

---

१. झूठ (माया) । २. पूजे जाएंगे ।

बुध तारतम लेयके, पसरसी वैराट के अंग ।
अख्यर हिरदे या विध, अधिक चढसी रंग ॥१०५

॥ प्रकरण ॥ २३ ॥ चौपाई ॥ ७२४ ॥

## नूर बुध

निज बुध भेली नूर में, आग्या मिने अंकूर ।
दया सागर जोस का, किन रहे न पकरयो पूर ॥ १

ए लीला है अति बड़ी, आई या इंड मांहिं ।
कै हुए कै होएसी, पर किन ब्रह्मांडों नांहिं ॥ २

ए अगम अकथ अलख, सो जाहेर करें हम ।
पर नेक नेक प्रकासहीं, जिन सेहे न सको तुम ॥ ३

जो कबूं कानों ना सुनी, सो सुनते जीव उरझाए ।
ताथे डरती मैं कहूं, जानूं जिन कोई गोते खाए ॥ ४

नातो सब जाहेर करूं, नाहीं तुमसों अंतर ।
खेंच खेंच तो केहेती हूं, सो तुमारी खातर ॥ ५

तुम दुख पाया मुझे सालही,[१] अब सुख सब तुम हस्तक[२] ।
दिया तुमारा पावही, दुनियां, चौदे तबक ॥ ६

अजूं केहेती सकुचों, पर बोहोत बड़ी है बात ।
सोभा पाई तुम याथें बड़ी, जो पिया वतन साख्यात ॥ ७

इंड अखंड भी जाहेर, किए जागनी जोत ।
अब सुंन फोड़ आगे चली, जहां थें इंड पैदा होत ॥ ८

सोभा इन मंडल की, क्यों कर कहूं वचन ।
सो बुध नूर जाहेर करी, जो कबूं सुनी न कही किन ॥ ९

रास वरनन भी ना हुआ, तो अख्यर वरनन क्यों होए ।
कही न जाए हद में, पर तो भी कहूं नेक सोए ॥ १०

---

१. दुःख होता है । २. हाथ में ।

*जोगमाया तो माया कही, पर नेक न माया इत ।
ख्वाबी दम सत होवही, सो अख्यर की बरकत ॥ ११

तार्थें कालमाया जोगमाया, दोऊ पल में कै उपजत ।
नास करे कै पल में, या चित थिर थापत ॥ १२

तहां एक पलक ना होवही, इत कै कलप वितीत ।
कै इंड उपजे होए फना, ऐसे पल में कै इन रीत ॥ १३

जागते ब्रह्मांड उपजे, पाव पल में अनेक ।
सो देखे सब इत थें, बिध बिध के विवेक ॥ १४

ए लीला है अति बड़ी, दृष्टें उपजे ब्रह्मांड ।
ए खेल खेलें नित नए, याकी इछा है अखंड ॥ १५

ए मंडल है सदा, जाए कहिए अख्यर ।
जाहेर इत थें देखिए, मिने बाहेर थें अंतर ॥ १६

उतपंन देखी इंड की, ना अंतर रती रेख ।
सत वासना असत जीव, सब विध कही विवेक ॥ १७

मोह उपज्यो इतथें, जो सुंन निराकार ।
पल मीच ब्रह्मांड किया, कारज कारन सार ॥ १८

मोह अग्यान भरमना, करम काल और सुंन ।
ए नाम सारे नींद के, *निराकार निरगुन ॥ १९

मन पोहोंचे इतलों, बुध तुरिआ वचन ।
उनमान[1] आगे केहेके, फेर पड़े माहिं सुंन ॥ २०

जो जीव होसी सुपन का, सो क्यों उलंघे सुंन ।
वासना सुंन उलंघ के, जाए पोहोंचे अख्यर वतन ॥ २१

ए सबे तुम समझियो, वासना जीव विगत[2] ।
झूठा जीव नीद ना उलंघे, नीद उलंघे वासना सत ॥ २२

---

१. अन्दाजा । २. भेद, हाल ।

सुपने नगरी देखिए, तिन सब में एक रस ।
आपै होवे सब में, पांचो तत्व दसो दिस ॥ २३

तिनमें भी दोए भांत हैं, एक वासना दूजे जीव ।
संसा न राखूं किनका, मैं सब जाहेर कीव ॥ २४

देखो सुपनमें कै लड़ मरें, सबे आपे पर ना दुखात ।
जब देखे मारते आपको, तब उठे अंग धुजात[1] ॥ २५

वासना उतपन अंग थें, जीव नींद उतपत ।
कोई ना छोड़े घर अपना, या बिध सत असत ॥ २६

ब्रह्मांड चौदे तबक, सब सत का सुपन ।
इन दृष्टांते समझियो, विचारो वासना मन ॥ २७

सुपन सत सरूप को, तुम कहोगे क्यों कर होए ।
ए विध सब जाहेर करूं, ज्यों रहे न धोखा कोए ॥ २८

एक तीर खेंच के छोड़िए, तिन बेधाए कै पात ।
सो पात सब एक चोटें, पाव पल में बेधात ॥ २९

पर पेहेलें पात एक बेध के, तो दूजा बेधाए ।
यामें सुपन कै उपजे, बेर एती भी कही न जाए ॥ ३०

तो बेर एक की कहा कहूं, इत हुआ कहां सुपन ।
पर सत ठौर का असत में, द्रष्टांत नहीं कोई अंन ॥ ३१

इत भेलें रूह नूर बुध, और आग्या दया प्रकास ।
पूरूं आस अख्यर की, मेरा सुख देखाए साख्यात ॥ ३२

इत भी उजाला अखंड, पर किरनां न इत पकराए ।
ए नूर सब एक होए चल्या, आगूं अख्यरातीत समाए ॥ ३३

ए नूर आगे थें आईया, अख्यर ठौर के पार ।
ए सब जाहेर कर चल्या, आया निज दरबार ॥ ३४

---

१. चौंक उठना ।

वतन देख्या इत थें, सो केते कहूं परकार ।
नूर अखंड ऐसा हुआ, जाको वार न काहूं पार ।। ३५

किए विलास अंकूर थें, घर के अनेक प्रकार ।
पिया सुंदरबाई अंग में, आए कियो विस्तार ।। ३६

ए बीज वचन दो एक, पिया बोए कियो प्रकास ।
अंकूर ऐसा उठिया, सब किए हांस विलास ।। ३७

सूर ससी कै कोट कहूं, नूर तेज जोत प्रकास ।
ए सबद सारे मोहलों, और मोह को तो है नास ।। ३८

अब इन जुबां में क्यों कहूं, निज वतन विस्तार ।
सबद ना कोई पोहोंचही, मोह मिने हुआ आकार ।। ३९

मोह सो जो ना कछू, इनसे असंग बेहद ।
सत को असत ना पोहोंचही, या बिध ना लगे सबद ।। ४०

बेहद को सबद ना पोहोंचही, तो क्यों पोहोंचे दरबार ।
लुगा[1] न पोहोंच्या रास लों, इन पार के भी पार ।। ४१

कोट हिस्से एक लुगे के, हिसाब किया मिहीं कर ।
एक हिस्सा न पोहोंच्या रास लों, ए मैं देख्या फेर फेर ।। ४२

मैं अंगे रंगे अंगना संगे, करूं आप अपनी बात ।
अब बोलते सरमाऊं, तार्थे कही न जाए निध साख्यात ।। ४३

वतन बातें केहेवे को, मैं देखती नहीं कोई काहूं ।
देखूं तो जो होए दूसरा, नहीं गांउं नांउं न ठांउं ।। ४४

जहां नहीं तहां है कहे, ए दोऊ मोह के वचन ।
तार्थे विस्तार अंदर, बाहेर होत हों मुंन ।। ४५

एता भी में तो कह्या, जो साथ को भरम का घेन ।
वचन दो एक केहेके, टालूं सो दुतिया[2] चेन ।। ४६

---

१. अक्षर का भाग । २. दुई का भाव ।

साथ के सुख कारने, इंद्रावती को मैं कह्या ।
ताथें मुख *इंद्रावती के, कलस सबन का भया ॥ ४७

॥ प्रकरण ॥ २४ ॥ चौपाई ॥ ७७१ ॥

**प्रकरण तथा चौपाइयों का पूरा संकलन—प्रकरण १७२, चौपाई ४६६७**

**इति श्री, महामति श्रीप्राणनाथजी की 'तारतम बानी' का**

**छठवाँ ग्रन्थ**

## ॥ कलस 'हिन्दुस्तानी' संपूर्ण ॥

निज नाम श्री कृष्ण जी, अनादि अक्षरातीत ।
सोतो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहित ॥

# ❋ सनंध[1] ❋

ढूंढ़े *शब *म्याराजको, शब म्याराजमें सब ।
सो शब म्याराज जाहेर करी, सो शब म्याराज देखसी अब ॥

श्री किताब कुरान माफक सनंधे असराफीलें आंखरमें कुरान को गाया हैं, सो अपनी सरत पर जाहेर हुई है । तिनकी ए सनंधे दुलहिन किताब आसमानी हम नाजी फिरकेमें आखरको महंमद मेहेदी ले उतरे हैं, सो वास्ते रूहों के ।

## सनंध पेहेली अल्ला रसूलकी

अल्ला मुहबा[2] मासूक,[3] सो खासी खसम दिल ।
तो नाम धराया रसूलें, आसिक[4] अपना असल ॥ १
आसिक कह्या अल्लाहको, मासूक कह्या *महंमद ।
न जाएं खोले माएने, बिना *इमाम एक सबद ॥ २
आए रसूलें यों कह्या, काजी[5] आवेगा खुद सोए ।
पर फुरमान[6] यों केहेवही, जिन कोई केहेवे दोए ॥ ३
एक कह्या न जावही, दो भी कहिए क्यों कर ।
भेले जुदे जुदे भेलें, माएने मुसाफ[7] इन पर ॥ ४

१. प्रमाण पत्र, सम्बन्ध । २. प्रेमी । ३. प्यारा । ४. प्यार करने वाला । ५. न्यायाधीश । ६. आदेश पत्र (कुरान) । ७. धर्म ग्रन्थ ।

ऐसे माएने गुझ[1] कै, तिन गुझोंमें भी गुझ ।
ए माएने अपने आप विना, और न काहूं सुझ ॥ ५

फुरमान ल्याया रसूल, तिनमें अल्ला—कलाम[2] ।
सो भेज्या मोमनों[3] पर, अंदर गुझ अलाम[4] ॥ ६

ए जिन भेज्या सो जानही, या जाने आया जिन पर ।
ए गुझ खसम मोमनकी, विना रसूल न काहूं कादर[5] ॥ ७

खसमें लिखी हकीकत,[6] जोलों न पाईए सोए ।
तोलों असलूं मोमनकों, चैन जो कैसे होए ॥ ८

माएने इन कुरानके, जोलों न समझाए ।
तोलों सो रूह आपको, मोमन क्यों केहेलाए ॥ ९

तो लिख्या आगूहीं थें, रसूलें अल्ला कलाम ।
करसी जाहेर आगे मोमनों, आखर आए इमाम ॥ १०

हकीकत फुरमानकी, कहूं सुनो सब मिल ।
नूर अकल[7] आगे ल्याएके, साफ करूं तुम दिल ॥ ११

अब सो आखर[8] आईया, उठ खडे रहो मुस्लिम ।
पाक करूं नूर अकलें, खबर देऊं खसम ॥ १२

सबको प्यारी अपनी, जो है कुल की भाख ।
अब कहूं भाषा मैं किनकी, यामें भाषा तो कै लाख ॥ १३

बोली जुदी सबन की, और सबका जुदा चलन ।
सब उरझे नाम जुदे धर, पर मेरे तो केहेना सबन ॥ १४

विना हिसाबें बोलियां, मिने सकल जहान ।
सबको सुगम जानके, कहूंगी हिंदुस्तान ॥ १५

बड़ी भाषा एही भली, सो सबमें जाहेर ।
करने पाक सबन को, अंतर मांहें बाहेर ॥ १६

॥ प्रकरण ॥ १ ॥ चौपाई ॥ १६ ॥

---

१. गुप्त । २. ब्रह्म वाक्य । ३. ब्रह्म सृष्टि । ४. भेद । ५. सामर्थ्यवान । ६. सत्य ज्ञान । ७. अक्षर की बुद्धि । ८. अन्त ।

## सनंध आरबीकी

**कलाम आरबी हक रसूल ना, फाल कसीदे कलम ।**
बोली अरबी सच रसूल की, पस साथ साखियों के कहत हों ।
**लाकिन माई आरफो, मिन्हो हिंद मुस्लिम ॥ १**
लेकिन नहीं समझेंगे, उससे हिंदके मुसलमान ।
**अस्मा हिंद मुस्लिम, अनी कलम सिदक ।**
सुनो हिंदके मुसलमानों, मैं कहूंगी सच ।
**मा कलम अनी किजबो, मा कुंम कलमा हक ॥ २**
ना कहूंगी मैं झूठ, जो तुम्हारे पास वचन सच्चा है ।
**अल्लजी मुस्लिम असलू, अनी मरा हवा कुंम ।**
जो कोई मुस्लिम असल है, मेरा वहुत प्यार तुमसों है ।
**अना हाकी हकाईयां असलू, माइ इमाम इलंम ॥ ३**
मैं कहूँ बातें सत्य, साथ मेरे इमामका ग्यान है ।
**लागिल हिंद मुस्लिम, अना कलिम हिंद कलाम ।**
खातर हिंदके मुसलमानोंके, मैं कहूँ हिंदकी बोली ।
**अल्लजी कुल्लू सवा सवा, अनी हुरम इमाम ॥ ४**
मेरे तांई सब बराबर है, मैं हों औरत इमामकी ।
**हिंद कलाम जिद हवा ना, लागिल हिंद मुस्लिम ।**
हिंदकी बोली ज्यादे प्यारी है मुझे, खातर हिंदके मुसलमानोंके ।
**अल्लजी सिदक यकीन, हवो हक रसूल कदम ॥ ५**
जो कोई सच्चे यकीन वाले हैं, प्यारे हैं सच्चे रसूल के कदम ।
**बेन कुरान मकतूब, अल्लजी रसूल कवल ।**
दरम्यान कुरानके लिख्या है, जो कि रसूलने आगे ही थे ।
**अगी मेहेदी कलम, लिसान लुगाद बदल ॥ ६**
आएके . मेहेदी कहेगा, जुबाँन बोल औरै ।
**वाहिद लिसान वाहिद लुगाद, अल्लजी सेसमा अलगवर ।**
एक जुबांन एक बोल, और जो कछू चीज आसमान जिमीन में है ।

**मा हुम इमाम लुक लुका, लिसान लुगाद लाए कादर ॥ ७**
दरम्यान इनोंके इमाम तोतला, जुबाँन ओर वचनमें असमर्थ ।
**कुल्लू आदम इला गिरो, मा कुल्लो तरीक वाहिद ।**
सारे आदमी या और कोई, जो कोई है सबकी राह एक है ।
**लुगा तरीक मा मिसलहू, कमा फास काल महंमद ॥ ८**
बोलना राह नहीं है उन जैसा, जैसे जाहेर कह्या रसूलने ।
**अल्लजो मकतूब हाकिमा, वेन कुरान कलाम ।**
जो कि लिख्यां हैं ऐसा, दरम्यान कुरान के वचन ।
**दलहिन अनी फी कलमो, लुगाद बदल इमाम ॥ ९**
अब मैं क्योंकर कहूं, एक बोल बिना इमाम ।
**हरफ कमा मकतूब, अल्लजी हक रसूल ।**
सबद जेता कोई लिख्या है, जो सांचे रसूलें ।
**व ला इतरो मिन्हुंम लुगा, फाल इमाम कुल्लू कबूल ॥ १०**
कहा न आवे इनमेंसे एक बोल, किए इमामने कुल कबूल ।
**अल्लजी इमाम आगबो, हो हस्ना हिंद मकान ।**
जो इमाम मेहेदी ने खुस किया, वही नेक है हिंद मुकाम ।
**व ला एगी कलाम गैर, मिसल हिंद इलाने कफयान ॥ ११**
कही न आवे बोली और, मानिंद हिंदके नहीं तो बस है ।
**लागिल मुस्लिम कुरब ना, ना फाली कुंम अस्किल ॥**
खातर मुस्लिम कबीले अपनेके, मैं कर देऊं तुमको सहल ।
**आनी कलम कलाम कुंम, व ला एगी मुस्किल ॥ १२**
मैं कहूं बोली तुम्हारी, ज्यों होए तुमको दीनमें आनंद ।

प्रकरण ॥ २ ॥ चौपाई ॥ २८ ॥

**॥ *हिंदुस्तानी भाषामें चौपाई सुरू ॥**

**भेख भाषा जिन रचो, रचियो माएने असल ।**
**भई रोसन जोत रसूल की, अब खुले माएने सकल ॥ १**
**लिए माएने ऊपर के, एते दिन इन जहान ।**
**मूल माएने पाए विना, सुध ना पड़ी व्रध हान ॥ २**

करना सारा एक रस, हिंदू मुसलमान ।
धोखा सबका भान के, सब का कहूंगी ग्यान ॥ ३

पैंड़े सब देखाईए, ज्यों समझे सब कोए ।
मत सबन की देखाईए, ज्यों एक रस सब होए ॥ ४

मैं देखे सब खेल में, पंथ पैंड़े दरसन ।
देखी इस्क बंदगी सबकी, जैसा आकीन सबन ॥ ५

एती जिमी सब छोड़के, जित आए *मेहेदी *महंमद ।
सो भली जिमी भाषा भली, इत हद मेंट होसी बेहद ॥ ६

एते दिन इन हुकमें, जुदे जुदे खेलाए ।
सोए हुकम इमाम का, अब लेत सबों मिलाए ॥ ७

॥ प्रकरण ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ २५ ॥

## ॥ सनंध *इमाम के स्वाल जवाब की ॥

सुनियो बानी मोमिनो, हुती जो अगम अकथ ।
सो वीतक कहूं तुमको, उड़ जासी गफलत ॥ १

हुकम हुआ इमाम का, उदया मूल अंकूर ।
कलस होत सबन का, नूर पर नूर सिर नूर ॥ २

कथिएल तो कही सुनी, पर अकथ ना एते दिन ।
सो तो अब जाहेर हुई, जो *मेहेदी महंमद थें उतपन ॥ ३

मुझे मेहेर मेहेबूबें करी, अंदर परदा खोल ।
सो सुख निसबतियनसों,[1] कहूं सो दो एक बोल ॥ ४

मासूकें मोहे मिलके, करी सो दिल दे गुझ ।
कहे तूं दे पड़ उतर, जो मैं पूछत हूं तुझ ॥ ५

तूं कौन आई इत क्यों कर, कहां है तेरा वतन ।
नार तूं कौन खसम की, द्रढ़ कर कहो वचन ॥ ६

१. सम्बन्धियों से ।

तूं जागत है के नीद में, करके देख विचार ।
विध सारी याको कहो, इन जिमी के प्रकार ॥ ७

तब मैं पियासों यों कह्या, जो तुम पूछी बात ।
मैं मेरी मत माफक, कहूंगी तैसी भांत ॥ ८

सुनो पिया अब मैं कहूं, तुम पूछी सुध मंडल ।
ए कहूं मैं क्यों कर, छल बल वल अकल ॥ ९

मैं ना पेहेचानों आपको, ना सुध अपनों घर ।
पीउ पेहेचान भी नीद में, मैं जागत हों या पर ॥ १०

जल जिमी तेज वाए को, अवकास[1] कियो है इंड ।
*चौदे तबक चारो तरफों, परपंच खड़ा परखंड ॥ ११

ए मोहोल[2] रच्यो जो मंडप, सो अटक रह्यो अंत्रीख ।
कर कर फिकर कै थके, पर पाई न काहूं रीत ॥ १२

यामें खेल कै होवहीं, सो केते कहूं विचित्र ।
तिमर तेज रुत[3] रंग फिरे, ससी सूर फिरे नखत्र ॥ १३

तबक चौदे इंड में, जिमी जोजन कोट पचास ।
साढ़े तीन कोट ता बीच में, होत अंधेरी उजास[4] ॥ १४

उजास सूर को कहावही, सो तो अंधेरी के तिमर ।
तिनथें कछू ना सूझही, जिमी आप ना घर ॥ १५

जब थें सूरज देखिए, लेत अंधेरी घेर ।
जीव पसू पंखी आदमी, सब फिरें यामें फेर ॥ १६

काल न देखे इन फेरे, एही तिमर के फंद ।
ए सूरज आंखों देखिए, पर इन फंद के बंध ॥ १७

वाओ बादल बीज गाजही, जिमी जल ना समाए ।
ए पांचो आप देखाए के, फेर ना पैदा हो जाए ॥ १८

---

१. आकाश । २. महल । ३. ऋतु । ४. प्रकाश ।

या विध अनेक ब्रह्मांड में, देत देखाई दसो दिस ।
ए मोहजल लेहेरां लेवही, सागर सबे एक रस ॥ १९

ए कोहेड़ा[1] काली रैन का, कोई न पावे कल[2] मूल ।
कहां कल किल्ली कुलफ,[3] जो द्वार ना पाईए सूल ॥ २०

ए तीनों लोक तिमर के, लिए जो तिनहूं घेर ।
ए निरखे मैं नीके कर, पर पाईए न काहूं सेर ॥ २१

ए अंधेरी इन भांत की, काहूं सांध ना सूझे सल[4] ।
ए सुध काहूं ना परी, कै गए कर कर बल ॥ २२

ग्यान लिया कर दीपक, अंधेर आप ना गम ।
इत दीपक उजाला क्या करे, ए तो चौदे तबकों[5] तम ॥ २३

ए देखे ही परिए दुख में, कोई व्याध को रचियो रोग ।
छुटकायो छूटे नहीं, नहींन देखन जोग ॥ २४

टेढ़ी सकड़ी गलियां, तामें फिरे फेर फेर ।
गुन पख अंग इंद्रियों, कियो अंधेरीमें अंधेर ॥ २५

तत्व पांचो जो देखिए, यामें ना कोई थिर ।
प्रले होसी पलमें, वैराट सचराचर ॥ २६

ए उपजे पांचो मोह थें, और मोह को तो नाहीं पार ।
नेत नेत केहे निगम फिरे, आगे सुध ना परी निराकार ॥ २७

मूल बिना ए मंडल, नहीं नेहेचल निरधार ।
निकसन कोई न पावही, बार न काहूं पार ॥ २८

इत पंथ पैंडे कै चलहीं, कै भेष दरसन ।
ता बीच अंधेरी ग्यान की, पावे न कोई निकसन ॥ २९

ग्यान संग स्यानप मिली, तित क्यों कर आवे दरद ।
ना आपे ना दरद किनें, सो होए जाए सब गरद ॥ ३०

---

१. कुहरा । २. कला । ३. ताला ४. सिलवट । ५ लोक ।

दरदी दरदा जानही, ग्यानी जाने ग्यान ।
ए राह दोऊ जुदी परी, मिले न काहूं तान ।। ३१

दिवाना मूरख मिले, स्यानप मिले सैतान ।
दरद ग्यान दोऊ जुदे, मिले न पेड़ पेहेचान ।। ३२

कबूं मूढ़ दरदे मिले, पर दरद ना कबूं सैतान ।
बीज अंकूर दोऊ जुदे, वैर सदाई जान ।। ३३

ग्याने प्यारी स्यानप, दरदें सेती बैर ।
दरदें प्यारी दिवानगीं,[1] स्यानप लगे जेहेर ।। ३४

इत जुध किए कै सूरमों, पेहेन टोप सिल्हे[2] पाखर[3] ।
वचन बड़े रन बोलके, उलट पड़े आखर ।। ३५

यामें ज्यों ज्यों खोजिए, त्यों त्यों बंध पड़ते जांए ।
कै उदंम जो करही, तो भी तिमर ना छोड़े ताए ।। ३६

ए सुध अजूं किन ना परी, बढ़त जात विवाद ।
खेल तो है एक खिन का, पर जाने सदा अनाद ।। ३७

खेल खावंद जो त्रैगुन, जानों याथें जासी फेर ।
ए निरखे मैं नीके कर, अजूं ए भी मिने अंधेर ।। ३८

ए द्वार कोई खोलके, कबहूं न निकस्या कोए ।
ए बुजरक जो छल के, बैठे देखे बेसुध होए ।। ३९

ए जिन बंधे सो खोलही, तोलो ना छूटे बंध ।
या विध खेल[4]—खावंद की, तो औरों कहा सनंध ।। ४०

निज बुध आवे हुकमें, तोलों ना छूटे मोह ।
आतम तो अंधेर में, सो बुध बिना बल ना होए ।। ४१

ए कही इन इंड की, पिया पूछयो जो प्रस्न ।
कहूं और अजूं बोहोत है, वे भी सुनो वचन ।। ४२

।। प्रकरण ।। ४ ।। चौपाई ।। ७७ ।।

१. पागलपन । २. आयुध । ३. कवच । ४. देवी देवता ।

## सनंध खोज की

पिया मैं विध विध तोको ढूंढ़िया, छोड़ धंधा सब और ।
पूछत फिरों सुहागिनी, कोई बतावे पिया ठौर ॥ १

मैं नेक बात याकी कहूं, तुम कारन खोज्या खेल ।
कोई ना कहे हम देखिया, जिन नीके कर खोजेल ॥ २

सास्त्र साधू जो साखियां, मैं देखी सबनकी मत ।
जोलों साहेब न पाईए, तोलों कीजे कासों हेत ॥ ३

छोटे बड़े जिन खोजिया, न पाया करतार ।
संसा सब कोई ले चल्या, पर छूटा नहीं विकार ॥ ४

ए झूठा छल कठन, कहूं न किसी की गम ।
कहां वतन कहां खसम, कौन जिमी कौन हम ॥ ५

ए देखी बाजी छल की, छल की तो उलटी रीत ।
इनमें सीधा दौड़ के, कोई ना निकस्या जीत ॥ ६

मैं देख्या दिल विचार के, चितसों अरथ लगाए ।
इन मंडल में आतमा, चल्या न कोई जगाए ॥ ७

मेहेनत तो बोहोतों करी, अहेनिस खोज विचार ।
तिन भी छल छूटा नहीं, गए हाथ पटक सिर मार ॥ ८

मोहादिक के आद लों, जेती उपजी सृष्ट ।
तिन सारों ने यों कह्या, जो किनहूं न देख्या द्रष्ट ॥ ९

*वरना वरनो खोजिया, जेती बुनी आदम ।
एता द्रढ़ किने ना किया, कहाँ खसम कौन हम ॥ १०

आद मध्य और अबलों, सब बोले या विध ।
केवल विदेही[1] होए गए, तिन भी न कही ए सुध ॥ ११

---

१. जीवन मुक्त ।

वेदों कथ कथ यों कथ्या, सब मिथ्या चौदे लोक ।
बकते बकते यों बके, एक अनेक सब फोक ॥ १२

बुध तुरिया[१] द्रष्ट श्रवना, जहां लों पोहोंचे मन ।
ए होसी उतपन सब फना, जो आवे मिने वचन ॥ १३

वेदांती भी केहे थके, द्वैत खोजो पर पर ।
अद्वैत सबद जो बोलिए, तो सिर पड़े उतर ॥ १४

मन चित बुध श्रवना, पोहोंचे द्रष्ट न सबदा कोए ।
षट प्रमान तें रहित है, सो द्रढ़ कैसे होए ॥ १५

द्वैत आड़े अद्वैत के, सब द्वैतै को विस्तार ।
छोड़ द्वैत आगे वचन, किने ना कियो निरधार ॥ १६

ए अलख किने ना लखी, आदै थें अकल ।
ऐसी *निराकार *निरंजन, व्याप रही सकल ॥ १७

चेतन व्यापी व्याप में, सो फेर आवे जाए ।
जड़ को चेतन ए करे, चेतन को मुरछाए ॥ १८

ऊपर तले मांहें बाहेर, दसो दिसा सब एह ।
छोड़ याको कोई ना कहे, ठौर खसम का जेह ॥ १९

जो कछू कहिए वचने, सो सब मिने गफलत ।
ना सरूप ना काहू वतन, तो क्यों कर जाईए तित ॥ २०

पेड़ काली किन ना देखी, सब छायाही में रहे उरझाए ।
गम छायाकी भी ना पड़ी, तो पेड़ पार क्यों लखाए ॥ २१

जाए ना उलंघी देखीती, ना कछु होए पेहेचान ।
तो दुलहा कैसे पाईए, जाको नेक ना सुन्यो निसान ॥ २२

खसम जो न्यारा द्वैत से, और ठौरों सब द्वैत ।
किने ना कह्यो ठौर नेहेचल, तो पाईए कैसी रीत ॥ २३

---

१. चित ।

या बिध ग्यान जो चरचहीं, सो मैं देख्या चित ल्याए ।
ज्यों मनुआं सुपने मिने, बेसुध गोते खाए ॥ २४

छिनमें कहे सब ब्रह्म है, छिनमें बंझा पूत ।
मदमाते मरकट[1] ज्यों, करे सो अनेक रूप ॥ २५

छिनमें कहे सत असत, माया कछुए कही न जाए ।
यों संग संसा द्रढ़ हुआ, सो धोखे रहे फिराए ॥ २६

छिनमें कहे है आप में, छिनमें कहे बाहेर ।
छिनमें माहें न बाहेर, यों सबद न कोई निरधार ॥ २७

छिनमें कछू और कहे, छिनमें और की और ।
सो बात द्रढ़ क्यों होवही, जाको वचन ना रेहेवे ठौर ॥ २८

जैसे बालक बावरा, खेले हंसता रोए ।
ऐसे साधू सास्त्रमें, द्रढ़ न सबदा कोए ॥ २९

ए सबे सींग ससक,[2] बंझा पूत वैराट ।
फूल गगन नाम धराए के, उड़ाए देवे सब ठाट ॥ ३०

आप होत फूल गगन, बढ़त जात गुमान ।
देखीतां छल छेतरे,[3] हाए हाए ऐसी नार सुजान ॥ ३१

कोई ना परखे छल को, जिन छलमें है आप ।
तो न्यारा खसम जो छल थें, सो क्यों पाईए साख्यात ॥ ३२

अटक रहे सब इतहीं, आगे सबद न पावे सेर ।
ए खोजें सब द्वैत में, ओतो अद्वैत लों अंधेर ॥ ३३

ए मत वेद वेदांत की, सास्त्र सबों ए ग्यान ।
सो साधू लेकर दौड़हीं, आगे मोह न देवे जान ॥ ३४

ए खेल सारा कुदरती, फिराया फिरस्तों[4] फेर ।
ए इंड गोलक बीच में, गृद[5] गफलत की अंधेर ॥ ३५

---

१. बन्दर । २. खरगोश । ३. धोखा खाना । ४. देव दूत । ५. आस-पास ।

कुदरत को माया कही, गफलत मोह अंधेर ।
या बिध चौदे तबकों, कह्या फिरस्ते का मन फेर ॥ ३६

ए खेल सारा सुंन का, फिरे मने मन फेर ।
ए इंड गोलक बीच में, याके मोह तत्व चौफेर ॥ ३७

सबद जो सारे मोह लों, एक लवा ना निकस्या पार ।
खोज खोज ताही सबद को, फेर फेर पड़े अंधार ॥ ३८

केतेक बुजरक कहावहीं, सो याही सुंन को चाहे ।
सो गले सब इतही, आगे ना निकसे पाए ॥ ३९

फिरे जहां से नारायन, नाम धराया निगम ।
*सुंन पार ना ले सके, हटके कह्या अगम ॥ ४०

सुंन की बिध केती कहूं, ए इंड जाके आधार ।
नेत नेत केहेके फिरे, निगम को अगम अपार ॥ ४१

अब नेक तो भी कहूं, *सुंन मंडल की सुध ।
जाको कोई ना उलंघे, अगम अगाध या बिध ॥ ४२

इत नहीं तत्व गुन निरगुन, पक्ष नहीं परमान ।
अंग ना इंद्री जान ना आवन, लख नहीं निरमान ॥ ४३

इत आद अंत ना थिर चर, नर ना कोई नार ।
अंधेर ना कछू उजाला, ना निराकार आकार ॥ ४४

जिमी जल ना वाए अगनी, ना सबद सोहं आसमान ।
ना कछू जोति रूप रंग, नहीं नाम ठाम कोई बान ॥ ४५

ना जीव करम न काल कोई, गंध नही बल ग्यान ।
तीर्थंकर भी इत गले, जो कहावे सदा प्रवान ॥ ४६

बीज ब्रख ना कमल फल, भंग ना कछू अभंग ।
मोहादिक एही सुंन, बीच सरूप या संग ॥ ४७

तबक चौदे ख्वाब के, याको पेड़ै नीद निदान ।
नीद के पार जो खसम, सोए क्यों कर करे पेहेचान ॥ ४८

ए ख्वाबी दम सब नीद लों, दम नींदै के आधार ।
जो कदी[1] आगे बल करे, तो गले नीदै में निराकार ।। ४९

जिनहूं जैसा खोजिया, सब बोले बुध माफक ।
मैं देखे सबद सबन के, सो गए जाहेर मुख बक ।। ५०

ए पुकार खोजी सुनके, हट रहे पीछे पाए ।
पार सुध किन ना परी, सब इतही रहे उरझाए ।। ५१

यामें जो बुजरक हुए, सो सीतल भए इन भांत ।
ना सुध छल ना पार की, यों गले सुंन ले स्वांत ।। ५२

या बिध तो भई नास्त, सो नास्त जानो जिन ।
सार सबद मैं देख के, लिए सो द्रढ़ कर मन ।। ५३

जिन जानो पाया नहीं, है पावन हार प्रवान ।
सो छिपे इन छल थें, वाको मिले न कासों तान ।। ५४

सो तो प्रेमी छिप रहे, वाको होए गयो सब तुच्छ ।
खेले पिया के प्रेम में, और भूल गए सब कुछ ।। ५५

सुरत न वाकी छल में, वाही तरफ उजास ।
प्रेमै मैं मगन भए, ताए होए गयो सब नास ।। ५६

प्रेमी तो नेहेचे छिपे, उन मुख बोल्यो न जाए ।
सबद कदी जो निकसे, सो ग्यानी क्यों समझाए ।। ५७

सबद जो सीधे प्रेम के, सास्त्र तो स्यानप छल ।
या बिध कोई ना समझे, बात पड़ी है बल ।। ५८

ए जो साधू सास्त्र पुकारहीं, सो तो सुनता है संसार ।
पर गुझ किनहूं न पाईया, सोई सबद है पार ।। ५९

देखे सारे सास्त्र, सो तो गोरख धंध ।
मूल कड़ी पाए बिना, देखीते ही अंध ।। ६०

---

१. कभी भी ।

ऐसा तो कोई ना मिल्या, जो दोनों पार प्रकास ।
मगन पिया के प्रेम में, भी स्यानप ग्यान उजास ॥ ६१

जो कोई ऐसा मिले, सो देवे सब सुध ।
माएने गुझ बताए के, कहे वतन की बिध ॥ ६२

सबद सारे वैराट के, बोलत अगम अगम ।
कोई ना कहे रसूल[1] बिना, जो खुद पें आए हम ॥ ६३

ए नबिए[2] जाहेर कह्या, मैं पार से आया रसूल ।
खुद की सुध सब ल्याईया, निद्रा न मेरा मूल ॥ ६४

मैं कारज खसम के, ले आया फुरमान ।
आखर इमाम आवसी, तब मैं भी संग सुभान[3] ॥ ६५

मैं आया हुकम हाकिम का, पर आवेगा हाकिम ।
करसी कजा[4] सबन की, तब संग आखर हम ॥ ६६

ए फुरमान तब बांचसी, इमाम आवसी जब ।
लिखियां जो इसारतें, सब जाहेर होसी तब ॥ ६७

काजी कजा कर के, देसी पर्दा उड़ाए ।
पर्दा उड़े सब उड़सी, लेसी क्यामत उठाए ॥ ६८

खसम सुध सब देवहीं, गुझ बताएं कुरान ।
बातें कहें वतन की, पैगंमर प्रवान ॥ ६९

ए सबद तो जाहेर कहे, पर आया न किनो यकीन ।
तो लगे सब छल को, हिंदू या मुसलमीन ॥ ७०

ए सबद में द्रढ़ किए, पिया ना करे निरास ।
रूह मेरी यों कहे, होसी दुलहेसों विलास ॥ ७१

नबी सबद माहे मद चढ़यो, बढ़यो बल महामत ।
अब एक खिन ना रेहे सकूं, उड़ गई कहुंए स्वांत ॥ ७२

॥ प्रकरण ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ १४६ ॥

---

१. पैंगम्बर मुहम्मद । २. पैगम्बर । ३. परमात्मा । ४. न्याय ।

## सनंध विरह तामस की

मैं चाहत न स्वांत इन भांत, अजूं आउध अंग चले, इन नैनों दोनों नेक न आवे नीर ।
दरद देहा जरद[1] गरद[2] रद[3] करे, मैं क्यों धरूं धीर अस्थिर सरीर ।। १

कठिन निपट विकट घाटी[4] प्रेमकी, त्रबंक[5] बंकों सूरों किने न अगमाए ।
धार तरवार पर सचर[6] सिनगार कर, सामी अंग सांगा[7] रोम रोम भराए ।। २

सागर नीर खारे लेहेरें मार मारे फिरे, बेटों बीच बेसुध पछाड़ खावे ।
खेले मच्छ मिले गले ले उछाले, संधों संध बंधे अंधों यों जो भावे ।। ३

दाहो दसे दसो दिस सब धखे,[8] लाल झाला चले इंड न झलाए ।
फोर आसमान फिरे सिर सिखरो, ए फलंग[9] उलंघ संग खसम मिलाए ।। ४

घाट अवघाट[10] सिलपाट अति सलबलो,[11] तहां हाथ ना टिके पपील[12] पाए ।
वाओ वाए वढ़े आग फैलाए चढ़े, जले पर अनल ना चले उड़ाए ।। ५

पेहेन पाखर[13] गज घंट बजाए चल, पैठ संकोड़ सुई नाके समाए ।
डार आकार संभार जिन ओसरे, दौड़ चढ़ पहाड़ सिर झांप खाए ।। ६

बहुत बंध फंद धंघ अजूंके बीच में, सो देखे अलेखे मुख भाखन आवे ।
निराकार सुंन पार के पार पीउ वतन, इत हुकम हाकिम विना कौन आवे ।। ७

मन तन वचन लगे तिन उतपंन, आस पिया पास बांध्यो विस्वास ।
कहे महामत इन भांत तो रंग रती, दै पिआएँ आग्यां जाग करूं विलास ।। ८

।। प्रकरण ।। ६ ।। चौपाई ।। १५७ ।।

## सनंध विरह इस्क वृध की

तलफे तारुनी रे, दुलही को दिल दे ।
सनमंध मूल जानके, सेज सुरंगी[14] पर ले ।। १

सब तन विरहे खाइया, गल गया लोहू मांस ।
न आवे अंदर बाहेर, या विध सूकत स्वांस ।। २

---

१. पीला । २. धूल । ३, बेकार । ४. पहाड़ी मार्ग । ५. त्रिकोणी । ६. चल । ७. बरछी । ८. जले । ९. छलांग । १०. दुर्गम । ११. फिसलने वाला । १२. हाथी । १३. झूल (हाथी को) । १४. सुन्दर शय्या ।

हाड़ हुए सब लकड़ी, सिर श्रीफल विरह अगिन ।
मांस मीज लोहू रगां, या विध होत हवन ॥ ३

रोम रोम सूली सुगम, खंड खंड खाडा धार ।
पूछ पिया दुख तिनको, जो तेरी विरहिन नार ॥ ४

ए दरद जाने सोई, जिन लगे कलेजें घाए ।
ना दारू[१] इन दरद का, फेर फेर करे फैलाए ॥ ५

ए दरद तेरा कठिन, भूखन लगे ज्यों दाग ।
हेम हीरा सेज पसमी,[२] अंग लगावे आग ॥ ६

विरहिन होवे पिया की, वाको कोई न उपाए ।
अंग अपने बैरी हुए, सब तन लियो है खाए ॥ ७

ए लछन तेरे दरद के, ताए गृह अंगना न सोहाए ।
रतन जड़ित जो मंदर, सो उठ उठ खाने धाए ॥ ८

ना बैठ सके विरहनी, सोए सके ना रोए ।
राज पृथ्वी पांव दाब के, निकसी या विध होए ॥ ९

विरहा न देवे बैठने, उठने भी ना दे ।
लोट पोट भी ना कर सके, हूक हूक स्वांस ले ॥ १०

आठो जाम जब विरहनी, स्वांस लियो हूक हूक ।
पत्थर काले ढिग हते, सो भी हुए टूक टूक ॥ ११

ए विध मोहे तुम दई, अपनी अंगना जान ।
पर्दा बीच टालने, ताथें विरहा प्रवान ॥ १२

॥ प्रकरण ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ १६९ ॥

## राग मेवाड़ो

विरहा गत रे जाने सोई, जो मिल के बिछुरी होए ।
ज्यों मीन बिछुरी जलथें, या गत जाने सोए ॥ मेरे दुलहा ।
तारूनी तलफे विलखे विरहनी, विरहनी विलखे कलपे कामनी ॥ १

---

१. दवा । २. मुलायम ऊन ।

बिछुरो तेरो वल्लभा, सो क्यों सहे सुहागिन ।
तुम बिना पिंड ब्रह्मांड, होए गई सब अगिन ॥ २

विरहा जाने विरहनी, वाको आग न अंदर समाए ।
सो झालें बाहेर पड़ी, तिन दियो वैराट लगाए ॥ ३

विरहा न छूटे वल्लभा, जो पड़े विघन अनेक ।
पिंड ना देखों ब्रह्मांड, देखों दुलहा अपनो एक ॥ ४

विरहिन विरहा बीच में, कियो सो अपनो घर ।
चौदे तबक की साहेबी, सो वारूं तेरे विरहा पर ॥ ५

आंधी आई विरह की, तिन दियो ब्रह्मांड उड़ाए ।
विरहिन गिरी सो नां उठ सकी, रही मूल अंकूर भराए ॥ ६

विरहा सागर होए रह्या, बीच मीन विरहनी नार ।
दौड़त हों निसवासर,[१] कहूं बेट[२] न पाईए पार ॥ ७

॥ प्रकरण ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ १७६ ॥

## राग मलार

इस्क बड़ा रे सबन में, ना कोई इस्क समान ।
एक तेरे इस्क बिना, उड़ गई सब जहान ॥ १

चौदे तबक हिसाब में, हिसाब निरंजन सुंन ।
न्यारा इस्क हिसाब थें, जिन देख्या पीउ वतन ॥ २

लोक अलोक हिसाब में, हिसाब जो हद बेहद ।
न्यारा इस्क जो पीउ का, जिन किया आद लों रद ॥ ३

एक अनेक हिसाब में, और निराकार निरगुन ।
न्यारा इस्क हिसाब थें, जो कछू ना देखे तुम बिन ॥ ४

और इस्क जिन कथो, इस्कें ना पोहोंच्या कोए ।
इस्क तहां जाए पोहोंचिया, जहां सुंन सब्द ना होए ॥ ५

---
१. रात दिन । २. टापू ।

नाहीं कथनी इस्क की, और कोई कथियो जिन ।
इस्क आगे चल गया, सबद समाना सुंन ॥ ६

सब्द जो सूक्या अंग में, हले नहीं हाथ पाए ।
इस्क वेसुध ना करे, रही अंदर विलखाए ॥ ७

पापन पल ना लेवही, दसो दिस नैन फिराए ।
देह विना दौड़े अंदर, पिया कित मिलसी कहां जाए ॥ ८

इस्क को एह लछन, जो नैनों पलक ना ले ।
दौड़े फिरे ना मिल सके, अंदर नजर पियामें दे ॥ ९

नजरों निमख ना छूटही, तो नहीं लागत पल ।
अंदर तो न्यारा नहीं, पर जाए न दाह विना मिल ॥ १०

जो दुख तुमहीं विछुरे, मोहे लाग्यो तासों प्यार ।
एता सुख तेरे विरह में, तो कौन सुख होसी विहार ॥ ११

॥ प्रकरण ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ १८७ ॥

### राग धन्या काफी

सनमंध मूल को, मैं तो पाव पल छोड़चो न जाए ।
अब छल बल मोहे क्या करे, मोह आद थें दियो है उड़ाए ॥ १

दरद जो तेरे दुलहा, कर डारचो सब नास ।
पर आस ना छोड़े जीव को, करने तुम विलास ॥ २

मैं कहावत हों सुहागनी, जो विरहा न देऊं जीव ।
तो पीछे वतन जाए के, क्यों देखाऊं मुख पीउ ॥ ३

विरहा ना छोड़े जीव को, जीव आस भी पिया मिलन ।
पिया संग इन अंगे करूं, तो मैं सुहागिन ॥ ४

लागी लड़ाई आप में, एक विरहा दूजी आस ।
ए भी विरहा पीउ का, आस भी पिया विलास ॥ ५

जो जीव देते सकुचों, तो क्यों रहे मेरा धरम ।
विरहा आगे क्या जीव, ए कहत लगत मोहे सरम ॥ ६

माया काया जीवसों, भान भूंन टूक कर ।
विरहा तेरा जिन दिस, मैं वारूं तिन दिस पर ।। ७

जब आहि सूकी अंगमें, स्वांस भी छोड़्यो संग ।
तब तुम पर्दा टाल के, दियो मोहे अपनो अंग ।। ८

मैं तो अपना दे रही, पर तुमहीं राख्यो जीव ।
बल दे आप खड़ी करी, कछू कारज अपनें पीव ।। ९

जीवरा भी मेरा रख्या, तुम कारज भी कारन ।
आस भी पूरी सोहागनी, वृध[1] भी राख्यो विरहिन ।। १०

तुम आए सब आईया, दुख गया सब दूर ।
कहें महामत ए सुख क्यों कहूं, जो उदया मूल अंकूर ।। ११

।। प्रकरण ।। १० ।। चौपाई ।। १९८ ।।

## सनंध विरहे के प्रकास की

एह बात में तों कहूं, जो केहेने की होए ।
एह इमामें रीझ के, दया करी अति मोहे ।। १

सुनियो वानी मोमनों, दीदार दिया हकें जब ।
पर्दा सारा उड़ गया, हुआ उजाला सब ।। २

कह्या जो नबिऐ इमाम, ए तिन खुद खोले द्वार ।
दरवाजे सब खोल के, मोहे देखाया पार ।। ३

कर पकर बैठाए के, आवेस दियो मोहे अंग ।
ता दिन थें मेहेर पसरी, पल पल चढ़ते रंग ।। ४

मिलाप हुआ जब मेहेदी से, तब कह्या महामति नाम ।
अब मैं हुई जाहेर, देख्या वतन बका धाम ।। ५

बात कही सब वतन की, सो निरखे मैं निसान ।
नजरों सब जाहेर हुआ, उड़ गया उनमान[2] ।। ६

---

१. टेक, हठ । २. अनुमान ।

आपा मैं पेहेचानिया, सनमंध हुआ सत ।
ए मेहेर जुबां क्यों कहूं, गई मूल से गफलत ॥ ७

ए झूठी अबलों न जानती, क्या है क्यों उतपत ।
सो अब सब विध समझी, यों होसी फना कुदरत ॥ ८

मुझे जगाई जुगतसों, सुख दियो अंग आप ।
कंठ लगाई कंठसों, या विध कियो मिलाप ॥ ९

खासी जान खेड़ी जिमी, जल सींचिया खसम ।
बोया बीज वतन का, सो उग्या वाही रसम ॥ १०

बीज रूह संग निज बुध, सो ले उठिया अंकूर ।
या जुबां इन अंकूर को, क्यों कर कहूं सो नूर ॥ ११

नातो एह बात जो गुझ की, सो क्यों होवे जाहेर ।
पर मोमन प्यारे मुझ को, सो कर ना सकूं अंतर ॥ १२

तो भी कहूं नेक नूर की, कछुक इसारत अब ।
पीछे तो जाहेर होएसी, तब दुनी मिलसी सब ॥ १३

ए जो विरहा बीतक कही, इमाम मिले जिन सूल ।
अब फेर कहूं निज नूर से, जासों पाईए माएने मूल ॥ १४

सुनियो रूहें *मोमनो, जो इन मासूक की विरहिन ।
जो चाहे मेहेदी *महंमद को, मैं ताए कहूं वचन ॥ १५

ए विरहा लक्षन मैं कहे, पर नाहीं विरहा ताए ।
या विध विरहा उदंम की, जो कोई किया चाहे ॥ १६

ज्यों ए विरहा उपज्या, ए नहीं हमारो धरम ।
विरहिन कबूं ना करे, यों विरहा अनुकरम[1] ॥ १७

विरहा सुनते मासूक का, आहि ना उड़ गई जिन ।
ताए वतन रूहें यों कहें, नाहीं ए विरहिन ॥ १८

---

१. क्रम से ।

जो होए आपे विरहनी, सो क्यों कहे विरहा सुध ।
सुन विरहा जीव ना रहे, तो विरहिन कहां से बुध ॥ १९

पतंग कहे पतंग को, कहां रह्या तूं सोए ।
मैं देख्या है दीपक, चल देखाऊं तोहे ॥ २०

या तो ओ दीपक नहीं, या तूं पतंग नाहें ।
पतंग कहिए तिनको, जो दीपक देख झंपाए ॥ २१

पतंग और पतंग को, जो सुध दीपक दे ।
तो होवे हांसी तिन पर, कहे नाहीं पतंग ए ॥ २२

दीपक देख पीछा फिरे, साबित राखे अंग ।
आए देवे सुध और को, ताए क्यों कहिए पतंग ॥ २३

मैं तो बीतक तब कही, जब लई मासूकें उठाए ।
जब मैं हुती विरह में, तब क्यों मुख बोल्यो जाए ॥ २४

ए तो विरहा उपज्या ख्वाब में, चढ़ते चढ़ते पाए ।
जब विरहा तामस बढ़्या, तब नीद दई उड़ाए ॥ २५

विरहा नहीं ब्रह्मांड में, विना सुहागिन नार ।
सुहागिन अंग इमाम को, वतन पार के पार ॥ २६

अब कहूं मोमिन की, जाए कहिए सुहागिन ।
ए विरहिन ब्रह्मांड में, हुती ना एते दिन ॥ २७

सो सुहागिन जेतियां, इमाम की विरहिन ।
सो अन्तर हकें पकड़ी, ना तो रहे ना तन ॥ २८

ए सुध दई इमामें, मोहे गुझ कियो प्रकास ।
तो ए जाहेर होत है, गयो तिमर सब नास ॥ २९

*मेहेदी *महंमद प्यारे मोमन, सो जुबां कह्यो ना जाए ।
पर हुआ है मुझे हुकम, सो कैसे कर ढंपाए ॥ ३०

अनेक करही बंदगी, अनेक विरहा लेत ।
ए सुख तिन सुपने नहीं, जो हमको जगाए देत ॥ ३१

छल तें मोहे छुड़ाए के, कछु दियो विरहा संग ।
सो भी विरहा छुड़ाईया, देकर अपनो अंग ॥ ३२

अंग नूर बुध देए के, कहे तूं प्यारी मुझ ।
देने सुख सबन को, हुकम करत हूं तुझ ॥ ३३

तुम दुख पाया मुझे सालही,[१] अब सब सुख तुम हस्तक[२] ।
दिया तुमारा पावहीं, दुनियां चौदे तबक ॥ ३४

दुख पावत हैं मोमन, सो हम सह्यो न जाए ।
हम भी होसी जाहेर, पर पेहेलें सुहागनियां जगाए ॥ ३५

सिर ले आप खड़ी रहो, कहे तूं सब सैयन ।
प्रकास होसी तुझ से, द्रढ़ कर देख मन ॥ ३६

तोसों ना कछू अंतर, तूं है सुहागिन नार ।
माएने गुझ बताए के, खोल दे पार द्वार ॥ ३७

जो कबूं जाहेर ना हुई, सोए करी तुझे सुध ।
अब थें आद अनाद लों, जाहेर होसी निज बुध ॥ ३८

तोहे तो सब सुध परी, कहूं अटके नहीं निरधार ।
आगे होए सुहागनी, कराओ सबों दीदार ॥ ३९

चौदे तबक कायम होएसी, सब हुकम के प्रताप ।
ए सोभा तुझे सुहागनी, जिन जुदी जाने आप ॥ ४०

जो कोई सब्द संसारमें, ना खुले माएने कब ।
सो सब खातर मोमनों, तूं खोलसी माएने अब ॥ ४१

तूं देख दिल विचार के, उड़ जासी असत ।
सारों के सुख कारने, तूं जाहेर भई महामत ॥ ४२

खेल किया तुम खातर, सो तूं कहे आगे मोमन ।
पेहेले खेल देखाए के, पीछे मूल वतन ॥ ४३

१. चुभते हैं । २. हाथ में ।

अंतर रूहोंसों जिन करो, जो मोमन हैं अरस घर ।
पीछे चौदे तबक में, जाहेर होसी आखर ॥ ४४

बड़ा सुख आगे मोमन, पीछे सुख संसार ।
एक दीन सब होएसी, घर घर सुख अपार ॥ ४५

तें वचन कहे जो मुख थें, होसी तिनसे प्रकास ।
असत उड़सी तूल ज्यों, होसी कुफर[1] सब नास ॥ ४६

तूं लीजे नीके माएने, तेरे मुख के बोल ।
जो साख देवे रूह अपनी, तो लीजे सिर कोल ॥ ४७

देत हों बल सबन को, जो हैं असलू मोमन ।
तूं पूछ देख दिल अपना, कर कारज द्रढ़ मन ॥ ४८

मैं अंग इमाम को, मोमन मेरे अंग ।
बीच आए तिन वास्ते, करूं सब एक संग ॥ ४९

॥ प्रकरण ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ २४७ ॥

॥ सनंध *मोमिनके ढूंढ़वे की ॥

अब ढूंढ़ों रूहें अरस की, जो हैं मूल अंकूर ।
सो निज वतनी मोमन, खसम अंग निज नूर ॥ १

नूर पार पीउ एक खुद है, और ना दूजा कोए ।
और नार सब माया, यामें भी रूह दोए ॥ २

इत असलू रूह विस्तु की, दूजी रूह कुफरान ।
इन दोउ से न्यारे मोमन, सो आगे कहूंगी पेहेचान ॥ ३

मोमन सुख असल वतनी, विस्तु का सुख और ।
दुनी विस्तु कायम होएसी, कजा कहूंगी तिन ठौर ॥ ४

अब लछन[2] देखो मोमन के, जो अरवा हैं अरस घर ।
ए वतनी वचन सुनके, आवत हैं ततपर[3] ॥ ५

---

१. कृतघ्नता, परमात्मा को अनन्य न मानना । २. लक्षण । ३. एकदम ।

अटक रह्या साथ आधा, जिन खेल देखन का प्यार ।
ए किया मूल इन खातर, जो हैं तामसियां नार ॥ ६
भूल गइयां खेल में, जो मोमन हैं समरथ ।
नूर इमाम को मुझ पे, केहे समझाऊं अरथ ॥ ७
सबों को भेली करूं, द्रढ़ कर देऊं मन ।
खेल देखाऊं खोल के, जिन विध ए उतपन ॥ ८
ए खेल है जोरावर, बड़ो ते रचियो छल ।
ए तब जाहेर होएसी, जब काढ़ देखाऊं बल ॥ ९
तुम नाहीं इन छल के, और छल को जोर अमल ।
सांचो को झूठी लगी, ऐसो छल को बल ॥ १०
तुम आईयां छल देखने, भूल गैयां मांहें छल ।
छलको छल न लागही, ओ लेहेरी ओ जल ॥ ११
ए झूठी तुम को लग रही, तुम रहे झूठी लाग ।
ए झूठी अब उड़ जाएसी, दे जासी झूठा दाग ॥ १२
हांसी होसी अति बड़ी, जिन मोहे देओ दोस ।
कमी कहे में ना करूं, पर तुमें छल हुआ सिरपोस[1] ॥ १३
मांग लिया खसम पें, ए छल तुम देखन ।
जो कदी भूलो छल में, तो फेर न आवे ए दिन ॥ १४
तुम मुख नीचा होएसी, आगूं सब मोमन ।
ए हांसी सत वतन की, कोई मोमन कराओ जिन ॥ १५
दुख ले चलसी इत थें, नहीं आवन दूजी बेर ।
तिन क्यों मुख ऊंचा होएसी, जो खसमसों बैठी मुख फेर ॥ १६
तुमें सुध छल ना अपनी, ना सुध हक वतन ।
बताए देऊं या बिध, द्रढ़ होवे आप मन ॥ १७

१. सिर का ढक्कन ।

ए छल पेड़ थें देखाए बिना, ना छूटे याको बल ।
उड़ाए देऊं जड़ पेड़ से, ज्यों उतर जाए अमल ।। १८

अब देखो इन छल को, जो देखन आईयां तुम ।
नूर जोस देऊं अंग में, जो कोई मोमन मुसलिम ।। १९

मोमन मांग्या मौले[1] पें, सो भूल गैयां बातें मूल ।
सो खेल देखाए पीछे याद देऊं, देखाए फुरमान रसूल ।। २०

या छल में अनेक छल हैं, सो करूं सब जाहेर ।
खोलूं कमांड़ कल कुलफ, अंतर मांहें बाहेर ।। २१

।। प्रकरण ।। १२ ।। चौपाई ।। २६८ ।।

## सनंध खेलके मोहोरों की

अब निरखो नीके कर, जो देखन आईयां तुम ।
माग्या खेल हिरस[2] का, सो देखावें खसम ।। १

भोम भली भरथ खंड की, जहां आई निध नेहेचल ।
और सारी जिमी खारी, खारे जल मोह जल ।। २

इत बोए ब्रख होत है, ताको फल पावे सब कोए ।
बीज जैसा फल तैसा, किया जो अपना सोए ।। ३

इनमें जो ठौर अच्छी, जाको नाम *नौतन ।
जहां आए उदै हुई, नेहेचल बात वतन ।। ४

तिन अछी थें ठौर अछी, जाए कहिए *हिंदुस्तान ।
जहां मेहेदी *महंमद आए के, जाहेर किया फुरमान ।। ५

जोलों फुरमान ना जाहेर, तोलों मुख ना निकसे दम ।
अब इमाम के निज नूर से, देखाऊं खेल मुसलिम ।। ६

ए खेल तुम मांगिया, सो किया तुम कारन ।
ए बिध सब देखाए के, देखाऊं खसम वतन ।। ७

---

१. परमात्मा । २. लालच ।

मोहोरे सब जुदे जुदे, जुदी जुदी मुख बांन ।
खेलें मन के भावते, सब आप अपनी तान ॥ ८

स्वांग[1] काछे जुदे जुदे, और जुदे जुदे रूप रंग ।
चलें आप चित चाहते, और रहें भेले संग ॥ ९

कै दुकान बाजार सेहेर, चौक चौवटे अनेक ।
अनेक कसबी[2] कसब करते, हाट पीठ बसेक ॥ १०

भेष सारे बनाए के, करें हो हो कार ।
कोई मिने आहार खाए, कोई खाए अहंकार ॥ ११

बिध बिध के भेष काछे, सारे जान प्रवीन ।
वरन चारो खेलें चित दे, नाहींन कोई मत हीन ॥ १२

पढ़े चारो विद्या चौदे, हुए वरन विस्तार ।
आप चंगी सब दुनियां, खेलत हैं नर नार ॥ १३

वरन सारे पसरे, लगे लोभे करे उपाय ।
बिना अगनी पर जले, अंग काम क्रोध न माए ॥ १४

नहीं जासों पेहेचान कबहूं, तासों करे सनमंध ।
सगे सहोदर मिलके, ले देवें मन के बंध ॥ १५

सनमंध करते आप में, खुस्हाल हाल मगन ।
केसर कसूंबे[3] पेहेर के, देखलावें लोकन ॥ १६

सिनगार करके तुरी[4] चढ़े, कोई करे छाया छत्र ।
कोई आगे नाटारंभ करे, कोई बजावे बाजंत्र ॥ १७

कोई बांध सीढ़ी आवे सामी, करे पोक[5] पुकार ।
विरह वेदना अंग न माए, पीटे मांहें बाजार ॥ १८

गाड़े जालें हाथ अपने, रुदन करें जल धार ।
सनमंधी सब मिलके, टल—बले नर नार ॥ १९

---

१. बनावटी रूप । २. कारीगर । ३. कुसुंभी रंग । ४. घोड़ा । ५. करुण पुकार ।

जनम होवे काहू के, काहू के होए मरन ।
हांसी हिरदे काहू के, काहू के सोक जलन ।। २०

जर खरचें खाए गफलतें, करें बड़े दिमाग ।
कीरत अपनी कराए के, पीछे होवें हलाक[1] ।। २१

कोई किरपी कोई दाता, कोई मंगन केहेलाए ।
किसी के अवगुन बोलें, किसी के गुन गाए ।। २२

कोई मिने बेहेवारिए, कोई राने राज ।
कै मिने रांक रल[2]—झलें, कै रोते फिरे अकाज ।। २३

कै सोवें सोने के पलंग, कै ऊपर ढोलें[3] वाए ।
रहे खड़े आगे जी जी करें, ए खेल यों सोभाए ।। २४

कैं बैठें सुखपाल में, कै दौड़े उचाए[4] ।
जलेब[5] आगे जोर चले, ए खेल यों खेलाए ।। २५

कोई बैठे तखतरवा,[6] आगे तुरी गज पाएदल ।
अति बड़े बाजंत्र बाजहीं, जाने राज नेहेचल ।। २६

साम सामी करें फौजें, लड़ावें लोह अंग ।
जिमी खावंद नाम धरावने, कै लड़ मरें अभंग ।। २७

कोई मिने होए कायर, छोड़ सरम भाग जाए ।
कोई मारे कोई पकरे, कोई जावे आप बचाए ।। २८

कोई जीते कोई हारे, काहूं हरख काहूं सोक ।
जो तरफ सारी जीत आवे, ताए कहें प्रथीपत लोक ।। २९

कै करत ले कैद में, बांधत उलटे बंध ।
मारते अरवाह[7] काढ़हीं, ए खेल या सनंध ।। ३०

जीते हरखे पौरसे,[8] उमंग अंग न माए ।
हारे सारे सोक पावें, तोबा तोबा करें जुबांए ।। ३१

१. तबाह । २. रखड़ना । ३. डुलावें । ४. उठा कर । ५. साथ में । ६. सिंहासन । ७. प्राण । ८. पराक्रम ।

कै फिरत हैं रोगिए, कै लूले टूटे अपंग ।
कै मिने आंधले, यों होत खेलमें रंग ॥ ३२

कै उदर कारने, फिरत होत फजीत ।
पवाड़े[1] कै बिना हिसावें, खेल होत या रीत ॥ ३३

॥ प्रकरण ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ ३०१ ॥

## सनंध खेलमें खेलकी

अब गुझ बताऊं खेल का, झूठे खेलें कर सांच ।
ए नीके देखो मोमिनों, ए जो रहे मेहेजबों[2] रांच ॥ १

में बताऊं या बिध, जासों जाहेर सब होए ।
नहीं पटंतर[3] दीन[4] पैंड़े, सो जुदे कर देऊं दोए ॥ २

इन खेल में जो खेल हैं, सो केहेत न आवे पार ।
इन भेषों में भेष सोभही, सो कहूं नेक विचार ॥ ३

कै बिना हिसाबे देहुरे,[5] जुदे जुदे अपने मजहब ।
कै भांतों कै जिनसों,[6] करत बंदगी सब ॥ ४

खोजें कोई न पावही, वार ना पाईए पार ।
ले बुत[7] बैठावें देहुरे, कहें हमारा करतार ॥ ५

कै सराए अपासरे,[8] कै ताल कुंड बिरबाव ।
कै बिध बांधे बेरखे,[9] कै साल[10] पोसाल[11] टिकाव ॥ ६

कै अंन नीर सबीलें,[12] कै करें दया दान ।
कै तरपन तीरथ, कै करे नित अस्नान ॥ ७

कै भेष जो साध कहावहीं, कै पंडित पुरान ।
कै भेष जो जालिम,[13] कै मूरख अजान ॥ ८

कै कहावे दरसनी, धरे जुदे जुदे भेष ।
सुध आप ना पार की, हिरदे अन्धेरी विसेष ॥ ९

---

१. झंझट । २. सम्प्रदाय । ३. पहचान । ४. धर्म । ५. देवालय । ६. वस्तु । ७. मूर्ति । ८. जैन मन्दिर । ९. निशान । १०. वार्षिक । ११. अन्न क्षेत्र । १२. प्याऊ । १३. अत्याचारी ।

कै लूचें कै मूड़ें, कै बढ़ावें केस ।
कै काले कै उजले, कै धरें भगुए भेष ॥ १०

कै नेक छेदें कै न छेदें, कै बहुत फारे कान ।
कै माला तिलक धोती, कै धरे बैठे ध्यान ॥ ११

कै लंगरी[१] बोदले,[२] कै सेख[३] दुरवेस[४] ।
कै इलम कै आलम,[५] कै पढ़े हुए पेस[६] ॥ १२

कै जिंदे गोस[७] कुतब,[८] कै मलंग[९] मीर[१०] पीर[११] ।
कै औलिए[१२] कै अंबिए,[१३] कै मिने फकीर ॥ १३

कै पैगंमर आदम, कै फिरे फिरस्ते फेर ।
तबक चौदे देखिए, पर किन ठौर न छोड़ी अन्धेर ॥ १४

कै सीलवंती सती कहावहीं, कै आरजा अरधांग ।
जती वरती पोसांगरी,[१४] ए अति सोभावें स्वांग ॥ १५

कै जुगते जोगी जंगम, कै जुगते सन्यास ।
कै जुगते देह दमें, पर छूटे नहीं जम फांस ॥ १६

कै सिवी कै वैस्नवी, कै साखी समरथ ।
लिए जो सारे गुमाने, खेलें छल अनरथ ॥ १७

कै श्रीपात ब्रह्मचारी, कै वेदिए वेदांत ।
कै गए पुस्तक पढ़ते, परमहंस सिधांत ॥ १८

अनेक अवतार तीर्थंकर, कै देव दानव बड़े बल ।
बुजरक नाम धराईया, पर छोड़े न काहूं छल ॥ १९

कै होदी[१५] बोदी[१६] पादरी, कै चंडिका चामंड ।
बिना हिसाबे खेलहीं, जाहेर छल पाखंड ॥ २०

कै डिंभ[१७] करामात, कै जंत्र मंत्र मसान ।
कै जड़ी मूली औषधी, कै गुटका धात रसान ॥ २१

---

१. शरारती । २. बुद्धू । ३. प्रौढ़ । ४. फकीर । ५. विद्वान । ६. बूढ़े । ७. मुसलमान महात्मा । ८. अगुआ धर्म का । ९. आजाद फकीर । १०. अगुआ । ११. गुरू । १२. धर्म गुरू । १३. पैगम्बर । १४. सन्तोषी । १५. हवन करने वाला । १६. बोदे फकीर । १७. पाखण्ड ।

कै जुगतें सिध साधक, कै व्रत धारी मुन ।
कै मठ वाले पिंड पाले, कैं फिरे होए नगन ॥ २२

कै खट चक्र नाड़ी पवन, कै अजपा अनहद ।
कैं त्रैवेनी त्रकुटी, जोती सोहं राते सब्द ॥ २३

कै संत जो महंत, कै देखीते डिगंमर ।
पर छल ना छोड़े काहूं को, कै कापड़ी कलंदर[१] ॥ २४

कै आचारी अप्रसी,[२] कै करे कीरतन ।
यों खेलें जुदे जुदे, बस परे सब मन ॥ २५

कै कीरतन करें बैठे, कै जाग जगन ।
कै कथें ब्रह्म ग्यान, कै तपे पंच अगिन ॥ २६

कै इंद्री करें निग्रह, मन ल्याए कष्ट मोह ।
कै ऊरध ठाड़ेसरी, कै बैठे खुद होए ॥ २७

कै फिरे देस देसांतर, कै करें काओस[३] ।
कै कपाली अघोरी, कै लेवें ठंढ पाओस[४] ॥ २८

कै पवन दूध आहारी, कै ले बैठत हैं नेम ।
कै कैद ना करें कछुए, ए सब छल के चेन ॥ २९

कै फल फूल पत्र भखी,[५] कै अहार अलप[६] ।
कै करें काल की साधना, जिया चाहें कलप ॥ ३०

कै धारा गुफा झांपा, कै जो गाले तन ।
कै सूकें बिना खाए, कै करें पिंड पतन ॥ ३१

यों वैराग जो साधना, कै जुदे जुदे उपचार ।
यों चलें सब पंथ पेंड़े, खेले सब संसार ॥ ३२

खेले सब देखा देखी, ज्यों चले चींटी हार ।
यों जो अंधे गफलती, बांधे जाए कतार ॥ ३३

---

१. मुसलमानों की एक जाति । २. छुआ-छूत मानने वाले । ३. साधना वाले । ४. बरसा ।
५. खाने वाले । ६. कम ।

कोई ना चीन्हें आप को, ना सुध अपनो घर ।
जिमी न पैंड़ा सूझे काहू, जात चले या पर ॥ ३४

बाजीगर न्यारा रह्या, ए खेलत कबूतर ।
तो कबूतर जो खेल के, सो क्यों पावें बाजीगार ॥ ३५

आपे नाम जुदे जुदे, खुद के धरें अनेक ।
अनेक रंगे संगे ढंगे, बादे करें विवेक ॥ ३६

सुध इनको तो परे, जो ए आप सांचे होए ।
तो कुरान के माएने, इत खोल ना सके कोए ॥ ३७

ए देखो तुम मोमनों, खेल बिना हिसाब ।
ए खेल तुम खातर, खसमें रचिया ख्वाब ॥ ३८

मोमनों के मेले मिने, कोई आए न सके रूह ख्वाब ।
ए ख्वाब नीके पेहेचानियो, ज्यों होवे दीन सवाब ॥ ३९

॥ प्रकरण ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ ३४० ॥

## सनंध जुदे जुदे फिरकोंके जिद की

अजूं देखाऊं नीके कर, ए जो खेंचा खेंच करत ।
ए झूठे झूठा राचहीं, पर सुध न काहूं परत ॥ १

खेल खेलें और रव्दें, मिनो मिने करें क्रोध ।
जैसे मछ गलागल, छोड़े ना कोई ब्रोध ॥ २

कोई कहे दान बड़ा, कोई कहे ग्यान ।
कोई कहे विग्यान बड़ा, यों लरे सब उनमान ॥ ३

कोई कहे करम बड़ा, कोई केहेवि काल ।
कोई कहे साधन बड़ा, यों लरे सब पंपाल[1] ॥ ४

कोई कहे बड़ा तीरथ, कोई कहे बड़ा तप ।
कोई कहे सील बड़ा, कोई केहेवे सत ॥ ५

---

१. झूठ ।

कोई कहे विचार बड़ा, कोई कहे बड़ा व्रत ।
कोई केहेवे मत बड़ी, या विध कै जुगत ॥ ६

कोई कहे बड़ो करनी, कोई कहे मुगत[१] ।
कोई कहे भाव बड़ा, कोई कहे भगत ॥ ७

कोई कहे कीरतन बड़ा, कोई कहे श्रवन ।
कोई कहे बड़ी बंदनी, कोई कहें अरचन ॥ ८

कोई कहे ध्यान बड़ा, कोई कहे धारन ।
कोई कहे सेवा बड़ी, कोई कहे अरपन ॥ ९

कोई कहे संगत बड़ी, कोई कहे बड़ा दास ।
कोई कहे विवेक बड़ा, कोई कहे विस्वास ॥ १०

कोई कहे स्वांत बड़ी, कोई कहे तामस ।
कोई कहे पन बड़ा, यों खेलें परे परवस ॥ ११

कोई कहे *सदा सिव बड़ा, कोई कहें आद *नारायण ।
कोई कहे आदे आद माता, यों करत तानों तान ॥ १२

कोई कहे आतम बड़ी, कोई कहें पर आतम ।
कोई कहे अहंकार बड़ा, जो आद का उतपंन ॥ १३

कोई कहे सकल व्यापक, देखोतां सब ब्रह्म ।
कोई कहे ए सबसे न्यारा, यों करे लड़ाई भूले भरम ॥ १४

कोई कहे सुंन बड़ी, कोई कहे *निरंजन ।
कोई कहे निरगुन बड़ा, यों लरें वेद बचन ॥ १५

कोई कहे आकार बड़ा, कोई कहे *निराकार ।
कोई कहे तेज बड़ा, यों लरें लिए विकार ॥ १६

कोई कहे पारब्रह्म बड़ा, कोई कहे *पुरुषोत्तम ।
वेद के बाद अंधकारे, करें लड़ाई धरम ॥ १७

---

१. मुक्ति ।

जाहेर झूठा खेलहीं, हिरदे अति अंधेर ।
कहे हम सांचे और झूठे, यों फिरे उलटे फेर ॥ १८

पंथ सारों की एह मजल, अनेक बिध वैराट ।
ए जो विगत[1] खेल की, सब रच्यो छल को ठाट ॥ १९

कोई हेम गले अगनी जले, भैरव करवत ले ।
खसम को पावें नहीं, जो तिल तिल काटे देह ॥ २०

भेष जुदे जुदे खेलहीं, जाने खेल अखंड ।
ए देत देखाई सब फना, मूल विना ब्रह्मांड ॥ २१

खसम एक सबन का, नाहीं दूसरा कोए ।
ए विचार तो करें, जो आप सांचे होए ॥ २२

खेलें सब बेसुध में, कोई बोल काढ़े विसाल ।
उतपन सारी मोह की, सो होए जाए पंपाल ॥ २३

बिना दिवालें लिखिए, अनेक चित्रामन[2] ।
तो ए क्यों पावें खुद को, जाको मूल मोह सुंन ॥ २४

अनेक किव[3] इत उपजे, वैराट सचराचर ।
ए छल मोहोरे छल कों, खेलत हैं सत कर ॥ २५

॥ प्रकरण ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ ३६५ ॥

## सनंध वैराटकी जाली की

ए खेल रच्यो हम खातर, सो देखन आईयां हम ।
ए जो प्यारे मेहेदी *महंमद, जेती रूह मुसलिम ॥ १

ए खेल को कौन देखावही, कौन कहे याकी सुध ।
इमाम आप आए बिना, क्यों आवे वतनी बुध ॥ २

आई बुध वतन की, तब खुले माएने कुरान ।
भी नेक बताऊं या बिध, ज्यों होवे सब पेहेचान ॥ ३

१. हाल । २. चित्रकारी । ३. कवि ।

वैराट का फेर उलटा, मूल है आकास ।
डालें पसरी पाताल में, यों कहे वेद प्रकास ॥ ४

फल डाल अगोचर, आड़ी अंतराए पाताल ।
वैराट वेद दोऊ कोहेड़ा,[1] गूंथी सो छल की जाल ॥ ५

बिध दोऊ देखिए, एक नाभ[2] दूजा मुख[3] ।
गूंथी जालें दोऊ जुगते, मान लिए दुख सुख ॥ ६

कोहेड़े दोऊ दो भांत के, एक वैराट दूजा वेद ।
जीव जालों जाली बंधे, कोई जाने न याको भेद ॥ ७

देखलावने मोमन को, कोहेड़े किए एह ।
बताए देऊं आंकड़ी, छल बल की है जेह ॥ ८

आंकड़ी एक इन भांत की, बांधी जोरसों ले ।
रूह झूठी देखहीं, सांची देखे देह ॥ ९

करे सगाई देहसों, नहीं रूहसों पेहेचान ।
सनमंध पालें इनसों, एह लई सबों मान ॥ १०

न्हवाए चरचे अरगजे,[4] प्रीते जिमावें पाक ।
सनेह करके सेवहीं, पर नजर बांधी खाक ॥ ११

रूह गई जब अंग थें, तब अंग हाथों जालें ।
सेवा जो करते सनेहसों, सो सनमंध ऐसा पालें ॥ १२

हाथ पांव मुख नेत्र नासिका, सोई अंग के अंग ।
तिन छूत लगाई घर को, प्यार था जिन संग ॥ १३

अंग सारे प्यारे लगते, खिन एक रह्यो न जाए ।
चेतन चले पीछे सो अंग, उठ उठ खाने धाए ॥ १४

सनमंधी जब चल गया, अंग बैर उपज्या ताए ।
सो तबहीं जलाए के, लियो सो घर बटाए ॥ १५

---

१. उलझन । २. नारायण की नाभि से ब्रह्मा वैराट । ३. ब्रह्मा के मुख से वेद ।
४. सुगन्धित लेप ।

छोड़ सगाई रूह की, करे सगाई आकार ।
वैराट कोहेड़ा या बिध, उलटा सो के प्रकार ॥ १६

के बिध यों उलटा, वैराट नेत्रों अंध ।
चेतन बिना कहे छूत लागे, फेर तासों करें सनमंध ॥ १७

एक भेष जो विप्र का, दूजा भेष चंडाल ।
जाके छुए छूत लागे, ताके संग कौन हवाल ॥ १८

चंडाल हिरदें निरमल, संग खेले भगवान ।
देखावे नहीं काहूं को, गोप राखे नाम ॥ १९

अंतराए नहीं खिन की, सनेह सांचों रंग ।
रात दिन नजर रूह की, नहीं वजूदसों[1] संग ॥ २०

विप्र भेष बाहेर द्रष्टी, खट करम पाले वेद ।
स्याम खिन सुपने नहीं, जाने नहीं ब्रह्म भेद ॥ २१

उदर कुटम कारने, उतमाई[2] देखावें अंग ।
व्याकरन बाद विवाद के, अरथ करें के रंग ॥ २२

अब कहो काके छूए, अंग लागे छोत ।
अधम तम विप्र अंगे, चंडाल अंग उदयोत[3] ॥ २३

पेहेचान सबों वजूद की, नहीं रूह की द्रष्ट ।
वैराट का फेर उलटा, या बिध सारी सृष्ट ॥ २४

एक देखो अचरज, चाल चले संसार ।
जाहेर है ए उलटा, जो देखिए दिल विचार ॥ २५

सांचे को भूठा कहे, भूठे को कहे सांच ।
ए भी देखाऊं जाहेर, सब रहे भूठे रांच ॥ २६

आकार को निराकार कहें, *निराकार को आकार ।
आप फिरे सब देखें फिरते, ए असत यों निरधार ॥ २७

---

१. शरीर । २. अच्छाई । ३. प्रकाशित ।

मूल बिना वैराट खड़ा, यों कहे सब संसार ।
तो ख्वाब के जो दम आपे, ताएं क्यों कहिए आकार ॥ २८

आकार न कहिए तिनको, काल को जो ग्रास ।
काल सो निराकार है, आकार सदा अविनास ॥ २९

जिन रांचो मृग जल द्रष्टें, जाको नाम परपंच ।
ए छल गफलत को कियो, ऐसो रच्यो उलटो संच[1] ॥ ३०

॥ प्रकरण ॥ १६ ॥ चौपाई ॥ ३९५ ॥

## सनंध वेदके कोहेड़े की

ए खेल देख्या ख्वाब का, ए जो लरें लोक विवाद ।
पर लड़ाए इनको जिने, नेक कहूं तिनकी आद ॥ १

जिन बंधे हुए अंधे, फिरे सो उलटें फेर ।
सो नेक बताए पीछे, उड़ाए देऊं अन्धेर ॥ २

अब कहूं कोहेड़ा वेद का, जाकी मोही गूंथी जाल ।
याकी भी नेक केहे के, देऊं सो आंकड़ी टाल ॥ ३

वैराट आकार ख्वाब का, ब्रह्मा सो तिनकी बुध ।
मन नारद फिरे दसो दिस, वेदें बांध किए बेसुध ॥ ४

लगाए सब रब्दें, व्याकरन बाद अन्धकार ।
या बुधें बेसुध हुए, विवेक खाली विचार ॥ ५

बंध बांधे या बिध, हर वस्त के बारे नाम ।
सो बानी ले बड़ी कोनी, ए सब छल के काम ॥ ६

लुगे लुगे के जुदे माएने, द्वादस के परकार ।
उरझाए मूल माएने, बांधे अटकलें[2] अपार ॥ ७

अरथ को डालने उलटा, अनेक तरफों ताने ।
मूढ़ों को समझावने, रेहेस[3] बीच में आने ॥ ८

---

१. सांचा । २. अनुमान । ३. गूढ़ ज्ञान ।

ऐसी अनेक आंकड़ियों मिने, बोले बारे तरफ ।
रेहेस रंचक धरे बीच में, समझाए ना किने हरफ ॥ ९

बारे तरफों बोलते, एक अख्यर एक मात्र ।
ऐसे बांध बतीस स्लोक में, बड़ा छल किया यों सास्त्र ॥ १०

बारे मात्र एक अख्यर, अख्यर स्लोक बतीस ।
छल एते आड़े अरथ के, और खोज करें जगदीस ॥ ११

अरथ आड़े कै छल किए, तिन अरथों में कै छल ।
अख्यरा अरथ ना होवही, कियो भावा अरथ अटकल ॥ १२

जाको नामैं संसक्रत, सो तो संसे[1] ही की क्रत[2] ।
सो हरफ दृढ़ क्यों होवही, जो एती तरफ फिरत ॥ १३

सो पढ़े पंडित जुध करे, एक कांने[3] को टुकड़े होए ।
आपस में जो लड़ मरे, एक मात्र ना छोड़े कोए ॥ १४

ए वाद वानी सिर लेवहीं, सुध बुध जावे सान ।
स्वांत स्वास न आवे सुपने, ऐसा व्याकरन ग्यान ॥ १५

ए वानी ले बड़ी कीनी, दियो सो छल को मान ।
सो खेंचा खेंच ना छूटही, लिए क्रोध गुमान ॥ १६

ए छल पंडित पढ़हीं, ताए मान देवें मूढ़ ।
बड़े होए करें माएने, एह चली छल रूढ़ ॥ १७

सीधी इन भाषा मिने, माएने पाईए जित ।
जो सब्द सब समझहीं, सो पकड़े नहीं पंडित ॥ १८

एक अरथ न कहें सीधा, ए जाहेर *हिन्दुस्तान ।
अरथ को डालने उलटा, जाए पढ़ें छल बान ॥ १९

ए छल देखो मोमिनों, और है सब छल ।
रूह छल न छूटे छल थें, जो देखो करते बल ॥ २०

---

१. शंका । २. उपजाने वाले । ३. मात्रा ।

एक उरझन वैराट की, दूजी वेद की उरझन ।
ए नेक कही मैं तुमको, पर ए छल है अति घन ॥ २१

मुख उदर के कोहेड़े, रचे मिने सुपन ।
और सुध इनों क्यों होए, ए खेलें गफलती जन ॥ २२

वैराट वेदों देख के, बूझ करी सेवा एह ।
देव जैसी पातरी[1], ए चलत दुनियां जेह ॥ २३

जो बोले साधू सास्त्र, जिनकी जैसी मत ।
ए मोहोरे उपजे अंधेर से, ताको ए सब सत ॥ २४

तबक चौदे देखे वेदों, निराकार लों वचन ।
उनमान आगे केहेके, फेर पड़े माहें सुंन ॥ २५

ए देखो तुम मोमनों, पांचों उपजे तत्व ।
ए गफलत में रूह खेलहीं, सब रूहों की उतपत ॥ २६

रूह सबों में पसरी, थावर और जंगम ।
पेड़ याको जुलमत[2], मलकूत[3] में खसम ॥ २७

दसो दिसा भवसागर, देखत एह सुपन ।
ग्रदवाए आवरन गफलत, निराकार कहावे सुंन ॥ २८

तबक चौदे कौहेड़े, ए सबे कुदरत ।
सुर असुर कै अनेक विध, खेलें ख्वाबी दम गफलत ॥ २९

वनसपती पसू पंखी, आदमी जीव जंत ।
मछ कछ सब सागर, रच्यो एह परपंच ॥ ३०

रूह मिने जुदी जिनसों, कहिएत चारों खान ।
जड़ चलें पेट पांउं परें, लाख चौरासी निरमान ॥ ३१

कोई बैकुंठ कोई जमपुरी, कोई स्वर्ग पाताल ।
खेलें सब ख्वाबी पुतले, रूह आड़ी गफलत पाल ॥ ३२

---

१. पूजने वाले । २. अंधकार । ३. वैकुण्ठ ।

जो बनजारे[1] खेल के, तिन सिर जमको दंड ।
कोई दिन स्वर्ग मिने, पीछे नरक के कुंड ॥ ३३

लाठी[2] तेरे लोक पर, संजम पुरी सिरदार ।
जो जाने नहीं जगदीस को, तिन सिर जम की मार ॥ ३४

ए छल बनज छोड़ के, करे बैकुंठ को बेपार ।
ए सत लोक याही को, कोई गले निराकार ॥ ३५

चौदे तबक इंड में, जिमी जोजन कोट पचास ।
पहाड़ कुलो अष्ट जोजन, लाख चौसठ वास ॥ ३६

पांच तत्व छठी आतमा, सास्त्र सबों ए मत ।
ए निरमान बांध के, ले ख्वाब किया सत ॥ ३७

देखे सातो सागर, देखे सातो लोक ।
पाताल सातो देखिए, ए गफलत उड़े सब फोक ॥ ३८

ए छल बल देखिया, धखत आग को कूप ।
ए नख सिख लों देखिया, बड़ा दजाल का रूप ॥ ३९

ताए नारायन कर सेवही, ऐसी ए कुफरान[3] ।
पीर जैसे मुरीद[4] तैसे, एक रस ए निरवान ॥ ४०

ए झूठे झूठा खेलहीं, नहीं सांच की सुध ।
ए पीर मुरीद देखिए, कही दोऊ की विध ॥ ४१

॥ प्रकरण ॥ १७ ॥ चौपाई ॥ ४३६ ॥

## ॥ सनंध हांसी की ॥

मोमन यामें न रांचहीं, जाको सांचसों सनेह ।
निपट ए कछुए नहीं, भी देखो नेक बिध एह ॥ १

ए जो पीर मुरीद दोऊ कहे, कुफरान या दजाल[5] ।
अरस रूहों को देखाए के, उड़ाए देसी ए ताल ॥ २

---

१. व्यापारी २. राज्य । ३. अधर्मी । ४. चेले । ५. शैतान ।

ए छल ऐसा तो रच्या, जो तुम मांग्या देखन ।
जिन तुम बांधो आप को, अरस के मोमन ॥ ३

जो कोई रूहें निसबती, ए हांसी का है ठौर ।
खसम वतन आप भूल के, कहा देखत हो और ॥ ४

मोमनों तुम को उपज्या, खेल देखन का ख्याल ।
जाको मूल नही बांधे तिन, ए हांसी का हवाल ॥ ५

माग्या खेल खुसाली का, तिन फेरे तुमारे मन ।
सो सब तुमको बिसरे, जो कहे मूल वचन ॥ ६

गूंथो जाली दोरी बिना, आप बांधत हो अंग ।
अंग बिना तलफत हो, ए ऐसे खेल के रंग ॥ ७

आप बंधाने आप से, इन कोहेड़े अंधेर ।
चढ़्या अमल जानों जेहेर का, फिरत वाही के फेर ॥ ८

अमल[१] चढ़्या क्यों जानिए, कोई फिसलत कोई गिरत ।
कोई सावचेत होए के, हाथ पकर सीढ़ी चढ़त ॥ ९

ना सीढी ना पांवड़ी, ए चढ़त पड़त क्यों कर ॥
ए देखन जैसी हांसी है, देखो मोमनों दिल धर ॥ १०

एक पड़त बिन पांवड़ी, वाको दूजी पकड़े कर ।
सो खांए दोनों गड़थले[२], ए हांसी है इन पर ॥ ११

एक पड़ी जिमी जानके, वाको दूजी उठावन जाए ।
उलट पड़ी सो उलटी, ए हांसी यों हंसाए ॥ १२

ओटा लेवे जिमी बिना, पांव बिना दोड़ी जाए ।
जल बिना भव सागर, तिनमें गोते यों खाए ॥ १३

अमलक देखो खड़ियां, हाथ बिना हथियार ।
नींद बड़ी है जागते, पिंड बिना आकार ॥ १४

---

१. नशा । २. टकराकर गिरना ।

एक नई कोई आवत, सो कहावत आप अबूझ ।
दूजी ताए समझावने, ले बैठत सब सूझ ॥ १५
वचन करड़े कोई कहे, किनसों सहे न जाएं ।
पीछे कलपे दोऊ कलकले, वाको अमल यों ले जाएं ॥ १६
लर खीज रोए रोलावही, दुख देखे दोऊ जन ।
जागे पीछे जो देखिए, तो कमी न माहें किन ॥ १७
हांसी होसी मोमनों, इन खेल के रस रंग ।
पूर बिना बहे जात हैं, कोई खेंच निकाले अभंग ॥ १८
ना जल ना कछू पूर है, कौन बहे कौन आड़ी होए ।
ए अमल इन जिमी का, तुमें देखावत बिध दोए ॥ १९
होसी खुसाली मोमनो, करसी मिल कलोल ।
ए हांसी या बिध की, कोई नाहीं खेल इन तोल ॥ २०
ए खेल देखो हांसी का, आसमान लों पाताल ।
फल फूल पात ना दरखत, काष्ट तुचा[1] मूल न डाल ॥ २१
ए ब्रख तो या विध का, ताको फल चाहे सब कोए ।
फेर फेर लेने दौड़ही, ए हांसी या बिध होए ॥ २२
बंध ना खुले बिना बंधे, जो खोले फेर फेर ।
ए बुत कुदरत देख के, गैयां आप खसम बिसर ॥ २३
अब याद करो खसम को, छोड़ो नीद विकार ।
पेहेचान कराए इमामसों, सुफल करूं अवतार ॥ २४
वतन खसम देखाए के, और अपनी असल पेहेचान ।
इमाम नूर रोसन करके, उड़ाए देऊं उनमान[2] ॥ २५
हकें कह्या अरवाहों उतरते, हम बैठे बीच लाहूत[3] ।
तुम अरस भूलो आप हमको, देखो नहीं बीच नासूत[4] ॥ २६

---

१. छाल । २. कल्पना । ३. परमधाम । ४. मृत्युलोक ।

हम अरस रूहें आसिक, हक मासूक भूलें क्यों कर ।
क्या चले खेल फरेब का, तुम आगू देत हो खबर ॥ २७

ए जिमी हांसी देख के, मोमन हूजो सावचेत ।
इमाम को सुख महामति, तुमको जगाए के देत ॥ २८

॥ प्रकरण ॥ १८ ॥ चौपाई ॥ ४६४ ॥

## सनंध कलमें की

ए जो फरेब तुम देखिया, और देखे फरेब के मजहब ।
ए तो सब तुम समझे, गुझ जाहेर करहूं अब ॥ १

ऐसा था फरेब अंधेर का, कहूं हाथ न सूझे हाथ ।
बंध पड़े नजर देखते, तामें आई रूहें जमात ॥ २

खेल देखन कारने, करी उमेद एह ।
ए माया तुम वास्ते, कोई राखों नहीं संदेह ॥ ३

ए खेल किया रूहों वास्ते, ए जो मोमन आईयां जेह ।
खेल देख जाए वतन, बातें करसी एह ॥ ४

मोमन बातें वतन की, देऊंगी आगे बताए ।
पर अब कहूं नेक दीन की, जो रसूलें राह चलाए ॥ ५

जो अलहा[1] किनहूं न लह्या, मैं तिनका कासद[2] ।
अरस रूहों वास्ते आईया, मेरे हाथ कागद ॥ ६

कह्या रसूलें जाहेर, खबर खुद की सुझ ।
कोई और होवे तो पोहोंचही, अब जाहेर करहों गुझ ॥ ७

जो चौदे तबकोंमें नहीं, वार न काहूं पार ।
सो अलहा हम आवसी, खातर सुहागिन नार ॥ ८

ले फुरमान जो हाथमें, केहेलाया मैं रसूल ।
ए देखो अरवाहें अरस की, जिन कोई जावें भूल ॥ ९

---

१. अलभ्य । २. सन्देश वाहक ।

काफर मुसलिम मोमन की, सोई करसी पेहेचान ।
हकीकत मारफत के, खोलसी द्वार कुरान ।। १०

अबलों बेवरा ना हुआ, कै चली गई जहान ।
एक दीन जब होवही, तब होसी सबों पेहेचान ।। ११

जो माएने न पाए बातून[1], तो हुए जुदे जुदे मांहें दीन ।। ।
फिरके हुए तिहतर, एक नाजीमें[2] कह्या आकीन ।। १२

और बहत्तर नारी कहे, करी एकको हकें हिदायत ।
कुरान माजजा[3] नबी नबुवत,[4] सो नाजी करसी साबित[5] ।। १३

सो साबित तब होवही, जब सब होवे दीन एक ।
पेहेलें कह्या रसूल ने, एही उमत[6] नाजी नेक ।। १४

सब कोई बुजरक कहावते, आप अपने मजहब ।
तिन सबों समझावही, एक दीन होसी तब ।। १५

झूठ सबे उड़ जाएसी, ना चले तिन बखत ।
हक हादी[7] के प्रताप थें, क्यों रेहेवे गफलत ।। १६

तब लों रसमें लरत हैं, जबलों है उरझन ।
रूहअल्ला कुंजी ल्याईया, तब जोरा न चलसी किन ।। १७

जब सांच उठ खड़ा हुआ, तब कुफर रेहेवे क्यों कर ।
जोलों कायम दिन ऊग्या नहीं, है तोलों रात कुफर ।। १८

ए खेल हुआ जिन खातर, सो गए खेल में मिल ।
जब जाहेर साहेब हुआ, तब सबों नजर आवे दिल ।। १९

महंमद पेहेलें आए के, बरसाया हक का नूर ।
कै बिध करी मेहेरबानगी, पर किने ना किया सहूर ।। २०

ए सहूर तो करे, जो होए अरस अरवाए ।
जिन उमत के खातर, आवसी इत खुदाए ।। २१

---

१. यथार्थ । २. मुक्त । ३. (मो'जिजः) चमत्कार । ४. पैगम्बरी ५. प्रमाणित । ६. जमात ।
७. सतगुरु ।

जो अरस रूहें आईं होती, तो काहे को कौल करत ।
सो कह्या पीछे आवसी, ए सोई लेसी हकीकत ॥ २२
अरस रूहें होए सो मानियो, अंदर आन आकीन ।
ए कलमा जो समझही, सोई महंमद दीन ॥ २३
ए कलमा मुख लाखों कहें, पर माएने न समझे कोए ।
इन कलमें मगज सो समझही, जो अरस-अजीम[1] की होए ॥ २४
जोलों रेहेमान न जाहेर, रहो बंदे बाब[2] पकर ।
में हुकम छोड़ चलसी, फेर आवसी भेलें आखर ॥ २५
एक ए भी रसूलें कह्या, करी आगे की सरत ।
साथ आवसी इमाम के, रूहें मोमन बड़ी मत ॥ २६
नूर मत जाहेर होएसी, तब जानो हुई आखर ।
तब मौला हम आवसी, इन मोमिनों की खातर ॥ २७
इत कजा जो करने बैठसी, तब हम काजी संग ।
वरन बदलसी दुनियां, पर ए दीन कायम रंग ॥ २८
इमाम इत आवसी, सो भी मोमिनों के कारन ।
देसी सुख मोमन को, कजा होसी सबन ॥ २९
एता भी रसूलें कह्या, मोमिनोंमें आकीन ।
बिना आकीन सब उड़सी, एक रेहेसी हमारा दीन ॥ ३०
जिन सिर लई बात रसूल की, कदम पर धरे कदम ।
इन कलमें के हक से, न्यारा नहीं खसम ॥ ३१
जिन ए कलमा हक[3] किया, में तिनका जामिन[4] ।
सो आपे अपने दिलसें, साख जो देसी तिन ॥ ३२
इन कलमें के माएने, लेकर भरसी पाए ।
तिन मोमन को खसम, सुख जो देसी ताए ॥ ३३

१. परम धाम । २. प्रकरण (वचन) । ३. सत्य । ४. उत्तरदायी ।

कहा कहूं इन कलमें की, मोमनोंमें पेहेचान ।
जब ए कलमा पसरया, तब साफ हुई सब जहान ।। ३४
जिन ए मेरा कलमा, लिया न माहें बाहेर ।
सो दुनियां आखर दिनों, जलसी आग जाहेर ।। ३५
तब ए होसी आजिज,[1] और मौला तो मेहेरबान ।
तब लेसी सबों को भिस्तमें,[2] देकर अपनों ईमान ।। ३६
कछुक करके आकीन, कलमा सुनसी कान ।
तिनभी सिर कजा समे, लगसी जाए आसमान ।। ३७
एह बात तेहेकीक है, मोमिनों दिल साबित ।
सब्द जो सारे मुझ पें, एक जरा नहीं असत ।। ३८
देखन मोमन खातर, रचिया खेल सुभान ।
अब मोमन क्यों भूलहीं, पाई हकीकत फुरमान ।। ३९
जो सबों को अगम, सो सब *रसूल नजर ।
तो रसूल मुसलिम को, फिरे सो फुरमाए कर ।। ४०

।। प्रकरण ।। १९ ।। चौपाई ।। ५०४ ।।

## सनंध फुरमानकी

फुरमान ल्याया जो *रसूल, पर समझया नाहीं कोए ।
जिन खातर ले आईया, ए समझेगी रूह सोए ।। १
कछुक नबिएं जाहेर किए, ए जो बंदगी सरियान[3] ।
केतेक हरफ रखे गुझ, सो करसी मेहेदी बयान ।। २
और भी केतेक सुने रसूलें, पर चढ़े नहीं फुरमान ।
सो *महंमद *मेहेदी खोलसी, *इमाम एही पेहेचान ।। ३
माएने इन मुसाफ के, कोई खोल न सके और ।
कह्या *रसूलें *इमाम थें, जाहेर होसी सब ठौर ।। ४

१. लाचार । २. मुक्ति-स्थल । ३. कर्मकांड ।

मगज माएने मुसाफ के, सो होए न इमाम बिन ।
सो इत बोहोतों देखिया, पर सुध ना परी काहू जन ॥ ५

गुझ का गुझ कौन पावही, बिना *मेहेदी इमाम ।
ए *रूह—अल्ला जानही, मेरे अल्ला के कलाम ॥ ६

ए क्यों उपज्या है क्या, क्यों क्यामत संग सुभान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ ७

क्यों फरेब से न्यारे रहिए, क्यों चलिए सरियान[1] ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ ८

रूह कौन मोमिन कौन मुसलिम, कौन रूह कुफरान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ ९

तीन रूहों की तफावत,[2] कौन कौन ठौर निदान ।
ए सब *इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ १०

क्यों इस्क क्यों बंदगी, क्यों गलफत गलतान[3] ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ ११

क्यों पाक ना पाक क्यों, क्यों रेहेनी फुरमान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ १२

क्यों उजू[4] निमाज क्यों, क्यों कर बांग बयान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ १३

क्यों कसोटी अंग की, क्यों रोजे रमजान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ १४

क्यों *सुंनत क्यों इंद्रियां, क्यों राखे कैद आन ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ १५

क्यों तसबी[5] क्यों फेरनी, क्यों कर नाम लेहेलान[6] ।
ए सब *इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ १६

---

१. नियम । २. अन्तर । ३. लोटना । ४. नमाज से पहले अंगों की शुद्धि । ५. माला । ६. जाप ।

क्यों डर क्यों बेडर, क्यों खूंनी मेहेरवान ।
ए सब *इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ १७
क्या खाना क्या पीवना, क्या जो सुनना कान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ १८
क्या लेना क्या छोड़ना, क्या इलम क्या ग्यान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ १९
क्यों भलो बुरी क्यों, क्यों कर जान अजान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ २०
कौन बैरी कौन सजन, क्यों कर सब समान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ २१
क्या हक क्या हराम, क्या नफा क्या नुकसान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ २२
क्यों आवन क्यों गवन, क्यों कर विरहा मिलान ।
ए सब *इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ २३
एक खेल दूजा देखही, थिर चर चारों खान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ २४
ए किया जिन खातर, आदम और हैवान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ २५
कौन आप और कौन पर, कौन सकल जहान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ २६
क्यों बाहेर क्यों अंदर, क्यों अंतर के निसान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ २७
कहां भिस्त कहां दोजक, क्यों जलसी कुफरान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ २८
क्यों आदम क्यों पैगंमर, क्यों फिरस्ते पेहेचान ।
ए सब *इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥ २९

कलमें दीन रसूल की, सुध मुसलिम फुरमान ।
ए सब *इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। ३०

*रसूल आए किन वास्ते, किन पर ल्याए फुरमान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। ३१

क्यों हुकम क्यों कर हुआ, किन विध लीजे मान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। ३२

एकों क्यों कर मानियां, क्यों लिया न दूजे मान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। ३३

किन मान्या न मान्या किन, किन फेरचा फुरमान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। ३४

क्यों कैद बेकैद क्यों, क्यों दोऊ दरम्यान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। ३५

क्यों ए इंड खड़ा किया, क्यों करी सरत फना निदान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। ३६

क्यों बड़ी अकल आगे आवसी, क्यों आखर के निसान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। ३७

बंदगी बजूद[१] नफसानी[२], नासूत[३] बीच सरियान ।
ए सब *इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। ३८

क्यों दिल की बंदगी तरीकत[४], मलकूत या ला मकान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। ३९

क्यों नासूत मलकूत[५] जबरूत[६], क्यों लाहूत[७] चौथा आसमान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी माएने कुरान ।। ४०

क्यों रूहें भेद छिपी हजूरी, बंदगी हादी संग आसान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। ४१

---

१. शरीर । २. इन्द्रिय । ३. मृत्यु लोक । ४. उपासनी । ५. वैकुंठ । ६. अक्षर धाम । ७. परम धाम ।

मलकूत ऊपर जो जुलमत, नाम बुरका ला मकान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। ४२
सरीयत[1] तरीकत हकीकत[2], मारफत[3] हक पेहेचान ।
ए सब *इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। ४३
बेचून[4] बेचगून[5] बेसब्बी[6], कहे बेनिमून[7] निदान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। ४४
निराकार निरंजन सुंन की, ब्रह्म व्यापक माहें जहान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। ४५
पुरष प्रकृती कालकी, ईस्वर महाविस्नु उनमान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। ४६
*सदरतुल[8] - मुंतहा अरस - अजीम[9], नूर जमाल सूरत सुभान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ।। ४७
नूर पार नूर - तजल्ला,[10] पोहोंचे रसूल *रूहअल्ला[11] हजूर ।
ए सब इमाम खोलसी, जो दोनों किया मजकूर[12] ।। ४८
क्यों नूर क्यों नूर - तजल्ला, क्यों कर वतन खसम ।
खोलसी माएने इमाम, खातर मोमन हम ।। ४९
चौदे तबक की बात जो, सो तो केहेसी सकल जहान ।
पर *लैलतकदर[13] *मेहेदी बिना, क्यों खुले माएने कुरान ।। ५०
ए जो पूछे माएने, खोल दिए कदीं सोए ।
तो इनसे चौदे तबकमें, क्यों कर कजा होए ।। ५१
लुगे लुगे के माएने, जो कोए निकसे बोल ।
ए कजा तब होवही, जब दीजे माएने सब खोल ।। ५२
ए नूर के पार के माएने, सो सारों को अगम ।
एक लुगा बिना इमाम, निकसे ना मुख दम ।। ५३

१. कर्म काण्ड । २. सत्य ज्ञान । ३. पूर्ण पहचान । ४. अद्वितीय । ५. शब्दातीत । ६. ऐसी सूरत नहीं । ७. अनुपम । ८. अक्षरधाम के छोर पर वृक्ष । ९. महान (परमधाम) । १०. अक्षरातीत ब्रह्म । ११. श्यामा (श्री देवचन्द्र) । १२. बात-चीत । १३. मोह की रात्रि ।

जब माएने खुले मुसाफ के, बैठे इमाम जाहेर होए ।
तब ए दुनी जुदी जुदी, क्यों कर रेहेसी कोए ॥ ५४

सो *इमाम जाहेर हुए, ले माएने कुरान ।
नूर सबों में पसरया, एक दीन हुई सब जहान ॥ ५५

ए तो करी इसारत, पर बोहोत बड़ी है बात ।
नूर बड़ो इमाम को, सो या मुख कह्यो न जात ॥ ५६

ए नूर खुद वतनी, सो क्यों कर सह्यो जाए ।
नूर मत आगे तो करी, जाने जिन कोई गोते खाए ॥ ५७

इमाम आए तब जानिए, जब खुले माएने कुरान ।
तब जानों आखर हुई, सुख दिया सब जहान ॥ ५८

आद करके अबलों, पर्दा न खोल्या किन ।
सो बरकत *मेहेदी *महंमद, खुल जासी सब जन ॥ ५९

लोक जाने ज्यों और है, ए भी फुरमान तिन रीत ।
पर दिल के अंधे न समझहीं, ए फुरमान सब्दातीत ॥ ६०

ए कागद नहीं फरेब का, और कागद सब छल ।
अबहीं इमाम देखावहीं, रसूल किताब का बल ॥ ६१

॥ प्रकरण ॥ २० ॥ चौपाई ॥ ५६५ ॥

॥ सनंध मुस्लिम को रेहेनी की ॥

सुनियो अब मोमिनों, ए कहतीहों सब तुम ।
जब तोड़ी आईयां नहीं, इमाम के कदम ॥ १

मैं चाहों मोमन को, हम तुम एकै अंग ।
मैं तबहीं सुख पाऊंगी, मेहेदी महंमद मोमन संग ॥ २

आए *ईसा मेहेदी *महंमद, मोमन आवसी कदम ।
हनोज[1] लों कबूं ना हुई, सो होसी नई रसम ॥ ३

---

१. अभी तक ।

बड़ा मेला इत होएसी, आए खुद खसम ।
बखत भला साहेब दिया, भाग बड़े हैं तुम ।। ४

नेक कहूं राह मुसलिम की, जो देखाई रसूलें मेहेर कर ।
भूले अवसर पछताईए, सो कहूं सुनो दिल धर ।। ५

पेहेले तो सब भूलियां, मैं तो कहूं तुमें हक ।
देखो हाथमें नूर खुदाए का, फरेबमें हुए गरक[1] ।। ६

केहे फुरमान इनों हाथमें, मेहेर कर दिया रसूल ।
जाहेर तुमको बताईया, सो भी गैयां तुम भूल ।। ७

जो जाहेर है तुम पें, माएने इन कुरान ।
एते दिन ना समझे, अब नेक देऊं पेहेचान ।। ८

फैलाव ऊपर का ना करूं, नेक देऊं मगज बताए ।
ज्यों वतन की सुध परे, सब पकरें इमाम के पाए ।। ९

ए जो तुमको रसूलें, दिए माएने खोल ।
जाहेर किए ना ले सके, कहूं सो दो एक बोल ।। १०

कहो कलमा हक कर, ल्यो माएने कुरान ।
पाक दिल रूह पाक दम, या दीन मुसलमान ।। ११

पांच बखत सल्ली[2] करे, दिल दरदा आन सुभान ।
सुने ना कान कुफार की, या दीन मुसलमान ।। १२

कसनी[3] लेवे आप सिर, साफ रोजे रमजान ।
रात दिन याही जोसमें, या दीन मुसलमान ।। १३

माएने ले चीन्हें आपको, करे रसूल पेहेचान ।
वतन सुध करे हक की, या दीन मुसलमान ।। १४

रसूल आए किन ठोर से, किन वास्ते जिमी हैरान ।
ए सुध सारी लेवही, या दीन मुसलमान ।। १५

---

१. फंसना । २. नमाज़ । ३. मेहनत ।

किन भेज्या आया कौन, ल्याया हक का फुरमान ।
ए सहूर करके समझहीं, या दीन मुसलमान ॥ १६

सारे सब्द रसूल के, सिर लेवे हक जान ।
नूर नबी के मगन, या दीन मुसलमान ॥ १७

कलाम अल्ला कुरानमें, दिल दे करे प्रवान[1] ।
अंदर आकीन उजले, या दीन मुसलमान ॥ १८

ए जो कुदरत गफलती, चौदे तबक की जहान ।
ए फरेब नीके समझहीं, या दीन मुसलमान ॥ १९

ए सब खेल खसम का, बुनी आदम हैवान[2] ।
एकै नजरों देखहीं, या दीन मुसलमान ॥ २०

न्यारा रहे सबन से, ए जो बीच जिमी आसमान ।
संग करे खुद दरदी का, या दीन मुसलमान ॥ २१

भली बुरी किनकी नहीं, डरता रहे सुभान ।
सोहोबत खूनी की ना करे, या दीन मुसलमान ॥ २२

यामें कोई ना विराना[3] अपना, ए देखे सब समान ।
यासें न्यारे जाने मोमन, या दीन मुसलमान ॥ २३

ए जुदे नीके जानहीं, मोंमन मुसलिम कुफरान ।
पेहेचान जुदी सब रूहों की, या दीन मुसलमान ॥ २४

मेहेरे दिल मोमन के, इस्क अंग रेहेमान ।
दाग न देवे बैठने, या दीन मुसलमान ॥ २५

जो रूह होवे मुसलिम, सो संग ना करे कुफरान ।
आसिक खुद खसम की, या दीन मुसलमान ॥ २६

जो रूह भूली आप को, मुसलिम कलमे पेहेचान ।
तिनको वतन बतावही, या दीन मुसलमान ॥ २७

---

१. निश्चय । २. पशु । ३. पराया ।

साफ रखे सबों अंगों, ज्यों छीट ना लगे गुमान ।
बांधे दिल गरीबी सों, या दीन मुसलमान ।। २८

रेहेवें निरगुन होएके, और निरगुन खान पान ।
नजीक न जाए बदफैल[1] के, या दीन मुसलमान ।। २६

प्यारा नाम खुदाए का, फेरे तसबी लगाए तान ।
रात दिन लहे बंदगी, या दीन मुसलमान ।। ३०

दरदा ले द्वारें खड़ी, खसम की गलतान ।
रूह लगी रसूलसों, या दीन मुसलमान ।। ३१

हराम छोड़ हक लेवही, ए जो करी बयान ।
आपा रखे आप बस, या दीन मुसलमान ।। ३२

साफ दिल ईमान सों, करे बावन मसले *अरकान[2] ।
ए बिने जाने इस्लाम की, या दीन मुसलमान ।। ३३

मुसलिम सारे केहेलावहीं, पर ना सुध हकीकत ।
ना सुध रसूल ना खसम, ना सुध या गफलत ।। ३४

जो अंदर झूठी बंदगी, देखलावे बाहेर ।
तिनको मुस्लिम जिन कहो, वह ख्वाबी दम जाहेर ।। ३५

तो होए कबूल मुसलिम, जो पोहोंचे मजल इन ।
जोलों होए न हजूर बंदगी, खुले मुसाफ हकीकत बिन ।। ३६

इसलाम बड़ा मरातबा, जो करे अपनी पेहेचान ।
जुलमत नूर उलंघ के, पोहोंचे नूर बिलंद[3] मकान ।। ३७

केहेलाए मुस्लिम पकड़े वजूद, पांउं चले राह ऊपर ।
क्यों न कटाए पुल सरातें,[4] जो रसूलें देखाई जाहेर कर ।। ३८

जिन दिल पर सैतान पातसाह, सो नापाक बड़ा पलीत[5] ।
खूंन करे खिन में कै, दिल पाक होए किन रीत ।। ३६

---

१. बुरे कार्य । २. महान व्यक्ति । ३. ऊँचा । ४. तलवार की धार । ५. अपवित्र ।

दिल पाक जोलों होए नहीं, कहा होए वजूद ऊपर से धोए ।
धोए वजूद पाक दिल, कबहूं न हुआ कोए ॥ ४०

पाक हुआ दिल जिनका, तिन वजूद जामा[1] पाक सब ।
हिरस हवा सब इंद्रियां, तिन नहीं ना पाकी कब ॥ ४१

हलाल हलाल सब कोई कहे, पूछो हादी सिरदार ।
जिन दिल हुआ अरस हक का, तिन दुनी करी मुरदार[2] ॥ ४२

दिल अरस मोमन कह्या, तित आए हक सुभान ।
सो दिल पाक औरों करे, जाए देखो मगज कुरान ॥ ४३

पांउं तो कोई ना भर सक्या, उमेद करी सबन ।
सो महमंद मेहेदी आए के, नीयत पोहोचाई तिन ॥ ४४

ए कलमा जिन कानों सुन्या, ताए भी देसी सुख ।
तो मुसलिम का क्या केहेना, जो हक कर केहेवे मुख ॥ ४५

ए कलमा जिन जिमिएँ, किया होए पसार ।
तिन जिमी के लोक को, जिन कोई कहो कुफार ॥ ४६

बांग आवाज कानों सुनी, कुफर कहिए क्यों ताए ।
सो रूह आखर कजा समे, औरों भी लेसी बचाए ॥ ४७

इन कलमें के सब्द से, सब छूटेगा संसार ।
तो कहा कहूं मैं तिनको, जिन पेहेचान कह्या नर नार ॥ ४८

ए कलमा इन दुनी का, सब दुख करसी दूर ।
तिनको भी भिस्त होएसी, जिनके नहीं अंकूर ॥ ४९

तबक चौदे जो कोई, रूह होसी सकल ।
इन कलमें की बरकतें, तिन सुख होसी नेहेचल ॥ ५०

दीन होए के चलसी, दरदी रसूल रेहेमान ।
बोहोत कह्या है रसूलें, ताकी नेक करी है बयान ॥ ५१

---

१. पोशाक । २. मृतक ।

ए तो जाहेर की कही, अब गुझ कहूंगी तुम ।
जो बयान *रसूलें ना किए, मोमन वतन खसम ।। ५२
गुझ माएने कौन लेवही, जो जाहेर लिए न जाए ।
ए सब खोले रसूलें, जो मैं दिए बताए ।। ५३
कोई जाहेर ना ले सके, तो गुझ होसी किन पर ।
हम जो लिए जाहेर, नेक ए भी सुनो खबर ।। ५४

।। प्रकरण ।। २१ ।। चौपाई ।। ६१९ ।।

### ।। सनंध अरस अरवाहों के लक्षण की ।।

गुझ तो तुमको कहूंगी, सक न राखूं किन ।
पर पेहेलें कहूं नेक *मोमिनों, जो हमारा चलन ।। १
बयान किए जो रसूलें, हम सोई लिए जाहेर ।
लाख बेर कह्या रसूलें, जन जनसों लर लर ।। २
कोट बेर जाहेर सबों, रसूलें फुरमाया जेह ।
सो कलमा सिर लेए के, पांउं भरे हम एह ।। ३
बड़ा जाहेर ए माएना, कहे हक पें ल्याया फुरमान ।
इन कलमे की दोस्ती, कह्या मिलसी रेहेमान ।। ४
खातर तुम अरस मोमन, मैं ल्याया हक फुरमान ।
कौल करतहों तेहेकीक, मैं ल्याऊं बुलाए सुभान ।। ५
जो किनहूं पाया नहीं, ना कछू सुनिया कान ।
तिनका जामिन होए के, इत मिलाऊं आन ।। ६
अब रूहें जो अरस मोमन, तिन कहा चाहिएत है और ।
रसूल कहे जानो हक, काजी कजा होसी इन ठौर ।। ७
जाहेर हक देखाइया, हम लिए माएने ए ।
एही कलमा रसूल का, हम सिर चढ़ाया ले ।। ८
जाहेर दुलहा छोड़के, ढूंढ़त माएने गुझ ।
ए खोज तिनों की देख के, होत अचम्भा मुझ ।। ९

हम याही फुरमान के, लिए माएने जाहेर ।
रूह बांधो रसूल सों, जिन हक की कही खबर ॥ १०
हाथ पकड़ देखावहीं, आप आए दरम्यान ।
ए छोड़ और जो ढूंढ़हीं, तिन दिल आंख न कान ॥ ११
मोमन थे सो समझे, ए तो सीधा कह्या महंमद ।
ना मैं जिमी आसमान का, खबर जो ल्याया खुद ॥ १२
और माएने सो ढूंढ़हीं, ठौर ना जाको दिल ।
रसूल रहीम मिलावहीं, और ढूंढ़े कहा बेअकल ॥ १३
हम तो एही हक किया, जाहेर रसूल बोल ।
ए छोड़ और ना देखही, हम एही लिया सिर कौल ॥ १४
एही हमारा आकीन, हम लिया हक फ़र ।
आकीन कह्या रसूल का, सब देखावे नजर ॥ १५
देखाया रसूल ने, सो लीजो आप चेतन ।
अंकूर अपना देखिए, ज्यों याद आवे वतन ॥ १६
जिन खातर ए रसूल, ले आया फुरमान ।
हम ले आकीन चले जिन बिध, नेक ए भी करूं वयान ॥ १७
अरस अरवाहें मेरी बोहोत हैं, नेक तिनके कहूं लछन ।
वतन हक आप भूलियां, तो भी मोमन एही चलन ॥ १८
अरस अजीम की जो रूहें, तिनकी ए पेहेचान ।
जो कदी भूली वतन, तो भी नजर तहां निदान ॥ १९
आसिक खुद खसम की, कोई प्रेम कहो विरहिन ।
ताए कोई दरदन कहो, ए बिध अरस रूहन ॥ २०
रूह खसम की क्यों रहे, आप अपने अंग बिन ।
पर हकें पकरी अंतर, ना तो रहे ना तन ॥ २१
ऊपर काहूं ना देखावही, जो दम ना ले सके खिन ।
सो आसिक जाने मासूक की, एही मोमन विरहिन ॥ २२

मोमन आकीन ना छूटही, जो पड़े अनेक विघन ।
आसिक मासूक वास्ते, जीव को ना करे जतन ॥ २३

रेहेवे निरगुन होए के, और आहार भी निरगुन ।
साफ दिल रूह मोमन, कबहूं न दुखावे किन ॥ २४

मोमन खोजे आप को, और खोजे कहां है घर ।
खोजे अपने खसम को, और खोजे दिन आखर ॥ २५

खोज मोमन ना थके, जोलों पार के पारैं पार ।
नित खोजें चरनी चढ़ें, नए नए करें विचार ॥ २६

खोज खोज और खोजहीं, आद के आद अनाद ।
पल पल नूर बढ़त, श्रवनों एही स्वाद ॥ २७

फुरमान हाथों ना छूटही, जोलों पाइए हक वतन ।
मासूक वतन पाए बिना, दरद न जाए निसदिन ॥ २८

मोमन अंदर उजले, खिन खिन बढ़त उजास ।
देह भरोसा ना करें, इमाम मिलन की आस ॥ २९

ज्यों ज्यों माएने विचारहीं, त्यों बेधे सकल संधान[1] ।
रोम रोम ताए बेधहीं, सब्द रसूल के बान ॥ ३०

मोमन अंग कोमल, ताए बान निकसें फूट ।
गलित[2] गात[3] सब भीगल, सब अंगों टूक टूक ॥ ३१

खिन खेलें खिनसें हंसें, खिनमें गावें गीत ।
खिन रोवें सुध न रहे, एही मोमन की रीत ॥ ३२

हक बातें खेलें हंसें, और गीत पिया के गाए ।
रोवें उरझे पीउ की, और बातनसों मुरछाए ॥ ३३

मोमन दरदा ना सहे, जब जाहेर हुए पीउ ।
मोमन अंग पीउ का, पीउ मोमन अंग जीउ ॥ ३४

---
१. जोड़ । २. गले हुए । ३. शरीर ।

जोलों सुध ना मासूक की, तोलों मोमन अंगमें पीउ ।
जब मासूक जाहेर हुए, तब आसिक ले खड़ी अंग जीउ ।। ३५

बोहोत निसानी और हैं, अरस अरवा मोमन ।
सो इन जुबां केते कहूं, मेरे वतनी के लछन ।। ३६

जो होवे अरस अजीम[1] की, सो निरखो अपने निसान ।
ए लछन मोमन वतनी, सो देखो दिलमें आन ।। ३७

मोमन रूहें अरस की, ए समझ लीजो तुम दिल ।
ठौर ठौर से आए मोमन, सुख लेसी सब मिल ।। ३८

ए कहती हों मोमन को, जिन अरस बकामें तन ।
सो कैसे ढांपी रहें, सुन के एह वचन ।। ३९

ए सब्द सुन मोमन, रेहे ना सकें पल ।
तामें मूल अंकूर को, रहे न पकरचो बल ।। ४०

जब साहेब की सुध सुनी, तब जाए ना रह्यो रूहन ।
ओ ख्वाबी दम भी ना रहें, तो क्यों रहें अरस मोमन ।। ४१

मोमन पाए कदम हादी के, खोल द्वार लिए हजूर ।
पट खोल दिया फुरमान का, पल पल बरसत नूर ।। ४२

खाना पीना दीदार, रोजा निमाज दीदार ।
एक दोस्ती जानें हक की, दुनी सब करी मुरदार ।। ४३

केतेक ठौर मोमन, तिन सब ठौरों है उजास ।
पर इतथें नूर पसरचा, तब ओ ले उठसी प्रकास ।। ४४

कोई दिन हम छिपे रहे, सो भी मोमनों के सुख काज ।
जो होवें नेक जाहेर, तब रहे न पकरचो आवाज ।। ४५

मैं नूर अंग इमाम का, खासी रूह खसम ।
सुख देऊं जगाए के, मोमन रूहें तले कदम ।। ४६

---

१. परम धाम ।

रूहों को अरस देखावने, उलसत मेरे अंग ।
करने बात मासूक की, मावत नहीं उमंग ।। ४७

नए नए रंग रूह मोमन, आवत हैं सिरदार ।
बड़ो सुख होसी क्यामत, नहीं न सुख को पार ।। ४८

आसिक आवत मासूक की, ताको छिपो राखों उजास ।
राह देखों और रूहन की, सब मिल होसी विलास ।। ४९

नूर इमाम इन भांत का, कबूं जो निकसी किरन ।
तो पसरसी एक पलमैं, चारो तरफों सब धरन ।। ५०

क्यों रहे प्रकास पकरचो, इमाम नूर अति जोर ।
मैं राखत हों ले हुकम, ना तो गई रैन भयो भोर ।। ५१

नूर बड़ो इमाम को, सो क्यों ढांपू मैं अब ।
सुख गोसे को या बखत, पीछे दुनी मिलसी सब ।। ५२

मैं तुमको चेतन करूं, एही कसोटी तुम ।
या बिध अरस अरवांहों का, तसीहा[1] लेवें खसम ।। ५३

सब्द हमारे सुनके, उठी ना अंग मरोर ।
आसिक मासूक सब देखहीं, तुम इस्क का जोर ।। ५४

ए सुनके दौड़ी नहीं, तो हांसी है तिन पर ।
जैसा इस्क जिनपें, सो अब होसी जाहेर ।। ५५

जो इस्क ले मिलसी, सो लेसी सुख अपार ।
दरद बिना दुख होएसी, सो जानो निरधार ।। ५६

जो किने गफलत करी, जागी नहीं दिल दे ।
सो इत दीन दुनी का, कछू ना लाहा[2] ले ।। ६७

लाहा तो ना लेवही, पर सामी हांसी होए ।
ए हांसी अरस के मोमन, जिन कराओ कोए ।। ५८

---

१. परीक्षा । २. लाभ ।

जिन उपजे मोमन को, इन हांसी का भी दुख ।
सो दुख बुरा रूहन को, जो याद आवे मिने सुख ।। ५६

नातो जिन जुबां में दुख कहूं, सो ए करूं सत टूक ।
तो एता रूहों खातर, बिध बिध करतहों कूक ।। ६०

जब दुख मेरी रूहन को, तब सुख कैसा मोहे ।
हम तुम अरस अजीम के, अपनी रूह नहीं दोए ।। ६१

पेहेलें फरेब देखाइया, पीछे महंमद दीन ।
कलमा जाहेर करके, देखाया आकीन ।। ६२

माएने जाहेर कुरान के, कही बात नेक सोए ।
और गुझ भी करी नेक जाहेर, अरस वतनी जो कोए ।। ६३

।। प्रकरण ।। २२ ।। चौपाई ।। ६८२ ।।

## सनंध गिरोह की सिफत की

दिल हकीकी रूहें अरस की, जामें आप आसिक हुआ सुलतान ।
तो कही गिरो ए रब्बानी[१], ए दिल मोमन अरस सुभान ।। १

जेता कोई दिल मजाजी, चढ़ सके न नूर मकान ।
दिल हकीकी पोहोंचे नूर तजल्ला, ए दिल मोमन अरस सुभान ।। २

रूहें उतरी लैलत कदर में, सो उमत रब्बानी जान ।
इनको हिदायत हक की, ए दिल मोमन अरस सुभान ।। ३

होवे फारग[२] दुनी से सोर सें, ए दिल हकीकी निसान ।
करें हजूर बातून बंदगी, ए दिल मोमन अरस सुभान ।। ४

हकें कौल किया जिन रूहन सों, सोई वारस[३] हैं फुरकान ।
जिन वास्ते आए हक मासूक, ए दिल मोमिन अरस सुभान ।। ५

याही वास्ते ईसा रूह अल्ला, आए उतर चौथे आसमान ।
कौल किया लाहूत में इनों से, ए दिल मोमन अरस सुभान ।। ६

---

१. ईश्वरीय । २. मुक्त । ३. उत्तराधिकारी ।

ए गिरो कै बेर बचाई तोफान से, और डुबाई कुफरान ।
एही उमत खास महंमदी, ए दिल मोमन अरस सुभान ॥ ७

एही नाजी फिरका तेहत्तरमा, जिनमें लुदंनी पेहेचान ।
खोलें हक इसारतें रमूजें,[१] जो दिल मोमन अरस सुभान ॥ ८

हरफ मुकता इनों वास्ते, रखे बातून मांहे फुरमान ।
सो खासे करसी जाहेर, जो दिल मोमन अरस सुभान ॥ ९

हकें सिफत लिखी नामें पैगंमरों, बीच हदीसों कुरान ।
सो कही सिफत सब महंमद की, ए जाने दिल मोमन अरस सुभान ॥ १०

एही भांत उमत महंमद की, कही सिफत रसूल समान ।
धरे वोहोत नाम उमत के, ए जाने दिल मोमन अरस सुभान ॥ ११

*जबराईल *असराफील, हक नजीकी निदान ।
सो भी आए उमत वास्ते, जो दिल मोमन अरस सुभान ॥ १२

ए सब किया महंमद वास्ते, चौदे तबक की जहान ।
सो *महंमद आए उमत वास्ते, ए दिल मोमन अरस सुभान ॥ १३

निसान लिखे क्यामत के, फुरमान हदीसों दरम्यान ।
सो भी खोले एही उमत, जो दिल मोमन अरस सुभान ॥ १४

उठाई गिरो एक अदल[२] से, क्यामत बखत रेहेमान ।
देसी महंमद की साहेदी, ए दिल मोमन अरस सुभान ॥ १५

कहूं बेवरा मोमन दुनी का, जो फुरमाया फुरमान ।
सक सुभे इनमें नहीं, जो दिल मोमन अरस सुभान ॥ १६

दिल मजाजीं[३] दुनी सरियत, सो सके ना पुल हद भान ।
याको तोड़ उलंघे ले हकीकत, जो दिल मोमन अरस सुभान ॥ १७

दिल मुरदा मजाजी जुलमत से, पैदा कुंन केहेते कुफरांन ।
क्यों होए सरभर मोमिनों, जो दिल मोमन अरस सुभान ॥ १८

---

१. भेद । २. न्याय । ३. झूठा ।

ए जो कही गिरो मलकूती, पैंदा जुलमत से दुनी फान ।
रूहें फिरस्ते उतरे अरस से, ए दिल मोमन अरस सुभान ।। १६
दिल मजाजी गोस्त टुकड़ा, किया रसूल मुख बयान ।
सो क्यों उलंघे जुलमत को, बिना दिल मोमन अरस सुभान ।। २०
जो उतरे होवें अरस से, रूहें तौहीद के दरम्यान ।
सो लेसी अरस अजीम को, जो दिल मोमन अरस सुभान ।। २१
जो मुरदार करी दुनी मोमिनों, सो दिल मजाजी खान पान ।
नूर बिलंद पोहोंचे पाक होए के, ए दिल मोमन अरस सुभान ।। २२
कह्या पर जले जबराईल, चढ़ सक्या न चौथे आसमान ।
रूहें बसें तिन लाहूतमें, जो दिल मोमिन अरस सुभान ।। २३
मुरग अंदर बैठा खाक ले चोंचमें, ना जबराईल तिन समान ।
ए माएने *म्याराज[1] रूहें जानहीं, जो दिल मोमन अरस सुभान ।। २४
पोहोंचे महंमद म्याराजमें, दो गोसे फरक कमान ।
इत रूहें रहें दरगाह मिने, जो दिल मोमन अरस सुभान ।। २५
नब्बे हजार हरफ कहे नबी को, तामें कछू गुझ रखाए रेहेमान ।
सो माएने जाहेर किए, जो दिल मोमन अरस सुभान ।। २६
किए आपसमें रूहें ग्वाही, हकें अपनी जुबान ।
याको जाने दिल हकीकी, जो दिल मोमन अरस सुभान ।। २७
दिया जवाब रूहों हक को, ए सुकन दिल बीच आन ।
ए रूहें रहें हक हजूर, जो दिल मोमन अरस सुभान ।। २८
कह्या मोतिन[2] के मुंह कुलफ, ए माएने तोड़त पढ़ों गुमान ।
ए अरस तन रूहें जानहीं, जो दिल मोमन अरस सुभान ।। २६
पोहोंच्या म्याराजमें गुनाह मोमनों, ए सुन उरझे मुसलमान ।
ठौर गुन्हें न पोहोंच्या जबराईल, ए जाने दिल मोमन अरस सुभान ।। ३०

---

१. दर्शन । २. रूहें ।

हकें हांथ हिसाब लिया मोमनों, तोड़्या गुमान दे नुकसान ।
तित बैठे अपना अरस कर, ए दिल मोमन अरस सुभान ॥ ३१

पोहोंची तकसीर[1] रूहें अरस में, हकें फुरमाया फुरमान ।
तित दूजा कोई न पोहोंचिया, बिना दिल मोमन अरस सुभान ॥ ३२

आसिक नांचे अरस अजीममें, दूजा नाच न सके इन तान ।
और राहैमें जलें आवते, बिना दिल मोमन अरस सुभान ॥ ३३

जो गिरो भाई कहे महंमद के, ताको इस्कै में गुजरान ।
वाको एही फैल एही बंदगी, जो दिल मोमन अरस सुभान ॥ ३४

एही खासलखास गिरो महंमदी, जाकी बंदगी इस्क ईमान ।
इनों फैल ऊपर का ना रहे, जो दिल मोमन अरस सुभान ॥ ३५

दूजा जले इन राह में, ए वाहेदत[2] का मैदान ।
तीन सूरत महंमद या रूहें, ए एकै दिल मोमन अरस सुभान ॥ ३६

महंमद क्यों ल्याए खासी उमत, इन बीच जिमी हैवान ।
ए उमत जाने इन स्वाल को, जो दिल मोमन अरस सुभान ॥ ३७

गलित गात अंग भीगल, ए दिल हकीकी गलतान ।
ए वाहेदत हक हादी गिरो, जो दिल मोमन अरस सुभान ॥ ३८

बका तरफ कोई न जानत, पढ़े ढूंढ़ ढूंढ़ हुए हैरान ।
सो बका हदें सब बेवरा किया, जो दिल मोमन अरस सुभान ॥ ३९

अरस बका के बयान की, हुती न काहूं सुध सान ।
सो जरे जरा जाहेर करी, ए दिल मोमन अरस सुभान ॥ ४०

लिखी हकें इसारतें रमूजें, सो किन खोली न फिरश्ते इंसान ।
सो दुनी सब बेसक हुई, ए दिल मोमन अरस सुभान ॥ ४१

रूहअल्ला की किल्ली से, खुले बका द्वार देहेलान ।
ए तीन सूरत कही महंमद की, जो दिल मोमन अरस सुभान ॥ ४२

---

१. अपराध । २. एकत्व ।

तो हुई दुनी सब हैयाती,[1] जो उड़ाए दिया उनमान ।
पट खोले *महंमद भिस्त के, जो दिल मोमन अरस सुभान ॥ ४३

सब जिमी पर सेजदा, किया फिरस्ते घस पेसान[2] ।
पर होए न हकीकी दिल बिना, ए दिल मोमन अरस सुभान ॥ ४४

कलमा निमाज रोजा दिल से, दे जगात[3] आप कुरबान ।
करे हज्ज बका हमेसगी, ए दिल मोमन अरस सुभान ॥ ४५

जिन चांद नूर देख्या महंमदी, सोई जाने रोजे रमजान ।
न जाने दिल मुरदा मजाजी, ए जाने दिल मोमन अरस सुभान ॥ ४६

सुध ना रोजे रमजान की, ना चांद सूरज पेहेचान ।
करें सरीकी[4] गिरो रब्बानी, जो दिल मोमन अरस सुभान ॥ ४७

जब ले उठसी रूहें लुदंनी,[5] तब होंसी सब पेहेचान ।
दै हैयाती सबन को, जो दिल मोमन अरस सुभान ॥ ४८

ईसे आब हैयाती पिलाइया, काढ़या कुफर जिमीं आसमान ।
दीन एक किया सब इसलाम, ए दिल मोमन अरस सुभान ॥ ४९

सेहेरग[6] से हक नजीक, कह्या खासल खास मकान ।
इत हिसाब इत क्यामत, जो दिल मोमन अरस सुभान ॥ ५०

कहे महंमद सिफत उमत की, करें अपने मुख मेहेरबान ।
सोई जाने जामें हक इलम, ए दिल मोमन अरस सुभान ॥ ५१

॥ प्रकरण ॥ २३ ॥ चौपाई ॥ ७३३ ॥

## सनंध रसूल साहेब की पेहेचान बातूनी

केहेती हों मोमन को, सुनसी सब जहान ।
मायने गुझ या जाहेर, कोई ले न सक्या फुरमान ॥ १

जाहेर माएने कलमें के, रसूलें कहे समझाए ।
सो भी कोई न ले सक्या, तो क्यों देऊं बातून बताए ॥ २

---

१. अमरत्व । २. माथा घिसना । ३. दान । ४. मुकाबला । ५. ब्रह्म ज्ञान । ६. दिल के निकट ।

नेक तो भी कहूं जाहेर, मेरे मोमनो के कारन ।
अंतर मैं ना कर सकों, अरस रूहें मेरे तन ॥ ३

जाहेर कह्या सो देखाइया, बातून जाहेर कर देऊं तुम ।
आगूं अरस रूहें मेले मिने, देखाऊं बका वतन खसम ॥ ४

जिन जानो बिना कारने, खेल जो रचिया ए ।
ए माएने गुझ फुरमान के, समझ लीजो दिल दे ॥ ५

नूर पार थें रसूल आवहीं, ए देखो हकीकत ।
हक भेजें अपना फुरमान, आगे आलम तो गफलत ॥ ६

दूसरा तो कोई है नहीं, ए ख्वाबी दम सब जहान ।
तो रसूल आया किन वास्ते, हक पें ले फुरमान ॥ ७

ए न आवे ख्वाबी दम पर, अपना नूरी जेह ।
देखो आंखें दिल खोलके, कोई मतलब बड़ा है एह ॥ ८

दुनियां कहे ए हम पर, ल्याया है किताब ।
ऐसे रसूल को तो कहें, जो बोलत मिने ख्वाब ॥ ९

क्यों मुख ऐसा बोलहीं, जो समझे होंए कागद ।
ना सुध रसूल ना फुरमान, तो यों कहें सब्द ॥ १०

आसमान जिमी के लोक को, अरस बका नाहीं खबर ।
तो तिनका कासद[१] महंमद, होए अरस से आवे क्यों कर ॥ ११

बेसहूर ऐसी दुनियां, माहें अबलीस आदम नसल ।
तो कहे महंमद को कासद, जो लानत[२] ऊपर अकल ॥ १२

सो घर कह्या दुनी का, जो फुरमाने कह्या मुरदार ।
तो आदम काढ़या भिस्त से, ए दादा आदमियों सिरदार ॥ १३

मोर सांप जिद ले निकस्या, और भिस्त सेती सैतान ।
हिरस हवा साथ आदम, लोक ताए कहें मुसलमान ॥ १४

---

१. संदेश वाहक । २. धिक्कार ।

इन आदम को औलाद, मारी अजाजीलें लानत ले ।
तिन सब दिलों पातसाह, हुआ *अजाजील ए ॥ १५

मोमन उतरे तूर विलंद से, जो कहे भाई महंमद के ।
महंमद आया इनों पर, खेल किया इनों वास्ते ॥ १६

महंमद कहे मैं उनों से, ओ मुझ से जानो तुम ।
मुरदार[1] करी जिनों दुनियां, करे बंदगी हजूर कदम ॥ १७

महंमद आया वास्ते मोमन, ले हक पें फुरमान ।
सब दुनियां करी एक दीन, भिस्त दई सब जहान ॥ १८

ए जो खेल कबूतर, कहे अरस से आया रसूल ।
सो कहे हमारा रसूल, दोजकमें जले इन भूल ॥ १९

पढ़े कलाम अल्लाह को, ले माएने अपनी अकल ।
जो कही मुसाफें मुरदार, ताए छोड़े ना दुनी एक पल ॥ २०

किसा लिख्या अजाजील का, किया सेजदा सब जिमी पर ।
तिन मारी राह सब दुनी की, इन ए फल पाया क्यों कर ॥ २१

कोई केहेसी ए फल गया गुमाने, पर सो दोजख जले गुमान ।
फल एता बड़ा बंदगी का, खोवे नहीं मेहेरबान ॥ २२

दो अंगुल जिमी छोड़ी नहीं, इन सखसे सेजदे बिगर ।
एतो एके बंदगी क्यों होवही, तुम क्यों ना देखो दिल धर ॥ २३

ए बंदगी ना होए कै करोरों, ऐसी हक पर करी बेसुमार ।
तिन बंदगी बदला ए पाया, राह देत सबों की मार ॥ २४

ऐसी बंदगी खोए के, हक क्यों फल दे नुकसान ।
ए माएने जाहेर तो कहे, जो अजाजीलसों[2] नहीं पेहेचान ॥ २५

ना पेहेचानें आपको, ना पेहेचानें हादी हक ।
ना देखें *अजाजील दिल पर, जो डालसी बीच दोजक ॥ २६

१. मुरदे जैसी । २. अविज्ञाकारी फिरिश्ता ।

*अजाजील जीव दुनी का, ए जो कह्या मांहें सब ।
किया भूल पत्थर पर सेजदा, कहे हम किया ऊपर रब्ब ॥ २७

बाहेर देखावें अबलीस,[1] वह कह्या बैठा दिल पर ।
कहे दोजख जलसी अबलीस, आप पाक होत यों कर ॥ २८

अब सुध होसी सबन को, खुली बातून हकीकत ।
इमाम रूहों पें लुदंनी,[2] जित अरस हक मारफत[3] ॥ २९

दिल अरस न होए बिना मोमन, जो पढ़े चौदे किताब ।
सब जिमिएँ करे सेजदा, दिल पावें ना अरस खिताब ॥ ३०

हक हादी ना चीन्ह सके, ना कछू चीन्हे मोमन ।
भूले मोमन का सेजदा, तो हुई दस बिध दोजख तिन ॥ ३१

फैल हाल ना देखें अपने, कहे अजाजीलें फेरया फुरमान ।
अपनी दोजक दे औरों को, पर हक पें सब पेहेचान ॥ ३२

ज्यों फरेब देवें दुनी को, त्यों हक को देने चाहें ।
पर हक की आग जो दोजक, फैल माफक चुन ले ताए ॥ ३३

कहें हक को सूरत नहीं, तो फुरमान भेज्या किन ।
दुनी सुध नहीं भेज्या किन पर, करसी कौन रोसन ॥ ३४

एती सुध ना हमको, खोलसी कौन हकीकत ।
कौन करसी क्यामत जाहेर, कौन केहेसी हक मारफत ॥ ३५

माएने न पावें सब्द के, बड़े सब्द रसूल ।
पर दम ना समझें ख्वाब के, जाको जुलमत मूल ॥ ३६

ए माएने सो लेवे सब्द के, जो रूह अरस की होए ।
एक रसूल आया नूर पार से, और ख्वाब दुनी सब कोए ॥ ३७

क्यों कर आवे झूठ पर, जो अरस बका का होए ।
ए गुझ माएने मोमन बिना, क्यों लेवे हवा दम सोए ॥ ३८

१. शैतान । २. खुदाई ज्ञान (तारतम वानी । ३. पूर्ण पहचान ।

दुनियां कही सब ख्वाब की, सो नाहीं झूठ सब्द ।
तबक चौदे हद के, हक बका पार बेहद ॥ ३९

चौदे तबक कहे फरेब के, काहूं ना किसी की गम ।
ना गम रसूल फुरमान, कहां हक कौन हम ॥ ४०

पैंगंमर यों पुकारिया, मैं अल्ला का रसूल ।
संग मेरे सो चले, जो चीन्हे सब्द घर मूल ॥ ४१

मेरा वतन नूर के पार है, हवा से ख्वाबी दम ।
इनों को मेरी खातर, देसी भिस्त खसम ॥ ४२

ए छल मोहोरे झूठ के, तिन पर क्यों आवे नूर जात ।
ए दिल के फूटे यों तो कहें, जो पाई ना नबी की बात ॥ ४३

नूरी हक का तिन पर भेजिए, जो कोई नूरी हक का होए ।
पर झूठे ख्वाबी दम पर, नूर पार थें न आवे कोए ॥ ४४

ए न आवे ख्वाबी बुत पर, जाको नहीं हक सों अंतर ।
पर जिन आंख कान ना अकल, सोए समझे क्यों कर ॥ ४५

ऐसा हलका कहे रसूल को, सो सुन होत मोहे ताब ।
पर दोस देऊं मैं किनको, आगे तो दुनियां ख्वाब ॥ ४६

और जो टेढ़ा कहें रसूल को, मैं तिनका निकालूं बल ।
पर गुस्सा करूं मैं किन पर, आगे तो सब मृग जल ॥ ४७

ए नूरी तहां भेजिए, जो होवे अरस मोमन ।
सोए रूहें हम मोमन, हक मासूक के तन ॥ ४८

सो भी इत जाहेर कह्या, पैगंमर पुकार ।
रूहें अरस से उतरी, रस इस्क लिऐं सिरदार ॥ ४९

ए माएने सो समझहीं, जो नूर जमाल से होए ।
ए वतनी रूहें मोमन, और ख्वाबी दम सब कोए ॥ ५०

मोमन उतरे नूर बिलंद से, जाको ए तो बड़ो मरातब[1] ।
करसी पाक सब जिमी को, ताकी सरभर[2] न होए किन कब ॥ ५१

दुनी दिल कह्या सैतान, दिल मोमन अरस हक ।
सो सरभर क्यों इनकी करे, जाए आगे पीछे दोजक ॥ ५२

बड़ी बड़ाई मोमनो, जाके बड़े अंकूर ।
तो इन पर रसूल भेजिया, अपना अंगी नूर ॥ ५३

सो आए अब रूह मोमन, जाको अरस वतन ।
ए फुरमान आया इनका, क्यों खुले माएने या बिन ॥ ५४

खेल किया जिन खातर, सो आइयां देखन अब ।
ए खेल अरस रूहें देखहीं, और खेल है सब ॥ ५५

कोई केहेसी खेल कदीम[3] का, सो अब आइयां क्यों कर ।
ए माएने गुझ वतन के, सो भी देऊं खबर ॥ ५६

खेल रचे खिन ना हुई, सो भी कहूं तुमें समझाए ।
ए वतन के पाव पल में, कै पैदा फना हो जाए ॥ ५७

करी बाजी चौदे तबकों, रूहों देखलावने खसम ।
सो रूहें तब ना हुती, पेहेले तो ना हुआ हुकम ॥ ५८

कोई केहेसी रसूले ना खोले, बिना हुकम माएने कुरान ।
सो तो आप नबी खुद हुकम, याकी हम रूहों पें पेहेचान ॥ ५९

जिन कोई कहे रसूल को, पर्दा खुद दरम्यान ।
आसिक ए मासूक कहा, सो बिन देखें मिले क्यों तान ॥ ६०

इन कुरान के माएने, जो खोलत रसूल तब ।
तो इत आखर इमाम, काहे को आवत अब ॥ ६१

जो खोलत रसूल माएने, तो खेल रेहेत क्यों कर ।
जो अरस अजीम करते जाहेर, तो तबहीं होती आखर ॥ ६२

---

१. पद । २. बराबरी । ३. हमेशा ।

गुझ नबी न राखहीं, पर सुनने वाला न कोए ।
तिन बखत ना रूहें बका की, तो गुझ अरस जाहेर क्यों होए ॥ ६३

एता भी रसूलें कह्या, रूहें मेरे ना कोई संग ।
एक हुकम *अली बिना, ना मोमन वतनी अंग ॥ ६४

तो मोहोलत कर पीछे फिरे, हम आवेंगे आखर ।
महंमद मेहेदी रूह अल्ला, इन मोमनों की खातर ॥ ६५

तो ए माएने ना खुले, रसूल मुख फुरमान ।
चौदे तबक की दुनियां, सो इत हुई हैरान ॥ ६६

नूर पार अरस मोमन, हुते ना तिन बखत ।
तो महंमद मेहेदी मोमन, आए अरस से आखरत ॥ ६७

बात बड़ी मोमन की, जिनके अरस में तन ।
ए रूहें दरगाह की, जिनको अरस बतन ॥ ६८

अरस खावंद एक मासूक, दूसरा नाहीं कोए ।
और खेल सब नूरियों किया, यामें भी बिध दोए ॥ ६९

यामें अजाजील रूह असल, दूजी रूह कुफरान ।
तीसरा दम देखन का, ना कछू ए हैवान ॥ ७०

हैवान ना कछू तो कहे, जो उनको ना कछु बुध ।
जो जाने ना *वेद *कतेब को, सो उसी दाखिल बेसुध ॥ ७१

जो रूह अरस अजीम की, सो मिले नहीं कुफरान ।
ए बेवरा इमाम बिना, करे सो कौन बयान ॥ ७२

सांचे सुख मोमन के, *अजाजील और सुख ।
पर जो सुख मोमन के, सो कहे न जाए या मुख ॥ ७३

अजाजील और काफर, तिनों भी सुख नेहेचल ।
बरकत इन मोमन की, साफ किए सब दिल ॥ ७४

करके साफ सबन को, भिस्त देसी सबन ।
पर रूहों सुख हमेसगी, जहां मौला महंमद मोमन ॥ ७५

नूर सरूपें रसूल, हक आगे खड़ा हुकम ।
मूल मेला महंमद रूहों का, सब बैठियां तले कदम ।। ७६
नूर के एक पल में, इत इंड चले कै जांए ।
ए भी मोमनों खेल देखाए के, देसी सबे उड़ाए ।। ७७
रूहें फिरस्ते वास्ते, खेल किया चौदे तबक ।
दुनियां सक लिए खेलत, किन तरफ न पाई बका हक ।। ७८
सो सक भानी सब दुनी की, महंमद मेहेदी ईसा आए ।
अरस कायम सूर हुआ रोसन, दिया काफरों कुफर उड़ाए ।। ७९
काफर रूह भी पाक होएसी, अंदर आग जलाए ।
मोमनों मुसलिम खातर, भिस्त जो देसी ताए ।। ८०
बड़े नसीब रूहें अरस की, जिन जावें खेलमें भूल ।
मोमन वास्ते अरस से, आए इमाम ईसा रसूल ।। ८१
ए सब हुआ मोमनों खातर, पेहेले भेज्या कागद ।
ए तमासा देखाए के, उड़ाए देसी ज्यों गरद ।। ८२
जैसा खेल अवल का, एजो रूहों देख्या ब्रह्मांड ।
बरकत इन मोमन की, सब दुनियां करी अखंड ।। ८३
इन जुबां में क्यों कहूं, मोमन अरस अंकूर ।
आया इमाम सबन का, किया जो परदा दूर ।। ८४
ए जो नसीब मोमन का, सो लिख्या मिने फुरमान ।
पर जहानमें गुझ जाहेर हुई, अब मोमनों की पेहेचान ।। ८५
गिरो *मोमन नाम अनेक हैं, जुदे जुदे कहे नाम ।
बोहोत नामों बुजरकियां, लिखी माहें अल्ला कलाम ।। ८६
तारीफ *ईसा मेहेदी की, सो इन जुबां कही न जाए ।
पेहेचान रसूल खुदाए की, अरस वतन दिया बताए ।। ८७
तारीफ काजी कजाए की, क्यों कहूं या मुख ।
नाबूद को कायम किए, दिए रूहों कायम सुख ।। ८८

माएने इन कुरान के, गुझ रही थी बात ।
सो अरस रूहें जाहेर हुई, सब जनमें फैलात ।। ८९

नाहीं तुम बराबरी, सो इन जुबां कही न जाए ।
पर मुझे सुख तब होएसी, जब देऊं नैनों सब देखाए ।। ९०

ए किया तुम खातर, समझ लीजो दिल माहें ।
रूहें मोमन कदम तले, तित दूजा कोई नाहें ।। ९१

।। प्रकरण।। २४ ।। चौपाई ।। ८२४ ।।

## सनंध नबी *नारायन की

कही कजा जो रसूलें, सो नेक सुनाई हम ।
पर कहे कोई ना समझया, अब कर देखाऊँ तुम ।। १

महंमद दीन देखाइया, और देखाया छल ।
भी देखाऊँ जाहेर, ज्यों छूट जाए सब बल ।। २

अब छल को बल क्या करे, जब देखाऊं बका वतन ।
निकाल देऊँ जड़ पेड़ से, ल्याए नूर अरस रोसन ।। ३

फरेब की तो तुम सुनी, थिर चर चौदे तबक ।
खेल खावंद जो त्रैगुन, सब सब्द बांन पुस्तक ।। ४

बैकुंठ से पाताल लों, बुनी आदम हैवान ।
इन बीच की सब कही, ब्रह्मा रुद्र *नारायन ।। ५

अब सुनियो तुम मोमिनों, ए खेल तो कछुए नांहें ।
पर कछुक तो देखत हो, जिन रहे संसे दिल मांहें ।। ६

जब जाग अरस हक देखिए, ए नहीं खेल कछू तब ।
पर जोलों हुकमें है खड़ा, तोलों क्यों होए झूठा अब ।। ७

ए खेल झूठा जो देखहीं, सो तो सांचे हैं साबित ।
तो कहा बड़ों की बुजरकी, जो झूठ न करहीं सत ।। ८

जो सांचे सांचा देवहीं, तो कहा बड़ाई बुजरक ।
पर खाकी बुत सत होवहीं, तो जानियों महंमद बरहक ।। ९

महंमद आया नूर पार से, याही खेल के मांहें ।
पर इन खेलमें का नहीं, सो भी सक राखों नांहें ॥ १०
नबी और *नारायन की, कछुक कहूं पटंतर[1] ।
रसूल कहे नूर जमाल की, नहीं नारायन गम[2] अख्यर[3] ॥ ११
सो तेता ही बोलिया, जो गया जहां लों चल ।
अपने अपने मुख से, जाहेर करे मजल ॥ १२
सो सब्द लिखे हैं कागदों, आपे अपनी साख ।
जो किन पाई दमड़ी, या किन लाखों लाख ॥ १३
मैं ना किसी की कम कहूं, ना किसी की कहूं बढ़ाए ।
जो जैसा तैसा तिन, दोंऊ कहूं द्रढ़ाए ॥ १४
एते दिन ढांपे हुते, सब्द सत असत ।
सो सब जाहेर हुए, आई सबों की सरत ॥ १५
हकीकत हिंदुअन की, सो देखो चित ल्याए ।
और जो मुसलिम की, सो भी देऊं बताए ॥ १६
हिंदू जोरू जब करें, ले देवें मन के बंध ।
जिन कोई छोड़े किनको, यों पड़े गफलत फंद ॥ १७
मुसलिम जोरू जब करें, मिल पेहेलें बांधे सरत ।
जिन कोई किनसों दिल बांधे, यों न्यारे रहें गफलत ॥ १८
भी हिंदू मुसलिम की, कहूं तफावत[4] तुम ।
हिंदू हिसाब जमपुरी, मुसलिम हाथ खसम ॥ १९
हिंदूओं ए द्रढ़ कर लिया, इत जो करसी करम ।
सो जाए आपे अपना, दें हिसाब आगे राए धरम ॥ २०
सो हिसाब दिए पीछे, देह धरें चौरासी लाख ।
मन वाचा करम बांध के, कहें हम होत हलाक[5] ॥ २१

---

१. फर्क । २. पहुँच । ३. अक्षर ब्रह्म । ४. अन्तर । ५. नष्ट ।

हिंदू मुए जलावहीं, खाक भी देवें उड़ाए ।
जो डंड जम का छूटही, तो भी दिल सुंन को चाहे ॥ २२
हिसाब मुसलिम कहावही, ए किया द्रढ़ दिल ।
खुद काजी हस्तक नबी, हम देसी सब मिल ॥ २३
दूजा देह धरन का, रसूलें किया नाहीं हुकम ।
ताए दूजा देह क्यों होवही, जाको हिसाब हाथ खसम ॥ २४
मुसलिम मुए गाड़ही, बांध उमेद खसम ।
तेहेकीक हक उठावहीं, यों सोवें पकड़ कदम ॥ २५
मन के हारे हारिए, मन के जीते जीत ।
मनही देवे सत साहेबी, मनहीं करे फजीत[1] ॥ २६
चल देखाया बड़कों, सब चले जांए तिन लार ।
अब सो क्यों ए ना छूटही, जो बांध दई कतार ॥ २७
कोई हिंदू जो वैकुंठ जावही, सो भी खेल के माँहें ।
ए फना आखर कहावही, पर कायम भिस्त तो नांहें ॥ २८
बैकुंठ मिने *नारायनजी, जिन मुख स्वांसा वेद ।
ए खावंद है खेल का, सो भी कहूं नेक भेद ॥ २९
*नारायन कहावें निगम, कहें मोहे खबर नहीं खुद ।
नबी हक रसूल कहावही, कहे मैं ल्याया कागद ॥ ३०
ए नबिएँ जाहेर कह्या, में हक पें आया रसूल ।
दीन मुसलिम जो होएसी, सो लेसी सब्द घर मूल ॥ ३१
मेरा घर नूर के पार है, और हवा से ख्वाबी दम ।
याको मेरी खातर, भिस्त देसी खसम ॥ ३२
कलाम अल्ला ल्याया रसूल, इन मुसलिम में आकीन ।
हुकम सिर चढ़ाइया, जो सबसे बड़ा दीन ॥ ३३

१. अपमानित ।

रसूलें खुद को देख के, हुकम लिया द्रढ़ाए ।
जिन खुद को ना देखिया, तिन सिर करम चढ़ाए ॥ ३४

हिंदू और मुसलिम के, बीच पड़्यो है भरम ।
रसूल कहे सब हुकमें, और निगमें द्रढ़ाए करम ॥ ३५

रसूल हक हुकम बिना, और न काढ़े बोल ।
करम द्रढ़ाए निगमें दिए, हिंदूओं सिर डमडोल[1] ॥ ३६

हुए जो ग्यानी अगुए, जिन लिए माएने वेद ।
सो ग्यान हिंदूओं आड़ा पड्या, हुआ बड़ा छल भेद ॥ ३७

तिन अगुओं बांधी दुनियां, किया जोर जब्द[2] ।
बैर लगाया या विध, कोई सुने न काहूं को सब्द ॥ ३८

तो सत सब्द के माएने, ले न सक्या कोए ।
डूबे हिंदू स्यानपे, सो गए प्यारी उमर खोए ॥ ३९

जिन सुध ख्वाब न पार की, सो क्यों समझे ए बात ।
और सबों को अटकल, रसूलें देखी हक जात ॥ ४०

तारी अरवाहें सबन की, चौदे तबक की सृस्ट ।
अवतार तिर्थंकर हो गए, किन तारे ना गच्छ इस्ट[3] ॥ ४१

कोई ऐसा न हुआ इन जहान में, जो तारे अपनी आतम ।
यों सब शास्त्र बोलही, कहे पुकार निगम[4] ॥ ४२

सो बैराट चौदे तबक, थावर और जंगम ।
सब तारे सचराचर, प्रकास रसूल नूर हुकम ॥ ४३

खेल रसूल हुकमें हुआ, बीच ल्याए रसूल फुरमान ।
आखर भी रसूल आए के, भिस्त दई सब जहान ॥ ४४

भिस्त चौदे तबक, देसी दुनियां दीन ।
देसी ब्रह्मा रुद्र नारायन को, आखर दे आकीन ॥ ४५

---

१. डांवाडोल । २. जबरदस्ती । ३. पूजित । ४. वेद ।

ए अवल का हुकम, आखर होसी जाहेर ।
करने साफ सबन को, अंतर मांहें बाहेर ।। ४६

।। प्रकरण ।। २५ ।। चौपाई ।। ८७० ।।

## सनंध दोजख की

नेक कहूं दोजख की, ए जलसी ज्यों कुफरान ।
ए जो सब्द रसूल के, अंदर दिलमें आन ।। १

कुफर चौदे तबक का, इन सब्दों होसी नास ।
पर कहा कहूं तिन अगुओं, जिन किए घात विस्वास ।। २

कुफर सारा काढ़सी, एक पलकमें धोए ।
खारे जल पछाड़सी, याको धूप जो देसी दोए ।। ३

याही दोजख अगनी जलें, जलें दुनी के दम ।
आप जलें अपनी मिने, कहें हाए हाए भूले हम ।। ४

खुदा न देवे दुख किन को, पर मारत है तकसीर ।
पटक पटक सिर पीटहीं, रोसी राने राए फकीर ।। ५

खुद काजी कजाए का, रसूलें किया अति सोर ।
सो सोर याद जो आवही, हाए हाए झालें बढ़ें त्यों जोर ।। ६

जलसी खुद देखे पीछे, ऐसा बड़ा खसम ।
कलमा रसूल का सुनके, हाए हाए पकड़े नहीं कदम ।। ७

ज्यों ज्यों दुलहा देखहीं, त्यों त्यों उपजे दुख ।
ऐसे मौले मेहेबूबसों, हाए हाए हुए नहीं सनमुख ।। ८

खुद की सुध दई रसूलें, पर आया नहीं आकीन ।
अंग मरोर जिमी परे, हाए हाए जिन रसूल को न चीन्ह ।। ९

एता मासूक पुकारिया, पर तो भी न छूटया फंद ।
दंत बीच जुबां काटहीं, हाए हाए हुए बड़े अंध ।। १०

जाए जाए समसेर[१] लेवहीं, अब कीजे आप घात ।
दिलदे कबहूं ना सुनी, हाए हाए पैगंमर की बात ॥ ११
ले ले छुरी पेट डारहीं, आकीन न आया अंग ।
कही बात नबिऐं खुद की, हाए हाए लग्या न तासों रंग ॥ १२
बात ना सुनो रसूल की, तिन सीखा लगियां कान ।
इस्क हक का छोड़ के, हाए हाए डूबे जाए ग्यान ॥ १३
बातां सुनियां दूर से, पर लई न जाए के सुध ।
सो गुन अंग इंद्री जलो, हाए हाए जलो सो बुध ॥ १४
आकीन जिन आया नहीं, सुनके महंमद बैन ।
और विचार सबे जलो, हाए हाए जलो सो चातुरी चैन ॥ १५
धिक धिक ग्याता ग्यान को, जिन उलटी फिराई मत ।
सो अगुए जलो आग में, हाए हाए करी बड़ी हरकत ॥ १६
बिना आकीने इस्क, कबहूं न उपज्या किन ।
स्यानों ग्यान विचारिया, हाए हाए करी खराबी तिन ॥ १७
मैलाई ना छूटी मन की, ऊपर भए उजल ।
ना आया आकीन रसूल पर, हाए हाए छेतरे[२] छल ॥ १८
हराम न छूटचा दिल से, छल दृस्ट हुई बाहेर ।
राह भूले मुसलिम की, हाए हाए बुरी हुई जाहेर ॥ १९
खवाब के सुख कारने, किया आपसों छल ।
सब्द ना सुने रसूल के, हाए हाए खांए गोते बिना जल ॥ २०
सब्द जो अगुओं सुनके, भूले मुसलिम की राह ।
इन दीन कलमें आखर, आवसी इत खुदाए ॥ २१
कुरान जिनों न बिचारिया, जलो सो तिनकी मत ।
जो न जागी रसूल हुकमें, हाए हाए आग परो गफलत ॥ २२

---
१. कृपाण । २. छले गए ।

बैठे उठे न पर सके, सके न रोए विकल ।
आखर जाहेर हुए पीछे, आग हुए जल बल ॥ २३
जिमी सकल जहान जो, हिंदू या मुसलमीन ।
हाथ काट पेट कूटहीं, जिन रसूल को न चीन ॥ २४
सुध सीधी रसूलें दई, पर समझे नहीं चंडाल ।
तिन अंग आग जो धखहीं, हाए हाए झंपे न क्यों ए झाल ॥ २५
खसम के आगे अब, क्यों उठावें सिर ।
सब अंग आग जो हो रही, हाए हाए झालें उठें फेर फेर ॥ २६
देह काफर जले जो आग में, सो तो अचरज कछुए नांहें ।
पर जो जले जान बूझ के, हाए हाए तिन आग लगी दिल मांहें ॥ २७
कुरान को पढ़ पढ़ गए, पर पाई न हकीकत किन ।
तो मासूक प्यारा न लग्या, हाए हाए जिमी हुई अगिन ॥ २८
कै महंमद के कहावहीं, पर पूरे न लगे दिल दे ।
तो मुसाफ न पाया मगज, हाए हाए जान बूझ जलें ए ॥ २९
कलाम अल्ला आया हाथ में, पर मारफत न पाई किन ।
सो भी आग छोड़ें नहीं, हाए हाए तांबा[1] हुई जिमी तिन ॥ ३०
जान बूझ के जो भूले, चले न फुरमाए पर ।
सो लटके सूली आग की, हाए हाए जो हुए बड़े बेडर ॥ ३१
दुसमन बैठा दिल पर, सो तो जलाया चाहे ।
सो जाहेर फरेब देत है, हाए हाए कोई न चीन्हे ताए ॥ ३२
पीछे पछतावा क्या करे, जब लगी दोजख आए ।
इसी वास्ते पुकारे रसूल, मेहेर दिल में ल्याए ॥ ३३
यों आखर आए सबन को, प्रगट भई पेहेचान ।
तब कहें ए सुध सुनी हुती, पर आया नहीं ईमान ॥ ३४

१. गर्म लोह ।

सत असत इन खेल में, रहे थे दोऊ मिल ।
सो दोउ जाहेर किए, साँचा दीन झूठा छल ॥ ३५

॥ प्रकरण ॥ २६ ॥ चौपाई ॥ ६०५ ॥

## सनंध अगुओं ग्यानी की

अब नीद उड़ी सबन की, आई जो हिरदे बुध ।
समझे सब कुरान को, भई रसूल की सुध ॥ १

अब नबी प्यारा लग्या, लगे प्यारे सब्द रसूल ।
इमाम हुए जाहेर, कदमों सब सनकूल[1] ॥ २

अब रसूल की सुध परी, और सुध परी फुरमान ।
ए सबे सुध तब परी, जब आए बैठे सुलतान ॥ ३

बलिहारी महंमद की, बलिहारी मुसाफ ।
बल बल जाऊं काजी की, जिन आए किया इंसाफ ॥ ४

तार्थे इन बीच अगुओं, जिन करी बड़ी हरकत ।
ए जुलम किन बिध कहूं, जिन या बिध फेरी मत ॥ ५

पढ़ों पढ़ाई दुनियां, अगुओं उलटी गत ।
ए होसी सब जरदरू,[2] अबहीं इन आखत ॥ ६

जब काफर देखें अगुओं, तब जानें काले नाग ।
करी दुनी को जरदरू, इनहूं लगाई आग ॥ ७

दुनियां अगुओं देखहीं, तब जाने जैसे जेहेर ।
यों दुनियाँ बीच अगुओं, बड़ा जो पड़सी बैर ॥ ८

ज्यों घायल सांप को चींटियां, लगियां बिना हिसाब ।
त्यों अगुओं को दुनियां, मिल कर देसी ताब[3] ॥ ९

आग दुनी को एक है, अगुओं को आग दोए ।
एक आग दुनी की, दूजे अपने दुख को रोए ॥ १०

---

१. प्रसन्न । २. लज्जित । ३. गर्मी ।

और आग सब सोहेली,[1] पर ए आग सही न जाए ।
अब देखोगे आपही, रेहेसी सब तलफाए ॥ ११

आग सबों को बिरह को, देकर करसी साफ ।
जिन जैसी तैसी तिनों, आखर ए इंसाफ ॥ १२

विकार सारे अंग के, काम क्रोध दिमाग ।
सो बिना विरहा ना जलें, होए नहीं दिल पाक ॥ १३

आखर भी इस्क बिना, हुआ न काहूं सुख ।
सो इस्क क्यों छोड़िए, जो रसूलें कह्या आप मुख ॥ १४

अवल जो रसूलें कह्या, आखर सोई प्रवान ।
इस्क सांचा हक का, और आग सब जान ॥ १५

जब खसम काजी हुआ, तब नाहीं दुखिया कोए ।
महंमद मेहेर करावहीं, सब पाक हुए दिल धोए ॥ १६

रसूल बड़ा सबनमें, जिन हक की दई खबर ।
कह्या मासूक का सब हुआ, आई कजा आखर ॥ १७

तारीफ रसूल की तो करूं, जो इन जिमी का होए ।
या ठौर बात जो नूर पार की, कबहूं ना बोल्या कोए ॥ १८

या सुध पार के पार की, किन मुख ना निकसे दम ।
बुजरकी महंमद की, करत जाहेर खसम ॥ १९

महंमद दीन की पेहेचान, कांहूं हुती न एते दिन ।
ना पेहेचान कुरान की, नातो देख थके कै जन ॥ २०

पेहेले ए सख्ती हती, मुसलिम दीन कुरान ।
पीछे अति पछताएसी, पर क्या जाने कुफरान ॥ २१

सो पेहेचान अब होएसी, करसी साफ दुनी दिल ।
किताब याही रसूल की, सुख लेसी सब मिल ॥ २२

---

१. आसान ।

सब्द रसूल के पसरसी, तिन फिरसी बैराट ।
अकस[1] सबों का भान के, सब चलसी एक बाट ॥ २३

छोड़ गुमान सब मिलसी, ए जो देखत हो जहान ।
जात पांत ना भांत कोई, एक खान पान गान ॥ २४

एही सब्द सुन जागसी, बड़ी बुध होसी विचार ।
याही सदी आखर की, हक सुख देसी पार ॥ २५

नूर सबोंमें पसरया, सो कहूं सब सनंध ।
याही सब्दों बीच का, उड़ जासी बंध फंद ॥ २६

॥ प्रकरण ॥ २७ ॥ चौपाई ॥ ६३१ ॥

## सनंध बिना एक महंमद की

इत आए करी जो रसूलें, सो नेक कहूं प्रकास ।
तबक चौदे उजाला, किया तिमर सब नास ॥ १

प्रताप बड़ा महंमद का, जिन दिया सबों को सुख ।
चौदे तबक की दुनी के, दूर किए सब दुख ॥ २

इमाम मोमन इस्क, सब मुख एही सब्द ।
सब्द ना कोई दूसरा, बिना एक महंमद ॥ ३

आलम सब अल्लाह की, तामें छोड़ी न काहूं हद ।
दौड़ के कोई ना पोहोंचिया, बिना एक महंमद ॥ ४

के जातें दौड़ी जहानमें, पर आया न काहूं दरद ।
तो किनहूं न पाइया, बिना एक महंमद ॥ ५

पंथ पैंड़े दीन मजहब, कर कर गए रब्द ।
पर हुआ न कोई काम का, बिना एक महंमद ॥ ६

बड़े बड़े ग्यानी गुनी मुनी, पर पाया न काहूं हारद[2] ।
कथ कथ सब खाली गए, बिना एक महंमद ॥ ७

१. प्रतिबिम्ब । २. परमात्मा, सत्य ।

कै पोथी पढ़ पढ़ पढ़हीं, पर ना सुध हद बेहद ।
मेहेनत सीधी ना हुई, बिना एक महंमद ।। ८

कै जुदी जुदी जिनसों खोजिया, सबों आप अपने मद ।
तिनसे कछुए ना सरचा, बिना एक महंमद ।। ९

कै पढ़े किताबें सहीके,[१] पर हुआ न काहूं मकसद ।
बका तरफ किन पाई नहीं, बिना एक महंमद ।। १०

कै बंदे एक हादी के, जुदे पड़े कर जिद्द ।
पर हक किने न पाइया, बिना एक महंमद ।। ११

कै पेहेलवान कहावें दुनी में, ढूंढ़ ढूंढ़ हुए सरद ।
सुंन सुरैया[२] पार ना ले सके, बिना एक महंमद ।। १२

कै नाम इमाम धर धर गए, बोल बोल गए बेरद[३] ।
ठौर कायम किने न पाइया, बिना एक महंमद ।। १३

बड़े बड़े सुभट सूरमें, पर हुआ न कोई मरद ।
जो सुध ल्यावे नूर पार की, बिना एक महंमद ।। १४

केतेक पर सिर बांध के, कर कर गए जब्द[४] ।
सो सारे बेसुध गए, बिना एक महंमद ।। १५

अंग मार जार उड़ावहीं, जो हते जोर जलद ।
पर ए सुध काहू ना परी, बिना एक महंमद ।। १६

कै रोते फिरे रात दिन, पर हुआ न दीदार खुद ।
कौन सुख देवे तिनको, बिना एक महंमद ।। १७

कै लालै लाल कहावते, सो हो गए सब जरद ।
और लाल कोई ना हुआ, बिना एक महंमद ।। १८

ए खेल खावंद जो त्रैगुन, कहें हम ही हैं परमपद ।
और खावंद कोई ना हुआ, बिना एक महंमद ।। १९

---

१. धर्म ग्रन्थ । २. सबसे ऊँचा सितारा । ३. प्रसिद्ध । ४. (जब्त) संयम ।

के वली पैगंमर आदम, ए कहावें सब मुरसद ।
और मुरसद कोई ना हुआ, बिना एक महंमद ॥ २०
औलिए अंबिए फिरस्ते, जेता कोई पैद ।
पर अलहा किनहूं ना लह्या, बिना एक महंमद ॥ २१
आद मध और अबलों, कोई न पोहोंच्या कद ।
खुद खबर किन ना दई, बिना एक महंमद ॥ २२
चौदे तबक की दुनी के, मैं देखे सब कागद ।
सो सारे ही बंद हुए, बिना एक महंमद ॥ २३
ऊपर तले माहें बाहेर, ए उड़ जासी ज्यों गरद ।
सो फेर कायम कौन करावही, बिना एक महंमद ॥ २४
जो दुनियां खाके रल गई, सबों कर डारी रद ।
सो फेर कौन उठावही, बिना एक महंमद ॥ २५
तबक चौदे ख्वाब के, ए खेल झूठा है सब ।
सो बका कौन करावही, बिना एक महंमद ॥ २६
तत्व सबन को नास है, जाको मूल मोह मद ।
सो नेहेचल कौन करावही, बिना एक महंमद ॥ २७
ऐसा हुआ न कोई होएसी, जो जावे छोड़ सरहद ।
फुरमान ल्यावें नूर पार का, बिना एक महंमद ॥ २८
पांच चीज जीव सब उड़ गए, *मसी बका[1] से ल्याए ओखद ।
खिलाए जिवाए कोई ना सक्या, बिना एक महंमद ॥ २९
सो रसूल तुम खातर, होए आया कासद ।
ए सब मासूक के हुकमें, हुआ जाहेर महंमद ॥ ३०
मोमन तुम सूते क्या करो, ए कागद ए कासद ।
काजी कजा पर आइया, दे मुबारकी[2] *महंमद ॥ ३१

१. अखण्ड । २. वधाई ।

उठके आप खड़ी रहो, ल्यो अंग में आनंद ।
इस्क देखाओ अपना, मासूक करो परसंद ॥ ३२

॥ प्रकरण ॥ २८ ॥ चौपाई ॥ ६६३ ॥

## सनंध अब सो कहां हैं महंमद

अब सो कहां हैं महंमद, तुम उठ क्यों न देखो जाग ।
कह्या कौल[1] सो आए मिल्या, अब नहीं नीद को लाग ॥ १

तुम जो अरवांहें अरस की, पर छलें किए हैरान ।
बाहेर देखना छोड़ के, तुम अंतर करो पेहेचान ॥ २

हकें लिख्या फुरमान में, मेरा अरस मोमन कलूब ।
क्यों न जागो देख ए सुकन,[2] दिल में अपना मेहेबूब ॥ ३

ए छल झूठा देख के, तुम लई जो तिनकी बुध ।
तो नजर बाहेर पड़ गई, जो भूले अरस की सुध ॥ ४

जात भेष ऊपर के, ए सब छल की जहान ।
जो न्यारा मांहें बाहेर से, तुम तासों करो पेहेचान ॥ ५

काजी कजा जो करसी, तब कह्या रसूलें संग हम ।
ए सोई दिन आइया, अब क्यों भूलें कदम ॥ ६

कह्या रसूलें आवसी, आखर ए मेहेरबान ।
नजर जाहेरी क्यों देखोगे, जोलों बातून नहीं पेहेचान ॥ ७

पेहेले क्यों थे रसूल हक पें, क्यों ल्याए फुरमान ।
अब कौन सरूपें आखर, ए सब करो पेहेचान ॥ ८

वजूद आवे जो खेल में, सो सब ख्वाब के जान ।
ख्वाब देखे जो पार थें, तुम तासों करो पेहेचान ॥ ९

जो हक सूरत देखिए इनमें, तो ख्वाब देवें सब भान ।
ले माएने देखो बातून, ज्यों होवे सब पेहेचान ॥ १०

१. प्रतिज्ञा । २. वचन ।

ए तो आगे थें कै उड़हीं, नूरै की नजर ।
तो नूर तजल्ला की नजरों, ए रेहेसी क्यों कर ॥ ११

हक नजर या पर पड़े, तो उड़े जिमी आसमान ।
नूर आगे अंधेरी ना रहे, तुम दिल दे करो पेहेचान ॥ १२

अब बताऊं या बिध, देखो दिल में आन ।
जाहेर में देखाऊंगी, मेरे इमाम की पेहेचान ॥ १३

आवे अरस से हुकम, तिन हुकमें चले कै हुकम ।
फिरे सो मतबल करके, जाए मिले खसम ॥ १४

भी तितथें रूह आवही, आवे नूर से जोस कूवत ।
सो फुरमाया सब करे, पकड़ के सूरत ॥ १५

नूर मकान से फिरस्ता, आवे *असराफील ।
सब उड़ावे सूर बजाए के, पलक न होवे ढील ॥ १६

भी इत अरस अजीम से, मसी ल्यावें कुंजी रोसन ।
सो तोड़ कुफर आलम[1] का, साफ करें सबन ॥ १७

जब इमाम इत आइया, तब ए सारे संग ।
सरूप मेहेदी याही को, यामें देखोगे कै रंग ॥ १८

याही साथ मिलावा मोमनों, सबों खास बंदों सोहोबत ।
बंदगी जाहेर या बातून, सब बेवरा होसी इत ॥ १९

औलिए[2] अंबिए[3] आसिक, जो खास बंदे सिरदार ।
हक बिना कछू ना रखें, इनों दुनी करी मुरदार ॥ २०

ए माएने ले रसूलें, आए केता किया पुकार ।
ए सो किन खातर किया, रूहें अजू ना करें विचार ॥ २१

ए किन भेज्या कौन आइया, ए सो कौन कारन ।
अब कहे कौन कासों कहे, तुम उठ देखो बातन ॥ २२

१. संसार । २. ऋषि गण । पैगम्बर ।

तुम सूती कौन जगावही, केहे केहे मगज कुरान ।
सुध देवे काजी कजाए की, ले माएने करो पेहेचान ॥ २३

पेहेलें ओलखो आप को, पीछे करो मोसों पेहेचान ।
देखो अपने अरस को, याद करो निसान ॥ २४

यामें रूह कै भांत के, लेत लजत खान पान ।
अंदर बैठा ताए देखहीं, तुम सब बिध करो पेहेचान ॥ २५

कहां इनों की असल, द्रढ़ करो सोई निसान ।
पार अरस जो कायम, तुम तासों करो पेहेचान ॥ २६

रूहें फिरस्ते पैगंमर, सुध होवे नूर मकान ।
सो नूर छोड़ आगूं चले, तब होवे पेहेचान ॥ २७

ए सुध सब बिध ल्याइया, रसूल हाथ फुरमान ।
काजी कजा भिस्त पार की, ले माएने करो पेहेचान ॥ २८

बात रसूल की जो सुने, ताको तअजुब बड़ा होए ।
हक बका सुध देवहीं, सो कहे न दूजा कोए ॥ २९

एक पैंड़े चले दुनियां, रसूल सामी बल ।
नबी नजर देखे चलें, दुनियां चले अटकल ॥ ३०

दुनियां जो छाया मिने, सो करे अटकलें अनेक ।
छाया सूर न देखहीं, पीछे कहे ताए रूप न रेख ॥ ३१

क्यों सब्द आगे चले, तुम कर देखो विचार ।
छाया पार किरना रहें, और सूरज किरनों पार ॥ ३२

पैदास जुलमत काल की, सो तो है सब नास ।
खेलें काल के मुखमें, ताए अबहीं करेगो ग्रास ॥ ३३

हक सूरत नूर के पार है, तहां सब्द न पोहोंचे बुध ।
चौदे तबक छाया मिने, इनें नहीं सूर की सुध ॥ ३४

कोई ना उलंघे काल को, निराकार हवा ला सुंन ।
याको कोई ना उलंघ सके, ए ग्रासे सब उतपंन ॥ ३५

बात बड़ी है काल की, ऐसे कै ब्रह्मांड उपाए ।
काल भी आखर ना रहे, पर ए पेहेलें सब को खाए ।। ३६

रसूल बिना इन काल को, किने न उलंघ्यो जाए ।
ए सब्द काल के पार हैं, सो क्यों औरों समझाए ।। ३७

छाया की जो दुनियां, ताए अचरज होए सबन ।
कालके पार जो पोहोंचही, सो क्यों कर रेहेवे तन ।। ३८

हक की खबर जो ल्यावही, सो तेहेकीक न रहे आकार ।
जो कदी रहे तो बेहोस, पर कर ना सके पुकार ।। ३९

जिन कोई सक तुमें रहे, मैं सब बिध देऊं समझाए ।
माएने इन रसूल के, भांत भांत देऊं बताए ।। ४०

सत छाया जीव पर पड़े, सो तबहीं मुरछाए ।
ख्वाब न देखे सांच को, वह देखत ही मिट जाए ।। ४१

पर अंधे यों न समझहीं, जो इनका नाम रसूल ।
सो तो पार से आया हक पें, याको जुलमत ना मूल ।। ४२

बात मासूक की सो करे, आगे आसिक अरधंग ।
कहे कुरान पुकार के, रसूल न छाया संग ।। ४३

सो बात करे मेहेबूब की, वाको अंग न कोई उरझाए ।
ज्यों किरने सूरज देखहीं, त्यों त्यों जोत चढ़ाए ।। ४४

सो जाने सुध पार की, हक मिलिया जिन ।
किरना सूरज ना अंतर, यों मासूक आसक तन ।। ४५

सीधे सब्द रसूल के, पर ए समझे कछू और ।
जोलों सब्द ना चीनहीं, तोलों न पाइए ठौर ।। ४६

।। प्रकरण ।। २९ ।। चौपाई ।। १००९ ।।

## सनंध इमाम रसूल की

खातर प्यारी रूहें मोमन, मैं कहूं अरस सब्द ।
बका सब्द कहे बिना, उड़े ना सरियत हद ।। १

सुध दुनी हद ना बेहद, कौन रसूल कौन हम ।
कागद ल्याया किनका, कहां सो अरस खसम ॥ २

ए सुध जिन पाई नहीं, जो लिखी माहें कागद ।
ए सब खेलें ख्वाब में, कोई न छोड़े हद ॥ ३

हद की बांधी सब दुनियां, हक तरफ न करे नजर ।
पीठ दे हद बेहद को, यों हादी हक देवें खबर ॥ ४

हा हा किनें ना पेहेचानिया, एजो रसूल रेहेमान ।
कहे किताब जाहेर, सब पर ए मेहेरबान ॥ ५

सब्द रसूल क्यों चीनहीं, ए जो चाम के दाम ।
ख्वाबी दम क्यों समझहीं, ए जो अल्ला के कलाम ॥ ६

जो दम होवें ख्वाब के, तिन क्यों उपजे विचार ।
ए सब ढूंढ़े ख्वाब में, माएने हवा नूर पार ॥ ७

ए सांचा नूरी सांई का, इनके सब्द अगम ।
फिरस्ते आदम जो मिलो, किन निकसे ना मुख दम ॥ ८

आप रसूल नहीं हद का, इनों अरस अजीम असल ।
दुनी सुरैया उलंघ ना सके, पूरी हद की भी नहीं अकल ॥ ९

ए सब्द पार बेहद के, ताके माएने करसी सोए ।
सब्द महंमद जानें मेहेदी, दूजा हद का न जाने कोए ॥ १०

हद बेहद दोऊ जुदे, मेहेदी महंमद बिना न होए ।
अब देखो जाहेर हुए, रह्या सब्द न हद का कोए ॥ ११

एही किताब बहुतन पें, पर माएने न पाए किन ।
अब देखो आलम में, इन किताब नूर रोसन ॥ १२

जो दम होवे ख्वाब के, सो क्यों करसी पेहेचान ।
चीन्ह्या नहीं रसूल को, किन हिंदू या मुसलमान ॥ १३

केतेक संग रसूल के, रेहेते रात दिन माहें ।
नातो ओ बुजरक हुते, पर कछू *अली बिन चीन्ह्या नाहें ॥ १४

तबक चौदे हद के, चौगृद निराकार ।
ए सब्द हदी क्यों समझहीं, जो निराकार के पार ॥ १५
बेहद को सब्द न पोहोंचही, ए हदमें करें विचार ।
कोई इत बुजरक कहावहीं, सो केहेवें निराकार ॥ १६
फेर इनों को पूछिए, क्या बेचून बेचगून ।
क्या है सुंन निरंजन, कछू खबर ना दई इन ॥ १७
निराकार आकारों ना सुध, ना सुध आप खसम ।
ना सुध छल ना वतन, ए बुजरकों बड़ी गम ॥ १८
खासा नूरी खुदाए का, ए बोल्या सब्दातीत ।
सब मिल सब्द विचारहीं, पर पावें ना वे रीत ॥ १९
आदम मिलो कै औलिए, अंबिए बड़े आकीन ।
नूरी कहावें फिरस्ते, पर किन रसूल को ना चीन ॥ २०
सिफत बड़ी रसूल की, निराकार के पार अखंड ।
ऐसा कोई ना हुआ, ना तो हुए कै ब्रह्मंड ॥ २१
दीन दरसन फिरके मजहब, और मिलो कै जात ।
पढ़ प्रढ़ सिर बांधे पर, पर पाई ना नबी की बात ॥ २२
चौदे तबक की रूहमें, ऐसा ना कोई समरथ ।
सब्द महंमद मेहेदी बिना, करे सो कौन अरथ ॥ २३
ए माएने इमाम बिना, कोई कर ना सके और ।
अब देखोगे इन माएनों, सुख लेसी सब ठौर ॥ २४
नूर बड़ा इन सब्द में, सो देख थके सब कोए ।
इमाम बिना इन नूर को, रोसन क्यों कर होए ॥ २५
इन जुबां में क्यों कहूं, मुसाफ मगज नूर ।
कुफर चौदे तबक का, किया इमामें दूर ॥ २६
फुरमान नूर के पार का, सो क्यों कर इनों समझाए ।
ए माएने रोसन तब होवहीं, जब बैठे इमाम इत आए ॥ २७

ल्याए खजाना वतनी, करसी आए इंसाफ ।
देसी सुख कायम, आवसी सो असराफ ॥ २८

ए रसूलें पेहेलें कह्या, खोलसी माएने इमाम ।
उमेदां मोमन दुनी की, होसी जाहेर हुए कलाम ॥ २९

मोमन कारन आवसी, आखर करी सरत ।
हम भी फेर तब आवसी, सुख देसी कर सिफायत ॥ ३०

जो सुख देसी इमाम, सो या जुबां कह्यो न जाए ।
उमेदा मोमन की, पूरी ईसा इमामें आए ॥ ३१

नूर बड़ो इन माएनों, सो अब हुआ रोसन ।
तबक चौदे गरजिया, बरस्या नूर वतन ॥ ३२

कह्या जो इमांम आवसी, सो सरत हुई सत ।
आगे इन इमाम के, जाहेर होसी बड़ी मत ॥ ३३

एक लुगा झूठ ना होवही, जो बोले हजरत ।
आगे ही थें सब कह्या, पर क्यों समझे रूह गफलत ॥ ३४

अब सो इमाम आइया, याही दिन आखर ।
सब्द रसूल के जाहेर, फिर वलसी सब पर ॥ ३५

पैंड़ा बताया रसूलें, पर कोई न समझया तब ।
तिन राह सब चलसी, राजी हो हो अब ॥ ३६

धंन रसूल धंन फुरमान, धंन आया जिन खातर ।
धंन मेहेदी महंमद रूहअल्ला, धंन धंन ए आखर ॥ ३७

अब सबमें जाहेर हुए, बड़े रसूल के सब्द ।
इमाम आए फजर हुई, उड़ गई अंधेरी हद ॥ ३८

एते दिन ढांपे हुते, मगज माएने बातुन ।
आए इमाम बखत बदल्या, सैतान मारचा सबन ॥ ३९

जाहेर साहेब हुए पीछे, चले न दूजी बाट ।
पंथ पैंड़े मजहब सब उड़ गए, सब हुआ एकै ठाट ॥ ४०

आया सबका खसम, सब सब्दों का उस्ताद ।
महंमद मेहेदी आए बिना, कौन मिटावे बाद ॥ ४१

घर घर होसी सादियां, उड़ गई गफलत ।
जो कह्या सो सब हुआ, आई ए आखरत ॥ ४२

तारीफ *महंमद *मेहेदी की, ऐसी सुनी न कोई क्यांहें ।
कै हुए कै होएसी, पर किन ब्रह्मांडों नांहें ॥ ४३

॥ प्रकरण ॥ ३० ॥ चौपाई ॥ १०५२ ॥

## सनंध दजाल[१] की

जिन मोमन के कारने, रचिया एह मंडल ।
तिनकी उमेदां पूरने, मेहेदी महंमद आए मिल ॥ १

अब नेक कहूं आखर की, जो होसी सब जाहेर ।
बांधे दजालें मोमन, अंतर माहें बाहेर ॥ २

आया इमाम आलम का, तब कुफर रेहेवे कित ।
पर कहूं मोमन दजाल की, नेक हुई लड़ाई इत ॥ ३

क्यों कहूं बल दजाल का, जाहेर बड़ा पलीत ।
जोर न चले काहू का, लिए जो सारे जीत ॥ ४

अंग जो बांधे या बिध, पेहेले पेड़ से फिराई बुध ।
उलटाए सब या बिध, परी न काहूं सुध ॥ ५

दजाल नजरों न आवही, सब में किया दखल ।
जाने दोस्त को दुसमन, कोई ऐसी फिराई कल ॥ ६

अंदर जो बांधे या बिध, कही न जाए करामत ।
सत असत कर देखही, असत लग्या होए सत ॥ ७

मन चित बुध अहंकार, काम क्रोध गफलत ।
आउध ए दजाल के, स्यानप ग्यान असत ॥ ८

१. शैतान ।

भी आउध अमृत रूप रस, छल बल वल अकल ।
कोमल कुटिल अंग सीतल, चंचल चतुर चपल ॥ ९

जाकी अग्याएं अगनी चले, चले जिमी और जल ।
वाउ भी हुकम पर खड़ा, ऐसा दजाल का बल ॥ १०

ए दजाल बड़ा जोरावर, मूल गफलत याके साथ ।
मनसा वाचा करमना, ए सब इनके हाथ ॥ ११

जुध बड़ा दजाल का, लिए जो सारे जीत ।
भागे भी ना छूटही, कोई ऐसा बड़ा पलीत । १२

सूर बड़े इन जहानमें, जिन किए सामें बल ।
ताबें अपने कर लिए, बाए गलें सांकल ॥ १३

छीन लिए बल सबन के, जो सूरमें बड़े केहेलाए ।
बांध्या जो कोई बल करे, तो बड़े जो गोते खाए ॥ १४

जो बुजरक बड़े कहावहीं, तिन जुध किए मिल मिल ।
सो फिरस्ते उलटाए के, ले डारे गफलत दिल ॥ १५

ए जुध करे सबनसों, आप नजर न आवे किन ।
दजाल जोर करामात, सब किए आप से तन ॥ १६

कोई न छोड़या दजालें, जीत लिए सकल ।
ऐसे अंधे कर लिए, कोई सके न काहूं चल ॥ १७

सब अंग बांधी दुनियां, सारे हुए बेअकल ।
अबलों किन देख्या नहीं, कुफर करामात कल ॥ १८

या बिध बांधी दुनियां, खोल ना सके कोई बंध ।
राह हक की छुड़ाए के, ले डारे गफलत फंद ॥ १९

दुनियां बाहेर देखही, अजूं आया नहीं दजाल ।
बंदगी करते आवही, तब लड़सी तिन नाल[१] ॥ २०

---

१. साथ ।

खाए गया सबन को, अजूं देखत नाहीं ताए ।
तिनसों लड़ने बाहेर, बांध बांध कमरें जाए ।। २१
जुध याको जाहेर कह्या, देसी बंदगी छुड़ाए ।
आप अंदर से उठमी, जीत्यो न काहूं जाए ।। २२
जाहेर कहे जो माएने, ए तित भी रहे समझाए ।
लिखियां जो इसारतें, सो इनों क्यों समझाए ।। २३
तो कह्या नबिएँ इमन[1] को, ला बारकला[2] मुसल्मीन ।
दई बारकला हिंद मुसलिम, लिए सिर कलाम आकीन ।। २४
कहा कहूं बल दजाल को, जोर बड़ा जालिम ।
पेहेले पढ़े सब लिए, पीछे छोड़या न कोई आलम ।। २५
नाम इमाम धरावहीं, पर फुरमान की ना सुध ।
बरकत कलमें रसूल के, साफ होसी सब बिध ।। २६
नजरों काहूं न आवही, करत गैब की मार ।
कोई छूटया *मोमन भाग के, और कर लिए सब कुफार ।। २७
फिरस्ता चौदे तबकों, फिर वल्या सब पर ।
हुकम चलाया अपना, कोई रह्या न ताबे बिगर ।। २८
ओ जाने हम सीधा चलें, इन बिध राह मारत ।
तो कही पुल सरात, तरवार धार है इत ।। २९
ए आदम औलाद सब जानत, इन बदला मांग लिया हक पें ।
क्यों छूटे बंध दुसमन के, तो किन चल्या ना इनसें ।। ३०
क्यों करें जंग दजालसों, काफर या मुसलमान ।
औलाद आदम सब ताबीन,[3] पातसाह दिलों सैतान ।। ३१
तो क्या चले बंदन का, जिन दिल पर ए पातसाह ।
सब जानें दुसमन मारसी, हक तरफ चलते राह ।। ३२

१. यमन देश । २. ईश्वरी बढोत्तरी । ३. आधीन ।

दिल मोमन हक अरस कह्या, तो इन दुनियां करी हराम ।
पीठ दई मुरदार को, जिन दिलों अरस आराम ।। ३३

जो दिल कह्या अरस हक का, तिन तरफ जले काफर ।
मार ना सके राह मोमनों, सब बंधे इनों विगर ।। ३४

मोमन उतरे नूर विलंद से, तो कह्या अरस कलूब[1] ।
तिन तरफ क्यों आए सके, जिनका हक मेहेबूब ।। ३५

सब साफ किए दिल मोमन, जब इत आए इमाम ।
जिन दिल पातसाह सैतान, किए पाक जलाए तमाम ।। ३६

खबर न पाई काहूं ने, जो दिल ऊपर सैतान ।
साफ किए सबन को, जाहेर कर हुकम सुभान ।। ३७

जाहेर काहूं ना हुआ, छिप कर लिए सब ।
इमाम आए जाहेर हुआ, ए जो दजाल न देख्या किन कब ।। ३८

जब इमाम इत आए, तब क्यों रहे ढांप्या चोर ।
मोमन पेहेले छुड़ाए के, दिए दुनी के बंध तोर ।। ३९

ए जो जीती दजालें दुनियां, कर लई थी निरबल ।
सो बल सबको देए के, दिए सुख नेहेचल ।। ४०

लिख्या है फुरमानमें, मेहेदी आवेगा आखर ।
उड़ाए मारसी दजाल को, राह देसी सीधी कर ।। ४१

अब हुए सब जाहेर, कुफर करामात कल ।
महंमद मेहेदी के प्रताप से, जासी बंध सब जल ।। ४२

कुदरत रूप दजाल को, किनहूं न जान्या जाए ।
तब सबों को सुध परी, जब ईसे दिया उड़ाए ।। ४३

इमाम तो मारे इनको, जो ए आपे होए वजूद ।
इमाम के आवाज से, होए गया नाबूद ।। ४४

---

१. हृदय ।

जब इमाम जाहेर हुए, तब क्यों रेहेवे अंधेर ।
अपनी तरफ सबन के, लिऐ दुनी दिल फेर ॥ ४५

जो कबहूं प्रगटे होते, तो होत कुफर को नास ।
जब इमाम जाहेर हुए, तब नूर हुआ उजास ॥ ४६

मेहेदी महंमद ढांपे ना रहें, जासों भूठ भी सांच होए ।
ऐसा खसम जोरावर, यासे सुख पावे सब कोए ॥ ४७

॥ प्रकरण ॥ ३१ ॥ चौपाई ॥ १०६६ ॥

## सनंध इमाम के प्रताप की

प्रताप इमाम कहा कहूं, इन जुबां कह्यो न जाए ।
तो भी नेक रोसन करूं, तुम लीजो चित ल्याए ॥ १

ए नेक करूं इसारत, तुम सुनियो आखर दिन ।
पेहेले मिलसी रूह मोमन, पीछे तो सब जन ॥ २

ए सरत सोई जो आगे करी, हक इलम होसी जाहेर ।
लिख्या है कुरान में, आया सो आखर ॥ ३

सबद गुभ पुकारहीं, सब में सचराचर ।
सो सारे कदमों तले, जब आए इमाम आखर ॥ ४

खेल पाया इप्तदाए[1] से, आप असल बका घर ।
सब सुध हुई प्रताप तें, जब आए इमाम आखर ॥ ५

ए जो खेल था कुदरती, काहूं खोल न देखी नजर ।
सो उड़ाए दई पेड़ जुलमत, जब आए इमाम आखर ॥ ६

त्रिगुन त्रैलोकी मोह की, कहांते हुई किन पर ।
सो संसे ना रह्या किन का, जब आए इमाम आखर ॥ ७

निरंजन निराकार तें, खेल रच्यो नारी नर ।
ए सुध हुई सबन को, जब आए इमाम आखर ॥ ८

१. आरम्भ ।

ए जो फिरस्ते नूर से, खेल तिने किया पसर ।
ए गुझ सारोंने पाइया, जब आए इमाम आखर ।। ९

काल सुन्य जड़ चेतन, ए सब हुए जाहेर ।
ए धोखा किन का ना रहया, जब आए इमाम आखर ।। १०

वेद कतेब के माएने, जब द्रढ़ हुए दिल धर ।
किए मगज माएने जाहेर, जब आए इमाम आखर ।। ११

इलम ले ले अपना, सब जुदे हुए झगर ।
सो सारे एक दीन हुए, जब आए इमाम आखर ।। १२

गैबी मार दजाल का, सब में गया पसर ।
सो साफ हुई सब दुनियां, जब आए इमाम आखर ।। १३

आग बिना सब दुनियां, अगिन हुई जर—बर[1] ।
सो सारे ठंढे किए, जब आए इमाम आखर ।। १४

दुनियां गोते खावही, बिन जल भव सागर ।
सो सारेही थिर किए, जब आए इमाम आखर ।। १५

क्यों पैदा क्यों होसी फना, ए ना काहूं को खबर ।
सो सारों कों सुध हुई, जब आए इमाम आखर ।। १६

छिपिया सांच सबन से, झूठ गया पसर ।
सो सारे सत ले खड़े, जब आए इमाम आखर ।। १७

काम क्रोध दिमाग में, सब धखे निस बासर ।
सो सारे ठंढे हुए, जब आए इमाम आखर । १८

सबद न लगे काहूं को, ऐसे हिरदे भए बजर ।
सो गलित गात हुए निरमल, जब आए इमाम आखर ।। १९

मुस्लिम को मुस्लिम की, हिंदुओं हिंदुओं की तर ।
ए समझे सब अपनी मिने, जब आए इमाम आखर ।। २०

---

१. जल बल ।

मने फिराई दुनियां, रहे न सक्या कोई थिर ।
सो मन सारे थिर किए, जब आए इमाम आखर ।। २१

अलख जो अगम कहावहीं, ताकी कर कर थके फिकर ।
सो सकसुभे सब उड़ गई, जब आए इमाम आखर ।। २२

सुध आतम पर आतमा, सक्या ना कोई कर ।
सो सारे धोखे मिटे, जब आए इमाम आखर ।। २३

हद बेहद के पार की, सब देख थके फेर फेर ।
सो सारोंने देखिया, जब आए इमाम आखर ।। २४

पार सुध किन ना हती, बाहेर अंदर अंतर ।
सो सारे संसे गए, जब आए इमाम आखर ।। २५

ढूंढ़ ढूंढ़ के सब थके, ए जो लैलत कदर ।
ए दरवाजा खोलिया, जब आए इमाम आखर ।। २६

कहांतें नूर तजल्ला की, जो नूरकी भी नहीं खबर ।
सो परदे उड़े सबन के, जब आए इमाम आखर ।। २७

कहांतें अख्यरातीत की, जो सुध ना अख्यर[1] ख्यर[2] ।
सो सारे जाहेर हुए, जब आए इमाम आखर ।। २८

इसक खसम बतावहीं, उड़ाए दिया सब डर ।
काएम सुख सब लेवहीं, जब आए इमाम आखर ।। २९

मोमन पीछे ना रहे, ताए सके ना कोई पकर ।
उमेदां पूरी सबन की, जब आए इमाम आखर ।। ३०

बड़े सुख मोमन लेवहीं, रस इसक पिएं भर भर ।
औरों को भी पिलावहीं, जब आए इमाम आखर ।। ३१

ए सुख कह्यो न जावहीं, रह्यो न कछू अंतर ।
मोमन रूहें जाहेर हुए, जब आए इमाम आखर ।। ३२

---

१. अक्षर, । २. क्षर ।

सुख आसकों क्यों कहूं, जो लेवें मासूक अंदर ।
सुन मोमन टूक होवहीं, जब आए इमाम आखर ।। ३३

पीछे जहांन इन दुनी की, दौड़ी आवे एकदर ।
तब तो सुख सागर हुआ, जब आए इमाम आखर ।। ३४

चौदे तबक हुई कजा, एक जरा ना रह्यो कुफर ।
सो साफ किए सबन को, जब आए इमाम आखर ।। ३५

ए जों काजी कजा करी, सो भी मोमन की खातर ।
औरों पाया मोमन बरकतें, जब आए इमाम आखर ।। ३६

बेचून बेचगून बेसबी, है बेनिमून क्यों कर ।
सो जाहेर हुआ सबन को, जब आए इमाम आखर ।। ३७

सेहेरग से हक नजीक, ए खोली ना किन नजर ।
सों पट उड़ाए जाहेर किए, जब आए इमाम आखर ।। ३८

कै आलम पलमें पैदा फना, करें हक कादर ।
सो देखाए दुनी काएम करी, जब आए इमाम आखर ।। ३९

थी उरभन चौदे तबकमें, सब जाते थे मर मर ।
दई हैयाती सबन को, जब आए इमाम आखर ।। ४०

किन पाया ना मगज मुसाफका, जो ल्याया आखरी पैगंमर ।
किया जाहेर यासों हक बका, जब आए इमाम आखर ।। ४१

लेवे खिताब इमाम का, बातून खुले ना इन बिगर ।
सो खोलके भिस्त दई सबों, जब आए इमाम आखर ।। ४२

थी रात अंधेरी सबन में, बका दिन देखाए करी फजर[1] ।
मकसूद[2] किया सबन का, जब आए इमाम आखर ।। ४३

इलम लुदंनी कहूं ना हुता, कर जाहेर मिटावे कुफर ।
दिया सुख काएम सब को, जब आए इमाम आखर ।। ४४

---

१. सुबह । २. मनशा, उद्देश्य ।

कोई बेसक दुनी में ना हुता, गई दुनिया एती उमर ।
सो द्रढ़ कर दई हक सूरत, जब आए इमाम आखर ।। ४५

इमाम नूर है अति बड़ो, पर सो अब कह्यो न जाए ।
मेला होसी जब मोमनों, तब देऊंगी नीके बताए ।। ४६

।। प्रकरण ।। ३२ ।। चौपाई ।। ११४५ ।।

## सनंध कजाकी अरबी सिंधी

सुनियो दुनियां आखरी, भाग बड़े हैं तुम ।
जो कबूं कानों ना सुनी, सो करो दीदार खसम ।। १

कै राए राने पातसाह, छत्र पती चक्र वर्त ।
ताए हक सुपने नहीं, सो गए लिऐं गफलत ।। २

कै देव दानव हो गए, कै तीर्थंकर अवतार ।
किन सुपने ना श्रवनों, सो इत मिल्या नर नार ।। ३

करी अनेकों बंदगी, इसक लिया कै जन ।
तिन काहूं ना नजीक, सो इत मिल्या सबन ।। ४

चौदे तबक के खावंद, कर कर गए उपाए ।
तित परदा सबन पर, सो इत दिया उड़ाए ।। ५

तुम जानते थे मलकूत को, हम सिर एही बुजरक ।
तिनको न बका ख्वाब में, सो इत पाया सबों हक ।। ६

मारता था राह दुनी की, सब का था दुसमन ।
जित हिदाएत एक हादी की, तित भी मारे तिन ।। ७

एक राह थी अवल, तित भी दिए फिराए ।
कै इलम देखाए जुदे डारे, बल सैतान कह्यो न जाए ।। ८

बैठ दुनी के दिल पर, चलाया हुकम ।
हक राह छुड़ाए डारे उलटे, ए दुसमने किया जुलम ।। ९

ए दुसमन देखाया रसूलें, पर इनसों चल्या न किन ।
आप जैसा होए के, राह मारी सबन ।। १०

सो काफर उड़ाए दिया, जिन मारी थी सबकी राह ।
सो जानिए हला नहीं, जब आया हक पातसाह ॥ ११

मैं बड़ भागी तुमें तो कहे, जो आए इन आखर ।
तो कहूं जो दूर होवही, अब देखोगे नजर ॥ १२

यामें बड़े रूह मोमन, सो जुबां कह्यो न जाए ।
अबहीं इमाम के कदमों, देखोगे सब आए ॥ १३

ए कह्या रसूलें अवल, ए जो चौदे तबक ।
इनमें काजी आखर दिनों, इत कजा जो करसी हक ॥ १४

रसूलें इत आए के, पेहेलें किया पुकार ।
आवसी रब[1] आलम का, तब हूजो खबरदार ॥ १५

लिख्या आगम कदीम[2] का, सो आए मिल्या दिन ।
याही सदी आखर की, पुकार करे सब जन ॥ १६

नूर अकल ले लुदंनी, हुकमें किया पसार ।
महंमद मेहेदी ईसा आवसी, आगे चेतावें नर नार ॥ १७

आप इमाम अजूं गोप हैं, होत आगे रोसन नूर ।
रात अंधेरी क्यों रहे, जब ऊग्या काएम सूर ॥ १८

सांच झूठ तफावत, जैसे दिन और रात ।
साँच सूर जब देखहीं, तब कुफर रात मिट जात ॥ १९

जो लों थे परदे मिने, दुनियां उरझी तब ।
सो परदा अब खोलिया, दिया मन चाह्या सुख सब ॥ २०

जो लों जाहेर हक ना हुए, तो लो मारे दिमाग ।
हक प्रगटे कुफर मिट गया, सब दुनियां हुई पाक ॥ २१

जब कुफर कछू ना रह्या, तब दुनियां हुई एक दीन ।
ए नूर कजा का झिल मिल्या, आया सबों आकीन ॥ २२

---

१. परमात्मा । २. प्राचीन ।

दुनियां टेढ़ी मूल की, ताको गयो पेड़ से बल ।
पाक किए सब इमामें, कुफर गया निकल ॥ २३

पुकार कह्या वेद कतेबों, पर बस न किया काहूं दिल ।
कर कर मेहेनत कै थके, पर हुआ न कोई निरमल ॥ २४

ना तो कै बुजरग हुए, कैयों करियां नसीहत ।
ओ मुरीद विचारे क्या करें, किनें पीर न पाई मारफत ॥ २५

सो इमामें इत किए, सब जन के मन बस ।
होए ना किन इमाम को, इन जुबां ए जस ॥ २६

सो इमाम इत आइया, इन जिमी हिंदुस्तान ।
सब तलबें[1] याही दिसा, चौदे तबक की जहान ॥ २७

पर मुझे प्यारी बराबर,[2] जिन जिमी आए रसूल ।
मेहेर नजर महंमद की, पर काफर गए सब भूल ॥ २८

पीछे केहेर[3] नजर करी, सो भी वास्ते मेहेर ।
पर काफर जो उलटे, सो देखे सब जेहेर ॥ २९

केहेर नजर देखाए के, फेर लिए मेहेर मांहें ।
मुस्लिम नाम धराए के, बैठे मुस्लिमकी छांहें ॥ ३०

अब तो लगे सब बंदगी, आया भला आकीन ।
नर नारी हक कलमें, काएम खड़े हैं दीन ॥ ३१

पेहेले बीतक रसूलसों, सो भी सुनो नेक बोल ।
आरब समझें आरबी, दोए कहूँ लुगे दिल खोल ॥ ३२

॥ प्रकरण ॥ ३३ ॥ चौपाई ॥ ११७७ ॥

## सनंध अरबी की

सम्मेन कलीम कलामी, नास कुरब ना कसीर ।
नेक मैं कहूँ मेरी बोली में, आदमी कबीले मेरे बहूत हैं,

---

१. माँगते हैं । २. अरब की भूमि । ३. कोप ।

**अना हाकी हकाइयां कलूब ना, लिसान इस्म कबीर ॥ १**
मैं कहूँ बातें दिल अपने की, मेरे जिनके नाम बड़े हैं।
**फाल नफस इस्म इमाम, बाद कलिम कुल्लो नास ।**
धराया अपना नाम इमाम, पीछे कहेंगे सब आदमी।
**व ला किन ला अरफ कुरान, अना मिन्हुम कुल्लो लिरास ॥ २**
ए पर न जाने कदी कुरान, मेरे तो उनों से सब लेना साथ सिर के।
**अल्लजी हकाइयां कलूब ना, मा खफी मिन्कुम ।**
जो बात मेरे दिल की, ना छिपाऊं तुम से।
**कुम्यकून कुरब ना, अल्लजी रूह मुस्लिम ॥ ३**
तुम हो कबीले मेरे के, जो कोई रूह मुस्लिम हैं।
**लेस खबर मा कुम कमा, अल्लजी बरारब ।**
नहीं है खबर तुमकों जैसी कछू, जो कि अरब हैं।
**हाजा मुस्लिम कुल्ल हुँम, फआल अली मिनजरब ॥ ४**
ए मुसलमान सारे जो हैं, किए अलिऐं मोहों मारके।
**व लाल हुम्मा ऐयून, खारज बला दखल ।**
और नहीं है वास्ते इनोंके जो कि आंखें हैं, बाहेरकी और नहीं हैं भीतर की।
**वल हुम्म लेस इगनु, व ल हुम्म लेस अकल ॥ ५**
और नहीं है वास्ते इनोंके कान, और नहीं है इनोंके अकल।
**जरब ना वज्हे मिन्सेफ, फाल ना मुसलमीन ।**
मारे मैं मोहों समसेरके से, किए हमने मुसलमान।
**लाकिन जाहिल यमन, व लाए जा आ यकीन ॥ ६**
पर मूरख जो इमनके, तिनोंको नहीं आया ईमान।
**लिहाजा कमा काल यमन, ला बारकला मुसलमीन ।**
इस वास्ते ऐसा कह्या इमनकों, नहीं है बरकत इन मुसलमानोंको।

## बारकला धन्य ला बारकला धृक

**कुलू बारकला हिन्द मुस्लिम, खुजू रास कलाम यकीन ॥ ७**
कही बरकत हिन्दके मुसलमानोंको, लिए सर कलाम आकीन करके ।
**हाजा फास खबर इन्द कुम्म, यजिलस हिन्द सुब्हान ।**
ए जाहेर खबर पास तुमारे है, बैठेंगे हिन्दमें परमात्मा ।
**कमा अवल काल रसूल, अना हसना हिन्द मकान ॥ ८**
ऐसे पहले कह्या रसूलने, मेरा नेक है हिंद स्थान ।
**व ला लेतनी मौला रदो, अल्लजी हाकीअतो महंमद ।**
और न कदी मौला रद्द करे, जो कछु कह्या है महंमदने ।
**लिहाजा मुस्लिम इमाम, जा आ हिंदल अर्ज ॥ ९**
वास्ते इन मुसलमानोंके इमाम, आया हिन्दकी जिमी ।
**कुम अल्लजी मुस्लिम, रसूल कुल्हो कलिम ।**
तुम जो सारे मुस्लिम हो, रसूलने सब कहा है ।
**यजाआ यकीनल्कुम, खैरतल्बो हिन्द मुस्लिम ॥ १०**
आवेगा यकीन तुमारे तांई, खैरियत माँगो हिन्दके मुसलमानोंसे ।
**यव्सरो हाजा कलमा, दाखल कलूब कुम्म ।**
देखो एह वचन, बीच दिल तुमारे ।
**सैयबो विलाद कुल्हुम्म, खैरतलबो हिन्द मुस्लिम ॥ ११**
छोड़ो विलायत सबको, बगसीस मांगो हिंदके मुसलमानोंपें ।
**अल्लजी कलाम रसूलना, खुजू मुहब्ब कलाम ।**
जिन किनोंने कलमा रसूल मेरेका, लिए प्यारसों बोल ।
**लागिल हिन्द मुस्लिम, हुबहुम्म जा आ इमाम ॥ १२**
वास्ते हिंदके मुसलमानोंके, प्यार कर इनोंपर आया इमाम ।
**अल्लजी रसूल सैयबो, ऐयो ना फआली हुम्म ।**
जो रसूलने दूर किया, कहा मैं करूं उनको ।

**खला ना अर्ज आरब, जाआ ना इन्द कुम्म ॥ १३**
खाली करी हम जिमी अरबकी, आए हम पास तुमारे ।
**इस्म्यो हिन्द मुस्लिम, इन्नी कलम सिदक ।**
सुनो हिंदके मुसलमानों, मेरे कहना है सांच ।

**यकीन कान इन्द कुम्म, व कायमुल्कलमे हक ॥ १४**
ईमान है पास तुमारे, और कायम हो साथ कलमे हकके ।
**अवल स्वाल रसूल ना, व लाए आरफ अहद ।**
पहले बोल रसूल मेरेके, कदी न पहचाने किसीने ।

**दलहन कुल्लो य आरिफो, जाआ कलम महंमद ॥ १५**
अब कुल कहे थे सब पहचानेंगे, आया बोल रसूल का ।
**अल्लजी जाआ कुम्म मुस्लिम, हाजा लागिल कुम्म फाल सुगल ।**
जो आए हो तुम मुस्लिम, यह खातिर तुमारे किया है खेल ।

**इब्सर सुगल ना यरजा, अल्लजी मुस्लिम कुल्ल ॥ १६**
देख खेल हम पीछे फिरेंगे, जो कि हैं मुस्लिम तमाम ।
**इन्नी मुस्लिम कुल्लो वाहिद, अस्लू वाहिद मकानी ।**
हम मुस्लिम सब एक हैं, असल एक हमारा स्थान है ।

**कान हक वाहिद अना, गैर मुस्लिम लेस सानी ॥ १७**
है खुदा एक हमारा, बिना मुस्लिम नहीं है दूसरा ।
**अनी हवो कुल्लो मुस्लिम, लाकिन जायद सिंध ।**
मेरे प्यारे हैं तमाम मुस्लिम, लेकिन अधिक हैं सिंधके ।

**हाला ना कलिम सिंध मुस्लिम, वाद कलम अना हिन्द ॥ १८**
अब मैं कहत हूँ सिंधके मुसलमानोंको, पीछे कहूँगा मैं हिंदके मुसलमानोंको ।

॥ प्रकरण ॥ ३४ ॥ चौपाई ॥ ११६४ ॥

## सनंध सिन्धी भाषा

कारण अरवा अरसजी, चुआं[१] सिन्ध गालाए[२] ।
जिन कलमें रसूल जे, सचो आकीन आए ॥ १

मोमन वलहा[३] महंमद, जे सदाई जाण ।
थियो[४] सुहाग सभ केई, मेहेबूब अचो[५] पाण[६] ॥ २

चुआं कुजाडो[७] हिंद के, सांई बडो डिन्यो[८] सुहाग ।
आयो रब आलम जो, सभनी[९] उघड्यो भाग ॥ ३

अद्यूं[१०] रसूल पांहिजो,[११] कोठे आयो इमाम ।
आलम सभे उलटयो, अची[१२] करे सलाम ॥ ४

सिंधडी[१३] थियूं वधाइयूं, मीर पीर फकीर ।
पुन्यूं[१४] उमेदूं[१५] सभनी, खिल्ली[१६] थेयां सभ खीर ॥ ५

अची बिठो हिंद में, त्रूठो[१७] चोडे[१८] तबक ।
थेयूं सुहाग सिंधडी, जिन कलमें आकीन हक ॥ ६

ई अरब रसूलजी, वलही[१९] सिंध सुजाण[२०] ।
आकीने पण अगरी,[२१] इसक सिंधी खाण[२२] ॥ ७

आंऊं[२३] जोए इमाम जी, सिंधाणी सिरदार ।
डिन्यो धणी सभ पांहिजो, मूंहो[२४] हथ[२५] मुदार[२६] ॥ ८

आयो मिठडो[२७] मेहेबूब, आंऊं पण पिरन[२८] सांण[२९] ।
अची बिठासी हिंदमें, डिजां[३०] सिंधडी जांण ॥ ९

डिजां संडेहो[३१] सिंधडी, तूं घणूं[३२] वलही इमाम ।
सिंध हिंद माधा[३३] थेई, पोरया[३४] जेदां[३५] रूम स्याम ॥ १०

---

१. कहूँ । २. बोली । ३. वल्लभ । ४. हुआ । ५. आया । ६. स्वयं । ७. क्या । ८. दिया । ९. सब का । १०. पहले । ११. अपना । १२. आकर । १३. सिंध की । १४. पूर्ण हुई । १५. आशाएँ । १६. हँसी । १७. प्रसन्न । १८. चोदह लोक । १९. प्यारी । २०. पहचाना । २१. आगे । २२. खजाना । २३. मैं । २४. मेरे । २५. हांथ । २६. अख्तयार । २७. मीठा । २८. प्रीतम । २९. संग । ३०. दिया । ३१. सन्देश । ३२. बहुत । ३३. आगे । ३४. पहले । ३५. जितना ।

हांणें चुआं सांईजी, जे अची बिठो हिंद ।
ईसे मांधा अचीं करे, भागो दजाल जो कंध ॥ ११

दीन कियाऊं हिकडो,[१] भजी[२] सभे कुफरान ।
अरस बका केयाऊं जाहेर, हक बिठो पांण ॥ १२

आसमान जिमी जे विचमें, ब्यो[३] कोए न चाएं[४] हक ।
से हंद सभे उडी बियां, जे सेजदा कंदी[५] हुई खलक[६] ॥ १३

सचो सांई जडे आइयों, तडे[७] ब्यो पुजाए केर[८] ।
सुज[९] काएम उगी थ्यो जाहेर, तडे उडी[१०] बेई सभ अंधेर ॥ १४

धणी जमाने जो आईयो, तडे छुटी बेई तांणों[११] बांण ।
तित मोमन उथी ऊभा थेयां, दोजख थेई कुफरान ॥ १५

हित के[१२] के बुजरग आइया, जे नजीकी हक जा ।
ए बडा दीन दुनी में, रूहें चाईन पातसा ॥ १६

सेर[१३] सरे[१४] मके[१५] मुलक, आई तहां पुकार ।
रह्या ईमानसे सतजणां, ब्या काफरे मार केयां कुफार ॥ १७

सिंधमें अदियूं पांहिज्यूं, ए खबर डिजां तिन ।
असां[१६] गाल सुणी दंम ना रहे, जा हूंदी रूह मोमन ॥ १८

सुख बका अरस हिन जिमी, हिए गिनणजी बेर ।
पोए[१७] आलम जडे उलथ्यो, तडे लखे पुछे चोए केर ॥ १९

निसवती[१८] अची गडवी,[१९] पण ही सुख फजर कित ।
सुख बका अरस केर गिनी सगे, जे नूर जमाल बूठडो[२०] हित ॥ २०

हे सुख मोमन हमेसगी, अरस सभे गिनन ।
पण जे सुख अरसजा हिन जिमी, से ब्यारे न्हाए[२१] रूहन ॥ २१

हकें डिना सुख आलम में, त्रभेरका[२२] पांणके ।
से सुख गिडां रात निद्रमें, के भत चुआं सुख ए ॥ २२

---

१. एक । २. तोड़ कर । ३. दूसरा । ४. कहलाय । ५. करती हुई । ६. जनता । ७. तब । ८. कैसे । ९. सूर्य । १०. उड़ गई । ११. खेंचा-खेंच । १२. कितना । १३. श्रेष्ठ । १४. से । १५. मक्का देश । १६. हम । १७. फिर । १८. सम्बन्धी । १९. मिलकर । २०. पहुँचा । २१. नही है । २२. तीसरी बार ।

जीं सुख सोणमें गिनजे, तीं सुख गिडां रात ।
डींहें सुख गिनजे जागंदे, ही आए रेहेमानी दात ॥ २३
जे सुख डिना हकें रातजा, तेजो[१] पण[२] हित[३] लजत ।
अरसजा सुख पण हिंनमें, हित गिडां[४] कैं कोडीं भत ॥ २४
हे सिफत न जिभ चई सगे, सोई जांणे गिडां जिन ।
सुख कों चुआं हिन भूंअजा,[५] सुख डिना महें बका वतन ॥ २५
बरकत हिन रूहनजी, सुख गिडां सभनी मुलक ।
सिफत न थिए हिन सुखजी, हे जा पेराई सभ खलक ॥ २६
कागर[६] केयां[७] सभ पधरो,[८] खोल्या हकजा गंज[९] ।
सुख डिनाऊं सभ बका, जिनी रात डींहें[१०] हुआ डुख[११] रंज ॥ २७
कारें[१२] सदीमें क्यामत, लिखी मंझ कुरान ।
से सभ केयांऊं पधरा, जे गुझ हुँदा निसान ॥ २८
सदी बारें बी[१३] खलक, जिमी या आसमान ।
आखर थेई सभनी, समझे जा सुजान ॥ २९
काएम सदी तेरहीं, उथींदा[१४] निरवाण ।
महामत जोए[१५] इमामजी, जाहेर केयांऊं फुरमान ॥ ३०

॥ प्रकरण ॥ ३५ ॥ चौपाई ॥ १२२४ ॥

## सनंध ईसा इमामके कजाकी

इत *ईसा *मसी आए के, पेहेले किया सरंजाम ।
काटे आऊध दजालके, पीछे आए रसूल इमाम ॥ १
अब सब्दातीतकी सबदमें, सोभा वरनो न जाए ।
जो कछू कहूं सो सबदमें, बोलूं कौन जुबांए ॥ २
खूबी तखत ना कहे सकों, इन जुबां के जोर ।
जांनूं रात कुफरकी मिट गई, हुआ दिन जाहेर भोर ॥ ३

---

१. उसकी । २. भी । ३. यहाँ । ४. पाया । ५. जमीन के । ६. कागज । ७. किया । ८. स्पष्ट । ९. भेद । १०. दिन । ११. दुःख । १२. ग्यारहवीं । १३. दूसरी । १४. उठेंगे । १५. स्त्री ।

हिसाब नहीं उजास को, आगे ले खड़ा लुदंनी नूर ।
जाए ना बरन्यो इन जुबां, खड़ी अरस अरवा हजूर ॥ ४

आगे खड़ा *असराफील, और *जबराईल हुकम ।
जोस सब रूहन पर, वतन बका खसम ॥ ५

यों बैठे तखत इमाम, सिर छत्र कै चंवर ।
रसूल अली आए मिले, हुई बधाइयां घर घर ॥ ६

गुझथे मोमन अरस के, ताकी जाहेर हुई खबर ।
सो बैठे घेर इमाम को, हुई बधाइयां घर घर ॥ ७

कै औलिए कै अंबिए, कै फिरस्ते पैगंमर ।
सो सब आगे आए खड़े, हुई बधाइयां घर घर ॥ ८

आइयां किताबें जिन पर, बुजरग जो मेहेतर[1] ।
मुसलमान आए संग, हुई वधाइयां घर घर ॥ ९

मुसलमान कै भेषसों, पीर मरद फकर ।
पीछा कोई ना रेहेवही, हुई वधाइयां घर घर ॥ १०

जुदी जुदी जातें जहानमें, सब आवत हैं मिल कर ।
होत दीदार सबन को, हुई वधाइयां घर घर ॥ ११

दुनियां चारों खूंट की, सब आवत हैं एक दर ।
मंगल गावें सब कोई, हुई बधाईयां घर घर ॥ १२

जो कबूं कानों ना सुनी, जात बरन भेष धर ।
आवत सब उछरंग में, हुई वधाइयां घर घर ॥ १३

बिना हिसाबें आलम, बैराट सचराचर ।
दौड़त सब दीदार को, हुई वधाइयां घर घर ॥ १४

अरवा चौदे तबकों, जो कोई नारी नर ।
इन तखत इमाम के कदमों, हुई सारोंकी नजर ॥ १५

---

१. अगुआ ।

जब आया रब[1] आलमीन, तब आया सबों आकीन ।
और मजहब सब उड़ गए, एक खड़ा महंमद दीन ॥ १६

जात एक खसम की, और न कोई जात ।
एक खसम एक दुनियां, और उड़ गई दूजी बात ॥ १७

करने दीदार हक का, आए मिलो सब जहान ।
साफ हुए दिल सबन के, उड़ गई कुफरान ॥ १८

खांए पिऐं सब मिलके, बंदगी एक खसम ।
नाम न्यारे सब टल गए, हुई नई एक रसम ॥ १९

मेला अति बड़ा हुआ, पसर गई पेहेचान ।
सेहेदाने सबों घरों, चारों खूंटों बजे निसान ॥ २०

आए इमाम बाजे बजे, सो केते कहूं विचित्र ।
बिना हिसावें बाजहीं, हिसाब बिना बाजंत्र ॥ २१

कजा हुई तब जानिए, जब खुले माएने कुरान ।
तब आगे तें उड़ गई, जाने हती नहीं कुफरान ॥ २२

मगज माएने किन ना खुले, अवल बीच और अब ।
ए कजा तब होवही, जब खुले माएने सब ॥ २३

कछुक रखे रसूलें, माएने सब थें गुझ ।
सो इमाम मुख खोलाए के, करत काजीकी सुझ ॥ २४

गुझका गुझ और जो सुन्या, सो लिख्या न रसूले कुरान ।
जांने काजी जुबां केहेलाएके, कर देऊं काजीकी पेहेचान ॥ २५

याही वास्ते गुझ रख्या, ए बात दिलमें आन ।
कसनीसेती परखिए, काजी कसोटी कुरान ॥ २६

मोमनोसों असल का, महंमद सदा सनेह ।
सो आखरलों फुरमान, लिए खड़ा है एह ॥ २७

---

१. ब्रह्माण्ड का मालिक ।

महंमद विना मेहेदीअ की, करदे कोन पेहेचान ।
इन बिध माएने तो लिखे, जो निसवत अवलकी जांन ॥ २८

एही कलाम अल्लाह के, अपनी देत खबर ।
काजी ईसा मेहेदी महंमद, ए जुदे होंए क्यों कर ॥ २९

कहनी अकथ इमाम की, खसमें कथाई हम ।
इन कुरान के माएने, ना होवे विना खसम ॥ ३०

कलाम अल्लाके माएने, कबूं ना खुले किन ।
एही कलाम यों केहेवही, ना खुले मेहेदी बिन ॥ ३१

सो खसमें खोलाए मुझपें, यों कर किया हुकम ।
कहे तूं आगे रूहें फिरस्ते, जिन प्यारे हक कदम ॥ ३२

हरफ हरफ के माएने, तामें गुझ मता अनेक ।
खोल तूं आगे अरस रूहें, जो प्यारी मुझे विसेक ॥ ३३

अब तुम सुनियो मोमनो, सुनते होइयो श्रवन ।
पीछे विचार होए विचारियो, तब मगज पाइए वचन ॥ ३४

सनंधे सनंधे साखियां, तिन साखी साखी पाव ।
तिन पाव पाव के हरफ का, तुम लीजो दिल दे भाव ॥ ३५

नूर हक के अंग का, होवे एकै ठौर ।
इत थें दूजे पसरे, पर न होवे कहूं और ॥ ३६

ईसा महंमद मेहेदीअ की, जो लों ना पेहेचान तुम ।
तो लों तुमसें कजाए का, क्योंकर चलसी हुकम ॥ ३७

सुध नाहीं फिरस्तन की, ना पेहेचान रूहन ।
ना पेहेचान मुतकी की, ना पेहेचान मोमन ॥ ३८

सुध ना उतरने पुल सरात, ना सुध सरा तरीखत ।
ना पेहेचान हकीकत, ना पेहेचान हक मारफत ॥ ३९

पेहेचान आप ना नासूत की, ना पेहेचान मलकूत ।
ना सुध बका जबरूत की, ना सुध अरस लाहूत ॥ ४०

ए पेहेचान काहूं ना परी, क्या बेचून बेचगून ।
ना पेहेचान ला मकान की, ना बेसबी बेनिमून ॥ ४१

ना पेहेचान हवाए की, जामें चौदे तबक झूलत ।
जित से आए काफर, ना सुध तिन जुलमत ॥ ४२

ना सुध खासी गिरोह की, जो कहावत हैं बुजरक ।
जिन को हिदाएत हक की, तिन सोहोवतें पाइए हक ॥ ४३

ना सुध निराकार की, ना सुध निरगुन सुंन ।
ना सुध ब्रह्म क्यों व्यापक, कैसी सूरत निरंजन ॥ ४४

ना सुध ब्रह्म सृस्ट की, सुध सृस्ट ना ईस्वरी ।
हिंदू जो जीव सृस्ट के, तिन ए सुध ना परी ॥ ४५

बिजिया अभिनंदन बुधजी, और निहकलंक अवतार ।
वेदों कह्या आखर जमाने, एही है सिरदार ॥ ४६

इनमें लिखी आखर, सो सुध ना परी काहूं जन ।
पढ़ पढ़ गए कै वेद को, पर उनों पाया न क्यामत दिन ॥ ४७

करनी कजा चौदे तबक, देना सबों आकीन ।
कुरान माजजा नबी नबुअत[1], होए साबित हुए एक दीन ॥ ४८

कहां अरस कहां हक बका, कहां है नूर मकान ।
क्यों पाओ महंमद तीन सूरत, जो लों ना ए पेहेचान ॥ ४९

पेहेले माएने हक कलमें के, सुध हक इमाम रसूल ।
और कजा सब होएसी, पर बड़ी कजा ए मूल ॥ ५०

आसिक मासूक दो लिखे, दोऊ एक केहेलाए ।
दो कहें कुफर होत है, अब काजी क्या फुरमाए ॥ ५१

एक भी कहें ना बने, दो भी कहे न जाए ।
ना भेले ना जुदे कहे, अब काजी क्या फुरमाए ॥ ५२

---

१. पैगम्बरी ।

सिरदार न होवे एकला, ज्यों हुकम हाकिम संग ।
त्यों महंमद मेहेदी हक से, ए दोऊ एकै अंग ॥ ५३

जो कछू कहूं महंमद को, तामें अली जान ।
हुकम छोड़ हाकिम फिरया, सो हाकिम हुकम सुभान ॥ ५४

जाहेर कीजे माएने, काजी एह कजाए ।
पेहेचान आसिक मासूक की, भी नीके देऊं बताए ॥ ५५

जिन कोई कहे पट बीचमें, मासूक और आसिक ।
कबूं आसिक परदा ना करे, यों कह्या मासूक हक ॥ ५६

परदा आड़ा मासूक, कबूं आसिक करे ना कोए ।
आसिक मासूक तब कहिए, एक अंग जब होए ॥ ५७

ना न्यारा आसिक मासूक, ए तो एकै किया प्रवान ।
तो बीच कह्या क्यों फिरस्ता, जो जाए आवे दरम्यान ॥ ५८

कह्या हक सेहेरगसे नजीक, सब हैवान या खलक ।
तो रसूल जुदागी क्यों हुई, जो बीच भेज्या जबराईल हक ॥ ५९

जो लों ए सक ना मिटे, तो लों होए ना पेहेचान हक ।
ए भी कीजे जाहेर, सब मोमन करूं बेसक ॥ ६०

ए कसूरत दो बीच में, ए जो फिरे दरम्यान ।
तिनको कहिए फिरस्ता, नूर जोस अंग का जान ॥ ६१

रसूल आया हुकमे, तब नाम धराया *गैन ।
हुकम बजाए पीछा फिरया, तब सोई *ऐन का *ऐन ॥ ६२

सब सकें दूर कीजिए, साफ कीजे समझाए ।
मासूक क्यों महंमद कह्या, क्यों होए आसक अल्लाह ॥ ६३

तो कह्या मासूक महंमद, आसिक अपना नाम ।
बांध्या आप हुकम का, केहेवत यूं कलाम ॥ ६४

वली पैगंमर फिरस्ते, आए मिले सब संग ।
ज्यों गुन इंद्री जुदे जुदे, उठ खड़े सब अंग ॥ ६५

जब ईसा मेहेदी महंमद मिले, तब मिले सब आए ।
फेर पीछा क्या देखही, परदा दिया उड़ाए ।। ६६

हक जो नूर के पार हैं, तिन खुद खोले द्वार ।
बका द्वार तब पाइया, जब खोल देखाया पार ।। ६७

पेहेचान मेहेदी महंमद, और ईसा अली मोमन ।
ए कजा दिल भीतर, निसां हुई हम सबन ।। ६८

अब कहो क्यों फिरस्ते, क्यों फना आखरत ।
भिस्त क्यों कर होएसी, क्यों होसी क्यामत ।। ६९

ए सबे समझाए के, पाक करो हम दिल ।
पीछे बात वतन की, हम पूछसी मोमन मिल ।। ७०

प्रकरण ।। ३६ ।। चौपाई ।। १२६४ ।।

## सनंध फिरस्ते फना आखरत भिस्त क्यामत की

अब कहूं बिध नूरियों, जो जहां जिन ठौर ।
ए माएने इमाम बिना, कोई करे जो होवे और ।। १

पांच फिरस्ते नूर से, खड़े मिने हुकम ।
पाउ पलमें पैदा करे, ऐसे कै इंड आलम ।। २

यामें एक रसूल संग, ए जो जबराईल ।
सो नूर से आवत रूहन पर, हकें भेज्या रोसन वकील ।। ३

ए जो ले खड़े खेल को, और कहे जो चार ।
ए असल कतरा नूर का, जिन को एह बिस्तार ।। ४

यामें एक फिरस्ता, तिन से उपजे सब ।
सरत आखर असराफील, नूर से आया अब ।। ५

अजाजील असराफील, इन दोऊकी असल एक ।
पैदा अजाजील से, सो भी कहूं विवेक ।। ६

कतरे से पैदा हुआ, इन से उपजे दोए ।
तामें एक सबों को पालही, एक करत कबज रूह सोए ।। ७

ए दोऊ जो पैदा हुए, सो ले खड़े सब छल ।
नूर की नजरों चढ़े, तिनों आया सबों बल ॥ ८

यों चारो पैदा हुए, खड़े रहे जिन खातर ।
सोई काम सोई जाएगा, ए भी दोऊ देऊं खबर ॥ ९

एक पैदा कर वजूद खेलावही, दूजा पाले तिन ।
तीसरा किन किन लेवही, चौथा उड़ावे सबन ॥ १०

यों नूर नजर चारों पर, इन बिध हुई पैदास ।
फेर कहूं बेवरा इन का, ए जो खेलें खेल लिबास ॥ ११

या बिध उपजे नूर से, इन से सब विस्तार ।
थिर चर चौदे तबकों, हुआ खेल कुफार ॥ १२

अजाजील को गफलतें, हुकमें दिया उलटाए ।
ले तखत बैठाया छल के, सब फरेब जुगत बनाए ॥ १३

अजाजील से फिरस्ते, उपजे विना हिसाब ।
सो दम सबोंमें इनका, ए जो खेलें मिने ख्वाब ॥ १४

परदा इन सिरदार पर, ए जो कही जुलमत ।
पीछे हटाया हुकमें, ताए कुफर सेवें कर सत ॥ १५

ले बैंठा हुकमें साहेबी, जाकी असल कतरा नूर ।
सो सरमाए के पीछा हटचा, अपना देख अंकूर ॥ १६

इनसेती जो उपजे, तिन सिर दिया भार ।
आप तिन से न्यारा रख्या, ए दोए भए सिरदार ॥ १७

एक दाना पानी घास सबको, मेकाईल बुध बल ।
ठौर बैंठा आप देवही, कर पसारा अकल ॥ १८

जोर जालम अजराईल, बैठा छलमें हुकम ले ।
फिरत द्वाही इन की, तले काफर खेलत जे ॥ १९

फरामोस सरूप अजराईल, मौत हुकम सिर सबन ।
जिन वजूद धरचा खेलमें, आए लेत कौल पर तिन ॥ २०

पाले मेकाईल इन को, रूह कबज करे अजराईल ।
ए खेल समेत फिरस्ते, आखर उड़ावे असराफील ॥ २१

ला हवासे तहतसरा[1] लग, ए सब खेलमें पातसाह एक ।
कहे या बिन और कोई नहीं, एही है एक नेक ॥ २२

और जो इनके तले, ठकुराइयां कहावत ।
देखाए दुनी को साहेबी, अपने तले ल्यावत ॥ २३

एक दूजे के गुमास्ते,[2] वजीर वकील दिवान ।
एक फिरस्ता सबका खावंद, यों खेल बन्या सब जहान ॥ २४

यामें बुजरग आलम आरफ[3], तिन करियां कै किताब ।
इन सिर हक एक मलकूत, चौदे तबकों लेत हिसाब ॥ २५

ब्रह्मा सिव या देव जन, कै दुनियां तिन सेवक ।
सो कहें ए सुख देवही, खैंचे अपनी तरफ खलक ॥ २६

करे पातसाही खेल में, ऐसी कर बंदो बस्त ।
देत काफरों दोजख, बंदों कदमों चार भिस्त ॥ २७

जिन हक बका अरस न पाइया, तिन खुदा हवा या मलकूत ।
सो कटे पुल सरात में, जिन पकड़े वजूद नासूत ॥ २८

जो ले न सके भिस्त कदमों, तिन अरवाहों देत दोजख ।
और हिसाब सुख दुख हैं कै, ए खेल कह्यो चौदे तबक ॥ २९

ए जो खेल पैदा की सब कहीं, इनों सिर अरस मलकूत ।
ला मकान जिमी तहतसरा, ए सब फना तले जबरूत ॥ ३०

ए जो तले ला हवा के, जो खेल कह्या फना ।
इनों सुध ना जबरूत लाहूत, ए बका वह सुपना ॥ ३१

लोक जिमी आसमान के, सुरैया ना उलंघत ।
कह्या चौदे तबक का पलना, बीच हवा के झूलत ॥ ३२

१. पाताल २. कर्मचारी ३. विद्वान

चार लाख कौम *आजूज *माजूज, ए जो आवें जांए रात दिन ।
गिनती कौल पूरा कर, आखर एही काल सबन ॥ ३३
जवरूत लाहूत अरस कहे, देवें रूह अल्ला हकीकत ।
ए वका मता दोऊ अरसोंका, सो महंमदपें मारफत ॥ ३४
रुहें अरस अजीम की, फौज असराफील फिरस्तन ।
दोऊ गिरो उतरी दोऊ अरसों से, खेल फिरस्तोंका देखन ॥ ३५
पेहेले कही सब खेल की, और कहे देखनहार ।
रूहें फिरस्ते खेल देखहीं, पकड़ ख्वाब आकार ॥ ३६
अजाजील खेल खावंद, ए भी न्यारा रह्या सबन ।
ए खेल कुफार इन भांत का, तो ऐसा किया इन ॥ ३७
ऐसी छोड़ साहेबी अजाजील, पीठ दई आप बचाए ।
ए खेल ऐसा कुफारका, बिना काजी कौन बताए ॥ ३८
मोमन को देखलावने, किया खेल कुफार ।
अब जो अरस रूहें होवहीं, सो क्यों चलें इन लार[१] ॥ ३९
खेल कुफार इन भांत का, सब खेलें हक बका भूल ।
इनमें फुरमान ल्याइया, मेरे मासूक का रसूल ॥ ४०
आया रसूल पुकारता, राह सीधी बका वतन ।
ए माएने कौन लेवही, बिना अरस रूह मोमन ॥ ४१
हम उतरे लैलत कदरसें, माहें उरझे खेल कुफार ।
दसो दिस हम ढूंढ़िया, पर काहूं न पाइए पार ॥ ४२
रसूलें हम वास्ते, मुनारे मुल्लां चढ़ाए ।
जिन कोई मोमन भूलही, ठौर ठौर पुकार कराए ॥ ४३
कोई भूली राह बतावही, ताए बड़ा सवाब[२] ।
ढ़ढेरा[३] फिराइया, कर कर एह जवाब ॥ ४४

---

१. लाइन । २. पुण्य । ३. घोषणा ।

हम ढूंढ़ ढूंढ़ कुफारमें, गए जो तिनसें भूल ।
ऐसे मिने खसम के, पाए दसखत हाथ रसूल ॥ ४५
इन फुरमान में इसारतें, लिखियां जो खसम ।
निसांन अरस अजीम के, पाए हमारे हम ॥ ४६
हम ढूंढ़ें हक वतन, और रसूल ढूंढ़ें हम ।
यों करते सब आए मिले, मोमन रसूल खसम ॥ ४७
सुनो मोमनों बेवरा, ए जो आपन देख्या खेल ।
जो तीनों देखे आलम, उतर के माहें लैल[1] ॥ ४८
हकें बचाए कोहतूर तले, तोफान हूद मेहेतर ।
दूसरे तोफान नूह के, बचाए किस्ती पर ॥ ४९
साल हजार पीछे रसूल के, माहें उतरे लैलत कदर ।
हुआ अरस बका दिन जाहेर, सदी अग्यारहीं के फजर ॥ ५०
एही फरदा रोज क्यामत, जो कही हजरत ।
सोए हुए सब जाहेर, जिन को दुनी ढूंढ़त ॥ ५१
सीधी राह मोमन की, अब लों न पाई किन ।
पैगंमर ना फिरस्ते, ना अहंमद मेहेदी बिन ॥ ५२
खेल फिरस्ते अरस बका, हक मता पाया हम सब ।
आखर भिस्त क्यामत, ए कजा कहिए अब ॥ ५३
ए कहूं फना पेहेले जिन बिध, होसी इन आखरत ।
ज्यों पावें सुख भिस्तमें, उठ के रूह क्यामत ॥ ५४
ए कजा हुई दुनियां मिने, खोलें हकीकत मारफत ।
तिन मता बका अरस का, जाहेर करी न्यामत ॥ ५५
बका सूरत पर बंदगी, करी इमामें इमामत[2] ।
दोऊ अरस बताए दोऊ गिरोह को, करी महंमद सिफाएत[3] ॥ ५६

१. रात । २. नेतापन । ३. (शफ़ाअत) मोक्ष की सुफ़ारिश ।

ए नूर कजा का या बिध, जिन टाली फेर अंधेर ।
जो न राखूं ले हुकम, तो भोर होत केती बेर ॥ ५७

क्यामत काजी मोमन, पेहेले होसी जब ।
फैलसी नूर आलममें, काजी कजा का सब ॥ ५८

ए किरने कौन पकरे, इन नूरै के आवाज ।
करत ए सब खसम, अरस अरवाहों काज ॥ ५९

काजी कजा के नूर की, बजसी कै करनाल[1] ।
नूर अकल असराफील, बजाए सूर रसाल ॥ ६०

कै करोर करनाइयां,[2] कै करोर निसांनों घोर ।
यों गरज्या आलम में, कह्या न जाए सोर ॥ ६१

याही सबद के सोर से, पेहेले उड़सी इंड अंधेर ।
कुदरत बुरका गलफत, उड़ाया फिरस्तों फेर ॥ ६२

आकास जिमी जड़ मूल से, पहाड़ आग जल वाए ।
फिरया कतरा नूर का, और दिया सब उड़ाए ॥ ६३

इन घाव के पड़घाव से, उड़सी चौदे तबक ।
और आवाज के नूर से, बैठे भिस्त में कर हक ॥ ६४

पेहेले दिए सब उड़ाए के, चौदे तबक दम जे ।
काजी कजा के नूर से, भिस्त में बैठे नूर ले ॥ ६५

क्यों बरनों सुख भिस्त के, हो बैठे नूरी नेहेचल ।
रेहेमत इन रेहेमान की, रच दिया और मंडल ॥ ६६

अपने अपने ताएफें[3], अरवाहें मिली सब धाए ।
महंमद मेहेदी की मेहेर से, भिस्त में बैठे आए ॥ ६७

पेहेले सब फनाकर, उठाए लिए तलखिन ।
साफ किए सब नूरने, यों भिस्त भई वतन ॥ ६८

---

१. भोंपू । २. तुरूंही ।३. जमातें, दल ।

निमख में नूर नजरों, उठे अंग उजास ।
बरस्या नूर सबन में, काएम सुख में बास ॥ ६९

ए काएम नूर नजरकी, सिफत या जुबां कही न जाए ।
पाक हुए सब खेलहीं, जरा खतरा न पाइए ताए ॥ ७०

खाना पीना दिल चाहता, सब बिध का करार ।
नूर सरूपें होए के, भिस्त में बसें नर नार ॥ ७१

रूप रंग सब नूर के, गुन अंग इंद्री नूर ।
बस्तर भूखन नूर सबे, नूरै दिए अंकूर ॥ ७२

मेवा मिठाई सेज सुख, सकल बिध भर पूर ।
इसक सबों में अति बड़ा, दिल हिरदें नूर हजूर ॥ ७३

या भिस्तमें इन सुख को, केतो कहूं विस्तार ।
दिल चाह्या सब पावहीं, सब बिध सुख करार ॥ ७४

लागी बरसा नूर की, चौदे तबक चौफेर ।
अंतर मांहें बाहेर, कहूं पैठ न सके अंधेर ॥ ७५

चौदे तबक नूरने, फेर किया मंडल ।
खेल चाल दिल चाहती, नूर अरवा नूर बल ॥ ७६

सुंन चाही तिन सुंन दई, भिस्त चाही तिन भिस्त ।
नूर चाह्या तिन नूर दिया, यूं पाई अपनी किस्त ॥ ७७

मात हुई मात चाहते, बुध बाबा आलम ।
मन चाह्या सबको दिया, अरस रूहों के खसम ॥ ७८

मोमन रूहें कदमों लिए, फिरस्ते नूर समाए ।
तीसरे सारे भिस्त में, सो बैठे नूर की छाए ॥ ७९

भिस्त भी बरकत मोमनों, दई दुनियां को अविनास ।
पर सुख बड़े मोमन के, लिए कदमों अपने पास ॥ ८०

पैदास कतरे नूर की, ए जो हुई चल विचल ।
फेर समेत समानी नूरमें, सो नूर सदा नेहेचल ॥ ८१

असराफील बुध नूर की, ए जो आई काजी हजूर ।
सो नूरमें जाए झिल मिली, ऐसी हुई कजा के नूर ॥ ८२

उड़ाया कलरा नूर का, सो जाए रह्या मिने नूर ।
फेर नजर करी भिस्त पर, हुई रोसन भर पूर ॥ ८३

कजा हुई सबन की, पर मोमन बड़े अंकूर ।
इन को खेल देखाए के, लिए कदमों अपने हजूर ॥ ८४

यूं कजा करी सबन की, बांट दिए सब ठौर ।
ए सुख इन काजी बिना, कोई देवे जो होवे और ॥ ८५

काजी कजा करके, ले उठसी रूह मोमन ।
पेहेले ए क्यामत होएसी, पीछे अरवाहें सबन ॥ ८६

माएने इन कुरान के, या जाहेर या बातन ।
दई सबोंको हैयाती, खोलके इलम रोसन ॥ ८७

कुदरत की सारी कहो, बुरका जो गफलत ।
दोजख भिस्त फिरस्ते, आखर कही क्यामत ॥ ८८

ए सबद तो लों कहे, जो लों आए जुबांए ।
सबद न अब आगे चले, आवे नहीं कजाए ॥ ८९

आखर हुआ इन जिमी, इन जिमी आया कागद ।
जिन कोई हिसबो[1] खेलमें, याको ना लगे सबद ॥ ९०

इन जिमीमें महंमद, होए आया कासद ।
जिन कोई हिसबो खेलमें, याको ना लगे सबद ॥ ९१

ल्याए ल्याए रूहों पिलावही, इसक प्याले मंद ।
जिन कोई हिसबो खेल में, याको ना लगे सबद ॥ ९२

करी कजा चौदे तबकों, उड़ाए दई सब हद ।
जिन कोई हिसबो खेल में, याको ना लगे सबद ॥ ९३

---

१. मूल्यांकन ।

नूर अकल असराफील, ले पोहोंच्या पार बेहद ।
जिन कोई हिसबो खेल में, याको ना लगे सबद ॥ ९४

नूर इन आखर का, और रोसन काजी सुभान ।
क्योंकर इन जुबां कहूं, रसूल नूर फुरमान ॥ ९५

काजी नूर सुहागनियों, इसक प्याला ले ।
क्यों बरनों मैं इन जुबां, ए जो भर भर सब को दे ॥ ९६

नूर इसक इन मद का, ए जो चढ़सी सबन ।
ताए लेसी असल् नूर में, क्यों करे जुबां बरनन ॥ ९७

अरस रूहें मोमन, ए सब रूहें सुहागिन ।
क्यों बरनू मैं इसक इन का, ए जो रूह अल्ला के तन ॥ ९८

ए झूठी जिमी जो ख्वाब की, खाकी बुत सब रद ।
ताए भी मद ऐसा चढ़या, जो लगे न काहू को सबद ॥ ९९

लिखे हरफ सारे कहे, ए जो लिखे हरफ नाहें ।
अब सोए करूं मैं जाहेर, जो रसूल के दिल माहें ॥१००

ए जो रसूलें कानों सुने, पर लिखे नहीं फुरमान ।
सो गुझ मोमनों को देऊंगी, अरस अजीम के निसान ॥१०१

क्यों वतन क्यों खसम, कौन ठौर क्यों नूर ।
ऐ सेहेरग से देखे नजीक, जो मोमन सदा हजूर ॥१०२

दोऊ अरस बका जाहेर किए, जबरूत नूर जलाल ।
हादी रूहें लाहूत में, हक सूरत नूर जमाल ॥१०३

अब कहूं हुकम की, जिन से सब उतपत ।
खेल फिरस्ते हुकमें हुए, हुकमें हुई क्यामत ॥१०४

हुकमें झूठे सांच कर, ताए सुख दिए नेहेचल ।
अब हुकम कजामें न आवही, पर तो भी कहूं नेक बल ॥१०५

॥ प्रकरण ॥ ३७ ॥ चौपाई ॥ १४०० ॥

## सनंध हुकम की

हुकमें परदा उड़ाइया, कर देऊं सब पेहेचान ।
तुमसों गोसे बैठ के, देऊंगी सब निसान ॥ १

हुकमें बात वतन की, जो है गुझ खसम ।
गोसे तुम को कहूंगी, जो हुआ मुझे हुकम ॥ २

निसान बका हक अरसके, सो सब देऊंगी तुम ।
पर पेहेले नेक ए कहूं, जो तुम वास्ते हुआ हुकम ॥ ३

कहूं हुकम हक के, जो बैठे कदमों मोमन ।
सो हमेसा अरस में, लाए मेहेर बड़ी बातन ॥ ४

खसमें हमारे दिल पर, ऐसे किया हुकम ।
तो यों दिलमें उपज्या, मागें खेल खसम ॥ ५

तब हम मोमन मिल के, खेल माग्या हादी हकपें ।
तब हुकमें पेहेले पैदा किया, हमारी नजर हुई खेल में ॥ ६

तब सरूप हुकम के, खेल किया मिने पल ।
हाथ फुरमान ले आइया, रसूल हमारा वल ॥ ७

हम भी देखें खेल को, हुकमें मोमन मिल ।
ढूंढ़ें अपने खसम को, पेड़ हुकमें फिराई कल ॥ ८

ए खेल सब हुकमें हुआ, सब खेलें हुकम माहें ।
हुकमें सब होसी फना, हुकम बिना कछू नाहें ॥ ९

एक हुकमें बुजरग, दूजे न खाक समान ।
बेसुध कर सब हुकमें, खेलावत है जहान ॥ १०

हुकमें जड़ चेतन करे, करे चेतन को जड़ ।
हुकम सेती हारिए, हुकमें मारे पकड़ ॥ ११

एक चलाए पाउंसों, एक उड़ाए पर ।
पेटें हुकम चलावही, एक खड़े रखे जड़ कर ॥ १२

कै दीन फिरके मजहब, खेल फिरस्ते दम ।
ए खेल किया हुकमें देखने, सब पर एक हुकम ॥ १३

भेष भाषा जातें जुदियां, ना तो सोई दम सोई देह ।
खैंचा खैंच कर हुकमें, खेल बनाया एह ॥ १४

एकों को हुकम हुआ, तिन लई राह मुस्लिम ।
पीछे जुदी जुदी जिनसों, ए सब खेलें खेल हुकम ॥ १५

हुकमें करही बंदगी, हुकमें इसक ले ।
हुकमें चोरी कर ल्यावही, हुकमें जाए सिर दे ॥ १६

चले रहे सब हुकमें, बैठे सोवे हुकम ।
बिना हुकम रूह सबके, मुख ना निकसे दम ॥ १७

करम काल सब हुकमें, बांधे खोले हुकम ।
भिस्त दोजख हुकमें, हुकमें देवे कदम ॥ १८

दाना दिवाना हुकमें, हुकमें दोस निरदोस ।
दूर नजीक करे हुकमें, हुकमें अपना जोस ॥ १९

हुकमें जोग जो लेवही, हुकमें देवे भोग ।
हुकमें रोग जो आवही, हुकमें देवे सोग ॥ २०

लेवे देवे सब हुकमें, नेकी बदी हुकम ।
मरे मारे सब हुकमें, या चीजें या दम ॥ २१

दुसमन हुकमें सजन, सजन हुकमें बैर ।
खूंनी मेहेर सीधा उलटा, हुकमें मीठा जेहेर ॥ २२

जिमी हद न छोड़ही, ना हद छोड़े जल ।
रुत रंग सब हुकमें, होवे चल विचल ॥ २३

वाओ बादल बीज गाजही, जिमी जल न समाए ।
पलमें हुकम यों करे, पलमें देवे उड़ाए ॥ २४

जल को थल उलटावही, थल को उलटावे जल ।
कायर सूरे खाली भरे, सब में हुकम बल ॥ २५

पात ना रेहेवे बनमें, हुकमे फल फूल बास ।
हुकमें उजाला अंधेर, हुकमें अंधेर उजास ॥ २६

ताता सीरा[1] फिरे हुकमे, ससी सूर नखत्र ।
इन जुबां बल हुकम के, केते कहूं विचित्र ॥ २७

सब पर हुकम हक का, कहे पुकार रसूल ।
जल थल चौदे तबकों, कोई जरा ना हुकमें भूल ॥ २८

कै कोट इंड ऐसे पलमें, करके पैदा उड़ाए ।
बल जरा इन हुकम का, इन जुबां कह्यो न जाए ॥ २९

सरूप रसूल हुकम, आगे खड़ा खसम ।
हुकमें देखाया रूहन को, बैठे देखें तले कदम ॥ ३०

इन हुकम की इसारतें, कै फिरस्ते उपजत ।
कै समावें सुंन में, कै डारे गफलत ॥ ३१

जिन कहो अजाजील को, इनने फेरया हुकम ।
इन हुकम की इसारतें, हादी वास्ते करी खसम ॥ ३२

अजाजील भूल्या नहीं, पर हुकमे भुलाया ताए ।
ओ तो सिर ले हुकम, खड़ा है एक पाए ॥ ३३

तो पीछा फेरे हुकम, जो कोई दूसरा होए ।
हुकम सबों समझावही, हुकमें न समझे कोए ॥ ३४

नूरी फिरस्ता हुकमें, ले डारचा उलटाए ।
ए मोमनों खातर हुकम, कै बिध खेल बनाए ॥ ३५

पाउं ना उठे हुकम विना, मुख ना निकसे दम ।
दिल चितवन भी ना करे, फिरस्ता विना हुकम ॥ ३६

तले खड़ा हुकम के, नाम जो नूरी जिन ।
माएने जाहेर ना किए, हुकमें एते दिन ॥ ३७

---

१. ठण्डा ।

बुरका डाल अजाजील पर, हुकमें किया रद्द ।
सेजदा कराया आदम पर, जित मेहेदी मोमन महंमद ॥ ३८

बेसुध हुकमें करके, खेल कराया छल ।
ताए जो सेजदा करावही, पर हुकम बस अकल ॥ ३९

फिरस्ता कतरे नूर से, लानत दीनी ताए ।
सो मोमन जाहेर करके, हुकमें सेजदा कराए ॥ ४०

जिन आदंम में महंमद, हुकमें आए मोमन ।
अजाजील अब हुकमें, पकड़ कदम हुआ रोसन ॥ ४१

हुकमें आवे लुदंनी, हुकमें आवे किताब ।
सोई खोले हक हुकमें, जिन सिर दिया खिताब ॥ ४२

नफा नुकसान सब हुकमें, हुकमें भिस्त दोजख ।
झूठा सांच करे हुकमें, हुकम करे सबों हक ॥ ४३

हुकमें मोमनों वास्ते, कै चीजें करी पैदाए ।
अरस अरवाहें पेहेचान, कै बिध हुकम कराए ॥ ४४

हुकमें मुसाफ इसारतें, करे मोमनों पेहेचान ।
खोले बातून मोमन हुकमें, याद आवे अरस निसान ॥ ४५

ए खेल किया हुकमें, हुकमें आए रसूल ।
हुकमें मोमन आए के, गए खेलमें भूल ॥ ४६

आप हुकम आया इत, चलाया हुकम ।
हुकमें छलतें छोड़ाए के, जाहेर किए खोल इलम ॥ ४७

रूहों को खेल देखाइया, बिध बिध हुकम कर ।
आप बांध्या हुकम का, होए रसूल आया आखर ॥ ४८

बांधे आप हुकम के, काजी हुए इत आए ।
कौल किया मोमनोंसों, सो पाल्या खेल देखाए ॥ ४९

हुकमें सब जुदे जुदे, खेल किए विवेक ।
मोमनों को देखाए के, आखर किया दीन एक ॥ ५०

अबलों बेसुध हुकमें, खेली सकल जहान ।
तिनों सुध दई हुकमें, यों खुली इसारतें फुरमान ।। ५१

अजाजील दम सबन में, लगी लानत[1] दम तिन ।
लोक जाने लगी अजाजील को, वह तो हुकमें कही सबन ।। ५२

पीछे हुकमें जाहेर करी, अबलीस सब दिलों पातसाए ।
हुआ सबों का दुसमन, ना करने देत सेजदाए ।। ५३

एही फौज दुनी अजाजील की, याही अकलें लगी लानत ।
पेहेचान हुई सब हुकमें, पीछे छूटी बखत क्यामत ।। ५४

असल आदम रसूल, कह्या सेजदा इन पर ।
चीन्हा न नबीको लानती, तो दुनी रही सेजदे बिगर ।। ५५

हुकमें चिन्हाया रसूल, तब आया सबों आकीन ।
किया सबोंने सेजदा, जब हुकमें हुआ एक दीन ।। ५६

लानत उतरी अजाजील से, सब काएम हुए तले नूर ।
दई हैयाती सबों हुकमें, ऊग्या रोसन अरस बका सूर ।। ५७

हुकमें हम आए इत, ले हुकमें हक इलम ।
मैं खासा मोहोल खसम का, कर हुकम केहेलाया तुम ।। ५८

जाहेर किया हुकमें, हुकमें किया हक ।
हुकमें लीन्हीं अंदर, जुबां रही इत थक ।। ५९

हुकम न आवे सबद में, तो भी कह्या नेक सोए ।
अब केहेनी जुबां बदले, सो मेहेदी बिना न होए ।। ६०

अब लेने अरस अजीम में, बोलसी जुबां इमाम ।
सो तो अपने आप को, केहेने हैं कलाम ।। ६१

अब बातें अंदर की, पूछसी सब मोमन ।
जाहेर देऊं निसानियां, ज्यों देखो अरस वतन ।। ६२

---

१. धिक्कार ।

समझो एक इसारतें, ऐसा कर दें हम ।
तब फेर इतका पूछना, रहे उमेदां तुम ।। ६३

जब समझे तब देखिया, याद जो आवे दिल ।
बीच खिलवत बातें हकपें, जो माग्या तुम मिल ।। ६४

याद आए आंखां खुले, तब तुमें रहे उमेद ।
ज्यों मकसूद सब होवही, अब कहूं तिन भेद ।। ६५

ए नेक रखी रात खैंच के, सो भी वास्ते तुम ।
ना तो लेते अंदर, केती बेर है हम ।। ६६

।। प्रकरण ।। ३८ ।। चौपाई ।। १४६६ ।।

## सनंध नूर *नूर तजल्लाकी

कह्या जाहेर रसूलें, मैं हरफ सुने हैं कान ।
सो आए केहेसी इमाम, मैं लिखे नहीं फुरमान ।। १

जो हरफ जुबां चढ़े नहीं, सो क्यों चढ़े कुरान ।
और जुबां ले आवसी, इमाम एही पेहेचान ।। २

बोलें न मेहेदी एक जुबां, जुबां बोलें कै लाख ।
आगे बिन जुबां बोलसी, बिन अंगों बिन भाख ।। ३

खेलमें मेहेदी तोतला, जुबां कजा ए ठौर ।
आगे तो नूर तजल्ला, तहां जुबां बोल है और ।। ४

खातर मोमन रसूलें, कै निसान लिखे प्यार कर ।
सो मैं ठौर ठौर हक बका, कर देऊं सब खबर ।। ५

इमामें मोहें सब दियो, राख्यो न कछुए बीच ।
गुन अंग सोभा देअ के, आप हुए नेहेचित ।। ६

अब केहेनी आई असल की, नैन जुबां असल ।
बातें करूं असलू, असल की अकल ।। ७

अब कहूं अरस रूहन को, अरस हक खिलवत बात ।
गोसे अपन रूहोंसों, बैठ करूं अपन्यात ।। ८

हक बातें तो इत सुनसी, पर हम जो करत गुजरान ।
पेहेले कहूं आगे नूर तजल्ला, जो ले खड़ा हकफुरमान ॥ ९

आगे नूर फुरमान के, खड़ा हक नूर का नूर ।
जिन से पैदा मलाएक, चुआ कतरा जिनों अंकूर ॥ १०

अब नेक कहूं इन नूर की, इन नूर से पैदा नूर ।
पेहेले कहूं तिन नूर की, जित रूहें खेली माहें जहूर[1] ॥ ११

अब कहूं रास जहूर की, इन खेल से न्यारा इंड ।
सो नूर नजर ऐसा हुआ, नूर सारा ब्रह्मांड ॥ १२

इत खेलत स्याम गोपिआं, ए जो किया अरस रूहों विलास ।
है ना कोई दूसरा, जो खेले मेहेबूब विना रास ॥ १३

ए हमारी अरस न्यामतें, याके हमपें सहूर ।
कह्या कतरा नूर का, चुआ है अंकूर ॥ १४

इत सबद न पोहोंचे दुनी का, नेक इन की देऊं खबर ।
काएम हुआ साएत में, जो आया नूर नजर ॥ १५

ए जो बात बका अरस नूर की, सो केहेनी या जिमी माहें ।
क्यों सुनसी दुनी इन कानों, जो कबहूं ना सुनी क्यांहें ॥ १६

कोट हिस्से एक हरफ के, हिसाब किया मोहीं कर ।
एक हिस्सा न पोहोंच्या इन जिमीं लग, ए मैं देख्या दिल धर ॥ १७

एक जरा इन जिमी का, ताके नूर आगे सूर कोट ।
सो सूर न आवे नजरों, इन जिमी जरे की ओट ॥ १८

सोने जवेर के बन कहूं, तो ए सब झूठी बस्त ।
सोभा जो नूर बन की, सो कही न जाए मुख हस्त । १९

जो कहूं रोसनी एक पात की, सो भी कही न जाए ।
कोट चाँद जो सूर कहूं, तो एक पातै तले ढंपाए ॥ २०

---

१. प्रकटीकरण ।

नूर ससी बन पसू पंखी, जिमी नूरै रेजा रेज ।
थिर चर नूर सबों मिने, सब चीजें नूर तेज ॥ २१

वस्तर भूखन इन जिमी के, सो याही जिमी माफक ।
जिन जिमी जरे की रोसनी, कही न जाए रंचक ॥ २२

सुख जो अरस अरवाहोंके, जो लिए जिमी इन ।
सो तुम देखो सहूर कर, कहे न जाए मुख किन ॥ २३

जिन जिमी की ए रोसनी, ऐसे बाग के दरखत ।
तो इत सुख ऐसे ही चाहिए, अरस बका की न्यामत ॥ २४

ए जिमी बाग पांचो चीजें, ए जो पैदा किए नूर ।
एक पल लेहेरें काएम किए, नूर का ऐसा जहूर ॥ २५

इत खेलत रूहें अरस की, जो स्यामें उतारी किस्ती पर ।
सो रूहें पोहोंची इन बाग में, और तोफाने डूबे काफर ॥ २६

ए नूह तोफान कह्या रसूलें, और गुझ रह्या रूहों रोसन ।
किस्ती पार उतारी सबों सुनी, सुध ना परी पोहोंची बाग किन ॥ २७

बात बड़ी इन नूर की, ए तो नेक कह्यो प्रकास ।
इत खेलें रूहें हकसों, बिध बिध के विलास ॥ २८

कह्या जाए ना नूर इन बाग जिमी, हुआ सब रोसन भरपूर ।
जिन ऐसा रोसन किया पलमें, सिफत क्यों कहूं असल नूर ॥ २९

हद सबद दुनीमें रह्या, पोहोंच्या नहीं नूर रास ॥
तो क्यों पोहोंचे असल नूर को, जिनकी ए पैदास ॥ ३०

बड़ी भिस्त भी याही से, जो कही कजा के मांहें ।
तिन भिस्त के नूर की, बात बड़ी है तांहें ॥ ३१

नूर रास भी बरन्यो न गयो, तो भिस्त बरनन क्यों होए ।
बोहोत बड़ी तफावत, रास भिस्त इन दोए ॥ ३२

सोभा भिस्त जिमीअ की, और सोभा भिस्त दरखत ।
पुरों पुरों नूरी बसें, ए क्यों होए खूबी सिफत ॥ ३३

सोभा भिस्त मोहोल मंदिरों, और सोभा नूरियों अंग ।
नूर असल अंग भेदिया, ए नाहीं नूर तरंग ॥ ३४

निबेरा भिस्त रास का, कहूं पावने रूहों हिसाब ।
भिस्त को सुख है जागते, रास को सुख है ख्वाब ॥ ३५

रास भिस्त या जो कछू, ए सब पैदा असल नूर ।
तिन असल नूर की क्यों कहूं, जो द्वार आगूं हजूर ॥ ३६

ए जो नूर मकान आगूं अरस के, नूर बका असल ।
ए रूहें असलू कानो सुनियो, असल तनों के दिल ॥ ३७

ए असल नूर मकान की, ए नूर सागर साबित ।
देखो नूर के तरंग, रास भिस्त कही तित ॥ ३८

नूर लेहेरें दाएम उठें, पाउ पलमें बिना हिसाब ।
कोई लेहेर काएम करें, कैं उड़ावें कर ख्वाब ॥ ३९

नूर मकान जिमी असल, असल बन चौफेर ।
पसू पंखी असल, खेलत घेरों घेर ॥ ४०

नूर जिमी बन नूर जल, आकास वाए सब नूर ।
नूर पसू पंखी द्वारने, नूर सब ससी सूर ॥ ४१

एक पात ना खिरे बन का, ना गिरे पंखीका पर ।
नया पुराना न होवही, जंगल या जानवर ॥ ४२

दरबार मोहोल नूर सबे, नूरै नूर विस्तार ।
ए नूर कहूं मैं कहां लग, कहूं याको वार न पार सुमार ॥ ४३

ए सब नूर एक होए रह्या, रोसनी न काहूं पकराए ।
बिना नूर कछू ना देखिए, रह्या बाहेर माहें भराए ॥ ४४

रास भिस्त लेहेरें कही, कही नूर मकान की बिध ।
आगे तो नूर तजल्ला, सोए देऊं नेक सुध ॥ ४५

जहां पर जले जबराईल, इत थें आगे न सके चल ।
दरगाह अरस अजीमकी, हक हादी रूहें असल ॥ ४६

अब नूर कहूं अंदर का, नूर मोहोल मंदिरों नहीं पार ।
एही भूल है अपनी, सोभा ल्याइए माहें सुमार ॥ ४७

नूर जमाल अंग का नूर जो, बड़ी रूह रूहों सिरदार ।
बड़ी रूह के अंग का नूर जो, रूहें बुजरग बारे हजार ॥ ४८

सुख जो अरस अजीम के, सो होए नहीं मजकूर ।
ए अरस तन से बोलत, माहें खिलवत हक हजूर ॥ ४९

जो रूह होवे अरस की, सो सुनियो अरस तन कान ।
अरस अकलें विचारियो, मैं केहेती हों अरस जुबांन ॥ ५०

हम रूहें हमेसा बका मिने, रूह अल्ला के तन ।
असल तन हमारे अरसमें, और कछू न जानें हक बिन ॥ ५१

हम सबमें इसक हक का, ऊपर बरसे हक नूर ।
हम हमेसा हक खिलवतें, हम सब हक हजूर ॥ ५२

पेहेले कह्या नूर मकान जो, सो नूर माहें वाहेदत्त ।
हक हादी रूहें खिलवत, ए वाहेदत्त सब निसवत ॥ ५३

बाग जिमी जो अरस की, और पसू जानवर ।
कहा कहूं सुख साहेबी, जिन पर हक नजर ॥ ५४

और जरा न हक बका बिना, खेल सदा होत नूर से ।
एक पलमें कै पैदा करे, इंड उड़ावे कै पल में ॥ ५५

हम रूहें खेल जानें नहीं, जो नूर से उपजत ।
ओ खेले अरवा गफलत में, ऊपर भी गफलत ॥ ५६

हम जानें इसक बड़ा हमपें, बड़ी रूह और हक से ।
बड़ी रूह जानें सब से, बड़ा इसक है हम में ॥ ५७

हकें कह्या हादी रूहन से, तुम नहीं मेरे माफक ।
तुम तेहेकीक मेरे मासूक, मैं तुमारा आसक ॥ ५८

होत हांसी हमेसा, सब बड़ा जाने अपना प्यार ।
बेवरा वाहेदत्त में होए नहीं, जित नाहीं जुदागी लगार ॥ ५९

तब हकें कह्या फरामोसका, खेल देखावें हम ।
मैं जुदे भी तुमें ना करूं, देखाऊं तले कदम ॥ ६०

हकें हुकम किया दिल पर, तब खेल माग्या हम एह ।
तब हम को खेल देखाइया, खेल हुआ नूर का जेह ॥ ६१

तो खेल हम देखिया, ना तो कैसा खेल कौन हम ।
क्यों उतरें रूहें अरस से, छोड़ के एह कदम ॥ ६२

खेल हुआ हम वास्ते, हम पर हादी ल्याए फुरमान ।
हम वास्ते कुंजी रूहअल्ला, दई इमाम हाथ पेहेचान ॥ ६३

ए तीनों सूरत हादी की, आई जुदी जुदी हम कारन ।
आखर खेल देखाए के, सब समझाई रूहन ॥ ६४

अरस हककी लजत, दई खेलमें हम को ।
हक साहेबी हक इसक, हमारे लाड़ पाले कुंजीसों ॥ ६५

हम बैठे देख्या वतन में, हकें ऐसी करी हिकमत ।
आए न गए हादी हम, ऐसा देख्या माहें खिलवत ॥ ६६

हक न्यामत मैं देत हों, जो होसी अरवाए ।
ए सुनते निसानियां अरस की, लगसी कलेजें घाए ॥ ६७

पेहेचान हक अरस रूहन की, ए केहेते आवसी इसक ।
ए सुन रूहें ना सेहे सकें, बिछोहा अरस हक ॥ ६८

हम उतरें चढ़ें तो खेलमें, जो जरा दूसरा होए ।
ए देखो हक इलम से, अरस अरवा न उरझे कोए ॥ ६९

हकें दिया इलम अपना, तिनका तो हकै से काम ।
और हम को क्या हक बिना, रात दिन लेना क्यों आराम ॥ ७०

हम खेल देख्या लग मुद्दत, जेते रूहअल्ला के तन ।
खेल देख पीछे फिरें, जानें बेर न लगी अधखिन ॥ ७१

ए देख्या बैठे वतन में, हक सुख लिए हम इत ।
सो इन देह इन जिमिएं, लिए सुख हक निसबत ॥ ७२

फेर फेर हक वाहेदत्त, फेर फेर हक खिलवत ।
फेर फेर सुख निसवत के, फेर फेर ए लई न्यामत ॥ ७३

महामत कहें मोमन को, मिट गई दुनियां चाल ।
देखिए हक दिल अरस में, तो अबहीं बदले हाल ॥ ७४

॥ प्रकरण ॥ ३९ ॥ चौपाई ॥ १५४० ॥

सनंध खंडनी जाहेरियोंकी[1]

लिख्या है कतेब में, पाया न किन ठौर ।
ना फिरस्तों ना नबियों, तो क्यों पावे कोई और ॥ १

लिख्या जो रसूल ने, तिन तो कह्या अगम ।
तबक चौदे ख्वाब के, न्यारा रह्या खसम ॥ २

खुद तो किन को ना मिल्या, अब काजी कजा चलाए ।
कहें जो चाहे खुद को, हम मिलावें ताए ॥ ३

पढ़े मुल्लाँ आगू हुए, सो तो खाए गुमान ।
लोकों को बतावहीं, कहें हम पढ़े कुरान ॥ ४

दुनी बदले दीन खोवहीं, चलें सो उलटी रीत ।
सुपने के सुख कारने, लोभें किए फजीत ॥ ५

राह बतावें दुनी को, कहें ए नबिएं कहेल ।
लिख्या और फुरमानमें, ए खेलें औरै खेल ॥ ६

ए जो मोहोरे खेल के, धरें भेख विबाद ।
एक भान दूजा धरें, कहें हमें होत सवाब ॥ ७

ओ राजी एक भेषमें, ताए मार छुड़ावें दाब ।
ओ रोवे सिर पीटही, ए कहें हमें होत सवाब ॥ ८

एक खाई ग्रहतें काढ़के, ले डारें दूजी खाड़ ।
जबेह[2] करें जोरावरी, कहें हमें होत सवाब ॥ ९

१. कर्मकाण्डी । २. जबरदस्ती माथा रगड़वाना (हत्या) ।

हिंदू मुए जलावहीं, और ए आए तिन गाड़ ।
मिल तिन को जारत करें, कहें हमें होत सवाब ॥ १०

मार डार पछाड़हीं, ओ रोए पीटे होवे ताब ।
इन बिध जातां बदलें, कहें हमें होत सवाब ॥ ११

जैसे मछ गलागल, ना किनकी मरजाद ।
यों खैंच लेवें आपमें, कहें हमें होत सवाब ॥ १२

करें जुलम गरीब पर, कोई न काहूं फरियाद ।
कर सुंनत गोस्त खिलावहीं, कहें हमें होत सवाब ॥ १३

कोई जालिम जीव जनम का, खुराकी गोस्त सराब ।
तिनको लेवें दीन में, कहें हमें होत सवाब ॥ १४

सिरो पाव दे गज चढ़ावहीं, ओ जाने हुआ खराब ।
ए बजाए बाजे कूदहीं, कहें हमें होत सवाब ॥ १५

काफर को मुस्लिम करें, मिने लेवें दीन हिसाब ।
सिर मूड़ दाढ़ी रखें, कहें हमें होत सवाब ॥ १६

खाना खिलावें आप में, देखलावें मसीत मेहेराब ।
लेकर कलमा पढ़ावहीं, कहें हमें होत सवाब ॥ १७

चित दे एक चुनावहीं, हिंदू जो आद के आद ।
सो जोरा करके ढहावहीं, कहें हमें होत सवाब ॥ १८

हिंदू मसीताँ ढहावहीं, मुसलमानसों बाद ।
दें सोभा इस्ट दीन को, कहें हमें होत सवाब ॥ १९

सुध इस्ट ना दीन की, मोह माते उनमाद ।
ज्यों ज्यों बैर बढ़ावहीं, कहें हमें होत सवाब ॥ २०

गरक हुए मोह गुमानमें, जनम गमावत बाद ।
या बिध खैंचें आप में, कहें हमें होत सवाब ॥ २१

यों पढ़े राह बतावहीं, खेलें मिने ख्वाब ।
जाहेर जुलम होवही, कहें हमें होत सवाब ॥ २२

पर सवाब तिन को होवही, छोटा बड़ा सब जीव ।
एकै नजरों देखहीं, सब का खावंद पीव ॥ २३

जो दुख देवे किनको, सो नाहीं मुसलमान ।
नबिएँ मुसलमान का, नाम धरचा मेहेरबान ॥ २४

कोई बूझे ना इसलामको, ना लगें नबी के बान ।
ना सुध सल्ली ना बंदगी, कहें हम मुसलमान ॥ २५

कौन दीन क्यों चलना, और क्यों रेहेनी फुरमान ।
क्यों अंतर माहें बाहेर, कहें हम मुसलमान ॥ २६

ना सुध ऊजू निमाजकी, ना रोजे रमजान ।
ना तसबी[1] ना नाम की, कहें हम मुसलमान ॥ २७

सुध नहीं दिल साफ की, ना कछू सबद पेहेचान ।
ना सुध छल ना वतन, कहें हम मुसलमान ॥ २८

मैं कौन आया किन ठौर से, कहा देखत हों जहान ।
कौन नबी भेज्या किने, कहें हम मुसलमान ॥ २९

हक को कबूं ना याद करें, हुए नहीं गलतान ।
खुद कबूं ना सुपने, कहें हम मुसलमान ॥ ३०

ए तो आग है जलती, ताए लई सुख मान ।
देखाए भी अंधे न देखहीं, कहें हम मुसलमान ॥ ३१

बाहेर के देखावहीं, अंदर आंख न कान ।
सो कहा सुने कहा देखसी, कहें हम मुसलमान ॥ ३२

बिध भी देखावें बाहेर की, सुध नहीं ब्रध हान ।
ना पेहेचान जो रूह की, कहें हम मुसलमान ॥ ३३

गुन ना देखें काहू को, अवगुन लेवें सिरतान ।
आप पड़े बस इंद्रियों, कहें हम मुसलमान ॥ ३४

---

१. माला ।

जुलम करें कै जालिम, मूंदी आँखें गुमान ।
खूंन करते ना डरें, कहें हम मुसलमान ॥ ३५

नीएत ना नीकी कबहूं, जनम दगाई जान ।
निस दिन चाहें छल को, कहें हम मुसलमान ॥ ३६

मने उड़ाए तूल ज्यों, न पावें ठौर ठेहेरान ।
सो सारे गफलतें फिरे, कहें हम मुसलमान ॥ ३७

ले गरव खड़े होवहीं, जाने हम मेर समान ।
ना सुध भारी हलके, कहें हम मुसलमान ॥ ३८

कहे अंग तो काम क्रोधके, गोस्त खान मद पान ।
हक हराम न जानही, कहें हम मुसलमान ॥ ३९

सुपेत हुए स्याही गई, स्याही अंदर बढ़ती जान ।
काट गला लोहू पीवहीं, कहें हम मुसलमान ॥ ४०

दुख ना देखें और को, ऐसे हिरदे निपट पाषान ।
दुख देते ना सकुचें, कहें हम मुसलमान ॥ ४१

ब्राह्मण कहें हम उत्तम, मुसलमान कहें हम पाक ।
दोऊ मुठी एक ठौर की, एक राख दूजी खाक ॥ ४२

कुफर न काढ़ें आपको, और देखें सब कुफरान ।
अपना अवगुन ना देखहीं, कहें हम मुसलमान ॥ ४३

ज्यों सुपनेंमें मनुआ, आप भाव सब ठौर ।
तरंग जैसा आपमें, सोई देखे मिने और ॥ ४४

बदी न छोड़ें एक पल, डर न रखें सुभान ।
फैल करें चित चाहते, कहें हम मुसलमान ॥ ४५

ना प्रतीत जो और की, यों पढ़े काजी कुरान ।
राह बतावें और को, कहें हम मुसलमान ॥ ४६

हिरदे फूटे ऐसे बेसुध, एता भी न रहे याद ।
खुद काजी आखर होएसी, तब देसी कहा जवाब ॥ ४७

कलाम अल्ला काजी पढ़ें, पर होत नहीं आकीन ।
कैसा डर कौन आवही, तो हलका किया दीन ॥ ४८

तिनों तो सस्ता किया, जिनों नहीं भरोसा निदान ।
या बिध आपे अपना, हलका करें कुरान ॥ ४९

महामत केहेवे यों कर, ए पढ़े बड़े कुफर ।
बातून नजर इन को नहीं, तो कजा की न हुई खबर ॥ ५०

॥ प्रकरण ॥ ४० ॥ चौपाई ॥ १५६० ॥

## सनंध पत्री बड़ी लिखी है

तुमको देऊं सुख जागनी, साथजी मेरे सिरदार ।
भेख धरे जो बासना, छोटे बड़े नर नार ॥ १

सुनियो भीम मकुंदजी, उद्धव केसो स्याम ।
हम पाती पढ़ी महंमदकी, सब पाई हकीकत धाम ॥ २

अपने घरकी इसारतें, और न समझे कोए ।
और कोई तो समझे, जो कोई दूसरा होए ॥ ३

वतन की बातें सबे, पाईं हमारी हम ।
सोए रोसन करत हों, कहियो साथ को तुम ॥ ४

किया बरनन श्री धाम का, कै बिध लिखे निसान ।
साथ को सुख उपजावने, ठौर ठौर किए बयान ॥ ५

जमुना जरी किनार पर, कै देहुरियाँ तलाव ।
भांत भांत रंग झलकत, यों कै जवेर जड़ाव ॥ ६

नीर उजले खीर से, खुसबोए जिमी रेत सेत ।
पसू कै बिध खेलहीं, यों कागद निसानी देत ॥ ७

सबुज बन कै रंग के, जवेर कै झलकत ।
सैयां बरनन इसारतें, कै पंखी मिने घूमत ॥ ८

कह्या मैं तारतम तुमको, मूल वचन जिन पर ।
सो सारे इनमें लिखे, निसान अपने घर ॥ ९

ऊपर से तले आए के, सब बैठियाँ खेल देखन ।
भेली रूह भगवान की, हुकम हुआ सबन ॥ १०

हुई रात सबन को, तिन फेरे खेलमें मन ।
सोई रात सोई साएत, पर भूल गैयाँ वह दिन ॥ ११

तीन तकरार कहे रात के, तिन तीनों के बयान ।
ब्रज रास और जागनी, ए कै बिध लिखे निसान ॥ १२

फुरमान उसी साएत का, पिया भेज्या हम पर ।
सारी बिध सोई लिखी, जो कही बाई सुंदर ॥ १३

धाम रास और ब्रज की, कही सुंदरबाईएँ जेह ।
ए तो कागद नेक देखिया, देत साख सब एह ॥ १४

काल माया जोग माया, तीसरी लीला जागन ।
सुंदरबाईएँ ना कहे, ए आगम के वचन ॥ १५

सुंदरबाईएँ देखिया, दिलके दीदों माहें ।
ब्रज रास और धाम की, पर जागनी की सुध नाहें ॥ १६

और सुख कैं बिध के, कै बिध किए प्यार ।
सुंदरबाई के संगते, कैं औरों पाए दीदार ॥ १७

अंतरगत आरोगते, तीन बेर पिआ आए ।
आप भी मेवे मिठाइयां, कै हम को आन खिलाए ॥ १८

बिध बिध के सुख और कै, देत दाएम अनेक ।
पर लीला जागन की, कदो वचन न पाया एक ॥ १९

लरी सुंदरबाई पीउसों, इन आगमके कारन ।
पर पाया नहीं पड़ उत्तर, एक आधा भी सुकन ॥ २०

इन पड़ उत्तर वास्ते, बाईजीएँ किए उपाए ।
विलख विलख वचन लिखे, सो ले ले रूहें पोहोंचाए ॥ २१

यों उनहत्तर पातियां, लिखी धाम धनी पर ।
तब सैयां हम भी लिखी, पर नेक न दई खबर ॥ २२

सो सुध सारी ल्याइया, लीला आगूं से निसान ।
जागनी की सुध सब लिखी, तुम लीजो हाथ चित आन ॥ २३

अवल मध और आखर, यामें तीनों की हकीकत ।
पर ए पावें एक इमाम, जित हुकम नूर महामत ॥ २४

ज्यों आया नूर तारतम, श्री देवचंदजी के पास ।
सो बिध सब इनमें लिखी, ज्यों कर हुआ प्रकास ॥ २५

फुरमान ल्याए महंमद, सब लिखी हमारी बात ।
जरा एक ना घट बढ़, सब अंग निसांनी ज़ात ॥ २६

श्री देवचंदजीसों जुध किया, कुलो दजाल जिन पर ।
ईसा दो जामें पेहेरसी, सो लिखी सारी खबर ॥ २७

श्री देवचंदजीसों हम मिले, मुझ अंग हुआ रोसन ।
सों बातें सब इनमें लिखी, निसान नाम सोई दिन ॥ २८

बोहोत बातें कै और हैं, सो केते लिखों निसान ।
साथ हम तुम मिलके, हंस हंस करसी बयान ॥ २९

कै विध की निसानियां, जिन बिध हूई जागन ।
हंसते हरखे जागसी, सुख देसी सब सैयन ॥ ३०

बाल लीला और किसोर, तीसरी बुढ़ापन ।
तीन अवस्था तीन ब्रह्मांड, देखाए मिने एक खिन ॥ ३१

बाबा बूढा होए खेलावसी, दे मन चाह्या सुख सब ।
तीन अवस्था एक साएत में, देखाए के हंससी अब ॥ ३२

तीन ठौर लीला करी, देखाए तीनों ब्रह्मांड ।
सो तीनों एक पलमें, देखाए के उड़ावसी इंड ॥ ३३

खेले एकै रात में, ब्रज रास जागन ।
बेर साएत भी ना हुई, यों होसी सब सैयन ॥ ३४

बीच ब्रह्मांड ना जुग कोई, बरस मास ना दिन ।
खिनमें सब देखाए के, दोए साखें करी जागन ॥ ३५

दाना एक खस खस का, तामें देखाए चौदे भवन ।
सो दाना फेर होएसी, तुम देखोगे सब जन ।। ३६
पट कर बड़ा देखाइया, चौदे तबक बनाए ।
तुम पर हांसी करके, देसी पट उड़ाए ।। ३७
ज्यों ज्यों होसी जागनी, त्यों त्यों उड़सी एह ।
देखोगे सब नजरों, पिआ हांसी करीं है जेह ।। ३८
पियाजीएं कै हांसी करी, सो लिखी मिने किताब ।
जब सैयां सब मिली, तब होसी बिना हिसाब ।। ३९
और भी कहूं सो सुनो, जाहेर महंमद बात ।
और सबे उड़ाए के, एक रखी कदरकी रात ।। ४०
सब रोसनाई इनमें, सांची कहिएत हैं जेह ।
उतरी है पिया पास थें, रात नूर भरी है एह ।। ४१
वतन थें पीउ प्यारियां, आइयां सबे मिल ।
इसी रात के बीच में, करने को सैल ।। ४२
पिया भेजे मलाएक,[1] रखोपे[2] रूहों कारन ।
सो संग अंदर रेहेंवही, करत सदा रोसन ।। ४३
तबक चौदे इन में, जिमी और आसमान ।
रात बड़ी कदर की, कोई नाहीं इन समान ।। ४४
फिरत चिरागें इन में, एक चांद दूजा सूर ।
ए तो सोर सेहेरन का, नहीं रोसन वतनी नूर ।। ४५
रसूलें ए जाहेर कह्या, दिन रोसन पिया वतन ।
और अंधेर सब दजाल, जो गोविंद भेडा फितन ।। ४६
नीद को रात कदर कही, दुनी ढूंढ़े खेल में रात ।
कहे जो आजूज माजूज, ए तिन में गोते खात ।। ४७

---

१. देवी-देवता । २. रक्षक ।

दरिया रूप अंधेरी, आदम रूप दजाल ।
एही सरूप कुलीअ का, बैर बिखे लानती चाल ॥ ४८

आदम रूप बैराट, अनेक बिध खेलत ।
झूठ कुफर कुली पसरद्या, सब सचराचर पसू मत ॥ ४९

सुंदरबाइएं याको कह्या, गोविंद भेड़ा मंडल ।
सोई कलजुग दजाल, व्याप रह्या सकल ॥ ५०

खेल कहद्या है नीद का, सब खेलें बीच अंधेर ।
ए जो आइयां खेल देखने, ताए खैंच लिया दिल फेर ॥ ५१

जंग किया सैयां तिनसों, जो आगे कछुए नांहें ।
ए भी कहें ओ ना कछू, पर उरझ रहियां तिन मांहें ॥ ५२

लई लड़ाई सैयां तिनसों, जाए पड़ियां बंध ।
ना रसी ना बांधे किने, पर छूट ना सके कोई फंद ॥ ५३

जुदी जातें भांतें जुदी, खड़ियां जुदे भेख धर ।
जानत नीके झूठ है, तो भी पकड़ रहियां सत कर ॥ ५४

जुदे जुदे नाम खसम के, एक नारी दूजे नर ।
खुद खसम को भूल के, खेलमें बैठियां सत कर ॥ ५५

पिया खजाना खरच के, आए बंध से लैयां छुड़ाए ।
अब सो करे मेहेमांनियां, बस्तर भूखन पेहेराए ॥ ५६

कै भोजन मेवे मिठाइयां, तकिए सेज जवेर ।
सेवक सेवा दुनियां, करसी ब्याह सुंदर ॥ ५७

यामें कै बिध हांसियां, पियाजी लिखी चित ल्याए ।
सो आप मिने बैठ के, हंससी साथ मिलाए ॥ ५८

बैराट सब पुकारही, सो भी इनमें लिखे सबद ।
कै बिध लीला जागनी, पर भली गाई महंमद ॥ ५९

याही लीला सब कोई, गावत गुझ अगम ।
गरजसी बैराट में, हुएँ जाहेर सैयां हम ॥ ६०

बैराट सारा गाएसी, नर नारी चित ल्याए ।
पर गावना सुन महंमद का, रेहेसी सब अचंभाए ॥ ६१

महंमद बातें बोहोत हैं, सो केती लिखूं तुम ।
ए बातें तब होएसी, जब मिलसी हम तुम ॥ ६२

महंमद कहे मैं हुकम, सब रूहे मुझ मांहें ।
मैं चल्या अरस म्याराज को, पर पोहोंच सक्या नाहें ॥ ६३

मैं ल्याया धनीअ की, इसारतें जिन खातर ।
सो ताला अजूं खुल्या नहीं, तो मैं पोहोंचों क्यों कर ॥ ६४

ताला द्वार कजाए का, आए खोलसी जब ।
क्यामत रोसन करके, मिल भेले चलसी सब ॥ ६५

बाईजीऐं घर चलते, जाहेर कहे वचन ।
आड़ी खड़ी इन्द्रावती, है इन के हाथ जागन ॥ ६६

जुदी हम से भगवान की, रूह फिरी एक सोए ।
जब फिरे सुनसी हम को, तब घरों आवसी रोए ॥ ६७

ए जो भिस्त हमों करी, फेर एही भानसी दुख ।
बुध *असराफील पोहोंचही, तब ताए भी देसी सुख ॥ ६८

*रूहअल्ला *ईसा *मसी, नूर नाम तारतम ।
मूल बुध *असराफील, ए हमारी मिने हम ॥ ६९

काजी कजा ऐसी करी, रही ना किसीकी हाम ।
हुआ महंमद खिताब मेहेदी, मिल्या मिने इमाम ॥ ७०

*जबराईल पिया हुकमें, रूहों करत रखोपा आए ।
सोई सूरत है अपनी, पिया हुकमें लेत मिलाए ॥ ७१

जुदे जुदे नामें गावहीं, जुदे जुदे भेख अनेक ।
जिन कोई झगड़ो आप में, धनी सबोंका एक ॥ ७२

अब सुनो प्यारे साथजी, पिया प्रगट होत सबन ।
सारों को सुख देअ के, उड़ावत एह सुपन ॥ ७३

वैराट चौदे तबक, करके नूर नजर ।
काएम दिए सुख मन बंछे, ब्रह्मांड सचराचर ।। ७४

।। प्रकरण ।। ४१ ।। चौपाई ।। १६६४ ।।

## सनंध पत्री छोटी लिखी है

प्रीतम मेरे प्रान के, आतम के आधार ।
ए दिल भीतर देखियो, है अति बड़ो विस्तार ।। १

सैयां सुन दौड़ियो, सई मेरी नाहीं बिलम[1] कछू अब ।
ऐसी खबर दई महंमदें, सैयां सुन दौड़ियो सब ।। २

कागद चौदे तबक के, मैं देखी हकीकत ।
सब गावें लीला जागनी, पर *बड़ी महंमद की मत ।। ३

महंमद पाती के वचन, सुनियो *भीम *मकुंद ।
आगम था पट बीच में, सो काढ़्या पट *निकंद[2] ।। ४

आगम निगम सब लिख्या, हुआ है होसी जेह ।
ए बानी तो बोहोत है, पर नेक कहूं तुमें एह ।। ५

ए खेल है जो नीद का, तामें आधी दई उड़ाए ।
बाकी उड़ाए देत हों, तुम साथ को लीजो बुलाए ।। ६

*तारीख तीन ब्रह्मांड की, केहेती हों कर हेत ।
नीद एक आधी दूसरी, तीसरी में सावचेत ।। ७

बरस पांच हजार पर, सात सै सैंतालीस ।
होसी नेहेचल नूर नजरों, जित दिन हजार बरीस ।। ८

यामें नव सै छेहेंतर जब हुए, तब हुआ नूह तोफान ।
जल ऊपर तले से उमड़्या, हो गया एक जिमी आसमान ।। ९

पार हुई तहां से रूहें, और सब हुए गरक ।
फेर तीसरा ए पैदा हुआ, यों देत साहेदी हक ।। १०

---

१. विलम्ब । २. संहार करना ।

आद आदम के छपन सै, बीते जब सैंतीस ।
तबहीं दस सदी पर, होसी नवे बरीस ॥ ११

महंमद हुआ मेहेदी, सैएद केहेलाया सही ।
खिताब दिया जब खसमें, तब भेली इमाम भई ॥ १२

रूह अल्ला ईसा रोसन, असराफील अकल ।
सूरत साफ जबराईल, आए मेहेदीमें मिले सकल ॥ १३

हुआ हिंदुओंमें जाहेर, हिंद से पाक[1] मरद ।
इसक राह चलावसी, चालीस बरस लों हद ॥ १४

काबिल हिंद के बीचमें, होसी इमाम रोसन ।
ए लीजो प्रगट इसारतें, दोए रूहों का मिलन ॥ १५

कोई दूजा मरद न कहावही, एक मेहेदी पाक पूरन ।
खेलसी रास मिल जागनी, *छत्तीस हजार सैयन ॥ १६

असलू जुथ रूहें चालीस, तिनमें बारे हजार ।
बारे भेलियां रास में, इत *चौबीस सहस्त्र कुमार ॥ १७

*दस बरस लों खेलहीं, होसी विनोद कै हांस ।
सब के मनोरथ पूरने, करसी बड़ो बिलास ॥ १८

सत बैराट में पसरया, काढ़या कुली जालिम ।
चौदे तबक सचराचर, नूर इसक हमारा हम ॥ १९

एक जरा जुलम न रेहेवही, सुबुध सबों में धरम ।
बरत्यो सुख संसार में, विकार काटे सब करम ॥ २०

जब पूरन सदी अग्यारहीं, तब जागनी रास तमाम ।
मन चाह्या सुख दे सबों, हंसते उठे घर धाम ॥ २१

पीछे सदी अग्यारहीं के, जब होसी तीस बरस ।
बनी[2] आदम पसू पंखी, नूर इसक पिलाया रस ॥ २२

---

१. पवित्र आदमी । २. आदम के वंशज ।

रोसनाई नूर बुध की, रही न किसीकी हाम ।
बारहीं सदी संपूरन, ब्रह्मांड ने पायो इनाम ॥ २३

अक्षर के दोए चसमें, नहासी नूर नजर ।
बीसा सौ बरसों काएम, होसी बैराट सचराचर ॥ २४

ए तलबे तुम वास्ते, मैं नेक देखी किताब ।
ए दिन दिलमें आन के, तुम साथ मिलाओ सिताब ॥ २५

बेरीज[1] करी बैराट की, ए पढ़ियो चित दे ।
खेलाए रास जागनी, झलकाओ नूर ए ॥ २६

मेहेदी हदां[2] कर दई, घर इमाम बताई राह ।
पोहोंचे अरस म्याराज को, हंस मिलियां रूहें खुदाए ॥ २७

॥ प्रकरण ॥ ४२ ॥ चौपाई ॥ १६६१ ॥

प्रकरण तथा चौपाइयों का पूरा संकलन—प्रकरण २१४, चौपाई ६३६०

इति श्री, महामति श्रीप्राणनाथजी की 'तारतम बानी' का

सातवाँ ग्रन्थ

## ॥ 'सनंध' संपूर्ण ॥

१. हिसाब । २. सीमाएँ ।

निजनाम श्री कृष्णजी, अनादि अक्षरातीत ।
सोतो अब जाहेर भए, सबबिध वतन सहित ॥

# ❋ किरंतन[10] ❋

## राग काफी

आवोजी वाला म्हारे[1] घेर, आवोजी वाला ।
एकलडी[2] परदेसमां मूने, मूकीने कां चाल्या ॥ १

मूने हती नीदरडी,[3] तमे सूती मूकां कां राते ।
जागी जोऊं तां पीउजी न पासे, पछे तो थासे प्रभाते ॥ २

कलकलीने[4] कहूं छूं तमनें, आवजो आणी ख्यणे ।
म्हारा मनना मनोरथ पूरजो, इन्द्रावती लागे चरणें ॥ ३

॥ प्रकरण ॥ १ ॥ चौपाई ॥ ३ ॥

## राग मारू

पेहेले आप पेहेचानो रे साधो, पेहेले आप पेहेचानो ।
विना आप चीन्हें पार ब्रह्मको, कौन कहे मैं जान्यो ॥ १

पीछे ढूंढ़ो घर आपनों, कौन ठौर ठेहेरानो ।
जब लग घर पावें नहीं अपनों, सो भटकत फिरत भरमानो ॥ २

पांच तत्व मिल मोहोल[5] रच्यो है, सो अंत्रीख[6] क्यों अटकानो ।
याके आस पास अटकाव[7] नहीं, तुम जागके संसै भानो ॥ ३

नीद उड़ाए जब चीन्होंगे आपको, तब जानोगे मोहोल यों रचानो ।
तब आपै घर पाओगे अपनों, देखोगे अलख लखानो[8] ॥ ४

बोले चाले पर कोई न पेहचाने, परखत नहीं परखानो ।
महामत कहें माहें पार खोजोगे, तब जाए आप ओलखानो[9] ॥ ५

॥ प्रकरण ॥ २ ॥ चौपाई ॥ ८ ॥

---

१. मेरे । २. अकेली । ३. नींद । ४. कलपती । ५. (महल) ब्रह्मांड । ६ अंतरिक्ष । ७. रोक । ८. देखा गया । ९. पहचान । १०. कीर्तन ।

बिदमें[१] सिंध[२] समाया रे साधो, बिदमें सिंध समाया ।
त्रिगुन सरूप खोजत भए बिसमए,[३] पर अलख न जाए लखाया ॥ १

वेद अगम कहि उलटे पीछे, नेत नेत कर गाया ।
खबर न परी बिंद उपज्या कहाँ थें, तार्थे नाम निगम धराया ॥ २

असत मंडलमें सब कोई भूल्या, पर अखंड किने न बताया ।
नीदका खेल खेलत सब नीदमें, जागके किने न देखाया ॥ ३

सुपन की सृस्ट बैराट सुपनका, झूठे साँच ढँपाया ।
असत आपे सो क्यों सत को पेखे,[४] इन पर पेड[५] न पाया ॥ ४

खोजी खोजे बाहेर भीतर, ओ अंतर बैठा आप ।
सत सुपने को पारथें पेखे, पर सुपना न देखे साख्यात ॥ ५

भरमकी बाजी रची बिस्तारी, भरमसों भरम भरमाना ।
साध सोई तुम खोजो रे साधो, जिनका पार पयाना[६] ॥ ६

मृगजलसों जो त्रिखा[७] भाजे, तो गुर बिना जीव पार पावे ।
अनेक उपाए करे जो कोई, तो बिंदका बिंदमें समावे ॥ ७

देत देखाई बाहेर भीतर, ना भीतर बाहेर भी नाहीं ।
गुरु प्रसादे[८] अंतर पेख्या, सो सोभा बरनी न जाई ॥ ८

सतगुरु सोई मिले जब सांचा, तब सिंध बिंद परचावे[९] ।
प्रगट प्रकास करे पार ब्रह्मसों, तब बिंद अनेक उड़ावे ॥ ९

महामत कहे बिंद बैठेही उड़या, पाया सागर सुख सिंध ।
अक्षरातीत अखंड घर पाया, ए निध पूरव सनमंध ॥ १०

॥ प्रकरण ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ १८ ॥

## राग केदारो

### साधो भाई चीन्हो सबद कोई चीन्हो

ऐसो उत्तम आकार तोकों दीन्हों, जिन प्रगट प्रकास जो कीन्हों ॥ १

---

१. बिंदु (माया) । २. सिंधु (आत्मा) । ३. हैरान । ४. देखे । ५. राह । ६. पहुँच । ७. प्यास । ८. कृपा । ९. परिचय देवें ।

मानखे[1] देह अखंड फल पाइए, सो क्यों पाएके वृथा गमाइए ।
ए तो अधखिनको अवसर, सो गमावत मांझ नीदर[2] ॥ २

सबदा कहे प्रगट प्रवान, सबदा सतगुरूसों करावे पेहेचान ।
सतगुर सोई जो अलख लखावे, अलख लखे बिन आग नजावे ॥ ३

सास्त्र ले चले सतगुरू सोई, बानी सकलको एक अरथ होई ।
सब स्यानोंकी एक मत पाई, पर अजान देखे रे जुदाई ॥ ४

सास्त्रोंमें सबे सुध पाइए, पर सतगुरू बिना क्यों लखाइए ।
सब सास्त्र सबद सीधा कहे, पर ज्यों मेर[3] तिनके आडे रहे ॥ ५

सो तिनका मिटे सतगुरूके संग, तब पार ब्रह्म प्रकासे अखंड ।
सतगुरूजीके चरन पसाए,[4] सबदों बड़ी मत समझाए ॥ ६

तब खोज सबदको लीजे तत्व, तौल देखिए बड़ी केही मत ।
जासों पाइए प्राणको आधार, सो क्यों सोए गमावेरे गमार ॥ ७

यामें बड़ीमतको लीजे सार, सतगुरू याही देखावें पार ।
इतहीं बैकुंठ इतहीं सुंन, इतहीं प्रगट पूरन पारब्रह्म ॥ ८

ए बानी गरजत मांझ संसार, खोजी खोज मिटावे अंधार ।
मूढ़मती न जाने विचार, महामत कहें पुकार पुकार ॥ ९

॥ प्रकरण ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ २७ ॥

## राम गौरी

### साधो हम देख्या बड़ा तमासा

विस्व देख भया मैं विसमय, देख देख आवत मोहे हांसा ॥ १

मेरी मेरी करते दुनी जात है, बोझ ब्रह्मांड सिर लेवै ।
पाउ पलक का नहीं भरोसा, तो भी सिर सरजनको[5] न देवे ॥ २

सिर ले काम करे माया को, निसंक पछाड़े आप अंग ।
न करे भजन दोस देवे सांई को, कहे दया बिना न होंवे साध संग ॥ ३

---

१. मनुष्य की । २. नींद । ३. पर्वत । ४. प्रताप । ५. सिरजन हार (परमात्मा) ।

बांधत बंध आपको आपे, न समझे माया को मरम ।
अपनों कियो न देखें अंधे, पीछे रोवें दोस दे दे करम[१] ॥ ४

समझे साध कहावें दुनी में, बाहेर देखावें आनंद ।
भीतर आग जले भरम की, कोई छूट न सके या फंद ॥ ५

परत नहीं पेहेचान पिंड की, सुध न अपनों घर ।
मुखथें कहें मोहे संसे[२] मिटया, मैं देखे साध केते या पर ॥ ६

साध सुने मैं देखे केते, आगम कर कर गावें ।
नेहेचे[३] जाए करें *निराकार, या ठौर चित ठेहेरावें ॥ ७

जो ना कछू गाम नाम ना ठाम, सो सत सांई *निराकार ।
भरम को पिंड[४] असत जो आपै, सो आप होत आकार ॥ ८

जिन मंडल ए माड़े[५] मंडप, थोभ[६] न थंभ न बंध ।
वाको नाहीं कहत क्यों साधो, ए रच्यो किन कौन सनंध[७] ॥ ९

जिन साएर[८] खनाए पहाड़ चुनाए, रबि ससि नखत्र फिराए ।
फिरत अहिनिस रंग रुत फिरती, ऐसे अनेक बैराट बनाए ॥ १०

जिन खिनमें तत्व पाँच समारे, नास करे खिन माँहि ।
ए कहाँ से उपाए[९] कहाँ ले समाए, ए बिचारत क्यों नाँहि ॥ ११

सतगुरु साधो वाको कहिए, जो अगमकी देवे गम ।
हद बेहद सबे समझावे, भाने 'मनको भरम ॥ १२

महामत कहे गुर सोई कीजे, जो अलख की देवे लख ।
इन उलटीसे उलटाएके, पिया प्रेमें करे सनमुख ॥ १३

॥ प्रकरण ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ ४० ॥

## राग केदारो

सुनो रे सतके बनजारे,[१०] एक बात कहूं समझाई ।
या फंद बाजी रची मायाकी, तामें सब कोई रह्या उरझाई ॥ १

---

१. भाग्य । २. संशय । ३. निश्चय । ४. शरीर । ५. रचे । ६. सहारा । ७. विधि ।
८. समुद्र । ९. उत्पन्न किए । १०. व्यापारी ।

आंटी[1] आन के फांसी लगाई, वे भी उलटीएँ दई उलटाई ।
बंधपर बंध दिए बिध विधके, सो खोली किनहूं न जाई ।। २

चौदे भवन लग एही अंधेरी, झूठको खेल झुठाई ।
प्रगट नास व्यास पुकारे, सुकदेव साख पुराई ।। ३

लोक लाज मरजादा छोड़ी, तब ग्यान पदवी पाई ।
एक आग ज्यों छोटी बुझाई, त्यों दूजी मोटी लगाई ।। ४

कोट सेवक करो नाम निकालो, इस्ट चलाओ बड़ाई ।
सेवा कराओ सतगुरु केहेलाओ, पर अलख न देवे लखाई ।। ५

अब छोड़ो रे मान गुमान ग्यान को, एही खाड़ बड़ी भाई ।
एक डारी त्यों दूजी भी डारो, जलाए देओ चतुराई ।। ६

सास्त्र पुरान भेष पंथ खोजो, इन पैड़ोंमें[2] पाइएत नाहीं ।
सतगुरु न्यारा रहत सकल थें, कोई एक कुलीमें काँही ।। ७

सत चाहो सो सबदा चीन्हो, ओ आप न देवे देखाई ।
जिन पाया तिन मांहें समाया, राखत जोर छिपाई ।। ८

सुध सबे पाइए सबदों से, जो होवे मूल सगाई ।
खिन एक बिलम[3] न कीजे तब तो, लीजे जीव जगाई ।। ९

पर मनुआ[4] दिए विन हाथ न आवे, सतकी बड़ी ठकुराई ।
और उपाए याको कोई नाहीं, जिन देवे आप बड़ाई ।। १०

महामत कहे सावचेत होइयो, मिल्या है अंकूरों आई ।
झूठी छूटे साँची पाइए, सतगुरु लीजे रिझाई ।। ११

।। प्रकरण।। ६ ।। चौपाई ।। ५१ ।।

## राग गौरी

भाई रे बेहद के बनजारे, तुम देखो रे मनुऐका खेल ।
ए सब आग विना दीया जले, याको रूई न बाती तेल ।। १

---

१. गांठ । २. पंथों में । ३. देर । ४. मन ।

चारो तरफों चौदे लोकों, बैकुंठ लग पाताल ।
फूल पात फल नहीं या दरखत को, काष्ट त्वचा[1] मूल न डाल ।। २
देत देखाई तत्व पाँचो, मिल रचियो ब्रह्मांड ।
जिनसे उपजे सो कछुए नाहीं, आप न पोते[2] पिंड ।। ३
नहीं पिंड पोते हाथ पांउं भी नाहीं, नाटक नाच देखावे ।
मुख न जुबां कछू नहीं याको, और बानी विविध पेरे गावे ।। ४
आतम नारायन नाचत बुध ब्रह्मा, निस दिन फिरे नारद मन ।
बैराट नटवा नाचत विध विधसों, नचवत ब्यास करम ।। ५
ए मनुएकी बाजी बाजीमें मनुआ, जुदे जुदे खेल खेलावे ।
बरना बरन खेलत सब ऐसे, नए नए स्वाँग बनावे ।। ६
पारब्रह्म तो पूरन एक है, ए तो अनेक परमेस्वर कहावें ।
अनेक पंथ सबद सब जुदे जुदे, और सब कोई सास्त्र बोलावे ।। ७
रबद[3] करे औरन को निंदे, आपको आप बढ़ावे ।
ग्यान कथें गुन गाएं आपके, होहोकार मचावें ।। ८
दुबिधा[4] दिलमें अवगुन ढूंढ़े, गुन चितसों न लगावें ।
भूले फिरें भरममें भटकें, अंगमें आग धखावें ।। ९
केते आप कहावें परमेस्वर, केते करत हैं पूजा ।
साध सेवक होए आगे बैंठे, कहें या विन नहीं कोई दूजा ।। १०
सास्त्र सबदको अरथ न सूझे, मत लिए चलत अहंकार ।
आप न चीन्हें घर न सूझे, यों खेलत मांझ अंधार ।। ११
बाजी एक देखाऊं दूजी, जो खेलत हैं उजियारे[5] ।
भेष बनायके नाचत सनमुख, एक ठाट लिए चारे ।। १२
आतम विस्नु नाचत बुध *सनतजी, गोकुल ग्रह्यो सिव मन ।
करम *सुकदेव नाचत नचवत, गावत प्रगट वचन ।। १३

---

१. चमड़ी (छाल) । २. अपना । ३. तकरार । ४. संशय । ५. ज्ञानवान ।

ए सब खेल करत है मनुआ, भाँत भाँत रिझावे ।
ब्रह्मबासना कोई पारथें पेखे, सो भी दृष्ट मुरछावे[1] ।। १४
इस मनुएको कोई न पेहेचाने, जो तुम सकल मिलो संसार ।
सब कोई देखे यामें मनुआ, या मनुआमें सब विस्तार ।। १५
बोहोत पुकार करूं किस खातर, ए सब सुपन सरूप ।
बेहद[2] बनज[3] का होएगा साथी, सो एक लवें[4] होसी टूक टूक ।। १६
महामत ए सनमंधें पाइए, ऐसा अखंड सुख अपार ।
गुरु प्रसादें नाटक पेख्या,[5] पाया मन मनका प्रकार ।। १७

।। प्रकरण ।। ७ ।। चौपाई ।। ६८ ।।

## राग मारू

हो मेरी वासना, तुम चलो अगमके पार ।

अगम पार अपार पार, तहां है तेरा करार[6] ।
तूं देख निज दरबार अपनों, सुरत[7] एही संभार ।। १
तूं कहा देखे इन खेलमें, ए तो पड़चो सब प्रतिबिंब[8] ।
प्रपंच पांचो तत्व मिल, खेलत सुरतके संग ।। २
यामें गुनी ग्यानी मुनी महंत, अगम[9] कर कर गावें ।
सुनें सीखें पढ़ें पंडित, पार कोई न पावें ।। ३
तूं देख *दरसन[10] पंथ पैंड़े, करें किव[11] सिध साध ।
चढ़ी चौदे सुंन समावें, तहां आड़ी अगम अगाध ।। ४
ए भरम बाजी रची रामत, बहु विधें संसार ।
ए जो नैन देखे श्रवन सुने, सब मूल विना विस्तार ।। ५
वैराट सब मैं देखिया, वैकुंठ विस्नु सेषसाई[12] ।
सुंनथें जैसे जल बतासा,[13] सो *सुंन[14] माझ समाई ।। ६

---

१. मुरझाना । २. असीम । ३. सौदा । ४. अक्षर का भाग । ५. देखा । ६. शान्ति । ७. ध्यान ८. परछाई । ९. जहाँ पहुँच न हो । १०. छः दर्शन । ११. कविता । १२. नारायण । १३. बुलबुला । १४. शून्य ।

तूं देख नाटक निमखको,[१] अब करे कहा विचार ।
पाउ पलमें उलंघ ले, ब्रह्मांड सुंन निराकार ।। ७

तेरे बीच बाट घाट न तत्व कोई, तूं करे पांउं विना पंथ ।
*निरंजनके परे न्यारा, तहां हमारा कंथ[२] ।। ८

अब पार सुख क्यों प्रकासिए, ए है अपनों बिलास ।
महामत मनसा[३] मिट गई, सब सुपन केरी आस ।। ९

।। प्रकरण ।। ८ ।। चौपाई ।। ७७ ।।

## राग विलावल

हो भाई मेरे वैस्नव[४] कहिए वाको, निरमल जाकी आतम ।
नीच करमके निकट ना जावे, जाए पेहेचान भई पारब्रह्म ।। १

इसक लगाए पिआसों पूरा, खेले अबला[५] होए अहिनिस ।
ओ अंधे अग्यानी भरममें भूले, पर या ठौर प्रेमको रस ।। २

जब आतम दृष्टि जुड़ी पर आतम, तब भयो आतम निवेद[६] ।
या विध लोक लखे नहीं कोई, कोई भागवंती जाने ए भेद ।। ३

जब बैस्नव अंग किएरी अप्रस,[७] और कैसी अप्रसाई ।
परस[८] भयो जाको पुरुषोत्तमसों, सो बाहेर न देवे देखाई ।। ४

अहिनिस आवेस हुअडा अंग में, जैसे मद चढ़यो महामत ।
वाको आसा और न उपजे त्रिस्ना,[९] वह एकैसों एक चित ।। ५

उतपंन प्रेम पारब्रह्म संग, वाको सुपन हो गयो संसार ।
प्रेम बिना सुख पारको नाहीं, जो तुम अनेक करो आचार ।। ६

साँचारी साहेब साँचसों पाइए, साँचको साँच है प्यारा ।
या वैस्नवकी गत देखो रे बैस्नवो, महामत इनसे भी न्यारा ।। ७

।। प्रकरण ।। ९ ।। चौपाई ।। ८४ ।।

---

१. पल भर । २. पति । ३. चाह । ४. आचार विचार वाले कृष्ण उपासक । ५. स्त्री भाव (अहंशून्य) । ६. समर्पण । ७. शुद्ध । ८. स्पर्श । ९. चाह ।

## राग विलावल

कहा भयो जो मुखथें कह्यो, जब लग चोट न निकसी फूट ।
प्रेम बान तो ऐसे लगत हैं, अंग होत हैं टूक टूक ॥ १

मुखके सबद मैं बोहोत सुने, इन भी कोई दिन किया पुकार ।
पर घायल भई सो तो कोईक कुलीमें, सो रहत भवसागर पार ॥ २

वाको आग खाग[1] बाघ[2] नाग[3] न डरावे, गुन अंग इंद्रीसे होत रहित ।
डर सकल सांमी इनसे डरपत,[4] या विध पाइए प्रेम परतीत ॥ ३

लगी वाली और कछू न देखे, पिंड ब्रह्मांड वाके हैरी नाहीं ।
ओ खेलत प्रेमे पार पिआसों, देखनको तन सागर माहीं ॥ ४

जो कोई ऐसे मगन होए खेले प्रेममें, तो या विध हमको हैरी सेहेल[5] ।
पर पीवना प्रेम और मगन न होना, ए सुख औरों है मुस्किल ॥ ५

ए जिन कारन किया है कारज, सो ढूंढ़ों सैयां जो पिआने कही ।
ना तो अबहीं मगन होए खेलों प्रेममें, तब तो देखन कहन सुनन तें रही ॥ ६

देखन को हम आएरी दुनियाँ, हमहीं कारन कियो ए संच ।
पार हमारे न्यारा नहीं, हम पारमें बैठे देखें प्रपंच ॥ ७

जिन बाँधे हैं भवन चौदे, सो नार[6] हमसे रहत है न्यारी ।
दुखमें बैठी सुख लेवे महामती, पारके पार पिआकी प्यारी ॥ ८

॥ प्रकरण ॥ १० ॥ चौपाई ॥ ६२ ॥

## राग केदारो

सुनो भाई संतो कहूँ रे महंतो, तुम अखंड मंडल जान पाया ।
बैस्नव बानी पूछो गुरु ग्यानी, ऐसा अंधेर धंधा क्यों ल्याया ॥ १

जिन गोकुलको तुम अखंड कहत हो, सो तुमारी दृस्टें न आया ।
*सुकजीके वचनमें प्रगट लिख्या है, पर तुमको किने न बताया ॥ २

---

१. पक्षी । २. शेर । ३. सर्प । ४. डरते हैं । ५. सहल । ६. माया (नारी) ।

जाको तुम सतगुरू कर सेवो, ताको इतनी पूछो खबर ।
ए संसार छोड़ चलेंगे आपन, तब कहां है अपनों घर ॥ ३

सबदकी बस्त सोतो महाप्रले लीनी, और ठौर बताओ मोही ।
जाको सुध न आप और घरकी, क्यों पार पावेगा सोई ॥ ४

कोई आप बड़ाई अपने मुखथें, करो सो लाख हजार ।
परमेस्वर होए आप पुजाओ, पर पाओ नहीं भव पार ॥ ५

कोई सुध ए पावे याकी, ऐसी माया सपरानी[1] ।
आपे प्रभु आपे सेवक, मांझे मांझ उरझानी[2] ॥ ६

बाहेर भेख देख भुलाने, तुम भीतर खोज न कींनी ।
भागवत वचन वल्लभी टीका, तुम याकी सुध न लींनी ॥ ७

ए तो हाथमें वस्त कहूँ दूर न देखाऊं, तुम देखो खोज विचारी ।
सांच झूठको प्रगट पारखो, कोई निकसो इन अंधारी ॥ ८

भवसागर और भागवत, याकी कुंजी एक समारी ।
ए दोऊ ताले दोऊ दरवाजे, कोई खोल न सके संसारी ॥ ९

ए संसार बड़ा है कोहेड़ा, और कोहेड़ा भागवत ।
ए दोऊ एक कुंजीसे खोलूं, जो कोई देखूं आगे संत ॥ १०

जो कोई खप[3] करे या निधकी, सो नांखे[4] आप निघात[5] ।
महामत कहें ताए अखंड सुख दीजे, टालिए संसारी ताप ॥ ११

॥ प्रकरण ॥११ चौपाई ॥ १०३ ॥

## राग नट

रेहूँ नाहीं रेहूँ नाहीं सिध साध संत री भगत, ना हूँ बैस्नव अप्रस आचार ।
जात कुटम कुल ऊंच ना नीचमें, ना हूँ *बरन अठार ॥ १

रे हूँ नाहीं व्रत दया संझा न अगिन कुंड, ना हूँ जीव जगन[6] ।
तंत्र न मंत्र भेष न पंथ, ना हूँ तीरथ तरपन ॥ २

---

१. फंसाने वाली । २. उलझा देने वाली । ३. जरूरत समझना । ४. डाले । ५. पूर्ण शान्ति से । ६. बली यज्ञ ।

रे हूँ नाहीं करामात मत अगम निगम, धरम न करम उनमान ।
सुन्न सुखोपत[1] जाग्रत न तुरिया, तप न जप न ध्यान ।। ३

रे हूँ नाहीं अंग इंद्री ग्यान ब्रह्मचारी,[2] ब्रह्मांड न लगत वचन ।
रूप रंग रस धातमें नाहीं, गुन पक्ष[3] दिवस ना रैन ।। ४

रे हूँ नाहीं सबद सोहं[4] जो तत्व पांचमें, ना षट चक्र[5] सिर पवन ।
त्रिकुटी त्रिबेनी तीनोंहीं कालमें, ना अनहद अजपा आसन ।। ५

रे हूँ नाहीं *नवधा[6] में मुक्तिमें भी नाहीं, ना हूँ आवा गमन ।
वेद कतेब हिसाब में नाहीं, ना मांहें बाहेर ना सुंन ।। ६

रे हूँ नाहीं न्यारा जहां हूँ तहां नजीकमें, ना हूँ उनमुनी[7] आकार ।
ना हूँ दृष्टें किन सुनियारी सृष्टें, ना हूँ निराकार ।। ७

तुम सांचे सिध साध भगवत तुमको बैस्नवो, सांच सकल संसार ।
भनत[8] महामत तुम अमर होउ याही में, मैं ना कछू यामें निरधार ।। ८

।। प्रकरण ।। १४ ।। चौपाई ।। १११ ।।

राग गौरी

वचन विचारो रे मीठड़ी, *वल्लभाचारज बानी ।
अरथ लिए बिना ए अंधेरी, करत सबों कौ फानी ।। १

बानीं गाऊं श्री *वल्लभाचारज, ज्यों वैस्नवकों सुख होए ।
सत वचन तो बोहोत न कहूँ, जानों दुख पावे दुष्ट कोए ।। २

ए बानीको टेढ़ा कहावो, ए कौन तुमारा धरम ।
बैस्नव कहाएके उलटे चलिए, ए नहीं तिनके करम ।। ३

देखीते[9] बैस्नव अति सुंदर, नीके बनावत भेख ।
माला तिलक धोए धोती पेहेरें, एक दूजे के देख ।। ४

कौन तुम और कहां तें आए, और कहां है तुमारा घर ।
ए कौन भोम कहां श्री कृस्नजी, पाओगे कौन तर[10] ।। ५

---

१. सोना । २. ब्रह्मचर्य । ३. अंधेरा उजाला पक्ष । ४. वही मैं हूँ । ५. शरीर के अन्दर ध्यान के केन्द्र । ६. नौ प्रकार की भक्ति । ७. नाक की नोक पर ध्यान । ८. कहत । ९. देखने में । १०. तरह ।

उत्तम भेष धरो वैस्नव के, और बैस्नव आप कहाओ ।
जो बैस्नव वस करे नव अंग, सो बैस्नव क्यों न जगाओ ।। ६

तुम पांचके बांधे पांच देखत हो, पांचके चौदे भवन ।
ए पांचो प्रले हो जासी, पीछे कब ढूंढोगे वतन ।। ७

ए बानी तो अप्रस[१] करे आतम, तुम अप्रस करो बाहेर अंग ।
आकार अप्रस किए कहा होए, इने आतमसों कैसो सनमंध ।। ८

तुम झूठको साजो समारो, जो झूठा हो जासी ।
साँचे सुख देवे जो सांचा, सो कबे ओलखासी ।। ९

माहें अंधेर और बैस्नव कहावो, ए तो बातें सब फोक ।
ज्यों धूरत[२] नाम धरावे धनवंत, पासे नहीं दमड़ी रोक ।। १०

विध न लहो विवाद करो, ना देखो वचन विचारी ।
वल्लभ बानी समझे विना, खोवत निध तुमारी ।। ११

अहंकारें कै जुलम करो, ना त्रास[३] सील संतोष ।
गुन अंग इंद्रीके बस परे, ना देखो नजरों दोष ।। १२

धूरत करके ल्याओ धन, खरचो मुख करो उनमाद ।
मेले मेलो मुख भाखो उछव, पातलिएं[४] डालो प्रसाद ।। १३

एक सीत[५] जूठको ब्रह्मा जैसा, जलमें मीन[६] होए आया ।
ए जूठको महातम[७] बानी देखावे, ग्वालोंको चल्लू न कराया ।। १४

ओ हांसी ठठोली[८] करे हरांमी, ताए ले बैठो मंडली मुख ।
ए नीच करम डबोवे नरकमें, पीछे छूट पाओगे कब सुख ।। १५

ए बानी उत्तम चढ़ावे ऊंचे, ए उलटे अधम स्वादे ।
कठिन पंथ चढ़ाए नहीं ऊंचे, पीछे नीचे दौड़े नीच बादे ।। १६

कुकरम करो कुटिल गत चालो, आगे पीछे चौटी हार ।
वल्लभ कुंअर कितनेको बरजे, कै उलटे सेवक संसार ।। १७

---

१. शुद्ध । २. चालबाज । ३. डर । ४. पत्तलों में । ५. कण । ६. मछली । ७. महातम्य । ८. मज़ाक ।

दोस नहीं इन बानी केरो, ए तो दुष्ट दासीकी कमाई ।
अधम सिष्य गुरुको बुरा कहावे, पर सोने म लगत स्याही ॥ १८

ए बानी तुम नाहीं पेहेचानी, यामें विध विधके प्रकास ।
इन प्रकासमें खेलें श्रीकृस्नजी, रमें अखंड लीला रास ॥ १९

तुम पनधारी[1] आतम निवेदी, बानी न देखो विचारी ।
अजूं न मानो तो इत आओ, मैं देखाऊं लीला तुमारी ॥ २०

वैस्नव होए सो वचन मानसी, औंर जो वल्लभ बानीसे टलिया ।
महामत कहें सो काहेको जनम्या, गर्भ माहें क्यों न गलिया ॥ २१

॥ प्रकरण ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ १३२ ॥

## राग श्री

आज सांच केहेना सो तो काहूं ना रुचे, तो भी कछुक प्रकासूं सत ।
सतके साथीको सतके बान चूभसी, दुष्ट दुखासी दुरमत ॥
अखंड सुख लागियो ॥ १ ॥

वेदने पुरान सास्त्र सब उपजे, पीछे भारत[2] परव अठार ।
दाझ न मिटी तिन व्यासकी, पीछे उदयो भागवत सार ॥ २

ए सुखकी सागर सत बानी प्रगटी, सो लई साधों विचार ।
अधिक अमृत सुकें[3] सींचिया, तिन देखाए दरवाजे पार ॥ ३

भले या जुगमें आचारज[4] प्रगटे, जिन चरची सुकजीकी बान ।
धंन धंन टीका श्री वल्लभी, इन प्रेम प्रकास्यो प्रमान ॥ ४

आए मिलो रे वैस्नव पारखी, तुम देखियो विचारी सब अंग ।
टीका वल्लभी बानी सुकदेवकी, ताके एक अक्षरको न कीजे भंग ॥ ५

इत बृन्दावन रासलीला रातडी अखंड, खेलें पीउ गोपी जन ।
तो उद्धव संदेसे किन पर ल्याइया, कहो किनने किए रुदन ॥ ६

---

१. नियमों में बंधे । २. महाभारत । ३. शुकदेव मुनि । ४. वल्लभाचार्य ।

इत रात अखंड सो तो टाली न टले, भी कह्या आगे ऊग्या रे दिन ।
सखियां पीउ उठे सब घरसे, ए घर कौन रे उतपंन ॥ ७

व्रज अखंड ब्रह्मांडमें हुआ, विचार देखो रे बुधवंत ।
एक रंचक न राखी चौदे लोककी, महाप्रले कह्यो ऐसो अंत ॥ ८

ब्रज ने रास अखंड कहे प्रगट, सो तो नित नित नवले रंग ।
एक रंचक रहे जो ब्रह्मांडकी, तो टीका को होवे रे भंग ॥ ९

रात दिन अखंड कहे व्रजमें, दिन नाहीं बृन्दाबन रास ।
रात अखंड लीला खेलहीं, दोऊ कैसे अखंड विलास ॥ १०

व्रज रास लीला दोऊ नित कही, खेलें दोऊ लीला बाल[1] किसोर[2] ।
तो मथुरा आए कंस किनने मारचा, ए कौन भई *तीसरी लीला और ॥ ११

कहो के भूला टीका करता, के भूले तुम अरथ ।
सो जुबाँ काटिए जो टीकाको टेढ़ा कहे, तुम भूले करत अनरथ ॥ १२

तुम आँकड़ी न पाई इत अखंड कह्या, तोए न खुले रे द्वार ।
तुम समझे नहीं बानी सुकदेवकी, तो हिरदे रह्यो रे अंधकार ॥ १३

अरथ टीका का जो तुम पाया होता, तो अंधेर को होत नास ।
अनेक ब्रह्मांड जाके पलथें उपजे, ताको देखत इत उजास ॥ १४

तुमको बल जो खुल्या होता इन बानीका, तो भटकत नहींरे भरम ।
इतथें देखो अखंड लीला प्रगट, तब समझत मायाको मरम ॥ १५

तुम सब मिल दौड़े अखंड सुखको, सुन प्रेम टीका के वचन ।
अरथ पाए विना प्रेमें ले पटके, कहूं उलटाए दिए रे अगिन ॥ १६

इन व्रज रेंनको[3] ब्रह्मा बोहोत तलफया, पर पाई नहीं रे निरवान[4] ।
सो सुखें[5] तुम कैसे पाओगे, देखो अपनी चालके निसान ॥ १७

ए झूठा भवजल अथाह कह्या, ताको पार न पायो किन क्यांहें ।
याको गौपद बच्छ कर गोपी निकसी, सो पार जाए मिली अखंड मांहें ॥ १८

---

१. बाल कृष्ण । २. रास के कृष्ण । ३. रेणू । ४. मुक्ति । ५. आसानी से ।

अब केता कहूं तुमकों जाहेर, ए अर्थ प्रगट कह्यो न जाए ।
निघात[1] डारे छोड़ लज्या अहंकार, नेहेचल[2] सुख दीजे रे ताए ॥ १९

ए प्रकास विचार तुम देख्या नाहीं, तुम बैभवें[3] लगे रे विलास[4] ।
अब महामत कहें जोत उद्योत[5] भई, ताको इत आए देखो रे उजास[6] ॥ २०

॥ प्रकरण ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ १५२ ॥

## राग सोरठ

धनी न जाए किनको धूत्यो[7], जो कीजे अनेक धुतार ।
तुम चेहेन[8] ऊपरके कै करो, पर छूटे न क्योंए विकार ॥ १

कोई बढाओ कोई मुड़ाओ, कोई खैंच काढ़ो केस ।
जोलों आतम न ओलखी, कहा होए धरे बहु भेस ॥ २

चार बेर चौका देओ, लकड़ी जलाओ धोए जल ।
अप्रस करो बाहेर अंग को, पर मन ना होए निरमल ॥ ३

सात बेर अस्नान करो, पेहेनो ऊंन उत्तम कामल[9] ।
उपजो उत्तम जातमें, पर जीवड़ा न छोड़े बल ॥ ४

सौ माला बाओ गलेमें, द्वादस करो दस बेर ।
जोलों प्रेम न उपजे पीउसों, तोलों मन न छोड़े फेर ॥ ५

तान मान कै रंग करो, अलापी करो किरंतन ।
आप रीझो औरों रिझाओ, पर बस न होए क्योंए मन ॥ ६

उच्छव[10] करो अंनकूट का, विविध करो प्रसाद[11] ।
पर निकट न आवें नाथजी, पीछे सब मिल करो स्वाद ॥ ७

सीखो सबे संस्कृत, और पढ़ो सो वेद पुरान ।
अर्थ करो द्वादस के, पर आप न होए पेहेचान ॥ ८

साधो सबे जोगारंभ, अनहद अजपा आसन ।
उड़ो गड़ो चढ़ो पांचमें, आखर सुंन न छोड़ी किन ॥ ९

---

१. निःसंकोच । २. स्थाई । ३. ऐश्वर्य । ४. मनोरंजन । ५. चमक । ६. प्रकाश । ७. ठगा ।
८. (चिह्न) चारित्र । ९. कम्बल । १०. उत्सव । ११. कई प्रकार के मिष्टान ।

आगम[1] भाखो मनकी परखो, सूझे चौदे भवन ।
मृतक को जीवत करो, पर घरकी न होवे गम ।। १०
सतगुर सोई जो आप चिन्हावे, माया धनी और घर ।
सब चीन्ह परे आखर की, ज्यों भूलिए नहीं अवसर ।। ११
ए पेहेचाने सुख उपजे, सनमंध धनी अंकूर ।
महामत सो गुरु कीजिए, जो यों बरसावे नूर ।। १२

।। प्रकरण ।। १५ ।। चौपाई ।। १६४ ।।

राग श्री

पतित सिरोमन[2] यों कहे

जो मैं किए हैं बज्रलेप, मेरे साहेबसों द्वेष ।। १
पतित मेरे आगे कौन कहावे, मैं कोई न देख्या रे पतीत[3] ।
ए सब कोई साध चलत हैं सीधे, जो देखिए अपनी रीत ।। २
दुनियाँ सकल चलत है पैंडे[4], जो साध बड़ोंने बताया ।
उलटा कोई नहीं रे यामें, पतित किने न केहेलाया ।। ३
उलटा एक चलत हों यामें, मैं छोड़ी दुनियांकी राह ।
तोड़ी मरजाद[5] बिगड़्या विस्वथें, मैं तो पतितनको पातसाह ।। ४
सूर जैसे पतित कहावें, और की सोभा आप देवे ।
ओ अंधा राँक[6] गरीब साधजो, सो क्यारे पतीती लेवे ।। ५
नामधारी पतित जो हुते, जिन जुध जगपतिसों किए ।
जगपति जगमें बड़ा जोरावर, तिन मार चरन तले लिए ।। ६
या जगमें ए क्या रे पतीती, कोई न पोहोंच्या पार ।
बोहोत दौड़े सो सुंन तोड़ी, आड़ी पड़ी निराकार ।। ७
मैं उलटाए आतम जुगतें जगाई, पार की तरफ फिराई ।
सुंन निराकार पार पर आतम, मैं ता पर द्रष्टि चढ़ाई ।। ८
अगमके पार जो अलख कहावे, मैं तिनसों जाए जुध लिया ।
इहाँ लग और सबद नहीं सीधा, सो प्रगट पकड़के किया ।। ९

१. भविष्य वाणी । २. सबसे उत्तम । ३. गिरा हुआ । ४. धर्म पंथ । ५. मर्यादा ।
६. बेचारा ।

इन आतम को घर एही अक्षर है, ए तो पारब्रह्म परखाया ।
ए जुध जीत्या मैं सेहेजे, सतगुरुजी की दया ।। १०

अब अक्षरके पार में जुध बनाऊँ, सकल आउध[1] अंग साजूं ।
प्रेमकी सैन्या प्रगट चलाऊँ, कंठ अक्षरातीत मिलाऊँ ।। ११

पतित ऐसी पुकार न कीजे, पर मोकों इन चोटें अगिन लगाई ।
बोहोत बरस में राखी अंदर, अब तो ढाँपी न जाई ।। १२

पारके पार पार जाए पोहोंच्या, जीवत अखंड सुख पाया ।
पतितनके सिर महामत मुकुट मनि, जिन ए जुध जगमें लखाया ।। १३

।। प्रकरण ।। १६ ।। चौपाई ।। १७७ ।।

राग श्री

दुख रे प्यारो मेरे प्रानको

सो में छोड़्यो क्योंकर जाए, जो में लियो है बुलाए ।। १

इन अवसर दुख पाइए, और कहा चाहिएत है तोहे ।
दुख बिना चरन कमलको, सखी कबहूं न मिलिया कोए ।। २

जिन सुख पीउजी ना मिले, सो सुख देऊं जलाए ।
जिन दुख मेरा पीउ मिले, मैं सो दुख लेऊं बुलाए ।। ३

दुख तो हमारो अहार[2] है, औरन को दुख खाए ।
दुखके भागे सब फिरे, कोई बिरला साध निबाहे ।। ४

दुखको निबाहू ना मिले, और सुखको तो सब ब्रह्मांड ।
इन झूठे दुखथें भाग के, खोवत सुख अखंड ।। ५

दुखकी प्यारी प्यारी पीउकी, तुम पूछो वेद पुरान ।
ए दुख मोहीको भला, जो देत हैं अपनी जान ।। ६

ता कारन दुख देत हैं, दुख बिना नींद न जाए ।
जिन अवसर मेरा पीउ मिले, सो अवसर नींद गमाए ।। ७

१. हथियार । २. भोजन ।

नींद बुरी या भरम की, भरम तो भई आड़ी पाल ।
वह सुख देत जलाए के, जो आड़ी[1] भई अपने लाल ॥ ८

नींद निगोड़ी ना उड़ी, जो गई जीवको खाए ।
रात दिन अगनी जले, तब जाए नींद उड़ाए ॥ ९

इन सुपने के दुखसे जिन डरो, दुख बदले सत सुख ।
अपने मासूकसों नेहड़ा,[2] तोकों देयगो बनाएके दुख ॥ १०

ता सुखको कहा कीजिए, जो देखलावे धरमराए[3] ।
मैं वह दुख मांगूं पीउपें, जो पीउसों पल पल रंग चढ़ाए ॥ ११

दुख सब सुपनो होए गयो, अखंड सुख भोर[4] भयो ।
महामत खेलें अपने लालसों, जो अक्षरातीत कह्यो ॥ १२

॥ प्रकरण ॥ १७ ॥ चौपाई ॥ १८९ ॥

राग श्री

सखीरी आतम रोग बुरो लग्यो, याको दारू[5] ना मिले तबीब[6] ।
चौदे भवनमें न पाइए, सो हुआ हाथ हबीब[7] ॥ १

आतम रोग कासों कहिए, जिन पीठ दई पर आतम ।
ए रोग क्योंए ना मिटे, जो लों देखे ना मुख ब्रह्म ॥ २

सो हबीब क्यों पाइए, कै कर कर थके उपाए ।
सास्त्र देखे सब सबद, तिन दुख दिया बताए ॥ ३

सखीरी तार्थे दुख प्यारो लग्यो, अंदर देखो विचार ।
सो दुख कैसे छोड़िए, जासों पाइए पीउ मनुहार[8] ॥ ४

दुनीके सुख दिए में तिनको, जो कोई चाहे सुख ।
जिनसे मेरा पीउ मिले, मैं चाहूं सो दुख ॥ ५

दुख प्यारो है मुझको, जासों होए पीउ मिलन ।
कहा करूं मैं तिन सुखको, आखर जित जलन ॥ ६

---

१. रोक । २. स्नेह । ३. धर्मराज । ४. प्रातःकाल । ५. दवा । ६. वैद्य । ७. प्रियतम (परमात्मा) । ८. लाड प्यार ।

बड़ीमत के जो धनी[1] कहे, होए गए जो आगे ।
तिन भी धनी मिलनको, दुख धनीपें माँगे ॥ ७

जब बिछोहा धनी का, तब दुखमें धनी विलास[2] ।
उन दुखके विलासमें, पोहोंचाए देत धनी आस ॥ ८

कहा करूं तिन सुखको, जिनसें होइए निरास ।
ए झूठा सुख है छलका, सो देत मायाकी फाँस ॥ ९

दुखसे पीउजी मिलसी, सुखें न मिलिया कोए ।
अपने धनीका मिलना, सो दुखै से होए ॥ १०

दुख बड़ो पदारथ,[3] जो कोई जांने ए ।
ताथें सुखको छोड़ के, दुख ले सके सो ले ॥ ११

रात दिन दुख लीजिए, खाते पीते दुख ।
उठत बैठत दुख चाहिए, यों पीउसों होइए सनमुख[4] ॥ १२

इन दुखसे कोई जिन डरो, इन दुखमें पीउको सुख ।
जो चाहत हैं सुख को, आखर तिनमें दुख ॥ १३

दुख बिना न होवे जागनी, जो करे कोट उपाए ।
धनी जगाए जागहीं, ना तो दुख बिना क्योंए न जगाए ॥ १४

दुख खांनां दुख पीवना, दुखै हमारो आहार ।
दुनियां को दुख खात है, तो दुखथें भागत संसार ॥ १५

दुखतें विरहा उपजे, विरहे प्रेम इसक ।
इसक प्रेम जब आइया, तब नेहेचे[5] मिलिए हक ॥ १६

दुख सोभा दुख सिनगार, दुखही को सब साज ।
दुख ले जाए धनीपें, इन सुखतें होत अकाज ॥ १७

तो दुख सारोंने मांगया, बड़ी बुधवालोंने जाग ।
दुखसें अपने पीउका, आवत विरह बैराग ॥ १८

---

१. स्वामी । २. आनन्द । ३. वस्तु । ४. सामने । ५. निश्चित ।

दुख बस्तर दुख भूखन, दुखथें निरमल देह ।
जो दुख प्यारो जीवको लगे, तो उपजे सत सनेह ॥ १९

दुख दावानल[१] काटत, और काटत सकल विकार ।
दुख काटत मूल मायाको, बढ़े नहीं विस्तार ॥ २०

दुख दसों द्वार भेदया, और दुख भेदयो रोम रोम ।
यों नख सिख दुख प्यारो लगे, तो कहा करे छल भोम ॥ २१

सुख मायाको मूल है, सो चाहे बढ़्यो विस्तार ।
तिन साधो सुख तजिया, वास्ते अपने करतार ॥ २२

बारीक बातें दुखकी, जो कदी लगे मिठास ।
तो टूट जात है ए सुख, होत मायाको नास ॥ २३

ए दुख बातें सोई जानही, जाको आई वतन खुसबोए[२] ।
ए दुख जानें अरस अंकूरी, माया जीव न जाने कोए ॥ २४

जो माया मोहथें उपजे, सो क्या जांने दुखके सुख ।
जो मायाको सुख जांनही, तार्थें हुए बेमुख ॥ २५

कुरान पुरान में देखिया, कही दुखकी बड़ाई ।
साध बड़ों बड़ाई दुखकी, लड़ाए लड़ाएके गाई ॥ २६

मोल तोल ना दुखको, कोई नाहीं इन बराबर ।
जिन दुखथें धनी पाइए, ताको मोल होवे क्योंकर ॥ २७

दुख तो महंगे मोलको, मैं देख्या दिल ल्याए ।
दुनियां सब भागी फिरे, कोई न सके उचाए[३] ॥ २८

मैं तो चाहया सुखको, पर धनीकी मुझ पर मेहेर[४] ।
तार्थें दुख फेर फेर लिया, अब सुख लागत है जेहेर[५] ॥ २९

जो साहेब सनकूल[६] होवहीं, तो दुख आवे तिन ।
इन दुनियां में चाह कर, दुख ना लिया किन ॥ ३०

---

१. अग्नि । २. सुगन्धि । ३. उठा सकना । ४. कृपा । ५. विष । ६. प्रसन्न ।

दुख देवे दिवानगी,[१] स्यानप[२] देवे उड़ाए ।
ताथें दुख कोई ना लेवही, सब सुख स्यानप चाहे ॥ ३१

चांहन वाले दुख के, दुनियांमें ढूंढ़ देख ।
ब्रह्मांड यार है सुखको, दुख दोस्त हुआ कोई एक ॥ ३२

जाको स्वाद लग्यो कछू दुखको, सो सुख कबूं न चाहे ।
वाको सो दुख फेर फेर, हिरदें चढ़ चढ़ आए ॥ ३३

महामत कहें इन दुखको, मोल ना कियो जाए ।
लाख बेर सिर दीजिए, तो भी सरभर[३] न आवे ताए ॥ ३४

॥ प्रकरण ॥ १८ ॥ चौपाई ॥ २२३ ॥

राग श्री

मैं तो बिगड़या विस्वथें बिछुड़या, बाबा मेरे ढिग[४] आओ मत कोई ।
बेर बेर बरजत[५] हों रे बाबा, ना तो हम ज्यों बिगड़ेगा सोई ॥ १

मैं लाज मत पत दई रे दुनीको, निलज होए भया न्यारा ।
जो राखे कुल वेद मरजादा, सो जिन संग करो हमारा ॥ २

लोक सकल दौड़त दुनियांको, सो मैं जांनके खोई ।
मैं डारचा घर जारचा[६] हंसते, सो लोक राखत घर रोई ॥ ३

देत देखाई सो मैं चाहत नाहीं, जा रंग राची[७] लोकाई[८] ।
मैं सब देखत हों ए भरमना, सो इनों सत कर पाई ॥ ४

मैं कहूं दुनियां भई बावरी,[९] ओ कहे बावरा मोही ।
अब एक मेरे कहे कौन पतीजे,[१०] ए बोहोत झूठे क्यों होई ॥ ५

चितमें चेतन अंतरगत[११] आपे, सकलमें रह्या समाई ।
अलखको घर याको कोई न लखे, जो ए बोहोत करें चतुराई ॥ ६

सतगुरु संगे मैं ए घर पाया, दिया पारब्रह्म देखाई ।
महामत कहें मैं या विध बिगड़चा, तुम जिन[१२] बिगड़ो भाई ॥ ७

॥ प्रकरण ॥ १९ ॥ चौपाई ॥ २३० ॥

---

१. पागलपन । २. चातुर्य । ३. बराबर । ४. पास । ५. रोकता । ६. जलाया । ७. मग्न । ८. जनता । ९. दीवानी । १०. विश्वास करें । ११. अन्तर में । १२. मत ।

राग श्री

तुम समझके संगत कीजो रे बाबा, मुझ जैसा दिवाना न कोई ।
जाहीसों लोक लज्या पावे, सो तो मोहे बड़ाई ।। १

मैं तो बात करूं रे दिवानी, दुनियां तो स्यानी सुजान[1] ।
स्याने दिवाने संग क्यों कर होवे, तुम मिलियो मोहे पेहेचान ।। २

मैं त्रैलोकी अगिन कर देखी, दुनियां को सो सुख ।
दुनियां को अमृत होए लागी, मोहे लागत है विख ।। ३

जब मैं मरम[2] पायो मोहजल को, तब मैं भाग्या रोई ।
डर के ऊबट[3] चल्या उबाटे, बाट बड़ी मैं खोई ।। ४

अहिनिस डर आया मेरे अंगमें, फिरचा दिलड़ा भया दिवाना ।
भलो बुरो कहे सो मैं कछू न देखों, भागवे को मैं स्याना ।। ५

मैं छोड़े कुटम सगे सब छोड़े, छोड़ी मत स्वांत[4] सरम ।
लोक वेद मरजादा छोड़ी, भाग्या छोड़ सब धरम ।। ६

ए सूरे पांऊं धरें क्यों पीछे, इनको तो लज्या लागे ।
देवें सीस सकल सुख खोवें, पर भाइयों को छोड़ न भागे ।। ७

ए मिलके मरद चलें ज्यों महीपत,[5] जांनो पड़ता अंबर[6] पकड़सी ।
मोहे अचंभा ए डरें नहीं किनसों, पर ए खेल केते दिन रेहेसी ।। ८

देखत काल पछाड़त पलमें, तोभी आंख न खोलें ।
आप जैसा और कोई न देखें, मदछाके[7] मुख बोलें ।। ९

इनमें से नाठ्या[8] मैं निसंक[9] काएर होएके, फेर न देख्या ब्रह्मांड ।
*सुंन *निरंजन छोड़ मैं न्यारा, जाए पड़या पार अखंड ।। १०

अब तो कछुए न देखत मदमें, पर ए मद है पल मात्र ।
महामत दिवाने को कह्यो न मानत, सो पीछे करसी पछताप ।। ११

।। प्रकरण ।। २० ।। चौपाई ।। २४१ ।।

---

१. चतुर । २. भेद । ३. ऊबड़ खाबड़ राह । ४. शान्ति । ५. सम्राट । ६. आकाश ।
७. मस्ती भरे । ८. भागा । ९. निःसंकोच ।

## राग आसावरी

### साधो या जुगकी ए बुध

दुनियां मोह मदकी छाकी, चली जात बेसुध ॥ १

दुनी दुनीपें चाहे दुनियां, तार्थें करामात ढूंढ़े ।
पीछे दोऊ बराबर संगी, तब दे सिछा[1] और मूंड़े[2] ॥ २

साधो केहेर[3] कही करामात, ए दुनियां तित राचे ।
झूठी दृष्टि जो बांधी झूठसों, तार्थें दिल ना लगत क्योंए सांचे ॥ ३

कौन मैं कहांको कहां थें बिछुरचो, कौन भोम ए छल ।
गुरु सिष्य ग्यान कथें पंथ पैंड़े, पर एती न काहूं अकल ॥ ४

या घरमें या बनमें रहे, पर कहा करे विना सतगुर ।
तो लों मकसूद[4] क्यों कर होवे, जो लों पाइए ना अखंड घर ॥ ५

सतगुरु सोई जो वतन बतावे, मोह माया और आप ।
पार पुरुष जो परखावे,[5] महामत तासों कीजे मिलाप ॥ ६

॥ प्रकरण ॥ २१ ॥ चौपाई ॥ २४७ ॥

## राग सारंग

### चल्यो जुग जाएरी सुध विना

सुध बिना सुध बिना सुध बिना, चल्यो जुग जाए री सुध बिना ॥ १

*मूलप्रकृति मोह अहं थें, उपजे तीनों गुन[6] ।
सो पाँचोमें पसरे, हुई अंधेरी चौदे भवन ॥ २

प्रले प्रकृती जब भई, तब पांचों चौदे पतन[7] ।
मोह अहं सबे उड़े, रहे सरगुन ना निरगुन ॥ ३

तब जीवको घर कहां रह्यो, कहां खसम वतन ।
गुरु सिष्य नाम बोहोतों धरे, पर ए सुध परी न किन ॥ ४

---

१. शिक्षा । २. लूटते हैं । ३. कहू-दैवी कोप । ४. उद्देश्य पूर्ति । ५. पहचान कराए । ६. सत्व, रज, तम । ७.नाश ।

ऊपर तले माहें बाहेर, खोज्या कैयों जन ।
नेहेचल न्यारा सबनसे, ए ठौर न पाई किन ।। ५

*निराकार कासों कहिए, कासों कहिए *निरंजन ।
क्यों व्यापक[1] क्यों होसी फना, एता न कह्या किन ।। ६

क्यों सरूप है प्रकृति को, क्यों मोह क्यों सुंन ।
क्यों सरूप जो काल को, ए नेहेचे करी न किन ।। ७

पंथ पैंड़े सब चलहीं, कै दीन दरसन ।
ना सुध आप ना पारकी, ए सुध परी न किन ।। ८

कौन सरूप है आतमा, पर आतम कह्या क्यों भिन ।
सुध ठौर ना सरूप की, ए संसे[2] भान्यो[3] न किन ।। ९

महामत सो गुर पाइया, जो करसी साफ सबन ।
देसी सुख नेहेचल, ऐसी कबहूं ना करी किन ।। १०

।। प्रकरण ।। २२ ।। चौपाई ।। २५७ ।।

राग श्री

रे हो दुनियां बावरी, खोवत जनम गमार[4] ।
मदमातो मायाकी छाकी, सुनत नहीं पुकार ।। १

अपनी छायासों आप बिगूती,[5] बल खोए चली हार ।
आग बिना जलत अंगमें, जल बल होत अंगार ।। २

सत सबद को कोई न चीन्हे, सूने हिरदें नहीं संभार ।
समझे साध जो आपको देखें, तामें बड़ी अंधार[6] ।। ३

रे यामे केते आप कहावें स्याने, पर छूटत नहीं विकार ।
स्यानप लेके कंठ बंधाए, या छल रच्यो है नार ।। ४

रे मूढ़मती या फंदमें उरझे, उपजत नहीं विचार ।
आप न चीन्हें घर ना सूझे, ना लखें रचनहार[7] ।। ५

---

१. सबमें फैला । २. शक । ३. दूर किया । ४. गंवार । ५. गुंथी हुई । ६. अज्ञान । ७. परमात्मा ।

अपनी मत ले ले साधू बोले, सबद भए अपार ।
बोहोत सबदको अरथ न उपजे, या बल सुपन धुतार[1] ॥ ६
यामें सतगुर मिलें तो संसे भानें, पैंड़ा[2] देखावें पार ।
तब सकल सबदको अरथ उपजे, सब गम पड़े संसार ॥ ७
तब बल ना चले इन नारी को, लोप[3] न सके लगार[4] ।
महामत यामें खेलत पिआ संग, नेहेचल सुख निरधार ॥ ८

॥ प्रकरण ॥ २३ ॥ चौपाई ॥ २६५ ॥

राग गौरी

रे हो दुनियांको तूं कहा पुकारे, ए सब कोई हैं स्याना ।
ए मदमाती अपने रंग राती, करत मनका मान्या ॥ १
रे हो याही फंदमें साध संतरी, पुकार पुकार पछताना ।
कोई कहे दुनियां बुरी करत है, कोई भली कहे भुलाना ॥ २
रे हो बोहोत दिन बिगुती[5] यामें, कर कर ग्यान गुमाना[6] ।
चुप कर चतुराई लिए जात है, तूं न कर निंदा न बखाना ॥ ३
रे तूं कर तेरी होत अबेरी,[7] आप न देखे उरझाना ।
अब तूं छोड़ सकल विध, जात अवसर तेरा जान्या ॥ ४
एही सबद एक उठे अवनीमें[8], नहीं कोई नेह समाना ।
पेहेचान पीउ तूं अक्षरातीत, ताही से रहो लपटाना ॥ ५
अहिनिस आवेस हूअड़ा[9] अंगमें, फिरघा दिलड़ा हुआ दिवाना ।
महामत प्रेमें खेले पिआसों, ए मद है मस्ताना[10] ॥ ६

॥ प्रकरण ॥ २४ ॥ चौपाई ॥ २७१ ॥

राग केदारो

रे मन भूल ना महामत,[11] दुनियां देख तूं आप संभार ।
ए नाहीं दुनियां बावरी, ए रच्यो माया ख्याल ॥ १

---

१. धोखे बाज । २. राह । ३. नाश । ४. जरा भी । ५. उलझी । ६. अभिमान । ७. देर । ८. धरती । ९. आया । १०. मस्ती भरा । ११. सुमति (महान बुद्धि) ।

रे मन त्रिषा[१] न बुझे तेरी झांझुए,[२] प्रतिबिंब पकड्यो न जाए ।
ज्यों जलचर जल बिना ना रहे, जो तूं करे अनेक उपाए ॥ २

रे मन सृष्टि सकल सुपनकी, तूं करे तामें पुकार ।
असत सतको ना मिले, तूं छोड़ आप विकार ॥ ३

रे मन सुपनका घर नीदमें, सो रहे न नीद बिगर[३] ।
याको कोट बेर परमोधिए,[४] तो भी गले नहीं पत्थर ॥ ४

वासना होएगी बेहद की, सो क्यों छोड़े अपनी पर ॥ ।
ओ सुपनमें एक सबद सुनते, उड़जासी नीदर ॥ ५

सत सबदकों सोई चीन्हे, जो होए वासना ब्रह्म ।
ए तो असत उलटिए खेल रच्यो है, देत देखाई सब भरम ॥ ६

असत तिनको भरम कहिए, होत है जिनको नास ।
ए तो चौदे चुटकीमें चल जासी, यों कहत सुकजी व्यास ॥ ७

तूं उलट याको पीठ दे, प्रेमें खेल पिआसों रंग ।
ओ आए मिलेंगे आपही, जासों तेरा है सनमंध ॥ ८

तेरे संगी तोहे अबहीं मिलेंगे, तूं करे क्यों न करार[५] ।
महामत मनको दृढ़ कर, समरथ स्याम भरतार[६] ॥ ९

प्रकरण ॥ २५ ॥ चौपाई ॥ २८० ॥

राग गौरी

रस मगन भई सो क्या गावे

बिचली[७] बुध मन चित मनुआ, ताए सबद सीधा मुख क्यों आवे ॥ १

विचले नैन श्रवन मुख रसना,[८] विचले गुन पख[९] *इंद्री अंग ।
विचली भांत गई गत[१०] प्रकृत, विचल्यो संग भई और रंग ॥ २

विचली दिसा अवस्था[११] चारों, विचली सुध ना रही सरीर ।
विचल्यो मोह अहंकार मूलथें, नैनों नींद न आवे नीर ॥ ३

१. प्यास । २. मृगजल । ३. बिना । ४. उपदेश दीजिए । ५. चैन । ६. पति । ७. विचिलित हुई । ८. जिह्वा । ९. शरीर का दायां बांया भाग । १०. गति । ११. नीद, सुपन, जाग्रत, तुरिया ।

विचल गई गम वार पारकी, और अंग न कछुए सान ।
पिआ रसमें यों भई महामत, प्रेम मगन क्यों करसी गांन ॥ ४

॥ प्रकरण ॥ २६ ॥ चौपाई ॥२८४ ॥

## राग मारू

खोज बड़ी संसार रे तुम खोजो साधो, खोज बड़ी संसार ।
खोजत खोजत सतगुरु पाइए, सतगुरु संग करतार ॥ १
भगत होत भगवान की, किव[1] कर कहावें सिध साध ।
गुन अंग इंद्री के बस परे, तार्थे बांधत बंध अगाध[2] ॥ २
सतगुर क्यों पाइए कुलीमें, भेखें विगाड़यो बैराग ।
डिभकाइएं[3] दुनियाँ डबोई, बाहेर सीतल माहें आग ॥ ३
गोविंदके गुन गाए के, तापर मांगत दान ।
धिक धिक पड़ो ते मानवी, जो बेचत हैं भगवान ॥ ४
उदर[4] कारन बेचें हरी, मूढ़ों एही पायो रुजगार ।
मारते मुख ऊपर, वाको ले जासी जम द्वार ॥ ५
बैठत सतगुरु होए के, आस करें सिष्य केरी ।
सो डूबे आप सिष्यन सहित, जाए पड़े कूप अंधेरी ॥ ६
जो माँहें निरमल बाहेर देवे न देखाई, वाको पारब्रह्मसों पेहेचान ।
महामत कहें संगत कर वाकी, कर वाहीसों गोष्ट[5] ग्यान ॥ ७

॥ प्रकरण ॥ २७ ॥ चौपाई ॥ २९१ ॥

## किरंतन वेदांत के राग जेतसी

कहो कहोजी ठौर नेहेचल, वतन कहां ब्रह्मको । ॥ टेक ॥
तुम तीन सरीर[6] तज भए ब्रह्म, पायो पूरन ग्यान ।
जो लों संसे ना मिटे, साधो तो लों होत हैरान ॥ १

---

१. कवि । २. अथाह । ३. पाखंड । ४. पेट । ५. चर्चा । ६. स्थूल सूक्ष्म कारण ।

*वेदांती संतो महंतो, तुम पायो अनुभव सार ।
निज वतन जो आपनों, तुम सोई करो निरधार[१] ॥ २

पेहेले पेड़ देखो माया को, जाको न पाइए पार ।
जगत जनेता[२] जोगनी, सो कहावत बाल कुमार ॥ ३

मात पिता बिन जनमी, आपे बंझा[३] पिंड ।
पुरुष अंग छूयो नहीं, और जायो सब ब्रह्मांड ॥ ४

आद अंत याको नहीं, नहीं रूप रंग रेख ।
अंग न इंद्री तेज न जोत, ऐसी आप अलेख ॥ ५

जल जिमी न तेज वाए, ना सोहं[४] सबद आकास ।
तब ए आद अनाद की, जब नहीं चेतन प्रकास ॥ ६

पढ़ पढ़ थाके पंडित, करी न निरने किन ।
त्रिगुन त्रिलोकी होए के, खेले तीनों काल मगन ॥ ७

विस्नु ब्रह्मा रुद्र जनमें, हुई तीनों की नार ।
निरलेप काहू न लेपही, नारी है पर नाहीं आकार ॥ ८

गगन[५] पाताल मेर[६] सिखरों,[७] अस्टकुली[८] बनाए ।
पचास कोट जोजन जिमी, सागर सात समाए ॥ ९

तेज तिमर यामें फिरें, रवि ससि तारे न थिर[९] ।
सेस नाग कर ब्रह्मांड, ले धरयो वाके सिर ॥ १०

देव दानव रिषी मुनि, ब्रह्मग्यानी बड़ी मत ।
सास्त्र बानी सबद मात्र, ए बोली सबे सरस्वत[१०] ॥ ११

*बरन चारो *विदया चौदे, पढ़ाए भली पर ।
कर आवरन[११] मोह नीद को, खेलावे नारी नर ॥ १२

लाख चौरासी जीव जंत, ए बांधे सबे निरवान ।
थिर चर आद अनाद लों, ए भरी चारो खांन[१२] ॥ १३

---

१. निश्चित । २. जन्म देने वाली । ३. बांझ । ४. (सो अहं) वही मैं हूँ । ५. आकाश । ६. पर्वत । ७. शिखरों । ८. आठ पर्वतों का समूह । ९. टिकने वाले । १०. सरस्वती देवी । ११. पर्दा । १२. खजाना ।

पांच तत्व चौदे लोक, पाउ पलमें उपजाए ।
खेल ऐसे अनेक रचे, नार[1] *निरंजन राए ॥ १४

ए कालो किन पाई नहीं, सब छायामें रहे उरझाए ।
उपजे मोह अहंकार थें, सो मोह में भरमाए ॥ १५

बुध तुरिया दृष्टि श्रवना, जेती गम[2] वचन ।
उतपन सब होसी फना, जो लों पोहोंचे मन ॥ १६

ऊपर तले मांहें बाहेर, दसो दिसा सब एह ।
सो सबद कहूं न पाइए, कह्या ठौर अखंड घर जेह ॥ १७

तो कह्यो न जाए मन वचन, ना कछू पोहोंचे चित ।
बुधे[3] सुनी न निसानी श्रवनों, तो क्यों कर जाइए तित ॥ १८

वेदांती माया को यों कहें, काल तीनों जरा भी नाहें ।
चेतन व्यापी जो देखिए, सो भी उड़ावें तिन माहें ॥ १९

ना कछु ना कछु ए कहें, ओ सत चिद आनंद ।
असत सत को ना संग, ए क्यों कर होए सनमंध ॥ २०

ए जो व्यापक आतमा, पर आतम के संग ।
क्यों ब्रह्म नेहेचल पाइए, इत बीच नार को फंद ॥ २१

निबेरा[4] खीर नीर का, महामत करे कौन और ।
माया ब्रह्म चिन्हाए के, सतगुरु बतावें ठौर ॥ २२

॥ प्रकरण ॥ २८ ॥ चौपाई ॥ ३१३ ॥

## राग आसावरी

में पूछों पांड़े तुम को, तुम कहो करके विचार ।
सास्त्र अरथ सब लेवहीं, पर किने न कियो निरधार[5] ॥ १

माया मोह अहंकार थें, ए सबे उतपन ।
अहंकार मोह माया उड़ी, तब कहां है ब्रह्म वतन ॥ २

---

१. माया । २. पहुँच । ३. बुद्धि । ४. निपटारा । ५. निश्चित ।

कोई कहे ब्रह्म आतमा, कोई कहे पर आतम ।
कोई कहे सोहं सबद ब्रह्म, या बिध सब को अगम ॥ ३

कोई कहे सब ब्रह्म, रहत सबनमें व्याप[१] ।
कोई कहे ए सबे छाया, नहीं यामें आप ॥ ४

कोई कहे ओ *निरगुन न्यारा, रहत सबन से असंग ।
कोई कहे ब्रह्म जीव ना दोए, ए सब एकै अंग ॥ ५

कोई कहे ए तेज पुंज, याकी किरना सबे संसार ।
कोई कहे याको अंग न *इंद्री, *निरंजन *निराकार ॥ ६

कोई कहे ओ पुरुष उत्तम, और ए सबे सुपन ।
कोई कहे ए अलख[२] अलहा,[३] कोई कहे सब सुंन[४] ॥ ७

कोई कहे ओ सदासिव, और न कोई देव ।
कोई कहे *आद नारायन, करत कमला जाकी सेव[५] ॥ ८

कोई कहे आदे[६] आद माता, और न कोई क्यांहें[७] ।
सिव नारायन सबे याथें, या विन कछुए नांहें ॥ ९

कोई कहे याको करम करता, सब बंधे आवें जांए ।
तीनों गुन भी करमें बांधे, सो फेर फेर फेरे खांए ॥ १०

कोई कहे ए सबे काल, करम, सक्ति[८] उपाए[९] ।
खेलावे अपने मुखमें, और आखर दोऊ को खाए ॥ ११

कोई करे कालको संजम,[१०] कोई दिन काया[११] बचाए ।
कोई राते[१२] करामातें,[१३] यों सब निगम नचाए ॥ १२

पढ़ें गुनें[१४] विकार न छूटे, आग न अंगथें जाए ।
आप वतन चीन्हे विना, तो लों जल बिन गोते खाए ॥ १३

ए संसे सब समझाए के, कोई अंग करे उजास[१५] ।
सो गुरु मेरा मैं सेवों ताए, सुध चित होए दास ॥ १४

---

१. व्याप्त (फैला) २. जो दिखाई न दे । ३. जो पाया न जा सके । ४. शून्य । ५. सेवा । ६. आरम्भ । ७. कहीं भी । ८. शक्ति । ९. उत्पन्न । १०. संयम (वशीभूत) । ११. शरीर । १२. मग्न । १३. चमत्कार । १४. विचार करें । १५. रोशन ।

मैं तो खोजों सुध पार की, कोई न देवे बताए ।
मोह अहंकार के बीचमें, सब इतहीं रहे उरझाए ॥ १५

समझे बिना सुख पारको नाहीं, जो उदम[1] करो कै लाख ।
तोलों प्रेम न उपजे पूरा, जो लों अंदर न देवे साख ॥ १६

ए धोखे गुरु सरवग्यन[2] भानें, जिन पाया सब विवेक ।
बाहेर उजाला करके, आखर देखावें एक ॥ १७

महामत सो गुरु कीजिए, जो बतावें मूल अंकूर ।
आतम अरथ लगावहीं, तब पिया वतन हजूर ॥ १८

प्रकरण ॥ २६ ॥ चौपाई ॥ ३३१ ॥

## राग रामकली

संत जी सुनियो रे, जो कोई हंस परम ।
मैं पूछत हों पर आतमा, मेरा भानो एही भरम[3] ॥ १

जिन जानो विवादे[4] पूछे, मैं जग्यासू[5] करों खोज ।
जो लों धोखा ना मिटे, साधो तो लों न छूटे बोझ ॥ २

कोई कहे ए भरमकी बाजी, ज्यों खेलत कबूतर ।
तो कबूतर जो खेल के, सो क्यों पावें बाजीगर[6] ॥ ३

कोई कहे ए ब्रह्मकी आभा,[7] आभा तो आपसी भासे ।
तो ए आभा क्यों कहिए ब्रह्मकी, जो होत हैं झूठे तमासे ॥ ४

कोई कहे ए कछुए नाहीं, तो ए भी क्यों बनि आवे ।
जो यामें ब्रह्म सत्ता न होती, तो अधखिन रहने न पावे ॥ ५

कोई कहे ए सबे ब्रह्म, तब तो अग्यान[8] कछुए नाहीं ।
तो *खट सास्त्र[9] हुए काहेको, मोहे ऐसी आवत मन माहीं ॥ ६

कोई कहे ए पुरुष प्रकृती, मिल रचियो खेल एह ।
तो सूरज द्रष्टें क्यों रहे अंधेरी, ए भी बड़ा संदेह ॥ ७

---

१. यत्न । २. सर्वदर्शी । ३. शंका । ४. बहस । ५. जानने की इच्छा । ६. जादूगर । ७. प्रतिबिंब । ८. अज्ञान । ९. छः दर्शन ।

कोई कहे ए सबे सुपना, न्यारा खावंद[1] है और ।
तो सुपना जब उड़ गया, तब खावंद है किस ठौर ॥ ८

ऊपर तले माहें बाहेर, दसो दिसा सब माया ।
खट प्रमानथें ब्रह्म रहित है, सो क्यों कर दृढ़ाया ॥ ९

बुध तुरिया दृष्टि श्रवना, जो लों पोहोंचे मन ।
उतपन सारी आवटे,[2] जो कछू कहिए वचन ॥ १०

कोई कहे अद्वैत के कारन, द्वैत[3] खोजी पर[4] पर ।
अद्वैत[5] सब्द जो बोलिए, तो सिर पड़े उतर ॥ ११

कोई कहे अद्वैत के आड़े, सब द्वैतै को विस्तार ।
छोड़ द्वैत आगे वचन, किने न कियो निरधार ॥ १२

भोमका[6] सात कही बसिष्टे, तामें पांचमी केवल विदेही[7] ।
छठी को सब्द ना निकसे, तो सातमी दृढ़ क्यों होई ॥ १३

पार वचन कहे कौन दूजा, सर्वग्यन को सब सूझे ।
ए संसे भानो आतमके, ज्यों पर आतम बूझे ॥ १४

परमहंस[8] विन कौन कहे, जिन तजे हैं तीन सरीर ।
कहें महामत महादिसा धनीकी, कोई कर दयो जुदे खीर नीर ॥ १५

॥ प्रकरण ॥ ३० ॥ चौपाई ॥ ३४६ ॥

राग श्री

चीन्हे क्यों कर ब्रह्मको, ए तो गुनही के अंगको विकार ।
बाजीगरें बाजो रची, मूल माया थें मोह अहंकार ॥ १

जाको पेड़[9] प्रतिबिंब प्रकृति, पांच तत्वही को आकार ।
माहें खेले निरगुन व्यापक, लिए माया मोह अहंकार ॥ २

लोक चौदे दसो दिस, सब नाटक स्वांग संसार ।
आवे नैन श्रवन मन वचन, ए सब माया मोह अहंकार ॥ ३

---

१. स्वामी । २. अस्थिर । ३. माया । ४. बार बार । ५. ब्रह्म । ६. योगकी सात अवस्थाएँ । ७. जीवनमुक्त । ८. परमतत्व दर्शी । ९. मूल ।

क्या दानव[1] क्या देवता, क्या तीर्थंकर[2] अवतार ।
ब्रह्मा विस्नु महेस[3] लों, सो भी पैदा माया मोह अहंकार ॥ ४

अब औरन की मैं क्या कहूं, जो बड़कों का ए हाल ।
जल जैसे तरंग तैंसे, उठे माया मोह अहंकार ॥ ५

जो बंध बाँधे बापने, बेटे चले जाएं तिन लार[4] ।
जीव उरझे जाली छल की, सब माया मोह अहंकार ॥ ६

देहुरे मसीत[5] अपासरे,[6] सब लगे माहें रोजगार ।
बाहेर देखावें बंदगी, माहें माया मोह अहंकार ॥ ७

जुदे जुदे भेष दरसनी, अनेक इस्ट आचार ।
धरे नाम धनीके जुदे जुदे, पैंड़े चलें माया मोह अहंकार ॥ ८

खोज खोज *खट सास्त्र हुए, अनेक वचन विस्तार ।
करम उपासना ग्यानकी, बानी थकी माहें माया मोह अहंकार ॥ ९

सब्द सुनें एक दूजे के, फेर फेर करें विचार ।
कवि कर नाम धरें अपने, सब मगन माया मोह अहंकार ॥ १०

वानी कथें[7] सब अगम, माहें गुझ सबद हैं पार ।
सो ए कैसे समझहीं, मोहोरे[8] माया मोह अहंकार ॥ ११

यामें जीव दोए भाँत के, एक खेल दूजे देखनहार ।
पेहेचान न होवे काहू को, आड़ी पड़ी माया मोह अहंकार ॥ १२

ए खेल किया जिन खातर, सो तो हैं कोई सिरदार ।
जो लों न होवें जाहेर, तो लों उड़े न माया मोह अहंकार ॥ १३

ऐसे खेल अनेक एक खिनमें, करे अग्याएँ[9] करतार ।
सो करतार ठौर क्यों पाइए, जो लों उड़े न माया मोह अहंकार ॥ १४

महामत होसी सब जाहेर, मिले अक्षरातीत भरतार ।
बैराट होसी नेहेचल,[10] उड़चो माया मोह अहंकार ॥ १५

॥ प्रकरण ॥ ३१ ॥ चौपाई ॥ ३६१ ॥

---

१. राक्षस । २. जैन ऋषि । ३. शिव । ४. कतार । ५. मस्जिद । ६. जैन मठ । ७. कहें । ८. खेल की गोटें । ९. आज्ञा से । १०. स्थिर ।

राग सोरठ

कलिमें देख्या ग्यान अचंभा,

बातन[1] मोहोल रचें अति सुंदर, चेजा[2] जिमी न थंभा ॥ १

अंग न इंद्री अंतसकरन वाचा, ब्रह्म न पोहोंचे कोए ।
यों कहें साख पुरावें श्रुती, फेर कहें अनुभव होए ॥ २

अहंब्रह्म—अस्मी[3] होएके बैठें, तत्वमसी[4] और कहावें ।
स्वामी सिस्य न क्रिया[5] करनी, यों *महाबाक्य दृढ़ावें ॥ ३

*खटप्रमानतें[6] ब्रह्म है न्यारा, सो कहें अद्वैत[7] हम आप ।
माया ईस्वर त्रिगुन हमथें, हमहीं रहे सबमें व्याप ॥ ४

ईस्वर फिरें[8] ना रहें त्रिगुन, त्रिगुन चलें जीव भेले ।
ए कहावें ब्रह्म सब पैदास याथें, और जात हैं आप अकेले ॥ ५

कूवत[9] कछुए न पाइए माहें, खेलें मोहमें परे परवस मन ।
भोमका एक न चढ़ सकें, कहावें ईस्वर को महाकारन ॥ ६

तीन सरीर उड़ावें मुखथें, आप होत हैं ब्रह्म ।
पूछेतें कहें हम भोगवे, प्रालब्ध[10] जो करम ॥ ७

माया ईस्वरतें होत हैं न्यारे, न्यारे होत तीन देह ।
अद्वैतको प्रालब्ध लगावें, देख्या ग्यान बड़ा ब्रह्म एह ॥ ८

ऐसे कोट ब्रह्मांड होवें पलमें, अद्वैत के हुकम ।
ए कहावें ब्रह्म सुध नहीं ब्रह्मघर की, द्वैत अद्वैत नहीं गम ॥ ९

ए *सुकमुनी बानी बोल्या वेदांत, सो इनों क्यों समझी जाए ।
होसी प्रगट प्रकास निज बुध को, सो महामत देसी बताए ॥ १०

॥ प्रकरण ॥ ३२ ॥ चौपाई ॥ ३७१ ॥

राग गौरी

भाई रे ब्रह्मग्यानी ब्रह्म देखलाओ, तुम सकलमें सांई देख्या ।
ए. संसार सकल है सुपना, तो तुम पारब्रह्म क्यों पेख्या[11] ॥ १

---

१. बातों के । २. छज्जा । ३. मैं ही ब्रह्म हूँ । ४. तुम ही हो । ५. कर्म । ६. छः प्रमाण ।
७. एक ही ब्रह्म । ८. लौटना । ९. सामर्थ्य । १० भाग्य । ११. देखा ।

सत सुपनेमें क्यों कर आवे, सत सांई है न्यारा ।
तुम पारब्रह्मसों परच्या[1] नाहीं, तो क्यों उतरोगे पारा ।। २

तुम बैकुंठ जमपुरी एक कर देखी, तब तो सास्त्रपुरान सब भान्या[2] ।
*सुकदेव *व्यासके वचन बिना, कौन कहे मैं जान्या ।। ३

यामें बड़ भागी भए वल्लभाचारज, जाको *सुकदेवका गुन भाया ।
उत्तम टीका कीन्ही दसम की, तो इन ए फल पाया ।। ४

बिना पुरान प्रकास न होई, सास्त्र बिना कौन माने ।
एक अक्षर को अर्थ न आवे, तो ब्रह्म भरममें आने ।। ५

काल आवत कबू ब्रह्म भवनमें,[3] तुम क्यों न विचारो सोई ।
अखंड सांई जो यामें होता, तो भंग[4] ब्रह्मांड न होई ।। ६

तुम केवल कालतत्व ग्यानी,[5] ब्रह्म ग्यानी भए ।
सब दरवाजे खोजे साधो, पर सुंन छोड़ कोई ना गए ।। ७

इन सुपनेमें सब कोई भूल्या, किनहूं न देख्या पार ।
विध विधसों भवसागर थाह्या,[6] सुकदेव व्यास पुकार ।। ८

यामें प्रेम लछन एक पारब्रह्मसों, एक गोपियों ए रस पाया ।
तब भवसागर भया गौपद बछ,[7] बिहंगम[8] पैंड़ा बताया ।। ९

कै दरवाजे खोजे कबीरें, बैकुंठ सुंन सब देख्या ।
आखर जाए के प्रेम पुकारचा, तब जाए पाया अलेखा ।। १०

भाई रे ब्रह्मग्यानी ब्रह्म सुपनेमें, महामत कहें यों पाइए ।
पार निकसके[9] पूरन होइए, तब फेर सब दृष्टें देखाइए ।। ११

।। प्रकरण ।। ३३ ।। चौपाई ।। ३८२

रे जीवजी जिन करो यासों[10] नेहड़ा

जाको सनमुख नाहीं सरम, तासों नाहीं मिलवेको धरम ।
ए तो भूलवनी कोई भरम, कोहेड़ासों[11] लाग्यो करम ।। १

---

१. परिचित । २. रद्द किया । ३. घर में । ४. नाश । ५. काल तत्व ज्ञाता । ६. थाह ली । ७. गाय के चरण चिह्न । ८. आकाश मार्ग । ९. निकल । १० (देह से) । ११. धुंध ।

नामें जाको प्रपंच[१], तिन सबको मूल सरीर ।
या बनथें बाग विस्तरचो, जानो भरिया मृगजल नीर ॥ २

रे जीव सरीर मंदिर सोहामनों, चौदह[२] खूने रे आवास[३] ।
इनके भरोसे जे रहे, ते निकस चले निरास[४] ॥ ३

खास छज्जे गोख[५] जालियां, यामें केती मिलाई धात ।
संधों संध[६] समारियां, मिने हिकमत[७] कै हिकात[८] ॥ ४

मेहेनत करी केती या पर, विध विध बांधे बंध ।
जानिए सदा नेहेचल, ए रच्यो ऐसी सनंध ॥ ५

गुन पक्ष अंग इंद्रियां, सबके जुदे जुदे स्वाद ।
तरफ अपनी खैंचहीं, खेलत मिने विवाद ॥ ६

या बनथें बाग रंग फूलिया, जानें लेसी सुख अपार ।
अधबीच उछेदिया[९], सो करता गया पुकार ॥ ७

मोहे[१०] बाग रंग मंदिरों, सेजड़िएँ सोए करार ।
सो काढ़े कंठ पकड़के, गए कलकलते नर नार ॥ ८

ए अनमिलतीसों[११] ना मिलिए, जाको सांचो नाहीं संग ।
नाहीं भरोसो खिन को, ज्यों रैंनी[१२] को पतंग[१३] ॥ ९

क्यों रे नेहड़ा[१४] यासों कीजिए, जो मिलके करे भंग ।
एक रस होइए क्यों तिनसे, नेहेचल नहीं जाको रंग ॥ १०

ऐसे कै उजाड़े मंदिर, ए सबको देवे छेह[१५] ।
मिलापै में रंग बदले, अधबीच तोड़े नेह ॥ ११

रे जीव सरीर रची सेजड़ी, इत आवे नींद अपार ।
ए सूतेहीं पटकावही, पुकार न पीछे बहार[१६] ॥ १२

यासों तो मनड़ो माने नहीं, जो छोड़े ए अंत्रीयाल[१७] ।
उरझाए आप न्यारी रहे, जीवको बाँध देवे मुख काल ॥ १३

---

१. छल । २. चौदह कोने (दश इन्द्रिय चार अन्तःकरण)। ३. बस्ती । ४. निराश । ५. झरोखा । ६. जोड़ । ७. कौशल । ८. कला । ९. उखाड़ दिया । १०. मस्त हुए । ११. अप्राप्य । १२. रात । १३. पतंगा । १४. स्नेह । १५. दग़ा । १६. प्रकट होने पर । १७. अधर में ।

नीके जानिए ए भूलवनी[१], इत भूले सब कोए ।
या रंग रसे जे भूलहीं, तिन करड़ी[२] कसोटी[३] होए ॥ १४

काँटे चुभे दुख पाईए, सेहे न सके लगार ।
पर होत है मोहे अचंभा, ए क्यों सेहेसी जम मार ॥ १५

इन गफलत[४] के घरमें, पड़ेगी बड़ी अगिन ।
पीछे लाख चौरासी देहमें, जलसी रात और दिन ॥ १६

ए देखी अजाड़ी[५] आँखाँ खोलके, याकी तो उलटी सनंध ।
ए मोहड़ा[६] लगावे मीठड़ा, पीछे पड़िए बड़े फंद ॥ १७

ए अंधेरी है विकट, ए जाहेर रची जमजाल ।
ए पेहेले देखावे सुख सीतल, पीछे जाले अगिनकी झाल ॥ १८

ए धूतारीको[७] न धीरिए[८], जो पलटे रंग परवान ।
ए विस्व बंदे[९] वैराट को, सो भी निगलसी निरवान ॥ १९

ए सब मोहे इन मोहनी रे, पर इन बांध्यो न कासों मन ।
जीवको यातें बिछड़ते, बड़ी लागी दाझ[१०] अगिन ॥ २०

॥ प्रकरण ॥ ३४ ॥ चौपाई ॥ ४०२ ॥

## अब देहकी तरफको जवाब

रेजीवजी तुमें लागी दाझ मुझ बिछड़ते, पर मैं खाक[११] हुई तुम बिन ।
तुम मोहीसे न्यारे भए, मोहे राखी नही किन खिन ॥ १

मेरी सेवा जो करते साथीड़े, फूलड़े बिछावते सेज ।
सीतल वाए मोहे ढोलते, तिन जारी रेजा रेज ॥ २

एक बाल टूटे दुख पावते, तिन जारी ले खोरने[१२] हाथ ।
मनुएं[१३] उतारे या विध, मेरे सोई संगी साथ ॥ ३

मैं पाले प्यार करके, सो बैरीड़े भए तिन ताल[१४] ।
मोसों तो राख्यो ए सनमंध, तुमें डाले ले जम जाल ॥ ४

---

१. भूल भूलैया । २. कठिन । ३. परख । ४. बेखबरी । ५. बेढब । ६. मोह । ७. छलने वाली । ८. विश्वास । ९. पूजे । १० जलन । ११. मिट्टी । १२. मृतक को आग देने वाली लकड़ी । १३. मन से । १४. समय ।

तुम बंध पड़े जिन कारने, किया आपसों ज्यों ।
मुझ जैसे होए मोहे छेतरी,[1] तुमकों दई अगिन त्यों ॥ ५

मैं तो आई तुम खातर, तुम जानी नहीं सुपन ।
मैं तो सुपना हो गई, अब दुखड़े देखो चेतन ॥ ६

पेहेले क्यों न संभारिए, काहेको पड़िए जम फांस ।
लाख चोरासी अगनी, तित जलिए न कीजे बास ॥ ७

मोसों पेहेचान ना कर सके, मेरा मेला तो अधखिन होए ।
मेरी तो पेहेचान जाहेर, मुझे जाती देखे सब कोए ॥ ८

तुम जान बूझ मोहे मोहीसों, छोड़के नेहेचल सुख ।
मैं तो आई भले अवसर, पर भूले सो पावे दुख ॥ ९

ए अवसर क्यों भूलिए, जित पाइए सुख अखंड ।
या घर बिना सो ना मिले, जो ढूंढ़ फिरो ब्रह्मंड ॥ १०

इन पिंडमें[2] ब्रह्म दृढ़ किया, नेहेचल सुख परवान[3] ।
अब खिनमें घर देखिए, ऐसा समे न दीजे जान ॥ ११

और उपाए कै करो, पर पाइए न या घर बिन ।
अंदर जागके चेतिए, ए अवसर अधखिन ॥ १२

कैसे कर याको खोजिए, ए तो कोहेड़ा आकार ।
ए ढूंढ़या बोहोतो कै विध, पर किनहूं न पाया पार ॥ १३

बाहेर निकसो तो आप नहीं, और माहें तो नरक के कुंड ।
ब्रह्म तो यामें न पाइए, ए क्यों कहिए ब्रह्म घर पिंड ॥ १४

पवन जोत सबदा उठे, नाड़ी चक्र कमल ।
इत कैयों कै विध खोजिया, पर यामें ब्रह्म नहीं नेहेचल ॥ १५

पार ब्रह्म क्यों पाइए, ततखिन .कीजे उपाए ।
कै ढूढे माहें बाहेर, विना सतगुर न लखाए ॥ १६

---

१. ठगा । २. शरीर । ३. निश्चित ।

अब संग कीजे तिन गुरू की, खोजके पुरुष पूरन ।
सेवा कीजे सब अंगसों, मन कर करम वचन ॥ १७

सो संग कैसे छोड़िए, जो सांचे हैं सतगुर ।
उडाए सबे अंतर, बताए दियो निज घर ॥ १८

पाईए सुध पूरन से, पैंड़ा[1] बतावें पार ।
सबद जो सारे समझहीं, सब गम पड़े संसार ॥ १९

पांच तत्व पिंडमें हुए, सोई तत्व पांच बाहेर ।
पांचो आए प्रले मिने, सब हो गयो निराकार ॥ २०

ए पांचो देखे बिध बिध, ए तो नहीं थिर ठाम ।
यामें सो कैसे रहे, नेहेचल जाको नाम ॥ २१

पारब्रह्म जित रहे, तित आवे नाहीं काल ।
उतपन सब होसी फना, ए तो पांचोही पंपाल[2] ॥ २२

यामें अंतर वासा ब्रह्मका, सो सतगुर दिया बताए ।
बिन समझे या ब्रह्मको, और न कोई उपाए ॥ २३

आंकड़ी[3] अंतरजामी की, कबहूं ना खोली किन ।
आद करके अब लों, खोज थके सब जन ॥ २४

ए पूरन के प्रकासथें, खुल गया अंतर सब ।
सो क्यों रेहेवे ढांपिया, प्रगट होसी अब ॥ २५

जिनको सब कोई खोजही, ए खोली आंकड़ी तिन ।
तो इत हुई जाहेर, जो कारज है कारन ॥ २६

घरही में न्यारे रहिए, कीजे अंतरमें वास ।
तब गुन बस आपे होवहीं, गयो तिमर[4] सब नास ॥ २७

या बिध मेला पीउ का, पीछे न्यारे[5] नहीं रैन दिन ।
जलमें न्हाइए कोरे रहिए, जागिए माहें सुपन ॥ २८

---

१. राह । २. असत्य । ३. रहस्य । ४. अन्धकार । ५. अलग ।

या सुपनतें सुख उपज्यो, जो जाग कीजे विचार ।
आतम भेली पर—आतमा, सुपन भेलो संसार ॥ २९

इन विध लाहा लीजिए, अनमिलतीका रे यों ।
सुखड़ा दिया धुतारिए,[1] याको बुरी कहिए क्यों ॥ ३०

जो सुख याथें उपज्यो, सो कह्यो न किनहूँ जाए ।
पात्र होए पूरा प्रेम का, तिन का रस ताहीमें समाए ॥ ३१

ए वतनीसों गुझ कीजिए, जो खैंचे तरफ वतन ।
प्रेमैंमें भीगे रहिए, पीउसों आनंद घन ॥ ३२

महामत पिआ संग विलसही, सुख अखंड इन पर ।
धंन धंन प्रपंच ए हुआ, धंन धंन सो या मंदर ॥ ३३

प्रकरण ॥ ३५ ॥ चौपाई ॥ ४३५ ॥

राग सिधोड़ो

वालो ब्रहरस[2] भीनों रंग ब्रह्मां रमाड़तो,[3] वासना रुदन करे जल धार ।
आप ओलखावी[4] अलगो[5] थयो अमथी, जे कोई हुती ताँमसियो सिरदार ॥ १

कलकली कामनी बदन विलखावियो, विस्वमा वरतियो हा हा कार ।
उनमाद[6] अटपटा अंगथी टालोने, माननी सहुए मनावियो हार ॥ २

पतिव्रता पल अंग थाए नहीं अलगियो, न कोई जारवंतियो[7] विना जार ।
पात्रियो[8] पीउ थकी अमें जे अभागणियों, रहियो अंग दाग लगावनहार ॥ ३

स्यारे[9] करम एवा करचा हता कामनी, धाम माहें धणी आगल आधार ।
हवे काढो मोह जल थकी बूढती कर ग्रही, कहें महामती मारा भरतार ॥ ४

॥ प्रकरण ॥ ३६ ॥ चौपाई ॥ ४३९ ॥

हांरे वाला रत्न झलावियो[10] रामतें रोवरावियो, जुजवे[11] प्रवतें पाड़्या पुकार ।
रणवगड़ा[12] माहें रोई कहे कामनी, धणी विना धिक धिक आ रे आकार ॥ १

---

१. (नश्वर शरीर) । २. विरह । ३. खेलाते हैं । ४. दिखा कर । ५. अलग । ६. पागलपन । ७. प्रेमिका । ८. पतिता । ९. क्या । १०. भटकना । ११. अलग । १२. वीरान ।

वेदना[1] विषम रस लीधां अमें व्रहतणां, हवे दीन थई कहूं वारमवार ।
सुपनमां दुख सह्या घणां रासमां, जागतां दुख न सेहेवाए लगार[2] ॥ २

दंत तरणां[3] लेई तारुणी तलफियो, तमें बाहो दाहो[4] दीन दातार ।
खमाए[5] नहीं कठण एवी कसनी, राखो चरण तले सरण साधार ॥ ३

हवे हारया हारया कहूं वार केटली, राखो रोतियों करो निरमल नार ।
कहें महामती मेहेबूब मारा धणी, आ रे अरज रखे हांसीमां उतार ॥ ४

॥ प्रकरण ॥ ३७ ॥ चौपाई ॥ ४४३ ॥

हांरे वाला[6] बंध पडया बल हरया तारे फंदडे,[7] बंध विना जाए बांधियोहार ।
हंसिए रोइए पडिए पछताइए, पण छूटे नहीं जे लागी लार कतार ॥ १

जेहेर चढयो हाथ पांउं झटकतियो, सरवा अंग साले[8] कोई सके न उतार ।
समरथ सुख थाए साथने ततखिण, गुणवंत गारडी[9] जेहेर तेहेने तेणी विधें झार[10]

माहें धखे दावानल दसो दिसा, हवे बलण[11] वासनाओंथी निवार ।
हुकम मोहथी नजर करो निरमल, मूल मुख दाखी ब्रह अंग थी विसार ॥ ३

छल मोटे अमने अति छेतरया,[12] थया हैया झांझरा[13] न सेहेवाए मार ।
कहें महामती मारा धणी धामना, राखो रोतियो सुख देओ ने करार ॥ ४

॥ प्रकरण ॥ ३८ ॥ चौपाई ॥ ४४७ ॥

केम रे झंपाए अंग ए रे झालाओ,[14] वली वली वाध्यो विष विस्तार ।
जीव सिर जुलम कीधो फरीफरी, हठियो हरामी अंग इंद्री विकार ॥ १

झांप झालाओ हवे उठतियो अंगथी, सुखसीतल अंग अंगनानेठार[15] ।
बाल्या वली वली ए मन ए कुबुधें,[16] कमसील काम कां कराव्या करतार ॥ २

गुन पक्ष इंद्री वस करी अबलीसने,[17] अंगना अंग थाप्यो देई धिकार ।
अरथ उपले एम केहेवाइयो वासना, फरीएणे वचनमां दीधो फिटकार ॥ ३

माहेंले माएने जोपे ज्यारे जोइए, त्यारे दीधी तारुणी तन तछकार[18] ।
कलकली महामती कहे हो कंथजी,[19] एवा स्यारे दोस अंगनाओंना आधार ॥ ४

॥ प्रकरण ॥ ३९ ॥ चौपाई ॥ ४५१ ॥

---

१. पीड़ा । २. जरा भी । ३. तिनका । ४. जलाते हो । ५. सहन होना । ६. स्वामी । ७. बंधन । ८. दुःख देना । ९. ओझा । १०. जहर उतारना । ११. जलन । १२. छले गए । १३. छलनी । १४. ज्वालाएँ । १५. ठंडा कर । १६. उलटी बुद्धि । १७. शैतान । १८. चीरना । १९. स्वामी जी ।

हांरे वाला कांरे आप्या दुख अमने अन घटतां[1], व्राध[2] लगाडी विध विधाना विकार
विमुख कीधां रस देई व्रह अवला, साथ सनमुख माहें थया रे धिकार ॥ १
अनेक रामत बीजो हती अति घणी, सुपने अग्राह[3] ठेले संसार ।
उघडी आंख दिन उगते एणे छले, जागतां जनम रूडा[4] खोया आवार[5] ॥ २
सनमुख तमसूं व्रहरस तम तणो, कां न कीधां जाली बाली अंगार ।
त्राहि त्राहि ए वातों थासे घेर साथमां, सेहेसूं केम दाग जेलाग्या आकार ॥ ३
व्रह थी विछोडी दुख दीधां विसमां[6], अहिनिस निस्वासा अंग उठे कटकार ।
दुख भंजन सहू विध पीउ समरथ, कहे महामती सुख देंण सिणगार ॥ ४

॥ प्रकरण ॥ ४० ॥ चौपाई ॥ ४५५ ॥

हांरे वाला अगिन उठे अंग ए रे अमारडे, विमुख विप्रीत[7] कमर कसी हथियार ।
स्वाद चढचा स्वाम द्रोही[8] संग्रामें, विकट बंका[9] अमें कीधा आसाधार[10] ॥ १
कुकरम कसाव[11] जुध कै करावियां, पलीत[12] अबलोस[13] अम माहें बेसार ।
जागतां दिन कै देखतां अमने छेतरचा, खराने खराब ए खलक खुआर ॥ २
ओलखी तमने अमें जुध कीधां तमसूं, मन चित बुध मोह ग्रही अहंकार ।
ए विमुख वातों मोटे मेले वंचासे[14], मलसे जुथ[15] जहां बारे हजार ॥ ३
कहे महामती हूं गाऊं मोहोरे[16] थई, पण विमुख विधो[17] वीतो सहू माहें नरनार ।
धाम माहें धणी अमें ऊंचूं केम जोईसूं, पोहोंचसे पंवाडा[18] पर आतम मोंझार ॥ ४

॥ प्रकरण ॥ ४१ ॥ चौपाई ॥ ४५९ ॥

## राग श्री

करनी तुमारी मेरी मैं तौली, जैसे सत असत ।
हो धनी मेरे, एती है तफावत[19] ॥ १
पिआ ऐसी निपट[20] मैं क्यों भई, कठिन कठोर अति ढीठ ।
धाम धनी पेहेचान के, फेर फेर देत मैं पीठ ॥ २

---

१. अखूट । २. रोग । ३. त्याज्य । ४. भला । ५. इस बार । ६. कठिन । ७. उल्टा । ८. स्वामी द्रोही । ९. टेढ़ा । १०. असाधारण । ११. कसाई । १२. पतित । १३. शैतान । १४. पढ़ी जाएंगी । १५. समूह । १६. आगे । १७. विधान । १८. किस्सा । १९. अन्तर । २०. बिलकुल ।

अंदर परदा उड़ाइया, तो भी न बदल्या हाल ।
नकस न मिटयो मोह मूलको, तार्थे नजरों ना नूरजमाल ॥ ३

इन इंद्रियनकी मैं क्या कहूं, ए तो अवगुनही की काया ।
इन से देखूं क्यों साहेब, एही भई आड़ी माया ॥ ४

निरमल नजरों न आवही, ले बैठी संग चंडाल ।
उपजत ऐसी अंगथें, उतारूं उलटी खाल ॥ ५

सब अंग काट चोरा करूं, माहें भरों मिरच और लूंन ।
कै कोट बेर ऐसी करूं, तो भी न छूटे ए खूंन ॥ ६

हैड़े में ऐसी उठत, सब अंग करूं टूक टूक ।
हडियां सब जुदी करूं, भान करूं भूक भूक[१] ॥ ७

मैं होत सरमंदी साथ में, ए क्योंए न जावे दुख ।
जब जाग बैठूं आगे धनी, तब क्यों देखूं सनमुख ॥ ८

आंखां क्यों उठाऊंगी, मुझे मारेगी बड़ी सरम ।
ऐसी कबूं किन ना करी, सो मैं किए चंडाल करम ॥ ९

रोम रोम कै कोट अवगुन, ऐसी मैं गुन्हेंगार ।
ए तो कही मैं गिनती, पर गुन्हे को नाहीं सुमार ॥ १०

जेते कहे मैं अवगुन, तेते हर रोम दाग[२] ।
सो हर दम आतम को लगे, तो मैं बैठूं जाग ॥ ११

जाको गिनती मैं अपने, सोई देखे दुसमन ।
देखे देखाए तो भी ना छूटे, कोई ऐसी अग्यां बल कुंन[३] ॥ १२

रोम रोम सूली चढ़ूं, सब अंग निकसे फूट ।
ऐसी करूं जो आपसे, तो भी अवगुन एक ना छूट ॥ १३

ए नाहीं अवगुन और ज्यों, मेरे तो लेप वजर ।
ए विध सोई जानसी, जिनकी अंतर खुली नजर ॥ १४

---

१. चूरा । २. गरम लोहे के घाव । ३. परमात्मा की आज्ञा से संसार बनना ।

ए लेप वजरकी मैं क्या कहूं, ए अवगुन सबदातीत ।
धनी आप दे करी आपसी, एही पिआकी रीत ॥ १५

धनी के गुनकी मैं क्या कहूं, इन अवगुन पर एते गुन ।
महामत कहें इन दुलहे पर, मैं वारी वारी दुलहिन ॥ १६

॥ प्रकरण ॥ ४२ ॥ चौपाई ॥ ४७५ ॥

## राग काफी

मीठडा मीठा रे, मूने वचनिएं कां बाहो[1] ।
मीठाते मुखना लेऊं मीठडा, कां प्रीतडी करीने परा थाओ ॥ १

सनेह सनमंधडो समझावीने, अंतराए[2] आडी टाली ।
हवे अधखिण ब्रह सही न सकूं, मारे न आवे अवसरियो वालो[3] ॥ २

हवे विलखूं छूं वाला विना, हूँ तो प्रेमनी बांधी पिडाऊँ[4] ।
कां अलगा आप ग्रहीने ऊभा, हूँ निस दिवस फडकला[5] खाऊँ ॥ ३

हवे कहोने वाला केम करूं, केणी पेरे रेहेवाए ।
एम करता इन्द्रावतीने मंदिर पधारया, मारे आनंद अंग न माए ॥ ४

॥ प्रकरण ॥ ४३ ॥ चौपाई ॥ ४७९ ॥

विनता विनवे रे, पीउजी रसिया तमें केहेवाओ ।
तो एकलडा अमने मूकी, अलगा केम करी थाओ ॥ १

जो अलबेला[6] एवा तमें, तो मंदिरिएं न आवो केम म्हारे ।
हूं माननी मान मूकी केम कहूं, पण बोलडे[7] बंधाणी छूं तारे ॥ २

तूं तो मूने जाणे छे जोपें, में तो घणी खोदडो खुदावी[8] ।
अनेक विनवणी[9] कीधी तें, तो तारे वस आवी ॥ ३

हवे तो सरवे में सोंप्यूं तुझने, मूल सनमंध सुध जोई ।
कहे इंद्रावती मुझ विना, तूंने एम वस न करे बीजो कोई ॥ ४

॥ प्रकरण ॥ ४४ ॥ चौपाई ॥ ४८३ ॥

---

१. बहलाना । २. दूरी । ३. बार बार । ४. पीड़ित । ५. तड़पना । ६. बांका आशिक । ७. वचन । ८. नाच नचाना । ९. विनती ।

म्हारा वस कीधल वाला रे, अमथी अलगा केम करी थासो ।
हूं तो एवी नहीं रे सोहाली,[1] जे वचनिएं बहासो ॥ १

ए तो नहीं अटकलनी ओलखांण,[2] जे ततखिण रंग पलटाओ ।
सनमंधीनों रंग नेहेचल सांचो, जहां हूं तहां तमें आवो ॥ २

हवे अधखिण एक न मूकूं अलगा, प्रीत पेहेलानी ओलखाणी ।
साची सगाई कीधी प्रगट, सचराचर संभलाणी ॥ ३

प्रेम विनोद विलास माया माहें, सुफल फेरो एम कीजे ।
अखंड आनंद सदा इंद्रावती घरें, पूरण सुख लाहो[3] लीजे ॥ ४

॥ प्रकरण ॥ ४५ ॥ चौपाई ॥ ४८७ ॥

प्रीत प्रगट केम कीजिए, कीजिए छानी[4] छिपाए, मेरे पीउजी ।
तूं तो निलज नंदनो कुमार, मेरे पीउ जी ॥ १

तूं देख भयो मोहे बावरो, मैं कुलवधुआ नार ।
तूं रोक रह्यो मोहे राहमें, घड़ी भई दोए चार ॥ २

गलियनमें दुरजन देखे, तोमें नहीं विचार ।
तूं कामी कछू ना देखही, पर सासुड़ी दे मोहे गार[5] ॥ ३

कर जोरे कुच[6] मरोरे, अंगिया नखन विडार[7] ।
अधुर न छोड़े दंतसों, करेगो कहा अब रार[8] ॥ ४

तूं बालक नेह न बूझही, मैं बरज्यो[9] केतोक बार ।
मैं मेरो कियो पाइयो, अब कासों करों पुकार ॥ ५

साड़ी फारी कंठसर[10] तोड़ी, तोड़्यो नवसर हार ।
अब घर कैसे जाइए, उलटाए दियो सिनगार ॥ ६

अब मिल रही महामती, पीउसों अंगों अंग ।
अक्षरातीत घर अपने, ले चले हैं संग ॥ ७

॥ प्रकरण ॥ ४६ ॥ चौपाई ॥ ४९४ ॥

---

१. सहज । २. पहचान । ३. लाभ । ४. छिपी । ५. गाली । ६. स्तन । ७. फाड़ दी । ८. झगड़ा । ९. रोका । १०. गले का हार ।

## राग गौरी

खोज थके सब खेल खसमरी,

मनहीमें मन उरझाना, होत न काहूं गमरी ॥ १

मनही बांधे मनही खोले, मन तम मन उजास ।
ए खेल सकल है मनका, मन नेहेचल मनहीको नास ॥ २

मन उपजावे मनही पाले, मनको मन करे संघार[1] ।
पांच तत्व इंद्री गुन तीनों, मन *निरगुन *निराकार ॥ ३

मनही नीला मनही पीला, स्याम सेत सब मन ।
छोटा बड़ा मन भारी हलका, मनही जड़ मनही चेतन ॥ ४

मनही मैला मनही निरमल, मन खारा तीखा मन मीठा ।
एही मन सबनको देखे, मनको किनहूं न दीठा[2] ॥ ५

सब मनमें ना कछू मनमें, खाली मन मनहीमें ब्रह्म ।
महामत मनको सोई देखे, जिन दृष्टें खुद खसम ॥ ६

॥ प्रकरण ॥ ४७ ॥ चौपाई ॥ ५०० ॥

## राग केदारो

खिन एक लेहु लटक भंजाए[3]

जनमतही तेरो अंग झूठो, देखतहीं मिट जाए ॥ १

रे जीव निमख[4] के नाटक में, तूं रह्यो क्यों विलमाए[5] ।
देखतहीं चली जात बाजी, भूलत क्यों प्रभू पाए ॥ २

आपको पृथीपति कहावे, ऐसे केते गए बजाए ।
अमरपुर[6] सिरदार कहिए, काल न छोड़त ताए ॥ ३

जीव रें चतुरमुखको[7] छोड़त नाहीं, जो करता सृष्टि केहेलाए ।
चारो तरफों चौदे लोकों, काल पोहोंचो आए ॥ ४

पवन पानी आकास जिमी, ज्यों अगिन जोत बुझाए ।
अवसर ऐसो जान के, तूं प्रानपति लौलाए ॥ ५

---

१. नाश । २. देखा । ३. पूरी करो । ४. पल भर । ५. देर करता है । ६. इन्द्रपुरी । ७. ब्रह्मा ।

देखन को ए खेल खिन कों, लिए जात लपटाए ।
महामत रूदे रमे तासों, उपजत जाकी इछाए ॥ ६

॥ प्रकरण ॥ ४८ ॥ चौपाई ॥ ५०६ ॥

## राग देसाख

बाई रे वात अमारी हवे कोण सुणे, अमें गेहेलाने[1] मलया ।
एहनो नेहडो सुणीने हूं तो घणुऐं नाठी, पणसूं कीजे जे पांणें[2] पडया ॥ १
हूं मां हुती चतुराई त्यारे पांचमां पुछाती[3], तो चितडा अमारा चलया ।
मान मोहोत[4] लज्या गई रे लोपाई,[5] अमें माणस माहेंथी टलया ॥ २
माणस[6] होए ते तो अमने मां मलजो, जो तमे गेहेलाइए हलया ।
ओल्या[7] वारसे[8] वढसे[9] खीजसे तमने, तोहे आवसो आंहीं पलया ॥ ३
गेहेले वालें अमने कीधां गेहेलडा, मलीने गेहेलाइए छलया ।
जात कुटमथी जूआ[10] थया, हद छोडी वेहदमां भलया ॥ ४
देखीतां सुखडा में तो नाख्यां उडाडी,दुस्तर[11] दुखें नव बलया ।
एहेनी गेहेलाइए अमने एवा कीधां, जईने अक्षरातीतमां गलया ॥ ५
बाई रे ग्यान सबद गम नहीं नवधाने, वेद पुराणें न कलया[12] ।
ए वात गेहेलडी करे रे महामती, मारे अखंड सुख फूले फलया ॥ ६

॥ प्रकरण ॥ ४९ ॥ चौपाई ॥ ५१२ ॥

बाई रे गेहेलो वालो गेहेली वात करे, एहने कोई तमें वारो[13] ।
दुरजन देखतां अमने बोलावे, निजल ने धुतारो[14] ॥ १
नित उठी आंगनडे ऊभो, आलज[15] करे अमारी ।
लोक माहें अमें लज्या पामूं, हूं कुलवधूआ नारी ॥ २
नासंती क्यांहें न छूटूं एथी, आडज[16] बांधे आवी ।
हूं जांणूं रखे सासुडी सांभले, थाकी कही केहेवरावी[17] ॥ ३

---

१. अलमस्त दीवाना । २. पीछे । ३. पूछी जाती । ४. बड़प्पन । ५. खत्म हुई । ६. मनुष्य । ७. वह । ८. मना करेगा । ९. डांटेगे । १०. जुदा । ११. कठिन । १२. जाना । १३. रोको । १४. धूर्त । १५. छेड़खानी । १६. रास्ते में रोके । १७. कहला कर ।

वारतां[१] वलगतां वाले, जोरे सांईडा लीधां ।
कहें महामती सुणो रे सखियो, वाले एणी पेरे गेहेलडा कीधां ॥ ४

॥ प्रकरण ॥ ५० ॥ चौपाई ॥ ५१६ ॥

राग धनासरी

आज वधाई व्रज घर घर, प्रगटचा श्री नंद कुमार ।
दूध दधीए ऊमर[२] धोए, तोरण बांधे व्रजनार ॥ १

एक बीजीने छांटे नाचे, उमंग अंग न माए ।
अनेक विधना वाजा रस बाजे, गृह गृह ओछव[३] थाए ॥ २

लेईने वधावा सांचरी, भवन भवन थी नार ।
गाए ते गीत सोहामणां, साजे सकल सिणगार ॥ ३

अबीर गुलाल उछालती आवे, छाया न सूझे सूर ।
चाल चरण छवे[४] नहीं भोमें, जांणे उमडचो सागर पूर ॥ ४

जुथ जुजवे जुवतियों,[५] उछरंगतियो अपार ।
ओछव करती आवियो, बावा नंदतणें दरबार ॥ ५

धस मसियो[६] मंदिरमां पेसे, माननी सरवे धाए ।
नंदने वधावो देई वल्या, मांडवें मंगल गाए ॥ ६

ब्राह्मण भाट गुणीजन चारण,[७] मलया ते मांगण हार ।
निरत नटवा गंधर्ब, राग सांगीत थेई थेई कार ॥ ७

नाद दुंद[८] पडछंदा[९] प्रवर्ते, वरत्यो जै जै कार ।
नंद गोप सहू गेहेला हरखे, खोलावे भंडार ॥ ८

गाए गोधा[१०] अंन वस्तर पेहेराव्या, गोप सकल दातार ।
केहेने धन केहेने भूषन, *नवनिध दे दे कार ॥ ९

ए लीला अखंड थई, एहनो आगल[११] थासे विस्तार ।
ए प्रगटचा पूरण पार ब्रह्म, महामती तणों आधार ॥ १०

॥ प्रकरण ॥ ५१ ॥ चौपाई ॥ ५२६ ॥

---

१. रोकते । २. चौखट । ३. उत्सव । ४. छुए । ५. युवतियों । ६. ठेलती हुई । ७. गवैये । ८. शोर । ९. प्रतिध्वनि । १०. सांड । ११ आगे ।

राग श्री

सतगुरु मेरा स्याम जी, मैं अहेनिस[१] चरणें रहूं ।
सनमंध मेरा याहीसों, मैं ताथें सदा सुख लहूँ ॥ १

ए जो माया लोक चौदे, सब त्रिगुन को विस्तार ।
ए मोह अहंतें उपजे, ताथें छूटत नहीं विकार ॥ २

इत सास्त्र सब्द के पसरे, ताको खोज करे संसार ।
वाचा निवरती[२] मोहमें, आड़ी भई निराकार ॥ ३

सुंन निराकार पार को, खोज खोज रहे के हार ।
बोहोतों बहुविध ढूंढ़या, पर किया न किने निरधार ॥ ४

सो बुधजीएं सास्त्र ले, सबही को काढ़्यो सार ।
जो कोई सब्द संसार में, ताको भलो कियो निरवार[३] ॥ ५

जा कारन माया रची, सास्त्र भी ता कारन ।
खेल भी एही देखहीं, और अर्थ भी लिए इन ॥ ६

ए माया जाकी सोई जाने, क्योंकर समझे और ।
बुधजी के रोसनथें, प्रकास होसी सब ठौर ॥ ७

किल्ली[४] ल्याए वतन थें, सब खोल दिए दरबार ।
माया से न्यारा घर नेहेचल, देखाया मोहजल पार ॥ ८

ब्रह्म सृष्टि जाहेर करी, बुधजीएँ इत आए ।
अक्षरातीत को आनन्द, सत सुख दियो बताए ॥ ९

सब्द सुनाए *सुक *व्यास के, मोहे छिन में कियो उजास ।
उपनिषद अर्थ वेद के, ए गुझ कियो प्रकास ॥ १०

इनसें सुध मोहे सब भई, संसे रह्यो न कोए ।
बुधजी बिना इन मोह में, प्रकास जो कैसे होए ॥ ११

संगी जो अपने सनमंधी, सो भी गए माहें भूल ।
तो क्यों समझें जीव मोह के, जाको निद्रा मूल ॥ १२

१. दिन रात । २. थक गई । ३. सुलझा दिया । ४. चाबी ।

पिया मोहे अपनी जान के, अन्तर दई समझाए ।
ना तो आद के संसे अब लों, सो क्योंकर मेटे जाए ॥ १३

ए वीतक कहूँ सैयन को, जाहेर देऊँ बताए ।
मोहे जगाई पिया ने, मैं देऊँ सब जगाए ॥ १४

ए खेल हुआ सैयों खातर, और खातर अक्षर ।
सबके मनोरथ पूरने, देखाए तीनों अवसर ॥ १५

जब माया मोह न अहंकार, ना विस्तरे[1] त्रिगुन ।
ए दिल देके समझियो, कहूँगी मूल वचन ॥ १६

तब खेल हम मांगया, सो देखाया दो बेर ।
तामें व्रज में खेले पिया संग, बीच मोह के अंधेर ॥ १७

काल माया देखी नींद में, आधी नींद माया जोग ।
तार्थे देखाई जगाए के, इत लेसी सब को भोग ॥ १८

इन लीलाकी जो आतमा, सो करसी सबे पेहेचाँन ।
आवत दौड़े अंकूरी, ए ताए मिलसी निसाँन ॥ १९

अखंड सुख जाहेर कियो, मूल बुध प्रकासी ।
देत देखाई जैसे दुनियाँ, पर अक्षरातीत के वासी ॥ २०

खेल किया पेहेले व्रज में, खेल दूजा वृन्दावन ।
उमेद रही तो भी नेकसी,[2] तार्थे एह उतपन ॥ २१

*व्रजरास ए सोई लीला, सोई पिया सोई दिन ।
सोई घड़ी सोई पल, वैराट होसी धंन धंन ॥ २२

सखी एक दूजी को ढूंढ़ही, आई जुदी जुदी इन बेर ।
प्रेम पियासी पिआकी, लई जो विरहा घेर ॥ २३

अब ए लीला क्यों छानी रहे, सखियां मिली सब टोले ।
पल पल प्रकास पसरे, आगमही आगम बोले ॥ २४

---

१. फैले । २. जरा सी ।

ब्रह्मलीला ढांपी हती, अबतारों दरम्यान ।
सो आए फेर अपनी, प्रगट करी पेहेचान ॥ २५

सो पेहेचान सबों पसराए के, देसी सुख बैराट ।
लौकिक नाम दोऊ मेटके, करसी नयो ठाट ॥ २६

ए नित लीला बुध जी, करसी बड़ो विलास ।
दया भई दुनियां पर, होसी सबे अविनास ॥ २७

सुर असुर ब्रह्मांड में, मिल कर गावसी ए सुख ।
इन लीला को जो आनंद, वरन्यो न जाए या मुख ॥ २८

सब पर हुआ कलस,[1] प्रेम आनंद भर पूर ।
महामत मोह अहं उडयो, ऊग्यो अखंड वतनी सूर ॥ २९

प्रकरण ॥ ५२ ॥ चौपाई ॥ ५५५ ॥

राग श्री

धनीजी ध्यान तुमारे रे

धनी मेरे ध्यान तुमारे, बैठे बुधजी बरस सहस्त्र चार ।
छे सै साठ बीता समे, दुनियां को भयो आचार[2] ॥ १

हिन्दू मुसलमान रे फिरंगी[3] कै जातें, होदी बोदी जैन अपार ।
बादें सो ब्रोध बधारिया, करी अगनी उदेकार ॥ २

कहावें धरम पंथ रे लड़ें माहें बैरें, अंग असुराई को अधिकार ।
पसू पंखी साधू न छूटे काहूं, पुकारन काहूं बहार[4] ॥ ३

भाजे भजन रे बाजे उछव अटके, ढाहे मंदिर हरिद्वार ।
सत छोड़ सूरों नीचा देखिया, कंमर बांधी रही तलवार ॥ ४

कसे[5] साधू रे काहू भजन ना रह्या, कुली बरस्या जलते अंगार ।
धखयो[6] दावानल दसो दिसा, ऐसा भवड़ा[7] हुआ भयंकार ॥ ५

मांस आहारी रे न दया डरे किनसे, ऐसा हुआ हाहाकार ।
*बुधजी विना बैराट में, ऐसो बरत्यो बेहेवार ॥ ६

१. शिर मौर । २. आचार विचार । ३. योरूप के लोग । ४. सुधि । ५. दुःख देना । ६. जला । ७. बवंडर (अनीति का) ।

आवसी धनी धनी रे सब कोई केहेते, आगमी[1] करते पुकार ।
सो सत बानी सबोंकी करी, अब आए करो दीदार ॥ ७

कुरान पुरान *रे वेद *कतेबों, किए अर्थ सबे निरधार ।
टाली उरभन लोक चौदेकी, मूल काढ्यो मोह अहंकार ॥ ८

सुंन निरगुन निरंजन, देखे *बैकुंठ *निराकार ।
*अक्षर पार *अक्षरातीत, प्रेम प्रकास्यो पार के पार ॥ ९

पेहेरचो बागो रे बांधी कंमर, *अस्व उजले[2] भए अस्वार ।
होसी बड़ा मेला बरस एके, साथ होत सबे तैयार ॥ १०

॥ प्रकरण ॥ ३५ ॥ चौपाई ॥ ५६५ ॥

## राग श्री

हों साथ जी बेगें[3] ने बेगें, बेगें ने मिलो रे सैंयाँ समे रासको ।

कारज कारन की बात अति बड़ी, याको क्यों कहिए अवतार ।
रे साथजी हुई अखंड निध पांचो[4] भेली, कियो सो बड़ो विस्तार ॥ १

धनी मैं अरधांग *अक्षर मुझ माहीं, बुधजी बोले सो कै प्रकार ।
हुकम महंमद नूर ईसा भेला, कजा इमाम मेहेदी सिर मुद्दार[5] ॥ २

अंग समागम[6] धनी के, हिरदें लियो सो सब विचार ।
साके सोले तोड़ी गुझ रहे, या दिनसें कियो सो प्रगट पसार ॥ ३

आई नूरबुध बैराट माहीं, विस्व करी सो निरविकार ।
छोटे बड़े नर नार सबे मिल, रंगें गाए सो मंगल चार ॥ ४

काटे सो आउध[7] असुरों के, पाड़ी पापीड़ा के सिर पर प्रहार[8] ।
इने दुख दिए साध संत को, तो सेहेता है सिर पर मार ॥ ५

रूँधी रूदे त्रिगुन त्रैलोकी, बैठा था करके अंधार ।
अब प्रगटी जोत तलेलागी आकासों, उड़ाए दियो जो थो धुसार[9] ॥ ६

---

१. भविष्य वक्ता । २. निष्कलंक अश्व । ३. जल्दी । ४. पांच शक्तियां । ५. आशय ।
६. मिलन । ७. अस्त्र । ८. मार । ९. धुंध (अज्ञान) ।

जुद्ध दारुण अति जोर हुआ, तिमर घोर झुंझार ।
प्रकासवान खांड़ा धार बुधें, निरमल कियो संसार ॥ ७

पड़चा पड़छंदा पाताल आकासें, धरती धम धमकार ।
खल भल हुआ लोक चौदे, करत कालिंगा[1] को संघार ॥ ८

घर घर उछव बाजे रस बाजे, चोहोटे चौवटे थेई थेईकार ।
पसू पंखी साधू कोई न दुखी, सुखे खेलें चरें चुगें करार ॥ ९

सत बरत्यो त्रिगुन त्रैलोकी, असत न रही लगार ।
काटी करम फांसी दुनियां की, पीछे निरमल किए सिरदार ॥ १०

*राई *गौरी *सावित्री जो कोई सती, सब धवल गावें नर नार ।
पुरुष दूजा कोई काहूं न कहावे, सबों भजिया कर भरतार ॥ ११

एक सृष्टि धनी भजन एकै, एक गान एक आहार ।
छोड़के बैर मिले सब प्यारसों, भया सकल में जै जै कार ॥ १२

मिलके साथ आवे दौड़ता, मिने *सकुंडल *सकुमार ।
निज धामसे आई सखियां, जुथ चालीस सहस्त्र बार ॥ १३

खेलें मिलके रास जागनी, भेलें इहां से चौबीस हजार ।
करसी लीला बरस दस तोड़ी, हांस विलास आनन्द अपार ॥ १४

व्रजलीला लीला रास मांहें, हम खेले जानके जार[2] ।
जागनी लीला जाग पेहेचान, पीउसों जान विलसे करतार ॥ १५

सब्दातीत निध ल्याए सब्द में, मेटचो सबनको अंधकार ।
तीसे सृष्टि विस्नु सौ बरसें, प्रेमें पीवेगा सब्दों का सार ॥ १६

विस्नुको पोहोंचाए ठौर अक्षर हिरदे, बुधजी देएँगे खोल के द्वार ।
अखंड ब्रह्मांड बरस पचास पीछे, रेहेसी हिरदे में खुमार[3] ॥ १७

किया जमा सब सबदों का, धोए हाथ और हथियार ।
होसी नेहेचल सुख चौदे लोकों, हम देखे खेल कारन इन बार ॥ १८

---

१. कलियुग । २. प्रेमी । ३. मस्ती ।

महामत जागसी साथ जी भेले, जहाँ बैठे मिने दरबार ।
हम उठके आनंद करसी भीलना, हँस हँस करसी सिनगार ॥ १९

तीन ब्रह्मांड लीला तीन अवस्था, खिनमें देखे खेले संग आधार ।
धनी मैं अरधांग साथ अंग मेरा, इन घर सदा हम नित विहार ॥ २०

॥ प्रकरण ॥ ५४ ॥ चौपाई ॥ ५८५ ॥

## राग धवल

आई आगम बानी इत मिलो, विस्व मुख करत बखान ।
कौल सबनके पूरन भए, आए सो पोहोंचे निसान ॥ १

चेतो सबे सत वादियो, सुनियो सतगुर मुख बान ।
धनी मेरा प्रभु विस्व का, प्रगटिया परवान ॥ २

आगमी सब खड़े हुए, दिन बोहोत रहे थे गोप ।
आए धनी मेले मिने, प्रगटी है सत जोत ॥ ३

पेहेले मंडल में मांगी मुझे, सो आए व्याही इत ।
कौल किया लिख्या शास्त्रों में, सो आए पोहोंची सरत ॥ ४

मैं जो आई व्याहन दुलहे को, दुलहा आए मुझ कारन ।
बाँधे पालवसों पालव,[1] पाट बैठे दुलहा दुलहिन ॥ ५

सत पर सत दोऊ परवत, तोरन बाँधे हैं बंध ।
विन थलिएं[2] विवाह हुआ, हाथों हाथ जोड़े मूल सनमंध ॥ ६

मंडल अखंडमें माड़वा, चौरी[3] थंभ रोपे हैं चार ।
सो थंभ थापे थिर कर, कहूँ सो तिन को प्रकार ॥ ७

एक व्रज दूजो रास को, दूजे दोए इन वैराट ।
चारो थंभों चौरी रची, रच्यो सो नेहेचल ठाट ॥ ८

एक बेर एक मांड़वे, मोर बांधियो सीस ।
व्याही बारे हजार को, और हजार चौबीस ॥ ९

---

१. पल्लू । २. स्थल । ३. लग्न मंडप ।

तीन फेरे दुलहे पीछे फिरी, चौथे फेरे आगल भई ।
अब ए लीला सब गावसी, सब मिल करि हैं सही ॥ १०

और कागद सब उड़ गए, उड़यो सबों को अग्यान ।
पसरयो प्रकास जो पीउ को, ब्रह्म सृष्टि प्रगट भई पेहेचान ॥ ११

ठौर ठौर थाने दिए, मेला हुआ है मध देस ।
छत्रपति नमे नेहसों, राए राने पृथीके[1] नरेस ॥ १२

बैठे सिंघासन सिर छत्र, वैराट बरती है आन ।
मुकट मनी ढोलें चमर,[2] नवखंड घुरे हैं निसान[3] ॥ १३

जोत जागृत बुध जोर हुई, सत बानी कियो है विस्तार ।
कालिंगा कुली मारिया, सत सुख वरत्यो संसार ॥ १४

*प्रहलाद *युधिष्ठिर *वसुदेव, *बलि *रुकमांगद *हरिचंद ।
*सगाल *दधीचि *मोरध्वज, कसनी कर छूटे या फंद ॥ १५

सतबादी नाम केते लेऊँ, कै हुए तरन तारन ।
सत न छोड़या कै दुख सहे, सो या दिनके कारन ॥ १६

जोगारंभ कर देह रखी, *नवनाथ जाए बसे बन ।
सिध चौरासी और कै जोगी, सो भी कारन या दिन ॥ १७

असुर केते कहूँ पीर कै, केते कहूँ पैगंमर ।
आए मिले इत सब कोई, जेता कोई भेष धर ॥ १८

बरना बरन बादे[4] लड़ते, क्रोध न छोड़ता कोए ।
चाल असत की चलते, हिंदू मुसलमान दोए ॥ १९

बाघ बकरी एक संग चरें, कोई न करे किसीसों बैर ।
पसू पंखी सुखें चरें चुगें, छूट गयो सब को जेहेर ॥ २०

सनमुख सब एक रस भए, भाग्यो सो विस्वको क्रोध ।
घर घर आनंद उछव, कुली पोहोरो[5] काढ़यो सबको क्रोध ॥ २१

---

१. पृथ्वी । २. चंवर । ३. नौबत । ४. विवाद से । ५. पहरा ।

धनी आए मेरे लाड़ पालने, वतन पार के पार ।
कारज कारन महाकारन से, न्यारीहों इन पीउकी नार ॥ २२
ए बात पोहोंची जाए वैकुंठ, बुधजीएं उड़ायो उनमान ।
सुक सिव सन ब्रह्मा नमे, नमे विस्नु लखमी नाराएन ॥ २३
मुक्ति दै सब जीवों को, पावें पसू पंखी नर नार ।
होसी वैराट ए धंन धंन, सुख आनंद अखंड अपार ॥ २४
ए नेक करी मैं इसारत, याको आगे होसी बड़ो विस्तार ।
थोड़े से दिन में देखोगे, वरतसी जै जै कार ॥ २५
साथ सुनो एक वचन, आवे बाई सकुंडल सकुमार ।
रास खेल घर चलसी, भेले इन भरतार ॥ २६
कहे महामत ऐसो खेल, जो तुम माग्या था चित दे ।
देख खेल हँस चलसी, घर बातां करसी ए ॥ २७

॥ प्रकरण ॥ ५५ ॥ चौपाई ॥ ६१२ ॥

## प्रार्थना—राग बसंत

भई नई रे नवो खंडों आरती, विजिया अभिनंदकी आरती ।
प्रेम मगन होए उतारती, सखी आप पिया पर वारती ॥ १
दुष्टाई सबोंकी संघारती, सुख अखंड आनंद विस्तारती ।
जन सचराचर तारती, भई नई रे नवों खंडों आरती ॥ २
सैयाँ सबे सिनगार साजती, मिने सुरत पियाकी विराजती ।
ए सोभा इतहीं छाजती, भई नई रे नवो खंडों आरती ॥ ३
झालर अगनित बाजे ले बाजती, ब्रह्मांड में नौबत गाजती ।
कलिजुग सेना सुन भाजती, भई नई रे नवो खंडों आरती ॥ ४
*सप्तधात सुंन मंडल थाल, निरंजन जोत भई उजाल ।
झलहलिया इत नूरजमाल, भई नई रे नवो खंडों आरती ॥ ५
पसरी दया प्रगटे दयाल, काटे दुनीके करम जाल ।
चैतन्य व्यापी भए निहाल, भई नई रे नवो खंडों आरती ॥ ६

सैन्या सहित आए त्रिपुरार, आए ब्रह्मा पढ़त मुख वेद चार ।
विस्नु बोलत बानी जै जै कार, भई नई रे नवो खंडों आरती ॥ ७

आए धरमराए और इंद्र वरुन, नारद मुनि गंधर्व चौदे भवन ।
सुर असुरों सबों लई सरन, भई नई रे नवो खंडों आरती ॥ ८

आए सनकादिक चारो थंभ, लिए खड़े संग विस्नु ब्रह्मांड ।
जो ब्रह्म अनभवी भए अखंड, भई नई रे नवो खंडों आरती ॥ ९

जिन हद कर दई *नवधा भगत, जुदी कर गाई पाई प्रेम जुगत ।
यों आए सुक व्यास बड़ी मत, भई नई रे नवो खंडों आरती ॥ १०

आए नवनाथ चौरासी सिध, बरस्या नूर सकल या विध ।
इत आए बुध जी ऐसी किध, भई नई रे नवो खंडों आरती ॥ ११

आए चारों संप्रदा के साधू जन, चार आश्रम और चार वरन ।
चारों खूटों के आए गावते गुन, भई नई रे नवो खंडों आरती ॥ १२

आए गछचौरासी जो अरहंती, दत्तजी दसनामी जो महंती ।
आए करम उपासनी वेदांती, भई नई रे नवो खंडों आरती ॥ १३

आए खटदरसन खट सास्त्र भेदी, बहत्तर फिरके आए अथर्ववेदी ।
आए सकल कैदी और बे कैदी, भई नई रे नवो खंडों आरती ॥ १४

बुधजी की जोतें कियो प्रकास, त्रैलोकीको तिमर कियो नास ।
लीला खेलें अखंड रास विलास, भई नई रे नवो खंडों आरती ॥ १५

पिया हुकमें गावें महामत, उड़ाए असत थाप्यो सत ।
सब पर कलस हुओ आखरत, भई नई रे नवो खंडों आरती ॥ १६

॥ प्रकरण ॥ ५६ ॥ चौपाई ॥ ६२८ ॥

### भोग-राग काफी

कृपा निध सुंदरवर स्यामा, भले भले सुंदरवर स्याम ।
उपज्यो सुख संसार में, आए धनी श्री धाम ॥ १

प्रगटे पूरन ब्रह्म सकल में, ब्रह्म सृष्टि सिरदार ।
ईस्वरी सृष्टि और जीव की, सब आए करो दीदार ॥ २

नित नए उछव आनंद में, होत किरंतन सार ।
वैस्नव जो कोई *खट दरसनी, आए इष्ट आचार ।। ३

भोजन सरबे भोग लगावत, पाँच सात अंन पाक ।
मेवा मिठाई अनेक अथाने,[१] विध विध के बहु साक ।। ४

अठारे बरन नर नारी आए, साजे सकल सिनगार ।
प्रेम मगन होए गावें पिया के, धवल मंगल चार ।। ५

कै गंधर्व गुन गावें बजावें, कै नट नाचन हार ।
कै रिषी मुनी वेद पढ़त हैं, बरतत जै जै कार ।। ६

जबकी माया ए भई पैदा, ए लीला न जाहेर कब ।
व्रज रास और जागनी लीला, ए जो प्रगटी अब ।। ७

चारो तरफों चौदे लोकों, ए सुध हुई सबों पार ।
बाजे दुंदुभी भई जीत सकल में, नेहेचल सुख बे सुमार ।। ८

जोत उदद्योत[२] कियो त्रिलोकी, उड़यो मोह तत्व अंधेर ।
बरस्यो नूर वतन को, जिन भान्यो[३] उलटो फेर ।। ९

प्रगटे ब्रह्म और ब्रह्म सृष्टि, और ब्रह्म वतन ।
महामत इन प्रकास थें, अखंड किए सब जन ।। १०

।। प्रकरण ।। ५७।। चौपाई ।। ६३८ ।।

राग कटको

राजाने मलोरे राणें राए तणों, धरम जातां रे कोई दौड़ो ।
जागोने जोधा रे उठ खड़े रहो, नींद निगोड़ी रे छोड़ो ।। १

छूटत है रे खड़ग[४] छत्रियों से, धरम जात हिंदुआन ।
सत न छोड़ो रे सत वादियों, जोर बढ्यो तुरकान[५] ।। २

कुलिएं छकाए[६] रे दिलड़े जुदे किए, मोह अहंके मद माते ।
असुर माते रे असुराई करे, तो भी न मिलो रे धरम जाते ।। ३

---

१. अचार । २. चमक । ३. तोड़ा । ४. तलवार । ५. यवन । ६. बहकाए ।

त्रैलोकीमें उत्तम खंड भरत को, तामें उत्तम हिंदू धरम ।
ताको छत्रपतियों के सिर, आए रही इत सरम ।। ४

पन ने धारी रे पन इत ले चढ़या, कोई उपज्यो असुर घर अंस ।
जुधने करने उठया धरमसों, सब देखें खड़े राज बंस ।। ५

भरत खंड रे हिंदू धरम जान के, माँगे विस्नु संग्राम[1] अरथ ।
फिरत आप रे ढंढेरा पुकारता, है कोई देव रे समरथ ।। ६

असुर सत रे धरम जुध मांगही, सुर केहेलाए जो न दीजे ।
पूछो ने पंडितरे जुध दिए विना, धरम राज कैसे कहीजे ।। ७

राज कुली रे रखन रजवट,[2] जो न आया इन अवसर ।
धरम जाते जो न दौड़िया, ताए सुर कहिए क्यों कर ।। ८

वेद ने व्याकरणी रे पंडित पढवैयो,[3] गछ दीन इष्ट आचार ।
पीछे रे बल कब करोगे, होत है एका कार ।। ९

सिध ने साधो रे संतो महंतो, वैस्नव भेष दरसन ।
धरम उछेदे[4] रे असुरें सबन के, पीछे परचा[5] देओगे किस दिन ।। १०

सुनियो पुकार रे स्याँने संत जनों, जो न दौड़चा जाते सत ।
गए ने अवसर पीछे कहा करोगे, कहां गई करामात ।। ११

लसकर[6] असुरों का चहुँ दिस फैलया, बाढ़यो अति विस्तार ।
बन ने जंगल रे हिंदू रहे परवतों, और कर लिए सब धुंधुकार ।। १२

हरद्वार[7] ढहाए उठाए तपसी तीरथ, गौवध कैयों बिघन ।
ऐसा जुलम हुआ जग में जाहेर, पर कंमर न बांधी रे किन ।। १३

सुर ने केहेलाए रे सेवा करे असुर की, जो दारुबाए[8] उड़ावे देहुर[9] ।
हिंदू नाम रे सेन्या तिनकी होए खड़ी, ऐसा कुलिएँ किया रे केहेर[10] ।। १४

प्रभू प्रतिमा रे गज पांउ बांध के, घसीट के खंडित कराए ।
फरस बंदी ताकी करके, तापर खलक[11] चलाए ।। १५

---

१. धर्म युद्ध । २. मर्यादा । ३. पढ़ाने वाले । ४. नष्ट । ५. परिचय । ६. फौज । ७. मंदिर । ८. बारूद । । ९. मंदिर । १०. अत्याचार । ११. जनता ।

असुरें लगाया रे हिंदूओं पर *जेजिया, वाको मिले नहीं खान पान ।
जो गरीब न दे सके *जेजिया, ताए मार करें मुसलमान ॥ १६

सास्त्रे आवरदा[1] कही कलिजुग की, चार लाख बत्तीस हजार ।
काटे दिन पापें लिख्या मांहें सास्त्रों, सो पाइए अर्थ अंदर के विचार ॥ १७

सोले सै लगे रे *साका सालबाहनका, संवत सत्रह सै पैंतीस ।
बैठाने साका* विजिया अभिनन्दका, यों कहें सास्त्र और जोतीस ॥ १८

कलिजुगे चेहेन[2] रे अंतके सब किए, लोक बतावें अजूं दूर अंत ।
अर्थ अन्दर का कोई न पावे, बारे अरथ बाहेर के ले डूबत ॥ १९

बातने सुनी रे बुंदेले छत्रसालने, आगे आए खड़ा ले तलवार ।
सेवाने लई रे सारी सिर खैंचके, सांइए किया सैन्यापति सिरदार ॥ २०

प्रगटे निसांन रे *धूमरकेत[3] क्षय मास, पर सुध न करे अजूं कोई इत ।
बेगेने पधारो रे बुधजी या समे, पुकार कहें महामत ॥ २१

॥ प्रकरण ॥ ५८ ॥ चौपाई ॥ ६५९ ॥

राग श्री

ऐसा समे जान आए बुधजी, कर कोट सूर समसेर[4] ।
सुनते सोर सब्द बाननका, होए गए सब जेर ॥ १

काटे विकार सब असुरों के, उड़ायो हिरदे को अंधेर ।
काढ्यो अहंकार मूल मोह मन को, काढ्यो सो उलटो फेर ॥ २

वेद कतेबके जो अर्थ, ढ़ापे हुते सबों पास ।
विस्नु संग्राम मांगे जो असुर, ताको कियो कोट प्रकास ॥ ३

तब पेहेचान भई सकल, हुए सब सर्वग्यन[5] ।
नेहेचल सूर ऊग्यो निजवतनी, हुओ मन को भायो सबन ॥ ४

बाललीला भई व्रज में, लीला किशोर वृन्दावन ।
जगंनाथ बुधजी जागनी, भई भोर लीला बुढ़ापन ॥ ५

---

१ आयु । २. निशान । ३. पुच्छल तारा । ४. तलवार । ५. सर्वज्ञान ।

राजा प्रजा बाला बूढ़ा, नर नारी ए सुमरन ।
गाए सुने ताए होवहीं, लीला तीनों का दरसन ॥ ६

सुर असुर सबों को ए पति, सब पर एकै दया ।
देत दीदार सबनको सांई, जिनहूँ जैसा चाह्या ॥ ७

साहेब के हुकमें ए बानी, गावत हैं महामत ।
निज बुध नूर जोस को दरसन, सबमें ए पसरत ॥ ८

॥ प्रकरण ॥ ५९ ॥ चौपाई ॥ ६६७ ॥

राग गौरी

कुली बल देखो रे, ए जो देखन आइयां तुम ।
खेल किया तुमारी खातर, सुनियो हो सृष्टि ब्रह्म ॥ १

अथाह थाह नहीं ऊँचा नीचा, गेहेरा गिरदवाए[1] मोह जल ।
लोक चौदे खेलें जीव याके, याको सूझे न याकी कल ॥ २

सत ढ़ांप्या पीठ देवाई पियाको, झूठ ल्याया नजर ।
नेहेचल राज सोहाग धनी को, सो भुलाए दियो घर ॥ ३

नेहेचल घरथें आइयां खेल देखने, सत सरुप परवान ।
सो अंकूरी भूलें क्यों यामें, जाए दई पीउ पेहेचान ॥ ४

विन वाए चढ़्या बगरूला[2], सबको देखे विन आंखें ।
खिनमें फिरबले सब लोकों, पांऊ बिना बिन पांखें ॥ ५

कुली दज्जाल अंधेर सरूपें, त्रिगुन को पाड़े त्रास ।
सूर सिरोमन साध संग्रामें, पीछे पटक किए निरास ॥ ६

मोह फांस बंध दिए दुनी को, सब अंगों बस आने ।
राज करे सिर सबन के, चलावत ज्यों जित जाने ॥ ७

प्रथम मूल से बुध फिराई, अहंमेव दियो अंधेर ।
या विध इंड रच्यो त्रैलोकी, मूलथें दियो मन फेर ॥ ८

---

१. आसपास । २. बवंडर ।

उदयो लोभ विषे रस विषया, सेन्या पति सैतान ।
दसो दिस आग लगाई दुनियाँ, सुध बुध खोई सान ॥ ९

बाढ़ी व्याध[१] स्वाद गुन इंद्री, मद चढ़्यो मोह अंध ।
माता बेहेन पुत्री गोराँनी,[२] कासों नहीं सनमंध ॥ १०

खिन सज्जन खिन दुसमन, दिवाना दाना[३] प्रवीन ।
विध विध के बंध फंद डार के, सब सूर किए आधीन ॥ ११

ना कछू चोर न कोई साधू, कै डिंभकें[४] धरे ध्यान ।
तान मान सब विद्या व्याकर्न, बहुरंगी बहु ग्यान ॥ १२

वेद कतेब सास्त्र सबे मुख, जुगें लिए सब जीत ।
मंत्र धात करामात माहीं, पाक उत्तम पलीत ॥ १३

जिन अंगों मिलिए पीउसों, सोए दिए उलटाए ।
फेरी दुहाई वैराट चौखूंटों, कोई सिर न सके उठाए ॥ १४

चौदह लोक अग्याकारी, सिर सबन के हुकम ।
या छलने ऐसे उरझाए, आप भूली सुध घर खसम ॥ १५

केती विध कहूँ कलिजुग की, अलेखें अप्रमान ।
बरना बरन कर मिने व्याप्या,[५] काहूँ न किसी की पेहेचान ॥ १६

छूटी छोले लेहेरें पड़ियां बाहेर, छूट गई मरजाद ।
भाने भेष पंथ पैंड़े दरसन, ढाहे तीरथ प्रासाद[६] ॥ १७

ग्रास किए त्रिगुन त्रैलोकी, ऐसो मोह अंध अहंकार ।
सुध न होवे काहूँ धाम धनी की, पोहोंचने न देवे पुकार ॥ १८

पोहोंचे नहीं कल बल कुली को, कोई मिने चौदे भवन ।
ऐसो महाबली ताए उड़ावें, बुधजी एकै खिन ॥ १९

चलता पूर लिए दोऊ किनारे, डर धरता बुधजी का ।
मद चढ़्यो करी एकल छत्री,[७] ले बैठा सिर टीका ॥ २०

---

१. रोग । २ गुरू पत्नि । ३. सयाना । ४. छल से । ५. फैला हुआ । ६. महल (मंदिर) ।
७. एक छत्र ।

बुध जी धनी हुकम माहें, फिरस्ता *असराफील ।
तिन काँन दिए सुनने आग्याको, अब हुकम को नाहीं ढील ॥ २१

पोहोंची पुकार सुनी धनी श्रवनों, कही कुली की सब गम ।
कलपे जुथ जान ब्रह्मसृष्टिी के, मिले नूर बुध हुकम ॥ २२

उड़ाए अंधेर किया मिलावा, प्रकास कियो सब अंग ।
काढ्यो मोह अहंकार मूलथें, जो करता सबनसों जंग ॥ २३

उदयो अखंड सूर निज वतनी, भई जोत कोटान कोट ।
कहें महामत रात टली सबनको, आए सब धनीकी ओट[1] ॥ २४

॥ प्रकरण ॥ ६० ॥ चौपाई ॥ ६६१ ॥

## राग नट

### साहेब तेरी साहेबी भारी

कौन उठावे तुझ बिन तेरी, सो दई मेरे सिर सारी ॥ १

त्रिगुन *तिथंकर[2] अवतार, कै फिरस्ते पैगंमर ।
तिन सबकी सोभा ले स्याम, आया *महंमद पर ॥ २

*नूरनामे में पैगंमर, एक लाख बीस हजार ।
सो सिफत सब महंमद की, सो महंमद स्याम सिरदार ॥ ३

सो महंमद कासिद होएके, ले आया फुरमान ।
वास्ते हमारे हममें, पोहोंचाए हैं निसान ॥ ४

रूहअल्ला किल्ली अल्लाहपें, ले उतरे चौथे आसमान ।
सो हम माहें बैठ के, खोले कुफल[3] कुरान ॥ ५

सो फुरमान आप खोल के, करी जाहेर हकीकत ।
खोले वेद कतेब के गुझ, आई सबों की सरत ॥ ६

*कलीम अल्लाह कह्या मूसे को, फुरमाया सब कहे ।
सो कलाम[4]—अल्ला की रोसनी, तावे हादी के रहे ॥ ७

---

१. शरण । २. जैन ऋषि । ३. ताला (भेद) । ४. कुरान (ब्रह्म ज्ञान) ।

*खलील अल्ला दोस्त खुदाएका, जाकी पोहोंची द्वा हजूर ।
सो भी रहत इमाम में, कलाम अल्ला का जहूर[1] ॥ ८

अली बली सेर दरगाह का, जो दरगाह बड़ी खुदाए ।
अवलसें किन पाई नहीं, सो आखर प्रगटी आए ॥ ९

नूह नबी को वारसी, आदम दई पोहोंचाए ।
आए ईसा *नूह नबी *इमाम, सो *आदम *सफी अल्लाह ॥ १०

*असराफील ले उतरचा, जागृत बुध नूर ।
सो बैठ बजाए इमाम में, मगज मुसाफी[2] सूर ॥ ११

*जबराईल जोस धनी का, सो आया गिरो जित ।
करे वकीली उमत[3] की, कहूं पैठ न सके कुमत ॥ १२

औलिए[4] अंबिए[5] गोस[6] कुतब,[7] सब आए बीच उमत ।
रूहें पैगंमर फिरस्ते, सब मिले आखरत ॥ १३

*बनी असराईल *जिकरिया, *एहिया *युसफ *इस्माईल ।
बखत बदल्या, *दाऊद आए, हुए जाहेर नूर जमाल ॥ १४

*इसहाक ओलिया *इद्रीस, आए बोहोना *सलेमान ।
मुलक[8] हुआ नबिअन का, मार दिया सैतान ॥ १५

कै किताबें कै कलमें, कै जो नामें और ।
जो कोई कहावे बुजरग, सब आए मिले इन ठौर ॥ १६

दई बड़ी बड़ाई आपसी, दियो सो अपनों नाम ।
करनी अपनी दे थापी, दे साहेदी अल्ला कलाम ॥ १७

मोहे अपनों सब दियो, रही न कोई सक ।
सही नाम दियो मोहोर अपनी, कर रोसन थापी हक ॥ १८

खुदा काजी होय के, कजा करसी सबन ।
सो हिसाब जरे जरे को, लियो चौदे भवन ॥ १९

---

१. प्रकाश । २. धर्म ग्रंथ । ३. ब्रह्मसृष्टि । ४. पैगम्बर । ५. अवतार । ६. न्यायकर्त्ता । ७. ज्ञानी । ८. देश ।

त्रैलोकी तिमर नसाइयो, कर रोसन अति जहूर ।
चौदे लोक चारों तरफों, बरस्या, खुदाएका नूर ॥ २०

भई सोभा संसार में, अति बड़ी खूबी अपार ।
दुनियां उठाइ पाक कर, ना जरा रह्या विकार ॥ २१

पेहेले प्रले करके, उठाए लिए ततखिन ।
मेरे हाथ कराए के, दई सोभा चौदे भवन ॥ २२

काटे करम सबन के, काल मार किया दुख दूर ।
हिरदे माहें नूर के, लिए नजर तले हजूर ॥ २३

रोसनी पार के पार की, दई साहेब नाम धराए ।
भई दुनियां साफ मुसाफसे, मुझसे कजा[1] कराए ॥ २४

नूर अक्षर की नजरों, कै कोट ऐसे इंड ।
त्रिगुन त्रैलोकी पलमें, कै उपज फना ब्रह्मांड ॥ २५

सो *नूर सरूप आवें नित, *नूरतजल्ला के दीदार ।
आस पुराई इन की, मेरे ऐसे इन आकार ॥ २६

ऐसी बड़ाई कै सिर मेरे, दे दे लई जो दाब[2] ।
सब दुनियां के दिल में आनी, दे साहेदी[3] सब किताब ॥ २७

॥ प्रकरण ॥ ६१ ॥ चौपाई ॥ ७१८ ॥

## राग श्री

मांगत हों मेरे दुलहा, मन कर करम वचन ।
ए जिन तुम *खाली करो, मैं अरज करूँ दुलहिन ॥ १

मेरे धनी तुमारी साहेबी, अपनी राखो आप ।
इसक दीजे मोहे अपनों, मैं तासों करूँ मिलाप ॥ २

ना चाहों मैं बुजरगी,[4] ना चाहों खिताब खुदाए ।
इसक दीजे मोहे अपनों, मोहे याहीसों मुद्दाए[5] ॥ ३

---

१. न्याय । २. दबा कर । ३. ग्वाही । ४. बड़प्पन । ५. आशय ।

इलम चातुरी खूबी अंग की, मोहे एही पट लिख्या अंकूर ।
एही न देवे देखने, मेरे दुलहे के मुखका नूर ॥ ४

एही अंकूर साथ कारन, करत मिलाप अंतराए[1] ।
ना तो एकै आहि इन पिया की, देवे ब्रह्मांड उड़ाए ॥ ५

एही खूबी मेरे अंग की, देत नाहीं दरद ।
एही हांसी बुजरगी, करत इसक को रद ॥ ६

इलम आतम संग बुध के, ए जो आवत जुबांए ।
फेर श्रवना देवें आतम को, एही परदा नाम खुदाए ॥ ७

ना तो क्यों न उड़े इन आतमा, विचार के एह वचन ।
इसक जरे आतम को, इत हो जाए सब अगिन ॥ ८

एही बुजरगी साथ जी, भया गले में तौक[2] ।
धनी कों न देवे देखने, एही खूबी इन लोक ॥ ९

साथ मोकों सुख चाहें, जान धाम की प्रीत ।
मैं परमोधों जान वतनी, मोहे बंधन भयो इन रीत ॥ १०

वे सेवा करें बहु विध, फेर फेर देवें बड़ाई ।
हेत करें जान के साहेब, मोहे एही होत अंतराई ॥ ११

मैं भी हेत करत हों इनसों, जान के वतन सगाई ।
मोहे प्यारा साथ मेरे धनी का, एही पट आड़े आई ॥ १२

जिन दया परदा उड़ाइया, मैं फेर फेर मागों सो मेहेर ।
इसक दीजे मोहे अपना, जासों लगे बुजरगी जेहेर ॥ १३

मोहे सेवा प्यारी पीउ की, साहेब हो बैठो तुम ।
अति सुख पाऊँ इनमें, करों बंदगी खसम ॥ १४

बोझ अपनों निज वतन को, सो सब मेरे सिर दियो ।
नाम सिनगार सोभा सारी, मैं भेष तुमारो लियो ॥ १५

---

१. दूरी । २. फंदा ।

अल्ला आसक मासूक महंमद, इसक दीजे हम ।
हम आसक नाम धराए के, मासूक करे हैं तुम ॥ १६

तुम दुलहा मैं दुलहिनी, और न जानूं बात ।
इसकसों सेवा करूँ, सब अंगों साख्यात ॥ १७

अब तो उमत मिली खासी, और उमत दूसरी ।
तीसरी भी कायम हुई, अब काहे को ढील करी ॥ १८

सकल काम भए पूरन, रही ना किसी की सक ।
महामत चाहें पीउ वतन, आए मिलूं ले इसक ॥ १९

प्रेम दरद इसक तुमारा, मैं फेर फेर मागूं फेर ।
प्यारें मिलूं प्यारे पीउसों, प्यारी महामत कहें बेर बेर ॥ २०

॥ प्रकरण ॥ ६२ ॥ चौपाई ॥ ७३८ ॥

राग श्री

जिन सुध सेवा की नहीं, ना कछू समझे बात ।
सो काहे को गिनावे आप साथमें, जिन सुध ना सुपन साख्यात ॥ १

कंमर बांधे देखा देखी, जांने हम भी लगे तिन लार ।
ले कबीला कांध पर, हँसते चले नर नार ॥ २

ए लोक राह न पावहीं, क्योंए न सुनें पुकार ।
ए चले चींटी हार ज्यों, बांधे ऊँट कतार ॥ ३

इन लोकोंकी मैं क्या कहूँ, जो जाए पड़े मुख काल ।
जो साथ केहेलाए सामिल भए, सो भी कहूं नेक हाल ॥ ४

दूध तो देख्या नहीं, देख्या ऊपर का फेन[१] ।
दौड़ करें पड़े खैंच में, ए यों लगे दुख देन ॥ ५

लेने को बुजरगियाँ,[२] सेवें चातुरी चैन ।
सेवा करत सब खैंच की, ए यों लगे दुख देन ॥ ६

---

१. झाग । २. बड़प्पन ।

देखा देखी न छूटही, सेवत हैं दिन रैन ।
खुस बखत होवें खैंचमें, ए यों लगे दुख देन ॥ ७

क्योंए न प्रमोधें[1] समझें, कोई आद अमल ऐसा घेन ।
क्या मूरख क्या समझू, सबे लगे दुख देन ॥ ८

सनमुख होए सेवा करें, मुख बोलत मीठे बैन ।
तित भी खैंच ऐसी भई, ए भी लगे दुख देन ॥ ९

निपट नजीकी सेवहीं, दौड़े एक दूजेपें लेन ।
खैंचा खैंच ऐसी करी, ए भी लगे दुख देन ॥ १०

मन वाचा कर सेवहीं, गलित[2] गात रोवें नैन ।
तहाँ भी खैंच छूटे नहीं, ए भी लगे दुख देन ॥ ११

सेवक कै समझावहीं, साखी सबे मुख केहेन ।
इन भी खैंच छूटी नहीं, ए भी लगे दुख देन ॥ १२

अरथ अंदर का लेवहीं, समझें इसारत[3] सेन ।
खैंच उनकी भी ना गई, वे भी लगे दुख देन ॥ १३

अंदर बाहेर उजले, दोष देखें सब ऐन ।
ताए भी खैंच छूटी नहीं, ए भी लगे दुख देन ॥ १४

तारतम सब समझहीं, धाम सैयाँ हम बेहेन ।
तिन भी क्रोध छूटया नहीं, ए भी लगे दुख देन ॥ १५

ए खेल है इन भांत का, क्योंए न खुले मूल नैन ।
निज नजर खुले विना, कोई न देवे सुख चैन ॥ १६

राह निपट[4] बारीक है, तिन बारीक पर बारीक ।
साथें लई लीक[5] जाहेरी, सो उतरी लीकथें लीक ॥ १७

काहूँ न दरवाजा नजीक, कहां कुफल किल्ली कल गत ।
राह भी नजरों न आवही, ए चले जाहेरी ले मत ॥ १८

---

१. समझाए । २. करुण । ३. संकेत । ४. बिल्कुल । ५. रूढ़ि ।

अब कहा कहूँ मैं इन पर, कोई ऐसी बनी जो आए ।
ए जान बूझ तो भूलहीं, जो इनका कछू न बसाए[1] ॥ १९

राह जुदी दोऊ पेड़ सें, तो कहा सके कोई कर ।
उन आड़ो पट अंतर, इनों बाहेर पड़ी नजर ॥ २०

ना तो सूरे क्यों न बल करें, कोई बुरा न आपको चाहे ।
दौड़त हैं निस—बासर,[2] किन पट न टाल्यो जाए ॥ २१

महामत कहेवें यों कर, हम सैयां दौड़ी धाए ।
पर ए पट *सुंदरबाई बिना, किनहूँ न खोल्यो जाए ॥ २२

बात *सुंदरबाई और है, और उनकी और रवेस[3] ।
गत मत उनकी और है, हम लिया सब उनका भेस ॥ २३

मोहे सिखापन उनकी, दे फुरमान करी रोसन ।
इंद्रावती तो केहेवहीं, जो दोऊ विध करी चेतन ॥ २४

॥ प्रकरण ॥ ६३ ॥ चौपाई ॥ ७६२ ॥

राग श्री

तमें वाणी विचारी न चाल्या रे वैस्नवो, तमें वाणी विचारी नव चाल्यो ।
अक्षर एकनो अर्थ न लाध्यो, मद मस्त थईने हाल्यो ॥ १

सत वाणी वैस्नव ने समझावूं, जेसूं मूल डाल प्रकासी ।
श्री मुख आचारज जे ओचरचा, तेणे जाए भरमना नासी ॥ २

वैस्नव वाणी जो जो विचारि, ए भोम देखी पामो त्रास ।
चौद भवनथी ए वाणी न्यारी, तेमां पेर पेरना प्रकास ॥ ३

प्रथम *मोहतत्वनी उतपन, ते माहेंथी *तत्व पांचे ।
ए पांच तत्व थकी[4] चौद लोक प्रगटचा, एमा वैस्नव होएते न रांचे ॥ ४

एमा प्रेमें पारब्रह्म पामिए, ए वाणी बोले रे एम ।
अनेक कसोटी जो आवे आड़ी, तो ए निध मूकिए[5] केम ॥ ५

---

१. वश । २. रात दिन । ३. रीति । ४. से । ५. छोड़िये ।

वैस्नवो सत वस्त एक देखाडचूं, बीजो कहचो सव नास ।
महाप्रले मां तत्व लेवासे, आंहीं मुझ थकी अजवास ॥ ६
वैस्नवो मोह थकी निध न्यारी दीधी, आपणने अविनास ।
नाम तत्व कहचूं श्रीक्रस्न जी, जे रमे अखंड लीला रास ॥ ७
एहने सरणें सोंप्या वैस्नवने, जहां विध विधना विलास ।
हवे नेहेचल रंग कीजे ते पुरुषसों, देई प्रेमनो पास[1] ॥ ८
पुरुषपणें द्रष्टें न आवे, ए अबलापणें लीजे अंग ।
पुरुष नथी ए[2] विना कोई बीजो, जे रमे नेहेचल लीला रंग ॥ ९
ए प्रीछों[3] तो पारब्रह्म चित आवे, समझे सुपन परूं[4] थाए ।
अखंड तणां सुख एणी पेरे लीजे, लाहो मायामां लेवाए ॥ १०
सत वस्त घणूं स्याने प्रकासूं, अरथी विना नव कहिए ।
एहेना नेहेचल नेहड़ा गोप भला, आ उलटीमां प्रगट न थैए ॥ ११
अरथी[5] होए ते आवी ने पूछे, मोटी मत तेहेने दाखूं ।
ए निध देवा जोग नहीं, तेथीं अंतर राखूं ॥ १२
गुण मुख बोली भलूं न मनावूं, अवगुण न राखूं छानो[6] ।
सत वस्त देवाने सत भाखूं, एमा दुख मानो ते मानो ॥ १३
पतलीने[7] तमें पगला भरिया, लाग्यो स्वाद संसार ।
पुरुषपणें रमया माया मां, तो आडी आवी अंधार ॥ १४
जोयूं नहीं तमें जागीने, अम्रत ढोलीने विष पीधूं ।
असत मंडल ने सतकरी समझ्या, अखंडने वासो[8] दीधूं ॥ १५
अंध थके तमें ए निध खोई, जे तमने सत स्वामिएं दीधी ।
कठण वचन तो कहूं छूं तमने, जो तमें दुष्टाई कीधी ॥ १६
नहींतो करूं कटकाजे जिभ्या वदेवांकू,[9] पणतमें लक्षणें आप एम कहावो ।
जे स्वामी अविचल सुख आपे, तेहेने तमें कां निंदावो ॥ १७

---

१. पुट । २.(परमात्मा)। ३. समझो । ४. दूर । ५. इच्छुक । ६. छिपा । ७. कुलटा । ८. पीठ । ९. टेढ़ा कहे ।

ओलख्या नहीं तमें आचारजजीने, तो भरम माहें भमयां ।
वैस्नव सकलने तमें वांकू कहावो, जो तमें नीचा नमया ।। १८

पतिव्रता नारी ते पति ने पूजे, सेवे अनेक पेरे ।
पीउ पर वचन सुणे जो वांकू, तो देह त्याग त्यहां करे ।। १९

तमें वांकू विसमूं कांई नव जोयूं, जेम भामनी भूंडी[1] भंडावे ।
कुकरम करतां कांई न विचारे, पछे नाहोने[2] नीचूं जोवरावे[3] ।। २०

एणी पेरे सेव्या तमें स्वामीने, चितसूं जुओ विचारी ।
दुष्टपणें तमें धणी दुखवया, हवे केही पेर थासे तमारी ।। २१

सत कहे संतोष उपजे, कुली तणें कांधे चढ्या ।
ते वैस्नव नहीं तेथी रहिए वेगला, जे ए निध मूकी पाछा पड्या ।। २२

केहेतां सवलूं आंणे चित अवलूं, वस्त विना करे विवाद ।
महामत कहे तेहने केम मलिए, जे करे अवला[4] उदमाद ।। २३

।।प्रकरण ।। ६४ ।। चौपाई ।। ७८५ ।।

राग श्री

ए माया आद अनादकी, चली जात अंधेर ।
निरगुन सरगुन होएके व्यापक, आए फिरत है फेर ।। १

ना पेहेचान प्रकृत की, ना पेहेचान हुकम ।
ना सुध ठौर नेहेचल की, ना सुध सरूप ब्रह्म ।। २

सुध नाहीं *निराकार की, और सुध नाही *सुंन ।
सुध ना सरूप काल की, ना सुध भई *निरंजन ।। ३

ना सुध जीव सरूप की, ना सुध जीव वतन ।
ना सुध मोह तत्व की, जिनथें अहं उतपंन ।। ४

सास्त्रों जीव अमर कह्यो, और प्रले चौदे भवन ।
और प्रले पांचों तत्व, प्रले कहे त्रिगुन ।। ५

---

१. मूर्ख । २. पति को । ३. दिखलावें ४. उल्टा ।

और प्रले प्रकृत कही, और प्रले सब उतपंन ।
ना सुध ब्रह्म अद्वैत की, ए कबहूं न कही किन ॥ ६

ए त्रिगुन की पैदास जो, सो समझे क्यों कर ।
त्रिगुन उपजे अहं थें, और हिजाब[१] अहंके पर ॥ ७

ए आदके संसे अबलों, किनहूं न खोले कब ।
सो साहेब इत आए के, खोल दिए मोहे सब ॥ ८

रूहअल्ला[२] की मेहेर से, उपज्यो एह इलम ।
और महंमद की मेहेर थें, सुध कहूँ माया ब्रह्म ॥ ९

प्रकृती पैदा करे, ऐसे कै इंड आलम ।
ए ठौर माया ब्रह्म सबलिक, त्रिगुन की पर आतम ॥ १०

कै इंड अक्षर की नजरों, पलमें होय पैदास ।
ऐसे ही उड़ जात हैं, एकै निमखमें नास ॥ ११

केवल ब्रह्म अक्षरातीत, सत चिद आनन्द ब्रह्म ।
ए कह्यो मोहे नेहेचे कर, इन आनन्द में हम तुम ॥ १२

कहे कतेब साहेदी[३] साहेब की, दे न सके कोई और ।
खुदा की खुदाए बिना, किन पाया नाहीं ठौर ॥ १३

ए कतेब यों कहत है, हादी सोई हक ।
बिना साहेब साहेब वतन को, कोई और न मेटे सक ॥ १४

संसे मिटाया सतगुरें, साहेब दिया बताए ।
सो नेहेचल वतन सरूप, या मुख बरन्यो न जाए ॥ १५

साख पुराई वेद ने, और पूरी साख कतेब ।
अनभव करायो आतमा, जो न आवे मिने हिसेब[४] ॥ १६

हबीब[५] बताया हादिएँ, मेराही मुझ पास ।
कर कुरबाँनी अपनी, जाहेर करूँ विलास ॥ १७

---

१. पर्दा । २. श्री देवचन्द्र जी । ३. गवाही । ४. हिसाब । ५. प्यारा ।

तुम देखत मोहे इन इंडमें, मैं चौदे तबक से दूर ।
अंतरगत ब्रह्मांड तें, सदा साहेब के हजूर ॥ १८

ब्रह्म सृष्टि और ब्रह्म की, है सुध कतेब वेद ।
सो आप आखर आए के, अपनो जाहेर कियो सब भेद ॥ १९

महामत जो रूहें ब्रह्म सृष्टि की, सो सब साहेब के तन ।
दुनियां करी सब कायम, सही भए *महंमद के वचन ॥ २०

॥ प्रकरण ॥ ६५ ॥ चौपाई ॥ ८०५ ॥

सैयां मेरी सुध लीजियो, जो कोई एहेल[1] किताब ।
तुम ताले लिख्या तूरतजल्ला, सुनके जागो सिताब ॥ १

ना छूटी सरीअत करम की, ना छूटी तरीखत उपासन ।
मगज न पावे माएना, चले सब बस परे मन ॥ २

दोऊ दौड़ करत हैं, हिंदू या मुसलमान ।
ए जो उरझे बीच में, इनका सुंन[2] मकान ॥ ३

जोगारंभी[3] या कसबी, पोहोंचे ला मकान ।
मोह तत्व क्योंए न छूटही, कहया प्रदा ऊपर आसमान ॥ ४

एक इलम ले दौड़हीं, और ले दौड़े ग्यान ।
तित बुध न पोहोंचे सबद, ए भी थके इन मकान ॥ ५

दूजी कुरसी इत तरीखत, जाहेरी ऊपर फुरमान ।
हकीकत मारफत की, ना किन किया बयान ॥ ६

सो खिताब खोलन का, हुकम हादी पर ।
जो औलाद आदम हवाकी, सो खोले क्यों कर ॥ ७

पातसाह अबलीस दिल पर, सब पर हुआ हुकम ।
इन दोऊकी अकलसों, कहें खोलें बातून[4] हम ॥ ८

जहाँ कछुए है नहीं, सब कहें बेचून बेचगून ।
सुंन निराकार निरंजन, बेसबी बे निमून ॥ ९

---

१. वारिस (मोमिन) । २. शून्य । ३. योगी । ४. गूढ़ार्थ ।

इत खावंद तो न पाइए, बीच आप के ऐब[1] ।
पीछे कहें हम पाया बातून, हमहीं हैं साहेब ॥ १०
आतम रूह न चीनहीं, ले माएने इलम ग्यान ।
आप खुदा हो बैठहीं, ए अबलीसें फूके कान ॥ ११
लोक जिमी आसमान के, तिनके सबद अकल चित मन ।
सो आगूं ना चल सके, रहे हवा बीच सुंन ॥ १२
एह सिपारे दूसरे, या विध कर लिखे बयान ।
बीच हवा के पलना, चौदे तबक झुलान ॥ १३
भूले सब जुदे पड़े, माएना सबों का एक ।
ए सतगुरु हादी बिना, क्यों कर पावे विवेक ॥ १४
हवा पार महंमद नूर कह्या, नूर पार तजल्ला नूर ।
अरज करी वास्ते उमत, पोहोंच के हक हजूर ॥ १५
नब्बे हजार हरफ कहे, यों कर किया हुकम ।
तीस हजार जाहेर करो, आखर बाकी खोलें हम ॥ १६
सो जाहेर सब जानत, जो ले खड़े सरीअत ।
और मुद्दा बिलंदी गुझ रख्या, सो खोलसी बीच आखरत ॥ १७
सोई साहेब आखर आवसी, किया महंमद सो कौल[2] ।
भिस्त दरवाजे नेहेचल, सब को देसी खोल ॥ १८
काजी होए के बैठसी, हिसाब होसी सबन ।
पल में प्रले करके, उठाए लेसी ततखिन ॥ १९
ए सब उमत कारने, आखर करी सरत ।
देसी भिस्त सबन को, सो रूहअल्ला की बरकत ॥ २०
सो हुकम हादी का छोड़के, छोड़ साहेब के पाए ।
बीच अंधेरी सुंन के, जाए जल बिन गोते खाए ॥ २१

१. अवगुण । २. वचन ।

अब पूछो दिल अपना, इत कहां रह्या आकीन[1] ।
मुंह से कहें हम महंमद के, कायम खड़े बीच दीन ।। २२
ए विचारे क्या करें, सुख ताले लिख्या नाहें ।
ना तो जान बूझ पढ़े आरफ,[2] क्यों परें दोजख माहें ।। २३
तो आंखां मूंदे कहे, और बेहेरे कहे श्रवन ।
पढ़े तो पावें नहीं, कुफल[3] दिलों पर इन ।। २४
सो पोहोंची सरत सबन की, हुए वेद कतेब रोसन ।
सदी अग्यारहीं बीच में, होसी दोजख भिस्त सबन ।। २५
दिया दोऊ हाथों कर, सिर साहेबें खिताब ।
महामत खोले सो माएने, आगे एहेल किताब ।। २६
ए अहंमद अल्ला के हुकमे, महंमद कह्या समझाए ।
अब क्या कहिए तिनको, जो ए सुनके फेर उरझाए ।। २७

।। प्रकरण।। ६६ ।। चौपाई ।। ८३२ ।।

## राग सिधूड़ो

वाटडी विसमी रे साथीडा वेहद तणी, ऊवट कोणे न अगमाए[4] ।
खांडानी धारे रे एणी वाटें चालवूं, भाला अणी[5] केहेने न भराए ।। १
आडीने आडी रे अगनी जोने पर जले, वैराट माहें न समाए ।
ब्रह्मांड फोडीने झालो जोने नीसरी, ओलाडी[6] ते केहेने न जाए ।। २
इहां हस्ती थईने एणी वाटे हीडवूं,[7] पेसवूं सूईना नाका माहें ।
आल न देवी रे भाई आकारने, झांप तो भैरव खाए ।। ३
ओतड[8] दीसे रे अति घणूं दोहेली,[9] हाथ न थोभे रे पाए ।
काम नहीं रे इहां काएर तणूं, सूरे पूरे घायलें लेवाए ।। ४
सागरना पंथ रे बीजा जोने पाधरा, चाले चाले उतरता जाए ।
स्वांत लेईने सेहेजल सुखमां, प्रघल जाए रे प्रवाह ।। ५

---

१. विश्वास । २. ज्ञानी । ३. ताला । ४. चला जाए । ५. नोक । ६. उलंघी । ७. चलूं । ८. अनजानो । ९. कठिन ।

ते तो आकार करेरे जोने उजला, माहें तो अधम अंधार ।
खाए ने पिए रे सेज्या सुख भोगवे, एणी वाटे चालतां करार ॥ ६

भ्रांत माहेंली[1] जहां भाजे नहीं, तहां लगे जाए नहीं कपट ।
भेष बनाओ रे अनेक विधना, पण मूके नहीं वेहेवट[2] ॥ ७

वेहद वाटे रे कपट चाले नहीं, राखे नहीं रज मात्र ।
जेने आवो रे ते तो पेहेले आगमी, पछे ने करूं प्रेमना पात्र ॥ ८

भ्रांत माहेंली रे महामत भाजवी, रदे माहें करवो प्रकास ।
पछे ने देखाडूं घेर मुख आगल, जेम सोहेलो आवे मारो साथ ॥ ९

॥ प्रकरण ॥ ६७ ॥ चौपाई ॥ ८४१ ॥

## राग धोल—धन्या

अटकलें ए केम पामिए, ए तो नहीं पंथ प्रपंच,[3] मारा संमंधी ।
एणे पगले न पोहोंचिए, जहां चोकस न कीजे चित ॥ १

जहां अटकल तहां भ्रांतडी, अने भ्रांत तो थई आडी पाल[4] ।
पार जवाए पूरणद्रष्टें, इहां रज न समाए पंपाल[5] ॥ २

भ्रांत आडी जहां भाजे नहीं, तहां माहेंथी न पूरे साख ।
वचन रुदे प्रकासी ने, जहां आतमा न देखे साख्यात ॥ ३

इहां सर्व ने साख पुराविए, गुण अंग इंद्री ने पख ।
आउध[6] सरवे संभारिए, ए तो अलखनी करवी छे लख ॥ ४

वाट विना इहां चालवूं, अने पग विना करवूं पंथ ।
अंग विना आउध लेवा, जुध ते करवूं निसंक ॥ ५

सुपन माहें सुख साख्यात लेवूं, ते निद्रामां केम लेवाए ।
जागी अखंड सुख ओलखिए,[7] आ सुपन लगाडिए वली तांहें ॥ ६

एम ने अखंड सुख उदे थयूं, ज्यारे समझया सुपन मरम ।
जागी साख्यात बेठा थैए, त्यारे आगल पूरण पारब्रह्म ॥ ७

---

१. मनकी । २. रूढ़ि । ३. छल । ४. दीवार । ५. झूठ । ६. अस्त्र । ७. देखिए ।

वचने कामस[1] धोई काढिए, राखिए नहीं रज मात्र ।
जोगवाई सरवें जीतिए, त्यारे थैंए प्रेमना पात्र ॥ ८

ए पगले एणे पंथडे, प्रेम विना न पोहोंचाए ।
बैकुंठ सुंन ने मारगे, बीजी अनेक कथनी कथाए ॥ ९

ए तो हद नहीं आ तो वेहद, इहां अनेक अटकलो तणाए[2] ।
अनेक सूरा संग्राम करे, अनेक उथडतां[3] जाए ॥ १०

साध सूरधीर अनेक मलों, अनेक जाओ बैकुंठ पार ।
पण अखंड तणां दरवाजा कोणें, ते तो नव उघडे निरधार ॥ ११

तमने मोटी मतवाला साध देखाडूं, जेणे भरया ब्रह्मांडमां पाए ।
कोई वैकुंठ कोइ *सुंन मंडलमां, एटला लगे पोहोंचाए ॥ १२

पारब्रह्म पाम्या तणां, अनेक उदम करे साध ।
चढी वैकुंठ आघा वहे[4], तहां तो आडी अगम अगाध ॥ १३

साध आउध सरवे साचवी,[5] जुध ते करतां जाए ।
लोही मांस न रहे अंग ऊपर, वचमां स्वांस न खाए ॥ १४

चौदे[6] चढी चाले एणी विधें, आगल *निराकार केहेवाए ।
तहां पंथ न थाए पग थोभ विना, साध इहां जईने समाए ॥ १५

केटलाक जोर करे जुध करवा, पण पग पंथ सब्द न कोए ।
सूं करे साध सनंध विना, मोटी मत वाला जोए ॥ १६

आ पांचे[7] तणूं मूल कोए न प्रीछे, अनेक करे छे उपाए ।
साध मोटा पोहोंचे *सुंन लगे, पण सत सुख केने न लेवाए ॥ १७

वेदें वैराट जोयूं दसो दिसा, कही आ पांच चौदनी उतपंन ।
चौद लोंक जोया चारे गमां, चाल्या आघा जोवा मांहें सुंन ॥ १८

सुंन जोयूं घणूं श्रम करी, त्यारे नाम धराव्या निगम ।
सनंध न लाधी सुंन तणी, त्यारे कहींनें वल्या[8] अगम ॥ १९

---

१. कालिख । २. खिचजाना । ३. औंधे गिरना । ४. आगे चले । ५. सजाकर । ६. चौदह लोक । ७. पांच तत्व । ८. लौटा ।

वेदे वलतां वाणी जे ओचरी, ते चढी वैराटने मुख ।
कुलिए ते लेई मुख विप्रोने, करी आपी व्रत[1] भख ।। २०
वेद सनमुख चढया ज्यारे ऊँचा, त्यारे मूल हता पाताल ।
फरीने वाणी पाछी वली, त्यारे थया मूल ऊँचा ने नीची डाल ।। २१
*कल्प व्रक्ष तहां वेद थयो, तेहेनूं फल निपनूं[2] भागवत ।
बन पकव रस ग्रही मुनि थया, एम *सुकें प्रीछव्या[3] संत ।। २२
ए रस सनमुख साध लेईने, बैकुंठ सुंन समाए ।
बीजा काष्ट भखी जन जे हेठां उतरया, तेताँ जल बिना लेहेरपछटाए ।। २३

।। प्रकरण ।। ६८ ।। चौपाई ।। ८६३ ।।

*सुन्य मंडल सुध जो जो मारासमंधी, आ इंड[4] जेहेने आधार ।
नेत नेत कहीने निगम वलिया, निगम ने अगम अपार ।। १
इहां आद अंत नही थावर जंगम, अजवास न कांई अंधार जी ।
*निराकार आकार नहीं, नर न केहेवाए कांई नार जी ।। २
नाम न ठाम नहीं गुन निरगुन, पख नहीं परवान जी ।
आवन गमन नहीं अंग इंद्री, लख न कांई निरवान जी ।। ३
इहां रूप न रंग नहीं तेज जोत, दिवस न कांई रात जी ।
भोम न अगिन नही जल वाए, न सब्द सोंहं आकास जी ।। ४
इहां रस न धात नहीं कोई तत्व, ग्यान नहीं बल गंध जी ।
फूल न फल नहीं मूल वृक्ष, भंग न कांई अभंग जी ।। ५
अखंड तणां दरवाजा आडी[5] सुंन मंडल विस्तार जी ।
एणें ठेकांणे बेठी अछती,[6] बांधीने हथियार जी ।। ६
ए बल जोजो बलबंतीनूं, एहनो कोई न काढे पार जी ।
अनेक उपाए कीधां घणें, पण कोए न पोहोंता[7] दरबार जी ।। ७
कोई न पोहोंतो इहां लगे, एहनों बोली मारे प्रताप जी ।
आ पांचे एहनी छाया पडी छे, ए सुन्य मंडल विस्तार जी ।। ८

।। प्रकरण ।। ६९ ।। चौपाई ।। ८७२ ।।

१. भक्षण कर गया । २. उत्पन्न हुआ । ३. परोसा ४. दुनिया । ५. रोक । ६. अदृष्य । ७. पहुँचा ।

मूलगी चाल

हवे वासना हसे जे वेहदनी, ते तां जागीने जोसे निरधार ।
सत असत बंने जुआ करसे, एहनो तेहज उघाडसे बार ॥ १

एहमां वासना पांचे प्रगट थई, रची रामत देखाडी रूडी[1] पेर ।
कारज करीने अखंडमां भलसे, अक्षर सरूप एहनूं घेर ॥ २

रामत जोवा वाला ते जुआ, ते आगल वाणी थासे विस्तार ।
माया देखाडीने बार उघाडी, जावूं अक्षर ने पार ॥ ३

सास्त्र साधोनी वाणी सरवे, आगम[2] भाखी छे अनेक ।
ते सरवे आंहीं आवीने मलसे, तेहना वंचासे[3] विवेक ॥ ४

क्षर थी तीत अक्षर थया, अने अक्षरातीत केहेवाए ।
आपणने जावूं एणें घरें, इहां अटकलें केम पोहोंचाए ॥ ५

पार सुख थयूं एणी पेरे, हजी रमो तमें छाया माहें ।
तमने फरी फरी आ भोम आडी आवे, तमें कामस न टालो क्यांहें ॥ ६

हूं सनमंधी माटे बार उघाडूं, आपवाने सुख सत ।
खीजो वढीने[4] हंसी तमारा, फरी फरी वालूं छूं चित ॥ ७

तमें राखी रदेमां अंधेर, ओलाडवा[5] हीडो छो संसार ।
एणी पेरे उवट चढ़ाए नहीं, जवाए नहीं पेले पार ॥ ८

सतगुरु संग करे आप ग्रही, वचने धमावे[6] निसंक ।
रस थई कस पूरे कसोटी, त्यारे आडो न आवे प्रपंच ॥ ९

तमसूं जुध करे घेन घारण, लज्या ने अहंकार ।
कायरने कंपावे ए बल, बीक[7] ने भ्रांत विचार ॥ १०

तमें ग्यान तणो अजवास लेईने, उपलो टालो छो अंधेर ।
पण माहेंलो सूतो निद्रा माहें, तो केम जाए मननो फेर ॥ ११

ज्यारे वचने जगवसो वासना, त्यारे आप ओलखसो प्रकास ।
त्यारे पारब्रह्मनों पार थकी, तमें आंहीं देखसो अजवास ॥ १२

१. अच्छी तरह । २. भविष्य वाणी । ३. पढ़ा जाएगा । ४. डांट कर । ५. उलंघना । ६. धौंकना । ७. भय ।

हवे जेणे आपणने ए निध आपी, तेहना चरण ग्रहिए चित मांहें ।
निद्रा उडाडीने सुपन समावे, त्यारे जागी बेठा छैए[1] जांहें ॥ १३

हवे एणे चरणें तमें पांमसो, अखंड सुख कहिए जेह ।
सरवा अंगे चित सुध करी, तमें सेवा ते करजो एह ॥ १४

महामत कहे संमंधी सांभलो, मारा सबदातीत सुजाण ।
चरण सूं चित पूरो बांधजो, जहां लगे पिंडमा प्राण ॥ १५

॥ प्रकरण ॥ ७० ॥ चौपाई ॥ ८८७ ॥

## किरंतन आखरके—राग आसावरी

लाड़लियाँ *लाहूत[2] की, जाको असल चौथे आसमान ।
बड़ी बड़ाई इन की, जाकी सिफत करें सुभान ॥ १

सो उतरी अरस अजीम सें, रूहें बारे हजार ।
साथ सेवक मलायक,[3] पावे दुनियाँ सब दीदार ॥ २

मोती कहे इन को, जाको मोल न काहूँ होय ।
बारे डाली गिनती, सूरत आदमी सोए ॥ ३

मोमन बड़े मरातबे, नूर बिलंद से नाजल ।
इनों काम हाल सब नूर के, अंग इसकै के भीगल ॥ ४

साल नव सै नबे मास नव, हुए रसूलको जब ।
*रूहअल्ला मिसल गाजियों, मोमन उतरे तब ॥ ५

औलिया लिल्ला दोस्त, जाके हिरदें हक सूरत ।
बंदगी खुदा और इनकी, बीच नाहीं तफावत ॥ ६

एही गिरो *इसलाम की, खड़ियां तले अरस ।
या दुनियां या दीन में, सब में इनको जस ॥ ७

लोक जिमी आसमान के, साफ जो करसी सब ।
बुजरगी इन गिरोह की, ऐसी देखी न सुनी कब ॥ ८

---

१. होवे । २. परमधाम । ३. ईश्वरीय सृष्टि (फरिश्ते) ।

गिरो उठाई अदल[1] से, वास्ते पैगंमरो ।
देवें ग्वाही आखर को, ऊपर मुनकरों[2] ॥ ९

करें इमारत[3] भिस्त की, कोसिस सिफत कामल ।
देवें खुस्खबरी खुदा तिनको, जिनके नेक अमल ॥ १०

गिरो बनी *असराईल, जित महंमद पैगंमर ।
जिन कौल मकसूद[4] सबन के, सो बीच इन आखर ॥ ११

मुलक हुआ नबिअन का, आखर हिंदुओं के दरम्यान ।
गिरो भेष फकीर में, पातसाह महंमद परवान ॥ १२

माएने रूजू[5] सब इनसें, तौरेत दई है जित ।
होत पेहेचान खुदाए की, इन गिरोंकी सोहोबत ॥ १३

बरसे बयान राह वतनी, कही सूरत मेह इसलाम ।
*गिरे भूने मुरग आसमान से, बनी असराईल पर तमाम॥ १४

छे हजार बाजू दोए बगल, जबराईल ऊपर रुहन ।
अग्यारें सदी गिरह खोल के, चले महंमद संग मोमन ॥ १५

खुदा देवे साहेदी खुदाए की, और ना किनहूं होए ।
करें बयान फुरमावें हुकम, लाएक पूजने के सोए ॥ १६

*अलफ लाम मीम हरफ ए कहे, ए भेद ना किन समझाए ।
सों छीले गए कुरान से, ए भेद जानें एक खुदाए ॥ १७

इत हुज्जत न रही काहूं की, तुम देखो एह सुकन ।
एह खिताब महंमद मेहेदी पें, जिन रोसन किए मोमन ॥ १८

*कुंन के रोज की साहेदी, देवे एही उमत ।
सो कहे उस बखत की, जो ल्यावे एह हुज्जत ॥ १९

*तौरेत आई तूर बिलंद से, आखर उमत करी बेसक ।
भई चिन्हार महंमद मुसाफ[6] की, जैसे पेहेचानने का हक ॥ २०

---

१. न्याय । २. नास्तिक । ३. रचना । ४. आशय । ५. प्रवृत । ६. कुरआन ।

सब सिफतें एक गिरोह की, लिखी जुदी जुदी जंजीर ।
कोई पावे न दूजा माएना, विना महंमद फकीर ॥ २१

॥ प्रकरण ॥ ७१ ॥ चौपाई ॥ ६०८ ॥

जंजीरां[1] मुसाफ की, मोतियों में परोइए जब ।
जिनसें जिनस[2] मिलाइए, पाइए मगज माएने तब ॥ १
देऊँ हरफ हरफ की आयतें, जो हादिएँ खोले द्वार ।
सब सिफत खास गिरोह की, लिखी विध विध बेसुमार ॥ २
कलाम अल्लाकी इसारतें, खोल देयाँ खसम ।
महामत पर मेहेर मेहेबूबें, करी इसे[3] के इलम ॥ ३
ब्रह्म सृष्टि वेद पुरान में, कही सो ब्रह्म समान ।
कै विध की बुजरगियां, देखो साहेबी कुरान ॥ ४
कहे छुत्ता मगज मुसाफ के, जिनस जंजीर जोर ।
सब सिफत खास गिरोह की, ए समझें एही मरोर ॥ ५

॥ प्रकरण ॥ ७२ ॥ चौपाई ॥ ६१३॥

## सास्त्रों की प्रनालिका—राग श्री

जो कोई सास्त्र संसार में, निरने कियो आचार ।
*त्रिगुन त्रैलोकी पांच तत्व, ए मोह अहंको विस्तार ॥ १
*निराकार *निरंजन *सुंन की, पाई न काल की विध ।
ना प्रकृति पुरुष की, ना मोह अहं की सुध ॥ २
उपज्या याको केहेवही, कहे प्रले होसी ए ।
ब्रह्म बतावें याही में, कहे ए सब माया के ॥ ३
उरझे सब याही में, पार सबद न काढ़े एक ।
कथ कथ ग्यान जुदे पड़े, द्वैतै में देख देख ॥ ४
किन माया पार न पाइया, किन कह्यो ना मूल वतन ।
सरूप न कह्यो काहूं ब्रह्म को, कहे उत चले ना मन वचन ॥ ५

---

१. कड़ियां । २. वस्तु । ३. श्री देवचन्द्र जी ।

जो सास्त्रों की प्रनालिका, कहिएत हैं विध इन ।
सो कर देऊं जाहेर, समझो चित चेतन ॥ ६

जो सुख परआतम को, सो आतम ना पोहोंचत ।
जो अनभव होत है आतमा, सो नाहीं जीव को इत ॥ ७

जो कछू सुख जीव को, सो बुध ना अंतसकरन ।
सुख अंतसकरन इंद्रियनको, उतर पोहोंचावे मन ॥ ८

जो सुख मन में आवत, सो आवे ना जुबाँ मों ।
और जो सुख जुबां से निकसे, सो क्यों पोहोंचे पर आतमको ॥ ९

तो कह्या तीत सब्द से, जो कछू इतका पोहोंचत नाहें ।
असत ना मिले सत को, ऐसा लिख्या सास्त्रों मांहें ॥ १०

जो कछू पिंड ब्रह्मांड को, सब फना कही सास्त्रन ।
अखंड के पार जो अखंड, तहां क्यों पोहोंचे झूठ सुपन ॥ ११

पंडित पढ़े सब इत थके, उत चले ना सब्द बुध मन ।
*निरंजन के पार के पार, पोहोंचाऊँ याही सास्त्रन ॥ १२

मेरा अंग पांच तत्व का, इन अंतसकरन विचार ।
केहेनी लीला अक्षरातीत की, जो पर आतम के पार ॥ १३

ए देह मेरी हद की, इसी देह की अकल ।
धाम धनी सुख बरनन, केहेने चाहे असल ॥ १४

आतम मेरी हद में, जीव कहे बुधें उतर ।
बुध मन पें कहावे जुबानसों, सो जुबां कहे क्यों कर ॥ १५

असलें आतम न पोहोंचही, तो क्यों पोहोंचे जीव ग्यान ।
जो मन देत जुबांन को, सो जुबां करत बयान ॥ १६

में बैठ सुपन की सृष्टि में, बोलूं इन जुबांन ।
जीव सृष्टि क्यों मानही, तो भी कर देऊँ नेक पेहेचान ॥ १७

आतम रोग मिटावने, ए सुख कहों माहें सबद ।
बेहद के पार के पार सुख, सो नेक बताऊँ मांहें हद ॥ १८

मेरे केहेना ब्रह्म सृष्टि को, इन मन जुबां माफक[1] ।
झूठी जिमिएँ याही सास्त्रनसों, जाहेर कर देऊँ हक ॥ १९

साथ मेरा ब्रह्मसृष्टि का, तिन हिरदें साफ करन ।
सो निरमल ना होवही, धाम अखंड देखाए बिन ॥ २०

सो हिरदे साफ हुए बिना, क्योंकर पोहोंचे धाम ।
हम भेजे आए धनी के, एही हमारा काम ॥ २१

सास्त्रों तीनों सृष्टि कही, जीव ईस्वरी ब्रह्म ।
तिनके ठौर जुदे जुदे, ए देखियो अनूकरम[2] ॥ २२

जीव सृष्टि बैकुंठ लों, सृष्टि ईश्वरी अक्षर ।
ब्रह्मसृष्टि अक्षरातीत लों, कहे सास्त्र यों कर ॥ २३

जो सृष्टि आई जिन ठौर से, घर पोहोंचे आप अपनी ।
पार दरवाजे खोल के, आखर पोहोंचे कर करनी ॥ २४

आप अपने वतन पोहोंचते, अटकाव न होवे किन ।
जो जहां से आइया, धनी तहां पोहोंचावें तिन ॥ २५

जिन जानो सास्त्रों में नहीं, है सास्त्रों में सब कुछ ।
पर जीव सृष्टि क्यों पावही, जिनकी अकल है तुच्छ ॥ २६

लोक जिमी आसमान के, ए सुपन की अकल ।
सो पांच तत्व को छोड़ के, आगे ना सके चल ॥ २७

जो सुध आचारजों नहीं, सो जीवों नहीं बरतत ।
जाग्रत बुध *ब्रह्मसृष्टि में, लिख्या जाहेर होसी आखरत ॥ २८

ऐसा सास्त्रों में लिख्या, ब्रह्म ब्रह्मसृष्टि सों ।
इत आए करसी अदल, दे दीदार सब को ॥ २९

ब्रह्मसृष्टि धाम पोहोंचावसी, और मुक्ति देसी सबन ।
कलिजुग असुराई मेटके, पार पोहोंचावसी त्रिगुन ॥ ३०

---

१. अनुसार । २. क्रम ।

और भी साख नीके देऊँ, कर देखो बिचार ।
आखर अथर्वन[1] वेद पर, सब सृष्टों का मुद्दार ॥ ३१
तीनों वेदों ने यों कह्या, वेद अथर्वन सबको सार ।
ए वेद कुली आखर, त्रिगुन को उतारे पार ॥ ३२
ऐसा जाहेर कर लिख्या, पर जिनको नहीं आकीन ।
सो कैसे कर मानही, जिनकी मत मलीन ॥ ३३
कहे रसूल खुदा मैं देखिया, और ले आया फुरमान ।
कौल किया आखर आवने, दीदार होसी सब जहान ॥ ३४
लिख्या है फुरमान में, खुदा काजी होसी आखर ।
जरे जरे हिसाब लेअके, पोहोंचावे किसमत कर ॥ ३५
मोमन मुतकी वास्ते, इत आवसी खुदाए ।
भिस्त देसी सबन को, लिख्या है इप्तदाए ॥ ३६
सो समया सरतें सब लिखी, बीच अथर्वन ।
कहावें पढ़े महंमद के, पर पावें ना आकीन बिन ॥ ३७
रब एक राह चलावसी, दे अपना इलम ।
करसी कायम सबन को, अपना चलाए हुकम ॥ ३८
सरीअत[2] सो माने नहीं, खुदा बेचून बेचगून ।
कहे खुदाए की सूरत नहीं, बेसबी बेनिमून ॥ ३९
कहे आकीन महंमद पर, ऊपर क्यामत और फुरमान ।
और कह्या न माने महंमद का, बड़ा देख्या ए ईमान ॥ ४०
नास्तिक कर बैठे हते, देख वेद कतेब के माहें ।
पाँच तत्व त्रिगुन विना, कहे और कछुए नाहें ॥ ४१
और कहे *नासूत *मलकूत, और तिन पर *ला मकान ।
पढ़के वेद कतेब को, करत माएने एह निदान ॥ ४२

---
१. तारतमवाणी । २. कर्म कांड ।

ना तो ए सब्द सास्त्रों के, हुती सबों को सुध ।
तो भी पकड़े ला मकान सुंन को, ऐसी जीवों नास्तिक बुध ॥ ४३

अब जाहेर हुई सृष्टि ब्रह्म की, और जाहेर वतन ब्रह्म ।
अरस उमत जाहेर हुई, हुई जाहेर सूरत खसम ॥ ४४

खेल देखाया ब्रह्मसृष्टि को, करके हुकम आप ।
ए झूठा खेल कायम किया, करके इत मिलाप ॥ ४५

महामत कहें ब्रह्मसृष्टि को, ऐसा हुआ न होसी कब ।
गुझ सब जाहेर किया, ए जो लीला जाहेर हुई अब ॥ ४६

॥ प्रकरण ॥ ७३ ॥ चौपाई ॥ ६५६ ॥

## राग श्री

भवजल चौदे भवन, *निराकार पाल चौफेर ।
*त्रिगुन लेहेरी *निरगुन की, उठें मोह अहं अंधेर ॥ १

तान[१] तीखे ग्यान इलम के, दुंद[२] भमरियाँ अकल ।
बहें पंथ पैंडे आड़े उलटे, झूठ अथाह मोह जल ॥ २

तामें बड़े जीव मोह जल के, मगर मच्छ विक्राल[३] ।
बड़ा छोटे को निगलत, एक दूजे को काल ॥ ३

घाट ना पाई बाट किने, दिस न काहूं द्वार ।
ऊपर तले माहें बाहेर, गए कर कर खाली विचार ॥ ४

जीवें आतम अंधी करी, मिल अंतसकरन अंधेर ।
गिरदवाए अंधी इंद्रियाँ, तिन लई आतम को घेर ॥ ५

पाँच तत्व तारा ससि सूर फिरें, फिरें त्रिगुन निरगुन ।
पुरुष प्रकृती यामें फिरे, निराकार निरंजन सुंन ॥ ६

ए चौदे पलमें पैदा किए, पाँच तत्व गुन निरगुन ।
याही पलमें फना हुए, निराकार सुंन निरंजन ॥ ७

---

१. खेंचाखेंच । २. दुविधा । ३. भयानक ।

ए चौदे चुटकी में चल जासी, गुन निरगुन सुंन्य तत्व ।
निराकार निरंजन सामिल, उड़ जासी ज्यों असत ॥ ८

देत काल परिक्रमा इनकी, दोऊ तिमर तेज देखाए ।
गिनती सरत पोहोंचाए के, आखर सबे उड़ाए ॥ ९

ए इंड जो पैदा किया, ए जो विस्व चौदे भवन ।
इनमें सुध न काहूं को, ए उपजाए किन ॥ १०

हम भी आए इन खेलमें, बुध ना कछुए सुध ।
धनी आए अक्षरातीत, मोहे जगाई कै विध ॥ ११

कह्या खेल किया तुम कारने, ए जो मांग्या तुम ।
खेल देख के घर चलो, आए बुलावन हम ॥ १२

निबेरा खीर नीर का, सास्त्र सबों का सार ।
*अठोत्तर सौ पक्ष का, कर दिया निरवार ॥ १३

कै साखें सास्त्र साधन की, दे दे कराई पेहेचान ।
मूल सरूप देखाए धाम के, कर सनमंध दियो ईमान ॥ १४

अंतसकरन में रोसनी, और रोसन करी आतम ।
गुन पख इंद्री रोसन, ऐसा बरस्या नूर खसम ॥ १५

बोहोत सोर किया मुझ ऊपर, रोए रोए कहे वचन ।
अपनाइत अपनी जान के, मोहे खोल दिए द्वार वतन ॥ १६

क्यों कर कहूं मैं हेत की, जो धनिएं किए भांत भांत ।
जगाई धाम देखावने, कै विध करी एकांत ॥ १७

जिनसों सब विध समझिए, ऐसी दई मोहे सुध ।
सास्त्रों आगूं यों लिख्या, धनी ले आवसी जागृत बुध ॥ १८

अनेक लिखी निसानियां, करावने हमारी पेहेचान ।
जाने सब कोई सेवें इनको, कै किए साख निसान ॥ १९

यों कै विध समझाई दुनियां, देने हम पर ईमान इसक ।
धनी नाम खिताब दे अपनों, मुझे बैठाई कर हक ॥ २०

कै दिन सुनाई मुझ को, श्री मुखकी चरचा ।
और सबे विध समझी, पर लग्या न कलेजे घा ॥ २१

चौदे भवन के जो धनी, विस्व पूजत सब ताए ।
ए सुध नहीं काहूं को, कोई और है इप्तदाए[1] ॥ २२

त्रिगुन ईस ब्रह्मांड के, तिनको भी ए सुध नाहें ।
कहां से आए हम कौन हैं, कौन इन जिमी माहें ॥ २३

*महाविष्नु *सुंन्य प्रकृति, निराकार निरंजन ।
ए काल द्वैत को को है,[2] ए भी सुध नहीं त्रिगुन ॥ २४

प्रले पैदा की सुध नहीं, तो ए क्या जाने अक्षर ।
लोक जिमी आसमान के, इनकी याही बीच नजर ॥ २५

अक्षर सरूप के पलमें, ऐसे कै कोट इंड उपजे ।
पलमें पैदा करके, फेर वाही पलमें खपे ॥ २६

ए जो न्यारा पारब्रह्म, इन की भी करी रोसन ।
ए जो *अक्षर अद्वैत, भी कहे तिनके पार वचन ॥ २७

सों अक्षर मेरे धनी के, नित आवें दरसन ।
ए लीला इन भांत की, इत होत सदा बरतन ॥ २८

*अक्षरातीत के मोहोल में, प्रेम इसक बरतत ।
सो सुध अक्षर को नहीं, जो किन विध केल करत ॥ २९

सो धाम बतन मोहे कर दियो, मेरो अक्षरातीत धनी ।
ब्रह्मसृष्टि मिनें सिरोमन, मैं भई सुहागनी ॥ ३०

साख गुन पक्ष इंद्रियां, आतम परआतम साख ।
सास्त्र सब ब्रह्मांड के, देत भाख[3] भाख कै लाख ॥ ३१

ऐसा सूक्षम सरूप देखाय के, दे धाम करी चेतन ।
इत विलास कै विध के, माहें सिरदारी सैयन ॥ ३२

---

१. आरम्भ । २. कौन । ३. कह कर ।

ऐसी साख देवाई कर सनमंध, आतम करी जाग्रत ।
सो आए धनी मेरे धाम से, कही विवेकें क्यामत ।। ३३

ऐसे कै सुख पर आतम के, अनभव कराए अंग ।
तो भी इसक न आइया, नेहेचल धनीसों रंग ।। ३४

इन धाम की लीला मिने, इन धनी की अरधांग ।
तो भी प्रेम ना उपज्या, कोई आतम भई ऐसी अंध ।। ३५

तब आप अंतरध्यान होएके, भेज दिया फुरमान[1] ।
हमको इसक उपजावने, इत कै विध लिखे निसांन ।। ३६

इन विध देने ईमान, उपजावने इसक ।
सो इसक बिना न पाइए, ए जो नूर तजल्ला हक ।। ३७

।। प्रकरण ।। ७४ ।। चौपाई ।। ६६६ ।।

## राग साखी

मेरे धनी धामके दुलहा, मैं कर ना सकी पेहेचान ।
सो रोऊँ मैं याद कर कर, जो मारे हेत के बान ।। १

सोई दरद अब आइया, लग्या कलेजें घाए ।
अब ए अचरज होत है, जो मुरदे रहत अरवाए ।। २

अपनाएत[2] केती कहूँ, जो करी हमसों तुम ।
नीद उड़ाई बुलावने, पोहोंचाया कौल हुकम ।। ३

क्या रोई क्या रोऊँगी, उठी आग इसक ।
थिर चर सारा जलिया, जाए झालां पोहोंची हक ।। ४

जो साहेब मैं देखिया, सो मिलें होए सुख चैन ।
तब लग आतम रोवत, सूके लोहू पानी नैन ।। ५

जो पट आड़े धाम के, मैं ताए देऊँ जार बार ।
कोई विध करके उड़ाइए, ए जो लाग्यो देह विकार ।। ६

१. आदेश । २. अपना पन ।

बन बेली सब रोइया, और जंगल जानवर ।
कै पसू पंखी केते कहूँ, जले जो दरदा कर ।। ७

जंगल रोया जलिया, जल बल हुआ खाक ।
इनमें पंखी क्यों रहे, जो पर जल हुआ पाक ।। ८

पहाड़ रोए टूटे टुकड़े, हुए हैं भूक भूक ।
भवजल रोया सागर, सो गया सारा सूक ।। ९

भोम रोई भली भांतसों, टूट गई रसातल ।
नाग लोक सब रोइया, सो पड़्या जाए पाताल ।। १०

रोए *पांच तत्व *तीन गुन, *निरंजन *निराकार ।
रोई द्वैत पुरुष प्रकृति, पट उड़्यो अंतर आकार ।। ११

आकास रोया सब अंगों, मोह अहंगल्यो चहुँ ओर ।
निराकार निरंजन गलया, जाए रह्या अंतर ठौर ।। १२

इसके आग फूंक दई, लाग्यो सब ब्रह्मांड ।
जब पोहोंची झालां[1] अंतर लों, तब क्यों रहे ए पिंड ।। १३

आग इसक ऐसी उठी, लोहू रोया वैराट ।
खाक हुआ जल बल के, उड़ गया सब ठाट ।। १४

महामत कहे मेहेबूब जी, खेल देख्या चाह्या दिल ।
हांसी करी भली भांतसों, अब उठो सुख लीजे मिल ।। १५

।। प्रकरण ।। ७५ ।। चौपाई ।। १०११ ।।

राग श्री

निज नाम सोई जाहेर हुआ, जाकी सब दुनी राह देखत ।
मुक्ति देसी ब्रह्मांड को, आए ब्रह्म आतम सत ।। १

हो मेरी सत आतमा, तुम आओ घर सत खसम ।
नजर छोड़ोरी झूठ सुपन, आए देखो सत वतन ।। २

---

१. लपटें ।

तुम निरखो सत सरूप, सत स्यामाजी रूप अनूप ।
साजोरी सत सिनगार, बिलसो संग सत भरतार ॥ ३

सत धनीसों करो हांस, पीछे करो प्रेम विलास ।
सत बरनन किया जो एह, उपजे सत प्रेम सनेह ॥ ४

सत साथ देत देखाई, सत आनन्द अंग न माई ।
सत साथसों करो प्रीत, देखो सत घरकी ए रीत ॥ ५

सत रेहेस[1] सत रंग, सत साथ को सुख अभंग ।
तुम संग करो सत बातें, सत दिन और सत रातें ॥ ६

सत चांद और सत सूर, हिसाब बिना सत नूर ।
सत सोभा सत मन्दिर, सत सुख सेज्या अंदर ॥ ७

सत जिमी सत बन, खुसबोए सत पवन ।
लेहेरी लेवे सत जल, सत आकास निरमल ॥ ८

सत पसू पक्षी अलेखें, सत खेल राज[2] साथ देखें ।
सत खेलें बोलें बन माहें, सत सुख हिसाब काहूं नाहें ॥ ९

सत रंग रस नए नए, अलेखे सदा सुख कहे ।
सत जमुना त्रट किनारें, दोऊ तरफ बराबर हारें ॥ १०

सत डारी झलूबे ऊपर जल, खुसबोए हिंडोले[3] सीतल ।
सत सुख तलाव के त्रट, खोल देखो नैना पट ॥ ११

पसू गाए लगावें रट, गिरदवाए देहुरी निकट ।
बड़ा अचरज मोहे एह, ए सुन क्यों रहे झूठी देह ॥ १२

ए खेल झूठा तो छोड़या जाए, जो सत सुख अंग में भराए ।
जब सत सुख देखोगे केल,[4] तब झूठा दुख देओगे ठेल ॥ १३

सत साईंसों करो विलास, तब टूट जाए झूठी आस ।
ज्यों ज्यों लेओगे सत सुख, त्यों त्यों छूटे असत दुख ॥ १४

---

१. आनन्द लीला । २. अक्षरातीत स्वामी । ३. हिंडोले, झूले । ४. क्रीड़ा ।

ज्यों ज्यों उठें सत सुख के तरंग, त्यों त्यों उड़े सुपन को संग ।
जब याद आवे सुख अपनों, तब छूटेगो झूठो सुपनो ॥ १५

देखो मन्दिर मोहोल झरोखे, ज्यों छूट जाए दुख धोखे ।
देखो झूठी फेर फेर मारे, सत सुख बिना कोई न उबारे ॥ १६

छोड़ घर को सुख अलेखे, आतम काहे को दुखड़ा देखे ।
आतम पर आतम पेखे, सुख उपजे सत अलेखे ॥ १७

जब आतम ने दई साख, सार्थे भी कही बेर लाख ।
सत धनीएं साख आए दई, सो तो सत वतन वालों ने लई ॥ १८

आतमने सत परचे[1] पाए, तो भी झूठा दुख छोड़्या न जाए ।
जब सत सुख पाया रस, जीवरा तबहीं चल्या निकस ॥ १९

जब सत सुख लाग्यो रंग, तब क्यों रहे झूठे को संग ।
जब धनीसों उपज्यो सत सनेह, तब क्यों रहे झूठी देह ॥ २०

जब सत सुख हिरदे में आवे, अरवा[2] तबहीं निकस के जावे ।
जब सत सुख धनी पाया, तब जीवरा क्योंकर पकड़े काया ॥ २१

जब अंतर आंखां खुलाई, तब तो बाहेर की मुंदाई ।
जब अंतर में लीला समानी, तब अंग लोहू रह्या न पानी ॥ २२

जब देख्या हाँस विलास, गल गया हाड़ मांस स्वांस ।
जब अंतर आया सुमिरन, रह्यो अंग ना अंतसकरन ॥ २३

जब याद आयो सुख अखंड, तब रहे ना पिंड ब्रह्मांड ।
जब चढ़े विकट घाटी प्रेम, तब चैन ना रहे कछू नेम ॥ २४

महामत कहें सुनो साथ, देखो खोल बानी प्रान नाथ ।
धनी ल्याए धामसे वचन, जिनसे न्यारे ना होंए चरन ॥ २५

॥ प्रकरण ॥ ७६ ॥ चौपाई ॥ १०३६ ॥

---

१. परिचय । २. आत्मा ।

राग श्री

वतन बिसारियां रे, छलें किए हैरान ।
धनी आप बुध भूलियां, सुध ना रही वृद्धि हान ॥ १
ब्रह्मसृष्टि सखियां धाम की, आइयां छल देखन ।
जुदे जुदे घर कर बैठियां, खेलें भुलाए दिया वतन ॥ २
धाम से रब्द करके, हम कब आवें दूजी बेर ।
सब भूले सुध हार जीत की, तो मैं कह्या फेर फेर ॥ ३
माहों माहें कै प्रीत रीतसों, खेलें हंसे रस रंग ।
पेहेचान जिनो को पेड़ की, धनी को रिझावें सेवा संग ॥ ४
कै मिनो मिने काल क्रोध सों, लड़ाई करते दिन जाए ।
सेवा धनी न प्रीत सैयन सों, सो डारी आसमान से पटकाए ॥ ५
कै सेवें धनीय को, करके प्रेम सनेह ।
हम सखियों को पेहेचान पेड़ की, होसी धाम में धंन धंन एह ॥ ६
कै अवगुन लेवें धनीय का, करें आप भी अवगुन ।
नाहीं सनेह सुख साथसों, यों वृथा खोवें रात दिन ॥ ७
तुम सूतो धनिएँ जगाइया, कह्या आगे मौत का दिन ।
कै साख पुराई आपे अपनी, तो भी छूटे ना दुख अगिन ॥ ८
सुख देखाए वतन के, सो भी कायम सुख अलेखे ।
तो भी छल छूटे नहीं, जो आपे आंखें अपनी देखें ॥ ९
देखके अवसर भूलहीं, बोहोर न आवे ए अवसर ।
जानत हैं आग लगसी, तो भी छूटे ना छल क्योंए कर ॥ १०
पीछे पछतावा क्या करे, जब गया समया चल ।
ऐसे क्यों भूलें अंकूरी,[1] जाके सांचे घर नेहेचल[2] ॥ ११
जो जाग बातें करें उमंगसों, सो हँस हँस ताली दे ।
जिन नींद दई सुख इंद्रियों, सो उठी उंघाती दुख ले ॥ १२

१ लगाव, सम्बन्धी । २. अखंड, स्थाई ।

क्या बल केहेसी काएर माया को, जो गए सागर में रल ।
सामें पूर जो चढ़्या होसी, सो केहेसी तिखाई[1] मोह जल ।। ।। १३

दे साख धनिएँ जगाइया, दई विध विध की सुध ।
भांत भांत दई निसानियां, तो भी ठौर न आवे निज बुध ।। १४

महामत कहें जो होवे धाम की, सो पेहेचान के लीजो लाहा ।
ले सको सो लीजियो, फेर ऐसा न आवे समया ।। १५

।। प्रकरण ।। ७७ ।। चौपाई ।। १०५१ ।।

राग श्री

सखीरी जान बूझ क्यों खोइए, ऐसा अलेखे सुख अखंड ।
सो जाग देख क्यों भूलिए, बदले सुख ब्रह्मंड ।। १

कै कोट राज बैकुंठ के, न आवे इतके खिन समान ।
सो जनम बृथा जात है, कोई चेतो सुबुध सुजान ।। २

एक खिन न पाइए सिर साटें,[2] कै मोहोरों पदमों लाख करोड़ ।
पल एक जाए इन समे की, कछू न आवे इन की जोड़ ।। ३

इन समे खिन को मोल नहीं, तो क्यों कहूँ दिन मास बरस ।
सो जनम खोया झूठ बदले, पीउसों भई ना रंग रस ।। ४

काहूँ बदले न पाइए, कै दौडत मुझ देखत ।
पर रास[3] न आया किनको, जो लों धनी नहीं बखसत ।। ५

सुख अखंड अक्षरातीत को, इन समे पाइयत हैं इत ।
कहा कहूँ कुकरम तिनके, जो माहें रहे के खोवत ।। ६

कैयों खोया जनम अपना, रहे धनीके जमाने माहें ।
हाए हाए कहा कहूँ मैं तिनको, जो इनमें से निरफल जाए ।। ७

कैयों जनम सुफल किए, ऐसा पीउका समया पाए ।
सेवा सनमुख जनम लों, लिया हुकम सिर चढ़ाए ।। ८

---

१. तीव्रता । २. बदले । ३. अनुकूल ।

एक साएत[1] वृथा न गई, धनी किए सनकूल[2] ।
चले चित पर होए आधीन, परी ना कबहूँ भूल ॥ ९

सो इत भी होए चले धंन धंन, धाम धनी भी कहें धंन धंन ।
साथ में भी धंन धंन हुइयां, याके धंन धंन हुए रात दिन ॥ १०

कै छिपे रहे माहें दुसमन, और मारे राह औरन ।
चाल उलटी चल देखावहीं, तो भी धनी ना तजें तिन ॥ ११

दृष्टि उपली सज्जन हो रहे, बोल देखावें मीठे बैंन ।
जनम सारा धनी संग रहे, कबूं दिल न दिया सुख चैंन ॥ १२

इन विध कै रंग साथमें, यों बीते कै बीतक ।
सब पर मेहेर मेहेबूब की, पर पावें करनी माफक ॥ १३

दुख माया धनीपे मांग के, हम आए जिमी इन ।
सो छल सरूप अपनो देखावही, तो भी भूलें नहीं सुहागिन ॥ १४

और भी देखो विचार के, तो हुकमें सब कछू होए ।
बिना हुकम जरा नहीं, हार जीत देखावे दोए ॥ १५

महामत कहें लिया मांग के, ए धनिएँ देखाया छल ।
जो सनमुख रेहेसी धनी धाम सों, सो केहेसी छलको बल ॥ १६

॥ प्रकरण ॥ ७८ ॥ चौपाई ॥ १०६७ ॥

## राग मारू

साथजी पेहेचानियो, ए बानी समया फजर ।
हुई तुमारे कारने, खोल देखो निज नजर ॥ १

त्रिविध दुनी तीन ठौर की, चले तीन विध माहीं ।
कोई छोड़े न अंकूर अपना, होवे करनी तैसी ताहीं ॥ २

सुरता तीनों ठौर की, इत आईं देह धर ।
ए तीनों रोसन नासूत[3] में, किया बेवरा इमामें आखर ॥ ३

---

१. घड़ी । २. प्रसन्न । ३. मृत्युलोक ।

इन विध जाहेर कर लिख्या, सास्त्रों के दरम्यान ।
तीन सृष्टि आई जुदी जुदी, पोहोंचे आप अपने ठौर निदान ॥ ४

त्रिगुन से पैदा हुई, ए जो सकल जहाँन ।
सो खेले तीनो गुन लिए, नाहीं एक दूजे समान ॥ ५

आतम एक्यासी पख ले, सब दुनियां में खेलत ।
मोह अहं मूल इन को, सब याही बीच फिरत ॥ ६

मोह अहं गुन की इंद्रियां, करे फैल[1] पसू परवान ।
फिरे अवस्था तीन में, ए जीव सृष्टि पेहेचान ॥ ७

सुबुध निकट न आवही, चले बेहेर[2] दृष्टि ।
आतम दृष्टि न लेवही, तो कही सुपन की सृष्टि ॥ ८

जाग्रत तरफ दुनीयकी, सोवत सुपना ले ।
देखत सुपना नींद में, ए तीनो अवस्था जीव के ॥ ९

और सृष्टि जो ईश्वरी, कही जागृत सृष्टि आतम ।
सुबुध अंग करनी सुध, चले फुरमान हुकम ॥ १०

एही सृष्टि ईश्वरी जागृत, आई अक्षर नूर से जे ।
मेहेर ले मेंहेबूब की, रहे तुरी[3] अवस्था ए ॥ ११

ब्रह्म सृष्टि आई अरससे, जीत इंद्री सुध अंग ।
छोड़ माहें बाहेर दृष्टि अंतर, पर आतम धनी संग ॥ १२

एक सुख नेहेचल धामको, और सुख अखंड अक्षर ।
तीसरो वैकुंठ सुपनों, ए त्रिधा सृष्टि यों कर ॥ १३

कृपा है कै विध की, ए जो तीनों सृष्टि ऊपर ।
एक एक पर कै विध, इनका बेवरा सुनो दिल धर ॥ १४

कृपा करनी माफक,[4] कृपा माफक करनी ।
ए दोऊ माफक अंकूर के, कै कृपा जात ना गिनी ॥ १५

---

१. कर्म । २. ऊपरी । ३. तुरिया अवस्था । ४. अनुसार ।

धाम अंकूर एक विध को, कै विध कृपा केल ।
ए माफक कृपा करनी भई, करने खुसाली खेल ।। १६
सृष्टि ईश्वरी कही अंकूरी, औरों अंकूर दिए कै ।
तिन जुदा जुदा ठौर नेहेचल, कृपा अंकूर से भई ।। १७
भिस्त होसी आठ विध की, और आठ विध का अंकूर ।
हर अंकूर कृपा कै विध की, ले उठसी नेहेचल नूर ।। १८
करनी देखाई अंकूर की, हुई तीनों की तफावत[1] ।
सो तीनों रोसन भए, चढते त्राजू बखत ।। १९
करनी छिपी ना रहे, ना कछू छिपे अंकूर ।
मेहेर भी माफक अंकूर के, उदे होत सत सूर ।। २०
क्या गरीब क्या पातसाह, क्या नजीक क्या दूर ।
निकस आया सबन का, तीन विध का अंकूर ।। २१
हर एक के तीन तीन, तिन तीनों के सत्ताईस ।। ।
यों चढ़ते त्राजू[2] चढ़े, नफा नसल न नाते रीस[3] ।। २२
दया भी तिन पर होएसी, जिनके असल अंकूर ।
अवल मध और आखर, सनमुख सदा हजूर ।। २३
ए छल जिमी करम करावही, आपको बुरा न चाहे कोए ।
तो भी मेहेर न छोड़े मेहेबूब, पर करनी छल बस होए ।। २४
जाहेर हुई सबन की, आखर गिरो आकल[4] ।
अंदर की उदे हुई, समे पावने फल ।। २५
छिपी किसी की ना रहे, करनी धनी अदल[5] ।
सांच झूठ जैसा जिनों, चढ़ आया तराजू दिल ।। २६
वतन के अंकूर बिना, इत दुनी करे कै बल ।
मुक्ति सुख इत होएसी, पर पावे न धाम नेहेचल ।। २७

१. अन्तर । २. तुला । ३. होड़ । ४. समझदार । ५. न्याय ।

कै आए अनभव लेअके, सो पीछे दिए पटकाए ।
धनी दया अंकूर बिना, किन सत सुख लियो न जाए ॥ २८

कदी सौ बरस रहो साथ में, धनी अनभव सौ बेर ।
मूल अंकूर दया बिना, ले करमें डाले अंधेर ॥ २९

दया और अंकूर की, छिपे न करनी नूर ।
मन वाचा करम बांधके, दूजा ऐसा कर ना सके जहूर[1] ॥ ३०

महामत कहें तिन वास्ते, ए तीनों हैं सामिल ।
करनी कृपा अंकूर, वाके छिपे ना अमल[2] ॥ ३१

॥ प्रकरण ॥ ७६ ॥ चौपाई ॥ १०६८ ॥

राग श्री

मेरे मीठे बोले साथ जी, हुआ तुमारा काम ।
प्रेमेंमें मगन होइयो, खुल्या दरवाजा धाम ॥

सखी री धाम जैये ॥ १ ॥

दौड़ सको सो दौड़ियो, आए पोहोंच्या अवसर ।
फुरमानमें फुरमाइया, आया सो आखर ॥ २

बरनन करते जिनको, धनी केहेते सोई धाम ।
सेवा सुरत संभारियो, करना एही काम ॥ ३

बन विसेखे देखिए, मांहें खेलन के कै ठाम ।
पसू पक्षी खेलें बोलें सुन्दर, सो मैं केते लेऊँ नाम ॥ ४

स्याम स्यामाजी सुंदर, देखो करके उलास ।
मनके मनोरथ पूरने, तुम रंग भर कीजो विलास ॥ ५

इसक आयो पीउ को, प्रेम सनेही सुध ।
विविध विलास जो देखिए, आई जागनी बुध ॥ ६

---

१. प्रकाश । २. आचरण ।

आनंद वतनी[1] आइयो, लीजो उमंग कर ।
हँसते खेलते चलिए, देखिए अपनों घर ॥ ७

सुख अखंड जो धाम को, सो तो अपनों अलेखें ।
निपट आयो निकट, जो आँखाँ खोलके देखे ॥ ८

अंग अनभवी असल के, सुखकारी सनेह ।
अरस परस सबमें भया, कछू प्रेमें पलटी देह ॥ ९

मंगल गाइए दुलहे के, आयो समे स्यामा बर स्याम ।
नैनों भर भर निरखिए,[2] बिलसिए[3] रंग रस काम ॥ १०

धामके मोहोलों सामग्री, माहें सुखकारी कै बिध ।
अंदर आँखें खोलिए, आई है निज निध ॥ ११

विलास विसेखें[4] उपज्या, अंदर कियो विचार ।
अनभव अंगे आइया, याद आए आधार ॥ १२

दरदी विरहा के भीगल[5], जानों दूरथें आए विदेसी ।
घर उठ बैठे पलमें, रामत देखाई ऐसी ॥ १३

उठके नहाइए जमुनाजी, कीजे सकल सिनगार ।
साथ सनमंधी मिलके, खेलिए संग भरतार ॥

महामत कहें मलपतियाँ[6], आओ निज वतन ।
विलास करो विध विध के, जागो अपने तन ॥ १५

॥ प्रकरण ॥ ८० ॥ चौपाई ॥ ११९३ ॥

राग मारू

सुंदर साथजी ए गुन देखो रे, जो मेरे धनिएँ किए अलेखे ॥
क्योंए न छोड़े माया हम को, हम भी छोड़ी न जाए ।
अरस परस यों भई बज्र में, सो मेरे धनिएँ दई छुटकाए ॥ १

कोई ना निकस्या इन माया से, अवलसेंती आज दिन ।
सो धनिएँ बल ऐसो दियो, हम तारे चौदे भवन ॥ २

---

१. परमधाम । २. देखिये । ३. सुखोपभोग । ४. विशेष । ५. मग्न । ६. मुस्कराती ।

आगे हुई ना होसी कबहूं, हमें धनिएं ऐसी सोभा दई ।
सब पूजें प्रतिबिंब हमारे, सो भी अखंड में ऐसी भई ।। ३

धनिएँ भिस्त[१] कराई हमपें, किल्ली हाथ हमारे ।
लोक चौदे हम किए नेहेचल, सेवें नकल हमारी सारे ।। ४

ऐसी बड़ाई दई हम गिरोह को, और किए औरों के आधीन ।
फेर कहे इन पीउ पेहेचाने, याही में आकीन ।। ५

चौदे भवन को दिया आकीन, सो भी कहे गिरो बल दिया ।
सोभा अलेखे कहूं मैं केती, ऐसा धनिएं हमसों किया ।। ६

बिन जाने बिन पेहेचाने कै सुख, ऐसे धनिएं हम को देखाए ।
अबलों गिरो न जाने धनी गुन, सो जागनी हिरदें चढ़ आए ।। ७

ऐसे ब्रह्मांड अलेखे अक्षरथें, पल में पैदा फना होत ।
ऐसे इंडमें चींटी बराबर, हम गिरो हुई उदयोत[२] ।। ८

सो चींटी सहूर दे समझाई, धनिएं आप जैसे कर लिए ।
कर सनमंध अक्षरातीतसों, ले धनी धामके किए ।। ९

अवगुन अलेखे हम किए पीउसों, तापर ऐसे धनी के गुन ।
कै विध सुख ऐसे धनीअके, क्योंकर कहूँ जुबां इन ।। १०

इन विध सुख दिए अलेखे, ऐसे गुन मेरे पीउ ।
तामें एक गुन जो याद आवे, तो तबहीं निकस जाए जीउ ।। ११

महामत कहें गुन इन धनी के, सो इन मुख कहे न जाए ।
एक गुन जो याद आवे, तो तबहीं उड़े अरवाए ।। १२

।। प्रकरण ।। ८१ ।। चौपाई ।। ११२५ ।।

## राग श्री

सखीरी मेहेर बड़ी मेहेबूब की, अखंड अलेखे ।
अंतर आंखां खोलसी, ए सुख सोई देखे ।। १

---

१. बहिश्त । २. प्रकट ।

न था भरोसा हम को, के भवजल उतरें पार ।
इन जुबां केती कहूँ, इन मेहेर को नहीं सुमार ॥ २

मेरे दिल की देखियो, दरद न कछू इसक ।
ना सेवा ना बंदगी, एह मेरी बीतक ॥ ३

मेहेरें हमको ऐसा किया, करी वतन रोसन ।
मुक्ति दे सचराचर,[1] हम तारे चौदे भवन ॥ ४

क्यों मेहेर मुझ पर भई, ए थी दिल में सक ।
मैं जानी मौज मेहेबूब की, वह देत आप माफक ॥ ५

बढ़त बढ़त मेहेर बढ़ी, वार न पाइए पार ।
एक ए निरने में ना हुई, वाको वाही जाने सुमार ॥ ६

और मेहेर ए देखियो, कर दियो धाम वतन ।
साख पुराई सब अंगों, यों कै विध कृपा रोसन ॥ ७

अंदर सब मेरे यों कहें, धाम से आए माहें सुपन ।
है सनमंध धनी धामसों, ए साख मेहेर से उतपंन ॥ ८

मेरे सतगुरु धनिएं यों कह्या, और कह्या वेद पुरान ।
सो खोल दिए मोहे माएने, कर दई आतम पेहेचान ॥ ९

सब मिल साख ऐसी दई, जो मेरी आतम को घर धाम ।
सनमंध मेरा सब साथसों, मेरो धनी सुंदर वर स्याम ॥ १०

इत अक्षर आवें नित्याने,[2] मेरे धनी के दीदार ।
ए निसबत भई हम गिरोह की, क्यों कहूं इन सुख को पार ॥ ११

ए आतम को नेहेचे भयो, संसे दियो सब छोड़ ।
पर आतम मेरी धाम में, तो कही सनमंध संग जोड़ ॥ १२

पर आतम के अंतसकरन, जेती बीतत बात ।
तेती इन आतम के, करत अंग साख्यात ॥ १३

---

१. चल अचल । २. प्रतिदिन ।

ए भी धनिएँ श्री मुख कह्या, और दई साख फुरमान ।
ए दोए मिल नेहेचे कियो, यों भई दृढ़ परवान ॥ १४

और मेहेर ए देखियो, ऐसा कर दिया सुगम ।
बिन कसनी बिन भजन, दियो धाम धनी खसम ॥ १५

ना जप तप ना ध्यान कछू, ना जोगारंभ[१] कष्ट ।
सो देखाई ब्रज रास में, एही वतन चाल ब्रह्मसृष्ट ॥ १६

चलत चाल घर अपने, होए न कसाला[२] किन ।
आयस[३] कछू न आवही, सब अपनीमें मगन ॥ १७

सोई गुन पख इंद्रियां, धाम वतन की देह ।
सोई मिलना पर आतम का, सब सुखै के सनेह ॥ १८

सोई सेहेज सोई सुभाव, सोई अपना वतन ।
सोई आसा लज्या सोई, सोई करना न कछू अन्न ॥ १९

सोई लोभ सोई लालच, सोई अपनों अहंकार ।
सोइ काम प्रेम कर्तब, सोई अपना बेहेवार ॥ २०

सोई मन बुध चितवन, सोई मिलाप सैयन ।
सोई हाँस विलास अपना, करते रात दिन ॥ २१

धाम लीला जाहेर करी, विध विध की रोसन ।
दिया सुख अखंड दुनी को, और कायम किए त्रिगुन ॥ २२

जो जागो सो देखियो, ए लीला सब्दातीत ।
मेहेरें इत प्रगट करी, मूल धाम की रीत ॥ २३

हुकम सरत आए मिली, जो फुरमाई थी फुरमान ।
महामत साथ को ले चले, कर लीला निदान ॥ २४

॥ प्रकरण ॥ ८२ ॥ चौपाई ॥ ११४६ ॥

१. योगाभ्यास । २. कष्ट । ३. पश्चाताप ।

राग श्री

धंन धंन ए दिन साथ आनंद आयो

अखंड में याद देने, ए जो बेन बजायो ।
चित दे साथ को ले, आप में समायो ॥ १

अखंड में याद देने, ए जो खेल बनायो ।
ब्रज रास जागनी में, ए जो खेल खेलायो ॥ २

पीउने प्रकास्यो पेहेले, आयो सो अवसर ।
ब्रज ले रास में खेले, खेले निज घर ॥ ३

विध विध विलास हाँस, अंग थें उतपंन ।
नए नए सुख सनेह, हुए हैं रोसन ॥ ४

चेहेन[1] चरित्र चातुरी, ब्रज रास की लई ।
अनभव असलू अंग में, आए चढ़ी धाम की सही ॥ ५

बढ़ती बढ़ती प्रीत, जाए लई धामकी रीत ।
इन विध हुई है इत, साथ की जीत ॥ ६

झूठी जिमी में बैठाए के, देखाए सुख अपार ।
कौन देवे सुख दूजा ऐसे, विना इन भरतार ॥ ७

मैं सुन्यो पीउ जी पें, श्री धामको वरनन ।
सो भेदयो रोम रोम माहें, अंग अंतसकरन ॥ ८

छक्यो साथ प्रेम रस मातो, छूटे अंग विकार ।
पर आतम अंतसकरन[2] उपज्यो, खेले संग आधार ॥ ९

दुलहेने दिल हाल दे, खैंच लिए दिल सारे ।
कहा कहूँ सुख इन विध, जो किए हाल हमारे ॥ १०

मद[3] चढ़यो महामत भई, देखो ए मस्ताई ।
धाम स्याम स्यामाजी साथ, नख सिख रहे भराई ॥ ११

---

१. चिह्न । २. अन्तः करण । ३. मस्ती ।

अन्तसकरन निसान आए, ले आतम को पोहोंचाए ।
इन चोटें ऐसे चुभाए, नीद दई उड़ाए ॥ १२

चढ़ते रंग सनेह, बढ़यो प्रेम रस पूर ।
बन जमुना हिरदें चढि आए, इन विध हुए हजूर ॥ १३

पिए हैं सराब प्रेम, छूटे सब बंधन नेम ।
उठ बैठे माहें धाम, हंस पूछे कुसल[1] खेम ॥ १४

महामत महामद चढ़्यो, आयो धाम को अहंमद[2] ।
साथ छक्यो सब प्रेम में, पोहोंचे पार बेहद ॥ १५

॥ प्रकरण ॥ ८३ ॥ चौपाई ॥ ११६४ ॥

राग धनासरी

धंन धंन सखी मेरे सोईरे दिन, जिन दिन पियाजीं सोंहुओरे मिलन ।
धंन धंन सखी मेरे हुई पेहेचान, धंनधंन पीउ पर मैंभई कुरबान ॥ १

धंन धंन सखी मेरे नेत्रअनियाले[3], धंनधंनधंनी नेत्र मिलाए रसाले ।
धंन धंन मुख धनीको सुंदर, धंन धंन धनी चित चुभायो अंदर ॥ २

धंन धंन धनी के वस्तर भूषन, धंन धंन आतम से न छोडूं एक खिन ।
धंन धंन सखी मैंसजेसिनगार, धंन धंन धनिएं मोकोंकरो अंगीकार[4] ॥ ३

धंन धंन सखी मैं सेज बिछाई, धंन धंन धनी मोकों कंठ लगाई ।
धंन धंनधनीमेरेसोई साएत,[5] धंन धंन बिलसो मैं पीउ सों आएत[6] ॥ ४

धंन धंन सखी मेरी सेजरसभरी, धंन धंन बिलास मैं कै विधकरी ।
धंन धंन सखी मेरे सोईरस रंग, धंन धंन सखी मैं किए स्यामसंग ॥ ५

धंनधंन सखी मोकोंकहे दिलकेसुकन[7], धंनधंनपायोमैंतासोंआनंद घन ।
धंन धंन मनोरथ किए पूरन, धंन धंन स्यामें सुख दिए वतन ॥ ६

धंन धंन सखी मेरे पीउ कियो बिलास, धंन धंन सखीमेरी पूरी आस ।
धंन धंन सखी मैं भई सुहागिन, धंन धंन धनी मुझ पर सनकूल मन ॥ ७

---

१. हाल चाल । २. गर्व पूर्ण मस्ती । ३. बांके । ४. स्वीकार । ५. घड़ी । ६. अनायास ।
७. वचन ।

धंन धंन सखी मेरे मन्दिर सोभित, धंन धंन सरूप सुंदर प्रेम प्रीत ।
धंन धंन चौक चबूतरे सुंदर, धंन धंन मोहोल[1] झरोखे अंदर ।। ८

धंन धंन जवेर नकस चित्रामन, धंन धंन देखत कै रंग उतपंन ।
धंन धंन थंभ गलियाँ दिवाल, धंन धंन सखियाँ करें लटकती चाल ।। ९

धंन धंन सखी मेरे भयो उछरंग, धंन धंन सखियों को बाढ़्यो रस रंग ।
धंन धंन सखी मैं जोवन[2] मदमाती, धंन धंन धाम धनीसों रंग राती ।। १०

धंन धंन साथमुख नूररोसन, धंन धंन सुख सदा धाम वतन ।
धंन धंन सखी मेरे भूषन झलकार, कौन विध कहूँ नपाइए पार ।। ११

धंन धंन नूर सबमें रह्यो भराई, देखे आतम सो मुख कह्यो न जाई ।
धंन धंन साथ छक्यो अलमस्त, धंन धंन प्रेम माती महामत ।। १२

।। प्रकरण ।। ८४ ।। चौपाई ।। ११७६ ।।

## राग श्री

### तीन विध का चलना

ए जो कही जागन, सखीरी जाग चलो ।।

वचन नीके बिचारियो, जो कोई सुहागिन ।
जाग चलो पीउसों मिलो, सुख अखंड आनंद घन ।। १

जागृत सब्द धनीअके, ततखिन करे मकसूद[3] ।
सोई सब्द लिए बिना, होए जात नाबूद[4] ।। २

के किताबें या बानियां, कही मैं साथ कारन ।
इनमें से मैं मेरे सिर, लिया ना एक वचन ।। ३

ए जो जागृत बचन, सुपन रहे ना आगूं जाग ।
पर लिया ना सिर अपने, तो रही सुपन देह लाग ।। ४

अबहीं जो सिर लीजिए, एक बचन जागृत ।
तो तबहीं जाग के बैठिए, उड़ जाए सुपन सुरत ।। ५

१. महल । २. यौवन । ३. इच्छा पूर्ति । ४. नष्ट ।

ए बचन ऐसे जागृत, जगावत ततखिन ।
जो न लीजे सिर अपने, तो कहा करे वचन ॥ ६
मैं न लिया सिर अपने, तो कहा देऊँ दोस औरन ।
जागे सुपन क्यों रहे, पर हुआ हाथ इजन[१] ॥ ७
जागृत बचन अनभवें, अखंड घर वतन ।
अचरज बड़ो होत है, देह उड़त ना झूठ सुपन ॥ ८
साख देवाई सब अंगों, दया और अंकूर ।
अनभव वतनी होत है, देह होत न झूठी दूर ॥ ९
मैं बिध बिध करके बचनों, मारे तरवारों घाए ।
टूक टूक जुदे करहीं, तो भी उड़त नहीं अरवाए[२] ॥ १०
सब्द बान सतगुरु के, रोम रोम निकसें फूट ।
बड़ा अचंभा होत है, देह जात ना झूठी टूट ॥ ११
मैं जान्या अपने तन को, मारों भर भर बान ।
तिनसे झूठी देह को, फना करों निदान ॥ १२
ए सब्द धनी फुरमान के, भी ले अनभव आतम ।
तिनसे उड़ाऊँ सुपना, पर कोई साइत[३] हाथ हुकम ॥ १३
अब आतमने द्रढ़ किया, देह उड़े ना बिना इसक ।
जोस इसक दोऊ मिलें, तब उड़े देह बेसक ॥ १४
दुख ना दीजे देह को, सुखें छोड़िए सरीर ।
ए सिध इन बिध होवही, जो जोस इसक करे भीर[४] ॥ १५
अब दौड़े जोस इसक को, याद कर साथ धनी धाम ।
ए धनी बिना न आवहीं, जोस इसक प्रेम काम ॥ १६
तामस राजस स्वांतस, चलें माहें गुन तीन ।
बचन अनभव इसक, हुआ जाहेर आकीन ॥ १७

१. हुक्म । २. रूह । ३. शुभ घड़ी । ४. ज़ोर ।

हँसें खेलें बिध तीनमें, छोड़ें देह सुपन ।
महामत कहें सुख चैनमें, साथ धनी मिलन ॥ १८

॥ प्रकरण ॥ ८५ ॥ चौपाई ॥ ११६४ ॥

राग श्री

साथजी जागिए, सुनके सबद आखर ।
सकल आउध[1] अंग साज के, दौड़ मिलिऐ धनी निज घर ॥ १

धनी के केहेलाए मैं कहे, तुम को चार सबद ।
किन ज्यादा किन कम लिए, किन कर डारे रद ॥ २

किन कम किन ज्यादा जीतिया, कोई हाथ पटक चल्या हार ।
साथजी यों बाजी मिने, कोई जीत्या बेसुमार ॥ ३

अब सो समया आए पोहोंचिया, मेरे तो लेना सिर ।
धनिएँ बानी करता मुझे किया, सो मैं मुख फेरों क्यों कर ॥ ४

कोई सिर ल्यो तो लीजियो, धनिएँ केहेलाए साथ कारन ।
ना तो मेरे सिर जरूर है, एही सबद बल वतन ॥ ५

ए नीके[2] मैं जानत हों, करी है तुम पेहेचान ।
तुममें से बिरला कोई पीछे पड़े, सब ल्योगे सिर निदान ॥ ६

मेरे तो आगूं होवना, धनिएँ दिया सिर भार ।
समझ सको सो समझियो, कर आतम अंतर विचार ॥ ७

अब मैं दिल बिचारिया, लिया न सिर सबद ।
तो झूठी देह लग रही, जो बांधी माहें हद ॥ ८

एक सबद जो जागृत, अंतर आतम चुभाए ।
तो देह झूठी सुपन की, तबहीं देवे उड़ाए ॥ ९

आगूं जाग्रत बचन के, क्यों रहे देह सुपन ।
मोहे अचरज आगूं सांचके, देह झूठी राखी किन ॥ १०

---

१. अस्त्र । २. अच्छी तरह ।

ए भी फेर बिचारिया, सांच आगे ना रहे अनित[1] ।
एह बल हुकम के, देह सुपन रही इत ॥ ११

सोई हुकम आए पोहोंचिया, जो करी थी सरत ।
सबद भी सिर पर लिए, आया वतन बल जागृत ॥ १२

अब हुकम धनीअ के, सब बिधि दई पोहोंचाए ।
चेत सको सो चेतियो, लीजो आतम जगाए ॥ १३

अब भली बुरी दुनीअ की, ए जिन लेओ चित ल्याए ।
सुरत पकी करो धाम की, पर आतम धनी मिलाए ॥ १४

दुख सुख डारो आग में, ए जो झूठी माया के ।
पिंड ना देखो ब्रह्मांड, राखो धाम धनी सुरत जे ॥ १५

कोई देत कसाला[2] तुमको, तुम भला चाहियो तिन ।
सरत धाम की न छोड़ियो, सुरत पीछे फिराओ जिन ॥ १६

जो कोई होवे ब्रह्मसृष्टि का, सो लीजो वचन ए मान ।
अपने पोहोरे[3] जागिए, समया पोहोंच्या आन ॥ १७

सूता होए सो जागियो, जागा सो बैठा होए ।
बैठा ठाढ़ा[4] होइयो, ठाढ़ा पाँऊँ भरे आगे सोए ॥ १८

यों तैयारी कीजियो, आगू करनी है दौड़ ।
सब अंग इसक लेअ के, निकसो ब्रह्मांड फोड़ ॥ १९

महामत कहें मेरे साथ जी, लीजो आखर के बचन ।
हुकम सरत पोहोंची दया, कछू अंग अपने करो रोसन ॥ २०

॥ प्रकरण ॥ ८६ ॥ चौपाई ॥ १२१४ ॥

राग श्री

आग परो तिन काएरों, जो धाम की राह न लेत ।
सरफा[5] करे जो सिर का, और सकुचे जीव देत ॥ १

१. नाशवान । २. कष्ट । ३. अवसर । ४. खड़ा । ५. कंजूसी ।

पाइएत झूठ के बदलें, सत सुख अखंड ।
सो देख पीछे क्यों होवही, करते कुरबानी पिंड ॥ २

इन बिध कहे संसार में, रंचक[1] दिलासा दे ।
टूक टूक होए जाए फना, सब अंग आसक के ॥ ३

धनिएँ दई दिलासा मुझको, कै पदमों लाख करोड़ ।
तब आतमने यों कह्या, पर आतम धनी संग जोड़ ॥ ४

देख दिलासा धनीअ की, भी साख दई सबन ।
माहें बाहेर अंतर मिने, सब अंग किए रोसन ॥ ५

तूँ पूछ मन चित बुध को, और गुन अंग इंद्री पख ।
देख तत्व सब सास्त्रों का, फेर कर नीके लख[2] ॥ ६

तूं बल कर कछू अपना, चल राह तामसी सूर ।
ब्रह्मसृष्टि निकसी ब्रजसे, देख क्यों कर पोहोंची हजूर[3] ॥ ७

कर कबीला पार का, अंकूर बल सूर धीर ।
एक धनी नजर में लेअ के, उड़ाए दे सरीर ॥ ८

पूछ नीके अपने धनी को, भी नीके देख तारतम ।
नीके देख फुरमान को, भी पूछ नीके आतम ॥ ९

भी पूछ संगी तूं अपने, जो हुए पिडथें दूर ।
कै साखें[4] अजूं ले खड़ा, देख रोसन अपना नूर ॥ १०

एती साखें लेअ के, कहा लगत झूठे अंग ।
अजूं ना लगे तोकों धाम को, साँचों सनमंध संग ॥ ११

सास्त्र संगी सब यों कहें, बिचार देख महामत ।
जैंसो होए हिरदे मिने, तैसी पाइए गत ॥ १२

महामत कहें पीछे न देखिए, नहीं किसी की परवाह ।
एक धाम हिरदे में लेअ के, उड़ाए दे अरवाह ॥ १३

॥ प्रकरण ॥ ८७ ॥ चौपाई ॥ १२२७ ॥

---

१. जरा सी । २. पहचान । ३. निकट । ४. ग्वाही ।

राग श्री

सैयाँ हम धाम चले,

जो आओ सो आइयो, पीछे रहे ना एक खिन ।
हम पीठ दई संसार को, जाए सुरत लगी वतन ॥ १

सुध मुहूरत ले कूंच किया, साएत देखी अति सारो ।
अब दौड़ सको सो दौड़ियो, न रहे दौड़ पकड़ी हमारी ॥ २

कोई दिन राह देखी साथ की, पीछे नजर फिराए ।
पोहोंचे दिन आए आखर, अब हम रह्यो न जाए ॥ ३

हम संग चलो सो ढील जिन करो, छोड़ो आस संसार ।
सुरत हमारी कछू ना रही, हम छोड़ी आस आकार ॥ ४

नेक[1] बसे हम ब्रज में, नेक बसे रास माहें ।
आगे तो धाम आइया, तब तो आँखें खुल जाएं ॥ ५

साथ चले जो ना चलिया, ताए लगसी आग दोजख ।
तलफ तलफ[2] जीव जाएसी, जिन जानो यामें सक ॥ ६

पीछे अटकाव[3] न राखो रंचक, जो आओ संग हम ।
तुम जानोगे वह नेक है, पर जरा होसी जुलम ॥ ७

जो न आओ सो जुदा होइयो, ना तो होसी बड़ी जलन ।
हम तो चले धाम को, तुम रहियो माहें करन[4] ॥ ८

हम छोड़े सुख सुपन के, आए नजरों सुख अखंड ।
विरहा उपज्या धाम का, पीछे हो गई आग ब्रह्मांड ॥ ९

मैं आग देऊं तिन सुख को, जो आड़ी करे जाते धाम ।
मैं पिंड न देखूं ब्रह्मांड, मेरे हिरदे बसे स्यामा स्याम ॥ १०

कै किताबें करी साथ कारन, सो भी गाई जगावन ।
ए सुनके जो न दौड़िया, जिमी तांबा[5] होसी तिन ॥ ११

---

१. थोड़ा । २. तड़प । ३. रोक । ४. कर्म बंधन । ५. गर्म तांबा ।

कै लोभें लिए लज्या लिऐ, कै लिऐ अहंकार ।
यों छलें पीछे कै पटके, जो केहेते हम सिरदार ।। १२
बिषै[1] स्वाद जिन लग्यो, सो लिए इंद्रियों घेर ।
जो एक साएत साथ आगे चल्या, पीछे पड़े मांहें करन अंधेर ।। १३
गुन अवगुन सबके माफ किए, जो रहो या चलो हम संग ।
हम पीछे फेर न देखहीं, पीउसों करें रस रंग ।। १४
साथ होवे जो धामको, सो भूले नहीं अवसर ।
सनमंधी जब उठ चले, तब पीछे रहे क्यों कर ।। १५
महामत कहें मेहेबूब[2] का, सांचा स्वाद आया जिन ।
परीक्षा तिनकी प्रगट, छेद निकसे बान बचन ।। १६

।। प्रकरण ।। ८८ ।। चौपाई ।। १२४३ ।।

## राग वसंत

चलो चलो रे साथ, आपन जैए धाम ।
मूल वतन धनिएँ बताया, जित ब्रह्म सृष्टि स्यामाजी स्याम ।। १
मोहोल मंदिर अपने देखिए, देखिए खेलन के सब ठौर ।
जित है लीला स्याम स्यामाजी, साथजी बिना नाहीं कोई और ।। २
रेत सेत जमुना जी तलाव, कै ठौर बन करें बिलास ।
इसक के सारे अंग भीगल, रेहेस रंग विनोद हांस ।। ३
पसू पंखी मांहें सुंदर सोभित, करत कलोल मुख मीठी बान ।
अनेक बिध के खेल जो खेलत, सो केते कहूं मुख इन जुबान ।। ४
एही सुरत अब लीजो साथ जी, भुलाए देओ सब पिंड ब्रह्मंड ।
जागे पीछे दुख काहेको देखे, लीजे अपना सुख अखंड ।। ५
साथ मिल तुम आए धाम से, भूल गए सो मूल मिलाप ।
भूलियां धाम धनी के बचन, ना कछू सुध रही जो आप ।। ६

---

१. इन्द्रियों का । २. प्रियत्तम ।

धनी भेज्या फुरमान बुलावने, कह्या आइयो सरत इन दिन ।
खेलमें लाहा लेअके आपन, चलिए इत होय धंन धंन ॥ ७

चौदे लोक में झूठ विसतरचो, तामें एक सांचे किए तुम ।
हँसते खेलते नाचते चलिए, आनंद में बुलाइयां खसम ॥ ८

अब छलमें कैसे कर रहिए, छोड़ देओ सब झूठ हराम ।
सुरत धनीसों बाँध के चलिए, ले ब्रह्म रस प्रेम काम ॥ ९

जो जो खिन इत होत है, लीजो लाभ साथ धनी पेहेचान ।
ए समया तुमें बोहोर न आवे, केहेती हों नेहेचे बात निदान ॥ १०

अब जो घड़ी रहो साथ चरने, होए रहियो तुम रेन[1] समान ।
इत जागे को फल एही है, चेत लीजो कोई चतुर सुजान ॥ ११

ज्यों ज्यों गरीबी लीजे साथ में, त्यों त्यों धनी को पाइए मान ।
इत दोए दिन का लाभ जो लेना, एही बचन जानो परवान ॥ १२

अब जो साइत इत होत है, सो पीउ बिना लगत अगिन ।
ए हम सह्यो न जावही, साथ में कहे कोई कुटक बचन ॥ १३

ज्यों ज्यों साथ में होत है प्रीत, त्यों त्यों मोही को होत है सुख ।
ज्यों ज्यों क्रोध करत हैं साथ में, अंत वाही को है जो दुख ॥ १४

इत खिनका है जो लटका, जीत चलो भावे जो हार ।
महामत हेत कर कहें साथ को, बिध बिध की करत पुकार ॥ १५

प्रकरण ॥ ८६ ॥ चौपाई ॥ १२५८ ॥

## राग मारू

साथ जी सोभा देखिए, करे कुरबानी[2] आतम ।
वार डारों नख सिख लों, ऊपर धाम धनी खसम ॥ १

लिख्या है फुरमान में, करसी कुरबानी मोमन ।
अग्यारे सै साल का, सो आए पोहोंच्या दिन ॥ २

---

१. रजकण । २. बलिदान ।

देख्या मैं बिचार के, हम सिर किया फरज ।
बड़ो बुजरगी मोमनों, देखो कौन क्यों देत करज ॥ ३

करी कुरबानी तिन कारने, परीक्षा सबकी होए ।
करे कुरबानी जुदे जुदे, सांच झूठ ए दोए ॥ ४

कस[1] न पाइए कसोटी बिना, रंग देखावे कसोटी ।
कच्ची पक्की सब पाइए, मत छोटी या मोटी ॥ ५

कसोटी कस देखावही, कसनी के बखत ।
अबहीं प्रगट होएसी, जुदे झूठ से निकस के सत ॥ ६

करत कुरबानी सकुचें,[2] मोमन करे न कोए ।
तींन गिरोकी[3] परीक्षा, अब सो जाहेर होए ॥ ७

कहा कहूं वतन सैयां, जो मगज लगे अरथ ।
कुरबानी समे देख्या चाहिए, सांचे सूर समरथ ॥ ८

कुरबानी को नाम सुन, मोमन उलसत अंग ।
पीछे हुते जो मोमन, दौड़ लिया तिन संग ॥ ९

मोमन एही परीक्षा, जोस न अंग समाए ।
बाहेर सीतलता होए गई, माहें मिलाप धनीकों चाहे ॥ १०

सुनत कुरबानी मोमन, होए गए आगे से निरमल ।
इत एक एक आगे दूसरा, जाने कब जासी हम चल ॥ ११

मोंमन बड़ा मरातबा,[4] अब होसी जाहेर ।
छिपे हुते दुनियां मिने, सो निकस आए बाहेर ॥ १२

सांचे छिपे ना रहें, अपने समे पर ।
दोस्त कहे धनी के, छिपे रहें क्यों कर ॥ १३

जो होए आतम धाम की, सो अपने समे पर ।
अपना सांच देखावही, भूले नहीं अवसर ॥ १४

---

१. जांच । २. संकोच । ३. समुदाय । ४, पद ।

जो भूले अब को अवसर, सो फेर न आवे ठौर ।
नेहेचे सांचे ना भूलहीं, इत भूलेंगे कोई और ॥ १५
आया दरवाजा धाम का, सांचों बाढयो बल ।
आए गए छाया मिने, धनी छाया निरमल ॥ १६
साफ सेहेजे हो गए, करने पड़्या न जोर
रात मिटी कुफर अंधेरी, भयो रोसन वतनी भोर ॥ १७
कुरबानी सुन सखियां, उलसत सारे अंग ।
सुरत पोहोंची जाए धाम में, मिलाप धनी के संग ॥ १८
मोमन बल धनीअ का, दुनी तरफ से नाहें ।
तो कहे धनी बराबर, जो मूल सरूप धाम माहें ॥ १९
लड़कपने सुध ना हुती, तो भी मोमन मूल अंकूर ।
कोई कोई बात की रोसनी, लिए खड़े थे जहूर ॥ २०
अब तो किए धनिएँ जागृत, दई भांत भांत पेहेचान ।
तोड़ दई आसा छल की, क्यों सकुचें करत कुरबान ॥ २१
अब तो धनी बल जाहेर, आयो अलेखें अंग ।
ए जिन दिया सो जानहीं, या जिन लिया रस रंग ॥ २२
ए दुनी न जाने सुपन की, न जाने मलकूती[1] फिरस्तन ।
ए अक्षर को भी सुध नहीं, जाने स्याम स्यामा मोमन ॥ २३
मैं मेरे धनीअ की, चरन की रेन पर ।
कोट बेर वारों अपना, टूक टूक जुदा कर ॥ २४
अंग अंग सब उलसत, कुरबानी कारन ।
जरे जरे पर वार हूँ, ए जो बीच जरे राह इन ॥ २५
जिन दिस मेरा पीउ बसे, तिन दिस पर होऊँ कुरबारन ।
रोम रोम नख सिख लों, वार डारों जीव से प्रान ॥ २६

---

१. बैकुंठ वाले ।

सूरा[१] तन सखियन का, मुखथें कह्यो न जाए ।
महामत कहें सो समया, निपट निकट पोहोंच्या आए ॥ २७

॥ प्रकरण ॥ ९० ॥ चौपाई ॥ १२८५ ॥

राग श्री

आगूं आसक ऐसे कहें, जो माया थें उतपन ।
कोट बेर मासूक पर, उड़ाए देवें अपना तन ॥ १

जीव माया के ऐसी करें, कैयों देखे दृष्ट ।
ओ भी उन पर यों करें, तो हम तो हैं ब्रह्म सृष्ट ॥ २

धिक धिक पड़ो तिन समझको, जो पीछे देवे पाए ।
कुरबानी को नाम सुन, क्यों न उड़े अरवाए ॥ ३

जो नकल हमारे की नकल, तिनका होत ए हाल ।
तो पीछे पांउं हम क्यों देवें, हम सिर *नूरजमाल ॥ ४

जो आसक असल अरसकी, सो क्यों सकुचे देते जीव ।
करे कुरबानी कोट बेर, ऊपर अपने पीउ ॥ ५

सो भी पीउ अक्षरातीत, इत कायर न होवे कोए ।
सुनत कुरबानी के आगे ही, तन रोम रोम जुदे होए ॥ ६

इन खसम के नाम पर, कै कोट बेर वारों तन ।
टूक टूक कर डार हूं, कर मनसा वाचा करमन ॥ ७

जो आसक *अरस अजीम[२] के, तिन सिर नूरजमाल ।
परीक्षा तिनकी जाहेर, सबद लगें ज्यों भाल ॥ ८

जो सुहागिन वतनी, ताकी प्रगट पेहेचान ।
रोम रोम सब अंगों, जुदी जुदी दे कुरबान ॥ ९

कुरबानी को सब अंग, हँस हँस दिल हरखत ।
पीउ पर फना होवने, सब अंगों नाचत ॥ १०

---

१. शौर्य । २. परमधाम ।

आसक[1] कबूं ना अटके, करत अंग कुरबान ।
ना जीव अंग आसक के, जीव पीउ अंग में जान ॥ ११

अंग आसक आगूंहीं फना, जीवत मासूक के माहें ।
डोरी हाथ मेहेबूब के, या राखे या फनाए[2] ॥ १२

तो अंग आधा अरधांग, मासूक का आसक ।
तो दोऊ तन एक भए, जो इसक लाग्या हक ॥ १३

सोई कहावत आसक, जिन अंग जोस फुरत[3] ।
अहेनिस[4] पीउके अंगमें, रेहेत आसक की सुरत ॥ १४

मासूक की नजर तले, आठों जाम आसक ।
पिए अमीरस[5] सनकूल, हुकम तले बेसक ॥ १५

न्यारा निमख[6] न होवही, करने पड़े न याद ।
आसक को मासूक का, कोई इन बिध लाग्या स्वाद ॥ १६

रोम रोम बीच रम रह्या, पीउ आसक के अंग ।
इसकें ले ऐसा किया, कोई हो गया एकै रंग ॥ १७

इन जुबां इन आसक का, क्यों कर कहूँ सो बल ।
धाम धनी आसकसों, जुदा होए न सकें एक पल ॥ १८

महामत कहें मेहबूब के, रोम रोम लगे घाए ।
इन अंग को अचरज होत है, अजूं ले खड़ा अरवाए ॥ १९

॥ प्रकरण ॥ ९१ ॥ चौपाई ॥ १३०४ ॥

राग श्री

अब हम धाम चलत हैं, तुम हूजो सबे हुसियार ।
एक खिनको बिलम[7] न कीजिए, जाए घरों करें करार ॥ १

साथ देखो ए अवसर, वासना करो पेहेचान ।
आए पोहोंचे ब्रज में, याद करो निसान ॥ २

१. प्रेमी । २. नष्ट । ३. तरंगित । ४. दिन रात । ५. अमृत । ६. पल भर । ७. देर ।

धनिएँ देखाया नजरों, सुरतां दैयां फिराए ।
अब पैठे हम रास में, उछरंग हिरदें चढ़ आए ॥ ३
जाग्रत बुध हिरदें आई, अब रेहे ना सकें एक खिन ।
सुरत टूटी नासूत से, पोहोंची सुरत वतन ॥ ४
चिन्हार भई सब साथ में, आई धामकी खुसबोए ।
प्रेम उपज्या मूल का, सुपन रेहेना क्यों होए ॥ ५
अब नीद हमारी क्यों रहे, इन बखत दिए जगाए ।
जागे पीछे झूठी भोम में, क्यों कर रह्यो जाए ॥ ६
देख तैयारी साथ की, ओ समया रह्या न हाथ ।
अवसर नया उदे हुआ, उमंगियो सब साथ ॥ ७
क्यों रहें सुरतें पकड़ी, एक दूजे के आगे होय ।
दौड़ा दौड़ ऐसी हुई, पीछे रहे न कोए ॥ ८
के हुती देस परदेस में, ए बातें सुनियां तिन ।
तिनकी सुरतें इत बांधियां, तित रेहे ना सकें एक खिन ॥ ९
परदेसें साथ पसरचो हुतो, तित सबे पड़्यो सोर ।
यों ठौर ठौर रंग फैलिया, हुआ महंमदी दौर ॥ १०
पीछला साथ आए मिलसी, पर अगले करें उतावल ।
केताक साथ विचारनीका, सो जानें चलें सब मिल ॥ ११
इन बिध सोर हुआ साथ में, ठौर ठौर पड़ी पुकार ।
एक आए एक आवत हैं, एक होत हैं तैयार ॥ १२
ऐसा समया इत हुआ, आए पोहोंचे इन मजल[१] ।
कोई कोई लाभ जो लेवहीं, जिन जाग देखाया चल ॥ १३
सुध बुध आई साथ में, सुरता[२] फिरी सबन ।
कोई आगे पीछे अवल, सबे हुए चेतन ॥ १४

---

१. (मंजिल), पड़ाव । २. ध्यान ।

कोई कोई पीछे रेहे गई, तिनकी सुरत रही हम माहें ।
ढील करी ज्यों स्वाँतसियों,[१] आए अंग पोहोंचे नाहें ।। १५

कहें महामत परीक्षा तिनकी, जो पेहेलें हुए निरमल ।
छूटे विकार सब अंग के, आए पोहोंचे इसक अवल[२] ।। १६

।। प्रकरण ।। ६२ ।। चौपाई ।। १३२० ।।

राग श्री

अब हम चले धाम को, साथ अपना ले ।
लिख्या कौल फुरमान में, आए पोहोंच्या ए ।। १

सखी हम तो हमारे घर चले, तुम हूजो हुसियार ।
सुरता आगे चल गई, हम पीठ दई संसार ।। २

हममें पीछे कोई ना रहे, और रहो सो रहो ।
गुन अवगुन सबके माफ किए, जिन जो भावे सो कहो ।। ३

अब हम रह्यो न जावही, मूल मिलावे बिन ।
हिरदें चढ़ चढ़ आवही, संसार लगत अगिन ।। ४

सोई बस्तर सोई भूषन, सोई सेज्या सिनगार ।
सोई मेवा मिठाइयाँ, अलेखें अपार ।। ५

सोई धनी सोई वतन,[३] सोई मेरो सुंदर साथ ।
सोई विलास अब देखिए, दोरी खैंची उनके हाथ ।। ६

सोई चौक गलियां मंदिर, सोई थंभ दिवालें द्वार ।
सोई कमाड़[४] सोई सीढ़ियां, झलकारों झलकार ।। ७

सोई मोहोल सोई मालिए[५], सोई छज्जे रोसन ।
सोई मिलावे साथ के, सोई बोलें मीठे वचन ।। ८

सोई झरोखे धाम के, जित झांकत हम तुम ।
सो क्यों ना देखो नजरों, बुलाइयां खसम ।। ९

---

१. शांत रूहें । २. पहले । ३. परमधाम । ४. द्वार । ५. फुलवाड़ी ।

सोई खेलना सोई हँसना, सोई रस रंग के मिलाप ।
जो होवे इन साथ का, सो याद करो अपना आप ॥ १०

सोई चाल गत अपनी, जो करते माहें धाम ।
हँसना खेलना बोलना, संग स्यामाजी स्याम ॥ ११

सोई बातें प्रेम की, सोई सुख सनेह ।
सुख अखंड को भूलके, क्यों रहे झूठी देह ॥ १२

सोई सेज्या सोई मंदिर, सोई पीउजो को विलास ।
सोई मुख के मरकलड़े,[1] छूटी अंग की आस ॥ १३

सोई रसीले रंग भरे, निरखें नेत्र चढ़ाए ।
सुंदर मुख सनकूल की, भर भर अमृत पिलाए ॥ १४

सोई कटाक्षे स्यामकी, सींचत सुरत चलाए ।
बंके नैन मरोर के, दृष्टें दृष्ट मिलाए ॥ १५

कहा कहूँ सुख साथको, देखें भृकुटी भौंह चढ़ाए ।
सुखकारी सीतल सदा, सुख कहा केहेसी जुबाँए ॥ १६

सूक्ष्म सरूप ने सुंदरता, उनमद[2] सारे अंग ।
बराबर एकै भांत के, और कै विध के रस रंग ॥ १७

एक दूजे के चित्त पर, चाल चले माहों माहें ।
पात्र प्रेम प्रीत के, हांस विनोद बिना कछू नांहें ॥ १८

बोए नेक आवे इन घर की, तो अंग निकसे आहे ।
सो तबहीं ततखिन में, पीउजीपें पोहोंचाए ॥ १९

याद करो जो मांगया, धनिएँ खेल देखाया कर हेत ।
महामत कहें मेहेबूब के, सुखमें हो सावचेत ॥ २०

॥ प्रकरण ॥ ९३ ॥ चौपाई ॥ १३४० ॥

---

१. मुस्कराना । २. मस्ती भरे ।

राग गोरी

सुनो साथजी सिरदारो, ए कीजो बचन बिचार ।
देखो बाहेर माहें अंतर, लीजो सार को सार जो सार ॥ १

*सुंदरबाई कहें धाम से, मैं साथ बुलावन आई ।
धाम से ल्याई तारतम, करी ब्रह्मांड में रोसनाई ॥ २

सो *सुंदरबाई धाम चलते, जाहेर कहे बचन ।
आड़ी खड़ी *इंद्रावती, कहे मैं रहे ना सकों तुम बिन ॥ ३

दई दिलासा बुलाए के, मैं लई सिखापन ।
रूहअल्ला के फुरमान में, लिखे जामें दोए तन ॥ ४

मूल सरूप बीच धामके, खेल में जामें दोए ।
*हरा हुल्ला सुपेत गुदरी, कहे *रूहअल्ला के सोए ॥ ५

हदीसों भी यों कह्या, आखर *ईसा बुजरक ।
इमाम ज्यादा तिनसे, जिन सबों पोहोंचाए हक ॥ ६

खासी गिरो के बीच में, आखर *इमाम खावंद होए ।
ए जो लिख्या फुरमान में, *रूहअल्ला के जामें दोए ॥ ७

भी कह्या बानीअ में, पांच सरूप एक ठौर ।
फुरमान में भी यों कह्या, कोई नाहीं या बिन और ॥ ८

कहे *सुन्दरबाई अक्षरातीत से, आया खेल में साथ ।
दोए सुपन ए तीसरा, देखाया प्राननाथ ॥ ९

कहे फुरमान[1] *नूर बिलंद से, खेल में उतरे मोमन ।
खेल तीन देखे तीन रात में, चले फजर इनका इजन[2] ॥ १०

यों विध विध दृढ़ कर दिया, दे साख धनी फुरमान ।
अपनी अकल माफक, केहे केहे मुख की बान ॥ ११

धनी फुरमान साख लेअ के, देखाय दई असल ।
सो फुरमाया छोड़ के, करें चाह्या अपने दिल ॥ १२

१. कुरान । २. हुक्म ।

तोड़त सरूप सिंघासन, अपनी दौड़ाए अकल ।
इन बातों मारे जात हैं, देखो उनकी असल ॥ १३

बिना दरद दौड़ावे दानाई,[१] सो पड़े खाली मकान ।
इसक नाहीं सरूप बिना, तो ए क्यों कहिए ईमान ॥ १४

दरदी जाने दिलकी, जाहेरी जाने भेख ।
अन्तर मुस्किल पोहोंचना, रंग लाग्या उपला[२] देख ॥ १५

इन विध सेवें स्याम को, कहे जो मुनाफक[३] ।
कहावें बराबर बुजरक, पर गई न आखर लों सक ॥ १६

मूल ना लेवें माएना, लेत उपली देखा देख ।
असल सरूप को दूर कर, पूजत उनका भेख ॥ १७

इत बात बड़ी है समझ की, और ईमान का काम ।
साथजी समझ ऐसी चाहिए, जैसा कह्या अल्ला कलाम ॥ १८

जेती बातें कहूँ साथजी, तिनके देऊं निसान ।
और मुख थें न बोलहूँ, बिना धनी फुरमान ॥ १९

इन फुरमान में ऐसा लिख्या, करे पातसाही दीन ।
बड़ी बड़ाई होएसी, पर उमराओं[४] के आधीन ॥ २०

कहे कुरान बंद करसी, इनके जो उमराह ।
एक तो करसी बन्दगी, और जो कहे गुमराह[५] ॥ २१

मैं करूँ खुसामद उनकी, मैं डरता हों उनसे ।
जो कहावें मेरे उमराह, और मेरे हुकम में ॥ २२

ऐसा न कोई उमराह, जो भाने दिल का दुख ।
जब करसी तब होएसी, दिया साहेब का सुख ॥ २३

एही बड़ा अचरज, कहावत हैं बंदे ।
जानों पेहेचान कबूं ना हुती, ऐसे हो गए दिल के अंधे ॥ २४

---

१. स्थानापन्न । २. ऊपर का । ३. कपटी । ४. अमीर लोग । ५. भटके हुए ।

मैं बुरा न चाहूँ तिनका, पर वे समझत नाहीं सोए ।
यार सजा दे सकत हैं, पर सो मुझसे न होए ॥ २५

मेरे दिल के दरद की, एक साहेब जाने बात ।
ऐसा कोई ना मिल्या, जासों करों विख्यात ॥ २६

जो कोई साथ में सिरदार, लई धाम धनी रोसन ।
खैंच छोड़ सको सो छोड़ियो, ना तो आपे छूटे हुए दिन ॥ २७

मेरे तो गुजरान[1] होएसी, जो पड़्या हों बंध ।
जो कदी न छूटया रात में, तो फजर छूटसी फंद ॥ २८

धाम धनी दई रोसनी, जो बड़े जमात दार ।
सोभा दई अति बड़ी, जिनके सिर मुद्दार ॥ २९

मैं इन सुख दुख से ना डरूं, मेरे धनी चाहिए सनमुख ।
मोहे एही कसाला[2] होत है, जब कोई देत साथ को दुख ॥ ३०

मेरी एक दृष्टि धनीअ में, दूजी साथ के माहें ।
तो दुख आवे मोहे साथ को, ना तो दुख मोहे कहूं नाहें ॥ ३१

कोई कोई अपनी चातुरी, ले खैंच करे मूढ़ मत ।
अकल ना दौड़ी अंतर लों, खैंचें ले डारे गफलत ॥ ३२

ए तो गत संसार की, जो खैंचा खैंच करत ।
आपन तो साथी धाम के, है हममें तो नूर मत ॥ ३३

मोमन बडे आकल,[3] कहे आखर जमाने के ।
इनकी समझ लेसी सबे, आसमान जिमी के जे ॥ ३४

जो कोई निज धाम की, सो निकसो रोग पेहेचान ।
जो सुरत पीछी खैंचही, सो जानो दुसमन छल सैतान ॥ ३५

अब बोहोत कहूँ मैं केता, करी है इसारत ।
दिल आवे तो लीजो सलूक,[4] सुख पाए कहें महामत ॥ ३६

॥ प्रकरण ॥ ६४ ॥ चौपाई ॥ १३७६ ॥

---

१. निर्वाह । २. कष्ट । ३. बुद्धिमान । ४. नेक चलन ।

### राग श्री

सोई सुहागिन धाममें, जो करसी इत रोसन ।
तौल मोल दिल माफक, देसी सुख सबन ॥ १

साथ माहें सैयाँ धामकी, ईमान वाली सिरदार ।
सो धन धामको तौलसी, करसी दृढ़ निरधार ॥ २

पेहेले तौलें बुध जागृत, पीछे तौलें धनी आवेस ।
और तौलें इसक तारतम, तब पलटे उपलो भेस ॥ ३

तब तौलासी वासना, और तौलासी हुकम ।
सब बल तौलें बलबंतियां, और तौलें सरूप खसम ॥ ४

रोसन करसी आपे अपना, जो सैयाँ जमात दार ।
ए कौल[1] अवल जोस का, जो किया है करार ॥ ५

जौ सैंयां हम धाम की, सो जाने सब को तोल ।
स्याम स्यामाजी साथ को, सब सैयोंपें मोल ॥ ६

नूर रोसन बल धाम को, सो कोई ना जाने हम बिन ।
अंदर रोसनीं सो जानहीं, जिन सिर धाम वतन ॥ ७

इसक ईमान धनी धाम को, और जोस जागृत पेहेचान ।
तौलें धनी धन धाम का, यों कहे कुरान निसान ॥ ८

साथ अंग सिरदार को, सिरदार धनी को अंग ।
बीच सिरदार दोऊ अंग के, करे न रंग को भंग ॥ ९

साथ धाम के सिरदार को, मोमन मन नरम ।
मिलावे और धनींअ की, दोऊ इनके बीच सरम ॥ १०

इत परीक्षा प्रगट, उठावें अपना भार ।
और बोझ निबाहे साथ को, और बोझ मसनंद[2] भरतार ॥ ११

१. वचन । २. गादी ।

ए तो पातसाही[१] दीन की, सो तो गरीबी से होए ।
और स्वांत सबूरी बिना, कबहूँ न पावे कोए ॥ १२

ए लसकर[२] सारा दिल का, सो दिल—बरी सब चाहे ।
दिल अपना दे उनका लीजिए, इन विध चरनों पोहोंचाए ॥ १३

जो कोई उलटी करे, साथी साहेब की तरफ ।
तो क्यों कहिए तिन को, सिरदार जो असरफ[३] ॥ १४

कह्या कुराने बंद करसी, इन के जो उमराह[४] ।
आधीन होसी तिन के, जो होवेगा पातसाह ॥ १५

लटी[५] तिन से न होवही, जो कहे सिरदार ।
सबों सिरदार एक होवही, मिने बारे हजार ॥ १६

लिख्या है कुरान में, छिपी गिरो बातन ।
सो छिपी बातून जानही, ए धाम सैयाँ लछन ॥ १७

भी लिख्या कुरान में गिरो की, सोहोबत करसी जोए ।
निज बुध जागृत लेअ के, साहेब पेहेचाने सोए ॥ १८

फुरमान कहे गिरो साहेदी, देसी कारन पैगंमर ।
सब केहेसी महंमद का देखिया, तब कुफर तोड़सी मुनकर ॥ १९

करे पाक जिमी आसमान को, ऐसी बुजरग गिरो सोए ।
होसी रुजू[६] माएने सब इन से, इन जैसी दूजी न कोए ॥ २०

गिरो माफक सिरदार चाहिए, जैसा कह्या रसूल ।
खैंच लेवे दिल साथ को सब पर होए सनकूल ॥ २१

ए मैं कही तुम समझने, ए है बड़ो विस्तार ।
बोहोत कह्या मेरे धनी ने, तुम करोगे केता बिचार ॥ २२

ले साख धनी फुरमान की, महामत कहें पुकार ।
समझ सको सो समझियो, या यार या सिरदार ॥ २३

॥ प्रकरण ॥ ६५ ॥ चौपाई ॥ १३६६ ॥

---

१. साम्राज्य । २. सेना । ३. कुलीन । ४. सिरदार । ५. भूल । ६. प्रवृत्त ।

राग श्री

तो भी घाव न लग्या रे कलेजें

ना लग्या रे कलेजें, जो एते देखे धनी गुन ।
कोट ब्रह्मांड जाकी पलथें पैदा, सो चाहे हमारा दरसन ॥ १

अचरज एक साथ जी, सुनो कहूँ अपनीं बीतक ।
धनिएँ मोकों मेहेर कर, ले पोहोंचाई हक ॥ २

ईमान ल्याओ सो ल्याइयो, कहूँ अनभव की बात ।
मोकों मिले इन बिधसों, श्री धाम धनी साख्यात ॥ ३

पीछे ईमान सब ल्यावसी, ए जो चौदे तबक ।
अवल आकीन ब्रह्मसृष्टि का, जिनमें ईमान इसक ॥ ४

ए बात नीके विचारियो, ज्यों तुमें साख देवे आतम ।
पीछे साख दुनी सब देअसी, ऐसा किया खसम ॥ ५

मैं तो कछू न जानती, श्री स्यामाजी दई खबर ।
आपन आए खेल देखने, धाम अपना घर ॥ ६

मोहे भेजी धनीने, तुम को बुलावन ।
साथ जी मिलके चलिये, जाइए अपने वतन ॥ ७

हम ब्रह्मसृष्टि आई धाम से, *अक्षर खेल देखन ।
खेल देख के जागिए, घर असलू अपने तन ॥ ८

साहेब तो पूरा मिल्या, तब थी मैं लड़कपन ।
पेहेचान करावने अपनी, बोहोतक कहे वचन ॥ ९

सो मैं कछू न दिल धरे, भूल गई अवसर ।
कै विध करी जगावने, पर मैं जागी नहीं क्योंए कर ॥ १०

मोहे चलते बखत बुलाए के, जाहेर करी रोसन ।
धाम दरवाजे *इंद्रावती, ठाढ़ी करे रुदन ॥ ११

कहे मोहे अकेली छोड़के, तुम धाम चलो क्यों कर ।
पीछे मैं दुनियाँ मिने, क्यों रहूँगी तुम बिगर ॥ १२

एह बचन स्यामाजीएँ, सब को कहे सुनाए ।
इंद्रावती आए बिना, हम धाम चल्यो न जाए ॥ १३

एक रस आतम करके, आप हुए अंतराए ।
अनभव कराए जुदे हुए, पर लग्या न कलेजें घाए ॥ १४

अंतरगत[1] में रेहे गए, धनीके दो एक सुकन ।
ए दरद न काहूँ बाँटिया, सो मैं कह्या न आगे किन ॥ १५

मोहे बोहोत कही समझाए के, पर पेहेचान ना हुई पूरन ।
तब आप अंदर आए के, बहु विध करी रोसन ॥ १६

अंदर मेरे बैठ के, कै विध कियो विस्तार ।
सो रोसनी जुबाँ क्यों कहे, वाको वाही जाने सुमार ॥ १७

तब कछुक मोकों सुध भई, कछुक भई पेहेचान ।
ए दरद कहूँ मैं किन को, धनी हो गए अंतरध्यान[2] ॥ १८

मोहे दिल में ऐसा आइया, ए जो खेल देख्या ब्रह्मांड ।
तो क्या देखी हम दुनियां, जो इनको न करें अखंड ॥ १९

बड़ी बड़ाई अपनी, सुनी हमारी हम ।
हम दे मुक्ति सबन को, जाए मिलें खसम ॥ २०

बचन हमारे धाम के, फैले हैं भरतखंड[3] ।
अब पसरसी त्रैलोक में, जित होसी मुक्त ब्रह्मांड ॥ २१

धनी भेजी किताब हाथ रसूल, जाए कहियो होए अमीन[4] ।
आखर धनी आवसी, तब ल्याइयो सब आकीन ॥ २२

ए बंध धनिएँ पेहेले बांधे, सो लिखे माहें फुरमान ।
इन जिमी साहेब आवसी, दीदार होसी सब जहान ॥ २३

ले हिसाब सबन पें, करसी कजा[5] अदल ।
भिस्त देसी सचराचर, कर साफ सबन के दिल ॥ २४

१. चित्त में । २. ओझल । ३. भारतवर्ष । ४. अमानतदार । ५. न्याय ।

जो साहेब किन देख्या नहीं, ना कछू सुनिया कान ।
सो साहेब इत आवसी, करसी काएम सब जहान ।। २५

फुरमान महंमद ल्याइया, किया अति घना सोर ।
कह्या रब्ब आलम[1] का आवसी, रात मेट करसी भोर ।। २६

रूह अल्ला की आवही, जो ईस्वरों का ईस ।
सो इन जिमी में पातसाही, करसी साल चालीस ।। २७

मारेगा कलिजुग को, ए जो चौदे तबक अंधेर ।
तिनको काट काढ़सी, टालसी उलटो फेर ।। २८

दज्जाल सरूप अंधेर को, आखर ईसा मारसी ताए ।
पेहेले निरमल करके, लेसी कदमों सुरत लगाए ।। २९

पीछे परले करके, लेसी तुरत उठाए ।
चौदे तबक सचराचर, देसी भिस्त बनाए ।। ३०

खासी उमत जो महंमदी, आई अरस से उतर ।
ताए अपना इलम देअ के, ले चलसी अपने घर ।। ३१

यों लिख्या फुरमान में, आखर बीच हिंदुअन ।
मुलक होसी नबिअन[2] का, धनी दई बड़ाई इन ।। ३२

फुरमान जाहेर पुकारही, बीच हिंदुओं भेष फकर[3] ।
पातसाही करसी महंमद, आखरी पैगंमर ।। ३३

सो महंमद आगू भेजिया, केहेने बचन आगम ।
सो खास उमत आई इत, ए जो लेने आए हम ।। ३४

ए सब्द सारे महंमदें, आए पेहेले किया पुकार ।
*महंमद *मेहेदी *रूहअल्ला, आखर वाही सिर मुद्दार ।। ३५

खोल हकीकत मारफत, बताए क्यामत के दिन ।
कै विध बंध धनिएँ बांधे, अपनी उमत के कारन ।। ३६

---

१. दुनियाँ । २. ईश दूत । ३. साधु ।

*विजिया अभिनंद बुधजी, और *नेहेकलंक इत आए ।
मुक्ति देसी सबन को, मेट सबे असुराए[1] ॥ ३७

दिन भी लिखे जाहेर, बीच किताब हिंदुआन ।
जो साख लिखी इनमें, सोई साख फुरमान ॥ ३८

के बिध धनिएँ ऐसा लिख्या, देने चौदे तबकों ईमान ।
सो धाम धनी इत आए के, कराई सबों पेहेचान ॥ ३९

यों साख आतम देवही, वचन आगम के देख ।
देने ईमान सबन को, यों बिध विध लिखे विसेख ॥ ४०

महामत कहें धनी धाम के, मुझसों कियो मिलाप ।
आखर सुख इन साथ में, मोहे कर थापी[2] आप ॥ ४१

॥प्रकरण ॥ ८६ ॥ चौपाई ॥ १४४० ॥

राग श्री

इन धनीके बान मोकों ना लगे

मोकों ना लगे, कहा किया करम अधम ।
तो भी इसक न आया मोकों, ए कैसा हुआ जुलम ॥ १

रंचक इसारत धनी की, जो पावे आसक जीउ[3] ।
सो जीव खिन एक लों, रेहे ना सके बिना पीउ ॥ २

सो भी पीउ जीउ इन जिमी के, ए जो फना ब्रह्मांड ।
मेरो तो जीउ पीउ धाम को, ए जो अक्षरातीत अखंड ॥ ३

ऐसी प्रीत जीव सृष्टि की, जाके पीउ विस्नु सेषसाई[4] ।
वाको रटत जात अहिनिस, ब्रह्म अक्षर सुध न पाई ॥ ४

कोट ब्रह्मांड नूर के पल थें, यों कहे सास्त्र त्रिगुन ।
सो अक्षर किने ना दृढ़ किया, ना दृढ किया इनों वतन ॥ ५

सो अक्षर अक्षरातीत के, करने आवें दरसन नित ।
तले झरोखे आए के, कर मुजरा[5] घरों फिरत ॥ ६

---

१. नीचता । २. स्थापना की, आशीरवाद दिया । ३. जीव । ४. शेषशायी । ५. अभिवादन ।

सोए धनी अक्षरातीत, इत आए मुझ कारन ।
अंग दियो मोहे जान अंगना, दिल सनमंध जान वतन ।। ७

मोहे दई सिखापन, धोखे दिए सब भान ।
अंतर पट उड़ाए के, कर दई सब पेहेचान ।। ८

अक्षर पार द्वार जो हुते, सोए दिए सब खोल ।
ऐसी कुंजी दई कृपा की, जो किनहूं न पाया मोल ।। ९

सब ब्रह्मसृष्टि आई धाम से, अक्षरातीत इन धनी ।
मोकों सबे विध समझाई, आप जान अपनी ।। १०

धनिएँ हेत करके मुझको, कै विध दई समझाए ।
साख सास्त्र सब सब्द, मोहें विध विध दई जगाए ।। ११

बोहोत धनिएँ मोकों चाहया, जाने प्रेम उपजे इन ।
सो प्रेम क्योंए न आइया, ऐसा हिरदे निपट कठिन ।। १२

तो भी प्रेम ना उपज्या, धनी कर कर थके सनेह ।
ढीठ निठुर निपट भई, धनी क्योंए ना सकी लेह ।। १३

फुरमान भेज्या जुदे होए, देने को साख दोए ।
सो मेहेर धनीकी मैं ही जानों, और न समझे कोए ।। १४

सोए सुकन[1] दिए लुदंनी[2] फुरमान याही से खुले ।
और न कोई खोल सके, जो चौदे तबक मिले ।। १५

सो मैं समझाऊं साथ को, ले फुरमान बचन ।
फैले हैं भरत खंड में, अब पोहोंचे चौदे भवन ।। १६

ऐसी जगाए खड़ी करी मुझे, और सब पर मेरी बुध ।
खबर न अक्षर ब्रह्म को, सोए भई मुझे सुध ।। १७

आप जैसी कर बैठाई, तो भी प्रेम न उपज्या इत ।
सो रोवत हों अंदर, फेर फेर जीव बिलखत ।। १८

१. वचन । २. तारतम वाणी ।

मेहेबूब[1] ऐसी में क्यों भई, ले प्रेम न खड़ी हुई ।
महामत दुष्टाई क्यों करो, ले विरहा माहें ना मुई ॥ १८

॥ प्रकरण ॥ ८७ ॥ चौपाई ॥ १४५८ ॥

राग श्री

तो भी चोट ना लगी रे आतम कों, जो एती साख धनिएँ दई ।
कठिन कठोर निपट ऐसी आतमा, एती साखें ले गल ना गई ॥ १

के साखें धनिएँ दई मुझे, श्रीं स्यामाजी आए इत ।
सों तारतम कहृया में तुमें, देखो साख देत है चित ॥ २

कहृया साहेब इत आवसी, सो झूठ ना होए फुरमान ।
सब का हिसाब लेअ के, काएम करसी जहान ॥ ३

पूछो अपनी आतम को, कोई दूजा है इप्तदाए[2] ।
रूह अल्ला इलम ल्याए के, केहेलावें इत खुदाए ॥ ४

सो बिना हिसाबें हदीसें, भी अनभव इत बोलत ।
साथजी दिल दे देखियो, जो हम तुममें बीतत ॥ ५

*बसीअत नामे आए दरगाह[3] से, तिन साख दई बनाए ।
अग्यारै सदी जाहेर लिखी, सो कौल पोहोंच्या आए ॥ ६

कै किताबें हिंदुअन की, साखें लिखी माहें इन ।
आए धनी झूठ उड़ावने, करसी सत रोसन ॥ ७

देखो कै साखें धनीय की, भी देखो अनभव आतम ।
कै साखें देखो फुरमान में, जो मेहेर कर भेजी खसम ॥ ८

और हदीसों में कै साखें, कै बसीअत नामें साख ।
कै किताबें हिंदुअन की, देत भाख भाख[4] कै लाख ॥ ९

कै साखें दै साधो संतों, बोले बानी आगम ।
कहे ना सकों तुमको साथजी, दोस देखों अपना हम ॥ १०

---

१. प्रियत्तम । २. आरम्भ । ३. मक्का । ४. कथन ।

एक साखें आवे ईमान, कैं साखें देनें बाँधे बंध ।
तो भी ईमान न आया हमको, कोई हिरदे भया ऐसा अंध ॥ ११

देखो बिचार के साथजी, साख दई आतम महामत ।
सो आतम साख सबों की देयसी, पोहोंच्या इलम हमारा जित ॥ १२

।। प्रकरण ॥ ६८ ॥ चौपाई ॥ १४७१ ॥

राग श्री

धिक धिक पड़ो मेरी बुध को

मेरी सुध को, मेरे तन को, मेरे मन को, याद न किया धनी धाम ।
जेहेर जिमीसों लग रही, भूली आठों जाम ॥ १

मूल वतन धनिएँ बताइया, जित साथ स्यामाजी स्याम ।
पीठ दई इन घर को, खोया अखंड आराम ॥ २

सनमंध मेरा तासों किया, जाको निज नेहेचल नाम ।
अखंड सुख ऐसा दिया, सो मैं छोड़्या विसराम ॥ ३

खिताब दिया ऐसा खसमें, इत आए इमाम ।
कुंजी दई हाथ भिस्त की, साखी अल्ला—कलाम[१] ॥ ४

अखंड सुख छोड़्या अपना, जो मेरा मूल मुकाम[२] ।
इसक न आया धनीअ का, जाए लगी हराम ॥ ५

खोल खजाना धनिएँ सब दिया, अंग मेरे पूरा न ईमान ।
सोए खोया मैं नीद में, करके संग सैतान ॥ ६

उमर खोई अमोलक,[३] मोह मद क्रोध ने काम ।
बिषया बिषे रस भेदिया, गल गया लोहू मांस चाम ॥ ७

अब अंग मेरे अपंग[४] भए, बल बुध फिरी तमाम ।
गए अवसर कहा रोइए, छूट गई वह ताम[५] ॥ ८

पार द्वार सब खोल के, कर दई मूल पेहेचान ।
संसे मेरे कोई ना रह्या, ऐसे धनी मेहेरबान ॥ ९

---

१. ब्रह्मज्ञान । २. स्थान । ३. अमूल्य । ४. बेकार । ५. आत्माहार ।

बोहोत कहचा घर चलते, बचन न लागे अंग ।
इंद्रावती हिरदे कठिन भई, चली ना पीउजी के संग ॥ १०

तब हारके धनिएँ बिचारिया, क्यों छोड़ूं अपनी अरधांग ।
फेर बैठे माहें आसन कर, महामती हिरदें अपंग ॥ ११

॥ प्रकरण ॥ ९९ ॥ चौपाई ॥ १४८२ ॥

धनी एते गुन तेरे देखके, क्यों भई हिरदे की अंध ।
कै साखें साहेदियाँ ले ले, याही में रही फंद ॥ १

कै साखें ले धनी की, कै साखें ले फुरमान ।
कै साखें लई सास्त्रन की, अंतसकरन में आन ॥ २

कै साखें साधुन की, कै साखें सब्द ब्रह्मांड ।
आतम मेरी अनभव से, लगाए देखी अखंड ॥ ३

जो कोई कबीला[१] पार का, सो सारों ने दई साख ।
धनी गुन आए आतम नजरों, सो कहे न जाए मुख भाख ॥ ४

कै साखें गुन विचार विचार, विध विध करी पुकार ।
तो भी घाव कलेजें न लग्या, यों गया जनम आकार ॥ ५

कै साखें गुन मुख केहे केहे, उमर खोई मैं सब ।
अजूं आतम खड़ी ना हुई, क्यों पुकारूँ मैं अब ॥ ६

अब दिन बाकी कछू ना रहे, सो भी देखाय दई तुम सरत ।
क्यों मुख उठाऊँ आगूं तुम, चरनों लागूं जिन बखत ॥ ७

ज्यों ज्यों तुम कृपा करी, मैं त्यों त्यों किए अवगुन ।
तिन पर फेर तुम गुन किए, मैं फेर फेर किए बिघन[२] ॥ ८

गुन धनीके गाते गाते, गई सारी आरवल[३] ।
अवगुन अपने भाखते, उमर खोई ना सकी चल ॥ ९

---

१. परिवार । २. बाधा । ३. आयु ।

अब हुकम होए धनी सो करूं, मेरा बल ना चले कछू इत ।
सुरखरू[1] तुम करोगे, पुकार कहें महामत ॥ १०

॥ प्रकरण ॥ १०० ॥ चौपाई ॥ १४६२ ॥

राग श्री

साथजी सुनो सिरदारो, मुझ जैसी ना कोई दुष्ट ।
धाम छोड़ झूठी जिमी लगी, चोर चंडाल चरमिष्ट[2] ॥ १

प्रेम खोया मैं वानी कर कर, हो गया जीव कोई भ्रष्ट[3] ।
साथके चरन धोए पीजिए, ताको दिए मैं कष्ट ॥ २

मुख वानी केहेलाई बड़ी कर, माहें ब्रह्म सृष्ट ।
पंथ पैंड़े संसार के ज्यों, होए चलाया इष्ट ॥ ३

ले पंडिताई पड़ी प्रवाह में, कर कर ग्यान गोष्ट[4] ।
न्यारा हुआ न नेहे काम होए के, मैं लिया न निरगुन पुष्ट ॥ ४

अनेक अवगुन किए मैं साथसों, सोए प्रकासूं सब ।
छोड़ अहंकार रहूँ चरनों तले, तोबा[5] खैंचत हों अब ॥ ५

एते दिन धनी धाम छोड़ के, दई साथ को सिखापन ।
अब साथें मोकों समझाई, तिन थें हुई चेतन ॥ ६

कृपा करी साथ सिरदारों, मुझ पर हुए मेहेरबान ।
निरगुन होए न्यारी रहूँ, छोड़ बड़ाई गुमान ॥ ७

दिन क्यामत के आए पोहोंचे, अब कैसी ठकुराई[6] ।
धिक धिक पड़ो तिन बुध को, जो अब चाहे बड़ाई ॥ ८

अब हुकम चढ़ाऊँ सिर साथ को, बखसो[7] मेरी भूल ।
भी दीजो सिखापन मुझको, ज्यों होऊँ सनकूल ॥ ९

इन जिमीमें साथ में, जिन करी सिरदारी ।
पुकार पुकार पछताए चले, जीत के बाजी हारी ॥ १०

---

१. उऋण । २. बाह्य दृष्टि । ३. पतित । ४. चर्चा । ५. भूल मानना । ६. सरदारी । ७. क्षमा करो ।

सो देखके ना हुई चेतन, मूढ़मती अभागी ।
अब लई सिखापन साथ की, महामत कहें पाँउ लागी ।। ११

।। प्रकरण ।। १०१ ।। चौपाई ।। १५०३ ।।

राग श्री

बुजरगी[1] मारे रे साथजी बुजरगी मारे ।
जिन बुजरगी लई दिल पर, तिनको कोई न उबारे ।। १
आगूं कै मारे बुजरगिएँ, जिन दृढ़ कर लई विस्वास ।
सो देखे मैं अपनी नजरों, निकस चले निरास ।। २
कँ मारे कैयों मारत हैं, ऐसी बुजरगी एह ।
न देत देखाई इन माया में, बिना बुजरगी जेह ।। ३
जेती बुजरगी बीच दुनी के, सो सब कुफर[2] हथियार ।
कुफरों में कुफर बुजरगी, काम क्रोध अहंकार ।। ४
इन माया में कोई बुजरगी, छूट खुदा जो लेवे ।
सो तेहेकीक[3] आपे अपना, पाया फल सोभी खोवे ।। ५
खोवे जोस बंदगी खोवे, और साहेब की दोस्ती ।
बिना इसक जो बुजरगी, सो सब आग जानो तेती ।। ६
दुनियां में दोऊ लड़त हैं, एक कुफर और ईमान[4] ।
जीती कुफरें त्रैलोकी, ईमान दिया सबों भान ।। ७
कुफर की हुई पातसाही, चौदे तबक चौफेर ।
सब दुनियां को बेमुख करके, बैठा बुजरगी ले अंधेर ।। ८
मोकों मार छुड़ाई बंदगी, सो भी बुजरगी इन ।
ऐसी दुसमन ए बुजरगी, मैं देखी न एते दिन ।। ९
पूरन मेहेर भई धनी की, दोऊ हादिएँ[5] करी चेतन ।
सो भी बुजरगी देखी दुसमन, जो भिस्त दई सबन ।। १०

---

१. प्रतिष्ठा । २. कृतघ्नता । ३. निश्चित । ४. विश्वास । ५. सतगुरु (पथ प्रदर्शक) ।

जो कोई मारे इन दुसमन को, करे दुनियां को आसान ।
पोहोंचावे सबों चरन धनी के, तो भी लेना न तिन गुमान ।। ११

महामत कहें ईमान इसक की, सुकर[1] गरीबी सबर[2] ।
इन बिध रूहें दोस्ती धनी की, प्यार कर सके त्यों कर ।। १२

।। प्रकरण ।। १०२ ।। चौपाई ।। १५१५ ।।

राग गौरी

जो तूं चाहे प्रतिष्ठा,[3] धराए बैरागी नाम ।
साध जाने तोकों दुनियाँ, वह तो साधों करी हराम ।। १

मार प्रतिष्ठा पैजारों[8], जो आए दगा[4] देत बीच ध्यान ।
एही सरूप दज्जाल को, उड़ाए दे इनें पेहेचान ।। २

इस दुनियां के बीच में, कोई भला बुरा केहेवत ।
तूँ जिन देखे तिन को, ले अपनी अरस खिलवत ।। ३

दिल दलगीरी[5] छोड़ दे, होत तेरा नुकसान ।
जानत है गोविंद—भेड़ा,[6] याको पीठ दिए आसान ।। ४

ए भोम देखे जिन फेर के, एही जान महामत ।
ढील होत तरफ धामकी, जहाँ तेरी है निसबत ।। ५

।। प्रकरण ।। १०३ ।। चौपाई ।। १५२० ।।

राग श्री

क्यामत आई रे साथजी, क्यामत आई ।
वेद कतेब पुकारत आगम, सो क्यों न देखो मेरे भाई ।। १

आए स्यामाजीएँ मोहे यों कह्या, ए खेल किया तुम कारन ।
तुम आए खेल देखने, मैं आई तुमें बुलावन ।। २

कागद आया वतन का, कासद[7] होए ल्याए फुरमान ।
आया खातर अपने, देने को ईमान ।। ३

---

१. कृतज्ञता । २. धैर्य । ३. सम्मान । ४. धोखा । ५. रंजिश । ६. इन्द्रजाल । ७. पत्र वाहक, दूत । ८. जूता ।

अग्यारे से साल का, आए साखें लिखी आगम ।
माहें अनभव लिख्या अपना, सो पोहोंचाया खसम ॥ ४

जो साहेब किने न देखिया, ना कछू सुनिया कान ।
सो साहेब काजी होए के, जाहेर करसी कुरान ॥ ५

जेते बचन कुरान में, सो सब स्यामाजी दई साख ।
सो सारे इन लीला के, कहूँ केते हजारों लाख ॥ ६

सो कुंजी स्यामाजी दई, हकीकत वतन ।
माएने खुले सब तिन से, जो छिपे हुते बातन ॥ ७

और भी फुरमान में लिख्या, कोई खोल ना सके किताब ।
सोई साहेब खोलसी, जिन पर धनी खिताब ॥ ८

बसीअत नामे आए दरगाह सें, जाहेर करी *क्यामत[1] ।
ए हकीकत तुम पर लिखी, देखाए दिन सरत ॥ ९

या *वेद या *कतेब, सब आए तुम खातर ।
सब साख तुमारी देवहीं, जो देखो नीके कर ॥ १०

साख देवे सब दुनियाँ, वैराट चौदे भवन ।
समझे सारे देवहीं, जिनका दिल हुआ रोसन ॥ ११

ए साखें सब पुकारहीं, निपट निकट क्यामत ।
आए गई सिर ऊपर, तुम क्यों ना अजूं चेतत ॥ १२

साथजी साफ हुए बिना, अखंड में क्यों पोहोंचत ।
चेत सको सो चेतियो, पुकार कहें महामत ॥ १३

॥ प्रकरण ॥ १०४ ॥ चौपाई ॥ १५३३ ॥

## राग श्री

मैं पूछत हों ब्रह्मसृष्टि को, तुम दिल की दीजो बताए ॥

जो कोई ब्रह्म सृष्टि का, सो देखियो दिल बिचार ।
कहियो तेहेकीक करके, जिनों जो किया करार ॥ १

---
१. कियामत ।

सब कोई बात विचारियो, देख अपनी अपनी अकल ।
*सृष्टि तीनों करम करत हैं, एक दूजे सों मिल ॥ २

सो तीनों अब जुदे होएसी, है हाल तुमारा क्यों कर ।
दिन एते जान्या त्यों किया, अब आए पोहोंची आखर ॥ ३

पूजे परमेस्वर करके, दिलमें राखें दोए ।
तिन कारन पूछत हों, कौन विध याकी होए ॥ ४

कहें परमेस्वर मुख थें, दिल चोरावें जे ।
दगा देवे माहें दुसमन, क्यों नहीं देखत हो ए ॥ ५

कहावत हैं ब्रह्म सृष्टि में, धनीसों छिपावें बात ।
दिल की करें औरनसों, ए कौन सृष्टि की जात ॥ ६

ए जो दोए दिल राखत हैं, ए तो दुनियां की रीत ।
माहें मैले बाहेर उजले, ए जीव सृष्टि की प्रीत ॥ ७

एकै बात ब्रह्म सृष्टि की, दोए दिल में नाहें ।
सोई करें धनीसों जाहेर, जैसी होए दिल माहें ॥ ८

मिनों मिनें गुझ करें, निस दिन एही चितवन ।
बुरा चाहें तिनका, जिन देखाया मूल वतन ॥ ९

पीठ चोरावें धनी की, करें मिनो मिने खोल ।
ए देखो अंदर की जाहेर, देखावें अपना मोल ॥ १०

करें धनीसों चोरियां, चोरोंसों तेहेदिल[१] ।
यों जनम खोवें फितुए[२] मिने, रात दिन हिल मिल ॥ ११

करें लड़ाइयां आपमें, कहें हम हैं धाम के ।
क्यों ना विचारो चितमें, कैसा जुलम है ए ॥ १२

चरचा सुनें वतन की, जित साथ स्यामाजी स्याम ।
सो फल चरचाको छोड़के, जाए लेवत हैं हराम[३] ॥ १३

१. दिल मिलाना । २. फिसाद । ३. अनुचित ।

बाहेर देखावें बंदगी, माहें करें कुकरम काम ।
महामत पूछे ब्रह्मसृष्टि को, ए बैकुंठ जासी के धाम ॥ १४

॥ प्रकरण ॥ १०५ ॥ चौपाई ॥ १५४७ ॥

## राग श्री

ए सुच कैसे होवही, तुम देखो याकी विध ।
अनेक आचार कर कर थके, पर हुआ न कोई सुध ॥ १

निस दिन ग्रहिए प्रेमसों, जुगल सरूप के चरन ।
निरमल होना याहीसों, और धाम बरनन ॥ २

इन विध नरक जो छोड़िए, और उपाए कोई नांहें ।
भजन बिना सब नरक है, पच पच मरिए माहें ॥ ३

धनी विना अंग निरमल चाहे, सो देखो चित ल्याए ।
क्यों निरमल अंग होवही, जो इन विध रच्यो बनाए ॥ ४

दोऊ मैले जब मिले, बांध गोली मांस रचाए ।
नरक उदर दस मास लों, पूरो कियो पचाए ॥ ५

जठरा अगिन तले करी, ऊपर ऊँधे मुख लटकाए ।
बोल न सके ठौर सँकड़ी, काढ्यो मुरदे ज्यों छुटकाए ॥ ६

हाड़ मांस लोहू रगां, ऊपर चाम मढ़ाए ।
नव द्वार रचे नरक के, निस दिन बहे बलाए ॥ ७

ऊपर बंध बालन के, जलस गुदा अंतर छाल ।
चले नदी मल मूत्र की, कहूँ केतो नरक को हाल ॥ ८

पंचामृत पाक बनायो, भोजन भयो रुचाए ।
अंग संग ले निकस्यो, कौन हाल भयो ताए ॥ ९

अंत आहार सूकर[1] कूकर[2] को, या कौआ कीड़ा खाए ।
या तो अगिन जलाए के, करके खाक उड़ाए ॥ १०

---

१. सूअर । २. कुत्ता ।

ए नरक निरमल क्यों होवही, जो ऊपर से अंग धोए ।
अंग धोए मन निरमल, कबहूँ न हुआ कोए ॥ ११

धिक धिक नीची चातुरी, विचार न अंतसकरन ।
त्रैलोकी इन अंग संग, गई खोए अखंड वतन ॥ १२

ए सुच क्योंए न होवही, जो सौ बेर अन्हाए ।
ए तो पिंड नरकै भरयो, देखो अन्तर नजर फिराए ॥ १३

विवेक विचार न पाइए, ऊपर टेढ़ी पाग लटकाए ।
आप देखे मांहें आरसी,[1] सिर आसमान लों ले जाए ॥ १४

नहीं भरोसो खिन को, बरस मास और दिन ।
ए तो दम पर बांधिया, तो भी भूल जात भजन ॥ १५

आतम धनी पेहेचानिए, निरमल एही उपाए ।
महामत कहें समझ धनी के, ग्रहिए सो प्रेमें पाए ॥ १६

॥ प्रकरण ॥ १०६ ॥ चौपाई ॥ १५६३॥

## राग श्री

झूठ सब्द ब्रह्मांड में, कहावत याही में सांच ।
ए दोऊ झूठे होत हैं, वास्ते पिंड जो कांच ॥ १

ए लगे दोऊ *सुंन को, *निराकार सामिल ।
*निरंजन या *निरगुन, सो भी रहे इन भिल ॥ २

एकै साइत[2] पैदा हुए, और फना होसी एक बेर ।
ए क्यों पावें अद्वैत को, जो ढूंढ़ें माहें अन्धेर ॥ ३

ए न्यारे को क्यों पावहीं, पैदास सारी इन ।
सत सबद ब्रह्मांड में आया, पर ए ना छोड़े कोई सुंन ॥ ४

जीव विस्नु महाविस्नु लों, याके कै विध नाम धरत ।
अग्यान ग्यान ले विग्यान[3], यों कै विध खेल खेलत ॥ ५

---

१. दर्पण । २ .घड़ी । ३. अद्वैत ज्ञान ।

एक अनेक सब इनमें, इत सांच झूठ विस्तार ।
अक्षर ब्रह्म क्यों पावहीं, भई आड़ी *निराकार ॥ ६

अक्षर अक्षरातीत कहावहीं, सो भी कहिअत इत सब्द ।
सब्दातीत क्यों पावही, ए जो दुनियां हद ॥ ७

*पाँच तत्व गुन तीनोही, ए गोलक चौदे भवन ।
*निरगुन *सुंन या *निरंजन, ज्यों पैदा त्योंही पतन ॥ ८

ए सुपना नींद सुरत का, खेले अक्षर आतम ।
हम भी आए देखने, खसम के हुकम ॥ ९

ब्रह्म सृष्टि के कारने, खेल जो रचिया ए ।
खेल देखाए सत वतन, महामत आए ले ॥ १०

॥ प्रकरण ॥ १०७ ॥ चौपाई ॥ १५७३ ॥

## राग श्री

फुरमान मेरे मेहेबूब का, ले आया अरस से रसूल ।
भेज्या अपनी अरवाहों पर, साहेब होए सनकूल ॥ १

सोई खोलें अपनी इसारतें, जो अरस की अरवाए ।
एही परीक्षा जाहेर, और काहूँ न खोल्या जाए ॥ २

बरकत[1] इन रूहन की, भिस्त देसी सबन ।
ले दे हिसाब फजर को, ले चलसी रूहें वतन ॥ ३

मुझे भेज्या कासिद कर, मैं ल्याया फुरमान ।
एही जानो तुम तेहेकीक, दिलसों आकीन आन ॥ ४

मैं देत हों खुसखबरी, जो रब्बानी[2] अरवाए ।
वे उतरे अरस अजीम से, जो हमेसगी इप्तदाए ॥ ५

रसूल कहे मैं आखरी, मेरे पीछे न आवे कोए ।
कह्या रूह अल्ला की आवसी, और मेहेदी इमाम सोए ॥ ६

---

१. देन । २. ब्रह्म की ।

रूह अल्ला दो जामे पेहेरसी, दूसरे ऊपर मुद्दार ।
सोई इमाम मेहेदी, याकी बुजरगी बेसुमार ॥ ७

मैं आया हों अवल, आखर आवेगा खुदाए ।
काजी होएके बैठसी, करसी सबों कजाए[1] ॥ ८

साल नव सै नब्बे मास नव, हुए *रसूल को जब ।
रूह अल्ला[2] मिसल गाजियों,[3] मोमन उतरे तब ॥ ९

गिरो *बनी असराईल, सो मिसल गाजियों जान ।
होए कबूल बंदगी उनसे, इन विध कहे फुरमान ॥ १०

एक निमाज की हजार, एही करसी कबूल ।
के कही महंमद आखर सिफत, सो भी इन बीच होसी रसूल ॥ ११

एही गिरो रब्बानी, रूहें बीच दरगाह ।
के हजारों सिफतें इन की, माहें बुजरग रूह अल्लाह ॥ १२

जाहेर महंमद पुकारहीं, फुरमान ल्याया मैं ।
के हजारों बातें करी, साहेब की सूरत से ॥ १३

के रद बदलें करी साहेबसों, अपनी उमत के वास्ते ।
या विध कलाम के लिखे, सो पढ़े न मानें ए ॥ १४

यों लिख्या है के विध, पर समझे ना बेसहूर[4] ।
दुनी पढ़ पढ़ अपनी अकलें, के करे मजकूर[5] ॥ १५

बिना आकीने पढ़हीं, अपनी अकलें करें बयान ।
सो सुनाए सुनाए दुनी को, के किए बेईमान ॥ १६

एक अचरज ए देख्या बड़ा, कहे *बेचून *बेचगून ।
कुरान देखें पढ़ें यों कहें, *बेसबी *बेनिमून ॥ १७

फुरमान जाहेर सूरत देखावही, सो माएने ना ले दिल अंध ।
पढ़ें अपनी अकलें, पाड़ी[6] दुनियां दोजख फंद ॥ १८

१. न्याय । २. श्री देवचन्द्रजी । ३. धर्म योद्धा (ब्रह्मसृष्टि) । ४. ना समझ । ५. चर्चा । ६. फंसाया ।

सिपारे सएकूल[1] में, यों लिख्या जाहेर कर ।
देखाऊँ माएने मुसाफ, चीन्हो दिलकी खोल नजर ॥ १९

ए जानें हरमके मेहेरम,[2] जिनों तेहेकीक करी सूरत ।
मुख ना फेरें सूरतसों, सोई बंदगी हकीकत ॥ २०

एक खूबी चाहें साहेब की, और न कछुए चाहें ।
उनकी एही बंदगी, जो सांचे आरफ[3] अरवाहें ॥ २१

जिनों अरथ लिया अंदर का, माएने पेहेचाने तिन ।
खासों की एही बंदगी, जाने दिल रूह वतन ॥ २२

आसक अरस अजीम को, चाहें मिलना हमेसगी ।
चाहें साहेब और उमत, उनकी एही बंदगी ॥ २३

एही रूहों की बंदगी, जो कही खास उमत ।
एही एहेल किताब[4] हैं, लिख्या दूसरे सिपारे जित ॥ २४

और देखो दुनीकी बंदगी, ए भी सयकूल में लिखे ।
सो भी देखाऊँ बेवरा, जो कर बैठे किबले ॥ २५

पातसाहों एही जानिया, मोती जवेर सिर ताज ।
इनका एही किबला,[5] चाहें ज्यादा अपना राज ॥ २६

सोना रूपा दुनीका, अर्थ चाहें भरे भंडार ।
इनका इही किबला, कै बिध करें विस्तार ॥ २७

जिनकी बदखसलतें,[6] अपना भला मन ल्याए ।
इनका एही किबला, औरों का भला न चाहें ॥ २८

जो जाहेर परस्त[7] हैं, चाहें मिट्टी पानी पत्थर ।
इनका एही किबला, जिनकी बाहेर पड़ी नजर ॥ २९

मिट्टी पत्थर बनाए के, कहें खुदाए का घर ।
मेहेराब को किबला किया, करें निमाज तिन पर ॥ ३०

१. कुरान का एक अध्याय । २. अंतरंग साथी । ३. ज्ञानी । ४. मालिक कतेब (ब्रह्मसृष्टि) ।
५. पूज्य । ६. दुर्गुन । ७. पूजने वाले ।

जो यार हैं अपने तनके, भला खावें सोवें पलंग ।
तिनका एही किबला, और न चाहें रंग ॥ ३१
आगू अपनी दानाई के, और न काहूँ देखत ।
इनका एही किबला, अपनी तरफ खैंचत ॥ ३२
जिन जैसा किबला सेइया,[1] आगूं आया तैसा तिन ।
दुनी कारन खोवे दीनको, तो आखर कही जलन ॥ ३३
इन विध फुरमान फुरमावहीं, जाहेर देत बताए ।
अंदर बैठा जो दुसमन, सो देत माएने उलटाए ॥ ३४
आरफ कहावें आपको, होए बुजरग माहें दीन ।
कहचा हादीका रद करें, यों खोवत हैं आकीन ॥ ३५
जब जाहेर माएने लीजिए, तब खड़े होत हैं घर ।
अंदर माएने सब उड़त हैं, सो पढ़े लेवें क्योंकर ॥ ३६
पढ़े सो भी पेट कारने, और पालने कबीले ।
दुनियां को देखावहीं, आगूं चल के ए ॥ ३७
जब लीजे अंदर के माएने, तब ना कछू साहेब बिन ।
साहेब बिना सब दोजख, चौदे तबक अगिन ॥ ३८
दीन इसलाम[2] से जात हैं, कारन सुख सुपन ।
बुजरग आगे होए के, राह मारें औरन ॥ ३९
कही गरीबी बुजरग, पढ़ कर सो ना लें ।
के बंध फंद कर मारहीं, लई मुल्लां गरीबी ए ॥ ४०
कोई सीधा सबद जो केहेवही, तो तोरा[3] देखावें ताए ।
जो गरीब सामें बोलही, तो तिनको सूली चढ़ाए ॥ ४१
कहें मुखथें हम मोमन, और हमहीं पढ़े सरे—दीन[4] ।
हमहीं एहेल किताब हैं, हमहीं में आकीन ॥ ४२

१. सेव्या । २. सत्य सनातन धर्म । ३. परहेजगारी के नियम । ४. धर्म के नियम ।

यों हम हम करते कै गए, अजूं योंहीं जाए रात दिन ।
यों करते आखर आए गई, बांधी तोबा लागी अगिन ॥ ४३
किया *टोना लड़की महंमद पर, दई गाँठ अग्यारे तिन ।
सो हर सदी गांठें खुली, तब *महंमद ले चले मोमन ॥ ४४
ए आएत देख्या चाहे, ताए देखाऊँ बेसक ।
इनमें जो सक ल्यावही, सो जलसी आग दोजख ॥ ४५
जब तमाम सदी अग्यारही, ए महंमद उमत आकीन ।
जबराईल मुसाफ ले आए, और बरकत दुनियां दीन ॥ ४६
ए तीनों उठाए दुनी से, जबराईल ले आया अपने मकान ।
खड़ा किया झंडा दीन का, ल्याए लाखों खलक ईमान ॥ ४७
*वसीअत नामे साहेदी,[१] आए लिखे बड़ी दरगाहे ।
सो मिलाए दिए कुरान से, महामत हुकम खुदाए ॥ ४८

॥ प्रकरण ॥ १०८ ॥ चौपाई ॥ १६२१ ॥

## राग श्री

मासूक, मेरी रूह चाहे सिफत करूँ, सो मैं जाए ना कही ।
जब देख्या बेवरा कर, तब तामें उरझ रही ॥ १
सब थें बड़ी मुझे करी, ऐसी और न दूजी कोए ।
जो मेहेर करी मुझ ऊपर, सो सिफत जुबां क्यों होए ॥ २
किन विध मैं तुमको कहूं, क्यों कर दिल धरूँ ।
ले आसांन[२] तुमारे रूह में, में गुजरान[३] क्यों करूँ ॥ ३
मैं चलते देखे मजहब, और सबके परमेस्वर ।
सो सारे बीच फना मिने, नूर बका न काहूं नजर ॥ ४
फना छोड़ इन परमेस्वरों, नूर बका न पाया किन ।
तिन पर नूर बिलंद, सो किया तुम मेरा वतन ॥ ५

१. ग्वाही । २. अहसान । ३. निर्वाह ।

खेल किया मेरे कारने, दुनियां चौदे तबक ।
मेरे हाथ तिनकी हैयाती, भिस्त पाई मुतलक ।। ६

खेल कर मोहे बैठाई माहें, मुझ पर भेज्या फुरमान ।
माहें लिखी हकीकत मारफत, मुझ बिना न काहूं पेहेचान ।। ७

कुंजी दई मुझ को, और मेरे सिर खिताब ।
सास्त्र चौदे तबक के, सब मैं ही खोलों किताब ।। ८

राह देखाऊँ सबन को, ऐसो बल दियो खसम ।
सबको फना से बचाए के, लगाए तुमारे कदम ।। ९

खेल बनाया मेरे वास्ते, मोहे भेज के आए आप ।
पट खोल इलम समझाइया, मोसों नीके कियो मिलाप ।। १०

बका न चौदे तबक में, न पाया त्रैलोकी त्रैगुन ।
सेहेरगसे[1] नजीक देखाइया, ऐसा इत इलमें किया रोसन ।। ११

ऐसा बेसक चौदे तबक में, कोई न हुआ कबूं कित ।
इन नुकते सब बेसक हुए, ऐसी बेसकी आई इत ।। १२

ए भी बड़ाई मुझको दई, जो सबों देख्या नूर पार ।
सबों सेहेरगसे नजीक, कुंजिएँ देखाया निरधार ।। १३

ए दिल की बातें कासों कहूं, रूह की जानो सब ।
बोलन की कछू ना रही, जो कहो सो करूँ मैं अब ।। १४

मोहे करी सबों ऊपर, ऐसी ना करी दूजी कोए ।
अजूं रूह मांग्या चाहे, ए तुम कैसी बनाई सोए ।। १५

बैठाई आप जैसी कर, खोल देखाई नजर ।
अजूं मांगत मेरे धनी, और ऐसे तुम कादर[2] ।। १६

जो तुम बड़े[3] करे खेल में, ताकी दुनी करे सिफत ।
सो बड़े गिरो[4] के पांउकी, खाक भी न पावत ।। १७

१. दिल के अति निकट । २. सामर्थ्य वाले । ३. देवता । ४. ब्रह्मसृष्टि ।

तिन गिरोमें सिरदारी, तैं मुझे दई मेरे खसम ।
ऐसी बड़ी करी मोहे खेल में, अब इत उरझ रह्या मेरा दम ॥ १८

दुनी सिफत पोहोंचे मलकूत[१] लों, सो फिरस्ते खाक भी पावत नाहें ।
तिन गिरो में बुजरग, मोहे ऐसी करी खेल माहें ॥ १९

मैं भटकी बीच दुनी के, घर घर माँगी भीख ।
लौकीक[२] दई मोहे साहेबी, अंतर में अपनी सरीख[३] ॥ २०

नर नारी बूढ़ा बालक, जिन इलम लिया मेरा बूझ ।
तिन साहेब कर पूजिया, अरस का एही गुझ ॥ २१

जब हकें मोहे इलम दिया, तब मोसों कही निसबत ।
सो निसबत बका हक की, ताकी होए ना इत सिफत ॥ २२

जिन बंदगी मेरी करी, लिया निसबत हींसा तिन ।
पाँउ खाक मांगी बुजरगों, ए सोई फकीर मोमन ॥ २३

ए बुध ना चौदे तबकमें, सो अपनी दई अकल ।
समझी सब मैं अरस की, जो सिफत तेरी असल ॥ २४

मैं बातून[४] तुमारी समझी, तुम अपना दिया इलम ।
अब इत केहेना कछू ना रह्या, होसी अरस में आगू खसम ॥ २५

ऐसी बड़ाई केती कहूँ, जो करी अलेखें अपार ।
सो नेक कही मैं गिरो समझने, समझेगी रूह सिरदार ॥ २६

महामत कहें मेहेबूब जी, मोहे खेल देखाया बुजरक ।
करो मीठी बातें मुझसों, मेरे मीठे खसम हक ॥ २७

॥ प्रकरण ॥ १०९ ॥ चौपाई ॥ १६४८ ॥

राग श्री

कारी कामरी[५] रे, मोकों प्यारी लागी तूँ ।
सब सिनगार को, सोभा देवे, मेरा दिल बाँध्या तुझसों ॥ १

---

१. बैंकुंठ । २. लोक दृष्टि । ३. समान । ४. गुझ भेद ५. कम्बल ।

तूं नाम निरगुन[1] कहावही, सब सरगुन के सिरे[2] ।
सब नंग मोती तेरे तले, कोई नाहीं तुझ परे ॥ २

कामरी पेहेरी ब्रजबधू, और सुंदरवर स्याम ।
भी पेहेरी महंमद ने, और पेहेरी इमाम ॥ ३

मोल नहीं इन कामरी को, याको ले न सके कोए ।
मोमन कहे सो लेवही, जो रूह अरस की होए ॥ ४

गोवरधन को ढांपिया, एक बूंद न हुआ दखल ।
आग लोहा पानी प्रले के, सोंस लिया सब जल ॥ ५

अहीर[3] किए धंन धंन, और आरब कुरेस[4] ।
मारू[5] भी धंन धंन हुई, सोई हमारा भेस ॥ ६

*रूहअल्ला पेहेरी अंदर, हुई नहीं जाहेर ।
दुनियां हिरदे आंधली, सो देखे नजर बाहेर ॥ ७

पट पेहेरे खाए चिकना, हेंम जवेर सिनगार ।
हक लज्जत आई मोमनो, तिन दुनी करी मुरदार ॥ ८

सोहाग दिया साहेब ने, कामरी सुहागिन ।
आगूं बोले बुजरग, सराही साधू जन ॥ ९

हमारे ताले[6] मिने, लिखे अल्ला कलाम ।
महामत कहें सब दुनी को, प्यारी होसी तमाम ॥ १०

॥ प्रकरण ॥ ११० ॥ चौपाई ॥ १६५८ ॥

राग श्री

फरेबी[7] लिए जाए, मेरी रूह तूँ आँखाँ खोल ।
बीच बका के बैठके, तैं किनसों किया कौल ॥ १

अरस की खिलवतमें, हककी वाहेदत्त ।
बैठ बातें जो करी, सो कहाँ गई मारफत ॥ २

---

१. त्रिगुन रहित । २. त्रगुनातीत । ३. एक जाति । ४. एक जाति । ५. मारवाड़ । ६. भाग्य । ७. कपट ।

हकें कह्या रूहन को, जिन तुम जाओ भूल ।
इसक ईमान ल्याइयो, मैं भेजोंगा रसूल ॥ ३

उतरते अरवाहों सों, कह्या *अलस्तो बे रब्ब कुंम ।
मैं लिखूंगा रमूजें, सो जिन भूलो तुम ॥ ४

साहेद किए हैं सब को, जेती अरस अरवाए ।
आप भी हुए हैं साहेद, अपनी आप जुबांए ॥ ५

मैं भेजी रूह अपनी, सब दिल की बातें ले ।
तुमें अजू याद न आवही, कैसी फरेबी ए ॥ ६

सब बातें मेरे दिल की, और सब रूहों के दिल ।
सो सब भेजी तुम को, जो करियां आपन मिल ॥ ७

फुरमान ल्याए महंमद, किन खोली न इसारत ।
तब रूहें आईं न थीं, पीछे फेर करी सरत ॥ ८

कहें महंमद मसी आवसी, ले कुंजी लाहूत से ।
एक दीन सब करसी, सब कायम होसी कुंजिएँ ॥ ९

बका ऊपर बंदगी, करावसी इमाम ।
हक गिरो हम आए के, करें कजा तमाम ॥ १०

आगूं आए जाहेर किया, आवने को ईमान ।
खासो गिरो के वास्ते, कै कहे निसान ॥ ११

ए बातें सब अरस की, जब याद आवे तुम ।
तब इसक तुमें आवसी, उड़जासी *तिलसम[१] ॥ १२

कौन है तेरा मासूक, किनसों है निसबत ।
देख अपना वतन, अब तूं आई कित ॥ १३

हकें रूहों को दई, अपनी जो न्यामत[२] ।
इन नासूतें[३] भुलाए दई, हक की हकीकत[४] ॥ १४

---

१. इन्द्र जाल । २. अमूल्य भेंट । ३. मृत्युलोक । ४. वास्तविकता, सत्यता ।

मूल मिलावा खिलवत का, अजूं न आवे याद ।
ए झूठी जिमी दोजख, इत कहा लग्यो तोंहे स्वाद ॥ १५

मासूकें इत आए के, कैसा दिया इलम ।
सक तोहे कोई ना रही, अजूं याद न आवे खसम ॥ १६

महामत कहें ऐ मोमनो, ऐसी क्यों चाहिए रूहन ।
ए मेहेर देखो मेहेबूब की, अरस जिनो वतन ॥ १७

॥ प्रकरण ॥ १११ ॥ चौपाई ॥ १६७५ ॥

राग सिंधूड़ो

सरूप सुंदर सनकूल[1] सकोमल, रूह देख नैना खोल नूर जमाल ।
फेर फेर मेहेबूब आवत हिरदे, किया किनने तेरा कौल फैल ए हाल ॥ १

जामा जड़ाव जुड़्या अंग जुगतें, चार हारों करी अंबर झलकार ।
जगमगे पाग ए जोत जवेर ज्यों, मीठे मुखनैनों पर जाऊं बलिहार ॥ २

लाल अधुर हंसत मुख हरवटी,[2] नासिका तिलक निलवट[3] भौंहें केस ।
श्रवन भूषन मुख दंत मीठी रसना, ए देख दरसनं आवे जोस आवेस ॥ ३

बांहें चूड़ी बाजू बंध सोंहें फुमक, पोहोंची कांड़ों[4] कडीहस्त कमल मुंदरी ।
नखका नूर चीर चढ़्या आसमान में, ज्यों हकचलवन[5] करें सब अंगुरी ॥ ४

रोसनी पटुकें करी अवकासमें, चरन भूषन जामें इजार[6] झाईं ।
कहें महामत मोमन रूह दिलको, मासूक खेंचें तोहे अरस माहीं ॥ ५

॥ प्रकरण ॥ ११२ ॥ चौपाई ॥ १६८० ॥

चतुर चौकस चेतन अति चोपसों,[7] कूवत[8] कर सब अंग कमर कसे ।
सुंदर सेज्या सनकूल तनरूहरची, मासूक दिल मोमन मोंहोल[9] माहें बसे ॥ १

मन तन जोवन[10] चढ़ता नौतन, आया अमरद[11] आसक इसक गंज[12] ले ।
अधुर अमृत मुख दंत रसना रस, नित नए सुंदर सब देखे चढ़ते ॥ २

निलवट बंके नैन नासिका श्रवन, कौल फैल हाल नित नवले[13] देखाए ।
रूह भी रंग रस चंचल चपल गत, मोहन मोही मोहनी मह हो जाए ॥ ३

---

१. प्रसन्न । २. ठुडडी । ३. मस्तक । ४. कलाई । ५. हिलाना । ६. सुथनी । ७. चाह । ८. सामर्थ्य । ९. महल (दिल) । १०. यौवन । ११. किशोर । १२. खजाना । १३. नए ।

भाखती[१] महामती अरस रूहेंउमती, पूरन करप्रीत प्रेमें पोहोंचाए ।
अरस वाहेदत्त खिलवत खसमकी, हुज्जत[२] निसबत लिएँ इत आए ॥ ४

॥ प्रकरण ॥ ११३ ॥ चौपाई ॥ १६८४ ॥

नूरको रूप सरूप अनूप है, नूर नैना निलवट नासिका नूर ।
नूर श्रवन गाल लाल नूर झलकत, नूर मुख हरवटी नूर अधूर ॥ १
नूर मुख चौक मांडनी अलि नूर में, नूर बस्तर नूर भूषन जहूर ।
नूर जोवन रोसन नूर नौतन, नूर सब अंग उदद्योत[३] नूर पूर ॥ २
नूर चरन कमल नूर हस्तक, नूर सोभा सबे नूर सिनगार ।
नूर सिर पाग नूर कलंगी दुग दुगी,[४] नूर हिए हार नूर गंज अंबार ॥ ३
नूर हक सहूर मजकूर नूर महामत, नूर ऊग्या बका नूर का सूर ।
सब नूर रूहें नूर हादी नूर में, नूर नूर में खैंच लई हकें हजूर ॥ ४

॥ प्रकरण ॥ ११४ ॥ चौपाई ॥ १६८८ ॥

हुब[५] मेहेबूब की आसक प्यास ले, चाहे साफ सराब सुराही सका[६] ।
पीवते पीवते पीउके प्यालेसों, हुई हाल में लाल पी मस्त बका[७] ॥ १
दिल परस सरस भयो अरस इलाही, दोऊ चुभ रहे दिलसों दिल मिल ।
न्यारी न होए प्यारी आप मारी, चलविचल नाहोए वाहेदत्त[८] असल ॥ २
लगी सोलगी आमत अंदर लगी, यों अंतर आतम जगी जुदी न होए ।
सरभर[९] भई पर आतम यों कर, यों तेहे दिली मिली छोड़ सके न कोए ॥ ३
महामत दम कदम न छूटे इन खसम के, हुआ मोहोल मासूक का मेरे दिल माहीं
एक अवल बीच आए सो एक हुई, आखर एकका एक मोहोलबीचऔर नाहीं ४

प्रकरण ॥ ११५ ॥ चौपाई ॥ १६९२ ॥

नूर नगन चेतन भूषन रचे, अंग संग देखे सब चढ़ते रोसन ।
यों खैंच खड़ी करी इलमखसमके, लई जोस फरामोस[१०] से होस वतन ॥ १
सब अंग आसक के इसक सोंरस बसे, बढ़त बढ़त बीच आए बका ।
यों आई उमत इसक भरी अरस में, पीवे साफ सुराही सांई हाथ सका ॥ २

---

१. कहती । २. दलील । ३. प्रकाश । ४. रत्न जड़ित फूल । ५. मुहबत । ६. पिलाने वाला । ७. अखंड । ८. अद्वैत भाव । ९. बराबर । १०. बेसुधि ।

हकें अब लिए फेर[1] अंधेर से इन बेर, रूह मोमन पोहोंचियां अरस माहें तन ।
व्रज रास जागनी तीनों सुख देअके, मोमन तन किए धंन धंन ॥ ३
भनत[2] महामती हक दिल मारफत[3] की, पोहोंचाई इन न्यामतें उमत खिलवत ।
क्यों कहूँ सिफत बरकत वाहेदत्त की, लज्जत आई इमामत क्यामत ॥ ४

॥ प्रकरण ॥ ११६ ॥ चौपाई ॥ १६९६ ॥

मिली मासूक के मोहोल में माननी, आसक अंग न माहें अंग ।
जानू जामनी[4] बीच जुदी हुती हक जातसों, पेहेचान हुई प्रात हुए पीउ संग ॥ १
मन सुकन तन भए सब एकै, एकै जात सिफात सब बात ।
एकै अंग संग रंग सब एकै, सब एक मता[5] अरस बका बिसात ॥ २
नाहीं जुदा कांहीं जांहीं अरस मांहीं, मिले रूह भेले दिल एक हुए ।
तोकलूब[6] किबला[7] भयामकबूल[8] अल्लाह कह्या, अवलआखर मिलेएक हुएनजुए[9]
हक अरस परस सरस सब एक रस, वाहेदत्त खिलवत[10] निसबत न्यामत ।
महामत अलमस्त होए आवें उमत लिए, पीवत आवत हकहाथ सरबत ॥ ४

॥ प्रकरण ॥ ११७ ॥ चौपाई ॥ १७०० ॥

राग श्री

मोमन लिखे मोमन को, कहो तो आवें इत ।
ए अचरज देखो मोमनों, कैसा समया हुआ सखत ॥ १
दम दिल तन एकै, बिछुरके भूली वतन ।
जानू के सोहोबत कबूं ना हुती, तो यों कहावें सुकन ॥ २
मोमन रखे मोमनसों, जो तन मन अपना माल ।
सो अरवा नहीं अरस की, ना तिन सिर नूर जमाल ॥ ३
मता मोमन का काफर, ले ना सके क्योंए कर ।
दिल मोमन अरस कह्या, दिल काफर अबलीस[11] घर ॥ ४
जब मेला होसी मोमनों, तब देखसी सब कोए ।
और ना कोई कर सके, जो मोमनों से होए ॥ ५

---

१. फिरसे । २. कहें । ३. पूर्ण पहचान । ४. राते । ५. पूंजी । ६. दिल । ७. खुदा का घर । ८. स्वीकृत । ९. अलग । १०. एकान्त । ११. शैतान ।

जब लग भूली वतन, तब लग नाहीं दोस ।
जब जागी हक इलमें, तब भूली सिर अफसोस ।। ६

हकें जगाए मोमन, अपनी जान निसबत ।
अरस किया दिल मोमन, बैठाए बीच खिलवत ।। ७

जाकी तरफ न पाई किनहूँ, इन माहें चौदे तबक ।
ताको ले बैठे दिल में, किया ऐसा अपने हक ।। ८

और दुनी के दिल पर, किया अबलीस पातसाह ।
सो गुम हुए बीच रात के, क्योंए न पावें राह ।। ९

ऐसा हकें जाहेर किया, ऊपर रूहों मेहेर मुतलक[१] ।
कै विध बताई रसूलें, पर क्या करे हवाई खलक ।। १०

मोमन सुकन सुन जागसी, जाको अरस वतन ।
जब नूर झंडा खड़ा हुआ, पीछे रहें ना रूह अरस तन ।। ११

एह किताबत पढ़ के, रूहें रहे ना सकें एक खिन ।
झूठीसों लग ना रहे, जो रूह होए मोमन ।। १२

सखत बखत ऐसा हुआ, ईमान छोड़्या सबन ।
तब अरवाहें करें कुरबानियाँ, मह[२] होवें मोमन ।। १३

जीव देते ना सकुचें, मोमन राह हक पर ।
दुनियां जीव ना दे सके, अरस रूहों बिगर ।। १४

अरस तन रूह मोमन, लोभ न झूठा ताए ।
मोमन जुदागी ना सहें, ज्यों दूध मिसरी मिल जाए ।। १५

लिखी फकीरी ताले मिने, अपने हादी के ।
कदम पर कदम धरें, मोमन कहिए ए ।। १६

एक हक बिना कछू ना रखें, दुनी करी मुरदार[३] ।
अरस किया दिल मोमन, पोहोंचे नूर के पार ।। १७

---

१. नितान्त । २. तल्लीन । ३. अपवित्र (मुर्दा) ।

महामत कहें ऐ मोमनों, ए है अपनी बिगत[1] ।
झूठ वास्ते जुदे ना पड़ें, मोमन अरस वाहेदत्त ॥ १८

इन महंमद के दीन में, जो ल्यावेगा ईमान ।
छत्रसाल तिन ऊपर, तन मन धन कुरबान ॥ १९

॥ प्रकरण ॥ ११८ ॥ चौपाई ॥ १७१९ ॥

## राग परज

वारी रे वारी मेरे प्यारे, वारी रे वारी ।
टूक टूक कर डारों या तन, ऊपर कुंज बिहारी ॥ १

सुंदर सरूप स्याम स्यामाजी को, फेर फेर जाऊँ बलिहारी ।
इन दोऊ सरूपों दया करी, मुझ पर नजर तुमारी ॥ २

इन जेहेर जिमीसे कोई ना निकस्या, अमल चढ़यो अति भारी ।
मुझ देखते सैयल मेरी, कैयों जीत के बाजी हारी ॥ ३

कारी कुमत कूब[2] कुचल,[3] ऐसी कठिन कठोर हूँ नारी ।
आतम मेरी निरमल करके, सेहेजें पार उतारी ॥ ४

सुंदर सरूप सुभग[4] अति उत्तम, मुझ पर कृपा तुमारी ।
कोट बेर ललिता कुरबानी, मेरे धनी कायम सुखकारी ॥ ५

प्रकरण ॥ ११९ ॥ चौपाई ॥ १७२४ ॥

## राग मारू

### साथजी ऐसी मैं तुमारी गुन्हेगार

कर कर बानी सुनाई तुम को, किए खलक[5] खुआर ।
अनेक पख देखाए तुमको, छोड़ाए के परिवार ॥ १

कुटम कबीले माहें अपने, बैठे हते करार ।
साख दे दे भाने सोई, दिए दुख अपार ॥ २

अनेक अवगुन किए मैं तुमसों, जिनको नाहीं सुमार ।
घर घर के किए हैं तुमको, छुड़ाए फिराए राज द्वार ॥ ३

---

१. बीती । २. कूबड़ी । ३. खोटी चाल । ४. भाग्यवान । ५. जनता ।

जुदे पहाड़ों रुलाए रलभलाए,[१] दे दे सब्दों का मार ।
कर उपराजन[२] खाते अपनी, होए घरमें सिरदार ।। ४

सुख सीतलसों अपने घरमें, कै भांतों करते प्यार ।
सो सारे कर दिए दुसमन, जासों निस दिन करते विहार ।। ५

बाल गोपाल माहें खूबी खुसाली,[३] करते मिल नर नार ।
सो जेहेर समान कर दिए तुमको, छुड़ाए मीठो रोजगार ।। ६

विध विध जीत करत माया में, सोए देवाई सब डार ।
कै दृष्टांत दे दे काढ़े, कर ना सके विचार ।। ७

मीठी माया वल्लभ जीवकी, सो छुड़ायो कुटम परिवार ।
बड़े घराने सब कोई जाने, उठावते तिनका भार ।। ८

ऐसे सुख कहूँ मैं केते, घर बड़े बड़ो विस्तार ।
सो सारे अगिन होए लागे, जब मैं कहे सबद दो चार ।। ९

ले बड़ाई बैठे थे अपनी, सो छुड़ाए दिए हथियार ।
ठीक काहूँ ना लगने देऊं, जाको कछुक अंकूर सुध सार ।। १०

यों कै छल मूल कहूँ मैं केते, मेरो टोनेही[४] को आकार ।
ए माया अमल उतारे महामत, ताको रंचक ना रहे खुमार ।। ११

।। प्रकरण ।। १२० ।। चौपाई ।। १७३५ ।।

सिफत[५] तो सारी सबद[६] में, चौदे तबक के माहें ।
कलामअल्ला[७] न्यारा सबन से, सो क्यों कहूँ सिफत जुबांए ।। १

तामें सिफत सोफी[८] महंमद की, याकी गरीब गिरोकी सिफत ।
सो करसी काएम त्रैलोक को, एही खावंद आखरत ।। २

सो बचन लिखे हैं इसारतों, पाइए खुलें हकीकत ।
उपले माएने न पाइए, जो अनेक दौड़ाओ मत ।। ३

गोस कुतब पैगंमर, औलिए अंबिए कै नाम ।
ताए कै बिध दै बुजरगियां, साहेब के समान ।। ४

---

१. भटकाया । २. उपार्जन । ३. खुशहाली । ४. जादू । ५. प्रशंसा । ६. ज्ञान वचन ।
७. ब्रह्म वाक्य । ८. परमात्मा के मित्र, (सूफी)

सो सिफत सब महंमद की, सो महंमद कह्या जो स्याम ।
अवल आखर दोऊ दीन में, एही बुजरग महंमद नाम ॥ ५

याही विध गिरोह के, नाम लिखे अनेक ।
जुदे जुदे नामों पर सिफत, पर गिरो[१] एकको एक ॥ ६

तिन की भी है तफसीर,[२] सुनियो गिरोह मोमन ।
मारफत दरवाजा खोलिया, दिल दीजो नजर वतन ॥ ७

गिरो एक बुजरग कही, रूह अल्ला आए तिन पर ।
इत जादे[३] पैगंमर दो भए, एक *नसली[४] एक *नजर[५] ॥ ८

तिनसे राह जुदो हुई, गिरो दोए हुई भगर ।
एक उरभे दीन जहूद[६] के, उतरीं किताबें दूजे पर ॥ ९

सो भाई न माने किताबको, रोसनाई. ढांपे फेर फेर ।
तब आया दूजे पर *महंमद, सब किताबें ले कर ॥ १०

एही फिरका *नाजी कह्या, दै साहेदी फुरमान ।
एक नाजी *नारी बहत्तर, एही *नाजी की पेहेचान ॥ ११

एही गिरो खासी कही, जिनमें महंमद पैगंमर ।
हकीकत मारफत खोलके, जाहेर करी आखर ॥ १२

जब खुली हकीकत मारफत, तब मजहब[७] हुए सब एक ।
तब सबके दिल धोखा मिटचा, हुए रोसन पाएं विवेक ॥ १३

एती बातें कुरान में, विध विध करी रोसन ।
कै नाम धर दई बुजरगियाँ, सो बल महंमद और मोमन ॥ १४

कहें महामत मुसाफ उमत की, सिफत न आवे जुबान ।
तीनो अरस अजीम के, ईसे[८] किए बयान ॥ १५

॥ प्रकरण ॥ १२१ ॥ चौपाई ॥ १७५० ॥

ब्रह्म सृष्टि बीच धाम के, ए देखें खेल सुपन ।
मोहे स्यामाजीएँ यों कह्या, जो आए धाम से आपन ॥ १

१. समुदाय । २. व्योरा । ३. पुत्र । ४. वंशज । ५. मुंह बोला । ६. यहूदी (हिन्दु) । ७. सम्प्रदाय । ८. ईसा रूहअल्ला (श्री देवचन्द्र) ।

थे हम दोऊ बंदे स्यामाजीअ के, एक *नसली और *नजरी ।
झगड़ दोऊ जुदे हुए, देने खबर पैगंमरी ॥ २

तब केतीक गिरो उधर भई, और केतीक मेरे साथ ।
दई जाहेर मसनंद नसलीएँ, दूजो बातून[1] मेरे हाथ ॥ ३

उतरी किताबें हमपें, गिरो नसली न माने सोए ।
तब आया पैगंमर हममें, अब कह्या महंमद का होए ॥ ४

सो हकीकत सब कुरान में, कै ठौरों लिखी साख ।
जो ग्वाही लिखी आप साहेबें, कहूँ केती हजारों लाख ॥ ५

हम दोऊ बंदे रूह अल्ला के, दोऊ गिरो जुदी भई ।
तीसरी सृष्टि जो जाहेरी, सब मजकूर[2] इनकी कही ॥ ६

ठौर ठौर दई बड़ाइयां, मिने सब हमारी बात ।
केती कहूँ मेहेरबानगी, मेरे धनी करी साख्यात[3] ॥ ७

महामत कहें कोई दिल दे, ए देखेगा मजकूर ।
तिन रूह पर इमाम का, बरसे वतनी नूर ॥ ८

॥ प्रकरण ॥ १२२ ॥ चौपाई ॥ १७५८ ॥

## चरचरी छंद

स्यामाजी स्यामके संग, जुवती अति जोर जंग ।
करती पूरन रंग, पर आतम परे ॥ १

अंग अंग उछरंग, सखी सखी मन उमंग ।
अलबेली[4] अति अभंग, भामनी रस भरे ॥ २

छूटके छेल कंठ मेल, हांस खेल रंग रेल ।
बंध बेल ठमके ठेल, कामनी केल करे ॥ ३

कंठ हार सजे सिनगार, नैन समार सोभे मुखार ।
संग आधार करे विहार, महामती काज सरे ॥ ४

॥ प्रकरण ॥ १२३ ॥ चौपाई ॥ १७६२ ॥

---

१. गुह्य । २. चर्चा । ३. साक्षात । ४. मस्त ।

## राग कालेरो

हमचड़ी[1] सखी संग रे, रूडा[2] राजसूं राखो रंग, सखी रे हमचड़ी ॥

सतगुरु मारो श्री वालोजी, तेह तणें पाए लागूं ।
मूल सगाई जांणी मारा वाला, अखंड सुखड़ा मांगूं ॥ १

सुकजी ना वचन सुणावी कानें, ततख्यण कीधो अजवास[3] ।
आटला[4] दिवस कोणें नव जाण्यूं, हवे प्रगट थयो प्रकास ॥ २

आंकडियो माहें छे विस्मी,[5] झीणी[6] गूंथण जाली ।
जेनों कागल जे पर हुतो, तेणें घूंटी[7] सरवे टाली ॥ ३

हवे जेणें ए निध प्रगट कीधी, भलो ते बुध प्रकासी ।
दीसंतो आकारज दीसे, पण वेहद पुरनों वासी ॥ ४

तारतम लेई श्रीराज पधारया, थयूं ते सरवने जाण ।
सखियो कहे अमें आवीने मलसूं, मलिया ते मूल एधाण[8] ॥ ५

सखियो सरवे आवी जुजवी, एक बीजीने खोले[9] ।
आ लीला केम छानी रेहेसे, सखियो मली सहू टोले ॥ ६

रास रच्यो रमसूं रूडी भांतें, प्रगटिया परमाण ।
ए सुख सोभा आंणी[10] जिभ्याएं, केम करी करूं वखाण ॥ ७

पेहेली वृन्दावन मां रामत, वली ते आंहीं उतपंन ।
आ लीलाओने प्रगट करसे, *सुकजी तणें वचंन ॥ ८

व्रज रास आंहीं तेहज लीला, ते वालो ते दिन ।
तेह घडी ने तेहज पल, वैराट थासे धंन धंन ॥ ९

अमें मांगी रामत राज कने, तेतां पेहेली दान[11] देखाडी ।
काईंक मनोरथ रह्यो मन माहें, ते रंग भर आहीं रमाडी ॥ १०

श्री *श्रीजीने चरण पसाए,[12] जसियो[13] हमची गाए ।
थोडा दिनमा चौदे लोकें, आ निध परगट थाए ॥ ११

॥ प्रकरण ॥ १२४ ॥ चौपाई ॥ १७७३ ॥

---

१. एक खेल । २. भला । ३. प्रकाश । ४. इतने । ५. कठिन । ६ बारीक । ७. घुंडी । ८. लक्षरा । ९. ढूंडे । १०. इस । । ११. बार । १२. प्रताप । १३. नाम ।

राग मारू

वृथा कां निगमो[१] रे, पामी पदारथ चार ।
उत्तम मानखो[२] खंड भरथनों,[३] श्रेष्ठ कुली सिरदार ॥ १

सेठें तमने सारो सनंधे, सोंप्यू छे धन सार ।
अनेक जवेर[४] जतन करी, तमे लाव्या छो आणी वार ॥ २

सत बोहोरीने[५] सत ग्रहेजो, राखजो रूडी प्रकार ।
आणी भोमें रखे[६] भूलतां, पछे सेठ तणो बेहेवार ॥ ३

अनेक बार तरफडी मरीने, दुख देखी आव्या छो पार ।
लाख चोरासी भमीने[७] आव्या, आहीं मध[८] देस वेपार ॥ ४

हाट पीठ रलियामणां,[९] चोटा चोरासी[१०] बजार ।
मन चितवी[११] वस्त आहीं मले, पण खरा जोइए खरीददार ॥ ५

एणी बजारें कूड कपट, छल छे भेद अपार ।
चौद भवन नी खरीद आहीं, माहें कोई कोई छे साहूकार ॥ ६

चौद लोक कमायू खाए आहींनूं, नथी बीजो कोए ठाम ।
अधखिण वारो[१२] आहीं पामिए, ए धन मूल अमान[१३] ॥ ७

खरी वस्त आहीं गोप छे, जो जो चोटा पीठ हाट ।
बोहोरजो पारखूं करी, आवी कुली[१४] बेठो छे पाट ॥ ८

आ भोम अंधेरी माहें आमला,[१५] आंकडियों कोहेडा अनंत ।
वस्त खरी माहें अखंड छे, तमें जोजो जवेरी बुधवंत ॥ ९

आ भोम विस्मी सत माटे, वस्त आडी छे पाल ।
अनेक रखोपा[१६] करी वस्तना, वीटया छे जमजाल ॥ १०

खरो खोजी हसे जाण जवेरी, ते जोसे द्रढ मन धीर ।
वस्त अखंड ने तेहज लेसे, जे होसे वचिख्यण वीर ॥ ११

---

१. गंवाओ । २. मनुष्य । ३. भारतवर्ष । ४. जवाहिर । ५. खरीदना । ६. मत । ७. घूमकर । ८. मृत्यु लोक । ९. सुहाना । १०. चौरासी लाख योनि । ११. चाही । १२. अवसर । १३. अमानत । १४. कलियुग । १५. अड़चन । १६. रक्षा ।

ए धन वोहोरसे ते गोप रेहेसे, तेने करसे सहू जन हांस ।
वस्त लेई ज्यारे थासे वेगलो,[1] त्यारे सहू कोई केहेसे स्याबास ॥ १२

वेद वैराट बंने कोहेडा, फरे छे अवला[2] फेर ।
प्रगट कहे मुख पाधरूं,[3] पण तोहे न जाए अंधेर ॥ १३

साध कोहेडो एने तोहज कहे छे, जो सवले अवलूं भासे ।
सत वस्त कोई देखे नहीं, असत ने सहू प्रकासे ॥ १४

कोई सत वोहोरे कोई असत वोहोरे, कोई बंधाए बंध ।
वेपार एणी पेरे करे बेहेवारिया, ए चोटो[4] एणी सनंध ॥ १५

एणे अंधेर कोहेडे अनेक बांध्या, वस्त खरी नव जुए ।
बंध बंधावी बजार माहें, पछे वारो वछूटे घणूं रुए ॥ १६

कोईक करे हजारगणां, केहेने ते मूलगां[5] जाए ।
कोई बंधाई पड़े फंद माहें, कोई कोठी धजा केहेवाए ॥ १७

कोईक वोहोरे सत वस्तने, रास जवेर खरचाए ।
अखंड धन तेने अनंत आव्यूं, ते चौद भवन धणी[6] थाए ॥ १८

बीजो फेरो ए स्याने[7] करे, थयो ते सेठ सरीख ।
टली वानोतर[8] धणी थयो, ते अखंड सुख लेसे अंत्रीख ॥ १९

कोंण फेरो करे वली, अखंड धन आवे अपार ।
साहूकारी तमे करोने नेहेचल, तो निध पामो निरधार ॥ २०

खोटा साटे साचूं जड़े[9] छे, एवी मली छे बजार ।
लाभ अलेखे आ फेरा तणो, जो राखी सको वेहेवार ॥ २१

आ फेरो छे एणी सनंधनों, जो कोई रुदे विचारो ।
साध साहूकारो कहूं छूं पुकारी, तमें जीती अखंड कां हारो ॥ २२

आ भोमनी गत सुणो रे साधो, प्रगट कहूं छूं प्रकासी ।
आंखें देखी आप बंधाए, पछे खाए सहू जम फांसी ॥ २३

---

१. अलग । २. उलटा । ३. स्पष्ट । ४. बाजार । ५. मूल ही । ६. मालिक । ७. क्यों । ८. व्यापारी (बनिया) । ९. मिले ।

बणजे[1] ते आवे सहू एकला, आणी भोमे आवी करे संग ।
रास खरीद सरवे वीसरी, पछे लागी रहे तेसूं रंग ॥ २४

एणे स्वांगे संसार बांध्यो, कोई कपट कारण रूप ।
बीजा तो आमला[2] अनेक छे, पण आंकडी आ अदभूत ॥ २५

आप तणी सुध वीसरी, कोई ओलखाए नहीं पर ।
तेमां सगा संमंधी थईने बेठा, कहे आ अमारूं घर ॥ २६

आपोपूं त्यहां बांधीने आपे, सरवा अंगे द्रढ मन ।
रात दिवस सेवा करे, एम बंधाणां सहू जन ॥ २७

चीठी आवे चाले ततखिण, जाए ते करता रुदन ।
झाझी[3] सेवा जेहनी करता, ते दिए छे हाथ अगिन ॥ २८

माहें तो कोए नव ओलखे, ओलखाणने खोरी बाले ।
ए सगाई आ भोम तणी, ते सनमंध एणी पेरे पाले ॥ २९

आणी भोमे तमने भूलव्या, सुध गई सरीर ।
पड्या ते फंद अंधेर माहें, तेणे चितडू न आवे धीर ॥ ३०

साथी हता जे माहेला, तेणे डीठो आप अचेत ।
जेनी जे जतन करतां, तेणे बांध्या बंध विसेष ॥ ३१

घर मंदिर सहू वीसर्या, वीसर्या सेठ समरथ ।
माल लुसानूं[4] जाए रे मूरखो, तमें कां निगमो ए ग्रथ[5] ॥ ३२

धन पोतानूं नव साचवो, लूसे छे चोर चंडाल ।
अधखिण माटे आप बंधावो, हवणां वही जासे ततकाल ॥ ३३

बांध्यो संसार एणी पेरे, लागे नहीं कोई लाग ।
जाए बंधाणां सहू जमपुरी, केहेने नथी टलवानों माग[6] ॥ ३४

लेखूं देसे जम दूत ने, जे कीधूं छे आंहीं वेपार ।
साचूं झूठूं तरत जोसे, ए धरमराज वेहेवार ॥ ३५

---

१. व्यापार । २. ऐंठन । ३. बहुत । ४. लुटा । ५. धन । ६. मार्ग ।

वेपार करतां जे बंध बांध्या, ते लेखूं लेसे सहू तंत ।
एकना सहस्त्रगणां करतां, मारया अनेक जीव जंत ।। ३६
लांचे[1] तो तिहां नव छूटिए, सगा न ओलखाण[2] कोए ।
मार भूंडा[3] छे जम—दूतना, दया ते पिंडने न होए ।। ३७
धरम तणां सुख भोगवो, पाप तणां ल्यो दुख ।
अगिन चोरासी लाख भोगवी, अंते आव्या मनुख ।। ३८
एकें बोहोरया भगवान जी, ते जाए नहीं जमपुर ।
संगत कीधी तेणे साध तणी, जई वैकुंठ कीधां घर ।। ३९
एणी पेरे वेपार थाए, हाट पीठ बजार ।
आ भोमनी अनेक आंकड़ी, तेनो केटलो कहूं विस्तार ।। ४०
झाझूं[4] कहे दुख सहूने लागे, सत वचन नां सेहेवाए ।
सत सहूए उथापियूं,[5] असत ब्रह्मांड न माए ।। ४१
हवे जे हेत वांछे आपणूं, ते सुणजो सत द्रढ मन ।
वाट ले जो वैकुंठ तणी, तमें रखे जातां पुरी जम ।। ४२
दुखने साटे[6] अखंड सुख आवे, अधखिण माहें आज ।
साहूकारो साधो बेहेवारियो,[7] एम सुणो कहें *मेहेराज ।। ४३

।। प्रकरण ।। १२५ ।। चौपाई ।। १८१६ ।।

## किरंतन पुराने

### तमें जोजो रे मारा साध संघाती

तमें जो जो रे मारा साध संघाती,[8] आ विस्व तणी जे वाट ।
हार कतार चाले केडा[9]—बेडी, भवसागरनों घाट ।। १
स्वांथी[10] मारग चाले संजमपुरी, भार भरी रे अलेखे ।
कुटम परिवार लादा[11] सहु लादे, आगली अजाडी कोई न देखे ।। २
दुस्तर दोष न विचारे मद माता, लडसडती[12] चाल चाले ।
उनमद थका अभिमान करे, अने कंठ बांहोंडीयो घाले ।। ३

१. रिश्वत । २. पहचान । ३. बुरा । ४. अधिक । ५. उठा दिया । ६. बदले । ७. व्यापारियों । ८. साथी । ९. आगे-पीछे । १०. सरल । ११. भार । १२. अटपटी ।

उत्तम आगल वाट देखाड़े, मधम अधम सहू वासे[१] ।
भार करमनूं लेखूं रे अलेखें, मनमा विचारी कोए नव त्रासे ॥ ४
बलिया बीक[२] न आणे केहेनी, सांभले न कांई देखे ।
साचा ए सूर धीर कहिए, जे ए दोष ने न लेखे ॥ ५
काएर केम चाले एणी वाटे, जेने लागे ते जमनो त्रास ।
रात दिवस रुए कलकले, सूकाए ते लोही ने मांस ॥ ६
वैकुंठनी पण विस्मी वाट, ते जेम तेम सेहेवाए ।
संजमपुरीना दुख घणूं दोहेला[३], ते जिभ्याएँ न केहेवाए ॥ ७
आसुपन तणां सुख सहूको वांछे,[४] ओल्या साख्यात[५] दुख कोई न जांणे ।
संजमपुरीनी वाट छे वस्ती, ते माटे सहू कोए ताणे ॥ ८
उज्जड मारग वैकुंठ केरो, ते माटे कोए न चाले ।
बेहेतल[६] नहीं माहें चोर मले, दूथा[७] मां पग कोई न घाले ॥ ९
वस्ती बिना लिए चोर लूसी,[८] आडा दोख घणां रे दुकाल ।
लोही मांस न रहे अंग माही, आडी खाइयो पर्वत पाल ॥ १०
ते माटे सहू चाले संजमपुरी, ऊवट कोंणे न अगमाए[९] ।
संजमपुरीना दोष जाग्या पछी, श्रवणांएँ न संभलाए[१०] ॥ ११
वैकुंठ बाटना दुख जो सहिए, तो आगल सुख अखंड ।
वेद पुराण भागवत कहे छे, भाई जिहां लगे छे ब्रह्मंड ॥ १२
पण बंध छूटा बिना न चलाए, भाई ए छे करमनी काणी[११] ।
मन माहें जाणेए सुख भोगविए, पण जाए बंधाणां जमपुरी ताणी ॥ १३
करम तणां बंध छे रे वज्र में, वेद पुराण एम बोले ।
दया नहीं जीव हिंसा करे, ते करम चंडाल नहीं तोले ॥ १४
वली जो जो रे तमें सास्त्र संभारी, एणी पेरे बोले वाणी ।
कुंजर कथुआ मेरु[१२] माणस माहीं, सरवे एकज प्राणी ॥ १५

१. पीछे । २. भय । ३. कठिन । ४. चाहे । ५. आगे । ६. वस्ती । ७. ऊबड़ खाबड़ । ८. लूट ले । ९. चला जाए । १०. सुना जाए । ११. लेखा । १२. पर्वताकार ।

अंन उदक[1] वाए कीट पतंगमां, सकल कहे छे ब्रह्म ।
देखीतां आंधला थाए, पछे बांधे अनेक पेरे करम ॥ १६

पांच मलीने काया परठी,[2] ते माहें जीव समाणो ।
थावर जंगम सकल व्यापक, एणी पेरे पथराणो ॥ १७

हवे वरण वेख थया जुजवा, एक उत्तम मधम ।
वस्त खरी थी विमुख थया, पछे चलवे ते अधमा अधम ॥ १८

हूं रे गेहेलो एवा वचन तोज कहूं छूं, पण न थाए बीजा कोए गेहेला[3] ।
विस्मी वाटें चाली न सके, तेने लागसे वचन घणां दोहेला ॥ १९

एक जीवने आहार देवरावे, तेमां अनेक जीव संघारे[4] ।
एणी पेरे दान करे रे दयासूं, ए धरम ते कां नव तारे ॥ २०

अनेक संघवी संघज[5] काढे, धन खरचे थाए मोटा[6] ।
बांधी करम करावे जात्रा, जाणे करम सूं करसे ए खोटा ॥ २१

मन माहें जाणे अमें धरम भोगवसूं, प्रगट पाप न देखे ।
सुभ असुभ बंने भोगववा, ए धरम राज सर्वे लेखे ॥ २२

तीरथ ते जे एक चित कीजे, करम न बांधिए कोए ।
अहेनिस प्रीते प्रेमसूं रमिए, तीरथ एणी पेरे होए ॥ २३

दान करे सहू देखा देखी, बांधे ते करम अनेक ।
मन तणी आंकडी न लाधे, तेणें बंधाए बंध विसेक ॥ २४

जीव संघारता मन न विमासे,[7] जग[8] करे नामनाए[9] ।
करम बंधातां कोई नव देखे, पण लेखूं लेसे जम—राए ॥ २५

अनेक देरा[10] परबों[11] ने परवा, धन खरचे मोटाई ।
प्रसिध प्रगट थाए पाखंडें, जेम माहें भांड भवाई ॥ २६

दान दया सेवा सर्वा अंगें, कीजे ते सरवे गोप[12] ।
पात्र ओलखीने कीजे अरचा, सास्त्र अरथ जोइए जोप ॥ २७

१. जल । २. रची । ३. अलमस्त । ४. मारे । ५. दल । ६. बड़ा । ७. विचार । ८. बलि यज्ञ । ९. नाम के लिए । १०. देहुरा । ११. प्याऊ । १२. गुप्त ।

आगे प्रगट कीधूं रे *जनके, दाधो[१] पग अगिन ।
त्यारे घणी खंडनी कीधी नव जोगी, रखे वृथा जाए साधन ॥ २८

सत व्रत धारणसूं पालिए, जिहां लगे ऊभी देह ।
अनेक विघन पडे जो माथे,[२] तोहे न मूकिए सनेह ॥ २९

भागवत वचन जोजो रे विचारी, सार अक्षर जे सत ।
जीवने जगावो वचन प्रकासी, रदें उघाडो मत ॥ ३०

ए मांथे लेसे तेने कहूं छूं, बीजा मा करजो दुख ।
तमें तमारी माया माहें, सेहेजें भोगवजो सुख ॥ ३१

कोई मा केहेसो जे निंदया करे छे, वचने कहूं छूं देखाडी ।
साध पुरुषनी निद्रा भाजे,[३] आंखडी देऊं रे उघाडी ॥ ३२

वचन केहेतां कोए दुख मां करसो, सांभलजो सहू कोए ।
सत केहेतां कोई वांकू[४] विचारसे, तो सरज्यूं[५] हसे ते होए ॥ ३३

विप्र तणों वेपार भाजे छे, भाई भागवत हाट न चाले ।
तोज फरी फरी ने मूलगां, सब वचन जई झाले ॥ ३४

विप्र कुलीमां थया रे जोरावर, सत वचन उबेखे[६] ।
पाखंडे खाए सरवे पृथवी, लोभ विना नव देखे ॥ ३५

ए रे लोभ घणों दोहेलो[७] लागसे, पण लाग्या स्वादे चित न आवे ।
नीला[८] बंध बांधतां सुख उपजे छे, पण सूका पछी रोवरावे ॥ ३६

उनमद उत्तम असार जाग्या रे माहें थी, साध आपने कहावे ।
कुकरम माहें कहिए जे कुकरम, बंध वज्रमें बंधावे ॥ ३७

दोस विप्रोंने कोए मां देजो, ए कलजुगना एधांण[९] ।
आगम भाख्यूं मले छे सरवे, वैराट वाणी प्रमाण ॥ ३८

असुर थकी सम[१०] खाधा *भभीखणे, आगल श्री *रघुनाथ ।
तमसूं कपट करूं तो कुली माहें, ब्राह्मण थाउं आप ॥ ३९

---

१. जल गया । २. सिर पर । ३. टूटे । ४. टेढा । ५. भाग्य । ६. उपेक्षा । ७. कठिन । ८. हरे । ९. चिह्न । १०. कसम, सौगंध ।

त्यारे वारचो[१] श्री रघुपति राए, एवा कठण सम कां खाधा ।
तमें छो अमारा हूं नेहेचे जाणूं, मनमां मा धरजो वाधा[२] ॥ ४०
ए वचन आगम छे प्रगट, ते तां सहू कोए जाणे ।
उत्तम करे असुराई ते माटे, ए कुली[३] व्यापक एधाणे ॥ ४१
सुरता जाए सांभलवा ने चाल्या, जाणें आंधला ने संग ।
बाहेरनी फूटी कांने बेहेरा, रदे तणां जे अंध ॥ ४२
भटजी कथा करवा बेसे, केने आंसूपात[४] न आवे ।
भांड तणी पेरे वचन वांका कही, सुरताने[५] हंसावे ॥ ४३
हंसी रमी कलोल[६] करीने, सुरता किवता उठे ।
मनमां जाणें अमें ग्यान कथूं छूं, पण बंध माहेंना नव छूटे ॥ ४४
दुष्टें दुष्ट मले मद माता, ए कलजुगना रंग ।
सत पंडित कहावे साध मंडली, ए करमोंना बंध ॥ ४५
तेम तेम कामस[७] चढती जाए, जेम जेम जराबल आवे ।
एम करतां जमकिंकर[८] आवे, पछे जीत्यूं रतन हरावे ॥ ४६
चरचा कथा तां तेहेने कहिए जे आपे रुए रोवरावे ।
दिन दिन त्रास वधतो जाए, ते बंध रदेना छोडावे ॥ ४७
वस्त थई अगोचर माहें, जीव चाले आणे आचार ।
एणी चाले जो फल लाधे, तो पांमसे सहू संसार ॥ ४८
साध रहया पंथ जोई जोई, पण केने न लाध्यो सेर[९] ।
अनेक उपाए करी करी थाक्या, पण न टले ते भोमनों फेर ॥ ४९
ए अमल तणो फेर जिहां नव जाए, तिहां फरे छे विकलना जेम ।
ए अटकलें वन[१०] जई वलगे[११], ते फल पांमे केम ॥ ५०
व्रक्ष तणी ओलखांण न उपजे, जे ए फलनूं छें आ वन ।
केम फल लाधे सोध विना, जेनूं विकल थयूं छे मन ॥ ५१

---

१, रोका । २. डर । ३. कलियुग । ४. अश्रुपात । ५. श्रोता । ६. किलोल । ७. कालिमा । ८. यमदूत । ९. राह । १०. इधर उधर (वृक्ष) । ११. भटके ।

उनमाने[१] फल जोवा जाए, सामां बीटे[२] करमना जाल ।
मनमां जाणें हूं बंध छोडूं छूं, पण बंधाई पडे ततकाल ।। ५२

जईने जुए फल जुआ थईने, अनेक कीधी उनमान ।
एक[३] माहेंथीं चोरासी बुधे[४] बोल्या, पण पांम्या नहीं पराधान[५] ।। ५३

इहां अनेक बुधें बल कीधां, अने अनेक फराया मन ।
फल थयूं अगाध अगोचर, साध रह्या जोई जोई अतू दिन[६] ।। ५४

वली जे साध पुरष कोए कहावे, ते कामस टालवा जाए ।
सो मन साबू घसी पछाड़े, निरमल तोहे न थाए ।। ५५

सो रे वरसनी जटा बंधांणी, ते केम छोडी जाए ।
अंतकाल सुरभावा बेठा, लेई कांकसी[७] हाथ माहें ।। ५६

ए करमना बंध जोरावर, छूटे नहीं केणी पर ।
बलिया बल करी करी थाक्या, निगमिया[८] अवसर ।। ५७

बंध छोडे जई आकार ना, मोटी मत धणी जे कहावे ।
पण बंध बंधाणां जे अरूपी[९], ते तां द्रष्टें केहेनी न आवे ।। ५८

गुरुगम[१०] टाली[११] बंध न छूटे, जो कीजे अनेक उपाए ।
जेणे भोमें रे आप बंधाणां, ते भोम न ओलखी जाए ।। ५९

आप न ओलखे बंध न सूझे, करम तणी जे जाली ।
खोलतां खोलतां जे गुरुगम पांम्यो, तो ते नाखे बंध बाली[१२] ।। ६०

केम ओधरिया[१३] आगे जीव, जेने हता करमना जाल ।
गुरुगम ज्यारे जेहने आवी, ते छूटया ततकाल ।। ६१

आणे बचने खरे बपोरे[१४], बोध तमारे पास ।
भरत खंड माहें जनम मानखे, कां न करो प्रकास ।। ६२

आ जोगवाई सघली सनंधे, कां न करो वस्त हाथ ।
आ वेला वली वली नहीं आवे, जीती कां जाओ रे निरास ।। ६३

१. अनुमान । २. बांधे । ३. एक ऋषभदेव । ४. सिद्ध । ५. परम तत्व । ६. आज दिन । ७. कंघी । ८. गंवा दिया । ९. सूक्ष्म । १०. गुरु की पहचान । ११. बिना । १२. जला दे । १३. उद्धार । १४. दोपहर (ज्ञान) ।

तमें जैन महेसरी[1] सहुए सुणजो, आदे धरम छे एक ।
*रिषभ *देव चाल्या पछी मारग, वेहेचाणां[2] विवेक ॥ ६४

मुझवण[3] विध करो छो धरमनी, माहों माहें अगाध ।
वस्त खोल्या विना विमुख थाओ छो, लेई जाए गुण कहावो छो साध ॥ ६५

जीव चंडाल कठण एवो कोरडू,[4] कां रे करो छो हत्यारो ।
वृथा जनम करो कां साधो, आवो रे आकार कां मारो ॥ ६६

लाख चौरासी हत्या बेससे,[5] एवो आ जनम तमारो ।
बीजी हत्यानों पार नथी, जो ते तमें नहीं संभारो ॥ ६७

आगल तिमर घोर अंधारूं, बूडसे[6] जीव जल माहें ।
लेहेरों मारे अवला[7] पछाडे, मछ गलागल ताहें ॥ ६८

बुध बिना जीव बेसुध थासे, माथे पडसे मार ।
बांधेल बंध ताणसे बलिया, विसमसे[8] नहीं खिण वार ॥ ६९

ए दुस्तरनों क्यांहें छेह नहीं आवे, कलकलसो करसो पुकार ।
त्रास पांमीने जीव कां न जगवो, आ विसमूं घणूं संसार ॥ ७०

दिस एके नहीं सूझे सागर मांहें, भवसागर जम जाल ।
अनेक वार तडफडसो मरसो, तोहे नहीं मूके काल ॥ ७१

त्यारे तेवा माहें सूं सोध[9] थासे, आज आव्यो अवसर ।
साध पुरुष तमें जोजो संभारी, बीजी नथी छूटवा पर ॥ ७२

गुरुगम टाली ए गांठ न छूटे, केमे न थाए रे नरम ।
माहेंली कामस केमें न जाए, जो कीजे अनेक सरम ॥ ७३

बाहेर थकी गांठ एक छोडिए, तिहां बीजी बंधाए अपार ।
ए विसमां[10] बंधनों नथी रे उपाए, बीजो आणें संसार ॥ ७४

आ आकार माहें जीव बंधाणों, ते पण नव ओलखाए ।
तो पारब्रह्म जे पार थयो, ते केणी पेरे खोलाए ॥ ७५

---

१. महेश्वरी । २. भटक गए । ३. दुविधा । ४. न गलने वाला दाना । ५. बैठेगी । ६. डूबेंगे । ७. उलटा । ८. विश्राम करेगा । ९. मिलेगा । १०. विषम ।

जीव थयो माहें *निराकार, ते केणी पेरे बांध्यो बंध ।
रूप रंग वाए तेज नहीं, तमें साधो जुओ रे सनंध ।। ७६

जीव बंधाणों अगनाने, ते अगनान[१] निद्रा जोर ।
जेहेर चढयूं घेंन[२] भोम तणूं, ते पड्यो तिमर माहें घोर ।। ७७

आणे आकारे जो नव छूटो, तो छूटसो केही पर ।
साधो साधनी संगत करजो, खिण खिण जाए अवसर ।। ७८

साध संगते आ जेहेर उतरसे, रुदें ते करसे प्रकास ।
घेंन निद्रा सरव उडीने जासे, अंधकारनों नास ।। ७९

त्यारे जीव जई आप ओलखसे, ओलखसे आ ठाम ।
घर पोताना[३] द्रस्टे आवसे, त्यारे पांमसे विसराम[४] ।। ८०

ज्यारे जीवनी मोरछा[५] भागी, त्यारे उडी गयूं अगनान ।
करमनी कामस केम रहे, ज्यारे भलयो श्री भगवान ।। ८१

भ्रांत भरम सरवे भागी जासे, उडी जासे आसंक[६] ।
अगम अगोचर सहू सोध थासे, रमसे माहें वसंत ।। ८२

दोस न दीजे वैराट वाणीने, मुखथी बोले सहू सत ।
बोल्या ऊपर चाली न सके, त्यारे फरी जाए छे मत ।। ८३

मोटो अवतार श्री *परस रामजी, तेना हजी लगे बंध न छूटे ।
कष्ट करे छे आज दिन लगे, पण तोहे ते ताणां न त्रूटे ।। ८४

अनेक देह दमे पंच अगनी, तोहे न बले करम ।
अनाद कालना जे बंध बांध्या, ते थाए नहीं जीव नरम ।। ८५

प्रगट बेठा बंध छोडवा, ते आपण माटे थाए ।
अवतार ते पण करमें बंधाणां, रखे कोई देखी बंधाए ।। ८६

आ ब्रह्मांड विषे कोई एम मां केहेसो, अमने सूं करे बंध ।
ब्रह्मांड धणी पोते[७] आप बंधावी, देखाडे[८] छे सनंध[९] ।। ८७

---

१. अज्ञान । २. मद, खुमार । ३. अपना । ४. आराम । ५. बेहोशी । ६. भय । ७. स्वयं ।
८. दिखलाना । ९. प्रमान ।

तेज आकास वाए जल पृथवी, रवि ससि चौदे भवन ।
ए फरे सरव करमना बांध्या, बीजा तो एहेनी उतपंन ॥ ८८

प्रगट वैराट थयो जे दाडे,[१] एना बंध पेहेलाना बंधाणां ।
बाल्या बले नहीं ते माटे, सहुए ते जाए तणाणां ॥ ८९

मानखो जनम पांम्यो बंध छोडवा, वली रे वसेखे[२] भरत खंड ।
कुली मांहें उत्तम आकार पामी,[३] सामां बांधे छे अधको[४] बंध ॥ ९०

माहें अंधारुं माहें अजवालूं, हुदे ते कोए न संभारे ।
परवस बांध्यो करम करे, अवतार अमोलक[५] हारे ॥ ९१

कोई वेद विचार न करे, भाई सहू को स्वादे लागूं ।
अनल[६] एणी पेरे चाले ते माटे, साचूं ते सरवे भागूं ॥ ९२

साचूं बोल्यूं गमे नहीं केहने, सहूने ते लागसे दुख ।
वेद तणां वचन विचारो, जे कहे छे पोते मुख ॥ ९३

वेद कहे मारा मूल आकासें, साखा छे पाताल ।
तोहे न समझे मूढ मती, अने फरी फरी पडे माहें जाल ॥ ९४

वेद तणूं तां व्रक्ष नथी, भाई ए छे प्रगट वाणी ।
अवली के सवली विचारो, ए आंकडी न कलाणी[७] ॥ ९५

सत वाणी छे वेद तणी, जो ते कोए जुए विचारी ।
ए कोहेडो रचियो रामतनो, सघला[८] ते माहें अंधारी ॥ ९६

कोई दोस मां देजो रे वेदने, ए तो बोले छे सत ।
विस्व पडी भोम अगनान[९] माहें, ए भोम फेरवे छे मत ॥ ९७

अरथ जुए सहू उपली वाटनों, माहेंलो ते माहें न संभारे ।
वैराट पूर वहे वेहेवट,[१०] दुख सुख कोए न विचारे ॥ ९८

वेद विचार करी करी वलया, पारब्रह्म नव लाध्या ।
वली वलिया उलटा त्यारे पाछा, बंध विस्वना बांध्या ॥ ९९

१. दिन । २. विशेष । ३. पा कर । ४. अधिक । ५. अमूल्य । ६. वायु । ७. समझी । ८. सब । ९. अज्ञान । १०. प्रबल प्रवाह ।

आ तां *व्यासजीनूं कह्यूं कहूं छूं, तमें मानजों साधो संत ।
न मानो ते जई *सुकजीने पूछो, आ बेठा छे माहें भागवत ।।१००

वेद पुराण भारत[1] सहू बांध्या, त्यारे दाभ[2] रूदे मां समाणी ।
ततखिण आव्या गुरुजी पासें, बोल्या नारदजी वाणी ।।१०१

घणी खंडनी[3] कीधी व्यासजीनी, पूरी वचनोंने श्रवणां न दीधी ।
वाणी सरवे नाखी उडाडी,[4] अवतारनी लाज न कीधी ।।१०२

सवला रोस भराणां रिषीजी, जोई व्यास वचन ।
सास्त्र सरवे बाँधीने, तें बोल्या बूडता जन ।।१०३

वेराट धणी ज्यारे नव लाध्यो, त्यारे कां न रह्यो तूं गोप ।
विस्व वगोई[5] स्या माटे, तें उलटा वचन कही फोक ।।१०४

विसमां वचन देखी व्यासजीना, पूरी ते द्रष्ट चढ़ावी ।
श्री क्रस्नजी विना बीजूं सरवे मिथ्या, एम कह्यूं समझावी ।।१०५

वचन तणो अहंमेव[6] व्यासजीनों, नाख्यो ते सरव उडाडी ।
दया करीने खंडनी कीधी, दीधी आंख उघाडी ।।१०६

तेणे समे कह्यूं नारदजीएँ, न वले जिभ्या मारी एम ।
कठण वचन कह्या व्यासजीने, में केम केहेवाए आ तेम ।।१०७

आटलूं पण हूं तोज कहूं छूं, रखे केने अजाण्यूं जाए ।
आ दुनिया भेला साध तणाए, त्यारे सूं करूं में न रेहेवाए ।।१०८

हाकली[7] गुरुगम दीधी *नारदजीएँ, ते लई व्यास घेर आव्या ।
सार वचन लेई ग्रंथ सघलाना, रदे ते माहें समाव्या ।।१०९

सार तणो विचार करीने, बांध्या द्वादस स्कंध ।
त्यारे ठरचो[8] रदे एणे वचने, मन पाम्यूं आनंद ।।११०

उदर सुकजी उपना,[9] अने आंही उपनूं भागवत ।
व्यासे वचन कही प्रीछव्या,[10] ग्रही प्रीसव्या[11] सत ।।१११

---

१. महाभारत । २. अशान्ति । ३. फटकार । ४. उड़ा दी । ५. गुमराह किया । ६. अहंकार । ७. उत्साह वर्धक । ८. शीतल हुआ । ९. उत्पन्न हुआ । १०. समझाया । ११. पेश किया ।

सारनूं सार थयूं भागवत, वचन थया ववेक ।
वली अमृत सींच्यूं सुकदेवें, तेणे थयूं रे वसेक ॥११२

सकल सारनूं सार निपनूं,[1] सहू को ते मुखथी भाखे ।
पण वचन भारे विचार न थाए, त्यारे विप्र वाणी पेहेलानी दाखे[2] ॥११३

सुकजी केरा वचन समझी, जो कोई रदे विचारो ।
सात दिवस माहें परीक्षत वैकुंठ, वचनें पार उतारयो ॥११४

तेज वचन वांचता[3] सांभलता, जाए जम बारो बांध्यो ।
अरथ तणी ओलखाण न आवे, प्रेम वचन नव लाधो ॥११५

अहेनिस अरथ करे समझावे, केहनो रंग न पलटो[4] थाए ।
बेहेराने[5] कालो[6] संभलावे, बांध्या ते माटे जाए ॥११६

आंकडी कोए न जुए रे उकेली,[7] वचन तणां जे ववेक ।
गुरुगम टाली खबर न पड़े, ए अरथ भारे छे वसेक ॥११७

ए रे अरथ माहें छे अजवालूं,[8] जो कोए जोसे रे विचारी ।
रुदया माहें थासे प्रकास, ज्यारे जागसे जीव संभारी ॥११८

जीव जाग्यो त्यारे नथी वस्त वेगली,[9] आतम परआतम जोड ।
त्यारे वासो[10] देईने विस्वने, सनमुख रेहेसे करजोड ॥११९

विध सघली समझी वैराटनी, माया करसे सत ।
स्वामी सेवक थासे संजोग,[11] त्यारे उडी जासे असत ॥१२०

थासे संजोग त्यारे बंध छूटा, करम नहीं लवलेस ।
निहकरम[12] तणां निसानज वाग्या, अखंड सुख पांमसे वसेक ॥१२१

बीजा केहेने दोस न दीजे रे भाईजी, ए माया विकराल[13] ।
करोलिया[14] जेम गूंथी गूंथे, मुझाई मरे माहें जाल ॥१२२

जे जीव होए जल तणों, ते न रहे विना जल ।
अनेक विधना सुख देखाडो, पण मूके नहीं पाणी बल ॥१२३

---

१. निकला । २. दिखाई । ३. पढ़ते । ४. बदलना । ५. बहरा । ६. गूंगा । ७. सुलझाई । ८. प्रकाश । ९. दूर । १०. पीठ । ११. मिलाप । १२. निष्काम कर्म । १३. भयानक । १४. मकड़ी ।

तेम जीव होए सागर तणो, ते मूके नहीं भवसागर ।
अखंड सुख जो अनेक देखाडो, पण मूके नहीं पोते घर ॥१२४

खरो हसे जे खरी भोम तणों, आ वचन विचारसे जेह ।
अगिन झाला देखीने छांडसे, अखंड सुख लेसे तेह ॥१२५

मन करम ने ठेलसे,[१] जेथी प्रगट थाए सरवा अंग ।
साथी बोध संघाती बोले, जीव मन एकै रंग ॥१२६

हवे गोप वचन केहेवासे गुरुगम, ते केम प्रगट होए ।
विस्नु संग्राम करीने लेसे, साध हसे जे कोए ॥१२७

आतां अनुमाने बाणनाख्या उडाडी, बीजा भारे उडाड्या न जाए ।
सनमुख मले नहीं जहां सूरो, ते हथूका[२] विना न चोडाए[३] ॥१२८

साध ओलखासे वचने, अने करसे समागम[४] ।
साध वाणी साध एम ओचरे,[५] संगत छे साध रतन ॥१२९

॥ प्रकरण ॥ १२६ ॥ चौपाई ॥ १६४५ ॥

पर न आवे तोले[६] एकने, मुख श्री क्रस्न कहंत ।
प्रसिद्ध प्रगट पाधरी,[७] किवता किव करंत ॥ १

कोट करो नरमेध,[८] अस्व[९] मेध अनंत ।
अनेक धरम धरा विषे, तीरथ वास वसंत ॥ २

सिद्ध करो साधना, विप्र मुख वेद वदंत[१०] ।
सकल क्रियासूं धरम पालतां, दया करो जीव जंत ॥ ३

व्रत करो विध विधना, सती थाओ सीलवंत ।
वेष धरो साध संतना, गनानी गनान कथंत ॥ ४

तपसी बहु विध देह दमो, सरवा अंग दुख सहंत ।
पर तोले न आवे एकने, मुख श्री क्रस्न कहंत ॥ ५

---

१. धके लेगा । २. निशाना । ३. लगाना । ४. संगत । ५. कहे । ६. बराबर । ७. स्पष्ट । ८. मानव बलि । ९. अश्व बलि । १०. कहो ।

*मेहेराज कहें मुख ए धन, जो वली रुदे रमंत ।
चौदे भवन ते जीतियो, धंन धंन ए कुलवंत ॥ ६

॥ प्रकरण ॥ १२७ ॥ चौपाई ॥ १६५१ ॥

हांरे मारा साध कुलीना सांभलो

माया कोहेडो[1] अंधेर केहेवाए, माहें साध बंधाणां जाए ।
तमने हजी लगे सोध न थाए, काल ताकी[2] ऊभो माथे खाए ॥ १

साध वाणी तमें सांभली रे, कां न विचारो मन ।
आणे अजवालें मानखें, तमें कां रे भूलो साधू जन ॥ २

खिण माहें अरथज लीजेरे, जे वचन कह्या *वेद व्यासे ।
दीपक वा मा खमे[3] नहीं, हवणां धवक[4] अंधारूं थासे ॥ ३

कथतां सांभलतां ए गिनान, जम बारो आवसे रे ।
अधवचे सरव मुकावी, तरत बांधीने जासे रे ॥ ४

साचूं कहे दुख लागसे, साचूं ते केहने न सुहाए ।
प्रगट कहिए मोहों ऊपर, त्यारे दोहेला ते सहूने थाए ॥ ५

अवलूं देखी हूं न सकूं, त्यारे सूं करूं में न रेहेवाए ।
वेष धरी लजवो साधने, एम ते माटे केहेवाए ॥ ६

दुष्ट थई अवगुण करे, ते जई जमपुरी रोए ।
पण साध थई कुकरम करे, तेनूं ठाम न देखूं कोए ॥ ७

क्रोध अहंमेव समे[5] नहीं, अने वेष धरो छो साध ।
लोभ लज्या नमे नहीं, माहें मोटी ते ए व्राध[6] ॥ ८

उत्तम कहावो आपने, अने नाम धरावो साध ।
साध मल्यो नव ओलखो, माहें अवगुण ए अगाध ॥ ९

न करो संगत साधनी, मन ना धरो विस्वास ।
संजमपुरीना दुख सांभलो, पण तोहे ना उपजे त्रास ॥ १०

---

१. धुंध । २. ताक में । ३. सहन । ४. तुरत । ५. समाता । ६. रोग ।

छेतरवा[1] हीडो जगदीसने, ते छेतरचा केम जाए ।
पास[2] बीजाने मांडिए, जई आपोपूं बंधाए ॥ ११

अस्नान करी छापा तिलक देओ, कंठ आरोपो[3] तुलसी माल ।
गिनानी कहावो साध मंडली, पण चालो छो केही चाल ॥ १२

वेख उत्तम तमे धरो, पण माहेलो ते मेल न धुओ ।
पंथ करो छो केही भोमनों, रिदे आंख उघाडी जुओ ॥ १३

मन मेला धूओ नहीं, अने उजला करो आकार ।
आकार तिहां चाले नहीं, चाले निरमल निराकार ॥ १४

वैकुंठ ऊंचूं सिखर पर, ऊवट चढतां उचांण ।
मोहजल लेहेरो मारे सामियो, इहां वाए ते वा उधांण[4] ॥ १५

चढवूं ऊंचूं चीरक[5] थई, वाटें दुख दिए घणां दुष्ट ।
प्रवाह उतरतां सोहेलूं,[6] पण दोहेलूं ते चढतां पुष्ट ॥ १६

सोहेलूं देखी कां उतरो रे, आगल दोष अनेक ।
चढतां घणुए दोहेलूं, पण वैकुंठ सुख वसेक ॥ १७

सपन तणां सुख कारणें, केम खोइए अखंड सुख ।
सुख सपने देखी करी, केम लीजे साख्यात दुख ॥ १८

चीरक थई तमें ना सको रे, मायामां थया मोटा ।
वाणी विचारी नव जुओ, पछे सास्त्र करो कां खोटा[7] ॥ १९

दुखडा खमी तमें ना सको, माया सुखें रहचा मांणो[8] ।
चढाए नहीं एणी उवटे, पाछां चढतांने कां ताणो ॥ २०

ताण्यूं[9] तमारूं सूं करे, जेने लाग्यो छे चोलनों रंग ।
साध कहावी असाध थाओ छो, करो छो भजनमां भंग ॥ २१

पगला पोताना जुओ नहीं, अने बीजाने देओ छो दोस ।
सास्त्र अरथ समझा नथी, तां जातो नथी रिदें रोस ॥ २२

---

१. छलना । २. पाश, बन्धन । ३. पहनो । ४. उल्टा देना । ५. सूक्ष्म । ६. आसान । ७. झूठा । ८. मस्त । ९. खिचाव ।

सास्त्रें मारग बे कह्या, त्रीजो न कह्यो कोए ।
एक वाट वैकुंठ तणी, बीजी स्वर्ग जमपुरी जोए ॥ २३

वली एक वाट कही करी, ते ततखिण कीधी लोप ।
तिहांना हता ते चालया, पण रही ते मायामां गोप ॥ २४

तमें रे जुओ पोते आप संभारी, केहीरे लीधी छे वाट ।
केही रे भोमना बंध बांधो छो, उतरसो कीहे रे घाट ॥ २५

गुण *पचबीसे बांधया रे, बांध्या ते *नवे अंग ।
इंद्री पखे गुणें बांधया, कांई द्रढ करी माया संग ॥ २६

बंध प्रभूसों न बांधया रे, त्यारे केणी पेरे आवे तेह ।
रदें विचारी जो जुए, बांध्यो छे केसूं नेह ॥ २७

जेरे गामनी वाटज लीजे, आवे तेहज गाम ।
जाणी ने जमपुरी जाओ छो, त्यारे न आवे अखंड बिसराम ॥ २८

सूथी[1] वाट जाणी संजमपुरी, कां सहुए उजाणां[2] जाओ ।
वेद पुराण तमें सांभली, एम रुदे फूटा कां थाओ ॥ २९

देखा देखी पंथ करो छो, रदें नथी विचार ।
सास्त्र वाणी जो सत करो, तो भूलो केम आ वार ॥ ३०

ढोलतां ढोलाने[3] सोहेलूं, पण आगल ऊंडी[4] खाड ।
लोही मांस सरवे सूंकसे, पछे घरट[5] दलासे हाड ॥ ३१

केस त्वचा जासे चरमाई, नसो त्रूटसे निरवाण ।
विध विधना दुख देखसो, पण तोहे नहीं छोडे प्राण ॥ ३२

जमपुरीना दुख दारुण,[6] ते सूं नथी तमें मांण्या ।
पुराण ते माटे कहे पुकारी, केणें जाए रखे अजांण्या ॥ ३३

*कुंड अठाबीस कह्या सुकदेवें, एक बीजा थी चढता जाए ।
त्यारे पछ्यो परीक्षत दुख सुणी, स्वामी बीजा तो ना संभलाए ॥ ३४

---

१. सहज । २. उत्सव मनाने । ३. बह जाना । ४. गहरी । ५. चक्की । ६. कठोर ।

छपन रह्या बिन सांभल्या, तेतां सुणी न सक्यो राए ।
कलकलीं कंपमान थयो, ते तां कह्या न सुण्या जाए ॥ ३५

देव ते दोस लिए नहीं, ते मांटे कोधां पुराण ।
देखी पडो कां खाडमां, आ ताँ सहूने करे छे जाण ॥ ३६

स्वादे लाग्या सुख भोगवो, पण पछे थासे पछताप ।
व्यास बचन जोतां नथी, पछे घससो[1] घणूं बंने[2] हाथ ॥ ३७

भटजी चोखूं[3] तमने केम कहे, जेणें माडचूं[4] ए ऊपर हाट[5] ।
सूथी देखाडे संजमपुरी, तमें अपगरो[6] एणी वाट ॥ ३८

बुध तमारी किहां गई, पछे आवसे कीहे काम ।
वचन जुओ सुकदेवना, तेमां प्रगट पराधाण[7] ॥ ३९

अर्थ लेई शास्त्र तणो, तमें ओलखजो आ ठाम ।
बीहो[8] छो छाया थकी, जुओ करे छे कोंण संग्राम ॥ ४०

कोंण तमसूं जुध करे, बीजों ऊभो सामो कीहो चोर ।
आप बंधाणां आपसूं, माहेली[9] गमा तिमर घोर ॥ ४१

संसार सूतो घारण करी, ते तां केणी पेरे जागे रे ।
पण साध कहावो निद्रा करो, मूने दुख ते तेनूं लागे रे ॥ ४२

निद्रा परी नाखी देओ, उठीने ऊभा थाओ ।
बीजो ते वात मूकी करी, तमें ग्रहो प्रभूना पाओ ॥ ४३

पतिव्रतापणें सेविए, नव थाए वेस्या जेम ।
एक मेलीने अनेक कीजे, तेणी थाए धणीवट[10] केम ॥ ४४

गेहेन[11] वारण तमे परहरो, टालो ते तिमर घोर ।
उठीने अजवालें जुओ, त्यारे देखसो माहेला चोर ॥ ४५

ज्यारे अर्थ लेसो वाणी तणों, त्यारे अर्थमां छे अजवास ।
अजवालें जीव जागसे, त्यारे थासे टली चोर दास ॥ ४६

---

१. मलोगे । २. दोनों । ३. सच्चाई । ४. बनाई । ५. दुकान । ६. चलते हो । ७. परम तत्व । ८. डरते हो । ९. अन्तर में । १०. स्वामी पन । ११. (घेन) नशा ।

वेरी टली[1] वोलावा[2] थासे, जो ए करसो जतन ।
एणी पेरे ए पांमसो, अमोलक ए रतन ॥ ४७

जनम मानखो खंड भरतनों, श्रेष्ठ कुली सिरदार ।
ए वृथा कां निगमो, तमें पांमी उतम आकार ॥ ४८

चार पदारथ पांमिया रे, ए थी लीजिए धन अखंड ।
अवसर आ केम भूलिए, जे थी धणी[3] थाए ब्रह्मांड ॥ ४६

चौद भवन जेने इछे, कोई विरलाने प्राप्त होए ।
ए पांमी केम खोइए, तूं तां रतन अमोलक जोए ॥ ५०

रतन ते आने केम कहिए, पण आ भोम उपमा एह ।
कै कोट रतन जो मेलिए, आर्णे तोले न आवे तेह ॥ ५१

हवे सुधरसो संगत थकी, जो मलसे एहवो साध ।
सास्त्र अरथ समभावसे, त्यारे टलसे सघली व्राध[4] ॥ ५२

संगत करसो साधनी, ए रुदे करसे प्रकास ।
त्यारे ते सरवे सूझसे, थासे अंधकारनो नास ॥ ५३

ज्यारे अंध अगनान उडी गयूं, त्यारे प्रगट थया पारब्रह्म ।
रंग लाग्यो ए रसनो, ते छूटे वलतो केम ॥ ५४

वस्त खरीनों जे रंग लाग्यो, ते थाए नहीं केमे भंग ।
भलयो जे भगवानसूं, तेनों दीसे एकज रंग ॥ ५५

सुख अखंड एणी[5] पेरे, तमें लेजो संगत साध ।
अध खिण विलम न कीजिए, आ आकार खोटो साज ॥ ५६

खोटा थी खरो[6] लीजिए, अवसर एवो आज ।
आ वेला अमृत घडी, परमोध[7] कहें मेहेराज ॥ ५७

साध जो जो तमें सांभली रे, बचन मा करजो लोप ।
प्रगट कहयूं आ पाधरूं, बीजी गुरुगम थासे गोप ॥ ५८

---

१. हटकर २. अनुकूल । ३. मालिक । ४.रोग । ५. इस तरह । ६. सच्चा । ७. समझाकर ।

बीजा वचन भारे[1] केम कहिए, ते तां अरथी[2] विना न अपाए[3] ।
केसरी[4] दूध कनकना[5] रे, पात्र विना न समाए ।। ५९

मारा साध कुलीना सांभलो रे ।।

।। प्रकरण ।। १२८ ।। चौपाई ।। २०१० ।।

हांरे मारा साध कुली ना जो जो रे

कोहेड़ा अंधेर मोह माहें, मलवो छे साधो संत ।
जेने रदे मां वस्या बालोजी, मारा जनम संघाती[6] ते मित्र ।। १

आ कोहेडा माहें साध सूं करे, जेणे बांध्यो चरणसूं चित ।
रात दिवस रमे रदे मां, तेने सूँ करे प्रपंच[7] ।। २

गोप रेहेसे साध एणे समे, ते प्रगट केणी पेरे थाए ।
वेष वधारया बहु विध तणां, ते खोल्या केम करी जाए ।। ३

सरखा सरखो सर्वे पृथ्वी, माहें विध विधना वहे[8] नारायण ।
नहीं आकार फरे साध तणों, प्रगट नही एधाण[9] ।। ४

आ भोम अंधेरी माहें आमला, जीव वेध्यो सघली व्राध ।
जेने ते जई ने पूछिए, ते मुख थी कहे अमें साध ।। ५

खोजो खरा थई ते माटे, आ रचियो मायानो फंद ।
दुनी मुझाणी[10] फेरा दिए, माहें पड्या रदे ना अंध ।। ६

आप न ओलखे दुनियां पोते, सूझे नहीं भोम गत ।
ए फेर भोम अंधेर तणों, तेणे रदे न आवे मत ।। ७

देखा देखी पंथ करे, अने चालतां सहू कोए जाए ।
जाणी साधन करे संजमपुरीना, मनमां चिंता न थाए ।। ८

सूंने रदे दीसे सहू कोए, सुध बुध नहीं विचार ।
देखी कही रे दोष जमदूत ना, ए कोहेडा तणां अंधार ।। ९

कोई कोने पूछे नहीं, छे कोई बीजो सेर[11] ।
साध पुकारे पाधरा, पण आ अजाण्यों अंधेर ।। १०

---

१. सार युक्त । २. इच्छुक । ३. कहा जाए । ४. सिंह । ५. सोने का । ६. संगी । ७. कपट । ८. व्याप्त । ९. चिह्न । १०. घबराई । ११. राह ।

कोट उपाए करे जो कोई, तोहे सूझे नहीं सनंध ।
कोहेडा तणी आंकडी न लाधे, तो छूटे नहीं बंध ॥ ११
एणे समे आप झलावीने,[1] अने साध थया माहें सन्त ।
संगत कीजे तेह तणी, जेणे चोकस कीधूं छे चित ॥ १२
सत जोऊँ सन्तो तणो, अने साध तणी सिध्याई ।
बाहेर चेहेन करे कै साधना, माहें ते भांड़ भवाई ॥ १३
चोकस चित केणी पेरे लाधे, बाहेर देखाडे अनंत ।
तेमाटे आ कोहेडो अंधेर, मारे जई ने संगत संत ॥ १४
साध सनंध केम जाणिए, जेणे जीती छे जोगवाई[2] ।
प्रगट चेहेन करे नहीं पाधरा, ते माहें रहे समाई ॥ १५
मुख थी बोलावी ज्यारे जोइए, तो गलित चित विस्वास ।
फेर नहीं अंधेर तणों, तेना रदे माहें प्रकास ॥ १६
साध तणी गत दीसे निरमल, रात दिवस ए रंग ।
मोहजल लेहेरो माहें मारे पछाडे, पण केमे न थाए भंग ॥ १७
साध तणी सनंध प्रगट, लेहेरो लागे आकार ।
भेदे नहीं ते भीतर रंग ने, ए साध तणां प्रकार ॥ १८
आ तिमर घोर अंधेर माहें, वेष धरे वहु जन ।
एणें सहू ने सत भास्यो, ए साध ने थयो सुपन ॥ १९
तो बैकुंठ नथी कांई वेगलूं[3] जो द्रढाविए मन ।
सत चरण भास्यो रदे माहें, त्यारे असत थयूं सुपन ॥ २०
अखंड सुख कोई रखे मूकतां, जेणे द्रढ कीधूं छे घर ।
अधखिणना सुपनातर[4] माटे, रखे निगमतां[5] ए अवसर ॥ २१
सास्त्रें संसार कह्यूं सुपना, तो ते करी बेठा सहू सत ।
साध वाणी रे जोतां[6] नथी, तो लेई जाए छे असत ॥ २२

---

१. रोक कर । २. साधन (शरीर के) । ३. अलग । ४. स्वप्नवत । ५. छोड़ो । ६. देखते ।

एणे कोहेडे ते अवला फेरा, सहू फरे छे एणी भांत ।
सुध बुध सर्वे विसरी, ए रच्यो माया द्रष्टांत ॥ २३
आ रे वेला एवी नहीं आवे, साध ना सके पुकारी ।
वचन ते अवला विचारसे, केहेसे निंदया करे छे अमारी ॥ २४
साध हसे ते विचारसे, सवला[१] रुदे वचन ।
ए वाणी प्रकासूं ते माटे, म्हारे मलवा ते साधू जन ॥ २५
प्रगट प्रकास न कीजे, आपण देखी बाज ।
गोप रही न सकूं ते माटे, सनमंधी मलवा साध ॥ २६
जेणे दरसने नेत्र ठरे, अने वचन कहे ठरे अंग ।
अनेक विघन जो उपजे, पण मूकिए नहीं साध संग ॥ २७
साध संतो मली सांभलो, वली विलस[२] न करो लगार ।
अधखिण मेलो संत तणों, जेथी जीतिए अखंड अपार ॥ २८
अखंड पार सुख अति घणूं, जेने सब्द न लागे कोए ।
ए जाणी सुख केम मूकिए, ए साध संगते सुख होए ॥ २९
ए सुख केम प्रकासूं प्रगट, वेहद सुख केहेवाए ।
ए ब्रह्मांड सर्वे रामत, उपनी छे एनी इछाए ॥ ३०
ए रे वल्लभसूं वालपणे,[३] करी दिए साध संग ।
ए रे संगत केम मूकिए, मारा मूल तणो ए सनमंध ॥ ३१
सारनों सार ते संगत, जो ते साध मेलो थाए ।
वेहद तणी निध लेईने आपे, मूकिए ते केम पाए ॥ ३२
सनमंधी साचो ज्यारे मल्यो, त्यारे जीवने थयो करार ।
*मेहेराज कहे धंन धंन ए घड़ी, धंन धंन कोहेडो अंधार ॥ ३३

॥ प्रकरण ॥ १२६ ॥ चौपाई ॥ २०४३ ॥

---
१. सीधे । २. देर । ३. प्रेम से ।

राग धन्यासरी

धोरीडा[१] मां मूके तारी धूंसरी[२] ।। टेक ।।

वाटडी विसमी गाडी भार भरी, धोरीडा मां मूके तारी धूंसरी ।।
धोरीडा आरे मारे रे, तूँने गोधे[३] घणें ।
तूँ तां नाके नथाणों, तूं तां बंध बंधाणो, गुण आपणें रे ।। १
धोरीडा अवाचक[४] थयो रे, मुख थी न बोलाए ।
कल[५] ने वेलू[६] रे धोरी, उवट ऊँचाणे[७] स्वास मा खाए ।। २
धोरीडा घणूं दोहेलूं छे रे, कीधां भोगवे रे ।
तारे कांधे चाँदी[८] रे, दुखड़ा सहे रे ।। ३
धोरीडा जाए रे उजाणी,[९] द्रोडा द्रोडतूँ[१०] आवे ।
दया रे विना रे, बेठा मारडी पडावे[११] ।। ४
धोरीडा वही[१२] ने छूटे रे, करम आपणां रे ।
*मेहेराज कहे एम, कीधां छे घणां रे ।। ५

धोरीडा मा मूके तारी धूंसरी ।।

।। प्रकरण ।। १३० ।। चौपाई ।। २०४८ ।।

राग बेराडी

आवो अवसर केम भूलिए, कारण एक कोलिया[१३] अंन ।
एटला माटे आप मुझाई,[१४] केटला करो छो कै कोट विघन ।। १
प्रगट वचन सुणो उत्तम मानखो, तमें बोहोरवा[१५] आव्या छो सुख ।
पण आंणीं भोमे मुझवण घणूं विसमी, सुखने आडे अनेक छे दुख ।। २
सुखने रखोपे[१६] दुख वीटचा[१७] छे, लेवाए नहीं केने काचे जन ।
सूरधीर हसे खरो खोजी, ते लेसे द्रढ करी मन ।। ३
एकोगमां सुख वैकुंठ गरजे, बीजीएं दुख गरजे जमपुर ।
ए बंने[१८] माहेंथी एक लेई वलसो, रखे[१९] भूलतां तमें आ अवसर ।। ४

---

१. बैल । २. पट्टा । ३. चुभाना । ४. अबोल । ५. कीचड़ । ६. रेती । ७. चढ़ाई । ८. घाव । ९. वन भोज । १०. भाग । ११. दे रहा है । १२. पहुँच कर । १३. ग्रास । १४ फंसे । १५. बटोरने । १६. रखवाली । १७. घेराव । १८. दोनों । १९. मत ।

चौद लोक इछे आ वेला, जोगवाई तमें पाम्या छो जेह ।
अहेनिस कष्ट करे कै देवता, तोहे न आवे अबसर एह ।। ५

घणूं रे दोहेली छे जम जाचना,[१] तमें मूको रे परा छल छद्रम[२] ।
वार वार वारूं छूं तमने, विस्मी रे जमपुरी विषम ।। ६

आंणें रे आकारे कां नथी देखतां, जेवडो लाभ तेवडो जोखम[३] ।
आंणें समे अखंड सुख भूल्या, बलसो[४] रे लाख चोरासी अगिन ।। ७

अखंड सुख लीधांनी आ वेला, कां न करो सबला साधन ।
परमेस्वर ने परा करी रे, मा करो रे एवा करम अधम ।। ८

मंदिर मालिया[५] अनेक निपाओ,[६] पण भरवूं एक तेहज दो[७] भरी ।
अनेक उपाए करो कै बीजा, ए साधन सरवे जमपुरी ।। ९

कुटम सगां कीधाँ कै समंधी, अने घोलीकाने[८] करी बेठा घर ।
आपोपूं तहां बांधीने आपे, वृथां निगम्या आ अवसर ।। १०

ए घर जाणो छो अखंड अमारूं, ऊपर ऊभो न देखो रे काल ।
तमारी द्रष्टें कै रे जाए छे, तो तमें रेहेसो केटलीक[९] ताल ।। ११

ऊँचा वस्तर पेहेरी आकासे, अंत्रीख राखे छे आकार ।
भोम ऊपर पग भरतां नथी, एणी पेरे बांध्यो ए संसार ।। १२

आप पछाडी[१०] ल्याओ छो धन, ऊँचा थावा रबदें करो छो दान ।
नहीं रे आवे ते अरथ जीवने, लेई जाए छे वचे अभिमान ।। १३

असुभ करम जेम लिए निंद्या, सुभ करम नामना[११] लेई जाए ।
गोप साधन कीजे ते माटे, जेम सुख जीवने पोहोतूं थाए ।। १४

एके बंध एणी पेरे बांध्या, बीजानी ते केटली कहूं रे सनंध ।
साध वाणी सांभलीने सहू को, देखीतां बंधाणां रे अंध ।। १५

बंध चोवीस बीजा एनी जोड़े, वली पंच इंद्रीने नव अंग ।
त्रणें पख त्रणें गुण करी रे, ए बंध बांधी दुख लीधांरे अभंग ।। १६

---

१. यातना । २. धोखा धड़ी । ३. खतरा । ४. फिरोगे । ५. महल । ६. बनाओ । ७. थैली (पेट) । ८. घरौंदा । ९. कितनी देर । १०. दुःख देकर । ११. प्रशंसा ।

एणी पेरे बंध बांध्या वज्र में, चसकावी[1] ना सके पाए ।
होंस करे सुख वैकुंठ केरी, एणी सिखरे[2] एम केम चढाए ॥ १७

जे बंध बांध्या जोइए रे चरणसूं, ते बंध बांध्या लेई पंपाल[3] ।
अखंड सुख आवे केम तेने, जे रे पडे जई जमनी जाल ॥ १८

जांणीने पडिया जम जाले, आ देखो छो मायानों फंद ।
जे कारण तमें आप बंधावो, तेसूं नथी रे तमारो सनमंध ॥ १९

उत्तम जनम एवो पांमी रे मानखो, कां रे पडो पसूना जेम पास[4] ।
बीजा पसू सहुए बंधावे, पण केसरी केम बंधावे रे आप ॥ २०

सूं रे बल केसरीनूं तम आगल, तम समान नथी बलवंत ।
छल करी छेतरे छे तमने, रखे रे लेबाओ आंणें प्रपंच ॥ २१

आ देखीती बाजी मायानी, प्रगट पोकार करे छे साध ।
माहें रही आप अलगां थाजो, जेमने छूटो ए बंध अगाध ॥ २२

वली वली आ वेला नहीं आवे, वली वली न सांभलो पुकार ।
बोध संगाते जागी परियांणो,[5] तमें लेजो रे सघलानो सार ॥ २३

सारना सारसूं बंध बांधजो, करजो रे नित नवलो रंग ।
नहाजो माया माहें कोरा रेहेजो, छूटतां आएस[6] जेम न आवे रे अंग ॥ २४

दुख दावानल[7] दुरगत मेलो, रदे माहें चरण करो प्रकास ।
अखंड सुख एणी पेरे आवे, मेहेराज कहे जीव जाणो बिस्वास ॥ २५

भाई रे आवो अवसर केम भूलिए ॥

॥ प्रकरण ॥ १३१ ॥ चौपाई ॥ २०७३ ॥

अंदर नाहीं निरमल, फेर फेर नहावे बाहेर ।
कर देखाई कोट बेर, तोहे ना मिलो करतार ॥ १

कोट करो बंदगी, बाहेर हो निरमल ।
तोलों ना पीउ पाइए, जोलों ना साधे दिल ॥ २

---

१. सरकाना । २. शिखर । ३. झूठ । ४. पाश । ५. समझ कर । ६. खेंच । ७. अग्नि ।

अहेनिस[1] तूं भेली[2] रहे, अपने पीउके संग ।
पीठ दे तिन पीउ को, करे ऊपर के रंग ।। ३

जैसा बाहेर होत है, जो होए ऐसा दिल ।
तो अधखिन पीउ न्यारा नहीं, माहें रहे हिल मिल ।। ४

तूं आपें न्यारी होत है, पीउ नहीं तुझ से दूर ।
परदा तूंहीं करत है, अंतर न आड़े नूर ।। ५

।। प्रकरण ।। १३२ ।। चौपाई ।। २०७८ ।।

## किरंतन हुक्काको[3] सिंधी भाषा में

विसराई[4] गिन्यो[5] विजे,[6] सूंजी[7] संघारयो विजे ।
रिणायर[8] रेल्यो[9] विजे, मालमकर[10] मोहाड[11], छाला[12] पुजे बंदर पार ।।१

हुक्कोनी तोहिजे हथ में, तूं नीचा उतूडे[13] निहार ।
चुके म चमक द्रूअ[14] जी, से तूं पांण संभार ।। २

हे सफर[15] जे सई[16] थेई, से बेडी न चढचा बीआर[17] ।
हिन जोखे में लाभ अलेखे, तूं अंखडी मंझ उघार ।। ३

जां तूं रिणायर विचमें, अंख ढंकिए कीं ।
हिन रिणायर ज्यों रामायणूं, किन कंने[18] न सुण्यो कडीं ।। ४

जिनी जाणी वंजे साएरें, से कीं निद्र कन ।
हिन सूंजी घणां संघारियां, तूं मालम धीरिए[19] न मन ।। ५

बेडी[20] पुराणी बखर[21] भारी, लगे वा डुबां ।
सार सुखाणी[22] गोस[23] के, तूं उथिए न निद्र मंझां ।। ६

वा लगी जा विचमें, सभ थेई ऊंधाई ।
मालम डिस मोहाडियों[24], रहचो मुझाई ।। ७

पिंजर[25] मथें पिंजरी, रिणें कारी रात ।
हिन पवने घणां पछाडियां, तूं तरसी करिए न तात ।। ८

---

१. दिन रात । २. साथ । ३. दिग्दर्शक यंत्र । ४. भूलन । ५. लिए । ६. जाती है । ७. नींद । ८. सागर (मोह सागर) । ९. बहाव । १०. मल्लाह (जीव) । ११. संभाल । १२. परमात्मा की कृपा । १३. झुक कर । १४. निसाना (परमधाम) । १५. यात्रा (मनुष्य तन) । १६. सफल । १७. दूसरी बार । १८. कानों से । १९. विश्वास । २०. नाव (शरीर) । २१. भार । २२. नाविक (जीव) । २३. करिया (बुद्धि) । २४. सम्मुख । २५. डंडा (ब्रह्म रंद्र चक्र) ।

हाजानी[१] करिए हेठडा, सिड[२] पुराणी पांध[३] ।
हिन आंधिए घणां उंधा विधां, तूं मालम भाएम[४] रांद[५] ॥ ९

मथां अंबर हेठ जर[६], नखत्र न डिसे कोए ।
रिणें रूप घटाइयूं, मालम सुध न पोए ॥ १०

बडर[७] वंजे वीटियों, डिस न डिसे कांए ।
मालम मतू[८] मुझियूं, झूडे[९] मींह मथांए ॥ ११

लेहेरूं डूंगर जेडियूं, हियडे डिन धकां ।
हांणें हथें नीहणण[१०] नाखवा, वंजे गाल हथां ॥ १२

बेडी बंध ढीरा थेया, त्रूटन संधो संध ।
अजां अंख न उपटिए[११], पाणीनी[१२] पूरो मंझ ॥ १३

हिलोडे नीर लेखूं कियां, अने कुओ[१३] पछाडूं खाए ।
पोए तूं कडे[१४] उथीने पापी, पाणी फिरंदे मथांए ॥ १४

विसराई वंजी ओतड[१५] ओलवे[१६], चुआं पुकारे सच ।
कपर[१७] कंदिए कुटका, गच[१८] न मिडंदे गच ॥ १५

विसराईनी कपर ओडडी[१९], तूं सूम[२०] म सुखांणी ।
ही ककी[२१] कंधीअजी[२२], तूं पसे न पांणी ॥ १६

करे कडाका कपरी, गजे गोकांणी[२३] ।
तीखोनी ताणिए तेहडा, तूं सारिए[२४] न सुखांणी ॥ १७

कंधी पस्सी[२५] म कोडजा[२६], सेहेर बजारी हट ।
नेई[२७] घरकां वंजे, विकण दमड़ी वट ॥ १८

साहि[२८] डींनी चाईन[२९] पांणके, बोलीन मोंह मिठां ।
जीरे[३०] मुआं न छुटो मंझां, जे इनी डिठां ॥ १९

---

१. रस्सी । २. बादवान (आयु) । ३. कपड़ा । ४. समझो । ५. खेल (संसार) । ६. जल । ७. बादल । ८. बुद्धि । ९. बरसात (काल) । १० लंगर (शील, संतोष) । ११. खोलिए । १२. मृत्यु । १३. पतवार । १४. कब । १५. औघट । १६. भटकना । १७. किनारा । १८. तख्ता । १९. नजदीक । २०. नींद न कर । २१. मैलाई । २२. किनारा । २३. समुद्र । २४ शंभाल । २५. देख कर । २६. प्रसन्न । २७. लेकर । २८. साहूकार । २९. कहलाते हैं । ३०. जिन्दा रहते हुए ।

जे तूं सजण भाइए, से डुभ्मण[1] संजो[2] डेह[3] ।
मिठडो गालाए मारीन, हथडा विजन[4] कलेजें ॥ २०

हे कूडी[5] कंधी उचक[6] सिधी, तूं हेडा हंड म न्हार ।
रात डींह जागी जफासे[7], तूं पांहिजो पांण संभार ॥ २१

ही तागा पाणी पसे तरे, तूं मुडदम[8] हथां छड ।
हित घणो जागी खेडा[9] जफासे, तां ही कोईक निग्यो[10] मंड ॥ २२

पिरी पुकारे पंजसे[11], मिडंदा लख हजार ।
दुख मंझाए न चोंदा[12] मूहजी, ईं कडई कोए पुकार ॥ २३

काया बेडी समझ समर, साएर[13] लख संसार ।
मालम जीव जगाए साथी, *मेहेराज पुंनों[14] पार ॥ २४

॥ प्रकरण ॥ १३३ ॥ चौपाई ॥ २१०२ ॥

प्रकरण तथा चौपाइयों का पूरा संकलन—प्रकरण ३४७, चौपाई ८४६२

इति श्री महामति श्रीप्राणनाथजी की 'तारतम बानी' का

आठवाँ ग्रन्थ

## ॥ किरंतन संपूर्ण ॥

---

१. दुश्मन । २. समझो । ३. देश । ४. डाल कर । ५. झूठा । ६. उलंघ जा । ७. मेहेनत से । ८. यन्त्र । ९. चलाया । १०. निकला । ११. पाँच शक्तियों से । १२. कहेगा । १३. समुद्र । १४. पहुँचे ।

निजनाम श्री कृष्णजी, अनादि अक्षरातीत ।
सोतो अब जाहेर भए, सबबिध वतन सहित ॥

# ❋ खुलासा ❋

किताब खुलासा[1] बानी हकी सूरत फजरकी[2]
लिखी है, रूहें अरस की दिल दे देखियो

## खुलासा फुरमानका[3]

ए होत फुरमाया हक का, जो किया खुलासा ए ।
किए हादीने जाहेर, याही मगज मुसाफ[4] के ॥ १

ए देखो खुलासा फुरमान का, मोमन करें विचार ।
रूहें हक सूरत दिल में लई, छोड़ी दुनियाँ कर मुरदार[5] ॥ २

चौदे तबक होसी काएम, इन नुकते[6] इलम हुकम ।
हक अरस वाहेदत्त में, हुआ रोसन दिन खसम ॥ ३

बड़ाई नुकते इलम की, कहूँ जाहेर न एते दिन ।
खोले द्वार खिलवत[7] के, एही कुंजी बका वतन ॥ ४

खुले द्वार सब अरसों के, एही रूह अल्ला इलम ।
एही लुदंनी खुदाई, ए कौल हक हुकम ॥ ५

ए कलाम[8] आए हकसे[9], ए नुकता कह्या जे ।
ए जानें विचारें मोमन, जिन वास्ते हुआ ए ॥ ६

किया बेवरा[10] इन वास्ते, उतरे अरससे रूहें फिरस्ते ।
मोमन[11] मुतकी[12] ए सुन के, रेहे ना सकें जुदे ॥ ७

---

१. संक्षेप, सारांश । २. अरुणोदय । ३. आदेश (कुरआन) । ४. धर्म ग्रंथ । ५. मृत तुल्य । ६. बूंद । ७. एकान्त (मूल मिलावा) । ८. वचन । ९. परमात्मा । १०. विवरण । ११. ब्रह्म सृष्टि । १२. देव, ईश्वरीय सृष्टि ।

जाहेर हुआ फुरमान से, क्यों आरफ[१] करें ना सहूर[२] ।
रूहें फिरस्ते और दुनियाँ, ए लिख्या तीनों का मजकूर[३] ॥ ८

देखो दोऊ पलड़े, एक दुनी और अरस अरवाए ।
रूहें फिरस्ते पूजें बका—सूरत[४], और लिख्या दुनियाँ खुदा हवाए[५] ॥ ९

ए जो गिरो अरस अजीम[६] की, तिनपें हकीकत[७] मारफत[८] ।
बड़ी बड़ाई रूहन की, बीच लाहुत[९] बका वाहेदत्त ॥ १०

नूर[१०] मकान से पैदा हुई, ए जो गिरो फिरस्तन ।
काएम वतन से उतरी, सो पोहोंचे न हकीकत बिन ॥ ११

ए बेवरा सिपारे आम में, *इन्ना इन्जुलना सूरत[११] ।
रूहें फिरस्ते दे सलामती[१२], करें हुकम फजर बखत ॥ १२

ए पैदा बनी आदम की, ए जो सकल जहान ।
सो क्यों कर आवे अरस में, बिना अपने मकान ॥ १३

जाहेर सिपारे आठ में, लिख्या पैदा आदम हवाए ।
अबलीस लिख्या दुनी नसलें[१३], और दिल पर ए पातसाह ॥ १४

भया निकाह[१४] आदम हवा, दुनी निकाह अबलीस ।
ए जाहेर लिख्या फुरमान में, पूजे हवा अपनी खाहिस[१५] ॥ १५

तिन हवा हिरससे[१६] पैदा हुई, अपनी खाहिसें जे ।
सो फैल[१७] कर जुदे पड़े, ए जो फिरे दुनियां के फिरके ॥ १६

पैदास बीच अबलीस कह्या, ए जो आदम की नसल ।
पूजे हवा को खुदा कर, दुनियाँ एह अकल ॥ १७

कह्या कुलफ आड़े ईमान के, हवाई का देख ।
दुनी का लिख्या बेवरा, सोए कहूं विवेक ॥ १८

राह पकड़े तौहीद[१८] की, धरे महंमद कदमों कदम ।
सो जानो दिल मोमन, जिन दिल अरस इलम ॥ १९

---

१. ब्रह्म ज्ञानी । २. समझ । ३. चर्चा । ४. अखंड स्वरूप । ५. निराकार । ६ परम धाम । ७. ज्ञान । ८. पहचान । ९. परमधाम । १०. अक्षर धाम । ११. कुरान का अध्याय । १२. सुरक्षा । १३. वंशज । १४. विवाह । १५. इच्छा । १६. लालच । १७. कर्म । १८. एकेश्वर ।

कह्या सेजदा *आदम पर, *अजाजीलें फेरया फुरमान ।
सो लिखी लानत[1] सब को, जो औलाद आदम जहान ।। २०

असल दुनी की ए भई, जो लिखी माहें फुरमान ।
पातसाही अबलीस[2] दिल पर, करत है सैतान ।। २१

गुनाह किया अजाजीलें, दुनी दिल लगी लानत ।
ढूंढ़ें दज्जालको बाहेर, पावें ना लिखी इसारत ।। २२

अबलीस लिख्या दुनी नसलें, पातसाही करे दिलों पर ।
ऐसा लिख्या तो भी ना समझे, ए देखें ना रूह की नजर ।। २३

चौदे तबक के तखत, बैठा मलकूत अजाजील ।
राह मारत सब दुनी दिलों, अबलीस इनों वकील ।। २४

बुरका[3] हवा का सिर पर, ले बैठा बुजरक[4] ।
दे कुलफ[5] आड़े ईमान के, लिए सब हवा के तअलुक[6] ।। २५

तोड़ हवा कुलफ ले ईमान, सोई कह्या सिरदार ।
हवा तरक[7] कर लेवे तौहीद, ए बल पैगंमरी हुसियार ।। २६

पूजे हवा कौल तोड़ के, ए फौज सबे अबलीस ।
लेने बुजरगी जुदे पड़े, कर एक दूजे की रीस ।। २७

सिपारे आठमें मिने, जहूद नसारे जुदे पड़े ।
त्यों कौल तोड़ महंमद के, एक दीन पर रहे ना खड़े ।। २८

कह्या अरस दिल महंमद का, ए पूजत सब पत्थर ।
माएने मुसाफ सब बातून, और ए लेत सब ऊपर ।। २९

लोक लानत जाने अबलीस को, सो तो सब दिलों पातसाह ।
लोक ढूंढ़ें बाहेर दज्जाल को, इन किए तावें[8] अपनी राह ।। ३०

आकीन ना रहे ऊपर का, जो होए जरा समया सखत ।
तो आकीन उठा सबन से, जो आए पोहोंची सरत ।। ३१

---

१. धिक्कार । २. शैतान । ३. पर्दा । ४. बड़ा । ५. ताला । ६. सम्बन्धी । ७. रद्द । ८. आधीन ।

तो जोरा किया दज्जाल ने, देखो आए नामे *वसियत ।
लिखाए *महंमद *मेहेदिएँ, तो भी देखें ना पोहोंची *क्यामत ॥ ३२
दिल मोमन अरस कह्या, कह्या दुनी दिल सैतान ।
ए जाहेर इन विध लिख्या, आरफ क्यों न करें बयान ॥ ३३
जो कोई दुनियाँ कुंन से, आए ना सके माहें अरस ।
जो रूहें फिरस्ते उतरे, सोई अरसों के वारस[१] ॥ ३४
रूहें आइयां जुदे ठौर से, और जुदाई चलन ।
दुनियाँ राह क्यों ले सके, जिन राह मह[२] होवें मोमन ॥ ३५
मोमन रूहें करें कुरबानियाँ, और मता[३] वजूद समेत ।
छोड़ दुनी इस्क लेवहीं, दिल अरस हुआ इन हेत ॥ ३६
अरस कह्या दिल मोमन, कोई एता न करे सहूर ।
आए वजूद बीच आदम, इनों दिल क्यों हुआ रोसन नूर ॥ ३७
दुनी दिल पर अबलीस, दिल मोमन अरस हक ।
कुरान कौल तो ना विचारहीं, जो इनों अकल नहीं रंचक ॥ ३८
ए देखें दिल अरस मोमन, अरस हक विना होए क्यों कर ।
एह विचार तो ना करें, जो कुलफ कहे दिलों पर ॥ ३९
बीच कुरान रूहों का लिख्या, इनों असल अरस में तन ।
यों हक कलाम कहे जाहेर, मैं बीच अरस दिल मोमन ॥ ४०
पत्थर पानी आग पूजत, किन जानी ना हक तरफ ।
कह्या दरिया हैवान[४] का, समझ ना करे एक हरफ ॥ ४१
होए मोम बका की कंकरी, ताए पूजे चौदे तबक ।
कुरान बतावे बका मोमन, पर दुनियाँ अपनी मत माफक ॥ ४२
इत सहूर दुनी का ना चले, सुरैया[५] छोड़े ना इनों अकल ।
सरभर[६] करे मोमन की, जिनकी अरस असल ॥ ४३

---

१. उत्तराधिकारी । २. लीन । ३. पूंजी । ४. पशुत्व । ५. सबसे ऊँचा सितारा (ज्योति स्वरूप) । ६. बराबरी ।

केहेलावें महंमद के, चलें ना महंमद साथ ।
डारें जुदागी[1] दीन में, कहें हम *सुनत जमात ।। ४४

पेहेचान नहीं मोमन की, जिनमें *अहंमद सिरदार ।
जो रूहें कही दरगाह की, बीच बका बारे हजार ।। ४५

ढूंढ़ पाए ना पकड़ें मोमन के, पर हुआ हक हाथ सहूर ।
जो मेहेर करे मेहेबूब, तब ए होए जहूर[2] ।। ४६

दिल मोमन अरस कह्या, बड़ा बेवरा किया इत ।
दुनी दिल पर अबलीस, यों कहे कुरान हजरत[3] ।। ४७

दुनी न छोड़े तिन को, जो मोमनों मुरदार करी ।।
दुनी हवा को हक जानही, रूहों हक सूरत दिल धरी ।। ४८

राह दोऊ जुदी परी, दोऊ एक होवें क्यों कर ।
तरक करी जो मोमनों, सो हुआ दुनी का घर ।। ४९

मोमन उतरे अरस से, सो अरस बिलंदी नूर ।
ए जो रूहें कहीं दरगाह की, हक वाहेदत्त जिनो अंकूर ।। ५०

रूहें अरस अजीम की, जाकी हक हादी निसबत ।
ए हमेसां बीच अरस के, हक जात वाहेदत्त[4] ।। ५१

रूहों तीन बेर खेल देखिया, बीच बैठे अपने वतन ।
बड़ी दरगाह अरस अजीम की, जित असल रूहों के तन ।। ५२

ए हुकमें कजा करी, अव्वल से आखर ।
हक अरस मता मोमन का, लिया सब फिरकों दावा कर ।। ५३

करनी को देखे नहीं, जो हम चलत भांत किन ।
वह दुनियां को छोड़े नहीं, जो मुरदार करी मोमन ।। ५४

मोमनों के माल का, दावा किया सबन ।
तब हो गए खेल कबूतर, हुआ जाहेर बका अरस दिन ।। ५५

---

१. फूट । २. प्रकटी करण । ३. मुहम्मद सा० । ४. अद्वैत का प्रकाश ।

गुनाह एही सबन पर, ए जो झूठी सकल जहान ।
दावा किया वाहेदत्त का, पछतासी हुए पेहेचान ॥ ५६

अब ए सुध किनको नहीं, पर रोसी हुए रोसन ।
ए सब होसी जाहेर, ऊगे काएम[१] सूरज दिन । ५७

रूहें जो दरगाह की, हक जात वाहेदत्त ।
ए जाने अरस अरवाहें, जिन मोमनों निसबत ॥ ५८

और गिरो[२] फिरस्तन को, जिन का काएम वतन ।
दुनियाँ काएम होएसी, सो बरकत गिरोह इन ॥ ५९

और जो उपजे कुंन[३] से, जो आदम की नसल ।
तो दावा किया मोमनों का, जो दुसमन अबलीस असल ॥ ६०

लिख्या सिपारे चौद में, गिरो भाँत है तीन ।
महंमद समझाओ तिनों त्यों कर, जिनों जैसा आकीन ॥ ६१

किया तीनों गिरो का बेवरा, सरीयत तरीकत हकीकत ।
हुकम हुआ महंमद को, कर तीनों को हिदायत[४] ॥ ६२

हकीकतसों[५] समझावना, समझें इसारतसों मोमन ।
हक सूरत दृढ़ कर दई, तब दिल अरस हुआ वतन ॥ ६३

और राह जो तरीकत[६], गिरो फिरस्तों बंदगी कही ।
सो समझें मीठी जुबांन सो, समझ पोहोंचें जबरूत[७] सही ॥ ६४

तीसरी गिरो सरियत से, जो करसी जेहेल[८] जिद्दाल[९] ।
सो समझेंगे जिद्दसो, क्या करे पड़े बंध दज्जाल ॥ ६५

ए पढ़े सब जानत हैं, दिल पर दुसमन पातसाह ।
ले लानत बैठा दिल पर, ए अबलीस मारत राह ॥ ६६

कुरान पढ़ें चलें सरिएत, करें दावा मोमनों राह ।
पर क्या करें कुंजी बिना, पावें ना खुलासा ॥ ६७

---

१. स्थाइ । २. ईश्वरीय सृष्टि । ३. "होजा" । ४. मार्ग दर्शन । ५. यथार्थ ज्ञान ।
६. उपासना । ७. अक्षर धाम । ८. नादान, अज्ञानी । ९. लड़ाई ।

मोमन दुनी ए तफावत,[1] ज्यों खेल और देखनहार ।
मोमन मता हक वाहेदत्त, दुनियां मता मुरदार ॥ ६८

सबों दावा किया अरस का, हिंदू या मुसलमान ।
वेद कतेब दोऊ पढ़े, पड़ी न काहूँ पेहेचान ॥ ६९

कह्या दावा सब का तोड़्या, दिया मता मोमनों को ।
लिए अरस वाहेदत्त में, और कोई आए न सके इनमों ॥ ७०

सिपारे सताईस में, लिखे दुनी के सुकन ।
ए क्योंए पाक न होवहीं, एक तौहीद[2] आब[3] बिन ॥ ७१

मोकों पाक होए सो छुइयो, यों केहेवे फुरमान ।
करे गुसल तौहीद आब में, इन पाकी पकड़ो कुरान ॥ ७२

सो पाक[4] कहे रूह मोमन, जिनको तौहीद मदत ।
सो पीठ देवें दुनीअ को, जिनपें मुसाफ मारफत ॥ ७३

सो सरिएत कों है नहीं, ए तो खड़े जाहेरी ऊपर ।
एक हादी के लड़ जुदे हुए, ए जो नारी फिरके बहत्तर ॥ ७४

लिख्या कुरान का माजजा, और नबीको नबुवत ।
एक दीन जब होवही, दोऊ तब होवे साबित ॥ ७५

महंमद चाहे सबों मिलावने, ए सब जुदागी डारत ।
ए सब गुमाने जुदे किए, दुसमन राह मारत ॥ ७६

एक फिरका नाजी कह्या, जित लिखीं हक हिदाएत[5] ।
एक दीन किया चाहे, एही मोमनों वाहेदत्त ॥ ७७

बसरी मलकी और हकी, लिखी महंमद तीन सूरत ।
होसी हक दीदार सब को, करसी सबों सिफाएत[6] ॥ ७८

इनों हक बका देखाए के, करसी सबों एक दीन ।
हक सूरत दृढ़ कर दई, देसी सबों आकीन ॥ ७९

---

१. अन्तर । २. एकेश्वर । ३. जल (अमृत) । ४. पवित्र । ५. आदेश । ६. सिफारिश ।

मोमन गुसल हौज कौसर, माहें ईसा मेहेदी महंमद ।
पकड़ें एक वाहेदत्त को, और करें सब रद ॥ ८०
हक बतावत जाहेर, मेरे खूबों में महंमद खूब[१] ।
सो मोमन छोड़ें क्यों कदम, जाको हकें कह्या मेहेबूब[२] ॥ ८१
मासूक आसक दोऊ जाने दुनी, हक मोमन माहें खिलवत ।
उतरी अरवाहें अरस से, तो भी पढ़े न पावें वाहेदत्त ॥ ८२
महंमद बतावें हक सूरत, तिनका अरस दिल मोमन ।
सो अरस दिल दुनी छोड़ के, पूजे हवा उजाड़ जो सुंन ॥ ८३
अबलीस कह्या दुनी दुसमन, तो किया मोमनों मता का दावा ।
सो समझे ना इसारतें[३], जिन ताले[४] अबलीस हवा ॥ ८४
जोस गिरो मोमनों पर, हकें भेज्या जबराईल ।
रूहें साफ रहें आठो जाम, और अबलीस दुनी दिल ॥ ८५
अरस से आया *असराफील, दिया कै बिध सूर बजाए ।
सो सोर पड़्या ब्रह्मांड में, पाक किए काजी कजाए ॥ ८६
तो अरस कह्या दिल मोमन, पाया अरस खिताब[५] ।
इतहीं गिरो पैगंमरों, काजी कजा इत किताब ॥ ८७
फुरमान आया इमाम पर, कुंजी रूह अल्ला इलम ।
खुली हकीकत हुकमें, इसारतें रमूजें खसम ॥ ८८
जो लिख्या जिन ताले मिने, माहें हक फुरमान ।
रूहें फिरस्ते और कुंन से, तीनों की नसल कही निदान[६] ॥ ८९
बेवरा हुआ मुसाफ का, एक दुनियाँ और अरस हक ।
हक अरस में सब कह्या, दुनियाँ नहीं रंचक ॥ ९०
और बेवरा कह्या जाहेर, दुनियाँ और मोमन ।
दुनी पैदा जुलमत[७] से, मोमन असल अरस तन ॥ ९१

---

१. बढ़िया । २. प्यारा । ३. संकेत । ४. किस्मत । ५. पदवी । ६. अन्त में । ७. अन्धकार ।

ए जो दुनियां चौदे तबक, हक के खेलौने ।
ऐसे कै पैदा होत हैं, कोई कायम न इनो में ॥ ९२

सांच और झूठ को, दोऊ जुदे किए बताए ।
हक मोमन बिना दुनियाँ, बैठी कुफर खेल बनाए ॥ ९३

जब खुली मुसाफ मारफत, तब हुआ बेवरा रोसन ।
खेल भी हुआ जाहेर, हुए जाहेर बका मोमन ॥ ९४

दुनियाँ दिल पर अबलीस, तो राह *पुलसरात कही ।
वजूद न छोड़े जाहेरी, तो दस भाँत दोजख भई ॥ ९५

भिस्त दई तिन को, जो हुते दुसमन ।
सबों लई थी हुज्जत[१], हम वारसी ले मोमन ॥ ९६

मेहेर हुई दुनियाँ पर, पाई तिनों आठों भिस्त ।
बीज बुता[२] कछू ना हुता, करी हुकमें किसमत ॥ ९७

मेहेर करी बड़ी महंमदें, आठों भिस्तों पर ।
दोऊ गिरो दोऊ अरसों, पोहोंचे रूहें फिरस्ते यों कर ॥ ९८

कोई आए न सके अरस में, जाकी नसल आदम निदान ।
दई हैयाती[३] सबन को, मेहेर कर सुभान ॥ ९९

करें हिंदू लड़ाई मुझसे, दूजे सरिएत मुसलमान ।
पाया अहंमद[४] मासूक हक का, अब छोड़ों नहीं फुरकान[५] ॥१००

छत्ते[६] आगा लिया इन समे, जब दोऊ से लागी जंग ।
हुकम लिया सिर आकीन, छोड़ दुनी का संग ॥१०१

किया खुलासा जाहेर, ले बेसक हक इलम ।
दिया महंमद मेहेदीने, गिरो मोमनों हाथ हुकम ॥१०२

॥ प्रकरण ॥ १ ॥ चौपाई ॥ १०२ ॥

---

१. दलील, तर्क । २. अस्तित्व । ३. अमर पद । ४. श्री देवचंन्द्र जी । ५. कुरान ।
६. महाराजा छत्रसाल ।

## खुलासा गिरो दीन का

देखो खुलासा गिरो दीन का, कहूं फुरमाया फुरमान ।
हक हादी गिरोह अरस की, सक भांन कराऊं पेहेचान ।। १

हक सूरत हादी साहेद, मसहूद[1] है उमत ।
सो हक खिलवत सब जानही, और ए जाने खेल रोज क्यामत ।। २

हक बकामें जेता मता, सो छिपे ना मोमनों से ।
खेल में आए तो भी अरस दिल, ए लिख्या फुरमान में ।। ३

लिख्या *नामें—म्याराज में, हरफ नब्बे हजार ।
तीस तीस तीनों सरूपों पर, दिए जुदे जुदे अखत्यार ।। ४

एक जाहेर किए बसरिएँ[2], दूजे रखे मलकी[3] पर ।
तीसरे सूरत हकीअ[4] पें, सो गुझ खोल करसी फजर ।। ५

कही सूरत तीन रसूल की, हुई तीनों पर इनाएत[5] हक ।
किया तीनों का बेवरा, हरफ नब्बेहजार बेसक ।। ६

राह चलाई बसरिएँ फुरमानें, दई कुंजी मलकी हकीकत ।
हकी हक सूरत, किया जाहेर दिन मारफत[6] ।। ७

ए अव्वल कह्या रसूलें, होसी जाहेर बखत क्यामत ।
मता सब म्याराज का, करी जाहेर गुझ खिलवत ।। ८

ए जो कागद *वेद *कतेब के, तामें जरा न हुकम बिन ।
दुनियां सब तिन पर खड़ी, ए जो *अठारे वरन ।। ९

कलाम अल्ला जो फुरमान, सो इन सब से न्यारा जान ।
ल्याया पैगंमर आखरी, हक के कौल परवान ।। १०

कह्या महंमद का सब हुआ, जो काफर करते थे रद ।
फिरबले सबन पर, महंमद के सब्द ।। ११

इत मुनाफक[7] खतरा ल्यावते, जो कुराने कही क्यामत ।
सो खास रूहें मोमन आए, जाके दिल अरस न्यामत ।। १२

---

१. उपस्थित (मशहूद) । २. मुहम्मद सा० । ३. श्री देवचन्द्र जी । ४. श्री प्राणनाथ जी । ५. कृपा । ६. पूर्ण पहचान । ७. कपटी ।

ए देखो तुम बेवरा, कहावें बंदे महंमद ।
सहूर ना करे बातून, कोई न देखे छोड़ हद ।। १३
ए दुनियां किन पैदा करी, कौन ल्याया *हूद तोफान ।
किन राखी गिरोह[1] कोहतूर तले, किन डुबाई सब जहान ।। १४
किन फेर दुनी पैदा करीं, फेर कौन ल्याया नूह तोफान ।
किन ऐसी किस्ती कर तारी गिरो, किन डुबाई सब कुफरान[2] ।। १५
तींन बेटे *नूह नवीअ के, बेर तीसरी दुनी इनसे ।
हक फुरमान गिरो ऊपर, महंमद ल्याए इनमें ।। १६
कह्या स्याम बाप उन लोकों का, रूम[3] फारस[4] आरबन[5] ।
सब तुरकों बाप याफिस, हाम बाप हिंदुस्तान सबन ।। १७
कुरान हकीकत न खुली, ना स्याम रसूल पेहेचान ।
ना पावें महंमद गिरोह को, जो सौ साल पढ़े कुरान ।। १८
ए सब मुखथें कहें महंमद को, ए अव्वल[6] ए आखर ।
बड़े काम नजीकी हक के, ए किन किए महंमद बिगर ।। १९
एक खुदा हक महंमद, हर जातें पूजें धर नाऊं ।
सो दुनियां में या विना, कोई नहीं कित काहूं ।। २०
ओ खासी गिरो और महंमद, आए दो बेर माहें जहूदन[7] ।
गिरो बचाई काफर डुबाए, ए काम होए ना महंमद बिन ।। २१
सब जातें नाम जुदे धरे, और सबका खावंद एक ।
सबको बंदगी याही की, पीछे लडे बिन पाए विवेक ।। २२
रूहें अरससे *लैलत कदरमें, हक हुकमें उतरे बेर तीन ।
सुध खास गिरो न महंमद, कहे हम महंमद दीन[8] ।। २३
एक बेर गिरो *हूद घर, बेर दूजो किस्ती पर ।
तीसरी बेर मास हजार लों, सदी अग्यारहीं हिसाब फजर ।। २४

---

१. ब्रह्म सृष्टि । २. काफिर । ३. रोम । ४. ईरान । ५. अरब । ६. पहले । ७. यहूदी (अमुसलिम) । ८. धर्म । ९. धर्म ।

जाहेर पेहेचान कही रसूलें, गिरो खासी और क्यामत ।
सहूर करे दिल अकलें, तो दोऊ पावें हकीकत ।। २५

हजार साल कहे दुनी के, सो खुदाए का दिन एक ।
*लैलत कदर का टूक[१] तीसरा, कह्या हजार महीने से विसेक ।। २६

सौ साल रात अग्यारहीं लग, एक दिन के साल हजार ।
अग्यारैं सदी अंत फजर, एही गिरो है सिरदार ।। २७

रूहें गिरो इत आईं नहीं, तो यों करी सरत ।
कह्या खुदा हम इत आवसी, फरदारोज क्यामत ।। २८

जब एक रात एक दिन हुआ, सो एही फरदा क्यामत ।
एहेल[२] किताब मोमन कहे, हादी कुरान सूरत ।। २९

आए *वसीएतनामें मके से, उठया कुरान दुनी से बरकत ।
सो अग्यारै सदी अंत उठसी, रूहें हादी कुरान सोहोबत ।। ३०

झंडा *ईसे मेहेदीयने, खड़ा किया है जित ।
सो आई इत न्यामतें, हक हकीकत मारफत ।। ३१

कही थी बरकत दुनी में, सो दुनियां माफक ईमान ।
सो भी जाहेर ठौर सबे उठे, हिंदू या मुसलमान ।। ३२

जब मुसाफ हादी गिरो चली, पीछे दुनी रहे क्यों कर ।
खेल किया जिन वास्ते, सो जागे अपनी सरत पर ।। ३३

देखो तीन बेर गिरो वास्ते, हक हुए मेहेरबान ।
राख लई गिरो पनाह[३] में, डुबाय दई सब जहान ।। ३४

रसूल आए जिन बखत, कंगूरा गिरा बुतखाने[४] का ।
तब लोगों कह्या रसूल का, जाहेर होने का माजजा[५] ।। ३५

अब देखो माजजा रब्ब आखरी, सब उठाए सेजदे ठौर ।
रोसन हुआ दिन अरस बका, कोई ठौर रही ना सेजदे और ।। ३६

---

१. भाग । २. वारिस । ३. शरण । ४. मूर्त्ति गृह । ५. चमत्कार ।

सिपारे[1] ओगनतीसमें, इन विध लिखे कलाम ।
अरस बका पर सेजदा, करावसी इमाम ॥ ३७
और आगे बुत[2] बोले हुते, सांचा आखरी पैगंमर ।
फुरमान ल्याया हक का, तुम झूठे हो काफर ॥ ३८
अब बैत—अल्ला[3] पुकारत, भेजी साहेदी नामे—*वसीएत ।
तो भी दुनी ना देखे, जो ऐसे सौं खाय लिखे सखत ॥ ३९
मके मदीने दीन का, खड़ा था निसान ।
सो हुआ फुरमाया हक का, करसी दज्जाल कुफरान ॥ ४०
तो जोरा किया दज्जालने, लोकों छुड़ाय दिया आकीन ।
अग्यारै सदी के आखर, रह्या न किन का दीन ॥ ४१
गजब हुआ दुनी पर, खैंच लिया फुरमान ।
हादी भेजे *नामे *वसीएत, इत रह्या न किनों ईमान ॥ ४२
आए देव फुरमाए हक के, बीच हिंदुस्तान ।
करो सबों पर अदल, मार दूर करो सैतान ॥ ४३
आया बीच हिंदुअन के, मुसाफ हक हुकम ।
सो खलक रानी गई, जिन छोड़े हक हादी कदम ॥ ४४
फुरमान दूजा ल्याया *सुकदेव, सो ढाँप्या था एते दिन ।
सो प्रगट्या अपने समे पर, हुआ हिंदुओं में रोसन ॥ ४५
परमहंस ज़ाहेर भए, जाहेर धाम धनी अखंड ।
कुली—कालिंगा[4] मारिया, मुक्ति दई ब्रह्मांड ॥ ४६
झूठ अमल सबे उठे, आए साहेब बीच हिंदुअन ।
*दाभा जाहेर हुई मक्के से, आए हिंद में मेहेदी मोमन ॥ ४७
दो बेर डुबाई जहान को, गिरो दो बेर बचाई तोफान ।
तीसरी बेर दुनी नई कर, आखर गिरो पर ल्याए फुरमान ॥ ४८

---

१. कुरान का एक अध्याय । २. मूर्ति । ३. मक्का । ४. कलियुग ।

यों अरस गिरो जाहेर करी, माहें कुरान पुरान ।
किन पाई ना सुध रूहें अरस की, आप अपनी आए करी पेहेचान ॥ ४९

एही खासी गिरो हादी संग, एही फरदा क्यामत ।
जाहेर देखावे नामे *वसीयत, कछू छिपी ना रही हकीकत ॥ ५०

सो पेहेचान क्यों कर सके, जो पकड़े *पुलसरात ।
छोड़े ना वजूद नासूती[१], जान बूझके कटात ॥ ५१

नासूत ऊपर लोक जानत, आसमान सात में मलकूत[२] ।
तिन पर हवा[३] जुलमत, तिन पर नूर बका जबरूत[४] ॥ ५२

बुजरगी पैगंमरों, पाई जबराईल से ।
हुए नजीकी हक के, सो सब न्यामत दई इनने ॥ ५३

सो जबराईल जबरूत से, आगे लाहूत में न जवाए ।
नूर तजल्ला की तजल्ली, पर जलावत ताए ॥ ५४

जबरूत ऊपर अरस लाहूत, इत महंमद पोहोंचे हजूर ।
रद—बदल[५] बंदगी वास्ते, करी हकसों आप मजकूर ॥ ५५

ल्याए फुरमान इसारतें इत थें, सो नासूती क्यों समझाए ।
मारफत अरस अजीममें, ए *पुलसरातें अटकाए ॥ ५६

जाहेर लिखी आदम की, सब औलाद पूजे हवाए ।
एक महंमद कहे मैं पोहोंचिया, नूर पार सूरत खुदाए ॥ ५७

दुनियाँ चौदे तबक में, किन सुरैया उलंघी ना जाए ।
फना तले ला मकान के, ए तिनमें गोते खाए ॥ ५८

हक सूरत किन देखी नहीं, है कैसी सुनी न किन ।
तरफ न जानी चौदे तबकमें, महंमद पोहोंचे ठौर तिन ॥ ५९

करी महंमदें मजकूर तिनसे, सुने हरफ नब्बे हजार ।
जहूद तिन साहेब को, कहे सुंन निराकार ॥ ६०

---

१. नश्वर । २. बैकुंठ । ३. शून्य निराकार । ४. अक्षर धाम । ५. बात चीत ।

ए भी कहें हक की सूरत नहीं, जो कहावें महंमद के ।
सोई सब्द सुन पकड़्या, आगूं काफर केहेते थे जे ।। ६१

तो काहे को कहावें महंमद के, जो इतना न करें सहूर ।
कौल महंमद का रद्द होत है, जो हकसों किया मजकूर[1] ।। ६२

जासों पाई बुजरगी महंमदें, हक मिलेके सुकन[2] ।
सो सुकन टूटत हैं, कर देखो दिल रोसन ।। ६३

काफर न माने हक सूरत, ताको कछू अचरज नाहें ।
पर केहेलावें महंमद के पूजें हवा, ए बड़ा जुलम दीन माहें ।। ६४

कहे महंमद करूं मैं एक दीन, जिन कोई जुदे पड़त ।
कुरान माजजा मेरी नबुवत, हुए एक दीन होए साबित ।। ६५

तुम करत मुझसे दुसमनी, मैं किया चाहों एक राह ।
तो जुदे पड़त कै दीन से, जो दिलों अबलीस पातसाह ।। ६६

कुरान माजजा नबी नबुवत, साबित हुआ न चाहें ।
लड़ फिरके जुदे हुए, बुजरग कहावें दीन माहें ।। ६७

आए रसूलें हक जाहेर किया, किया अरसों[3] का बयान[4] ।
*हौज *जोए बाग कै बैठकें, सब हकीकत ल्याया फुरमान ।। ६८

कहावें फिरके बुजरग, हुए आपमें दुसमन ।
*महंमद मता[5] अरस बका, लिया चाहे न हवा के जन ।। ६९

जो लों हक सूरत पावें नहीं, तो लों महंमद औरों बराबर ।
दई कै बुजरगियां, लिखे लाखों पैगंमर ।। ७०

तब पावें रसूल की बुजरगी, जब पेहेचान होवे हक ।
हकें मासूक[6] कह्या तो भी ना समझें, क्या करे आम खलक ।। ७१

जाहेर राह मारे दुसमन, अबलीस दिलों पर ।
जाहेरी इलमें नफा ना ले सके, पेहेचान होए क्यों कर ।। ७२

---

१. चर्चा । २. वचन । ३. धाम परमधाम । ४. वर्णन । ५. पूंजी । ६. प्यारा ।

बका पोहोंच्या एक *महंमद, कही जिनकी तीन सूरत ।
तित और कोई न पोहोंचिया, जो लई इनो बका खिलवत ॥ ७३
देसी हकीकत सब अरसों की, नूर जमाल सूरत ।
केहेसी निसबत वाहेदत्त, रखे न खतरा बीच खिलबत ॥ ७४
सरत करी जो रसूलें, सो पोहोंच्या आए बखत ।
तिन इमामको ना समझे, जिनपें कुंजी क्यामत ॥ ७५
बका से आए रूह अल्ला, और महंमद मेहेदी इमाम ।
मैं जो करी मजकूर, सो देसी साहेदी तमाम ॥ ७६
कुरान माजजा नबी नबुवत, दोऊ साबित[१] होवें तब ।
दज्जाल मारके एक दीन, आए रूह अल्ला करसी जब ॥ ७७
*मसी और *इमाम, जब देसी मेरी साहेदी ।
मैं गुझ करी नूर जमालसों, सो होसी जाहेर बुजरगी ॥ ७८
मैं दुनियां ल्याया जो दीन में, सो मैं देखत हों अब ।
फिरके होसी मेरे तेहेत्तर, आखर होएगी तब ॥ ७९
तब ए बुजरग आवसी, साहेब जमाने के ।
हक करसी हिदायत[२] तिनको, इनों संग *नाजी फिरका जे ॥ ८०
हरफ गुझ जो हुकमें, मैं रखे छिपाए ।
सो अरस मता हक खिलवत[३], जाहेर करसी आए ॥ ८१
मता सब म्याराज[४] का, किया अरसमें हकें मजकूर ।
जो मेहेर हमेसा मुझपर, सोए सब करसी जहूर ॥ ८२
और फिरके सब आवसी, और सब पैगंमर ।
होसी हिसाब सबन का, हाथ हकी सूरत फजर ॥ ८३
ए जाहेर लिख्या फुरमानमें, पर खुले ना विना खिताब ।
गुझ बातून होसी जाहेर, जब हक लेसी हाथ किताब ॥ ८४

---

१. प्रमाणित । २. उपदेश । ३. मूल मिलावा । ४. साक्षात्कार ।

हक जाहेर हुए बिना, मेरी बुजरकी[1] जाहेर क्यों होए ।
काएम सूर ऊगे बिना, क्यों चीन्हे रात में कोए ।। ८५
अरस कह्या दिल मोमन, सब अरस में न्यामत ।
कह्या और दिलों पर अबलीस, अब देखो तफावत ।। ८६
मोमन हक बिना कछू ना रखें, करी मुरदार चौदे तबक ।
महंमदें मोमनों राह ए लई, ए राह क्यों ले हवाई—खलक[2] ।। ८७
महामत कहें ऐ मोमनों, राह बका ल्योगे तुम ।
जिन का दिल अरस कह्या, औरों ना निकसे मुख दम ।। ८८

।।प्रकरण ।। २ ।। चौपाई ।। १९० ।।

## खुलासा म्याराजका

हक हादी रूहनसों, जो किया कौल अव्वल ।
ए खुलासा म्याराजका, जो रूहों हुई रद बदल ।। १
कौल *अलस्तो बे रब्ब का, किया रूहोंसों जब ।
हक इलम ले देखिए, सोई साइत[3] है अब ।। २
तब बले कह्या अरवाहोंने, अरससे उतरते ।
किया जवाब हकने, रूहों याद किया चाहिए ए ।। ३
तुम माहों माहें रहियो साहेद, मैं केहेता हों तुम को ।
याद राखियो आपमें, इत मैं भी साहेद हों ।। ४
और साहेद किए फिरस्ते, जिन जाओ तुम भूल ।
फुरमान भेजूंगा तुम पर, हाथ मासूक रसूल ।। ५
म्याराज हुआ महंमद पर, तोलों हलता है ऊजू[4] जल ।
बैठक गरमी ना टरी, बेर ना भई एक पल ।। ६
दिया निमूना अरवाहों को, एक पलक बेर जान ।
बले जवाब रूहों कह्या, अजूं सोई अवाज बीच कान ।। ७

१. बड़प्पन । २. माया के जीव । ३. घड़ी । ४. हाथ मुँह धोना ।

उतर आए नासूतमें[1], भूल गए अरस की ।
इत पैदा फना के बीचमें, जाने हम हमेसगी ॥ ८

अरस रूहें भूली नासूतमें, इनसों हक हादी निसबत ।
ताए लिख भेज्या फुरमानमें, अजूं सोई है साइत ॥ ९

हाए हाए ए समया क्यों ना रह्या, ए कैसा भोम का बल ।
तो कह्या सिखरा[2] सींग पर, रेहे ना सके एक पल ॥ १०

आए पड़े तिन फरेब में, चौदे तबकों न बका तरफ ।
फना बीच सब खेलत, कोई बोल्या न बका हरफ ॥ ११

खेल झूठा झूठी रसमें, रूहें गैयां तिनमें मिल ।
अब सीधा क्योंए ना होवहीं, जो हुकमें फिराया दिल ॥ १२

कौल किया हकें इनसों, बीच खिलवत रूहों मजकूर ।
दिया इलम लुदंनी इनको, ए बीच दरगाह बिलंदी नूर ॥ १३

देखो बड़ी बड़ाई इनकी, हकें मासूक भेज्या इन पर ।
भेजी हाथ कुंजी रूह अपनी, और दई अपनी आमर[3] ॥ १४

हुकम दिया दिल अरस किया, हकें कह्या महंमद मासूक ।
ए कौल सुन रूह मोमन, हाए हाए हुए नहीं टूक टूक ॥ १५

जो कौल किए बीच खिलवत, हक हादी रूहों मिल ।
सो क्यों तुमें याद न आवही, अरसमें तन तुम असल ॥ १६

लिखे पहाड़ कर ईसा महंमद, ए निसान आखर के ।
हक बका अरस देखावहीं, दिन जाहेर करसी ए ॥ १७

लिख्या सूरज मारफत का, होसी जाहेर महंमद से ।
आईं अरस रूहें गिरो अहंमदी, किए जाहेर *जबराईलें ॥ १८

करसी बका अरस जाहेर, ताके निसान पहाड़ बिलंद ।
आखर अपने कौल पर, आए जमाने खावंद ॥ १९

---

१. मृत्यु लोक । २. राई के दाना । ३. आदेश ।

हक बका का किबला, कह्या जाहेर होसी आखरत ।
पावें ना माएना जाहेरी, मुसाफ माएने इसारत[1] ॥ २०

हकें बुजरगी वास्ते, लिखी इसारतें पहाड़ कर ।
सो दुनी पूजे पहाड़ जाहेरी, इनों नाहीं रूहकी नजर ॥ २१

कहे कुरान इन जिमीसे, तरफ न पाई अरस हक ।
ए तेहेकीक किन ना किया, कै ढूंढ थके बुजरक ॥ २२

जो बची गिरोह *कोहतूर तले, और तोफान किस्ती पर ।
बेर तीसरी *लैलत कदरमें, जिन रोज क्यामत करी फजर ॥ २३

सोई गिरोह इसलाम[2] की, खेल लैल[3] देखा दो बेर ।
तीसरी बेर फजर की, जाके इलमें टाली अंधेर ॥ २४

सिर बदले जो पाईए, महंमद *दीन इसलाम ।
और क्या चाहिए रूहन को, जो मिले आखर गिरोह स्याम ॥ २५

ए जो पैदा जुलमत से, सों कुंन केहेते उपजे ।
मगज मुसाफ न पावत, लेत माएने ऊपर के ॥ २६

कौल हमारे नूर पार के, सो क्यों समझें जुलमत के ।
कुंन केहेते पैदा हुए, ला मकान के जे ॥ २७

लैलत कदरमें रूहें फिरस्ते, जो अरससे उतरे ।
कौल किया हकें जिनसों, नूर वानी से समझेंगे ॥ २८

फना[4] जिमीके बीचमें, जाहेरी पहाड़ पूजत ।
दुनिया नजर फना मिने, अरस बका न काहूँ सूझत ॥ २९

दिल हकीकी अरस मोमन, कह्या तिन दिलकी भी तरफ नांहें ।
वाकी इत तरफ क्यों पाईए, दिल रहत अरस तन मांहें ॥ ३०

दिल अरस मोमन कह्या, जामें अमरद[5] सूरत ।
छिन ना छूटे मोमनसे, मेहेबूब की मूरत ॥ ३१

---

१. संकेत । २. सत्य धर्म (ब्रह्मसृष्टि) । ३. रात (ब्रज, रास) । ४. नश्वर । ५. किशोर ।

ए जो फजर सूर असराफील, नुकता हुकम बजावत ।
ले कुफर बैठे पहाड़ से, सो जरे ज्यों उड़ावत ॥ ३२

और कुफर दुनी जो पहाड़सी, सूर दूजे काएम करत ।
हकें मेहेर कर मोमनों पर, बातून माएने लिखत ॥ ३३

फिरस्ता नजीकी बुजरग, किया सब जिमी सेजदा जिन ।
दई लानत न किया सेजदा, रद्द किया वास्ते मोमन ॥ ३४

दिल मोमन अरस कह्या, ए जो असल अरसमें तन ।
ए लिख्या फुरमानमें जाहेर, पर किया न बेवरा किन ॥ ३५

औलिया[1] लिल्ला[2] रूहें मोमन, बोहोत नाम धरे उमत ।
ए सब बड़ाई गिरो एक की, जो अरस रूहें हक निसबत ॥ ३६

हकें कलाम लिखे अपने, कहे मैं भेजे मोमनों पर ।
सो फिरका खोले इसारतें रमूजें, बिन मोमन न कोई कादर ॥ ३७

हकें लिख्या मैं करूँ हिदायत, एक नाजी फिरके को ।
हुआ हजूर ले हक इलम, जले बहत्तर दोजखमों ॥ ३८

लिखियां सब बड़ाइयां, तिन सब सिर हक हुकम ।
सो सब आमर दई हाथ रूहन, इनों दिल अरस कर बैठे खसम ॥ ३९

और दिल हकीकी अरस मोमन, हकें दिल अरस कह्या इन ।
दिल मजाजी[3] गोस्त टुकड़ा, और ऊपर कह्या दुसमन ॥ ४०

दुनियां दिल मजाजी अबलीस, दिल हकीकी पर हक ।
एक गिरो दिल अरस कही, सोई अरस रूहें बुजरक ॥ ४१

रूहकी नजरों पाइए, जो हक के नजीकी ।
सो बैठे अपने मरातबे, देवे हक कलाम साहेदी ॥ ४२

बड़ा फिरस्ता मलकूत का, जाए सके ना जबरूत जित ।
सुनने हकीकत कुरान की, रखता नहीं ताकत ॥ ४३

---

१. मित्र । २. खुदा । ३. झूठ ।

मलकूत[1] जबरूत[2] लाहूत[3], ए अरस कर तीनों लिखे ।
मलकूत फना बीचमें, जबरूत लाहूत बका ए ॥ ४४

नूर मकान जबरूत जो, पोहोंच्या जबराईल जित ।
अरस अजीम जो लाहूत, हक हादी रूहें बसत ॥ ४५

आगूं जबराईल जाए ना सक्या, वाको हद जबरूत ।
पोहोंच्या न ठौर रूहन के, जित नूर बिलंद लाहूत ॥ ४६

हक हादी रूहें रूह अल्ला, ए बीच अरस वाहेदत्त ।
करे इलम लुदंनी बेवरा, इत और न कोई पोहोंचत ॥ ४७

वाहेदत्त[4] निसबत अरस की, जब जाहेर हुई खिलवत ।
ए सुकन सुन मोमन, दिल लेसी अरस लज्जत ॥ ४८

ए बीच हमेसा खिलवत के, इनको हक मारफत ।
वाहेदत्त एही केहेलावहीं, बीच अरस अजीम उमत ॥ ४९

बीच म्याराज इसारतें, मासूक लिख भेजत ।
हांसी करने रूहन पर, ए जो फरेब[5] देखाया इत ॥ ५०

हक अरस नजीक सेहेरगसे, दोऊ हादी खोले द्वार ।
बैठाए अरस अजीममें, जो कह्या म्याराजें नूर पार ॥ ५१

किन तरफ न पाई अरस हक की, माहें चौदे तबक ।
सो खोल दिए पट हादिएँ, इलम ईसे के बेसक ॥ ५२

देखो मरातबा मोमनों, बोलें न म्याराज बिन ।
जो हकें हरफ छिपे रखे, वास्ते अरस रूहन ॥ ५३

म्याराज में जो इसारतें, हक इलमें खोलें मोमन ।
कहें गुझ छिपा दिल हक का, कोई ना कादर[6] या बिन ॥ ५४

कै जोरा किया *जबराईलें, आया एक कदम *महंमद खातर ।
तो भी आगूं आए ना सक्या, कहे जलें मेरे पर ॥ ५५

---

१. बैकुंठ । २. अक्षर धाम । ३. परमधाम । ४. अद्वैत (एकत्व) । ५. छल । ६. समार्थ्य वान ।

चढ़ उतर के देखाइया, वास्ते राह मोमन ।
जो रूहें उतरी लैलत कदरमें, सो चढ़ जाएंगे अरस वतन ॥ ५६

इसारतें *म्याराज में, लिख भेजियां हक ।
सो खोलें हम इसारतें, पढ़ाएल[१] रूह अल्ला के बेसक ॥ ५७

कह्या मीठा दरिया उजला, जो देख्या नबी नजर ।
तिन किनारें दरखत, जित बैठा जानवर ॥ ५८

अंदर *मुरग जो कह्या, बैठा हुकम के दरखत ।
इत ना पोहोंच्या जबराईल, सो मोमन खोले मारफत ॥ ५९

चुटकी खाक ले चोंच में, मुरग बैठा दरखत पर ।
पर ना जलें इन मुरग के, सो कोई देवे एह खबर ॥ ६०

हादी पूछ्या हक से, क्यों खाक धरी चोंच में ।
खेल उमतें मांगिया, गुनाह वजूद[२] हुआ तिनसे ॥ ६१

लिख्या दरिया नीद इसारतें, जो देखाई कर मेहेरबानगी ।
मोहे रूह अल्ला पट खोलिया, दई महंमदें म्याराज में साहेदी ॥ ६२

ए जो मुरग म्याराजमें अंदर, हर साइत यों केहेता था ।
जो छोडूं खाक चोंचसे, तो दरिया होए जाए अंधेरा ॥ ६३

दरिया उजला दूधसा, मेहेर मीठा मिश्री ।
ए दरिया कबूं न होए अंधेरा, ए हकें रूहों पर मेहेर करी ॥ ६४

कह्या खाक वजूद नासूती, हादी[३] बैठा वजूद धर ।
दुनी दरिया अंधेरी, हादी चलें ना होए क्यों कर ॥ ६५

हकें देखाया दरिया मेहेर का, सो अंधेरा क्योंए ना होए ।
करसी काएम चौदे तबक, बरकत हादी रूहों सोए ॥ ६६

नूरतजल्ला[४] बीचमें, हक हादी रूहों खिलवत ।
हक से हादी रूहें नूरमें, अरस असल वाहेदत्त ॥ ६७

---

१. पढ़ाए । २. शरीर । ३. सतगुरु । ४. परमधाम ।

नूर तजल्ला बीचमें, लिख्या गुनाह पोहोंच्या रूहन ।
जित आए न सक्या जबराईल, इत असल मोमनों तन ।। ६८

लिया हादी हिसाब याही वास्ते, हक रूहों पर हांसी करत ।
हक हादी रूहें रूह अल्ला, होसी हांसी इन खिलवत ।। ६९

*मोतिन के मुंह ऊपर, कुलफ[१] लिख्या माहें फुरमान ।
इन गुन्हेगारों के दिलको, अपना अरस कर बैठे मेहेरबान ।। ७०

सो कुलफ कह्या फरामोस का, कह्या गुनाह रूहों का दिल ।
खेल मांग्या फरामोस का, कर एक दिल सब मिल ।। ७१

फरामोस गुनाह दिल मोमनों, सोई कुलफ गुनाह इनों दिल ।
याकी कुंजी दिल महंमद, सो टाले फरामोसी दे अकल ।। ७२

कहे महंमद सुनो मोमनों, ऐ *उमी[२] मेरे यार ।
छोड़ दुनी ल्यो अरस को, जो अपना वतन नूर पार ।। ७३

हम बंदे रूहें इन दरगाह के, कह्या दिल अरस[३] मोमन ।
यारों बुलावें महंमद, करो सेजदा[४] हजूर अरस तन ।। ७४

।। प्रकरण ।। ३ ।। चौपाई ।। २६४ ।।

## खुलासा इसलाम[५] का

असल खुलासा इसलाम का, सब राह करत रोसन ।
झूठ से सांच जुदा कर, देसी आखर सुख सबन ।। १

मगज मुसाफ और हदीसें, हादी हिदायत देखें मोमन ।
ए खुलासा बिने[६] इसलाम का, सबों देखावे बका वतन ।। २

बका[७] फना[८] का बेवरा, पाया मगज सब का ए ।
हादी रूहें अरस से इजने[९], *लैलत कदरमें उतरे ।। ३

हकें कह्या *अलस्तो बे रब्ब कुंम, *कालू बले कह्या रूहन ।
खेल देख मुंह फेरोगे, न मानोगे रसूल सुकन ।। ४

---

१. (कुफल) ताला । २. बे पढ़े । ३. परमधाम । ४. नमन करना । ५. सत्य धर्म । ६. नियम । ७. अविनाशी । ८. नश्वर । ९. हुक्म से ।

भी फुरमाया तुम भूलोगे, साहेद किए रूहें फिरस्ते ।
मैं तुममें साहेद तुम दीजियो, आप अपनी उमत के ॥ ५

चौथे आसमान लाहूतमें, रूहें बैठी बारे हजार ।
इन तसबी[1] से पैदा होत है, फिरस्तों का सिरदार ॥ ६

रूहें रहें दरगाह[2] बीचमें, प्यारी परवरदिगार[3] ।
खासलखास कही इनको, सिफत न आवे माहें सुमार ॥ ७

उमत मेला *महंमद का, इनकी काहूँ ना पेहेचान ।
ना होए खुले बातून[4] विना, मारफत हक फुरमान ॥ ८

ए बात नहीं अटकलकी, होए साबित खुलें हकीकत ।
बूझे दीन महंमद का, हक हादी रूहें निसबत ॥ ९

इन महंमद के दीन में, सक सुभे जरा नाहें ।
सो हकें दिया इलम अपना, ए सिफत होए न इन जुबांएं ॥ १०

मासूक[5] महंमद तो कह्या, बहस हुआ वास्ते इस्क ।
और कलाम अल्लाह में कह्या, आसक नाम है हक ॥ ११

मूल मेला महंमद रूहों का, सो कोई जानत नाहें ।
ए जाने हक हादी रूहें, अरस बका के माहें ॥ १२

सुनत जमात याको कहे, और कह्या दीन उमत ।
महंमद की गिरो मिने, सक न सुभे इत ॥ १३

सक सुभे सब सरियतों, यों कहे हदीस फुरमान ।
कोई जाने ना हक तरफको, ए अरस रूहें पेहेचान ॥ १४

दूजा ढिग वाहेदत्त के, आए न सके कोए ।
आगे ही जल जात है, बका न देखे सोए ॥ १५

जो देख न सक्या जबराईल, तो क्यों कहूँ औरन ।
ए हक खिलवत महंमद रूहें, सो जाने बका बातन ॥ १६

---

१. जाप (माला) । २. दरबार (परमधाम) । ३. पालनहार । ४. गूढ़ार्थ । ५. प्यारा ।

ए खेल हुआ वास्ते महंमद, महंमद आया वास्ते रूहन ।
रूह अल्ला इलम ल्याए इनों पर, ए सब हुआ वास्ते मोमन ॥ १७
इनों तन असल अरस में, तीन बेर उतरे माहें लैल ।
ए जाहेर लिख्या फुरमानमें, ए हकें देखाया खेल ॥ १८
रूहें आइयाँ खेल देखने, आए "महंमद "मेहेदी देखावन ।
तीनों हादी खेल देखाए के, दोऊ गिरो ले आवें वतन ॥ १९
रूहें खेल देखे वास्ते, भिस्त[१] दई सबन ।
द्वार खोल मारफत के, करसी जाहेर हक बका दिन ॥ २०
रूहें उतरी नूर बिलंदसे, खलक पैदा जुलमत ।
दुनी दिल अबलीस कह्या, दिल मोमन हक वाहेदत्त ॥ २१
दिल मजाजी[२] दुनीका, मोमन हकीकी दिल ।
हक हादी रूहें निसबत, कही अबलीस दुनी नसल ॥ २२
तीन जिनसें[३] पैदा कही, ताके जुदे कहे ठौर तीन ।
करे तीनों को हिदायत महंमद, याको बूझसी महंमद दीन ॥ २३
ए लें खुलासा मोमन, बका राह इसलाम ।
ए मेहेर मुतलक[४] हकसे, करत जाहेर अल्ला कलाम ॥ २४
बिने सब की बताइए, ज्यों होए सब पेहेचान ।
दीजे साहेदी मुसाफकी, ज्यों होए ना सके मुनकर[५] जहान ॥ २५
जो पैदा जिन ठौर से, तिन सोई देखाइए असल ।
हुकम चले जित हक का, तित होए ना चल विचल ॥ २६
पांच विने कही मुसलिम की, जिन लई सरीयत ।
कलमा[६] निमाज[७] रोजा[८] कह्या, और जगात[९] हज्ज[१०] जारत[११] ॥ २७
जुबां से कलमा केहेना, सिर फरज रोजा निमाज ।
जगात हिस्सा चालीसमा, कर सके न हज्ज इलाज ॥ २८

---

१. बहिश्त । २. माया जन्य । ३. वस्तुएँ (जातियां) । ४. बिल्कुल । ५. नास्तिक । ६. मंत्र ।
७. प्रार्थना । ८. व्रत । ९. दान । १०. तीर्थ यात्रा । ११. दर्शन ।

परहेज करे बदफैल[१] से, बिने पांचोंसे पाक होए।
सो आग न जले दोजखकी, पावे भिस्त तीसरी सोए ॥ २९

कोई पांच बिने की दस करो, पालो अरकान[२] लग आखर ।
पर अरस बका हक का, दिल होए न मोमन बिगर ॥ ३०

जो पांच बिने ना करे, सो नाहीं मुसलमान ।
इन की बिने फैल नासूती, ए लिख्या माहें कुरान ॥ ३१

एक कुरान का माजजा, दूजी नबी की नबुवत ।
एक दीन जब होएसी, कह्या तब होसी साबित ॥ ३२

हादी किया चाहे एक दीन, ए कौल तोड़ जुदे जात ।
सो क्यों बचे दोजख से, जाए छोड़े ना *पुलसरात ॥ ३३

कहे महंमद मिस्कातमें[३], दुनी दिल पर सैतान ।
वजूद होसी आदमी, होसी फिरकों ए ईमान ॥ ३४

पर में डरों इमामों से, करसी गुम—राह[४] ऐसी उमत ।
करसी लड़ाई आपमें, छूटे ना लग क्यामत ॥ ३५

तो भए तेहत्तर फिरके महंमद के, तामें एक नाजी कह्या नेक ।
और बहत्तर कहे दोजखी, ए बेवरा कह्या विवेक ॥ ३६

करी हकें हिदाएत *नाजीको, ए लिख्या माहें फुरमान ।
इन बीच फिरके सब आवसी, एक दीन होसी सब जहान ॥ ३७

सरियत खूबी नासूत में, याको ए पांचों पाक करत ।
ए जाहेर पांच बिने से, ऊंचे चढ़ न सकत ॥ ३८

छोड़ सरा ले तरीकत, पीठ देवे नासूत ।
फैल करे तरीकत के, सो पोहोंचे मलकूत ॥ ३९

कलमा निमाज दोऊ दिल से, और दिलसों रोजे रमजान ।
दे जगात हिस्सा उन्तालीसमा, हज्ज करे रसूल मकान ॥ ४०

---

१. बुरे काम । २. धर्म नियम । ३. एक ग्रन्थ । ४. रास्ते से भटका देना ।

कह्या दिल दुनी का मजाजो, जो पैदा हुआ केहेते कुंन ।
सो छोड़ ना सके मलकूतको, आड़ी जुलमत हवा सुंन ॥ ४१
दुनियां दिल कह्या मजाजी, सो टुकड़ा गोस्त का ।
अबलीस कह्या दुनी नसलें, सोई दिलों इनों पातसाह ॥ ४२
आदम औलाद दिल अबलीस, बैठा पातसाह दुसमन होए ।
कह्या हवा खुदा इन का, उलंघ जाए क्यों सोए ॥ ४३
जबराईल महंमद हिमाएतें,[1] तो भी छोड़ न सक्या असल ।
तो दुनियां *तिलसम[2] की, सो क्यों सके आगे चल ॥ ४४
जेती दुनी भई कुंन से, हवा तिनसे ना छूटत ।
सो क्यों छोड़े ठौर अपनी, कही असल जिनों जुलमत ॥ ४५
जो उतरे मलायक लैलमें, ताको असल नूर मकान ।
सो राह हकीकत लिए विना, उत पोहोंचे नहीं निदान ॥ ४६
कलमा निमाज रोजा हकीको, करे दिलसों रूह पेहेचान ।
हुआ बंदा बूझ जगातमें, दिल दीदार नूर सुभान ॥ ४७
मलकूत हवा जुलमत[3], उलंघ जाना तिन पर ।
विना हादी हिदायत, सो बका पावे क्यों कर ॥ ४८
जिनों हक हकीकत देवें, सो छोड़े हवा मलकूत ।
दिल साफ जिकर रूहानी, ले पोहोंचावे जबरूत ॥ ४९
जो फिरस्ता जबरूत का, सो रेहे ना सके मलकूत ।
मलकूत बीच फना के, नूर मकान बका जबरूत ॥ ५०
बड़ा फिरस्ता नजीकी, जाको *रूहल अमीन[4] नाम ।
जुलमत हवा तो उलंघी, जबरूत इन मुकाम ॥ ५१
पाई बड़ाई पैगंमरों, हाथ जबराईल सबन ।
सो जबराईल न पोहोंचिया, मकान महंमद मोमन ॥ ५२

---

१. समर्थन । २. इन्द्रजाल । ३. अन्धकार । ४. जिबरील, (अमानतदार) ।

सो जबराईल जबरूत से, लाहूत न पोहोंच्या क्योंए कर ।
हिमायत[1] लै महंमद की, तो भी कहे जलें मेरे पर ॥ ५३

तन मोमन असल अरसमें, जो अरस अजीम बका हक ।
जित पोहोंच्या नहीं जबराईल, तित क्या कहूँ और खलक ॥ ५४

हक हादी रूहें लाहूतमें, ए महंमद रूहों वतन ।
इस्क हकीकत मारफत, तो हक अरस दिल मोमन ॥ ५५

मारफत हक हकीकत, अरस रूहों को दई हक ।
जो इलम दिया हकें अपना, तामें जरा न सक ॥ ५६

कही रूहें नूर बिलंद से, माहें उतरीं लैलत कदर ।
कौल किया हकें इनों सों, मासूक आया इन खातर ॥ ५७

ए राह इसलाम मोमनों, चढ़ उतर देखाई रसूल ।
आईं तीन सूरतें इन वास्ते, जानें रूहें जावें जिन भूल ॥ ५८

इन वास्ते भेजी रूह अपनी, अरस कुंजी हाथ दे ।
दे खिताब इमाम को, अरस पट खोले इन वास्ते ॥ ५९

असराफील जबराईल, भेज दिया आमर[2] ।
निगेहवानी[3] कीजियो, मेरे खासे बंदों पर ॥ ६०

इलम लुदंनी[4] भेजिया, सब करने बका पेहेचान ।
आप काजी[5] हुए इन वास्ते, करी खिलवत जाहेर सुभान ॥ ६१

हक कहे मुख अपने, में रूहें राखी कबाए[6] तले ।
कोई और न बूझे इन को, मेरी वाहेदत्त के हैं ए ॥ ६२

मेरी कदीम[7] दोस्ती इनों से, दोस्ती पीछे इन ।
ए इलम लुदंनी से माएने, करे हादी बीच रूहन ॥ ६३

अरस दिल इनका कह्या, और कह्या हकीकी दिल ।
एती बड़ाई इनको दई, जो वाहेदत्त इनों असल ॥ ६४

---

१. समर्थन । २. हुक्म । ३. रक्षा करना । ४. ब्रह्म ज्ञान । ५. न्यायाधीश । ६. शरन (चोगे के नीचे) । ७. हमेशा ।

ए अरस बड़ा रूहों का, जो कह्या तजल्ला नूर ।
जबराईल इत न आइया, जित महंमद किया मजकूर ।। ६५

हरफ केतेक कराए जाहेर, केतेक हुकमें रखे छिपाए ।
सो वास्ते रूहों दाखले, हादी देत मिलाए ।। ६६

कही पाँच बिने मुस्लिमकी, सोई पाँच बिने मोमन ।
वे करें बीच फना के, ए पांच बका बातन ।। ६७

अरस रूहें बंदे हमेसगी, इनों बिने सब इस्क ।
हकीकत मारफत मुतलक, इन उरफान[1] मेहेर हक ।। ६८

चौदे तबक की जहानमे, किन तरफ न पाई अरस हक ।
सो किया अरस दिल मोमन, ए निसबत मेहेर मुतलक ।। ६९

हक नूर रूह महंमद, रूहें महंमद अंग नूर ।
ए हमेसा वाहेदत्त में, तो सब मुख ए मजकूर ।। ७०

मोमन आए इत थें ख्वाब में, अरस में इनों असल ।
हुकम करे जैसा हजूर, तैसा होत माहें नकल ।। ७१

जो मोमन बिने पाँच अरसमें, सो होत बंदगी बातन ।
जिन विध होत हजूर, सो करत अरस दिल मोमन ।। ७२

दिल अरस हकीकी तो कह्या, जो हक कदम तले तन ।
रसूल उमती उमती तो कहे, जो हक खिलवत बीच रूहन ।। ७३

महामत कहें ऐ मोमनों, हकें मेहेर करी तुम पर ।
भुलाए तुमें हाँसीय को, वास्ते इसक खातर ।। ७४

।। प्रकरण ।। ४ ।। चौपाई ।। ३३८ ।।

## भिस्त[2] सिफायत[3] का बेवरा

मोमन आए अरस अजीम से, हमारी हकसों निसबत ।
दिया इलम लुदंनी हकने, आई हक बका न्यामत ।। १

---

१. ब्रह्म ज्ञान (इरफान) । २. बहिश्त । सिफारिश ।

हक इलम एही पेहेचान, कछू छिपा रहे न ताए ।
अरस बका रूहें फिरस्ते, सब हद्दां[1] देवें बताए ॥ २

कहूँ नेक दुनी का बेवरा, जो हके दई पेहेचान ।
*रूह अल्ला *महंमद मेहेरथें, कहूँ ले माएने फुरमान ॥ ३

ए जो हुए पैदा कुंन से, सबों सिर फरज[2] सरियत ।
पोहोंचे मलकूत हवा लग, जो लेवे राह तरीखत[3] ॥ ४

जो लगा वजूद को, ताए छूटे ना जिमी नासूत ।
*पुल सरात को छोड़ के, क्यों पोहोंचे मलकूत[4] ॥ ५

ए आम खलक जो आदमी, या देव या जिन ।
सो राह चलें ले वजूद को, पावें नहीं बातन ॥ ६

जो होवे नूर मकान का, कायम जिनों वतन ।
सो क्यों पकड़े वजूद को, पोहोंचे न हकीकत विन ॥ ७

जो होवे अरस अजीम की, सो ले हकीकत मारफत ।
इनको इसक[5] मुतलक, जिन रूह हक निसबत[6] ॥ ८

रूहें फिरस्ते दो गिरो, तिन दौऊ के दो मकान ।
एक इसक दूजी बंदगी, राह लेसी अपनी पेहेचान ॥ ९

उतरीं रूहें फिरस्ते लैल में, अपने रब्ब के इजन[7] ।
दे हुकमें सबों सलामती, आप पोहोंचे फजर वतन ॥ १०

भिस्त हाल चार कुरान में, कह्या आठ होसी आखर ।
ए भी सुनो तुम बेवरा, देखो मोमनों सहूर कर ॥ ११

तिन भिस्त हाल चार का बेवरा, एक मलकूती भिस्त ।
दो भिस्त अव्वल लैलमें, चौथी महंमद आए जित ॥ १२

आखर भिस्तों का बेवरा, जो नैयां होसी चार ।
जो होसी बखत क्यामत के, तिनका कहूँ निरवार ॥ १३

---

१. सीमाएं २. कर्त्तब्य । ३. उपासना । ४. बैकुन्ठ । ५. प्रेम । ६. सम्बन्ध । ७. हुक्म ।

भिस्त अव्वल रूहों अकस, ए जो होसी भिस्त नई ।
भिस्त होसी दूजी फिरस्तों, जो गिरो जबरूत से कही ॥ १४

पैगंमरों भिस्त तीसरी, जिनों दिए हक पैगाम ।
चौथी भिस्त जो होएसी, पावे खलक[1] जो आम ॥ १५

जिन किन राह हककी, लई सांच से सरियत ।
भिस्त होसी तिनों तीसरी, सांचे ना जलें क्यामत ॥ १६

जो सरीयत पकड़ के, चल्या नहीं सांच ले ।
सो आखर दोजक[2] जलके, भिस्त चौथी पावे ए ॥ १७

रूहों अकस कहे नई भिस्तमें, ताए असल रूहों के तन ।
सो अरवा अरस अजीममें, उठें अपने बका वतन ॥ १८

जो लों अपनी राह पावें नहीं, तो लों पोहोंचें ना अपने मकान ।
हादी हद्दों हिदायत[3] करके, आखर पोहोंचावें निदान ॥ १९

अब कहूँ सिफायत की, जो आखर महंमद की चाहे ।
नेक सुनो सो बेवरा, देऊँ रूहों को बताए ॥ २०

जित पोहोंची सिफायत[4] महंमद की, सो तबहीं दुनी को पीठ दे ।
सो पोहोंच्या महंमद सूरत को, आखर तीसरी हकी जे ॥ २१

जिन छोड़ दुनी को ना लई, हकीकत मारफत ।
सो अरस बका में न आइया, लई ना महंमद सिफायत ॥ २२

जो दुनियां को लग रहे, ताए अरस बका सुध नाहें ।
महंमद सिफायत लै मोमनों, जाकी रूह बका अरस माहें ॥ २३

अरस ल्यो या दुनियां, दोऊ पाइए ना एक ठौर ।
हक खोया झूठ बदले, सुन्या न महंमद सोर ॥ २४

दुनी अपनी दानाई[5] से, लेने चाहे दोय ।
फरेब[6] देने चाहे हक को, सो गए प्यारी उमर खोय ॥ २५

---

१. जनता । २. नरक । ३. आदेश । ४. सिफारिश । ५. चतुराई । ६. धोखा ।

सो मोमन क्यों कर कहिए, जिन लई ना हकीकत ।
छोड़ दुनीको ना ले सक्या, हक बका मारफत ॥ २६

चौदे तबक नबीके[1] नूर से, सो सब कहें हम मोमन ।
सो मोमन जाको सक नहीं, हक बका अरस रोसन ॥ २७

सब खोजें फिरके ले किताबें, कहें खड़े हम तले कदम ।
ले हकीकत पोहोंचे अरसमें, जिन सिर लिया महंमद हुकम ॥ २८

पोहोंची सिफायत जिनको, तिन छोड़ी दुनियां मुतलक[2] ।
कदम पर कदम धरे, पोहोंच्या बका अरस हक ॥ २९

हकीकत मारफत की, हक बातें बारीक ।
जित नहीं सिफायत महंमद की, सो लरे लीक ले लीक ॥ ३०

तरक[3] करे सब दुनी को, कछू रखे ना हक बिन ।
वजूद को भी मह[4] करे, ए महंमद सिफायत मोमन ॥ ३१

कहे महंमद खबर जो मुझको, सो खबर मेरे भाई ।
धरे आवें कदमों कदम, जिनकी पेसानी[5] में रोसनाई ॥ ३२

महंमद एही सिफायत, अरस बका हक रोसन ।
जो अरस अरवाहों को सक रहे, सो क्यों कहिए रुह मोमन ॥ ३३

जाए पूछो मोमन को, जरे जरे बका की बात ।
देखो अरस अरवाहों में, ए महंमद की सिफात ॥ ३४

किन विध रूहें लाहूती, क्यों जबरूती फिरस्ते ।
जिन लई सिफायत महंमद की, सो बताए देवें सब ए ॥ ३५

इलम खुदाई लुदंनी[6], सब अरसों की सुध तिन ।
एक जरेकी सक नहीं, लई सिफायत हादी जिन ॥ ३६

अरस रूहें सब बिध जानहीं, हौज जोए जिमी जानवर ।
महंमद की सिफायत से, मोमनों सब खबर ॥ ३७

---

१. परमात्मा का आदेश । २. बिल्कुल । ३. रद्द । ४. लीन । ५. मस्तक । ६. तारतम ज्ञान ।

जोए[1] निकसी किन ठौर से, क्यों कर आगे चली ।
अरस आगे आई कितनी, जाए कर कहां मिली ।। ३८

क्यों कर हकीकत हौज की, क्यों घाट पाल गिरदवाए ।
किन विध टापू बीचमे, सब सुध मोमन देवें बताए ।। ३९

जोए अरस के किस तरफ है, किस तरफ हौज अरस के ।
नूर अरस की गलियां, अरस अरवां जानें ए ।। ४०

बारीक गलियां अरस की, मोमन भूलें ना इत ।
अरवा अरसकी रात दिन, याही में खेलत ।। ४१

जाको सिफायत महंमद की, तिन का एही निसान ।
जोए हौज अरस जिमीय की, एक जरा न विना पेहेचान ।। ४२

नूर तजल्ला नूर की, जिमी बाग जानवर ।
महंमद सिफायत जिन को, तिन से छिपी रहे क्यों कर ।। ४३

महंमद हक के नूर से, रूहें अंग *महंमद नूर ।
सो देखो अरस अरवाहों में, पोहोंच्या *महंमद का जहूर[2] ।। ४४

हक हादी रूहनसों, इत खेलें माहें मोहोलन ।
ए रहें हमेसा अरस में, हौज जोए बागन ।। ४५

मेवे चाहिए सो लीजिए, फल फूल मूल पात ।
तित रहृया तैंसाही बन्या, ए बका बागोंकी बात ।। ४६

एक बाल न खिरे पसुअन का, ना गिरे पंखी का पर ।
कोई मोहोल ना कबू पुराना, दिन दिन खूबतर[3] ।। ४७

इत नया ना पुराना, ना कम ज्यादा होए ।
इत वाहेदत्त में दूसरा, कबहूँ न कहिए कोए ।। ४८

महामत सिफाएत जिन लई, सो इत हुए खबरदार ।
हक बका अरस सब का, तिन इतहीं पाया दीदार ।। ४९

।। प्रकरण ।। ५ ।। चौपाई ।। ३८७ ।।

---

१. यमुनां ( परमधाम मैं ) । २. प्रकटी करण । ३. बढ़िया ।

## इलम का बेवरा नाजी फिरका

फुरमाया कहूँ फुरमान का, और हदीसे महंमद ।
मोमन होसी सो चीन्हसी, असल अरस सब्द ॥ १

एक कह्या वेद कतेब ने, जो जुदा रह्या सबन ।
तिनको सारों ढूंढ़िया, सो एक न पाया किन ॥ २

एक बका सब कोई कहे, पर कोई कहे न बका ठौर ।
सब कहें हमों न पाइया, कर कर थके दौर ॥ ३

सब किताबों में लिख्या, एक थें भए अनेक ।
सो सुकन कोई न केहेवही, जो इस तरफ है एक ॥ ४

सो हक किनों न पाइया, जो कह्या एक हजरत ।
ढूंढ़ ढूंढ़ फिरके[1] फिरे, पर किनहूं न पाया कित ॥ ५

ना कछू पाया एक को, ना उमत अरस ठौर ।
ना पाया अरस हौज जोए को, जाए लगे बातों और ॥ ६

नब्बे बरस हजार पर, पढ़ते गुजरे दिन ।
लिखी क्यामत बीच कुरान के, सो तो न पाई किन ॥ ७

आसमान जिमी की दुनियां, कथे इलम करे कसब[2] ।
किन एक न बका पाइया, दौड़ दौड़ थके सब ॥ ८

यों गोते खाए बीच फना के, ला सुंन ना उलंघी किन ।
ढूंढ़ ढूंढ़ सबे थके, कोई पोहोंच्या न बका वतन ॥ ९

लुदंनी से पाइए, जो है इलम खुदाए ।
खोज खोज सबे हारे, आज लों इप्तदाए[3] ॥ १०

लिख्या है कतेब में, सोई करूं मजकूर ।
एक फिरका पावेगा, जिन को तौहीद जहूर ॥ ११

लिख्या है फुरमान में, खुदा एक *महंमद बरहक[4] ।
तिनको काफर जानियो, जो इनमें ल्यावे सक ॥ १२

---

१. सम्प्रदाय । २. साधना । ३. शुरू से । ४. सत्यनिष्ठ ।

एक खुदा हक महंमद, अरस बका हौज जोए ।
उतरीं अरवाहें अरस की, चीन्हो गिरो नाजी सोए ॥ १३

सब दुनियां का इलम, लिख्या कुरान में ए ।
सो कोई इलम पोहोंचे नहीं, बनी असराईल मूसा के ॥ १४

कहे फुरमान इलम* मूसे का, और बड़ा इलम *खिजर ।
इलम खुदाई बूंद के, न आवे बराबर ॥ १५

फिरके इकहत्तर मूसा के, हुए ईसा के बहत्तर ।
एक को हिदायत हक की, यों कह्या पैगंमर ॥ १६

महंमद के तेहत्तर हुए, तिनको हुआ हुकम ।
जिन को हिदायत हक की, तामें आओ तुम ॥ १७

जिन दीन लिया खुदाए का, सो नाजी गिरो आखर ।
और होसी दोजखी[1], जो जुदे रहे बहत्तर ॥ १८

दुनियां चौदे तबकमें, सोई नाजी गिरो है एक ।
आखर जाहेर होएसी, पर पेहेले लेसी सोई नेक ॥ १९

महामत कहें ऐ मोमनो, ल्यो हकीकत कुरान ।
ढूंढ़ो फिरके नाजीको, जो है साहेब ईमान ॥ २०

॥ प्रकरण ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ ४०७ ॥

## हककी सूरत लिखी है

हाए हाए देखो मुस्लिम जाहेरी, जिन पाई नहीं हकीकत ।
हक सूरत अरस माने नहीं, जो दई महंमद बका न्यामत ॥ १

आसमान जिमी की दुनियां, करी सबोंने दौर ।
तरफ न पाई हक सूरत, पाई ना अरस बका ठौर ॥ २

खोज करी सब दुनियां, किन पाई न सूरत हक ।
खोज खोज सुंनमें गए, कोई आगूं न हुए बेसक ॥ ३

---
१. नरक गामी ।

दौड़ थके सब सुंन लों, किन ला हवा को न पायो पार ।
तब खुदा याही को जानिया, कहे *निरंजन *निराकार ॥ ४

पीछे आए रसूल, कहे मैं पाई हक सूरत ।
बोहोत करी रदबदलें[१], वास्ते सब उमत ॥ ५

अरस बका हौज जोए, पानी बाग जिमी जानवर ।
और देखी अरवाहें अरस की, कहे मैं हकका पैगंमर ॥ ६

बोहोत देखी बका न्यामतें, करी हकसों बड़ी मजकूर ।
ख्वाब जिमी झूठी मिने, किया हक बका जहूर ॥ ७

कौल किया हकें मुझसे, हम आवेंगे आखरत ।
हिसाब ले भिस्त देएसी, आखर करसी क्यामत ॥ ८

वास्ते खास उमत के, मैं ल्याया फुरमान ।
सो आखर को आवसी, तब काजी होसी सुभान[२] ॥ ९

जो इन पर आकीन ल्याइया, ताए भिस्त होसी बेसक ।
जो इन बातों मुनकर[३], ताए होसी आखर दोजख ॥ १०

खुदा काजी होए बैंठसी, होसी फजर को दीदार ।
ले पुरसिस[४] लैलत कदर, होसी फजर तीसरे तकरार ॥ ११

सब पैगंमर आवसी, होसी मेला बुजरक ।
तब बदफैल की दुनियां, ताए लगसी आग दोजख ॥ १२

जलती जलती दुनिया, जासी पैगंमरों पें ।
ताए सब पैगंमर यों कहें, तुम छूट न सको हम से ॥ १३

कहें पैगंमर हम सरमंदे, हकसों होए न बात ।
तुम जाओ महंमद पें, वे करसी सबों सिफात ॥ १४

ए बात पसरी दुनीअमें, जो कोई ल्याया आकीन ।
सो नाम धराए मुस्लिम, माहें आए महंमद दीन ॥ १५

---

१. बातचीत । २. परमात्मा । ३. न मानने वाले । ४. जवाब तलबी ।

खुदा के नूर से महंमद, हुई दुनी महंमद के नूर ।
इन बात में सक जो ल्याइया, सो रह्या दीन से दूर ॥ १६

कोईक पूरा ईमान ल्याइया, बिन ईमान रहे बोहोतक ।
कै जुबां ईमान दिल में नहीं, सो तो कहे मुनाफक[१] ॥ १७

केते कहावें मोमन, और दिल में मुनकर ।
एक नाजी फिरका असल, और दोजखी बहत्तर ॥ १८

कह्या फिरके नाज़ीअ को, होसी हककी हिदाएत ।
सब फिरके इनमें आवसी, होसी एक दीन आखरत ॥ १९

तब होसी कुरान का माजजा[२], और नबी की नबुवत ।
ए कौल तोड़ जुदे पड़त हैं, सो कौल मेहेदी करसी साबित ॥ २०

कुरान में ऐसा लिख्या, खुदा एक महंमद साहेद हक ।
तिन को न कहिए मोमन, जो इनमें ल्यावे सक ॥ २१

जो हक बका सूरत में, मुस्लिम ल्यावें सक ।
तो क्यों खुदा एक हुआ, क्यों हुआ महंमद बरहक ॥ २२

हाए हाए गिरो महंमदी कहावही, कहे हकको निराकार ।
जो जहूदों ने पकड़्या, इनो सोई किया करार ॥ २३

जो कहे खुदा को बेचून[३], तब बरहक न हुआ महंमद ।
खुदा महंमद वाहेदत्तमें, सो कलाम होत है रद ॥ २४

गैर दीन बेचून कहे, पर क्यों कहे मुसलमान ।
कहावें दीन महंमदी, तो इत कहां रह्या ईमान ॥ २५

खुदा एक महंमद बरहक, सो गैर[४] दीन[५] माने क्यों कर ।
हक सूरत की दई साहेदी, हकें तो कह्या पैगंमर ॥ २६

दे साहेदी खुदा की सो खुदा, ऐसा लिख्या बीच कुरान ।
एक छूट दूजा है नहीं, यों बरहक महंमद जान ॥ २७

---

१. कपटी । २. चमत्कार । ३. अद्वितीय । ४. दूसरे । ५. धर्म ।

महामत कहें सुनो मोमनों, दीन हकीकी हक हजूर ।
हक अमरद[1] सूरत माने नहीं, सो रहे दीन से दूर ॥ २८

॥ प्रकरण ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ ४३५ ॥

## रूहोंकी बिने देखियो

जो उमत होवे अरसकी, सो नीके बिचारो दिल ।
बिने[2] अपनी देख के, करो फैल देख मिसल[3] ॥ १

कैसा साहेब है अपना, और कैसा अपना वतन ।
कैसो अपनो वजूद है, जो असल रूहों के तन ॥ २

तुम सबे जानत हो, तुमको कही खबर ।
ऐसी बात तुमारी बुजरक, सो भूल जात क्यों कर ॥ ३

कैसी बात दिल पैंदा करी, जिनसे माग्या खेल ए ।
सो कैसा खेल ए किया, ए देखत हो तुम जे ॥ ४

दुनियां कैसी पैदा करी, ए जो चौदे तबक ।
तिन सबों यों जानिया, किनों न पाया हक ॥ ५

खोज खोज के सब थके, कै कहावें फिरके बुजरक ।
पर तिन सारोंने यों कह्या, गई न हमारी सक ॥ ६

और खावंद जो खेल के, जाको दुनियां सब पूजत ।
सो कहे हमों न पाइया, हक क्यों कर है कित ॥ ७

हम रूहें आइयाँ इन खेलमें, सो गैयां माहें भूल ।
सुध ना बिरानी[4] आपनी, भया ऐसा हमारा सूल ॥ ८

इनमें फुरमान ल्याया रसूल, देने अपनी खबर आप ।
फुरमान कोई ना खोल सके, जाथें होए हक मिलाप । ९

फुरमान एक दूसरा, सुकजी ल्याए भागवत ।
ए खोल सके ना त्रैगुन, यामें हमारी हकीकत ॥ १०

---

१. किशोर । २. धर्म के नियम । ३. आदर्श । ४. परायी ।

कुंजी ल्याए रूह अल्ला, जासों पावें सब फल ।
ज्यों कर ताला खोलिए, सो जाने ना कोई कल ॥ ११

सो कुंजी साहेब ने, मेरे हाथ दई ।
जिन बिध ताला खोलिए, सो सब हकीकत कही ॥ १२

सक परदा कोई ना रह्या, सब विध दई समझाए ।
कहे खोल दे अरस रूहों को, ए मिलसी तुझे आए ॥ १३

अब देखो दिल विचारके, कैसी बुजरक बात है तुम ।
कैसा खेल तुम देखिया, कै विध देखाई हुकम ॥ १४

चीन्हो[1] इन खसम को, चीन्हो बका वतन ।
और चीन्हो तुम आपको, देखो फैल करत विध किन ॥ १५

फुरमान भेज्या किनने, ल्याए ऊपर किन ।
कौन लेके आइया, माहें क्या खजाना धन ॥ १६

कौन ल्याया कुंजीअ को, है कुंजी में क्या विचार ।
किनने ताला खोलिया, खोल्या कौनसा द्वार ॥ १७

क्या है इन दरबार में, दई कहां की सुध ।
सुध बका सारी नीके[2] लेओ, बिचारो आतम बुध ॥ १८

ए खेल किनने किया, तुम रूहें भेजीं किन ।
कुंजी कुलफ[3] गिरो आपको, दिल दे देखो रोसन ॥ १९

एह बिचार किए बिना, जो करत हैं फैल[4] हाल[5] ।
जब होसी मिलावा जाहेर, तब तिनका कौन हवाल[6] ॥ २०

फरामोसी[7] तुमें किन दई, अब तुमको कौन जगाए ।
इन बातों नींद क्यों रहे, जो होवे अरस अरवाए[8] ॥ २१

मोमन काफर दो कहे, तिन की एह तफावत[9] ।
ए चोट काफरों ना लगे, मोमनों छेद निकसत ॥ २२

---

१. पहचानो । २. अच्छी तरह । ३. ताला (रहस्य) । ४. कर्म । ५. मनःस्थिति । ६. अवस्था । ७. बेसुधि । ८. आत्माएँ । ९. अन्तर ।

महामत कहें ऐ मोमनो, क्यों न बिचारो तुम ।
कै विध तुम वास्ते करी, क्यों भूलो इन खसम ॥ २३

॥ प्रकरण ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ ४५८ ॥

## नूर नूरतजल्ला की पेहेचान

बुलाइयां निसबत[1] जान के, देखो मेहेर हक की ए ।
हा हा तो भी इस्क न आवत, अरवा अरस की जे ॥ १

ए मेहेर भई मोमनों पर, समझत नाहीं कोए ।
सो कोई तो समझे, जो पेहेचान हक की होए ॥ २

खावंद अरस अजीम का, सो कहूँ नेक हकीकत ।
इन हक बका से मोमन, रखते हैं निसबत ॥ ३

बका अव्वल से अबलों, किन किया न जाहेर सुभान ।
नेक कहूं सो बेवरा, ज्यों होए हक पेहेचान ॥ ४

तबक चौदे मलकूत से, ऐसे पलथें कै पैदास ।
ऐसी बुजरग कुदरत, नूर जलाल के पास ॥ ५

ऐसे पलमें पैदा करे, पलमें करे फनाए[2] ।
ऐसा बल रखे कुदरत, नूर—जलाल[3] के ॥ ६

इनमें कोई काएम करे, जो दिल आए चढ़त ।
सो इंड सारा नूरमें, जो दिल दीदों[4] देखत ॥ ७

कायम होत जो नूर से, सो आवे न सबद माहें ।
तो रोसनी नूर मकान की, क्यों आवे इन जुबांएं ॥ ८

जब थक रही जुबां इतहीं, ए जो नूरें किया ख्याल ।
तो आगे जुबां क्यों कर कहे, बल सिफत नूरजलाल ॥ ९

ए बल नूरजलाल को, जिन की एह कुदरत ।
एह जुबां ना केहे सके, बुजरग बल सिफत ॥ १०

१. सम्बन्ध । २. नष्ट । ३. अक्षर ब्रह्म । ४. आँखों ।

सो नूर नूरजमाल[1] के, दाएम[2] आवे दीदार ।
ए जुबां अरस अजीम की, क्यों कहे सिफत सुमार ॥ ११

नूर—जलाल की सिफत को, जुबां ना पोहोंचत ।
तो नूर—जमाल की सिफत को, क्यों कर पोहोंचे तित ॥ १२

जुबां थकी बल नूर के, ऐसी सिफत कमाल[3] ।
तो इत आगूं जुबां क्यों कर कहे, बल सिफत नूरजमाल ॥ १३

जित चल न सके जबराईल, कहे मेरे पर जलत ।
नूर—तजल्ला की तजल्ली[4], ए जोत सेहे न सकत ॥ १४

जाके नूर की ए रोसनी, ऐसी करी सिफत ।
तिन का असल जो बातून, सो कैसी होसी सूरत ॥ १५

ऐसी खूबी सोभा सुंदर, जो सांची सूरत हक ।
नामै आसक इन का, सब पर ए बुजरक ॥ १६

ए जो सब कहियत हैं, हक बिना कछुए बात ।
सो सब नूर की कुदरत, जो उपज फना हो जात ॥ १७

पाइए इनसे बुजरगी, जो असल कह्या एक ।
खास रूहें याकी जात हैं, ए रूहअल्ला जाने विवेक ॥ १८

आसक तो भी एह है, और मासूक तो भी एह ।
खूबी सोभा सब इन की, प्यारा प्रेम सनेह ॥ १९

मेहेरबान भी एह है, दाता न कोई या बिन ।
हक बंदगी सिवाए जो कछू कह्या, सो सब तले इजन[5] ॥ २०

अब कहूँ इन रूहन को, जो खड़ियां तले कदम ।
तुम क्यों न विचारो रूहसों, ऐसा अपना खसम ॥ २१

इन का बिछोहा सुन के, आपन रहत क्यों कर ।
फिराक[6] न आवत हम को, याद कर ऐसा घर ॥ २२

---

१. अक्षरातीत ब्रह्म । २. नित्य । ३. उत्कृष्ट । ४. आभा । ५. हुक्म । ६. विरह ।

आराम इस्क इन वतन का, हक का सुन्या आपन ।
अजहूँ न विरहा आवत, सुन के एह वचन ॥ २३

ऐसा कदीमी[1] वतन, ऐसा इस्क आराम ।
ऐसी मेहेरबानगी गिरोह को, सुख देत हैं आठो जाम ॥ २४

ऐसा हक जो कादर[2], सब बिध काम पूरन ।
ए सुन इस्क न आवत, तो कैसे हम मोमन ॥ २५

ए जो सुकन हकके मैं कहे, तामें जरा न रही सक ।
ए सुन के बिरहा न आवत, सो ना इन घर माफक[3] ॥ २६

यों चाहिए रूहन को, सुनते बिछोहा पीउ ।
करते याद जो हक को, तबहीं निकस जाए जीउ ॥ २७

फिराक सुनते हक की, वजूद पकड़े क्यों इत ।
जो रूह असल वतन की, ए नहीं तिन की सिफत ॥ २८

खूब खुसाली बुजरगी, सोभा सिफत मेहेरबान ।
इस्क प्रेम वतन का, काएम सुख सुभान ॥ २९

कहूँ प्यार कर मोमनों, दिल दे सुनियो तुम ।
अरवा क्यों न उड़ावत, समझ हक इलम ॥ ३०

कुदरत से पाइयत हैं, बुजरगी कादर ।
सिफत लिखी दोऊ ठौर की, आवत न काहूँ नजर ॥ ३१

तिन हकें मोमन दिल को, अपना कह्या अरस ।
कह्या तुम भी उतरे अरस से, यों दई सोभा अरस परस ॥ ३२

ए खावंद काहूँ न पाइया, खोज खोज थके सब मिल ।
चौदे तबक की दुनी की, पोहोंचे ना फहम[4] अकल ॥ ३३

सो हादी देखावत जाहेर, अरस खुदा का जे ।
चौदे तबक चारो तरफों, सेहेरग[5] से नजीक ए ॥ ३४

---

१. अनादि काल का । २. सामर्थ्यवान । ३. अनुसार । ४. समझ । ५. दिल की नाड़ी ।

हांसी करी अति बड़ी, हक आए तेहेकीक[1] ।
चौदे तबकोंमें[2] नहीं, सो देखाए दिया नजीक ।। ३५

महामत कहें हंसें हक, देख मोमनों हाल ।
आखर बुलाए चलें वतन, करके इत खुसाल ।। ३६

प्रकरण ।। ६ ।। चौपाई ।। ४६४ ।।

## जहूरनामा किताब

पढ़े तो हम हैं नहीं, ए जो दुनियां की चतुराए ।
कहूं माएने हकीकत मारफत, जो ईसा रसूल फुरमाए ।। १

अव्वल बीच और अवलों, सबों ढूंढ्या बनी—आदम[3] ।
एती सुध किन ना परी, कहाँ खुदा कौन हम ।। २

कौन आप कौन और है, ऐसा छल किया खसम ।
सुध ना खसम रसूल की, नहीं गिरोको गम ।। ३

कौन रूहें कौन फिरस्ते, कौन आदम कौन जिन ।
पढ़ पढ़ वेद कतेब को, पर हुआ न दिल रोसन ।। ४

अपनी अपनी खोजिया, पाया नहीं खुदाए ।
थके सब नासूतमें, पोहोंचे नहीं इप्तदाए ।। ५

आब—हैयाती[4] न पाइया, दौड्या सिकंदर ।
काहूँ न पाया ठौर कायम, यों कहे सब पैगंमर ।। ६

आप राह अपनी मिने, ढूंढ्या सब फिरकन ।
कायम ठौर पाई नहीं, यों कह्या सबन ।। ७

कहे किताब लोक नासूत के, और मलकूती अकल ।
छोड़ सुरैया[5] सितारा, कोई आगूं न सके चल ।। ८

जाहेर लिया माएना, सरियत कांड करम ।
खुद खबर पाई नहीं, ताथें पड़े सब भरम ।। ९

---

१. निश्चित । २. लोक (खंड) । ३. मानव । ४. अमृत । ५. बहुत ऊँचा सितारा (ज्योति स्वरूप) ।

लड़ फिरके जुदे हुए, हिंदू मुसलमान ।
और खलक केती कहूं, सब में लड़े गुमान ।। १०

माएना ऊपर का सबों लिया, और लिया अहंकार ।
फिरके फिरे[1] सब हक से, बांधे जाए कतार ।। ११

कहें सब एक वजूद है, और सब में एकै दम ।
सब कहें साहेब एक है, पर सबकी लडे रसम[2] ।। १२

क्यों निसान *क्यामत के, क्यों कर फना आखर ।
कहें सब विध लिखी कुरान में, सो पाई न काहूँ खबर ।। १३

क्यों कर *लैलतकदर है, क्यों कर हौंज—कौसर[3] ।
ए सुध किनको ना परी, कौन किताबें क्यों कर ।। १४

मनसूक[4] करी सब किताबें, रानी[5] सबों की उमत ।
ए सुध किन को ना परी, जो इनकी क्यों करी सिफत ।। १५

कौन सब पैगंमर हुए, क्यों कर निसान आखर ।
कहां से उतरे रूहें मोमन, कहां से आए काफर ।। १६

काजी कजा क्यों होएसी, क्यों होसी दुनी दीदार ।
क्यों भिस्त क्यों दोजख, किन सिर *क्यामत मुद्दार[6] ।। १७

क्यों असराफील आवसी, क्यों बजावसी सूर ।
क्यों कर पहाड़ उडसी, तब कौन नजीक कौन दूर ।। १८

पोते नूह नबीय के, जादे पैगंमर ।
सब दुनियां को खाएसी, *आजूज माजूज क्यों कर ।। १९

कह्या गधा बड़ा दज्जाल का, ऊंचा लग आसमान ।
पानी सात दरियाव का, पोहोंच्या नहीं लग रान[7] ।। २०

ना पेहेचान दज्जाल की, ना *दाभतल अरज ।
ए सुध काहूं ना परी, क्यों मगरब सूरज ।। २१

---

१. पलटे । २. रीतियां । ३. परमधाम का ताल । ४. रद्द । ५. बहिष्कृत । ६. निर्भर । ७. जांघ ।

ना सुध मोमन गिनती, ना सुध तीन उमत ।
माएने मगज खोले विना, पाइए ना तफावत[1] ॥ २२

मुरदे क्यों कर उठसी, दुनियां चौदे तबक ।
पढ़े वेद कतेब को, पर गई न काहूं सक ॥ २३

जब मोहे हादी[2] सुध दई, ए खुले माएने तब ।
तले ला—मकान[3] के, खुराक मौत की सब ॥ २४

कहे दुनियां ला मकान को, बेचून[4] बेचगून[5] ।
खुदा याही को बूझही, बेसबी[6] बेनिमून[7] ॥ २५

याही को माया कहें, पैदास सब इन से ।
कोई कहें ए करम है, सब बंधे इन ने ॥ २६

खुदा याही को कहें, याही को कहें काल ।
आखर सब को खाएसी, एही खेलावे ख्याल ॥ २७

यासों सुंन[8] निरगुन कहें, निराकार निरंजन ।
यों नाम खुदाय के, बोहोत धरे फिरकन[9] ॥ २८

दुनियां ला[10] इलाह[11] की, फेर फेर करे फिकर ।
गोते खाय फना मिने, पोहोंचे ना बका नजर ॥ २९

ला याही को केहेवही, इला भी याही को ।
सब कोई गोते खात हैं, ला इला के मों ॥ ३०

दुनियां ला इलाह की, फेर फेर करे फिकर ।
सब तले ला फना के, एक हरफ ना चले ऊपर ॥ ३१

मैं भी उन अंधेर में, हुती ना सुध दिन रात ।
जो मेहेर मुझ पर भई, सो कहूँ भाइयों को बात ॥ ३२

जब मोहे हादी सुध दई, पाया ला इलाह तब ।
नूर मकान नूर तजल्ला, पाई अरस हकीकत[12] सब ॥ ३३

---

१. अन्तर । २. सतगुरु । ३. शून्य । ४. निराकार । ५. निर्गुण । ६. अनुपम । ७. अद्वितीय । ८. शून्य । ९. मतमतान्तर । १०. क्षर । ११. अक्षर । १२ वास्तविकता ।

जो मानो सो मानियो, दिल में ले ईमान ।
मैं तो तेहेकीक कहूंगी, गिरोह अपनी जान ॥ ३४
नफा ईमान का अब है, पीछे दुनियां मिलसी सब ।
तोबा दरवाजे बंद होयसी, कहा करसी ईमान तब ॥ ३५
ईमान ल्याओ सो ल्याइयो, मैं केहेती हूँ वीतक ।
पीछे तो सब ल्यावसी, ऐसा कह्या मोहे हक ॥ ३६
रूह अल्ला अरस अजीम से, मो सों आय कियो मिलाप ।
कहे तुम आए अरस से, मोहे भेजी बुलावन आप ॥ ३७
तुम आए खेल देखने, सो किया कारन तुम ।
खेल देख पीछे फिरो, आए बुलावन हम ॥ ३८
तुम बैठे अपने वतन में, खेल देखत मिने ख्वाब ।
हम आए तुमें देखावने, देख के फिरो सिताब[१] ॥ ३९
इलम लुदंनी देय के, खोल दई हकीकत ।
सदरतुल—मुंतहा[२] अरस—अजीम, कही कायम की मारफत ॥ ४०
दे साहेदी किताब की, खोल दिए पट पार ।
ए खेल लैल का देखिया, तीसरा तकरार ॥ ४१
दो बेर लैलत कदरसें, खेल में तुम उतरे ।
चाहे मनोरथ मन में, सो हुए नहीं पूरे ॥ ४२
सोए पट सब खोलके, दई साहेदी किताब ।
कह्या तीसरा तकरार, ए जो खेल दुख का अजाब[३] ॥ ४३
इतहीं बैठे देखें रूहें, कोई आया नहीं गया ।
तुम जानो घर दूर है, सेहेरग से नजीक कह्या ॥ ४४
नहीं कायम चौदे तबक में, सो इत देखाय दिया ।
सेहेरग से नजीक, अरस बका में लिया ॥ ४५

१. जल्दी । २. अक्षर धाम । ३. यातना पूर्ण ।

साहेदी खुदाय की, रूह अल्ला दई जब ।
खुले अंदर पट अरस के, पाई सूरत खुदाय की तब ॥ ४६

अंदर मेरे बैठ के, खोले पट द्वार ।
ल्याए किल्ली अरस अजीम से, ले बैठाए नूर के पार ॥ ४७

हक सूरत ठौर कायम, कबहूं न पाया किन ।
रूहअल्ला के इलम से, मेरी नजर खुली बातन ॥ ४८

ए इलम लिए ऐसा होत है, रूह अपनी साहेदी[1] देत ।
बैठ बीच ब्रह्मांड के, अरस बका में लेत ॥ ४९

अव्वल बीच और अब लों, ऐसा हुआ न दुनी में कोए ।
कायम ठौर हक सूरत, इत देखावे सोए ॥ ५०

जो रूहें अरस अजीम की, कहूं तिनको मेरी वीतक ।
जो हुई इनायत[2] मुझ पर, जिन विध पाया हक ॥ ५१

कायम फना बीच दुनी के, हुती ना तफावत[3] ।
मैं जो बेवरा करत हों, कदम हादी बरकत ॥ ५२

नासूत और मलकूत की, ना ला मकान की सुध ।
जबरूत लाहूत हाहूत[4] दई हादी हिरदे बुध ॥ ५३

ए सुध पाए पीछे, भया बेबरा बुजरक ।
ज्यों जाहेर माहें दुनियां, त्यों बातून माहें हक ॥ ५४

बंदगी सरियत की, और हकीकत बंदगी ।
नासूत दुनी अरस मोमन, है तफावत एती ॥ ५५

नासूत बीच फना के, अरस कायम हमेसगी ।
दुनियां तअलुक[5] दिल की, रूह मोमन खुदाय की ॥ ५६

एता लिख्या बेवरा, सब किताबों मिने ।
नुकसान नफा दोऊ देखत, तो भी छोड़ें ना हठ अपने ॥ ५७

१. गवाही । २. कृपा । ३. अन्तर । ४. रंग महल । ५. सम्बन्ध ।

इसक बंदगी अल्लाह की, होत है हजूर ।
फरज बंदगी जाहेरी, सो लिखी हक से दूर ॥ ५८

जाहेर में केता कहूं, खुदाय का जहूर ।
वास्ते खास उमत के, ए करी है मजकूर ॥ ५९

ऊपर ला मकान के, राह ना मौत की तित ।
नूर मकान नूर तजल्ला, अरस हमेसगी जित ॥ ६०

नूर तजल्ला अरस मे, सूरत साहेब की ।
दरगाह बीच रहत हैं, रूहें हमेसगी[१] ॥ ६१

बड़ी बड़ाई इन की, कोई नहीं इन समान ।
रहें हजूर हक के, ए निसबत करी पेहेचान ॥ ६२

तब मैं दिल में यों लिया, करूँ कायम चौदे तबक ।
मेरे खावंद के इलम से, सबों पोहोंचाऊं हक ॥ ६३

ऐसा जब दिलमें आइया, दिया जोस हकें बल ।
उतरी किताबें कादर से, पोहोंच्या हुकम असल ॥ ६४

ए इनायत पेहेलें भई, आए महंमद आप ।
रूह अल्ला पेहेलें दिल मिने, अहंमद[२] कियो मिलाप ॥ ६५

तब खुदाई इलम से, भई सबों पेहेचान ।
ऐसी पाई निसबत, बूझा अपना कुरान ॥ ६६

सो कुरान में देखिया, सब पाइयां इसारत ।
हाथ मुद्दा[३] सब आइया, हक पेड़ जानी निसबत ॥ ६७

जो भेजी गिरो हक ने, ए जो खासल खास उमत ।
ताए देऊं दोऊ साहेदी, ज्यों, आवे असल लज्जत ॥ ६८

एह कायम न्यामतें[४], दोऊ से जुदी जुदी ॥
नूरजमाल और नूर की, दई दोऊ की साहेदी ॥ ६९

---

१. सदा । २. परमात्मा के हुक्म जोश का स्वरूप । ३. आशय । ४. देन ।

महंमद कहे में उनसे, मोमन मेरे भाई ।
कुरान हदीसों बीच में, है उनों की बड़ाई ।। ७०

ए कलाम अल्लामें पेहेले लिख्या, सब छोड़ेंगे सक ।
बरकत उमत खास की, सब लेसी इसक ।। ७१

करसी कतल दज्जाल को, ईसे का इलम ।
साफ दिल सब होयसी, जिनको पोहोंच्या दम ।। ७२

कहे सबद सब आगूंही, इत खुदा करसी कजाए ।
हिसाब सबन का लेयके, भिस्त जो देसी ताए ।। ७३

रूह अल्ला कुंजी ल्यावसी, *मेहेदी इमामत[1] ।
दरगाही रूहें आवसी, करसी महंमद सिफायत ।। ७४

जेते कोई फिरके कहे, सब छोड़ देसी कुफर ।
आवसी दीन इसलाम में, दिल साफ होय कर ।। ७५

एह पट जिनको खुले, सो आए बीच इसलाम[2] ।
लिया दावा हकीकी दीन का, सिर ले अल्ला कलाम ।। ७६

जो बात मैं दिल में लई, सो हकें आगूं रखी बनाय ।
इत काम बीच खुदाय के, काहूँ दम ना मारचो जाय ।। ७७

हुकुम साहेब का इन विध, सो लेत सबों मिलाय ।
खावंद बंध ऐसा बांध्या, कोई काढ़ ना सके पाय ।। ७८

अग्यारे सै साल का, बंध बांध्या मजबूत कर ।
हुकम ऐसा कर छोड़चा, काहूं करनी ना पड़े फिकर ।। ७९

महामत कहें सुनो मोमनों, मौला[3] अति बुजरक ।
मेहेर होत जिन ऊपर, ताए लेत कदमों हक ।। ८०

।। प्रकरण ।। १० ।। चौपाई ।। ५७४ ।।

---

१. नेतृत्व । २. सत्य धर्म । ३. मालिक ।

## दो नामा[1] किताब—मंगला चरण

अब कहूं विध निगम[2], देऊं महंमद की गम ।
जाथें मिटे दुनी हम तुम, करूं जाहेर रसम खसम ॥ १

कहूं माएने मगज विवेक, जाथें दीन[3] होए सब एक ।
छूट जाए छल भेख, ए बुध इमाम को विसेख ॥ २

खोज थके सब वेद, और खोज्या कैयों कतेब ।
पर पाया न काहूं भेद, ताथें रही सबों उमेद ॥ ३

सास्त्र सबे जो ग्रंथ, ताके करते थे अनरथ ।
बिना इमाम न कोई समरथ, जो पट खोल के करे अरथ ॥ ४

हक नाहीं मिने सृष्टि सुपन, ढूंढ्या ला के लोकन[4] ।
जो जुलमत[5] से उतपन, दई साख आप मुख तिन ॥ ५

कै खोज करी निगम, पर पाई नाहीं गम ।
ए पैदा जिनके हुकम, सो पाया न किन खसम ॥ ६

कैयों ढूंढ्या चौदे भवन, ढूंढ़े चार *मुक्ति के जन ।
*नवधा के ढूंढ़े भिन भिन, ना कछू खबर *त्रैगुन ॥ ७

महाप्रले होसी जब, सरगुन[6] ना निरगुन[7] तब ।
निराकार ना सुंन, केहेवे को नाहीं वचन ॥ ८

नेत[8] नेत कर तो गाया, जो ब्रह्म न नजरों आया ।
जित देख्यो तित माया, तब नाम निगम धराया ॥ ९

ब्रह्म नहीं मिने संसार, मन वाचा रही इत हार ।
ढूंढ्या कैयों कै प्रकार, पर चल्या न आगे विचार ॥ १०

कैं अवतार किताबां कर, बहु ग्यानी कहावें तिर्थंकर ।
औलिए अंबिए पैगंमर, हक की नाहीं काहूं खबर ॥ ११

कह्या इतथें आगे सुंन, निराकार निरगुन ।
भी कह्या निरंजन, ताथें अगम रह्या सबन ॥ १२

---

१. (वेद कतेब) । २. वेद । ३. धर्म । ४. लोग । ५. अज्ञान । ६. सगुण । ७. निर्गुन । ८. नेति (ऐसा नहीं) ।

कैयों ढूंढ़्या होए दरवेस[1], फिरे जो देस विदेस ।
पर पाया ना काहूं भेस, आगूं ला मकान कह्या नेस ।। १३

।। प्रकरण ।। ११ ।। चौपाई ।। ५८७ ।।

मंगला चरन तमाम

साखी—दौड़ करी *सिकंदरे, ढूंढ़्या हैयाती—आब[2] ।
बका अरस पाया नहीं, उलंघ न सक्या ख्वाब ।। १

हारे ढूंढ़ ऊपर तले, खुदा न पाया किन ।
तब हक का नाम निराकार, कह्या निरंजन सुंन ।। २

और नाम धरया हक का, बेचून बेचगून ।
कहे हक को सूरत नहीं, बेसबी बेनिमून ।। ३

इत थें आए महंमद, ल्याए फुरमान हकीकत ।
देखाए खोल माएने, अरस हक सूरत ।। ४

मैं आया हक का हुकम, हक आवेगा आखरत ।
कौल[3] किया है मुझसों, मैं ल्याया हक मारफत ।। ५

उतरीं अरवाहें अरस से, रूहें बारे हजार ।
और उतरीं गिरो फिरस्ते, और कुंन से हुआ संसार ।। ६

महंमद कहे मैं उमत पर, ल्याया हक फुरमान ।
जो लेवे मेरी हकीकत, ताए होवे सब पेहेचान ।। ७

सात तबक[4] तले जिमी के, तिन पर है नासूत ।
तिन पर हैं कै फिरस्ते, तिन पर है मलकूत ।। ८

ला हवा मलकूत पर, ला पर नूर मकान ।
नूर पार नूरतजल्ला[5], मैं तहां से ल्याया फुरमान ।। ९

जबराईल पोहोंच्या नूर लग, मैं पोहोंच्या पार हजूर ।
मैं वास्ते उमत के, बोहोत करी मजकूर ।। १०

---

१. संत, फकीर । २. अमृत । ३. प्रतिज्ञा । ४. लोक । ५. परमधाम ।

कह्या सुभाने[1] मुझ को, हरफ नब्बे हजार ।
कह्या तीस जाहेर कीजियो, और तीस तुम पर अख्त्यार ।। ११
बाकी जो तीस रहे, सो राखियो छिपाए ।
बका दरवाजे खोलसी, आखर को हम आए ।। १२
कौल किया हकें मुझसे, हम आवेंगे आखर ।
ज्यों आवे ईमान उमत को, तुम जाए देओ खबर ।। १३
होए काजी हिसाब लेयसी, दुनी को होसी दीदार ।
भिस्त देसी कायम, रूहें लेसी नूर के पार ।। १४
*ईसा *मेहेदी *जबराईल, और *असराफील इमाम ।
मार दज्जाल[2] एक दीन करसी, खोलसी अल्ला—कलाम[3] ।। १५
सोए कौल माने नहीं, हिंदू मुसलमान ।
महंमद कहे जाहेर, पर ए ल्यावें ना ईमान ।। १६
तो भी न मानें हक सूरत, पातसाह अवलीस दिलों जिन ।
कहे हक न किनहूं देखिया, खुदा निराकार है सुंन ।। १७
सोई कौल सरियतने, पकड़ लिया इनों से ।
कौल तोड़त रसूल के, दुसमन बैठा दिलमें ।। १८
आखर आए रूहअल्ला, सो लीजो कर आकीन[4] ।
ए समझेगा बेवरा, सोई महंमद दीन ।। १९
जो कछू कह्या *महंमदें, *ईसे भी कह्या सोए ।
ए माएने सो समझही, जो अरवा अरस की होए ।। २०
सात लोक तले जिमी के, मृतलोक है तिन पर ।
इंद्र रुद्र ब्रह्मा बीचमें, ऊपर विस्नु वैकुंठ घर ।। २१
निराकार वैकुंठ पर, तिन पर अक्षर ब्रह्म ।
अक्षरातीत ब्रह्म तिन पर, यों कहे *ईसे का इलम ।। २२

---

१. परमात्मा । २. शैतान माया । ३. ब्रह्म ज्ञान । ४. विश्वास ।

ए बेवरा वेद कतेब का, दोनों की हकीकत ।
इलम एकै विध का, दोऊ की एक सरत ॥ २३

*ईसे *महंमद *मेहेदी का, इन तीनों का एक इलम ।
हक नहीं ब्रह्मांडमें, ए हुआ पैदा जिनके हुकम ॥ २४

दुनियां बीच ब्रह्मांड के, ऐसा होए जो इलम लिएं ए ।
हक नजीक सेहेरग से, बीच वका बैठावे ले ॥ २५

करम कांड और सरियत, ए तब मानें महंमद ।
जब *ईसा और *इमाम, होवे दोऊ साहेद ॥ २६

हिंदू न माने कौल महंमद, ना सरियत मुसलमान ।
यों जान चौथै आसमान से, आया *ईसा[1] देने ईमान ॥ २७

और आए इमाम, ऊपर अपनी सरत ।
दे साहेदी महंमद की, करे इमामत[2] ॥ २८

ईसा इमाम उमत को कहे, चलो हुकम माफक ।
दे साहेदी महंमद की, दूर करे सब सक ॥ २९

पेहेले लिख्या फुरमानसें[3], आवसी *ईसा *इमाम हजरत ।
मारेगा दज्जाल को, करसी एक दीन आखरत ॥ ३०

वेदों कह्या आवसी, *बुध ईस्वरों का ईस ।
मेट कलिजुग असुराई, देसी मुक्ति सबों जगदीस ॥ ३१

*बुध ब्रह्मसृष्टि वास्ते, आवसी कह्या वेद ।
ए बात है उमत की, कोई और न जाने भेद ॥ ३२

जो नेत नेत कह्या निगमे[4], सब लगे तिन सबद ।
माएने निराकार पार के, क्यों समझे दुनियां हद ॥ ३३

पेहेले हवा कही मलकूत पर, सब सोई रहे पकड़ ।
पाई ना हकीकत कुरान की, तो कोई सक्या न ऊपर चढ़ ॥ ३४

---

१. ईसा रूह अल्लाह (श्री देवचन्द्र जी) । २. नेतृत्व । ३. कुरान । ४. वेद ।

वेद कहें उत दुनी की, पोहोंचे ना मन अकल ।
कहे कतेब छोड़ सुरैया को, आगे पोहोंचे ना अरस असल ।। ३५
निगमें गम कही ब्रह्म की, क्यों समझे ख्वाबी दम ।
सोए करूँ सब जाहेर, *रूह अल्ला के इलम ।। ३६
कहूँ ईसे के इलम की, जो है हकीकत ।
हक बका अरस उमत, जाहेर करी मारफत ।। ३७
नाम सारों जुदे धरे, लई सबों जुदी रसम ।
सबमें उमत और दुनियां, सोई खुदा सोई ब्रह्म ।। ३८
*लोक चौदे कहे *वेदने, सोई *कतेब चौदे तबक ।
वेद कहे ब्रह्म एक है, कतेब कहे एक हक ।। ३९
*तीन सृष्टि कही वेदने, उमत तीन कतेब ।
लेने न देवे माएने, दिल आड़ा दुसमन फरेब ।। ४०
दोऊ कहे वजूद[1] एक है, अरवा सबमें एक ।
वेद कतेब एक बतावहीं, पर पावे न कोई विवेक[2] ।। ४१
जो कछू कह्या कतेबने, सोई कह्या वेद ।
दोऊ बंदे एक साहेब के, पर लड़त विना पाए भेद ।। ४२
बोली सबों जुदी परी, नाम जुदे धरे सबन ।
चलन जुदा कर दिया, तार्थे समझ ना परी किन ।। ४३
तार्थे हुई बड़ी उरझन[3], सो सुरझाऊं दोए ।
नाम निसान जाहेर करूँ, ज्यों समझे सब कोए ।। ४४
विस्नु *अजाजील फिरस्ता, ब्रह्मा मैकाईल ।
जबराईल जोस धनीय का, रुद्र तामस अजराईल ।। ४५
बुध ब्रह्मा मन नारद, मिल व्यासे बाँधे करम ।
ए सरियत है वेद की, जासों परे सब भरम ।। ४६

---

१. शरीर । २. समझ । ३. उलझन ।

वेदें नारद कह्यो मन विस्नु को, जाको सराप्यो[1] प्रजापत[2] ।
राह ब्रह्म की भान के, सबों विस्नु बतावत ।। ४७
दम *अबलीस अजाजील को, जाए कुरानें कही लानत[3] ।
सो बैठ दुनी के दिल पर, चलावे सरियत ।। ४८
अजाजील दम सब दिलों, बैठा अबलीस ले लानत ।
बीच तौहीद[4] राह छुड़ाए के, दाएं बाएँ बतावत ।। ४९
सोई अबलीस सबन के, दिल पर हुआ पातसाह ।
एही दुसमन दुनी का, जिन मारी सबों की राह ।। ५०
मलकूत कह्या वैकुंठ को, मोहतत्व अंधेरी पाल ।
अक्षर को नूर—जलाल, अक्षरातीत नूरजमाल ।। ५१
ब्रह्मसृष्टि कहे मोमनको, कुमारका फिरस्ते नाम ।
ठौर अक्षर सदरतुलमुंतहा, अरस अजीम सो धाम ।। ५२
*श्रीठकुरानीजी *रूहअल्ला, *महंमद श्रीक्रस्न जी स्याम ।
सखियां रूहें दरगाह की, सुरत अक्षर फिरस्ते नाम ।। ५३
बुधजी को असराफील, *विजिया अभिनंद इमाम ।
उरझे सब बोली मिने, वास्ते जुदे नाम ।। ५४
वाकी तो वेद कतेब, दोऊ देत हैं साख ।
अंदर दोऊ के गफलत[5], लड़त वास्ते भाख[6] ।। ५५

।। प्रकरण ।। १२ ।। चौपाई ।। ६४२ ।।

*कंसे काला[7]—गृहमें, किए वसुदेव देवकी बंध ।
भानेज मारे आपने, ऐसा राज मद अंध ।। १
*नूह काफर की बंधमें, रहे साल चालीस ।
बेटे मारे कै दुख दिए, तो भी काफरें न छोड़ी रीस[8] ।। २

१. श्राप दिया । २. ब्रह्मा । ३. धिक्कार । ४. एकेश्वर । ५. अज्ञान । ६. भाषा । ७. कारागृह । ८. गुस्सा ।

कहे वेद वैकुंठ से, आए चत्र—भुज दिया दीदार ।
*वसुदेव तिन सिखापन, स्याम पोहोंचाया *नंद द्वार ॥ ३

मलकूत से फिरस्ता[१], नूह समझाया आए ।
नसीहत[२] कर पीछा फिरचा, *नूहें स्याम दिया पोहोंचाए ॥ ४

अहीरों की कोम में, जित मेहेतर[३] नंद कल्यान ।
सुख लिया व्रज वधुएँ, औरों न हुई पेहेचान ॥ ५

मेहेतरों[४] की कोममें, जित *हूद कील सिरदार ।
जोत रसूल टापू मिने, दिया जबराईलें आहार ॥ ६

खेल हुआ जो लैलमें[५], तकरार[६] जो अव्वल ।
उतरीं रूहें फिरस्ते, अरस के असल ॥ ७

सात रात आठ दिन का, *सुकें[७] कहचा *इंद्र कोप ।
भेजी वाए जल अगनी, प्रले को मृत लोक ॥ ८

तब गोवरधन तले, स्यामें राख्यो गोकुल ।
जल प्रले के फिरवले[८], अंदर न हुआ दखल ॥ ९

सात रात आठ दिन का, हुआ तोफान हूद मेहेतर ।
राखी रूहें कोहतूर[९] तले, और डूब मुए काफर ॥ १०

हूद कहचा नंदजीय को, टापू व्रज अखंड ।
कोहतूर गोवरधन कहचा, न्यारा जो ब्रह्मांड ॥ ११

*जोगमाया की नाव कर, तित सखियां लैई बुलाए ।
सो सोभा है अति बड़ी, जित सुख लीला खेलाए ॥ १२

समारी किस्तीय को, तित मोमन लिए चढ़ाए ।
सो स्याम चिराग महंमद की, जिन मोमन पार पोहोंचाए ॥ १३

वेदें कहचा स्याम व्रजमें, आए नंद के घर ।
पीछे आए रासमें, इत हुई नहीं फजर[१०] ॥ १४

---

१. फिरिश्ता । २. सीख । ३. मुखिया । ४. एक छोटी जाति । ५. रात । ६. फेरा (बृज) ७. शुकदेव । ८. लौट गया । ९. गोवर्धन पहाड़ । १०. सुबह (जागृति) ।

*कालमाया इंड पेहेलें रच्यो, *जोगमाया रचियो और ।
फेर तीसरो *कालमाया रच्यो, जाने एही इंड वाही ठौर ॥ १५

पेहेला तकरार हूद घर, दूजा किस्ती पर ।
तीसरा भया *फजरका, जाने वाही *लैलत कदर ॥ १६

किस्ती *नूह नबीय की, लिए अपने तन चढ़ाए ।
स्याम बेटा नूह नबीय का, फिरच्या किस्ती पार पोहोंचाए ॥ १७

कहे कुरान डूबे काफर, नूह नबी तोफान ।
मोमन सबे किस्ती चढ़े, ए नई हुई जहान ॥ १८

कह्या वेदें कृस्ना अवतार की, पेहेले आए व्रजके माहें ।
रहे रात पीछली लग, फजर इंड तीसरा इहाँए ॥ १९

आगूं नूह तोफान के, दो तकरार भए *लैल ।
दोए पीछे ए तीसरा, जो भया फजर का खेल ॥ २०

कहे महंमद दिन खुदाए का, दुनियां के साल हजार ।
लैलत कदर की फजर को, पावे दुनियाँ सब दीदार ॥ २१

*लैल बड़ी महीने हजार से, ए बताए दई सरत ।
सोई फजर सदी अग्यारहीं, ए देखो दिन क्यामत ॥ २२

ब्रह्मसृष्टि सखियां स्याम संग, खेले व्रज रास के माहें ।
ए सुनियो तुम बेवरा[1], खेल फजर तीसरा इहांए[2] ॥ २३

ए जो खेल देखाया रूहन को, ताके हुए तीन तकरार ।
सोए कहूं मैं बेवरा, ए जो फजर कार[3] गुजार ॥ २४

*कालमाया *जोगमाया, बीच कहे प्रले[4] दोए ।
एह खेल भया तीसरा, माएने बुधजी बिना न होए ॥ २५

एक तोफान हूद के, और किस्ती बयान ।
प्रले दोऊ जाहेर लिखे, मिने रसूल फुरमान ॥ २६

---

१. वर्णन । २. यहां । ३. लीला । ४. प्रलय ।

पेहेलें भाई दोऊ अवतरे, एक स्याम दूजा हलधर[1] ।
स्याम सरूप ब्रह्म का, खेले रास जो लीला कर ॥ २७
दो बेटे *नूह नबीय के, एक स्याम दूजा हिसाम ।
स्यामें समारी किस्ती मिने, दिया रूहों को आराम ॥ २८
*हलधर आतम नारायन, जो आया हिंदुस्तान ।
साहेब कह्या हिंदुअन का, संग गीता भागवत ग्यान ॥ २९
बेटा नूह नबीय का, कह्या हिंद का बाप हिसाम ।
सो तोफान के पीछे, आया हिंद मुकाम ॥ ३०
स्याम रास से बरारब[2], ल्याया साहेब का फुरमान ।
हकीकत अखंड धाम की, तिन बांधी सब जहान ॥ ३१
सो बुधजी सुर असुरनपें, लेसी वेद कतेब छीन ।
कहे असुराई मेट के, देसी सबों आकीन ॥ ३२
बाप फारस[3] रूम आरब का, कह्या फुरमाने स्याम ।
फुरमान ल्याए वास्तें, रसूल धराया नाम ॥ ३३
वेद कतेब सबनपें, लेसी छीन बुधजी ।
खोल माएने देसी मुक्ति, बीच बैठ ब्रह्मसृष्टी ॥ ३४
ए खिताब महंमद मेहेदीपें, जाकी करे मुसाफ[4] सिफत ।
सो महंमद मेहेदी खोलसी, आखर अपनी बीच उमत ॥ ३५
अवतार तले विस्नु के, विस्नु करे स्याम की सिफत ।
इन विध लिख्या वेद में, सो आए स्याम बुध जी इत ॥ ३६
लिखी अनेकों बुजरगियां, पैगंमरों के नाम ।
ए मुकरर[5] सब *महंमदपें, सो *महंमद कह्या जो स्याम ॥ ३७
तिर्थंकरों[6] सबों खोजिया, और खोज करी अवतार ।
तो बुजरगी इत कहाँ रही, जो कायम न खोले द्वार ॥ ३८

१. बलराम । २. अरब देश । ३. ईरान । ४. धर्म ग्रन्थ । ५. निश्चित । ६. जैन ऋषि ।

अवतारों इत क्या किया, जो दई न बका की सुध ।
तो लों द्वार मूंदे रहे, आए खोले *विजिया अभिनंद बुध ।। ३८

सिफत सब पैगंमरों की, माहें लिखी अल्ला—कलाम[१] ।
उमत सबे रानी[२] गई, इनों किन को दिया पैगाम ।। ४०

लिखी बड़ाई पेगंमरों, तिन की कहां गई नसीहत ।
अजूं ठाढ़ी उनों की उमतें, देखो पत्थर आग पूजत ।। ४१

करी किताबें मनसूख[३], हुए जमाने रद ।
ना मोमन पीछे तोफान के, जो लों आखर आए महंमद ।। ४२

रात बड़ी है रास की, कही *सुकें और *व्यास ।
ता बीच लीला अखंड, ब्रह्म ब्रह्मसृष्टि प्रकास ।। ४३

मृतलोक और स्वर्ग की, ब्रह्मा और नारायन ।
रास रात के बीच में, ए चारों दरम्यान ।। ४४

रात कही कदर[४] को, बोहोत बड़ी है सोए ।
फिरत चिरागें[५] इनमें, चांद सूर ए दोए ।। ४५

ब्रह्मलीला तीनों ब्रह्मांड की, सो जाहेर होसी सुख ब्रह्म ।
दे मुक्ति सब दुनीय को, ब्रह्मसृष्टि लेसी कदम ।। ४६

मोमन तीनों तकरार में, जाहेर होसी लैलत कदर ।
एक दीन होसी दुनी में, सुख कायम बखत फजर ।। ४७

ब्रह्मसृष्टि प्रेमलक्षमें, कुमारिका ईस्वर ।
तीसरी जीव सृष्टि दुनियां, वेद कहत यों कर ।। ४८

खास रूहें उमत की, और मुतकी[७] दीन इसलाम[८] ।
और तीसरी खलक, ए तीनों कहे अल्ला कलाम ।। ४९

ब्रह्म सृष्टी अक्षरातीत से, ईस्वरी अक्षर से ।
जीव सृष्टि बैकुंठ की, ए जो गफलत में ।। ५०

---

१. कुरान । २. बहिष्कृत । ३. निरस्त । ४. लैलतुल कदर । ५. दीपक । ६. प्रेम लक्षरा ।
७. श्रद्धावान । ८. सत्य सनातन धर्म ।

रूहें उमत कही लाहूती और फिरस्ते जबरूती ।
और आम खलक तारीकोसे[1], सो सब कुंन से मलकूती ॥ ५१
बुध *नेहेकलंक आय के, मार कलिजुग करसी दूर ।
असुराई सबों मेट के, देसी मुक्ति हजूर ॥ ५२
*बिजिया—अभिनंदन बुध जी, लिखी एही सरत ।
ब्रह्म सृष्टि जाहेर होए के, सब को देसी मुक्त ॥ ५३
*ईसे[2] के इलम से, होसी सबे एक दीन ।
ए दज्जाल को मार के, देसी सबों आकीन ॥ ५४
चरन रज ब्रह्म सृष्टिकी, ढूंढ़ थके त्रैगुन ।
कै विध करी तपस्या, यों केहेवत वेद वचन ॥ ५५
करसी पाक चौदे तबक को, लाहूती—उमत[3] ।
देसी भिस्त सबन को, ऐसी कुरान में सिफत ॥ ५६
बरस मास और दिन लिखे, सरत भांत विध सब ।
बड़ाई ब्रह्म सृष्टि की, ए जो लीला होत है अब ॥ ५७
साल मास और दिन लिखे, कौल क्यामत हकीकत ।
सिफत उमत मोमनों, ए जो जाहेर होत आखरत ॥ ५८
*बिजिया अभिनंदन *बुधजी, और *नेहेकलंक[4] अवतार ।
कायम करसी सब दुनियां, त्रिगुन को पोहोंचावें पार ॥ ५९
महंमद मेहेदी / आवसी, और ईसा हजरत ।
ले हिसाब भिस्त देसी सबों, कायम करसी इन सरत ॥ ६०
अखंड वतन इत जाहेर, और जाहेर सुख ब्रह्म ।
*बुध *विजिया अभिनंद जाहेर, जाहेर काटे दुनी के करम ॥ ६१
भिस्त होसी इत जाहेर, और जाहेर दोजक ।
काजी कजा इत जाहेर, और जाहेर होसी सबों हक ॥ ६२

---

१. अन्धकार (माया) । २. (श्री देवचन्द्र जी) । ३. ब्रह्म सृष्टि । ४. निष्कलंक ।

कै हुए ब्रह्मांड कै होएसी, पर ए लीला न हुई कब ।
बिलास[1] बड़ो ब्रह्मसृष्टि में, सुख नयो पसरसी अब ॥ ६३
कै दुनियां हुई कै होएसी, पर कबूं ना जाहेर उमत ।
दे भिस्त चौदे तबकों, करें बखत रोज क्यामत ॥ ६४
रसम करम कांड की, हुती एते दिन ।
अब इलम बुधजीयके, दै सबों प्रेम लछन ॥ ६५
सरियत बंदगी करे फरज ज्यों, सो करते एते दिन ।
महंमद मेहेदी जाहेर होए के, इसक दिया सबन ॥ ६६
पेहेचान बुध नेहेकलंक, और पेहेचान ब्रह्मसृष्ट ।
याकी अस्तुति निगम[2] करे, किन सुन्या न देख्या दृष्ट ॥ ६७
पेहेचान महंमद रूह अल्ला, और पेहेचान मोमन ।
तोरा[3] सबो पर इनका, यों कहे कुरान रोसन ॥ ६८
तीन सरूप कहे वेद ने, बाल किसोर बुढ़ापन ।
व्रज रास प्रभात को, ए बुध जी को रोसन ॥ ६९
ब्रह्मलीला ब्रह्म सृष्टि में, चढ़ती चढ़ती कहे वेद ।
प्रेम लक्ष दोऊ कहे, किए जाहेर *बुधजीएँ भेद ॥ ७०
साहेब के संसार में, आए तीन सरूप ।
सो कुरान यों केहेवही, सुंदर रूप अनूप ॥ ७१
एक बाल दूजा किसोर, तीसरा बुढ़ापन ।
सुंदरता सुग्यान[4] की, बढ़त जात अति घन ॥ ७२
ज्यों चढ़ती अवस्था, बाल किसोर बुढ़ापन ।
यों बुध जागृत नूर की, भई अधिक जोत रोसन ॥ ७३
ए केहेती हूँ प्रगट, ज्यों रहे ना संसे किन ।
खोल माएने मुसाफ के, सब भाने विकलप[5] मन ॥ ७४

१. सुखोपभोग । २. वेद । ३. प्रतिबन्ध । ४. सुज्ञान । ५. भ्रान्ति ।

श्री क्रस्नजीएँ ब्रजरास में, पूरे ब्रह्म सृष्टि मन काम ।
सोई सरूप ल्याया फुरमान, तब रसूल केहेलाया स्याम ।। ७५

चौथा सरूप ईसा रूह अल्ला, ल्याए किल्ली हकीकत धाम ।
पाँचमा सरूप निज बुधका, खोल माएने भए इमाम ।। ७६

ए भी पांच सरूप का, है बेवरा माहें कुरान ।
जो कछू लिख्या भागवत में, सोई साख[1] फुरमान ।। ७७

एही बड़ी इसारत, इमाम की पेहेचान ।
सब को सब समझावहीं, यों केहेवत है कुरान ।। ७८

वेद कहे बुध इनपें, और बुध सुपन ।
एही सब को जगाय के, देसी मुक्ति त्रैगुन ।। ७९

हिंदू कहें धनी आवसी, वेदों लिख्या आगम[2] ।
कहया हमारा होएसी, साहेब आगे हम ।। ८०

मुसलमान कहें आवसी, सो हमारा खसम ।
लिख्या है *कतेब[3] में, आगे नबी हमारा हम ।। ८१

ईसा अल्ला आवसी, कहे किताब[4] फिरंगान ।
किल्ली भिस्त जो याहीपें, खोल देसी नसरान[5] ।। ८२

यों लड़ कें लोक जुदे हुए, पर खसम न होवे दोए ।
रब्ब आलम[6] का ना टरे, जो सिर पटके कोए ।। ८३

यों सब जाहेर पुकारहीं, कोई माएने ना समझत ।
ए माएने मगज इमाम पें, दूजा कौन खोले मारफत ।। ८४

यों आए तीनों सरूप, धर धर जुदे नाम ।
सो कारन ब्रह्म उमत के, गुझ जाहेर किए अलाम[7] ।। ८५

सुर असुर अदयाप[8] के, करत लड़ाई दोय ।
ए द्वैष साहेब बिना, मेट ना सके कोय ।। ८६

---

१. गवाही । २. भविष्य । ३. चार किताबें । ४. बाइबिल । ५. ईसाई । ६. ब्रह्मांड ।
७. अथाह ज्ञान । ८. प्रथम से ।

द्वैष जो लग्या पेड़[1] से, सब सोई रहे पकर ।
साधो द्वैष मिटावने, उपाय थके कर कर ॥ ८७
कै अवतारों बल किए, कै बल किए तिर्थंकर ।
द्वैष अद्यापी ना मिटया, कै फिरस्ते पैगंमर ॥ ८८
साहेब आए इन जिमी, कारज करने तीन ।
सो सब का झगड़ा मेट के, या दुनियां या दीन ॥ ८९
क्रोध सुर असुरों को, दूजे जादे पैगंमर और ।
वेद कतेब छुड़ावने, धनी आए इन ठौर ॥ ९०
दो बेटे रूह अल्लाह के, एक नसली[2] और नजरी[3] ।
भई लड़ाई इन वास्ते, मसनंद[4] पैगंमरी ॥ ९१
वेद आया देवन पें, असुरन पें कुरान ।
मूल माएने उलटाय के, कै जाहेर किए तोफान ॥ ९२
मेटन लड़ाई बंदन[5] की, और जादे[6] पैगंमर ।
धनी आए वेद छुड़ावने, ए तीन बातें चित्त धर ॥ ९३
जाको दिल जिन भांत को, तासों मिले तिन विध ।
मन चाहया सरूप होएके, कारज किए सब सिध ॥ ९४
सो बुध इमाम जाहेर भए, तब खुले सब कागद[7] ।
सुख दो सांचों को दिए, और झूठे हुए सब रद ॥ ९५
वेदांत गीता भागवत, दैयां इसारतां सब खोल ।
मगज माएने जाहेर किए, मांहें गुझ हते जो बोल ॥ ९६
अंजीर जंबूर तौरेत, चौथी जो फुरमान[8] ।
ए माएने मगज गुझथे, सो जाहेर किए बयान ॥ ९७
ए कागद उमत ब्रह्मसृष्टि का, सोभा आई तिन पास ।
माएने इन रोसन किए, तब झूठे भए निरास ॥ ९८

१. मूल से । २. वंश से । ३. मुंह बोला । ४. गादी । ५. उपासक । ६. वंशज । ७. धर्म ग्रन्थ । ८. कुरान ।

जब हक हादी जाहेर भए, और अरस उमत ।
सब किताबें रोसन भई, ऊगी फजर मारफत ॥ ९९

कहे काफर असुर एक दूसरे, करते लड़ाई मिल ।
फुरमान जब रोसन भया, तब पाक हुए सब दिल ॥१००

रात अंधेरी मिट गई, हुआ उजाला दिन ।
रब्ब आलम जाहेर भए, सुर असुरों ग्रहे चरन ॥१०१

हांसी हुई अति बड़ी, झूठों बड़ी जलन ।
मेला अति बड़ा हुआ, आखर सुख सबन ॥१०२

बिना सुख कोई ना रह्या, सब मन काम पूरन ।
अंधेरी कछू ना रही, भए चौदे तबक रोसन ॥१०३

मोह तत्व अहं उड़यो, जो परदा ऊपर त्रैगुन ।
ए सब बीच द्वैत[1] के, निराकार निरंजन सुंन ॥१०४

वचन थके इतलों, आगे चले न मनसा[2] वाच[3] ।
सुपन सृष्टि खोजे सास्त्रों, पर पाया न अखंड घर सांच ॥१०५

अक्षर ब्रह्म जाहेर किया, जित उतपत फिरस्तों नूर ।
घर जबराईल जबरूत, जो नेहेचल सदा हजूर ॥१०६

और धाम अक्षरातीत, नूरतजल्ला अरस ।
रूह बड़ी ब्रह्मसृष्टि की, जो है अरस परस ॥१०७

ए लीला सब प्रगट करी, *महंमद *ईसा *बुध आए ।
ए तीनों सरूपों मिल के, सबको दिए जगाए ॥१०८

भिस्त दई सबन को, चढ़े अक्षर नूर की दृष्ट ।
कायम सुख सबन को, सुपन जीव जो सृष्ट ॥१०९

दूजी सृष्टि जो जबरूती, जो ईस्वरी कही ।
अधिक सुख अक्षर में, दिल नूर चुभ रही ॥११०

१. ईश्वर प्रकृति । २. मन । ३. वचन ।

और उमत जो लाहूती, ब्रह्मसृष्टि घर धाम ।
इन को सुख देखाए के, पूरन किए मन काम ॥१११

मुक्ति दई त्रैगुन फिरस्ते, जगाए नूर अक्षर ।
रूहें ब्रह्मसृष्टि जागते, सुख पायो सचराचर[1] ॥११२

करनी करम कछू ना रह्या, धनी बड़े कृपाल ।
सो बुधजीएँ मारिया, जो *त्रैलोकीका काल ॥११३

॥ प्रकरण ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ ७५५ ॥

## कुरान की कहूँ

अब कहूँ कुरान की, सब विध हकीकत ।
मगज माएने खोले विना, क्यों पाइए मारफत ॥ १

बिध सारी यामें लिखी, जार्थे न रहे अग्यान ।
माएने ऊपरके लेय के, कर बैठे अपना कुरान ॥ २

आरबोंसों ऐसा कह्या, कागद ए परवान[2] ।
आवसी रब्ब आलम का, तब खोलसी कुरान ॥ ३

कागद में ऐसा लिख्या, आवेगा साहेब ।
अंदर अरथ खोलसी, सब जाहेर होसी तब ॥ ४

दुनियां चौदे तबकों, और मिलो त्रैगुन ।
माएने मगज मुसाफ के, कोई खोले ना हम विन ॥ ५

धनी माएने खोलसी, सत जानियो सोए ।
साहेब बिना ए माएने, और खोल न सके कोए ॥ ६

नाम सारे जुदे धरे, ऊपर करी इसारत ।
फुरमान खोल जाहेर करे, धनी जानियो तित ॥ ७

गुझ अरथ यामें लिखे, सोए समझे कैसे कर ।
अरथ ऊपर का लेय के, अकस[3] लेत दिल धर ॥ ८

---
१. चेतन और जड़ । २. आदेश पत्र, (परवान) । ३. प्रतिबिंब ।

बड़ी सोभा एहेलकिताब[१] की, लिखी मिने कुरान ।
सो आरब जानें आपको, ए जो धनी फुरमान ॥ ९

एहेलकिताब जानें आपको, और सब जाने कुफरान ।
फजर होसी माएने खुले, तब होसी पेहेचान ॥ १०

एक खासी उमत रूहन की, सो गिनती बारे हजार ।
ए आरब तो अनगिनती, नहीं करोरों पार ॥ ११

एता भी ना विचारहीं, होए खावंद बैठे सब ।
फैल[२] न देखें अपने, लिया मोमनों का मरातब[३] ॥ १२

सहूर ना करे दिल से, कह्या *नाजी फिरका एक ।
और बहत्तर *नारी कहे, पर पावें नहीं विवेक ॥ १३

लिख्या है कुरान में, कुलफ किए दिल पर ।
परदा कानों आंखों पर, तो न सके अरथ कर ॥ १४

कागद एक उमत का, और हुआ झूठोंसों छल ।
माएने जब जाहेर भए, तब भाग्यो झूठों बल ॥ १५

एह विध साख कुरानमें, जाहेर लिखी हकीकत ।
सो धनी आए जहूदों[४] मिने, ओ आरबों में ढूंढ़त ॥ १६

परदा लिख्या मुंह पर, वास्ते आवने हिंदुओं माहें ।
जाहेर परस्त जो आरब, सो इसारत समझत नाहें ॥ १७

॥ प्रकरण ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ ७७२ ॥

## कुरान के निसान क्यामतके जाहेर हुए

बरस नव्बे हजार पर, गुजरे एते दिन ।
क्यामत लिखी कुरानमें, सोए न पाई किन ॥ १

कै पढ़ पढ़ काजी हुए, कै आलम[५] आरफ[६] ।
माएने मगज मुसाफ के, किन खोल्या न एक हरफ ॥ २

---

१. किताब वाले (ब्रह्मसृष्टि) । २. कर्म । ३. पदवी । ४. (हिन्दुओं) । ५. विद्वान । ६. ज्ञानी ।

लिख्या जाहेर कुरानमें, और माजजे[1] सब रद ।
सांचा माजजा इमामपें, जो ले उतरचा *अहंमद ।। ३

करामात कलाम अल्लाह की, सांची कहियत हैं सोए ।
लिख्या है कुरानमें, सो बिना *इमाम न होए ।। ४

पढ़्या नाहीं फारसी, ना कछू हरफ आरब ।
सुन्या न कान कुरान को, और खोलत माएने सब ।। ५

ए सब किताबें इन पें, तामें किल्ली कुरान ।
*रूह अल्ला *महंमद *मेहेदी, एही *इमाम पेहेचान ।। ६

जो लों माएने[2] मगज न पाइया, तो लों पढ़्या न किन कुरान ।
किन भेज्या किन वास्ते, ना कछू रसूल पेहेचान ।। ७

जो अरथ ऊपर का लेवहीं, सो कहे देव सैतान ।
यों जंजीरां[3] मुसाफ की, कै विध करी बयान ।। ८

अजाजील दम सबनमें, फिरस्ता जो बुजरक ।
सारी जिमी पर सेजदा, किया ऊपर हक ।। ९

हुकम हुआ तिन को, कर सेजदा आदम पर ।
माएने मगज न ले सके, लिया ऊपर का जाहेर ।। १०

लानत हुई तिन को, हुआ गलेमें तौक[4] ।
यों सब जाहेर पुकारहीं, तो भी छोड़ें ना वे लोक ।। ११

तिन दिया धक्का आदम को, अबलीस[5] गेहूं खिलाए ।
काढ्या प्यारी भिस्त से, दुसमन संग लगाए ।। १२

ए विचारे क्या करें, सब आदम की नसल ।
तो फुरमाया ना करें, वे खैंचे पेड़ असल ।। १३

ओ तो ले ले माएने मगज, लिखे बड़े निसान ।
सोए धरे सरत पर, करने अपनी पेहेचान ।। १४

---

१. चमत्कार । २. गूढ़ार्थ । ३. कड़ियां । ४. फंदा । ५. शैतान ।

दुनियां सबे जाहेरी, सो लेवे माएनें जाहेर ।
अंदर अरथ खुले बिना, क्यों पावे दिन आखर ॥ १५

निसान कहे इन वास्ते, सो बांधे कौल पर हद ।
लेत माएने ऊपर के, सो करने को सब रद ॥ १६

कलाम अल्लाके माएने, सो भी कही इसारत ।
ए नसल आदम हवाई, क्यों पावे दिन आखरत ॥ १७

माएने मुल्लां या ब्राह्मण, करते जो उलटाए ।
सोई हरफ जबराईल, गया सब चटाए[1] ॥ १८

नेहेरें चलसी उलटी, किए नजीकी दूर ।
ईसा मेहेदी महंमद, आए हिंदमें बरस्या नूर ॥ १९

नूर खुदा रोसन हुआ, खैंच छूटी सब तरफ ।
लेत माएने ऊपर के, सो रह्या न कोई हरफ ॥ २०

*महंमद आया *ईसे[2] मिने, तब अहंमद हुआ स्याम ।
अहंमद मिल्या मेहेदी मिने, ए तीन मिल हुए इमाम ॥ २१

*अलफ कह्या महंमद को, रूह अल्ला ईसा लाम ।
मीम *मेहेदी पाकसों, तीनों एक कहे *अल्ला कलाम ॥ २२

महंमद ईसा आए *ग्याराजमें, और *असराफील इमाम ।
बुध जबराईल मिल के, किए गुझ जाहेर अल्ला कलाम ॥ २३

माएने इन मुसाफ के, कलाम अल्लाका कौल[3] ।
ईसे के इलम से, दई इसारतें सब खोल ॥ २४

बड़े निसान आखरत के, *आजूज *माजूज दोए ।
बेटे कहे *याफिस के, इनहूं न छोड़्या कोए ॥ २५

कहे बड़े सबन से, सौ गज का *आजूज ।
और तंग चसम कह्या, एक गज का माजूज ॥ २६

---

१. चाट गया अनर्थों को । २. श्री देवचन्द्र जी । ३. वचन ।

चार लाख कौम इन की, फौजां होसी तीन ।
अरथ ऊपर के आखरत, क्यों पावें रात दिन ॥ २७

ए तो गिनती कही दिनन की, आखरत बड़े निसान ।
माएने मगज मुसाफ के, और करे सो कौन बयान ॥ २८

काल याही दिन कहे, सो पोहोंच्या कौल पर आए ।
तब पिंड और ब्रह्मांड को, देत सबे उड़ाए ॥ २९

*दाभतल्अर्ज मक्के से, जाहेर होसी सब ठौर ।
एक हाथ *आसा *मूसे का, दूजे *सलेमान की मोहोर ॥ ३०

सो मुख होसी उजला, मोहोर करसी जिन ।
आसा चुभावे जिन मुख, स्याह मुख होसी तिन ॥ ३१

उजल मुख मोमन कहे, स्याह मुख कहे काफर ।
या भिस्ती या दोजखी, जाहेर होसी आखर ॥ ३२

कही दाभा[१] वास्ते वह जिमी, पेहेले हुती सबे कुफरान[२] ।
जो लों स्याम बरारब ना हते, ना रसूल खबर फुरमान ॥ ३३

जब स्याम रसूल आए इन जिमी, तब हुआ नूर रोसन ।
कुरान रसूल उमत, जाहेर करी सबन ॥ ३४

ल्याए बंदगी केहेलाया कलमा[३], बरस्या खुदा का नूर ।
सो नूर फिरचा खाली भई, जैसी असल दाभा थी अंकूर ॥ ३५

सो नूर सब इत आइया, इन जिमी मसरक[४] ।
तब वह जिमी दाभा भई, जैसी पेहेले थी विना हक ॥ ३६

मोमन मुख उज्जल भए, भए काफर मुख स्याह ।
यों मसरक और मगरब, दोनों दुरस्त[५] कह्या ॥ ३७

*रूह अल्ला *महंमद *इमाम, मसरक आए जब ।
सूरज गुलबा[६] आखरी, मगरब[७] ऊग्या तब ॥ ३८

---

१. पाशविक । २. असुर । ३. कुरान का मंत्र । ४. पूर्व । ५. ठीक । ६. प्रभुत्व के लिए झगड़ा । ७. पश्चिम ।

नूर खुदा आया मसरक, ऊग्या सूरज मगरब ।
जाहेरी ढूंढ़ें सूरज जाहेर, ए जो पढ़े आखरी सब ॥ ३९

ज्यादा चौदे तबक से, [७]दज्जाल गधा इन हद ।
काना अस्वार तिन पर, सो भी वाही कद ॥ ४०

ताए रूहअल्ला मारसी, करसी दुनियां साफ ।
आखर उमत महंमदी, करसी आए इंसाफ[१] ॥ ४१

दम दज्जाल सबनमें, रहत दुनी दिल पर ।
ए जो पातसाह अबलीस, करत सबमें पसर[२] ॥ ४२

ऐसा ए जानत हैं, तो भी जाहेर चाहें दज्जाल ।
जब ए दज्जाल मारिया, तब दुनी रेहेसी किन हाल ॥ ४३

आखर आए असराफील, उड़ावसी बजाए सूर ।
फेर करसी काएम, बजाए खुदाए का नूर ॥ ४४

गावेगा कुरान को, असराफील सूर कर ।
तब फिरसो सब फिरस्ते, एह बात चित्त धर ॥ ४५

जब जहूर[३] जाहेर हुआ, कलाम अल्ला का नूर ।
तब ए होसी काएम, ले याही का जहूर ॥ ४६

ए जो माएने मुसाफ के, सो मेहेदी बिना न होए ।
सो साहेबने ऐसा लिख्या, और क्यों कर सके कोए ॥ ४७

॥ प्रकरण ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ ८१९ ॥

## सूरत मीजान की

केहेती हों उमत को, सुनसी सब संसार ।
मकसूद[४] तिन का होएसी, जो लेसी एह विचार ॥ १

फिरके सबोंने यों कह्या, ए जो दुनियां चौदे तबक ।
ढूंढ़ ढूंढ़ के हम थके, पर पाया नाहीं हक ॥ २

---

१. न्याय । २. फैलाव । ३. तेज । ४. इच्छा पूर्ति ।

वेद कतेब पढ़ पढ़ थके, केहे केहे थके इलम ।
कहया तिनों मुख अपने, ठौर कायम न पाया हम ॥ ३

मेहेर करी मोहे मेहेबूबें, रूहअल्ला मिले मुझ ।
खोल दिए पट अरस के, जो बका ठौर थी गुझ ॥ ४

इलम दिया मोहे लुदंनी, आई असल अकल ।
सेहेरग से नजीक, पाया अरस असल ॥ ५

और मेहेर महंमद की, खुली हकीकत ।
पाई साहेदी दूसरी, हक की मारफत ॥ ६

पाई इसारतें[1] रमूजें[2], बीच अल्ला कलाम ।
सक जरा ना रही, पाया कायम आराम ॥ ७

अब करूँ बका जाहेर, वास्ते अरस उमत के ।
कहूँ अरस और खेल की, ज्यों बेवरा समझें ए ॥ ८

अब लीजो ए रोसनी, जो अरवा अरस के ।
ए निमूना देखिए, ज्यों सुध होए हिरदे ॥ ९

नासूत और मलकूत का, निमूना देख कर ।
ए बल दिलमें लेय के, देखो अरस जानवर ॥ १०

एक जानवर अरस का, मैं तौल्या तिन का बल ।
क्यों कहूं तफावत[3], ओ फना ए नेहेचल ॥ ११

लाख ब्रह्मांड की दुनी का, है हिकमत[4] बल जेता ।
दे दिल नजरों तौलिया, मैं लिया अंदर एता ॥ १२

ज्यों कबूतर खेल के, हुए अलेखे इत ।
आदमी एक नासूत का, दोऊ देखो तफावत ॥ १३

कोई कहेसी ए कछुए नहीं, और ए तो हैं जीवते ।
ए जवाब है तिन को, देखो पटंतर[5] ए ॥ १४

---

१. संकेत । २. भेद । ३. अन्तर । ४. कौशल । ५. तुलना ।

आगूं कायम अरस के, है चौदे तबक यों कर ।
ज्यों आगूं नासूत दुनीय के, ए खेल के कबूतर ॥ १५

जो कछू पैदा कुंन से, मैं तिन का देत निमूना ।
सो क्यों कही जाए कायम को, जो वस्त है झूठ फना ॥ १६

तो कह्या सबदातीत को, हद सवद पोहोंचत नाहें ।
ऐसे झूठ निमूना देय के, पछतात हों जीव माहें ॥ १७

कछुक सुख तो उपजे, हिस्सा कोटमां पोहोंचे तित ।
एक जरा न पोहोंचे हक को, मैं तार्थे दुख पावत ॥ १८

मैं देख्या सुन्या दुनीय में, सो सब फना वस्त ।
इन झूठे आकार से, क्यों होए काएम सिफत ॥ १९

तार्थे सिफत मैं क्यों करूं, अरस अजीम की ख्वाब[1] में इत ।
एता भी कहूं मैं हुकमें, और केहेने वाला न कित ॥ २०

तार्थे अरस और दुनी के, तफावत[2] जानवर ।
काएम और फना को, क्यों आवे बराबर ॥ २१

चुप किएं भी ना बने, समझाए ना बिना मिसल[3] ।
पसू पंखी अरस और खेल के, देखो तफावत वल ॥ २२

इत *अंगद *बाल *सुग्रीव, गरुड़ *जांबू *हनुमान ।
ए उठावें पहाड़ को, ऐसे कहे बलवान ॥ २३

लोक नासूती एह बल, कहे जो जानवर ।
*राम *कृष्न इनके सिर, तो कहे ऐसे जोरावर ॥ २४

अब कहूं मलकूत की, बल की हकीकत ।
लोक जिमी आसमान के, ए देखो तफावत ॥ २५

बोझ उठावें ब्रह्मांड को, ऐसे जोरावर ।
गरुड़ बल ऐसा रखे, चले विस्नु मन पर ॥ २६

---

१. स्वप्न । २. अन्तर । ३. उदाहरण ।

देख बल इन खावंद का, जो मलकूत में बसत ।
कोट ब्रह्मांड नए कर, अपने बंदोंकों बखसत[1] ॥ २७
ओ तो भए नासूतमें, मलकूत[2] है तिन पर ।
ए तो दोऊ फना मिने, ज्यों लेहेरें उठें मिटें सागर ॥ २८
नासूती अवतार के, ऐसे बंदे जोरावर ।
सो मलकूत के एक छिनमें, कै कोट जात मर मर ॥ २९
नासूत तले मलकूत के, ज्यों लेहेर सागर ।
तले इन मलकूत के, नासूत है यों कर ॥ ३०
दरिया ला[3] मकान का, तिनकी लेहेर मलकूत ।
तिन से लेहेर उठत है, सो जानो नासूत ॥ ३१
ए तले ला मकान के, दोऊ फना के माहें ।
ए बल मलकूत नासूत, पर जरा काएम नाहें ॥ ३२
विस्नु ब्रह्मा रुद्र की, साहेबियां बुजरक ।
ए चौदे तबकको दुनियाँ, जाने याही को हक ॥ ३३
विना हिसाबें उमतें, करे सिफतें अनेक ।
सो सारे यों केहेवहीं, हम सिर एही एक ॥ ३४
खुदा याही को जानहीं, जो मलकूतमें त्रैगुन ।
कदी ले इलम आगू चले, गले ला मकान जो सुंन ॥ ३५
ए जो खावंद मलकूत के, सो ढूंढ़ें हक को अटकल[4] ।
रात दिन करें सिफतें, पर पावें नहीं असल ॥ ३६
ऐसे बिना हिसाबें मलकूत, सो तीनों फिरस्ते समेत ।
सिफत कर कर आखर, कहे नेत[5] नेत नेत ॥ ३७
करें कोट मलकूती सिफत, देख नूरजलाल[6] कुदरत ।
तो पट आड़ा ना टरे, कै कर कर गए सिफत ॥ ३८

---

१. प्रदान । २. बैकुंठ । ३. शून्य । ४. अनुमान । ५. अन्त नहीं । ६. अक्षर ब्रह्म ।

ए सवे सिफतें करें, पर पोहोंचें न नूरजलाल ।
ए पैदा ला मकान की, याको पोहोंचें ना फैल[1] हाल[2] ॥ ३९

इन विध चले जात हैं, आखर अव्वल से ।
यों सिफत कर कर गए, पर नूर न पाया किनने ॥ ४०

अब देखो बल महंमद का, दई दुनियाँ को सरियत ।
कह्या आखर रब्ब आवसी, खोलसी हकीकत ॥ ४१

आवसी उमत अरस से, ए खेल को देखन ।
करे हक को जाहेर, सब का एह कारन ॥ ४२

काएम वतन करें जाहेर, करें जाहेर नूरजलाल ।
करें उमत अरस की जाहेर, करें जाहेर नूरजमाल ॥ ४३

जब ए करें जाहेर, देवें पट उड़ाए ।
भिस्त दे सबन को, लेवें क्यामत उठाए ॥ ४४

ए सब नूर महंमद के, महंमद नूर खुदाए ।
तो आखर आए सबन को, दई हैयाती[3] पोहोंचाए ॥ ४५

बारे हजार उमत[4] की, रूहें जो इप्तदाए[5] ।
जबराईल के पर पर, दोऊ बाजू बैठाए ॥ ४६

आप बैठे बीचमें, ले अपनी *तीन सूरत ।
ला मकान उलंघ के, नूर पार पोहोंचत ॥ ४७

ऐसा जोस बल महंमद का, जबराईल जानवर ।
नासूत मलकूत ला परे, पोहोंचे अपने घर ॥ ४८

एह बल महंमद के, जानवर का जान ।
दूजी गिरो फिरस्ते, पोहोंचाई नूर मकान ॥ ४९

गिरो फिरस्ते इत रहे, जबराईल मकान ।
एह आगे ना चल सकें, याको याही ठौर निदान ॥ ५०

१. कर्म । २. मनी दशा । ३. अमरत्व । ४. ब्रह्मसृष्टि । ५. आरंभ से ।

जो रूहें अरस अजीम की, खासलखास[1] उमत ।
ले पोहोंचे नूरतजल्ला, महंमद तीन सूरत ॥ ५१

खेल देख उमत फिरी, भिस्त दे सबन ।
इतहीं बैठे पोहोंचहीं, अपने काएम वतन ॥ ५२

ए जो दुनियां चौदे तबक, ताए जबराईल जोस देत ।
ए झूठों इस्क देखाए के, काएम सबों कर लेत ॥ ५३

क्यों कहूं बल जबराईल, जिन सिर हैं महंमद ।
ए सिफत इन बल बुध की, क्यों कहे जुबां हद ॥ ५४

काएम जिमी अरस की, सांची जो साबित[2] ।
पसु पंखी इन भोम के, जो हमेशा बसत ॥ ५५

काएम जिमी का खावंद, जिन को कहिए हक ।
तिन जिमी के जानवर, सो होंए तिन माफक[3] ॥ ५६

बिना हिसाबें जानवर, पसू विना हिसाब ।
ए बल दिलमें लेय के, तौलो निमूना ख्वाब ॥ ५७

कोट इंड की दुनीय का, कूवत[4] बल हिकमत ।
अपार अरस के जानवर, क्यों कहूँ बल बुध इत ॥ ५८

अलेखे बल इन का, क्यों देऊँ निमूना इन ।
झूठे दम कहे ख्वाब के, जाको पेड़ ला मकान सुंन ॥ ५९

ए बल सबदातीत को, जो सांचे हैं सूर ।
और बल फना मिने, इत तिन की क्या मजकूर[5] ॥ ६०

सांच झूठ पटंतरो[6], कवहूं कह्यो न जाए ।
सांच हक झूठी दुनियां, ए क्यों त्राजू[7] तौलाए ॥ ६१

मलकूत और नूर के, क्यों कहूं तफावत ।
झूठी दुनी बका हक की, ए कैसी निसबत ॥ ६२

१. विशिष्ठ । २. प्रमानित । ३. अनुसार । ४. सामर्थ्य । ५. चर्चा । ६. तुलना । ७. तुला

कोट मलकूत नासूत, एक पल में करें पैदाए ।
सो नूर नजर देख के, एक छिन में दें उड़ाए ॥ ६३

ओ जाने हम कदीम[१] के, आद हैं असल ।
कै चले जात हैं मलकूत, नूरजलाल के एक पल ॥ ६४

कोट इंड पैदा फना, करे नूर की कुदरत ।
ए बल नूर जलाल का, पाव पल की इसारत ॥ ६५

झूठ तो कछुए है नहीं, सांच काएम साबित ।
यों अरस और दुनीय के, कौन निमूना इत ॥ ६६

बल अलेखे इन का, कोई इनका निमूना नाहें ।
तो निमूना दीजिए, जो होवे कोई क्यांहें ॥ ६७

ऐसे अति जोरावर, जो रेहेत हक हजूर ।
तो मुख से सबद ना केहे सकों, इन बल हक जहूर[२] ॥ ६८

जो बसत अरस जिमिएँ, या नजीक या दूर ।
रात दिन इन के अंगमें, बरसत हक का नूर ॥ ६९

यों अरस के जानवर, सो सारेही पेहेलवान ।
बरसत नूर इनों पर, नजर हक मेहेरबान ॥ ७०

जोत सरूपी जानवर, बल बुध को नाहीं सुमार ।
नजरों अमी[३] रस पीवत, अरस खावंद सींचनहार ॥ ७१

कौन बल होसी इन का, देखो दिल विचार ।
जिन का सका[४] साहेब, पल पल सींचनहार ॥ ७२

ऐसे कोट ब्रह्मांड को, एक फूंके देवे तोड़ ।
तो भी निमूना इन का, कह्या न जावे जोड़ ॥ ७३

उड़ावे कोट ब्रह्मांड को, एक जरे सा जानवर ।
उड़ जाएँ इन के बाउसों, जब ए उठावें पर ॥ ७४

---

१. हमेशा, प्राचीन । २. प्रकटी करन । ३. अमृत । ४. पिलाने वाला ।

ए निमूना अरस ख्वाब का, देखो तफावत ।
देखो अकल असल की, जो होवे अरस उमत ॥ ७५

उमत को देखलावने, बनाए चौदे तबक ।
देनें पेहेचान गिरोह को, यासे जानें हक ॥ ७६

पावने बुजरगी अरस की, और बुजरगी खुदाए ।
पावने बुजरगी रूहों की, काएम[1] जो इप्तदाए ॥ ७७

सो बुजरगी तो पाइए, जो फिकर कीजे दिल दे ।
अरस लज्जत पाइयत हैं, तेहेकीक किए ए ॥ ७८

सुख लेने को आए हो, नहीं भेजे सोवन को ।
विचार देखो हादीय की, वानी ले दिलमों ॥ ७९

गिरो देखत जो ब्रह्मांड, सो तो कछुए नाहें ।
सांच निमूना दूसरा, कोई नाहीं अरस के माहें ॥ ८०

जब खावंद अरस देखिए, तब तो एही एक ।
इस बिना और जरा नहीं, जो तूं लाख बेर फेर देख ॥ ८१

जो कछू अरस में देखिए, सो सब जात खुदाए ।
और खेलौने बगीचे, सो सब जातें के इप्तदाए[2] ॥ ८२

ना अरस जिमीएं दूसरा, कोई और धरावे नाउँ ।
ए लिख्या वेद कतेबमें, कोई नाहीं खुदा बिन कांहूं ॥ ८३

और खेलौने जो हक के, सो दूसरे क्यों केहेलाए ।
एक जरा कहिए तो दूसरा, जो हक बिना होए इप्तदाए ॥ ८४

और पैदा फना जो होत है, क्यों दूसरा कहिए ताए ।
ए खेल हैं खावंद के, ए जो चली कतारें जाए ॥ ८५

ए जो दुनियां खेल की, सो चीन्हत हक को नाहें ।
ना तो क्यों कहे छल को दूसरा, जो होत पैदा फनाए ॥ ८६

---

१. स्थाई । २. शुरू से ।

ए जो दुनियां ला इलाह की, ताए क्यों होए चिन्हार[1] ।
सो लाई[2] लिए जात है, ज्यों चले चींटी हार ।। ८७
बड़ी बुजरगी हक की, तिन के खेल भी बुजरक ।
लिख्या वेद कतेबमें, पर इनों न जात सक ।। ८८
झूठ सांच का निमूना, ओ फना ए नेहेचल ।
खेल देखें पाइयत है, खुद खावंद का बल ।। ८९
असल आदमियों मिने, कोई पाइए उमत का एक ।
ए देखो पटंतर दिलमें, दोऊ का विवेक ।। ९०
अब कहूँ मैं तिन को, अरस खावंद की बात ।
खड़ियां तले कदम के, जो हैं हक की जात ।। ९१
जो उतरे हैं अरस अजीम से, रूहें और फिरस्ते ।
कहिए जात खुदाए की, असल हैं अरस के ।। ९२
ए जो बात खुदाए की, सुनेंगे भी सोए ।
एही हकुल्यकीन[3], जो अरस दरगाह के होंए ।। ९३
सो फुरमान कहत है जाहेर, जो उतरे अरस से ।
उतरते अरवाहोंसों, कौल किया हक ने ।। ९४
कह्या उतरते हक ने, *अलस्तो बे रब्ब कुंम ।
फेर कह्या अरवाहोंने, बले न भूलें हम ।। ९५
देत अरस निसानियां, याद आवसी तिन ।
सरत करी खावंदने, उतरते अरस रूहन ।। ९६
अब जो असल उमत का, ताए देऊँ अरस निसान ।
तिन विध देऊँ साहेदी, ज्यों होए हक पेहेचान ।। ९७
कलाम अल्लाकी साहेदी, और हदीसें महंमद ।
तुमें कहूँ तौहीद की, ले रूह अल्ला साहेद ।। ९८

---

१. पहचान । २. (लाही) शून्य । ३. अटल विश्वास ।

नूर आवे दीदार को, लेने सुख सुभान ।
ए कायम सुख देखिए, ए किया वास्ते पेहेचान ।। ९९

नूरें चाहया दिलमें, देखूं इस्क रूहन ।
तब तुमें खेल नूर का, दिल में हुआ देखन ।।१००

खेल किया तुम वास्ते, देखो दिलमें आन ।
ए झूठ खेल देखाइया, करने हक पेहेचान ।।१०१

विचारो रूहें अरस की, जो देखाई झूठ नकल ।
देखो तफावत दिलमें, ले अपनी असल अकल ।।१०२

ए निमूना देखाइया, करने पेहेचान तुम ।
पेहेले चीन्हो आप को, पीछे हादी और खसम ।।१०३

ए खावंद सिर अपने, आपन इन के अंग ।
अरस वतन अपना, कायम हमेसा संग ।।१०४

कायम जिमी अरस की, साहेबी पूरन कमाल ।
तो कैसा निमूना इन का, जिन सिर नूरजमाल ।।१०५

इत निमूना तो कहिए, जो कोई छोटा होवे और ।
कायम जिमीमें दूसरा, काहूं न पाइए ठौर ।।१०६

ना निमूना नूर का, ना निमूना बका वतन ।
ना निमूना हक का, ना निमूना हादी रूहन ।।१०७

महामत कहें ऐ मोमनों, तुम हो बका के ।
हक अरस किया जाहेर, सो सब तुमारे वास्ते ।।१०८

।। प्रकरण ।। १६ ।। चौपाई ।। ६२७ ।।

## अरस—अजीम[1] की हक मारफत[2] महाकारन[3]

कहूं अरस अरवाहों को, रूह अल्ला के इलम ।
जासों पाइए हकीकत हक की, मुझे हुआ ज्यों हुकम ।। १

१. परमधाम । २. पहचान । ३. सृष्टि रचना का कारण ।

और कहूं मैं अरस की, ज्यों खबर उमत को होए ।
सब विध कहूं कायम की, ज्यों समझे सब कोए ॥ २

हक जात जाहेर करूं, और जाहेर हादी उमत ।
नूर मकान जाहेर करूँ, ए एकै जात सिफत ॥ ३

महंमद नूर हक का, रूहें महंमद का नूर ।
ए हमेसा बका मिने, ए एकै जात जहूर ॥ ४

ए जो सदरतुल—मुंतहा[1], ए है कायम अरस ।
ए जात सिफात[2] एकै, ए हैं अरस परस ॥ ५

नूर महंमद रूहें हक की, ए हैं एकै जात ।
और बाग जोए हौज कौसर, ए साहेबी अरस सिफात ॥ ६

पार ना अरस जिमी का, ना बागों का पार ।
पार ना पसू पंखियन को, ना कछू खेल सुमार ॥ ७

पार ना बुध बल को, पार ना खूबी खुसबोए ।
पार ना इस्क आराम को, नूर पार ना इत कोए ॥ ८

एक पात वृक्ष को ना गिरे, ना खिरे पंखी का पर ।
ना होए नया कछू अरसमें, जंगल या जानवर ॥ ९

अब कहूं बेवरा खेल का, हुआ जिन कारन ।
सो वास्ता कहूं इन भांतसों, ज्यों होए सबे रोसन ॥ १०

नूर मकान जो हक का, जित होत है हुकम ।
होए पलमें पैदा फना, ऐसे लाख इंड आलम ॥ ११

अरस खावंद है एकला, आपै हक जात ।
बिना कुदरत कादर की, क्यों पाइए सिफात ॥ १२

इत हमेसा होत है, इन कादर की कुदरत ।
ए खेल इन खावंद के, देखो नूर सिफत ॥ १३

---

१. (अक्षर धाम) । २. विशेषता, गुण ।

खेलमें कै मुदत, होत है दुनियां को ।
कै कोट होत पैदा फना, नूर के निमखमों[1] ॥ १४

जब कछू पैदा ना हुआ, जिमी या आसमान ।
सो हुकम तब ना हुआ, जिनथें उपजी जहान ॥ १५

अब सुनो इन खेल की, रूहें उतरी जिन वास्ते ।
फुरमान ल्याया रसूल, और उतरे फिरस्ते ॥ १६

ए बीच ला मकान के, खेल जिमी आसमान ।
चौदे तबक भई दुनियां, आखर फना निदान ॥ १७

ए खेल हुआ महंमद वास्ते, और अरस उमत ।
आखर जाहेर होए के, खोलसी हकीकत ॥ १८

अरस उमत होसी जाहेर, और जाहेर हक जात ।
करसी दुनियां कायम, ए *महंमद की सिफात ॥ १९

*रूह अल्ला उतरे अरस से, होय काजी लेसी हिसाब ।
दे दीदार करसी कायम, यों कहे महंमद किताब ॥ २०

महंमद मेहेदी आवसी, करसी इमामत ।
बका पर सेजदा गिरोह को, करावसी आखरत ॥ २१

सब कहे किताबें हक के, खेल हुआ हुकमें ।
किसवास्ते हुकम किया, ए ना कह्या किनने ॥ २२

अब देखो दुनियां जाहेरी, करम कांड सरियत ।
इन के इस्क ईमान की, कहूं सो हकीकत ॥ २३

दुनी कहे हक को, वजूद नहीं मुतलक[2] ।
तो ए हुकम किनने किया, जो सूरत नाहीं हक ॥ २४

ना ठौर ठेहेरावें अरस को, ना हक की सूरत ।
हुकम सूरत बिना क्यों होए, और हुकम रखे साबित ॥ २५

---

१. पल । २. बिल्कुल ।

हक वजूद महंमद कहे, नूर पार तजल्ला नूर ।
रद—बदल[1] वास्ते उमत, पोहोंच के करी हजूर ॥ २६

हकें हुकम यों किया, कहे हरफ नब्बे हजार ।
तीस जाहेर कीजियो, तीस तुम पर अखत्यार ॥ २७

और तीस गुझ रखो, वे आखर पर मुदार ।
सो हम आए के खोलसी, अरस बका के द्वार ॥ २८

सो साहेब आखर आवसी, किया महंमद सों कौल ।
भिस्त दरवाजे कायम, सब को देसी खोल ॥ २९

काजी होए के बैठसी, होसी सबों दीदार ।
तो भी ईमान ना दुनी को, जो एती करी पुकार ॥ ३०

ऐसा ईमान ना दुनी को, कहे महंमद को बरहक[2] ।
और महंमद के फुरमाएमें, फेर तिनमें ल्यावे सक ॥ ३१

महंमद बातें हकसों, पोहोंच के करी हजूर ।
दुनी न माने हक सूरत, जासों एती भई मजकूर ॥ ३२

और कहूं *लैलत कदर की, जो कहे *तकरार तीन ।
हादी हुकमें रूहें फिरस्ते, बीच नाजल इसलाम दीन ॥ ३३

और आगे नूह तोफान के, बीच लैलत कदर ।
गिरो उतरी अरस से, जो चढ़ी किस्ती पर ॥ ३४

दो तकरार पेहेलें कहे, जो गुजरे माहें लैल ।
तोफान पीछे ए तीसरा, जो भया फजर का खेल ॥ ३५

दसमी लग रोज रब्ब का, सो दुनी के साल हजार ।
कह्या बेहेत्तर महीने हजार से, लैल तीसरा तकरार ॥ ३६

महंमद मेहेदी ईसा नाजल[3], असराफील जबराईल ।
रूहें फिरस्ते ऊपर, हकें भेजे एह वकील ॥ ३७

---

१. बातचीत । २. सत्यनिष्ठ । ३. उतरने वाले ।

रहे साल चौरासी *लैल में, तिन ऊपर हुई फजर ।
अग्यारें सदी मिने, मेरी बातून[1] खुली नजर ॥ ३८

चौदे तबकों न पाइया, अरस हक का कित ।
सो नजीक देखाए सेहेरग से, इलम ईसा के इत ॥ ३९

अरस ना चौदे तबकमें, सो लिए इलम *ईसा के ।
नजीक देखाया सेहेरग से, बीच अरस बैठाए ले ॥ ४०

और मेहेर करी मोहे रूहअल्ला, दिया खुदाई इलम ।
तूँ रूह है अरस अजीम की, तुझ को दिया हुकम ॥ ४१

गिरो आई लैल के खेलमें, सो तुमें मिलसी आए ।
दिल साफ इनों के करके, अरसमें लीजे उठाए ॥ ४२

ए बात मैं दिलमें लई, तब महंमद हुए मेहेरबान ।
हकीकत मारफत के, पट खोल दिए फुरमान ॥ ४३

सब सुध भई अरस की, हुई हकसों निसबत ।
गिरो मिली मोहे वतनी, ताए देऊं अरस न्यामत[2] ॥ ४४

ए सुकन[3] पेहेलें लिखे, बीच कतेब वेद ।
सोए करत हों जाहेर, जो दिया दोऊ हादी भेद ॥ ४५

रूहें बेनियाज[4] थीं, बीच दरगाह बारे हजार ।
जाने ना आप अरस की, साहेबियाँ अपार ॥ ४६

सुध नाहीं दुख सुख की, ना सुध बिरह मिलाप ।
ना सुध बुजरक अरस की, खबर न खावंद आप ॥ ४७

साहेब बंदे की सुध नहीं, छोटा बड़ा क्यों कर ।
ना सुध एक ना दोए की, ना सांच झूठ खबर ॥ ४८

ना सुध दोस्त ना दुसमन, ना सुध नफा नुकसान ।
ना सुध दूर नजीक की, ना सुध कुफर ईमान ॥ ४९

---

१. अर्न्तदृष्टि । २. देन । ३. वचन । ४. बे परवाह ।

तिसवास्ते खेल देखाइया, ए बात दिलमें आन ।
झूठ निमूना देखाए के, रूहों होए हक पेहेचान ॥ ५०

सांची साहेबी हक की, कोई नाहीं दूजा और ।
झूठ नकल देखे बिना, पावें ना अरस ठौर ॥ ५१

बिना निमूने न पाइए, क्यों है तफावत[1] ।
कछू दूजी देखे बिना, पाइए ना हक सिफत ॥ ५२

यों जान बीच बका मिने, दिलमें ल्याए हक ।
नूरजलाल रूहन को, देखें असल इस्क ॥ ॥ ५३

और लिया ए दिलमें, जो अरवाहें अरस की ।
दूजी बिना जानें नहीं, हक कैसी है साहेबी ॥ ५४

जित दूजी कोई है नहीं, एकै साहेब हक ।
तो तिन को दूजी बिना, कौन कहे बुजरक ॥ ५५

असल होए जित एकला, और होए नाहीं नकल ।
सो नकल देखे बिना, क्यों पाइए असल ॥ ५६

जित दुख कोई जाने नहीं, होए अकेला सुख ।
ए सुख लज्जत तब पाइए, जब देखिए कछू दुख ॥ ५७

सांच होए जित एकै, पाइए ना जिद[2] के छूट ।
सांच हक तब पाइए, जब होए निमूना झूठ ॥ ५८

दूसरा कोई है नहीं, जित एकै होए ।
तो तिन की सुध दूजे बिना, क्यों कर देवे सोए ॥ ५९

जित साहेब होवें एकला, ना साहेदी दूजे बिन ।
बिन दिए साहेदी तीसरे, क्यों आवे ईमान तिन ॥ ६०

तो कह्या खुदा एक है, और महंमद कह्या बरहक ।
सो न आवे ख्वाबी[3] दम पर, जो लों होए न रूहें बुजरक ॥ ६१

---

१. अन्तर । २. हठ । ३. माया के जीव ।

ए खेल हुआ तिन वास्ते, हक के हुकम ।
महंमद आया रूहों वास्ते, ले फुरमान खसम ।। ६२

जो ल्याए फुरमान रसूल, सो अब खोली हकीकत ।
अरस रूहें फिरस्ते, हुई हक की मारफत ।। ६३

लिख्या था जो अव्वल, सो आए पोहोंची क्यामत ।
भिस्त दुनी को देय के, हादी ले उठसी उमत ।। ६४

इन विध कहूँ बेवरा, ज्यों रूहें जानें बुजरगी ।
देखाए विना जानें नहीं, हक कैसी है साहेबी ।। ६५

हकें देखाई अरस साहेबी, हादी रूहों को यों कर ।
दुई देखाई झूठ ख्वाबमें, पावने पटंतर ।। ६६

चढ़ना है नासूत से, तिन ऊपर है मलकूत ।
तिन पर ला मकान है, तिन पर नूर बका साबूत ।। ६७

कोट नासूत की दुनिया, मलकूत को पूजत ।
खुदा याही को जानहीं, ए मलकूत साहेबी इत ।। ६८

कोट मलकूत के खावंद, लाके तले बसत ।
नूर सिफत कर कर गए, पर आगूं ना पोहोंचत ।। ६९

वेदें नाम धरे खेल के, पूत[1] बंझा सींग ससक[2] ।
आकास फूल इनको कह्या, एक जरा न रखो रंचक ।। ७०

किताब[3] कहे तले ला के, सो खेल है सब ला ।
कुंन केहेते हो गया, सो क्यामत को फना ।। ७१

जो जाने खेल को साहेबी, सो खेलै के कबूतर ।
इन की सहूर[4] सुरैया लग, सो हकें पोहोंचे क्यों कर ।। ७२

कहें कबूतर खेल के, खेल सरीक[5] हक का ।
हक हमेसा वेद कतेबमें, खेल तीनों काल फना ।। ७३

---

१. बांझ का बेटा (माया) । २. खरगोश । ३. कतेब । ४. समझ । ५. बराबरी का ।

एक साहेबी नूर हक की, और खेल कछुए नाहें ।
ना सरीक ना निमूना, ए लिख्या वेद कतेबों माहें ॥ ७४

खेल तो झूठा फना कह्या, साहेब हमेसा हक ।
जैसा साहेब बुजरग, खेल भी तिन माफक ॥ ७५

झूठ निमूना हक को दीजिए, ए कैसी निसबत[1] ।
ए झूठ खेल देखाया, लेने हक लज्जत[2] ॥ ७६

कोट इंड पैदा फना, होवें नूर के एक पल ।
ऐसी नूर—जलाल की, कुदरत रखे बल ॥ ७७

तिन से कायम होत है, सदरतुल—मुंतहा जित ।
होए नाहीं इन जुबां, नूर मकान सिफत ॥ ७८

सदरतुल—मुंतहा थें, आवत नूर—जलाल ।
जित अरस अजीम, खावंद नूर—जमाल ॥ ७९

सो नूर नूरतजल्ला के, दायम आवें दीदार ।
इन दरगाहमें उमत, रूहें बारे हजार ॥ ८०

एह मरातबा[3] रूहन का, जिन का हादी अहंमद ।
*मोम गांठ जब खुली, तब सोई हक अहद[4] ॥ ८१

महामत कहें ऐ मोमनों, देखो खसम प्यार ।
*ईसा महंमद अंदर आए के, खोल दिए सब द्वार ॥ ८२

॥प्रकरण ॥ १७ ॥ चौपाई ॥ १००९ ॥

अब तुम निकसो[5] नीद से, आए पोहोंची सरत ।
कौल किया था हकने, सो आई क्यामत ॥ १

जबराईल हक हुकमें, ल्याया नासें *वसियत ।
फुरमान फकीरों सफकत, ले आवे दुनी बरकत ॥ २

---

१. सम्बन्ध । २. आनन्द । ३. दर्जा । ४. वादा करने वाला । ५. उठो ।

द्वार तोबा[1] के बंद होएसी, अग्यारैं सदी आखर ।
जो होवे अरवा अरस की, सो नीद करे क्यों कर ॥ ३

आए लैल के खेलमें, लेने अरस लज्जत ।
सुख सांचे झूठे दुखमें, लेने को एह बखत ॥ ४

आपन बैठे बीच अरस में, अरस को नाहीं सुमार ।
दसों दिस मन दौड़ाइए, काहूँ न आवे पार ॥ ५

खसमें ख्वाब देखाया, बीच अरस अपने इत ।
हक हादी रूहें मिलाए के, उड़ाए दै गफलत ॥ ६

ए खेल जरा है नहीं, सब है अरस खसम ।
बैठे इतहीं जागिए, उठो अरसमें तुम ॥ ७

अरस बाग हौज जोए के, करो याद हक के सुख ।
ज्यों पेड़ झूठे ख्वाब का, उड़ जाए सब दुख ॥ ८

असल आराम हिरदे मिने, अरस को अखंड ।
तब ए झूठे ख्वाब को, रहे न पिंड ब्रह्मांड ॥ ९

कायम हक के अरसमें, बैठे अपने ठौर ।
हक के इत वाहेदत्तमें[2], कोई नाहीं काहूं और ॥ १०

महामत कहें ऐ मोमनों, इस्क लीजे हक ।
असल अरस के बीचमें, हक का नाम आसक[3] ॥ ११

॥ प्रकरण ॥ १८ ॥ चौपाई ॥ १०२० ॥

१. प्रायश्चित । २. अद्वैत का प्रकाश । ३. प्रेमी ।

किताब कुरानकी, इनमें एते बाब हैं—खुलासा फुरमान का, गिरो दीन का, म्याराज नामेका, खुलासा इसलामका, भिस्त सिफायत का बेवरा, हककी सूरत का, नाजी फिरके का, रूह की बिने, नूर, नूरतजल्ला, जहूरनामा, दो नामा, मीजान[1], अरस अजीमकी महाकारन, मोमन आए अरस अजीम से, दो नामा के प्रकरण पांच।

प्रकरण तथा चौपाइयों का पूरा संकलन—प्रकरण ३६५, चौपाई ८४८२

इति श्री महामति श्रीप्राणनाथजी की 'तारतम बानी' का

नववाँ ग्रन्थ

॥ खुलासा संपूर्ण ॥

१. तुला, तराज़ू, कई संख्याओं का जोड़।

निजनाम श्री कृष्णजी, अनादि अक्षरातीत ।
सोतो अब जाहेर भए, सबबिध वतन सहित ॥

# ❋ खिलवत ❋

किताब खिलवत[1] गैबकी[2] लिखी
सूरत अर्जकी जो हकसों करी है

ऐसा खेल[3] देखाइया, मांग लिया है हम ।
अब कैसे अरज करूं, कहोगे मांग्या तुम ॥ १

कछू आस न राखी आसरो, ए झूठी जिमी देखाए ।
ऐसी जुदागी कर दई, कछू कह्यो सुन्यो न जाए ॥ २

बैठी अंग लगाए के, ऐसी करी अन्तराए[4] ।
ना कछू नैनों देखत, ना कछू आप ओलखाए[5] ॥ ३

बैठी अंग लगाए के, ऐसी दई उलटाए ।
ना कछू दिल की कहे सकों, ना पिया सब्द सुनाए ॥ ४

बैठी आंखें खोल के, अंग सों अंग जोड़ ।
आसा उपजे अरज को, सो भी दई मोहे तोड़ ॥ ५

सदा सुख दाता धाम धनी, अंगना[6] तेरी जोड़ ।
जानो सनमंध कबूं ना हुतो, ऐसा किया विछोड़ ॥ ६

बैठी सदा चरण तले, कबूं न्यारी ना निमख[7] नेस ।
पाइए न नाम ठाम दिस कहूं, ऐसा दिया विदेस ॥ ७

---

१. एकान्त । २. परोक्ष, छिपी । ३. माया । ४. दूरी । ५. पहचान । ६. पत्नी । ७. पल भर ।

बैठी तले कदम के, बीच डारे चौदे तबक[1] ।
दूर—दराज[2] ऐसी करी, कहूं नजीक न पाइए हक ॥ ८

बैठी तले कदम के, ऐसी करी परदेसन ।
ले डारी ऐसी जुदाएगी, रह्या हरफ न नुकता[3] इन ॥ ९

बैठी हों आगे तुम, जानूं अरज करूं कर जोड़ ।
सो उमेद कछू ना रही, कोई ऐसो दियो दिल मोड़ ॥ १०

ऐसी दई उलटाय के, बैठी हों कदम के पास ।
दरद न कह्यो जाय दिल को, उमेद न रही कछू आस ॥ ११

बैठी तले कदम के, मेरो ए घर धाम धनी ।
ए सुख देखाए जगावत, तो भी होत नहीं जागनी ॥ १२

बैठी इन मेले मिने, ए घर धनी सुख अखंड ।
आस न केहेन सुनन की, जानो बीच पड़्यो ब्रह्मांड ॥ १३

धनी धाम सुख बतावत, ए धनी सुख अखंड ।
आप दया बतावत अपनी, आड़े[4] दे ब्रह्मांड पिंड ॥ १४

जगावत कई जुगतें, दई कई बिध साख ग्वाहि ।
बैठावत सुख अखंड में, तो भी जेहेर जिमी छोड़ी न जाई ॥ १५

धनी मैं तो सूती नींद में, तुम तो बैठे हो जागृत ।
खेल भी तुम देखावत, बल मेरो कछू ना चलत ॥ १६

बल बुध ना रही कछू उमेद, मेरो कोई अंग चलत नाहें ।
ऐसी उरझाई इन खेल में, एक आस रही तुम माहें ॥ १७

और आसा उमेद कछू ना रही, और रख्या न कोई ठौर ।
एता दृढ़ तुम कर दिया, कोई नाहीं तुम बिना और ॥ १८

बल बुध आसा उमेद, ए तुम राखी तुम पर ।
मुझमें मेरा कछू ना रह्या, अब क्या कहूं क्योंकर ॥ १९

---

१. लोक । २. बहुत दूर । ३. बिन्दु । ४. पर्दा ।

स्यामाजीएँ मोहे सुध दई, तब जानी न सगाई सनमंध ।
सुध धनी धाम न आपकी, ऐसीं थी हिरदे की अंध ॥ २०
तब जानों इन बात की, कोई देवे दूजा साख ।
सो हलके हलके देत गए, मैं साख पाई कई लाख ॥ २१
मैं हुती बीच लड़कपने, तब कछुए न समझी बात ।
मोहे सब कही सुध धाम की, भेष बदल आए साख्यात ॥ २२
सोई वचन मेरे धनीअ के, हाथ कुंजी आई दिल को ।
उरभन[1] सारे ब्रह्मांड की, मैं सुरभाऊँ इन सों ॥ २३
पेहेले पाल न सकी सगाई, ना कर सकी पेहेचान ।
पर हम बीच खेल के, कै पाए धनी धाम निसान ॥ २४
कई साखें बीच कागदों, मुझ पर आया फुरमान ।
इनमें इसारतें[2] रमूजें[3], सो मैं ही पाऊँ पेहेचान ॥ २५
मेरे धनी की इसारतें, कोई और न सके खोल ।
सो भी आतमने यों जानिया, ए जो स्यामाजी कहे थे बोल ॥ २६
ए सुध हुई *त्रैलोक को, सबों जान्या इनों घर धाम ।
मोहे बैठाए बीच दुनी के, दिया ऐसा सुख आराम ॥ २७
सो बातें मैं केती कहूँ, मैं पाई बेसुमार ।
पर एक बात न सुनाई मुख की, अजूं ना कछू देत दीदार ॥ २८
अब ऐसा दिल में आवत, जेता कोई थिर चर ।
सब केहेसी प्रेम धनीअ का, कछू बोले ना इन बिगर ॥ २९
ऐसा आगूं होएसी, आतम नजरों भी आवत ।
जानों बात सुनों मैं धनीअ की, पर मोहे अजूं बिलखावत ॥ ३०
ना कछू देखूं दरसन, ना कछू केहेने की आस ।
ना कछू सुध सनमंध की, बैठी हों कदम के पास ॥ ३१

---

१. उलझन । २. संकेत । ३. भेद ।

धनी एती भी आसा ना रही, जो करूँ तुमसों बात ।
ना बात तुमारी सुन सकों, ना देखूं तुमें साख्यात[१] ॥ ३२

एह धनी एह घर सुख, सनमंध दियो भुलाए ।
लगाव न रह्यो एक रंचक, तार्थे मेरो कछू न बसाए[२] ॥ ३३

कहा करूँ किन सों कहूँ, ना जागा कित जाऊं ।
एता भी तुम दृढ़ कर दिया, तुम बिना ना कित ठांऊँ ॥ ३४

ना कछू एता बल दिया, जो लगी रहूं पीउ चरन ।
पर ए सब हाथ खसम के, और पुकारूं आगे किन ॥ ३५

रोई तो भी जाहेर, पुकारी जोस खुमार ।
जो देते रंचक[३] बातूनी[४], तो होती खबरदार ॥ ३६

अब केहेना तो भी तुमको, ठौर तो भी तुम ।
अंगना तो भी धनी की, तुम हो धनी खसम ॥ ३७

आसा उमेद धनीअ की, बल बुध ठौर धनी ।
पिंड न रह्यो ब्रह्मांड, तुमही में रही करनी ॥ ३८

जोर कर जुदागी कर दई, जोर कर जगावत तुम ।
केहेनी सुननी मेरे कछू ना रही, तो क्यों बोलूं मैं खसम ॥ ३९

ऐसे कायम सुख के जो धनी, किन विध दई भुलाए ।
इन दुख में देखावत ए सुख, हिरदे तुम हीं चढ़ाए ॥ ४०

ऐसे सुख अलेखे अखंड, भुलाए दिए माहें छिन ।
सुख देखत उनथें अधिक, पर आवे आग्याएँ[५] अंतस्करन ॥ ४१

खेल किया हुकम सों, हम आए हुकम ।
हुकमें दरसन देखावही, कछू ना बिना हुकम खसम ॥ ४२

हुकमें इसक आवही, कदमों जगावे हुकम ।
करनी हुकम करावहीं, कछू ना विना हुकम खसम ॥ ४३

---

१. साक्षात् । २. वश । ३. जरासी । ४. गुह्य । ५. आज्ञा से ।

हुकम उठावे हँसते, रोते उठावे हुकम ।
हार जीत दुख सुख हुकमें, कछू ना बिना हुकम खसम ।। ४४
है हुआ सब हुकमें, होत है हुकम ।
होसी सब कछू हुकमें, कछू ना बिना हुकम खसम ।। ४५
अब ज्यों जानो त्यों करो, कछू रह्यो न हमपना हम ।
इन झूठी जिमी में बैठके, कहा कहूँ तुमें खसम ।। ४६
ए भी दृढ़ तुम कर दिया, सब कछू हाथ हुकम ।
कछू मेरा मुझ में ना रह्या, तार्थे कहा कहूँ खसम ।। ४७
जो कहूँ कई कोट बेर, तो केहेना एता ही खसम ।
जब कछू तुम हीं करोगे, तब केहेसी आए हम ।। ४८
अब तो केहेना कछू ना रह्या, ऐसी अंतराए करी खसम ।
जब तुम जगाए बैठाओगे, तब केहेसी आए हम ।। ४९
हम में जो कछू रख्या होता, तो इत केहेते तुमको हम ।
सो तो कछुए ना रह्या, अब कहा कहूं खसम ।। ५०
भला जो कछू जान्या सो किया, इन झूठी जिमी में आए ।
जब कछू उमेद देओगे, तब कहूंगी आस लगाए ।। ५१
तुम किया होसी हम कारने, पर ए झूठी जिमी निरास ।
ऐसा दिल उपजे पीछे, क्यों ले मुरदा स्वांस ।। ५२
एक आहि स्वांस क्यों ना उड़े, सो भी हुआ हाथ धनी ।
बात कही सो भी एक है, जो कहूं इनथें कोट गुनी ।। ५३
महामत कहें मैं सरमंदी, सब अवसर गई भूल ।
ऐसी इन जुदागी मिने, क्यों कहूं करो सनकूल[1] ।। ५४

।। प्रकरण ।। १ ।। चौपाई ।। ५४ ।।

---

१. प्रसन्न ।

## मैं खुदी काढ़े का इलाज

हम लिए कौल[1] खुदाए के, हक के जो परवान[2] ।
लई कै किताबें साहेदियां, कै हदीसें फुरमान ॥ १

कै साखें सास्त्रन को, कै साखें साधों की बान ।
ए ले ले रूह को दृढ़ करी, आखर *वसियत नामें निदान ॥ २

जाहेर बाहेर बातून, अंदर अन्तर तुम ।
कहूं जरे जेती जाएगा, नहीं खाली बिना खसम ॥ ३

सब ठौरों सुध तुम को, कछू छूट ना तुम इलम ।
ए सक मेट बेसक तुम करी, कछू ना बिना हुकम खसम ॥ ४

जरा न हुकम सुध बिना, सबन के दम दम ।
साएत[3] ना खाली पाइए, बिना हुकम खसम ॥ ५

एते दिन में यों जान्या, मैं बैठी नाहीं के माहें ।
तो इत का संदेसा, हक को पोहोंचत नाहें ॥ ६

सो तेहेकीक[4] तुम कर दिया, जो खेल नूर से उपजत ।
इलम खुदाई हुकम बिना, कहूं खाली न पाइए कित ॥ ७

सांच झूठ बड़ी तफावत[5], ज्यों नाहीं और है ।
सो हुकमें खेल बनाएके, सत गिरो को देखावें ॥ ८

बनाए कबूतर खेल के, ज्यों देखावे दुनियां को ।
यों देखावें सत गिरो को, ए जो पैदा *कुंन सों ॥ ९

हम बैठे वतन कदम तले, तहां बैठे खेल देखत ।
तित ख्वाब से संदेसा, तुमें क्यों ना पोहोंचत ॥ १०

ए इलम हकें दिया, किया नाहीं थें मुकरर[6] हक ।
*रूह अल्ला *महम्मद मेहेर थें, कहूं जरा न रही सक ॥ ११

हम बैठे लैलत कदर में, संदेसा पोहोंचावें तुम ।
इलम सूरत हमारी रूह की, पोहोंची चाहिए खसम ॥ १२

---

१. बचन । २. आदेश पत्र । ३. घड़ी । ४. निश्चित । ५. अन्तर । ६. स्थापित ।

ए तेहेकीक तुम कर दिया, मैं तो बैठी बीच नाहें ।
इन बिध खेल खेलावत, हक नाहीं के माहें ॥ १३

अब धनी जानों त्यों करो, पर इत कहूं कहूं रूह तरसत ।
कोई कोई चाह जो उठत है, सो हकै उपजावत ॥ १४

मैं तो बीच नाहीं के, मोहे खेल देखाया जड़ मूल ।
ताथें जानो त्यों करो, सरमंदी या सनकूल ॥ १५

अब क्या करों किन सों कहूं, कोई रह्या न केहेवे ठौर ।
ए भी कहावत तुमही, कोई नाहीं तुम बिना और ॥ १६

बिना फुरमाए[1] हक के, दिल जरा न उपजत ।
तो क्यों दिल ऐसा आवत, जो हक मांग्या ना देवत ॥ १७

हक उपजावत देवे को, सो हकै देवन हार ।
मैं दोस हक का देख के, क्यों होत गुन्हेगार ॥ १८

उपजे उपजावें सब हक, हक देवें दिलावें ।
मैं जो करत गुन्हेगारी, सो बीच काहे को आवें ॥ १९

हकें पोहोंचाई इन मजलें[2], और दोस हक को देवत ।
एही मैं मारी चाहिए, जो बीच करे हरकत ॥ २०

मैं तो बीच नाहीं मिने, सो हक को पोहोंचत नाहें ।
सो बीच दिल के बैठ के, गुनाह देत रूह के ताँए ॥ २१

मैं मैं करत मरत नहीं, और हक को लगावे दोस ।
अब मेहेर हक ऐसी करें, जो इन मैं थें होऊं बेहोस ॥ २२

झूठ न भेदे सांच को, सांच अंग सत साबित ।
बाहेर उपली[3] अंधेर देखाएके, होए जात असत ॥ २३

ए जो फना सब झूठ है, जो ऊपर से देखाया ।
सो क्यों भेदे हक को, जो नाहीं असत माया ॥ २४

१. आदेश । २. मंजिल (स्थिति) । ३. ऊपरी ।

सत को सत भेदत है, बीच झूठ के हक ।
ए सन्देसा तब पोहोंचही, जब रूह निपट[1] होए बेसक ।। २५

ए सांच सन्देसा हक को, तोलों ना पोहोंचत ।
गेहेरा जल है मैंअ[2] का, आड़ा जो असत ।। २६

सो मैं मैं झूठी दिल पर, जब लग करे कुफर ।
सत सन्देसा तौहीद[3] को, तोलों पोहोंचे क्यों कर ।। २७

ए मैं मैं क्योंए मरत नहीं, और कहावत है मुरदा ।
आड़े नूर—जमाल[4] के, एही है परदा ।। २८

ए पट नीके पाइया, जो मैं को उड़ावे कोए ।
ए दृढ़ हकें कर दिया, अब जुदा हक से होए ।। २९

मारया कह्या काढया कह्या, कह्या हो जुदा ।
एही मैं खुदी टले, तब बाकी रह्या खुदा ।। ३०

पेहेले पी तूं सरबत मौत का, कर तेहेकीक मुकरर ।
एक जरा जिन सक रखे, पीछे रहो जीवत या मर ।। ३१

एही पट आड़े तेरे, और जरा भी नाहें ।
तो सुख जीवत अरस का, लेवे ख्वाब के माहें ।। ३२

ए सुन्या सीख्या पढ़या, कह्या विचारया विवेक ।
अब जो इसक लेत है, सो भी और उड़ाए पावने एक ।। ३३

तो सोहोबत[5] तेरी सत हुई, सांचा तूं मोमिन ।
सब बड़ाइयां तुझ को, जो पोहोंचे मजल इन ।। ३४

महामत कहें ऐ मोमिनों, सुनो मेरे वतनी यार ।
खसम करावें कुरबानियां, आओ मैं मारे की लार[6] ।। ३५

।। प्रकरण ।। २ ।। चौपाई ।। ८६ ।।

मैं बिन मैं मरे नहीं, मैं सों मारना मैं ।
किन बिध मैं को मारिए, या बिध हुई इनसे ।। १

---

१. बिलकुल । २. अहं । ३. एकेश्वर । ४. अक्षरातीत ब्रह्म । ५. संगत । ६. लाइन ।

और भी हकीकत[1] मैंयकी, जिन बिध मरे जो ए ।
सोए खसम बतावत, बल अपने इलम के ॥ २

अब मैं मरत है इन बिध, और न कोई उपाए ।
खुदाई इलम सों मारिए, जो हकें दिया बताए ॥ ३

जो मैं मारत अव्वल, तो कौन सुख लेता ए ।
है नाहीं[2] के फरेब[3] में, सुख नूर पार का जे ॥ ४

मैं दुनी की थी सो मर गई, इन मैं को मारचा मैं ।
अब ए मैं कैसे मरे, जो आई है खसम से ॥ ५

मैं चल आई कदमों, ऐसा दिया बल तुम ।
इन बिध मैं मरत है, ना कछू बिना खसम ॥ ६

जो मैं मारत आपको, तो आवत कौन कदम ।
मैं ना होने में कछू ना रह्या, किया कराया खसम ॥ ७

ना मैं अव्वल ना आखर, मैं नाहीं बीच में ।
बन्या बनाया आप ही, सो सब तुम हीं से ॥ ८

मैं तो तुमारी कीयल[4], अव्वल बीच और हाल[5] ।
तुम बिना जो कछू देखत, सो सब मैं आग की झाल ॥ ९

जब लग मैं ना समझी, तब लग थी मैं मैं ।
समझे थें मैं उड़ गई, सब कछू हुआ तुम सें ॥ १०

अव्वल आखर सब तुम, बीच में भी तुम ।
मैं खेली ज्यों तुम खेलाई, खसम के हुकम ॥ ११

इन मैं को तो तुम किया, आदि मध्य और अब ।
और मैं तो नेहेचे[6] नहीं, कितहूं न देखी कब ॥ १२

केहेत केहेलावत तुम ही, करत करावत तुम ।
हुआ है होसी तुमसे, ए फल खुदाई इलम ॥ १३

---

१. वास्तविकता । २. माया । ३. छल । ४. बनाई । ५. अब । ६. निश्चित ही ।

अब ए में जो हक की, खड़ी इलम हक का ले ।
चौदे तबक किए कायम, सो भी में है ए ॥ १४

ए में है हक की, ए है हक का नूर ।
खासी गिरो जगाए के, पोहोंचत हक हजूर ॥ १५

ए में इन बिध की, सो में मरे क्योंकर ।
पोहोंचे पोहोंचावे कदमों, जाग जगावें घर ॥ १६

एही में है हुकम, एही में नूर जोस ।
एही में इलम हक का, एही में हक करे बेहोस ॥ १७

हक चलाएं चल ही, हक बैठाएं रहे बैठ ।
सोवे उठावे सब हक, नहीं हुकम आड़े कोई ऐंठ[1] ॥ १८

रोए हंसे हारे जीते, ईमान या कुफर ।
जरा न हुकम सुध बिना, बंदगी या मुनकर[2] ॥ १९

ए जो में हक की, सो भी निकसे हक हुकम ।
इन में में बंधन नहीं, बंधाए जो होवे हम ॥ २०

हम बंधे बंधाए मिट गए, कछू रह्या न हमपना हम ।
यों पोहोंचाई बका[3] मिने, इन बिध में को खसम ॥ २१

अब सिर ले हुकम हक का, बैठी धनी की मैं ।
जरा इन में सक नहीं, इलम हक के सें ॥ २२

जुदे सब थें इन बिध, इन बिध सब में एक ।
साँच झूठ के खेल में, ए जो बेवरा कह्या विवेक ॥ २३

हुकम जोस नूर खसम, मैं ले खड़ी इलम ए ।
ए पांचों काम कर हक के, पोहोंचे गिरो दोऊ ले ॥ २४

ए सातों भए इन बिध, पोहोंचे बका में जब ।
आप उठ खड़े हुए, पीछे खेल कायम किया सब ॥ २५

---

१. अकड़ । २. न मानना । ३. परमधाम (अखंड) ।

मैं तो तेहेकीक ना कछू, और ना कछू मुझसे होए ।
ए मैं विध विध देखी, इन में में न खतरा कोए ।। २६

मैं ना अव्वल ना बीच में, ना कछू में आखर ।
किया कराया करत हैं, सो सब हक कादर ।। २७

ए तेहेकीक हकें कर दिया, हकें लई कदम ।
बुलाई अपना इलम दे, कर बिध बिध रोसन हुकम ।। २८

हकें गिरो बुलाई मोमिन, हकें कराई सोहोबत ।
नूर पार वचन बिध बिध के, हकें दई नसीहत[१] ।। २९

मैं नाहीं न जानों कछुए, मैं नाहीं जरा रंचक ।
हकें इलम जोस देअ के, करी सो हुकमें हक ।। ३०

हकें किया हक करत हैं, और हकें करेंगे ।
ए रूह को तेहेकीक भई, और नजरों भी देखे ।। ३१

ए सब हक करत हैं, कौल फैल या हाल ।
और मुझमें जरा न देखिया, बिना नूर—जमाल[२] ।। ३२

अब इन बीच में खतरा, हक न आवन दे ।
जिन दिल अरस खावंद[३], तित क्यों कर कोई मूसे[४] ।। ३३

दूजा तो कोई है नहीं, ए जो माया मन दज्जाल[५] ।
इलम देखें ए ना कछू, इत जरा नहीं जवाल[६] ।। ३४

जब हकें इलम दिया, तेहेकीक रूह को तुम ।
कर मनसा[७] वाचा करमना, कोई ना बिना खसम हुकम ।। ३५

ज्यों ज्यों एह विचारिए, त्यों तेहेकीक होता जाए ।
इत जरा नूरजमाल बिना, रूह में कछू न समाए ।। ३६

रूहें तन हादीयका[८], हादी तन हैं हक ।
नूर तन नूरजमाल का, इत जरा नाहीं सक ।। ३७

---

१. शिक्षा । २. अक्षरातीत ब्रह्म । ३. स्वामी । ४. लूट सके । ५. शैतान । ६. ह्रास । ७. मन से । ८. सत्गुरु (श्यामा) ।

ए मैं तैं सब हक की, ए इलम अकल धनी ।
नूर जोस हुकम हक का, या विध है अपनी ॥ ३८

एह खेल हकें किया, आप भी संग आए ।
अरस में बैठे देखाइया, ऐसा खेल बनाए ॥ ३९

भुलाए वतन आप खसम, खेल देखाए के जुदागी ।
मेहेर करी इन विध की, बैठे खेलै में जागी ॥ ४०

जगाए लई रूहें अपनी, कदमों जो असल ।
यामें संदेसा कहें, इत बैठे हैं सामिल[१] ॥ ४१

इत ना मैं आई ना फिरी, ए तो हुकमें किया पसार[२] ।
ए मैं हुकमें यों करी, अब हुकम देत मैं मार ॥ ४२

जब लग मैं सुपने मिने, नाहीं खसम पेहेचान ।
तब लग मैं सिर अपने, बोझ लिया सिर तान ॥ ४३

अब खसम ख्वाब की सुध परी, और सुध परी हुकम ।
तब मैं में जरा ना रही, मैं बैठी तले कदम ॥ ४४

इलम खुदाई ना होता, तो क्यों संदेसा पोहोंचत ।
*नूर तजल्ला के अन्दर की, कौन इसारतें खोलत ॥ ४५

सब म्याराज की इसारतें, कौन साहेदी कलमें[३] देत ।
जो अरस अरवाहें इत ना होतीं, तो मता[४] खिलवत का कौन लेत ॥ ४६

चौथे आसमान *लाहूत में, *रूह अल्ला बसत ।
पेहेले बताई फुरकानें[५], सो मोमिन भेद जानत ॥ ४७

कुन्जी नूर के पार की, रूह अल्ला दई मुझ ।
केहे बातून मगज मुसाफका[६], करूं जाहेर जो है गुझ ॥ ४८

जो रखे रसूलें हुकमें, और सबन थें छिपाए ।
सो मोकों कुन्जी देय के, कौल[७] पर जाहेर कराए ॥ ४९

१. मिल कर । २. विस्तार । ३. वचन । ४. पूंजी । ५. कुरान । ६. धर्म ग्रंथ (कुरान) । ७. प्रतिज्ञा ।

तो गुनाह अरस अजीम में, लिख्या सब *म्याराज के माहें ।
करें जाहेर अरस दिल मोमिन, जित जबराईल पोहोंच्या नाहें ॥ ५०

ए मैं बोले जो कछू, सो संदेसा रूह अल्ला जान ।
ए इलम हकीकत वतनी, कहूँ हक बिना ना पेहेचान ॥ ५१

हक पैगाम[१] भेजत हैं, सो देत साहेदी कुरान ।
दे साहेदी खुदा खुदाए की, सो खुदाई करे बयान ॥ ५२

सो भी रूह साहेदी देत है, जो नूर जलाल पास नाहें ।
सो रोसनी नूरजमाल की, लज्जत आवत मोमिनों माहें ॥ ५३

जब लग ख्वाब नजरों, तब लो देत देखाई यों कर ।
ना तो सुख नूर जमाल कों, बैठे लेवें काएम घर ॥ ५४

इलहाम[२] आवत परदे से, सो नाही चौदे तबक ।
सो मोमिन इन ख्वाबमें, लेत सुख बेसक ॥ ५५

झूठ न सुन्यो कबूं इत थें, जिन करो झूठी उमेद ।
गुझ हक के दिल का, आवत तुमको भेद ॥ ५६

आवत संदेसे परदे से, बीच गिरो मोमिन ।
क्यों ना विचारो अकलसों, कर पाक[३] दिल रोसन ॥ ५७

इतथें अरज भेजत हैं, सो पोहोंचत है हक को ।
जो असल अकलें विचारिए, तो आवे दिल मों ॥ ५८

तेहेकीक[४] अरज पोहोंचत, जो भेजिए पाक दिल ।
ऐसी पोहोंचाई हक ने, दिल पोहोंचे मोहोल—असल[५] ॥ ५९

ए जो पाक दिलें विचारिए, देखो आवत इलहाम ए ।
पर उपली नजरों न देखिए, ए जो पोहोंचत हकीकत जे ॥ ६०

आवत जात जो खबरें, सो परदे से देखत ।
बैठी तले कदम के, लेवत एह लज्जत[६] ॥ ६१

१. संदेश । २. ब्रह्म आदेश । ३. पवित्र । ४. निश्चित । ५. महल (परमधाम) । ६. आनन्द ।

महामत कहें मैं हक की, पोहोंची बका में ।
ए मैं असल अरस की, ए मैं मोमिनों हक से ॥ ६२

॥ प्रकरण ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ १५१ ॥

ज्यों जानो त्यों रखो, धनी तुमारी मैं ।
ए केहेने को भी ना कछू, कहा कहूँ तुमसे ॥ १

कछू कछू दिल में उपजत, सो तुमहीं उपजावत ।
दिल बाहेर भीतर अंतर, सब तुम हीं हक जानत ॥ २

जोलों रखी तुम होस में, तब लग उपजत ए ।
मैं मांगे तुमारी तुम पें, तुम मंगावत जे ॥ ३

मैं मांगत डरत हों, सो डरावत हो तुम ।
मैं माँगे तुमारी तुम पें, ना तो क्यों डरे अंगना खसम ॥ ४

हजरत *ईसें मांगया, हक अपनाइत[1] कर ।
तिन पर ए गुनाह लिख्या, ए देख लगत मोहे डर ॥ ५

फुरमान देख के मैं डरी, देख रूह अल्ला पर गुना[2] ।
ए खासी रूह खुदाए की, मोमिनों रह्या न आसंका[3] ॥ ६

तो डर बड़ा मोहे लगत, जो गुनाह कह्या इन पर ।
माफक[4] रूह अल्लाह के, कोई मरद नहीं बराबर ॥ ७

ए खावंद है अरस का, हादी हमारा सोए ।
इस मानिंद[5] चौदे तबक में, हुआ न होसी कोए ॥ ८

मैं नेक बात याकी कहूं, पाक रूहें सुनो सब मिल ।
मैं की खुदी सखत है, ए लीजो देकर दिल ॥ ९

*रूह अल्ला करी बंदगी, तिन में उनकी मैं ।
तो गुनाह कह्या इन पर, इन मैं मांग्या हक पें ॥ १०

मेरे ना कछू बंदगी[6], ना कछू करी करनी ।
ओ मैं मुझमें ना रही, ए तो मैं हकें करी अपनी ॥ ११

---

१. अपनापन । २. दोष । ३. अंदेशा । ४. अनुरूप । ५. जैसा । ६. उपासना ।

मैं थी बीच लड़कपने, धनी तुमारी पढ़ाएल[1] ।
मेरे उमेद न आसा बंदगी, हक तुमारी निवाजल[2] ॥ १२

मैं जो मांगी बे खबरी, सो उमेद पूरी सब तुम ।
तब उस खुदी की मैं को, दिल चाह्या दिया हुकम ॥ १३

अब मांगू सिर हुकम, हुज्जत[3] लिए खसम ।
अब क्यों न होए सो उमेद, दिया हाथ हुकम ॥ १४

खसम खसम तो करत हों, पर खसम न आवत भार ।
ना हुज्जत रूह अरस की, तो होत ना दिल करार ॥ १५

जो मांगू हक जान के, अरस रूह कर हुज्जत ।
तो तब हीं उमेद पोहोंचे, जो दिल में यों उपजत ॥ १६

जैसा हक हैं सिर पर, तैसा तेहेकीक जानत नाहें ।
बिसर जात है नींद में, दृढ़ होत न ख्वाब के माहें ॥ १७

जो माग्या है ख्वाब में, सो हकें पूरा सब किया ।
सो बोहोत ना मोहे सुध परी, जो ख्वाब के मिने दिया ॥ १८

जो मैं मागू जाग के, और जागे ही में पांऊँ ।
तो कारज सब सिद्ध होवें, जो फैलें नींद उड़ाऊँ ॥ १९

ए जो नींद उड़ाई कौल में, जो कदी फैल में उड़त ।
तो निसबत इन की हक सों, आवत अरस लज्जत ॥ २०

जो पाइए इत लज्जत, तो होवे सब बिध ।
कायम सुख इन अरस के, सब काम होवें सिध ॥ २१

तो न पाइए इत लज्जत, जो फैल[4] न आवत हाल[5] ।
हाल आएं क्यों सेहे सके, बिछोहा नूर जमाल ॥ २२

ऐसा हक हैं सिर पर, कर दई हकें पेहेचान ।
ऐसी हक की मैं जोरावर, क्यों रहे दीदार बिन प्रान ॥ २३

१. पढ़ाई गई । २. आश्रित । ३. हठ । ४. कर्म । ५. मनः स्थिति ।

ए जो मैं खुदाए की, क्यों रहे दीदार बिन ।
क्यों रहे सुने बिना, मीठे पीउ के वचन ॥ २४

एक पल जात पीउ दीदार बिना, बड़ो जो अचरज ए ।
ए जो मैं है हक की, सो क्यों खड़ी बिछोहा ले ॥ २५

छल में आप देखाइया, दिया अपना इलम ।
में आप पेहेचान ना कर सकी, ना कछू चीन्ह्या खसम ॥ २६

धनी मेरा अरस का, मैं तुमारी अरधंग ।
भेष बदल सुनाए वचन, दिया दीदार बदल के अंग ॥ २७

मैं बीच फरामोसी[1] के, तुम आए सूरत बदल ।
पेहेचान क्यों कर सकूं, इन वजूद की अकल ॥ २८

तालब[2] तो भी तुमसे, इसक नाहीं तुम बिन ।
सबद सुख भी तुम से, तुमहीं दिया दरसन ॥ २९

ए उपजावत तुमहीं, तुमहीं देखलावत ।
तुमहीं खेल खेलावत, तुमहीं समे बदलत ॥ ३०

मैं को तुम खड़ी करी, मैं को देखाई तुम ।
मैं को तले कदम के, खड़ी राखी माहें हुकम ॥ ३१

तुमहीं साथ जगाइया, तुम दई सरत देखाए ।
तुमहीं तलब करावत, तो दरसन को हरबराए[3] ॥ ३२

तुमहीं दिलमें यों ल्यावत, मैं देखों हक नजर ।
सो पट तुमहीं से खुले, तुमसे टले अन्तर ॥ ३३

श्रवनों सबद सुनाए के, दिल दीदें[4] दीदार ।
अनेक हक मेहेरबानगी, कहां लों कहूं सुमार ॥ ३४

जोस इसक और बंदगी, चलना हक के दिल ।
ए बकसीस[5] सब तुम से, खुसबोए वतन असल ॥ ३५

---

१. बेसुधि । २. याचक । ३. व्याकुल हुए । ४. आँखों से । ५. कृपा ।

और कै इनाएतें[1] तुम से, सो कहाँ लों कहूं वचन ।
सो कै आवत हैं नजरों, पर कह्यो न जाए सुकन[2] ॥ ३६

मैं अपनी अकलें केती कहूं, तुम करावत सब ।
बाहेर अंदर अन्तर, या तबहीं या अब ॥ ३७

जानो तो राजी रखो, जानो तो दलगीर[3] ।
या पाक करो हादीपना,[4] या बैठाओ माहें तकसीर[5] ॥ ३८

अब मेरा केहेना ना कछू, तुमहीं केहेलावत ए ।
मेरे कहे मैं रहत है, पर सब बस हुकम के ॥ ३९

अब सब के मन्न में ए रहे, इत दिल चाह्या होए ।
तो पाइए खेल खुसाली[6], हक जानत सब सोए ॥ ४०

ए भी तुम केहेलावत, कारन उमत के ।
अरस वजूद के अंतर में, तुम पेहेले उपजावत ए ॥ ४१

असल हमारी अरस में, ताए ख्वाब देखावत तुम ।
जैसा उत ओ देखत, तैसा करत हैं हम ॥ ४२

इन बिध गुनाह हम पर, लागत नाहीं कोए ।
मैं तो इत नाहीं कितहूँ, इत उत किया हक का होए ॥ ४३

भुलाए दिया तुम हम को, आप वतन खसम ।
ताथें खुदी में ले खड़ी, झूठे खेल में आतम ॥ ४४

आप छिपाया तुम हम सों, झूठे खेल में डार ।
फेर कर तुम खड़ी करी, कर के गुन्हेगार ॥ ४५

फेर तुम हमको अकल दई, मैं खुदी पकड़ी सोए ।
जो जैसी करेगा, तैसी पावेगा सोए ॥ ४६

आप भी भेष बदल के, आए अपना दिया इलम ।
सब बातें कही वतन की, पर पेहेचान ना सके हम ॥ ४७

---

१. कृपाएँ । २. वचन । ३. दुःखी । ४. शरण । ५. गुनाह । ६. खुशी, सम्पन्नतः ।

इत भी गुनाह सिर पर हुआ, याद न आया असल ।
तुम रोए लर खीज कह्या, तो भी रही ना मूल अकल ॥ ४८

यों गुनाह अनेक भांत का, हुआ हमारे सिर ।
हम कछू ना कर सके, तो भी खबर लई हकें फेर ॥ ४९

कै सुख हमको अरस के, भांत भांत दिए अपार ।
तो भी नींद हमारी ना गई, इत भी हुए गुन्हेगार ॥ ५०

कर मनसा वाचा कर्मना, सब अंगों कर हेत ।
कहे कहे हारे हम सों, पर मैं न हुई सावचेत ॥ ५१

यों कै गुनाह केते कहूं, सब ठौरों गई भूल ।
कै देखाए गुन अपने, ताको तौल ना मोल ॥ ५२

सो गुन देखे मैं नजरों, जिनको नहीं सुमार ।
तो भी पेहेचान न हुई, ना छूटी नींद विकार ॥ ५३

पीछे आप जुदे होए के, भेज दिया फुरमान ।
सो पढ़्या भली भांत सों, करी सब पेहेचान ॥ ५४

सो कुन्जी दई हाथ मेरे, कोई खोले ना मुझ बिन ।
सक्ति नहीं *त्रैलोक को, ना कछू सक्ति[1] *त्रैगुन ॥ ५५

इन बिध गुन केते कहूं, कै देखे मैं नजर ।
मेरे हाथ खुलाए के, करी ब्रह्मांड में फजर ॥ ५६

कै लिखी इसारतें अरस की, कै रमूजें[2] अनेक ।
पेहेले पढ़ाई मुझ को, मैं ही खोलूं एही एक ॥ ५७

महामत कहें मैं हक की, खोले मगज मुसाफ कलाम ।
और हक कलाम कौन खोल सके, जो मिले चौदे तबक तमाम ॥ ५८

॥ प्रकरण ॥ ४॥ चौपाई ॥ २०९ ॥

---

१. शक्ति । २. भेद ।

## रूहों को कुदरत देखाई हक ने

यों कै देखाई माया, और कै बिध कराई पेहेचान ।
कै बिध बदली मजलें, कै पुराए साख निसान ॥ १

हक की बातें अनेक हैं, कही न जाए या मुख ।
इन झूठे खेल में बैठाए के, कै दिए कायम सुख ॥ २

मैं पेहेले केहेनी कही, किया काम दुनी का सब ।
पर एक फैल[1] रेहेनीय का, लिया ना सिर पर तब ॥ ३

अब आया वखत रेहेनीय का, रात मेंट हुई फजर ।
अब केहेनी रेहेनी हुआ चाहे, छोड़ दुनी ले अरस नजर ॥ ४

अब समया आया रेहेनीय का, रूह फैल कों चाहे ।
जो होवे असल अरस की, सो फैल ले हाल देखाए ॥ ५

केहेंनी कही सब रात में, आया फैल हाल का रोज ।
हक अरस नजर में लेअ के, उड़ाए देओ दुनी बोझ ॥ ६

जो हकें केहेलाया सो कह्या, इत मैं बीच कहूं नाहें ।
फैल हाल सब हक के, हकें सक मेटी दिल माहें ॥ ७

इलम दिया हकें अपना, और दई असल अकल ।
जोस इसक हक के, सब उम्मत करी निरमल ॥ ८

इन जड़थे तब मैं निकसी, जब आकीन[2] दिया आप ।
सकें सारी भांन के, तुम साहेब किया मिलाप ॥ ९

ए मैं काढ़ी तुम इन बिध, इन मैं में न आवे सक ।
यों काढ़ी खुदी साथ की, हकें किए आप माफक ॥ १०

हुकमें हाथ पकड़ के, दिया फैल हाल बेसक ।
तब जोस इसक देखाइया, जासों पाया हक ॥ ११

जोस हाल और इसक, ए आवे न फैल हाल बिन ।
सो फैल हाल हक के, बिना बकसीस[3] न पाए किन ॥ १२

---

१. कर्म । २. विश्वास । ३. कृपा ।

कलाम[1] हक जुबान के, तिनका कहूं विवेक ।
इन केहेनी से कायम हुए, दुनी पाया हक एक ॥ १३

जिन केहेनी किल्लीय[2] से, खुला भिस्त[3] का द्वार ।
सो केहेनी छुड़ाई हुकमें, दे फैल रेहेनी सार ॥ १४

ए जो केहेनी इन भांत की, किए कायम चौदे तबक ।
सो छुड़ाई केहेनीय को, जासों पाया दुनियां हक ॥ १५

कहे हुकम आगे रेहेनीय के, केहेनी कछुए नाहें ।
जोस इसक हक मिलावही, सो फैल हाल के माहें ॥ १६

दुनियां केहेनी केहेत है, सो डूबत मैं सागर ।
मैं लेहेरें मेर समान में, कोई निकस न पावे बका घर ॥ १७

ए खेल मोहोरे[4] कथ कथ गए, जले खुदी बेखबर ।
आप लेहेरें माहें अपनी, गोते खात फेर फेर ॥ १८

ओही उनों का किबला[5], छोड़ें नाहीं ख्याल ।
मैं मैं करत मरत नहीं, इनके एही फैल हाल ॥ १९

अब कैसी मैं बीच खेल के, जो खेलत कबूतर ।
ए जो नाबूद[6] कछुए नहीं, तो मैं कहत क्यों कर ॥ २०

ए खेल किया तुम वास्ते, जो देखत बैठे वतन ।
सो देख के उड़ावसी, जिन बिध झूठ सुपन ॥ २१

जो रूहें होंए अरस की, सो तो तले हुकम ।
जानत त्यों खेलावत, ऊपर बैठ खसम ॥ २२

इनमें भी मैं है नहीं, जो ए समझें मूल इलम ।
फैल हाल इसक लेवहीं, तब हक की मैं आतम ॥ २३

तब गुनाह कछू ना लगे, जो कीजे ऐसी चाल ।
सो सुकन पेहेले कहे, जो कोई बदले हाल ॥ २४

---

१. वचन । २. कुंजी । ३. बहिश्त । ४. (जीव) । ५. पूजा स्थान । ६. नश्वर ।

इन बिध मैं मरत है, बैठ तले कदम ।
जोस इसक आवे हाल में, लेय के हक इलम ।। २५

जो सुध मलकूत में नहीं, ना सुध नूर[1] वतन ।
सो गिरो दिल पूरन भई, मैं काढ़ी बकसीस इन ।। २६

इन मैं को हक बिना, कबहूं न काढ़ी जाए ।
सो मुझ पर मेहेर हकें करी, मैं जरे को देल उड़ाए ।। २७

ना तो ए मैं ऐसी नहीं, जो निकसें किए उपाए ।
मेहेनत कर त्रिगुन थके, कोई सके न मैं को फिराए ।। २८

ए दुनियां चौदे तबक में, किन जान्यो न मैं को बल ।
किन मैं को पार न पाइया, कई दौड़ाए थके अकल ।। २९

इन मैं में डूब्या सब कोई, याको पार न पावे कोए ।
याको पार सो पावहीं, जाको मुतलक[2] बकसीस होए ।। ३०

ए वानी मैं मारेय की, सुनी होए मोमिन ।
दुनी तरफ की जीवती, कबहूं न रेहेवे इन ।। ३१

ए मैं इन गिरोह[3] की, काढ़ें एक धनी धाम ।
ए मरे पेड़ से हुकमें, ले साहेब के कलाम ।। ३२

इलम खुदाई लुदंनी, बकसीस असल रोसन ।
जोस इसक ले बंदगी, निसबत[4] असल वतन ।। ३३

अब यों हक को याद कर, ले हुकम सिर चढ़ाए ।
ए हक बिना मैं दुनीय की, सो सब देऊं उड़ाए ।। ३४

इत मैं नेक न आवही, खड़ी हुकम तले जे ।
ए मैं हक की मेहेर लेय के, कर निसंक हिदायत[5] ए ।। ३५

ए सुनियो खास उम्मत, इन मैं को काढ़्यो जड़ मूल ।
ले साहेदी लुदंनीय[6] से, कौल ईसा इमाम रसूल ।। ३६

---

१. अक्षर धाम । २. नितान्त (पूरी) । ३. ब्रह्मसृष्टि । ४. सम्बन्ध । ५. सीख । ६. तारत्तम वानी, ब्रह्म वाणी ।

हकें किया हुकम वतन में, सो उपजत अंग असल ।
जैसा देखत सुपन में, ए जो वरतत इत नकल ।। ३७

ए करो तेहेकीक विचार के, जो होए अरस उम्मत ।
यों असल में हक जगावत, तैसा बदलत वखत[१] ।। ३८

कहे लुदंनी भोम तलेय की, हक बैठे खेलावत ।
ऐसा इत होता गया, जैसा हजूर हुकम करत ।। ३९

मोहे दिया लुदंनी रूह अल्ला, सो मैं कह्या बेवरा कर ।
ए किया उम्मत कारने, सो विचारो दिल धर ।। ४०

ए रसूल अरस—अजीम[२] से, ले आया फुरमान ।
मैं जो कह्या तुमें लुदंनी, सो जोड़ देखो निसान ।। ४१

कहे बिध बिध की साहेदी, या फुरमान या हदीस ।
और भेजे *नामे *वसियत, सो गिरो पर बकसीस ।। ४२

इत तीन सूरत आए मिली, भांत भांत साहेदी ले ।
सो लगाए देखो तुम रूह सों, ए इलम लुदंनी जे ।। ४३

एह करत सब हुकम, ले अव्वल से आखर ।
इत में बीच काहू में नहीं, मैं ल्यावे सो काफर ।। ४४

विचार देखो इप्तदाए[३] से, ले अपना तारतम ।
आपन सोवत हैं नींद में, खेल खेलावत खसम ।। ४५

ए जो सूते तुम देखत हो, खसम देखावत ख्याल ।
सो अब हीं देत उड़ाए के, होसी हांसी बड़ी खुसाल ।। ४६

अब मैं काहू में नहीं, ए जो लेत सिर मैं ।
ए हांसी होसी ज्यों कर, जो करत हैं मैं तैं ।। ४७

ताथें जो मैं हक की, रहत तले हुकम ।
मैं दुनी की मार के, रही देख खेल खसम ।। ४८

---

१. समय । २. परमधाम । ३. आरम्भ ।

तार्थे मैं इन धनी की, करत हक का काम ।
ए खेल खुसाली[1] लेय के, जाग बैठे इत धाम ।। ४९

ए सब लेवे रोसनी, पेहेचान के निसबत ।
ए मैं बका हक की, करें हिदायत महामत ।। ५०

।। प्रकरण ।। ५ ।। चौपाई ।। २५९ ।।

## *पंच रोसनी का मंगला चरन

गैब[2] बातें मेहेबूब की, बीच बका खिलवत ।
हकें भेजीं मुझ ऊपर, रूहअल्ला ल्याए न्यामत[3] ।। १

रूह अल्ला आया रूहन पर, उतर चौथे आसमान ।
सब सुध लाहूती ल्याइया, जो लिख्या बीच फुरमान ।। २

इलम लुदंनी हक का, कुंजी बका की जे ।
मेहेर करी मुझ ऊपर, खोल दिए पट ए । ३

मोसों मिलाप कर कह्या, मैं आया रूहन पर ।
अरवाहें जेती अरस की, तिन बुलावन खातर ।। ४

मोहे कह्या तेरी रूह, आई अरस अजीम सों ।
कुंजी देत हों तुझ को, पट खोल दे सबको ।। ५

न्यामत ल्याए सब रात में, *लैलत कदर के माहें ।
बुलाए ल्याओ रूहें फजर को, वतन कायम है जांहें ।। ६

अरस चौदे तबकों, नजर न आवत किन ।
सो सेहेरग[4] से नजीक, देखाया बका वतन ।। ७

एह इलम जिन आइया, सेहेरग से नजीक ताए ।
ए पट नजरों खोल के, लिए अरस में बैठाए ।। ८

ए नेक हकीकत कहत हों, है बात बिना हिसाब ।
सो जाने जो लेवे कुंजी, खोले मायने मगज किताब ।। ९

---

१. आनन्द । २. परोक्ष, छिपी । ३. अलौकिक देन । ४. दिल की रक्त नाड़ी ।

सब किताबन की, जब पाई हकीकत ।
तब तिन से सब जाहेर हुई, महम्मद हक मारफत ॥ १०

एह न्यामत जब आई, तब खुले सब द्वार ।
जो पर कानों ना सुने, खोले नूर के पार ॥ ११

बादल रूह अल्लाह का, बरस्या वतनी नूर ।
अरस बका का नासूत में, हुआ सब जहूर ॥ १२

जब थें दुनी पैदा हुई, अब लग थें अव्वल ।
बका पट किने न खोल्या, कई गए ब्रह्मांड चल ॥ १३

अव्वल पैदा होए के, दुनी हो जात फना[1] ।
तिनमें कछुए ना रहे, ज्यों उड़ जात सुपना ॥ १४

ऐसे खेल कई हुए, सो फना ही हो जात ।
एक जरा बाकी ना रहे, कोई करे न बका की बात ॥ १५

ढूंढे कई पैगंबर, कई तीथंकर अवतार ।
अव्वल से आखर लग, किन खोल्या न बका द्वार ॥ १६

चौदे तबकों बका का, कोई बोल्या न एक हरफ ।
तो ए क्यों पावे हक सूरत, किन पाई न बका तरफ ॥ १७

जो हक पैदा होए नासूत[2] में, तो होय सबे हैयात[3] ।
इलम अपना देय के, करें जाहेर बका बिसात[4] ॥ १८

सो इलम *रूह अल्ला, ले आया हक का ।
सेहेरग से नजीक देखाए के, माहें बैठावत बका ॥ १९

ए बात सुनो तुम मोमिनों, अपनी कहूं बीतक ।
मेहेर करी मुझ ऊपर, इलम खुदाई बेसक ॥ २०

कौल *अलस्तो बे रब्ब का, किया रूहों सों जब ।
हक इलम से देखिए, सोई सायत[5] है अब ॥ २१

---

१. नष्ट । २. मृत्युलोक । ३. अमर । ४. वस्तुएं । ५. घड़ी ।

दुनियां दिल मजाजी[1], कह्या सो कछुए नाहें ।
और दिल हकीकी मोमिन, हक अरस कह्या इनों माहें ॥ २२

इलम हक और दुनी का, कही जाए न तफावत[2] ।
ए सुकन सुन रूह मोमिनों, आवसी अरस लज्जत ॥ २३

बीच बका के रूहन सों, हकें करी खिलवत ।
सो साथ रूह अल्लाह के, भेजे संदेसे इत ॥ २४

रूह अल्ला आए अरस से, मुझ सों किया मिलाप ।
कहे मैं आया तुम वास्ते, मुझे भेज्या है आप ॥ २५

ए न्यामत हक के दिल की, सोई जाने दई जिन ।
या दिल जाने मेरी रूह का, सो कहूँ आगे मोमिन ॥ २६

ए न्यामत वाहेदत्त[3] की, हक के दिल की बात ।
और कोई ना ले सके, बिना बका हक जात ॥ २७

रूह अल्ला कहे अरस से, तेरी रूह आई उतर ।
मैं दई बका तोहे न्यामत, अव्वल से आखर ॥ २८

बादल बरस्या रूह अल्ला, ए बूंदें लई जो तिन ।
और कोई ना ले सके, बिना अरस रूहन ॥ २९

जिन पिया मस्ती तिन की, बीच दुनी के छिपे नाहें ।
सो मस्ती मोमिनों जाहेर हुई, चौदे तबकों माहें ॥ ३०

हकें न छोड़े अव्वल से, अपना इसक दिल ल्याए ।
आप इसक न छोड़ी निसबत, पर मैं गई भुलाए ॥ ३१

जगाई तो भी ना जागी, आप कह्या इत आए ।
मैं परी बीच फरेब[4] के, मोहे थके जगाए जगाए ॥ ३२

इसक न आवे पेहेचान बिना, सो मोकों दई पेहेचान ।
दई बातें हक के दिल की, हक की निसबत जान ॥ ३३

---

१. झूठ । २. अन्तर । ३. एकत्व । ४. छल ।

मैं ना कछू जानी पेहेचांन, मुझ पर करी मेहेनत ।
मैं इसक न जानी निसबत, ना तो मोहे दई हक न्यामत ।। ३४

इसक पेहेचान ना निसबत, सब फरेबें दिया भुलाए ।
हकें इसक अपना, आखर लों निवाहे ।। ३५

ए सुख सबदातीत के, क्यों कर आवें जुबान ।
बाले थें बुढ़ापन लग, मेरे सिर पर खड़े सुभान ।। ३६

तो भी घाव न आया अरवाह को, जो देखे अलेखें एहेसान ।
न्यामत पाई बका हक की, कर दई रूह पेहेचान ।। ३७

नजर से न काढ़ी मुझे, अव्वल से आज दिन ।
क्यों कहूँ मेहेर मेहेबूब की, जो करत ऊपर मोमिन ।। ३८

तन असल तले कदम के, और उपज्या तन सुपना ।
ताए भी हक रहे नजीक, जो था बीच फना ।। ३९

नींदें दिए गोते सुध बिना, ए जो सुपन का तन ।
तिनको भी हकें न छोड़िया, सिर पर रहे रात दिन ।। ४०

उमर अव्वल से आखर लग, गुजरी सांई संग ।
मैं पेहेले ना पेहेचाने, हक के इसक तरंग ।। ४१

जो बात करनी है हकें, सो पेहेले लेवें माहें दिल ।
पीछे सब में पसरे, जो वाहेदत्त में असल ।। ४२

एक पातसाही[1] अरस की, और वाहेदत्त का इसक ।
सो देखलावने रूहों कों, पेहेले दिल में लिया हक ।। ४३

जो पेहेलें लई हकें दिल में, पीछे आई माहें नूर ।
तिन पीछे हादी रूहन में, ए जो हुआ जहूर[2] ।। ४४

वास्ते नूर जलाल के, और हादी रूहन ।
बोहोत बेवरा है खेल में, किया *महम्मद रूहों देखन ।। ४५

---

१. राज्य । २. प्रकटीकरण ।

महामत कहें ऐ मोमिनों, हक साहेबी बुजरक ।
बेसक इलम हक का, और हक का बड़ा इसक ॥ ४६

॥ प्रकरण ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ ३०५ ॥

## बेसकी[1] का प्रकरण

ए इलम इन वाहेदत्त का, हकें सो बेसकी दई मुझ ।
नूर के पार द्वार बका के, सो खोले अरस के गुझ ॥ १

चौदे तबकों ढूंढ्या, सब रहे दूर से दूर ।
रूह अल्ला के इलम बिना, हुआ न कोई हजूर ॥ २

कई दुनियाँ में बुजरक हुए, किन बका तरफ पाई नाहें ।
सो इलम नुकता ईसे का, बैठावे बका माहें ॥ ३

सो साहेदी देवाई *महम्मद की, सेहेरग से नजीक हक ।
नूर के पार नूर तजल्ला, इलम माहें बैठावे बेसक ॥ ४

गिन तूँ सुख बेसक के, जो इलम दिया नसीहत[2] ।
मेहेर करी मेहेबूब ने, हकें जान निसबत ॥ ५

सक ना *तीन उम्मत में, सक ना खास उम्मत ।
सक ना उम्मत फिरस्ते, सक ना *कुंन[3] कुदरत ॥ ६

खासल खास रूहें इसक, और खासे बंदगी दिल ।
आम वजूद जदल[4] से, जिनों नासूती अकल ॥ ७

रूहों लई हकीकत मारफत[5], गिरो फिरस्तों हकीकत ।
आम खलक जाहेरी, जो करम कांड सरियत[6] ॥ ८

दो गिरो पोहोंची वतन अपने, तीसरी आम जो दीन ।
सो तेता ही नजीक, जिनका जेता आकीन ॥ ९

पाई तीनों की बेसकी, कुफर बंदगी इसक ।
ऐसा इलम इन दुनी में, हुई बका की बेसक ॥ १०

---

१. समाधान करने वाला ज्ञान । २. सीख । ३. होजा । ४. विवाद, लडाई । ५. पूर्ण पहचान । ६. कर्म कांड ।

सक ना पैदा फना की, सक ना दोजख भिस्त ।
हिसाब ठौर को सक नहीं, सक ना ठौर क्यामत ॥ ११

सक ना *आठों भिस्त में, सक ना काजी कजाए ।
बेसक किए आखर लों, अव्वल से इप्तदाए ॥ १२

क्यों कर मुरदे उठसी, क्यों होसी हक दीदार ।
क्यों कर हिसाब होएसी, ए सब रूह अल्ला खोले द्वार ॥ १३

केते दिन क्यामत के, क्यों क्यामत के निसान ।
ए सक कछुए ना रही, जो लिखी बीच कुरान ॥ १४

सक ना *दाभ तल अरज की सक ना सूर मगरब ।
बेसक हक कौल मोमिनों, रही ना सक कोई अब ॥ १५

सक ना आजूज माजूज की, आड़ी *अष्ट धात दिवाल ।
लिख्या टूटेगी आखर, ए बेसक दुनी के काल ॥ १६

रूह अल्ला सब रूहन की, पाक कर देवें आकीन ।
कुफर दज्जाल को तोड़ के, बेसक करें एक दीन ॥ १७

ल्याया ईसा वास्तें मोमिनों, बेसक बका न्यामत ।
करें हक जात पर सेजदा, इमाम मोमिनों इमामत[1] ॥ १८

सक ना किसी अरस की, सक ना नूर मकान ।
सक ना बेचून बेचगून, सक ना चार आसमान ॥ १९

कहूं बेसक तिनका बेवरा, नासूती मलकूत ।
सक ना आसमान जबरूत, ना सक आसमान लाहूत ॥ २०

सक नाहीं सरियत में, ना सक रही तरीकत ।
सक नाहीं हकीकत में, सक ना हक मारफत ॥ २१

सक ना जुदी जुदी क्यामत, सक नाहीं वाहेदत्त ।
बेसक जुदी जुदी पैदास, ए जो कादर की कुदरत ॥ २२

---

१. नेतृत्व ।

सक ना पेहेचान रसूल की, जो कही *तीन सूरत ।
बसरी मलकी और हकी, जो जाहिर होसी आखरत ॥ २३

सक ना *जबराईल में, और सक ना *मैकाईल ।
सक ना सूर बजाए की, सक ना *असराफील ॥ २४

सक ना अरवाहें अरस की, जो तीन बेर उतरे ।
लैल में आए जिन बास्ते, कछू सक ना रही ए ॥ २५

सक ना आए खेल देखने, ए जो रूहें आइयां बिछड़ ।
कर मेला नासूत में बेसक, ले नसीहत आए अरस चढ़ ॥ २६

महम्मद ईसा अरस में, पोहोंचे हक हजूर ।
कर अरज सब मे-राज में, बेसक करी मजकूर ॥ २७

महम्मद ईसे किए जवाब, तिन में रही न सक ।
सक नहीं पड़उत्तर में, जो हकें दिए बुजरक ॥ २८

बीच सब *मे-राज के, जेती भई मजकूर[1] ।
ए सक जरा ना रही, जो खिलवत तजल्ला नूर ॥ २९

छिपी बातें बीच अरस के, कोई रही न माहें सक ।
पाई ऐसी बेसकी, जो लई दिल की बातें हक ॥ ३०

आगूं बेसक बड़े अरस के, नूर रोसन जोए किनार ।
दोऊ तरफों जरी जोए के, नूर रोसन अति झलकार ॥ ३१

सक नाहीं जल उजले, मीठा ज्यों मिसरी ।
सक ना ग्रिदवाए[2] बाग की, कई मोहोल[3] जवेर जरी ॥ ३२

खुसबोए जिमी अति उज्जल, ज्यों सोने जवेर दरखत ।
बेसक जंगल जवेर ज्यों, रोसन नूर झलकत ॥ ३३

सक नाहीं हौज ताल की, इत बोहोत मोहोल बुजरक ।
ब्रख[4] पानी ताल पाल के, सब पाट घाट बेसक ॥ ३४

---

१. चर्चा । २. आसपास । ३. महल । ४. वृक्ष ।

बेसक बड़े अरस की, क्यों कहूँ बड़ी मोहोलात ।
बाग बड़ा ग्रिदवाए का, इन जुबां कह्या न जात ॥ ३५
इत सक मोहे जरा नहीं, बन गलियों पसू खेलत ।
ग्रिदवाए गुन्जें अरस के, कई बिध जिकर करत ॥ ३६
यों केती कहूँ बेसकी, इनका नहीं हिसाब ।
महामत देखावें हक इसक, जो साकी पिलावें सराब ॥ ३७

॥ प्रकरण ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ ३४२ ॥

## सराब सुख लज्जत

साकी[1] पिलावें सराब, रूहें प्याले लीजिए ।
हक इसक का आब[2], भर भर प्याले पीजिए ॥ १
हक आसिक रूहन का, इन इसक का आब जे ।
इन आब में जो स्वाद है, रस जानें पीवन वाले ॥ २
नहीं हिसाब इसक का, स्वाद को नहीं हिसाब ।
हिसाब ना तरंग अमल के, ए जो आवत साकी के सराब ॥ ३
कई रस इन सराब में, ए जो पिलावत सुभान ।
मस्ती पिलावत कायम, मेहेर कर मेहेरबान ॥ ४
रूहें नींद से जगाए के, पिलावत प्याले फूल ।
मुंह पकड़ तालू रूह के, देत कायम सुख सनकूल ॥ ५
ए प्याले कर मेहेरबानगी, कई रूहों पिलावत ।
सुख देने बका नजीक का, प्यार कर निसबत ॥ ६
कुई बिध मेहेर करत हैं, मासूक जो मेहेरबान ।
उलट आप आसिक हुआ, जो वाहेदत्त में सुभान ॥ ७
रूहों के दिल कछू ना हुता, कछू कहें न मांगें हक से ।
ना कछू चित्त में चितवन[3], ना मुतलक[4] रूहों मन में ॥ ८

१. पिलाने वाला । २. जल । ३. ध्यान । ४. बिल्कुल ।

आस बंधाई हुकमें, हुकमें कराई उमेद ।
आप इसक की बुजरकी, कर मेहेर देखाए कई भेद ॥ ९

यों कई सुख दिए इसक के, कई सुख दिए जो मेहेर ।
कई सुख अपनी बड़ाई के, जासों और लगे सब जेहेर ॥ १०

कई सुख दिए अरस के, कई सुख दिए निसबत ।
कई सुख दिए इलम के, बेसक जो नसीहत ॥ ११

कई सुख दिए रूहन में, मेला बैठा बिध जिन ।
हक ऊपर आप बैठके, सुख देवें सबन ॥ १२

सुख दिए अरस जिमीय के, सुख दिए जल जोए ।
सुख दिए मोहोलात के, सब जरी किनारें सोए ॥ १३

सुख दिए जल ताल के, सुख ताल कई विवेक ।
कोट जुबां ना केहे सके, तो कहा कहे रसना एक ॥ १४

सुख दिए मोहोल नूर के, सुख बाग नूर गिरदवाए ।
ए समूह मोहोल सुख कैसे कहूँ, इन जुबां कहे न जाएं ॥ १५

कई सुख बड़े अरस के, बन गिरद मोहोलात ।
ए कायम सुख हक अरस के, सुख हमेसा दिन रात ॥ १६

कई सुख जोए बाग के, कई सुख कुंज गलियन ।
कई सुख पसू पंखियन के, मुख बानी मीठी बोलन ॥ १७

ए खेलौनें सुख हक के, ए सुख दिए रूहन ।
खूबी इनके परनकी, आकास न माए रोसन ॥ १८

देखो कायम साहेबी हक की, जिनका नाहीं सुमार ।
इन नासूत में बैठाए के, सुख देखाए नूर के पार ॥ १९

कई सुख दिए *लैलत कदर में, जो अव्वल दो तकरार ।
सुख दिए *फजर तीसरे, कई सुख परवरदिगार ॥ २०

कई सुख दिए निसबत कर, ए झूठा तन कर यार ।
क्यों कहूँ सुख मेहेबूब के, जाके कायम सुख अपार ॥ २१

और सुख सब *मेराज में, केते कहूं जुबान ।
जुदी जुदी जंजीरों[1], लिखे माहें फुरमान ॥ २२
हकें कह्या उतरते, तुम जात बीच नासूत ।
आप वतन जिन भूलो मोहे, मैं बैठा बीच लाहूत ॥ २३
तब फेर कह्या अरवाहों ने, हम क्यों भूलें तुमको ।
तुम पेहेले किए चेतन, खेल कहा करे हमको ॥ २४
ए बातें बीच अरस के, अव्वल जो मजकूर ।
सो याद देने लिखी रमूजें[2], जो हुई हक हजूर ॥ २५
बैठाए बीच नासूत के, हम पर भेज्या फुरमान ।
उनमें लिखी इसारतें, वाहेदत्त के सुभान ॥ २६
मोमिन मेरे अेहेल[3] हैं, हकें लिख्या माहें कुरान ।
खोल इसारतें रमूजें, इनों जरे जरा पेहेचान ॥ २७
और जिन छुओ कुरान को, यों हकें लिखी हकीकत ।
वाको नापाकी ना टरे, बिना तौहीद मदत ॥ २८
सो मदत तौहीद की, पाइए ना मोमिनों बिन ।
ए दुनियाँ को चाहें नहीं, जाको हक बका रोसन ॥ २९
सो पाक[4] मोमिन कहे, जिन लिया हकीकी दीन ।
सो हक बिना कछू ना रखें, ऐसा इनका यकीन ॥ ३०
हकीकत मारफत के, इनको खुले द्वार ।
उतरे नूर बिलंद से, याको वतन नूर के पार ॥ ३१
जहां जबराईल जाए ना सक्या, रह्या नूर मकान ।
पर जलावे नूर तजल्ली, चढ़ सक्या न चौथे आसमान ॥ ३२
जित हक हादी रूहें, अरस अजीम का नूर ।
कौल किया रूहोंसों हकें, सो *महम्मद *मसी ल्याए मजकूर ॥ ३३

---

१. कड़ियां । २. इशारे, भेद । ३. मानने वाले । ४. पवित्र ।

और हुज्जत[1] न रखी किनकी, चौदे तबक की जहान ।
मोमिनों ऊपर *अहंमद, ल्याया एह फुरमान ॥ ३४

ए नाबूद वजूद जो नासूती, अरस उम्मत धरे आकार ।
लिख्या हकें कुरान में, ए तन मेरे यार ॥ ३५

यों हकें लिख्या कुरान में, ए अरवाहें मेरे अहेल ।
ए झूठे वजूद जो खाक के, निपट गंदे सेहेल ॥ ३६

औलिया[2] लिल्ला दोस्त कर, नूर जमाल लिखत ।
ऐसे निजस[3] तन नासूती, कहे यासों मेरी निसबत ॥ ३७

कहे नूर जमाल कुरान में, छोड़ के एह अंधेर ।
एक साद[4] करो मुझको, मैं तुमें जी जी कहूँ दस बेर ॥ ३८

यों हकें लिख्या कुरान में, हक रूहों की करें जिकर[5] ।
पीछे आपन करत हैं, रूहें क्यों न देखो दिल धर ॥ ३९

हकें लिख्या कुरान में, पेहेले मेरा प्यार ।
जो तुम पीछे दोस्ती करो, तो भी मेरे सच्चे यार ॥ ४०

रूहें सुनो एक मैं कहूँ, जो हकें करी मुझसों ।
पड़ी थी जल अंधेर में, कोई थाह न थी इनमों ॥ ४१

भवसागर जीवन को, किन पाया नाहीं पार ।
दुख रूपी अति मोहजल, माहें धखत जीव संसार ॥ ४२

लेहेरी उठे अंधेर की, पहाड़ जैसी बेर बेर ।
ऊपर तले लग भमरियां, जीव पड़े माहें फेर फेर ॥ ४३

निपट अंधेरी लाएकी[6], सिर न सूझे हाथ पाए ।
टापू पहाड़ों बीच में, सब बंधे गोते खांए ॥ ४४

मगर मच्छ माहें बुजरक, वजूद बड़े विक्राल ।
खेलें निगलें जीव को, एक दूजे का काल ॥ ४५

१. दलील । २. मित्र । ३. दूषित । ४. खुश करना । ५. चर्चा (परमात्मा के) । ६. माया ।

ला मकान का सागर, लग तले तेहेतसरा[१] ।
ऐसे अंधेर अथाह बीच पैठ के, मोहे काढ़ी होए मरजिया[२] ॥ ४६

काढ़ के बूझ[३] ऐसी दई, मोहे समझाई सब इत का ।
बेसक का इलम दिया, जासों बैठी बीच बका ॥ ४७

ए सब किया हक ने, वास्ते इसक के ।
एक जरे जरा जो दुनीय में, जो विचार देखो तुम ए ॥ ४८

मैं कह्या नूरी अपना रसूल, तुम पर भेज्या फुरमान ।
लिखी गुझ बातें दिल की, हाय हाय केहेवत यों सुभान ॥ ४९

लिखी अन्दर की इसारतें, और रमूजें जे ।
कुंजी भेजी हाथ रूह अल्ला, जाए दीजो अपनी रूहों को ए ॥ ५०

सो कुंजी दई मुझ को, और खोलने की कल ।
तिनसे ताले सब खुले, पाई आखर अव्वल असल ॥ ५१

और कोई ना खोल सके, तीन सूरत का हाल ।
फैल हाल दोऊ उमत का, तोकों लिखियां नूरजमाल ॥ ५२

सुख देओ दोऊ उम्मत को, बीच बैठ नासूत ।
चिन्हाए इसक हक साहेबी, बुलाए ल्याओ लाहूत ॥ ५३

इन बिध सुख केते कहूँ, झूठी इन जुबान ।
मेरी रूह जाने या मोमिन, या दिए जिन रेहेमान[४] ॥ ५४

दे आड़ो ब्रह्मांड सबन के, ढूंढ़ ढूंढ़ रहे सब दूर ।
आगूं आए इलम दिया, जासों पोहोंची हक हजूर ॥ ५५

केती कहूँ मेहेर मेहेबूब की, जो रूहें देखो सहूर कर ।
महामत कहें मेहेर अलेखे, जो देखो रूह की नजर ॥ ५६

॥ प्रकरण ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ ३९८ ॥

---

१. पाताल । २. गोताखोर । ३. समझ । ४. कृपालु ।

## निसबत[1] का प्रकरण

देख तूं निसबत अपनी, मेरी रूह तूं आंखां खोल ।
तैं तेरे कानों सुने, हक बका के बोल ॥ १

कौन जिमी में तूं खड़ी, कहां है तेरा वतन ।
कौन खसम तेरी रूह का, कौन असल तेरा तन ॥ २

कौन मिलावा तेरा असल, तूं बिछुरी क्यों कर ।
तो तोहे याद न आवही, जो तैं सुन्या नहीं दिल घर ॥ ३

सहूर तोकों साहेब दिया, इलम दिया हक ।
बाहेर माहें अन्तर, एक जरा न रही सक ॥ ४

चौदे तबकों में नहीं, रूह अल्ला का इलम ।
ए दिया एक तोही कों, करके मेहेर खसम ॥ ५

मूल मिलावा चीन्हया, चीन्ह्या बिछुरे वास्ते जिन ।
बेसक हुई इन बातों, हक बका का बातन ॥ ६

दुनियां में अरस कहावही, ताए सब जानें हक ।
ए इलम तिनको नहीं, जो तैं पाया बेसक ॥ ७

*त्रिगुन सिफत कर कर गए, ए जो खावंद जिमी आसमान ।
खोज खोज खाली गए, माहें थके ला मकान ॥ ८

मलकूत साहेब फिरस्ते, हक ढूंढ़या चहूँ ओर ।
रहे बेचून[2] बेसब्बीय[3] में, ना पाया बका ठौर ॥ ९

नूर बका किने ना पाइया, कर कर गए सिफत ।
ए सुध नूर बका को नहीं, जो तैं पाई न्यामत ॥ १०

नूर बका इत दायम[4], आवें हक के दीदार ।
तले झरोखे झांकत, आए उलंघ जोए के पार ॥ ११

नूर जमाल के दीदार को, आवें नूर जलाल ।
नूर जमाल के अरस में, इत रूहें रहें कमाल ॥ १२

---

१. सम्बन्ध । २. (निराकार) । ३. (निरंजन) । ४. हमेशा ।

इत मिलावा रूहन का, जो कही बारे हजार ।
उतरे *लैलत कदर में, एह तीसरा तकरार ॥ १३

अरस अजीम तेरा वतन, खसम नूर जमाल ।
ए इलम पाया तैं बेसक, देख कौल फैल हाल ॥ १४

देख मेहेर तूं हक की, खोल दई हकीकत ।
देख इलम तूं बेसक, दई अपनी मारफत ॥ १५

जिन कारन तेरा आवना, हुआ जिमी इन ।
रूह अल्ला ने जो कही, सो मैं कहूं आगे मोमिन ॥ १६

दायम करत रबद[1], रूहें हादी हक ।
सब कोई केहेते आपनां, बड़ा है इसक ॥ १७

बीच अरस खिलवत के, होत दायम विवाद ।
इसक अपना रूहें हक को, फेर फेर देती याद ॥ १८

तब कह्या हकें हादी रूहन को, मैं तुमारा आसिक ।
ए तेहेकीक तुम जानियो, इसक मेरा बुजरक ॥ १९

तब हादी रूहन को, ए दिल उपजी सक ।
हक का इसक हमसे बड़ा, ए क्यों होवे मुतलक ॥ २०

हकें कह्या रबद मैं ना करूं, कर देखाऊं तुमको ।
इसक मेरा तब देखो, नेक न्यारे हो मुझ सों ॥ २१

न्यारे तो हम होएं नहीं, निमख[2] न छोड़ें कदम ।
ए जेती अरवाहें अरस की, कदम तले सब हम ॥ २२

जुदे होए हम ना सकें, अव्वल तो तुमसों ।
हादी रूहन में जुदागी, कोई होए ना सके हममों ॥ २३

खेल देखाऊं मैं जुदागी, कदम तले बैठो मिल ।
ऐसा खेल फरामोस का, जानों जुदे हुए सब दिल ॥ २४

---

१. विवाद । २. पल भर ।

हक कहे मेरी साहेबी, और मेरा इसक ।
हादी रूहों को अरस में, ए सुध नहीं मुतलक ॥ २५

जो ए खबर होती तुमको, जैसी मेरी साहेबी बुजरक ।
तो बड़ा कबूं न केहेतियां, अपने मुख इसक ॥ २६

अरस न छूटे छिन एक, तो क्यों देखो मेरा इसक ।
तो क्यों पाइए बेवरा[1], आप अपने माफक[2] ॥ २७

अरस साहेबी जानी नहीं, तो ना देख्या हक इसक ।
तो रूहों हक सों कह्या, इसक अपना बुजरक ॥ २८

ना कछू जानी साहेबी, ना जान्या इसक असल ।
तो बुजरक इसक अपना, रबद किया सबों मिल ॥ २९

दायम बातें इसक की, करत माहों माहें प्यार ।
खेलते हंसते रमते, करत बारम्बार ॥ ३०

एक इसक दूजी साहेबी, रूहों देखलावना जरूर ।
तो हमेसा अरस में, होता एह मजकूर ॥ ३१

ए बात हकें करनी, सुध देने सबन ।
इसक और पातसाही की, खबर न थी रूहन ॥ ३२

बहुत बातें हैं हक की, बीच अरस खिलवत ।
इन जुबाँ केती कहूं, हिसाब बिना न्यामत ॥ ३३

एक साहेबी हक की, और इसक हक का ।
ए दोऊ कोई न चीन्हही, बीच अरस बका ॥ ३४

एक जरा कोई वाहेदत्त का, ना सके जुदा होए ।
तोलों न चीन्हे कोई हक की, इस्क साहेबी दोए ॥ ३५

अरस से जुदे होए के, ए देखे जो कोए ।
इसक साहेबी हक की, बुजरक देखे सोए ॥ ३६

---

१. हिसाब किताब । २. अनुसार ।

ए देखाओ अपनी साहेबी, और कैसा इसक है तुम ।
राजी करो देखाए के, हम बैठें पकड़ कदम ॥ ३७

जोलों जुदे होंए नहीं, हक बका अरस सों ।
तोलो नजरों न आवही, अरस सुख खिलवत मों ॥ ३८

ए अनहोनी क्यों होवही, झूठ न आवे बका माहें ।
और रूहें बका की झूठ को, सो कबूं देखें नाहें ॥ ३९

जरा एक अरस अजीम का, उड़ावे चौदे तबक ।
तो रूह बका क्यों देखही, झूठा खेल मुतलक ॥ ४०

अनहोनी ए हकें करी, करके ऐसी फिकर ।
परदे में झूठ देखाइया, बीच कायम बका नजर ॥ ४१

मेहेर पूरी मेहेबूब की, बड़ी रूह रूहों ऊपर ।
इसक साहेबी अरस की, खेल देखाया और नजर ॥ ४२

हकें नेक करी *महम्मद सों, सब *मेराज में मजकूर ।
सो वास्ते रूहों के साहेदी, सो रूह अल्ला करी जहूर ॥ ४३

महामत कहें मेहेर मोमिनों, हकें करी वास्ते तुम ।
कौन देवे इत सुख बका, बिना इन खसम ॥ ४४

॥ प्रकरण ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ ४४२ ॥

## कलस[१] *पंच रोसनी का

रे रूह करे ना कछू अपनी, के तूं उरझी उम्मत माहें ।
उमर गई गुन सिफत में, तोहे अजूं इसक आया नाहें ॥ १

हक सिर पर इन बिध खड़े, देखत ना हक तरफ ।
जो स्वाद लगे मेहेबूब[२] का, तो मुख ना निकसे एक हरफ ॥ २

बात करत तूं हक की, जो रूहों सों गुपतगोए[३] ।
इन बका की खिलवत से, कछू तोको भी नसीहत होए ॥ ३

---

१. शिखर (कलश) । २. प्रियतम । ३. बातचीत ।

ए सबद कहे तें नीद में, के सुपने करत स्वाल ।
के जवाब तेरे जागते, कछू देखे ना अपना हाल ॥ ४

कैसी बात करत है, किन ठौर की बात ।
तूं कौन गुप्तगोए किनकी, ना विचारत हक जात ॥ ५

ए बात ना होए कबूं नीद में, और सुपने भी ना एह ।
जो तूं बात करे जागते, तो तेरी क्यों रहे झूठी देह ॥ ६

ए बात ना नीद सुपन की, जो तूं बात करे जागृत ।
तो कौल फैल ना हाल कोई, रहे ना देह गत मत ॥ ७

सो ए बात करे तूं जागते, तो तोहे नींद आवे क्यों फेर ।
नैनों पल क्यों लेवही, क्यों बोले और बेर ॥ ८

के तूं बुध रहित है, के तूं बोलत बेसहूर[1] ।
बेसहूर क्यों कहे सके, ए हक का गुझ जहूर ॥ ९

अब तेहेकीक एही होत है, तोहे बोलावत हुकम ।
हुकमें वजूद रेहेत हैं, और हुकमें दिया इलम ॥ १०

आए इलम हक बका के, तब देह रहे क्यों कर ।
बेसक हुई हक अरस सों, सो दम रहे न हक बिगर ॥ ११

अरस हक की बेसकी, पाई जरे जरे जेती ।
ज्यों जाग के कहे हकीकत, और देह बोलत सुपने की ॥ १२

बड़ा होत है अचरज, बात जागृत माहें सुपना ।
जब कछू होवे जागृत, तब तो ए आगे ही से फना ॥ १३

जो बिचार बिचार विचारिए, तो अनहोनी हक करत ।
इत बल किसी का नहीं, दिल आवे सो देखावत ॥ १४

अरस की रूहों को सुपना, देखो कैसे ए आया ।
ए भी हकें जान्या त्यों किया, अपने दिल का चाह्या ॥ १५

---

१. न समझ ।

देह रखी सुपन की, और सक ना जागे में ।
ए भी हकें जान्या त्यों किया, बिचार देखो दिल से ॥ १६

आप अरस देखाइया, ज्यों देखिए नीद उड़ाए ।
जरा सक दिल ना रही, यों अरस दिया बताए ॥ १७

फेर देखों सुपन को, तो अजूं रह्या है लाग ।
फरामोसी नीद ना गई, जानो किन ने देख्या जाग ॥ १८

जो देखूं अरस जागते, तो इत नाहीं जरा सक ।
फेर देखूं तरफ सुपन की, तो यों ही खड़ा मुतलक ॥ १६

ए बातें नूर जमाल की, इनमें कैसा तअजुब[1] ।
जनम लाख देखावें पल में, जानों ढांप के खोली अब ॥ २०

एक खस खस के दाने मिने, देखाए चौदे तबक ।
तो कौन बात का अचरज, ऐसे देखावें हक ॥ २१

ऐसी बातें हक की, इत कोई सक ल्याओ जिन ।
देख दिन में ल्यावें रात को, और रात में ल्यावें दिन ॥ २२

ऐसे खेल कई हक के, बैठे देखावें अरस माहें ।
रूह बकाएं लई देह नासूती, जो मुतलक कछुए नाहें ॥ २३

तन ऐसा धर नासूत[2] में, करी हक सों निसबत ।
कजा[3] चौदे तबक की, इन तन पें करावत ॥ २४

ऐसी अचरज बातें हक की, क्यों कहूं झूठी जुबांन ।
कहूं इन तन का खसम, जो वाहेदत्त में सुभान ॥ २५

दोस्त कहूं हक बका को, धर ऐसा झूठा तन ।
निसबत तुमसों तो कहूँ, जो देख्या बका वतन ॥ २६

एह बिध मैं केती कहूं, कौन अचरज इन ।
कई बातें ऐसी हक की, जो विचार देखो रूह तन ॥ २७

---

१. आश्चर्य । २. मृत्यु लोक । ३. न्याय ।

अब केहेती हों खसम को, तुम से कैसी चतुराए ।
ए भी जानो त्यों करो, ऐसी बनी खेल में आए ॥ २८

जेती बातें मैं कही, तिन सब में चतुराए ।
ए चतुराई भीं तुम दई, ना तो एक हरफ न काढ्यो जाए ॥ २९

एह बात रही हुकम पर, करें हक साची सोए ।
या राजी या दलगीर[1], ए हाथ खसम के दोए ॥ ३०

उमर तो सब चल गई, अब आया उठने का दिन ।
या तो उठाओ हंसते, ज्यों जानो त्यों करो रूहन ॥ ३१

नींद आई हुकम से, हुकमें हुआ सुपन ।
हुकम से जागत हैं, एक जरा न हुकम बिन ॥ ३२

हकें इलम ऐसा दिया, जो चौदे तबकों नाहें ।
और नाहीं नूर मकान में, सो दिया मोहे सुपने माहें ॥ ३३

ए इलम नूर जमाल बिना, दूजा कौन बकसत[2] ।
मुझ बिना किने न पाइया, मेरी बेसक रूह जानत ॥ ३४

या जानें एह मोमिन, जिन इलम पाया बेसक ।
तिनों नीके[3] कर चीन्ह्या, जिन बूझ लिया इसक ॥ ३५

मोमिन तिन को जानियो, नूर जमाल सों निसबत ।
मेरी बेसक देसी साहेदी, जिनों पाई हक न्यामत ॥ ३६

अब इन ऊपर क्या बोलना, आगूं मेहेबूब तुम ।
जिन बिध जानो त्यों करो, दोंऊ तन तले कदम ॥ ३७

जो हक के दिल में आइया, सो सब देख्या नीके कर ।
जो देखाया इलमें, या देखाया नजर ॥ ३८

और जो हक के दिल में, बाकी होसी अब ।
जो तुम देखाओगे, सो रूहें देखें हम सब ॥ ३९

---

१. दुखी । २. प्रदान करे । ३. अच्छी प्रकार ।

केहेना केहेलावना ना रह्या, ऐसा तुम दिया इलम ।
तुम बिना जरा है नहीं, ज्यों जानो त्यों करो खसम ॥ ४०

बोलिए सो सब बंधन, ए भी बोलावत तुम ।
ए सहूर भी देत हो, ज्यों जानो त्यों करो खसम ॥ ४१

खसम खसम तो केहेती हों, जानों खुदी रहे न मुझ माहें ।
गुनाह अपनी अंगना पर, बका में आवत नाहें ॥ ४२

ए भी इलम हकें दिया, मैं कहा कहूं खसम ।
ठौर ना कोई बोलन की, बैठी तले कदम ॥ ४३

खसम खसम तो कहती हों, जो तुम देखाई निसबत ।
भार[1] भी तुमही देओगे, तुम ही देओगे लज्जत[2] ॥ ४४

दोऊ तन तलें कदम के, आतम पर आतम ।
इनमें सक कछू ना रही, यों कहे हक इलम ॥ ४५

सिखाओ चलाओ बोलाओ, सो सब हाथ हुकम ।
सो इलमें बेसक करी, और कहा कहूं खसम ॥ ४६

अन्तर माहें बाहेर की, सब जानत हो तुम ।
ए इलमें बेसक करी, अब कहा कहूं खसम ॥ ४७

साथ आए मेला मिलसी, सो सब हाथ हुकम ।
ए सक इलमें ना रखी, अब कहा कहूं खसम ॥ ४८

खेल कर उतारे खेल में, रूहें पोहोंची इन इलम ।
इन बातों सक ना रही, कहा कहूं तुमें खसम ॥ ४९

हुकमें पूरी सब उमेद, और बाकी हाथ हुकम ।
ए इलमें बेसक करी, अब कहा कहूं खसम ॥ ५०

दिन गए सो तुम जानत, बाकी भी जानत तुम ।
जिन विध राखो त्यों रहूं, अब कहा कहूं खसम ॥ ५१

---

१. महत्व । २. आनन्द ।

ठौर और कोई ना रही, सो बेसक करी इलम ।
ए बेवरा तुम कहावत, सो केहेती हों खसम ।। ५२
चौदे तबक सिर मलकूत, ए तो कुरसी—फिरस्तो—अरस[1] ।
इन सिर ला मकान है, आगूं सबद न चले निकस ।। ५३
फना तले ला मकान लग, आगूं नूर मकान बका ।
उतर्ते उतरे सो चढ़े, और चढ़ ना सके इत का ।। ५४
देख्या बेचून बेचगून को, और बे सबी बे निमून ।
*निराकार देख्या ला *निरंजन, ए बेसक पड़ी सब *सुंन ।। ५५
अव्वल इलमें देखाइया, आखर बेसक इलम ।
*चौदे तबक देखे नूर लग, ठौर नहीं बिना तेरे कदम ।। ५६
और नजीक न कोई फिरस्ता, कोई नाहीं इन्सान और ।
हादी रूहें तेरे कदम तले, कोई और न पोहोंचे इन ठौर ।। ५७
गिरो नजीकी फिरस्ते, इनका नूर मकान ।
ए मलकूत में रेहे ना सकें, चढ़ ना सके लाहूत[2] आसमान ।। ५८
नूर मकान का खावंद, जिनके होत एक पल ।
कोट ब्रह्मांड ऐसे होए के, वाही छिन में जात हैं चल ।। ५९
इन नूर मकान का खावंद, जाको नामै नूर जलाल ।
आवत दायम दीदार[3] को, जित अरस नूर जमाल ।। ६०
दई साख *रसूल अल्लाह ने, ना पोहोंचे *जबराईल इत ।
कहे पर जलें तजल्ली[4] से, ताथें जोए ना उलंघत ।। ६१
इन अरस नूर जमाल के, हादी रूहें इन दरगाह[5] माहें ।
रूहें इन कदम तले, और ठौर ना कोई काँहें ।। ६२
नूर जलाल दीदार बाहेर से, करके पीछे फिरत ।
नूर जमाल के कदमों, बड़ी—रूह[6] रूहें बसत ।। ६३

---

१. देवलोक । २. परमधाम । ३. दर्शन । ४. तेज । ५. दरबार । ६. श्यामा ।

ए ना खबर नूरजलाल को, सुख नूरजमाल कदम ।
इन बातों सब बेसक करी, मोहे रूह अल्ला इलम ॥ ६४

हादी रूहों को खेल देखाइया, देख्या बैठे तले कदम ।
और न कोई केहे सके, बिना निसबत खसम ॥ ६५

मोहे इन इलमें बेसक करी, सक न जरा इलम ।
दई बेसकी सबन को, ठौर नहीं बिना तेरे कदम ॥ ६६

रूहें बारे हजार नूर बड़ी रूह के, बड़ी रूह नूर खसम ।
ए ठौर बेसक देखिया, बिना नहीं तले तेरे कदम ॥ ६७

फेर फेर दई ए बेसकी, याही वास्ते भेज्या इलम ।
जानें जिन भूलें रूहें खेल में, याद देने हक कदम ॥ ६८

ए हादी रूहें इन कदम तले, जिनको कहे मोमिन ।
फुरमान इसारतें रमूजें, आई कुंजी ऊपर इन ॥ ६९

कुंजी हाथ *रूह अल्ला, और रसूल हाथ फुरमान ।
भेजे *इमाम पें खेल में, सो हादी रूहों लिए निसान ॥ ७०

नासूत[१] में बैठाए के, भेज्या बेसक इलम ।
एक जरे जेती सक ना रही, बैठी बेसक तले कदम ॥ ७१

ए सक हमको तो मिटी, जो हम बैठे तले कदम ।
फरामोसी हमको मिटावने, भेज्या तुम अपना इलम ॥ ७२

आया फुरमान खेल देखावने, और आया हक इलम ।
ए खेल नीके तब देखिया, जब देख्या बैठे तले कदम ॥ ७३

तुम मोहे ऐसा देखाया, एक वाहेदत्त[२] में हैं हम ।
दूजा कछुए है नहीं, बिना तुम तले कदम ॥ ७४

ए भी इलम तुम दिया, जासों तुम हुए मुकरर[३] ।
दिलसों रूहों बिचारिया, कछू है ना वाहेदत्त बिगर ॥ ७५

---

१. मृत्यु लोक । २. एकत्व । ३. नियुक्त ।

ए तेहेकीक तुम कर दिया, तुम बिना कछू नाहें ।
ए भी तुम कहावत, इत मैं न आवत मुझ माहें ॥ ७६

ए जिन बिध हक बोलावत, तिन बिध रूह बोलत ।
हम बैठे तले कदम के, ए हम पें हक कहावत ॥ ७७

अन—जानत[1] को इलमें, बेसक दिए देखाए ।
कदमों तूर जमाल के, हम सब रूहों लई बैठाए ॥ ७८

तुम बैठाए बैठत हों, मुझ में नहीं ताकत ।
बैठी कदम तले हक, ए भी तुम कहावत ॥ ७९

महामत कहें मेहेबूब जी, कोई रह्या न और उदम ।
बेसक और काहूं नहीं, बिना तेरे तले कदम ॥ ८०

॥ प्रकरण ॥ १० ॥ चौपाई ॥ ५२२ ॥

## हक[2] रूहन की खिलवत लिखी है

खिलवत हक रूहन की, जो इसक रूहों असल ।
ए बातून बका अरस की, बीच न आवे फना अकल ॥ १

रूहें बड़ी रूहसों मिलके, बहस किया हकसों ।
हम तुमारे आसिक, इसक है हममों ॥ २

बड़ी रूह कहे तुम सांची सबे, पर इसक मेरा काम ।
अव्वल हक और रूहन सों, इन इसकै में मेरा आराम ॥ ३

फेर जवाब रूहन को, इन बिध दिया हक ।
इसक तुमारा भले है, पर मैं तुमारा आसिक[3] ॥ ४

हक आसिक बड़ी रूह का, और रूहों का आसिक ।
ए क्यों कहिए सीधा इसक, बंदों का आसिक हक ॥ ५

रूहें चाहिए आसिक हक के, और आसिक बड़ी रूह के ।
और बड़ी रूह भी आसिक हक की, सीधा इसक बेवरा ए ॥ ६

---

१. ना समझ । २. (अक्षरातीत ब्रह्म) । ३. प्रेमी ।

तुम सब रूहें मेरे तन हो, तुम सों इसक जो मेरे दिल ।
ए क्यों कर पाओ बका मिने, जो सहूर करो सब मिल ॥ ७

हक के दिल में उपज्या, मैं देखाऊँ अपना इसक ।
और देखाऊँ साहेबी, रूहें जानत नहीं मुतलक ॥ ८

तब हक के अंग का नूर जो, जो है नूर जलाल ।
तब तिनके दिल पैदा हुआ, देखों इसक नूरजमाल ॥ ९

कैसा इसक बड़ी रूह सों, कैसा इसक साथ रूहन ।
बड़ी रूह का इसक हक सों, इसक हक सों कैसा है सबन ॥ १०

एह रबद हमेसा रहे, बड़ी रूह रूहें और हक ।
अब घट बढ़ क्यों कर जानिए, वाहेदत्त पूरा इसक ॥ ११

असल जुदागी अरस में, सो तो कबूं न होए ।
वाहेदत्त इसक घट बढ़, क्यों कर होवे दोए ॥ १२

वाहेदत्त कहिए इनको, तन मन एक इसक ।
जुदागी जरा नहीं, वाहेदत्त का बेसक ॥ १३

तो बेवरा कबूं न पाइए, बीच अरस वाहेदत्त ।
इसक बेवरा तो पाइए, जो कछू होए जुदागी इत ॥ १४

जो इसक वाहेदत्त का, ए जो किया मजकूर ।
ए बेवरा क्यों पाइए, कोई होए न एक पल दूर ॥ १५

अरस बका में जुदागी, सुपने कबूं न होए ।
तो हक इसक का बेवरा, क्यों पावे मोमिन कोए ॥ १६

हकें कह्या रूहन को, मैं देखाऊँ इसक ।
ए बेवरा इसक का, तुम पाओगे बेसक ॥ १७

मैं छिपाऊँ तुमको, बैठो कदम पकड़ के ।
ए तुम इसकै से पाओगे, आए मिलो मुझसे ॥ १८

ए इसक तो पाइए, जो पेहेले मोकों जाओ भूल ।
तुम ले बैठो जुदाएगी, मैं भेजों तुम पर रसूल ॥ १९

मैं भेजों किताबत तुमको, सब इत की हकीकत ।
तुम कहोगे किन खसमें, भेजी किताबत ॥ २०
सो कहां है हमारा खसम, कैसा खेल कौन हम ।
रसूल देसी तुमें साहेदियां[1], पर मानोगे ना तुम ॥ २१
कहाँ है हमारा वतन, कौन जिमी ए ठौर ।
क्योंकर हम आए इत, बिना मलकूत[2] है कोई और ॥ २२
पढ़ोगे सब साहेदियां, जो मैं लिखूंगा इसारत ।
सो दिल में ल्याओगे, पर छूटेगी नहीं गफलत ॥ २३
मैं लिखूंगा रमूजें, और सिखाऊंगा मेरा इलम ।
तिन इलम से चीन्होगे, पर छूटे न झूठी रसम ॥ २४
तुम जाए झूठे खेल में, कर बैठोगे जुदे जुदे घर ।
मैं आए इलम देऊं अरस का, पर तुम जागो नहीं क्योंए कर ॥ २५
मैं रूह अपनी भेजूंगा, भेष लेसी तुम माफक ।
देसी अरस की निसानियां, पर तुम चीन्ह न सको हक ॥ २६
हादी मीठे सुकन हक के, कहेगा तुमें रोए रोए ।
तुम भी सुन सुन रोएसी, पर होस में न आवे कोए ॥ २७
खेल देखोगे दुख का, याद देसी मैं ए सुख ।
मैं देऊँगा सब साहेदियां, पर तुम छोड़ न सको दुख ॥ २८
मैं तुमारे वास्ते, करूँगा कई उपाए ।
ए बातें सब याद देऊँगा, जो करता हों इप्तदाए[3] ॥ २९
क्यों ऐसी हम से होएगी, क्या हम जुदे होसी माहें खेल ।
ऐसी अकल क्यों होएसी, ए कैसी है *कदर लैल ॥ ३०
दूर तो करोगे नहीं, कदम तले बैठे हक ।
हम फेरें तुमारा फुरमाया, ऐसे लूखे[4] होसी मुतलक ॥ ३१

---

१. गवाहियां । २. बैकुंठ । ३. आरम्भ । ४. रूखे ।

तुम बिना हम कबहूं, रेहे ना सकें एक दम ।
क्यों होसी हम नादान, जो ऐसा करें जुलम ॥ ३२

जैसा साहेब कहत हो, ऐसी कबूं हमसे न होए ।
सौ बेर देखो अजमाए के, ऐसी मोमिन करे न कोए ॥ ३३

आप भूलें या हक कदम, या भूलें अरस घर ।
ऐसी निपट नादानी, हम करें क्यों कर ॥ ३४

रूहों ऐसी आई दिल में, कोई खेल है खूबतर[१] ।
खेल देख हक वतन, आप जासी बिसर ॥ ३५

ए जेती हुई रद बदल, त्यों त्यों खेल दिल चाहे ।
फेर फेर मागे खेल को, कोई ऐसी बनी जो आए ॥ ३६

ना तो जो बात आखर होएसी, सो रब्बे[२] आगूं दई बताए ।
कह्या खेल जुदागी दुख का, तुम मांगत हो चित्त ल्याए ॥ ३७

हक आप सांचे होने को, सब बिध कही सुभान[३] ।
त्यों त्यों दिल ज्यादा चाहे, वास्ते करने ऊपर एहेसान ॥ ३८

मिनों मिने करें हुसियारियां, हक खेल देखावें जुदागी ।
एक कहे दूजी को मुख थें, रहिए लपटाए अंग लागी ॥ ३९

क्यों हम जुदे होएसी, एक दूजी को छोड़े नाहें ।
क्यों भूलें हम हक को, बैठे खिलवत के माहें ॥ ४०

हक कहें तुम भूलोगे, आप बैठे बका में जित ।
मुझे भी तुम भूलोगे, ऐसा खेल देखोगे बैठे इत ॥ ४१

ऐसी क्यों होवे हमसे, ऐसे क्यों होवें बेसुध हम ।
खेल फरेब लाख देखिए, पर क्यों भूलिए इन खसम ॥ ४२

एक दूजी कहे रूहन को, तुम हूजो खबरदार ।
खेल देखावे फरामोस का, जिन भूलो परवरदिगार[४] ॥ ४३

---

१. बढ़िया । २. स्वामी । ३. परमात्मा ने । ४. पालन हार ।

जो तूं भूले मैं तुझ को, देऊँगी तुरत जगाए ।
मैं भूलों तो तूं मुझे, पल में दीजे बताए ॥ ४४

इन बिध एक दूजी को, मसलहत[1] करी सबन ।
क्या करसी खेल फरेब का, आपन मोमिन सब एक तन ॥ ४५

सो क्यों भूलें ए सैयां, जो आगूं होवें खबरदार ।
खेल देखावें चेतन कर, सो भूलें नहीं निरधार ॥ ४६

सो भूलेंगे क्यों कर, इसक जिनको होए ।
एक पाव पल जुदागीय का, क्यों कर सेहेवें सोए ॥ ४७

इसक सबों रूहों पूरन, वाहेदत्त का मुतलक ।
क्यों जरा पैठे जुदागी, बीच रूहों हादी हक ॥ ४८

ए बोहोत रबद बीच अरस के, रूहों हक सों हुआ मजकूर ।
अरस बका के हजूरी[2], ए क्यों होवें हक सों दूर ॥ ४९

इसक का अरस अजीम में, रबद[3] हुआ बिलंद[4] ।
तो फरामोसी में इसक का, बेवरा देखाया खावंद ॥ ५०

आप बैठे दिल देय के, ऊपर बारे हजार ।
फरामोसी हांसी होएसी, जिनको नहीं सुमार ॥ ५१

हक बैठे खेल देखावने, जिन फरामोसी[5] हांसी होए ।
इसक हक का आवे दिल में, ए फरामोसी जाने सोए ॥ ५२

तिन वास्ते हकें पैदा किया, दई दूर जुदागी जोर ।
और नजीक बैठाए सेहेरग से, यों देखाया खेल मरोर ॥ ५३

अरस बका बीच ब्रह्मांड में, चौदे तबकों में सुध नाहें ।
किया सेहेरग से नजीक, गिरो बैठी बका माहें ॥ ५४

दिया बीच ब्रह्मांड जुदागी, अजूं इनसे भी दूर दूर ।
निपट दई ऐसी नजीकी, बैठे अंग सों लाग हजूर ॥ ५५

---

१. सलाह । २. निकटवर्ती । ३. विवाद । ४. ऊँचा (भारी) । ५. बेसुधि ।

ऐसा बुजरक खेल देखाया, ऐसा न देख्या कब ।
ए बातें हांसी फरामोसी की, करसी इसक ले अब ॥ ५६

फरामोसी दई जिन वास्ते, हांसी भी वास्ते इन ।
इसक ले ले हंससी, *क्यामत वखत मोमिन ॥ ५७

ए बातें हुई सब अरस में, रूहें बड़ी रूह हक साथ ।
सोए खेल पैदा हुआ, काहूं हाथ न सूझे हाथ ॥ ५८

कई जातें कई जिनसें, कई फिरके मजहब ।
भेष भाषा सब जुदियां, हक को ढूंढ़ें सब ॥ ५९

ढूंढ़ ढूंढ़ सब जुदे परे, हक न पाया किन ।
अव्वल बीच आखर लों, किन पाया न बका वतन ॥ ६०

रसमें सबों जुदी लई, माहों माहें कई लरत ।
आप बड़े सब कहावहीं, पानी पत्थर आग पूजत ॥ ६१

ए ऐसा खेल अंधेर का, सब कहें हम बुजरक ।
पर हक सुध काहू में नहीं, छूटी ना सुझे सक ॥ ६२

काहूँ तरफ न पाई अरस की, कहावत हैं दीन—दार[१] ।
डूबे सब अपनी स्यानपें, जात हाथ पटक सिर मार ॥ ६३

ऐसे में आए रसूल, हाथ लिए फुरमान ।
फैलाया नूर आलम[२] में, वास्ते मोमिनों पेहेचान ॥ ६४

आगूं आए खबर दई, आखर आवेगा साहेब ।
*रूह अल्ला *इमाम उम्मत, होसी *नाजी[३] मजहब ॥ ६५

पुकार करी सबन में, कह्या आवेगा सुभान ।
हिसाब ले भिस्त देएसी, ठौर हक बका पेहेचान ॥ ६६

ऐसा खेल पैदा हुआ, और सोई आए मोमिन ।
सो खेल देखे पीछे, भूल गए आप वतन ॥ ६७

---

१. धार्मिक । २. ब्रह्मांड । ३. मुक्ति पाने वाला ।

और भूले खसम को, गए खेल में रल ।
कोई सुध बका की न देवही, जो काएम अरस असल ॥ ६८
बैठे ख्वाब जिमीय में, और दिल पर सैतान पातसाह ।
नसल[1] आदम हवाई[2], जो मारे खुदाई राह ॥ ६९
मोमिन आए इन नसल में, जित हक न सुन्या कान ।
तिन जिमी क्यों पावें मोमिन, काएम अरस सुभान ॥ ७०
मोमिन आए जुदे जुदे, जुदी जातें जुदी रवेस[3] ।
जुदे मुलक मजहब जुदे, जुदी बोली जुदे भेष ॥ ७१
चौदे तबक की दुनीको, काहूँ खबर खुदा की नाहें ।
ऐसे किए मोहोरे खेल के, ए भी मिल गए तिन माहें ॥ ७२
दुनियां चौदे तबक में, काहूँ खोली नहीं किताब ।
साहेब जमाने का खोलसी, एही सिर खिताब ॥ ७३
कुंजी ल्याए रूह अल्ला, दई हाथ इमाम ।
सो गिरो मोमिनों मिलाए के, करसी सेजदा तमाम ॥ ७४
सो अग्यारैं सदी मिने, होसी जाहेर हकीकत ।
हादी मोमिन जानसी, हक की इसारत ॥ ७५
अव्वल करी बातें अरस में, वास्ते मोमिनों न्यामत ।
कुंजी खिताब सबे ल्याए, सोई फुरमान ल्याए इसारत ॥ ७६
सो मिली जमात रूहन की, जिन वास्ते किया खेल ।
सो हक भी आए इन बीच में, सो कहे वचन माहें *लैल ॥ ७७
लैल गई पुकारते, आया वखत फजर ।
ए अग्यारैं सदी पूरन, तब खुली रूह नजर ॥ ७८
ए बुजरकी इसक की, अबलों न जानी किन ।
और मोहोरे सब खेल के, क्यों जाने बिना मोमिन ॥ ७९

---
१. वंशज । २. माया के । ३. रीतियां ।

सो फरामोसी मोमिन को, हकें दई बनाए ।
और हक जगावें ऊपर से, बिना इसक न उठ्यो जाए ।। ८०
आप हकें दिल उठाए के, खेल किया फरामोस ।
एती पुकारें हक की, आवत नाहीं होस ।। ८१
ए बातें बोहोत बारीक हैं, और हैं बुजरक ।
ए सुध तब तुमें होएसी, जब आवसी इसक ।। ८२
महामत रूहें हक सों हुआ, बहस इसक वास्ते ।
सो इसक बिना क्यों पैठिए, बीच हक अरस के ।। ८३

प्रकरण ।। ११ ।। चौपाई ।। ६०५ ।।

## सूरत[1] हक इसक के मगजका बेसक

हाए हाए क्यों न सुनो रूहें अरस की, हक बका बातन ।
*रूह अल्ला ने जाहेर किया, काहूँ सुन्या न एते दिन ।। १
फरामोसी हकें दई, सो वास्ते हांसी के ।
हाए हाए घाव न लागही, सुन के सबद ए ।। २
ए साहेब हांसी करें, अरस की अरवाहों[2] सों ।
हाए हाए विचार न आवही, ऐसी सखती हिरदेमों ।। ३
ए साहेब किने न देखिया, ना किन सुनिया कान ।
ढूंढ़ गए कै त्रैगुन, पर पाया न काहूँ निदान ।। ४
एक पल थें पैदा फना, कोट ब्रह्मांड नूर के ।
सो नूर[3] नूर—जमाल[4] के, मुजरे आवत इत ए ।। ५
जो किनहूँ पाया नहीं, सो जात रोज दरबार ।
साहेब अरस—अजीम[5] के, करने उत दीदार ।। ६
सो साहेब हांसी करें, अपने मोमिन रूहों सों मिल ।
सो सुनके घाव न लागही, हाए हाए ऐसे बजर[6] दिल ।। ७

१. प्रकरण । २. रूहों । ३. अक्षर ब्रह्म । ४. अक्षरातीत ब्रह्म । ५. परम धाम । ६. कठोर पत्थर ।

हांसी करी किन भांत की, फरामोसी दई किन ।
पर हाए हाए दिल न विचारहीं, कोई ऐसा दिल हुआ कठिन ॥ ८

हक का इसक हमपें, पूरा पाया में ।
ए खेल देखाया नींद का, फरामोसी के सें ॥ ९

इलम भी पूरा दिया, जित जरा न मैं को सक ।
सुख देखे बेसक अरस के, तो क्यों न आवे हक इसक ॥ १०

सुख में भी सक नहीं, नाहीं अरस में सक ।
ना कछू सक इलम में, सक ना खसम हक ॥ ११

सक ना रही कछू खेल में, सक ना आए देखन ।
सक ना मैं हक की, और सक ना गिरो मोमिन ॥ १२

सक नाहीं कुदरत में, सक नाहीं कादर[1] ।
सक नाहीं क्यामत में, सब अरवाहें उठें ज्यों कर ॥ १३

सक ना कायम भिस्त में, बेसक ब्रह्मांड हुकम ।
बेसक तीनों उम्मत[2], बेसक घरों पोहोचावें हम ॥ १४

बेसक फरामोसीय में, हक बेसक मिले हम साथ ।
बेसक ताला खोलिया, बेसक कुंजी हमारे हाथ ॥ १५

बेसक खेल देखाया, खोले बेसक *कतेब *वेद ।
बेसक हमों ने पाइया, बेसक हक दिल भेद ॥ १६

बेसक दोऊ अरसों की, जरे जरे की बेसक ।
बेसक मेहेर मोमिनों पर, बेसक करी जो हक ॥ १७

जो पैदा चौदे तबक में, जो कोई हुए बुजरक[3] ।
अपने मुख किने ना कह्या, जो हम हुए बेसक ॥ १८

सो बेसक मैं जानिया, ए बात तेहेकीक[4] बेसक ।
मोमिन बेसक समझियो, बेसक बोले मैं हक ॥ १९

---

१. सामर्थ्य वान । २. सृष्टि । ३. महान । ४. निश्चित ।

केतेक मोमिन हो बेसक, जो बेसक करो विचार ।
तो बेसक सुख अरस का, इन तन बेसक ल्यो करार ॥ २०

दुनियां चौदे तबक में, कोई बेसक हुआ न कित ।
सो सब थें सक मिट गई, ऐसी बेसकी आई इत ॥ २१

किस वास्ते हांसी करी, किस वास्ते हुए फरामोस ।
हाए हाए दिल ना विचारहीं, हाए हाए आवत नहीं माहें होस ॥ २२

ए कदम दिल कछू आवही, जब करे विचार दिल ए ।
हाय हाय ए समया क्यों ना रह्या, इन हांसी फरामोसी के ॥ २३

हाए हाए दिल में न आवही, किस वास्ते हाँसी भई ।
ए कारन कौन फरामोस को, ए दिल खोल किने न कही ॥ २४

समया न रह्या किन वास्ते, होए पेहेचान न वास्ते किन ।
इसक हक के दिल का, हाए हाए पाए नहीं लछन[1] ॥ २५

आप फरामोसी देअ के, ऊपर थें जगावत ।
तरंग हक इसक के, हाए हाए दिल में न आवत ॥ २६

खेल किया किस वास्ते, किस वास्ते देखाया दुख ।
मेहेर प्रीत हक के दिल की, हा हा देखे ना इसक के सुख ॥ २७

किस वास्ते हलके[2] जगावत, ऊपर करत बोहोतक सोर ।
हा हा ए सुध कोई ना ले सके, हक के इसक का जोर ॥ २८

किस वास्ते दुनी ना समझी, किस वास्ते भेज्या फुरमान ।
ए बातें हक के इसक की, हा हा करी न काहूं पेहेचान ॥ २९

कुंजी ल्याए किस वास्ते, किस वास्ते दई दूजे को ।
मेहेर अल्ला के कलाम, हा हा आए ना काहूं दिल मों ॥ ३०

किस वास्ते खिताब खुदाए का, एक सोई खोले कलाम ।
हा हा ए सुध मोमिनों ना लई, मीठा हक इसक का आराम ॥ ३१

१. लक्षण । २. धीरे, अहिस्ते ।

ए द्वार किने ना खोलया, ए जो कुरान किताब ।
पाई ना हकीकत किनहूं, हा हा एकै ठौर खिताब ।। ३२
साहेदी देवे जो खुदाए की, सोई खुदा जान ।
सो साहेदी किन ना लई, हा हा मगज न पाया कुरान ।। ३३
लिखी इसारतें[1] रमूजें[2], हकें किन ऊपर ।
ए बातें मोमिनों मिनें, हा हा छिपी रही क्यों कर ।। ३४
तरंग हक के इसक के, पाए ना गिरो में किन ।
अजूं माएने मगज, हा हा पाए नहीं मोमिन ।। ३५
हक के दिल का इसक, निपट बड़ी है बात ।
अजूं जाहेर रूहों ना हुई, अरस सूरत हक जात ।। ३६
हांसी करी किन वास्ते, फरामोसी की दे ।
हाए हाए मोमिन ना समझे, बात इसक की ए ।। ३७
लिख्या ऐसा कुरान में, कुआंरी[3] रही फुरकान[4] ।
ए दाग गिरो तब देखसी, हा हा होसी जब पेहेचान ।। ३८
ए भी वास्ते इसक के, फुरमाया यों कर ।
तो कही कुआंरी फुरकान, हाए हाए गिरो न लई दिल धर ।। ३९
उतरे नूर बिलंद से, मोमिन बड़ा मरातब[5] ।
हक के दिल का इसक, हा हा मोमिन लेसी कब ।। ४०
ऐसा नूर जमाल जो, रूहें रहें इन दरगाह ।
ए किस्सा सुनते विचारते, हा हा उड़त नहीं अरवाह ।। ४१
हक सूरत के दिल का, मोमिनों से सनेह ।
हेत प्रीत इसक की, हा हा आई नहीं काहूं एह ।। ४२
इसक खेल हांसी इसक, इसक फरामोस मोमिन ।
इसकें रसूल होए आइया, वास्ते इसक न पाया किन ।। ४३

---

१. संकेत । २. भेद । ३. (अनदेखी) । ४. कुरान । ५. दर्जा, पदवी ।

इसकें फुरमान आइया, वास्ते इसक न खुल्या किन ।
वास्ते इसक के गैब[1] हुआ, इसकें खुले ना खुदा बिन ॥ ४४

इसकें कुंजी ल्याइया, इसकें ल्याया खिताब ।
इसकें आए मोमिन, इसकें खुले ना सिताब[2] ॥ ४५

कई बानी इसकें उपजी, कई इसकें पड़ी पुकार ।
ए रूहें भी वास्ते इसक के, हा हा हुइयां ना खबरदार ॥ ४६

हा हा इसक हक का, समझे नहीं मोमिन ।
ना तो अरवाहें थी अरस की, पर हुआ न दिल रोसन ॥ ४७

सो भी वास्ते इसक के, जो लागत नाहीं घाए ।
सो भी वास्ते इसक के, जो उड़त नहीं अरवाए ॥ ४८

इसकें ऊपर पुकारहीं, आवत नाहीं होस ।
सो भी वास्ते इसक के, जो टलत नहीं फरामोस ॥ ४९

सो भी वास्ते इसक के, जो लगत न कलाम सुभान ।
सो भी वास्ते इसक के, जो होत नहीं पेहेचान ॥ ५०

सो भी वास्ते इसक के, जो पेहेचान आवत नाहें ।
सो भी वास्ते इसक के, जो पेहेचानत दिल माहें ॥ ५१

ए करत है सब इसक, जो खेल में जीतत ।
सो भी करत इसक, जो कोई काहूं भूलत ॥ ५२

ए बारीक बातें इसक की, ए कोई समझत नाहें ।
सो भी करत है इसक, जानत बल जुबांए ॥ ५३

सो भी करत है इसक, जुदी जुदी जिनस[3] ।
काहूँ सुध थोरी काहूँ घनी, काहूं इसक न देत हरगिस[4] ॥ ५४

इसक सेती हारिए, जितावे इसक ।
इसके इसक न आवही, इसक करे बेसक ॥ ५५

---

१. छिपी । २. जल्दी । ३. वस्तु । ४. बिल्कुल ।

ए बारीक बातें हक की, क्यों कर जानी जाए ।
इसक हक के दिल का, बिना हुकमें क्यों समझाए ॥ ५६

ए हक देखावें इसक, तो बेर न पल एक होए ।
सौ साल सोहोबत कीजिए, बिना हुकम न समझे कोए ॥ ५७

ए बातें हक के दिल की, निपट बारीक हैं सोए ।
बिना इसक दिए हक के, क्यों कर समझे कोए ॥ ५८

इसक हक के दिल का, क्यों आवे माहें बुझ[1] ।
हक देवें तो इसक आवही, ए हक के इसक का गुझ ॥ ५९

ए हक का बातून इसक, तिन इसक का बारीक बातन ।
बिना पाए इसक हक के, इसक न आवे किन ॥ ६०

ए खेल फरामोसीय का, इसके किया जो अब ।
तुम कायम दायम[2] इसक में, और ऐसा इसक न कब ॥ ६१

ए हमेसा रूहन में, रहें भीगे बीच इसक ।
पर इसक ए फरामोसींय का, जो हक के दिल माफक ॥ ६२

बीच कायम ठौर बिछोहा नहीं, जो जुदी होवे गिरो दम ।
खेल इसक जुदागीय का, क्यों देखें अरस में हम ॥ ६३

लेने लज्जत इसक वास्ते, दई फरामोसी खेल हुकम ।
जो रूह लेवे बीच दिल के, तो देखे इसक खसम ॥ ६४

आप आगूं रूहें बैठाए के, दिल से उपजाई हक ।
सुख देने देखाइया, अपने दिल का इसक ॥ ६५

आप दें फरामोसी, और जगावें भी आप ।
देखाई जुदाई फरामोस में, देने इसक मिलाप ॥ ६६

ना माग्या ना दिल उपज्या, दिल हकें उठाया एह ।
तो माग्या खेल जुदागीय का, देने अपना इसक सनेह ॥ ६७

---

१. ज्ञान । २. हमेशा ।

इसक तरंग उपजत है, दूर जाए मिलिए आए ।
वास्ते इसक हक के दिल का, खेल फरामोसी देखाए ॥ ६८

इसक बिछुरे से जानिए, आए दूर थें मिलिए जब ।
ए दोऊ बातें अरस में न थीं, इसक चिन्हार[1] देखाई अब ॥ ६९

जो हक का इसक विचारिए, तो बड़ा दिल देत लज्जत ।
ए बुजरक मेहेरबानगी, हकें ऐसी दई न्यामत ॥ ७०

जैसा साहेब बुजरक, तैसा बुजरक इसक ।
जो दिल देअ के देखिए, तो सुख आवे हक माफक ॥ ७१

जैसा मेहेबूब बुजरक, ऐसा हादी हक का तन ।
रूहें तन हादी माफक, इनों माफक बका वतन ॥ ७२

ऐसा साहेब इसक, करत निसबत जान ।
हाए हाए भूली अरवाहें असल, परत नहीं पेहेचान ॥ ७३

भूले हक और आप को, और भूले बका घर ।
हक हँससी इसी बात को, रूहें भूली क्यों कर ॥ ७४

औलिया[2] लिल्ला दोस्त, हकसों रखें निसबत ।
फरामोसी दई हांसीय को, कछू चल्या न हकसों इत ॥ ७५

कैसे थे इन खेल में, किन माफक[3] थे तुम ।
किन से ए निसबत भई, कैसा बका पाया खसम ॥ ७६

कहां थे फना के खेल में, कैसा था अरस घर दूर ।
किन बुजरकों न पाइया, सो क्यों कर लिए तुमें हजूर ॥ ७७

कैसा अरस देखाइया, क्यों लिए खिलवत माहें ।
ए जो अरवाहें अरस की, क्यों अजूं विचारत नाहें ॥ ७८

सूरत न पाई हक की, न पाया अरस बका ठौर ।
सब कहें हम न पाइया, कर कर थके दौर ॥ ७९

---

१. पहचान । २. खुदा के दोस्त । ३. जैसे ।

धनी मलकूत के कई गए, पर पाया न नूर मकान ।
खोज खोज के कई थके, पर देख्या नहीं निदान[१] ॥ ८०

ऐसा साहेब बुजरक, जो हमेसा कायम ।
सो तलें झांकत नूर—जमाल के, आवें दीदारें दायम ॥ ८१

कैसा हाल है तुमारा, हो कैसे वतन में तुम ।
कौन बड़ाई तुमारी, हाय हाय आवे न याद खसम ॥ ८२

कैसा घर बुजरक बका, कैसी खसम साहेबी ।
किन चाह्या तुमारा दीदार, कैसी तिनकी है बुजरकी ॥ ८३

कैसी जिमी थी कुफर की, और कैसी थी अकल ।
किन झूठे कबीले में थे, कैसे तुमारे अमल[२] ॥ ८४

कैसा सहूर है तुमको, पाई कौन सोहोबत ।
किन कबीले में थे, अब कैसी राखत हो निसबत ॥ ८५

कैसी पाई सराफी[३], कैसी आई तुमें पेहेचान ।
हक बका चीन्हया कौन जिमिए, पाया कैसा इसक ईमान ॥ ८६

जागत हो के नींद में, बिचारत हो के फरामोस ।
सीधी बात जाग करत हो, तुम हो होस में के बेहोस ॥ ८७

विचार नींद में तो ना होए, जागें नींद रहे क्यों कर ।
विचार देखो तो अचरज, देखो फरामोसी हांसी दिल धर ॥ ८८

आड़ा ब्रह्मांड देय के, ऐसो जुदागी कर ।
करत गुफ्तगोए[४] हजूर, खेल ऐसा किया जोरावर ॥ ८९

नातो बैठे हो कदम तले, पर लागत ऐसे दूर ।
हक आप इसक देखावने, करत आपन सों मजकूर[५] ॥ ९०

हक का इसक बढ़या, इसक अपना जरा नाहें ।
जब दई इत बेसकी, तो इसक क्यों न आवे दिल माहें ॥ ९१

१. आखिर । २. कर्म । ३. परख । ४. बातचीत । ५. चर्चा ।

तुम कहोगे हम बेसुध हुए, दिल में रही ना खबर ।
ना कछू रही सो अकल, तो इसक आवे क्यों कर ।। ९२

ना सुध आप ना खसम, ना सुध घर गुपतगोए ।
ज्यों जीवत मुरदे भए, रूहें क्यों कर बल होए ।। ९३

आप भूले बेसक, बेसक भूले खसम ।
बेसक भूले बुध वतन, पर हकें बेसक दिया इलम ।। ९४

मुए भी इत बेसक, और जिए भी बेसक ।
सहूर भी बेसक दिया, दिया इलम बेसक हक ।। ९५

जब सुध पाई सब बेसक, हुए बेसक खबरदार ।
हकें ऐसी दई बेसकी, हुए बेसक बेसुमार ।। ९६

इनहीं बात की हांसी है, उड़त ना फरामोस ।
ना तो जब बेसक हुए, हाए हाए क्यों न आवत होस ।। ९७

ऐसी हांसी इसही बात की, फरामोसी में जागृत ।
जागे में भी सक नहीं, कोई ऐसी इसकें करी जो इत ।। ९८

बैठाए बेसक अरस में, और जगाए बेसक ;
हांसी भी बेसक हुई, जो आया नहीं इसक ।। ९९

कहें महामत तुम पर मोमिनों, दम दम जो वरतत ।
सो सब इसक हक का, पल पल मेहेर करत ।। १००

।। प्रकरण ।। १२ ।। चौपाई ।। ७०५ ।।

## बुलाय ल्याओ तुम रूह अल्ला

ल्याओ बुलाए तुम रूह अल्ला, जो रूहें मेरी आसिक ।
रबद किया प्यार वास्ते, कहियो केहेलाया हक । १

रूह अल्लासों बका मिने, हकें करी मजकूर ।
उतरी अरवाहें अरस से, बुलाए ल्याओ हजूर ।। २

हक बका का बातून, जो किया रूहोंसों गुझ ।
केहेलाइयां बातें छिपियां, खिलवत करके मुझ ।। ३

मैं वास्ता कहूं तुमको, उतरियां कारन इन ।
इनों रबद किया इसक का, आगूं मेरे बीच वतन ॥ ४

करी रूहों मसलहत[1] मिलके, कहे हमको प्यारे हक ।
और बड़ी रूह प्यारी हमको, ए बात जानो मुतलक[2] ॥ ५

बड़ी रूह कहे प्यारे मुझे, मेरा साहेब बुजरक ।
और प्यारी रूहें मेरे तन हैं, ए जानो तुम बेसक ॥ ६

तुम रूहें नूर मेरे तन का, इन बिध केहेवें हक ।
बोहोत प्यारी बड़ी रूह मुझे, मैं तुमारा आसिक । ७

प्यार हक का ज्यादा हमसों, ए उपजी रूहों दिल सक ।
इसक हमारा हकसों, क्या नहीं हक माफक ॥ ८

और भी ए रूहों कह्या, हक प्यारे हैं हमको ।
और प्यारी बड़ी रूह, जरा सक नहीं इनमों ॥ ९

तब ए बात सुन हकें कह्या, मैं प्यारा हों तुमको ।
पर मैं आसिक अरवाहों का, सो कोई जानत नहीं तुममों ॥ १०

तुम ज्यादा प्यार कह्या अपना, हादी[3] कहे मेरा अधिक ।
मैं कह्या प्यार मेरा ज्यादा, तब तुम उपजी सक ॥ ११

तुम रूहें मेरे नूर तन, सो वाहेदत्त के बीच एक ।
इसक बेवरा बका मिने, क्यों पाइए ए विवेक ॥ १२

तुम बड़ा इसक कह्या अपना, मेरा न आया नजर ।
खेल देखाया तिन वास्ते, अब देखो सहूर कर ॥ १३

ए बेवरा बीच बका मिने, इसक का न होए ।
दई जुदागी तिन वास्ते, बात करी बकामें सोए ॥ १४

छिपाइयां अपनी मेहेर में, देखाया और आलम[4] ।
देखो कौन आवे दौड़ अरसमें, लेअके इसक खसम ॥ १५

---

१. सलाह । २. बिल्कुल । ३. मार्ग दर्शक (श्यामा) । ४. ब्रह्मांड ।

रूहों ऐसा खेल देखाऊं मैं, जित झूठे झूठ पूजत ।
ढूंढे अव्वल आखर लग, तो हक न कहूं पाईयत ॥ १६

आए फंसे तिन फरेब में, पानी पत्थर आग पूजत ।
अरस साहेब काएम की, कहूं सुपने न पाईए बात ॥ १७

आईयां तिन आलममें, जित हक को न जानत कोए ।
पूजें खाहिस हवाए कों, जो कोई उनमें बुजरक होए ॥ १८

झूठे मोहोरे जो खेल के, मिल गैयां माहें तिन ।
कबीला कर बैठियां, कहें एह हमारा वतन ॥ १९

समझाइयां समझें नहीं, मानें नहीं फुरमान ।
कहें कौन तुम कौन हम, अपने कैसी पेहेचान ॥ २०

ए सोई हमारा साहेब, जो बड़कों दिया बताए ।
ए पत्थर पानी आग है, पर हमसों छोड़या न जाए ॥ २१

बड़के[1] हमारे कदीम[2] के, पूजत आए ए ।
सो क्यों छूटे हमसे, रब्ब बाप दादों का जे ॥ २२

रब्ब रसूल बतावें गैबका, हम पूजें जाहेर ।
हम बातून[3] को पोहोंचें नहीं, देखें नजर बाहेर ॥ २३

केतीक करें लड़ाइयां, सामो देवें फरेब ।
कौन रसूल कौन रूहअल्ला, कौन वेद कौन कतेब ॥ २४

इन हाल जो दुनियां, ए गइयां तिनमें मिल ।
मोहे इसक बिना पावें नहीं, रूहों ऐसी भई मुस्किल ॥ २५

कठिन हाल है रूहों का, पर तुम बिरचों[4] जिन ।
भूल गइयां उनें सुध नहीं, हांसी एही मोमिन ॥ २६

बड़ी हांसी इत होएसी, जब सब होसी रोसन ।
खेल खुसाली इत होएसी, इसक बेवरे इन ॥ २७

---

१. पूर्वज । २. पुराने । ३. गुझ । ४. मगन होना ।

एक रोसी एक हंससी, होसी खूबी बड़ी खुसाल ।
बिना इसक बीच अरस के, कोई देखे न नूरजमाल ॥ २८

रोसी इनहीं हालमें, वास्ते हांसी के ।
मुद्दा[1] सब हांसीय का, फरामोसी का जे ॥ २९

*रूह अल्ला एता कहियो, तुम माग्या सो फरामोस ।
जब इसक ज्यादा आवसी, तब आवसी माहें होस ॥ ३०

मैं छिपाहों इनसे, रूहें नजर में ले ।
वह देखत झूठा आलम, मोकों देखत नाहीं ए ॥ ३१

जब इसक इनों आवसी, तब देखेंगे मुझको ।
इसक बिना इन खेल में, मैं मिलों नहीं इनसों ॥ ३२

रबद रूहों ने हकसों, किया इसक का जोए ।
तो अरस में इसक बिना, पैठ न सके कोए ॥ ३३

इनों रबद किया इसक का, हम जैसा हक का नाहें ।
दई फरामोसी इन वास्ते, देखों कैसा इसक इनों माहें ॥ ३४

ऐसी देखाई दुनियां, जित कोई हक को जानत नाहें ।
काहूँ तरफ न पाइए अरस की, बैठे बका बैत[2] के माहें ॥ ३५

पार ना अरस जिमीय का, बैठियां कदम तले इत ।
ऐसा पट आड़ा किया, जानूं कहूं गइया हैं कित ॥ ३६

जब याद तुमें मैं आऊंगा, तबहीं बैठोगे जाग ।
गए आए कहूं नहीं, सब रूहें बैठीं अंग लाग ॥ ३७

मैं लाड़ किया रूहन सों, वास्ते इसक इन ।
क्यों न लें मेरा इसक, अंग असल मेरे तन ॥ ३८

बोहोत लाड़ किए मुझसों, इनों अरस में मिल ।
एक लाड़ किया मैं इनों से, प्यार देखन सब दिल ॥ ३९

---

१. आशय, अभिप्राय । २. घर ।

मैं फुरमान भेज्या है अव्वल, हाथ अमीन रसूल ।
इमाम भेज्या रूहों वास्ते, जिन जावें ए भूल ॥ ४०
याद दीजो अरवाहों को, जो मैं करी खिलवत[१] ।
सोए लिखी फुरमान में, रमूजें इसारत ॥ ४१
अव्वल बातें जो अरस की, जाए कहियो तुम ।
फुरमान पेहेले भेजिया, लिखी हकीकत हम ॥ ४२
बातें बका में जो हुई, जब उनों होसी रोसन ।
तब तुरत ईमान ल्यावसी, जो मेरे हैं मोमिन ॥ ४३
इलम मेरा उनों मे, जाए करो जाहेर ।
मैं सेहेरग से नजीक, नहीं बका थें बाहेर ॥ ४४
तुम बैठे मेरे कदम तले, कहूं गईयां नाहीं दूर ।
ए याद करो इन इसक को, जो अपन करी मजकूर[२] ॥ ४५
इत जो करी मजकूर, अजूं सोई है साएत ।
चार घड़ी दिन पीछला, तुम जानो हुई मुदत ॥ ४६
जो रबद किया इत बैठ के, अजूं बैठे हो ठौर इन ।
रात दिन ना पल घड़ी, सोई बात सोई छिन ॥ ४७
याही अजमाइस[३] वास्ते, खेल देखाया ए ।
जब इलम मेरे बेसक हुई, तब दौड़सी इसक ले ॥ ४८
नाम मेरा सुनते, और सुनते अपना वतन ।
सुनत मिलावा रूहों का, याद आवे असल तन ॥ ४९
सक मिटी जिनों हक की, और मिटी हादी की सक ।
बेसक हुइयां आप वतन, ताए क्यों न आवे इसक ॥ ५०
सांच झूठ में मिल गइयां, तुरत होसी तफावत[४] ।
करसी पल में बेसक, ऐसा इलम[५] मेरी न्यामत ॥ ५१

१. एक आत्म चर्चा । २. वार्ता । ३. परीक्षा । ४. अन्तर । ५. तारतम ज्ञान ।

अजमावने अरवाहों को, हकें दिया वास्ते इन ।
अव्वल फरामोसी देअ के, इलमें खोले दीदे[1] बातन ॥ ५२

बातून खुले ऐसा हुआ, सेहेरग से नजीक हक ।
तुम बैठे बीच अरस के, कदम तले बेसक ॥ ५३

चौदे तबकों न पाइए, हक बका ठौर सरफ ।
सो कदम तले बैठावत, ऐसा इलम का सरफ[2] ॥ ५४

इलम हक के बेसकी, बेसक आवे सहूर ।
बेसक पेहेचान हक की, वरस्या बेसक बका नूर ॥ ५५

बेसक असल सुख की, आवे बेसक रूहों इलम ।
जरे जरे की बेसकी, जो बीच नजर खसम ॥ ५६

बेसक देखी फरामोसी, बेसक गिरो मोमिन ।
बेसक फुरमान रमूजें[3], पाई बेसक बका वतन ॥ ५७

बेसक ठौर कादर, पाई बेसक कुदरत ।
बेसक खेल जो मांगया, बेसक बातें उम्मत ॥ ५८

बेसक हकें देखाइया, बेसक करी मजकूर ।
बेसक रद—बदल[4] करी, हुआ बेसक इलम जहूर ॥ ५९

बेसक जगाई फरामोस से, बेसक दे इलम ।
होसी रूहें बका की बेसक, ले बेसक इलम खसम ॥ ६०

भुलाइयां खेल में बेसक, हुआ बेसक बेवरा ए ।
क्यों ना ले इसक बेसक, कहाए बेसक संदेसे ॥ ६१

रूहों को हकें बेसक, भेज्या पैगाम[5] बेसक ।
इसक बेसक ले आइयो, भेजी बेसक रूह बुजरक ॥ ६२

इसक रूहों कम बेसक, हादी ज्यादा इसक बेसक ।
सब थें इसक बढ़या, बेसक इसक जो हक ॥ ६३

---

१. आंखें । २. उपयोगिता । ३. भेद । ४. वाद विवाद । ५. संदेश ।

महामत कहें बेसक मोमिनों, बेसक बेवरा कमाल ।
फरामोसी में हक का, पाईए बेसक इसक हाल ।। ६४

।। प्रकरण ।। १३ ।। चौपाई ।। ७६९ ।।

## सूरत अरस अजीम की बातूनी रोसनी

रूह अल्ला सुभाने भेजिया, रूहें अरस अपनी जान ।।
पीउ प्यारे भेजी रूह अपनी, तुम क्यों ना करो पेहेचान ।। १
अरवाहें जो अरस की, सो उरझियां माहें फरेब ।
सो सुरझाइयां पट खोल के, केहे हकीकत *वेद *कतेब ।। २
मजकूर बका बीच में, किया हक हादी रूहन ।
दई फरामोसी हांसीय को, बीच अपने अरस मोमिन ।। ३
ऐसी तुमें देखाऊं दुनियां, और पनाह[1] में राखों छिपाए ।
ओ तुमें ना चीन्हहीं, ना तुमें ओ चिन्हाए ।। ४
मैं छिपोंगा तुमसों, तुमें नजर में ले ।
पाओ ना अरस या मुझे, काहूं तरफ न पाओ ए ।। ५
ढूंढ़ोगे तुम मुझको, बोहोतक सहूर कर ।
मेरा ठौर न पाओ या मुझे, क्योंए ना खुले नजर ।। ६
आंखां होसी खुलियां, बातां करोगे माहों माहें ।
ढूंढ़ो माहें बाहेर, पर पावे ना कोई क्यांहें ।। ७
क्या कहूं भेजोगे हमको, के इतथें करोगे दूर ।
के इतहीं बैठे देखाओगे, हमको अपने हजूर[2] ।। ८
इतहीं बैठे देखोगे, खेल हांसी का फरामोस ।
सहूर[3] करोगे बोहोतक, पर आए न सको माहें होस ।। ९
ज्यों जाने बेसुध हुए, जैसे अमल चढ़्या जोर ।
सो तुम क्योंए ना सुनोगे, हादी करे बोहोतक सोर ।। १०

---

१. शरण । २. सामने । ३. समझ ।

ना तुमें अमल ना नींद कछू, पर ऐसा खेल हांसी का ए ।
खेलें हंसें बातें करें, याद आवे ना हक घर जे ॥ ११

ऐसा इलम हादी पे, देखावे हक वतन ।
आप पाओ पलमें जगावही, इन इलम आधे सुकन ॥ १२

जो हुए होवें मुरदे, तिनको देत उठाए ।
इन बिध इलम—लुदंनी[1], पर तुमें न सके जगाए ॥ १३

ऐसी देखोगे दुनियां, हक न काहूं खबर ।
ना सुध अरस न आपकी, कई ढूंढ़त सहूर कर ॥ १४

ना सुध मेरी ना वतन की, आपुस में जाओगे भूल ।
ना सुध मेरे कागद[2] की, ना सुध मेरे रसूल ॥ १५

लिखी इसारतें रमूजें, निसान हकीकत ।
सुध कछू तुमें न परे, भूलोगे मेरी न्यामत ॥ १६

ऐसा फुरमान भेजसी, और याद देसी रसूल ।
जिन अंग इसक तिनका, क्यों होसी ऐसा सूल ॥ १७

भूलोगे तेहेकीक तुम, मेरी पाओ ना तुम खबर ।
ए खेल देखें ऐसा होएसी, ना सुध आप ना घर ॥ १८

एक दूजी आपुसमें, रहे ना रूह चिन्हार ।
ना चीन्हो बड़ी रूह को, ना कछू परवरदिगार ॥ १९

रूहें कहें हांसी होसी अति बड़ी, तुम हूजो सब हुसियार ।
क्योंए न भूलें आपन[3], जो खेल जोर करे अपार ॥ २०

आपन सामी हांसी करें हकसों, चले ना खेल का बल ।
आपन आगूं चेतन हुईयाँ, रहिए एक दूजी हिल मिल ॥ २१

जब आगूं से खबर करी, क्या करे फरेब असत ।
इसक हमारा कहां जाएसी, क्या करसी नहीं मदत ॥ २२

---

१. तारतम वाणी । २. पत्र (कुरान) । ३. हम ।

इसक का बल भान के, क्या फरेब होसी जोर ।
निसबत अपनी हकसों, क्यों देसी मरोर ॥ २३

दूर तो कहूं जाएं नहीं, बैठें पकड़ हक चरन ।
तो फरामोसी बल क्या करे, आपन आगूं हुइयां चेतन ॥ २४

कहें रूहें एक दूजी को, नजीक बैठो आए ।
जिन कोई जुदी परे, रहिए अंग लपटाए ॥ २५

हाथों हाथ न छोड़िए, लग रहिए अंगों अंग ।
इन बिध एक दिल राखिए, कोई छोड़े ना काहू को संग ॥ २६

हम हमेसा एक दिल, जुदियां होवें क्यों कर ।
हक खेल देखावहीं, कर आगे से खबर ॥ २७

अंग जुदे ना होए सके, तो क्यों होए जुदे दिल ।
एक जरा जुदे ना होए सके, अंग यों रहें हिल मिल ॥ २८

रूहें कहें एक दूजी को, जिन अंग जुदा करो कोए ।
इन बिध रहो लपटाए के, सब एक वजूद ज्यों होए ॥ २९

रूहें रबद कर बैठियां, जानें सामी हांसी करें हकसों ।
पर हकें हांसी ऐसी करी, सुध जरा न रही किनमों ॥ ३०

एक वजूद[1] हो बैठियां, खेलें ऐसी दई भुलाए ।
कौल फैल हाल सब जुदे, दिल ऐसे दिए फिराए ॥ ३१

जात भांत जिनसें जुदी, जुदी जुदी जिमी पैदाए ।
सब बैठियां अंग लगाए के, खेलें कहूँ ऐसे दइयां उलटाए ॥ ३२

जुदे जुदे कबीलों, कर बैठियां अपना घर ।
जानें इत हम कदीम के, जुदे होवें क्यों कर ॥ ३३

सो भी कबीले[2] स्वारथी, दुख आए न कोई अपना ।
जात वजूद भी रंग बदले, ज्यों फना होत सुपना ॥ ३४

१. शरीर । २. परिवार ।

रूहें सुध ना एक दूजी की, ना मिनों मिने पेहेचान ।
याद बिना जात मुद्दत, काहूं सुपने न आवे सुभान ॥ ३५
खेल तो है एक छिन का, रूहें जानें हुई मुद्दत ।
कई कुरसी हुई कई होएसी, गइयां भूल मूल सोहोबत ॥ ३६
आइयां झूठे कबीले में, भूल गइयां बका वतन ।
सुख अरस अजीम के, हाए हाए फरेब दिया दुनी इन ॥ ३७
तिन कबीलेमें रहना, पूजें पानी आग पत्थर ।
बेसहूर इन भांत के, जान बूझ जलें काफर ॥ ३८
बड़के फना हो गए, और हाल होत फना ।
आखर फना सब पीछले, जांए गिनते रात दिना ॥ ३९
कहें हमको इन वतनमें, मौत आवेगी अब ।
नफा नुकसानी हो चुकी, फेर जनम लेवें कब ॥ ४०
ऐसा मौत अपना जान के, लेत हैं नुकसान ।
जाग के नफा न लेवहीं, सुन ऐसा हक फुरमान ॥ ४१
उमर खोवें नुकसानमें, पर करें नाहीं सहूर ।
याद करें तिनको, जिनका एता बड़ा जहूर ॥ ४२
कहें हिन्दू पीछे मौत के, हम जनम लेसी फेर ।
जो हम अब भूलेंगे, तो नफा लेसी और बेर ॥ ४३
खेल ऐसा फरेब का, सब हवा को पूजत ।
सुध दोऊ को ना परी, काएम बका सुख कित ॥ ४४
ए तेहेकीक किने ना किया, कहावें सब बुजरक ।
जेती बात ल्यावें इलम की, तिन सबों में सक ॥ ४५
ए दुनियां इन बिध की, ताएएती सुध सबन ।
हम सब बीच फना मिने, ठौर बका न पाया किन ॥ ४६
एता न जाने दुनियां, कहां से आए कौन हम ।
आए कौन फरेब में, ए हुआ किन के हुकम ॥ ४७

सब कोई कहे हुकमें हुआ, जिन हुकम किया सो कित ।
सो किनहूं न पाइया, ताए खलक गई खोजत ॥ ४८

अवतार तिर्थंकर बड़े हुए, बड़े कहावें पैगम्बर ।
पट बका किन खोल्या नहीं, सबों कह्या खुले आखर ॥ ४९

सब पूजें खाहिस अपनी, याही फना की वस्त ।
मिट्टी आग पानी पत्थर, करें याही की सिफत ॥ ५०

झूठे झूठा राचहीं, दिल सांच न पावत ।
ए सांच क्यों कर पावहीं, पेहेलें दिल में न आवत ॥ ५१

*नासूत और *मलकूत लग, इनकी याही बीच नजर ।
देख किताबें यों कहें, हम पाई नहीं खबर ॥ ५२

इन बिध बोलें किताबें, देखो दिल के दीदों माहें ।
कानों सुन्या सो कछुए नहीं, ए देख्या सो भी नाहें ॥ ५३

जान बूझ पूजें फना को, कहें एही हमारा खुदाए ।
हम छोड़ें ना कदीम का, जो बड़कों पूज्या इप्तदाए ॥ ५४

इसक लगावें तिनसों, जो दुख रूपी दिन रात ।
काएम सुख अरस का, कहूँ सुपने न पाइए बात ॥ ५५

ऐसी देखाई दुनियां, जानें सांच है हमेसगी ।
सांचो बिचार जब कर दिया, तब झूठों भी झूठ लगी ॥ ५६

हुई रात अंधेर फरेब की, फिरत चिरागें[1] दोए ।
आप अरस हक की, इन से खबर न होए ॥ ५७

दुनियां इन चिराग को, रोसन कर बूझत[2] ।
आप वतन हक बका की, इनसे कछू ना सूझत ॥ ५८

ढूंढ़ थके अरस को, चौदे तबक न पाया किन ।
रात फना को छोड़ के, किन देख्या न सूर रोसन ॥ ५९

---

१. वेद कतेब, (दीपक) । २. समझत ।

चौदे तबक जुलमत से, पेहेले कही जो रात ।
दिन काएम सूर अरस की, इत काहूं न पाइए बात ॥ ६०

सूर ऊग्या तब जानिए, ए रोसन हुआ अरस हक ।
दुनियां सब के अंग में, काहूं जरा न रही सक ॥ ६१

अरस बका जाहेर हुआ, तब हुई फजर ।
अरस देखाया इलमें, खुली बातून सबों नजर ॥ ६२

हकीकत कुरान में, ए लिखी नीके कर ।
सबको करसी काएम, जाहेर हुए काएम खबर ॥ ६३

जो होसी रूहें अरस की, तिन आवे ईमान अव्वल ।
आखर तो सब ल्यावसी, दोजख की आग जल ॥ ६४

सो ताला इन मुसाफ का, क्यों खुले ईमाम बिन ।
खोलें ताला फरेब क्यों रहे, जब ऊग्या बका अरस दिन ॥ ६५

जोलों ताला खुले नहीं, द्वार अथरबन कतेब ।
पाई ना तरफ हक बका, ना कछू खेल फरेब ॥ ६६

ए हकीकत जिनकी, अपनी खोले सोए ।
सो खोलें हक जाहेर हुआ, तब क्यों कर रेहेवे दोए ॥ ६७

फरेब कछुए ना रह्या, रोसन उम्मत करी जब ।
हक अरस जाहेर हुआ, तब काएम दुनी हुई सब ॥ ६८

लिख्या दिन बका मुसाफमें, खोले बातून होसी फजर ।
लिए हकीकत हैयाती, बका सुख पावें आखर ॥ ६९

कुंजी भेजी हाथ रूहअल्ला, पर खोल न सके ए ।
फुरमान खुले आखर, हाथ सूरत हक्की जे ॥ ७०

सहूर दिया साहेब ने, फुरमान भेज्या हाथ रसूल ।
पावे न हकीकत मुसाफ की, ए खोलिए किन सूल ॥ ७१

रसूल कहे फुरमानमें, मेरी तीनों एक सूरत ।
सो पोहोंची नजीक हक के, और कोई न पोहोंच्या तित ॥ ७२

बसरी मलकी हकी, माहें फैल तीनों के ।
सो खोले फुरमान को, आखर सूरत हकी जे ॥ ७३

और चाहे कोई खोलने, क्यों कर खोले सोए ।
सो कौल खोले हक हुकमें, फैल हाल जिनों के होए ॥ ७४

हुआ दीदार सब मेराजमें, जो हरफ कहे हकें मुझ ।
जो छिपे रखे मैं हुकमें, सो कौन जाहेर करे मेरा गुझ ॥ ७५

जो हुकम हुआ जाहेर का, सो जाहेर किए मैं तब ।
बाकी रखे जो हुकमें, सो हुकमें जाहेर करों अब ॥ ७६

ए बातें सब मेराज की, करे जाहेर तीन सूरत ।
और कोई ना कहे सके, ए अरस हक न्यामत ॥ ७७

और तीनों सूरत, रूहें फिरस्ते उम्मत ।
जो आखर इनों में गुजरी, मुसाफ[1] में सोई हकीकत ॥ ७८

सो खोले आपे अपनी, हकीकत फुरमान ।
खोले परदे नूर पार के, हुई अरस पेहेचान ॥ ७९

सक जरा किन ना रही, जब खोले ताले[2] ए ।
हुआ सूर बका हक जाहेर, लिख्या मुसाफमें जे ॥ ८०

ए इलम आए पीछे, नींद आवत क्यों कर ।
जब सक जरा ना रही, रूहों क्यों न आवे याद घर ॥ ८१

याद करो बीच अरस के, जो हकसों किया मजकूर ।
मांग्या खेल फरामोस का, बैठ के हक हजूर ॥ ८२

तुम बका सुख छोड़ के, खेल मांग्या हाँसी को ।
सो देखो हकीकत अपनी, हकें भेजी फुरमानमों ॥ ८३

खेल देखाया तुमको, वास्ते तफावत[3] ।
इत याद देत सुख पावने, हक बका निसवत ॥ ८४

---
१. धर्म ग्रन्थ (कुरान) । २. गूढ़ भेद । ३. अन्तर ।

इन झूठी जिमी में बैठाए के, देखाई हक बका निसवत ।
मेहेर करी रूहों पर, देने अरस लज्जत ॥ ८५

इन ख्वाब जिमी में बैठके, अरस सुख लीजे इत ।
हक याद देत तिन वास्ते, सब बका न्यामत ॥ ८६

कैसा इलम था तुम पे, पूजते थे किन को ।
कैसे झूठे कबीलेमें थे, अब आए किनमों ॥ ८७

कौन किया था वतन, जामें कबू मिटी न सक ।
कौन फना सोहोबतमें, कहावते थे बुजरक ॥ ८८

अब कैसा पाया हक इलम, कैसे हुए बेसक ।
कैसा पाया बका वतन, कैसा पाया धनी हक ॥ ८९

कैसा पाया रूहों कबीला, कैसी पाई हक निसवत ।
कैसे दुख से निकस के, पाई सांची न्यामत ॥ ९०

कैसे फना में हुते, आए कैसे बका वतन ।
आए कैसे सुख में, छूटी कैसी जलन ॥ ९१

कैसे झूठे घर हुते, पाई कैसी अरस मोहोलात ।
जागत हो के नींद में, कछू बिचारत हो ए बात ॥ ९२

कौन जंगल गुमराहमें हुते, कैसा पाया अरस बाग ।
नीद उड़ाओ विचार के, क्यों ना देखो उठ जाग ॥ ९३

चरकीन[1] जिमीमें बैठ के, कैसी लेते थे बाए ।
अब बाए झरोखे अरस के, कैसी लेत हो अब आए ॥ ९४

कौन बदबोए[2] में हुते, अब आई कौन खुसबोए ।
सहूर अपने दिल में, तौल देखो ए दोए ॥ ९५

ए कैसा था दुख वजूद, दुख में थे रात दिन ।
अब पाया सुख अरस ठौर में, और कैसे असल तुमारे तन ॥ ९६

१. त्याज्य । २. दुर्गन्धि ।

कैसे सुख पाए काएम तन के, किनसों हुआ मिलाप ।
अब देखो साहेब अरस का, पूछो रूह अपनी आप ।। ९७

कहां रात दिन गुजरानते, अब पाया अरस रात दिन ।
देखो दिल बिचार के, कछू फरक है उन इन ।। ९८

कैसी झूठी निसबत में, करते थे गुजरान ।
अब निसबत भई अरस की, लेत संग सुभान ।। ९९

पेहेनावा फना मिने, और पेहेनावा अरस का ।
कछू पाई है तफावत, तुम देखो दिल अपना ।।१००

अब जिमी फना के, और जिमी बका पटंतर[1] ।
पसू पंखी देखो फना के, देखो अरस जानवर ।।१०१

देखो ताल नदी झूठी जिमी, और देखो अरस होज जोए ।
करो याद सुख देचो रूह को, दिल देख तफावत दोए ।।१०२

दिल मजाजी[2] और हकीकी[3], कहे कुरान में दोए ।
ए लेसी तफावत देख के, जो रूह अरस की होए ।।१०३

दिल मजाजी दुनी का, इत अबलीस पातसाह ।
सो औरों दुसमन और आपका, मारत सब की राह ।।१०४

और दिल हकीकी मोमिन, सो कह्या है अरस हक ।
तरफ नहीं दिल पाक की, जित साहेब की बैठक ।।१०५

इसक मोमिन और दुनी का, कछू देखत हो फरक ।
अब इसक ल्यो दिल अपने, तुम दिल अरस बुजरक ।।१०६

महामत कहें ऐ मोमिनों, जो दिए थे दिल भुलाए ।
फरामोस से बीच होस के, अब साहेब लेत बुलाए ।।१०७

।। प्रकरण ।। १४ ।। चौपाई ।। ८७६ ।।

---

१. अन्तर । २. असत्य । ३. सत्य ।

आसिक मेरा नाम, रूह अल्ला आसिक मेरा नाम ।
इसक मेरा रूहनसों, मेरा उम्मतमें आराम ॥ १

इस्क ले चलो अरस का, खोल देयो हकीकत ।
भूल गइयां आप अरस को, याद देओ निसबत ॥ २

इसारतें रमूजें इत की, लिखी माहें फुरमान ।
सो भेज्या हाथ रसूल के, मिलाय देओ निसान ॥ ३

और भेजत हों तुमको, कहियो मूल संदेसे ।
इलम ऐसा दिया तुमको, जासों उठें मुरदे ॥ ४

रेहे ना सकों में रूहों बिना, रूहें रेहे ना सकें मुझ बिन ।
जब पेहेचान होवे वाको, तब सहें ना विछोहा खिन ॥ ५

जब इलम मेरा पोहोंचिया, तब ए होसी बेसक ।
तब साएत ना रेहे सकें, ऐसा इनों का इसक ॥ ६

ए बात में पेहेले कही, रूहें होसी फरामोस ।
मेरे इलम बिना तुम कबहूँ, आए न सको माहें होस ॥ ७

फरामोसी हम को क्या करे, फेर कह्या रूहन ।
हम अरवाहें अरस अजीम की, असल बकामें तन ॥ ८

फुरमान तुमारा आवही, सो हम पढ़ कर ।
देख इसारतें रमूजें, हम भूल जाएं क्यों कर ॥ ९

और देवें साहेदी रसूल, दे याद बातें असल ।
तब क्यों रेहेवे फरामोसी, कहां जाए मूल अकल ॥ १०

सुन सुख बातें अरस की, क्यों ना होवें हुसियार ।
जो मोमिन होवे अरस की, माहें रूहें बारे हजार ॥ ११

सो तो तब हीं सुन के, होसी खबरदार ।
मोमिन इत क्यों भूलहीं, सुन संदेसे परवरदिगार ॥ १२

आगूं से चेतन करी, एती करी मजकूर ।
रूहें सुन ए सुकन, क्यों याद न आवे जहूर ॥ १३

ए फुरमान पढ़े पीछे, पाई जब हकीकत ।
तब फरामोसी क्यों कर रहे, क्यों भूलें ए निसबत ॥ १४

हा हा ऐसी हमसे क्यों होए, कैसे हम मोमिन ।
सुन संदेसे क्यों भूलहीं, हक आप वतन ॥ १५

एता हम जानत हैं, जो सौ फरेब करो तुम ।
ऐसा इसक क्यों होवही, तुमको भूलें हम ॥ १६

तुम कूदत हो अरस में, अपने इसक के बल ।
तब सुध जरा ना रहे, रहे ना एह अकल ॥ १७

सो खेल मांगत हो, वास्ते इसक देखन ।
ए खेल है इन भांत का, उत इसक न जरा जिन ॥ १८

ना इसक ना अकल, ना सुध आप वतन ।
ना सुध रेहेसी हक की, ए भूलोगे मूल तन ॥ १९

कई चालें बोली जुदियां, माहें मजहब[1] भेख अपार ।
पूजें आग पानी पत्थर, इनमें खुदा हजार ॥ २०

ख्वाहिस[2] से बनावहीं, अपने हाथ समार ।
जुदा जुदा कर पूजहीं, जिनको नाहीं पार ॥ २१

खेल देखाऊँ इन भांत का, जित झूठैमें आराम ।
झूठे झूठा पूजहीं, हक का न जानें नाम ॥ २२

एक पैदा हुए एक होत हैं, एक होने की उमेद ।
एक गए जात जाएंगे, इन बिध का छल भेद ॥ २३

देखोगे आसमान जिमी, माहें मुरदों का बास ।
देत देखाई मर जात हैं, कर गिनती अपने स्वास ॥ २४

मौत सबों के सिर पर, मान लिया सबन ।
चौदे तबक के खेलमें, ठौर बका न पाया किन ॥ २५

---

१. सम्प्रदाय । २. इच्छा ।

खेलत सब फनामें, बोलें चालें सब फना ।
सब जानत आपे आपको, हम उड़सी ज्यों सुपना ॥ २६

तब रूहों मुझ आगूं कह्या, ऐसा इसक हमारा जोर ।
फरामोसी क्या करे हम को, इसक देवे सब तोर ॥ २७

ए मजकूर भई रूहनसों, मुझसों किया रब्द ।
और कछुए न ल्यावें दिलमें, आप इसक के मद[1] ॥ २८

बातें बोहोत करी रूहनसों, मेरा कह्या न ल्याइयां दिल ।
सुन्या न आगूं इसक के, बहस किया सबों मिल ॥ २९

मैं कह्या इसक मेरा बड़ा, हादी रूहों आप माफक ।
एह बात जब मैं करी, तब तुम उपजो सक ॥ ३०

कहे हादी इसक मेरा बड़ा, कहे रूहें बड़ा हम प्यार ।
ए बेवरा बीच अरस के, होए नहीं निरवार[2] ॥ ३१

क्यों होए तफावत इसक, बैठे बीच बकामें हम ।
एक जरा न होए जुदागी, तो क्यों पाइए ज्यादा कम ॥ ३२

पेहेलें कह्या मैं तुम को, भूलोगे खेल देख ।
जहां झूठे झूठा खेलहीं, उत मुझे न पाओ एक ॥ ३३

ए हकें अव्वल कह्या, भूल जाओगे तुम ।
ना मानोगे फुरमान को, ना कछू रसूल हुकम ॥ ३४

ना मानोगे संदेसे, ना मुझे करोगे याद ।
झूठा कबीला करोगे, लगसी झूठा स्वाद ॥ ३५

जान बूझ के पूजोगे, पानी पत्थर आग ।
सब केहेसी ए झूठ हैं, तो भी रहोगे तिन लाग ॥ ३६

पूजोगे सब फना को, कोई ऐसा खेल बेसुध ।
ना तो क्यों पूजो मिट्टी गोबर, पर क्या करो बिना बुध ॥ ३७

---

१. अहंकार । २. फैसला ।

सुकन मेरा मानों नहीं, सबे भरी इसक के जोस ।
सबे बोलें नाचें कूदहीं, हमें कहा करे फरामोस ॥ ३८

हार दिया तब मैं इनों को, रबद न किया हम ।
जाए फंदियां झूठ में, नेक देखाया तिलसम[१] ॥ ३९

इसक ज्यादा आप अपना, सबों किया रबद ।
फरामोसी तिलसम देखाया, तिन किया सब रद ॥ ४०

अब सो क्योंए आप को, काढ़ न सकें तिलसम ।
फुरमान ले पोहोंच्या रसूल, तो भी न आवे सरम ॥ ४१

फुरमान लिख्या इन बिध का, जो पढ़ देखें ए ।
एक जरा सक ना रहे, तबहीं जागें हिरदे ॥ ४२

ऐसा रसूल भेजिया, और भेज्या फुरमान ।
और संदेसे रूहअल्ला, तो भी हुई नहीं पेहेचान ॥ ४३

बड़ा इसक सबों अपना, कह्या रूहों रबद कर ।
तिलसम तो देखाया, पावने पटंतर, ॥ ४४

रूहअल्ला भेद तिलसम का, रूहों देवे बताए ।
तबहीं रूहों के दिल से, फरामोसी उड़ जाए ॥ ४५

रूहें सुनो तुम संदेसे, मैं ल्याया तुम पर ।
जो रबद किया माहें बका, सो ल्याओ दिल भीतर ॥ ४६

मुझे भेज्या हक ने, याद दीजो मेरा सुख ।
तब इनों तिलसम का, उड़ जासी सब दुख ॥ ४७

बीच बका के बैठ के, हकें कह्या यों कर ।
रूहअल्ला कहियो रूहन से, भूल गइयां हक घर ॥ ४८

हाथ रसूल के भेजिया, तुम ऊपर फुरमान ।
हकीकत मारफत की, तुम क्यों न करो पेहेचान ॥ ४९

---

१. इन्द्रजाल (जादू) ।

रबद किया था अव्वल, सो क्यों गैयां तुम भूल ।
अजूं याद दिए न आवही, सुन एती पुकार रसूल ॥ ५०

और संदेसे रुहअल्ला, सुने जो अलेखे ।
तो भी आंखें खुली नहीं, आए बका से हक के ॥ ५१

ऐसा इलम हकें भेजिया, आंखें खोल दई बातन ।
एक जरा सक ना रही, देखे बका बतन ॥ ५२

बेसक जान्या आपे अपना, बेसक जान्या हक ।
बेसक जान्या हादीय को, उम्मत हुई बेसक ॥ ५३

ए याद नीके दीजियो, तुम देखो सहूर कर ।
मेरे इलम से रूहों को, देवे साहेदी अंतर ॥ ५४

बेसक इलम पोहोंचिया, के नाहीं पोहोंच्या तुम ।
ए देखो दिल विचार के, तो न्यारा नहीं खसम ॥ ५५

इलम पोहोंच्या होए तुमकों, हमारा बेसक ।
तो संदेसे तुमारे इत के, क्यों ना पोहोंचे बकामें हक ॥ ५६

किन ठौर छिपाए तुम को, बोलत हो कहां से ।
कौन तरफ हो अरस के, ए सहूर करो दिलमें ॥ ५७

देखो दिल से दसों दिस, किन तरफ हैं हक ।
ए विचार देखो इलम को, तो जरा ना रहे सक ॥ ५८

कौन तरफ वजूद है, कौन तरफ है कौल ।
हाल कौन तरफ का, कौन तरफ है फैल ॥ ५९

ए सब एक तरफ हैं, के जुदे जुदे दौड़त ।
देखो सहूर करके, है कौन तरफ निसबत ॥ ६०

जब एक ठौर पांचों भए, तब तुम्हारा इत का ।
सत संदेसा हक को, क्यों न पोहोंचे माहें बका ॥ ६१

इलम दिया तुमें खुदाई, तब बदले कौल चाल ।
फैल होवे वाहेदत्त का, तब बेर न लगे हाल ॥ ६२

गुजरी अरस बका मिने, मजकूर जो मुतलक ।
सो इलम हकें ऐसा दिया, जिनमें जरा न सक ॥ ६३

एही तुमारी भूल है, तुमें बंधन याही बात ।
एही फरामोसी तुम को, जो भूल गए हक जात ॥ ६४

कौल फैल जुदे हुए, हुआ फरामोसी हाल ।
अब पड़े याही सकमें, इन जुदागी के ख्याल ॥ ६५

सोए इलम जब हक का, देत अरस की याद ।
तुमें बेसक गुजरे हाल की, क्यों न आवे काएम स्वाद ॥ ६६

फरामोसी कुलफ की, कुंजी इलम बेसक ।
करो सहूर तुम रूहसों, जो बकसीस है हक ॥ ६७

ए ऐसा इलम है लुदंनी, जो देत बका की बुझ ।
बेसकी सब देत है, और हक के दिल का गुझ ॥ ६८

ऐसी कुंजी हकें दई, जो सहूरें कुलफ लगाए ।
तो फरामोसी क्यों रहे, पर हाथ हुकम जगाए ॥ ६९

बैठे आगूं हक के, किया था मजकूर ।
इंतहाए[1] नहीं अरस जिमी का, तुम कहूं नजीक हो के दूर ॥ ७०

बाहेर तो ना जाए सको, छेह[2] न आवे जिमी इन ।
एक जरा जुदा न होए सके, तुमें ठौर न बका बिन ॥ ७१

हक संदेसे लेत हो, कौन तरफ तुमसों हक ।
आया इलम खुदाई तुम पे, तिनमें जरा न सक ॥ ७२

तुमें अरस देखाया दिलमें, जो खोलो ले कुंजी सहूर ।
कुलफ फरामोसी न रहे, अरस दिल हक हजूर ॥ ७३

बिना विचारें रहत है, तुम पे हक इलम ।
ए सहूर रूहें पोहोंचही, तबही उड़े तिलसम ॥ ७४

---

१. सीमा । २. किनारा ।

तीन उम्मत कही खेलमें, एक रूहें और फिरस्ते ।
तीसरी खलक आम जो, ए सब लरें सरियत जे ॥ ७५

कुंन से और नूर से, ए दोऊ पैंदास ।
रूहें उतरीं अरस अजीम से, कही असल खासल खास ॥ ७६

ए इलम इलाही देत हों, तो भी छूटत नहीं तिलसम ।
हकें पेहेलें कह्या भूलोगे, न मानोगे हुकम ॥ ७७

सोई बातें अब मिलीं, भूल गैयां घर तुम ।
भूली आप और हक को, भूलियां अकल इलम ॥ ७८

फुरमान रसूल ले आइया, रूहअल्ला संदेसे ।
असल इलम दे दे थके, अजूं न आवे अकलमें ए ॥ ७९

कही बड़ी मेहेर रसूलें, जो हुई माहें रात मेराज ।
फजर होसी जाहेर, सो रोज क्यामत है आज ॥ ८०

तो मजकूर मेराज का, ए जो किया जाहेर मेहेरबान ।
मोमिन देखो हक सहूर से, खोली मारफत—फजर[1] सुभान ॥ ८१

महामत कहें ऐ मोमिनों, अजूं फरामोसी न जात ।
बेसक देखो दिन बका, माहें मेराज[2] की रात ॥ ८२

॥ प्रकरण ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ ९५८ ॥

मेहेर हुई *महम्मद पर, खोले नूर तजल्ला द्वार ।
सब मेराजमें लेअ के, दिया हकें दीदार ॥ १

बीच बका के पोहोंचिया, जित जले जबराईल पर ।
तित नब्बे हजार हरफ सुने, फिरे जो मजकूर कर ॥ २

हुकम हुआ इमाम को, खोल दे द्वार रूहन ।
आवें सब मेराजमें, दिल देखें अरस मोमिन ॥ ३

खिलवत सब मेराजमें, जो रूहों करी अब्वल ।
सो खोले हक हादीय की, ज्यों देखें हकीकी दिल ॥ ४

---

१. पूर्ण ज्ञान का सवेरा । २. परमात्मा से साक्षात्कार ।

आखर गिरो जो रूहन, सब *मेराज में आराम ।
याको दई इमारतें हुकमें, वाहेदत्त की अरस ताम[1] ॥ ५

खिलवत हक हादी रूहन की, कबू न जाहेर किन ।
सो रूहअल्ला ने रूहसों, तिन कही आगे मोमिन ॥ ६

एक समे हक हादी रूहें, मिल किया मजकूर ।
रब्द[2] किया इस्क का, सबों आप अपना जहूर ॥ ७

रूहें कहें सब मिल के, हक के आसिक हम ।
इसक पूरा है हममें, ए नीके जानों तुम ॥ ८

और आसिक बड़ी रूह के, इनमें नाहीं सक ।
इसक हमारे रूहन के, जानत हैं सब हक ॥ ९

बड़ी रूह कहे मुझ पें, हक का पूरा इस्क ।
रूहें प्यारी मेरी रूह की, इनमें नाहीं सक ॥ १०

तब हकें कह्या सबन को, मैं तुमारा आसिक ।
और आसिक बड़ी रूह का, कौन मेरे माफक ॥ ११

खबर मेरे इसक की, तुम जानी नाहीं किन ।
इसक बड़े सबों अपने, तो कहे रूहन ॥ १२

और पातसाही मेरे अरस की, तुमको नहीं खबर ।
इसक सबों को अपने, तो बड़े आए नजर ॥ १३

बुजरक इसक अपना, तोलों देख्या तुम ।
कादर की कुदरत की, तुमको नाहीं गम ॥ १४

साहेबी अरस अजीम की, तुमें नजर आवे तब ।
नूर तजल्ला नूर थें, जुदे होए देखो जब ॥ १५

खबर तुमारे इसक की, तो होवे जाहेर ।
सब मिल जाओ इत थें, बका से बाहेर ॥ १६

---

१. आहार । २. विवाद ।

एक पातसाही अरस की, और वाहेदत का इसक ।
सो देखलावने रूहन को, पेहेले दिलमें लिया हक ॥ १७

कहूँ बिध वाहेदत की, बात करनी हकें जे ।
सो अपने दिल पेहेले लेअ के, पीछे आवे दिल वाहेदत के ॥ १८

पोहोर दिन से चार घड़ी लग, बरस्या हक का नूर ।
इसक तरंग सबों अपने, रोसन किए जहूर ॥ १६

अपने अपने इसक का, सबों देखाया भार ।
तोलों किया रबद, दिन पीछला घड़ी चार ॥ २०

एह बातें असल की, करते इसकसों प्यार ।
हँसते खेलते बोलते, एही चलत बारम्बार ॥ २१

अपना अपना इसक, बड़ा जानत सब कोए ।
बीच बका के बेवरा, इसक का न होए ॥ २२

इसक का हक हादी रूहें, रबद किया माहों माहें ।
सो हक के बीच अरस में, घट बढ़ होवे नाहें ॥ २३

जित जुदागी जरा नहीं, तित बेवरा क्यों होए ।
ताथें रूहें रबद हक का, क्योंए ना निबरे सोए ॥ २४

एक पात न गिरे अरस बन का, ना खिरे पंखी का पर ।
अपार जिमी की रूह कोई, कहूँ जाए न सके क्योंए कर ॥ २५

आगूं वाहेदत्त[1] जिमी के, कहूँ नाम न जरा एक ।
आगूं जरे वाहेदत्त के, उड़ें ब्रह्मांड अनेक ॥ २६

रूहें उन वाहेदत्त की, ताए फरेब न रहे नजर ।
सो क्यों पड़े फरेब में, देखो सहूर कर ॥ २७

मौत उत पैठे नहीं, काएम अरस सुभान ।
ठौर नहीं *अबलीस को, जरा न कबूं नुकसान ॥ २८

---

१. अद्वैत लीला ।

अरस बका वाहेदत्त में, सुध इसक न होवे इत ।
जुदे जुदे होए रहिए, इसक सुध पाइए तित ॥ २८

वाहेदत में सुध इसक की, पाइए नहीं क्योंए कर ।
घट बढ़ इत है नहीं, अरस में एकई नजर ॥ ३०

बिना जुदागी इसक की, क्यों कर पाइए खबर ।
सो तो बका में है नहीं, सब कोई बराबर ॥ ३१

कोई बात खुदाए से न होवही, ऐसे न कहियो कोए ।
पर एक बात ऐसी बका मिने, जो हक से भी न होए ॥ ३२

कौल फैल हाल बदले, पर ना छूटे रुह इसक ।
रुह इसक दोऊ बका, इनमें नाहीं सक ॥ ३३

दिल फिरे रंग फिरत है, जुसां[1] जोस बदलत ।
पर असल इस्क ना बदले, जो नेहेचल रुह न्यामत ॥ ३४

रुहों सबों इसक का, किया बड़ा मजकूर ।
इस वास्ते बेवरा इसक का, मैं देखलावना जरुर ॥ ३५

इसक बेवरा देखने, एक तुमें देखाऊं ख्याल ।
इसक तअलुक[2] रुह के, छूटे ना बदले हाल ॥ ३६

रुहें अरस अजीम की, ताए लगे ना कोई नुकमान ।
ऐसा खेल देखाऊं तुमें, जो कछू ना रहे पेहेचान ॥ ३७

ऐसा इसक तुम पें, रुह से क्योंए ना छूटत ।
पर ए खेल इन भांत का, जगाए भी न जागत ॥ ३८

मैं छिपोंगा तुमसों, तुम पाए न सको मुझ ।
न पाओ तरफ मेरीय को, ऐसा खेल देखाऊं गुझ ॥ ३९

और कहूं जाए छिपोगे, के हमको करोगे दूर ।
के इत हीं बैठे देखाओगे, धनी अपने हजूर ॥ ४०

१. शरीर । २. सम्बन्ध ।

दूर कहूं न जाऊंगा, तुम बैठो पकड़ चरन ।
खेल देखोगे इतहीं, तुम मिल सब मोमिन ॥ ४१

हम सब मिल मोमिन बैठेंगे, पकड़ तुमारे चरन ।
तब कहा करसी फरामोसी, जब बैठें होए एक तन ॥ ४२

गले बाथ सब लेय के, मिल बैठेंगे एक होए ।
तो फरामोसी कहा करे, होए न जरा जुदियां कोए ॥ ४३

जेते कोई मोमिन, बैठें तले कदम ।
तो तुमारे रसूल का, फेरें नहीं हुकम ॥ ४४

जो मुनकर[1] हुकम सों, मोमिन कहिए क्यों ताए ।
दयो फरामोसी हम को, देखो सौ बेर अजमाए ॥ ४५

सो कैसा मोमिन, अरस की अरवाए ।
हम कदमों बीच अरस के, क्यों जासी भुलाए ॥ ४६

जेती रूहें अरस की, ताए फरामोसी न जाए जीत ।
कछू पड़े बीच अपने, ए नहीं इसक की रीत ॥ ४७

कछुए न चले फरामोस का, हम आगूं हुए चेतन ।
इसक हमारे रूह के, असल है एक तन ॥ ४८

बका आड़े पट करों, तुम देख न सको कोए ।
झूठे मिलावे कबीले, तुम देखोगे सब सोए ॥ ४९

बैठियां सब मिलके, अंग सों अंग लगाए ।
उठाऊं जुदे जुदे मुलकों, नए नए वजूद बनाए ॥ ५०

पर ऐसा देखोगे तिलसम, जो सबे हुई फरामोस ।
इलम देऊं मेरा बेसक, तो भी न आओ माहें होस ॥ ५१

एह खेल ऐसा है, तुम अपना कबीला कर ।
कोई न किसी को पेहेचाने, बैठो जुदे जुदे कर घर ॥ ५२

---

१. न मानने वाला ।

तेहेकीक जानोगे झूठ है, तो भी दिल से न छूटे एह ।
ऐसी मोहोब्बत बांधोगे, झूठै सों सनेह ।। ५३
वाही जानोगे न्यामत, और वाहीसों करोगे प्यार ।
सुख दुख सारा झूठ का, वाही कुटम परिवार ।। ५४
आग पानी पूजोगे, या सूरत बनाए पत्थर ।
कहोगे हमारा हक है, सब की एह नजर ।। ५५
आसमान जिमी पाताल लग, सब झूठे झूठ मंडल ।
ऐसे झूठे खेल में, तुम जाओगे सब रल ।। ५६
हक इनों में न पाइए, ना कछू सुनिया कान ।
सांच न पाइए इनों में, ए झूठे फना निदान ।। ५७
झूठा खेल कबीले झूठे, झूठे झूठा खेलें ।
सब झूठे पूजें खाएँ पिएँ झूठे, झूठे झूठा बोलें ।। ५८
झूठा सब लगेगा मीठा, झूठा कुटम परिवार ।
सुख दुख इनमें झूठी चरचा, हुआ सब झूठै का विस्तार ।। ५९
इसक तुमारा तो सांचा, मोहे याद करो बखत इन ।
रबद किया तुम मुझसों, बीच बका वतन ।। ६०
ऐसी तो कोई ना हुई, बिना इलम होवे हुसियार ।
हांसी बिना कोई ना रही, छोड़ ना सके अंधार ।। ६१
इलम मेरा लेय के, निसंक[1] दुनी से तोड़ ।
सोई भला इसक, जो मुझ पें आवे दौड़ ।। ६२
झूठा खेल देखाइया, चौदे तबक की जहान ।
एक कंकरी होवे अरस की, तो उड़े जिमी आसमान ।। ६३
ज्यों नींद में सुपन देखिए, कई लाखों वजूद देखाए ।
आंखां खुले उड़े फरामोसी, वह तबहीं मिट जाए ।। ६४

---

१. निःसंकोच ।

फुरमान लिखूं तुमको, और भेजोंगा पैगाम ।
तुम कहोगे किन भेजिया, किनके एह कलाम[१] ॥ ६५

कहां है हमारा खसम, और वतन हमारा कित ।
चौदे तबकों में नहीं, ए किनकी किताबत ॥ ६६

आपन आए वास्ते मजकूर, अरस से उतर ।
तो ए दुनियां जो तिलसम की, सो मानें क्यों कर ॥ ६७

एह न पावें अरस को, ना कछू पावें हक ।
ना कछू समझें इलम को, ए आप नाहीं मुतलक[२] ॥ ६८

ए जो ढूंढ़त दुनियां, सो सब तिलसम के ।
ए क्यों पावें हक बका, तन असल नाहीं जे ॥ ६९

पैदा आदम हवा से, हिरस[३] हवा सैतान ।
इन बिध की ए पैदास, केहेवत कुरान पुरान ॥ ७०

रल गए वाही खेल में, कछू रही न असल बुध ।
रूह अल्ला कहे सौ बेर, तो भी आवे ना दिल सुध ॥ ७१

देखा देखी करो इनकी, बैठे तिलसम माहें ।
तुम आए बका वतन से, ए मुतलक कछुए नाहें ॥ ७२

ए तिलसम खेल फना से, खेलत फना माहें ।
आखर सब फना होवही, इत काएम जरा नाहें ॥ ७३

पट आड़ा बका वतन के, एही हुई फरामोस ।
जो याद करो हक वतन, इसक न आवे बिना होस ॥ ७४

बेसक झूठ देखाइया, सो क्यों देखें हम को ।
रूहें लेवें इलम बेसक, तब पोहोंचें बका मों ॥ ७५

तुम देख्या तिन मुलक को, जित जरा नाहीं इसक ।
इत बेसक क्यों होवहीं, जित खबर न पाइए हक ॥ ७६

१. वचन । २. बिल्कुल । ३. लालच ।

रूहें उन मुलक से, फिर ना सकें वतन ।
फरेब क्योंए ना छूटही, हक के इसक बिन ॥ ७७

ऐसी रूहें वाहेदत्त की, ताए फरेब पोहोंचे क्यों कर ।
ए बड़ा रूहों का तअजुब[1], जो बांधी झूठसों नजर ॥ ७८

मैं भेजी रूह अपनी, सब दिल की बातें ले ।
तुमें तो भी याद न आवही, कोई आए बनी ऐसी ए ॥ ७९

सब बातें मेरे दिल की, और सब रूहों के दिल ।
सो भेजी मैं तुम पे, जो करियां आपन मिल ॥ ८०

ए बातें सब असल की, जब याद दई तुम ।
तब इसक वाली रूहों को, क्यों न उड़े तिलसम ॥ ८१

जब लग लगे दुनियां, तब पोहोंचे न बका मों ।
एक रूह दूजा इस्क, आए काम पड़्या इनसों ॥ ८२

दूजा कछू पोहोंचे नहीं, हक को बीच बका ।
जहां रूह न होवे एकली, छोड़ सबे इतका ॥ ८३

बका बीच रूहन को, खेल देखावें हक ।
आया गया इत कोई नहीं, ए इलम कहे बेसक ॥ ८४

बेसक इलम सीख के, ऐसे खेल को पीठ दे ।
देखों कौन आवे दौड़ती, आगूं इसक मेरा ले ॥ ८५

जब तुम भूले मुझ को, तब इसक गया भुलाए ।
अब नए सिर इसक, देखों कौन लेय के धाए ॥ ८६

याद करो इन इसक को, जो रबद किया सबों मिल ।
सो इसक अपना कहां गया, टिक्या नहीं पाव पल ॥ ८७

सब ज्यादा केहेतीं अपना, करतीं अरस में सोर ।
असल रूहों के इसक का, कहां गया एता जोर ॥ ८८

---

१. हैरानी ।

किया रूहों सबों रद्द, पर आप न पकड़्या किन ।
फरामोसी सबों फिरवली[1], हुई हांसी सबन ॥ ८८

जब इसक गया सब थें, तब निकल आई पेहेचान ।
जिनका इसक जोरावर, ताए कछुक रहे निदान ॥ ९०

सब केहेतीं इसक अपना, हमारा बे सुमार ।
सो रह्या न जरा किन पें, हाए हाए दिया सबों ने हार ॥ ९१

इनों बोहोत लाड़ किए मुझसों, मैं एक किया इनों सों ।
सो एक मेरे लाड़ में, सब बेहेगैयां तिन मों ॥ ९२

और इसक भी जोरावर, तिनकी एह चिन्हार[2] ।
जिन घट सुनत आवही, सोई जानो सिरदार ॥ ९३

और भी बेवरा इसक का, जिनका होए बुजरक ।
ताए याद दिएं क्यों न आवही, ऐसा क्यों जाए मुतलक ॥ ९४

रूहें बात सुनते हक की, तुरत हीं करें सहूर ।
जब सहूर रूहें पकड़े, तो इसक क्यों न करे जहूर ॥ ९५

और भी पेहेचान इस्क की, जो बढ़ के घट जाए ।
इसक रूहों का हक सों, क्यों कहिए बका ताए ॥ ९६

इसक हक का सो कहिए, जो इसक है काएम ।
एक जरा कम न होवही, बढ़ता बढ़े दाएम ॥ ९७

मेरा छूटया न इसक रूहों सों, नजर न छूटी निसबत ।
रूहों छूटी इसक निसबत, ऐसी भूल गैयां खिलवत ॥ ९८

किया मजकूर इसक का, अजूं सोई है साएत ।
पड़े बीच फरामोस के, तुम जानो हुई मुदत ॥ ९९

सक छूटी अरस हक की, सब बातों हुई बेसक ।
तब अरस अरवाहों को, क्यों न आवे इसक ॥१००

---

१. घेर लिया । २. पहचान ।

तोलों चले ना इस्क का, जोलों आड़ी पड़ी सक ।
सो सक जब उड़ गई, तब क्यों न आवे इसक हक ॥१०१

अव्वल इसक जिनों आइया, सोई अरस अरवाहें ।
नाहीं मुतलक मोमिन, जिनों लगे न बेसक घाए ॥१०२

बेसक इलम आइया, पाई बेसक हक दिल बात ।
हुएँ बेसक इस्क न आइया, सो क्यों कहिए हक जात ॥१०३

बेसक इलम रूहअल्ला का, जो हैयात करे फना को ।
मुरदे चौदे तबक के, उठें इन इलमसों ॥१०४

सो बेसक इलम ल्याइया, रूहअल्ला रूहन पर ।
जो अरवाहें अरस की, ताय इसक न आवे क्यों कर ॥१०५

इलम हक का सुनत ही, इसक न आया जिन ।
तिनको नसीहत[1] जिन करो, वह मुतलक नहीं मोमिन ॥१०६

है तीन वज्हे की उम्मत, इस्क बंदगी कुफर ।
सो तीनों आपे अपनी, खड़ियां मजल पर ॥१०७

सो तीनों लेवें नसीहत, पर छूटे नहीं मजल ।
जैसा होवे दरखत, तिन तैसा होवे फल ॥१०८

कोई बुरा न चाहे आप को, पर तिन से दूसरो न होए ।
बीज बराबर बृख है, फल भी अपना सोए ॥१०९

खेल झूठा देख्या नजरों, सो ले खड़े सिर आप ।
ताहीमें मगन भए, छोड़ काएम मिलाप ॥११०

अब सो क्योंए याद न आवही, जो रूहअल्ला आया तबीब[2] ।
दारु न लगे तिनका, जाए हकें कह्या हबीब[3] ॥१११

चौदे तबक करसी काएम, दारु मसी का ए ।
गई ना फरामोसी रूहों की, आई हुकमसों जे ॥११२

---

१. उपदेश । २. वैद्य । ३. प्यारा ।

आखर रूहों नसीहत, ए तो हकें देखाया ख्याल ।
रूहों हक को देखाइया, कौल फैल और हाल ॥११३

हकें खेल देखाय के, इलम दिया बेसक ।
हक हांसी करें रूहन पर, देसी सबों इसक ॥११४

कोई आगे पीछे अव्वल, इस्क लेसी सब कोए ।
पेहेलें इस्क जिन लिया, सोई सुहागिन होए ॥११५

महामत कहें ऐ मोमिनों, जिन हांसी कराओ तुम ।
याद करो बीच बका के, किया रबद आगूं खसम ॥११६

॥ प्रकरण ॥ १६ ॥ चौपाई ॥ १०७४ ॥

प्रकरण तथा चौपाइयों का पूरा संकलन—प्रकरण ३८१, चौपाई १०५५६

इति श्री महामति श्रीप्राणनाथजी की 'तारतम बानी' का

दसवाँ ग्रन्थ

॥ खिलवत संपूर्ण ॥

निजनाम श्री कृष्णजी, अनादि अक्षरातीत ।
सोतो अब जाहेर भए, सबबिध वतन सहित ॥

श्री किताब *इलाही दुलहिन[1]
अरस अजीम[2] की

# ❋ परिक्रमा[3] ❋

## इस्क का प्रकरण

अब कहूं रे इस्क की बात, इस्क सब्दातीत[4] साख्यात[5] ।
जो कदी आवे मिने सब्द, तो चौदे तबक करे रद[6] ॥ १

ब्रह्म इस्क एक संग, सो तो बसत वतन अभंग[7] ।
*ब्रह्म सृष्टी *ब्रह्म एक अंग, ए सदा आनंद अति रंग ॥ २

एते दिन गए कै बक[8], सो तो अपनी बुध माफक[9] ।
अब कथनी[10] कथूं[11] इस्क, जार्थे छूट जाए सब सक[12] ॥ ३

वोए[13] वोए इस्क न था एते दिन, कैयों ढूंढ्या गुन निरगुन ।
धिक धिक पड़ो सो तन, जो तन इस्क बिन ॥ ४

इस्क नाहीं मिनें सृष्ट सुपन, जो ढूंढ्या चौदे भवन ।
इस्क धनिएँ बताया, इस्क विना पीउ न पाया ॥ ५

इस्क है तित सदा अखंड, नाहीं दुनियां बीच ब्रह्मंड ।
और इस्क का नहीं निमूना, दूजा उपजे न होवे जूना[14] ॥ ६

इस्क है हमारी निसानी, विना इस्क दुलहा मैं रानी ।
इस्क विना मैं भई बिरानी[15], विना इस्क न सकी पेहेचानी ॥ ७

---

१. आनन्द अंग श्यामा । २. परम-धाम । ३. प्रदक्षिणा । ४. परमात्मा । ५. प्रत्यक्ष । ६. बेकार । ७. अखण्ड । ८. बोल । ९. अनुसार । १०. बात । ११. कहूँ । १२. सन्देह । १३. हाय-हाय । १४. पुराना । १५. दूसरी, पराई ।

वृथा गए एते दिन, जो गए इस्क बिन ।
मैं हुती पिया के चरन, मैं रेहे ना सकी सरन ॥ ८

क्यों रह्या जीव बिना जीवन, क्यों न आया हो मरन ।
अंग क्यों न लागी अगिन, याद आया न मूल—वतन[1] ॥ ९

इस्क जाने सृष्टि ब्रह्म, जाके नजीक न काहूं भरम ।
जब इस्क रह्या भराई, तब धाम हिरदें चढ़ि आई ॥ १०

इस्क तो कह्या सबदातीत, जो पीउजीको इस्कसों प्रीत ।
देखो इस्क की ऐसी रीत, विना इस्क नाहीं प्रतीत ॥ ११

इस्क नेहेचे मिलावे पीउ, विना इस्क न रहे याको जीउ ।
ब्रह्मसृष्टी की एही पेहेचान, आतम इस्कै की गलतान ॥ १२

इस्क याही धनिएँ बताया, इल्क याही सृष्टें गाया ।
इस्क याहीमें समाया, इस्क याही सृष्टें चित ल्याया ॥ १३

इस्क पियाको बतावे विलास, इल्क ले चले पीउ के पास ।
इस्क भिने दरसन, इस्क होए न विना सुहागिन ॥ १४

इस्क ब्रह्म सृष्ट जाने, ब्रह्म सृष्ट एही बात माने ।
खास रूहों का एही खान, इन अरवाहों का एही पान[2] ॥ १५

पिआ इस्क रस, ब्रह्म सृष्ट को अरस परस ।
काहूं और न इस्क खोज, औरों जाए न उठाया बोझ ॥ १६

बात इस्क की है अति घन, पर पावे सोई सुहागिन ।
ब्रह्म सृष्ट बिना न पावे, सनमंध बिना इस्क न आवे ॥ १७

धनीजी को इस्क भावे, विना इस्क न कछू सोहावे ।
यों न कहियो कोई जन, धनी पाया इस्क विन ॥ १८

इस्क बसे पिआ के अंग, इस्क रहे पिउ के संग ।
प्रेम बसत पिआ के चित, इस्क अखंड हमेसा नित ॥ १९

---

१. परम धाम । २. पेय ।

इस्क बतावे पार के पार, इस्क नेहेचल घर दातार ।
इस्क होए न नया पुराना, नई ठौर न आवत आना[1] ॥ २०

इस्क साहेब सों नहीं अन्तर, जो अरस परस भीतर ।
ए सुगम है सोहागिन, जाको अंकूर याही वतन ॥ २१

ए औरों नाहीं द्रस्ट, औरों छूटे न मोह अहंभ्रस्ट[2] ।
याको जाने ब्रह्म सृस्ट, जाको एही है इष्ट ॥ २२

इस्क की बात बड़ी रोसन, जासों सुख लेसी चौदे भवन ।
सोभी सुख नेहेचल, इस्क द्रस्टें न रहे जरा मैल ॥ २३

इस्क राखे नहीं संसार, इस्क अखंड घर दातार ।
इस्क खोल देवे सब द्वार, पार के पार जो पार ॥ २४

इस्क घाए करे टूक टूक, अंग होए जाए सब भूक ।
लोहू मांस गया सब सूक, चित चल न सके कहूं चूक ॥ २५

इस्क आगू न आवे माया, इस्के पिंड ब्रह्मांड उड़ाया ।
इस्कें धाम वतन बताया, इस्कें सुख पेड़ का पाया ॥ २६

कोई नहीं इस्क की जोड़[3], ना कोई बांधे इस्क सों होड़[4] ।
इस्क सुध कोई न जाने, दुनी ख्वाब की कहा बखाने ॥ २७

इस्क आवे धनी का चाह्या, इस्क पिआजी ने सिखाया ।
पिआ इस्क सरूप बताया, इस्कें पिंड ही को पलटाया ॥ २८

इस्क सोभा बड़ी है अत, इस्क द्रस्टें न पाइए असत ।
जो कदी पेड़ होवे असत, इस्क ताको भी करे सत ॥ २९

इस्क की सोभा कहूं मैं केती, ए भी याही जुबां कहे एती ।
याको जाने सृस्ट ब्रह्म, जाको इस्कै करम धरम ॥ ३०

इस्क है याको आहार, और इस्कै याको बेहेवार ।
इस्क है याकी द्रस्ट, ए इस्कै की है सृस्ट ॥ ३१

---

१. अन्य । २. भ्रष्ट, (अहंकार) । ३. बराबरी । ४. शर्त ।

ए तो प्रेमैं के हैं पात्र, याके प्रेमैं है दिन रात्र ।
याके प्रेमैं के अंकूर, याके प्रेम अंग निज नूर ।। ३२

याके प्रेमैं के भूषन, याके प्रेमैं के हैं तन ।
याके प्रेमैं के बस्तर, ए बसत प्रेम के घर ।। ३३

याके प्रेम श्रवन मुख बान, याको प्रेम सेवा प्रेम गान ।
याको ग्यान भी प्रेम को मूल, याको चलन न होय प्रेम भूल ।। ३४

याको प्रेमैं सेहेज सुभाव, ए प्रेमैं देखे दाव ।
बिना प्रेम न कछुए पाइए, याके सब अंग प्रेम सोहाइए ।। ३५

याकी गत भांत सब प्रेम, याके प्रेमैं कुसल खेम ।
याके प्रेम इंद्री अंग गुन, बुध प्रकृती नहीं प्रेम बिन ।। ३६

याको प्रेमैं को विस्तार, याको प्रेमैं को आचार ।
याके प्रेमैं के तेज जोत, याके प्रेमैं अंग उद्योत ।। ३७

याको प्रेमैं है रस रंग, याको प्रेम सबों में अभंग ।
याको प्रेम सनेह सुख साज, याको प्रेम खेलन संग राज ।। ३८

याके प्रेम सेज्या सिनगार, जाको वार न पाइए पार ।
प्रेम अरस परस स्यामा स्याम, सैयां वतन धनी धाम ।। ३९

प्रेम पिआ जी के आउध, प्रेम स्यामा जी के अंग सुध ।
ब्रह्म सृस्टी की एही बिध, ए दूजे काहूँ ना दिध ।। ४०

प्रेम सेन्या है अति बड़ी, जब मूल आउध ले चढ़ी ।
सो रहे न काहू की पकड़ी, यासों सके न कोई लड़ी ।। ४१

प्रेम आप पर ना लेखे, विना धनी काहूँ न देखे ।
प्रेम राखे धनी को संग, अपनो भी न देखे अंग ।। ४२

और सबन सों चित भंग, एक पिआजी सो रस रंग ।
प्रेम पिआ जी के अंग भावे, पिआ विना आपको भी उड़ावे ।। ४३

जो कोई पीउ के अंग प्यारा, ताको प्रेम निमख न करे न्यारा ।
प्रेम पिया को भावे सो करे, पिआ के दिल की दिल धरे ।। ४४

प्रेम आतम द्रस्ट न छोड़े, प्रेम बाहेर द्रस्ट न जोड़े ।
प्रेम पिआ के चितसों चित न मोड़े, प्रेम और सबन सों तोड़े ॥ ४५

पिआ के दिल की दिल लेवे, रैन दिन पिआ दिल सेवे ।
पिआ के दिल बिना सब जेहेर, औरोंसों होए गयो सब बैर ॥ ४६

पिआ के दिल की सब जाने, पिआ जी को दिल पेहेचाने ।
अंग पीउजी के दिल आने, पिउ विना आग जैसी कर माने ॥ ४७

प्रेम अंदर ऐसी भइ, नींद माहें की उड़ कहूं गई ।
गुन अंग इंद्री पख, पिआ प्रेमें हुए सब लख ॥ ४८

सब देखे पिआ दिल सामी, दिल देखे अंतर जामी ।
पीउ के दिल की पेहेले आवे, पिआ मुख थें केहेने न पावे ॥ ४९

आतम एक हुई निसंक, ना रही जुदागी रंचक ।
प्रेम दिल भर हुई दिल, पिआ प्रेम रहे हिल मिल ॥ ५०

प्रेम आप न देखे कित, द्रस्ट पिआई देखे जित ।
निज नजर प्रेम खोलत, जाग धाम देखावे सरबत्र ॥ ५१

पिआ प्रेमैं सों पेहेचान, प्रेम धाम के देवे निसान ।
प्रेम ऐसी भांत सुधारे, ठौर बैठे पार उतारे ॥ ५२

पंथ होवे कोट कलप, प्रेम पोहोंचावे मिने पलक ।
जब आतम प्रेमसों लागी, द्रस्ट अंतर तबहीं जागी ॥ ५३

जब आया प्रेम सोहागी, तब मोह जल लेहेरां भागी ।
जब उठे प्रेम के तरंग, ले करी स्याम के संग ॥ ५४

पेहेचान हुती न एते दिन, प्रेम नाहीं पिआ सों भिन ।
पिआ प्रेम पेहेचान जो एक, भेली होसी सबों में विवेक ॥ ५५

जब चढ़े प्रेम के रस, तब हुए धाम धनी बस ।
जब उपजे प्रेम के तरंग, तब हुआ धाम धनीसों संग ॥ ५६

प्रेम नजरों जो कछू आया, ताको इलहीं अखंड पोहोंचाया ।
प्रेम है बड़ो विस्तार, भव जल हुतो जो खार ॥ ५७

सो मेट किया सुधा रस, सुख अखंड धनी को परस ।
प्रेमें गम अगम की करी, सो सुध वैराट में विस्तरी[१] ।। ५८

प्रेमें करी अलख की लख, त्रैलोकी की खोली चख ।
तब छूट्या सबों से अभख[२], सब हुए स्याम सनमुख ।। ५९

जब प्रेम सबों अंग पिआ, अपना अनभव कर लिया ।
तब वार फेर जीवं दिया, अब न्यारे न जीवन जिया ।। ६०

मूल अंग आया इस्क, दूजा देखे ना बिना हक ।
जब छूटे प्रेम के पूर, प्रगट्या निज वतनी सूर ।। ६१

जब प्रेम हुआ झकझोल[३], तब अंतर पट दिए खोल ।
जब चढ़े प्रेम के पुंज, निज नजरों आया निकुंज ।। ६२

जब प्रेम हुआ प्रघल[४], अंग आया धाम का बल ।
तुम यों जिन जानो कोए, बिना सुहागिन प्रेम न होए ।। ६३

प्रेम खोल देवे सब द्वार, पारै के पार जो पार ।
प्रेम धाम धनी को बिचार, प्रेम सब अंगों सिरदार ।। ६४

इस्कै में पोहोंचाया, इस्कें धाम में ले बैठाया ।
इस्कें अंतर आंखें खुलाई, धनी साथ मिलावा देखाई ।। ६५

कहें 'महामत' प्रेम समान, तुम दूजा जिन कोई जान ।
ले उछरंग ते घर आए, पिआ प्रेमें कंठ लगाए ।। ६६

।। प्रकरण ।। १ ।। चौपाई ।। ६६ ।।

### धाम को वरनन मंगला चरन-राग धन्यासरी

ब्रह्म सृस्टी लीजियो, हांरे सैयां ए है अपना जीवन ।
सखी मेरी जो है मूल वतन, ब्रह्म सृष्टी लीजियो । १

सास्त्र सबद मात्र जो बानी, ताको कलस बानी सब्दातीत ।
ताको भी कलस हुओ अखंड को, तापर धजा धरूं तिन थें रहित । २

---

१. फैली । २. न खाने योग्य । ३. झोंका देना । ४. पूरे बहाव में ।

मगज वेद कतेब के, बंधे हुते जो वचन ।
आद करके अबलों, सखी कबहूं न खोले किन ॥ ३

सुपन बुध बैकुंठ लों, या निरंजन निराकार ।
सो क्यों सुंनको उलंघ के, सखी मेरी क्यों कर लेवे पार ॥ ४

सुपन बुध अटकलसों, वेद कतेब खोजे जिन ।
मगज न पाया माहें का, बांधे माएने बारे तिन ॥ ५

साधू बोले इन जुबां, गावें सबदातीत बेहद ।
पर कहा करे बुध मोह की, आगे ना चले सब्द ॥ ६

पांच तत्व मोह अहंकार, चौदे लोक त्रैगुन ।
ए सुंन *द्वैत जो ले खड़ी, निराकार निरंजन ॥ ७

प्रकृती महा प्रलै होवही, सब तत्व गुन निरगुन ।
द्वैत उड़े कछू ना रहै, निराकार निरंजन सुंन ॥ ८

बानी जो *अद्वैत की, सो कहावे सबदातीत ।
सो जागृत बुध अद्वैत विना, क्यों सुध पावे द्वैत ॥ ९

*पैगंगर या *तिथंकर, कै हुए अवतार ।
किन ब्रोध न मेटयो विस्व को, किए नहीं निरविकार ॥ १०

एते दिन त्रैलोक में, हुती बुध सुपन ।
सो बुध जी बुध जागृत ले, प्रगटे पुरी नौतन ॥ ११

अब सो साहेब आइया, सब सृष्ट करी निरमल ।
मोह अहंकार उड़ाए के, सखी देसी सुख नेहेचल ॥ १२

सो मगज माएने हुकमें, खोले हम सैयन ।
सो कलाम जो हक के, सुख होसी उमत सबन ॥ १३

रोसन किल्ली दई हमको, यों कर किया हुकम ।
खोल दरवाजे पार के, इत बुलाए लीजो सृस्ट ब्रह्म ॥ १४

ब्रह्म सृस्ट जाहेर करूं, करसी लीला रोसन ।
अखंड धनी इत आए के, किया जाहेर मूल वतन ॥ १५

तीन ब्रह्मांड जो अब रचे, ब्रह्म सृस्ट कारन ।
आप आए तिन वास्ते, सखी पूरे मनोरथ तिन ॥ १६

अखंड सुख सबन को, होसी चौदे तबक ।
सो बरकत ब्रह्म सृस्ट की, पावे दीदार सब हक ॥ १७

ख्वाब की अकल छोड़ के, कहूँ अरस के कलाम ।
हक बका जाहेर करूं, अखंड सुख जे ठाम ॥ १८

दुनी द्वैत जुबां छोड़ के, कहूँ जुबां अकल और ।
कलाम कहूं अरस अजीम के, महामत बैठे इन ठौर ॥ १९

ला मकान सुंन निरगुन, छोड़ फना निरंजन ।
क्षर अक्षर को छोड़ के, ए ताको मंगला चरन ॥ २०

॥ मंगला चरण तमाम प्रकरण ॥ २ ॥ चौपाई ॥ ८६ ॥

## और ढाल चली

अब आओ रे इस्क मानूं हाम, देखूं वतन अपना निज धाम ।
करूं चरन तले विश्राम, बिलसों पिआ जीसों प्रेम काम ॥ १

अब बानी अद्वैत में गाऊं, निज स्वरूप की नींद उड़ाऊं ।
सब सैयों को भेली जगाऊं, पीछे अक्षर को भी उठाऊं ॥ २

जब प्रलै प्रकृती होई, ना रहे अद्वैत विना कोई ।
एक अद्वैत मंडल इत, धनी अंगना के अंग नित ॥ ३

अब याही रट लगाऊं, ए प्रेम सबों को पिलाऊं ।
अब ऐसी छाक[1] छकाऊं[2], अंग असलू इस्क बढ़ाऊं ॥ ४

धनी धाम देखन की खांत,[3] सो तो चुभ रही मेरे चित्त ।
किन विध वन मोहोल मंदर, देखों धनी जी की लीला अंदर ॥ ५

बिलास स्वरूप किन भांत, बिन देखे क्यों उपजे स्वांत[4] ॥ ।
जल जिमी पसू पंखी थिर चर, सब ठौर और अक्षर ॥ ६

१. नशा । २. मस्ती मैं बहा दूँ । ३. चाह । ४. शान्ति ।

सब सोभा देखों निज नजर, अपना वतन निज घर ।
धनी केहे केहे चित चढ़ाई, पर नैनों अजूं न देखाई ।। ७

तुम दई जो पिआ मोहे निध, सो तो संगियों को कही सब बिध ।
और हिरदें जो मोहे चढ़ाई, सो भी देऊं इनों को द्रढ़ाई ।। ८

अब सुनियो साथ सुनाऊं, पीछे निज नैनों देख देखाऊं ।
जोत जवेर चबूतरे दोए, ताकी उपमा मुख न होए ।। ९

द्वार आगे चबूतरे तीन, दोए दोए तरफ एक भिन ।
दोनों पर नंगों के फूल, चित्त निरखे होत सनकूल ।। १०

बेलां कै रंगों कैं नकस,[1] देखों एक दूजी पें सरस ।
ता बीच चरनी[2] केती कै रंग, बेलां कटाव जड़ित कै नंग ।। ११

दोऊ तरफ किनारे कांगरी, कै भांत दोरी नंग जरी ।
दाहिने तरफ भिंन चबूतरा, ता बीच गली लगता तीसरा ।। १२

ऊपर दरखत छाया बराबर, सब रही चबूतरे भर ।
चारो तरफों तीन तीन चरनी, किनारे की सोभा जाए न बरनी ।। १३

उज्जल भोम को कहा कहूं तेज, जानो बीज[3] चमके रेजा रेज ।
ए जोत आसमान लों करत, जोत आसमान सामी लरत ।। १४

सो परे बन पर झलकार, जोत बन की न देवे हार ।
इन मंदिरों को जो उजास,[4] सो तो मावत नहीं आकास ।। १५

जोत तेज प्रकास जो नूर, सब ठौरों सीतल सत सूर ।
जोत रोसन भरचो आसमान, किरना सके न कोई काहूं भान ।। १६

सोभा क्यों कहूं या मुख बन, सोतो होए नहीं वरनन ।
इत सब तत्वों की खुसबोए, सो इन जुबां बरनन कैसे होए ।। १७

इत जल वाए के चलत जो पूर, सो मैं क्या कहूं ताको नूर ।
जल के जो उठत तरंग, ताकी किरना देखावें कै रंग ।। १८

---

१. चित्रकारी । २. सीढ़ी । ३. बिजली । ४. प्रकाश ।

चांद सूरज धनी के हजूर[1], मैं क्यों कहूं ताको नूर ।
इत जमुना जी के सातों घाट, मध्य का जल जो बीच पाट ॥ १९

तापर देहुरी एक, जल पर पाट कठेड़ा[2] विसेक ।
चारों थंभों के जो नंग, झलके माहें जल के तरंग ॥ २०

आड़े ऊंचे याके तले, चार चार थंभ तीन तीन घड़नाले[3] ।
याकी जोत आकास न मावे, किरना फेर फेर जिमी पर आवें ॥ २१

तिनथें तीन घाट तरफ बाएं, ताकी जुदी तीनो बनराए ।
बन बड़ा इनथें भी बाएं, पिआ सैयां खेलन कबूं कबूं जाएं ॥ २२

लंबी डारी ऊंचा बन, कै भांत हिंडोले झूलन ।
तीन घाट कहे सो देखाऊं, सुनो तीनों बनों के नाऊं ॥ २३

केल लिबोई[4] और अनार, और तीन बन दांहिनी किनार ।
बट नारंगी जांबू बनराए, पाट के घाट अमृत[5] केहेलाए ॥ २४

जल पर डारें लगियां आए, दूजियां भोम तरफ सोभाए ।
जमुना जी के दोऊ किनारें, बन जल पर लगी दोऊ हारें[6] ॥ २५

आधों आध हुइयां डारें, बन रंग सोभित दोऊ पारें ।
आगे बन के जो मंदर, ताको बरनन करूं क्यों कर ॥ २६

बेलां बन चढ़ियां इन सूल, हुइयां दिवालें पात फूल ।
गृद चारों तरफों फूले फूल रंग, जुदी हारें सोभा जिन संग ॥ २७

इत लता चढ़ियां अति घन, ऊपर फूलों के फूले हैं बन ।
जानों जवेर रंग अनेक, कुंदन में जड़े विवेक ॥ २८

बीच जमुना जी के और मंदर, अतिबन सोभित बन के अंदर ।
कै सेज्या बनी फूल बन में, कै रंग हुए सघन में ॥ २९

इत खेलत जुत्थ[7] सैयन, सदा आनंद इन वतन ।
मिनें राज स्यामा जी दोए, सुख याही आतम सब कोए ॥ ३०

---

१. पास । २. छोटी दीवार । ३. पुल के खंभों के बीच बहने वाला जल । ४. नींबू । ५. आम । ६. पंक्तियां । ७. टोलियां ।

पेड़ जुदे जुदे लंबी डारी, छाया घाटी सोभे नीची सारी ।
निकसी एक थें दूजी गली,[1] सो तो तीसरी में जाए मिली ।। ३१
कै आवत बीच आड़ियां, कै सीधियां कै टेढ़ियां ।
बन गलियों में बराबर, ना कहूं अधिक ना छेदर[2] ।। ३२
ऊपर ढाँपियां सारी सनंध,[3] सोभा बनी जो दोरी बंध ।
तले भोम नजर आवे जेती, उज्जल कहा कहूं जोत सुपेती ।। ३३
जिमी ऊपर तले जो रेती, जानों तितके बिछाए मोती ।
कहूं अति बारीक कहूं छोटे, कहूं बड़े बड़े रे मोटे ।। ३४
कित जानों हीरा कनी, हर ठौर हर भांत घनी ।
कित दोखूनी तीन चौखूनी, कित फिरती कहूं गोल बनी ।। ३५
ए बिध कहूं मैं केती, सो होए न याकी गिनती ।
बन फूल फूले बहु रंग, झलूब[4] रहे बोए सुगंध ।। ३६
एक खूबी और खुसबोए, याकी किन जुबां कहूं मैं दोए ।
एक सुगंध दूजा नूर, रह्या सब ठौरों भर पूर ।। ३७
तलाब जमुना जी के मध, बन के मंदिर या बिध ।
ए खेलन के सब ठौर, तालाब बिध है और ।। ३८
तलाब बनों लिया घेर, ऊपर देहुरियां चौफेर ।
कै पावड़ियां जो किनारे, बड़ा चौक तले जाली वारे ।। ३९
बन लेवत सोभा पाले, कै हिंडोले लंबी डालें ।
घाट पाट देहुरी कै रंग, जल सोभा लेत तरंग ।। ४०
गेहेरा अति सुंदर जल, बीच में बन्यो है मोहोल ।
जल ऊपर मोहोल जो छाजे, बीच बीच में बन विराजे ।। ४१
जल मोहोल तले जो खलके, मंदिर कोट प्रकास मनी झलके ।
बन को झुंड पाल पर एक, तले सोभा अति विसेक ।। ४२

---

१. राह । २. अन्तर । ३. रीति से । ४. लटक रहे हैं ।

झुंड तले सोभा कही न जाए, धनी इत बिराजत आए ।
धनी बैठत साथ मिलाए, सब सिनगार साज कराए ॥ ४३

इन ठौर सोभा जो अलेखे, चित सोई जाने जो देखे ।
मध्य बन धांम के गृदवाए, सोभा एक दूजी पें सिवाए ॥ ४४

बट पीपल निकट बनराए, सो देखें न द्रस्ट अघाए ।
ज्यों ज्यों देखिए त्यों त्यों सोभाए, पेहेले थें पीछे अधिकाए ॥ ४५

फिरते बन धाम विराजे, ऊपर आए रह्या लग छाजे ।
चारों तरफों फूले फूल बन, कै रंग सोभा अति घन ॥ ४६

बरन्यो न जाए या मुख, चित्त में लिए होत है सुख ।
बन में खेलें टोले टोले, मोर बांदर करत कलोले ॥ ४७

मिल मिल करें टहूंकार, मुख मीठी बानी पुकार ।
बांदर ठेकों पर ठेक देत, टेढी उलटी गुलाटें[1] लेत ॥ ४८

तीतर लवा कोकिला चकोर, सब्द वाले सामी टकोर ।
सुआ मैंना करें चोपदारी[2], चातुरी इन आगे सब हारी ॥ ४९

सखियों के नाम ले ले बुलावें, श्रीं धनीजी के आगे मुजरा[3] करावें ।
पंखी पीउ पीउ तुहीं तुहीं करें, कै विध धनी को हिरदे धरें ॥ ५०

तिमरा भमरा स्वर साधें, गुंजें गान पिआसों चित बांधें ।
मृग कस्तूरिया घेरों घेर, करें सुगंध बन चौफेर ॥ ५१

हाथी बाघ चीते सागोस, खेलें मिलें आतम नहीं रोस ।
हंस गरुड़ पंखी कै जात, नाम लेऊं केते कै भांत ॥ ५२

कै मुरग—सुतर[4] कुलंग[5], खेल करें लड़ाई अभंग ।
सीना कस गुलाटें खावें, कबूतर अपनी गत देखावें ॥ ५३

हरन सांम्हर पस्वाड़े पाड़े खेले सब कोई अपने अखाड़ें ।
मुजरे को दोऊ समे आवें, खेल सब कोई अपना देखावें ॥ ५४

---

१. उल्ट बाजियाँ । २. देख रेख । ३. नृत्य । ४. एक पक्षी । ५. एक पक्षी ।

पसू पंखी अनेक हैं नाम, सोभे केसों पर चित्राम ।
अति सुंदर जोत अपार, याके खेल बोल मनुहार ॥ ५५
जमुनाजी के जो पार, बन पसू पंखी याही प्रकार ।
मोहोल सामी सोभे मोहोल, सो मैं क्यों कहूं या मुख कोल ॥ ५६
दरवाजे सामी दरबाजे, नूर सामी नूर बिराजे ।
नूर किरना उठें साम सामी, जोत रही सबों ठौर जामी ॥ ५७
लींला दोऊ दोनों ठौर, भांत दोऊ पर नाहीं और ।
फिरते *अक्षर के जो बन, लीला एकै देखियत भिन्न ॥ ५८
कै मिलावे सोहने, धनी सैंयों के खेलोने ।
पसू पंखी जुत्थ मिलत, आगे बड़े दरवाजे खेलत ॥ ५९
दोऊ कमाड़ रंग दरपन, माहें झलकत सामी बन ।
नंग बेनी पर देत देखाई, ए सोभा कही न जाई ॥ ६०
कै कटाव नकस जवेर, सोभित नंग चौक चौफेर ।
फिरते द्वारने जो मनी, ताकी जोत प्रकास अति घनी ॥ ६१
याके तीन तरफ जो दिवाल, कै जवेर भोम रंग लाल ।
गोख[1] खिड़की जाली जवेर, कै जड़ाव दिवाल चौक चौफेर ॥ ६२
गृद झरोखे के थंम फिरते, जुदी कै जिनसों जोत धरते ।
नव भोम रंग वरनन, तापर खुली चांदनी उठत किरन ॥ ३३
मंदिर याकी कांगरी करे जोत, जानो तहां की बीज उदोत ।
दरवाजे में ठौर रसोई, जित बड़ा मिलावा नित होई ॥ ६४
स्याम मंदिर रसोई होत जित, जोड़े सेत मंदिर है तित ।
बन थें फिरें संझा जब, इन मंदिरों अरोगें[2] तब ॥ ६५
चरनी आगे मिलावा होत, जुत्थ *लाड़बाई धरे जोत ।
साक बांदर जो ल्यावत, आगे सखियां सब समारत ॥ ६६

---

१. छोटा जाला (ग्राला) । २. भोजन करें ।

कै चौक चबूतरे अंदर, कै बिध गलियां मंदिर ।
कै जड़ाव दिवाल द्वार जोत धरे, ए जुबां बरनन कैसे करे ।। ६७

कै नकस पुतली चित्रामन, कै वेल पसू पंखी बन ।
कंचन कड़े जंजीरां जड़ियां, कै झलकें थंभ सीढ़ियां ।। ६८

माहें बस्तां संदूक जोगवाई, सो तो अगनित देत देखाई ।
ताके खिल्ली[1] किनारे भमरियां[2], ऊपर बस्तां अनेक बिध धरियां ।। ६९

ए मैं क्यों कर करूं बरनन, तुम लीजो कर चितवन ।
नव भोम सबों के मंदिर, देखो बस्तां अपनी चित्त धर ।। ७०

सेज्या सबन के सिनगार, हिरदे लीजो कर निरधार ।
सब जोगवाई है पूरन, कमी नाहीं काहूंमें किन ।। ७१

हांस विलास सनेह प्रेम प्रीत, सुख पिया जी को सब्दातीत ।
डब्बे तबके[3] सीसे सीकियां, कै देत देखाई लटकतियां ।। ७२

चौकियां माचियां सिंघासन, कै हिंडोले जंजीर कंचन ।
कै बासन[4] धात अनेक, कै वाजंत्र बिविध विसेक ।। ७३

कै झीले[5] चाकले दुलीचे बिछोनें, कै बिध तलाई सिरानें ।
कै रंग ओछाड़ गाल मसूरे, कै सिरख सोड़ मन पूरे ।। ७४

सेज्या सिनगार के जो भवन, दोए दोए नवो खंड सबन ।
दूजी भोम किनारे बाएं हाथ, कबू कबूं सिनगार करें इत साथ ।। ७५

इत खड़ोकली[6] जल हिलोले, धनी साथ झीलें[7] झकोलें ।
इत सिनगार करके खेलें, ठौर जुदे जुदे जुत्थ मिलें ।। ७६

साम सामें मंदिर के द्वार, नव भोम फिरती किनार ।
ता बीच थंभों की दोए हार, कै रंग नंग तेज अपार ।। ७७

जेती मैं कही जोगवाई, सो देख देख आतम न अघाई ।
या बाहेर या अंदर, एक रस मोहोल मंदर ।। ७८

---

१. खूंटी । २. चक्कर । ३. रकाबियां । ४. बर्तन । ५. कालीन । ६. जल कुण्ड का नाम । ७. जल क्रीड़ा ।

केहेती हों करके हित, सारे दिन की एही विरत ।
तुम लीजो द्रढ़ कर चित्त, अपना जीवन है नित ॥ ७९

श्री धाम की आठ पहर की बीतक

तीजी भोम[१] की जो पड़साल[२], ठौर बड़े दरवाजे विसाल ।
धनी आवत हैं उठि प्रात, बन सींचत अमृत अघात ॥ ८०

पसू पंखी का मुजरा लेवें, सुख नजरों सबों को देवें ।
पीछे बैठ करें सिनगार, सखियां करावें मनुहार ॥ ८१

श्री स्यामाजी मंदिर और, रंग आसमानी है वा ठौर ।
चार चार सखियां सिनगार करावें, स्यामाजी धनीजी के पासे आवें ॥ ८२

सोभा क्यों कर कहूं या मुख, चित्त में लिए होत है सुख ।
चित्त दे दे समारत सेंथी, हेत कर कर बेनी गूंथी ॥ ८३

मिनों मिने सिनगार करावें, एक दूजी को भूषन पेहेरावें ।
साथ सिनगार करके आवें, जैसा धनी जी के मन भावे ॥ ८४

सैयां लटकतियां करें चाल, ज्यों धनी मन होत रसाल ।
सैयां आवत बोलें बानी, संग एक दूजी पे स्यानी ॥ ८५

सैयां आवत करें झनकार, पाए भूषन भोम ठमकार ।
झलकतियां रे मलपतियां[३], रंग रस में चैन करतियां ॥ ८६

कंठ कंठ में बाँहों धरतियां, चित्त एक दूजी को हरतियां ।
सुंदरियां रे सोभतियां, एक दूजी को हांस हंसतियां ॥ ८७

कै फलंग दे उछलतियां, कै फूल लता जो फेरतियां ।
कै हलके हलके हालतियां, कै मालतियां[४] मचकतियां[५] ॥ ८८

कै आवत हैं ठेलतियां, जुत्थ जल लेहेरां ज्यूं लेवतियां ।
कै आवें भमरी[६] फिरतियां, एक दूजी पर गिरतियां ॥ ८९

कै सीधियां सलकतियां, कै बिध आवें जो चलतियां ।
सखी एक दूजी के आगे, आए आए के चरनों लागे ॥ ९०

---

१. मंजिल । २. दालान । ३. मिलती हुई । ४. कतार बांध कर जाना । ५. पीछे हट कर चलना । ६. गोल चक्कर ।

इत बड़ा मिलावा होई, जुदी रहे न या समें कोई ।
कोई छज्जों कोई जालिएं, कोई मोहोलों कोई मालिएं[1] ।। ९१

इत चार घड़ी लों बैठें, मेवा मिठाई आरोग के उठें ।
दाँहिनी तरफ दूजा जो मंदर, आए बैठें ताके अंदर ।। ९२

नीला ने पीला रंग, ताकी उठत कै तरंग ।
दोऊ रंगों की उठत झांई, इन मंदिरों दिवालों के तांई ।। ९३

पैठते दांहिने हाथ जो जांहीं, सेज्या है या मंदिर माहीं ।
कै जिनस जड़ाव सिंघासन, राज स्यामा जी के दोऊ आसन ।। ९४

झरोखे को पीठ देवें, बैठे द्वार सनमुख लेवें ।
संग सखियां केतीक विराजें, या समे श्री मंडल बाजे ।। ९५

नव रंग बाई जो बजावें, मुख बानी रसीली गावें ।
इत बाजत बेन रसाल, बेन बाई गावें गुन लाल ।। ९६

सखी एक निकसें एक पैठें, एक आवें उठें एक बैठें ।
इन समे *भगवान जी इत, दरसन को आवें नित ।। ९७

झरोखे सामी नजर करें, परनाम करके पीछे फिरें ।
इत और न दूजा कोए, सरूप एक है लीला दोए ।। ९८

भगवान् जी खेलत बाल चरित्र, आप अपनी इच्छा सों प्रकृत[2] ।
कोट ब्रह्मांड नजरों में आवें, खिन में देखके पलमें उड़ावें ।। ९९

और एतो लीला किसोर, सैयां सुख लेवें अति जोर ।
ए लीला सुख केता कहूं, याको पार परमान न लहूं ।।१००

सखियां केतीक बन में जावें, साक पान मेवा सब ल्यावें ।
घड़ी चार खेल तित करें, दिन पोहोर चढ़ते आवें घरें ।।१०१

ए सब इच्छासों मंगावें, पर सखियों को सेवा भावें ।
सैयां सेवा करन बेल ल्यावें, लेवें एक दूजी पें छिनावें ।।१०२

१. फुलवाड़ी । २. स्वभाव ।

निकसते दांहिनी तरफ जो ठौर, सैयां आए बैठें चढ़ते दिन पोहोर ।
मिलावा होत दिवालों के आगे, सैयां पान बीड़ी बालने लागे ।।१०३

मसाला समार समार के लेवें, सखी एक दूजी को देवें ।
डेढ़ पोहोर चढ़ते दिन, बीड़ी वाली सैयां सबन ।।१०४

बीड़ियों की छाब लेकर, धरी पलंग तले चौकी पर ।
श्री *राज बैठे बातां करें, श्री *स्यामाजी चित्त धरें ।।१०५

सैयां परस पर करें हांस, लेवें धनीजी को बिविध विलास ।
घड़ी दो एक तापर भई, लाड़बाई आए यों कही ।।१०६

श्री धनीजी की आग्या पाऊं, तो या समे रसोई ले आऊं ।
श्री धनीजीएँ आग्या करी, सैयां चौकी आन आगे धरी ।।१०७

सैयां दोए चाकले ल्याई, सो तो दोनों दिए बिछाई ।
श्री राज उतारे बस्तर, पेहेनी पिछोरी कमर पर ।।१०८

श्री राज चाकले आए, श्री स्यामाजी संग सोहाए ।
श्री राज पखाले[1] हाथ, श्री स्यामाजी भी साथ ।।१०९

सैयां दौड़ दौड़ के जावें, आरोगने की बस्तां ल्यावें ।
मेवा अंन ने साक मिठाई, कै बिध सामग्री ले आई ।।११०

एक ले चली साक कटोरी, तापें छीन ले चली दूसरी ।
तिनथें झोंट[2] ले चली तीसरी, चौथी वापें थें ले दौरी ।।१११

जो कदी छीन लेत हैं जिनपे, पर रोस न काहूं किनपे ।
इतथें जो फिर कर गैयां, तिन और कटोरी जाए लैयां ।।११२

यों एक एक पे लेवें, हेत एक दूजी को देवें ।
सब मंदिर करें झनकार, स्वर उठत मधुर मनुहार ।।११३

सैयां दौड़त हैं साम सामी, सब्द रह्यो सबों ठौर जामी ।
कै स्वर उठत भूखन, पड़छंदे[3] परें स्वर तिन ।।११४

---

१. धोए । २. छीनना । ३. गूंज का स्वर ।

कै बिध उठत मीठी बानी, मुख वरनी न जाए वखानी ।
इन समे की जो आवाज, सोभा धाममें रही बिराज ॥११५

दूध दधी ल्याई *लाड़बाई, सोतो लिए मन के भाई ।
सब खेलें हांसी करें, आए धनी जी के आगे धरें ॥११६

या समे दौड़त भूखन बाजे, पड़छंदे भोम सब गाजे ।
झारी[१] लेके चल्लू कराई, मुख हाथ रूमाल पोंछाई ॥११७

श्री स्यामाजी चल्लू[२] करी, दोए बीड़ी[३] दो मुखमें धरी ।
*श्री राज उठ बेंठे सिंघासन, संग *स्यामाजी उठे तत खिन ॥११८

दोऊ आसन जोड़े आए, सैंयां चौकी चाकले उठाए ।
सैयां तले आरोगने गैयां, आरोग आए पान बीड़ी लैयां ॥११६

सेज्या आए श्री जुगल किसोर, तब दिन हुआ दो पोहोर ।
सैयां बैठी जुदे जुदे टोलें, करें रेहेस बातें दिल खोलें ॥१२०

तित कै बिध रस उपजावें, कै विलास मंगल मिल गावें ।
कै हँस हँस ताली देवें, यों कै बिध आनंद लेवें ॥१२१

कै बैठत छज्जों जाए, बैठें अंगसों अंग मिलाए ।
मुख बानीसों हेत उपजावें, एक दूजीकों प्रेम बढ़ावें ॥१२२

रस अनेक बातन लेवें सुख, सो मैं कह्यो न जाए या मुख ।
सरूप सोभा जो सुन्दरता, बस्तर भूखन तेज जोत धरता ॥१२३

कें बैठत मिलावें आए, बैठें अंगसों अंग लगाए ।
सुख एक दूजीको उपजावें, मुख बानीसों प्रीत बढ़ावें ॥१२४

हांस विनोद ऐसा करें, सुख प्रेम अधिक अंग धरें ।
यों सुख मिनों मिने लेवें, सखी एक दूजीको देवें ॥१२५

कै बैठत जाए हिंडोलें, अनेक करत कलोलें ।
कै बैठत जाए पलंगें, बातां करत मिनों मिने रंगें ॥१२६

१. सुराही । २. हाथ मुँह धुलाना । ३. पान का बीड़ा ।

यों अनेक बिधें सुख नित, पियाजीको सदा उपजत ।
सब सैयां पोहोर पीछल, टोले तीसरी भोम आवें चल ॥१२७
मंदिर आइयां सैयां जब, खुले द्वार दरसन पाए सब ।
तब आए सबे सुख पाल, स्यामाजी बैठे संग लाल ॥१२८
दोए दोए सैयां सब संग, मिल बैठ करें कै रंग ।
सुखपाल[1] चलावें मन, ज्यों चाहिए जैसा जिन ॥१२९
या जमुनाजी या तलावें, आए खेलें जो मन भावे ।
*श्रीराज *स्यामाजीके डेरे, सुखपाल उतारे सब नेरे[2] ॥१३०
जुत्थ जुदे जुदे बन खेलें, खेल नए नए रंग रेलें ।
तब लग खेलें साथ सब, दिन घड़ी दोए पीछला जब ॥१३१
सैयां मिलकर पीउ पासे आवें, झीलने की बात चलावें ।
श्रीराज स्यामाजी उठ कर, उतारे हैं बस्तर ॥१३२
पेहेने वस्तर जो झीलन, राज स्यामाजी सैयां सबन ।
इत एक घड़ीलों झीलें, जल क्रीड़ा कै रंग खेलें ॥१३३
बाकी दिन रह्यो घड़ी एक, तामें सिनगार किए बिवेक ।
हुओ संझाको अवसर, राजस्यामाजी बैठे सिनगार कर ॥१३४
मिनों मिने सिनगार करावें, एक दूजीके आगे धावें ।
उछरंगतियां आवें आगे, राज स्यामाजीके पांउ लागें ॥१३५
पांउ लागके पीछियां फिरें, खेल चित चाहया त्यों करें ।
कै रंग फूले फूल बास, लेत नए नए बनके विलास ॥१३६
ससी बन याही जोत तेज, सब तत्व तेज रेजा रेज ।
करें खेल अति उछरंग, तामें कबूं कबूं पियाजीके संग ॥१३७
इत कै बिध मेवा आरोगें, बनहीं को लेवें बिभोगें ।
इत नित विलास बिसाल, पीछे आए बैठे सुख पाल ॥१३८

---

१. इच्छा चारी विमान । २. नजदीक ।

इत हुई पोहोर एक रात, *सुखपाल चलावें चित चहात ।
घरो आए सुखपाल सारे, राजस्यामाजी पांचमी भोम पधारे ॥१३६

पंद्रह दिन खेलें बन, पंद्रह दिन सुख भवन ।
अब कहूं भवन को सुख, जो श्रीधनीजी कह्यो आप मुख ॥१४०

बनथें आए सिनगार कर, संभा तले की भोम मंदर ।
आरोग चढ़े भोम चौथी, खेलें नवरंगबाईकी जुत्थी ॥१४१

निरत करें नवरंगबाई, पासे कै बिध बाजे बजाई ।
निरत करें और गावें, पासे सखियां स्वर पुरावें ॥१४२

कर भूखन बाजे चरन, ताकी पड़ताल परे सब धरन ।
पांउं ऐसी कला कोई साजे, सबमें एक घूंघरी बाजे ॥१४३

जब दोए रे दोए बोलावें, तब तेंसेही पांउ चलावें ।
तीन कहें तो बाजे तीन, चार बाजे कला सब लीन ।१४४

जो बोलावें भांभरी एक, जानों एही खेल विसेक ।
जिनको रे बोलावत जैसे, सो तो बोलत भूखन तैसे ॥१४५

जब बोलावें सबों अंगे, भूखन बोले सबे एक संगे ।
जब जुदे जुदे स्वर बोलावें, छबि जुदी सबोंकी सोहावे ॥१४६

भूखन करत जुदे जुदे गान, मुख बाजे करें एक तान ।
क्यों कर कहूं ए निरत, सोई जाने जो हिरदे धरत ॥१४७

अनेक स्वरों बाजे बाजें, पड़छंदे भोम सब गाजें ।
सुंदरियां सोभा साजें, सों तो धनीजीके आगे बिराजें ॥१४८

निरत भूखन बाजे गान, देखो ठौर सैंयां सब समान ।
इन लीला में आयो चित्त, छोड़्यो जाए न काहूं कित ॥१४६

छुटकायो भी ना छूटे, तो आतम द्रस्ट कैसे टूटे ।
इत बोहोत लीला कहूं केती, सोई जाने लगी जाए जेती ॥१५०

थंभ दिवालों नंगों तेज जोत, जानों निरत सबों ठौर होत ।
पिया पीछल मंदिर सेत दिवाल, तामें कै रंग नंग विसाल ॥१५१

दाँहिने हाथ मंदिर रंग लाखी, कें कटाव दिबाल दिल साखी ।
बांई तरफ पीली जो दिवाल, माहें स्याम सेत रंग लाल ॥१५२

सामे नीला मंदिर झलकत, साम सामी किरना लरत ।
रह्या नूर नजरों बरस, जुबां क्या कहे धनीको रंग रस ॥१५३

पोहोर रैनी लगे जो खेलावें, पीछे मुख आग्या करके बोलावें ।
इतहीं थें आग्या करी, पांउं लागे सेज्या दिल धरी ॥१५४

दई आग्या सबों बड़ भागी, आइयां मंदिर चरनों लागी ।
श्रीराज स्यामाजी सेज्या पधारे, कोई कोई बस्तर भूखन बधारे ॥१५५

ए मंदिर रंग—परवाली[1], सो मैं क्या कहूं ताकी लाली ।
माहें अनेक रंगोंकी जोत, सो मैं कही न जाए उदद्योत ॥१५६

पीछल बीसक पीउ पासे रहियां, सो भी आइयां घरों सब सैयां ।
पीउजी सबों मंदिरों पधारे, होत सेज्या नित विहारे ॥ १५७

अब क्यों रे कहूँ प्रेम इतकों, सुख लेवें चाह्यो चितको ।
सुख लेवें सारी रात, तीसरी भोम आवें उठ प्रात ॥१५८

अब कहूं या समे की बात, सो तो अति बड़ी विख्यात ।
कोई होसी सनमंधी इन घर, सो लेसी वचन चित धर ॥१५९

ए बानी तिछन अति सार, सो निकसेगी वार के पार ।
सनमंधियों की एही पेहेचान, वाके सालसी[2] सकल संधान[3] ॥१६०

जाको लगी सोई जाने, मुख बरनी न जाए बखाने ।
खेल मांगके आइयां जित, धनी आएके बैठे तित ॥१६१

पासे बैठके खेल देखावें, हांसी करने कों आप भुलावें ।
भूलियां आप खसम वतन, खेल देखाया फिराए के मन ॥१६२

अब केहेती हों साथ सबन, घर जागोगे इन वचन ।
जित मिल कर बैठियां तुम, याद करो आप खसम ॥१६३

---

१. शयन का मन्दिर । २. चुभ जाएगा । ३. जोड़ ।

तले भोम थंभों की जुगत, कही जाए न बानीसों बिगत ।
इत बड़ा चौक जो मध, ताकी अति बड़ी सोभा सनंध ॥१६४

आगे पीछे थंभोंकी हार, दाएँ बाएँ दोऊ पार ।
जोत चारो तरफों जवेर, झलकार छाई चौफेर ।१६५

मंदिर दिवालों थंभों के जो पार, सोभा करत अति झलकार ।
जोत ऊपर की जो आवे, तले की भी सामी ठेहेरावे ॥१६६

इत अनेक बिधों के जो नंग, ताकी किरना देखावें कै रंग ।
आवत साम सामी अभंग, सो मैं क्यों कहूं नूर तरंग ॥१६७

इत याही चौक के बीच, बिछाया है दुलीच ।
दुलीचा भी वाही रसम, ताकी अति जोत नरम पसम ॥१६८

याकी हंसत बेल फूल रंग, सो भी करत जवेरों सों जंग ।
किरना होत न पीछी अभंग, ए भी सोभित जवेरों के संग ॥१६९

इत धरया जो सिंघासन, राज स्यामाजी के दोऊ आसन ।
ताको रंग सोभित कंचन, जड़ें मानिक मोती रतन ॥१७०

पीछले तीन थंभ जो खड़े, ता बीच कै नकसों नंग जड़े ।
तकियों के बीच दोऊ सिरे, ताके फूलन पर नंग हरे ॥१७१

उतरती कांगरी जो हार, बनी आसमानी नंग तरफ चार ।
कै बेल फूल जड़े माहीं, ताकी उठत अनेक रंग झांई ॥१७२

कै रंग नंग कहूं केते, हर एक तरंग कै देते ।
बांई बगलों तकिए दोए, बेलां बारीक बरनन कैसे होए ॥१७३

जो जनम सारेलों कहिए, तो एक नकसको पार न पैए ।
पचरंगी पाटी मोहीं भरी, कै बिध खाजली[1] माहें करी ॥१७४

कै चाकले चित्रकारी, ता पर बैठे श्रीजुगल विहारी ।
दोऊ सरूप चित में लीजे, फेर फेर आतम को दीजे ॥१७५

---

१. चित्रकारी ।

आतमसों न्यारे न कीजे, आतम बिन काहूं न कहीजे ।
फेर फेर कीजे दरसन, आतम से न्यारी न कीजे अधखिन ॥१७६
पेहेले अंगुरी नख चरन, मस्तकलों कीजे वरनन ।
सब अंग वस्तर भूषन, सोभा जाने आतम की लगन ॥१७७
यों सरूप दोऊ चित में लीजे, अंग वार डार के दीजे ।
गलित गात सब भीजे, जीव भान भूंन टूक कीजे ॥१७८
रंग करो विनोद हांस, सांचा सुख ल्यो प्रेम विलास ।
घरों सुख सदा खसम, लेत मेरी परआतम ॥१७९
पर इत सुख पायो जो मेरी आतम, सो तो कबहूं न काहूं जनम ।
इत बैठे धनी साथ मिल, हांसी करने देखाया खेल ॥१८०
आगे बारे सहस्र बैठियां हिल मिल, जानों एकै अंग हुआ भिल ।
याके क्यों कहूं सरूप सिनगार, जाने आतम देखनहार ॥१८१
कै कोट कहूं जो अपार, जुबां क्या कहेगी झलकार ।
जैसे भूखन तैसे बस्तर, तैसी सोभा सरूप सुंदर ॥१८२
इत बड़े चौक मिलावें, धनी साथको बैठे खेलावें ।
जो खेल माग्या है सैयन, सो देखाया फिराएके मन ॥१८३
धनी धाम आप बिसर—जन, खेल देखाया जो सुपन ।
तामें बांधी ऐसी सुरत, सो अब पीछी क्योंए ना फिरत ॥१८४
धनी दिए दरसन ता कारन, करनेको सैयां चेतन ।
धनी आप सैयों को दई सुध, सो हम गावत अनेक बिध ॥१८५
जागियां तो भी खेल न छोड़ें, फेर फेर दुखको दौड़ें ।
धनी याद देत घर को सुख, तो भी छूटे ना लग्यो जो विमुख ॥१८६
अब आप जगाएके धनी, हांसी करसी मिनों मिने घनी ।
अब केहेती हों साथ सबन, घर जागोगे इन वचन ॥१८७
ए जो किया है तुम कारन, धनी धाम सैयां बरनन ।
जित मिलकर बैठियां तुम, याद करो आप खसम ॥१८८

करो अंतरगत गम, ए जो जाहेर देखाया हम ।
याद करो वतन सोई, और न जाने तुम बिना कोई ॥१८९
तुम मांगी धनीपें कर खांत, ए जो धनिएँ करी इनायत[1] ।
याद करो सोई साइत, ए जो बैठके मांग्या जित ॥१९०
स्याम स्यामाजी साथ सोभित, क्यों न देखो अंतरगत ।
पीछला चार घड़ी दिन जब, ए सोई घड़ी है अब ॥१९१
याद करो जो कह्या मैं सब, नीद छोड़ो जो मांगी तब ।
याद करो धनीको सरूप, श्रीस्यामाजी रूप अनूप ॥१९२
याद करो सोई सनेह, साथ करत मिनो मिने जेह ।
सुख सैयां लेवें नित, अंग आतम जो उपजत ॥१९३
रस प्रेम सरूप है चित, कै बिध रंग खेलत ।
बुध जाग्रत ले जगावती, सुख मूल वतन देखावती ॥१९४
प्रेम सागर पूर चलावती, संग सैयोंको भी पिलावती ।
पियाजी कहें *इन्द्रावती, तेज *तारतम जोत करावती ॥१९५
तासों महामत प्रेम ले तौलती, तिनसों धाम दरवाजा खोलती ।
सैयां जानें धाममें पैठियां, ए तो घरहीमें जाग बैठियां ॥१९६

॥ प्रकरण ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ २८२ ॥

## सूरत[2] इस्क पैदा होनेकी

तुमको इस्क उपजावने, करूं सो अब उपाए ।
पूर चलाऊँ प्रेम को, ज्यों याही में छाक[3] छकाए ॥ १
इस्क जिन बिध उपजे, मैं सोई देऊँ जिनस ।
तब इस्क आया जानियो, जब इन रंग लाग्यो रस ॥ २
ए सुख बिसरे धनीय के, इन सुपन भोममें आए ।
सो फेर फेर याद देत हों, जो गया तुमें बिसराए ॥ ३

१. कृपा । २. उपाय । ३. नशा ।

कीजे याद मिलाप धनीय को, और सखियों के सनेह ।
रात दिन रंग प्रेममें, विलास किए हैं जेह ॥ ४

निस दिन रंग मोहोलनमें, साथ स्यामाजी स्याम ।
याद करो सुख सबों अंगों, जो करते आठो जाम ॥ ५

चौकस कर चित दीजिए, आतम को एह धन ।
निमख एक ना छोड़िए, कर मन बाचा करमन ॥ ६

एही अपनी जागनी, जो याद आवें निज सुख ।
इस्क याहीसों आवही, याहीसों होइए सनमुख ॥ ७

इस्क धनी को आवही, याही याद के माँहि ।
इस्क जोस सुख धनी बिना, और पैदा कहूं नाँहि ॥ ८

तार्थे पल पलमें ढिग[1] होइए, सुख लीजे जोस इस्क ।
त्यों त्यों देह दुख उड़सी, संग तज मुनाफक[2] ॥ ९

जो लों इस्क न आइया, तोलों करो उपाए ।
योंहीं इस्क जोस आवही, पल देसी पट उड़ाए ॥ १०

पल पलमें पट उड़त है, बढ़त बढ़त अनूकरम ।
इस्क आए जोस धनी के, उड़ गयो अंतर भरम ॥ ११

निमख निमख में निरखिए, पट न दीजे पल ल्याए ।
छेटी[3] छिन ना पर सके, तब इस्क जोस अंग आए ॥ १२

इस्क पेहेले अनभवी, निज सरूप निजधाम ।
तिन खिन बेर न होवही, धनी लेत असल आराम ॥ १३

बैठे मूल मेले मिने, धनी आगूं अंग लगाए ।
अंग इस्क जो अनभवी, तुम क्यों न देखो चित ल्याए ॥ १४

ए वचन विलास जो पेड़ के, आए हिरदें आतम के अंग ।
तब खिन बेर न लागही, असल चित्त एक रंग ॥ १५

---

१. पास । २. कपटी । ३. दूरी ।

बैठते उठते चलते, सुपन सोवत जागृत ।
खाते पीते खेलते, सुख लीजे सब बिध इत ॥ १६

एह बल जब तुम किया, तब अलबत[1] बल सुख धाम ।
अरस परस जब यों हुआ, तब सुख देवें स्यामा स्याम ॥ १७

जिन जानो ढील[2] इस्क की, जब रस आयो अंतसकरन ।
तब सुख पाइए धाम को, निस दिन रंग रमन ॥ १८

फेर फेर सुरत[3] साधिए, धनी चरित्र सुख चैन[4] ।
इस्क आए बेर कछू नहीं, खुल जाते निज नैन ॥ १९

फेर फेर सरूप जो निरखिए, फेर फेर भूखन सिनगार ।
फेर फेर मिलावा मूल का, फेर फेर देखो मनुहार[5] ॥ २०

फेर फेर देखो धनी हेत[6] की, फेर फेर रंग—विलास[7] ।
फेर फेर इस्क रस प्रेम की, देखो विनोद कै हांस ॥ २१

अंदर धनी के देखिए, एक चित्त हेत रस रीत ।
क्यों कहूं रंग हांस विनोद की, सुख सनेह प्रेम प्रीत ॥ २२

खिन खिन में सुख होएसी, धनी याद किए असल ।
ए सुख आए इस्क, बेर ना लागे एक पल ॥ २३

में जो दई तुमें सिखापन[8], सो लीजो दिल दे ।
*'महामत' कहें ब्रह्म सृष्ट को, सखी जीवन हमारा ए ॥ २४

॥ प्रकरण ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ ३०६ ॥

## वन में सरूप[9] सिनगार

वतन आपनो, ब्रह्म सृष्टि को देऊं बताए ।
धाम की सुध मैं सब देऊं, ज्यों अंतसकरन में आए ॥ १

इन भोम की रेती क्यों कहूं, उज्जल जोत अपार ।
भोम वन आसमान लों, झलकारों झलकार ॥ २

---

१. अवश्य । २. शिथिलता । ३. ध्यान । ४. आराम । ५. खुश करना । ६. प्रीति ।
७. सुखोपभोग । ८. शिक्षा । ९. आतमा ।

जोत जरे इन जिमी की, मावत नहीं आसमान ।
तिन जिमी के वन की, जुबां कहा करसी बखान ॥ ३

इन भोम रंचक रेत की, तेज न माए आकास ।
जो नंग इन जिमी के, क्यों कहे जुबां प्रकास ॥ ४

जोत जिमी पोहोंचे आसमान लों, आसमान पोहोंचे जोत वन ।
सो छाए रही ब्रह्मांड को, सब ठौरों उठत किरन ॥ ५

ए मंदिर झरोखे वन पर, झलकत हैं कै नंग ।
वन फूल फल बेलियां, लगत झरोखों संग ॥ ६

कै रंग नंग झलकत, जिमी झलके दिवालों वन ।
सो छाए रही जोत आसमानमें, पसू पंखी नूर रोसन ॥ ७

जिमी आकास वृख नूर के, पात फूल फल नूर ।
दिवाल झरोखे नूर के, कहा कहूं नूर जहूर[1] ॥ ८

जात अलेखे[2] पंखियों, पसू अलेखे जात ।
जात जात अनगिनती, क्यों कर कहूं विख्यात ॥ ९

पसू पंखी अति सुन्दर, बोलत अमृत रसान[3] ।
सुन्दरता केस परन की, क्यों कर करों बयान ॥ १०

कै बिध वानी बोलहीं, कै बिध जिकर सुभान ।
कै दिन रातों रटत हैं, मुख मीठी कै जुबान ॥ ११

मीठे नैन बैन मुख मीठे, सोभा सुंदर अमान ।
जिन बिध धनी रीझहीं, खेलें बोलें तिन तान ॥ १२

विचित्र वानी माधुरी, वन में गुंजें करें गान ।
चेतन चैन जो चातुरी, क्यों कर करूं बखान ॥ १३

आए दरवाजे आगे खड़े, खेलोंने अति घन ।
स्याम स्यामाजी साथ को, पसू पंखी लेवें दरसन ॥ १४

---

१. प्रकटी करण । २. अनगिनत । ३. बोल ।

ठौर खेलन के चित धरो, बिध बिध के वन मांहि ।
केहेती हों आगूं तुम, जो 'हिरदे चढ़ि चढ़ि आएं'[१] ॥ १५

आगूं धाम के वन भला, जमुना जी सातो घाट
तीन बाएँ तीन दाहिने, बीच जल कठेड़ा पाट[२] ॥ १६

घाट पाट जल ऊपर, अमृत वन है जांहिं ।
इन वन की सोभा क्यों कहूँ, मेरो सब्द न पोहोंचे तांहिं ॥ १७

झीलन स्यामा संग राजसों, साथें किए जल केल ।
इन समे के विलास को, क्यों कहूं रंग रेल ॥ १८

मानिक हीरे पाच पोखरे, नूर तरफ से चारों द्वार ।
चारों खूटों थंभ नीलवी, अंबर[३] भरचो झलकार ॥ १९

ए बारे थंभो चांदनी, सोभित जल ऊपर ।
साथ बैठा सब फिरता, चारों तरफों पसर ॥ २०

सोभा वन संझा समे, फल फूल खुसबोए ।
साथ बैठा पाट ऊपर, बीच सुंदर सरूप दोए ॥ २१

बीच बैठक राज स्यामा जी, साथ गृदवाए घेर ।
साजे सकल सिनगार, सोभा क्यों कहूं इन बेर ॥ २२

साथ बैठा पाट ऊपर, लग कठेड़े भराए ।
जोत करी आकास लों, जानों आकास में न समाए ॥ २३

कै रंग नंग कठेड़े, पड़त जल में झाँई ।
तेज जोत जो उठत, तले मावे न आकास मांहीं ॥ २४

सो झाईं जल लेहेराँ लेवही, तिनसे लेहेराँ लेवे आसमान ।
कै रंग लेहेरें तिनकी, एक दूजी न सके भान ॥ २५

जल में सिनगार सखियन के, लेहेराँ लेवे संग छांहें ।
होंए नीचे ऊँचे आसमान लों, केहेनी अचरज न आवे जुबांए ॥ २६

---

१. स्मरण आना । २. किनारे पर बारादरी । ३. आकाश ।

जेती जुगत पाट ऊपर, सब लेहेरां लेवे माहें जल ।
जानों तले ब्रह्मांड दूजो भयो, भयो आसमान जोत सकल[1] ॥ २७

बन पाट जोत आसमान लों, सब देखत जल माहिं ।
एक नयो अचंभो ए बन्यो, केहेनी में आवत नाहिं ॥ २८

ज्यों ज्यों जल लेहेराँ लेवही, त्यों त्यों तले ब्रह्मांड डोलत ।
कै बिध तेज किरनें उठें, नूर आसमान लेहेराँ लेवत ॥ २९

एक ब्रह्मांड कह्यो न जावही, पर समझाए न निमूना बिन ।
सब्दातीत के पार की, बात केहेनी झूठी जिमी इन ॥ ३०

हर घाटों सोभा कै बिध, कै जुदे जुदे सुख सनंध ।
बन नीके अपना देखिए, रस सीतल वाए सुगंध ॥ ३१

क्यों कहूँ सोभा बन की, और छाए रही फूल बेल ।
तले खेलें सैयां सरूपसों, आवें एक दूजी कंठ मेल ॥ ३२

जिमी बन जुबां न आवही, तो क्यों कहूँ सिनगार जहूर ।
सुंदरता सरूपों की, कै रस सागर भर पूर ॥ ३३

अब क्यों कहूँ जोत सरूपों की, और सुंदरता सिनगार ।
वस्तर भूखन इन जिमी के, हुआ आकास उद्दोतकार[2] ॥ ३४

कै रंग के नकस[3], कै भांत वेल फूल माहिं ।
कै रंग इनमें जवेर, इन जुबां में आवत नाहिं ॥ ३५

इन बेल फूल कै पांखड़ी,[4] तिन हर पांखड़ी कै नंग ।
तिन नंग नंग कै रंग उठें, तिन रंग रंग कै तरंग ॥ ३६

ए स्वाद आतम तो आवही, जो पलक न दीजे भंग ।
अरस परस एक होवही, पर आतम आतम संग ॥ ३७

अब भूखन की मैं क्यों कहूँ, जो इत हैं हेंम मनी ।
कै बिध की इत धात हैं, नंग जात नहीं गिनी ॥ ३८

---

१. सम्पूर्ण । २. प्रकाशमय । ३. चित्रकारी । ४. पत्ती ।

क्यों कहूँ इन बानी की, मुख से उचरतजे ।
मीठी मीठी मुसकनी, सब भीगे इस्क के ॥ ३९

हंसत नेत्र मुख नासिका, श्रवन हंसत चरन ।
भों भृकुटी गाल अधुर, हँसत सिनगार भूषण ॥ ४०

चाल चातुरी कहा कहूँ, लटक चटक भरे पाए ।
मटके अंग मरोर के, कछू ए गत कही न जाए ॥ ४१

ए सुख सरूपों की मुसकनी, रंग रस गत मुख बान ।
ए भोम वन धनी धाम को, रेहेस लीला नित्यान[१] ॥ ४२

अब क्यों कहूँ भूखन की, और क्यों कहूँ वानी मिठास ।
क्यों कहूँ रेहेस जो पोउ को, जो अंग अंग में उल्लास । ४३

इन जिमी इन वन में, करें खेल सरूप जो एह ।
कहा कहूँ इन विलास की, जो करत प्रेम सनेह ॥ ४४

कै रंग रेहेस संग धनी के, केते कहूँ विलास ।
प्रेम प्रीत सनेह कै रीति, मीठी मुसकनी कै हांस ॥ ४५

नैन सों नैन लेत रंग सैनें[२], अरस परस उछरंग[३] ।
उर मुख नेत्र कर कंठ, यों सुख सब बिध अंग ॥ ४६

बंके[४] नैन समारे सर[५] बंके, बंकी सारस भों बंकी ।
बंके बैन लगत बान बंके, बंकी चलत बंक लंकी[६] ॥ ४७

रस लेत धाम के सरूपसों, एक दूजी को ठेल ।
बिविध विहार[७] अलेखे अंगे, क्यों कहूँ खुसाली खेल ॥ ४८

अंग इस्क इन भोम[८] के, अलेखें अंग असल ।
कै रंग रस सरूपसों, जुदे जुदे या सामिल ॥ ४९

कहा कहूँ वस्तर भूषन की, नूर रोसन जोत उजास ।
स्याम श्यामाजी साथ की, अंग अंग पूरत आस ॥ ५०

---

१. हमेशा । २. संकेत । ३. प्रसन्नता । ४. तिरछे । ५. बाण । ६. कमर । ७. क्रीड़ा ।
८. भूमि, मंजिल ।

ए जोत सोभा सुंदर, देखिए हिरदें में आन ।
भर भर प्याले पीजिए, देख केहे सुन कान ।। ५१
भोम बन तलाव सोभित, कुंज बन बीच मंदर ।
कहा कहूँ गलियन की, छाया प्रेमल सुंदर ।। ५२
नरमाई इन रेत की, उज्जल जोत सुपेत ।
खुसबोए कही न जावही, निकुंज बन या रेत ।। ५३
सोभा पाल[1] तलाव की, कही न जाए जुबां इन ।
बन देहुरी जल मोहोल की, रोसन रोसन में रोसन ।। ५४
देहुरियां सोभित ताल की, पाल पांवडियां[2] अंदर ।
सोभा कहा कहूँ सब जड़ित की, बीच मोहोल जल ऊपर ।। ५५
जुदी जुदी जुगतें सोभित, बन मोहोलों लिया घेर ।
गृद झरोखे नवों भोम के, बीच धाम बन चौफेर ।। ५६
याही भांत अक्षर की, बीच बन गलियां जानवर ।
खेल खेलें अति सोहने, क्यों बरनों सोभा दोऊ घर ।। ५७
साम सामी दोऊ दरबार, उठत रोसनी नूर ।
क्यों कहूँ इन जुबानसों, करें जंग दोऊ जहूर ।। ५८
आगूं बड़े द्वार के, बीस थंभ तरफ दोए ।
रंग पांचो नूर जहूर के, ए सिफत किन मुख होए ।। ५९
द्वार आगूं दोए चबूतरे, दोए तले बीच चौक ।
हरा लाल दोऊ पर दरखत, *हक *हादी *रूहों ठौर सौक[3] ।। ६०
भोम बन आकास का, अवकास न माए उजास ।
कछुक आतम जानही, सो कह्यो न जाए प्रकास ।। ६१
*महामत कहें बन धाम का, बिध बिध दिया बताए ।
जो होसी ब्रह्म सृष्ट का, ए बान फूट निकसे अंग ताए ।। ६२

।। प्रकरण ।। ५ ।। चौपाई ।। ३६८ ।।

---

१. किनारा (बाँध) । २. सोढ़ियाँ । ३. रुचि ।

जमुना जोए किनारे सात घाट ॥ केल का घाट

कतरे[1] कै केलन के, लटक रहे जल पर ।
आगे पीछे कोई नहीं, सब सोभित बराबर ॥ १

दिवालां थंभन की, नरमाई अतंत ।
छाया पात गली मंदिरों, तले उज्जल रेत चिलकत[2] ॥ २

कै चौक ठौर खेलनके, छाया पात सीतल ।
खूबी जुबां ना केहे सके, रेत मोती निरमल ॥ ३

कच्चे पक्के केलो कतरे, एक खूबी और खुसबोए ।
जुदी जुदी जिनसों सोभित, सुंदर चौक में सोए ॥ ४

सैयां आवत झीलन को, निकस मंदिरों द्वार ।
ए समया कह्यो न जावही, सोभा सिफत अपार ॥ ५

ए घाट पोहोंच्या बड़े बन को, जित हिंडोलों हींचत ।
उत चल्या किनारे जमुना, हद लिबोई से इत ॥ ६

घाट लिबोई[3] का

छत्रियां लिबोइअनकी, सुगंध सीतल अति छांहें ।
पेड़ जुदे जुदे लंबी डारियां, मिल गैयां माहों माहें ॥ ७

कै बिध के फल लटकत, जल पर बनी जो हार ।
लटके जवेर जड़ाव ज्यों, ऐसी बनकी रची किनार ॥ ८

या बिध फल छाया मिने, बनसें झूमत अंदर ।
कहूं हारें कहूं फिरते, कै रंग चंद्रवा[4] सुंदर ॥ ९

सोभा तले रेतीय की, कहा कहूं छाया ऊपर ।
कही न जाए लिबोई घाट की, सोभा अचरज तले भीतर ॥ १०

पेड जुदी जुदी गेहेरी छाया, सब पेड़ों छत्री एक ।
देख देख के देखिए, जानों सबसे ए ठौर नेक ॥ ११

१. गुच्छे । २. चमकती । ३. नींबू । ४. शामियाना ।

धाम छोड़ आगे चल्या, तरफ चेहेबच्चे[1] पास ।
इन बन की सोभा क्यों कहूँ, इत नित होत विलास ॥ १२

जब खेलें इत सखियां, स्याम स्यामाजी संग ।
तब सोभा इन बन की, लेत अलेखे रंग ॥ १३

घाट अनार का

ए बन खूबी देत है, चल्या दोरी बंध हार[2] ।
फल नकस की कांगरी, लटकत जल अनार ॥ १४

केतीक छाया जल पर, केतीक[3] छाया वार[4] ।
ए दोऊ बराबर चली, जमुना बांध किनार ॥ १५

घाट अनार को अति भलो, एकल छत्री सब जान ।
घट बढ़ काहूँ न देखिए, छाया गेहेरी सब समान ॥ १६

जो जहां घाट वन देखिए, जानों एही बन विसेक ।
एक से दूजा अधिक, सो कहां लों कहूँ विवेक[5] ॥ १७

कहूँ फूल कहूँ फल बने, कहूँ पात रहे अति वन ।
जुदी जुदी जुगतें मंडप, जानों बहु रंग मनो कंचन ॥ १८

इन पेड़ों खूबी[6] क्यों कहूँ, देख बन होइए खुसाल ।
रोसन रेत खुसबोए बन, आए लग्या दिवाल ॥ १९

अमृत वन[7]—घाट पाट का

दोऊ पुलों के बीच में, सोभित सातों घाट ।
तीन बांए तीन दांहिने, बीच थंभ चांदनी पाट ॥ २०

अमृत बन अति सोभित, घाट पाट का जे ।
आगूं दरवाजे निकट, बन बन्या जो सुंदर ए ॥ २१

फै रंग के इत बृख हैं, नीले पीले सेत लाल ।
क्यों कहूँ सोभा इन मुख, जाकी पूरन सिफत कमाल ॥ २२

---

१. छोटा तलाब । २. कतार, पंक्ति । ३. कुछ । ४. नदी के इस किनारे पर । ५. यथार्थ ज्ञान । ६. विशेषता । ७. आम और मेवों का बन ।

अखोड़[1] अंजीर बन अमृत, ऊपर छाया अंगूर ।
एक छाया पात दिवाल लों, क्यों कर बरनों ए नूर ॥ २३
कै रंग हैं एक पात में, कै रंग हैं फूल फल ।
अब क्यों बरनों मैं इन जुबां, कै बन हैं सामिल ॥ २४
केते रंग एक पात में, केते रंग एक फूल ।
केते रंग एक फल में, केते रंग डाल मूल ॥ २५
ए बन जोत इन भांत की, रोसन करत आसमान ।
आप अपना रंग ले उठत, कोई सके न काहूं भान ॥ २६
कै मेवे इन बन में, केती कहूँ जिनस ।
जुदे जुदे स्वाद कै बिध के, जानो एक से और सरस ॥ २७
इन पेड़ों खूबी क्यों कहूँ, देख बन होइए खुसाल ।
ए रेत रोसन खुसबोए बन, ए निरखत बदले हाल ॥ २८

घाट जांबू का

निकट घाट पाट के, सोभित है अति बन ।
इन मुख खूबी क्यों कहूँ, छत्रियां जांबूअन ॥ २९
गेहेरी छाया अति निपट[2], देखत नहीं आसमान ।
जमुना धाम के बीच में, बन सोभा अमान[3] ॥ ३०
एक मंडप जानों चंद्रवा, कहूँ ऊँचा नीचा नाहिं ।
ए सोभा जुबां ना केहे सके, होंस रहत दिल मांहिं ॥ ३१
अनेक रंग इन ठौर के, क्यों कहूँ इनका नूर ।
रोसन जिमी प्रफुलित, क्यों कहूँ जुबां जहूर ॥ ३२
एह सिफत न जाए कही, जिन बन कबूं न जवाल[4] ।
ए जुबां खूबी तो कहे, जो कोई होवे इन मिसाल ॥ ३३
सिफत न होवे रेत की, ना होवे बन सिफत ।
जो कछू कहूँ सो उरे रहे, मेरी जुबां ना पोहोंचत ॥ ३४

१. अखरोट । २. बिल्कुल । ३. असीम । ४. कमी, अवनति ।

## घाट नारंगी का

चार हार फल की बनी, जल पर दोरी बंध ।
तलें सात सात की कांगरी, माहें नकस कै सनंध ॥ ३५
खुसरंग फल नारंग के, पीलक लिए रंग लाल ।
झांईं उठे माहें जल, ए सोभित इन मिसाल ॥ ३६
नारंग बन की छत्रियां, जाए लगीं बट घाट ।
फल फूल पात जड़ित ज्यों, जानों रच्यो अचंभो ठाट ॥ ३७
एकल छाया रेती रोसन, पूरन सिफत कमाल ।
और अनेक बन आगूं भला, ए हद छोड़ चल्या दिवाल ॥ ३८
इन बन की सोभा अति बड़ी, आवत आतम में जोए ।
इन नैन श्रवन के बल थें, मुखसे न निकसे सोए ॥ ३९
इन बन सोभा अपार है, कछु आतम उपजत सुख ।
इनको हिस्सो लाखमों, कह्यो न जाए या मुख ॥ ४०

## घाट बट को

जो बट बन्यो जमुना पर, अनेक तिनकी डार ।
निपट पसारा इनका, जित बैठ करत सिनगार ॥ ४१
ऊंचा निपट देहुर ज्यों, तले हाथों डारी लगत ।
डारों डारी अति विस्तरी, सुमार न इन सिफत ॥ ४२
जानों थंभ दिए बडवाईके, फिरते हार चार ।
सोभा लेत पात फूल, ए बट बड़ो विस्तार ॥ ४३
छत्री पांच उपरा ऊपर, जानों रचियां भोम समार ।
एक भोम रेती तले, ऊपर भोम बट चार ॥ ४४
एक पड़त झरोखे जल पर, और तरफ सब बन ।
ऊपर भोम धाम देखिए, दसों दिसा नूर रोसन ॥ ४५
इत बोहोत ठौर खेलन के, कै जिनसें तले ऊपर ।
बैठत दौड़त कूदत, खेलत कै हुनर ॥ ४६

ठेकत हैं कै जल में, और कूद चढ़ें कै डार ।
खेल करें कै भांत सों, सब अंगों चंचल हुसियार ॥ ४७

तरफ चारों फिरते हिंडोले, उपली लग भोम जोए ।
धाम तलाव जमुना नारंगी, सखियां हींचत बट पर सोए ॥ ४८

अनंत सोभा इन घाट की, छाया चली जल पर ।
ए बट या और बृख, जल छाए लिया बराबर ॥ ४९

घाट बट को अति बड़ो, जल लिएं चल्यो किनार ।
कै बन इत बहु बिध के, जानों बने दोरी बंध हार ॥ ५०

सातों घाट ए कहे, आगे पुल कुंज वन ।
अपना खजाना एह है, 'महामत' कहें मोमन ॥ ५१

॥ प्रकरण ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ ४१९ ॥

## कुंज बन मंदिर लिखे हैं

सातो घाट बीच में, पुल मोहोल तरफ दोए ।
दोऊ पांच भोम छठी चांदनी, क्यों कहूँ सोभा सोए ॥ १

साम सामी झरोखे, झलकत अति मोहोलात ।
पुल दोऊ दूजी किनार लग, बीच जल ताल ज्यों सोभात ॥ २

तले दस घड़नाले पोरियां, बीच नेहेरें ज्यों चलत ।
स्याम स्यामाजी सखियां, इन मोहोलों आए खेलत ॥ ३

खेल करें जब इन मोहोलों, धनी सुख देत सैंयन को ।
कै विध खेल कहूँ केते, आवें ना जुबां मों ॥ ४

इन मोहोल आगूं घाट केलका, इस तरफ आगूं बट घाट ।
तीन बाएं तीन दाहिने, बीच घाट चांदनी पाट ॥ ५

सात घाट को लेयके, आगूं आए अरस द्वार ।
इत पसू पंखी कै खेलत, ए सिफत न आवे सुमार ॥ ६

चल्या गया बन ताललों, एकल छत्री अति भिल ।
तलाव धाम के बीच में, आगूं निकस्या चल ॥ ७

जमुना धाम तलाव के, बीच में कै विवेक ।
कुंजवन मंदिर कै रंगों, कहा कहूं रसना एक ॥ ८

उज्जल रेती मोती निरमल, जोत को नाहीं पार ।
आकास ना मावे रोसनी, झलकारों झलकार[1] ॥ ९

कै पुरे इन वन में, तिनके बड़े द्वार ।
तिन द्वार द्वार कै गलियां, तिन गली गली मंदिर अपार ॥ १०

कै मंदिर इत फिरते, कै चारों तरफों मंदर ।
तिनमें कै विध गलियां, निकुंज वन यों कर ॥ ११

मंदिर दिवालें गलियां, नकस फल फूल पात ।
मंदिर द्वार देख देख के, पलक न मारी जात ॥ १२

कै पुरे कै छूटक, कै गलियों बने हुनर ।
या गलियों या मंदिरों, सब छाया बराबर ॥ १३

इन वन बोहोतक बेलियां, सोभा अति सुंदर ।
फल फूल पात कै रंगों, या बाहेर या अंदर ॥ १४

कै छलकत जल चेहेबच्चे, करत झीलना जाए ।
अनंत खूबी इन वन की, क्यों कहूँ इन जुबांए ॥ १५

फूल पात जो कोमल, कोई रगें तिनमें नांहि ।
तिनके सेज चबूतरे, कई बने जो मोहोलों मांहि ॥ १६

इत कै रंग जवेरन के, तिन कै रंगों कै नूर ।
ए मिसाल इनकी, आकास न माए जहूर ॥ १७

कै बन स्याह[2] सुपेत[3] हैं, कै बन हैं नीले ।
कै वन लाल गुलाल हैं, कै बन हैं पीले ॥ १८

कै वन हैं एक रंग के, कै एक एक में रंग दस ।
इन विध कै अनेक हैं, कै जुदे जुदे रंगों कै रस ॥ १९

---

१. चमक । २. काले । ३. सफेद ।

फल फूल छाया पात की, खुसबोए जिमी और वन ।
आकास भरयो नूरसों, किया रेत वन रोसन ।। २०

अनेक मेवे कै भांतके, सोए कहूँ क्यों कर ।
नाम भी अनेक मेवनके, और स्वाद भी अनेक पर ।। २१

कै मीठे मीठे मीठरड़े, कै फरसे[1] फरसे मुख पर ।
कै तीखे तीखे तीखरड़े, कै खट्टे खट्टे खट्टबर[2] ।। २२

इन एक एक में कै रस, रस रस में अनेक स्वाद ।
इन विध मेवे अनेक रस, सो कहां लों बरनों आद[3] ।। २३

कै मेवे हैं जिमी में कै बेलियों दरखत ।
कै मेवे फल की खलड़ी[4], कै रस बीज में उपजत ।। २४

बोहोत रेती इन ठौर है, निपट सेत उज्जल ।
खेल खुसाली होत है, सखियां पांउं चंचल ।। २५

इत कै चौक छाया मिने, कहूँ चांदनी चौक ।
स्याम स्यामाजी सखियन सों, खेल करें कै जौक[5] ।। २६

क्यों कहूँ वनकी रोसनी, सीतल वाए खुसबोए ।
ए जुबां ना केहे सके, जो सुख आतम होए ।। २७

इन वन की हद धामलों, और झरोखों दिवाल ।
इन वन में कै हिंडोले, होत रंग रसाल ।। २८

चौक चार उपरा ऊपर, बट पीपल बखान ।
बराबर थंभ छातें, ठौर सोभित सब समान ।। २९

घाट के दोऊ तरफ पुल, मिले दोऊ तरफों इन ।
वन नारंगी चंद्रवा, पोहोंच्या दिवालों रोसन ।। ३०

चार थंभ बराबर सोभित, उपरा लग ऊपर ।
घट बढ़ ना दोऊ तरफों, ए सोभा अति सुंदर ।। ३१

---

१. फीके । २. बहुत खट्टे । ३. आरम्भ । ४. छिलका । ५. आनन्द ।

द्वार समान सब देखत, ऊपर सोभा अपार ।
माहें खट—छपरें[1] वन की, हिंडोले छातें चार ॥ ३२
कै हिंडोले एक छातें, छातें छातें खट अनेक ।
चारो तरफों हार देखिए, जानों एक थें एक विसेक ॥ ३३
*राज *स्यामाजी सखियां, जब इत आए हींचत ।
इन समे वन हिंडोले, सोभा क्यों कर कहूँ सिफत ॥ ३४
जवेर भी रस जिमी के, और जिमीको रस बन ।
नरमाई फूल पात अधिक, नातो दोऊ बराबर रोसन ॥ ३५
चढ़ आवत बादलियां, सेहेरें घटा तरफ चार ।
इन समे वन सोभित, माहें बिजलियां चमकार ॥ ३६
बोए आवे सुगंध सीतल, उछरंग होत मलार ।
गाजत गंभीर मीठड़ा, इन समे सोहे सिनगार ॥ ३७
हंस चकोर मैंना कोइली,[2] करें वनमें टहुंकार ।
बोलें बपैया[3] बांबी[4] दादुर[5], करें तिमरा[6] भमरा[7] गुंजार ॥ ३८
हिंडोले हजार बारे, स्याम स्यामाजी हींचत ।
अखंड सुख धनी धाम विना, कौन देवे इन समे इत ॥ ३९
ए निकुंज वन सब लेयके, जाय पोहोंच्या ताल ।
जमुना धाम के बीच में, ए वन है इन हाल ॥ ४०
जित बोहोत रेती मोती पतले, गड़त घूटन लों पाए ।
इत सबे मिल सखियां, रब्द गुलाटें खाएँ ॥ ४१
इत बोहोत रेतीमें सखियां, दौड़ दौड़ देत गुलाटें ।
कूदें दौड़ें ठेकत हैं, रेत उड़ावें पांउं छांटें ॥ ४२
कबूं दौड़त राज सखियां, सबे मिलके जेती ।
हांसी करत जमुना त्रट, जित बोहोत गड़त पांउं रेती ॥ ४३

---

१. तिनको से बनी छत । २. कोयल । ३. पपीहा । ४. एक कीड़ा । ५. मेढ़क । ६. पतंगा । ७. भौंरा ।

अनेक रामत रेतीय में, बहुविध इन ठौर होत ।
ए वन *स्याम *स्यामाजीको, है हांसीको उद्योत ।। ४४

कहूं कहूं सखियां ठेकत, माहें रेती रब्द कर ।
पीछे हँस हँस ताली देयके, पड़त एक दूजी पर ।। ४५

एकल छत्री सब वनकी, भांत चंद्रवा जे ।
फेर फेर उमंग होत है, ठौर छोड़ी न जाए ए ।। ४६

फेर फेर इतहीं दौड़त, कहूं ठेकत दौड़त गिरत ।
सब सखियां मिल तिन पर, फेर फेर हांसी करत ।। ४७

केते खेल कहूं सखियन के, जो करत वन नित्यान ।
खेल करें स्याम स्यामाजी, सखियों खेल अमान ।। ४८

'महामत' कहें ऐ मोमनों, देखो ताल पाल के वन ।
ए लीजो तुम दिल में, करत हों रोसन ।। ४९

।। प्रकरण ।। ७ ।। चौपाई ।। ४६८ ।।

### हौज कौसर ताल जित जोए कौसर मिली

अब कहूं मैं ताल की, अंदर आए सको सो आओ ।
जो होवे रूह अरस की, फेर ऐसा न पावे दाओ ।। १

एक हीरे की पाल है, तिनमें कै मोहोलात ।
गृद देहुरी कै बन हैं, क्यों कहूं फल फूल पात ।। २

जब आवत इत अरससे, चढ़िए इन घाट ताल ।
चबूतरे दोए देहुरी, सीढ़ियां चढ़त होत खुसाल ।। ३

ए जो कही दो देहुरी, तिन बीच पौरी दोए ।
एक आगूं चबूतरा, दूजी आगूं देहुरी सोए ।। ४

इतथें सीढ़ियां चढ़ती, ऊपर आए पोहोंची किनार ।
दोऊ तरफ दोए चबूतरे, बीच चौक खूंटों चार ।। ५

ए बड़ा घाट तरफ अरसके, फिरते तीन घाट तरफ और ।
बने गृदवाए पाल पर, जुदी जिनसों चारों ठौर ।। ६

ताल बीच टापू[1] बन्यो, मोहोल बन्यो तिन पर ।
तिन गृदवाए जल है, खूबी हौज कहूँ क्यों कर ॥ ७

नेक कहूँ तिनका बेवरा, चारो तरफ बन पाल ।
अव्वल बड़े घाट से, एजो हौज कौसर कह्या ताल ॥ ८

जो झुंड ताल की पाल पर, ऊँचा अतंत है सोए ।
फेर आए लग्या भोम सों, इन जुबां सोभा क्यों होए ॥ ९

एह झुंड है घाट पर, और पाल ऊपर सब वन ।
फिरता आया झुंड लों, पोहोंच्या पांवड़ियों रोसन ॥ १०

और झुंड जो दूसरा, तरफ दाहिनी सोए ।
छे छातें सीढ़ियों पर, बांधी मिल कर दोए ॥ ११

जो कहे झुंड दोऊ तरफ के, दोए दोए चबूतरे किनार ।
चौथे हिस्से चबूतरे, हार फिरवली[2] खूंटों चार ॥ १२

चौक बीच आए जब देखिए, दोऊ तरफ बने दोऊ द्वार ।
दोए द्वार दोए सीढ़ियों, चौक सोभित अति अपार ॥ १३

एक एक बाजू चबूतरे के, तिनके हिस्से चार ।
दो हिस्से खूंट दो दिवालों, और दो हिस्सों बीच द्वार ॥ १४

चार खूंने[3] दोए चबूतरे, दोऊ तरफों चौथे हिस्से ।
तरफ आठ पेड़ दिवाल ज्यों, सोभा कही न जाए मुख ए ॥ १५

इसी भांत दोऊ चबूतरे, चारो खूंटो पेड़ दिवाल ।
जब देखिए बीच चबूतरे, चार द्वार इसी मिसाल ॥ १६

खूंट आठों दोऊ चबूतरे, और आठों बने द्वार ।
सोले दिवालें हुई सब, सोभा लेत पेड़ों हार ॥ १७

जानों तीनों चौक बराबर, बारे द्वार देखाई देत ।
चार चार द्वार चबूतरे, दो सीढ़ियों पर सोभा लेत ॥ १८

---

१. द्वीप । २. घूम गई । ३. कोना ।

दस द्वार हुए हिसाब के, हुए बारे देखन मों ।
देखे बीच तीनों चौक से, ए किन मुख खूबी कहों ॥ १९

दोऊ तरफ देहुरियां पाल पर, पेड़ सीढ़ियों के लगती ।
दो सीढ़ी ऊपर आगू द्वारने, चौक आगूं देत खूबी ॥ २०

एक तरफ एक सीढ़ियों, सामी दूजी के मुकाबिल ।
इसी भांत तरफ दूसरी, सोभा कहा कहे इन अकल ॥ २१

एक एक सीढ़ियों पर, तरफ दूसरी पेड़ दिवाल ।
तरफ तीसरी पाल पर, चौथी तरफ मोहोल ताल ॥ २२

दो देहुरी सोभा लेत हैं, ताल के खूंटों पर ।
द्वार सामी टापूअ के, दोरी बंध बराबर ॥ २३

दोऊ तरफों दो देहुरी, उतरती जल पर ।
तिन आगूं दोए चबूतरे, सो आए छात अंदर ॥ २४

ए जो कही दोए देहुरी, बीच ऊपर दोए मेहेराब ।
तीनों घाट इन विध, सोभित बिना हिसाब ॥ २५

ए जो पांवड़ियां घाटों पर, जड़ाव ज्यों झलकत ।
अनेक रंगों किरनें उठें, नूर आसमान लेहेरां लेवत ॥ २६

और सीढ़ियां जो बाहेरकी, छात आई लग तिन ।
बने छज्जे उपरा ऊपर, ठौर खुसाली खेलन ॥ २७

ए घाट अति सोहना, चबूतरे बुजरक ।
अति बिराज्या झुंड तले, ऊपर छातें इन माफक[1] ॥ २८

जब हक आवत तालको, आए विराजत इत ।
सो खेल जल का करके, ऊपर सौक को बैठत ॥ २९

पीछे तले या ऊपर, रंग भर रूहें खेलत ।
ए खुसाली खावंद की, जुबां क्या करसी सिफत ॥ ३०

---

१. अनुसार ।

कै रंग इन दरखतों, अनेक रंग इन पात ।
अनेक रंग फल फूल में, याकी इतहीं होवे बात ॥ ३१

इन ठौर रेती नहीं, एक जवेर को बंध ।
खुसबोए नूर अतंत, क्यों कहूँ सोभा सनंध ॥ ३२

पाल हीरे की उज्जल, ऊपर रोसन वन छांहें ।
तिनसे पाल सब रोसन, जिमी हरी पाच देखाए ॥ ३३

ए बन बांई तरफ का, बन्या दोऊ भर पाल ।
देत नूर आकास को, सोभा लेत अति ताल ॥ ३४

अंदर देहुरियां पाल पर, ऊपर वन विराज्या आए ।
ए सोभा वन लेत है, ए खूबी कही न जाए ॥ ३५

ऊपर पाल जो देहुरी, फिरती आगूं गृदवाए ।
तिन सबों आगूं चबूतरा, तिन दोऊ तरफों उतराए ॥ ३६

यों देहुरी सब चबूतरों, तिन सीढ़ियां सबको ।
हर देहुरी हर चबूतरे, सीढ़ियां दोऊ तरफों ॥ ३७

दो सीढ़ियों के बीच में, तले चबूतरे द्वार ।
तिन सब सीढ़ियों परकोटे, चढ़ती कांगरी दोऊ किनार ॥ ३८

सीढ़ियों पर जो चबूतरे, तिन तले सब मेहेराब ।
मेहेराब आगूं जो चबूतरा, सोभित है ढिग आब ॥ ३९

दो दो सीढ़ियों के बीच में, ए जो छोटे कहे दो द्वार ।
तिन पर अजब कांगरी[1], अति सोभित पाल अपार ॥ ४०

पाल ऊपर जो देहुरी, बीच कठेड़ा सबन ।
ए बैठक सोभा लेत है, कहा कहूं जुबां इन ॥ ४१

घाट बांईं तरफ नव देहुरी का

घाट बांईं तरफका, चौथे हिस्से तक ।
ऊपर झुंड बिराजिया, अति सोभा बुजरक ॥ ४२

१. किनारा ।

ऊपर बनी नवदेहुरी, फिरते आए तले आठ थंभ ।
अदभुत बन्या है कठेड़ा, ए बैठक अति अचंभ ॥ ४३
उतरती दोए देहुरी, तिन तले दोए चबूतर ।
बीच उतरती सीढ़ियां, तले चौक पानी भीतर ॥ ४४
फेर कहूं इनका बेवरा, ज्यों जाहेर सबों समझाए ।
अब कहूं इन भांतसों, ज्यों मोमिनों हिरदे समाए ॥ ४५
पेड़ चार चारों तरफों, छाया सोभा लेत अतंत ।
हार किनार बराबर, इत ज्यादा दो दरखत ॥ ४६
नव चौकीका मोहोलजो, ए बड़ी ठौर बीच पाल ।
चौथा हिस्सा पाल का, हुई देहुरी आगूं पड़साल ॥ ४७
इतथें उतरती सीढ़ियां, दाएँ बाएं दो देहुरी ।
हुए तीनों चौक बराबर, सीढ़ियां इतथें तले उतरी ॥ ४८
देहुरी तले जो चबूतरे, चौक दूजा याही बराबर ।
जल ऊपर जो चबूतरा, आईं सीढ़ियां इत उतर ॥ ४९
अब घाट छोड़ आगे चले, क्यों कहूं खूबी ए ।
एक छाया सब पाल पर, और छाया पाल से उतरती जे ॥ ५०
और हार दोऊ उतरती, लगती तीसरी तले वन ।
इन विध पेड़ बराबर, गृदवाए सवन ॥ ५१
डारी लटकी जल पर, पेड़ गृद देहुरी हार ।
और पेड़ डारों डारी मिली, यों फिरती पाल किनार ॥ ५२

## घाट सोले देहुरी का

जमुना तरफ ताल के, जित जल मिल्या माहें जल ।
देहुरियां इन बंध पर, जल पर सोभित महल ॥ ५३
तले जाली द्वारें पाल में, जित जल रह्या समाए ।
इत बैठ झरोखों देखिए, जानों पूर आवत हैं धाए ॥ ५४

चार देहुरियां लग लग, चारो तरफों चार चार ।
सोले बंध पर देहुरी, थंभ पच्चीस पांच पांच हार ।। ५५

पच्चीस थंभ ऊपर कहे, तले सोले थंभ गृदवाए ।
सो पोहोंचे दूजी भोम में, भोम बीच की अति सोभाए ।। ५६

इत कठेड़ा चारों तरफों, बीच कठेड़ा और ।
इन बीच चारो हांसों कुंड बन्या, जल जात चल्या इन ठौर ।। ५७

इत खुली भोम जल ऊपर, चारो तरफों बराबर ।
चारो हिस्से हर तरफों, आधी खुली जिमी जल पर ।। ५८

ऊपर बैठक तले जल, ए जो कह्या कठेड़ा गृदवाए ।
इत आए जब बैठिए, तले जल अति सोभाए ।। ५९

चारो तरफों कुंड ज्यों, इत देत खूबी अति जल ।
हा हा ए बात करते मोमन, रूह क्यों न जात उत चल ।। ६०

चार देहुरी आगूं चबूतरा, तिन तले घड़नाले चार ।
तिन बीच चारों झरोखे, करें पानी ऊपर झलकार ।। ६१

आगूं पांच थंभ ऊपर चबूतरा, इसी भांत झरोखों पर ।
सोभा लेत चारों झरोखे, थंभ तले ऊपर बराबर ।। ६२

ऊपर दोऊ तरफों सीढ़ियां, दोऊ तरफ उतरते द्वार ।
इत आया तले का चबूतरा, परकोटे सोभें दोऊ पार ।। ६३

जो अंदर चारों घड़नाले, आगूं चबूतरा जल पर ।
तले जल जाली बारों आवत, सोभा इन घाट कहूं क्यों कर ।। ६४

सीढ़ियों ऊपर जो चबूतरा, बने चारों झरोखे जे ।
इत आगूं सबके कठेड़ा, अति बन्या ताल पर ए ।। ६५

सोभा जल जो लेत है, भरयो नूर रोसन आकास ।
बीच लेहेरें लगें मोहोलनको, ए क्यों कहूं खूबी खास ।। ६६

खेलत जुदी जुदी जिनसों, इत पांउ ना भोम लगत ।
इत खेलें रूहें पाल पर, कै विध दौड़त कूदत ।। ६७

ए भोम इन विध की, पांउं न खूंचत रेत ।
खेलत हैं इत रूहें, नए नए सुख लेत ॥ ६८
आगूं बन इन घाट के, अतंत सोभा लेत ।
तीसरे घाट के झुंड में, खेलें खावंद रूहों समेत ॥ ६९

## घाट तेरे देहुरीका

देहुरी चौथे घाटकी, देखें पाइए अति सुख ।
झुंड बन्या इन ऊपर, खूबी क्योंकर कहूं या मुख ॥ ७०
चौक पर फिरती चांदनी, आठ देहुरी गिरदवाए ।
पांच देहुरियां बीचमें, तले आठ थंभ सोभाए ॥ ७१
तले फिरता कठेड़ा, चारों तरफों द्वार ।
तले उतरती सीढ़ियां, जल माहें करें झलकार ॥ ७२
जल पर दोए चबूतरे, ऊपर चढ़ती देहुरी दोए ।
आए पोहोंची थंभनको, अति सोभा घाट पर सोए ॥ ७३
फेर इन का भी कहूं बेवरा, ज्यों हिरदे आवे मोमन ।
ए चौथा घाट अति सोहना, सुख होए अरस रूहन ॥ ७४
तेरे चौकी बीच पालके, आगे पालैकी पड़साल ।
गिरद चौकी चार वृक्षकी, सोभित झुंड कमाल ॥ ७५
उतरी सीढ़ियां पड़सालसे, चौक हुआ बीच इत ।
दोऊ चौक दाएं बाएं बने, बीच दोए देहुरी जित ॥ ७६
इतथें आगूं सीढ़ियां, दोऊ चबूतरों बराबर ।
इत चौक होए सीढ़ी उतरी, तले आए मिलो चबूतर ॥ ७७
मोमन होए सो देखियो, तुमारा दिल कह्या अरस ।
चारों घाट लीजो दिलमें, दिल ज्यों होए अरस परस ॥ ७८
ए पाल सारी इन भांतकी, कै विध खेल होत इत ।
या घाटों या पाल पर, हक रूहें खेल करत ॥ ७९

खूबी अजब इन वन की, जो वन ऊपर पाल ।
देहुरियां उलंघ के, डारें लटक रहीं माहें ताल ॥ ८०

ऊपर पाल तलाव के, ऊंचा वन अमोल ।
जिनकी लंबी डारियां, तिनमें बने हिंडोल ॥ ८१

अंदर किनारे पाल पर, देहुरियां बराबर ।
सोभित किनारे गिरदवाए, अति सोभा सुंदर ॥ ८२

ऊपर वन बुजरग, कै हिंडोलों हींचत ।
कै डारी वन झूमत, कै विध खेल करत ॥ ८३

फिरते आए घाट लग, चारों घाट बराबर ।
कम ज्यादा इनमें नहीं, अब देखो पाल अंदर ॥ ८४

आगूं फिरता चबूतरा, हाथ लगता आब ।
लग लग द्वार ऊपर बने, जिन बिध होत मेहेराब ॥ ८५

ताल में द्वार लग लग, पौरें बनी बीच पाल ।
झलकत हैं थंभ अगले, सोभा लेत है ताल ॥ ८६

अब क्यों कहूं पाल अंदरकी, कै थंभ कै मोहोलात ।
कै देहेलाने कै मंदिर, ए खूबी कही न जात ॥ ८७

थंभ दोए हारें बनी, अंदर मोहोल कै और ।
कै बैठकें जुदी जुदी जिनसों, कहां लग कहूं कै ठौर ॥ ८८

एह जुगत सब पालमें, गिनतीं न होए हिसाब ।
थंभ द्वार जो झलकत, सो कहा कहे जुबां ख्वाब ॥ ८९

और सीढ़ियां चारो घाटकी, इत दरवाजे नाहिं ।
तित मोहोलात है अंदर, विना हिसाबें माहिं ॥ ९०

चारों हिस्से ताल के, मोहोल बने इन ठाठ ।
और झुंड ऊपर चारो चौकके, ए जो बने चारों घाट ॥ ९१

घाट झुंड तलाव के, पांवड़ियां तरफ जल ।
देहुरियां चबूतरे, सोभित इन मिसल ॥ ९२

चौक थंभ कठेड़े, बैठक चारों घाटन ।
जो वन खूबी पाल पर, सो क्यों कहूं जुबां इन ॥ ९३

फेर कहूं पाल ऊपर, जो देखी मांहें दिल ।
सो कहूं में अरस रूहनको, देखें मोमन सब मिल ॥ ९४

देहुरी आगूं चबूतरे, खुले भरोखे ताल पर ।
सबों विराजत कठेड़ा, नूर भराए रह्यो अंबर ॥ ९५

चारों घाटों के बीच बीच, गिरदवाए देहुरियां सब ।
याही बिध आगूं सबों, ऊपर वन छाए रही छब ॥ ९६

जो फिरते आए चबूतरे, दोरी बंध बराबर ।
ऊपर बन सोभे दोरी बंध, कहूं गेहेरा नहीं छेदर ॥ ९७

सब खुले भरोखे ढांपके, वन भलूब आया जल पर ।
ए सोभा अति देत है, जो देखिए रूहकी नजर ॥ ९८

ऊपर देहुरी तले चबूतरे, तिन तले सब मेहेराब ।
परकोटे तले छोटे द्वारने, फिरता बन सोभे तले आब ॥ ९९

आब ऊपर जो चबूतरा, फिरते देखिए छोटे द्वार ।
दे परकरमा आइए, देख आइए घाट चार ॥१००

महामत कहें मोमनको, गेहेरा गम्भीर जल देख ।
ए टापू बन्यो बीच हौजके, सोभित अति विसेख ॥१०१

॥ प्रकरण ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ ५६९ ॥

## हौजके बीच मोहोलात[1] चौसठ पांखड़ी की

बन्यो तालके बीचमें, चारो तरफों जल ।
बन भरोखे गिरदवाए, सोभित बाग मोहोल ॥ १

अब कहूं तालके मोहोलकी, जल गिरदवाए गेहेरा गम्भीर ।
लेहेरे उठें बीच गुरजके[2], जल खलकत उज्जल—खीर[3] ॥ २

१. महल । २. बुर्ज । ३. दूध सा श्वेत ।

ज्यों एक फूल चौसठ पांखड़ी, चार द्वार गिरदवाए ।
गुरज साठ बने तिन पर, ए खूबी कही न जाए ॥ ३

एक टापू बन्यो बीच जलके, मोहोल गुरज तिन पर ।
देहुरियां ताल किनार पर, फिरती पाल बराबर ॥ ४

ए चौक बने चारों तरफों, और ऊपर चार घाट ।
चारों द्वार टापूअके, बने सनमुख ठाट ॥ ५

देहुरियाँ घाटन पर, चारों जुदी जिनस ।
देख देख के देखिए, जानों एक पे और सरस ॥ ६

पाल टापू हीरे एक की, तिनमें कै मोहोलात ।
अनेक रंग नंग देखत, असल हीरा एक जात ॥ ७

जब खूबी ताल यों देखिए, चढ़ चाँदनी पर ।
फिरती पाल बन देहुरी, जल सोभित अति सुंदर ॥ ८

तले सोभा चारों द्वारने, आगूं कठेड़े बैठक ।
आराम लेवें इन ठौरों, जब आवें इत हादी हक ॥ ९

बीच-बीच में बन विराजत, गुरज छज्जे जल पर ।
छे छज्जे फिरते बने, सब गुरजों यों कर ॥ १०

तीन छातें चौथी चाँदनी, सब गुरजों पर इत ।
तले छज्जे जल हाथ लग, ऊपर अति सोभित ॥ ११

ए टापू जिमी जवेरकी, बीच बीच बन्या बन ।
दोनों तरफों छज्जे बने, ऊपर बन रोसन ॥ १२

तीनों तरफों गुरज के, छज्जे बने यों आए ।
उपरा ऊपर भी तीन हैं, क्यों कहूँ सोभा ताए ॥ १३

तीन तीन छज्जे तरफ जलके, छे छज्जे बन पर ।
अन्दर गृदवाए मोहोलात, बीच बैठक चबूतर ॥ १४

दो गुरजों बीच मंदिर हर मन्दिर झरोखे ।
तीन तीन उपरा ऊपर, बने तीनों भोमों के ॥ १५

गुरज गुरज तीन द्वारने, तीनों भोमों में ।
कै एक ठौरों चरनियां, ऊपर चढ़िए जिनों से ॥ १६

सामी और हार बनी, मन्दिर सामी मंदर ।
तिनमें साठ बाहेर, और साठ भए अन्दर ॥ १७

बीच चेहेबच्चा जल का, कै फुहारे छूटत ।
फिरते द्वार इन चौक के, बोहोत सोभा अतंत ॥ १८

तीनों भोम चबूतरे, और फिरते मंदिर द्वार ।
बीच बैठक चबूतरे, बने थंभ तरफ हार ॥ १९

कही फिरती हार थंभन की, द्वार द्वार आगू दोए ।
हर मंदिर दो द्वारने, सोभा लेत अति सोए ॥ २०

साठ गुरज फिरते कहे, गिरद चांदनी दिवाल ।
सोए कमर के ऊपर, खूबी लेत कांगरी लाल ॥ २१

ऊपर चांदनी कठेड़ा, बीच जोड़ सिंघासन ।
राज स्यामाजी बीचमें, फिरती बैठक रूहन ॥ २२

कबू मिलावा नजीक, मिल बैठें गिरदवाए ।
छोटा तखत दुलीचे पर, बैठीं रूहें अंगसों अंग लगाए ॥ २३

कबू कबू बैठियां कुरसियों, रूहें बारे हजार ।
कबू दो दो एक कुरसी पर, कबू हर कुरसी चार चार ॥ २४

कबू दो दो सै एक कुरसियों, बैठें साठों गुरजों गिरदवाए ।
सो कुरसी दिवालों लगती, यों बैठक कठेड़े लगाए ॥ २५

बीच तखत विराजत, सबथें ऊँचा गज भर ।
बैठक हक बड़ी रूह, सोभा लेत सब पर ॥ २६

हक बड़ी रूह बैठें तखत पर, फिरती रूहें बैठत ।
दो दो सै बीच गुरज के, बारे हजार रूहें इत ॥ २७

चाँद चौदमी रात का, बैठें चांदनी नूरजमाल ।
सनमुख सबे बैठाए के, करें खावंद रूहें खुसाल ॥ २८

अमृत खसम रूहन पर, नूर नजरों सींचत ।
सो रस रूहें रब्ब[1] का, सनमुख रोसन पीवत ॥ २८

पूरन पांचो इंद्री सरूपें, एक एकमें पांच पूरन ।
हर एकमें बल पांच का, एक एक में पांच गुन ॥ ३०

एक एक जाहेर सब में, एक एक में चार बातन ।
इन विध रूहें मुतलक, असल अरसके तन ॥ ३१

अरस तन रूहें आतमा, तरफ सबों बराबर ।
पूरन कहांवें याही वातसों, सब विधों ए कादर[2] ॥ ३२

सरूप बैठे सब मिलके, घेर के गिरदबाए ।
सबों सुख पूरन हक का, रूहें लेवें दिल चाहे ॥ ३३

अब और देऊं एक नमूना, इनको न पोहोंचे सोए ।
पर कहे विना रूहन के, दिल रोसन क्यों होए ॥ ३४

एक जरा इन जिमी का, ताको नूर न माए आकास ।
तिन जिमीके जवेरको, होसी कौन प्रकास ॥ ३५

सो जवेर आगू रूहन के, कैसा देखावें नूर ।
ज्यों सितारे रोसनी, बल क्या करे आगूं सूर ॥ ३६

आगूं रूह सूरत सूर के, जवेर गए ढँपाए ।
तो सोभा हक जात की, क्यों कर कही जाए ॥ ३७

जो रूहें अंग अरस के, तिन चीज न कोई सोभाए ।
वाहेदत्त में विना वाहेदत्त, और कछू ना समाए ॥ ३८

वस्तर भूखन हक जातके, सो हक जात का नूर ।
कोई चीज अरस अंग कों, कर ना सके जहूर ॥ ३९

सोभा अंग अरस के, या बस्तर या भूखन ।
होवे दिल चाह्या कै विधका, सोभा सिनगार माहें छिन ॥ ४०

---

१. परमात्मा । २. सामर्थ्यवान ।

सो हेम नंग अति उत्तम, इन रूहों के माफक ।
वस्तर भूखन सब साजके, जाए देखे नजर भर हक ॥ ४१

ए सोभा सब साज के, रूहें ले बैठीं अपना नूर ।
सो आगूं हक वड़ीरूह नूर के, ए क्यों कर कहूँ मजकूर ॥ ४२

तखत बीच रूहों चांदनी, बैठे वड़ी रूह खावंद[१] ।
सो थंभ हुआ चांदनी, ऊपर आया पूरन चन्द ॥ ४३

जेती फिरती चांदनी, भरयो नूर उदयोत ।
ले सामी चन्द रोसनी, भयो थंभ एक जोत ॥ ४४

इन नूर थंभकी रोसनी, पड़ी ताल पर जाए ।
जल थंभ कियो आसमान लों, घेरयो चंद गिरदवाए ॥ ४५

जंग करे जोत थंभ की, अरस जोतसों आए ।
मिली जोत जिमी वन की, ए नूर आसमान क्यों समाए ॥ ४६

महामत कहें ऐ मोमनों, जो होवे अरवा अरस ।
सो प्रेम प्याले ल्यो भर भर, पीजे हकसों अरस—परस[२] ॥ ४७

॥ प्रकरण ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ ६१६ ॥

फूलबाग लिख्या है

और पीछल पाल तलाव के, कै वन सोभा लेत ।
ए बन आगूं फिरवल्या, परे धामलों देखाई देत ॥ १

तालको बीच लेय के, मिल्या धाम दिवालों आए ।
कै मेवे केते कहूं, अगनित गिने न जाए ॥ २

तरफ पीछल धाम के, अंन वन मेवे अनंत ।
फल फूल पात कंदमूल, ए कहांलों को गिनत ॥ ३

ऊपर झरोखे धाम के, वन आए लग्या दिवाल ।
वाही छाया तले रेती रोसन, जैसा आगे कह्या बन हाल ॥ ४

---

१. पति । २. आपस में ।

बाग बने फूलन के, लगत झरोखे दिवाल ।
जब आवत हैं इन छज्जो, रूहें इत होत खुसाल ॥ ५

लग[1] लग होए के बैठत, ऊपर छज्जों के आए ।
आगूं उठत ऊँचे फुहारे, जल झलकत मोती गिराए ॥ ६

आगूं सबन के फुहारे, और आगूं सबों के फूल ।
देख देख ए चेहेबच्चे, सबे होत सनकूल ॥ ७

छलकत छोले चेहेबच्चे, नेहेरें चलत तेज नूर ।
सो विचरत सब बगीचों, पीवत हैं भरपूर ॥ ८

जो लगा चबूतरे चेहेबच्चा, बुजरग बड़ा विसाल ।
उतरता जल इतथें, नेहेरे चलत इन हाल ॥ ९

विचरत जल चेहेबच्चों, सो सिरें लगे पोहोंचत ।
इसी भांत झरोखे बगीचो, माहें रूहें केल करत ॥ १०

इन ऊपर छज्जे विराजत, सिरें लगे एकै हार ।
ऊपर खूबी इन विध, सोभा लेत किनार ॥ ११

इत खेलत कै जानवर, मृग मोर बांदर ।
कै मुरग[2] तीतर लवा[3] लरें, कै विध कबूतर ॥ १२

कै विध देत गुलाटियां, कै उलटे टेढ़े चलत ।
कै कूदें फांदें लड़ें, कै विध खेल करत ॥ १३

एक नाचें गावें स्वर पूरें, एक बोलत रसाल ।
नए नए रूप रंग ल्यावहीं, किन विध कहूं इन हाल ॥ १४

और केते कहूँ जानवर, छोटे बड़े करें खेल ।
ए खुसाली खावंदकी, रूहों करावें इस्क केल[4] ॥ १५

ए खेलोंने खावंद के, सब विध के सुखकार ।
कोई विद्या छिपी ना रहे, जानें खेल अपार ॥ १६

१. साथ मिलकर । २. मुर्गा । ३. एक पक्षी । ४. खेल ।

जित तले दस खिड़कियां, इतथें रूहें उतरत ।
फिरत सैर इन वन को, जब कबूं आवे हक इत ॥ १७

कै वन हैं फूलन के, इन बन को नाहीं सुमार ।
कै भांतें रंग के जुगतें, कै कांगरियां किनार ॥ १८

हिसाब नहीं फूलन को, हिसाब ना चित्रामन ।
हिसाब नहीं खुसबोए को, हिसाब ना रंग रोसन ॥ १९

कै मेवे फलन के, कै मेवे हैं फूल ।
कै मेवे डार पात के, कै मेवे कंदमूल ॥ २०

कै वन आगूं जाए मिल्या, जो वन बड़ा कहियत ।
ऊंचे वृक्ष अति सुंदर, जित हिडोलों हींचत ॥ २१

कै वृक्ष के हिडोले, कै जुदी जुदी जिनस ।
स्याम स्यामाजी साथजी, सुख लेवें अरस परस ॥ २२

कहूं कहूं लंबे हिडोले, कहूं तिनसे बड़े अनंत ।
कहूं कहूं छोटे बने, कै जुदी जुदी जुगत ॥ २३

कहूं कहूं सेज्या हिडोले, कहूं हिडोले सिंघासन ।
कहूं कहूं खड़ियां हींचत[1], यों खेल होत इन वन ॥ २४

एक सोए हिडोले लेवहीं, एक बैठके हींचत ।
एक उठें एक बैठत हैं, यों जुगल केल करत ॥ २५

इन वन जिमी की रोसनी, मावत नाहीं आकास ।
इन रोसन हिडोले हींचत, क्यों कहूं खूबी खास ॥ २६

इस तरफ चबूतरा धाम का, आए मिल्या वन इत ।
'महामत' कहें इन अकलें, क्यों कर करूं सिफत ॥ २७

॥ प्रकरण ॥ १० ॥ चौपाई ॥ ६४३ ॥

---

१. झूलती हैं ।

## लाल चबूतरा बड़े जानवरों के मुजरे[1] की जागा

ए जो बड़ा चबूतरा, लगता चल्या दिवाल ।
इत छाया बड़े वन की, ए बैठक बड़ी विशाल ॥ १

सोभा लेत अति कठेड़ा, तमाम चबूतर ।
तले लगते दरखत, सब पेड़ बराबर ॥ २

पेड़ लंबे उपली छातलों, छत्रियां छज्जों पर ।
लंबे छज्जे बड़ी बैठक, इत मोहोला[2] लेत जानवर ॥ ३

जवेर ख्वाब जिमीके, ए खूब ख्वाब में लगत ।
ए झूठ निमूना क्यों देऊँ, अरस बकाके दरखत ॥ ४

रोसनी इन दरखत की, पेड़ डार या पात ।
नूर इन रोसनका, अवकासमे न समात ॥ ५

एक डार जरेकी रोसनी, भराए रही आसमान ।
तो कौन निमूना इनका, जो दीजिए इनके मान ॥ ६

जिमी रंचक रेतकी, कछू दिया न निमूना जात ।
तो क्यों कहूं फल फूल पात की, और झरोखे मोहोलात ॥ ७

ऊपर तमाम चबूतरे, बिछाया है दुलीच ।
दोऊ तरफों बैठी रूहें, हक हादी सिंघासन बीच ॥ ८

बैठे तिन सिंघासन, हक अपना मिलावा ले ।
इन अंग की अकलें, क्यों कहूँ खूबी ए ॥ ९

बैठे जुगल किसोर, ऊपर दोऊ के छत्र ।
आगे जिकर करें कै विधसों, और बजावें बाजंत्र ॥ १०

आवत मोहोलें मुजरे, इतका जो लसकर[3] ।
ताके एक बालके नूरसों, रही भराए जिमी अंबर ॥ ११

देखावत रूहन को, पसू पंखी लराए ।
हँसत हक अरवाहोंसों, नए नए खेल खेलाए ॥ १२

---

१. अभिवादन, (गा कर या नाच कर खुश करना) । २. विश्राम । ३. फौज ।

कै गरुड़ गरजें लड़ें, कै मोर मुरग कुलंग[1] ।
लड़ें चढ़ें ऊंचे आसमानलों, फेरके लड़ें जंग बंग ॥ १३

केसरी[2] काबली हाथी, बाघ बीघ[3] बांदर ।
पस्व घोड़े दीपड़े, लड़ें सूअर सांम्हर[4] ॥ १४

चीते चीतल बैल बक्कर, लड़ें बरबरे हरन ।
जरख चरख रोझ रीछड़े, लड़त आवें अरन ॥ १५

लोखरी कूकरी जंबुक, लड़त हैं मेढ़े ।
खरगोस बिल्ली मूसक, लड़ें छिकारे गैंड़े ॥ १६

कै जातें पसुअन की, और कै जातें जानवर ।
हिसाब न आवे गिनती, ए खेल कहूँ क्यों कर ॥ १७

कै रिझावें लड़ के, कै नाच मिलावें तान ।
कै उड़ें कूदें फाँदहीं, कै बोलत मीठी बान ॥ १८

कै देत गुलाटियां, कै साधत स्वर समान ।
कै खेलें चलें टेढ़े उलटे, कै नई नई मुख वान ॥ १९

कै नाचत हैं पांउंसों, कै नचावें पर ।
कै नाचत हैं उड़ते, कै हाथ चोंच सिर लर ॥ २०

कै हँसावत हकको, भांत भांत खेल कर ।
कोई हिकमत[5] छिपी ना रहे, ऐसे पसू जानवर ॥ २१

क्यों कहूँ इन सुखकी, जो इन मेले में बसत ।
ए सोई रूहें जानहीं, जो इन हक की सोहोबत ॥ २२

क्यों कहूँ इन सुखकी, जो हक देत मुख बोल ।
क्यों देऊँ निमूना इनका, याको रूहें जानें तौल मोल ॥ २३

क्यों कहूँ इन सुखकी, जो धनी देत कर हेत ।
आराम इन इस्कका, सोई जाने जो लेत ॥ २४

---

१. लंबी टांगों वाला पक्षी । २. सिंह । ३. भेड़िया । ४. बारह सिंघा । ५. कौशल ।

क्यों कहूं सुख सनमुख का, जो पिलावें नैनोंसों ।
ए सोई रूहें जानहीं, रस आवत हैं जिनको ॥ २५

क्यों कहूं इन सुखकी, धनी लेवैं इस्कसों ।
ए सोई रूहें जानहीं, हक देत हैं जिनकों ॥ २६

क्यों कहूं इन सुखकी, हक देत कर प्रीत ।
जो ए प्याले लेत हैं, सोई जानें रस रीत ॥ २७

क्यों कहूं सुख नजीकका, जो इन हकको सोहोबत ।
ए सोई रूहें जानहीं, जो लेवें हर बखत ॥ २८

क्यों कहूं इन सुखकी, जासों हक रमूज[1] करत ।
ए सोई रूहें जानहीं, जिनका बासा इत ॥ २९

क्यों कहूं इन सुख की, जासों हक करें इसारत ।
ए सोई रूहें जानहीं, सामी सैंनसे समझावत ॥ ३०

क्यों कहूं इन सुखकी, जो हक देत दायम[2] ।
ए सोई रूहें जानहीं, जो पिएं सराब—कायम[3] ॥ ३१

क्यों कहूं इन सुखकी, जासों हक करत हैं हांस ।
ए सोई रूहें जानहीं, जो लेत खुसाली खास ॥ ३२

क्यों कहूं इन सुख की, जाए हक लेत बोलाए ।
सनमुख बातें करके, अमी[4] रस नैन पिलाए ॥ ३३

क्यों कहूं इन रूहनकी, जासों धनी बोलत सनमुख ।
नहीं निमूना इनका, एही जानें ए सुख ॥ ३४

क्यों कहूं इन सुखकी, जो प्यारी पीउके दिल ।
सनमुख बातां करत हैं, इन खावंद सामिल ॥ ३५

क्यों कहूं ताके सुखकी, हक बातें करें दिल दे ।
ए रूहें प्याले जानहीं, जो हाथ धनीके लें ॥ ३६

---

१. रहस्य । २. हमेशा । ३. अमृत । ४. अमृत ।

क्यों कहूं इन सुख की, जाको निरखत धनी नजर ।
प्याले आप धनीय को, सामी देत भर भर ॥ ३७

क्यों कहूं इन सुख की, जो हकसों नैनों नैन मिलाए ।
फेर फेर प्याले लेत हैं, आगूं इन धनीके आए ॥ ३८

क्यों कहूं इन सुखकी, जो दूर बैठत हैं जाए ।
तितथें धनी बोलाएके, ढिग बैठावत ताए ॥ ३९

क्यों कहूं इन सुखकी, जाको देत धनी चित्त ।
सो धनी आगूं आएके, सामी मीठी बान बोलत ॥ ४०

क्यों कहूं सुख रूहन के, फेर फेर देखें हक नैन ।
खावंद नजीक बुलाए के, बोलत मीठे बैन ॥ ४१

क्यों कहूं सुख नजीकियों, जाको देखें हक नजर ।
बातें इस्क पीउ अंगे, पिएं प्याले भर भर ॥ ४२

क्यों कहूं सुख रूहन के, फेर फेर देखें मुख पीउ ।
नैन बैन सुख देत हैं, चुभ रहत माहें जीउ ॥ ४३

क्यों कहूं सुख रूहनके, जो हक बड़ी रूह अंग नूर ।
आठो जाम इन पीउसों, हँस हँस करें मजकूर[1] ॥ ४४

क्यों कहूं सुख रूहनके, जो इन पीउ के आसक ।
भर भर प्याले लेवहीं, फेर फेर देवें हक ॥ ४५

क्यों कहूं सुख रूहनके, जो लगे इन हकके कान ।
करें मजकूर मजाकसों, साथ इन सुभान ॥ ४६

क्यों कहूँ सुख रूहनके, जासों खेलें हँसें सनमुख ।
पार नहीं सोहागको, इनपर धनीको रुख[2] ॥ ४७

क्यों कहूँ सुख रूहनके, इन पीउसों रस रंग ।
आठो जाम आराममें, एक जरा नहीं दिल भंग ॥ ४८

---

१. चर्चा । २. मेहेर दृष्टि ।

क्यो कहूँ सुख रूहनके, जो आठो पहर पीउ पास ।
रात दिन सोहोबतमें, करें हांस विलास ॥ ४९

क्यों कहूं सुख रूहनके, जो आठो जाम दिन रात ।
प्रेम प्रीत सनेह की, भरभर प्याले पिलात ॥ ५०

क्यों कहूं सुख रूहनके, जिनका साकी[1] ए ।
हक प्याले इस्कके, भर भर रूहों को दे ॥ ५१

क्यों कहूं इन सुखकी, जो सदा सोहोबत हक जात ।
जो इस्क आराममें, सो क्यों कहूं इन मुख बात ॥ ५२

क्यों कहूं इन सुख की, जिनका हक खाबंद ।
आठो जाम रूहन पर, हक होत परसंद[2] ॥ ५३

क्यों कहूं इन सुखकी, जो ख्वावमें गैयां भूल ।
याद देने सुख अरसके, हकें भेज्या एह रसूल ॥ ५४

क्यों कहूं सुख हांसीय को, ख्वाब में दैयां भुलाए ।
ऊपर फेर फेर याद देत हैं, पर फरामोसी[3] क्योंए न जाए ॥ ५५

क्यों कहूं सुख इनका, जासों हक हांसी करत ।
ए विध कहूं मैं कितनी, जो रूहों हक खेलावत ॥ ५६

क्यों कहूं इन रूहन की, हक देखावें कै सुख ।
दई सुख बका लज्जत, ख्वाब देखाएके दुख ॥ ५७

क्यों कहूं सुख रूहन के, जो लेवत आठो जाम ।
बिना हिसाबें दिए आराम, हक का एही काम ॥ ५८

वास्ते इन रूहनके, परहेज[4] लिया हकें ए ।
आठो जाम फेर फेर देऊँ, सुख अरसका जे ॥ ५९

अब क्यों कहूं इन सुखकी, लिया ऐसा परहेज हक ।
जैसा बुजरग साहेब, सुख भी तिन माफक ॥ ६०

---

१. पिलाने वाला । २. प्रसन्न । ३. मोह निद्रा । ४. नियम ।

ए सुख इन केहेनीय में, क्योंए किएँ न आवत ।
देखो दिल विचारके, कछू तब पाओ लज्जत ॥ ६१
आराम अरस बका मिने, हक दिल दे देवें सुख ।
तो ए सुख इन आकार से, क्यों कर कहूं इन मुख ॥ ६२
ठौर बका अरस कह्या, और खावंद नूरजमाल ।
इन दरगाह रूहों के सुख, क्यों कहूं फैल हाल ॥ ६३
ए सुख रूह कछू जानही, पर केहेनीमें आवत नाहिं ।
ख्वाब वजूद की अकलें, क्यों कर आवे जुबांएं ॥ ६४
अरस अजीमका खावंद, रमूज करे दिल देय ।
अपने अरस अरवाहों सों, क्यों कहे जुबां इन देह ॥ ६५
क्यों कहूं सुख हांसीयका, वास्ते हांसी किए फरामोस ।
फेर फेर उठावें हांसीयको, वह टलत नहीं बेहोस ॥ ६६
आप फरामोसी देयके, ऊपर से जगावत ।
क्यों जागें बिना हुकमें, हक इन विध हांसी करत ॥ ६७
ए हांसी फरामोसीयकी, होसी बड़ो विलास ।
जागे पीछे आनंद को, अंग न मावत हांस ॥ ६८
अनेक सुख देने को, साहेबें दई फरामोसी ।
जगावते भी जागे नहीं, एही हांसी बड़ी होसी ॥ ६९
अनेक सुख दिए अरसमें, सुख फरामोसी नाहीं कब ।
हँस हंस गिर गिर पड़सी, ए सुख ऐसा देखाया अब ॥ ७०
छिन एक विरहा ना सहें, सो सौ बरस सहें क्यों कर ।
फरामोसी इन हक की, कोई हांसी ना इन कदर[१] ॥ ७१
ए सुख आनंद फरामोसको, कह्यो जाय ना अलेखे ए ।
ए सुख जागे पीछे चाहे नहीं, सुख दिए फरामोसी जे ॥ ७२

---

१. तुल्य ।

सुख तो अलेखे पाइया, पर इन सुख ऐसी बात ।
एक बल पड़्या आए बीचमें, तार्थें ए सुख रूहें न चाहत ॥ ७३

अनेक हांसी होएसी, अनेक उपजसी सुख ।
इस्क तरंग कै बढ़सी, ऐसा देखाया फरामोसी दुख ॥ ७४

कै सुख हांसी फरामोसके, कै हजूर सुख खिलवत ।
कै सुख पसू पंखियनके, कैं सुख मोहोलों बैंठत ॥ ७५

कै सुख चबूतर के, कै कठेड़े गिलम ।
कै सुख बीच तखत के, कैं सुख देत बेठ खसम ॥ ७६

कै सुख ऊपर बैठक के, कै सुख दरखतों छात ।
कै सुख तले बड़े बृक्षके, झूमत ऊपर मोहोलात ॥ ७७

फेर कहूं सुख तले बनके, ए बन बड़ा विस्तार ।
भर चबूतरे आगूं चल्या, मिल्या मधुबन किनार ॥ ७८

मधुबनकी किन विध कहूं, बन जाए लग्या आसमान ।
पुखराज अरसके बीचमें, ए सिफत न होए बयान ॥ ७९

लिबोई केलके घाट जो, ताके सिरे मिले आए इत ।
बुजरग—बन[1] मधुबन का, मिल्या जोए किनारों जित ॥ ८०

और फिरबल्या[2] पुखराज को, सो पोहोंच्या जाए लग दूर ।
चढ़ पुखराज जब देखिए, आए तले रह्या हजूर ॥ ८१

सुख हक का 'महामत' जानहीं, या जानें मोमन ।
दूजा नहीं कोई अरसमें, बिना बुजरक[3] रूहन ॥ ८२

॥ प्रकरण ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ ७२५ ॥

फेर कहूं तले बनकी, जो बन बड़ा विस्तार ।
भर चबूतरे आगूं चल्या, जाए पोहोंच्या केलके पार ॥ १

जो बन आया चेहेबच्चे, सोभा अति रोसन ।
छाया करी जल ऊपर, तीनों तरफों बन ॥ २

१. ऊंचा बन । २. घेर लिया । ३. महान ।

ऊपर झरोखे मोहोलके, जल पर बने जो आए ।
इन चेहेबच्चे की सिफत, मुख थें कही न जाए ॥ ३

कै वन हैं इत ताड़ के, कै खजूरी नारियर ।
और नाम केते लेऊं, बट पीपर सर ऊमर ॥ ४

ए वन गेहेरा दूर लग, इत आए मिल्या केल घाट ।
जमुना जल किनार लों, छाया चली दोरीबंध ठाट[1] ॥ ५

जोए जमुना का जल, पहाड़ से उतरत ।
तले आया कुंडमें, पहाड़ से निकसत ॥ ६

जमुनाजी के मूलमें, पहाड़ बन्यो चबूतर ।
आगूं कुंड दूजा भया, जहां से जल चल्या उतर ॥ ७

पेहेले कुंड चबूतरा, दूजा आगूं सोए ।
चारो तरफों बैठक, जल उज्जल खुसबोए ॥ ८

चारो तरफ चबूतरा, जमुना दोऊ किनार ।
ए कुंड हुए दोऊ इन विध, चली देहुरी दोऊ हार ॥ ९

केतेक लग ढांपी चली, तरफ दोऊ थंभ हार ।
इन आगूं जुदी जिनस, चली देहुरी[2] दोऊ किनार ॥ १०

ऊपर ढांप्या पुल ज्यों, सोभा लेत सुंदर ।
ऊपर देहुरी जड़ाव ज्यों, जल खलकत चल्या अंदर ॥ ११

चार थंभ हारें चली, ऊपर ढांपी तरफ दोए ।
यों चल आई दूरलों, ए जल जमुना जोए ॥ १२

दोऊ किनारें बैठक, बन गेहेरा गृदवाए ।
अति सोभा इत जोए की, इन जुबां कही न जाए ॥ १३

दोऊ तरफ दो देहुरी, कै कंगूरे कलस ऊपर ।
इत बैठक अति सुंदर, चल आए दोऊ चबूतर ॥ १४

---

१. शोभायमान । २. गुंबद वाली बारादरी ।

ए जल तरफ ताल के, इतथें चल्या मरोर ।
एक देहुरी एक चबूतरा, ए सोभा अति जोर ॥ १५

ए वन की सोभा क्यों कहूं, पेड़ चले आए बराबर ।
दोऊ तरफों जुगतें, आए देहुरी ऊपर ॥ १६

इत लंबा वन आए मिल्या, जमुना भर किनार ।
इतथें छत्री ले चल्या, पोहोंच्या पहाड़ के पार ॥ १७

दोऊ किनार सीधी चली, आए पोहोंच्या केल घाट ।
एक चौक देहुरी इतलों, ए बन्यो जो ऐसो ठाट ॥ १८

छूटक छूटक देहुरी, सातो घाटों मांहि ।
दोऊ किनारें जड़ाव ज्यों, क्यों कहूं सोभा जुबांए ॥ १९

इतथें चले ताललों, एक देहुरी एक चबूतर ।
दोऊ तरफ या विध, जोए हौज मिली यों कर ॥ २०

*'महामत' कहें ऐ मोमनों, मैं बोलत बुध माफक ।
ख्वाब मन जुबानसों, क्योंकर बरनों हक ॥ २१

॥ प्रकरण ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ ७४६ ॥

## मोहोल पहाड़ पुखराजी ॥ राग मारू

सुख लीजो मोमनों, पहाड़ मोहोलके आराम ।
अरस अजीम के कायम[1], निस दिन एही ताम[2] ॥ १

हौज जोए अरस जिमिएं, जो फुरमानमें[3] फुरमाए[4] ।
पहाड़ मोहोल पेड़ इनका, सो हक हुकमें देऊं बताए ॥ २

एक जवेर इन जिमी पर, बीच अरस एक नंग ।
बोहोत नाम जवेरों के, जुदे नाम जुदे रंग ॥ ३

सो बड़ा पहाड़ एक नंग का, तिनमें कै मोहोलात ।
चौड़ा ऊंचा तेज मैं, क्यों कहूं अरसकी बात ॥ ४

---

१. अखन्ड । २. अहार । ३. धर्म ग्रन्थ । ४. कहा है ।

गृद मोहोल बराबर, तरफ तले संकड़ा ।
मोहोल बढ़ते बराबर, चढ़ते अति चौड़ा ।। ५

गृदवाए[1] फेर देखिए, आकास न माए झलकार ।
मोहोलातें सब नूर की, जुबां कहा केहेसी विस्तार ।। ६

हरे पीले लाल उज्जल, संग श्रोवन[2] नूर अमान[3] ।
एक जवेर इन भोम का, भरचा रोसन नूर आसमान ।। ७

कै विध के इत मोहोल हैं, सब रंग के इत वन ।
कै जल धारें फुहारे, रस मेवे स्वाद सबन ।। ८

ए परवत इन भांत का, नैनों निमख न छोड़चा जाए ।
क्यों कहूँ खूबी इन जुबां, देखत रह्या हिरदे भराए ।। ९

ऊपर श्रोवन सिखर[4] तले, सोभित जल उतरत ।
खूबी खुसबोए बन में, आए मिल्या ताल जित ।। १०

खूबी[5] इन पहाड़ की, ऊँचा माहें आकास ।
कै मोहोल बैठक रोसनी, ज्यों रोसन धाम प्रकास ।। ११

दूरथें अति रोसन, आए देखें सोभा अतंत ।
ए जुबां इन पहाड़ की, क्यों कर करे सिफत ।। १२

कै बैठक तले ऊपर, कै ठौर तले कराड़[6] ।
सोभा जल बन सोभित, अतंत खूबी इन पहाड़ ।। १३

उपरा ऊपर भोम अनेक, अति विराजे सोए ।
खूबी इन मोहोलन की, देख देख मन मोहे ।। १४

जड़चा पहाड़ जानों सोनेसों, जुदे जुदे जवेरन ।
ए मोहोल अति सोभित, बड़ी बैठकें रोसन ।। १५

माहें कै नेहेरें चलें, सब पहाड़ में फिरत ।
कै फुहारे चेहेवच्चे, सब ठौरों खूबी करत ।। १६

---

१. चारों तरफ । २. स्वर्ण । ३. आराम दायक । ४. चोटी । ५. सुन्दरता । ६. आराम (करार) ।

ए मोहोल बड़े अति सुंदर, एक दूजे थें चढ़त ।
ज्यों ज्यों ऊपर चढ़िए, त्यों त्यों खूबी बढ़त ॥ १७

ए मोहोल बैठन के, अति बड़ियाँ पड़साल ।
बोहोत देखी मैं बैठकें, पर ए सोभा अति कमाल[1] ॥ १८

ऊपर चौक लग चाँदनी, अतंत है बिसाल[2] ।
नजर न पीछी फिर सके, देख देख होइए खुसाल ॥ १९

कोटक[3] कचेहेरी[4] बनी, फिरतियां गृदवाए ।
ए सुदरता इन जुबां, मोपें कही न जाए ॥ २०

ज्यों ज्यों नैनों देखिए, त्यों त्यों लगत सुंदर ।
न्यारी नजर न होवही, चुभ रह्या रूह अंदर ॥ २१

अति बड़े सुभट सूरमें, सेन्यापती सिरदार ।
मेला होत है इन मोहोलों, कै जातें जिनसें अपार ॥ २२

रूहें राज स्यामाजी बिराजत, निपट[5] सोभा है इत ।
ऊपर तले बीच सुंदर, खूबी खुसाली[6] करत ॥ २३

इत सिखरें सब पहाड़ की, जानों जवेर सब नूर ।
सिखरें सब आसमान लों, जानों के गंज जहूर ॥ २४

इन मोहोलों में देखिए, अतंत सोभा थंभन ।
उपरा ऊपर देखिए, जुबां कहा करे बरनन ॥ २५

फिरता पेड़ जो पहाड़ का, तले बन्या सँकड़ा ए ।
फिरते थंभ चौड़े चढ़े, जाए फैल्या आसमान में जे ॥ २६

ऐसे ही थंभ तिन पर, चौड़ा अति विस्तार ।
या विध चढ़ता चढ़या, गृदवाए बनी किनार ॥ २७

ज्यों ज्यों मोहोल ऊँचे चढ़े, तिन चौगृद थंभ हार ।
चौड़ा ऊँचा चढ़ता, चढ़ता चढ़या बिस्तार ॥ २८

---

१. उत्तम । २. विस्तार वाला । ३. करोड़ों । ४. भवन । ५. एक दम । ६. आनंद दायक ।

चढ़ते मोहोल मोहोलन पें, जाए लग्या आसमान ।
चढ़ती सोभा सुंदर, ए क्यों कर कहे जुबान ॥ २६

मोहोल बड़े सोभा बड़ी, थंभ फिरते दोरी बंध ।
जोतें जोत जगमगें, क्यों कहूँ सोभा सनंध ॥ ३०

तले से ऊपर लग, मोहोल भरोखे पड़साल ।
कै चौक थंभ कचेहेरियां, कै देहेलानें दिवाल ॥ ३१

मोहोलन पर मोहोल विस्तरे, सोभा चढ़ती चढ़ती अतंत ।
कोई मोहोल बड़े इन भांत के, सब नजरों आवत ॥ ३२

फिरते मोहोल अति बने, कै मोहोलातें जे ।
के रंगों चरनी[1] बनी, सब एक जवेर में ए ॥ ३३

हजार हांसों सोभित, तापर गुरज विराजत ।
मोहोल माहें विध विध के, बैठक भरोखे जुगत ॥ ३४

हजार हांसों हजार रंग, हर हांस हांस नया रंग ।
थंभ रोसन जिमी लग चांदनी, करत मिनो मिने जंग ॥ ३५

ऊपर चौड़ा तले संकड़ा, दोरीबंध देखत ।
तलेसे ऊपर लग देखिए, गृदबाए सब सोभित ॥ ३६

मोहोल चारो तरफों, हजार हांसों माहिं ।
ए मोहोल पहाड़ जवेरके, क्यों केहेसी जुबांए ॥ ३७

बराबर दोरीबंध ज्यों, फिरती पहाड़ किनार ।
सो इन मुख सोभा क्यों कहूं, भलकारों भलकार ॥ ३८

एक नकस बरनन ना कर सकों, ए अति बड़ो बयान[2] ।
ए मोहोल पहाड़ अरसके, कहा कहे एह जुबान ॥ ३६

गुरज हजार बीच चांदनी, सब गुरज बराबर ।
कै कोट जुबां इन खूबीकी, सिफत न सके कर ॥ ४०

---

१. सीढ़ियां । २. वर्णन ।

तले चार गुरज बिलंद[1] हैं, थंभ होत ज्यों कर ।
चारो भोम से छात लग, आए पोहोंचे ऊपर ॥ ४१

सो याही छात को लग रहे, ज्यों एक मोहोल चार पाए ।
पेड़ पांचमा बीचमें, मोहोल पांचों जुदे सोभाए ॥ ४२

सो पांचों माहें मोहोलात हैं, रंग नंग जुदी जिनस ।
देख देख पांचो देखिए, एक पें और सरस[2] ॥ ४३

कहा कहूं क्यों कर कहूं, एक जुबां मोहोल अनेक ।
इन झूठी जिमीके साजसों, क्यों कहूं अरस विवेक ॥ ४४

तले से ऊपर लग, थंभ झरोखे देहेलान ।
ए बैठकें बका मिने, रूहें संग सुभान ॥ ४५

ए पांचों फेरके देखिए, खोलके रूह नजर ।
ले भोम से लग चांदनी, खूब ऊपर खूबतर ॥ ४६

एक तरफ अरस हौज के, तरफ दूजी हौज जोए ।
और दोए तरफ दोए चरनियां, ज्यों जड़ित जगमगे सोए ॥ ४७

ए छठा पहाड़ हौज जोएका, ताके तले बड़ो विस्तार ।
आए पोहोंच्या अधिक ऊपर, इत मिल गया इनके पार ॥ ४८

तले छे जुदे रहे, ऊपर पहाड़ मोहोल एक ।
और दोए कही जो घाटियां, भए आठ ऊपर इन विवेक ॥ ४९

चरनी दोए बड़ी कही, जो बड़े गुरज दरम्यान ।
आइयां जिमी से ऊपर लग, क्या करसी जुबां बयान ॥ ५०

बड़ियां ऊंची आसमान लों, और खूबी देत अति जोर ।
जोर जवेर अति झलकत, किनार दोऊ सीधी दौर ॥ ५१

दोऊ सीढ़ियों के सिरे पर, दोए दरवाजे बुजरक ।
दोऊ तरफों दो दिवालें, सोभित वाही माफक ॥ ५२

---

१. ऊंचे । २. बढ़िया ।

दोए द्वार इत और हैं, इन चांदनी चार द्वार ।
सो चारों तरफों जगमगे, सोभा अलेखे अपार ।। ५३

गुरज दोए हर द्वारने, इत बड़े दरबार ।
सो तेज जोत नूर को, कह्यो न जाए सुमार ।। ५४

ए जो गृदवाए मोहोल चांदनी, बीच मोहोल गुरज हजार ।
जोत बीच आसमान के, मावत नहीं झलकार ।। ५५

ए अति बड़ें मोहोल किनारें, और कंगूरे अति सोभित ।
सोभा इन मोहोलन की, जुबां कहा करसी सिफत ।। ५६

हौज जोए इन पहाड़ से, सो पीछे कहूं सिफत ।
बड़े मोहोल पर मोहोल जो, ए खूबी आकासमें अतंत ।। ५७

इन मोहोल ऊपर जो चांदनी, तिन पर जो मोहोलात ।
सो विस्तार है अति बड़ा, या मुख कह्यो न जात ।। ५८

इन पहाड़ ऊपर मोहोलात जो, ऊँचा बड़ा विस्तार ।
गृद झरोखे ऊपर तले, याको क्यों कर होए निरवार ।। ५९

चारों तरफों दरवाजे, आगूं चौखूंटे चबूतर ।
थंभ चार हर चबूतरे, मोहोल इन आठों पर ।। ६०

चारों तरफों द्वारने, और चारों खूंटों गुरज चार ।
कहा कहूं अंदर मोहोल की, जिनको नहीं सुमार ।। ६१

इनके आठ चबूतरे, तिन आठो पर आठ गुरज ।
आकासमें जाए जगमगें, करें जंग जोत सूरज ।। ६२

इन आठों बीच चार द्वारने, कै सोभा लेत अपार ।
कठेड़ा आठों चबूतरे, तरफ चारों चार द्वार ।। ६३

चार गुरज चार खूंट के, माहें मोहोल फिरते गृदवाए ।
फिरते झरोखे सिरे लगे, आसमानमें पोहोंचे आए ।। ६४

आठो खाँचों के गुरज जो, छ्यानब्बे गुरज कहे ।
बारे गुरज अव्वल कहे, सब एक सौ आठ भए ।। ६५

सब मोहोल अति सुंदर, चौखूटे एक सौ चार ।
चार गृद चार खूंट के, एक सौ आठ यों सुमार ॥ ६६

दिवालां आकासलों, करें जोत जोत सों जंग ।
बिलंद झरोखे कै थंभ, हिसाब ना जिनस रंग ॥ ६७

चारों तरफों मोहोलात के, क्यों कहूं खूबी ए ।
कै रंग नंग थंभ जवेरके, चारों तरफों झरोखें ॥ ६८

एक सौ आठ गुरज जो, ऊपर जाए लगे आसमान ।
कलस रोसन कै तिन पर, सो जाए न कहे जुबान ॥ ६९

माहें मोहोल कै विधके, कै कचेहेरी देहेलान ।
कै मंदिर हवेलियां, क्यों कर कहूं बयान ॥ ७०

कै अंदर नेहेरें फिरें, माहें हवेलियों चेहेबच्चे ।
खुसबोए फूल मेवे कै, माहें बैठक कै बगीचे ॥ ७१

बाहेर देखाई माफक, अंदर बड़ा विस्तार ।
पहाड़ ऊपर या मोहोल में, आवत नहीं सुमार ॥ ७२

बड़े द्वार बड़े चबूतरे, इत सोने के कमाड़ ।
जड़ाव चारो द्वार ने, एक जवेर मोहोल पहाड़ ॥ ७३

इन मोहोलों हक आवत, सुख देने रूहों सबन ।
सुख इत के दिए जो ख्वाब में, सो जानें रूह मोमन ॥ ७४

चरनी आठों चबूतरे, और ऊपर आठों के छात ।
बड़े छज्जे चारों द्वार पर, सब फिरते छज्जे मोहोलात ॥ ७५

कै कलस कै कंगूरे, आसमान में रोसन ।
खूबी हकके अरस की, इत क्यों कहूँ जुबां इन ॥ ७६

जवेर अरस जिमी के, और सोना भी जिमी अरस ।
जिमी रेत या दरखत, सब अरस जिमी एक रस ॥ ७७

अरस तरफ दाहिनी, तरफ सामी ताल जोए ।
बांई तरफ और पीछली, ए कही सीढ़ियां दोए ॥ ७८

अब कहूँ इनका बेवरा, ए सब मोहोलात नंग एक ।
ए लीजो नीके दिल में, केहेती हों विवेक ॥ ७९

ए चारों तरफ कहे पहाड़ के, बीच गुरज बड़े थंभ चार ।
ए आठ निसान गृद के, लीजो रूहें दिल विचार ॥ ८०

और मोहोलात इन ऊपर, सो नूर ऊपर जो नूर ।
देत खूबी बीच आकास के, अवकास सबे जहूर ॥ ८१

एक सौ आठ गुरज कहे, जो करत ऊपर रोसन ।
कंगूरे कलस ऊपर कै, देख होत खुसाल मोमन ॥ ८२

इन मोहोलों बीच इमारतें, हिस्सा कोटमा कह्या न जाए ।
ए खूबी सब्दातीत की, लीजो रूह के दिल लगाए ॥ ८३

आगूं जल अति सोभित, तले गृदवाए पाल ।
तिन पर बन बिराजत, क्यों कहूँ खूबी इन ताल ॥ ८४

ए जवेर अरस जिमीके, सब्दमें न आवत ।
ए मोमन देखो रूहसों, ए जुबां न पोहोंचे सिफत ॥ ८५

नसीहत लई जिन मोमनों, ए तरफ जानें सोए ।
अरस हौज जोए, रूहें पेहेचान यासों होए ॥ ८६

जो अरवाहें अरसकी, सो यामें खेलें रात दिन ।
ऊपर तले माहें बाहेर, ए जरे जरा जानें मोमन ॥ ८७

'महामत' कहें ऐ मोमनों, क्यों कहूं पहाड़ सिफत ।
ए लज्जत तिनको आवसी, जाए हक बका निसबत ॥ ८८

॥ प्रकरण ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ ८३४ ॥

## ताल बंगले जोए मोहोलात

मोहोल के तले ताल जो, तुम देखो अरस अरवाए ।
रहिए संग सुभानके, छोड़िए नहीं पल पाए ॥ १

ऊपर पहाड़ के ताल जो, बोहोत बड़ो विस्तार ।
तले बड़े मोहोलातके, सो नेक कहूं विचार ।। २

बड़े देहेलान कचेहेरियां, बैठक बारे हजार ।
हक हादी रूहनकी, नाहीं सिफत सुमार ।। ३

थंभ बड़े जवेरनके, कहूं सो केते रंग ।
बोहोत छज्जे कै रंगों के, करे जोत जोत सों जंग ।। ४

कै छज्जे ताल ऊपर, पड़त जल मे झांई ।
मोहोल सबे माहें देखत, खूबी आवे न जुबां माहीं ।। ५

अंदर मोहोल नेहेरें चलें, चारो तरफों फिरत ।
इन सबमें सोभा देयके, पुखराजें पोहोंचत ।। ६

तीनों तरफों ताल के, जुदी जुदी मोहोलात ।
बड़े छज्जे तरफ पहाड़ के, दोऊ बाजू दरखतों छात ।। ७

मोहोल दोऊ छातों पर, तिन पर भी बड़े बन ।
ए बन मोहोल अति बिलंद, पर नेक करूं रोसन ।। ८

दोऊ बाजू बन मोहोल दोऊ, परे दोऊ तरफों दरखत ।
पीछे मोहोल पर बड़े मोहोल, तिनकी जुदी बड़ी सिफत ।। ९

आगूं दोऊ सिरें गुरज दोए, माहें छज्जे कै किनार ।
दोऊ बीचमें पानी उतरत, गिरत चादरें चार ।। १०

सो चारो जुदी जुदी, उपरा ऊपर भी चार ।
सोभा लेत और गरजत, सो सोले भई सुमार ।। ११

दोऊ गुरज बीच बड़े देहेलान, जित सोले जाली द्वार ।
थंभ झरोखे दोऊ तरफों, ए सोभा अति अपार ।। १२

तले बैठ जब देखिए, जानों गुरज लगे आसमान ।
क्यों कहूं इन मोहोलातकी, खेलें रूहें हादी सुभान ।। १३

मोहोल बड़े बीच गुरजों के, खूबी लेत तरफ दोए ।
एक खूबी तरफ ताल के, दूजी ऊपर चादरों सोए ।। १४

तले चारों सीढ़ी जुदी जुदी, पीछे करत पानी मार ।
सो चारों उपरा ऊपर, इन विध पड़त धार ।। १५

सो धारें पड़त बीच कुंड के, कुंड पर मोहोल गृदवाए ।
दोऊ बाजू छातें दरखत, पीछे मोहोल मिले आए ।। १६

चारो तरफ झरोखे कुंड के, बीच चादरें खूबी देत ।
बडे देहेलान कचेहेरियां, हक रूहें खुसाली लेत ।। १७

खास मोहोल कुंड ऊपर, जहां लेहेरी छलकत जल ।
सो जल उतरत पहाड़से, चढ़ गिरत ऊंचे नल ।। १८

## बंगले

विराजे बंगले, एजो मोहोल तले ताल ।
बारे हजार बड़ी रूह ले, हकसों खेलत माहें हाल ।। १९

पहाड़ तले कै कुंड हैं, कै विध पानी फिरत ।
कै जिनसें केती कहूं, नेहरें साम सामी चलत ।। २०

कै नेहेरें फिरें माहें फिरतियां, कै आड़ियां आवत ।
एक बड़ी नेहेर बाहेर निकसी, सो पानी पूर ज्यों चलत ।। २१

खास वृख कै विध के, सो केते कहूँ विवेक ।
तले पहाड़ छाया मिने, जानों ए वृक्ष अति विसेक ।। २२

वन सुंदर अति उत्तम, सोभा लेत ए ठौर ।
ए बन छाया का देखे पीछे, जानों ऐसा न कोई और ।। २३

थंभ बड़े बड़ी जाएगा, पहाड़ तले चहुँ ओर ।
ए खूबी कही न जावहीं, वन सोभित नेहेरें जोर ।। २४

बीच बीच दोरी बंध, अड़तालीस बंगले ।
हर हारें अड़तालीस, ए बैठक पहाड़ तले ।। २५

बराबर नेहेरें चेहेबच्चे, और बराबर दरखत ।
झूठी जुबां इन देहकी, क्यों कर कहे ए जुगत ॥ २६

चारों तरफों बराबर, ऊपर लगे पहाड़ सों आए ।
जुदे जुदे जवेरन को, नूर पहाड़ तले न समाए ॥ २७

छात पांचमी पोहोंची पहाड़लों, बड़े बंगले बड़ी दिवाल ।
बड़े छज्जे चारो तरफों, सुख पाइए जो आवे हाल ॥ २८

कै रंगों जरी पसमी, कै दुलीचे रंग केते ।
सोभित हैं सबों बैठकें, कै नकस बेल फूल जेते ॥ २९

दो तीन चार पुड़े चौकियां, कै जवेरों झलकत ।
सीसे प्याले डब्बे तबके, कै वस्तां धरियां इत ॥ ३०

कै सादे सिंघासन, कैयों ऊपर छत्र ।
कै ठौर कदेले कुरसियां, कै तखत खूबतर ॥ ३१

कै एक ठौर हिंडोले, कै सेज बिछोने पलंग ।
कै जुदे जुदे जवेर, करत मिनो मिने जंग ॥ ३२

कै सोभित हैं सांकलें, माहें डब्बे पुतलियां तबक ।
इत रूहें संग स्यामाजी, बीच बिराजत हक ॥ ३३

कै सीढ़ियां सोवरनकी[1], कै हीरा मानिक पुखराज ।
उपली भोम चौकी पर, कै धरे संदूकें साज ॥ ३४

कै सोभित साखें कमाड़ियां, जोर जवेर झलकार ।
घोड़े[2] कड़े बेनी[3] जंजीरां[4], रोसन करत अपार । ३५

हर बंगले विस्तार बड़ा, आगूं बड़े दरबार ।
कै मोहोलों कै मंदिरों, कहों कहां लग कहूँ न सुमार ॥ ३६

ए बन जवेर अरसके, खूबी कहा कहे जुबान ।
बीच बेठक चबूतरे सुख रूहें संग सुभान ॥ ३७

१. स्वर्ण । २. खूंटी । ३. किवाड़ की बाजू । ४. सांकड़

चारो तरफों नेहेरें चलें, बीच कठेड़े चबूतर ।
चेहेबच्चे बीच बीच वन, ए सिफत कहूँ क्यों कर ।। ३८

कै मोहोल नेहेरें किनारें, कै वनमें विराजत ।
भांत भांत कै विध के, ए किन विध करूँ सिफत ।। ३९

वन मोहोल नेहेरें कहीं, इन जिमी विध कही न जाए ।
ए अरस जवेर देख्या चाहे, सो ए वन देखो आए ।। ४०

जैसा पहाड़ तैसी जिमी, और तेसेही दरखत ।
ए मोहोल ऐसे जवेरनके, जुबां क्यों कर करे सिफत ।। ४१

ए नूर खूबी इतकी इतहीं, इनका निमूना सोए ।
और सब्द तो निकसे, जो और ठौर कोई होए ।। ४२

ए दरखत नेहेरें चेहेबच्चे, बीच खेलन ठौर कमाल ।
याही विध बड़े पहाड़ लग, सुख रूहें नूर जमाल ।। ४३

पेहेली तरफ का जो वन, बड़े मेहेराब आगूं दरखत ।
ए वन मेवे केते कहूं, अरस अजीम की न्यामत[1] ।। ४४

जहां लों नजरों देखिए, ए बड़े बृक्ष अति विस्तार ।
मेवे मोहोल छातें बनी, ना कछू पसू पंखी को पार ।। ४५

सोई जिमी उज्जल अति सोभित, एजो पहाड़ नजीक या दूर ।
आकास भरयो रोसनी, कहां लग कहूँ ए नूर ।। ४६

आकास भरयो खुसबोए सों, वाए तेज खुसबोए ।
जित तित सब खुसबोए, बोए चांद सूर दोए ।। ४७

पेड़ बोए पात बोए, बोए फल फूल डार ।
जल जिमी खुसबोए को, कछू आवे नहीं सुमार ।। ४८

जित देखूं तित खुसबोए, पहाड़ जवेर बोए नूर ।
रस धात रेजा रेज जो, खुसबोए सबे जहूर ।। ४९

१. अलौकिक उपलब्धि ।

कै रहत अंदर जानवर, कै विध बोलें बान ।
ए खूबी—खुसाली हककी, जुदी जुदी कै जुबान ॥ ५०

पसू सब खुसबोए सों, खुसबोए सब जानवर ।
तन बंध बंध खुसबोए सों, बोए बाल पर पर ॥ ५१

वस्तर भूखन रूहन के, ताकी क्यों कहूँ खुसबोए ।
इन खूबी खुसबोए को, सब्द न पोहोंचे कोए ॥ ५२

हकीकत तले पहाड़ की, ए जो नेक कही जुगत ।
ए विस्तार इत बोहोत है, जुबां कर न सके सिफत ॥ ५३

जिन जानों रूहन को, अरस में सेवक नाहिं ।
हुकमें काम करावत, जो आवत दिल माहिं ॥ ५४

एक एक मोमन के, अलेखे सेवक ।
बड़ी साहेबी बका मिने, बंदे तिन माफक ॥ ५५

पुतलियां जवेरन की, सोभा सुंदरता अत ।
कहूं केती सेवा बंदगी, सब आग्या सों करत ॥ ५६

या बिध सब जानवर, और केते कहूँ पसुअन ।
सब विध करें बंदगी, जैसा सोभित जिन ॥ ५७

हुकमें होवे सब बंदगी, आगूं इन रूहन ।
हँसें खेलें नाचें गाएँ, कै विध करें रोसन ॥ ५८

पसू पंखी जवेरन के, अति सोभा अरस में लेत ।
सब सेवा करें रूहन की, इत ए काम कर देत ॥ ५९

कै पुतलियां जवेरन की, खड़ियां तले इजन[1] ।
हजार दौड़ें एक हुकमें, आगूं इन रूहन ॥ ६०

हर रूहों आगे दौड़हीं, कै खूबी लेत खुसाल ।
रात दिन कबूं न काहिली[2], रहें हमेसा बीच हाल ॥ ६१

---

१. हुकम । २. सुस्ती ।

बंदियां[1] खूब—खुसालियां, जाए फिरें ज्यों मन ।
काम कर दसो दिस, आए खड़ियां वाही छिन ॥ ६२

ए दौड़ें रूहों के मन ज्यों, खड़ियां हुकम बरदार ।
एक रूह मनमें चितवे, वह जीजी करें हजार ॥ ६३

मुख केहेने की हाजत[2] ना पड़े, जो उपजे रूहों के दिल ।
सो काम कर ल्यावें छिन में, ऐसा इनों का बल ॥ ६४

सरूप रूहों के मनके, जो कछुए मन चाहें ।
ऊपर तले माहें बाहेर, एक पल में काम कर आए ॥ ६५

कै ले खड़ियां रूमाल, कै ले खड़ियां पान डब्बे ।
बंदियां बारे हजार की, आगूं अलेखे ॥ ६६

कै बस्तां आगूं ले खड़ियां, बस्तर भूषन के साज ।
ए साहेबी अरस अजीम की, ए नाहीं ख्वाब के राज ॥ ६७

ए खूबी इन अरस की, क्यों कहूं इन जुबान ।
कायम सुख साहेबी, ए होए रूहों बीच बयान ॥ ६८

ए बातें केती कहूँ, अरस के जो सुख ।
साहेबी इन रूहन की, इत बरनन याही मुख ॥ ६९

जो जवेर बंदे रूहन के, देखो तिन को बल ।
जानत हो इन विध को, देखियो अपनी अकल ॥ ७०

मैं तुमें पूछों मोमनों, जो तुम हो अरस के ।
तुम अपनी रूहसों विचार के, जवाब दयो मुझे ए ॥ ७१

उड़त पर के बाउसे, कोट ब्रह्मांड देवे उड़ाए ।
एक छोटी चिड़िया अरस की, ताकी लड़ाई क्यों कही जाए ॥ ७२

कोट ब्रह्मांड परके बाउ से, अरस चिड़िया देवे उड़ाए ।
तो इन अरस के फील[3] को, बल देखो चित्त ल्याए ॥ ७३

---

१. सेविकाएँ । २. आवश्यकता । ३. हाथी ।

खरगोस एक जवेर का, चले रूह के मन सों ।
बड़ा फील लड़े अरस का, कहो कौन जीते इनमों ॥ ७४

रूहों दिल चाहे बोलत, दिल चाही सोभा सुंदर ।
दिल चाहे पेहेरे भूषन, दिल चाहे बस्तर ॥ ७५

करें दिल चाही सब बंदगी, चित्त चाह्या चलत ।
दिल चाहे बल तेज जोत, सब दिल चाही सिफत ॥ ७६

सब बस्ताँ आगे ले खड़ियां, ज्यों पातसाही लवाजम[1] ।
आगूं चेतन दिल से, खड़ियां सनमुख एक कदम ॥ ७७

रूप रंग रस दिल चाहे, दिल चाही चित्त चितवन ।
दिल चाही अकल इंद्रियाँ, करें दिल चाही रोसन ॥ ७८

ए जो खूब—खुसाली सूरतें, सो सब रूहों के दिल ।
ए जो हर रूहों के आगे खड़ी, बांध अपनी मिसल ॥ ७९

क्यों कर कहूँ ए साहेबी, ए जो रूहें करत अरस माहिं ।
हकें कै देखाए ब्रह्मांड, पर कोई पाइए ना निमूना क्याहिं ॥ ८०

झूठ आगे सांच के, क्यों आवे सरभर[2] ।
नाहीं क्यों कहे आगूं है के, लगे ना पटंतर[3] ॥ ८१

ए जो दुनियां खेल कबूतर, साहेबी आगूं रूहन ।
ए खरगोस रूहों के दिल के, लड़ें साथ अरस फीलन ॥ ८२

ए जो फौज रूहों के दिलकी, आवत सांच समान ।
तिन आगे त्रैगुन यों कर, ज्यों चली जात खेल की जहान ॥ ८३

उपजत रूहों के दिल से, राखत ऐसा बल ।
कै कोट ब्रह्मांड के खावंद, चले जात माहें एक पल ॥ ८४

ए सुध अरस में रूहों को नहीं, देखी खेल में बड़ाई रूहन ।
तो खेल हकें देखाइया, ऊपर मेहेर करी मोमन ॥ ८५

---

१. सामग्री । २, समान । ३. अन्तर ।

नजरों होत *अक्षर के, कोट चले जात माहें छिन ।
में सुन्या मुख धनी के, खेल पैदा फना रात दिन ।। ८६

एक इन वचन का बसबसा[1], तबका रेहेता था मेरे मन ।
*लखमीजी का गुजरान, होत है विध किन ।। ८७

खेल दुनियां अरस खेलोने, करें बाल चरित्र *भगवान ।
या खेल या बिन साहेबी, होए लखमीजी क्यों गुजरान ।। ८८

सो संसे मेरा मिट गया, हक इलमें किए बेसक ।
दिलमें संसे क्यों रहे, जित हकें अपनी करी बैठक ।। ८९

अरस कहया दिल मोमन, दिया अपना इलम सहूर ।
सक ना खिलवत निसबत, ताए काहे न होवे जहूर ।। ९०

जैसी साहेबी रूहन की, विध लखमीजी भी इन ।
वाहेदत्त[2] में ना तफावत[3], ए जानें रूहें अरस तन ।। ९१

ए बातें बका अरस की, विना रूहें न जाने कोए ।
ए बातें खुदाए की, और तो जाने जो दूसरा होए ।। ९२

निपट बड़े सुख अरस के, इत आवत नहीं जुबांए ।
देखा माया निमूना झूठ का, याकी बातें करसी अरस माहें ।। ९३

महामत कहें हुकमें इलम, जो हक सिखावें कर हेत ।
सो केहेवे आगूं अरस तन के, अपने दिल अरसमें लेत ।। ९४

।। प्रकरण ।। १४ ।। चौपाई ।। ६२८ ।।

## जमुनाजीका मूलकुंड, कठेड़ा, चबूतरा, ढांपी, खुली, सात घाट

किनारे मोहोल जोए के, तुम मिल देखो मोमन ।
पांउ पलक न छोड़िए, अपना एही जीवन ।। १

अब जल तले जो आइया, उतर कुंड से जे ।
केताक फैल्या तले दरखतों, और निकसी नेहेर बड़ी ए ।। २

---

१. शंका । २. एकत्व । ३. फर्क ।

जोए जमुनाका जल जो, पहाड़ से निकसत ।
सो पोहोंच्या तले चबूतरे, ए बैठक अति सोभित ॥ ३

तीनो तरफों कठेड़ा, ऊपर छाया दरखत ।
सो छाया मोहोलों पर छई, ए रूहें लेवें लज्जत ॥ ४

जोए जमुना के मूल में, उतर जल चबूतर ।
और कुंड एक इत बन्यो, जहाँ से जल चल्या उतर ॥ ५

इत भी चारों तरफों बैठक, सोभा लेत अति सोए ।
तीनों तरफों कठेड़ा, जल उज्जल खुसबोए ॥ ६

जुदे जुदे रंग जवेर ज्यों, कहा कहूँ झलकार ।
ए कुंड कठेड़ा चबूतरा, सिफत न आवे सुमार ॥ ७

अब कुंड से पुल आगूं चल्या, ढांपिल दोऊ किनार ।
दोऊ तरफों बैठकें, थंभ चले दोऊ हार ॥ ८

बड़े दरखत कुंडलों, ऊपर छाया सीतल ।
अब दरखत मोहोलों माफक, दोऊ तरफों बीच जल ॥ ९

इत दोऊ तरफों कठेड़ा, ऊपर सोभित जल निरमल ।
जहां लग जल ढाँप्या चल्या, जुबां कहा कहे इन अकल ॥ १०

दोऊ तरफों दोए चबूतरे, दोऊ तरफ कठेड़े दोए ।
बीच थंभ लगते चले, सोभा देत अति सोए ॥ ११

ऊपर देहुरियां झलकत, जवेर अति सुन्दर ।
ए खूबी कही न जावही, जल खलकत चल्या अंदर ॥ १२

कै विध विध के कलस कै, कै किनारें कै जिनस ।
झलकार न माए आकासों, कै कटाव कै नकस ॥ १३

बड़ी रूह रूहें सामिल, हक बैठत इन ठौर ।
ए खूबी कहूँ मैं किन जुबां, इतथें जिनस चली और ॥ १४

चार थंभ हारें चलीं, ऊपर ढांपिल तरफ दोए ।
यों चल आई दूर लों, ए जल जमुना जोए ॥ १५

दोऊ किनारों बैठक, बन गेहेरा गृदवाए ।
अति सोभा इन जोए की, इन जुबां कही न जाए ॥ १६

दोऊ तरफों जो देहुरी, कै कंगूरे कलस ऊपर ।
इत बेठक अति सुन्दर, चल आए दोऊ चबूतर ॥ १७

ए जल तरफ ताल के, इतथें चल्या मरोर[1] ।
एक मोहोल एक चबूतरा, ए सोभा अति जोर ॥ १८

इन बन की सोभा क्यों कहूँ, पेड़ चले आए बराबर ।
दोऊ तरफों जुगतें, मोहोल आए ऊपर ॥ १९

ए लंबे बन को जाए मिल्या, जमुना भर किनार ।
इतथें छत्री ले चल्या, जाए पोहोंच्या नूर के पार ॥ २०

दोऊ किनारें सीधी चली, पोहोची पुल केल घाट ।
एक मोहोल चौक इतलों, आगूँ चल्या और ठाट[2] ॥ २१

पेहेले बेवरा सातो घाट का, और जोए हौज मिलाए ।
पीछे पुल मोहोल हकके, सो फेर नीके देऊँ बताए ॥ २२

दोऊ पुल के बीच में, सातो घाट सोभित ।
पांच पांच भोम छठी चांदनी, इन मोहोलोंकी न होए सिफत ॥ २३

छूटक[3] छूटक देहुरी, सातों घाटों माहें ।
दोऊ किनार जड़ाव ज्यों, क्यों कहूँ सोभा जुबांए ॥ २४

इतथें चली ताललों, एक मोहोल एक चबूतर ।
दोऊ तरफों ढांपी चली, जोए[4] हौज[5] मिली योंकर ॥ २५

बन दोऊ किनारें ले चल्या, ऊपर बराबर जल ।
कोई आगे पीछे दोऊ में नहीं, एक दोरी पात फूल फल ॥ २६

या विध कुंडसे ले चली, अति खूबी दोऊ किनार ।
जल ऊपर लटकत चली, दोरी बंध दोऊ हार ॥ २७

---

१. मुड़ कर । २. रचना । ३. अलग । ४. जमुना । ५. तालाब (हौज को सर) ।

जो रंग जित सोभा लेवही, जित चाहिए फल फूल ।
डार पात सब जुगतें, कहा कहे जुबां ए सूल[1] ॥ २८

दरखत सबे खुसबोए के, खुसबोए जिमी और जल ।
वाए तेज खुसबोए सों, तो कहा कहूँ पात फूल फल ॥ २९

जिमी आकास जोत में, तेज जोत जल बन ।
नूर देहुरी किनार दोऊ, अवकास न माए रोसन ॥ ३०

दोरी बंध जल बराबर, दोऊ तरफ चली जो साध[2] ।
चल कुंडसे मरोर सीधी चली, मरोर हौज मिली आए आध[3] ॥ ३१

'महामत' कहें ऐ मोमनों, मैं बोलत बुध माफक ।
ख्वाब मन जुबान सों, क्यों करूँ बरनन हक ॥ ३२

॥ प्रकरण ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ ९६० ॥

## पुल मोहोल दोऊ जवेर के

तुम देखो दिल में, अरवाहें जो अरस ।
हक देखावत नजरों, घड़नाले[4] नेहेरें दस ॥ १

मेहेर करी मेहेबूबने, मोहोल देखे ऊपर जोए ।
ए सुख कहूँ मैं किनको, मोमन बिना न कोए ॥ २

तले ताक[5] अति सोभित, साम सामो बार[6] ।
जल छोड़े ना हद अपनी, निकसत सामो द्वार ॥ ३

नेहेरें आवत जिन द्वार की, निकसत सामो द्वार ।
तले मोहोल के आए के, जल चल्या जात है पार ॥ ४

मोहोल पांचों भोम के, सोभित बराबर ।
दोऊ तरफों देखत, पुल मोहोल पानी ऊपर ॥ ५

दोऊ मोहोलों के बीच में, पानी तले आए निकसत ।
ए मोहोल नूरजमाल के, जुबाँ कहा करे सिफत ॥ ६

---

१. वर्णन । २. सीधी । ३. आधी । ४. धाराएँ । ५. पुल की मेहेराव । ६. दोरी बंध ।

सामी अरस द्वार के, बीच अमृत बन पाट ।
तीन बाएँ तीन दांहिने, ए बेवरा सातो घाट ॥ ७

लगता बट घाट के, चारों खूटों चार हार ।
सो चारों तरफों बराबर, दो जल पर दोए किनार ॥ ८

और मोहोल घाट केल के, सो भी जिनस इन ।
ए दोऊ मोहोल अति सुंदर, करत साम साभी रोसन ॥ ९

साम सामी थंभ झरोखे, और सामें बड़े देहेलान ।
क्यों कहूँ सिफत इन जुबां, जोए ऊपर मोहोल सुभान ॥ १०

चारों तरफों मोहोल छज्जे, तामें एक तरफ भया नूर ।
तरफ दूजो अरस अजीम, दोऊ तरफों जल जहूर ॥ ११

पांच भोम छट्ठी चांदनी, ए खूबी अति सोभित ।
ए हद इन मोहोलन की, जुबां क्या करसी सिफत ॥ १२

सात घाट बीच में लिए, दोए मोहोल दोऊ किनार ।
पुल पूरे जल ऊपर, ले वारसे लग पार ॥ १३

दोऊ तरफों वृक्ष अति सुंदर, दोऊ तरफों मोहोल सुंदर ।
बीच जोए सातो घाटों, दस नेहेरें चलें अंदर ॥ १४

ए अरस जिमी के जवेर, ए मोहोल जवेर नूर तिन ।
जोत बीच आसमान में, मावत नहीं रोसन ॥ १५

नूर—तजल्ला[1] नूर[2] के, बीच में ए मोहोलात ।
ए सुख बका के क्यों कहूँ, इन मोहोलों खेलें हक जात ॥ १६

हक ए सुख देवें हादी[3] को, और देवें रूहन[4] ।
ए सुख अरस अजीम के, क्यों कहूँ जुबां इन ॥ १७

*'महामत' कहें ए मोमनों, सुख अपने अरस[5] के ।
एक पलक छोड़े नहीं, भला चाहे आपको जे ॥ १८

॥ प्रकरण ॥ १६ ॥ चौपाई ॥ ९७८ ॥

---

१. परम धाम । २. अक्षर धाम । ३. श्यामा जी । ४. सखियाँ । ५. परम धाम ।

## पार जोए के बन खूबी

पार जमुना जो बन, इसी भांत दिल आन ।
दोरी बंध बन ले चल्या, डारी सब समान ॥ १

जहां लग नजरों देखिए, तहां लग एही बन ।
जित जमुना तले आए मिली, देखो किनार एही रोसन ॥ २

दोऊ किनारें बन सोभित, चल्या जल जमुना ले ।
रोसनी न माए आकास लों, क्या कहे जुबां नूर ए ॥ ३

चल्या *अक्षर के मोहोललों, एकल छत्री नूर ।
जैसा बन इत धाम का, एभी तैसाही जहूर ॥ ४

मोहोल के पीछे फिरवल्या, जहां लों पोहोंचे नजर ।
सब ठौरों एही रोसनी, कहां लों कहूं क्यों कर ॥ ५

सुंदर दरवाजा नूर का, रोसन झरोखे गृदवाए ।
नव भोम विराजत, मोहोल रोसन रहे छिटकाए ॥ ६

इसी भांत है चांदनी, ऐसी कांगरी ऊपर ।
इतथें जब देखिए, तब आवत धाम नजर ॥ ७

दोऊ दरवाजे साम सामी, सोभित दोरी बंध ।
नूर नूर—बिलंद[१] की, जुबां कहा कहे ए सनंध[२] ॥ ८

एकल छाया बन की, जहां लों नजर देखत ।
तोलों फेर सब देखिया, सोभा सबमें अतंत ॥ ९

खूबी इन भोम बन की, जानों फेर फेर देखूं धाए[३] ।
देख देख के देखिए, तो नजर न काढ़ी जाए ॥ १०

सब एक बन छांहिड़ी, श्री धाम के गृदवाए ।
गृदवाए[४] जमुना तलाब के, नूर अक्षर पोहोंचे आए ॥ ११

बन नूर के फिरबल्या[५], एही छाया है तित ।
इन जुबां ए बरनन, क्यों कर करूं सिफत ॥ १२

---

१. दिव्य धाम । २. तरतीब । ३. दौड़ कर । ४. चारों तरफ । ५. घेर लिया ।

अनेक पसू इन बन में, अनेक हैं जानवर ।
खेलत बोलत गुंजत, करत चकोसर[१] ॥ १३

कै खूबी पसू केसन की, कै खूबी जानवर पर ।
कै सुन्दर सोभा नकस, ए जुबां कहे क्यों कर ॥ १४

कै मुख बानी बोलत, अतंत मीठी जुबान ।
अति सुंदर हैं सोहने, क्यों कर कीजे बयान ॥ १५

कै खेलत करत लड़ाइयां, कै कूदत कै फांदत ।
उड़के कै देखावही, कै बानी बोल रिझावत[२] ॥ १६

पसू पंखी सब बन में, घेरों घेर फिरत ।
कै तले कै बन पर, कै विध खेल करत ॥ १७

*राज *स्यामाजी साथ सों, खेलत हैं इन बन ।
ए जो ठौर कहे सब तुमको, तुम जिन भूलो एक छिन ॥ १८

धनी कबूं देखें फेर दोड़ते, कबूं बैंठ चले सुखपाल[३] ।
ए बन जमुनाजीय का, एही बन फिरता ताल ॥ १९

कबूं राज आगूं दौड़त, ताली स्यामाजी को दे ।
पीछे साथ सब दौड़त, करत खेल हांसी का जे ॥ २०

*'महामत' कहें सुनो साथ जो, छिन बन छोड़ो जिन ।
या मंदिरों संग धनीय के, विलसो[४] रात और दिन ॥ २१

॥ प्रकरण ॥ १७ ॥ चौपाई ॥ ९९९ ॥

## परिक्रमा बड़ी फिराक[५] की

क्यों दियो रे विछोहा दुलहा, छूटी हक खिलवत ।
हम अरवाहें[६] जो अरस की, फेर कब देखें हक सूरत[७] ॥ १

बेसक इलम दिया अपनो, आप आए के इत ।
ना रह्या धोखा जरा हमको, देखाए दई निसबत[८] ॥ २

१. कौतुहल । २. खुश करना । ३. इच्छा चारी विमान । ४. आनन्द अनुभव । ५. जुदाई । ६. आतमाएं । ७. चेहेरा । ८. सम्बन्ध ।

खेल देखाए उरझाए हमको, सो फेर दिया छुड़ाए ।
ना तो ऐसा फरेब[1], कबूं किन छोड्या न जाए ।। ३

हम वास्ते रसूल भेजिया, और भेज्या अपना फुरमान ।
सो इत काहूँ न खोलिया, मिली चौदे तबक की जहान ।। ४

सो कुंजी भेजी हाथ रूहअल्ला, दई महंमद हकी सूरत ।
कह्या आखर आवसी अरस रूहें, खोलो तिन बीच मारफत[2] ।। ५

खिलवत संदेसे दिए रूह अल्ला, जो मेहेर कर केहेलाए ।
किन खोले न द्वार अरस के, मोको सब बिध दई समझाए ।। ६

मुझे संदेसे खिलवत के सब, रूहअल्ला[3] दई सिखाए ।
बेसक इलम अरस का, मोहे सब विध दई बताए ।। ७

छूटी रूहों को अरस की, मूल मेले की लज्जत ।
इस्क न आवे क्यों हमको, जाकी नूरजमाल सों निसबत ।। ८

फेर दई हकें मेहेर कर, मूल मेलेकी लज्जत ।
क्यों न जागें रूहें ए सुनके, जाकी इन हकसों निसबत ।। ९

बेसक इलम रूहों पाइया, अजूं नजर क्यों ना खोलत ।
क्यों न आवे इस्क हमको, जाकी अरस अजीम निसबत ।। १०

पेहेचान हुई सब विध की, पाई हक मारफत ।
क्यों न आवे इस्क हमको, जाकी नूर जमाल सों निसबत ।। ११

हजूर छिन एक ना हुई, इत चली जात मुदत[4] ।
ए क्या हकको खबर है नहीं, वह कहां गई निसबत ।। १२

जो सुख अरसअजीम के, सो देखाए दुनीमें इत ।
भेज्या इलम बका अपना, वह कहां गई निसबत ।। १३

बेसुध चौदे तबकों, तामें हमको बेसक किए इत ।
सुख अरसोंके सब दिए, कर ऐसी हक निसबत ।। १४

---

१. छल (माया) । २. पहचान । ३. श्री देवचन्द्र । ४. समय ।

हम पर अरस में हंसने, माया देखाई तीन बखत ।
इस्क हमारा देखने, वह कहां गई निसबत ॥ १५

चौदे तबक आड़े देयके, सो नजीक छिपे क्यों कित ।
निपट[1] सेहेरग[2] से नजीक, वह कहां गई निसबत ॥ १६

किन तरफ हमारे तुमहो, किन तरफ तुमारे हम ।
बीच भयो क्यों ब्रह्मांड, क्यों हम पकड़ बैठे कदम ॥ १७

पेहेले क्यों फरामोसी[3] देयके, रूहें डारी माहें छल ।
पीछे ताला कुंजी[4] दोऊ दिए, दई खोलने की कल[5] ॥ १८

किन बिध दई तुम बेसकी, सक रही न किन शब्द ।
दुनियां चौदे तबकमें, सुध परी न बांधी हद ॥ १९

हमको सक ना हदमें, ना कछू बेहद सक ।
सक रही न पार बेहद की, दिया बेसक इलम हक ॥ २०

ए बिध रूहें देखी जिनों, सो केहेनीमें आवत नाहिं ।
कछू वास्ते हम रूहनके, हुकम कहावत जुबांए ॥ २१

ए हककी मैं हुकम ले, कै विध बका द्वार खोलत ।
याद देने अरस—अजीममें, होत सब वास्ते उमत ॥ २२

हमतो इत आए नहीं, अरस एक दम[6] छोड्या न जाए ।
जागे पीछे दुलहा, हम देख्या खेल बनाए ॥ २३

अरस निसबत हकको, खेल में आए बिना लेत सुख ।
हिकमत[7] देखन हक हुकम की, कही न जाए या मुख ॥ २४

हुकमें माय्या हुकम पें, सो हुकमें देवनहार ।
सो हुकम फैल्या सबमें हकका, सो हकै खबरदार ॥ २५

बिना हुकम हक के जरा नहीं, कहे सुने देखे हुकम ।
किल्ली[8] इलम हुकमें सब दई, किया तेहेकीक[9] हुकमें खसम ॥ २६

---

१. एक दम । २. अति निकट । ३. भूल (मोह माया) । ४. ढंग, (तारतम ज्ञान) । ५. कौशल । ६. क्षण । ७. कारीगरी । ८. चाभी (तारतम) । ९. निश्चय ।

सुख खिलवत इन मुख क्यों कहूँ, कह्या न जाए जुबांए ।
ए बातें आसक मासूक की, रूहें जानें अरस दिल माहें ।। २७

जो सुख खोलूं अरस के, माहें मिलावे इत ।
निकस जाए मेरी उमर, केहे न सकों छिनकी सिफत ।। २८

हम रूहों को चेतन किए, खोली रूह अल्ला हकीकत ।
ए खिलवत के सुख कहां गए, हम कब पावसी ए न्यामत[१] ।। २९

हक खिलवत सुख मोमनों, लिखी फुरमान में मारफत ।
कहां गए हमारे ए सुख, हम कब पावें ए बरकत[२] ।। ३०

रूहें लगाइयां अपने सरूप में, और भी अपनी सिफत ।
दिल अरस मोमन लीजिए, कहें रूह मता[३] हुकमें 'महामत' ।। ३१

।। प्रकरण ।। १८ ।। चौपाई ।। १०३० ।।

## "खिलवत से चांदनी ताँई"

भोम तले की बैठाए के, खेल देखाया बांध उमेद ।
हक बिना हकीकत कौन कहे, दिए बेसक इलम भेद ।। १

कहां सुख झरोखे अरस के, कहां सुख सीतल बयार ।
कहां सुख बन कहां खेलना, कहां सुख बखत मलार ।। २

कहां सुख कोकिला मोर के, बन में करें टहुँकार ।
बादल अंमर छाइया, सुख बीजलियां चमकार ।। ३

दो दो रूहें मिल बैठती, सुख लेती सुखपला ।
कहां सुख साथ मासूक के, सैर जाते जोए या ताल ।। ४

ए सुख हमारे कहां गए, कहां जाए करूं पुकार ।
तुम कोई न देखाया तुम बिना, अजूं क्यों न करो विचार ।। ५

क्यों दिन जावें एकले, किन विध जावें रात ।
किन विध बसो तुम अरस में, वह कहां गई मूल बात ।। ६

---

१. अलौकिक उपलब्धि । २. सौभाग्य, बढ़ोत्तरी । ३. धन ।

सुख चेहेबच्चे भोम दूसरी, मिल मंदिर बारे हजार ।
कौन देवे मासूक बिना, सुख भूलवनी अपार ॥ ७

हम अरस भोम तीसरी, चढ़ देखें नूर मकान ।
दोऊ द्वारों नूर झलके, ए सुख कब देसी मेहेरबान ॥ ८

इत आवत झरोखे मुजरे, हमारे मेहेबूब के ।
ए सुख धनी हमको, फेर कब देखाओगे ॥ ९

बड़ी बैठक जित होत है, इन बड़े देहेलान ।
ए कब देखाओ मेला बड़ा, मेरे वाहेदत बड़े सुभान ॥ १०

चौथी भोम सुख निरत के, कौन देवे कर हेत ।
ए सुख अरस के इन जिमी, हक हमको विध विध देत ॥ ११

भोम पांचमी सुख पौढ़न के, ए हक की बातें नेक ।
कौन केहेवे मासूक बिना, आसक गुझ विवेक ॥ १२

सुख छठी भोम मोहोलन के, कौन देवे कर विचार ।
इन जुबां सुख क्यों कहूँ, इन हक के बेसुमार ॥ १३

सुख कहा कहूँ भोम सातमी, जो लेत खटों छपर ।
हक हादी रूहें झूलत, साम सामी बांध नजर ॥ १४

सुख हिंडोले भोम आठमी, हक हादी रूहें हींचत ।
ए चारो तरफों के झूलने, हक हमको देत लज्जत ॥ १५

नौमी भोम बैठाए के, जो सुख नजरों दूर ।
ए कौन देवे सुख हक बिना, बुलाए के अपने हजूर ॥ १६

सुख चांदनी चढ़ाए के, पूनम की मध्य रात ।
ए कौन देवे मासूक बिना, इस्क भीगे अंग गात[1] ॥ १७

आगे गुमटियों चढ़ाए के, नजरों नूर मकान ।
कौन देवे अंगुरी बताए के, बिना मेहेबूब मेहेरबान ॥ १८

---
१. शरीर ।

दसो भोमके मोहोल सुख, कौन देवे मासूक बिन ।
सो इत सुख ल्याए इलम, ना तो कौन देवे जिमी इन ॥ १९

॥ प्रकरण ॥ १६ ॥ चौपाई ॥ १०४६ ॥

## अरस आगूं खुली चांदनी

दोऊ कमाड़ों की क्यों कहूं, नूर रंग दरपन ।
ए रोसनी जुबां क्यों कहे, भरचा नूर अंबर[1] धरन[2] ॥ १

दोऊ बाजू बड़े दरबाजे, रूह—अल्ला कह्या रंग लाल ।
बिन अंग जुबां बोलना, आगूं क्यों कहूँ अरस दिवाल ॥ २

चबूतरे दिवाल में, दोऊ तरफ आठ मेहेराब ।
जो नीके कर निरखिए, तो तबहीं उड़ जाए ख्वाब ॥ ३

ए जो कहे आठ मेहेराब, दोऊ चबूतरों पर ।
ए बैठक हक[3] हादी[4] रूहें[5], भरचा नूर जिमी अंबर ॥ ४

बीस थंभ रंग पांच के, आगूं अरस द्वार ।
दस बाएं दस दांहिने, करें रोसन नूर झलकार ॥ ५

हीरा मानिक पोखरे[6], पाच नीलवी जे ।
नूर थंभ तरफ दांहिनी, तरफ बाईं याही नूरके ॥ ६

ज्यों आगूं त्यों पीछल, याके सनमुख माहें दिवाल ।
बीसों दोए चबूतरे, इन दिवाल रंग लाल ॥ ७

अरस आगूं खुली चांदनी, माहें चबूतरे चार ।
दोए तले बीच बनके, दो ऊपर लगते द्वार ॥ ८

इन मोहोलों सुख क्यों कहूँ, आगूं बड़े दरबार ।
हक हादी सुख इन कठेड़े, देत बैठाए बारे हजार ॥ ९

आगूं इन मोहोलों खेलौने, खेल करत कला अपार ।
नाम जुदे जुदे तो कहूँ, जो कहूँ आवे माहें सुमार ॥ १०

---

१. आकाश । २. धरती । ३. श्री राज । ४. श्यामा जी । ५. साथ (ब्रह्मसृष्टि) ।
६. पुखराज नंग ।

ए सुख लें अरवा अरस की, हक हादी संग निस दिन ।
ए जाहेर किया इत हुकमें, वास्ते हम मोमन ॥ ११

चारों हांसों खुली चांदनी, तीन तरफों बन बराबर ।
तरफ चौथी झरोखे अरसके, सोभे आगूँ चबूतर ॥ १२

तले जो दोऊ चबूतरे, वृक्ष लाल हरा तिन पर ।
ए वृक्ष द्वार चबूतरे, नूर रोसन करत अंबर ॥ १३

इत जोत जिमी की क्यों कहूँ, हुओ आकास जिमी एक ।
सोभा क्यों कहूँ आगूँ अरसके, जानों सबसे एह विसेक ॥ १४

आगूँ अरस चबूतरे, हम सखियां बैठत मिलकर ।
ए सुख हमारे कहां गए, खेलत नाचत बांदर ॥ १५

इत तखत कदेले कुरसियां, बैठी रूहें बारे हजार ।
सुख इतके हमारे कहां गए, मोर नचावनहार ॥ १६

हक हमारे इत बैठके, कै विध करें मनुहार ।
कै पसू पंखी अरसके, इत सुख देते अपार ॥ १७

सुख सब पसू पंखियनके, कै खेल बोल दें सुख ।
ए आगूँ अरस आरामके, क्यों कर कहूँ इन मुख ॥ १८

कबूँ एक एक पसू खेलत, कबूँ एक एक जानवर ।
ए सुख अरस अजीम के, सुपन जुबां कहे क्यों कर ॥ १९

कै बांदर बाजे बजावहीं, आगूं अरस के नाचत ।
ए सुख हमारे कहां गए, हम देख देख राचत ॥ २०

इत कै विध पसू खेलत, कै खेलत हैं जानवर ।
खेल बोल नाच देखावहीं, कै हँसावत लड़कर ॥ २१

हक हादी रूहें चांदनी बैठत, ऊपर होत बखत मलार ।
मोर बांदर दादुर कोकिला, सुख देत कर टहुंकार ॥ २२

सुख कहां गए इन समें के, कै विध बन करें गुंजार ।
सेहेरां[1] गाजत छाया बादली, होत बीजलियां चमकार ।। २३
बट पीपल की चौकियां, चारों भोम हिंडोले ।
ए सुख कब हम लेवेंगे, हक हादी रूहें भेले ।। २४
चारो भोम चौकी हिंडोले, हक हादी रूहें हींचत ।
हम सुख लेतीं सब मिल के, सो कहां गई निसबत[2] ।। २५
एक अलंग[3] सारे हिंडोले, सो सिफत न कही जाए ।
अधिकारी इन सुख के, सो काहे को रूह विलखाए[4] ।। २६
पसू पंखी चारों भोम के, सुख देत दिल चाहे ।
सो सुख कब लेसी मोमन, क्यों इन बिन रह्यो जाए ।। २७
कब सुख लेसी फूल बाग के, बाग ऊपर झरोखे ।
कहां जाऊँ किनसों कहूँ, कब हम सुख लेवें ए ।। २८
ए जो चेहेबच्चे फूल बाग के, इत कारंजें[5] उछलत ।
ए सुख कब हम पावेंगे, कहां जाए पुकारूं कित ।। २९
जो सुख लाल चबूतरे, लेत मोहोला[6] बड़े पसूअन ।
ए बैठक सुख क्यों कहूं, ए सुख जानें अरस के तन ।। ३०
हांस चालीस चबूतरा, धरत कठेड़ा जोत ।
केहे केहे सुख केता कहे, आसमान भरयो उदयोत ।। ३१
बाघ चीते गज केसरी, हंस गरुड़ मुरग मोर ।
पसू पंखी सुख क्यों कहूं, इन जुबां के जोर ।। ३२
इत बिछौने दुलीचे, ऊपर सोभित सिंघासन ।
सोभें कै भांतों छत्रियां, कब हक देवें हादी रूहन ।। ३३
कै रंगों बन सोभित, चौक सोभित चबूतर ।
ए खूबी आगूं अरसके, इन जुबां कहूं क्यों कर ।। ३४

१. मेघ । २. सम्बन्ध । ३. दोरी बंध । ४. तड़फाय । ५. फुहारे । ६. मुजरा ।

कहां बन कहां खेलना, कहां सुख मेले सखियन ।
कहां नाचें मोर बांदर, कहां सुख पसू पंखियन ॥ ३५

अरस जिमी जरे की रोसनी, मावत नहीं आकास ।
कब देखें सुख इन जिमी, जित बरसत नूर प्रकास ॥ ३६

जो एक दरखत पात की, हुओ अंबर जिमी रोसन ।
धनी ए सुख कब देओगे हमें, अपने इन बागन ॥ ३७

इत हक कहावें हुकम कहे, वास्ते हादी रूहन ।
अरस में केहेसी सुख खेल के, सिर ले कहें 'महामत' मोमन ॥ ३८

॥ प्रकरण ॥ २० ॥ चौपाई ॥ १०८७ ॥

## सात घाट पुल होज

और सुख सातों घाट के, और सुख दोऊ पुल ।
ए सुख सब अरस के, कब लेसी हम मिल ॥ १

घाट जांबू अति सोभित, जिमी जड़ाव किनारें जोए ।
कै मोहोल किनारे जवेरों, बन सोभित किनारें सोए ॥ २

ए वन जड़ाव जानों चंद्रवा, कै रँग बने इन हाल ।
जाए पोहोंच्या लग झरोखों, अरस की हद दिवाल ॥ ३

देखो बन ए नारंगी, जानों उनथें एह अधिक ।
सुख लेतीं रूहें इन घाट के, कब देसी हमें हक ॥ ४

घाट नारंगी अति भला, जानों कोई ना इन समान ।
सो कब पावें सुख झीलना, जो हम लेतीं संग सुभान ॥ ५

कै रंग बन छत्रियां, सुंदर अति सोभाए ।
करत अंबर में रोसनी, पोहोंची अरस हिंडोलों जाए ॥ ६

सोभा बट घाट क्यों कहूं, तरफ चारों चार दिवाल ।
जरी किनारें दोऊ सोभित, क्यों देऊं इन मिसाल ॥ ७

ऊपर विराजत हिंडोले, तरफ चारों सोभित ।
ऊपर जल पुल लगते, ए सुख कहां गए अतंत ॥ ८

क्यों कहूं रेती इन भोम की, जानों उज्जल मोती सेत ।
ए सुख हमारे कहां गए, जो इन भोमोंमें लेत ॥ ९
अचरज बन इन घाट का, सोभित ज्यों मंदर ।
बेल पात फूल फल छांहें, ए सोभित अति सुंदर ॥ १०
कहां सुख सातों घाट के, कहां सुख पुल मोहोलात ।
कहां सुख झरोखे जल पर, जो तले नेहेरें चली जात ॥ ११
जोए बट थें कुंज बन चल्या, बोहोत रेती बीच ताए ।
ताल हिंडोलों बीच होए, आगूं निकस्या जाए ॥ १२
किन विध लेवें सुख बन के, क्यों हिंडोलों हींचत ।
किन विध रूहें अरस में, माहों माहें केल करत ॥ १३
मोहोल बने बेलियन के, सेज हिंडोलों सिंघासन ।
चेहेबच्चे फुहारे कै सुख, कब होसी रूहन ॥ १४
इन मंदिरों सेज्या सिंघासन, छोटे चेहेबच्चे हिंडोले ।
कै फुहारे नेहेरें चलें, धनी हमें कब सुख देओगे ए ॥ १५
कहां सुख गलियां अरस की, माहों माहें बांध के होड़ ।
रूहें रेती में ठेकतियां, दौड़तियां कर जोड़ ॥ १६
इन घाट आगूं पुल जोए पर, जाए पार पोहोंच्या पुल ।
ए भी तिन बराबर, जो पेहेले कह्या अवल ॥ १७
बन जो दोऊ किनारों, साम सामी सोभात ।
हारें चौकी पांच हार की, पोहोंची पुल पर छात ॥ १८
पुल तले नेहेरें चलें, दोऊ पुल मुकाबिल ।
दोऊ बीच सोभा देय के, जाए ताल पोहोंच्या जल ॥ १९
कहां गए सुख जोए के, जमुना जरी किनार ।
कहां सुख जल कहां झीलना, कहां नित नए सिनगार ॥ २०
दोऊ किनारें जोए के, एक मोहोल एक चबूतर ।
कहूं हेम रंग कहूं जवेर, अति सोभित बन ऊपर ॥ २१

जमुना दोऊ किनार के, मोहोल ढांपिल दोऊ ओर ।
तलाव तरफ जोए आए के, जाए मांहें मिली मरोर ।। २२

।। प्रकरण ।। २१ ।। चौपाई ।। ११०६ ।।

## हौज कौसर

अब ताल पाल की क्यों कहूँ, बन पांच हार गृदवाए ।
फिरती देहुरी चबूतरे, सोभा इन मुख कही न जाए ।। १
बड़े घाट ताल के चार हैं, चारो सनमुख बराबर ।
दोऊ तरफ उतरती देहुरी, तले आगूं चबूतर ।। २
पाल ऊपर जो देहुरियां, आगू हर देहुरी चबूतर ।
तिन दोऊ तरफों सीढ़ियां, जित होत चढ़ उतर ।। ३
सीढ़ी मुकाबिल सीढ़ियां, आए मिलत हैं जित ।
दो दो बीच द्वारनें, सबों सोभित परकोटे इत ।। ४
खिड़की मुकाबिल खिड़कियां, अंदर बाहेर जे ।
जो सुख है मोहोलन के, कब लेसी हम ए ।। ५
ऊपर परकोटे कांगरी, ऊपर हर द्वारनों ।
कांगरी पाल किनार पर, सिफत आवे ना जुबां मों ।। ६
दोऊ द्वार बीच मेहेराब जो, ए सोभा कहूँ क्यों कर ।
पड़साल आगूं सबन के, गृदवाए सोभा जल पर ।। ७
अब जल की सोभा क्यों कहूं, हम करतीं इत झीलन ।
चित्त चाहे करें सिनगार, ए सुख कब लेसो मोमन ।। ८
मासूक संग सुख मिल के, इत हिंडोले पाल पर ।
सो सुख याद क्यों न आवही, जो हम लेतीं मिलकर ।। ६
सब एक हीरे की पाल है, टापू मोहोल याही के ।
अनेक रंग कै जुगतें, किन विध कहूं मुख ए ।। १०
चांदनी झरोखे बैठ के, किन विध लेतीं सुख ।
सो याद देत धनी इन जिमी, काल क्यों काटूं माहें दुख ।। ११

हकें सुख अरस देखाइया, इलम दे करी बेसक ।
हम क्यों रहें इन मासूक विना, जो कछु होए इस्क ।। १२

इन मोहोल सुख रूहों के, और सुख घाटों चार ।
हा हा क्यों जाए हमें रात दिन, ए सुख बैठी रूहें हार ।। १३

याद देत हक ए सुख, हा हा तो भी न लगे घाए ।
ऐसी बेसकी ले क्यों रहे, जो होय अरस अरवाए ।। १४

हक हुकम ऐसा करत है, ना तो तेहेकीक ना रहे तन ।
अब हक इत रूहों राखत, कोई अचरज हांसी कारन ।। १५

याद करों सुख हांसीय के, के याद करों सुख पाल ।
के याद करों तले मोहोल के, हा हा अजूं ना बदलत हाल ।। १६

।। प्रकरण ।। २२ ।। चौपाई ।। ११२५ ।।

## नेहेरें मोहोलों में

सुख नेहेरों का अलेखे, सब ऊपर मोहोलात ।
कै मिली कै जुदियां, तरफ चारो चली जात ।। १

चार तरफ चार नेहेरें, ऊपर सब ढांपेल ।
कहूँ चार आठ सोले मिली, कै विध मोहोलों खेल ।। २

चारों खूटों मोहोल ढांपिल, जानू के रचिया सेहेर ।
इन विध बराबर गलियां, आड़ी ऊंची गली बीच नेहेर ।। ३

कै कोट अलेखे पदमों, सेहेर बसें पसुअन ।
कै सेहेर हैं जानवर, सबों इस्क अकल चेतन ।। ४

यों कै नेहेरें बीच सेहेरन के, इन सेहेरों कै मोहोलात ।
हर मोहोलों कै बैठकें, ए सोभा कही न जात ।। ५

अब नेहेरें बरनन तो करूं, जो कछू होए हिसाब ।
मोहोल मोहोल बीच कै कुंड बने, कै कारंजें छूटें ऊँचे आब ।। ६

कै जल मोहोलों चढ़े, कै मोहोलों उपरा ऊपर ।
कै लाखों हजारों बैठकें, सुख इत के कहूं क्यों कर ।। ७

कै मोहोल ऊँचे अति बड़े, जैसे हक दिल चाहे ।
हर मोहोलों बीच नेहेरें चलें, ए सुख बैठक कही न जाए ॥ ८

हर छातें मोहोल जुदे जुदे, जुदी जुगतें पानी चलत ।
जुदी जुदी जुगतें कारंजें, क्यों कर कहूँ एह सिफत ॥ ९

इन बड़े मोहोल सुख नेहेरों के, हमें कब देओगे खसम ।
मांगे मंगाए जो देओ, सब हुआ हाथ हुकम ॥ १०

सागर से नेहेरें आवत, पानी जुदा जुदा फैलात ।
कै विध मोहोलों होए के, फेर सागरों में समात ॥ ११

कै चलत चक्राव ज्यों, कै आड़ी ऊँची चलत ।
कै चलत मोहोलों पर, कै मोहोलों से उतरत ॥ १२

एक नेहेर से कै नेहेरें, जुदी जुदी फिरत ।
कै जुदी जुदी नेहेरें होए के, कै एक में अनेक मिलत ॥ १३

कै नेहेरें मोहोलों मिने, चारों तरफों फिरत ।
कै मोहोल नेहेरें कै, कै विध विधसों विचरत ॥ १४

कहूं चार नेहेरें मिली चली, कहूं चारसे सोले निकसत ।
कै नेहेरें सुख इन मोहोलों, धनी कब करसी प्रापत ॥ १५

कै नेहेरें जाहेर चली, कै पहाड़ों के मांहि ।
नेहेरें पहाड़ों या सागरों, सोभा क्यों कहूं इन जुबांए ॥ १६

॥ प्रकरण ॥ २३ ॥ चौपाई ॥ ११४१ ॥

## मानिक पहाड़ के हिडोले

पहाड़ मानिक मोहोल कै, यों पहाड़ मोहोल अनेक ।
सब अपार अलेखे इन जिमी, कहां लों कहूं विवेक ॥ १

बड़े पहाड़ जो हिडोले, बारे हजार बैठत ।
एकै छप्पर खटमें, हक हादी साथ हींचत ॥ २

अनेक पहाड़ कै हिडोले, जुदी जुदी कै जुगत ।
जो सुख हिडोले पहाड़ के, जुबां कर ना सके सिफत ॥ ३

कै हिडोले पहाड़ में, ऊपर से ढांपेल ।
सुख लेवें कै विध के, रूहें करें कै खेल ।। ४

कै सुख लें मीठे पहाड़ के, कै विध हींचें हिडोले ।
कै सुख हिडोले बाहेर, बीच पहाड़ के खुले ।। ५

एक जरा इन जिमी का, जोत न माए आसमान ।
जोत जवेरों पहाड़ों की, इत कहा कहे जुबान ।। ६

कोई पहाड़ गृदवाए का, कोई बराबर खूटों चार ।
जो सोभा पहाड़न की, खूबी न आवे माहें सुमार ।। ७

जिमी गृदवाए पहाड़ों की, सब देखत बराबर ।
पहाड़ भी सीधे सब तरफों, जानों हकें किए दिल धर ।। ८

कै मोहोल पहाडों मिने, कै मोहोल पहाड़ों ऊपर ।
जो बन पहाड़ या जिमिएँ, सो इन जुबां कहूं क्योंकर ।। ९

ना सुख कहे जांए जिमी के, ना सुख कहे जांए बन ।
ना सुख कहे जांए मोहोलों के, ना सुख कहे जांए पहाड़न ।। १०

कै पहाड़ झिरने झरें, कै ऊपर नेहेरें चली जांए ।
कै उतरें ऊपर से चादरें, कै तालों बीच आए समाए ।। ११

नेहेरें बन में होए चलीं, सो नेहेरें कै मिलत ।
आगूं आए मोहोल बन के, इत चली कै जुगत ।। १२

ए सुख हमारे कहां गए, ए जो खेल होत दिन रात ।
हक के साथ हम सब रूहें, हँस हँस करती बात ।। १३

।। प्रकरण ।। २४ ।। चौपाई ।। ११५४ ।।

## बनके मोहोल नेहेरें

बन छाया है मोहोल जो, इत मोहोल बने बन के ।
जानों बन सोभा अतंत है, सब सुख लेती रूहें ए ।। १

नेहेरें सागर से खुली चली, सोभी भई बन माहिं ।
ए बन सोभा नेहेरों की, खूबी क्यों केहेसी जुबांए ।। २

सागर किनारें जो बन, ए बन नेहेरें बिवेक ।
मोहोल बन जो देखिए, जानों सोई नेक से नेक ॥ ३

कै मोहोल ढिग सागरों, और कै मोहोल वनराए ।
तिनों में नेहेरें चलें, हम सुख लेती इत आए ॥ ४

ए बन नेहेरें दूर लों, जहां लों नजर फिरत ।
ए सुख संग सुभान के, हम कै विध लेती इत ॥ ५

इन बन की और मोहोल की, और पहाड़ हिंडोले जे ।
जिमी सब बराबर, अरस लग देखिए ए ॥ ६

बन विगरकी जो जिमी, जानों जरी दुलीचे बिछाए ।
ए दूब जोत आसमान लों, रह्या नूरै नूर भराए ॥ ७

ए नेहेरें अति दूर लग, अति दूर देखे सागर ।
सागर नेहेरें मोहोल जो, अति बड़े देखे सुंदर ॥ ८

सागर किनारें मोहोल जो, सो जाए लगे आसमान ।
ए मोहोल जुदी जुदी जिनसों, सुख चाहिए सागर समान ॥ ९

कै मोहोल बराबर सागरों, मोहोल ऊँचे चढ़े अनेक ।
कै जुगतें सोभा सुंदर, ए क्यों कहे जुबाँ विवेक ॥ १०

कै मोहोल सुख सागरों, कै सुख टापू मोहोल ।
ए सुख अपार अलेखे, क्यों कहूं इनकी तौल ॥ ११

*'महामत' कहें सुनो मोमनों, बीच टापू जल गृदवाए ।
ए अति ऊँचे मोहोल सुंदर, देखो अपनी रूह जगाए ॥ १२

प्रकरण ॥ २५ ॥ चौपाई ॥ ११६६ ॥

## पुखराज से पाट घाट तांई

सुख क्यों कहूँ पहाड़ पुखराज के, और कहा कहूं मोहोल तले ।
ऊपर चौड़े मोहोल चढ़ते, मोहोल तीसरे तिन उपले ॥ १

आठ पहाड़ तले मोहोल के, ऊपर ताल पुखराज ।
कै मोहोलातें आठों पर, ऊँचे रहे मोहोल विराज ॥ २

ताल ऊपर मोहोलात जो, आठ पहाड़ तले जो इन ।
मोहोल उपले आकास लों, किया निपट नूर रोसन ॥ ३

निपट बडे मोहोल पहाड़ के, निपट बडे दरबार ।
कब सुख लेसी इनके, ए धनी तुमहीं देवनहार ॥ ४

इत बड़े जानवर खेलत, आगूं बड़े दरबार ।
ए सुख कब हम लेयसी, मोमन इत इंतजार[१] ॥ ५

कै रंगों कै विध खेलत, पहाड़ से सेत[२] फील[३] ।
दम न रहें मासूक बिना, धनी क्यों डारी बीच ढील ॥ ६

कहां गए सुख आपके, हम कहाँ पुकारें जाए ।
तुम बिना नहीं कोई कितहूँ, मोमन बेसक किए बनाए ॥ ७

और सुख पहाड़ ताल के, तीनों तरफों मोहोलात ।
पहाड़ सुख मोहोल अंदर, जो कै नेहेरें चली जात ॥ ८

गुरज दोऊ के बीच में, गिरत चादरें[४] चार ।
चार चार हर एक में, उतरत सोले धार ॥ ९

सो परत बीच कुंड में, इत चारों तरफों देहेलान ।
ए सुख कब हम लेयसी, इन मेले साथ मेहेरबान ॥ १०

कब सुख लेसी बंगलों, जित नेहेरें चलें चक्राव ।
बीच बीच बगीचे चेहेबच्चे, कै जल उतरे तले तलाव ॥ ११

इन मोहोलों इन बंगलों, इन चेहेबच्चें बगीचों ।
ए सुख छाया बन की, कब देओगे हम को ॥ १२

कै सुख बीच बंगलों, कै सुख खूब खुसाली खास ।
सो दिल कब हम देखसी, हकसों विविध विलास ॥ १३

एक सबद सखी बोलते, कै ठौरों उठें जीजी कार ।
मन सरूप कै सोहागनी, कै एक पाँउं खड़ियां हजार ॥ १४

१. प्रतीक्षा । २. सफेद । ३. हाथी । ४. धाराएँ ।

सखी कछुक मन में चाहत, सो आगूं खड़ी ले आए ।
यों चित चाहे सुख धामके, कब लेसी हम जाए ॥ १५

जोए जितथें हुई जाहेर, कहां सुख इन चबूतर ।
आगूं कुंड जल चलकत, बड़ा बन सोभा ऊपर ॥ १६

ए बन गिरद पुखराज के, बड़ा बन खूबी लेत ।
फेर मिल्या बन जोए के, नूर आकास भरचो जिमी सेत ॥ १७

इत अनेक बनसपती, कै पसू पंखी करें जिकर ।
हम इत सुख लेतीं हकसों, जानों बैठक एही खूबतर ॥ १८

ए बन मोहोल कै विध के, बड़े बड़े कै बड़े रे ।
मोहोल मंदिरों हिसाब नहीं, चौड़े चौड़े कै चौड़े रे ॥ १९

जब पीछल चले पुखराज के, अति चौड़े बड़ो विस्तार ।
ए बन खूबी क्यों कहूँ, आवत नहीं सुमार ॥ २०

एक एक पेड़ पर कै भोमें, कै भोम कै जुगत ।
पसू पंखी एक बृक्ष पर, कै जुगतें बास बसत ॥ २१

कै तेज जोत प्रकास में, अवकास भरचो ताके नूर ।
जिमी मोहोल बन पसू पंखी, ए कब देखें अरस जहूर ॥ २२

ए बन जाए बड़े बन मिल्या, चल गया पुखराज पार ।
अरस बन सोभा क्यों कहूँ, और बन दोऊ किनार ॥ २३

कुंड आगे ढाँपी चली, अदभुत ऊपर मोहोलात ।
अंदर बैठकें क्यों कहूँ, दोऊ किनार लिएँ चली जात ॥ २४

किनारें कठेड़ा बेठक, अति सुंदर थंभ सोभात ।
दोऊ तरफों चबूतरे, खूबी इन मुख कही न जात ॥ २५

जाए आगूं भई जोए जाहेर, ढांपिल दोऊ किनार ।
ऊपर कलस दोऊ कांगरी, और थंभ सोभें हारें चार ॥ २६

जड़ित किनारें दोऊ जल पर, दोऊ कठेड़े गिरदवाए ।
ए सुख लेतीं मासूक संग, इत अचरज बनराए ॥ २७

इतथें चली तरफ ताल के, एक मोहोल एक चबूतर ।
दोऊ किनारें कुसादी[1] होए चली, इत सोभा लेत यों कर ॥ २८

आगूं पुल इत आइया, ऊपर बड़ी मोहोलात ।
कै देहेलान झरोखे जल पर, जल चल्या घड़नाले[2] जात ॥ २९

पुल पांच भोम छठी चांदनी, चारो तरफो बराबर ।
ए कहां गए सुख रूहन के, ए हम क्यों गए ठौर बिसर[3] ॥ ३०

सात घाट बने बीच में, पुल दूजा तिनके पार ।
दोऊ मोहोल झरोखे बराबर, इन हिंडोले ठंढी बयार[4] ॥ ३१

पुल से आगे घाट केलका, ले चल्या जमुना जोए ।
केल किनारें मिल्या मधुबन, पुखराज अरस बीच दोए ॥ ३२

लटक रही केलाँ जोए पर, अति खूबी खूबतर ।
ए सुख कब लेसी इन घाट के, खेलें विध विध जानवर ॥ ३३

इन आगूं घाट लिबोई का, लग्या हिंडोलों जाए ।
क्यों कहूँ छबि छत्रियन की, ए घाट अति सोभाए ॥ ३४

इत सुख लेवें सब मिलके, रूहें बड़ी रूह हकसों ।
सो फेर कब हम देखसी, लेसी बैठकें हिंडोलों ॥ ३५

इन आगूं घाट सोभित, अति विराजे जोए किनार ।
काहूँ काहूँ बीच मोहोल है, बन सोभे हार अनार ॥ ३६

जाए मिल्या अरस दिवालों, सोले गुरज झरोखे बीस ।
हर गुरज बीच बीच में, मोहोल सोभें झरोखे तीस ॥ ३७

इन घाटके ऊपर, रोसन पांच सै झरोखे ।
इन बन मोहोलों मासूक संग, सुख कब लेसी हम ए ॥ ३८

ए झरोखे एक भोम के, यों भोम झरोखे नवों ठौर ।
तिन ऊपर चाँदनी कांगरी, तापर बैठक विध और ॥ ३९

---

१. समान । २. मानिंद नहरों के । ३. भूलना । ४. पवन ।

आगूं घाट मोहोल अति सुंदर, जल पर अति सोभाए ।
तले घड़नाले तिनमें, बीच तीन नेहेरें चली जाए ॥ ४०
थंभ बारे पाट[१] चांदनी, जल हिस्से तीसरे जोए ।
चारों खूटों थंभ नीलबी, थंभ आठ चार रंग सोए ॥ ४१
लग कठेड़े रूहें बैठत, कै रंग जवेरों जोत ।
बीच बैठे मासूक आसक, जल बन आकास उदद्योत ॥ ४२
इत सोभित बन अमृत, और कै विध बन अनेक ।
ए जाए मिल्या लग चांदनी, अरस आगूं बन विवेक[२] ॥ ४३
द्वार अरस अजीम का, और नूर द्वार जोए पार ।
ए सुख कब हम देखसी, इन दोऊ दरबार ॥ ४४
नूर पार भी एह बन, और पहाड़ पुखराज ।
इन आगूं बड़ा बन चल्या, रह्या सागरों लग विराज ॥ ४५
नजर फिरी मेरी दूर लग, देख्या बन विस्तार ।
नीला पीला स्याम सेत कै, कहों कहाँ लग कहूँ न सुमार ॥ ४६
जिमी सब बराबर, बन पोहोंच्या सागर जित ।
या बन या मोहोलों मिने, नेहेरें चली गैयां अतंत ॥ ४७
पार ना पहाड़ों हिंडोलों, नहीं मोहोलों नेहेरों पार ।
पार ना बन नेहेरें जिमी का, क्यों पसू पंखी होए निरवार[३] ॥ ४८
पार न आवे सागरों, और पार किनारों नांहि ।
पार ना मोहोलों किनारों, कै नेहेरें आवें जांए ॥ ४९
मोहोल जिमी बन कहत हों, और पहाड़ नेहेरें बनराए[४] ।
ए कैसे होसी अरस के, ए देखो रूह जगाए ॥ ५०
कै फौजें पसुअन की, कै फोजें जानवर ।
जिमी खाली कहूँ न पाइए, बसत अरस लसकर[५] ॥ ५१

---

१. बारादरी । २. जैसा चाहिए । ३. निर्णय । ४. बन, बगीचे । ५. सेन्या ।

जिमी बन ए लसकर, जिमी वस्ती न कहूँ वैरान[1] ।
सब आए मुजरा करत हैं, आगूं अरस सुभान ॥ ५२

ए पातसाही अरस की, केहेनी में आवत नाहिं ।
ए कह्या वास्ते मोमन के, जानों दिल दौड़ावें ताहिं ॥ ५३

एक पात न गिरे बन का, ना खिरे पंखी का पर ।
एक जरा जाया[2] न होवही, ए अरस जिमी यों कर ॥ ५४

सब जिमीएँ मोहोल हकके, और सब ठौरों दीदार ।
सब अलेखे अखंड, कहें *'महामत' अरस अपार ॥ ५५

॥ प्रकरण ॥ २६ ॥ चौपाई ॥ १२२१ ॥

## पसू पंखियों की पातसाई

एह निमूना ख्वाब का, किया कारन उमत ।
कायम अरस ख्वाब में, देखाया लेने लज्जत ॥ १

*ब्रह्म सृष्टि कही वेदने, एहेल[3] अल्ला कहे फुरमान[4] ।
निसबत सुख ख्वाब में, कर दई हक पेहेचान ॥ २

एक साहेबी अरस की, और कोई काहूँ नाहिं ।
आराम देने उमत को, देखाया ख्वाब के माहिं ॥ ३

ख्वाब देखाई साहेबी, और अरस की हैयात[5] ।
ए दोऊ तफावत[6] देख के, दिल में सुख न समात ॥ ४

कहूँ अरस अजीम की, जो बन का विस्तार ।
नहीं इंतहाए[7] जिमी जंगल का, ना पसू पंखी सुमार ॥ ५

इन रेत रंचक[8] की रोसनी, आकास न मावे नूर ।
तो रोसनी सब बन की, क्यों कर कहूँ जहूर ॥ ६

तेज ऐसो इन डारको, और पात को प्रकास ।
सो रोसनी ऐसी देखत, मावत नहीं आकास ॥ ७

१. उजाड़ । २. नुकशान । ३. वारिस (ब्रह्म सृष्टि) । ४. कुरान । ५. अमरत्व । ६. अन्तर । ७. अन्त, सीमा । ८. जरा मात्र ।

ए जुबां ना केहे सकत, एक पात की रोसन ।
तो इन डारकी क्यों कहूं, जो प्रफूलित[1] सब बन ।। ८

डार पात सब नूर में, फल फूल बेलों जोत ।
केहे केहे मुख कहा कहे, सब आकास में उदचोत ।। ९

वन गृदवाए अरस के, एही गृदवाए ताल ।
एही गृदवाए जोए के, जुबां कहा कहे खूबी जमाल[2] ।। १०

कह्या ऐसा ही बन नूरका, रेत ऐसे ही रोसन ।
तो नूर मोहोल की क्यों कहूँ, जाको नामै नूर वतन ।। ११

तो अरस मोहोल की रोसनी, और मोहोल हौज जोए जे ।
नूर मोहोल ना केहे सकों, तो क्या कहे जुबां नूर ए ।। १२

सिरदार सब बन में, पसू पंखी जात जेती ।
खूबी बल हिकमत की, जुबां क्या कहेगी केती ।। १३

जिमी अरस की देखियो, हिसाब न काहूँ सुमार ।
देख देख के देखिए, अनेक अलेखे अपार ।। १४

तिन सब जिमी में बस्ती, कहूँ पाइए नहीं वैरान ।
पातसाही पसुअन की, और जानवरों की जान ।। १५

ए जो जिमी अरस हक की, सो बैरान क्यों कर होए ।
आबादान[3] हमेसगी, आराम विना नहीं कोए ।। १६

अखंड आराम सबमें, चल बिचल इत नाहिं ।
सब सुख हैं अरस में, रहें याद हक के माहिं ।। १७

अरस परस हैं हक सों, आसक हक के जोर ।
आवें दीदार को दरिया लेहेर ज्यों, कै पदमों लाख करोर ।। १८

कै लेहेरें आवत हैं, जो नाहीं जिमी का पार ।
पीछे आवें दरिया पसुअन के, तिन दरिआव नहीं सुमार ।। १९

---

१. खिला हुआ । २. सौंदर्य । ३. बसा हुआ ।

दौड़ इनो के मन की, क्यों कर कहूं छंछेक[1] ।
पोहोंचें सब कदमों तले, जित खावंद सबों का एक ।। २०

जो ठौर चित्त में चितवें, हम जाए पोहोंचें इत ।
छिन एक बेर न होवही, जानों आगे खड़े हैं तित ।। २१

एक हक अरस के नजीक हैं, कोई दूर दूर से दूर ।
आवत सब दीदार को, जानो आगे खड़े हजूर ।। २२

हिकमत बल इनों के, क्यों कर कहे जुबान ।
दीदार पावें अरस हक का, सो देखो दिल आन ।। २३

क्यों न होए बल इनको, जाको अमृत हक सींचत ।
ए पाले पोसे खावंद के, अरस तले आवत ।। २४

विचार किएँ पाइयत हैं, इनों बल हिकमत ।
ए किया निमूना पावने, इन कादर[2] की कुदरत[3] ।। २५

हकें देखाई इन वास्ते, अपनी जो कुदरत ।
अरस बड़ाई पाइए, ए देखें तफावत ।। २६

करत सबे साहेंबियां, जिमी जुगत भर पूर ।
दोऊ बखत आवत हैं, देखन हक का नूर ।। २७

पातसाई पसू पंखियन को, करत बिना हिसाब ।
अखंड अलेखे अति बड़े, पिएँ नूर हैयाती—आब[4] ।। २८

हिसाब नहीं पसुअन को, हिसाब नहीं पंखियन ।
नाहीं हिसाब वन जिमी को, जो बीच कायम वतन ।। २९

बसत सबे अरस तले, कै पदमों लाख करोर ।
करत पूरी पातसाहियां, पसू पंखी दोऊ जोर ।। ३०

जो कोई दूर बसत हैं, सो जानों आगे हजूर ।
बोहोत बल हिकमत, सब अंगो निज नूर ।। ३१

---

१. स्फूरती । २. सामर्थ्य वान (अक्षर) । ३. माया । ४. अमृत ।

जित मनमें चितवें, तित पोहोंचें तिन बखत ।
ऐसा बल रखे हक का, कायम जिमी में बसत ॥ ३२

पसू पंखी इन बन में, जो जिमी बन सोभित ।
और सोभा पर नकस की, क्यों कर करूँ सिफत ॥ ३३

पसू सुंदर अति सोहनें, मीठी बान बोलत ।
इनों सिफत जुबां क्यों कहे, खावंद कों रिझावत[1] ॥ ३४

कै भांतें कै खेलोंने, कै खेल खुसाली करत ।
कै विधों निरत नाच के, मासूक को हँसावत ॥ ३५

अनेक बानी मुख बोलहीं, अनेक अलापें गाए ।
ऐसे बचन कै बोलहीं, किसी आवे न औरों जुबांए ॥ ३६

छोटे बड़े पसू पंखी, सब रिझावें साहेब ।
लड़ें खेलें बोलें बानी, विद्या कै विध साधें सब ॥ ३७

कै जुदी जुदी विद्या जानवर, कै चढ़ें कूदें ऊँचे फांदें[2] ।
टेढ़े आड़े सीधे उलटे, कै बिध गत[3] साधें ॥ ३८

कै बिध करें लड़ाइयां, कै विध नाचें मोर ।
कै बिध हंसावें धनी को, खेल करें अति जोर ॥ ३९

निरमल नेत्र अति सुंदर, परों पर चित्रामन ।
मीठी बानी खूबी खेल की, कहां लों कहूं रोसन ॥ ४०

और गत पसुअन की, खेल बोल इनों और ।
क्यों कहूं सिफत इनों की, जो बसत सबे इन ठौर ॥ ४१

कै लड़ के देखावहीं, कै उड़ देखावें कूद ।
क्यों कहूं सिफत कायम की, इन जुबां जो नाबूद[4] ॥ ४२

कै देत गुलाटियां, कै अनेक करें फैल हाल ।
सौ सौ गत देखावहीं, ज्यों हक हादी रूहें होत खुसाल ॥ ४३

---

१. प्रसन्न करना । २. उलंघ जाना । ३. चाल । ४. नश्वर ।

कै हंस गरुड़ केसरी, कै बाघ चीते घोड़े ।
ए ऐसे कहे जानवर, उड़ आकास में दौड़ें ॥ ४४

हाथी इत कै रंग के, अस्वारी के सिरदार ।
कबूं कबूं राजस्यामाजी रूहें, बड़े बन करत बिहार ॥ ४५

कबूं कबूं राज रूहन सों, मन बेगी सुखपाल ।
बड़े बन मोहोलन में, करत खेल खुसाल ॥ ४६

इत और वृक्ष कै बड़े, निपट बड़े हैं बन ।
बन पर बन अति बिस्तरे, कहां लग करूं रोसन ॥ ४७

एक पेड़ लम्बी डारियां, तिन डारों पर पेड़ अपार ।
पेड़ डारों कै भोम रची, जुबां कहा कहे ए विस्तार ॥ ४८

इन भोम भोम कै मंदिर, पेड़ डारी के दिवाल ।
छाया बनी पात फूल की, कै बन मंदिर इन हाल[१] ॥ ४९

विस्तार बड़ा एक पेड़ पर, कहां लग कहूं जुबान ।
देखो बिध एक वृक्ष की, ए मंदिर न होए बयान ॥ ५०

एक वृक्ष को बरनन, ऐसे कै वृक्ष तिन बन माहिं ।
तिन पर विस्तार अति बड़ो, सेहेर बसत जानों ताहिं ॥ ५१

एक पेड़ दरखत का, कै दरखत तिन पर ।
तिन पर कै मंदिर रचे, कै रहत अंदर जानवर ॥ ५२

कितने पेड़ जिमी पर, कै पेड़ पेड़ ऊपर ।
यों पेड़ पर पेड़ आसमान लों, कै सोभा देत सुंदर ॥ ५३

इन विध बन बिस्तार है, उपरा ऊपर अतंत ।
सोभा अमान पसू पंखी, इन मंदिरों में बसत ॥ ५४

बोहोत दूरलों ए बन, आगूं आगूं बड़े देखाए ।
चढ़ते चढ़ते चढ़ते, लग्या आसमानों जाए ॥ ५५

---

१. प्रकार ।

एक पंखी जिमी पर, एक बसत इन मोहोलन ।
एक बसत बल परन के, आकास में आसन ॥ ५६

ए बड़े खेल की खुसाली[1], बड़े बन कबूं करत ।
अस्वारी पसू पंखियन पर, कै कूदत उड़ावत ॥ ५७

हाथी ऊँचे पहाड़ से, मुख सुंदर दंत सुढाल[2] ।
मन बेगी कबूं न काहेली[3], तेज तीखी चलें चाल ॥ ५८

बाघ गुंजे अति बली, कूवत[4] ले कूदत ।
देखे आवत दूर से, जानों आसमान से उतरत ॥ ५९

चीते अतंत सुंदर, ऐसे ही बलबान ।
कमी काहूं में नहीं, सोभित जोड़ समान ॥ ६०

जरे जानवर के वाओसों, ब्रह्मांड उड़ावे कोट ।
तो अरस जिमी के फीलकी, कहूं सो किन पर चोट ॥ ६१

ब्रह्मांड बड़ा इन दुनी में, कोई नाहीं दूसरा ठौर ।
तो अरस बाघ के बलको, कहूं न निमूना और ॥ ६२

बोहोत बातें हैं इनकी, सो केती कहूँ जुबान ।
ए नेक इसारत करत हों, है बेसुमार बयान ॥ ६३

अलेखे बल अकल, अलेखे हिकमत ।
अलेखे पेहेचान है, इस्क अलेखे इत ॥ ६४

ख्वाब बल पसुअन का, देखलाया तुम को ।
कैसा बल अरस पसुअन का, विचार देखो दिल मों ॥ ६५

झूठ देखे सांच पाइए, इस्क बल हिकमत ।
ए तीनों तौल देखो दोऊ ठौर के, अंदर अपने चित्त ॥ ६६

ए झूठा अंग झूठी जिमी में, झूठी इन अकल ।
पूछ देखो याही झूठ को, कोई अरस की है मिसल ॥ ६७

---

१. खुशी । २. सुडौल । ३. सुस्ती । ४. शक्ति ।

अरस मिसाल कोई है नहीं, तौल देखो तुम इत ।
ए झूठा पसू बल देख के, तौलो जिमी बल सत ॥ ६८

सांच झूठ पटंतरो, कबहूँ नाहीं कित ।
तो धनिएँ देखाई कुदरत, लेने अरस लज्जत ॥ ६९

विचार किएँ इत पाइए, अरस बुजरगी इत ।
धनी बुजरगी पाइए, और बुजरगी उमत ॥ ७०

'महामत' कहें ऐ मोमनों, एही उमत पेहेचान ।
बिध बिध बान जो बेधही, हक बका अरस बान ॥ ७१

॥ प्रकरण ॥ २७ ॥ चौपाई ॥ १२६२ ॥

## पसू पंखियों का इस्क सनेह

खावंद इनों में खेलहीं, धंन धंन इनों के भाग ।
अरसके जानवरों का, कायम है सोहाग ॥ १

सब जिमी में बसत हैं, करत हैं कलोल ।
रात दिन जिकर हककी, करें मीठे मुख बोल ॥ २

जस नया जुबां जुदी जुदी, रात दिन रटन ।
याही अंग इस्क में, छोड़त नाहीं छिन ॥ ३

खावंद के दीदार को, पसू और जानवर ।
आवत हैं गुन गावते, अपने समे पर ॥ ४

किस्सा इनों के इस्क का, किन मुख कह्यो न जाए ।
दीदार न होवे बखत पर, तो जानों अरवा देवें उड़ाए ॥ ५

अरवा इनों की ना छूटे, पर ऊपर होंए बेहोस ।
अंग अरवा क्यों छूटही, अंदर धनी को जोस ॥ ६

एक रोम न गिरे इनों का, हक नजर सींचेल ।
आठों पहर अंग में, करत धनी सों केल ॥ ७

धनी इनों के कारने, सरूप धरें कै करोर ।
लें दिल चाह्या दरसन, ऐसे आसक हक के जोर ॥ ८

सो मैं कह्यो न जावही, जो इस्क इनों के अंग ।
रोम रोम इनों के कायम, क्यों कहूँ इस्क तरंग ॥ ९

एक इस्क धनी बिना, और कछू जानत नाहिं ।
खेलें बोलें गायँ लरें, सो सब इस्क माहिं ॥ १०

क्यों कहूँ पसू पंखियन की, इनके इस्क को बल ।
एक जरे को न पोहोंचही, इन अंग की अकल ॥ ११

मैं देख्या अरस के लोकों को, कोई अंग न बिना इस्क ।
क्यों न होए गंज इस्क के, जित जरा नाहीं सक ॥ १२

कह्यो क्योंए न जावही, इन अंगों के इस्क ।
कै कोट जुबां ले कहूँ, तो कह्यो न जाए रंचक ॥ १३

जेता बल जिन अंग में, तेता इस्क हक का जान ।
सक जरा न मिले, पीउ सों पूरी पेहेचान ॥ १४

पीउ की पेहेचान बिना, कछुए न जाने कोए ।
जरा सक तो उपजे, जो कोई दूसरा होए ॥ १५

इस्क पूरा इनों अंगों, और पेहेचान पूरन ।
सब वजूदों एही रोसनी, कछू जानें ना हक बिन ॥ १६

कछू कह्यो तो जावही, जो कछू जरा कहावे कित ।
ब्रह्मांड तो खेल कबूतर, एक जरा न पाइए इत ॥ १७

तार्थे अंबार[1] इस्क के, इन जिमी सब जान ।
हकका कायम वतन, सब अंग इस्क पेहेचान ॥ १८

एक जरा जो इन जिमी का, सो सब इस्कै की सूरत ।
आसमान जिमी जड़ चेतन, पेहेचान इस्क दोऊ इत ॥ १९

पार नहीं जिमीन को, और पार नहीं आसमान ।
पार नहीं जड़ चेतन, पार ना इस्क रेहेमान ॥ २०

---

१. भण्डार ।

छोटा बड़ा अरस का, सो सब हैं चेतन ।
पेहेचान इस्क अंग में, इन विध बका वतन ।। २१
जल में जीव बसत हैं, सो सुंदर सोभा अमान[1] ।
फौज बांध आगूं धनी, खेल करें कै तान ।। २२
मच्छ कच्छ मुरग मेढ़क, कै रंग करें अपार ।
जुदी जुदी बानी बोलत, स्वर राखत एक समार ।। २३
कै रंगों गुन गावते, सब स्वर बांधे रसाल ।
जस धनी को गावहीं, जिकर करें माहें हाल ।। २४
जीव छोटे बड़े कै जल के, अपने अपने ख्याल ।
खेलें बोलें दौड़ें कूदें, खावंद को करें खुसाल ।। २५
अनेक जानवर जल के, सो केते लेऊँ नाम ।
जल किनारे रटत हैं, पीउ जस आठों जाम ।। २६
देखो नेक नीके कर, इनमें जरा सक नांहि ।
क्यों न होए इस्क के अंबार, तुम विचार देखो दिल मांहि ।। २७
जो जरा इन जिमी का, तिन सब में इस्क ।
ए चेतन इन भांत के, कछू जानें न बिना हक ।। २८
पसू पंखी बन जिमिएँ, तले ऊपर हैं जित ।
क्या जानें मूढ़ मुसाफ[2] की, रमूजें[3] इसारत[4] ।। २९
देखो अंबार इस्क के, या जड़ या चेतन ।
जो कछू नजरों श्रवनों, सो इस्कै को वतन ।। ३०
दरखत करत हैं सेजदा, छोटा बड़ा घास पात ।
पहाड़ जिमी जल सेजदे, इस्क न इनों समात ।। ३१
यों अरस सारा इस्क मै, एक जरा न जुदा होए ।
खावंद सबों पिलावहीं, क्यों कहिए इस्क विन कोए ।। ३२

---

१. बे मिसाल । २. धर्मग्रन्थ । ३. रहस्य । ४. संकेत ।

आसक सबे इस्क मै, या चांद या सूर ।
या तारा या आकास, सब इस्कै का जहूर ।। ३३
जो सरूप इन जिमी के, सो सब रूह जिनस ।
मन अस्वारी सबन को, आए पिएँ प्रेंम रस ।। ३४
सो भी रूह मन अरस के, ए तूँ नीके जान ।
बल देख झूठे मन को, अरस मन बल पेहेचान ।। ३५
ए झूठ हक को न पोहोंचही, तो क्यों देऊँ निमूना ए ।
कछुक तो कह्या चाहिए, गिरो समझावने के ।। ३६
चारों तरफों अरस जिमिएँ, जो कोई हैं सूरत ।
बखत पर दीदार को, मनबेगी पोहोचत ।। ३७
कोई दूर बसत हैं, दूर दूर से दूर ।
सोभी जान कदमों तले, इन मन बल ऐसा जहूर ।। ३८
इन जिमी की क्यों कहूं, जिनको नाहीं पार ।
उत पार जो बसत हैं, इन मन बल को नहीं सुमार ।। ३९
जो कोई जहां बसत हैं, सो तहां से आवत ।
समे सिर दीदार को, कोई नाहीं चूकत ।। ४०
ज्यों मन एक निमख में, पोहोंचत पार के पार ।
तो क्यों न पोहोंचे बका जिमी को, जिन मन बल नहीं सुमार ।। ४१
दसों दिस बसत हैं, सबमें खावंद बल ।
रोम रोम अंग इस्क के, इन हक इस्कै के सींचल ।। ४२
कोई न निमूना पाइए, या इस्क या बल ।
एह खिलौने तिनके, जो खावंद अरस असल ।। ४३
एक जरा कह्या जुबां माफक, इत अलेखें विवेक ।
रूहें अरस का बल अरस के, जो हक्क जात हैं एक ।। ४४
ख्वाब बैठ इन अरस में, हके देखाया तुमकों ।
'महामत' कहें ऐ मोमिनों, पेहेचान लीजो दिलमों ।। ४५

।। प्रकरण ।। २८ ।। चौपाई ।। १३३७ ।।

## पसू पंखियों की अस्वारी

अस्वारी पसू पंखियन पर, धनी करत हैं जब ।
जो जहां बसत हैं, सो आए मिलत हैं सब ॥ १

अस्वारी को रूहन का, जिन पर हुआ दिल ।
तिन आगूं ही जानिया, सो आए खड़े सब मिल ॥ २

केसरी बाघ चीते हाथी, और जातें कै अनेक ।
कह्या जीन बने अंग उत्तम, सो कहां लों कहूं विवेक ॥ ३

कै विध अस्वारी होत है, बुजरग जो जानबर ।
जीन जुगत क्यों केहे सकों, जो असल बने इन पर ॥ ४

घोड़े पर राखत हैं, आकास में उड़त ।
कमी करें ना कूदते, सुख अस्बारी के अतंत ॥ ५

कै विध खेल रूहन के, मन वेगी जानवर ।
तिन पर अस्वारी करके, चढ़त आसमान पर ॥ ६

सोभा लेत बनमें रूहें, अस्वार होत मिल कर ।
पसू पंखी दौड़ें मन ज्यों, जित जिमी बन विगर ॥ ७

जब अस्वारी साहेब करें, होवें बड़ी रूह रूहें अस्वार ।
पसू पंखी सबे मिले, हर जातें फौजें न पार ॥ ८

कै जातें पसुअन में, हर जातें गिनती अपार
यों जातें जानवरों में, हर जातें नहीं सुमार ॥ ९

पसू पंखी जो बन में, सब आवें करने दीदार ।
राज स्यामाजी रूहें, जब कबूं होवें अस्वार ॥ १०

हर फौजों बाजे बजें, हर फौजों निसान ।
भांत भांत रंग राखत हैं, आप अपनी पेहेचान ॥ ११

एह जुबां केती कहूँ, अलेखें विस्तार ।
एक जात की फौज न गिन सकों, तिन हर फौजों कै सिरदार ॥ १२

कै फौजें तिन सिरदार की, हर फौजों कै जमातदार[१] ।
गिनती तिन जमात की, होवे नहीं सुमार[२] ॥ १३

यों जुदो जुदो जातें चलते, दाएँ बाएँ मिसल ।
इंतमाम[३] सबों में अति बड़ा, या आगूं या पीछल ॥ १४

आगे पीछे फौज के, चोपदार बड़े बांदर ।
दाएँ बाएँ मिसल[४] अपनी, फौज रखें बराबर ॥ १५

कै फौजें पसुअन की, और कै फौजें जानवर ।
सुआ मैना नकीब तिनमें, फौज रखें मिसल पर ॥ १६

कै जातें देखे जवेर, अरस के भूखन ।
जंग करें जानवरों, जो परों पर चित्रामन ॥ १७

पर जो पसुअन के, सो अतंत सोभा लेत ।
कहा करे ए भूखन, पसू ऐसी सोभा देत ॥ १८

इनों रोम की रोसनी, सो उठत माहें आसमान ।
जंग करे जवेरों सों, कोई सके न काहूं भान ॥ १९

एक रोम जोत आसमान में, रही रोसनी भराए ।
तो जो एते पसू पंखी, सो जोत क्यों कही जाए ॥ २०

ए दिल जाने रूहसों, मुख जुबां पोहोंचे नाहिं ।
ए मोमन होए सो बिचारसी, अपने हिरदे माहिं ॥ २१

सो भूखन जो अरस के, सब पेहेरे मन चाहे ।
सिनगार किया सब लसकरें, ए देखो मन ल्याए ॥ २२

एक जरे जिमी की रोसनी, सो ढांपे कै कोट सूर ।
तो जिमी पहाड़ मोहोलन को, सब कैसा होसी नूर ॥ २३

बन जंगल या जिमी, एक दूजे से प्रकास ।
बिचार देखो ऐ मोमनों, नूर कैसा भया आकास ॥ २४

---

१. सेन्यापति । २. हिसाब । ३. व्यवस्था । ४. समूह ।

ए नूर जिमी बन लस्कर, कहा कहूँ रूहों रोसन ।
और तखत जो हक का, तुम विचार देखो मोमन ॥ २५

अब नूर बिलंद[१] जो हक का, ले उठया सबका नूर ।
बन जिमी आकास सब, ए देखो एक जहूर ॥ २६

आगूं केसरी कोतल[२], अति खूबी ले खेलत ।
बाघ चीते घोड़े हाथी, नट ज्यों नाचत ॥ २७

अव्वल[३] हार केसरिन की, दूजी हार बाघन ।
हार तीसरी सागोस की, चौथी हार चीतन ॥ २८

दीप सुअर रोझ रीछड़े, बैल साम्हर मृग मेढ़े ।
हरन अरन बकर कूकर, फील गिमल घोड़े गैंडे ॥ २९

केसरी कूवत ज्यादा कही, निपट अति बलवान ।
ए ख्वाब देखाया तिन वास्ते, करने अरस पेहेचान ॥ ३०

केसरी कूवत[४] कूदते, गरजत बिना हिसाब ।
बिन मन आवे आसमान में, ऐसी उठक सिताब[५] ॥ ३१

ए गिनती बेसुमार है, बोलत मिलकर जब ।
गरजत अरस अंबर जिमी, बल देत देखाई तब ॥ ३२

सब्द केसरी जब काढ़हीं, अंबर जिमी रहे गाज ।
पड़घा[६] उठे पृथ्वी पर्वतों, उठे उनथें अधिक आवाज ॥ ३३

क्यों कहूँ बल बाघन को, ए जो ख्वाब में ऐसे जोर ।
देह छोटी बड़ी कूवत, देत फीलों मद तोर ॥ ३४

बोलत बाघ बिस्तार के, सब मिल एकै सोर ।
गरजे सेंती जानिए, इनों अंगों का जोर ॥ ३५

छंछेक[७] देखे छैल चीते, जुगत जलदी जोर ।
काहिली ना अंग कबहूँ, होत नहीं मन मोर[८] ॥ ३६

---

१. महान । २. सजा हुआ । ३. प्रथम । ४. शक्ति । ५. जल्दी । ६. प्रति ध्वनि । ७. चंचलता । ८. मलीन ।

अस्व आगूं अति बड़े, अस्वारी के सिरदार ।
सिर ऊंचे गरदन थांभत, थंभक थंभक थेई कार ॥ ३७

जब बोलत बदन विकास के, होत हेहंकार ।
दसो दिसा सब गरजत, पड़त सबे पुकार ॥ ३८

सब्द फील जब उठहीं, गरजत गंज गंभीर ।
जिमी पहाड़ बन गाजत, और सेन्या सोहे सूर धीर ॥ ३९

यों कै जातें पसुअन को, कै खूबी बल कहूं केता ।
अपार बल खूबी[1] अरस की, नाहीं जुबां माफक एता ॥ ४०

कै जातें जानवर, चलते आगूं उड़त ।
कै लेवें गुलाटियां, अनेक खेल खेलत ॥ ४१

छोटे छोटा या बड़े बड़ा, खेल देखावें सब ।
सब सुख तबहीं पावहीं, धनी को रिझावें जब ॥ ४२

कै मुख बानी उचरें, तान मोन गुन गान ।
आठों जाम करत हैं, सुंदर ध्यान बयान ॥ ४३

नैन नीके चोंच सोभित, मीठी जुबां मुख बान ।
खुसबोए गुंजें कै भमरे, कै तिमर अलापें तान ॥ ४४

आसमान छाया पंखियों, सब खूबी देखावत ।
आप अपनी साधना, सब खेल की साधत ॥ ४५

बिना हिसाबें बाजंत्र, पड़े एक ताली घोर[2] ।
जिमी अंबर सब गाजत, ए जुगत सोभा जोर ॥ ४६

बाजे सब बजावहीं, बंदे बांदर बलवंत ।
ओतो आपे वाजहीं, पर ए सेवा न छोड़त ॥ ४७

बाजे आपे चलहीं, पर पसू सेवा को उठाए ।
इन बखत खूबी कहा कहूँ, ए केहे न सके जुबाँए ॥ ४८

---

१. अच्छाई । २. भयानक, ज्यादा ।

आगूं पीछूं सेन्या चले, खूबी देत बराबर ।
जो दाएँ बाएँ मिसले, कोई छोड़े ना क्योंए कर ॥ ४९

अस्वारी सबे सोभावत, मिसल अपनी जान ।
हर जातें फौज अपनी बाँधके, चले सब समान ॥ ५०

ऐसे बड़े हाथी अरस के, और बड़े कै पसुअन ।
जेता पसू पंखी अरस का, तिन सबों अस्वारी मन ॥ ५१

देखो दिल बिचार के, ए पसुओं का चलन ।
उड़त हैं आसमान में, ए चारों तरफों सब धरन ॥ ५२

ऐसे सब लसकर, सुमार नाहीं बल ।
चिन्हार इस्क सबको, बंदे कायम कदम तल ॥ ५३

एक देखो जात फीलन की, तिन फीलों जात अनेक ।
कै रंगों के रूप हैं, सो कहाँ लों कहूँ विवेक ॥ ५४

कै फौज कै जिनस रंग, हर फौजें कै सिरदार ।
तिन सिरदार तले कै फौजें, तिन एक फौज को नाहीं सुमार ॥ ५५

अब फौज गिनो दिल अपने, पीछे गिनो सिरदार ।
सो सिरदार कै एक फौज में, तिन फौज करो निरवार ॥ ५६

यों गिनती न होए एक जात की, जो कहे फील रंग अपार ।
रंग रंग जातें कै कहीं, सो क्योंए न होए सुमार ॥ ५७

गिनती न होए एक जातकी, तो क्यों कहूँ इनको बल ।
एक चिड़िया उड़ावे कोट ब्रह्मांड, तो कौन बल फीलों मिसल ॥ ५८

इन सब फीलों को पाखरें[1], और सिरिए[2] जड़ाव रतन[3] ।
सो जवेर हैं अरसके, और अरसै का कुंदन[4] ॥ ५९

और सबनकी क्यों कहूं, ए एक कही मैं जात ।
ए कैसी सोभा लेत हैं, दे दिल देखो साख्यात ॥ ६०

---

१. झालरें । २. सिर पर । ३. रत्न । ४. स्वर्ण ।

अब और जातकी क्यों कहूं, जो हैं फीलों से बुजरक ।
ए बुजरग साहेबी देखाई रूहों, पावने पटंतर[1] हक ॥ ६१

लेत सोभा अरस जिमिएँ, जब साहेब होत अस्वार ।
ए जिन देख्या सो जानहीं, औरों पोहोंचे नहीं विचार ॥ ६२

कहा कहूँ जात लसकर, एक जात को नाहीं पार ।
तिन जात में अनेक फौजें, एक फौज को नाहीं सुमार ॥ ६३

तिन हर फौजों के साहेबियां, करें पातसाहियां अनेक ।
तिन पातसाहियों की क्यों कहूँ, लवाजमें विवेक ॥ ६४

जब चले सैर जिमीय की, जो बन बिगर थोड़ी रेत ।
साफ जिमी अति दूर लों, तरफ पछिम की सुपेत ॥ ६५

इत दूर लों बन है नहीं, वोहोत बड़ो मैदान ।
अस्वारीं होए इसही तरफ, जब कबूं करें सुभान ॥ ६६

मैदान अति दूर लों, दूर दूर अति दूर ।
सूर आकास रोसनी, और उज्जल जिमी सब नूर ॥ ६७

आगे सैंर विध विध की, जब करें ऊपर सागर ।
कै बिध के रस पूरन, सब पैरत[2] हैं जानवर ॥ ६८

जल किनारें बन है, कै बिध की बैठक ।
कै जल टापू पहाड़ में, कै मोहोलों माहें छूटक ॥ ६९

चलत पैंरत कूदत, उड़ना याको काम ।
मन की अस्वारी सबको, मन चाह्या करें विश्राम ॥ ७०

जो दिल चाहे तखतरवां, हजार बारे ले बैंठत ।
राज स्यामाजी बीच में, आकास में उड़त ॥ ७१

कबूं सैंर इन खेल को, ऊपर चढ़ें आसमान ।
दिल चाहे सुख सबन को, देत रूहें प्यारी जान ॥ ७२

---

१. फर्क । २. तैरते हैं ।

मन ऊपर चलत हैं, या जिमी जल बन ।
या चढ़ें आसमान में, ठौर फिरबलें सबन ॥ ७३

पार नहीं आसमान को, जहांलों जानें तहांलों जाएँ ।
खेल कर पीछे फिरें, देखें परवत आए ॥ ७४

दिल चाह्या रूहन को, हक दें हमेसा सुख ।
पहाड़ बन मोहोल आकास जिमी, जित रूहों का होवे रुख ॥ ७५

जो रुख होवे जल पर, या जोए या ताल ।
या सुख मोहोलन में, देवें दायम[1] नूर—जमाल ॥ ७६

ए खूबी इन बखत की, हकें दई देखाए ।
ए ख्वाब में प्यारी लगी, अरस की ठकुराए ॥ ७७

मैं तुमें कहूँ मोमनों, देखो दिल लगाए ।
ऐसी साहेबी खसम की, जो रूह देख सुख पाए ॥ ७८

इस वास्ते निमूना, ए जो करी कुदरत ।
साहेबी अपनी जान के, करी बकसीस ऊपर उमत ॥ ७९

तो क्या निमूना झूठ का, पर लेसी रूहें लज्जत ।
ख्वाब बड़ाई देख के, विचारसी निसबत ॥ ८०

ए साहेबियां देखाइयां, ख्वाब में उमत[2] ।
और देखाई साहेबी अपनी, सुख देने को इत ॥ ८१

तफावत[3] झूठ की, क्यों आवे बराबर सांच के ।
पर रूहें सुख पावत हैं, देख अपनी साहेबी ए ॥ ८२

कहा कहूँ ठकुराई की, और क्यों कहूँ बुध बल ।
क्यों कहूँ इस्क पेहेचान की, और क्यों कहूँ सुख नेहेचल ॥ ८३

क्यों कहूँ मोहोल अरस के, क्यों कहूँ जिमी बन ।
क्यों कहूँ इन लसकर की, मिने पातसाहियां पूरन ॥ ८४

---

१. हमेशा । २. ब्रह्म सृष्टि । ३. पृथकता ।

ए बात है विचार की, कै जातें जानवर ।
कै जातें पसुअन की, याको बल कहूँ क्यों कर ॥ ८५

एक जात बाघन की, कहूँ केते रंग तिन मांहि ।
इन रंग सुमार ना आवही, क्यों होवे हिसाब जुबांए ॥ ८६

अब कैसा बल समूह का, पसू और जानवर ।
देखो साहेबी अरस की, ले ब्रह्मांड बल नजर ॥ ८७

ए निमूना इन वास्ते, देखलाया रूहन ।
झूठ कौन आगूं साँच के, पर बल पाइए न या विन ॥ ८८

इन सुपन जिमी में बैठके, क्यों कहूं ठकुराई अरस ।
ए गिरो विचारें सुख पावसी, जो होसी अरस परस ॥ ८९

ए विचार विचार विचारिए, तो पाइए लसकर बल ।
सुमार तोभी न पाइए, जिमी अपार नेहेचल[1] ॥ ९०

क्यों कहूं जिमी अपार की, क्यों कर कहूं मोहोलात ।
क्यों कहूं जोए हौज की, क्यों कहूं हक नूर जात ॥ ९१

क्यों कहूं अरस जिमी की, क्यों कहूं हक सूरत ।
क्यों कहूँ खासी रूहकी, क्यों कहूं रूहें उमत ॥ ९२

क्यों कहूं इन सुख की, क्यों कहूं इन विलास ।
क्यों कहूं इस्क आराम की, क्यों कहूं रमूजें हांस ॥ ९३

इन अरस का खाबंद, सो धनी अपना हक ।
ए देखो साहेबी अरस की, ऐ मोमनों बुजरक ॥ ९४

देखो साहेवी अपनी, मेरा खसम नूर जमाल ।
जब देखत हों दिल ल्याए के, मेरी रूह होत खुसाल ॥ ९५

क्यों न होए खुसालियाँ, देख अपनी ठकुराए ।
और नाहीं कोई कहूं, ए मैं देख्या चित्त ल्याए ॥ ९६

---

१. निश्चल ।

मेरे खसम का नूर है, नूर अंग नूर—जलाल ।
सो आवत दायम दीदार को, मेरा खसम नूर—जमाल ।। ९७

सांची साहेबी खसम की, जो कायम[1] सुख कामिल[2] ।
ऐसा आराम अपने हकसों, इत नाहीं चल विचल ।। ९८

बड़ो बड़ाई बड़ी साहेबी, बुजरग सदा बेसक ।
और सब याके खेलौने, सब पर एकै हक ।। ९९

*'महामत' साहेबी हककी, मैं खसम अंगका नूर[3] ।
अंग रूहें मेरा नूर हैं, सब मिल एक जहूर[4] ।।१००

।। प्रकरण ।। २९ ।। चौपाई ।। १४३७ ।।

## तीनों सरूपोंकी पेहेचान बल अरसकी तरफ का

पेहेलें किया बरनन अरस का, रूह अल्ला का केहेल ।
अब चितवन सों कहत हों, जो देत साहेदी[5] अकल ।। १

जब जानों करूँ बरनन, तब ऐसा आवत दिल ।
जब रूह साहेदी देत यों, इत ऐसा ही चाहिए मिसल ।। २

इन विध हुआ है अवल, दई रूह साहेदी तेहेकीक[6] ।
जो कही बानी जोस में, सो साहेबें दई तौफीक[7] ।। ३

हकें दई किताबें मेहेर कर, जो जिस बखत दिल चाहे ।
सोई आयत[8] आवत गई, जो रूह देत गुहाए ।। ४

सब्द जो सारे इन विध, कही आगे से आखरत ।
बिना फुरमान देखें कहे, ना हादिएँ कही हकीकत ।। ५

कहें सब्द रूह साहेदी, पर दिल देत कछू सक ।
मुसाफ देखें भागी सक, सब आयतें इसी माफक ।। ६

और फुरमानमें ऐसा लिख्या, ओ केहेसी मेरे माफक ।
आवसी मेरी उमत[9] में, करने कायम दीन हक ।। ७

---

१. अखण्ड । २. सम्पूर्ण । ३. अंश । ४. प्रकाश । ५. साक्षी । ६. प्रमाणित । ७. सामर्थ्य ।
८. चौपाई (बानी) । ९. अनुयायी ।

सोई सुध दई फुरमानें, सोई ईसे दई खबर ।
मेरे मुख सोई आइया, तीनों एक भए यों कर ॥ ८

रूह—अल्ला ने मेहेर कर, दिया खुदाई इलम ।
सब सुध भई अरस की, रूहें बड़ी रूह खसम ॥ ९

सब काम भए उमत के, देखें हक फुरमान ।
सोई इलम दिया रूहअल्ला, मैं लई नसीहत[1] तीनों पेहेचान ॥ १०

अब जो केहेती हों अरस की, सो दिल में यों आवत ।
बिना देखें केहेत हों, जित रूह जो चाहत ॥ ११

अरस के बरनन की, कही हादियों इसारत ।
सो दोऊ साहेदी लेयके, जाहेर करूँ सिफत ॥ १२

मेरी बानी जुदी तो पड़े, जो वतन दूसरा होए ।
कहे हादी बल माफक, उरें सिफत सब कोए ॥ १३

बेसुमार बुजरगी अरस की, नेक कहूँ अकल माफक ।
ए रूहें नीके जानत हैं, जो अपार अरस है हक ॥ १४

ए सुख न आवे जुबाँ मिने, तो भी केहेना अरस बन सुख ।
रूहें बैठत उठत सुख सनेह सों, कै गिरो को देत श्रीमुख ॥ १५

धनिएँ आगू अरस के, कहे तीन चबूतर ।
दाँहिनी तरफ तले तीसरा, हरा दरखत तिन पर ॥ १६

चौथी तरफ नाहीं कह्या, सो मेरी परीक्षा लेन ।
जाने मेरे इलम से रूह आपै, केहेसी आप मुख बैन ॥ १७

ना तो ए लड़का सो भी जानही, जो कछू कर देखे सहूर ।
एक तरफ क्यों होवही, •आगू अरस तजल्ला[2]—नूर ॥ १८

खूब देखाई क्यों देवही, चबूतरा एक तरफ ।
जाने केहेसी आपे दूसरा, मेरे इलम के सरफ[3] ॥ १९

---

१. शिक्षा । २. दिव्य ब्रह्मपुर । ३. प्रयोग, उपयोगिता ।

तले चौथा चाहिए, आगूं अरस द्वार ।
दरखत दोऊ चबूतरों, सोभा लेत अपार ॥ २०
आगूं इन चबूतरों, खेलावत जानवर ।
नए नए रूप रंग ल्यावहीं, अनेक विध हुनर[1] ॥ २१
आगूं इन दरबार के, दायम बिलास है बन ।
कै विध खेल करें जानवर, हक हँसावें रूहन ॥ २२
इन चौक खुली जो चाँदनी, आगूं बड़े दरबार ।
उज्जल रेती झलकत, जोत को नाहीं पार ॥ २३
जोत लगी जाए आसमान, थंभ बंध्यो चौखून ।
आकास जिमी बीच जोत को, इनको नहीं निमून ॥ २४
और जोत जो वृक्ष की, सो भी बीच आकास और बन ।
पार नहीं इन जोत को, पर ए रंग और रोसन ॥ २५
जेता कोई रंग बन में, तिन रंग रंग हर हार ।
इन विध आगूं अरस के, बन पोहोंच्या जोए किनार ॥ २६
कहूँ हारें कहूँ चौक गुल[2], कहूँ नकस कटाव ।
जाए न कही इन जुबां, ज्यों चंद्रवा जुगत जड़ाव ॥ २७
ए देखे ही बनत है, केहेनी में आवत नाहिं ।
अकल में न आवत, तो क्यों आवे बानी माहिं ॥ २८
चारों तरफों बन में, कै जिनसें कै जुगत ।
नई नई भांत ज्यों चंद्रवा, बन में केती कहूँ विगत[3] ॥ २९
चारो तरफों अरस के, कै बैठक चौक चबूतर ।
जुदे जुदे कै विध के, ए नेक[4] कहूँ दिल धर ॥ ३०
सात घाट आगूं अरस के, ए है बड़ो विस्तार ।
नेक कहूं हिंडोले चौकियां, फेर कहूं आगूं अरस द्वार ॥ ३१

१. कौशल । २. फूल । ३. विवरण । ४. थोड़ा, अच्छा ।

बट पीपल चारो चौकियां, ऊपर छातें भी चार ।
अंबराए बृक्ष अनेक बन, निहायत[१] रोसन झलकार ॥ ३२
चल्या गया चौथी तरफ लों, अतंत खूबी विस्तार ।
तले चेहेबच्चे नेहेरें चलें, जुबां केहे न सके सुमार ॥ ३३
याही बन के चबूतरे, याही बन की मोहोलात ।
ए खूबी इन बन की, इन जुबां कही न जात ॥ ३४
एक एक चौकी देखिए, रूहें बैठत बारे हजार ।
बीच बीच सिघासन हकका, ए सोभा अति अपार ॥ ३५
ए बन हांस पचास लों, सेत हरे पीले लाल ।
ए बन खूबी देख के, मेरी रूह होत खुसाल[२] ॥ ३६
जित बन जैसा चाहिए, तहां तैसा ही तिन ठौर ।
नकस बेल फूल बन के, एक जरा न घट बढ़ और ॥ ३७
एह बन देखे पीछे, उपज्यो सुख अनंत ।
ए ठौर रूह से न छूटही, जानों कहां देखूं मैं अंत ॥ ३८
तले जिमी अति रोसनी, और रोसन चारों छात ।
चारो चौक देखे आगूं चलके, ए सुख रूहें जानें बात ॥ ३९
तले बन निकुंज जो, तिन पर ए मोहोलात ।
मिल गए मोहोल अरसके, रूहें दौड़त आवत जात ॥ ४०
ज्यों ऊपर हिंडोले अरसमें, भोम सातमी आठमी जे ।
जब इन बन हिंडोले बैठिए, देखिए बड़ी खुसाली ए ॥ ४१
जैसे हिंडोले अरसके, ऐसे ही हिंडोले बन ।
रूहें बारे हजार बैठत, ए समया अति रोसन ॥ ४२
इन बन में जो हिंडोले, छप्पर खटों की जिनस ।
सांकरें जंजीरां झनझनें, जानों सबथें एह सरस ॥ ४३

---

१. अत्यन्त । २. प्रसन्न ।

इत घाट नारंगी पोहोंचिया, दोऊ तरफों इत ।
बट घाट निकुंज ले, इन हद से आगूं चलत ।। ४४

तरफ बांईं सोभा ताल की बीच चांदनी चारों घाट ।
जल बन मोहोल पाल की, अति सोभित ए ठाट ।। ४५

कै मोहोल मानिक बन पहाड़ के, कै नेहेरें मोहोल बन ।
मोहोल पहाड़ कै सागरों, फेर आए दूब बन अंन ।। ४६

अतंत सोभा इन बन की, ए जो आए मिल्या फूल बाग ।
फूल बाग हिंडोले ए बन, तूं देख खूबी कछू जाग ।। ४७

चौकी हांस पचास लों, फूल बाग बन हद जित ।
और पचास हांस फूलबाग, बडे चेहेबच्चे पोहोंचत ।। ४८

ए बड़ा चेहेबच्चा बाहेर, एक हांस को लगत ।
बड़ी कारंज पानी पूरन, कै नेहेरें चलत ।। ४९

ए फूल बाग चौड़ा चबूतरा, निपट बड़ा निहायत ।
फूल बाग बगीचे चेहेबच्चे, विस्तार बड़ो है इत ।। ५०

मोहोलात झरोखे अरस के, फूल बाग के ऊपर ।
जोत झरोखे अरस के, ए नूर कहूँ क्यों कर ।। ५१

जहां लग हद फूल बाग की, ए जिमी जोत अपार ।
ए जोत रोसनी जुबां तो कहे, जो आवे माहें सुमार ।। ५२

इत दिवाल तले दस खिड़कियां, जित रूहें आवें जांए ।
ए खूबी आवे तो नजरों, जो विचार कीजे रूह माहें ।। ५३

इन आगूं लाल चबूतरा, ले चल्या अरस दिबाल ।
खूबी देख बन छाया, ए बैठक बड़ी विसाल ।। ५४

ए जो भोम चबूतरा, बन आगूं बिराजत ।
इत केतेक जिमी में जानवर, रूहें हक हादी खेलावत ।। ५५

ऊपर लाल चबूतरे, सब दरवाजे मेहेराब ।
एही झरोखे इन भोम के, खूबी आवे न माहें हिसाब ।। ५६

बड़ी बैठक इत चबूतरे, अति खूबी तिन पर ।
इत खूबी खुसाली होत है, जब खेलें बड़े जानवर ।। ५७

एही झरोखे एही चबूतरा, दोऊ तरफ चेहेबच्चे दोए ।
एक पीछल जो छोड़िया, आगूं दूजी भोमका सोए ।। ५८

जो बन आया चेहेबच्चे, सोभा अति रोसन ।
छाया करी जल ऊपर, तीनों तरफों तिन ।। ५९

ऊपर झरोखे मोहोल के, जल पर बने जो आए ।
इन चेहेबच्चे की सिफत, या मुख कही न जाए ।। ६०

कै बन हैं इत ताड़ के, कै खजूरी नारियर ।
और नाम केते लेऊँ, बट पीपल सर ऊमर ।। ६१

इत केतेक बन में हिंडोले, ए जो रूहें लेत इत सुख ।
लिबोई घाट इत आए मिल्या, सोभा क्यों कहूँ या मुख ।। ६२

हिंडोले इन बन के, ए बन बड़ा विस्तार ।
इन आगूं घाट केलका, और बड़ा बन तिन पार ।। ६३

अब जो बन है केलका, सो आगूँ पोहोंच्या जाए ।
तिन परे बन पहाड़ का, सब दोरी बंध सोभाए ।। ६४

बन बड़ा पुखराज का, कै मोहोल बड़े अतंत ।
तिन परे बड़े बन को, जुबाँ कहा करसी सिफत ।। ६५

जाए मिल्या बन नूर के, नूर परे कहूँ क्यों कर ।
जित ए न्यामत देखिए, सो सब सुमार बिगर ।। ६६

अब कहूँ आगूं अरस के, और जोए किनार ।
बन मोहोल नूर मकान, सोहे जोए के पार ।। ६७

दोए पुल जोए ऊपर, ए अति खूबी मोहोलात ।
पांच पांच भोमें मोहोल की, ऊपर छठी चाँदनी छात ।। ६८

ए जोत धरत हैं झरोखे, करें साम सामी जंग ।
जोत कही न जाए एक तिनका, एतो मोहोल अरस के नंग ।। ६९

तले चलता पानी जोए का, दस घड़नाले जल ।
नेहेरें चली जात दोरी बंध, ए जल अति उज्जल ॥ ७०

चारो चौकी बन माफक, छात पांचमी ऊपर किनार ।
ए जुगत बनी जोए मोहोल की, सोभित अति अपार ॥ ७१

जोए ऊपर बन झरोखे, सो निपट सोभा है ए ।
फल फूल पात जल ऊपर, ए बने तोरन रंग जे ॥ ७२

सामसामी दोऊ किनारें, तरफ दोऊ बराबर ।
दो बन की दो जवेर की, मोहोल चारों अति सुंदर ॥ ७३

इन पुल दोऊ के बीच में, बीच बने सातों घाट ।
तीन बांएँ तीन दाहिने, बीच बनी चाँदनी पाट ॥ ७४

ए तुम सुनियो बेवरा, सात घाटों का इत ।
ए नेक नेक केहेत हों, सोभा अति अरस सिफत ॥ ७५

बनके मोहोल से चलिया, जानों तले ऊपर एक छात ।
छात दूजो घर पंखियों, बन ऊपर बन मोहोलात ॥ ७६

ए जो पसू पंखी नजीकी, हक हादी खेलौने अतंत ।
बोल खेल सोभा सुंदर, सो इन मोहोलों बसत ॥ ७७

रात दिन गुंजें बनमें, हक की करें जिकर ।
क्यों कहूं इनों चित्रामन, सोभा अति सुंदर ॥ ७८

बानी सुने तें सुख उपजे, और देखें सुख अपार ।
या पसू या जानवर, सोभा न आवे माहें सुमार ॥ ७९

तीन घाट आगू अरस के, जांबू अमृत अनार ।
सो अनार पोहोंच्या अरस को, दो दोऊ भर किनार ॥ ८०

घाट तीन हांस पचास लों, बीच बड़े दरबार ।
दो घाट लगे दोऊ हिंडोलों, दो घाट हिंडोलों पार ॥ ८१

ए जो पाट घाट अमृत का, सो आया आगू चबूतर ।
चौक चौड़ा हिस्से तीसरे, इत दीदार होत जानवर ॥ ८२

ता बीच चौड़े दो चबूतरे, ऊपर हरा लाल दरखत ।
छाया बराबर चबूतरे, ए निपट सोभा है इत ॥ ८३

लंबा चौड़ा चारो हाँसों, बराबर दोरी बंध ।
अनेक रंग बन इतका, सोभित अनेक सनंध ॥ ८४

बन गृदवाए अरस के, देख आए आगूं द्वार ।
केहे न सकों हिस्सा कोटमा, अरस बन कह्या अपार ॥ ८५

बन में फिरके देखिया, अरस अजीम के गृदवाए ।
एकल छाया बन की, तले जिमी जोत कही न जाए ॥ ८६

बन छाया दीवाल लग, झूमत झरोखों पर ।
ठाढ़े होए के देखिए, आवत चांदनी लों नजर ॥ ८७

फिरती गृदवाए चांदनी, नवों भोम झरोखे ।
गृदवाए विचारी गिनती, छे हजार हर हार के ॥ ८८

एही आतम को पूछ के, नवो भोम करो विचार ।
ले भोम से लग चांदनी, एभी हारें छे हजार ॥ ८९

हर हार चढ़ती नव नव, छे हजार फिरती हर हार ।
जमा भए नव भोम के, अर्ध लाख चार हजार ॥ ९०

झरोखे कै विध के, गिनती होए क्यों कर ।
कहूं जुदे जुदे कहूं सामिल, ए लीजो दिल धर ॥ ९१

ए जो एक एक लीजे दिल में, तो हर हांसें तीस तीस ।
कहूं एक झरोखा तीस का, कहूं दस कहूं बीस ॥ ९२

गृदवाए कठेड़ा चांदनी, क्यों कहूं खूबी जुबांन ।
अरस एकै जवेर का, एकै बिध रंग रस जान ॥ ९३

कै विध की इत बैठकें, जुदे जुदे कै ठौर ।
चारों तरफों अरस के, देखी एक पे एक और ॥ ९४

हर खांचों साठ गुमटियां, सोभित फिरती हार ।
ए झरोखे कँगूरे, बैठक बारे हजार ॥ ९५

दो सौ खांचों ऊपर, सोभें नगीने सौ दोए ।
बुजरग बीच गुमटियां, खूबी केहे न सके कोए ॥ ९६

ए जो दो सै एक नगीने, कलस बने इन पर ।
इनविध की ए रोसनी, ए जुबां कहे क्यों कर ॥ ९७

और कलस ऊपर गुमटियों, ए जो कहे कंगूरे बारे हजार ।
ए जोत जुबां ना केहे सके, झलकारों झलकार ॥ ९८

कलसों पर जो बेरखे, सो क्यों कहूं रोसन नूर ।
ए जो बनी बराबर गृदवाए, हुओ बीच आसमान जहूर ॥ ९९

केहे केहे मुख जेता कहे, सो सब हिसाब के मांहि ।
और हक हुकम यों केहेत है, ए सिफत पोहोंचत नांहि ॥१००

*'महामत' कहें ऐ मोमनों, ए छोड़िए नहीं एक दम ।
अब कहूं अंदर अरस की, जो दिए निसान खसम ॥१०१

॥ प्रकरण ॥ ३० ॥ चौपाई ॥ १५३८ ॥

## दसो भोम लिखी है, भोम पेहेली

बड़ा चौक सोभा लेत है, बड़े दरवाजे अंदर ।
बड़ी बैंठक इत गिरोह की, आगूं रसोई के मंदर ॥ १

दस स्याम सेत के लगते, दस मंदिर सामी हार ।
इन चौक की रोसनी, मावत नहीं झलकार ॥ २

कै नकस कै कटाव, इन भोम में देखत ।
दिन पंद्रह खेलें बन में, पंद्रह आरोगें इत ॥ ३

इन चौक में साथ जी, बोहोत बेर बैठत ।
आवत जात बनथें, बैठत इत अलबत ॥ ४

लाड़बाई के जुत्थ की, इत बोहोत खेल करत ।
बाहेर अंदर चौक में, बन मोहोलों सुख लेवत ॥ ५

बन मोंहोल विलास कों, सुख गिनती में आवत नांहि ।
ए ना कछू जुबां केहे सके, चुभ रहत चित मांहि ॥ ६

राज स्यामाजी बैठत, बनथें फिरती बखत ।
इन ठौर आरोग के, चौथी भोम निरत ।। ७

जैसा चौक तले का, तैसा ही ऊपर ।
आगूं झरोखे दूजी भोम के, इत चौक बीस मंदिर ।। ८

इसी भांत भोम तीसरी, ऊपर चढ़ती चढ़ती जे ।
खूबी लेत अति अधिक, चौक ऊपर चौक ए ।। ९

नवों भोम इन विध की, आगूं उपरा ऊपर बडे द्वार ।
आगे चौक सबन के सवों फिरते थंभ हार ।। १०

और विध केती कहूं, भोम भोम ठौर अनेक ।
ए कोट जुबां ना केहे सके, तो कहा कहे रसना एक ।। ११

भोम दूसरी

स्याम सेत के बीच में, सीढ़ियां सुंदर सोभित ।
वोहोत साथ इत आए के, चढ़ उतर करत ।। १२

इतथें चले खेलन को, आगूं मंदिर जहां भूलवन ।
जब जात चेहेबच्चे झीलने, तब खेलें ठौर इन ।। १३

खेल करें इत भूलवनी, मंदिर एक सौ दस की हार ।
सो हर तरफों गिनिए, एही गिनती तरफ चार ।। १४

ए भूलवनी ऐसी भई, देखी चारों किनार ।
द्वार सबों बराबर, भए मंदिर बारे हजार ।। १५

मंदिर जुदे कर गिनिए, हर मंदिर दरवाजे चार ।
यों गिनती बारे हजार की, भए अड़तालीस सहस्त्र द्वार ।। १६

सोए भई इत भूलवनी, भए द्वार चौबीस हजार ।
एक दूजे में गिनात हैं, खेलें हंसें रूहें अपार ।। १७

रूहें द्वार एक दौड़के, चौथे जाए निकसत ।
प्रतिबिंब उठें कै तरफों, कोई काहूं ना पकड़त ।। १८

भागत एक मंदिर से, प्रतिबिंब उठें अपार ।
पकड़न कोई न पावही, निकस जाएं कै द्वार ॥ १९

इन ठौर खेल रूहन के, बोहोत भई भूलवन ।
होत हांसी इत खेलते, रंग रस बढ़त रूहन ॥ २०

इनहूं बीच चबूतरा, हक हादी मध बैठत आए ।
ए सोभा इन बखत की, इन मुख कही न जाए ॥ २१

दूजी भोम का चेहेबच्चा, धनी बैठत इत अन्हाए ।
सिनगार समे रूहन के, इन जुबां कह्यो न जाए ॥ २२

इत खेल के आए चेहेबच्चे, अन्हाए के कियो सिनगार ।
पीछे चरनों लागें जुगल के, माहें माए ना मंदिरों झलकार ॥ २३

ए नेक कही इन ठौर की, इत हिसाब बिना बैठक ।
सुख देत इत कायम, जैसा बुजरक हक ॥ २४

ए दूजी भोम जो अरस की, इत बोहोत बड़ो विस्तार ।
ए नेक नेक कहत हों, जुबां कहा कहे सिफत सुमार ॥ २५

## भोम तीसरी

बैठे हक हादी भोम तीसरी, जित आवत *नूर—जलाल[1] ।
इत दोए पोहोर की बैठक, और सेज्या सुख हाल ॥ २६

बीच बन्या दरवाजा दो हांस का, बीच दस झरोखे ।
पांच बने बांई हांस के, पांच दाहिनी से ॥ २७

बड़े झरोखे तिन पर, तिन पर बड़े देहेलान ।
इत आए फजर पसू पंखियों, दीदार देत सुभान ॥ २८

देहेलान दस मंदिर का, झरोखे दस सामिल[2] ।
माहें चौक दस मंदिर का, हुए तीनों मिल कामिल[3] ॥ २९

१. अक्षर ब्रह्म । २. एक साथ । ३. सम्पूर्ण ।

तीसरा हिस्सा एक हांस का, ए जो दस झरोखे ।
द्वार थंभ आगूं इनके, ना दिवाल बीच इनके ॥ ३०

और सुख इन भोम के, बोहोत बड़ो विस्तार ।
सो मुख बानी क्यों कहूँ, जिनको नहीं सुमार ॥ ३१

मंदिर दस का बेवरा, दस का एकै देहेलान ।
माहें बाहेर बराबर, जानें मोमन अरस बयान ॥ ३२

और जो झरोखे गृदवाए के, तिनहीं के सरभर[1] ।
एता ऊँचा जिमी से, देखें हुकमें रूहें नजर ॥ ३३

छे मंदिर आगूं सीढ़ियां, दोऊ तरफ चढ़ाए ।
चौक छोटे आगूं देहरी, सोभा इन मुख कही न जाए ॥ ३४

और चौक बड़ा जो बीच का, सीढ़ी सनमुख आगूं द्वार ।
सोए बराबर द्वार के, सोभा कहूं जो होए सुमार ॥ ३५

दोऊ तरफों खिड़कियां, तिन आगूं बढ़ती पड़साल ।
ए रूहें नजरों नीके देखहीं, तो तेहेकीक[2] बदले हाल ॥ ३६

और आरोगें भी इतहीं, इत बैठें *नूर—जमाल[3] ।
दौड़त रूहें निहायत[4], क्यों कहूँ खुसाली ख्याल ॥ ३७

बड़ी बैंठक पड़साल की, इत मेवा मिठाई आरोगत ।
कर सिनगार चरनों लगें, सबे इत बैठत ॥ ३८

सिनगार करें देहेलान में, आरोगें और मंदर ।
इतहीं दीदार *नूर को, दिन पौढ़ें पलंग अंदर ॥ ३९

दो हांस बीच तीसरा हिस्सा, तिनके झरोखे दस ।
एक हांस तिनकी बढ़ी, ए भी सोभा एक रस ॥ ४०

बड़ा दरवाजा इनमें, बीच दोए हांस इन ।
भोम तले लग चांदनी, ए खूबी अति रोसन ॥ ४१

---

१. बराबर, समान । २. निश्चय । ३. पूर्ण ब्रह्म । ४. अत्यन्त ।

अंदर चौड़ाई चौक की, और भी हैं कै ठौर ।
जुदे जुदे सुख लेत हैं, रंग रस के और और ॥ ४२

## भोम चौथी

निरत होत चौथी भोम में, जित मोहोल बन्यो विसाल ।
चौक मध्य अति सुंदर, क्यों कहूँ मंदिर द्वार ॥ ४३
तीनों तरफों मंदिर, आगू दो दो थंभों की हार ।
बड़ा मोहोल अति सोभित, सुंदर अति सुखकार ॥ ४४
थंभ द्वार अति सोभित, तरफ तीनों साठ मंदर ।
बीस बीस हर तरफों, चौक बैठक अति अंदर ॥ ४५
द्वार सोभित कमाड़ियों, साठों करें झलकार ।
और जोत थंभन की, सुख कहूँ जो होए सुमार ॥ ४६
पीठ पीछे जो मंदिर, कै रंग सेत दिवाल ।
दांहिनी तरफ लाखी मंदिर, क्यों कहूँ नकस मिसाल ॥ ४७
बांईं तरफ दिवाल जो, मंदिर लिबोई रंग ।
बेल नकस कटाव के, सो केते कहूँ तरंग ॥ ४८
हरी दिवाल जो मंदिर, सो सामी है नेक दूर ।
चारो तरफों अरस जवेर, करें जंग नूर सों नूर ॥ ४९
एह ठौरं है निरत की, सो केता कहूँ मजकूर ।
चारों तरफों ऊपर तले, कहूँ मावत नहीं जहूर ॥ ५०
राज स्यामाजी बीच में, बैठक सिंघासन ।
रूहें बारे हजार को, हक देत सुख सबन ॥ ५१
कै विध के बाजे बजें, नवरंग बाई नाचत ।
हाथ पांउँ अंग वालत, कही न जाए सिफत ॥ ५२
ले बाजे रूहें खड़ी, मृदंग जंत्र ताल ।
रंग रबाब चंग तंबूरा, बोलत बेन रसाल ॥ ५३

पांउं झांझर घूघर बोलहीं, कांबी कड़ली बाजत ।
याही तरह अनवट बिछुआ, संग लिएँ गाजत ॥ ५४

हाथ कंकन नंग नवघरी, स्वर एकै रस पूरत ।
और भूखन सबों अंगों, सोभित सब सूरत ॥ ५५

जिन विध पांउं चलावहीं, सोई भूखन बोलत ।
जो बजावें झांझरी, तो घूंघरी कोई ना चलत ॥ ५६

जो बोलावत घूंघरी, तो नहीं झांझरी बान ।
जो सबे बोलावत, तो बोलें सब समान ॥ ५७

प्रेम रसायन गावत, अति प्यारी मीठी बान ।
याही विध हस्त देखावहीं, फेर फेर देत हैं तान ॥ ५८

कै जुदे जुदे बोलें भूखन, सब बाजे मिलावत संग ।
एक रस सब गावत, नवरंग बाई के रंग ॥ ५९

हाथ धरत मृदंग पर, जब अवल स्वर करत ।
निरत करें कै विधसों, कै गुन कला ठेकत ॥ ६०

कै गत भांत रंग ल्यावत, ए तो कामिल निरत कमाल ।
इन छेक बालन की क्यों कहूँ, जो देखत *नूर जमाल ॥ ६१

कै विध कहूँ बाजंत्र की, कै विध नट नाचत ।
कै विध की फेरी कहूँ, कै रंग रस गावत ॥ ६२

नामै जाको *नवरंग, ताकी निरत कहूं क्यों कर ।
अनेक गुन रंग ल्यावहीं, नए नए दिल धर ॥ ६३

मुरली बजावत मोर बाई, बेन बाई बाजंत्र ।
तान बाई तान मिलावत, निरत जामत इन पर ॥ ६४

कंठ केल बाई अलापत, स्वर पूरत बाई सेंन ।
सब मिल गावें एक रस, मुख बानी मीठी बैन ॥ ६५

झरमर बाई बजावत, माहें झरमरी अमृती ।
कै बाजे कै रंग रस, ए रंग अलेखे कहूं केती ॥ ६६

खड़ियां रूहें निरत में, इत उछरंग होत ।
तरफ चारो जवेरन में, निरत देखे अधिक जोत ॥ ६७

निरत कला सब नाचके, फेर फेर देत पड़ताल ।
यों स्वर मीठे मोहोलन के, चलत आगू मिसाल ॥ ६८

ऐसे ही प्रतिबिंब इनके, मोहोल बोलें कै और ।
वानी बाजे निरत अवाज, होत निरत कै ठौर ॥ ६९

साम सामी पसू पंखी नंग के, जंग करें जवेरों दोए ।
एक ठौर निरत नाचत, ठौर ठौर सामी होए ॥ ७०

यों सब ठौर जंग अरस में, कहूं केती विध किन ।
अपार अखाड़े सब दिसों, होत सब में रोसन ॥ ७१

ए रूह की आंखों देखिए, असल बका के तन ।
तो देखो चित्रामन धामकी, करत निरत सबन ॥ ७२

एह खेल एक पोहोर लग, होत हमेसा इत ।
पंद्रह दिन जब घर रहें, तब देखें दुलहा निरत ॥ ७३

मेहेबूब को रिझावने, अनेक कला साधत ।
और नजर ना कर सकें, बंध ऐसे ही बांधत ॥ ७४

थंभ दिवालें सिंघासन, सब में होत निरत ।
इन समे पसू पंखी चित्रामन के, सब ठौरों केल करत ॥ ७५

बोहोत बातें बीच अरस के, किन विध कहूँ इन मुख ।
जो बैठी इन मेले मिने, सोई जानें ए सुख ॥ ७६

ऐसी चारों तरफों कै बैठकें, अंदर या गृदवाए ।
ए सुख अखंड अरस के, क्यों कर कहे जाएं ॥ ७७

भोम पांचमी पौढ़न की

सुख बड़ो भोम पांचमी, मध्य मंदिर बारे हजार ।
बीच मोहोल स्यामाजी को, इन चारों तरफों द्वार ॥ ७८

चौखूनी बाखर बनी, तिन विस्तार है बुजरक ।
चारो तरफों बराबर, कहूँ बेवरा बुध माफक ।। ७९

बराबर मोहोल के गृद, वीच बीच पौरी द्वार
पौरी के तरफ सामनी, मोहोल दरवाजे चार ।। ८०

मोहोल के चारों खूंने, सोले सोले हवेली ।
जमे जो चौसठ कही, तिन द्वार द्वार एक गली ।। ८१

ओगन पचास चौपुड़े, ताके कहूं मंदर ।
हर एक के एक सौ चौवीस, जमे छे हजार छेहंतर ।। ८२

चौक अठाईस त्रिपुड़े, हर एक के एक सौ दोए ।
अठाईस सौ छप्पन, जमें मंदिरन को सोए ।। ८३

चौक चार खूंने के दो पुड़े, हर एक के ओनासी मंदर ।
तीन सै सोले एह जमें, लगते दिवाल अंदर ।। ८४

चौसठ दरम्यान हवेलियां, सो हिसाब कहूं मंदिरन ।
हर एक के तैंतालीस, जमे सताईस सै बावन ।। ८५

जमे किया मंदिरन को, सब बारे हजार भए ।
दरवाजे थंभ गलियां, अब कहूं जो बाकी रहे ।। ८६

ओगन पचास चौपुड़े, ताको जमे कियो थंभन ।
एक सो चवालीस हर एकों, जमे सात हजार छप्पन ।। ८७

हर एक के एक सौ पंद्रह, ए जो त्रिपुड़े अठाईस ।
थंभ जमे बत्तीस सैं, और ऊपर भए बीस ।। ८८

चार खूंने चार दोपुड़े, पचासी हर एक के ।
जमे तीन सै चालीस, एते थंभ भए ।। ८९

ए जो चौसठ हवेलियां, तिन हर एक के थंभ चालीस ।
तिनके सब जमा कहे, साठ अगले सौ पचीस ।। ९०

जमें सब थंभन को, एक सौ तेरे हजार ।
छेहंतर तिनके ऊपर, एते भए सुमार ।। ९१

ओगन पचास चौपुड़े, तिन गली गिनों यों कर ।
हर एक की चौबीस कही, जमे आग्यारे सै छेहंतर ॥ ९२
चौक त्रिपुड़े अठाईस, गली हर एक की अठार ।
तिनकी ए जमे भई, पांच से ऊपर चार ॥ ९३
चौक चार खूने के दोपुड़े, गली बारे हर एक ।
अड़तालीस ए जमे, ए जो गली दिवालों देख ॥ ९४
और जो चौसठ हवेलियां, एक एक गली गृदवाए ।
एक एक द्वार दो दो पौरी, इन बिध ए सोभाए ॥ ९५
जमे सब गलियन को, सत्रह से बानब्बे ।
आठो जाम देखिए, ज्यों रूह याही में रहे ॥ ९६
बड़े दरवाजे चौक के, एक सौ चवालीस ।
तैंतीस से बारे जमे, हर द्वार पौरी तेईस ॥ ९७
यामें बत्तीस द्वार बाहेर के, एक सौ बारे अंदर ।
तैंतीस से बारे जमें, यामें आओ साथ सुंदर ॥ ९८
चौखूनी चौसठ बाखरें, इनों बीच बीच दरम्यान ।
दो दो पौंरी तिनकी, याकों रूहें जानें बयान ॥ ९९
मंदिरों माहें खिड़कियां, बाहेर दिवालों के ।
चारों खूने गुरज से, तित दो दो झरोखे ॥ १००
भोम पांचमी मध की, इत पौढ़त हैं रात ।
*स्याम *स्यामाजी साथ सब, जोलों होए प्रभात ॥१०१
ए तो मंदिर कहे मध के, गृद मंदिरों हार ।
नेक नेक कही अंदर की, और कै विध मोहोल किनार ॥१०२

भोम छठी सुखपाल

घरों आए पीछे सबन के, छठी भोम सुखपाल ।
बने विराजे मोहोल में, अति बड़ी पड़साल ॥१०३

भोम छठी बड़ी जाएगा, है बैठक इत विस्तार ।
बीच सिंघासन कै विध के, और झरोखे किनार ॥१०४

जुदी जुदी जुगतों जायगा, बहु बिध सिंघासन ।
छोटे बड़े कै माफक, कै छत्र मनी रतन ॥१०५

सुख अलेखे देत हैं, चारो तरफों झरोखे ।
ए कायम सुख कैसे कहूँ, देत दायम हक जे ॥१०६

सुख देवें जब अंदर, तब ए बातें मीठी बयान ।
रंग रस करें रूहन सों, कोई ना सुख इन समान ॥१०७

कै चौक कै गलियां, कै हवेलियां अनेक ।
देख देख के देखिए, जानों एही बिध बिसेक ॥१०८

बीच तरफ या गृदवाए, किन विध कहूं मोहोलन ।
एह अरस की रोसनी, क्यों कहे जुबां इन ॥१०९

अनेक विध हैं अरस में, केती विध कहूं जुबान ।
कह्या न जाए एक नकस, मुख कहा करे बयान ॥११०

झरोखे इन भोम के, बने बराबर हर हार ।
खूबी नूर रोसनी, क्यों कहूँ सोभा अपार ॥१११

तेज तेज सों लरत हैं, जहूर जहूर सों जंग ।
केते कहूँ रंग रंग सों, तरंग संग तरंग ॥११२

## भोम सातमी हिडोले

कहा कहूँ भोम सातमी, मध मोहोल अनेक ।
कै विध गलियां हवेलियां, एक दूजी पे नेक ॥११३

कै मोहोल कै मालिए, सोई झरोखे सुंदर ।
द्वार बार सीढ़ी खिड़कियाँ, अति सोभा लेत मंदर ॥११४

कै सुख सातमी भोम के, कै हिडोले हजार ।
रूहें आप मन चाहते, अरस आराम नहीं पार ॥११५

भोम सातमी किनार में, मंदिर झरोखे जित ।
दोनों हारों हिडोले, छप्पर खटों के इत ॥११६

साम सामी बैठी रूहें, हेतमें सब हींचत ।
कड़े हिडोले कै स्वर, बहु बिध बोलत ॥११७

गृदवाए सब हिडोले, जुदी जुदी जिनसों अनेक ।
बारे हजार बोलत, स्वर एक दूजे पें बिसेक ॥११८

हाँसी होत है इन समे, सुन सुन स्वर खुसाल ।
हँस हँस के हँसत, सब संग हींचें नूर—जमाल ॥११९

ए सुख आनंद अति बड़ो, रंग रस बढ़त अति जोर ।
भूखन हांसी कड़े हिडोले, ए क्यों कहूं अरस सुख सोर ॥१२०

अतंत सुख इन बखत को, जो कदी आवे रूह माँहि ।
तो नीद निज अंग असल की, उड़ जावे कहूँ काँहि ॥१२१

### भोम आठमी हिडोले

इसी भांत भोम आठमी, चार चार खट छप्पर ।
चारों तरफों हींचत, ए सोभा कहूं क्यों कर ॥१२२

चारो तरफों बातें करें, मुख मुख जुदी बान ।
रंग रस हांस विनोद की, पीउ सों प्रेम रसान ॥१२३

चार हिडोले जुदे जुदे, झूला लेवें सब एक ।
एकै बेर सब फिरत हैं, फेर खेल होत बिसेक ॥१२४

और विध बीच हवेलियों, जुदी जुदी कै जिनस ।
देख देख के देखिए, एक पें और सरस ॥१२५

मंदिर जुदे द्वार जुदे, कै चौक चबूतर ।
ए सनंध इन मंदिरन की, जुबां सके न बरनन कर ॥१२६

कोटान कोट ले जुबां, जानों बरनन करूँ एक द्वार ।
ए बरनन तो होवही, जो आवे माहें सुमार ॥१२७

इन ठौर विलास बोहोत है, सो इन जुबां कह्यो न जाए ।
ए लीला अरस खावंद की, केहे केहे रूह पछताए ॥१२८

बल तो जुबां को है नहीं, ना कछू बुध को बल ।
ए जोगवाई झूठे अंग की, क्यों कहे सुख नेहेचल ॥१२९

जो कछू हिरदे में आवत, सो आवे नहीं जुबान ।
चुप किए भी ना बने, चाहें साथ सुजान ॥१३०

कहे रूह सुख पावत, और सुख बिचारे अनंत ।
पर दुख पांऊं इन विध का, कछू पोहोंच न सके सिफत ॥१३१

चारों तरफों हिंडोले, अरस के गृदवाए ।
सब हिंडोलों हक संग, ए सुख अंग न समाए ॥१३२

भोम नौमी गोख बैठक

छज्जे बड़े नौमी भोम के, बोहोत बड़ो बिस्तार ।
बैठक धनी साथ को, बाहेर की किनार ॥१३३

नजरों सब आवत हैं, इन ऊपर की बैठक ।
देख दूर की बातें करें, रंग रस उपजावें हक ॥१३४

जब बैठें जिन तरफ, तब तितहीं की जुगत ।
बातें करें बनाए के, नूर अपने अपनाइत ॥१३५

जब बैठें तरफ नूर की, तब तितहीं का विस्तार ।
जित सिफत जिन चीज की, तिन सुख नाहीं सुमार ॥१३६

जब बैठें तरफ पहाड़ की, बरनन करें अति दूर ।
तिन भोम के सुख को, सुमार नहीं जहूर ॥१३७

जब बैठें तरफ दरियाव की, घृत दूध दधी असल ।
कायम सुख कायम भोम के, आवें न माहें अकल ॥१३८

जब बैठें तरफ बड़े बन की, तब सोई सुख बरनन ।
पसू पंखियों के इस्क की, कै बिध करें रोसन ॥१३९

और पहाड़ जोए जित के, कै बिध की मोहोलात ।
ताल कुंड कै चादरें, इन जुबां कही न जात ॥१४०
या हौज या जोए के, कै बिध देवें सुख ।
जब हक आराम देवहीं, तब सोई करें रूहें रुख ॥१४१
मोहोल मंदिर जो मध के, सो हैं अति रोसन ।
थंभों बेल फूल पांखड़ो, एक पात न होए बरनन ॥१४२
तो मोहोल मंदिर की क्यों कहूँ, और क्यों कर कहूँ दिवाल ।
कै लाख खिड़की हवेलियां, कै लाख पौरी पड़साल ॥१४३
बैठ बीच नासूत के, अंग नासूती जुबान ।
अरस का बरनन कीजिए, सो क्यों कर होए बयान ॥१४४

### दसमी भोम चांदनी

दसमी भोम चांदनी ए सोभा है अतंत ।
कै कदेले कुरसियां, बीच सोभा लेत तखत ॥१४५
कै बैठक मोहोल चांदनी, हक हादी इत आवत ।
साथ सब रूहन को, सुख मन चाहे देवत ॥१४६
क्यों कहूं इन सुपेती की, उज्जल जोत अपार ।
दो सै हांसों चांदनी, नाहीं रोसन नूर सुमार ॥१४७
ए जो गुमटियां गृदवाए की, नगीने एक अगले सौ दोए ।
बारे हजार गुमटियां, सोभा लेत अति सोए ॥१४८
चारो तरफों चेहेबच्चे, ए सोभा अति सुंदर ।
जल गिरत फुहारे मोतियों, चारो चांदनी अंदर ॥१४९
गृदवाए फूल चेहेबच्चे, ए सोभा जुदी जुगत ।
अंतर आंखें खोल के, ए सुख देखो अतंत ॥१५०
सोभा जल फूलन की, गृद चारों किनार ।
ए सोभा अतंत देखिए, जो कछू रूह करे विचार ॥१५१

बोहोत बड़ी इत बैठक, विध विध बेसुमार ।
रात उज्जल अरस चांदनी, ए सोभा अरस अपार ॥१५२

जब हक हादी बीच बैठत, ले रूहें बारे हजार ।
नंग जवेर इन जिमी के, गृद बैठत साज सिनगार ॥१५३

राज स्यामाजी बीच में, बैठें सिंघासन ऊपर ।
ए तखत हक अरस का, ए सिफत करूँ क्यों कर ॥१५४

कबूं रूहें निकट, बैठें मिलावा कर ।
हांसी रमूज सनमुख, पिएँ प्याले भर भर ॥१५५

कै विध की इत बैठक, जुदी जुदी जिनस ।
चारों तरफों अरस के, देखी और पें और सरस ॥१५६

बड़ा मोहोल चौक चांदनी, चाँद पूरन रह्या छिटक ।
रात बीच सिर आवत, जब कबूं बैठें इत हक ॥१५७

अरस आए लग्या आकास, उठ्या जोत अपनी ले ।
चांद सितारे अंबर, आए मुकाबिल अरस के ॥१५८

चारो तरफों देखिए, रूहें बारे हजार ।
जिमी अंबर में रोसनी, उठें किरनें नूर अंबार ॥१५९

ऊपर चांदनी बैठक, देखिए नूर द्वार ।
जोत नूर दोऊ सनमुख, अंबर न माए झलकार ॥१६०

देखों तरफ पुखराज की, या देखों तरफ ताल ।
या जोत मानिक देखिए, होए रही अंबर जिमी सब लाल ॥१६१

क्यों कहूँ रोसनी चाँद की, क्यों कहूँ रोसनी हक ।
क्यों कहूँ रोसनी समूह की, जुबां रही इत थक ॥१६२

केहे केहे जुबां इत क्या कहे, तेज जोत रोसन नूर ।
सो तो इन जिमी जरे की, आकास न माए जहूर ॥१६३

तार्थें 'महामत' कहें ऐ मोमनों, क्यों कहे जुबां इन देह ।
*रूह—अल्ला खोले अन्तर, लीजो लज्जत सब एह ॥१६४

प्रकरण ॥ ३१ ॥ चौपाई ॥ १७०२ ॥

बाब *अरस अजीम का का मता जाहेर किया याने एक जवेर का अरस मोहोल

गैब[१] बातें बका अरस की, कहूँ सुनी न एते दिन ।
हम आए अरस—अजीम से, करें जाहेर हक वतन ।। १

दुनियां चौदे तबक की, सब दौड़ी बुध माफक ।
सुरैया[२] को उलंघ के, किन पाया न बका[३] हक ।। २

पढ़ पढ़ वेद कतेब को, नाम धरें आलम[४] ।
एती खबर किन ना परी, कहां साहेब कौन हम ।। ३

ऊपर तले माहें बाहेर, ए जो कादर[५] की कुदरत[६] ।
सो कादर काहूँ न पाइया, जिनके हुकमें ए होवत ।। ४

ए गुझ भेद जो गैब का, पाया न चौदे तबक ।
कथ कथ सब खाली गए, पर छूटी न काहूँ सक ।। ५

ए तले ला मकान के, चार चीजें जिमी आसमान ।
ज्यों कबूतर खेल के, आखर फना[७] निदान[८] ।। ६

मोहे मेहेर करी रूहअल्ला ने, कुंजी अरस की ल्याए ।
अरस बका पट खोल के, इलम दिया समझाए ।। ७

गिरो उतरी लैलत—कदर[९] में, कह्या तिनमें का है तूं ।
खोल दे पट अरस का, ज्यों आए मिले तुझको ।। ८

जो अरवाहें अरस की, सो आए मिलेंगी तुझ ।
तुझ अन्दर मैं आइया, ए केहे फुरमाया मुझ ।। ९

किन कायम अरस न पाइया, ए गुझ रही थी बात ।
अब तूं उमत जगाए अरस की, बीच बका हक जात ।। १०

और करी मेहेर महंमदें, अन्दर बैठे आए ।
कै विध करी बका रोसनी, सो इन जुबां कही न जाए ।। ११

चौदे तबक कर कायम, भिस्त द्वार दीजे खोल ।
मैं साहेब के हुकम से, अव्वल किया है कौल ।। १२

---

१. छिपी । २. ज्योति स्वरूप । ३. अखण्ड । ४. विद्वान । ५. सामर्थ्यवान । ६. माया ।
७. नाश । ८. अंत । ९. मोह की रात (लैलतुल कदर) ।

सो ढूंढ़ों प्यारी उमत, मेरे हक जात निसबत ।
जो रूहें भूली वतन, ताए देऊँ हक बका न्यामत ॥ १३

निमूना इन जिमी का, हक को दिया न जाए ।
पर कछुक तो कहे बिना, गैब की क्यों समझाए ॥ १४

ज्यों जड़ाव एक मोहोल है, जवेर जड़े कै संग ।
कुंदन माहें सोभित, नए नए अनेक रंग ॥ १५

सब एक जवेर का अरस है, तामें कै रंग उठत ।
जुदे जुदे रंगों झरोखे, अनेक भांत झलकत ॥ १६

अनेक रंग थंभन में, अनेक सीढ़ियां पड़साल ।
कै रंग भोम चबूतरे, कै रंग द्वार दिवाल ॥ १७

इन विध समझो अरस को, एक जवेर कै रंग ।
द्वार दिवालें पड़सालें, और थंभों उठत तरंग ॥ १८

जित जैसा रंग चाहिए, तहां तैसा ही देखत ।
ना समारे नए किन, ना पुराने पेखत ॥ १९

जवेर जुदे जुदे सोभित, अनेक रंग अपार ।
एक जवेर को अरस है, ज्यों रंग रस बन विचार ॥ २०

बन सबे एक रस हैं, कै रंग वृक्ष अनेक ।
रंग रस स्वाद जुदे जुदे, कहां लों कहूँ विवेक ॥ २१

हर जातें कै वृक्ष हैं, रंग रस निरमल नेक ।
स्वाद अलेखें अपार है, पर असल बन रस एक ॥ २२

गृद अरस के देखिया, जहां लों नजर पोहोंचत ।
एकल छत्री बन की, छेदर[1] ना गेहेरा[2] कित ॥ २३

ज्यों जड़ाव एक चंद्रवा, जवेर जड़े बहु बिध ।
बन बेली कटाव कै, सोभित सोने की सनंध ॥ २४

---

१. खुला । २. घना ।

अनेक रंगों जवेर, जो जिन संग सोभित ।
तिन ठौर बने तिन मिसलें, कै हुए कटाव जुगत ॥ २५

एक जिमी जरे की रोसनी, मावत नहीं आकास ।
तिन जिमी के जवेर को, क्यों कर कहूँ प्रकास ॥ २६

एह चंद्रवा बनका, नूर रोसन गृदवाए ।
तले जिमी अति रोसनी, ऊपर बन सोभाए ॥ २७

जरे जरा सब नूर में, छज्जे दिवाल सब नूर ।
जिमी बन बीच आकास में, मावत नहीं जहूर ॥ २८

सोभा जानवर अरस के, ताके एक बाल की रोसन ।
मावत नहीं आकास में, जुबां क्या करे सिफत[1] इन ॥ २९

सिफत न होए एक बाल की, तो क्यों होए सिफत वजूद ।
ए केहेनी में न आवत, तो क्यों कहे जुबां नाबूद[2] ॥ ३०

एक बाल न गिरे पसुअन का, ना खिरे पंखी का पर ।
पात पुराना ना होवही, अरस जंगल या जानवर ॥ ३१

इन जिमी के जानवर, ताए देखत हक नजर ।
ए दिल में तो आवही, जो रूह देखे विचार कर ॥ ३२

पार ना खूबी खुसबोए को, पार ना पसू पंखियन ।
मीठी बानी अति बोलत, अंग सोभित चित्रामन ॥ ३३

सोभा क्यों होए रंग सुरंग की, नैन श्रवन चोंच बान ।
सुख देवें कै भांत सों, कै बोलें मीठी जुबान ॥ ३४

एक हक को हँसावें खेलके, कै हँसावें मुख बोल ।
कोई नाहीं निमूना इनका, जो दीजे इनकी तौल ॥ ३५

सोभा लेत जिमी जंगल, माहें टोले कै खेलत ।
ए खूब खेलौने हक के, ए बुजरग इन निसबत ॥ ३६

---

१. प्रशंसा । २. नाशवान ।

कै पीउ पीउ कर पुकारहीं, कै करें खसम खसम ।
कै धनी धनी मुख बोलहीं, कै कहें भी तुम भी तुम ।। ३७

इन विध में केते कहूँ, बोलें जुबां अनेक ।
पर सबो एही जिकर, कहे तुम वाहेदत्त[1] एक ।। ३८

घास करत हैं सेजदा, करें सेजदा दरखत ।
तो क्यों न करें चेतन, यों फुरमान फुरमावत ।। ३९

घास पसू सब नूर के, जिमी जंगल सब नूर ।
आसमान सितारे नूरके, क्यों कहूँ नूर चांद सूर ।। ४०

आगूं जरे घास अरस के, ख्वाब हैवान[2] इन्सान[3] ।
क्यों दीजे निमूना झूठ का, कायम जिमी जरा रेहेमान[4] ।। ४१

इत जरा छोटा बड़ा नूरका, या हौज जोए मोहोलात ।
अरस जरे की इन जुबां, सिफत न कही जात ।। ४२

आगूं द्वार अरस के, चौक वन्या चबूतर ।
कबूं हक तखत बैठही, आगे खेलें जानवर ।। ४३

कै कदेले कुरसियां, ऊपर रूहें बैठत ।
सुमार नहीं पसू पंखियों, कै विध खेल करत ।। ४४

इन दरगाह की रूहन सों, दोस्ती हक की हमेसगी ।
इन जुबां सों सिफत, क्यों होवे इनकी ।। ४५

जो नजीक निस दिन, हक हादी हमेस ।
क्यों कहूँ अरस अरवाहों कों, जो कायम खुदाई खेस[5] ।। ४६

सोभा जाए न कही रूहन की, बड़ी रूह के अंग नूर ।
कहा कहूँ खूबी इन जुबां, जो असल जात अंकूर ।। ४७

अब देखो अंतर विचार के, कैसा सुंदर सरूप रूहन ।
किन विध खूबी रूहन की, क्यों वस्तर क्यों भूखन ।। ४८

---

१. सर्वस्व, एक ही । २. पशु । ३. मनुष्य । ४. कृपालु । ५. स्वजन, खास ।

देखो कौन सरूप बड़ी रूह का, आपन रूहें जाको अंग ।
हक प्याले पिलावत, बैठाए के अपने संग ॥ ४९

कायम हमेसा बुजरगी, सिरदार इन रूहन ।
ए जुबां झूठे वजूद की, क्यों करे सिफत इन ॥ ५०

ए सिरदार कदीम रूहन के, हक जात का नूर ।
तिन नूर को नूर सबे रूहें, ए वाहेदत एकै जहूर ॥ ५१

अरस जरे की सिफत को, पोहोंचत नहीं जुबान ।
तो अरस रूहें सिरदार की, ज्यों होवे सिफत बयान ॥ ५२

इन अरस का खावंद, ताकी सिफत होवे क्यों कर ।
एह जुबां क्यों केहेवही, इन अकल की फिकर ॥ ५३

सूरत हक के जात की, सिफत करूँ मुख किन ।
जुबां न पोहोंचे जरे लग, तो कैसा सब्द कहूँ इन ॥ ५४

सिफत हक सूरत की, क्योंए न आवे जुबांए ।
कछू लज्जत तो पाइए, जो आवे फैल हाल माहें ॥ ५५

कैसा सरूप है हक का, जो इन सबों का खावंद ।
क्यों देऊँ निमूना इनका, इन जुबां मत मंद ॥ ५६

सोभा सुंदरता जात की, एक हक जात सूरत ।
अंतर आंखें खोल तूँ, अपनी रूह की इत ॥ ५७

रहे ठाढ़ी इन जिमी पर, देख अपना खसम ।
देख मिलावा अरस का, और देख अपनी रसम ॥ ५८

देख तले तरफ जिमीय के, उज्जल जोत अपार ।
बन रोसन भरचा आसमान लों, किरना नहीं सुमार ॥ ५९

ऊपर देख तरफ बन के, फल फूल बेली रंग रस ।
कहूँ जड़ाव ज्यों चंद्रवा, कै कटाव कै नकस ॥ ६०

चारों तरफों चंद्रवा, अरस के यों कर ।
दौड़ दौड़ के देखिए, आवत यों ही नजर ॥ ६१

फेर फेर बन को देखिए, भाँत चंद्रवा जे ।
केहे केहे फेर पछतात हों, ऐसे झूठे निमूना दे ॥ ६२

एक जरा कायम देखिए, उड़े चौदे तबक वजूद ।
सिफत अरस की क्यों करे, ए जुबाँ जो नाबूद ॥ ६३

कहे सूरज सोना जवेर, ख्वाब में बुजरग ए ।
क्यों पोहोंचे निमूना झूठ का, अरस कायम हक के ॥ ६४

ए मैं देख दुख पावत, दिल में विचारत यों ।
जो कदी यों जान बोलों नहीं, तो कहे विना बने क्यों ॥ ६५

इन कहे होत है रोसनी, रूह पावत है सुख ।
और इस्क अंग उपजे, हक सों होत सनमुख ॥ ६६

उमंग अंग में रोसनी, अलेखें उपजत ।
इन कहे अरवाहें अरस की, अनेक सुख पावत ॥ ६७

जित जित देखों नजरों, हक जिमी अरस वतन ।
कहे संतो कै कोट गुना, आवत अंदर रोसन ॥ ६८

कै कोट गुना बढ़त है, बड़ा नफा रूह जान ।
बढ़त बढ़त हक अरस की, आवत इस्क पेहेचान ॥ ६९

इन कहे से ऐसा होत है, पीछे आवत फैल हाल ।
तो ख्वाब में कायम अरस का, सुख लीजे *नूर—जमाल ॥ ७०

ए मेहेर देखो मेहेबूब की, बड़ी रूह भेजी इत ।
इन जिमी रूहें जगाए के, कर दई ए निसबत ॥ ७१

ए हकका दिया पाइए, कौल फैल या हाल ।
ए साहेब कायम देवहीं, केहेनी अरस कमाल ॥ ७२

जब केहेनी आई अंग में, तब फैल को नाहीं बेर ।
फैल आए हाल आइया, लेत कायम रोसनी घेर ॥ ७३

तले से ऊपर चढ़त है, जिमी की रोसन ।
और जिमी पर उतरत है, ऊपर का नूर बन ॥ ७४

देखों जहां जहां दौड़ के, इसी भांत बन छांहिं ।
जिमी बन नूर देख के, सुख उपजत रूह मांहिं ॥ ७५

ए बाग गृद अरस के, और एही गृदवाए जोए ।
एही बाग गृद हौज के, सब नूर पूर खुसबोए ॥ ७६

जिमी भी सब एक रस, तिन में कै जुगत ।
जित जैसा रंग चाहिए, तित तैसा ही देखत ॥ ७७

रेत किनारे जोए पर, और रेत जिमी पर जेती ।
ताल पाल कै मोहोलों पर, कहूँ जल खूबी केती ॥ ७८

पहाड़ जवेर केते कहूँ, तले बीच ऊपर ।
कै जवेर कै रंग के, क्यों कहूँ सोभा सुंदर ॥ ७९

एही जिमी *नूर—जलाल की, जिन जानो बाग और ।
याही जवेर को मंदिर, तार्थे एक रस सब ठौर ॥ ८०

ना समारचा अरस को, ना किए नूर मंदर ।
ना किए हौज जोए को, ना परवत बन जानवर ॥ ८१

ना समारी जिमी जल को, ना आकास चांद सूर ।
बाओ तेज सब हक के, हैं कायम हमेसा नूर ॥ ८२

है नूर सब नूर—जमाल को, फिरस्ते नूर सिफात ।
रूहें नूर बड़ी रूह को, ए सब मिल एक हक जात ॥ ८३

दूसरा इत कोई है नहीं, एकै *नूर—जमाल ।
ए सब में हक नूर है, याही कौल फैल हाल ॥ ८४

*'महामत' कहें ऐ मोमनो, जो अरवा अरस—अजीम ।
इस्क प्याले लीजियो, भर भर नूर हलीम ॥ ८५

॥ प्रकरण ॥ ३२ ॥ चौपाई ॥ १७८७ ॥

## खिलवतमें हांसी *फरामोसी दई

अब देखो अन्दर अरस के, रूहें बैठी बारे हजार ।
उतरी लैलत कदर में, खेल देखन तीन तकरार ॥ १

वास्ते हांसी के मने किए, किया हांसी को दिल हुकम ।
तो हांसी को दिल उपज्या, मांग्या हांसी को खेल खसम ।। २

ए देखो भोम तले की, बैठा हक मिलावा जित ।
आप अरस में अरवाहों को, खेल मेहेर का देखावत ।। ३

साहेब बैठे तखत पर, खेलावत कर प्यार ।
ए हांसी फरामोसीयकी, कबूं देखी ना बेसुमार ।। ४

उठके गिर गिर पड़सी, फरामोसी हांसी के खेल ।
ए जो तीनों तकरार, हकें देखाए माहें लैल ।। ५

क्यों कहूँ सुख रूहन के, हकें यों कह्या उतरते ।
जो केहेता हों तुमको, जिन भूलो खेल में ए ।। ६

क्यों कहूँ सुख रूहन के, हक इन विध हांसी करत ।
आप देत भुलाएके, आपै जगावत ।। ७

क्यों कहूं सुख रूहन के, हकें कौल से किए हुसियार ।
दिल नीद दे ऊपर जगावत, करने हांसी अपार ।। ८

खेल किया हांसी वास्ते, वास्ते हांसी किए फरामोस ।
वास्ते हांसी ऊपर पुकारहीं, वास्ते हांसी न आवत होस ।। ९

आप फरामोसी ऐसी दई, जो भूलियाँ आप हक घर ।
ऊपर कै विध केहे केहे थके, पर जाग न सके क्योंए कर ।। १०

ऐसा दारू ल्याए रूह अल्ला, जासों मुरदा जीवता होए ।
पर फरामोसी इन हांसी की, उठ न सके कोए ।। ११

इन विध हांसी न जाए कही, कै कोट विधों जगावत ।
कै दारू उपाए कर कर थके, दिल ठौर क्योंए न आवत ।। १२

हांसी होसी अति बड़ी, ए खेल किया वास्ते इन ।
औलिया लिल्ला दोस्त कहावहीं, पर बल न चल्या इत किन ।। १३

हांसी इसही बातकी, फेर फेर होसी ए ।
उठ उठ गिर गिर पड़सी, बखत जागने के ।। १४

आपन को फरामोस की, नींद आई निहायत ।
अरस—अजीम में कूदते, कछू चल्या न हकसों इत ॥ १५

अरवाहें हमेसा अरस की, कहावें खास उमत ।
पर कछू बल चल्या नहीं, नातो रखते हक निसबत ॥ १६

हँसते हँसते उठसी, ऐसी हुई न होसी कब ।
हक हँससी आपन पर, ऐसी हुई जो हांसी अब ॥ १७

के हांसी खुसाली अरस में, करी मिनो मिने रूहन ।
पर ए हांसी ऐसी होएसी, जो हुई नहीं कोई दिन ॥ १८

एते दिन हांसी खुसाली, करी रूहों दिल चाही जे ।
पर ए हांसी दिल हक चाही, ताथें बड़ी हांसी हुई ए ॥ १९

रूह अपनी इन मेले से, जुदी करो जिन खिन ।
न्यारी निमख न होए सकें, जो होए अरवा मोमन ॥ २०

इन ठौर ए मिलावा, जिन जुदा जाने आप ।
इतहीं तेरी क्यामत, याही ठौर मिलाप ॥ २१

हक हादी इतहीं, इतहीं असलू तन ।
खोल आंखें इत रूह की, एह तेरा बका वतन ॥ २२

ए ठौर नजर में लीजिए, लगने न दीजे पल ।
कौल फैल या हाल सों, देख हक हांसी असल ॥ २३

इत देख फेर फेर तूँ, अपनी रूह की आंखां खोल ।
कर कुरबानी आपको, आए पोहोंच्या कयामत कौल ॥ २४

ए हांसी करी हक ने, फरामोसी की दे ।
क्यों न विचारें आपन, ए तरंग इस्क के ॥ २५

याथें देखो हक इस्क, हेत प्रीत मेहेरबान ।
ए हकें करी ऐसी हांसियां, खोल आंखें दिल आन ॥ २६

ऐसा हेत देख्या हकका, तोभी लगे न कलेजें घाए ।
ऐसी रब्ब रमूजें सुनके, हा हा उड़त नहीं अरवाए ॥ २७

ए सुख जरा याद न आवहीं, याद न एक एहेसान ।
हक देत याद कै बिध सों, हा हा ऐसी लगी नीद निदान ।। २८
नातो ऐसी मेहेर इस्क सों, हक करत आपन सों ।
जगाए के पेहेचान सब दई, हा हा आवत ना होसमों ।। २९
*'महामत' कहें ऐ मोमनों, ए देखो हक की मेहेर ।
जो एक एहेसान हक का लीजिए, तो चौदे तबक लगे जेहेर ।। ३०

।। प्रकरण ।। ३३ ।। चौपाई ।। १८१७ ।।

परकरमा नजीक अरस के

बेवरा अगली भोम का, मेहेराब और झरोखे ।
खूबी क्यों कहूं दिवाल की, सोभा लेत इत ए ।। १
गृदवाय मेहेराब झरोखे, फेर देखिए तरफ चार ।
इन मुख खूबी तो कहूं, जो होवे कहूं सुमार ।। २
बेसुमार जो फेर कहिए, तो आवत नहीं हिरदे ।
तो सब्द में ल्यावत, ज्यों दिल आवे मोमिनों के ।। ३
पार ना कहूं अरस का, सो कह्या बीच दिल मोमन ।
ए विचार कर देखिए बका, सो ल्याए बीच दिल इन ।। ४
हिसाब बीच ल्याए बिना, हक आवें नहीं दिल माहिं ।
हक देत लुदंनी मेहेर कर, हक अरस आवें बीच जुबांए ।। ५
दोऊ तरफ बड़े द्वार के, ए जो हांसें कहीं पचास ।
सामी चौक चांदनी, क्यों कहूं खूबी खास ।। ६
देहेलान ऊपर द्वार के, जो ऊपर चबूतरे दोए ।
चार चार मंदिर दोऊ तरफ के, ऊपर लग चांदनी सोए ।। ७
हांस पचास अगली दिवालें, दोऊ तरफ पचीस पचीस ।
दो मेहेराब बीच झरोखे, हर हांसें मंदिर तीस ।। ८
हर मंदिर एक झरोखा, याकी सोभा किन मुख होए ।
आए लग्या बन दिवालें, देत मीठी खुसबोए ।। ९

दोए भोम कही जो बन की, खिड़की मोहोल तिन बन ।
भोम दूजी मोहोल झरोखे, इत बसत पसू पंखियन ॥ १०

उतर झरोखों से जाइए, दूजी भोम बन माहिं ।
बन सोभे पसू पंखियों, कै हक जस गावें जुबांए ॥ ११

चल जाइए सातो घाट लग, खूबी देख होइए खुसाल ।
कै विध हक जिकर करें, पसू पंखी अपने हाल ॥ १२

इस्क जुबां बानी गावहीं, खूब सोभित अति नैन ।
मगन होत हक सिफत में, मुख मीठी बानी बैन ॥ १३

किन बिध कहूं पसू पंखियों, परों पर चित्रामन ।
मुख बोलें हक के हालमें, तिन अंबर भरयो रोसन ॥ १४

जैसी सोभा पसू पंखियों, सोभा तैसी भोम बीच बन ।
सो सोभा मीठी हक जिकर, यों हाल खुसाल रात दिन ॥ १५

सोभा जाए ना कही बन पंखियों, और जिकर करत हैं जे ।
तो हक हादी रूहें मिलावा, कहूं किन बिध सोभा ए ॥ १६

इतथें चलके जाइए, ऊपर दोऊ पुलन ।
ए खूबी मैं क्यों कहूं, जो नूर जमाल मोहोलन ॥ १७

सात घाट कहे बीच में, माहें पसू पंखी खेलत ।
तले भोम या ऊपर, बन में केल करत ॥ १८

केल लिबोई अनार, बांई तरफ खूबी देत ।
जांबू नारंगी बट दांहिने, नूर सनमुख सोभा लेत ॥ १९

दोए पुल सात घाट बीच में, पाट घाट विराजत ।
बीच दोऊ दरबार के, बन अंबर जोत धरत ॥ २०

जो घड़नाले पुल तले, दस दस दोऊ के ।
दस नेहेरें चलें दोरी बंध, बड़ी अचरज खूबी ए ॥ २१

दोऊ पुल देख के आइए, निकुंज मंदिरों पर ।
इत देख देख के देखिए, खूबी जुबां कहे क्यों कर ॥ २२

आगूं इतथें हिंडोले, जित चौकी बट पीपल ।
चार चौकी बट हिंडोले, इतथें न सकिए निकल ॥ २३
दूजी भोम जो चौकियों, दौड़ जाइए तितथें ।
बीच मेहेराबों कूदके, उतर आइए अरस में ॥ २४
पेहेली भोम के झरोखे, सो दूजी भोम लग बन ।
ए झरोखे के बराबर, भोम दूजी हिंडोलन ॥ २५
पेहेली भोम फूल बाग लों, दिवाल देखिए दिल धर ।
फिरते मेहेराब झरोखे, बन आवे अंदर थें नजर ॥ २६
फेर देखिए फूल बाग लों, हर मंदिर मेहेराब दोए ।
बीच बीच उचेरा झरोखा, कहूँ किन मुख सोभा सोए ॥ २७
भोम तले बन हिंडोले, अति सोभित इतथें ।
मेहेराब झरोखे सुंदर, जब बैठ देखिए बनमें ॥ २८
कै जिकर करें जानवर, मीठे स्वर बयान ।
इस्क खूबी अति बड़ी, सिफत बका सुभान ॥ २९
इत क्यों कहूं खूबी हिंडोले, जित हींचें रूहें हादी हक ।
बयान न होए एक जंजीर, जो उमर जाए मुतलक ॥ ३०
ए भोम तले की दिवाल में, मेहेराब आवें न सिफतमों ।
देख देख के देखिए, फेर चलिए फूल बागलों ॥ ३१
दूसरी भोम जो अरस की, सो तीसरी भोम लग बन ।
जाइए झरोखे से हिंडोले, ए सोभा कहूं मुख किन ॥ ३२
चौथी भोम के बन से, आइए तीसरी भोम अरस ।
ए भोम झरोखे बराबर, ए बन मोहोल अरस परस ॥ ३३
पाँचमी भोम बन चाँदनी, अति खूबी लेत इत ए ।
चल जाइए चौथी भोम अरस, मोहोल देखो बैठ झरोखे ॥ ३४
बट पीपल की चौकियां, एक घाट लग हद ।
लंबी चांदनी फूल बागलों, ए सोभा न आवे माहें सब्द ॥ ३५

हर हांस तीस मंदिर, हर मंदिर झरोखा एक ।
दोऊ तरफ दो मेहेराब, मंदिरों खूबी विसेक ।। ३६

हर हांस साठ मेहेराब, इनों बीच बीच झरोखा ।
भोम तले अति रोसनी, मुख क्यों कहूँ सोभा बका ।। ३७

इन विध हांसें फिरतियां, चारो तरफों सौ दोए ।
चारो तरफ का बेवरा, नेक केहेत हुकम सोए ।। ३८

एक तरफ आगूं द्वारने, तरफ दूजी चौकी हिंडोले ।
फूल बाग तरफ तीसरी, चौथी चबूतरे चेहेबच्चे ।। ३९

चार चार नेहेरें जंजीर ज्यों, मिल मिल फिरें गृदवाए ।
बीच बीच सोभित बगीचों, अचरज एह देखाए ।। ४०

बीच झरोखे कारंजे, चारों तरफों चार चलत ।
ए चारो बीच चेहेबच्चे, एकै ठौर पड़त ।। ४१

कहूं कारंज एक बीच में, एक ठौर उछलत ।
सो चारो फुहारें होएके, चारो खूंटो गिरत ।। ४२

सो ए फूल बाग की, सोभा इन मुख कही न जाए ।
नूर जोत फूल पातन की, जानों अंबर में न समाए ।। ४३

चार खूंट चारो हांसों, कै जिनसों फूल देखाए ।
कै जुगतें पात सोभित, सब खुसबोए रही भराए ।। ४४

फूल कहूँ कै रंग के, गिनती न आवे सुमार ।
ना गिनती रंग पात की, खूबी क्यों कहूँ इनों किनार ।। ४५

जानों के गंज नूर को, भराए रह्यो आकास ।
जब नीके नजर दे देखिए, तब कछू पाइए खूबी खास ।। ४६

विवेक कर जब देखिए, तब पाइए फूल पांखडी पात ।
कै जिनसें जुगतें कांगरी, नूर आगे देखी न जात ।। ४७

कै जिनस जुगत रंग फूल में, कै जिनस जुगत पात रंग ।
नूर बाग खासी हक हादी रूहें, खूबी क्यों कहूँ जुबाँ इन अंग ।। ४८

ए बाग चौड़ा लंबा सोहना, माहें जुदी जुदी कै जिनस ।
कै एक रंगों बगीचे, जानों एक से और सरस ॥ ४९

एक एक दरखत में कै रंग, यों कै बगीचे विवेक ।
कै बगीचे चेहेबच्चे, जानों जो देखों सोई विसेक ॥ ५०

नेहेरें चलत कै बीच में, चेहेबच्चे बगीचों ।
कै बैठकें कारंजों, जल उछलत फुहारों ॥ ५१

कै मोहोल मंदिरों चबूतरों, इत बने हैं बनके ।
इत हक हादी रूहें बैठक, अति ठौर खुसाली ए ॥ ५२

चारों खूंटों बड़े चार चेहेबच्चे तिन हर एक में कैं कारंज ।
सब नेहेरें तहां से चले, वह चेहेबच्चों भरया जल गंज ॥ ५३

पांच पांच हांसों बगीचा, भए पचास हांसों बाग दस ।
ए सोभा इन जुगतें, याकों क्यों कहूं रूप रंग रस ॥ ५४

ए बड़ा बाग ऊपर चबूतरे, तापर बनकी दिवाल ।
ए नूर फूलन का क्यों कहूँ, सेत स्याम नीले पीले लाल ॥ ५५

तले तीन तरफ मेहेराब, एजो कही दिवाल गृदवाए ।
ऊपर दिवालें बनकी, ए सिफत कही न जाए ॥ ५६

इन सौ बगीचों चेहेबच्चे, जुदी जुदी जिनस जुगत ।
ए बाग नेहेरें देखते, नैंना क्योंए ना होए त्रिपत ॥ ५७

जो बाग तले चबूतरा, सो छाया बीच दरखत ।
बीच अरस के उसी जुबां, हक आगूं होए सिफत ॥ ५८

ए वृक्ष जो अरस भोमके, सो अरसैं के हैं नंग ।
ए जोत कहूं क्यों इन जुबां, और किन विध कहूँ तरंग ॥ ५९

जिमी तले जो दरखत, एह जिनस कछू और ।
खूबी फल फूल पात की, किन मुख कहूँ ए ठौर ॥ ६०

रंग जोत खूबी खुसबोए की, क्यों कर कहूँ ए बन ।
फल फूल पात तले जिमी, जानों सूर हुए रोसन ॥ ६१

कै नेहेरें चेहेबच्चे, कै कारंजें जल उछलत ।
कै मोहोल माहें बैठकें, हक हादी रूहें खेलत ।। ६२

तले बाग जो दरखत, बड़ा बन गिरदवाए ।
चारो खूटों बराबर, खूबी जरेकी कही न जाए ।। ६३

तो क्यों कहूं सारे बागकी, जिन की खूबी कही ए ।
ऐसा जरा कह्या जिन का, तो क्यों कहूं ठौर हक के ।। ६४

जेता बाग ऊपर, तेता तले विस्तार ।
चारो खूटों बराबर, ए सिफत न आवे सुमार ।। ६५

अति खूबी बाग ऊपर, तले तिनसे अधिकाए ।
वह खूबी इन मुखसे, मोपें कही न जाए ।। ६६

बाग पांच पांच हांसके, हैं दस बाग हांस पचास ।
यों मोहोलातें सौ बागकी, कहूं किन विध खूबी खास ।। ६७

चारों तरफों चलती, नेहेरें बीच बाग के ।
बीच मेहेराबों से देखिए, सोभित वृक्षों तले ।। ६८

पचास हांस तरफ बागके, हर हाँसें तीस मंदर ।
मेहेराब बीच झरोखा, तीन तीन सबों अंदर ।। ६९

इन हांस चेहेबच्चे से चलिए, दूसरे पोहोंचिए जाए ।
मोहोल मेहेराबों देखिए, बाग इतथें और सोभाए ।। ७०

एक एक मंदिर में आएके, फेर देखिए गृदवाए ।
इन बिध रूहें देखिए, उलट अंग न समाए ।। ७१

ए बाग मेहेराब देखके, आए बड़े चेहेबच्चे ।
आया आगूं लाल चबूतरा, खूबी किन विध कहूं में ए ।। ७२

चालीस हांसों चबूतरा, बड़े मेहेराब इन पर ।
देख देख के देखिए, खूबी क्यों कहूं इन चबूतर ।। ७३

तीन हजार छे सै बने, मेहेराब बराबर ।
सोभा हांसों चालीस, इन जुबां कहूं क्यों कर ।। ७४

ए ठौर सोभा अति बड़ी, और बन विस्तार ।
ए ठौर बैठक बड़ी, पसू पंखी खेलें अपार ॥ ७५

अति खूबी आगू कठेड़े, हांसों चालीसों सोभित ।
देखत अरस आंखन सों, खूबी उत जुबां बोलत ॥ ७६

जुदी जुदी जिनसों सोभित, जुदी जुदी जिनसों फल फूल ।
पात रंग जुदी जिनसों, देख देख होइए सनकूल ॥ ७७

हर मंदिर माहें आएके, चढ़िए हर झरोखे ।
जब आइए हर मेहेराब में, तब खूबी देखो बाग ए ॥ ७८

बड़े मेहेराब बराबर, एक दूजे को लगता ।
हांस चालीस ऊपर चबूतरे, सोभा न आवे सब्द में बका ॥ ७९

एह भोम एह चबूतरा, लगते पेड़ दरखत ।
ए ठौर बरनन करते, हा हा छाती नाहीं फटत ॥ ८०

आगू भोम चबूतरे, चारों तरफों चौगान ।
गृदवाए परे पुखराज के, जिमी रोसन खेलें रेहेमान ॥ ८१

जिमी ऊँची नीची कहूँ नहीं, बराबर एक थाल ।
पसू पंखी सब में खेलहीं, ए खेलोंने नूर—जमाल ॥ ८२

बड़ा बन ऊंचे हिडोले, तले हाथी जात आवत ।
कहूँ केते बड़े जानवर, इन चौगान खेल करत ॥ ८३

बाग केसरी चीते खेलहीं, और मोर मुरग बांदर ।
हर जातें जातें के जिनसें, कहूँ कहां लग खेल जानवर ॥ ८४

हर जिनसें के खेलत, एक एक में खेल अपार ।
खेलें कूदें नाचें उड़ें, गावें के बिध जुबां न सुमार ॥ ८५

इन मुख सोभा क्यों कहूँ, और क्यों कहूं सोभा जिकर ।
सोभा पर चित्रामन, ए जुबां फना कहे क्यों कर ॥ ८६

सोभा कही न जाए दरखतों, और ना कही जाय इन भोम ।
जो देखों सोभा पसुअन की, करे रोसन अति एक रोम ॥ ८७

कै नाचत नट बांदर, कै बाजे बजावत ।
ए खेलौने *हक *हादीयके, केहेनी जुबां क्यों पोहोंचत ।। ८८

चढ़ ऊँचे लेत गुलाटियां, फेर गुलाटियों उतरत ।
ए नट विद्या बहुविध की, क्यों कर करूँ सिफत ।। ८९

कूदत फांदत नाचत, लेत भमरियां दे पड़ताल ।
नई नई विद्या देख के, हक हादी रूहें होत खुसाल ।। ९०

चढ़ कूदें कै दरखतों, पेड़ पेड़ से पेड़ ऊपर ।
तले जो अंत्रीख आएके, फिरत चढ़त ऊँचे उतर ।। ९१

जंत्र बेन बजावहीं, रबाव ताल मृदंग ।
अमृत सारंगी झरमरी, झांझ तंबूरा चंग ।। ९२

सरनाई भेरी नफेरी, और बाजे कै बजाय ।
तुरही नरसिंघा महुअर, और नगारे करनाए ।। ९३

लेत तले से गुलाटियां, चढ़त जात आसमान ।
उतरें भी गुलाटियों, फेर फेर गुलाटें दे तान ।। ९४

अंत्रीख मिने गुलाटियां, देत जात फिरत ।
इन बिध लेत भमरियां, यों कै बिध केल करत ।। ९५

देखो बांदर खेल अरस में, बड़ा देख्या अचरज ए ।
ए खूबी खुसाली क्यों कहूं, हक हादी आगूं होत जे ।। ९६

ए नट विद्या कै नाचत, बाजे दिल चाहे बजावत ।
ए खेल अचंभा देख के, हक हादी रूहें राचत ।। ९७

इत आगूं लाल चबूतरे, भोम क्यों कहूं बन विस्तार ।
खेल पसू पंखियन को, जुबां कहे जो होवे कहूं पार ।। ९८

बाघ केसरी खेलहीं, चीते खेलें सागोस ।
सब विद्या अपनी साधहीं, सब खेलें इस्क के जोस ।। ९९

हर खांचें जातें जुदी जुदी, आप अपनी विद्या खेलत ।
गाए नाचें जिकर करें, हर भांतें रूहों रिझावत ।।१००

हाथी घोड़े बैल बकर, साम्हर चीतल हरन ।
मेढे पाड़े पस्वड़े, कै खेलें ऊँट अरन ॥१०१

चालीस हांसों की ए कही, करें आप अपनां खेल ।
छोड़ें न हाँस मरजादा, हक आगे करें सब केल ॥१०२

दस हांसे बाकी रही, ताके मंदिर झरोखे ।
तित ढिग दो दो मेहेराब, खूबी लेत बन पर ए ॥१०३

एक सौ दस छेल्ली हारके, एजो मोहोल भूलवनी के ।
एक सौ दस चारो तरफों, एजो बारे हजार कहे ॥१०४

चबूतरे चेहेबच्चे लग, बीच चालीस मंदर ।
चालीस चेहेबच्चे परे, असी बीच तीस अंदर ॥१०५

तीस चेहबच्चे ऊपर, बने जो झरोखे ।
चार चार द्वांर इन मंदिरों, मुख क्यों कहूँ सोभा ए ॥१०६

इत लगते जो मंदिर, हारें भूलवनी ।
केहे केहे मुख कहा कहे, सोभा अतंत घनी ॥१०७

छे हांस ऊपर दस मंदिर, हांसे पोहोंची लग पचास ।
एक झरोखा दो मेहेराब, ए जो फिरती खूबी खास ॥१०८

ए मोहोल फिरते बन ऊपर, एजो सोभा लेत हैं इत ।
वन झरोखे सोभा तो कहुँ, जो होए निमूना कहूँ कित ॥१०९

एजो घाट अनार का, आए मिल्या दिवाल ।
ए खूबी क्यों कहूँ इन जुबां, रूह देखत बदले हाल ॥११०

घाट लिवोई हिंडोलों, आए मिल्या इत ए ।
खूबी ताड़ वन की, क्यों कहूं बल जुबां के ॥१११

केल वन आगूं चल्या, मधु वन मिल्या आए ।
इत सोभा बड़े वन की, इन अंग मुख कही न जाए ॥११२

और हांसें पचास जो, आगूं बड़े दरबार ।
सोभित झरोखे मेहेराव, आगूं चौक सोभे वन हार ॥११३

एजो बड़ी कही पड़साल, ऊपर बड़े द्वार ।
दोऊ तरफों तले दस थंभ, एक एक रंग के चार चार ॥११४

सामी दस थंभ दिवाल में, करे जोत जोत सों जंग ।
बीस थंभ रंग रंग मुकाबिल, तिन रंग रंग कै तरंग ॥११५

जो थंभ आगूं द्वारने, अति उज्जल हीरों के ।
दोऊ तरफो जोड़ें चार थंभ, ए चारों मानिक रंग लगते ॥११६

तिन जोड़े भी चार थंभ, सो पीत रंग पुखराज ।
तिन परे चारों पाच के, दोऊ तरफों रहे बिराज ॥११७

चारों खूटों थंभ नीलवी, सोभा लेत इत ए ।
पांच थंभों के लगते, हुए बीस दस जोड़े ॥११८

ए बीस थंभों का बेवरा, इनों क्यों कहूं रोसन नूर ।
कटाव किनारें कांगरियों, क्यों कहूं इन द्वार जहूर ॥११९

चार चार मेहेराब दाएँ बाएँ, आठ हुए तरफ दोए ।
सोभा आगूं बड़े द्वार के, इन मुख खूबी क्यों होए ॥१२०

दोऊ तरफ दोए चबूतरे, एजो लगते दिवाल ।
तीनों तरफों कठेड़ा, क्यों देऊं इन मिसाल ॥१२१

कठेड़ा रंग कंचन, जानों के मीना मोहें ।
सोभा लेत थंभ कठेड़े, ए केहे न सके जुबांए ॥१२२

कै रंग जवेर चबूतरों, कै दिवालें रंग नंग ।
ऊपर तले का नूर मिल, करत अंबर में जंग ॥१२३

ए अरस नूर जमाल का, तिन अरस बड़ा दरबार ।
एह जोत आकास में, मावत नहीं झलकार ॥१२४

आठ भोम इन ऊपर, तिन आठों भोम पड़साल ।
जाए पोहोंच्या लग चांदनी, ऊपर गुमटियाँ लाल ॥१२५

ए सोभा अचरज अदभुत, जानें अरस अरवाए ।
इन भोम रूह सो जान ही, जिन मोमन कलेजें घाए ॥१२६

आगूँ तले चौक चांदनी, उतर जाइए सीढ़ियन ।
आगूँ दोए चबूतरे चौक के, ऊपर हरा लाल द्वोऊ बन ॥१२७
इत सोभा चौक चांदनी, इन मोहोलों मुजरा जानवर ।
इन जुबां खूबी क्यों कहूँ, एजो बन में करें जिकर ॥१२८
ए जो रस्ता बन का, जोए जमना लग किनार ।
सात घाट दोए पुल बीच में, कै चौक बने कै हार ॥१२९
द्वार सामी पाट घाट का, सो रस्ता बराबर ।
जोए परे रस्ता नूर लग, आवे साम सामी द्वार नजर ॥१३०
ऊपर पाट चौक चांदनी, चारों खूंटों अति सोभाए ।
नंग जंग करें रंग पांच के, बारे थंभ गृदवाए ॥१३१
चारों तरफों थंभ दो दो, जानों बने चार द्वार ।
मानिक हीरे पाच पोखरे, ए चारों द्वार नंग चार ॥१३२
नूर दिस थंभ दोए मानिक, बट दिस हीरा थंभ दोए ।
दोए थंभ पाच दिस अरस के, थंभ पोखरे केल दिस सोए ॥१३३
चार थंभ चार खूँट के, नीलवी के झलकत ।
ए बारे थंभों का बेवरा, माहें जलसों जंग करत ॥१३४
सोभा लेत अति कठेड़ा, ऊपर ढांप चली किनार ।
सोभा जल में झलकत, जल नंग तरंग करे मार ॥१३५
ए दोऊ द्वार के बीच में, भरी जोत जिमी अंबर ।
और उठत जोत बन की, नूर अरस कहूँ क्यों कर ॥१३६
नूर और नूर—तजल्ला, आकास जिमी सब नूर ।
देत देखाई सब नूर, नूर जहूर भर पूर ॥१३७
सब्द न अब आगे चले, जित पर जले जबराईल ।
इत आवें रूहें अरस की, जो होए अरवा असील ॥१३८
*'महामत' कहें सुनो मोमनों, ए अरस *नूर—जमाल ।
एही *अरस—अजीम है, रहें इन दरगाह रूहें कमाल ॥१३९

प्रकरण ॥ ३४ ॥ चौपाई ॥ १९५६ ॥

## नूर परकरमा अंदर दस भोम ॥ मंगला चरन

बड़ी रूह रूहें नूर में, लें अरस नूर आराम ।
*नूर—जमाल के नूरमें, नूर मगन आठों जाम ॥ १

तिनका जरा सब नूरमें, नूर जिमी वृक्ष बाग ।
नूर फल फूल पात नूर, रूहें निस दिन नूर सोहाग ॥ २

नूर किनार नूर जोए के, नूर जल तरंग ।
नूर जल पर मोहोलातें, क्यों कहूँ नूर के रंग ॥ ३

नूर जिमी निकुंज बन, नूर जिमी जल ताल ।
नूर टापू मोहोलात नूर, और नूर मोहोल बन पाल ॥ ४

नूर जल किनारे सीढ़ियां, नूर चबूतरा गृदवाए ।
नूर मोहोल मेहेराब फिरते, नूर भांई जल में बनराए ॥ ५

नूर जरे तिनके का, मैं नूर कह्या दिल धर ।
नूर समूह की क्यों कहूँ, रूहें नूर देखें सहूर कर ॥ ६

सुपेत जिमी नूर भलके, नूर आकास लग भरपूर ।
नूर सामी आकास का, क्यों कहूं जोर जंग नूर ॥ ७

नूर बाग हिंडोले रोसन, बिना हिसाबें नूर के ।
*हक *हादी रूहें नूर में, नूर हींचें अरस लगते ॥ ८

हक बड़ी रूह हींचें नूरमें, और रूहें नूर बारे हजार ।
जोत नूर आकास में, नूर भरचो करे भलकार ॥ ९

खोल आँखें रूह नूर की, क्यों नूर न देखे बेरबेर ।
क्यों न आवे बीच नूर के, ज्यों नूर लेवे तोहे घेर ॥ १०

ए रोसन करत कौन नूर की, नूर कहत आगूं किन ।
कहत है नूर किनका, नूर रूह केहे चली मोमन ॥ ११

देखो मोहोलातें नूर की, अन्दर सब पूर नूर ।
कहाँ लग कहूं माहें नूर की, नूर के नूर जहूर ॥ १२

सब चीजें इत नूर की, बिना नूर कछुए नाँहि ।
नूर माहें अंदर बाहेर, सब नूर नूर के माँहि ॥ १३

नूर नजरों नूर श्रवनों, नूर को नूर बिचार ।
नूर सेज्या सुख नूर अंग, नूर रोसन नूर सिनगार ।। १४

नूर खाना नूर पीवना, नूर मुख मजकूर[1] ।
इस्क अंग सब नूर के, सब नूर पूर नूर ।। १५

गुन अंग सब नूर के, नूर इंद्री नूर पख ।
रीत रसम सब नूर की, प्रीत प्रेम नूर लख ।। १६

आसमान जिमी तारे नूर के, नूर चांद और सूर ।
रंग रुत नूर बाए बादल, गाजे बीज नूर भरपूर ।। १७

मोहोल मंदिर सब नूर में, झांखन झरोखे नूर ।
द्वार दिवालें नूर सब, सब नूर हजूर या दूर ।। १८

थंभ दिवालें नूर की, नूरै के झरोखे ।
नूर सरूप माहें झांकत, नूर सब नूर देखें ए ।। १९

मोहोल मंदिर सब नूर के, नूर मेहेराब खिड़की द्वार ।
नूर सीढ़ियाँ सोभा नूर की, बीच गृदवाए[2] नूर झलकार ।। २०

कहा कहूं नूर नवे भोम का, नूर क्यों कहूं नूर बिसात[3] ।
नूर बस्तर कहे न जावहीं, तो क्यों कहूं नूर हक जात ।। २१

रहें नूर सरूप पानी मिने, तो भीजें ना नूर तन ।
नूर तन रहें जो आग में, तो भी नूर न जलें अगिन ।। २२

कहें हक नूर बैठ नासूत[4] में, करें नूर लाहूत[5] के काम ।
नूर रूहें जिमी दुख में, लेवें नूर लाहूती आराम ।। २३

दिल मोमन अरस नूर में, नूर इस्क आग जलाए ।
इत नूर वाहेदत[6] बिना, और नूर आग कहूं न बचाए ।। २४

कै गलियां नूर पौरियां[7], कै नूर चौक चौबट ।
नूर बसे जो इन दिलों, तो नूर खुल जावें पट ।। २५

---

१. बातचीत । २. चारों तरफ । ३. साज-सामान । ४. मृत्यु लोक । ५. परम धाम ।
६. एकत्व । ७. मेहेराब ।

नूर सीढ़ियां नूर चबूतरे, नूर के थंभ दिवाल ।
बीच खाली सोभा नूर की, ए नूर कहूं किन हाल ।। २६

बाजे बासन सब नूर के, पलंग चौकी सब नूर ।
नूर बिना जरा नहीं, नूर नूर में नूर जहूर ।। २७

दसो दिसा सब नूर की, नूरै का आकास ।
इन जुबां नूर बिलंद की, क्यों कहूं नूर प्रकास ।। २८

बाग जंगल राह नूर के, पसू पंखी नूर पूर ।
ख्वाब जिमी में नूर अरस की, नूर जुबां कहा करे मजकूर ।। २९

होत नूर थें दूजा बोलते, दूजा नूर बिना कछू नाहिं ।
एक वाहेदत नूर है, सब हक नूर के माहिं ।। ३०

नूर कहें महामत रूहें, देखो नजरों नूर इलम ।
वाहेदत आप नूर होए के, पकड़ो नूर—जमाल कदम ।। ३१

प्रकरण ।। ३५ ।। चौपाई ।। १९८७ ।।

## *नूरपरकरमा अंदर तांई

नूर तरफ पाट घाट नूर का, बारे थंभ नूर के ।
ऊपर चांदनी नूर रोसन, नूर क्यों कहूँ किनार बन ए ।। १

नूर घाट जाबू बन का, और नूर घाट नारंग ।
बट घाट छत्री बन हिडोले, पुल सोभे मोहोल नूर रंग ।। २

नूर किनारें रेती नूर में, मोहोल चबूतरे नूर किनार ।
ताल हिडोले बीच नूर बन, नूर सोभा निकुंज अपार ।। ३

नूर नेहेरें मोहोलों तले, नूर ढांपे चले अनेक ।
नूर चले नूर चक्राव ज्यों, नूर सुख पाइए देख विवेक ।। ४

मोहोल मानिक पहाड़ नूर के, कै नेहेरें चादरें नूर ताल ।
कै मोहोल हिडोले नूर के, ए नूर देखे बदले हाल ।। ५

कहा कहूँ हिडोले नूर के, नूर रूहें झूलें बारे हजार ।
इन बिध नूर हिडोले, नाहींन नूर सुमार ।। ६

बन नूर नेहेरें ढांपी चली, कै नेहेरें बन नूर बिस्तार ।
कै नूर नेहेरें मिली सागरों, कै नूर नेहेरें आवें वार ॥ ७

कै मोहोलातें इत नूर की, कै टापू नूर मोहोलात ।
ए निपट बड़े मोहोल नूर के, मोहोल नूर आकास में न समात ॥ ८

नूर परकरमा दीजिए, फिरते जाइए नूर बन में ।
बाग परे नूर अंन बन, आगूं बन बिना नूर जिमी ए ॥ ९

दूब दुलीचे नूर में, नूर लग्या जाए आसमान ।
दूर लग नूर या बिध, नूर खेलें इत चौगान ॥ १०

आगूं बड़ा बन नूर का, आए नूर मधुबन ।
कै हिंडोले नूर के, हुआ आसमान नूर रोसन ॥ ११

नूर पांच पेड़ पुखराज के, दो नूर सीढ़ी तीसरा ताल ।
ए आठों पहाड़ तले नूर में, ऊपर नूर मोहोल ना मिसाल ॥ १२

हजार गुरज नूर चांदनी, चांदनी नूर आसमान ।
तापर मोहोल नूर आकासी, ए नूर आकास मोहोल सुभान ॥ १३

इत बडे जानवर नूर में, नूर खेलत रूहें खुसाल ।
इत निपट बड़ा खेल नूर का, हँसें रूहें हादी नूर—जमाल ॥ १४

चारों तरफ मोहोल नूर ताल के, नूर जल चादरों गिरत ।
सो परत बीच नूर कुंड के, रूहें देख देख नूर हँसत ॥ १५

तले बंगले नेहेरें नूर की, चले चक्राव नूर इत ।
चार तरफ बड़ी नूर पौरी, नूर सोभा न देखी कित ॥ १६

इत बंगले बगीचे नूर के, नूर कारंजें कै उछलत ।
खूब खुसाली नूर भरी, नूर हँसें खेलें रमत ॥ १७

नूर बाहेर नेहेरें आई कुंड में, आगूं नूर चबूतरे ।
जोए ढांपी चली मोहोल नूर के, नेहेर खुली नूर किनारे ॥ १८

दोऊ ढांपे किनारे नूर के, जोए फिरी नूर तरफ ताल ।
नूर एक मोहोल एक चबूतरा, ए नूर देख होइए खुसाल ॥ १९

बड़ा बन मोहोल नूर का, ए नूर अति सोभित ।
जोए नूर आई पुल तले, सो क्यों कही जाए नूर सिफत ॥ २०

ए मोहोल नूर—जमाल के, दोए नूर पुल जोए ऊपर ।
नूर नेहेरें दस घड़नाले, खूबी जुबां कहे क्यों कर ॥ २१

केल घाट नूर कतरे, चौकी सोभित नूर किनार ।
पोहोंची नूर पुल बराबर, आगूं लिबोई नूर अनार ॥ २२

ए नूर चौकी भोम चार की, नूर पुल से आए तीन घाट ।
अति सोभा आगूं छत्री नूर की, ऊपर जल नूर पाट ॥ २३

नूर मानिक हीरे पाच पोखरे, नूर द्वार से आए फेर द्वार ।
चारो खूंटों नूर थंभ नीलवी, नूर पांच रंग बारे सुमार ॥ २४

नूर नेहेरें तीन तले चलें, नूर पाट एता जल पर ।
ठौर खेलन नूर—जमाल के, ए नूर रूहें देखें दिल धर ॥ २५

दोऊ पुल नूर सात घाट में, रूहें देखें नूर रोसन ।
हक जिकर नूर पंखियों, होत नूर में रात दिन ॥ २६

नूर भोम दूजी बैठक, पसू पंखियों एह नूर ठौर ।
के जिनसें नूर जिकर, विना हक न बोलें नूर और ॥ २७

आगूं द्वार नूर चांदनी, रेती रोसन नूर आसमान ।
नूर जंग होत सबों चीजों, कोई सके न नूर काहूँ भान ॥ २८

आगूं दोए नूर चबूतरे, दोऊ पर नूर दरखत ।
लाल हरे रंग नूर के, ए नूर जानें हक सिफत ॥ २९

नूर आगूं दरबार के, नूर लग चांदनी झलकार ।
हांस पचासों नूर पूरन, नूर जोत न कहूँ सुमार ॥ ३०

नूर सामी नूर द्वार का, होत नूर नूर सों जंग ।
खड़ियां आगूं नूर चांदनी, नूर देखें अरस नूर अंग ॥ ३१

नूर हीरे मानिक पोखरे, पाच नीलबी नूर थंभ ।
नूर पांच रंग दोऊ तरफों, दस दिवालें नूर अचंभ ॥ ३२

अंदर आओ नूर द्वार के, फेर देख नूर अरस ।
नूर मंदिर चौक चबूतरे, नूर एक पें और सरस ॥ ३३

नूरै के मोहोल मंदिर, नूर दिबालें द्वार ।
नूर नकस कटाव नूर, नूर क्यों कहूँ बड़ो विस्तार ॥ ३४

चलो नूर द्वार से नूर ले, दे नूर तवाफ गृदवाए ।
देख मेहेराब नूर झरोखे, नूर बाग देख फेर आए ॥ ३५

नूर चेहेबच्चे नूर चबूतरे, ए नूर फेर फेर देख ।
फेर नूर चौक द्वारने, नूरै नूर विसेख ॥ ३६

दो दो मंदिर हारें नूर की, बीच दो दो नूर थंभ हार ।
यों नवें भोम नूर मंदिर, नूर झरोखे किनार ॥ ३७

यों सब भोमें नूर नूर गृदवाए, थंभ गलियां नूर मंदर ।
मेहेराब झरोखे नूर के, देख नूर लगता इनों अंदर ॥ ३८

इन अंदर नूर हवेलियां, नूर मोहोल फिरते लग तिन ।
साम सामी मोहोल नूर के, दो दो चौक आगूँ नूर इन ॥ ३९

इन अंदर नूर हवेलियां नूर की, नूर हवेलियां दोए हार ।
नूर चौक बीच तिन हारों, नूर चौक आगूँ दोए द्वार ॥ ४०

ए जो फिरती नूर हवेलियां, नूर लगलग बराबर ।
आगूँ नूर द्वार चबूतरे, नूर सिफत अति सुंदर ॥ ४१

आए फिरते नूर द्वार लग, सोभा फिरती नूर लेत ।
नूर द्वार सामी नूर द्वारने, सामी हवेली नूर सोभा देत ॥ ४२

द्वार द्वार नूर मुकाबिल, नूर चबूतरों चबूतरे ।
नूर मोहोल मोहोल मुकाबिल, दोऊ तरफों सोभा नूर ए ॥ ४३

दोऊ मोहोलों बीच नूर गली, नूर चबूतरे चौक चार ।
नूर गली आई बीच में, दोऊ साम सामी नूर द्वार ॥ ४४

जेते फिरते नूर द्वारने, आगूँ नूर चबूतरे दोए दोए ।
नूर चौक चारों चबूतरों, दोऊ नूर द्वार बीच सोए ॥ ४५

नूर चौक ऐसे ही गृदवाए, नूर फिरते आए सब में ।
बीच फिरती आई नूर गली, नूर गली सोभा पौरी ए ॥ ४६

एक पौरी चौरे नूर से, आइए और चौरे नूर किनार ।
दोऊ चौरे नूर गली पर, नूर बनी पौरी चार ॥ ४७

चार थंभ नूर हर चौरे, चार पौरी आगू नूर द्वार ।
नूर पौरी चार हर चौरे, ए नूर सोभा ना किन सुमार ॥ ४८

हर दोऊ द्वार आगूँ नूर चौक, नूर चौकों चार चबूतर ।
हर चौकों नूर पौरी चौबीस, यों चौक बने नूर भर ॥ ४९

दो हार नूर थंभन की, नूर गली चली गृदवाए ।
बीच नूर गली कै पौरियां, ए नूर सोभा क्यों कही जाए ॥ ५०

आड़ी आवत नूर गलियां, नूर चौक होत तिनसे ।
नूर गली दोए दांयें बांएँ, गली गली नूर हवेलियों में ॥ ५१

इन विध नूर गलियां, बीच नूर हवेलियों निकसत ।
ए नूर गली दोऊ तरफों, आखर नूर मोहोल पोहोंचत ॥ ५२

याही विध नूर गृदवाए, चौक हुए नूर गलियों के ।
नूर तवाफ दे देखिए, यों चौक गली सोभे नूर ए ॥ ५३

यों नूर फिरती चार मोहोलातें, ए नूर खूबी अतंत ।
ए हुकम कहावे नूर गंज के, ए नूर ना सुमार सिफत ॥ ५४

इन अंदर मोहोल कै नूर के, कै जुदी जुदी नूर जिनस ।
कै मोहोल मंदिर नूर गलियां, नूर देखों सोई सरस ॥ ५५

इन अँदर नूर कै जुगतें, नूर कै मंदिर मोहोलात ।
नूर जिनसें कै जुगतें, नूर अरस गंज कह्यो न जात ॥ ५६

फेर देख नूर भोम दस का, होए हिरदे नूर जहूर ।
*'महामत' मोमन नूर का, नूर देखे अरस सहूर ॥ ५७

॥ प्रकरण ॥ ३६ ॥ चौपाई ॥ २०४४ ॥

भोम पेहेली नूर खिलवत

कहे आमर नूर अरस का, ए जो अरस *नूर *जमाल ।
दिल अरस मोमन नूर का, नूर सुनके बदले हाल ॥ १
तार्थे नेक कहूं नूर बीच का, नूर भोम तले खिलवत ।
हक हादी नूर मोमन, ए नूर गंज हक वाहेदत्त ॥ २
बीच नूर चबूतरा, चौसठ थँभ नूर के ।
फिरता कठेड़ा नूर का, नूर क्यों कहूँ नूर बीच ए ॥ ३
ऊपर चंद्रवा नूर का, और नूरै की झालर ।
ऊपर तले सब नूर में, सब नूरै रूह नजर ॥ ४
बिछोने सब नूर के, और तकिए नूर गृदवाए ।
रूहें बैठी नूर भर पूर, रह्या नूरै नूर समाए ॥ ५
चरनी सीढ़ियां नूर की, नूरै के द्वार चार ।
थंभ पड़सालें नूर की, नूरै के द्वार चार ॥ ६
नूरैं के मोहोल मंदिर, नूर दिवालें द्वार ।
नूर नकस कटाव नूर, नूर क्यों कहूं बड़ो विस्तार ॥ ७
मुखारबिंद सब नूर के, नूर बस्तर भूखन ।
सब सिनगार साजे नूर के, नूर कहां लग कहूँ रोसन ॥ ८
इत बीच सिघासन नूर का, नूरै का बिछौना ।
बैठे जुगल किसोर नूर में, कछू नाहींन नूर बिना ॥ ९
कै बिध नूर सिंघासन, कै बिध बिछौने नूर ।
कछू नजरों न आवे नूर बिना, सब दिसा नूर जहूर ॥ १०
बस्तर भूषन नूर के, सब नूरै का सिनगार ।
नूरै सागर होए रह्या, नूर वार न पार सुमार ॥ ११
नूर बोलत जुबां नूर की, नूर सुनत नूर श्रवन ।
खुसबोए नूर नासिका, नूर नैन देखें ना नूर बिन ॥ १२
अंग सारे नूर के, नूरै का नूर आहार ।
कौल फैल हाल नूर का, हाल-चाल नूर बेहेवार ॥ १३

नूर मंदिर पेहेली भोम के, नूर रसोई चौक ठौर ।
ए अंदर नूर द्वार के, कछू नूर बिना नहीं और ॥ १४

## भोम दूजी नूर भूलवनी

दूजी भोम जो नूर की, नूर चेहेबच्चे जल ।
नूर मंदिर भूलवन के, नूर एक सौ दस मोहोल ॥ १५

एक सौ दस हारें नूर की, नूर ऐसे ही गृदवाए ।
बारे हजार मोहोल नूर के, बीच नूर चौक रह्या भराए ॥ १६

नूर भोम दूजी से तले लग, भरचा चेहेबच्चा नूर जल ।
लंबा चौड़ा नूर एक हांस लग, ऊपर आया नूर बन चल ॥ १७

नूर तीनों तरफों भलूबियां, तरफ चौथी नूर भरोखे ।
नूर बन छाया जल पर, खासी बैठक नूर ठौर ए ॥ १८

नूर भरोखे बैठक, नूर जल नूर ऊपर ।
नूर भरोखे तीसों मिले, जितथें आवे नूर नजर ॥ १९

नूर मंदिर तीस इन तले, ताके चार चार नूर द्वार ।
आगूं तीन गली नूर थंभ की, ए जो मंदिर नूर किनार ॥ २०

नूर मंदिर एक सौ दस, एक अंदर की नूर हार ।
चारों तरफों मंदिर नूर के, ए नूर गिनती बारे हजार ॥ २१

नूर मंदिर भोम गिनती का, बीच नूर चबूतरा ।
हक हादी रूहें नूर बैठक, अति रंग रस नूर भरचा ॥ २२

द्वार जो नूर मंदिर, नूर के चार चार ।
लगते द्वार सब नूर के, माहें भूलवनी नूर अपार ॥ २३

हक हादी रूहें नूर भरे, खेलें नूर में कर सिनगार ।
नूर बिना कछू न पाइए, नूर भलकारों भलकार ॥ २४

बस्तर भूषर नूर के, नूर सरूप साज समार ।
नूर ले खेलें नूर में, नूर भलकारों भलकार ॥ २५

नूर सरूप देखत दिवालों, नूर सरूप देखत द्वार ।
नूर सरूप देखत नूर बीच, नूर झलकारों झलकार ।। २६

नूर सरूप पैठें एक द्वार से, जाए निकसें नूर किनार ।
यों नूर सरूप दौड़ें सब में, नूर झलकारों झलकार ।। २७

नूर सरूप सब नूर के, ले नूर दौड़ें बारे हजार ।
बारे हजार नूर मंदिरों, नूर झलकारों झलकार ।। २८

एक नूर मंदिर से आवत, नूर निकसें परली हार ।
नूर हँसें खेलें गिरें नूर में, नूर झलकारों झलकार ।। २९

नूर सरूप पैठें एक तरफ से, नूर निकसें जाए नूर पार ।
नूर फिरत बीच गृदवाए, नूर झलकारों झलकार ।। ३०

हार किनार पार में, नूर सागर हुआ द्वार द्वार ।
नूर वार पार या बीच में, नूर झलकारों झलकार ।। ३१

इन बिध नूर केता कहूँ, नूर समे खेलन ।
नूर बिना कछू न देखिए, नूर के नूर रोसन ।। ३२

दूजी भोम सब नूर में, रूहें फेर देखें नूर ले ।
नूर प्याले हक हादी नूर, रूहों भर भर नूर के दें ।। ३३

### भोम तीसरी नूर झरोखा

तीसरी भोम का नूर जो, नूर इन मुख कह्या न जाए ।
बड़ी बेठक नूर इन भोमें, इत नूर आप दीदारें आए ।। ३४

नूर द्वार नूर ऊपर, नूर बड़ो बैठक नूर भर ।
कर दीदार नूर—जमाल का, फेर आए नूर कादर ।। ३५

ए बैठक कही जो नूर की, सो नूरें नूर गृदवाए ।
बीच चौक गली सब नूर की, रहे द्वार मंदिर नूर भराए ।। ३६

मुख नूर चौक भर पूरन, नूर दस मंदिर पड़साल ।
इन भोम नूर रूहें देखहीं, तो नूर बदले नूर हाल ।। ३७

अंदर नूर पड़साल के, नूर द्वार मंदिर दोए दोए ।
नूर सीढ़ियां आगूं इन मांहिं, दोऊ तरफ मेहेराब नूर सोए ॥ ३८

नूर मेहेराब आगूं सीढ़ी नहीं, आगूं बढ़ती नूर पड़साल ।
नूर मेहेराब इन ऊपर, नूर पड़सालें माहें चाल ॥ ३९

और नूर मंदिर छे द्वारने, नूर दोऊ तरफों के ।
ए दसे भोम नूर मंदिर, नूर पड़साल बरावर ए ॥ ४०

नूर द्वार दोऊ ओर बराबर, नूर द्वार सीढ़ी दोए तरफ ।
नूर छे चौक आगूं देहरी, रूहें नूर देखें तो बोलें ना हरफ ॥ ४१

ए छे नूर द्वार दाएँ बाएँ, नूर दोऊ तरफों तीन तीन ।
ए रूहें देखें नूर बिवेक, जो देवे हुकम नूर यकीन ॥ ४२

ए बड़ी बैठक नूर पड़सालें, नूर भोम आरोगें बेर दोए ।
पूर नूर होए रूहें अरस की, ए नूर बेवरा देखें सोए ॥ ४३

नूर सेज्या पौढ़ें इतहीं, नूर मोहोल बड़ा ए ।
इत नूर मेला पोहोर तीन लग, नूर हुकम कहावें जे ॥ ४४

## भोम चौथी नूर निरत की

भोम चौथी जो नूर की, नूर में नूर बिस्तार ।
ए नूर कह्या तो जावही, जो होवे नूर सुमार ॥ ४५

नूर गंज मध मंदिर, नूर चौक ठौर निरत ।
नूर रात नूर बरसत, रूहें देखें नूर की सूरत ॥ ४६

नूर तखत नूर चौक में, बैठें नूर में जुगल किसोर ।
नूर सरूप निरत *नवरंग, बीच नूर बैठें भर जोर ॥ ४७

नूर खेलत नूर देखत, और नूरै नूर बरसत ।
रूहें आइयां जो इत नूर से, सो नूर नूरै को दरसत ॥ ४८

नूर मन्दिर द्वार नूर, नूर जिमी चौक थंभ दिवाल ।
नूर भरपूर नूर में, सब नूरै की हाल चाल ॥ ४९

नूर नूर को देखहीं, नूर की नूर सुनत ।
नूर नाचत नूर बाजत, नूर कहां लों को गिनत ॥ ५०
नूर बाजे नूर बजावहीं, नूर गावें नूर सरूप ।
नूर देखें फेर फेर नूर को, नूर नाचत नूर अनूप ॥ ५१
ऊपर तले बीच नूर में, जानू भरया सागर नूर ।
दसो दिसा देखों नूर नजरों, जानों तीखे आवें नूर के पूर ॥ ५२
जानों नूर देखों मासूक का, तो जुगल नूर सब पर ।
सब नूर देखों जित तितहीं, भरी नूरै नूर नजर ॥ ५३
हक नूर बिना जरा नहीं, नूर सब में रह्या भराए ।
नूर बिना खाली कहूँ नहीं, रह्या नूरै नूर जमाए ॥ ५४
फेर नूर दिवालों देखिए, नूर बन भरोखे जित ।
नूर खिड़की थंभ द्वारने, देख्या नूर बिना न कित ॥ ५५
रूहें दौड़ें नूर हाल में, नूर देखें सब ठौर ।
फेर आइए नूर द्वारने, नाहीं नूर बिना कछू और ॥ ५६

भोम पांचमी नूर सेज्या

नूर देखो भोम पांचमी, जित मंदिर नूर सेज ।
बारे हजार मोहोल नूर के, सब नूरै रेजा रेज ॥ ५७
नूर पौरी नूर द्वारने, नूर गलियां थंभ अरस ।
नूर प्याले रूहें पीवहीं, लें भर भर नूर सरस ॥ ५८
ए नूर के चौक चबूतरे, माहें नूर के माहोल मंदर ।
नूर सरूप लेहेरें लेवहीं, माहें नूर बाहेर अंदर ॥ ५९
चौकी संदूकें नूर की, सब सुंदर नूर सामान ।
नूर भरे मोहोल सोभित, ए क्यों होए नूर बयान ॥ ६०
सब जोगवाई नूर की, नूरै का सब साज ।
कहां लग कहूँ मैं नूर की, सब नूरै रह्या विराज ॥ ६१

सब मोहोल एक नंग नूर के, ज्यों नूर सागर माहें तरंग ।
यों कै बिध मोहोल नूर के, माहें कै नूर रस रंग ॥ ६२

ए नूर भोम फेर देखिए, नूर झरोखे नूर वन ।
नूर द्वार आए फेर, नूर नूरै नूर रोसन ॥ ६३

कै चौक देखिए नूर के, कै सीढ़ियां नूर दिवाल ।
कै थंभ गलियां नूर की, कै मोहोल नूर पड़साल ॥ ६४

नूर ऊपर तले माहें नूर, कै बेल फूल नूर नकस ।
घोड़े कमाड़ी नूर चौकठ, भरया सागर नूर रस ॥ ६५

झरोखे नूर गृदवाए, नूर सोभा कही न जाए ।
कछू नूर स्वाद तो आवही, जो नूर लीजे दिल ल्याए ॥ ६६

नूर मंदिर फेर देखिए, फेर देखिए नूर झरोखे ।
तब नूर बन आवे नजरों, नूर पसू पंखी खेलें जे ॥ ६७

## भोम छठी नूर सुखपाल

भोम छठी नूर झिलमिले, सब ठौरों नूर नाम ।
नूर रूहें खेलें नूर में, सब रह्या नूर में जाम ॥ ६८

नूर चौक मंदिर फिरते, नूर चबूतरों बैठक ।
नूर बरसत कै हवेलियों, नूर बैठक रूहें हादी हक ॥ ६९

नूर बैठत नूर उठत, नूर चलते नूर निदान ।
सब ठौरों नूर पूरन, जानों सब गंज नूर समान ॥ ७०

एक मध्य चौक भरया नूर का, और फिरते मोहोल नूर तिन ।
तिन गिर्द नूर हवेलियां, ए नूर गिनती करूँ जुबां किन ॥ ७१

तिन परे नूर नूर के परे, नूर मोहोल की गिनती नाहिं ।
नूर जिनसे कै जुदी जुदी, ए नूर आवे न हिसाब माहिं ॥ ७२

जो मोहोल नूर किनार के, नूर लेखे में आवे क्यों कर ।
ए नूर रूहें देखत, फेर फेर नूर नजर ॥ ७३

मोहोल झरोखे जो नूर के, आवत नूर बयार ।
इन जुबां इन नूर को, ए नूर आवे न माहें सुमार ।। ७४
कै मोहोलों में नूर थंभ, तिन कै थंभों नूर नकस ।
नेक नकस नूर देखिए, जानों ए नूर सबथें सरस ।। ७५
कै बन बेलीं नूर की, कै नूर पसू जानवर ।
कै नूर कटाव तिन बीच में, नूर कहां लग कहूँ क्यों कर ।। ७६
कह्यो न जाए नूर पातको, कै नूर कांगरी पात मांहि ।
कै नूर बेली एक पात में, सो कब लग कहूँ नूर कांहि ।। ७७
एक पात कांगरी नूर देखिए, नूर देखत उमर जाए ।
तो सोभा देखत नूर कांगरी, रूहें नूर क्योंए न त्रिपताए ।। ७८
छठी भोम नूर पूरन, जित रहत नूर सुखपाल ।
बड़ी बड़ी नूर हवेलियां, बड़े बड़े नूर पड़साल ।। ७९
फेर देखिए नूर द्वारको, मोहोल नूर चौक झलकत ।
रूहें खेलें खुसाली नूर में, नूर नूरै में मलपत ।। ८०

भोम सातमी नूर हिंडोले

नूर भरी भोम सातमी, नूर मोहोल बिना हिसाब ।
बिना हिसाब चौक नूर के, सो भरचो सागर नूर आब ।। ८१
हिसाब नहीं नूर दिवालों, हिसाब नहीं नूर गलियां ।
हिसाब नहीं बीच नूर थंभ, नूर आवें नूर बीच से चलियां ।। ८२
नूर भरे ताक खिड़कियां, बार साखें नूर द्वार ।
कै मोहोल मंदिर नूर के, ना गिनती नूर सुमार ।। ८३
कै छूटक मंदिर नूर के, कै मंदिरों नूर मोहोलात ।
कै फिरते मंदिर नूर के, बीच बैठक नूर बिसात ।। ८४
नूर झरोखे किनार के, तिन में नूर मंदर ।
नूर थंभ दो दो आगूं इन, हर मंदिर नूर अंदर ।। ८५

इन अंदर मोहोल कै नूर के, कै जुदी जुदी नूर जिनस ।
कै मोहोल मन्दिर नूर गलियां, नूर देखूं सोई सरस ।। ८६

ए जो मन्दिर नूर किनार के, दो हारें नूर मंदर ।
साम सामी नूर हिडोले, नूर झलकत है अंदर ।। ८७

यों फिरते नूर हिडोले, नूरै के गृदवाए ।
नूर सरूप रूहें बैठत, झूलें नूर जुगल दिल ल्याए ।। ८८

दो दो सरूप नूर झूलत, नूर साम सामी मुकाबिल ।
कड़े झनझनें नूर के, नूर खेलें झूलें हिल मिल ।। ८९

कै नूर चौक चबूतरे, कै नूर थंभ दिवाल ।
कै बार साखे ताके नूर के, क्यों कहूँ नूर बिना मिसाल ।। ९०

कै रंगों नूर झलकत, कै नूर रंग तले ऊपर ।
सब तरफों नूर जगमगे, ए नूर जोत कहूँ क्यों कर ।। ९१

कै गलियां नूर चरनियां, कै नूर मेहेराब झरोखे ।
कै नूर अरस की रोसनी, क्यों सिफत कहूँ नूर ए ।। ९२

## भोम आठमी नूर हिडोले

नूर गंज भोम आठमी, नूर चार तरफ झूलन ।
चारों चौक नूर हिडोले, रूहें झूलत नूर रोसन ।। ९३

गृदवाए नूर हिडोले, झलकत नूर जंजीर ।
क्यों कहूँ झूले नूर के, रूहें हँसत मुख नूर नीर ।। ९४

रूहें झूलें जब नूर में, तब अरस नूर झलकार ।
बोलें नूर पड़छंदे नूर मन्दिरों, होत हांसी नूर अपार ।। ९५

यों गृदवाए नूर सबन में, झनकत नूर झलकत ।
ए जो हिडोले नूर के, कही जाए ना नूर सिफत ।। ९६

हक हादी रूहें नूर में, झूलत नूर खुसाल ।
इन समें नूर—बिलंद का, किन विध कहूँ नूर हाल ।। ९७

ए झूले भोम नंग नूर के, गंज जाहेर नूर अंबार ।
जब नूर मोहोलों इत खेलत, अरस नूर न आवत पार ॥ ९८

इन अंदर नूर कै बिध का, नूर बैठक मोहोंल खेलन ।
जुदी जुदी बिध नूर जुगतें, हक सुख देत नूर रूहन ॥ ९९

कै बिध नूर चबूतरे, कै बिध नूर मंदर ।
कै बिध रोसन नूर किनारें, कै बिध नूर अंदर ॥१००

बारे हजार रूहें नूर हिडोले, हर नूर रूहें हक संग ।
इन समें नूर क्यों कहूँ, नूर होत उछरंग ॥१०१

चार चार हिडोले नूर के, अरस मावे ना नूर झलकार ।
लेत लेहेरें नूर सागर, जानों नूर गंज भरे अंबार ॥१०२

नूर हिडोलों जंजीरों, कड़े खटकत नूर जुगत ।
ए घाए पड़घाए नूर पड़छदे[1], नूर हर ठौरों बोलें बिगत ॥१०३

### भोम नौमी नूर गोख बैंठक

भोम नौमी नूर नूरै, गृदवाए नूर तखत ।
ए नूर विचारे ना उड़े, हा हा नूर जीवरा बड़ा सखत ॥१०४

इन नूर भोम की सिफत, कही जाए ना नूर मुख इन ।
ए नूर मंदिर नूर झरोखे, कैं नूर फिरते सिंघासन ॥१०५

ए मंदिर झरोखे नूर एकें, फिरती नूर पड़साल ।
तो कहूँ नूर रोसन की, जो होंवे नूर इन मिसाल[2] ॥१०६

ए मंदिर झरोखे नूर के, भोम नूर बराबर ।
नूर द्वार ज्यों और मंदिर, नूर रूहें आवें सीढ़ियों उतर ॥१०७

हर हांसों हक नूर बैठक, हर हांसों नूर तखत ।
हक हादी रूहें नूर मिलावा, हर हांसों नूर न्यामत[3] ॥१०८

---

१. प्रतिध्वनि । २. निमूना । ३. अनुकम्पा ।

नूर थंभ गली देखिए, जानों नूर मंदिर द्वार ।
माहें मंदिर झरोखे नूर एकै, हर बैठक नूर विस्तार ॥१०९

नूर दूर से देखत नजरों, सो नूर बैठक इत ।
दो सै हांसें नूर की, हक मेले नूर बरकत[१] ॥११०

सोभा हक नूर सिंघासन, नूर इन भोम बिराजत ।
ए बात केहेते हक नूर की, हा हा नूर जीवरा ना उड़त ॥१११

और नूर मोहोल कै अंदर, सो नूर बड़ो विस्तार ।
कै नूर भांत बिध जुगतें, नूर अलेखें बेसुमार ॥११२

नवे भोम नूर बरनन, नूर क्यों कहूँ ख्वाब जुबांए ।
ए नूर हक हुकम कहे, ना तो नूर आवे ना सब्द माहें ॥११३

अरस नूर जरा जुबां कहे, अरस मता नूर अपार ।
सो नूर बरनन क्यों होवही, जिन नूर को न काहूँ सुमार ॥११४

## दसमी भोम नूर चांदनी

नूर रूहें चढ़ चांदनी, नूर नवों भोमों पर ।
खूबी नूर भोम दसमी, ए नूर सोभा न काहूँ सरभर ॥११५

ऊपर जल नूर चेहेबच्चे, नूर कारंजे उछलत ।
ऊपर नूर इत बगीचे, नूर क्यों कहूँ हक न्यामत ॥११६

इत कै नूर सिंघासन, बीच नूर तखत बैठक ।
*हादी *रूहें नूर मिलाए के, बैठत नूर ले *हक ॥११७

नूर भरचा आकास में, सामी आया आकास नूर ले ।
नूर भरचा दरिया नूर का, माहें कै उठें तरंग नूर के ॥११८

दो सै एक गुरजें नूर की, नूर गुमटियां बारे हजार ।
बीच नूर रूहें बैंठक, थंभ नूर सोभा अपार ॥११९

---

१. बढोतरो

दसमी भोम नूर चांदनी, नूर गुमटियां देखत ।
ए मोहोल गृदवाए नूर के, नूर में हक हादी रूहें खेलत ॥१२०

नूर गुरज हांसों पर, बीच कांगरी नूर किनार ।
बीच बीच बैरखें नूर की, मौजें आवत नूर झलकार ॥१२१

इत सोभित नूर कांगरी, और सोभित नूर कलस ।
ए कलस कांगरी नूर के, सोभित नूर पर सरस ॥१२२

दसो दिसा नूर नूर में, नूरै नूर खेलत ।
नूर उठें बैठें नूर में, नूर नूरै में चलत ॥१२३

नूर भरया आसमान में, नूर चांदनी नूर चौक ।
नूर बिना कछू न देखिए, नूरै में नूर सौक ॥१२४

नूर देख्या भोम दस में, नूर सबही के सिरे ।
नूर ले नौमी भोम में, नूर नूरैं में उतरे ॥१२५

ए नूर सुख बैठक देख के, नूर भोम आठमी आए ।
लिए नूर सुख हिंडोले, ए चारो नूर सुखदाए ॥१२६

आए नूर भोम सुख सातमी, नूर सुख हिंडोले दोए दोए ।
ए सुख नूर रूहें बिना, नूर सुख लेवे जो होवे कोए ॥१२७

नूर लिया छठी भोम में, अरस बिवेक विचार ।
मोहोल लिया सुख नूर का, नूर नूर में नूर न सुमार ॥१२८

नूर भरी भोम पांचमी, जित नूर सेज्या सुख ।
रात सुख नूर अति बड़ा, हक सुख नूर सनमुख ॥१२९

भोम चौथी नूर में, नट निरत नूर खेलत ।
नूर बिना कछू न पाइए, सुख सनमुख नूर अतंत ॥१३०

तीसरी भोम जो नूर की, जित है नूर पड़साल ।
हक हादी रूहें नूर बैठक, आवें दीदारें *नूर—जलाल ॥१३१

दूसरी भोम का नूर जो, चेहेबच्चा नूर झीलन ।
हक हादी सुख नूर मूलवनी, देत नूर सुख अपने तन ॥१३२

नूर द्वार सुख पेहेली भोमें, सुख अवल भोम नूर पूर ।
फिरता सुख सनमुख नूर में, मध्य नूर नूर नूर ॥१३३

इत नूर खिलवत हक की, रूहें नूर मोमनों न्यामत ।
नूर मेला मूल मोमनों, बीच हक का नूर तखत ॥१३४

*हक *हादी *रूहें नूर ठौर, हक जात नूर वाहेदत ।
कहें *'महामत' नूर—बिलंद में, ए अपनी नूर क्यामत ॥१३५

॥ प्रकरण ॥ ३७ ॥ चौपाई ॥ २१७६ ॥

### नूर की परकरमा तमाम ॥ धाम बरनन

बरनन धाम को, कहूँ साथ सुनो चित्त दे ।
कै हुए ब्रह्मांड के होएसी, कोई कहे न हम बिन ए ॥ १

क्यों कहूँ धाम अंदर की, बिस्तार बड़ो अतंत ।
क्यों कहे जुबां झूठी देह की, अखंड पार के पार जो सत ॥ २

तो भी नेक केहेना साथ कारने, माफक जुबाँ इन बुध ।
अद्वैत अखंड पार की, करूँ साथ के हिरदे सुध ॥ ३

थंभ दिवालें गलियाँ, कै सीढ़ियाँ पड़साल ।
मन्दिर कमाड़ी द्वार ने, माहें कै नंग रंग रसाल ॥ ४

गली माहें कै गलियां, कै चौक चबूतरे अनेक ।
खिड़की माहें कै खिड़कियां, जित देखूं जानों सोई बिसेक ॥ ५

दूजी भोम का चेहेबच्चा, जल पर झरोखे तिन ।
सोभा लेत अति सुंदर, तीनों तरफों बन ॥ ६

तीनों तरफ बन डारियां, करत छाया जल पर ।
एक तरफ के झरोखे, जल छाए लिया अंदर ॥ ७

तीनों तरफों कठेड़ा, नेक नेक पड़साल ।
चारों तरफ उतरती सीढ़ियाँ, पानी बीच विसाल ॥ ८

आगूं मन्दिर चबूतरा, थंभ सोभित तरफ चार ।
इत आवत रूहें नहाए के, बैठ करत सिनगार ॥ ९

इत दाहिनी तरफ जो मंदिर, गिनती बारे हजार ।
इन मंदिरों खेलें भूलवनी, हर मंदिर द्वार चार ।। १०
कर सिनगार इत खेलत, ए जो मंदिर हैं भूलवन ।
दौड़ें खेलें हँसें रूहें, देख अपनी आभा रोसन ।। ११
कै फिरते चबूतरे, फिरते मंदिर गृदवाए ।
थंभ तिन आगूं फिरते, बीच फिरता चौक सोभाए ।। १२
कै चौखूंने चबूतरे, चारों तरफों मंदर ।
थंभ फिरते चारों तरफों, ए सोभा अति सुंदर ।। १३
कै चौखूंने चबूतरे, मंदिर आठों हार ।
चली चार गलियां चौक थें, हार आठ थंभ गली बार ।। १४
कही एक ठौर के चौक की, जित बैठत धनी आए ।
चौक चबूतरे इन भोम के, कै जुगत क्यों कही जाए ।। १५
ऊपर थंभ झलकत, और तले भोम झलकार ।
सामग्री सब झलकत, और थंभ दिवालों द्वार ।। १६
क्यों कहूँ हिसाब मंदिरन को, दिवालां चौक थंभ कै लाख ।
अमोल अतोल अन गिनती, कछू कह्यो न जाए मुख भाख ।। १७
ए सुख इन मंदिरन में, वाही सरूपों सुध ।
विध बिध बिलास इन धाम को, कहा कहे जुबां इन बुध ।। १८
जो वस्त जिन मिसल की, सोए बनी ठौर तित ।
सेज्या संदूक सिघासन, कहूँ केती कै जुगत ।। १९
कै जुगतें कै जिनसें, कै सामग्री सनंध ।
क्यों करूँ बरनन धाम को, ए झूठी देह मत मंद ।। २०
कै बेली एक दिवाल में, कै बेल फूल तिन पात ।
तिन पात पात कै नंग हैं, एक नंग रंग कह्यो न जात ।। २१
पात पात को देख के, हँसत बेल संग बेल ।
सैंन करें पंखी पंखी सों, जानों दौड़ करसी अब केल ।। २२

फूल फूल कै पांखड़ी, तिन हर पांखड़ी कै नंग ।
नंग देख नंग हँसत, फूल फूल के संग ॥ २३

अपनी अपनी जात ले, ठाढ़े हैं सकल ।
करने खुसाल धनीयको, करत हैं अति बल ॥ २४

त्यों त्यों जोत बढ़त है, ज्यों ज्यों देखें *नूर—जमाल ।
नाचत हरखत हँसत, देख धनी को खुसाल ॥ २५

करें खुसाल धनीय को, होंए आप खुसाली हाल ।
ए सोभा इन मुख क्यों कहूँ, ए देखे सब मछराल[1] ॥ २६

कै पसू पंखी जवेरन के, कै रंग विरंग कै विध ।
जानों के खेल पर सब खड़े, ए क्यों कही जाए सनंध[2] ॥ २७

होत कछू पड़ताल पांउं से, बोलें सब स्वर अपनी बान ।
पसू पंखी देखे बोलते, सब आप अपनी तान ॥ २८

कछू थोड़े ही पड़ताल से, धाम सब्द धमकार[3] ।
बोलें पसू पंखी बानी नई नई, जुबां जुदी जुदी अनेक अपार ॥ २९

जिमी चेतन बन चेतन, पसू पंखी सुध बुध ।
थिर चर सबे चेतन, याकी सोभा है कै विध ॥ ३०

तो कह्या थावर[4] चेतन, अपनी अपनी मिसल[5] ।
ए अंतर आंखें खुले पाइए, पर आतम सुख नेहेचल ॥ ३१

एक थंभ कै चित्रामन[6], हर चित्रामन कै नकस ।
नकस नकस कै पांखड़ी, जो देखों सोई सरस[7] ॥ ३२

तिन हर पांखड़ी कै कांगरी, हर कांगरी कै नंग ।
एक नंग को बरनन ना होवही, तो सारे थंभ को क्यों कहूँ रंग ॥ ३३

मोर मैना मुरग बांदर, कैं जुदी जुदी सब जुबान ।
नेक सब्द उठे भोम का, बोलें आप अपनी बान ॥ ३४

---

१. मस्ती से भरे । २. प्रदर्शन । ३. गूंज, ध्वनि । ४. वनस्पति, अचल । ५. प्रकार । ६. चित्रकारी । ७. उत्तम ।

एक सब्द के उठते, उठें सब्द अनेक ।
पसू पंखी जो चित्रामन के, कै बिध बोलें बिवेक ।। ३५

कै जुदे जुदे रंगों पुतली, कै बने चित्रामन ।
कै विध खेल जो खेलहीं, मुख मीठी बान रोसन ।। ३६

सोभी खेल बोल स्वर उठत, रंग रस होत रमन[1] ।
सोभा सुंदरता इनकी, केहे न सकों मुख इन ।। ३७

चित्रामन सारे चेतन, सब लिए खड़े गुमान ।
जोत लरत है जोत सों, कोई सके न काहूं भान[2] ।। ३८

करे जोत लड़ाई जोत सों, तेज तेज के संग ।
किरन किरन सों लड़त है, आठों जाम अभंग ।। ३९

नूर नूर जहूर जहूर सों, करत सफ[3] जंग[4] दोए ।
एक दूजे के सनमुख, ठेल न सके कोए ।। ४०

जंग करत अंगों अंगें, साथ नंग के नंग ।
रंग सों रंग लड़त हैं, तरंग संग तरंग ।। ४१

एक रंग को नंग कहावही, तामें कै रंग उठत ।
ताको एक रंग कह्यो न जावही, आगे कहा कहूँ विध इत ।। ४२

जित देखूं तित सूरमें[5], एक दूजे थें अधिक देखाए ।
कै ऊपर तले कै बीच में, याको जुध न समाए ।। ४३

तेज जोत उद्योत आकास लों, किरना न काहूँ अटकाए ।
देख देख जंग निरने कियो, कोई पीछा न पांउं फिराए ।। ४४

चलते हलते धाम में, सबे होत चलवन ।
कै कोट जुबां इत क्या कहे, कै बिध थंभ, दिवालन ।। ४५

एक सरूप के नख की, सोभा बरनी न जाए ।
देख देख के देखिए, तो नेत्र क्योंए न त्रिपताए[6] ।। ४६

---

१. खेल । २. खंडित । ३. फौज की कतार । ४. लड़ाई । ५. बहादुर । ६. तृप्त होवें ।

तो सारे सरूप की क्यों कहूँ, और क्यों कहूँ इनों के खेल ।
बन बेली पसू पंखी, माहें करें रंग रस केल ।। ४७

जात न कही एक सरूप की, अति सोभा सुंदर मुख ।
तेज जोत रंग क्यों कहूँ, ए तो साख्यातों[1] के सुख ।। ४८

सोभा जाए ना कही बृक्षपात की, तो क्यों कहूँ फल फूल वास ।
क्यों होए बरनन सारे बृक्ष को, ए तो सुख साथ को उलास ।। ४९

जो एता भी कह्या न जावही, तो क्यों कहूँ थंभ चित्राम ।
पर आतम हमारियां, ए तिनके सुख आराम ।। ५०

एक थंभ की एह विध कही, ऐसे कै थंभ दिवालें द्वार ।
फेर देखों एक भोम को, तो अतंत बड़ो विस्तार ।। ५१

पार नहीं थंभन को, नहीं दिवालों पार ।
ना कछू पार सीढ़ियन को, ना पार कमाड़ी द्वार ।। ५२

नवों भोमका तुम साथ जी, कर देखो आतम विचार ।
क्यों आवे जुबां इन अकलें, ए जो अपारै अपार ।। ५३

चित्रामन एक थंभ की, क्यों कहूँ केते रंग ।
बन बेली फूल पात को, जुदी जुदी जिनसों नंग ।। ५४

पसु पंखी हाथ पांउं नैन के, कै विध केस परन ।
कै खेल पुतलियन के, कै वस्तर कै भूखन ।। ५५

कै बिध सोभा भोम की, कै रङ्ग नङ्ग नकस अनेक ।
कै ठौर अलेखे जड़ित में, जो देखों सोई नेक से नेक ।। ५६

ए कही न जाए एक जिनस, सो जिनस अखंड अलेखे ।
सत सरूप सुख लेत हैं, देख देख के देखें ।। ५७

अति सोभा सुंदर ऊपर की, कै नकस बेल फूल ।
कै जिनसें कहा कहूँ, होत पर आतम सनकूल ।। ५८

---

१. साक्षात्कार ।

कै जिनस जुगत थंभन की, कै जिनसें जुगत दिवाल ।
कै जिनसें द्वार क्यों कहूँ, ए जो जिनस जुगत पड़साल ॥ ५९
कै जिनसें जुगत सीढ़ियां, कैं जुगतें जिनसें मंदर ।
कै जिनस झरोखे जालियां, कै जिनस जुगत अंदर ॥ ६०
सामग्री कैं सनंधें, कै जिनसें सेज्या सिंघासन ।
कै सनंधें चौकी संदूकें, कै विध भरे भूखन ॥ ६१
कै जिनसों वस्तर भरे, कै विध विध के विवेक ।
वस्तर भूखन किन विध कहूँ, कै विध जुगत अनेक ॥ ६२
कै विध प्याले सीसे सीकियां, कै डब्बे तबके दिवाल ।
सोभित सुंदर मंदिरन में, कै लटकत रंग रसाल ॥ ६३
कै जुगतें हिंडोलों मंदिरों, कै जंजीरां झलकत ।
माहें डब्बे पुतलियां झनझनें, कै विध झूलत बाजत ॥ ६४
कै मिलावे साथ के, सुंदर झरोखे झाँकत ।
सोभा देखत बन की, मोहोल इन समे सोभित ॥ ६५
दौड़त खेलत सखियाँ, एक साम सामी आवत ।
हांसी रमूज[1] एक दूजोसों, अरस परस ल्यावत ॥ ६६
नवों भोम के मन्दिरों, माहें सखियां खेल करत ।
चारो जाम[2] हांस विलास में, रंग रस दिन भरत[3] ॥ ६७
झरोखे नवों भोम के, मिल मिल बैठत जाए ।
निस दिन हेत प्रीत चित्तसों, मन वांछित[4] सुख पाए ॥ ६८
विध विध के सुख बन में, सैयां खेलें झरोखों माँहि ।
बाउ ठंढा प्रेमल गरमीय में, सुख लेवें सीतल छांहि ॥ ६९
सुख बरसाती और विध, बीज चमके घटा चौफेर ।
सेहेरां गरजत बूंदें बरसत, घटा[5] टोप लिया बन घेर ॥ ७०

१. भेद भरी बातें । २. पहर । ३. व्यतीत होता है । ४. इच्छा हुआ । ५. घनघोर ।

ज्यों ज्यों अंबर गाजत, मोर कोयल करें टहुँकार ।
भमरा तिमरा गान गुंजत, स्वर मीठे पंखी मलार ॥ ७१

सीत कालें सुख धूप को, पहेलें पोहोंचत झरोखों आए ।
इत आराम घड़ी दोए तीन का, प्रभात समे सुखदाए ॥ ७२

दौड़ें कूदें सखियां ठेकत, कै अंग अटपटी चाल ।
मटके चटके पांउ लटके, अंग मरोरत मुख मछराल[1] ॥ ७३

जुदे जुदे जुत्थों प्रेम रस, अलबेलियां[2] अति अंग ।
हँसत आवत धनी के चरनों, रस भरियां अंग उमंग ॥ ७४

कै हाथों फिरावत छड़ियां, कै हाथों फिरावत फूल ।
कै आवत गेंद उछालती, कै आवत हैं इन सूल[3] ॥ ७५

सब आए आए चरनों लगें, एक एक आगूं दूजी के ।
ए बड़ा सुखकारी समया, सोभा लेत इतं ए ॥ ७६

बात बड़ी देख देखिए, प्रेम प्रघल भर पूर ।
प्रेम अंग कह्यो न जावही, सूरों में सूर सूर ॥ ७७

रंग नंग थंभ न जाएं कहे, तो क्यों कही जाएं दिवालें द्वार ।
तो समूह की जुबां क्या कहे, जाको वार न पार सुमार ॥ ७८

रंग नंग नकस अन गिनती, कह्यो न जाए सुमार ।
ज्यों बट बीज माहें खड़ा, कर देखो आतम विचार ॥ ७९

कै दिवालें कै चौक थंभ, कै मन्दिर कमाड़ी द्वार ।
एक भोम को वरनन ना केहे सकों, एतो नवों भोम विस्तार ॥ ८०

दसमी भोम चांदनी, ऊपर कांगरी जोत ।
तेज पुंज इन नूर को, जानों आकास सब उद्योत ॥ ८१

हेम जवेर रंग रेसम, केहे केहे कहूँ मुख जेता ।
नूर तेज जोत झलकत, अकल आवे जुबां में एता ॥ ८२

---

१. गर्व भरे । २. अनूठी, मन मौजी । ३. तरह ।

*'महामत' कहें सुनो साथजी, बुध जुबां करे बरनन ।
ले सको सो लीजियो, ए नेक कह्या तुम कारन ॥ ८३

॥ प्रकरण ॥ ३८ ॥ चौपाई ॥ २२६२ ॥

## प्रेम को अंग वरनन

प्रेम देखाऊँ तुमको साथजी, जित अपना मूल वतन ।
प्रेम धनी को अंग है, कहूँ पाइए ना या बिन ॥ १

प्रेम नाम दुनियां मिने, *ब्रह्म—सृष्टी ल्याईं इत ।
ए प्रेम इनों जाहेर किया, ना तो प्रेम दुनी में कित ॥ २

ए दुनियां पूजे त्रिगुन को, करके परमेश्वर ।
सास्त्र अरथ ऐसा लेत है, कहे कोई नहीं इन ऊपर ॥ ३

*सुक *व्यास कहें भागवत में, प्रेम ना त्रिगुन पास ।
प्रेम बसत ब्रह्म सृष्टि में, जो खेले सरूप *वृज *रास ॥ ४

तो नवधा से न्यारा कह्या, चौदे भवन में नांहि ।
सो प्रेम कहां से पाइए, जो रहत गोपिका मांहि ॥ ५

नाम खुदाएका कुरान में, लिख्या है आसक ।
पढ़े इस्क औरों में तो कहें, जो हुए नहीं बेसक ॥ ६

आसक नाम अल्लाह का, तो लिख्या इप्तदाए[1] ।
इस्क न पाइए और कहूं, बिना एक खुदाए ॥ ७

पढ़े तब पावें इस्क को, जब खुले माएने मगज[2] ।
इस्क बिना करें बंदगी, कहें हम टालत हैं करज ॥ ८

मगज न पाया माएना, दुनी पढ़े कतेब वेद ।
प्रेम दुनी में तो कहे, जो पावत नाहीं भेद ॥ ९

प्रेम *ब्रह्म दोऊ एक हैं, सो दोऊ दुनी में नांहि ।
पढ़े दोऊ बतावें दुनी में, जो समझत ना सास्त्रों मांहि ॥ १०

---

१. गुरू से । २. भेद ।

तो न्यारा कह्या सब्द थें, प्रेम ना मिने त्रैगुन ।
के कोट ब्रह्मांडों न पाइए, प्रेम धाम धनी बिन ॥ ११

प्रेम सब्दातीत तो कह्या, जो हुआ ब्रह्म के घर ।
सो तो निराकार के पार के पार, सो इत दुनी पावे क्यों कर ॥ १२

प्रेम बताऊँ ब्रह्म सृष्टि का, पेहेले देखो धाम बरनन ।
पीछे प्रेम बताऊँ ब्रह्म सृष्टि का, जो धाम धनी के तन ॥ १३

क्यों न होए प्रेम इन को, जिन सिर नूर जमाल ।
कै कोट ब्रह्मांडों न पाइए, इनका औरै हाल ॥ १४

क्यों न होए प्रेम इन को, धनी *अक्षरातीत जिन सिर ।
ब्रह्म सृष्टि बिना न पाइए, देखो कोट ब्रह्मांडों फेर फेर ॥ १५

क्यों न होए प्रेम इन को, जाको धनी राखत रूख ।
धाम मंदिर मोहोलन में, धनी देत सेज्या पर सुख ॥ १६

क्यों न होए प्रेम इन को, सोहागनियां बड़ भाग ।
क्यों कहूँ इन रूहन कीं, जाए देत धनी सोहाग ॥ १७

क्यों न होए प्रेम इन को, जाके घर एह धाम ।
*स्याम *स्यामाजी साथ में, जाको इत विश्राम ॥ १८

क्यों न होए प्रेम इन को, जो इनहीं में रहे हिल मिल ।
सकल अंग सुख देत हैं, धाम धनी के दिल ॥ १९

क्यों न होंए प्रेम इन को, जो रहे इन मोहोल मंदर ।
दिल दे बिहार करत हैं, ले दिल धनी अंदर ॥ २०

क्यों न होए प्रेम इन को, जाके ए वस्तर भूषन ।
साजत हैं सबों अंगों, धाम धनी कारन ॥ २१

क्यों न होए प्रेम इन को, जाके ए सोभा सिनगार ।
सबों अंगों सुख धनी को, निस दिन लेत समार ॥ २२

क्यों न होए प्रेम इनकों, जाको इन धनी सों बिहार ।
निस दिन केल करत हैं, सब अंगों सुखकार ॥ २३

क्यों न होए प्रेम इनको, जो निरखत धाम धनी ।
रात दिन सुख लेत हैं, सब अंगों आप अपनी ॥ २४
क्यों न होंए प्रेम इनको, जो धनी की सैंना लेत ।
नैनों नैन मिलाए के, सामी इसारत देत ॥ २५
क्यों न होए प्रेम इनको, जो धाम धनी अरधंग ।
अहि निस अनभव होत हैं, इन पीउकी सेज सुरंग ॥ २६
क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन मेले में बैंठत ।
अरस परस रंग अहेनिस, नए नए खेल करत ॥ २७
क्यों न होए प्रेम इनको, जाको ए धनी सरूप ।
रात दिन सुख लेत हैं, जाके सब अंग अनूप ॥ २८
क्यों न होए प्रेम इनको, जाको निस दिन एही रमन ।
सब अंगों आनंद होत हैं, मिलावे धनी इन ॥ २९
क्यों न होए प्रेम इन को, जो इन धनी की गलतान ।
निस दिन धनी खेलावत, विध विध के देत मान ॥ ३०
क्यों न होए प्रेम इनको, जो लेत धनी को सुख ।
आठो जाम सेवा मिने, सदा खड़े सनमुख ॥ ३१
क्यों न होए प्रेम इनको, जाको इन साथ में रस रंग ।
निस दिन बिहार करत हैं, धाम धनी के संग ॥ ३२
क्यों न होए प्रेम इनको, जो रहे इन साथ के माँहि ।
निस दिन आराम पीउ का, न्यारे निमख न होवे काँहि ॥ ३३
क्यों न होए प्रेम इनकों, जो धनी को लेवें माहें नैन ।
न्यारे निमख न करें, निस दिन एही सुख चैंन ॥ ३४
क्यों न होए प्रेम इनको, जो निरखे धनी के अंग ।
पलक ना पीछे फेरत, आठों जाम उछरंग ॥ ३५
क्यों न होए प्रेम इनको, जाको याही साथ में खेल ।
मन्दिर या मोहोलन में, पीउ सों रमन रंग रेल ॥ ३६

क्यों न होए प्रेम इनको, जाको मिलाप इन घर ।
बिहार करत अंग उछरंग, धनी सों बिध बिध कर ॥ ३७

क्यों न होए प्रेम इनको, जो बैठत पीउ के पास ।
निस दिन रामत रमूज में, होत न वृथा एक स्वांस ॥ ३८

क्यों न होए प्रेम इनको, हांस बिनोद में दिन जाए ।
सेज्या संग इन धनीके, रस रंग रैन बिहाए ॥ ३९

क्यों न होए प्रेम इनको, जो धाम धनी के तन ।
इन मोहोलों में इन पीउ संग, हींचत हिंडोलन ॥ ४०

क्यों न होए प्रेम इनको, जो झांकत झरोखे इन ।
झूलत हैं इन पीउ संग, बीच इन हिंडोलन ॥ ४१

क्यों न होए प्रेम इनको, जो करें इन हिंडोलों बिहार ।
झूलत बोलें झनझनें, यों मंदिर होत झनकार ॥ ४२

क्यों न होए प्रेम इनको, ऊपर झूलत हैं यों कर ।
अरस परस इन धनी सों, दोऊ बैठत बांध नजर ॥ ४३

क्यों न होए प्रेम इनको, जो लें इन हिंडोलों सुख ।
झलकत भूषन झूलते, बैठत हैं सनमुख ॥ ४४

क्यों न होए प्रेम इनको, जो लें झूलते रंग रस ।
उछरंग अंग न मावही, अंक भर अरस परस ॥ ४५

क्यों न होए प्रेम इन को, झूलत होंए मगन ।
फेर फेर प्रेम पूरन, उमंग अंग सबन ॥ ४६

क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन हिंडोलों झूलत ।
इन समे सोभा मन्दिरों, कड़े हिंडोले खटकत ॥ ४७

क्यों न होए प्रेम इनको, जो पौढत इन पीउ संग ।
अरस परस दोऊ हींचत, अंग लगाय के अंग ॥ ४८

क्यों न होए प्रेम इनको, जो लेत इतकी खुसवोए ।
सिनगार कर सेज्या पर, केल करें संग दोए ॥ ४९

क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन मोहोलों में नेहेचल ।
दोऊ हिंडोलों हींचत, करें दिल चाह्या मिल ॥ ५०

क्यों न होए प्रेम इनको, जो लेवें इन हिंडोलों सुख ।
अखंड इन मोहोलन में, लेवें सदा सनमुख ॥ ५१

क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन हिंडोलों पौढ़त ।
मन चाहे इन मन्दिरों, अखंड केल करत ॥ ५२

क्यों न होए प्रेम इनको, जो खेलत इन मोहोलन ।
हिंडोलों या पलंगों, सुख लेवें चाहे मन ॥ ५३

क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन मोहोलों या पलंग ।
चित्त चाहे सुख अनभवी, इन धनी के संग ॥ ५४

क्यों न होए प्रेम इनको, जाको देखें धनी नजर ।
प्रेम प्याले पीवत, धनी देत भर भर ॥ ५५

क्यों न होए प्रेम इनको, सेज समारें हेत कर ।
चारों जाम इन धनी को, राखत हैं उर पर ॥ ५६

क्यों न होए प्रेम इनको, जो फूलन सेज बिछाए ।
चारों पोहोर रंग रहस में, केलै करते जाए ॥ ५७

क्यों न होए प्रेम इनको, जाको धनी निरखत नैन भर ।
आठों जाम अंग उनके, उलसत उमंग कर ॥ ५८

क्यों न होय प्रेम इनको, रंग रची सेज समार ।
चारों जाम पीउ सब अंगों, देत सुख अपार ॥ ५९

क्यों न होए प्रेम इनको, जो पीउसों पीवें प्रेम रस ।
कर साज सबों अंगों, पीउसों अरस परस ॥ ६०

क्यों न होय प्रेम इनकों, जो पीउ के सुनें बंके बैंन ।
याके आठों जाम हिरदें मिने, चुभ रहत पीउ के चैन ॥ ६१

क्यों न होए प्रेम इनको, जाके निरखें धनी भूखन ।
याही नजर अंगना अंग में, चुभ रहत निस दिन ॥ ६२

क्यों न होए प्रेम इनको, जाको पीउ एती दिलासा देत ।
सामियों तो अंग इस्क के, कोट गुना कर लेत ।। ६३

क्यों न होए प्रेम इनको, जाके निरखें धनी बस्तर ।
सो रूहें अपना अंग हैं, लेत खैंच नजर ।। ६४

क्यों न होए प्रेम इनको, धनी बरसत निज नजर ।
ताके अंग रोम रोम में, प्रेम आवत भर भर ।। ६५

क्यों न होए प्रेम इनको, धनीसों नैनों नैन मिलाए ।
ताको इन सरूप बिना, पल पट दै न जाए ।। ६६

क्यों न होय प्रेम इनको, जाके धनी निरखें नैन ।
आठों जाम याके अंग में, चुभ रहत बंके बैन ।। ६७

क्यों न होए प्रेम इनको, जो पीउकी निरखें बंकी पाग ।
निस दिन नजर न छूटही, पीउसों करें रंग राग ।। ६८

क्यों न होए प्रेम इनको, जो लेत पिआ को दिल ।
ए निस दिन पिएँ सुधा रस, पीउसों प्याले मिल ।। ६९

क्यों न होए प्रेम इनको, जाके ए मोहोल ए सेज ।
लें सोहाग सबों अंगों, जिन पर धनी को हेज ।। ७०

क्यों न होए प्रेम इनको, जो धनी को रिझावत ।
आठों पोहोर सबों अंगों, अरस परस रंग रमत ।। ७१

क्यों न होए प्रेम इनको, जाको धनी सों अन्तर नाहिं ।
अरस परस एक भए, झीलें प्रेम रस माहिं ।। ७२

क्यों न होए प्रेम इन को, जो पीउ सों करें एकांत ।
आठो जाम इन सरूप सों, सुख लेत भांत भांत ।। ७३

क्यों न होए प्रेम इन को, जो पीउ को निरखें नीके कर ।
आठो पोहोर इनों पर, धनी की अमी नजर ।। ७४

क्यों न होए प्रेम इन को, जिनका एह चलन ।
आठो पोहोर इन धनी सों, रस भर रंग रमन ।। ७५

क्यों न होए प्रेम इन को, प्रेम बासा इन ठौर ।
एही कहे प्रेम के पात्र, प्रेम नहीं कहूँ और ॥ ७६

क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन बन में करें बिलास ।
निस दिन इन धनीय सों, करत बिनोद के हांस ॥ ७७

क्यों न होए प्रेम इनको, जो बसत धाम बन मांहि ।
जो बन हमेसा कायम, एक पात गिरे कबूं नांहि ॥ ७८

क्यों न होए प्रेम इनको, जो सदा खेलत इन बन ।
एक पात की जोत देखिए, करें अम्बर जिमी रोसन ॥ ७९

क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन बन में करें बिलास ।
सोहागिन अंग धनी धाम की, प्रेम पुंज नूर प्रकास ॥ ८०

क्यों न होए प्रेम इनको, जो करें धाम धनी सों केल ।
इन बन इन धनीय सों, रमन अहे—निस खेल ॥ ८१

क्यों न होए प्रेम इनको, जाको इन बन में है हांस ।
कमी कबूं न होवही, सदा फल फूल बास ॥ ८२

क्यों न होए प्रेम इनको, जो इन बन को रस लेत ।
फल फूल सुगंध बेलियाँ, बाउ सीतल सुख देत ॥ ८३

'महामत' कहें मेहेबूबजी, अब दीजे पट उड़ाए ।
नैना खोल के अंक भर, लीजे कंठ लगाए ॥ ८४

॥ प्रकरण ॥ ३९ ॥ चौपाई ॥ २३४६ ॥

धाम की रामतें 'चरचरी'

एक चित्रामन दिवालें बन, चढ़िए तिन पर धाए ।
एक चुटकी लेके भागी ताली देके, कहे दौड़ मिलियो आए ॥ १

एक गली घर में दे परकरसें, उमंग अंग न माए ।
एक का कपड़ा धाए के पकड़्या, खैंच चली चित्त चाहे ॥ २

छज्जे चढ़ एक दूजी देवे ठेक, यों कै ठेकतियां जाए ।
एक दोऊ पांउ ठेकें खेल बिसेकें, जानों लगत न छज्जें पाए ॥ ३

सखियां चढ़ धाए छज्जें न माए, खेल रच्यो इन दाए ।
एक दिवालों घोड़े तित चढ़ दौड़ें, नए नए खेल उपाए ॥ ४

एक दूजी को ठेले तीसरी हड़सेले[१], यों पड़ियां तीनों गिर ।
कै और आए गिरें उपरा ऊपरें, उठ न सकें क्योंए कर ॥ ५

एक दौड़ियां जाए दई हांसिएँ गिराए, हुओ ढेर उपरा ऊपर ।
एक खेलते हारी जाए पड़ी न्यारी, खेल होत इन पर ॥ ६

होवे इन बिध हांसी अंग उलासी, सूल[२] आवत पेट भर ।
एक सूल भर पेटें इन बिध लेटें, ए देखो खेल खबर ॥ ७

एक लेटतियां जाए सूल उभराए, उठावें कर पकर ।
आई तिन हांसीं मावे न स्वांसी, गिरी पकरे कर ॥ ८

देखो इनको सूल मुख सनकूल[३], दरद न माए अन्दर ।
सखियां बेसुमार हुओ अम्बार[४], देखो नीके नजर ॥ ९

*स्याम *स्यामाजी आए देखो खेल बनाए, सब उठियां हँसकर ।
खेलें *'महामती देखलावें *इंद्रावती, खोले पट अन्तर ॥ १०

॥ प्रकरण ॥ ४० ॥ चौपाई ॥ २३५६ ॥

## रामत दूसरी

एक अंग अभिलाखी देवें साखी, कहे वचन विसाल ।
एक कर कंठ बांहें मिल लपटाए, खेलतियां करें ख्याल ॥ १

एक आवें लटकतियां बोलें मीठी बतियां, चलें चमकती चाल ।
एक आवें मलपतियां रंग रस रतियां, रहें आठो जाम खुसाल ॥ २

एक आवें नाचतियां भमरी फिरतियां, दे भूखन पांउं पड़ताल ।
एक गावती आवें तान मिलावें, कोई स्वर पूरें तिन नाल[५] ॥ ३

एक माहें धाम निरखें[६] चित्राम, देखतियां थंभ दिवाल ।
एक निरखें नंग नूर भूखन जहूर, माहें देखें अपनी मिसाल[७] ॥ ४

---

१. धकेलें । २. दर्द । ३. प्रसन्नता । ढेर । ४. ५. साथ में । ६. देखें । ७. उदाहरण ।

एक मिलकर दौड़ें बांधके होड़ें, लंबी जहां पड़साल ।
एक पीउको देखें सुख विसेखें, कहें आनंद कमाल[1] ॥ ५
एक बेन रसालें गावें गुन लालें, सोभित मद मछरालो ।
एक बाजे बजावें मिलकर गावें, सुंदर कंठ रसाल[2] ॥ ६
एक पूरें स्वर सारे हुँनर, छेक बाले तिन ताल ।
एक पीउसों हँस हँस बातें करें रंग रस, करें होए निहाल[3] ॥ ७
एक देखें धनी रूप अदभुत सरूप, कहा कहूं नूरजमाल ।
एक पीउसों बातें करें अख्यातें, रंग रस भरियां रसाल ॥ ८
एक रस रीत उपजावें प्रीत, देखावें अपनों हाल ।
एक अंग अलबेली आवें अकेली, हाथ में फूल गुलाल ॥ ९
एक अटपटी हालें तिरछी चालें, हाथमें छड़ियां लाल ।
एक नेत्र अनियाले प्रेम रसाले, रंग लिए *नूरजमाल ॥ १०
कहें *महामती इन रंग रती, उठी सो हँस दे ताल ॥ ११

॥ प्रकरण ॥ ४१ ॥ चौपाई ॥ २३६७ ॥

## बड़ी रामत

कहियत नेहेंचल नाम, सदा सुखदाई धाम ।
*साथजी *स्यामाजी *स्याम, विलसत आठों जामरी ॥ १
नित इत विश्राम, पूरन है प्रेम काम ।
हिरदें न रहे हाम, इस्क आरामरी ॥ २
आराम तो इन बिध लेवें, सबे भरीं अहंकार ।
पूरन हित पीउसों चित्त, जिनको नही सुमार ॥ ३
एक जुत्थ सहेली, मिल बैठी भेली, सुख कहत न आवे पार ।
कोई छज्जे ऊपर, सखियां मिलकर, कहें पीउ को विहार ॥ ४

१. प्रशंसनीय । २. सुरीला । ३. तृप्त ।

एक लंबे हिडोलें, मिल बैठी झूलें, लेवें सीतल सुगंध बयार ।
एक झरोखे माँहि, मिल बैठत जाँहि, करें रती रहस विचार ॥ ५

एक पीउ मद मतियां, आवें ठेकतियां, कंठ खलकते हार ।
एक जुदी जुदी आवें, स्वांत देखलावें, करें नूर रोसन झलकार ॥ ६

एक बांहें सों बांहें, संग मिलाए, आवें लिए अहंकार ।
एक दूजी के साथें, लिए कंठ वाथें, भूखन उद्योतकार ॥ ७

एक कंठ हाथ छोड़ें, आगूं दौड़ें, कहें आइयो मुझ लार ।
एक चढ़े गोखें, झांकत झरोखें, देखत बन विस्तार ॥ ८

एक बैठत पलंगें, पीउजीके संगें, खेलत प्रेम खुमार[1] ।
आप अपने अंगें, करत हैं जंगें, कोई न देवे हार ॥ ९

एक अंग अनंगे, भांत पतंगे, क्यों कहूँ ए मनुहार[2] ।
अति उछरगें, होत न भंगें, सत सुख संग भरतार ॥ १०

एक प्रेम तरंगें, मद मछरंगें, बांहोंड़ी कंठ आधार ।
एक अंग मकरंदें[3], काढ़त निकंदें[4], आवत नाहीं पार ॥ ११

बादलिया आवें, रङ्ग देखलावें, करें मोर कोयल टहुँकार ।
अति घन गाजें, अम्बर विराजे, सोभित रुत मलार ॥ १२

रुचिया मेह, बढ़त सनेह, ए समया अति सार ।
एक केहे सखी सीढ़ियां, दौड़ के चढ़ियां, होत सकल भोम झनकार ॥ १३

एक साम सामी आवें, अंग न मिलावें, कहा कहूँ चंचल आकार ।
एक दौड़ के धसियां, बनमें निकसियां, मस्त हुइयां देख मलार ॥ १४

एक आइयां सघन में, धाए चढ़ी बन में, खेल करें अपार ।
एक झूलें डारी चढ़के, और पकड़के, क्यों कहूँ खेल सुमार ॥ १५

एक भांत बांदर की, ठेक दे चढ़ती, करती रंग रसाल ।
एक दौड़ें पातों पर, करें चढ़ उतर, खेलत माहें खुसाल ॥ १६

---

१. नशा । २. प्रसन्नता । ३. काम देव । ४. मिल कर ।

एक ठेक देती, बनसें रेती, कहा कहूँ इनको हाल ।
एक आइयां दौड़ रेती, इतथें जेती, खेलें एक दूजीके नाल ॥ १७

एक जाए गड़ें रेती, निकस न सकतीं, देवें एक दूजीको ताल ।
एक काढ़ें घसीटें, और ऊपर लेटें, कहा कहूँ इनकी चाल ॥ १८

खेलते दिन जाए, हांसी न समाए, प्रेम पिएँ संग लाल ।
एक ठेक देतियां, रेती में गड़तियां, खेल होत कमाल ॥ १९

केटलीक सखी संग, निकसी रमती रंग, रूप देखावें झुंझार ।
एक दौड़के जावें, हौज में झंपावें, एक ले दूजी लार ॥ २०

एक आवें दौड़ कर, गिरें उपरा ऊपर, किन विध कहूँ ए रंग ।
एक लरें पानी सें, जुत्थ जुत्थ सें, देखो इनको जंग ॥ २१

पानी ऐसा उड़ावें, जानों अम्बर बरसावें, खेल करें न बीच में भंग ।
क्योंए न थकें, ऐसे अंग अरस के, आगूं सोहें पुतलियां नंग ॥ २२

एक खेल छोड़ें, दूजे पर दोड़ें, अंग न माए उछरंग ।
एक छिन में अरस परे, खेल जाए करें, इन विध अंग उमंग ॥ २३

परकरमा कर आवें, पलमें फिर आवें, आए कदमों लगें सब संग ।
कहें 'महामती', सब रंग रती, क्यों कहूँ प्रेम तरंग ॥ २४

॥ प्रकरण ॥ ४२ ॥ चौपाई ॥ २३९१ ॥

## सागरों रांग मोहोलात मानिक पहाड़

नूर कुंजी अगिन[१] मुसाफकी[२], कले[३] कुलफ[४] खोलत हकीकत ।
सुध पाइए सागर नूर पार की, हक मारफत[५] रूहों खिलवत ॥ १

नूर दखिन मुख सागर, नूर बाहेदत मुख नीर ।
पाइए मारफत मुसाफकी, अरस अंग असल सरीर ॥ २

नूर नैरित अंग उजले, सोभा सुंदर सागर खीर ।
हक इलम देखावे उरफान[६], पिएँ इस्क प्याले सूरधीर ॥ ३

---

१. अग्नि कोना । २. ज्ञान (धर्मग्रन्थ) । ३. चाबी, हिकमत । ४. (कुफल) ताला । ५. पहचान (विज्ञान) । ६. पहचानना ।

नूर दधि सागर सीतल, नूर पछिम अंग पूरन ।
ए सुख अतंत हमेसा, नूर वाहेदत पूर रोसन ॥ ४

नूर बाइब बल पूरन, नूर जहूर समन[१] सागर ।
परख पूरन सुख सुंदर, सब बिध नूर नजर ॥ ५

नूर मीठा मधु[२] उत्तर, सुख अतंत अंगों अंग ।
ए विध जाने रस रसना, उपजत इनके संग ॥ ६

नूर अमृत[३] सागर ईसान, सुख सीतल सुंदर ।
नूर नजर भर देखिए, सुख सब बाहेर अन्दर ॥ ७

नूर पूर सुख सागर, अतंत पूरव सुख दाए ।
ए सब रस सब विध सब सुख, नूर सब अंगों उपजाए ॥ ८

ए तरफ आठों नूर सागर, अंग आवत नूर मुतलक[४] ।
ए देखतहीं सुख सागर, ए सहूर इलम नूर हक ॥ ९

आठ तरफ जुदी जुदी जिमी, नूर एक से दूजी सरस ।
नूर बीच जिमी बीच सागर, जिमी सिफत न पार अरस ॥ १०

पार जिमी ना पार सागर, नूर पाइए न काहूँ इंतहाए[५] ।
नूर जिमी देखो नूर सागर, नूर अपार अरस गृदवाए ॥ ११

नूर पसू पंखी नूर में, जिमी जुदी जुदी नई सिफत ।
नई कहूँ हिसाब इतके, ए नूर खूबी हमेसा अतंत ॥ १२

पार न जिमी अरस को, पार ना पसू जानवर ।
पार नहीं बृक्ष बाग को, पार ना पहाड़ सागर ॥ १३

सब सुख एक एक चीज में, सबकी सिफत को नहीं पार ।
अरस पहाड़ या तिनका, सब देखेही पाइए बेसुमार ॥ १४

ए पाल आड़े जिमी सागर, नूर लगी रांग आसमान ।
इंतहाए नहीं गृद फिरवली, नूर सिफत कहा कहे जुबान ॥ १५

---

१. घृत (इश्क सागर) । २. शहद (बानी की मधुरता) । ३. सुधा रस (निसबत का सागर) ।
४. बिलकुल । ५. अन्त ।

नूर रांग तरफ जो देखिए, इंतहाए न कहूँ आवत ।
पार आवे जिन चीजको, तिनकी होए सिफत ॥ १६

इंतहाए नहीं जिन चीज को, ताकी सिफत न होए जुबांए ।
सहूर इत सो क्या करे, जो सिफत न सब्द माहिं ॥ १७

हक ल्याए हिसाब में, जो कहावे अरस अपार ।
सो अरस दिल मोमन का, ए किन बिध कहूँ सुमार ॥ १८

ऐसे ही सागरों रांग के, बारे हजार द्वार ।
और खूब खुसाली ज्यों खिड़कियाँ, कहूँ गिनती न आवे पार ॥ १९

यों अरस जिमी अपार के, सोभित गृदवाए द्वार ।
रूह के दिल से देख फेर, ज्यों तूं सुख पावे बेसुमार ॥ २०

आठ तरफ नूर जिमी के, तरफ आठ नूर सागर ।
ए गिन देख द्वार दिल अरस के, पार न आवे क्योंए कर ॥ २१

नूर पार जिमी और रांग की, जो फेर देख रूह दिल ।
कै पहाड़ मोहोल बाग नेहेरें, जिमी बराबर टेढ़ी न तिल ॥ २२

ज्यों फिरती थाल अरस उज्जल, योंही साफ सिफत बराबर ।
अरस जिमी कही नूर की, कहूँ गढ़ा न ऊँचो टेकर ॥ २३

पार नहीं बीच थाल के, गृदवाए ना चौड़ी तूल ।
मोहोल पहाड़ नेहेरें सरभर, मुख सिफत कहा कहे बोल ॥ २४

तो नूर रांग पार की क्यों कहूँ, जाको सुमार नहीं वार पार ।
वह मोमन देखें दिल अरस में, जो दिल अरस परवरदिगार ॥ २५

कै जातें नूर पंखियन की, कै जातें नूर जानवर ।
जैसा रंग नूर जिमी का, पसू पंखी रंग सरभर ॥ २६

नए नए रंगों नूर बाग बन, इंतहाए नहीं वृक्ष नूर ।
ना इंतहाए नूर पसू पंखी, क्यों कहूँ इन अंग जहूर ॥ २७

नूर जिमी या तूल चौड़ी, इंतहाए न तरफ आवत ।
कहूँ जुबाँ अरस गिनती, अंग अरस के जानें सिफत ॥ २८

एक जिमी सिफत जो देखिए, तो जाए निकस नूर उमर ।
अपार जिमी इंतहाए सिफत, ए आवत नहीं क्योंए कर ॥ २९

नूर जिमी बराबर अरस की, कहूँ चढ़ती नहीं उतार ।
दूजी सोभा नूर रोसन, जिमी भरी अंबर झलकार ॥ ३०

कै रंग जिमी केती कहूँ, और कै रंग नूर दरखत ।
सोई जिमी रंग पसू पंखियों, कर तुहीं तुहीं जिकर करत ॥ ३१

ना गिनती नाम जो हक के, सो हर नामें करें जिकर ।
मुख चोंच सुंदर सोहनें, बोलें बानी मीठी सकर[1] ॥ ३२

नूर बाउ चलत बहु विध की, सुगंध सोहत सीतल ।
सब चीजें खुसबोए नूर पूर, जिमी मोहोल बन जल ॥ ३३

फल फूल बन पसू पंखी बेहेकत[2] कोई चीज न बिना खुसबोए[3] ।
सदा सुगंध सबें सुख दायक, याकी सिफत किन बिध होए ॥ ३४

नूर चीज सब चेतन आसक, बाए बादल बीज अम्बर ।
सब बिध स्वाद पूर पूरन, सुख जाए ना कह्यो क्योंए कर ॥ ३५

पार सोभा ना पार सागर, ना पार टापू ना इमारत ।
पार टापू ना मोहोल किनारें मोहोल, सोभा आसमान नूर झलकत ॥ ३६

अरस सूर कै एक मोहोल में, तैसे मोहोल टापू अपार किनार ।
एक मोहोल अम्बर कै बीच में, तो जुबां क्यों कहे गिनती सुमार ॥ ३७

जो कोई होसी अंग अरस की, और जागी होए हक इलम ।
तो कछू बोए आवे इन सहूर की, जो करे मदत हक हुकम ॥ ३८

पर जो स्वाद हक उरफान[4] में, सो केहे ना सके जुबां इन अंग ।
जो हक मेहेर कर देवहीं, तो प्याले पीजे हक हादी संग ॥ ३९

हक मेहेर बड़ी न्यामत,[5] रूह जिन छोड़े एह उमेद ॥
ए फल सब बंदगीय का, जो कहे मुतलक अरस भेद ॥ ४०

---

१. मिश्री । २. सुगन्धित । ३. सुगंध । ४. पहचान । ५. ईश्वरीय देन ।

जिन दिल हुआ अरस हक का, सोई लीजो इन अरस सहूर ।
कहे हक हुकम ऐ मोमनों, नूर पर नूर सिर नूर ॥ ४१

इन नूर रांग की रोसनी, क्यों कहूँ जुबां इन मुख ।
द्वार द्वारी कलस कंगूरे, ए लें हक हुकमें मोमन सुख ॥ ४२

दोए दोए गुरज बीच द्वार के, दो दो छोटी द्वारी के ।
ए छोटे बड़े मेहेराब जो, सोभा क्यों कहूँ सिफत ए ॥ ४३

सोभा देत देखाई आसमान में, ऊँची सीढ़ियों नहीं सुमार ।
चार चार आगूं द्वार चबूतरों, दो दो बन के रंग नहीं पार ॥ ४४

दोए मुनारों लगते, कै छातें चबूतरों पर ।
दोए बीच सीढ़ियां आगूं द्वार के, जुबां सिफत पोहोंचे क्यों कर ॥ ४५

वृक्ष बाग आगू सब चबूतरों, कैं जुदे जुदे बागों रंग बन ।
आगू देत खूबी इन द्वारने, बन आसमान कियो रोसन ॥ ४६

सब बागों सोभित रस्ते, कहूं घट बढ़ नाहीं हार ।
कै चौक मोहोल मन्दिरन के, कै गली चली बांध किनार ॥ ४७

लाल जिमी नूर लाल बन, सोभित पसू नूर लाल ।
लाल जानवर लाल पर, रंग फल फूल सब गुलाल ॥ ४८

नूर जरद जिमी जानवर, नूर पीले पसू जरद जोत ।
फल फूल पीले वृक्ष बेलियां, नूर पीला आकास उद्योत ॥ ४९

नीली जिमी नूर पाच की, नूर नीले पसू जानवर ।
नूर नीला आसमान जिमी, ए नूर खूबी कहूं क्यों कर ॥ ५०

सेत जिमी सेत पसू पंखी, नूर आकास उज्जल ।
उज्जल नंग नूर सबे, वृक्ष बेल सेत फूल फल ॥ ५१

नूर स्याम जिमी आसमान लग, नूर स्याम पसू पंखी नूर ।
फल फूल स्याम नूर बृख बेली, नूर पसू पंखी सब जहूर ॥ ५२

नूर जिमी आसमानी आसमान नूर, रंग पसू पंखी नूर आसमान ।
फल फूल बृख बेल सोई रंग, नूर सोभा जंग सके न भान ॥ ५३

दस दस रंग वृख बेल में, फल फूल रंग दस दस ।
रंग दस दस जिमी आकासें, नूर पसू पंखी याही रंग रस ॥ ५४

कै रंगों जिमी कै आकासें, पसू पंखी बन कै रंग ।
सब चीजों सोभा सब आसमान, सोभा नूर सबों में जंग ॥ ५५

अगिन ईसान लाल नूर, पीत नीर रंग दखिन ।
नैरित खीर नीला रंग, दधि सेत पछिम रोसन ॥ ५६

घृत वाइव बल स्याम रंग, रंग आसमानी मधु उत्तर ।
दस रंग अमृत ईसान, रस पूरब रंग सरभर ॥ ५७

ए साफ अगिन नूर उज्जल, दखिन नीर रंग लाल ।
नैरित खीर पीत रंग, दधि पछिम नीला कमाल ॥ ५८

रंग जिमी दिस सागर, एक एक दोए बीच जान ।
ले इस्क गिन अगिन से, ज्यों सब होए अरस पेहेचान ॥ ५९

नूर नीर खीर दधि सागर, घृत मधु एक ठौर ।
रस सब रस सागर, बिना मोमन न पावे कोई और ॥ ६०

दो दरिया बीच एक जिमी, दो जिमी बीच दरिया एक ।
यों आठ दरिया बीच आठ जिमी, गिन तरफ से इन बिवेक ॥ ६१

दरियाव जिमी परे रांग के, फिरते न आवे पार ।
देख जिमी या सागर, कहूँ गिनती न पाइए सुमार ॥ ६२

और कही जो बिध रांगकी, कलस कंगूरे बीच आसमान ।
द्वार द्वारी कही गिनती, ए क्यों होय सिफत बयान ॥ ६३

## मोहोल मानिक पहाड़

साथजी देखो मोहोल मानिक, जो कहे द्वार बारे हजार ।
सोभा सुंदरता इनकी, ए न आवे बीच सुमार ॥ ६४

एक देख्या मोहोल मानिक का, ताए बड़े द्वार बारे हजार ।
हिसाब न छोटे द्वारों का, सोभा सिफत न आवे पार ॥ ६५

ले जिमी से ऊपर मोहोल मानिक, कम ज्यादा कहूँ नाहिं ।
सरभर सोभा सब इमारतें, जल बन हिंडोले मोहोलों माहिं ॥ ६६

कै नेहेरें कै चादरें, कै फल फूल बन सोभित ।
ऊपर झरोखे सब बिध तालों, कहूँ गिनती न सोभा सिफत ॥ ६७

मानिक मोहोल रतन मए, झलकत जोत आकास ।
नूर पूरन पूर भरचा, रूह खोल देख नैन प्रकास ॥ ६८

मोहोल मध्य मानिक का, नूर पहाड़ मोहोल गृदवाए ।
बडे बड़े जोड़े छोटे छोटे, बराबर जुगत सोभाए ॥ ६९

चारों तरफों मोहोल बीच ताल, चारो तरफों हिंडोले ।
एक हिंडोले माहें झूलें, हक हादी रूहें भेले ॥ ७०

चारों तरफों ऐसे ही झूलें, हक हादी रूहें खेलत ।
*अरस—अजीम के बीच में, मोहोल अंबर जोत धरत ॥ ७१

बड़े बड़े पहाड़ मोहोल फिरते, बड़े बड़े के संग ।
छोटे छोटा जोत सों, करे नूर जोत सों जंग ॥ ७२

कै हजारों लाखों दिवालें, जंग करत आसमान ।
कै सागर मोहोलों माहें, गिनती नाहीं मान ॥ ७३

ऊपर मोहोल तले मोहोल, बीच मोहोल गृदवाए ।
इन बिध मोहोल भरचो अंबर, फेर विध कही न जाए ॥ ७४

पहाड़ थंभ जो पहाड़ थुनी, पहाड़ै मोहोल मंडान ।
कै मोहोल मोहोलों मिले, कहूँ जिमी न देखिए आसमान ॥ ७५

चौड़े देखे चारो तरफों, ऊँचे लग आसमान ।
ऐसे और मोहोल तो कहूँ, जो कोई होवे इन समान ॥ ७६

अंदर बाहेर किनार सब, देख सब ठौरों खूबी देत ।
ए सोभा साँच सोई देखेगा, जाको हक नजर में लेत ॥ ७७

पेहेली फिरती दिवाल फेर देखिए, तिन बीच मोहोल अनेक ।
जो जो खूबी देखिए, जानों एही नेकसों नेक ॥ ७८

एक हवेली चौरस, दूजा मोहोल गृदवाए ।
ए खूबी मोमन देखसी, नजरों आवसी ताए ।। ७९

अरस हौज दोऊ बीच में, मोहोल मानिक पुखराज ।
जेता नजीक हौज के, तासों मोहोल मानिक रहे विराज ।। ८०

ए चारों हुए दोरी बंध, सामी *अक्षर नूर सोभित ।
ए हक हुकम बोलावत, इत और न पोहोंचे सिफत ।। ८१

ए कह्या कौल थोड़े मिने, रूहें समझेंगी बोहोतात ।
दिल मोमन से ना निकसे, चुभ रेहेसी दिन रात ।। ८२

कहे बारे हजार मोहोल फिरते, कही हुकमें तिनकी बात ।
तिन हर मोहोलों बीच बीच में, बारे बारे हजार मोहोलात ।। ८३

अटक रहे थे इतहीं, बीच आवने मोमनों दिल ।
इन अरस रूहों वास्ते एता कह्या, बिचार करें सब मिल ।। ८४

जो मोमन किए हकें बेसक, सो लेंगे दिल बिचार ।
अरस दिल एही मोमनों, तो ल्याए बीच सुमार ।। ८५

आगे आए मिली इत नदियाँ, चक्राव ज्यों पानी चलत ।
तिन पीछे नदियाँ मोहोंल बनकी, जाए सागरों बीच मिलत ।। ८६

क्यों कर कहूँ मैं पौरियां, और क्यों कर कहूँ झरोखे ।
देख देख मैं देखिया, न आवे गिनती में ए ।। ८७

मैं गृद कही चौरस कही, पर कै हर भांत हवेली ।
जाके आवें ना मोहोंल सुमार में, तों क्यों जाए गिनी पौरी ।। ८८

जब हक याद जो आवही, तब रूह देख्या चाहे नजर ।
दिल अरस मारचा इन घावसे, सो ए मुरदा सहे क्यों कर ।। ८९

देखो '*महामत' मोमनों जागते, जो हक इलमें दिए जगाए ।
करे सो बातें हक अरसकी, तूं पी इस्क तिनों पिलाए ।। ९०

।। प्रकरण ।। ४३ ।। चौपाई ।। २४८१ ।।

प्रकरण तथा चौपाइयों की कुल संख्या—प्रकरण ४२४, चौपाई १३०३७

इति श्री महामति श्रीप्राणनाथ जी की 'तारतम बानी' का

ग्यारहवाँ ग्रन्थ

॥ 'परिक्रमा' संपूर्ण ॥

निजनाम श्री कृष्णजी, अनादि अक्षरातीत ।
सोतो अब जाहेर भए, सबबिध वतन सहित ॥

# ❋ सागर ❋

### श्री किताब आठों सागर मूल मिलावे के लिखे हैं

### सागर पेहेला नूर का

भोम[1] तलेकी क्यों कहूँ, विस्तार बड़ो है अत ।
नेक नेक निसान दिए *हादियों[2], मैं करूँ सोई सिफत[3] ॥ १

चौसठ थंभ चबूतरा, दरवाजे तखत वरनन ।
रूह मोमन होए सो देखियो, करके दिल रोसन ॥ २

मेराज[4] हुआ *महंमद पर, पोहोंच्या हक हजूर ।
सो साहेदी दई महंमदें, सो मोमन करें मजकूर[5] ॥ ३

सो रूहें अरस दरगाह की, कही महंमद बारे हजार ।
दे साहेदी गिरो महंमदी, जाको वतन नूर के पार ॥ ४

हुकम से अब केहेत हों, सुनियो मोमिन दिल दे ।
हक सहूरें विचारियो, हकें सोभा दई तुमें ए ॥ ५

हकें अरस किया दिल मोमन, सो मता आया हक दिल से ।
तुमें ऐसी बड़ाई हकें लिखी, हा हा मोमन गल ना गए इनमें ॥ ६

नूर सिफत द्वार सनमुख, और नूर द्वार पीछल ।
एक दाएँ बाएँ एक, हुआ बेवरा चारों मिल ॥ ७

---

१. मंजिल । २. सद्गुरू । ३. गुणानुवाद । ४. साक्षात्कार । ५. चर्चा ।

सोभित द्वार सनमुख का, नूर थंभ पाच के दोए ।
थंभ नीलवी दो इनों लगते, सोभा लेत अति सोए ॥ ८

इन सामी द्वार पीछल, थंभ दोए नीलवी के ।
दो थंभ जो इनों लगते, नूर पाच के थंभ ए ॥ ६

नूर द्वार थंभ दो मानिक, तिन पासे दो पुखराज ।
ए द्वार तरफ दांहिनी, रह्या नूर इत बिराज ॥ १०

तरफ बांईं द्वार पुखराजी, दो मानिक थंभ तिन पास ।
चार थंभ नूर सरभर, ए अदभुत नूर खूबी खास ॥ ११

नूर चारों पौरी बराबर, जो करत हैं झलकार ।
ए जुबाँ खूबी तो कहे, जो पाइए कहूं सुमार ॥ १२

थंभ बारे बारे चारो खाँचों, कहूं तिनका बेवरा कर ।
बारे नंग चार धात के, रंग जुदे जोत बराबर ॥ १३

नेक देखाए रंग अरस के, कै खूबी रंग अलेखे ।
रूह सहूर करे हक इलमें, हक देखाए देखे ॥ १४

असल पांच नाम रंग के, नीला पीला लाल सेत स्याम ।
एक एक रंग में कै रंग, सो क्यों कहे जाएं बिना नाम ॥ १५

देखो चौसठ थंभ चबूतरा, रंग नंग अनेक अरस ।
नाम लिए न जाएं रंगों के, रंग एक पें और सरस ॥ १६

में तो नाम लेत जवेरों, जानों बोहोत नाम लिए जाएं ।
नंग नाम धात कहे बिना, रंग नाम आवे ना जुबांए ॥ १७

एकै रस के सब रंग, करें जुदे जुदे झलकार ।
रंग नंग धात तो कहिए, जो आवे कहूं सुमार ॥ १८

पर हिरदें आवनें रूहों के, मैं कै बिध करत बयान ।
ना तो क्यों कहूं रंग नंग धात की, ए तो खिलवत[1] बका[2] सुभांन[3] ॥ १६

---

१. एकान्त बैठक । २. अखण्ड । ३. परमात्मा ।

अरस धात ना रंग नंग रेसम, जित नया न पुराना होए ।
जित पैदा कछू नया नहीं, तित क्यों नाम धरे जाएं सोए ॥ २०

हेंम जवेर या जो कछू, सो सब जिमी पैदास ।
इत नाम पैदास के क्यों कहिए, जित पैदा न नास ॥ २१

थंभ और चीज न आवे सब्द में, कर मोमन देखो सहूर ।
अरस बानी देख विचारिए, तब हिरदें होए जहूर[1] ॥ २२

नाम निमूना इत झूठ हैं, तो भी तिन पर होत साबूत ।
जोत झूठी देख नासूत[2] की, अधिक है मलकूत[3] ॥ २३

सो मलकूत पैदा फना पलमें, कै करत खावंद जबरूत[4] ।
सो रोसनी निमूना देख के, पीछे देखो अरस लाहूत[5] ॥ २४

इन बिध सहूर जो कीजिए, कछू तब आवे रूह लज्जत ।
और भांत निमूना ना बने, ए तो अरस अजीम खिलवत ॥ २५

आगूं नूर मकान की कंकरी, देखत ना कोट सूर ।
तिन जिमी नंग रोसनी, सो कैसो होसी नूर ॥ २६

ए नूर मकान कह्या रसूलें, आगूं जाए न सके क्योंए कर ।
तिन लाहूत में क्यों पोहोंचही, जित जले जबराईल पर ॥ २७

ए देखो तुम रोसनी, हक अरस इन हाल ।
जित पर जले *जबराईल, कोई फिरस्ता न इन मिसाल ॥ २८

मेराज हुआ महंमद पर, नेक तिन किया रोसन ।
अब मुतलक[6] जाहेर तो हुआ, जो अरस में मोमनों तन ॥ २९

दिल अरस भी तो कह्या, हकें जान ए निसबत ।
इन गिरो पर मेराज तो हुआ, जो दिन ऊग्या हक मारफत ॥ ३०

ए जो अंदर अरस अजीम[7] के, खिलवत मासूक[8] या आसक[9] ।
नूर—तजल्ला[10] क्यों कहूँ, बका वाहेदत हक ॥ ३१

---

१. प्रकाश । २. मत्यु लोक । ३. बैंकुण्ठ । ४. अक्षर धाम । ५. परम धाम । ६. नितान्त ।
७. परम धाम । ८. प्यारा । ९. प्रेमीं । १०. दिव्य ब्रह्म पुर ।

इन भाँत निमूना लीजिए, करियो हक सहूर मोमन ।
तुम ताले[1] आया लुदंनी[2], तुम देखो अरस रोसन ।। ३२

ए तुम ताले तो आइया, जो तुम असल खिलवत ।
निसदिन सहूर एही चाहिए, हक बैठे तुमें खेलावत ।। ३३

अब गिन देखो थंभ चौसठ, बीच चारों हिस्सों चार द्वार ।
नाम रंग नंग तो कहिए, जो कित खाली देखूं झलकार ।। ३४

एक जोत सागर सब हो रह्या, और ऊपर तले सब जोत ।
कै सूर उड़ें आगूं कंकरी, तिन भोम की जोत उद्योत ।। ३५

चंद्रवा[3] दुलीचा[4] तकिए, सब जोतै का अंबार[5] ।
जित देखों तित जोत में, नूर क्यों कहूँ लेहेरें अपार ।। ३६

दो दो नंग थंभों के बीच में, बिना नूर न पाइए ठौर ।
दिवाल बंधाई नूर की, क्यों कहूँ रंग नंग और ।। ३७

बीच खाली जित जाएगा, तित लड़त थभों का नूर ।
उत जंग होत नंगन की, तित अधिक नूर जहूर ।। ३८

नूर नूर सब एक हो गई, एक दूजी को खैंचत ।
दूनी जोत बीच खाली मिने, रंग क्यों गिने जांय इत ।। ३९

जिमी जात भी रूह की, रूह जात आसमान ।
जल तेज बाए सब रूह को, रूह जात अरस सुभान ।। ४०

पसू पंखी या दरखत, रूह जिनस हैं सब ।
हक अरस वाहेदत में, दूजा मिले ना कछुए कब ।। ४१

दूजा तो कछू है नहीं, दूजी है हुकम कुदरत ।
सो पैदा फना देखन की, फना मिले न माहें वाहेदत ।। ४२

जो कछुए चीज अरस में, सो सब वाहेदत माँहि ।
जरा एक बिना वाहेदत, सो तो कछुए नाँहि ।। ४३

---

१. भाग्य । २. तारतम ज्ञान । ३. शामियाना । ४. गलीचा । ५. भण्डार ।

ए खिलवत हक नूर की, नूर आला[1] नूर मकान ।
बिछौना सब नूर का, सब नूरै का सामान ॥ ४४

नूर चंद्रवा क्यों कहूं, नूरै की झालर ।
तले तरफें सब नूर की, देखो नूरै की नजर ॥ ४५

रूहें मिलावा नूर में, बीच कठेड़ा[2] नूर भर ।
थंभ तकिए सब नूर के, कछू और ना नूर बिगर ॥ ४६

तखत सोभित बीच नूर का, नूर में जुगल किसोर ।
बैठे हक बड़ी रूह नूर मे, नूर सोभा अति जोर ॥ ४७

नूर सरूप रूप नूरके, नूर बस्तर भूखन ।
सोभा सुंदरता नूरकी, सब नूरै नूर रोसन ॥ ४८

गुन अंग इंद्री नूरकी, नूरै बान बचन ।
पिंड प्रकृति सब नूरकी, नूरै केहेन सुनन ॥ ४९

रूहें बड़ी रूह नूरमें, नूर हकके सदा खुसाल ।
हक नूर निस दिन बरसत, नूर अरस परस नूरजमाल ॥ ५०

नाम ठाम सब नूरके, कहूँ जरा ना नूर बिन ।
मोहोल मन्दिर सब नूरके, माहें बांहेर नूर पूरन ॥ ५१

अरस भोम सब नूरकी, नूरै के थंभ दिवाल ।
द्वार बार कमाड़ी नूरके, नूर गोंख[3] जाली पड़साल[4] ॥ ५२

मेहेराब झरोखे नूरके, जरे जरा सब नूर ।
अरस माहें बाहेर सब नूरमें, नूर नजीक नूर दूर ॥ ५३

नूर नाम रोसनका, दुनी जानत यों कर ।
सो तो रोसनी जिद[5] अंधेरकी, दुनी क्या जाने लुदंनी बिगर ॥ ५४

तले भोम चबूतरा, बैठा हक मिलावा इत ।
हक हादी ऊपर बैठके, गिरो को खेलावत ॥ ५५

---

१. सब से बढ़िया । २. जंगला, कठ घड़ा । ३. झरोखा । ४. छज्जा । ५. विरोध ।

अरस मता[1] अपार है, दिलमें न आवे विना सुमार ।
तार्थे ल्याऊं बीच हिसाबके, ज्यों रूहें करें विचार ॥ ५६

अरस नाहीं सुमारमें, सो हक ल्याए माहें दिल मोमन ।
बे सुमार ल्याए सुमार में, माहें आवने दिल रूहन ॥ ५७

इत फिरते साठ मंदिर, तिन बीच गलियां चार ।
चारो तरफो देखिए, जानों जोतैका अंबार ॥ ५८

चौकठ ताके घोंड़ले[2], और दिवालों चित्रामन[3] ।
सोभा क्यों कहूँ जोतमें, भरचो नूर रोसन ॥ ५९

दिवालों चित्रामन, कै जोत उठें तरंग ।
साम सामीं ले उठत, करत माहों माहें जंग ॥ ६०

बृक्ष बेली कै जवेर की, सकल बनसपती ।
नकस कटाव केते कहूँ, बनी पसू पंखी जात जेती ॥ ६१

देख देख के देखिए, सोभा अति सुन्दर ।
जैसी देखियत दिवालों, तिनसे अधिक अंदर ॥ ६२

अधिक चित्रामन अंदर, क्या क्या देखों इत ।
जिनको देखों निरख के, जानों एही अधिक सोभित ॥ ६३

अंदर कै बस्ताँ धरी, कै सेज्या चौकी संदूक ।
जित सोभा जो लेत है, तित देखिए तिन सलूक[4] ॥ ६४

कै सीसे प्याले डब्बे, कै अंदर गिरद देखत ।
कै तबके छोटी बड़ियाँ, कै सींकियां[5] लटकत ॥ ६५

अंदर की बस्तां क्यों कहूं, और क्यों कहूं चित्रामन ।
जो मन्दिरों अंदर देखिए, तो दिल होवे रोसन ॥ ६६

बार साखे द्वार ने, सोंभें साठो मन्दिरों के ।
सोंभें गिरद बराबर, एक एक पें अधिक सोंभा लें ॥ ६७

---

१. पूँजी । २. आले । ३. चित्रकारी । ४. व्यवस्थित । ५. छींके ।

बारीक इन कमाड़ियों, अनेक चित्रामन ।
रंग नंग या तखतें, ए सब जवेर चेतन ।। ६८

ना चितारे चेतरी, ना घड़ी[1] ना किन समारी ।
ए अरस जिमी थंभ मोहोलातें, या दिवालें या द्वारी ।। ६९

किनार दिवालें द्वार ने, लाल दोरी दोए दोए ।
मंदिर मंदिर की हद लग, सोभा लेत अति सोए ।। ७०

दोरी लगती कांगरी, सब ठोरों गृदवाए ।
चित्रामन तिनके बीच में, जो देखों सो अधिक सोभाए ।। ७१

साठों तरफों मन्दिर, नई नई जुदी जुगत ।
ए साठों फेरके देखिए, सोभा और पें और अतंत ।। ७२

क्यों कहूँ जुगत अंदर की, क्यों कहूँ जुगत बाहेर ।
जित देखों तित लग रहों, जानों नजरों आवे जाहेर ।। ७३

उपली भोम चढ़न को, सीढ़ियां अति सोभित ।
नई नई तरह नए रंगों, सामी जोतें जोत उठत ।। ७४

सीढ़ियां अति झलकत, जब सखियां उतर चढ़त ।
प्रतिबिंब सखियों सोभित, पड़घा[2] मीठे स्वर उठत ।। ७५

स्वर भूषन के बाजत, मीठे अति रसाल ।
इनकी सोभा क्यों कहूँ, जाको खावंद नूर जमाल ।। ७६

सीढ़ियां अति सोभित, माहें मन्दिरों सबन ।
कहूं कहूं देहेलान में, जो जित सो तित रोसन ।। ७७

दो दो थंभ आगूं द्वारने, तिन आगूं दूसरी हार ।
ए थंभ अति बिराजत, सोभा नाहीं सुमार ।। ७८

चार हांस[3] तले थंभ के, आठ ऊपर तिन ।
सोले बीच आठ तिन पर, और चार ऊपर इन ।। ७९

---

१. गढ़ना । २. ध्वनि । ३. पहल ।

इन बिध हांस थंभन की, माहें नकस कै कटाव ।
जुदी जुदी जुगतों चित्रामन, माहें जुदे जुदे कै भाव ।। ८०

एक एक रंग का जवेर, उसी जवेर में नकस ।
जुदे जुदे कै कटाव, एक दूजे पे सरस ।। ८१

इनके बीच चबूतरा, इत कठेड़ा गृदवाए ।
ए खूबी इन चबूतरे, इन जुबां कही न जाए ।। ८२

तो भी नेक कहूं मैं इन की, जो आए चढ़त है चित्त ।
ए जो बैठक खावंद की, सो नेक कहूं सिफत ।। ८३

भोम उजल कै नकस, कहा कहूं जिमी इन नूर ।
जानों कोटक उदे भए, अरस के सीतल सूर ।। ८४

फिरते थंभ जो चौसठ, चारो तरफों द्वार ।। ।
दो दो सीढ़ी आगू द्वारने, सोभित है अति सार ।। ८५

कै थंभ हैं मानिक के, कै पाच कै पुखराज ।
नूर रोसन एक दूसरे, मिल जोतें जोत विराज ।। ८६

कै लसनियां[1] नीलवी, एक थंभ एक रंग ।
यों फिरते थंभ नंगन के, जुदे जुदे सब नंग ।। ८७

सोले थंभों कठेड़ा, यों थंभ कठेड़ा किनार ।
कठेड़ा थंभों लगता, सोले सोले तरफ चार ।। ८८

थंभ थंभ को देखत, ज्यों सूर के सामी सूर ।
बढ़त है बीच रोसनी, क्यों कहूँ नूर को नूर ।। ८९

यों थंभ थंभ जोत में, देखो सबन का जहूर ।
ऊपर तले सब जोत में, जम्या नूर भरपूर ।। ९०

ऊपर चंद्रवा थंभों लगता, तले जेता चबूतर ।
जड़ाव यों अति झलकत, एता ही इन पर ।। ९१

---

१. एक रत्न ।

कै रंगों के जवेर, करत जोत अपार ।
कै बेल फूल पात नकस, ए सिफत न आवे सुमार ॥ ९२

बिछौना बिछाइया, करत दुलीचा जोत ।
बेल फूल पात नकस, कै उठत तरंग उद्योत ॥ ९३

चारो तरफों दुलीचा, फिरता बिछाया भरकर ।
चबूतरे लग कठेड़ा, सोभा अति सुंदर ॥ ९४

क्यों कहूँ रंग दुलीचे, फिरती दोरी चार ।
स्याम सेत हरी जरद, ए फिरती जोत किनार ॥ ९५

कै विध के कटाव, कै बृक्ष बेली नकस ।
पात फूल बीच फिरते, और पे और सरस ॥ ९६

लग कठेड़े तकिए, क्यों कहूँ तकियों रंग ।
बारे हजार दाब बैठियां, एक दूजे के संग ॥ ९७

बैठक दोऊ सिंघासन, चार पाए एक तखत ।
पीछल तकिए दोऊ जुदे, रख्या ऊपर दुलीचे इत ॥ ९८

मोती रतन मानिक, हीरे हेम पाने पुखराज ।
गोमादिक[1] पाच फिरोजा[2] परवाल,[3] रहे कै रंग नंग धात बिराज ॥ ९९

नंग नाम केते कहूँ, कहूँ केती अरस धात ।
बरनन तखत अरस का, कहे जुबां सुपन नंग जोत ॥१००

चार थंभ चार खूंट के, छत्री सोभा अति जोर ।
जो कदी नैनों देखिए, तो झूठे तन बंध देवे तोर ॥१०१

पीछल तकिए दोऊ तरफों, बीच चढ़ती कांगरी चार ।
फूल पात बेल कटाव कै, जुबां कहा कहे नकस अपार ॥१०२

दोऊ छेड़ों में थंभ दोए, बीच तीसरा सरभर ।
तिन गुल पर गुल कटाव, नूर रोसन सोभा सुंदर ॥१०३

---

१. एक मणि । २. फिरोजा । ३. लाल रत्न ।

जो बरनन करूं पूरे पात को, तो चल जाए काहूँ उमर ।
तो पात न होवे बरनन, ए अरस तखत यों कर ॥१०४

एक पात के बेल कांगरी, बेल फूल पात कटाव ।
तिन बेलों पात कै बेलें, ऐसे बारीक अति जड़ाव ॥१०५

एक नंग बारीक इत देखिए, ताकी जोत न माए आसमान ।
अपार जरे अरस की, ना आवे माहें जुबांन ॥१०६

दोऊ तरफों सिंघासन के, बगलों तकिए दोए ।
बारीक तिन कटाव कै, ए बरनन कैसे होए ॥१०७

ऊपर छत्रियां क्यों कहूँ, कै रंग नंग जोत किनार ।
कै दोरी बेली कांगरी, सोभा फिरती तरफ चार ॥१०८

चार थंभ जो पाइयों पर, तिन में बेली अनेक ।
रंग नंग बारीक अलेखे, तिनको क्यों कर होए विवेक ॥१०९

चार खूंनें के चार नकस, कै कांगरी कटाव फूल ।
बीच पांखड़ी फिरती फूल ज्यों, ए अरस तखत इन सूल ॥११०

फूल कटाव कै बीच में, कै बिध के नकस ।
इन के बीच में मानिक, गृदवाए नीलवी सरस ॥१११

दोऊ सरूपों ऊपर, दो फूल यों बिराजत ।
देखी और अनेक चित्रामन, पर अचरज एह जुगत ॥११२

दोए कलस दोए छत्रियों, छे कलस गृदवाए ।
ए आठ कलस हैं हेम के, सुंदर अति सोभाए ॥११३

जोर करे जोत जवेर, ऊपर हक तखत ।
ए नूर जिमी आसमान में, रोसन बढ्यो अतंत ॥११४

सोए धरचा इत तखत, जानों नजर ना छोडूं छिन ।
पल न चाहे बीच आवने, ऐसी सोभा तखत बीच इन ॥११५

एक गादी दोए चाकले, पीछल वाही जिनस ।
चौखूनें कटाव कै पसमी[1], जो देखों सोई सरस ॥११६

किनार बाएँ बीच जवेर के, और रोसन बे सुमार ।
ए तखत नूर जमाल का, अरस सब चीजों अपार ॥११७

इन सिंघासन ऊपर, बैठे जुगल किसोर ।
बस्तर भूखन सिनगार, सुंदर जोत अति जोर ॥११८

एक जोत जुगल की, और बीच बैठे सिंघासन ।
बलि बलि जाऊँ मुखारबिंद की, और बलि बलि जाऊं चरन ॥११९

कहा कहूँ जोत रूहन की, और समूह भूखन बस्तर ।
ए कही जोत पूरन सिंध की, जो अव्वल नूर सागर ॥१२०

ए सागर भर पूरन, तेज जोत को गंज ।
कै इन सागर लेहेरें उठें, पूरन नूर को पुंज ॥१२१

'महामत' कहें सिंध दूसरा, सोभा सरूप रूहन ।
ए सुखकारी अति सुंदर, ए बका वतन बीच तन ॥१२२

॥ प्रकरण ॥ १ ॥ चौपाई ॥ १२२ ॥

## सागर दूसरा रूहों की सोभा

हक बैठे रूहें मिलाएके, खेल देखावन काज ।
बड़ी भई रदबदल[2], रूहें बड़ी रूहसों राज ॥ १

देखन खेल जुदागीय का, दिलमें लिया रूहन ।
हक आप बैठे तखत पर, खेल रूहों को देखावन ॥ २

देहेसत सबों जुदागीय की, पर खेल देखन की चाह ।
देखें पातसाही हककी, देखें इस्क बड़ा किन का ॥ ३

एह जोत जो जोतमें, बैठियां ज्यों सब मिल ।
क्यों कहूँ सोभा इन जुबां, सुंदर जोत जुगल ॥ ४

---

१. बढ़िया ऊन का आसन । २. प्रेम संवाद ।

सुंदर साथ भराए के, बैठियां सरूप एक होए ।
यों सबे हिल मिल रही, सरूप कहे न जावें दोए ॥ ५

एक सरूप होए बैठियां, माहें बस्तरों कै रंग ।
क्यों ए बरनन होवही, रंग रंग में कै तरंग ॥ ६

देखो अंतर आंखें खोलके, तो आवे नजरों विवेक ।
बरनन ना होवे एक को, गलगलसों लगी अनेक ॥ ७

एक सागर कह्यो तेज जोतको, दूजो सोभा सुंदर ।
कै तरंग उठें इन रंगों के, खोल देखो आँख अंदर ॥ ८

ए मेला बैठा एक होएके, रूहें एक दूजीको लाग ।
आवे ना निकसे इतथें, बीच हाथ न अंगुरी मांग ॥ ९

गिरदवाए तखत के, कै बैठियां तले चरन ।
जानों जिन होवें जुदियां, पकड़ रहे हम सरन ॥ १०

चबूतरे लग कठेड़ा, रहियां चारो तरफों भराए ।
ज्यों मिल बैठियां बीच में, योंहीं बैठियां गिरदवाए ॥ ११

एक दूजीको अंक भर, लग रहियां अंगों अंग ।
दिलमें खेल देखनका, है सबों अंगो उछरंग ॥ १२

जाने जिन कोई जुदी पड़े, ए डर दिल में ले ।
मिल कर बैठियां एक होए, बड़ी अचरज बैठक ए ॥ १३

अतंत सोभा लेत हैं, कबूं ना बैठियां यों कर ।
यों बैठियां भर चबूतरे, दूजा सोभा अति सागर ॥ १४

माहें ऊँची नीची कोई नहीं, सब बैठियां बराबर ।
अंग सकल उमंग में, खेल देखन को चाह कर ॥ १५

सोभा सुन्दरता अति बड़ी, हक *बड़ी रूह अरवाहें ।
ए सोभा सागर दूसरा, मुख कह्यो न जाए जुबांए ॥ १६

अरस अरवाहों मुख की, जुबां कहा करे बरनन ।
नैन श्रवन मुख नासिका, सोभा सुन्दर अति घन ॥ १७

गौर रंग लालक लिए, सोभा सुन्दरता अपार ।
जो एक अंग बरनन करूँ, वाको भी न आवे पार ।। १८

मुख चौक छबि की क्यों कहूँ, सोभा हरवटी[1] दंत अधूर[2] ।
बीच लांक[3] मुसकनी कहां लग, केहे केहे कहूं मुख नूर ।। १९

साड़ी चोली चरनी, जड़ाव रंग झलकार ।
कै जवेर केते कहूं, सोभा सागर सुखकार ।। २०

रूहें बैठी हिल मिल के, याके जुदे जुदे बस्तर ।
केते रंग कहूं साड़ियों, निपट बैठियां मिल कर ।। २१

कै साड़ी रंग सेत की, और कै साड़ी रंग नीली ।
कै साड़ी रंग लाल हैं, कै साड़ी रंग पीली ।। २२

एक लाल माहें कै रंग, और कै रंग नीली माहिं ।
कै रंग पीली कै सेत में, कै रंग क्यों कहूँ जुबांए ।। २३

मैं नाम लेत एक रंग का, कहूँ केती लाल माहें एक ।
एक नाम नीला कहूं, माहें नीले रंग अनेक ।। २४

इन बिध कै रंग बस्तरों, ए बरन्यो क्यों जाए ।
तिनमें भी जुदियां नहीं, सब बैठियां अंग मिलाए ।। २५

अनेक रंगों साड़ियां, माहें कै वृक्ष बेली पात ।
फल फूल नकस कटाव कै, तार्थे बरन्यो न जात ।। २६

के रंग कहूं बस्तरों, के कहूं जवेरों रंग ।
इन बिध रंग अनेक हैं, ताके उठें कै तरंग ।। २७

कै किरनें उठें कंचन की, कै किरनें हीरन ।
पाच पाने[4] मोती मानिक, किरने जाए न कही जवेरन ।। २८

सो किरनें लगें जाए ऊपर, और द्वार दिवालों थंभन ।
आवें उतथें किरनें सामियां, माहों माहें जंग करें रोसन ।। २९

---

१. दाढ़ी । २. अधर, होंठ । ३. गहराई । ४. पन्ने ।

और चोली जो चरनियां, सब अंग में रहे समाए ।
बरनन न होए एक अंग को, तामें बैठियां सब लपटाए ॥ ३०

हेंम हीरा मोती मानिक, कै रंगों के हार ।
पाच पांने नीलवी लसनिए, कै जवेरों अंबार ॥ ३१

सोभा अतंत है भूखनों, स्वर बाजत हाथ चरन ।
मीठी बानी अति नरमाई, खुसबोए और रोसन ॥ ३२

वस्तर भूखन[1] सब अंगों, क्यों कहूं केते रंग ।
एक एक नंग के अनेक रंग, तिन रंग रंग कै तरंग ॥ ३३

निलवट[2] श्रवन नासिका, सिर कंठ उर कै हार ।
हाथ पांउं चरन भूखन, अति अलेखें सिनगार ॥ ३४

जो होवें अरवा अरस की, सो लीजो कर सहूर ।
अंग रंग नंग सब जंग में, होए गयो एक जहूर ॥ ३५

'महामत' कहें बैठियां देख के, हक हंसत हैं हम पर ।
कहें देखो इन बिध खेल में, भेलियां रहें क्यों कर ॥ ३६

॥ प्रकरण ॥ २ ॥ चौपाई ॥ १५८ ॥

### ढाल दूसरा इसी सागर

लेहेरी सुख सागर की, लेसी रूहें अरस ।
याके सरूप याको देखसी, जो हैं अरस परस ॥ १

ए जो सरूप सुपन के, असल नजर बीच इन ।
वह देखें हमको ख्वाब में, वह असल हमारे तन ॥ २

उन अंतर आंखें तब खुलें, जब हम देखें वह नजर ।
अंदर चुभे जब रूह के, तब इतहीं बैठे बका घर ॥ ३

सुरत उनों की हम में, ए जुदे जुदे हुए जो हम ।
एजो बातें करें हम सुपन में, सो करावत हक इलम ॥ ४

---

१. आभूषण । २. मस्तक ।

इन बिध हक का इलम, हमको जगावत ।
इलम किल्ली[1] हमको दई, तिनसे बका द्वार खोलत ।। ५

बीच असल तन और सुपने, पट नीदै का था ।
सो नीद उड़ाए सुपना रख्या, ए देखो किया हक का ।। ६

ना तो नीद उड़े पीछे सुपना, कबलों रेहेवे ए ।
इन विध सुपना ना रहे, पर हुआ हाथ हुकम के ।। ७

हुकमें खेल देखाइया, जुदे डारे फरामोसी[2] दे ।
खेल में जगाए हुकमें, अब हुकम मिलावे ले ।। ८

बात पोहोंची आए नजीक, अब जो कोई रेहेवे दम ।
उमेदा तुमारी पूरने, राखी खसमें तुम हुकम ।। ९

जो रूहें अरस अजीम की, सो मिलियो लेकर प्यार ।
ए बानी देख फजर की, सब हूजो खबरदार ।। १०

अब फरामोसी क्यों रहे, जब खोल्या बका द्वार ।
रूबरू[3] किए हमको, तन असल नूर के पार ।। ११

बैठी थी डर जिनके, सब हिल मिल एक होए ।
हुकम हक के कौल पर, उलट तुमको जगावे सोए ।। १२

ना तो सुपन के सरूप जो, सो तो खेलै को खैंचत ।
सो हुकमें तुमें सुपना, हक को मिलावत ।। १३

यों सीधी उलटीय से, कौन करे बिना इलम ।
इत जगाए उमेदां पूरन कर, खैंचत तरफ खसम ।। १४

ए होत किया सब हुकम का, ना तो इन विध क्यों होए ।
जागे सुपना मूल तन का, जगाए हुकम मिलावे सोए ।। १५

सो सुध आपन को नहीं, जो विध करत मेहेरबान ।
ना तो कै मेहेर आपन पर, करत हैं रेहेमान ।। १६

---

१. कुञ्जी । २. नींद । ३. आमने-सामने ।

'महामत' कहें मेहेर हक की, रूहों आवे एक नजर ।
तो तबहीं रात को मेट के, जाहेर करें फजर ॥ १७

॥ प्रकरण ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ १७५ ॥

## सागर तीसरा एक दिली रूहन की

अब कहूँ सागर तीसरा, मूल मेला बिराजत ।
रूह को आंखों देखिए, तो पाइए इनों सिफत ॥ १

अरस की अरवाहें जेती, जुदी होए ना सकें एक खिन ।
ए माहें क्यों होएँ जुदियां, असल रूहें एक तन ॥ २

इन सबन की एक अकल, एक दिल एक चित्त ।
एक इस्क इनों का, सनेह कायम हित ॥ ३

इनों दिल सागर तीसरा, एक सागर सब दिल ।
देखो इनों दिल पैठ के, किन विध बैठियां मिल ॥ ४

हांस विलास सुख एक है, एक भांत एक चाल ।
तो इन वाहेदत की क्यों कहूँ, कौल फैल जो हाल ॥ ५

तो कह्या वाहेदत इनको, अरस अरवा हक जात ।
ज्यों जोतें जोत उद्योत है, त्यों सूरत की सूरत सिफात ॥ ६

इन एक दिली रूहन की, ए क्यों कर कही जाए ।
एक रूह कहे गुझ हक का, दूजी अंग न उमंग समाए ॥ ७

वह सुख केहेवे अपना, जो किया है हक से ।
दिल दूजी के यों आवत, सब सुख लिया मैं ॥ ८

एकै बात के वास्ते, सुख दूजी को उपज्या यों ।
यों सबन की एक दिली, जुदा बरनन होवे क्यों ॥ ९

एक रूह बात करे हक सों, सुख दूजी को होए ।
जब देखिए मुख बोलते, तब सुख पावें दोए ॥ १०

अरस परस यों हक सों, आराम लेवें सब कोए ।
अति सुख पावें बड़ी रूह, ए तिनके अंग सब सोए ॥ ११

जो सुख पावत बड़ी रूह, सब तिनके सुख सनकूल ।
ज्यों जल मूल में सींचिए, पोहोंचे पात फल फूल ॥ १२

त्यों सुख जेता हक का, पोहोंचत है बड़ी रूह को ।
बड़ी रूह का सुख रूहन, आवत है सब मों ॥ १३

या भूषन या बस्तर, सिनगार के बखत ।
एक पेहेने सुख दूजी को, यों सबों सुख होत अतंत ॥ १४

या जो बखत आरोगने[1], या कोई अरस लज्जत[2] ।
सो एक रूह से दूसरी, सुख देख केहे पावत ॥ १५

ए सुख बातें अरस की, अलेखे अखंड ।
क्यों बरनों मैं इन जुबां, बीच बैठ इन इंड[3] ॥ १६

मैं नेक कही इन बिध की, सो अरस में बिध बेसुमार ।
इन सुख बानी क्यों कहूँ, जाको बार न पार ॥ १७

तो कह्या रसूल ने, अरस में वाहेदत ।
सो कह्या इन माएनों, ए रूहें एक दिल एक चित्त ॥ १८

एक रूह सुख लेत है, सुख पावत बारे हजार ।
तो कही जो चीजें अरस की, सो चीजें चीज अपार ॥ १९

जो कोई चीजें अरस में, बाग जिमी जानवर ।
ताको सुख बल इस्क का, पार न आवे क्योंए कर ॥ २०

या पसू या वृक्ष कोई, अपार तिनों की बात ।
तो रूहों के सुख क्यों कहूं, ए तो हैं हक की जात ॥ २१

जिन किन को संसे उपजे, खेल देख के यों ।
ए जो रूहें अरस की, तिनका इस्क न रह्या क्यों ॥ २२

इस्क रूह दोऊ कायम, और कायम अरस के मांहि ।
क्यों इस्क खोवे आवे क्यों, उत कमी कोई आवत नांहि ॥ २३

---

१. भोजन करने । २. आनंद । ३. संसार ।

उत कमी क्यों आवहीं, और रूहें आवें क्यों इत ।
और इस्क जाए क्यों इनों का, जिनकी एती बड़ी सिफत ॥ २४

जात हक की कहावहीं, और कहावें माहें वाहेदत्त ।
जो इलम बिचारे हकका, ताको इस्क बढ़त ॥ २५

ए केहेती हों मैं तिनको, कोई संसे ल्यावे जिन ।
ए अनहोनी हकें करी, वास्ते हांसी ऊपर रूहन ॥ २६

ना तो ए कबहूँ नहीं, जो हक रूहें देखें सुपन ।
एक जरा अरस का, उड़ावे चौदे भवन ॥ २७

ए हकें हिकमत करी, खेल देखाया झूठ रूहन ।
पट दे झूठ देखाइया, नैनों देखूं बका वतन ॥ २८

आड़ा पट दे झूठ देखाइया, पट न आड़े हक ।
सो हक को हक देखत, हुई फरामोसी रंचक ॥ २९

इन बिध खेल देखाइया, ना तो रूहें झूठ देखें क्यों कर ।
अपने तन हकें जानके, करी हांसी रूहों ऊपर ॥ ३०

सोभी किया सुख वास्ते, अब सुध किनको नाहिं ।
खेल देसी सुख बड़े, जब जागें अरसके माहिं ॥ ३१

हादी[1] नूर हैं हकका, और रूहें हादी अंग नूर ।
इन विध अरस में वाहेदत्त, ए सब हकका जहूर ॥ ३२

'महामत' कहें ए तीसरा, ए जो रूहों दिल सागर ।
अब कहूँ चौथा सागर, पट खोल देखो अंतर ॥ ३३

प्रकरण ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ २०८ ॥

## सागर चौथा जुगल[2] किसोर का सिनगार

### श्री राजजी का सिनगार पेहेला—मंगला चरन

चौदे तबकको दुनीं में, किन कह्या न बका हरफ[3] ।
ए हरफ कैसे केहेवहीं, किन पाई न बका तरफ ॥ १

१. सत गुरू । २. राज श्यामा जी (किशोर जोड़ी) । ३. अक्षर ।

आया इलम *लुदंनी, केहे साहेदी एक खुदाए ।
तरफ पाई हक इलमें, मैं बका पोहोंची इन राह ॥ २

अरस देख्या रूह अल्ला, हक सूरत किसोर सुंदर ।
कही बाहेदतकी मारफत, जो अरस के अंदर ॥ ३

नदी ताल वाग जानवर, जो अरस की हकीकत ।
रूह अल्ला दई साहेदी, हक[1] हादी[2] खास—उमत[3] ॥ ४

महंमद पोहोंचे अरस में, देखी हक सूरत ।
हौज जोए बाग जानवर, कही सब हक मारफत ॥ ५

देखी अमरद[4] जुल्फें हककी, और बोहोत करी मजकूर ।
कही बातें जाहेर बातून, पोहोंचके हक हजूर ॥ ६

ए साहेदी आई इन विध की, कहे खुदा एक महंमद बरहक[5] ।
सो क्यों सुध परे विना इलम, हक इलमें करी बेसक ॥ ७

महंमद के फरमानमें, कही *तीन सूरत ।
बसरी[6] मलकी[7] और हकी[8], एक अव्वल दो आखरत ॥ ८

मेरी रूह जो बरनन करत है, करी हादियों मेहेरबानगी ।
ना तो अव्वलसे आज लगे, कहूँ जाहेर न बका की ॥ ९

आतम चाहे बरनन करूँ, जुगल किसोर विध दोए ।
ए दोए बरनन कैसे करूँ, दोऊ एक कहावत सोए ॥ १०

बरनन होए इलमसे, जो इलम हकका होए ।
एक देखाऊँ बातूनमें, जाहेर बरनवूं दोए ॥ ११

रूह चाहे बका सरूप की, बरनन करूँ जिमी इन ।
इलम लुदंनी खुदाई से, जो कबहूँ न सुनिया किन ॥ १२

जिन जानो ए बरनन, करत आदमी का ।
ए सबथें न्यारा सुभान जो, अरस अजीम में बका[9] ॥ १३

---

१. परमात्मा । २. श्यामा । ३. ब्रह्म सृष्टि । ४. किशोर । ५. सच्चा । ६. मानवीय ।
७. ज्ञान के स्वामी (फरिश्ते की) । ८. खुदाई । ९. अखंड ।

*मलकूत ऊपर *हवा सुंन, तिन पर नूर अक्षर ।
नूर पार नूर तजल्ला, जो अक्षरातीत सब पर ॥ १४

अरस ठौर हमेसगी, हमेसा हक सूरत ।
सिनगार सबे हमेसगी, ना चल बिचल इत ॥ १५

जित जैसा रूह चाहत, तहाँ तैसा बनत सिनगार ।
नित्त नए वाहेदत में, सोभा अखंड अपार ॥ १६

या बस्तर या भूखन, जो दिल रूह चाहे ।
सो उन अंगों सोभा लिए, जानो आगूंही बन रहे ॥ १७

हाथ न लगे भूखन को, जो दीजे हाथ ऊपर ।
चित्त चाह्या अंगों सब लग रह्या, जुदा होए न आग्या विगर ॥ १८

जिन खिन चित्त जो चाहे, सो आगूंहीं बनि आवे ।
इन विध सिनगार सब समें, नित नए रूप देखावे ॥ १९

ना पेहेन्या ना उतारिया, दिल चाह्या नित सुख ।
वाहेदत हमेसा ए सुख, हक सींचल सनमुख ॥ २०

सबद न लगे सोभा असलें, पर रूह मेरी सेवा चाहे ।
तो बरनन करूं इनका, जानों रूहों भी दिल समाए ॥ २१

इन जिमी जरेकी रोसनी, मावत नहीं आसमान ।
तो ए बरनन क्यों होवहीं, अरस साहेब सुभान ॥ २२

आसक क्यों बरनन करे, इस्क लिएं रेहेमान ।
एक अंगको देखन लगी, सो तितही भई गलतान ॥ २३

सोभा जुगल किसोर की, सुख सागर चौथा ए ।
आवें लेहेरें नेहेरें अति बड़ी, झीलें अरवाहें जो इत के ॥ २४

खूबी जुगल किसोर की, प्रेम बचन इन रीत ।
आसक इन मासूक की, भर भर प्याले पीत ॥ २५

मेरी रूह नैन की पुतली, तिन पुतलियों के नैन ।
तिन नैनों में राखूं मासूक को, ज्यों मेरी रूह पावे सुख चैन ॥ २६

मंगला चरन तमाम

सिर पाग बाँधी चतुराईसों, हकें पेंच हाथ में ले ।
भाव दिल में लेयके, सुख क्यों कहूँ विध ए ॥ २७

केस चुए[१] में भिगोए, लिए जुगतें पेंच फिराए ।
पेंच दिए ता पर बहु बिध, बांधी सारंगी बनाए ॥ २८

उज्जल हस्त कमल सों, कोमल नरम अतंत ।
बांधी हिरदें बिचार के, दोऊ क्यों कर करूँ सिफत ॥ २९

रंग लाल जरी माहें बेल कै, कै फूल पात नकस कटाव ।
कै रंग नंग जवेर झलकें, बलि जाऊँ बांधी जिन भाव ॥ ३०

आसक एही विचारहीं, तब याही में रहे लपटाए ।
अंदर हक पेचन से, क्यों कर निकस्यो जाए ॥ ३१

ऊपर कलंगी लटकत, झलकत है अति जोत ।
याको नूर आसमान में, भराए रह्यो उद्योत ॥ ३२

ऊपर सारंगी दुगदुगी, करे जो झलझलाट ।
ए देखे अंतर आँखें खुलें, ए जो हैड़े के कपाट ॥ ३३

इन परन का नूर क्यों कहूँ, देख देख रूह अटकत ।
और न्यारी जोत नंगन की, ए जो दुगदुगी[२] लटकत ॥ ३४

ऊपर दुगदुगी जो मानिक, आसमान भरयो ताके तेज ।
आसमान जिमी के बीच में, जोत पोहोंची रेजा रेज ॥ ३५

सुंदरता इन मुख की, सब्द न पोहोंचे कोए ।
नूर को नूर जो नूर है, किन मुख कहूँ रंग सोए ॥ ३६

ए उज्जल रंग अंग अरस का, माहें गेहेरी लालक ले ।
मुख चौक छबि इनकी, किन बिध कहूं मैं ए ॥ ३७

---

१. सुगन्धित द्रव्य । २. स्वर्ण फूल ।

तिलक सोभित रंग कंचन, असल बन्यो सुन्दर ।
चारो तरफों करकरी, सोहे लाल बिंदी अंदर ॥ ३८

लवने केस कानों पर, तिन केसों का जो नूर ।
आसमान जिमी के बीच में, जोत भराए रही जहूर ॥ ३९

नैनन की मैं क्यों कहूँ, नूर रंग भरे तारे ।
सेत माहें लालक लिए, सोहें टेढ़े अनियारे ॥ ४०

रूह के नैनों से देखिए, अति मीठे लगें प्यारे ।
कै रस छबि इनमें, निमख न होएं न्यारे ॥ ४१

नासिका की मैं क्यों कहूं, कोई इनका निमूना नाहिं ।
जिन देख्या सो जानहीं, बाके चुभ रहे हैंड़े माहिं ॥ ४२

कानन मोती लटकत, उज्जल जोत प्रकास ।
बीच लालकी लालक, जोत मावत नहीं आकास ॥ ४३

लाल वाला अरस धात का, करड़े बने चार चार ।
इन मोती और लालकी, रूह देख देख होए करार ॥ ४४

गौर रंग अति गालों के, माहें गेहेरी लालक लिएं ।
दोऊ भृकुटी बीच नासिका, ऊपर सुन्दर तिलक दिएं ॥ ४५

गौर हरवटी अति सुन्दर, बीच लांक ऊपर अधूर ।
बलि बलि जाऊँ मीठे मुख की, मिल दोऊ करें मजकूर ॥ ४६

कटि कोमल अति पेट पांसली, पीठ गौर सोभे सरस ।
गरदन केस पेच पाग के, छबि क्यों कहूं अंग अरस ॥ ४७

कोमल अंग कंठ हैंएड़ा[1], खभे मछे गौर लाल ।
कोनी कांड़े कोमल देखत, आसक बदलत हाल ॥ ४८

लीकें सोभित हथेलियां, रंग उज्जल कहूं के गुलाल ।
रूह थें पलक न छूटहीं, अंग कोमल नूर जमाल ॥ ४९

---

१. हृदय ।

नरम अंगुरियां पतली, पोहोंचे सलूकी जुदे भाए ।
रंग सलूकी पोहोंचे हथेलियां, किन मुख कहूं चित ल्याए ॥ ५०
नैन श्रवन मुख नासिका, मुख छबि अति सुन्दर ।
देखतहीं आसिक अंगों, चुभ रहत हैड़े अन्दर ॥ ५१
बड़ी सोभित मुख मोरत, लेत तंबोल रंग लाल ।
ए बरनन रूह तोलों करे, जोलों लगे न हैड़े भाल ॥ ५२
जानों के जोवन नौतन, अजूं चढ़ता है रंग रस ।
ऐसा काएम हमेसा, इन बिध अंग अरस ॥ ५३
सेत जामा अंग लग रह्या, मीहीं चूड़ी बनी दोऊ बांहें ।
दावन क्यों बरनन करूं, इन अंग की जुबांए ॥ ५४
बेल नकस दोऊ बगलों, चीन झलकत मोहोंरी जड़ाव ।
नकस बेल गिरबान बंध, पीछे अतंत बन्यों कटाव ॥ ५५
ए देत देखाई रंग जवेर, नकस कटाव बेली जर ।
लगत नाहीं हाथ को, रंग नंग धागा बराबर ॥ ५६
इजार[1] रंग जो केसरी, झांईं जामें में लेत ।
दावन जड़ाव अति जगमगे, रंग सोभे केसरी पर सेत ॥ ५७
नीले पीले के बीच में, झाईं लेत रंग दोए ।
सों पटुका कमर बन्यां, रंग कह्या सुंदरबाई सोए ॥ ५८
जरी पटुका कटाव कै, कै नकस बेल किनार ।
पाच पांने हीरे पोखरे, कै नकस रंग नंग झलकार ॥ ५९
मनी मानिक लसनियां नीलवी, अतंत उद्योतकार ।
फूल पात बेल नकस, ए जोत न छेड़ों सुमार ॥ ६०
हेंम वस्तर नंग नूर में, नरमाई अतंत ।
जो कोई चीज अरसकी, खुसबोए अति बेहेकत ॥ ६१

---

१. सूथनी ।

एक हार मोती एक नीलवी, और हार हीरों का एक ।
एक हार लाल मानिक का, एक लसनियां बिसेक ॥ ६२

इन हारों में दुगदुगी, नूर नंग कह्यो न जाए ।
जोत अम्बर लों उठके, अवकास रह्यो भराए ॥ ६३

इन पांचो हारके फुमक,[1] तिन फुमक पांचो रंग ।
रंग पांचो सोभें जुदे जुदे, जरी सोभित धागे संग ॥ ६४

ए पांच रंग एक कंचन, ताके बने जो बाजूबंध ।
इन जुबां सोभा क्यों कहूं, फूलें फुंदन भली सनंध ॥ ६५

दोए पोहोंची दोए जिनसकी, मनी मानिक मोती पुखराज ।
हेम हीरा लसनियां नीलवी, दोऊ पोहोंची रही विराज ॥ ६६

एक पोहोंची एक दुगदुगी, और सात सात दूजीको ।
सो सातों जिनस जुदी जुदी, आवत ना अकल मों ॥ ६७

पाच पांने हीरे पोखरे, मुंदरी अंगुरियों सात ।
नीलवी मोती लसनियां, साज सोभित हेम धात ॥ ६८

एक अंगूठी आठमी, सो सोभा लेत सब पर ।
सोए एक मानिक की, जुड़ बैठी अंगूठे भर ॥ ६९

इन मुख नख जोत क्यों कहूँ, कै कोट सूरज ढँपाए ।
ए सुखकारी तेज सीतल, ए सिफत न कही जाए ॥ ७०

अजब रंग आसमानी का, जुड़ी जामें मिहीं चादर ।
ए भूखन बेल कटाव जामें, सब आवत माहें नजर ॥ ७१

लाल नीले पीले रंग कै, सोभें छेड़ों बीच किनार ।
जामें चादर मिल रही, लेहेरी आवत किरनें अपार ॥ ७२

गेहेरा रंग जो केसरी, लेत दावन झांईं इजार ।
सेत केसरी दोऊ रंग के, सोभा होत सुखकार ॥ ७३

१. फुंदन ।

नेफे[1] मोहोरी चीन के, बेल बनी मोती नंग ।
लाल नीली पीली चुनियाँ, सोभित कंचन संग ।। ७४

कै रंग इजार—बंध में, अनेक विधके नंग ।
सारी उमर बरनन करूँ, तो होए ना सुपन के अंग ।। ७५

एक एक रंग नाम लेत हों, रंग रंग में रंग अनेक ।
एकै इजार बंध में, क्यों कहूँ रंग नंग विवेक ।। ७६

याकी रंग सलूकी क्यों कहूँ, बका धनीके चरन ।
लांक तली रंग सोभित, ग्रहूँ रूह के अन्तस करन ।। ७७

देखूं रंग चरन अंगूठें, और सलूकी कहूँ क्यों कर ।
नख उतरते छोटे छोटे, सोभा लेत अंगुरियों पर ।। ७८

पोहोंचे सोभित रंग सुंदर, टांकन घूंटी कांड़े कोमल ।
लांक एड़ी पीड़ी पकड़, बेर बेर जाऊँ बल बल ।। ७९

ए चरन नख अति सोभित, जानों तेज पुंज भर पूर ।
लेहेरें लगें आकास को, नेहेरें चलत तेज नूर ।। ८०

अब जो भूषन चरन के, हेम झांझर घूंघर कड़ी ।
अनेक रंग नंग झलकें, जानों के जवेर जड़ी ।। ८१

जड़ी न घड़ी समारी किने, ए तो कायम सदा असल ।
नई न पुरानी अरस में, इत होत न चल विचल ।। ८२

जरी जवेर रंग रेसम, नकस बेल फूल पात ।
ए सिनगार सोभा कही इन जुबां, पर सब्द न इत समात ।। ८३

अब जो वस्तर भूषन का, क्यों कर होए वरनन ।
इत अकल न पोहोंचत, और ठौर नहीं बोलन ।। ८४

ए भूषन अरस जवेर के, हक सूरत के अंग ।
कहा कहे रूह इन जुबां, रंग रेसम सोबरन नंग ।। ८५

---

१. नाड़ा डालने का स्थान ।

आसक इन चरन की, अरस मेला रूहन ।
ए खिलवत खाना गैबका, जिन इत किया रोसन ॥ ८६

चरन तली ना छूटत, रंग लाल लिए उज्जल ।
ताए क्यों कहिए आसक, जो इतथें जाए चल ॥ ८७

पांउ तले पड़ी रहे, याको इतहीं खान पान ।
एही दीदार दोस्ती कायम, जो होए अरवा अरस सुभान ॥ ८८

इतहीं जगात इत जारत, इत बंदगी परहेजी जान ।
और आसक न रखे या बिना, इतहीं होवे कुरबान ॥ ८९

खाना दीदार इनका, या सों जीवे लेवे स्वांस ।
दोस्ती इन सरूप की, तिनसे मिटत प्यास ॥ ९०

हक खिलवत जाहेर करी, इत सेजदा हैयात ।
इतहीं *इमाम इमामत, इतहीं महंमद सिफात ॥ ९१

कोई खाली न गया इन खिलवतें, कछू लिया हकका भेद ।
सो कहूँ जाए ना सके, पड़्या इस्क के कैद ॥ ९२

आसक पकड़े जो दावन, सो छूटे नहीं क्योंए कर ।
देखत देखत चीन लगे, तोलों जात निकस उमर ॥ ९३

बोहोत अटकाव है आसक, कछू सेवा भी किया चाहे ।
ए तो बरनन सिनगार, सेवा उमंग रही भराए ॥ ९४

जो कदी कमर अटकी, तो आसक न छोड़े ए ।
ए लाँक पटुका छोड़के, जाए न सके उर ले ॥ ९५

जो दिल हक का देखिए, तो पूरा इस्क का पुंज ।
क्यों छोड़े आसक इनको, हक दिल इस्क गंज ॥ ९६

मोमन दिल अरस कह्या, सो अरस हक का घर ।
इस्क प्याले हक फूल के, देत भर भर अपनी नजर ॥ ९७

इस्क सुराही लेयके, आए बैठे दिल पर ।
इस्क प्याले आसिकों, हक देत आप भर भर ॥ ९८

जो कदी आवे मस्ती में, तो एक प्याला देवे गिराए ।
सराब तहूरा ऐसा चढ़े, दिल तबहीं देवे फिराए ॥ ९९

जाए हक सराब पिलावत, आस बाँधत है सोए ।
वाको अरस सराब की, आवत है खुसबोए ॥१००

आई जो कदी खुसबोए, ए जो अरस की सराब ।
इन मद के चढ़ाव से, देवे तबहीं उड़ाए ख्वाब ॥१०१

आज लगे ढांप्या रह्या, हकें मोहोर करी तिन पर ।
सो अछूत प्याला फूल का, हकें खोल दिया मेहेर कर ॥१०२

एकों पिया एक पीवत हैं, एक प्याले पीवेंगे ।
खोल्या दरवाजा अरस का, वास्ते अरस अरवाहों के ॥१०३

अंग आसक उपले देख के, इतहीं रहे ललचाए ।
जो कदी पैठे गंज में, तो क्यों कर निकस्यो जाए ॥१०४

हस्त कमल को देखिए, तो अति खूबी कोमल ।
ए छोड़ आगे जाए ना सके, जो कोई आसक दिल ॥१०५

नख अंगुरियाँ निरखते, मुंदरियां अति झलकत ।
ए रंग रेखा क्यों छूटही, आसिक चित्त गलित ॥१०६

पोहोंची बाहें बाजू बंध, दोऊ निरखत नीके कर ।
एक नंग और फुंदन, चुभ रहत हैड़े अन्दर ॥१०७

हिरदे कमल अति कोमल, देख इन सरूप के अंग ।
जो आसक कहावे आपको, क्यों छोड़े इनको संग ॥१०८

हार कंठ गिरवान जो, अति सुन्दर सुखदाए ।
लाल लटकत मोती पर, ए सोभा छोड़ी न जाए ॥१०९

मुख सरूप अति सुंदर, क्यों कहूं सोभा मुख इन ।
एक अंग जो निरखिए, तो तितहीं थके बरनन ॥११०

छबि सरूप मुख छोड़ के, देख सकों न लांक अधुर ।
ए लाल की लालक क्यों कहूँ, जो अमृत अरस मधुर ॥१११

ए मुख अधुर लांक छोड़के, क्यों कर दंत लग जाए ।
देत नाम निमूना इतका, सो इन सरूपों क्यों सोभाए ॥११२

सो दंत अधुर लांक छोड़के, जाए न सकों लग गाल ।
सो गाल लाल मुख छोड़ के, आगूं नजर न सके चाल ॥११३

मुख नासिका देखत आसिक, सुंदर सोभा अतंत ।
नेत्र बीच निलाट तिलक, आसिक याही सों जीवत ॥११४

भृकुटी तिलक सोभा छोड़के, जाए न सकों लग कान ।
सो कान कोमल अति सुंदर, सुख पाइए हिरदे आन ॥११५

और भी खूबी कानन की, दिल दरदा देवे भान ।
जाको केहे लेऊँ पड़ उत्तर, कोई न सुख इन समान ॥११६

कहें सुनें बातें करें, ए जो अरस मेहेरबान ।
सो खिलवत सुख छोड़ के, लग जवाए नहीं नैन बान ॥११७

ए नैन बान सुभान के, क्यों छोड़ें रूह मोमन ।
ए नैन रस छोड़ आगे चले, रूहें नाम धरत हैं तिन ॥११८

नैन अनियारे अति तीखे, पल देत तारे चंचल ।
स्याम उज्जल लालक लिएँ, क्यों कहूं सुपन अकल ॥११९

नैन रसीले रंग भरे, खैंचत बंके मरोर ।
सो आसक रूह जाए ना सके, जाए लगें बान ए जोर ॥१२०

ए नेत्र रसीले निरखते, उपजत है सुख चैन ।
ए क्यों न्यारे होए नैन रूह के, सामी छोड़ नैन की सैन ॥१२१

जो चल जाए सारी उमर, तो क्यों छोड़िए सुख नैनन ।
इन सुख से क्यों अघाइए, आसिक अंतसकरन ॥१२२

निलवट सुंदर सुभान के, सोभा मीठी मुखारबिंद ।
ए छबि कही न जाए एक अंग की, ए तो सोभा सागर खावंद ॥१२३

हँसत सोभित हरवटी, दंत अधुर मुख लाल ।
आसिक से क्यों छूटही, सब अंग रंग रसाल ॥१२४

अति कोमल अंग किसोर, कायम अंग उनमद ।
ए छबि अंग आसिक के, पोहोंचत नाहीं सबद ॥१२५

मुख नासिका नेत्र भौंह, तिलक निलाट और कान ।
हाथ पाँउ अंग हैयड़ा, सब मुसकत केहेत मुख बान ॥१२६

जो आसिक इन मासूक की, सो अटक रहे एकै अंग ।
और अंग लग जाए ना सके, अंग एकै लग जाए रंग ॥१२७

देख बीड़ी मुख मोरत, रूह अंग उपजत सुख ।
पीऊं सराब लेऊँ मस्ती, ज्यों बलि बलि जाऊं इन मुख ॥१२८

ए छबि छोड़ के आसिक, क्यों कर आगे जाए ।
मोहि लेत मुख मासूक, सो चित्त रह्यो लुभाए ॥१२९

नैनों निलवट निरखते, देखी बनी सारंगी पाग ।
दुगदुगी कलंगी ए जोत, छबि रूह हिरदें रही लाग ॥१३०

होए बरनन चतुराई से, आसिक धरे ताको नाम ।
एक अंग छोड़ जाए और लगे, सो नाहीं आसक को काम ॥१३१

आसक कहिए हक की, जो लग रहे एकै ठौर ।
आसक ऐसी चाहिए, जो ले न सके अंग और ॥१३२

इन आसिक की नजरों, दिल एकै हुआ सागर ।
सो भीले याही सुख में, निकसे नहीं क्योंए कर ॥१३३

तो सोभा सारे सरूप की, क्यों कहे जुबां इन ।
लेहेरें नेहेरें पोहोंचे आकास लों, और ठौर न कोई मोमन ॥१३४

आसिक न लेवे दानाई, पर ए दानाई हक ।
इस्क आपे पीवहीं, औरों पिलावें बेसक ॥१३५

ए चतुराई हक की, और हकै का इलम ।
ए सुख इन सरूप के, देवें एही खसम ॥१३६

इन सरूप को बरनन, सो याही की चतुराए ।
याको आसिक जानिए, जो इतहीं रहे लपटाए ॥१३७

ए सुख इन सरूप को, और आसिक एही आराम ।
जोलों इस्क न आवही, तोलों इलम एही विश्राम ॥१३८

इस्क को सुख और है, और सुख इलम ।
पर न्यारी बात आसिक की, जिन जो देवें खसम ॥१३९

ए इलम ए इस्क, दोऊ इन हक को चाहें ।
पर जिनको हक जो देत हैं, सो लेवे सिर चढ़ाए ॥१४०

महामत कहें अपनी रूहन को, तुम जो अरवा अरस ।
सराब प्याले इस्क के, ल्यो प्याले पर प्याले सरस ॥१४१

॥ प्रकरण ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ ३४९ ॥

### श्री *ठकुरानीजी को सिनगार पेहेलो
#### मंगला चरन

बरनन करूँ *बड़ी रूह की, रूहें इन अंग का नूर ।
अरवाहें अरस में वाहेदत, सो सब इनका जहूर ॥ १

प्रथम लागूं दोऊ चरन को, धनी ए न छोड़ाइयो छिन ।
लांक तली लाल एड़ियां, मेरे जीव के एही जीवन ॥ २

सिफत नख कहूँ के अंगुरियों, के रंग पोहोंचे ऊपर टांकन ।
कहूं कोमलता किन जुबां, मेरे जीव के एही जीवन ॥ ३

रंग नरमाई सलूकी[1], अरस अंग चरन ।
बलि बलि जाऊँ देख देख के, मेरे जीव के एही जीवन ॥ ४

इन पांउ तलें पड़ी रहूँ, धनी नजर खोलो बातन ।
पल न बालूं[2] निरखूं[3] नेत्रे, मेरे जीव के एही जीवन ॥ ५

चारों जोड़े चरन के, और अनवट[4] बिछिया[5] रोसन ।
बानी मीठी नरमाई जोत धरे, मेरे जीव के एही जीवन ॥ ६

प्यारे मेरे प्रान के, मोहे पल छोड़ो जिन ।
मैं पाई मेहेर मेहेबूब की, मेरे जीव से एही जीवन ॥ ७

---

१. मेल । २. झुकाऊँ । ३. देखूं । ४. पांव के अंगूठे का आभूषण । ५. अंगुली का आभूषण ।

ए चरन पुतलियां नैन की, सो मैं राखूँ बीच तारन ।
पकड़ राखूं पल ढांप के, मेरे जीव के एही जीवन ॥ ८

मेरे मीठे मीठरड़े आतम के, सो चुभ रहे अन्तसकरन ।
रूह लागी मीठी नजरों, मेरे जीव के एही जीवन ॥ ९

ए चरन कमल अरस के, इनसे खुसबोए आवे वतन ।
ए तन बका अरस अजीम, मेरे जीव के एही जीवन ॥ १०

ए चरन निमख न छोड़िए, राखिए माहें नैनन ।
ए निसबत हक अरस की, मेरे जीव के एही जीवन ॥ ११

मेहेरें नेहेरें ल्याए चरन अन्दर, द्वार नूर पार खोले इन ।
मोहे पोहोंचाई बका मिने, मेरे जीव के एही जीवन ॥ १२

सोभा सिनगार अंग सुखकारी, मेरी रूह के कंठ भूखन ।
सब खूबियां मेरे इन सों, मेरे जीव के एही जीवन ॥ १३

ए मेहेर अलेखे असल, मेरे ताले[1] अरस के तन ।
क्यों न होए मोहे बुजरगियां, मेरे जीव के एही जीवन ॥ १४

चित्त खैंच लिया इन चरनों, मोहे सब बिध करी धंन धंन ।
ए सिफत करूँ क्यों इन जुबाँ, मेरे जीवके एही जीवन ॥ १५

ज्यों जानो त्यों मेहेबूब करो, ए सुख दिया न जाए दूजे किन ।
कहूँ तो जो दूजा कोई होवही, मेरे जीव के एही जीवन ॥ १६

क्यों कहूँ चरन की बुजरगियाँ, इत नहीं ठौर बोलन ।
ए पकड़ सरूप पूरा देत हैं, मेरे जीवके एही जीवन ॥ १७

करत चरन पूरी मेहेर, तिन सरूप आवत पूरन ।
प्यार पूरा ताए आवत, मेरे जीव के एही जीवन ॥ १८

ए चरन दिल आवें निसबतें, ए मता अरस रूहन ।
ए धनी के दिए क्यों छूटहीं, मेरे जीवके एही जीवन ॥ १९

---

१. भाग्य ।

धनी देवें सहूर सब बिध, तो नैनों निरखूं निसदिन ।
आठो जाम चौसठ घड़ी, मेरे जीवके एही जीवन ॥ २०

'महामत' चाहें इन चरन को, कर मनसा बाचा करमन ।
आए बैठे मेरे सब अंगों, मेरे जीवके एही जीवन ॥ २१

मंगला चरन संपूर्ण

ए रूह सरूप नहीं तत्वको, इनको अस्वारी मन ।
खान पान सुख सिनगार, ए होए रूह के चितवन ॥ २२

जो पेहेनावा अरस का, अचरज अदभुत जान ।
कहूँ दुनियां में किन बिध, किन कबहूँ न सुनियां कान ॥ २३

कंठ कान मुख नासिका, ए जो पेहेनत हैं भूखन ।
ए दुनियां ज्यों पेहेनत है, जिन जानो बिध इन ॥ २४

या वस्तर या भूखन, सकल अंग हाथ पाए ।
सो असल ऐसे ही देखत, जैसा रूह चित्त चाहे ॥ २५

अंग संग भूखन सदा, दिलके तालूक असल ।
ए सरूप सिनगार दिल चाहे, अरस में नाहीं नकल ॥ २६

ज्यों अंग त्यों बस्तर भूखन, होत हमेसा बने ।
दिल जैसा चाहे छिन में, तैसा आगूंहीं पेहेने ॥ २७

जाको नामै कायम, अखंड बका अपार ।
सोई भूल जानो अपनी, सोभा ल्याइए माहें सुमार ॥ २८

पेहेले सोभा कही सुभान की, सोई सोभा बड़ी रूह जान ।
नहीं जुदागी इनमें, जुगल किसोर परवान ॥ २९

हक सूरत को नूर है, जिन जानो अंग और ।
इनको नूर रूहें वाहेदत, कोई और न पाइए इन ठौर ॥ ३०

सोभा स्यामाजीय की, निपट अति सुंदर ।
अंतर पट खोल देखिए, दोऊ आवत एक नजर ॥ ३१

लाल साड़ी कटाब कै, कै छापे बेली नकस ।
क्यों कहूँ छेड़े किनार की, सोभित अति सरस ।। ३२
माहें जरी जवेर नंग कै, जानों आगूंहीं बने असल ।
जित जुगत जो चाहिए, सोभित अपनी मिसल ।। ३३
बेली किनार छेड़े बनी, सुंदर अति सोभित ।
कटाव फूल नकस कै, जुदी जुदी जड़ाव जुगत ।। ३४
ऐसे ही असल के, ना कछू बुने बस्तर ।
ऐसे ही भूखन बने, किन घड़े न घाट घड़तर ।। ३५
चोली स्याम जड़ाव नंग, माहें हेम जवेर अनेक ।
जड़तर कंठ उर बाहें, कहां लग कहूँ विवेक ।। ३६
जित बेली बनी चाहिए, और कांगरी फूल ।
कै नकस खजूरे बूटियां, चोली सोभित है इन सूल[1] ।। ३७
नंग हेम मिले तो कहूँ, जो किन जड़े होए जड़तर ।
नकस कटाव बेली तो कहूँ, जो किन बनाए होंए हाथों कर ।। ३८
चरनी नीली अतलस,[2] माहें अनेक बिध के रंग ।
चीन पर बेली नकस, बीच जरी बेल फूल नंग ।। ३९
क्यों कहूं किनारकी कांगरी, मानिक मोती सात नंग ।
हीरे लसनिए पांने पोखरे, माहें पाच कुंदन करें जंग ।। ४०
बस्तर धागा न सूझहीं, सरभर जरी नकस ।
वस्तर भरचों न बुन्यो किने, असल सबे एक रस ।। ४१
नवरंग इन नाड़ी मिने, कंचन धात उज्जल ।
ए केहेती हों सब अरस के, ए देखो दिल निरमल ।। ४२
क्या वस्तर क्या भूखन, चीज सबे सुखकार ।
खुसबोए रोसन नरमाई, इन बिध अरस सिनगार ।। ४३

---

१. विधि । २. शुद्ध रेशमी वस्त्र ।

सिर पर सोहे राखड़ी[1], जोत साड़ी में करे अपार ।
फिरते मोती माहें मानिक, पांने पोखरे दोऊ किनार ॥ ४४
ऊपर राखड़ी जो मानिक, क्यों देऊं इनकी मिसाल ।
आसमान जिमीके बीच में, होए गयो सब लाल ॥ ४५
कुंदन माहें धरे अति जोत, आकास न माए झलकार ।
बेन गूंथी तीन गोफने, जड़ित घूंघरी घमकार ॥ ४६
तीन रंग जरी फुंदन, गोफनड़े नंग जड़तर ।
बारीक नंग नीले नकस, ए बरनन होए क्यों कर ॥ ४७
पान सोहे सेंथे पर, माहें बेल कांगरी कटाव ।
हारें खजूरें बूटियां, मानो के जुगत जड़ाव ॥ ४८
सिर पटली मोती सरें, माहें पाच नंग के रंग ।
मोती सर सेंथे लग, नीले पीले लाल सेत नंग ॥ ४९
तिन नंगों के फूल बने, आगूं सिर पटली कांगरी ।
निलवट से ले राखड़ी, बीच लाल मांग भरी ॥ ५०
अदभुत सोभा ए बनी, कहूँ जो होवे और काँहि ।
ए देखेही बनत है, केहेनी में आवत नाँहि ॥ ५१
बेन गूंथी एक भांत सों, पीठ गौर ऊपर लेहेकत ।
देत देखाई साड़ी मिने, फिरती घूंघरड़ी घमकत ॥ ५२
चोली के बंध चारो बँधे, सोभित पीठ ऊपर ।
झलकत फुंदन चोली कांगरी, सोभा देखत साड़ी अंदर ॥ ५३
ए छबि पीठकी क्यों कहूँ, रंग गौर लांक सलूक ।
ए सोभा कहत सखत जीवरा, हुआ नहीं टूक टूक ॥ ५४
मुख चौक छबि निलवट बनी, क्यों कर कहूँ सिफत ।
सोभा अरस सरूप की, क्यों होए इन जुबां इत ॥ ५५

---

१. सिर का आभूषण ।

पाच हीरे मोती मानिक, बेना[1] चौक[2] टीका सोभित ।
सेंथे लाल तले मोती सरें, नूर रोसन तेज अतंत ॥ ५६
जड़ित पानड़ी[3] श्रवनों, लरें लाल मोती लटकत ।
ए जरी जोत कही न जावही, पांच नंग झलकत ॥ ५७
काजल रेखा तो कहूँ, जो होंए सुपन के नैन ।
ए स्याम सेत लाल असल, सदा सुखकारी सुख चैन ॥ ५८
ए तन नैन अरस के, नहीं और कोई देह ।
ए निरखो नैनों रूहके, भीगल प्रेम सनेह ॥ ५९
नैन तीखे अति अनियारे, सखी ए छबि कही न जाए ।
आधे घूँघट मासूक को, निरखत नैन तिरछाए ॥ ६०
सब अंग उमंग करत हैं, करने बात रेहेमान ।
दिल मासूक का देख के, खैंचत हैं प्रेम बान ॥ ६१
कहा कहूँ नूर तारन का, सेत लालक लिए ।
काजल रेखा अनियों पर, अंग असल ही दिए ॥ ६२
तिन तारन में जो पुतलियां, माहें नूर रंग रस ।
पीउ देखें प्यारी नैनों, साम सामी अरस परस ॥ ६३
चकलाई चंचलाई की, छवि होए नहीं बरनन ।
जो धनी देवें पट खोलके, तो तबहीं उड़े एह तन ॥ ६४
बंके भों भृकुटी लिए, सोभित गौर अंग ।
अंग अंग भूखन भूखन, करत माहों माहें जंग ॥ ६५
दोऊ जड़ाव अदभुत, सात रंग नंग झाल ।
सूक्षम झाल सोभा अति बड़ी, झांई उठत माहें गाल ॥ ६६
फूल झालों के मुख पर, सोभा लेत अति नंग ।
तिन नंगों जोत उठत है, तिनके अनेक तरंग ॥ ६७

१. (श्यामा) । २. मस्तक । ३. कर्ण आभूषण ।

ऊपर किनार साड़ी सोभित, लाल नीली पीली जर ।
छबि फब बनी कोई भांत की, सेंथे लवने भाल ऊपर ॥ ६८

ए जो कांगरी इन नंग की, सोभित माहें किनार ।
गौर निलवट स्याम केसों पर, जाए अंबर लगी झलकार ॥ ६९

सोभा कहूँ अंग माफक, इन सुपन जुबां अकल ।
सो क्यों पोहोंचे इन सरूप लों, जो बीच कायम बका असल ॥ ७०

गौर रंग अति गालों के, ए रंग जानें इनके तन ।
अचरज अदभुत वाही देखें, जो हैं अरस मोमन ॥ ७१

मुख चौक नेत्र नासिका, निहायत सोभा अतंत ।
मुरली नासिका तेज में, सोभे नंग मोती लटकत ॥ ७२

एक खसखस के दाने जेता, नंग रोसन अम्बर भराए ।
क्यों कहूँ नंग मुरलीय[1] के, ए जुबां इत क्यों पोहोंचाए ॥ ७३

हक के अंग का नूर है, ए जो अरस बका खावंद ।
ए छबि इन सरूप की, क्यों केहेसी मत मंद ॥ ७४

दंत लालक लिए मुख अधुर, क्यों कहूँ रंग ए लाल ।
जो कछू होवे पेहेचान, तो क्यों दीजे इन मिसाल ॥ ७५

सुंदर सरूप स्यामाजीय को, अखंड अरस सिनगार ।
रूह मुख निरख्यो चाहत, उर पर लटकत हार ॥ ७६

एक हार मोती निरमल, और मानिक जोत धरत ।
तीसरा हार लसनियां, सो सोभा लेत अतंत ॥ ७७

चौथा हार हीरन का, पांचमा सुंदर नीलवी ।
इन हारों बीच दुगदुगी, देखत सोभा अति भली ॥ ७८

क्यों कहूँ नंग दुगदुगी, ए पांचों सेन्या चढ़ाए ।
जंग करें माहें जुदे जुदे, पांचों अम्बर में न समाए ॥ ७९

---

१. नथ में लटकने का टीका ।

पांचो ऊपर हार हेम का, मुख मोती सिरे नीलवी ।
ए हार अति बिराजत, जड़तर चंपकली ॥ ८०

पाच पांने पुखराज, जरी माहें जड़ित ।
चंपकली का हार जो, उर ऊपर लटकत ॥ ८१

ऊपर चोली के कांठले, बेल लगत कांगरी ।
ऊपर चंपकलीय के, मोती मानिक पाने जरी ॥ ८२

पांच लरी चोड़ तिन पर, कंठ लग आई सोए ।
रंग नंग धात अरस के, इन जुबां सिफत क्यों होए ॥ ८३

सात हार के फुमक, जगमगे सातो रंग ।
मूल बंध बेनी तले, बन रहे ऊपर अंग ॥ ८४

बाजू बंध दोऊ बने, जरी फुमक लटकत ।
हीरे लसनिएँ नीलवी, देख देख रूह अटकत ॥ ८५

नव रतन नंग चूड़[1] के, अरस धात न सोभा सुमार ।
चूड़ जोत जो करत है, आकास न माए झलकार ॥ ८६

नव रंग रतन चूड़ के, जुदी जुदी चूड़ी झलकत ।
जोत सों जोत लरत हैं, सोभा अरस कहूँ क्यों इत ॥ ८७

अतंत जोत इन धात में, इन नंग में जोत अतंत ।
अतंत जोत रंग रेसम, तीनों नरमाई एक सिफत ॥ ८८

कंचन जड़ित जो कंकनी, माहें बाजत झनझनकार ।
बेल फूल नकस जड़े, झलकत चूड़ किनार ॥ ८९

निरमल पोहोंची नवघरी, पांच पांच दोऊ के नंग ।
अरस रसायन में जड़े, करत मिनो मिने जंग ॥ ९०

हथेली लीकें क्यों कहूं, नरम हाथ उज्जल ।
रंग पोहोंचे का क्यों कहूं, इत जुबां न सके चल ॥ ९१

---

१. चूड़ी ।

पांच अंगुरियां पतली, जुदी जुदी पांचो जिनस ।
अरस अंग की क्यों कहूँ, उज्जल लाल रंग रस ॥ ९२

आठ रंग के नंग की, पेहेरी जो मुंदरी ।
एक कंचन एक आरसी, सोभित दसों अंगुरी ॥ ९३

मानिक मोती लसनिएँ, पाच पांने पुखराज ।
गोमादिक और नीलवी, आठों अंगुरी रही बिराज ॥ ९४

अंगूठे हीरे की आरसी, दसमी जड़ित अति सार ।
ए जो दरपन माहें देखत, अम्बर न माए झलकार ॥ ९५

नख निमूना देऊँ हीरों का, सो मैं दिया न जाए ।
एक नख जरे की जोत तले, कै कोट सूरज ढ़ंपाए ॥ ९६

अब कहूँ चरन कमल की, जो अरस रूहों के जीवन ।
बसत हमेसा चरन तले, जो अरवा अरस के तन ॥ ९७

चरन तली अति कोमल, रंग लाल लांके दोए ।
मीहीं रेखा माहें कै बिध, ए बरनन कैसे होए ॥ ९८

ए जो सलूकी चरनकी, निपट सोभा सुंदर ।
जो कोई अरवा अरस की, चुभ रहत हैड़े अन्दर ॥ ९९

कोई नाहीं इनका निमूना, पोहोंचे अति सोभित ।
टांकन घूंटी कांड़े एड़ियां, पांउं तली अति झलकत ॥१००

छबि फब सब देख के, इन चरन तले बसत ।
ए सुख अरस रूहें जानहीं, जिनकी ए निसबत[1] ॥१०१

चारों जोड़े चरन के, झांझर घूंघर कड़ी ।
कांबिएं नंग अरस के, जानों के चारों जोड़े जड़ी ॥१०२

नंग नीले पीले झांझरी, और मोती मानिक पाने जरी ।
निरमल नाके कंचन, रंग लाल लिए घूंघरी ॥१०३

---

१. सम्बन्ध ।

गांठे बाले रसायन सो, अरस के पांचो नंग ।
घूंघरी नाकों बीच पीपर[1], फुमक करत जवेरों जंग ॥१०४
हीरे लसनिएँ हेम में, कड़ो जोत झलकत ।
नीलवी कुंदन कांबिए, जानों जोत एही अतंत ॥१०५
बोलत बानी माधुरी, चलत होत रनकार ।
खुसबोए तेज नरमाई, जोत को नाहीं पार ॥१०६
अंगुरिएँ अनवट बिछिया, पांने मानिक मोती सार ।
स्वर मीठे बाजत चलते, करत हैं ठमकार ॥१०७
नख अंगूठे अंगुरियाँ, अम्बर न माए झलकार ।
ढांपत कोटक सूरज, और सीतलता सुखकार ॥१०८
एक नख के तेज सों, ढांपत कें कोट सूर ।
जो कहूँ कोटान कोटक, तो न आवे एक नख के नूर ॥१०९
कोई भांत तरह जो अरस कीं, पेट पांसे उर अंग सब ।
हाथ पांउं कंठ मुख की, किन बिध कहूं ए छब ॥११०
कोनी कलाई अंगुरी, पेट पांसे उर खभे ।
हाथ पांउं पीठ मुख छब, हक नूर के अंग सबे ॥१११
मैं सोभा बरनों इन जुबाँ, ले मसाला इत का ।
सो क्यों पोहोंचे इन सांईं कों, जो बीच अरस बका ॥११२
बीड़ी सोभित मुख में, मोरत लाल तंबोल ।
सोभा इन सूरत की, नहीं पटंतर तौल ॥११३
सूक्षम बय उनमद अंगे, सोभा लेत किसोर ।
बका बय कबूं न बदले, प्रेम सनेह भर जोर ॥११४
नाम लेत इन सरूप को, सुपन देह उड़जाए ।
जोलों रूह ना इस्क, तोलों कहत बनाए ॥११५

---

१. एक आभूषण ।

कोटान कोट बेर इन मुख पर, निरख निरख बलि जाऊँ ।
ए सुख कहूँ मैं तिन आगे, अपनी रूह अरस की पाऊँ ॥११६

मुख छबि अति बिराजत, सोभित सब सिनगार ।
देख अंगूठे आरसी, भूखन करत झलकार ॥११७

भौ भृकुटी नैन मुख नासिका, हरवटी अधुर गाल कान ।
हाथ पांउ उर कंठ हँसें, सब नाचत मिलन सुभान ॥११८

तेज जोत प्रकास में, सोभा सुंदरता अनेक ।
कहा कहूँ मुखारबिंदकी, नेक नेक से नेक ॥११९

श्रवन कंठ हाथ पांउ के, भूखन सोभित अपार ।
एक भूखन नकस कै रंग, रूह कहा करे दिल विचार ॥१२०

नेक सिनगार कह्या इन जुबां, क्यों बरनवाए सुख ए ।
ए सोभा न आवे सबद में, नेक कह्या वास्ते रूहों के ॥१२१

मीठी जुबां स्वर बान मुख, बोलत लिए अति प्रेम ।
पीउसों बातें मुख हँसें, लिए करें मरजादा नेम ॥१२२

सामी सैन देत सुख चैन की, उतपत अंग अतंत ।
कोमल हिरदे अति विचार, क्यों कहूँ नरमाई सिफत ॥१२३

चातुरी गति की क्यों कहूं, सब बोले चाले सुध होत ।
अव्वल इस्क सब खूबियां, हकके अंग की जोत ॥१२४

मुख मीठी अति रसना, चुभ रहत रूहके माँहि ।
सो जानें रूहें अरस की, न आवे केहेनी में कांहि ॥१२५

क्यों कहूं गति चलन की, जो स्यामाजी पांउ भरत ।
नाहीं निमूना इनको, जो गति स्यामाजी चलत ॥१२६

बलि बलि जाऊं चाल गति की, भूखन तेज करे झलकार ।
गिर्दवाए मिलावा रूहनका, सब सोभा साज सिनगार ॥१२७

सोभा बड़ी सब रूहों की, सब के बस्तर भूखन ।
जोत न माए आकासमें, यों घेर चली रोसन ॥१२८

अरस मिलावा ले चली, अपने संग सुभान ।
किया चाह्या सब दिलका, आगूं आए लिए मेहेरबान ॥१२९

ए सोभा जुगल किसोर की, चौथा सागर सुख ।
जो हक तोहे हिंमत देवहीं, तो पी प्याले हो सनमुख ॥१३०

जुगल के सुख केते कहूँ, जो देत खिलवत कर हेत ।
सो सुख इन नेहेरन सो, धनी फेर फेर तोकों देत ॥१३१

ए बानी सुपन में, और सुपने में करी सिफत ।
सो क्यों पोहोंचे सोभा जुगल को, सुपन कौन निसबत ॥१३२

सबद न पोहोंचे सुभानको, तो क्यों रहों चुप कर ।
दिल कान जुबां ले चलत, हक तरफ बांध नजर ॥१३३

एते दिन ढांपे रहे, किन कही ना हकीकत ।
जो अजूं न बोलत दुनी में, तो जाहेर होए ना हक सूरत ॥१३४

ए द्वार दुनीमें क्यों खोलिए, ए जो गैब हक खिलवत ।
सो द्वार खोले में हुकमें, अरस बका हक मारफत ॥१३५

दुनियां से ढांपे रहे, अरस बका एते दिन ।
रहत अब भी ढांपिया, जो करे ना रूह रोसन ॥१३६

ए खोलें बड़ा सुख होत है, मेरी रूह और रूहन ।
इनसे हैयाती[1] पावहीं, चौदे तबक त्रैगुन ॥१३७

क्यामत सरत पोहोंचे बिना, तो ढांपे रहे एते दिन ।
हकें आखर अपने कौल पर, किए जाहेर आगूं रूहन ॥१३८

ए जो कहे में सरूप, जुगल किसोर अनूप ।
दे साहेदी महंमद रूहअल्ला, किए जाहेर अरस सरूप ॥१३९

एही लैलत कदरकी फजर, ऊग्या बका दिन रोसन ।
हक खिलवत जाहेर करी, अरस पोहोंचे हादी मोमन ॥१४०

१. मोक्ष ।

महामत कहें अपनी रूहको, और अरस रूहन ।
इन सुख सागर में झीलते,[1] आओ अपने वतन ।।१४१

।। प्रकरण ।। ६ ।। चौपाई ।। ४६० ।।

## चौसठ थंभ चौक खिलवत का बेवरा

इन बिध साथजी जागिए, बताए देऊं रे जीवन ।
स्याम स्यामाजी साथजी, जित बैठे चौक वतन ।। १

याद करो सोई साइत, जो हँसने माग्या खेल ।
सो खेल खुसाली लेय के, उठो कीजे केल ।। २

सुरत एकै राखिए, मूल मिलावे माहिं ।
स्याम स्यामाजी साथजी, तले भोम बैठे हैं जाँहिं ।। ३

चौसठ थंभ चबूतरा, इत कठेड़ा विराजत ।
तले गिलम ऊपर चंद्रवा, चौसठ थंभों भर इत ।। ४

कठेड़ा किनार पर, चबूतरे गृदवाए ।
सोले थंभों लगता, ए जुगत अति सोभाए ।। ५

चार द्वार चारों तरफों, और कठेड़ा सब पर ।
चौसठ थंभों के बीच में, गिलम[2] बिछाई भर कर ।। ६

कहूं चौसठ थंभों का बेवरा, चार धात बारे नंग ।
बने चारों तरफों जुदे जुदे, भए सोले जिनसों रंग ।। ७

चारों तरफों एक एक रंग के, तैसी तरफों चार ।
नए नए रंग एक दूजे संग, चारों तरफों चौसठ सुमार ।। ८

ए चार नाम कहे धात के, हेम कंचन चांदी नूर ।
ए चार रंग का बेवरा, लिए खड़े जहूर ।। ९

और बारे जवेरों का बेवरा, पाच पाने हीरे पुखराज ।
मानिक मोती गोमादिक, रहे पिरोजे बिराज ।। १०

---

१. क्रीड़ा करना । २. कालीन ।

नीलवी और लसनियां, और परवाली लाल ।
और रंग कपूरिए, ए रंग बारे इन मिसाल ।। ११
चार द्वार चार रंग के, आठ थंभ भए जो इन ।
पाच मानिक और नीलवी, द्वार पुखराज चौथा रोसन ।। १२
और थंभ दोए पाच के, दोऊ तरफों नीलवी संग ।
द्वार नीलबी संग दोऊ पाच के, करें साम सामी जंग ।। १३
दो थंभ द्वार मानिक के, दोए पुखराज तिन पास ।
दो थंभ द्वार पुखराज के, ता संग मानिक करे प्रकास ।। १४
थंभ बारे भए इन विध, साम सामी एक एक ।
यों बारे बने साम सामो, तरफ चारों इन बिवेक ।। १५
हीरा लसनियां गोमादिक, मोती पाने परवाल ।
हेम चांदी थंभ नूर के, थंभ कंचन अति लाल ।। १६
पिरोजा और कपूरिया, याके आठ थंभ रंग दोए ।
गिन छोड़े दोए द्वार से, बने हर रंग चार चार सोए ।। १७
ए सोले थंभों का बेवरा, थंभ चार चार एक रंग के ।
सो चारों तरफों साम सामी, बने मिसल चौसठ ए ।। १८
चारों तरफों चंद्रवा, चौसठ थंभों के बीच ।
जोत करे सब जवेरों, जेता तले दुलीच ।। १९
माहें वृक्ष बेली कै कटाव, कै फूल पात नकस ।
देख जवेर जुगत कै चंद्रवा, जानों के अति सरस ।। २०
इन चौक बिछाई गिलम, तिन पर सिंघासन ।
चारों तरफों झलकत, जोत लेहेरी उठत किरन ।। २१
झलकत सुंदर गिलम, अति सोभित सिंघासन ।
यों जोत जमी जवेरन की, बीच जुगल जोत रोसन ।। २२
लाल तकिए ऊपर सोभित, धरे बराबर एक दोर ।
नरमों में अति नरम हैं, पसम भरे अति जोर ।। २३

जेता एक कठेड़ा, सबमें सुंदर तकिए ।
तिन तकियों साथ भराए के, बैठे एक दिली ले ॥ २४

जिन बिध बैठियां बीच में, वाही विध गृदवाए ।
तरफ चारों लग कठेड़े, बीच बैंठा साथ भराए ॥ २५

किरना उठें नई नई, सिंघासन की जोत ।
कै तरंग इन जोत के, नूर नंगों से होत ॥ २६

पाइए इन तखत के, उत्तम रंग कंचन ।
छे डांड़े छे पाइयों पर, अति सुंदर सिंघासन ॥ २७

दस रंग डांड़ों देखत, नए नए सोभित जे ।
हर तरफों रंग जुदे जुदे, दसों दिस देखत ए ॥ २८

एक तरफ देखत एक रंग, तरफ दूजी दूजा रंग ।
यों दसों दिस रंग देखत, तिन रंग रंग कै तरंग ॥ २९

तीन डांड़े जो पीछले, दो तकिए बीच तिन ।
कै रंग वृक्ष बेली बूटियां, ए कैसे होए बरनन ॥ ३०

चारों किनारें चढ़ती, दोरी बेली चढ़ती चार ।
चारों तरफों फूल चढ़ते, करत अति झलकार ॥ ३१

तिन डांड़ों पर छत्रियां, अति सोभित हैं दोए ।
माहें कै दोरी बेली कांगरी, क्यों कहूँ सोभा सोए ॥ ३२

दोए कलस दोए छत्रियों, छे कलस ऊपर डांड़न ।
आठों के अवकास में, करत जंग रोसन ॥ ३३

नकस फूल कटाव कै, कै तेज जोत जुगत ।
देख देख के देखिए, नैंना क्योंए न होंए त्रिपत ॥ ३४

चाकले[1] दोऊ पसमी, जोत जवेर नरम अपार ।
बैठे सुंदर सरूप दोऊ, देख देख जाऊँ बलिहार ॥ ३५

---

१. गद्देदार आसन ।

जरे जिमी की रोसनी, भराय रही आसमान ।
क्यों कहूँ जोत तखत की, जित बैठे बका सुभान ॥ ३६

बरनन करूं मैं इन जुबां, रंग नंग इतके नाम ।
ए सब्द तित पोहोंचे नहीं, पर कहे बिना भागे न हाम ॥ ३७

ए जवेर कै भांत के, सोभित भांत रूप कई ।
सो पल पल रूप प्रकास हीं, यों सकल जोत एक भई ॥ ३८

गिलम जोत फूल बेलियां, जोत ऊपर की आवे उलर ।
जोतें जोत सब मिल रही, ए रंग जुदे कहूँ क्यों कर ॥ ३९

ए मूल मिलावा अपना, नजर दीजे इत ।
पलक न पीछी फेरिए, ज्यों इस्क अंग उपजत ॥ ४०

जो मूल सरूप हैं अपने, जाको कहिए पर आतम ।
सो पर आतम लेय के, बिलसिए संग खसम ॥ ४१

'महामत' कहें ऐ मोमिनों, करूँ मूल सरूप बरनन ।
मेहेर करी मासूक ने, लीजो रूह के अन्तसकरन ॥ ४२

॥ प्रकरण ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ ५३२ ॥

## श्रीराजजी को सिनगार दूसरो—मंगला चरण

अरस तुमारा मेरा दिल है, तुम आए करो आराम ।
सेज बिछाई रुच रुच के, एही तुमारा विश्राम ॥ १

अरस कह्या दिल मोमन, अरस में सब बिसात ।
निमख न्यारी क्यों होए सके, रूह निसबत हक जात ॥ २

इस्क सुराई ले हाथ में, पिलाओ आठों जाम ।
अपनी अंगना जो अरस की, ताए दीजे अपनों ताम ॥ ३

इलम दिया आए अपना, भेजी साहेदी अल्ला कलाम ।
रूहें त्रिखावंती[1] हककी, सो चाहें धनी प्रेम काम ॥ ४

---

१. प्यासी ।

फुरमान ल्याया *दूसरा, जाको सुकजी नाम ।
दे तारतम ग्वाही ब्रह्मसृष्टि की, जो उतरी अव्वल से धाम ॥ ५

खिलवत खाना अरस का, बैठे बीच तखत स्यामा स्याम ।
मस्ती दीजे अपनी, ज्यों गलित होऊँ याही ठाम ॥ ६

तुम लिख्या फुरमान में, हक अरस[१] मोमन कलूब[२] ।
सो सुकन पालो अपना, तुम हो मेरे मेहेबूब ॥ ७

और भी लिख्या *समनून[३] को, हक दोस्ती में पातसाह ।
सो कौल पालो अपना, मैं देखूं मेहेबूब की राह ॥ ८

कहूँ अबलों जाहेर ना हुई, अरस बका हक सूरत ।
हिरदे आओ तो कहूँ, इत बैठो बीच तखत ॥ ९

ए वजूद न खूबी ख्वाब की, ए कदम हक बका के ।
ढूंढ़्या बुजरगों इप्तदाए से, इत जाहेर न हुए कबूं ए ॥ १०

उज्जल लाल तली पांउं की, रंग रस भरे कदम ।
छबि सलूकी अंग अरस की, रूह से छूटे क्यों दम ॥ ११

मीहीं लीकें चरनों तली, रूह के हिरदे से छूटत नाहिं ।
ए निसबत भई अरस की, लिखी रूह के ताले माहिं ॥ १२

नख अंगूठे अंगुरियां, सिफत न पोहोंचे सुकन ।
आसमान जिमी के बीच में, रूह याही में देखे रोसन ॥ १३

एक छोटे नख की रोसनी, ऐसा तिन का नूर ।
आसमान जिमी के बीच में, जिमी जरे जरा भई सब सूर ॥ १४

देख सलूकी अंगूठों, और अंगुरियों सलूकी ।
उतरती छोटी छोटेरी, जो हिरदे में छबि फबी ॥ १५

लाल नरम उज्जल अंगुरी, फना टांकन घूंटी काड़ों ।
आठो जाम रस बका, पोहोंचे रूह के तालू मों ॥ १६

---

१. सिंहासन (धाम) । २. दिल । ३. व्यक्ति विशेष ।

लाल लांकें लाल एड़ियां, पांउं तली अति उज्जल ।
ए पांउं बसत जिन हैयड़े, सोई आसिक दिल ॥ १७
बसत सुखाले नरमाई, आसमान लग रोसन ।
ए पांउं प्यारे मासूक के, जो कोई आसिक मोमन ॥ १८
आसिक बसत अरस तले, या बसे अरस के माँहि ।
ए खुसबोए मस्ती अरस की, निसदिन पीवे ताँहि ॥ १९
सुंदर सलूकी छबि सोभित, रंग रस प्यार भरे ।
सोई मोमन अरस दिल, जित इन हकें कदम धरे ॥ २०
ए सुख देत अरस के, कोई नाहीं निमूना इन ।
ए सुख जानें अरवा अरस की, निसबत हकसों जिन ॥ २१
रूहें इस्क मागें धनी पें, पकड़ धनी के कदम ।
जो छोड़े इन कदम को, सो क्यों कहिए आसिक खसम ॥ २२
नरम तली लाल उज्जल, आसिक एही जीवन ।
धनी जिन छोड़ाइयो कदम, जाहेर या बातन ॥ २३
प्यारे कदम राखों छाती मिने, और राखों नैनों पर ।
सिर ऊपर लिए फिरों, बैठो दिलको अरस कर ॥ २४
तखत धरचा हकें दिलमें, राखूं दिलके बीच नैनन ।
तिन नैनों बीच नैना रूहके, राखों तिन नैनों बीच तारन ॥ २५
तिन तारों बीच जो पुतली, तिन पुतलियों के नैनों माँहि ।
राखूं तिन नैनों बीच छिपाए के, कहूँ जाने न देऊँ काँहि ॥ २६
जाथें चरन जुदे होंए, सो आसिक खोले क्यों नैन ।
ए नैन कायम नूर जमाल के, जासों आसिक पावे सुख चैन ॥ २७
एक अंग छोड़ दूजे अंग को, क्यों आसिक लेने जाए ।
ए कदम छोड़े मासूक के, सो आसिक क्यों केहेलाए ॥ २८
एक रूह लगी एक अंग को, सो क्यों पकड़े अंग दोए ।
मासूक अंग दोऊ बराबर, क्यों छोड़े पकड़े अंग सोए ॥ २९

जो कोई अंग हलका लगे, और दूजा भारी होए ।
एक अंग छोड़ दूजा लेवहीं, पर आसिक न हलका कोए ।। ३०

दूजा अंग आया नहीं, तोलो एक अंग क्यों छूटत ।
यों और अंग ना ले सके, एकै अंग में गलित ।। ३१

जो आसिक भूखन पकड़े, सो भी छूटे न आसिक से ।
देख भूखन हक अंग के, आसिक सुख पावे यामें ।। ३२

हकके अंग के सुख जो, सो जड़ भी छोड़े नाहिं ।
तो क्यों छोड़े अरवा अरस की, हक अंग आया हिरदें माहिं ।। ३३

हेम नंग सब चेतन, अरस जिमी जड़ ना कोए ।
दिल चाह्या होत सब चीज का, चीज एकै से सब होए ।। ३४

सब रंग गुन एक चीज में, नरम जोत खुसबोए ।
सब गुन रखें हक वास्ते, सुख लेवें हक का सोए ।। ३५

आसिक एक अंग अटके, तिनको एह कारन ।
दोऊ अंग मासूक के, किन छोड़े लेवें किन ।। ३६

नूर बिना अंग कोई ना देख्या, और सब अंगों बरसत नूर ।
अम्बर में न समाए सके, इन अंगों का जहूर ।। ३७

एक अंग मासूक के कै रंग, तिन रंग रंग कै तरंग ।
एक लेहेरी पोहोंचावे उमर लग, यों छूटे न आसिक से अंग ।। ३८

जो कदी मेहेर करें मासूक, तो दूजा अंग देवें दिल आन ।
तो सुख लेवे सब अंग को, जो सब सुख देवें सुभान ।। ३९

जो कदीं आसिक खोले नैनको, पेहेलें हाथों पकड़े दोऊ पाए ।
ए नैन अंग नूर जमाल के, सो इन आसिक से क्यों जाए ।। ४०

मंगला चरण सम्पूर्ण

इजार जो नीली लाहि की, नेफा लाल अतलस ।
नेफे बेल मोहोरी कांगरी, क्यों कहूँ नंग जरी अरस ।। ४१

कांड़ों पर पीड़ी तले, मीहीं चूड़ी सोभित इजार ।
जोत करे माहें दावन, झांईं उठे झलकार ॥ ४२

इजार बंध नंग कै रंग, और कांगरी बेल माहिं ।
फूल पात के नकस, सब्द न पोहोंचे ताहिं ॥ ४३

कै रंग नंग माहें रेसम, रंग नंग धागा न सूझत ।
हाथ को कछू लगे नहीं, नरम जोत अतंत ॥ ४४

अतंत नाड़ी फुंदन, जोत को नाहीं पार ।
एही जानों भूल अपनी, सोभा ल्याइए माहिं सुमार ॥ ४५

रंग नीला कह्या इजार का, कै रंग नंग इनमों ।
तेज जोत जो झलकत, और कछू लगे न हाथ को ॥ ४६

सब अंग पीछे कहूँगी, पेहेले कहूँ पाग बाँधी जे ।
सिफत न पोहोंचे अंग को, तोभी कह्या चाहे रूह ए ॥ ४७

हाथों पाग बाँधी तो कहिए, जो हुकमें न होवे ए ।
कै कोट पाग बनें पल में, जिन समे दिल चाहें जे ॥ ४८

पर हकें बांधी पाग रुच के, नरम हाथों पेच फिराए ।
आसिक देखे बांधते, अतंत रूह सुखपाए ॥ ४९

इन बिध सब सिनगार, कहियत इन जुबांए ।
तो कह्या फना का सबद, बका को पोहोंचत नाहें ॥ ५०

चुप किए भी ना बने, जाको ए ताम[1] दिया खसम ।
तार्थे ज्यों त्यों कह्या चाहिए, सो कहावत हक हुकम ॥ ५१

बांधी पाग समार के, हाथ नरम उज्जल लाल ।
इन पाग की सोभा क्यों कहूँ, मेरा साहेब नूरजमाल ॥ ५२

लाल पाग बांधी लटकती, कछू ए छबि कही न जाए ।
पेच दिए कै बिध के, हिरदेसों चित्त ल्याए ॥ ५३

---

१. खुराक ।

पाग बनाई कोई भांत की, बीच में कटाव फूल ।
बीच बेली बीच कांगरी, रूह देख देख होए सनकूल ।। ५४

जो आधा फूल एक पेच में, आवे दूजे पेचका मिल ।
यों बनी बेल फूल पाग की, देख देख जाऊं बल बल ।। ५५

कै रंग नंग फूल पाग में, ए जिनस न आवे जुबांए ।
न आवे सुख केहेनी मिने, जो रूह देखे हिरदे माहिं ।। ५६

पाग बांधी कोई तरह की, जो तरह हक दिल में ल्याए ।
बलि बलि जाऊँ तिन पर, जिन दिल पेच फिराए ।। ५७

पाग ऊपर जो दुगदुगी, ए जो बनी सब पर ।
जोत हीरा पोहोंचे आकास लों, पीछे पाच रहे क्यों कर ।। ५८

मानिक तहां मिलत है, पोहोंचत तित पुखराज ।
नीलवी तो तेज आसमानी, उत पांचो रहे बिराज ।। ५९

कांध पीछे केस नूर झलके, लिए पाग में पेच बनाए ।
गौर पीठ सुध सलूकी, जुबां सके ना सिफत पोहोंचाए ।। ६०

कंठ खभे[1] दोऊ बांहोंड़ी, पेट पांसली बीच हैड़ा ।
रूह मेरी इत अटके, देख छबि रंग रस भरया ।। ६१

मच्छे[2] दोऊ बाजूअ के, सलूकी अति सोभित ।
रंग छबि कोमल दिल की, आसिक हैड़े बसत ।। ६२

हस्त कमल की क्यों कहूँ, पोहोंचे हथेली के रंग ।
लाल उज्जल रंग केहेत हों, इन रंग में कै तरङ्ग ।। ६३

कोनी[3] कांड़े कलाइयां, रङ्ग नरमाई सलूक ।
ऐसा सखत मेरा जीवरा, और होवे तो होए टूक टूक ।। ६४

ना तेहेकीक[4] होवे रङ्ग की, ना छवि होवे तेहेकीक ।
क्यों कहूँ बीसो अगुरियां, और मींहीं हथेलियां लीक ।। ६५

---

१. कन्धे । २. पुट्ठे, बाजू का ऊपरी भाग । ३. कोहनी । ४. निश्चय ।

नरम अंगुरियां पतली, लगें मीठी मूठ बालत ।
ए कोमलता क्यों कहूँ, जिन छबि अंगुरी खोलत ॥ ६६

क्यों देऊँ निमूना नख का, इन अंगों नख का नूर ।
दे न देखाई कछुए, जो होवें कोटक सूर ॥ ६७

अब देखो पेट पांसली, और लांक[1] चलत लेहेकत ।
ए सोभा सलूकी लेऊँ रूह में, तो भी उड़े न जीवरा सखत ॥ ६८

देख हरवटी अति सुंदर, और लाल गाल गौर ।
लांक अधुर बीच हरवटी, क्यों कहूं नूर जहूर ॥ ६९

गाल सोभा अति देत हैं, क्यों कहूं इन मुख छब ।
उज्जल लाल रङ्ग सुंदर, क्यों कहूं सलूकी फब ॥ ७०

कानन की किन विध कहूं, जो सुने आसिक के बैन ।
सो सुन देवें पड़उत्तर, ज्यों आसिक पावें सुख चैन ॥ ७१

मुख दंत लाल अधुर छब, मधुरी बोलत मुख बान ।
खेंच लेत अरवाह को, ए जो बानी अरस सुभान ॥ ७२

नैन अनियारे बंकी छबि, चंचल चपल रसाल ।
बान बंके मारत खैंच के, छाती छेद निकसत भाल ॥ ७३

लाल तिलक निलवट दिए, अति सुंदर सुखदाए ।
असल बन्या ऐसा ही, कै नई नई जोत देखाए ॥ ७४

नैंन कान मुख नासिका, रङ्ग रस भरे जोवन ।
हाथ पांउं कंठ हैयड़ा, सब चढ़ते देखे रोसन ॥ ७५

नख सिख बंध बंध सब अंग, मानों सब चढ़ते चंचल ।
छबि फब सोभा सुन्दर, तेज जोत अंग सब बल ॥ ७६

सुन्दर ललित कोमल, देख देख सब अंग ।
तेज जोत नूर सब चढ़ते, सब देखत रस भरे रङ्ग ॥ ७७

---

१. कमर, (गहराई) ।

कंठ कोमल दिल हैयड़ा, अति उज्जल छाती सुन्दर ।
चढ़ते इस्क अंग अधिक, ऐसा 'चुभ्या रूह के अन्दर ॥ ७८

इतथें रूह क्यों निकसे, जो इन मासूक की आसिक ।
छोड़ छाती आगे जाए ना सके, मार डारत मुतलक[1] ॥ ७९

जिन बिध की ए इजार, तापर लग बैठा दावन ।
सेत रंग दावन देखिए, आगूं इजार रंग रोसन ॥ ८०

गौर रंग जामा उज्जल, जुड़ बैठा अंग ऊपर ।
अति बिराज्या इन बिध, ए खूबी कहूँ क्यों कर ॥ ८१

ए जुगत जामें की क्यों कहूं, झलकत है चहूं ओर ।
बांहें चोली और दावन सोभा देत सब ठौर ॥ ८२

पीछे कटाव जो कोतकीं[2], रंग नंग जरी झलकत ।
चीन मोहोरी दोऊ हाथ की, ए सुन्दर जोत अतंत ॥ ८३

बेल नकस दोऊ बगलों, और बेल गिरवान बंध ।
चूड़ी समारी बांहन की, क्यों कहूं सोभा सनंध ॥ ८४

छोटी बड़ी न जाड़ी पतली, सबे बनी एक रास ।
उतरती मिही मिहीं से, जुबां क्या कहे खूबी खास ॥ ८५

पीला पटुका कमरें, रंग नंग छेड़े किनार ।
बेल पात फूल नकस, होत आकास उद्योत कार ॥ ८६

लाल नीले सेत स्याम रंग, किनार बेल कटाव ।
सात रंग छेड़ों मिने, क्यों कहूँ जुगत जड़ाव ॥ ८७

पाच पांने मोती नीलवी, हीरे पोखरे मानिक नंग ।
बेल कटाव कै नकस, कहूँ गरभित केते रंग ॥ ८८

जामें में झांईं झलकत, हरे रंग इजार ।
लाल बंध और फुंदन, कै रंग नंग अपार ॥ ८९

---

१. बिल्कुल । २. पीठ पर फूल ।

कहूँ अंगों का बेवरा, जुदे जुदे भूखन ।
ए जो जवेर अरस के, कहूँ पेहेले भूखन चरन ॥ ९०

चारों जोड़े चरन के, नरमाई सुगंध सुखकार ।
बानी मधुरी बोलत, सोभा और झलकार ॥ ९१

भूखन मेरे धनीय के, किन बिध कहूँ जो ए ।
के कहूँ खूबी नरमाई की, के कहूँ अम्बार तेज के ॥ ९२

एक नंग के कै रंग, सोभे झन बाजे झांझर ।
पांच नंग रंग एक के, अति मीठी बोले घूंघर ॥ ९३

नाके वाले जवेर के, माहें नरम जोत गुन दोए ।
तीसरी बानी माधुरी, चौथा गुन खुसबोए ॥ ९४

सोई पांच रंग एक नंग में, तिनकी बनी जो कड़ी ।
देत देखाई रंग नंग जुदे, जानों किन घड़के जड़ी ॥ ९५

कांबी एक जवेर की, तामें झीने रंग नंग दस ।
दिल चाहे भूखन सब बने, सो हक भूखन ए अरस ॥ ९६

मैं देखे जवेर अरस के, ज्यों हेम भूखन होत इत ।
कै रंग नंग मिलाए के, बहु बिध भूखन जड़ित ॥ ९७

किन जड़े घड़े ना समारे, भूखन आबत दिल चाहे ।
अरस जवेर कंचन ज्यों, जानों असल ऐसे ही बनाए ॥ ९८

दस रंग के जवेर की, माहें कै नकस मुंदरी ।
दोए अंगूठी अंगूठों, आठों जिनस आठ अंगुरी ॥ ९९

ए नरम अगुरियां अतंत, नख सोभित तेज अपार ।
ए देखो भूल अकल की, सोभा ल्याइए माहें सुमार ॥१००

पोहोंचे और हथेलियां, केहे न सकों सलूकी ए ।
छबि रंग देख हाथन की, बलि बलि जाऊँ इनके ॥१०१

कड़ियां दोऊ कांड़ों सोहें, सोभा तेज धरत ।
लाल नंग नीले आसमानीं, जोत अवकास भरत ॥१०२

पोहोंची पांचो नंग की, जुबां केहे न सके जिनस ।
पाच पांने मोती नीलवी, लरें हीरे अति सरस ॥१०३

बाजू बंध की क्यों कहूँ, जो बिराजे बाजू पर ।
कै मीहीं नकस कटाव, जोत भरी जिमी अम्बर ॥१०४

एक नंग एक रंग का, एक रंग नंग अनेक ।
इन बिध के अरस भूखन, सो कहां लो कहूँ विवेक ॥१०५

पांच रंग जरी फुंदन, सोभा लेत अतंत ।
पांच रंग जवेर झलके, फुंदन सोहे लटकत ॥१०६

नरम जोत खुसबोए, दिल चाही सोभाए ।
कै विध सुख लेवें हकके, सुख भूखन कहें न जाएं ॥१०७

बीच हार मानिक का, और हीरों हार उज्जल ।
पाच मोती और नीलबी, लसनियां अति निरमल ॥१०८

और निरमल मांहें दुगदुगी, तामें नंग करत अति बल ।
बीच हीरा छे गृदवाए, जोत आकास किया उज्जल ॥१०९

गौर गलस्थल धनीय के, उज्जल लाल सुरंग ।
झांई उठे इन नूर में, करन फूल के नंग ॥११०

निरख नासिका धनी को, लटके मोती पर लाल ।
लेत अमी रस अधुर पर, रस अमृत रंग गुलाल ॥१११

करन फूल की क्यों कहूँ, उठत किरन कै रंग ।
तिन नंग रंग कै भासत, रंग रंग में कै तरंग ॥११२

करत मानिक माहें लालक, हीरे मोती सेत उजास ।
और पाच करत है नीलक, लेत लेहेरी जोत आकास ॥११३

तेज भी मानिक तित मिले, पोहोंचत तित पुखराज ।
नीलवी तो तेज आसमानी, रहे रंग नंग पांचों विराज ॥११४

पाँच फूल कलंगी पर, उपरा ऊपर लटकत ।
कोई ऐसी कुदरत नूर की, लेहेरी आकास में झलकत ॥११५

एता इन कलंगी मिने, एकै हीरे का नूर ।
आसमान जिमी के बीच में, मानों कोटक ऊगे बका सूर ॥११६

जंग जवेर करत हैं, आसमान देखिए जब ।
लरत बीच आकास में, नजरों आवत है तब ॥११७

कहें 'महामत' अरवा अरस से, जो कोई आई होए उतर ।
सो इन सरूप के चरन लेय के, चलिए अपने घर ॥११८

॥ प्रकरण ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ ६५० ॥

### श्री ठकुरानीजीका सिनगार दूसरा—मंगला चरण

बरनन करूँ बड़ी रूह की, जोहक नूर का अंग ।
रूहें नूर इन अंग के, जो हमेसा सब संग ॥ १

हक जात अंग अरस का, क्यों कर बरनन होए ।
इन सरूप को सुपन भोम का, शब्द न पोहोंचे कोए ॥ २

किन देख्या सुन्या न तरफ पाई, तो क्यों दुनियां सुन्या जाए ।
जो अरवा होसी अरस की, सो सुन के सुख पाए ॥ ३

मेरी रूह चाहे बरनन करूँ, होए ना बिना अरस इलम ।
बस्तर भूखन अरस के, इत पोहोंचे ना सुपन का दम ॥ ४

पेहेने उतारे इन जिमी, नहीं अरस में चल बिचल ।
इत नकल कोई है नहीं, अरस वाहेदत सदा असल ॥ ५

घट बढ़ अरस में है नहीं, मिटे न कबूं रोसन ।
तिन सरूप को इन मुख, क्यों कर होए बरनन ॥ ६

एक पेहेर दूजा उतारना, तब तो घट बढ़ होए ।
जब जैसा जित चित चाहे, तब तित तैसा बनत सोए ॥ ७

अरस अरवा चाहे दिल में, सो होए माहें पल एक ।
जिन अंग जैसा वस्तर, होए छिन में कै अनेक ॥ ८

सुन्दर सरूप सोभा लिए, सिनगार बस्तर भूखन ।
रस रंग छबि सलूकी, चाहे रूह के अन्तसकरन ॥ ९

बस्तर भूखन अंग अरस के, सो सबे हैं चेतन ।
सब सुख देवें रूह को, तो क्यों न देवें नैन श्रवन ।। १०
नया सिनगार साजत, तब तो नया पेहेन्या कह्या जात ।
नया पुराना अरस में नहीं, पर पोहोंचे न इतकी बात ।। ११
जो सिफत बड़ी चित्त लीजिए, बड़ी अकल सो जान ।
फना बका को क्या कहे, तार्थे पोहोंचत नहीं जुबांन ।। १२
तो भी रूह मेरी ना रहे, हक बरनन किया चाहे ।
हक इलम आया मुझपें, सो या बिन रह्यो न जाए ।। १३
ना तो बैठ झूठी जिमी में, ए बका बरनन क्यों होए ।
इलम हुकम खैंचे रूह को, अकल जुबां कहे सोए ।। १४
यासों रूह सुख पावत, अरस रूहें पावें आराम ।
कहूँ सिखाई रूह अल्लाह की, ले साहेदी अल्ला कलाम ।। १५
हक इलम सिर लेय के, बरनन करूँ हक जात ।
रूह मेरी सुख पावही, हिरदे बसो दिन रात ।। १६
मोमन दिल अरस कह्या, सो अरस बसे जित हक ।
निसबत मेहेर जोस हुकम, और इस्क इलम बेसक ।। १७
ए बरकत हक अरस में, तो दिल अरस कह्या मोमन ।
तो बरनन होए वाहेदत का, जो यों दिल होए रोसन ।। १८
बारीक बातें अरस की, जानें अरस के तन ।
जीवत लेसी सो सुख, जिनका टूटया अंतसकरन ।। १९
छाती मेरी कोमल, और कोमल तुमारे चरन ।
बासा करो तिन पर, तुमसों निसबत अरस तन ।। २०
मेरी छाती दिल की कोमल, तिन पर राखों नरम कदम ।
इतहीं सेज बिछाय देऊं, जुदे करो जिन दम ।। २१
रूह छाती इनसे कोमल, जिनसे पांऊं कोमल ।
इत सुख देऊँ मासूकको, सुख यों लेऊँ नेहेचल ।। २२

मेरी रूह नैन की पुतली, बीच राखूं तिन तारन ।
खिन एक न्यारे जिन करो, ए चरन बसें निस दिन ।। २३

चरन तली अति कोमल, मेरी रूह के नैन कोमल ।
निस दिन राखों इन पर, जिन आवने देऊँ बीच पल ।। २४

या रूह नैन की पुतली, तिन नैनों बीच तारन ।
इत रहे सेज्या निस दिन, धरो उज्जल दोऊ चरन ।। २५

मेरा दिल तुमारा अरस है, माहें बहुविध की मोहोलात ।
कै सेज हिंडोले तखत, रूह नए नए रंगों बिछात ।। २६

आसा पूरो सुख देओ, नए नए कराऊँ सिनगार ।
दयो पूरी मस्ती ना बेहोसी, सुख लेऊँ सब अंग समार ।। २७

अरस तुमारा मुझ दिल, माहें अरस की सब विसात ।
खाना पीना सुख सिनगार, माहें सब न्यामत हक जात ।। २८

सब गुझ तुमारे दिलका, जिन मेरा दिल किया रोसन ।
जेता मता बीच अरस के, सब आया दिल मोमन ।। २९

तो कह्या अरस दिल मोमन, हक बैठें उठें खेलाए ।
सुख बका हक अरस रूहें, सिफत क्यों कहे दिल जुबांए ।। ३०

पर दिलके जो अंग हैं, धनी अरस तुमारा सोए ।
तुमें देखे कहे बातें सुने, लेवे तुमारी बानी की खुसबोए ।। ३१

पिए तुमारी सुराही का, कै स्वाद फूल सराब ।
ऐसी लेऊँ मस्ती मेहेबूब की, ज्यों उड़ जावे ख्वाब ।। ३२

एक स्वाद दिल देखे तुमको, सुने तुमारी बानी की मिठास ।
लेऊँ खुसबोए बोलूं तुमसों, और क्यों कहूँ दुलहा विलास ।। ३३

जेता सुख तुमारे अरस में, सो सब हमारे दिल ।
ए सुख रूह मेरी लेवही, जो दिए इन अरस में मिल ।। ३४

रूह बरनन करे क्या होए, जोलों स्वाद न ले निसबत ।
इसक इलम जोस हुकम, ए सब मेहेरें पाइए न्यामत ।। ३५

दिल के अंगों बिना हकके, इत स्वाद लीजे क्यों कर ।
देखे सुने बोले बिना, तो क्या अरस नाम धरचा धनी बिगर ॥ ३६

जो मासूक सेज न आइया, देख्या सुन्या न कही बात ।
सुख अंग न लियो इन सेज को, ताए निरफल गई ज्यों रात ॥ ३७

अरस तुमारा मुझ दिल, माहें अरस की सब विसात ।
सब न्यामतें इनमें, अरस बका हक जात ॥ ३८

पेहेलें बरनन करूं सिर राखड़ी, पीछे बरनन करूं सब अंग ।
अखंड सिनगार अरस को, मेरी रूह हमेसा संग ॥ ३९

मंगला चरण सम्पूर्ण

सिर पर बनी जो राखड़ी, कहूं किन बिध सोभा ए ।
आसमान जिमी के बीच में, एकै जोत खड़ी ले ॥ ४०

गृदवाए मानिक बने, बीच हीरे की जोत ।
किनार ऊपर जो नीलवी, हुई जिमी अम्बर उद्योत ॥ ४१

सेंथे भी सिर कांगरी, और सिर कांगरी पान ।
इन सिर सोभा क्यों कहूँ, अलेखे अमान ॥ ४२

माहें हारे खजूरे बूटियां, बीच फूल करत है जोत ।
जुदे जुदे रंगों जवेर, ठौर ठौर रोसनी होत ॥ ४३

लाल सेंथे जोत जवेर की, दोए पटली समारी सिर ।
बनी नंगन की कांगरी, बलि बलि जाऊं फेर फेर ॥ ४४

निलवट पर सर मोतिन को, ऊपर नीलवो बीच मानिक ।
दोऊ तरफों तीनों सरे, तीनों बराबर माफक ॥ ४५

इन तीनों पर कांगरी, बनी सेंथे बराबर ।
पांन कटाव सेंथे पर, ए जुगत कहूँ क्यों कर ॥ ४६

मानिक मोती नीलवी, हेम हीरा पुखराज ।
इन मुख सोभा क्यों कहूं, सिर खूबी रही विराज ॥ ४७

बीच फूल कटाव कै, राखड़ी के गृदवाए ।
ए जुगत बनी मूल लग, गूंथी नंग मोती बेन बनाए ॥ ४८

तीन नंग रंग गोफने, तिन एक एक में तीन रंग ।
हीरा मानिक नीलवी, सोभित कंचन संग ॥ ४९

तीनों गोफने घूंघरी, बेंन गूंथी नई जुगत ।
बलि बलि जाऊं देख देख के, रूह होए नहीं त्रिपत ॥ ५०

चारों बंध बेंनी तले, नीले पीले सोभित ।
सोभे नरम बंध चोलीय के, खूबी साड़ी तले देखत ॥ ५१

बेंन सोभित गौर पीठ पर, चोली और बंध चोली के ।
सब देखत साड़ी मिने, सब सोभा लेत सनंध ए ॥ ५२

लाल साड़ी के नकस, माहें अनेक रंग के नंग ।
मीहीं नकस न होवे गिनती, करें जवेर माहें जंग ॥ ५३

सिर पर साड़ी सोभित, नीली पीली सेत किनार ।
तिन पर सोहे कांगरी, करें पांच नंग झलकार ॥ ५४

साड़ी कोर किनार पर, नंग कांगरी सोभित ।
फूल बेल के खजूरे, कै छेड़ों मिने झलकत ॥ ५५

कै छापें बूटी नकस, नंग साड़ी बीच अपार ।
कै नंग रंग झलके बीच में, सोभा न आवे माहें सुमार ॥ ५६

मुख उज्जल गौर लालक लिए, छबि जाए न कही जुबांए ।
देख देख सुख पावत, रूह हिरदे के मांहि ॥ ५७

मुख चौक नेत्र नासिका, ए छबि अंग अरस के ।
असलें सिफत न पोहोंचहीं, बुध माफक कही ए ॥ ५८

मुखारबिन्द स्यामाजीय को, रूह देख देख सुख पाए ।
निलवट सोहे चांदलो, रूह बलिहारी ताए ॥ ५९

रंग नीले जोत पाच में, रूह इतथें क्यों निकसाए ।
जो जोत देखूं मानिक, तो वाही में डूब जाए ॥ ६०

करे आकास मोती उज्जल, जोत लटके लेवे तरंग ।
आसिक रूह क्यों निकसे, क्योंए न छूटे लग्यो दिल रंग ॥ ६१

श्रवनों सोहे पानड़ी, मानिक के रंग सोए ।
और रंग माहें नीलवी, जोत करत रंग दोए ॥ ६२

मोती पांने पुखराज, लरें लटकत इन ।
तरंग उठत आकास में, किरना करत रोसन ॥ ६३

मुरली सोभित मुख नासिका, लटके मोती नंग लाल ।
निरख देखूं माहें नीलवी, तो तबहीं बदले हाल ॥ ६४

न्यारी गति नैनन की, अति अनियारे लोचन ।
उज्जल माहें लालक लिए, अतंत तेज तारन ॥ ६५

भौं भृकुटी अति सोभित, रंग स्याम अंग गौर ।
केहेनी जुबां न आवत, कछू अरस रूहें जानें जहूर ॥ ६६

सोभा लेत हैं टेढ़ाई, नैना रंग रस भरे ।
ए सोई रूहें जानहीं, जाकी छाती छेद परे ॥ ६७

मीठे नैन रसीले निरखत, माहें सरम देत देखाए ।
प्यार पूरा देखत, मेहेर भरे सुखदाए ॥ ६८

अनेक गुन इन नैन में, गिनती न होवे ताए ।
सुख देत अलेखे सब अंगों, नैना गुन क्योंए ना गिनाए ॥ ६९

सनकूल मुख अति सुंदर, गौर हरवटी सलूक ।
लांक अधुर दंत देखत, जीव होत नहीं टूक टूक ॥ ७०

मुख चौक अति सुन्दर, अति सुन्दर दोऊ गाल ।
कही न जाए छबि सलूकी, निपट उज्जल माहें लाल ॥ ७१

सात रंग माहें झलकत, लहरें लेत दोऊ झाल ।
दोऊ फूल सोभित मुख झालके, जुबां क्या कहे इन मिसाल ॥ ७२

फिरते मोती सोभित, माहें मानिक पाच कुंदन ।
हीरे लसनिए नीलवी, सातों अम्बर करे रोसन ॥ ७३

हेंम नंग नाम लेत हों, मानों के पेहेने बनाए ।
ए बिध अरस में है नहीं, जुबां सके न सिफत पोहोंचाए ।। ७४
कै रंग करे एक छिन में, नई नई जुगत देखाए ।
सोहे हमेसा सब अंगों, पेहेने सोभित चित्त चाहे ।। ७५
चीज सबे अरस चेतन, बस्तर या भूखन ।
सुख लेत हकके अंग का, यों करत अति रोसन ।। ७६
हर नंग में सब रंग हैं, हर नंग में सब गुन ।
सो नंग ले कछू न बनावत, सब दिल चाह्या होत रोसन ।। ७७
बस्तर भूखन केहेत हों, हेम रेसम रंग नंग ।
ना पेहेन्या ना उतारिया, ए दिल चाह्या सोभित अंग ।। ७८
यों दिल चाह्या बस्तर, और दिल चाह्या भूखन ।
जब जिन अंग दिल जो चाहे, आगूं रोसन होत माहें छिन ।। ७९
सुन्दर सरूप छबि देख के, फेर फेर जाऊँ बल बल ।
जो रूह होवे अरस की, सो याही में जाए रल गल ।। ८०
नरम लांक अति बारीक, पेट पांसली अति गौर ।
ए छबि रूह रंग तो कहे, जो होवे अरस सहूर ।। ८१
बलि बलि जाऊँ मुख सलूकी, बलि बलि जाऊं रंग छब ।
बलि बलि जाऊँ तेज जोत की, बलि बलि जाऊँ अंग सब ।। ८२
स्याम चोली गौर अंग पर, सोभा लेत अतंत ।
सोहें बेली कटाव, जुबां कहा कहे सिफत ।। ८३
मोंहोरी पेट और खड़पे, चोली नकस कटाव ।
बाजू खभे उर ऊपर, मानों के फूल जड़ाव ।। ८४
पांच हार अति सुन्दर, हीरे मानिक मोती लसन ।
नीलवी हार आसमान लों, जंग पांचो करें रोसन ।। ८५
इन नंगों जोत तब पाइए, जब नजर दीजे आसमान ।
सब जोत जंग करत हैं, कोई सके न काहूँ भान ।। ८६

जो नंग पेहेले देखिए, पीछे देखिए आकास ।
तब याही की जोत बिना, और पाइए नहीं प्रकास ॥ ८७
बीच हारों के दुगदुगी, पाच पांने हीरे नंग ।
माहें लसनिए नीलवी, करें पांचों आपुस में जंग ॥ ८८
पांचो हारों के ऊपर, दोरा देखत जड़ाव ।
कै बेल फूल पात नकस, कह्यो न जाए कटाव ॥ ८९
मोती मानिक पांने लसनिएँ, पाच हेम पुखराज ।
और भूखन कै सोभित, रह्या सब पर डोरा बिराज ॥ ९०
कांठले ऊपर चोलीय के, बेल धरत अति जोत ।
और भी मानिक मोती नीलवी, डोरा तिन पर करत उद्योत ॥ ९१
चार सरें इत चीड़कीं, हर सर में रंग दस ।
सो रंग इन जुबां न आवही, रंग रूह चाहिल अरस ॥ ९२
कंठ सरी इन ऊपर, रही कंठ को मिल ।
न आवे निमूना इनका, जाने आसिक रूह का दिल ॥ ९३
नाम नंगों का लेत हों, कहत हों जड़ाव जुबांए ।
सबदातीत तो कहावत, जो सिफत इत पोहोंचत नाहिं ॥ ९४
दोऊ बाजू बंध बिराजत, तामें कहत जड़ाव ।
माहें रंग नंग कै आवत, ए जड़ाव कह्या इन भाव ॥ ९५
जो सोभा बाजू बंध में, हिस्सा कोटमा कह्या न जाए ।
मैं कहूँ इन दिल माफक, वह पेहेनत हैं चित्त चाहे ॥ ९६
स्याम सेत लाल नीलवी, बाजू बंध और फुमक ।
तिन फुंदन जरी झलकत, लेत लेहेरी जोत लटकत ॥ ९७
मोहोरी तले जो कंकनी, स्वर मीठे झन बाजत ।
नंग कटाव ए कांगरी, चूड़ पर जोत अतंत ॥ ९८
चूड़ कोंनी कांड़े लग, चूड़ी चूड़ी हर नंग ।
नंग नंग कै रंग उठें, रंग रंग में कै तरंग ॥ ९९

इन बिध के रंग इन जुबां, क्यों कर आवें सुमार ।
न आवे सुमार रंग को, ना कछू जोत को पार ॥१००
चूड़ आगूं डोरे दो सोभित, और कंकनी सोभे ऊपर ।
दोऊ तरफों तेज जोत के, कंकनी बोलत मीठे स्वर ॥१०१
डोरे कंचन नंग के, तिन आगूं नव घरी ।
नव रंग नव घरी मिने, रही आकास जोत भरी ॥१०२
पोहोंचे हथेली हाथ के, अतंत रंग उज्जल ।
बलि जाऊँ छबि लीकों पर, निपट अति कोमल ॥१०३
दोऊ हाथ की अंगुरी, पतलियां कोमल ।
चरन न छूटे आसिक से, इतथें न निकसे दिल ॥१०४
पांच पांच अंगुरी जुदी जुदी, अति कोमल छबि अंगुरी ।
दोऊ अंगूठों आरसी, और आठों रंग आठ मुंदरी ॥१०५
पाच पांने कंचन के, नीलवी और हीरे ।
लसनिएं और गोमादिक, रंग पीत पोखरे ॥१०६
दरपन रंग दोऊ अंगूठी, और नंगों के दरपन ।
कर सिनगार तामें देखत, नख सिख लग होत रोसन ॥१०७
आगूं इन नख जोत के, होवें सूर कै कोट ।
सो सूर न आवे नजरों, एक नख अनी की ओट ॥१०८
ए झूठ निमूना इत का, हकको दिया न जाए ।
चुप किए भी ना बने, केहे केहे रूह पछताए ॥१०९
नीली अतलस चरंनियां, कै बेल कटाव नकस ।
चीन किनारे जो देखों, जानों एक पें और सरस ॥११०
माहें बेल फूल कै खजूरें, नंगै के बस्तर ।
नरम सखत जो दिल चाहे, जोत सुगंध सब पर ॥१११
नव रंग इन नाड़ी मिने, तानाबाना सब नंग ।
जानों बने जवेरन के, नकस रेसम या रंग ॥११२

अचरज अदभुत देखत, वस्तर या भूखन ।
नरम खूबी खुसबोए, भरया आसमान में रोसन ॥११३

अरस में नकल है नहीं, ज्यों अंग त्यों बस्तर भूखन ।
जब जिन अंग जो चाहिए, तिन सों बेर होए मिने खिन ॥११४

जैसा सुख दिल चाहे, बस्तर भूखन तैसे देत ।
सब गुन अरस चीज में, सब सुख इस्क समेत ॥११५

ए चरन अंग अरस के, सबद न पोहोंचे इत ।
लाल उज्जल रंग सलूकी, सुख कही न जाए सिफत ॥११७

में कहूँ सिफत सलूकी, पर केहे न सकों क्योंए कर ।
पूरा एक अंग केहे ना सकों, जो निकल जाए उमर ॥११७

जो कदी कहूँ नरमाई की, और लीकों सिफत ।
आए जाए आरबल, सब्द न इत पोहोंचत ॥११८

जो कहूँ खूबी रंग की, जोत कहूँ लाल उज्जल ।
ए क्यों आवे सबद में, जो कदम बका नेहेचल ॥११९

रंग उज्जल नरमाई क्यों कहूँ, और चरन की खुसबोए ।
ए जुबां अरस चरन की, क्यों कर बरनन होए ॥१२०

फना टांकन घूंटियाँ, और काड़े अति कोमल ।
रंग सोभा सलूकी छोड़के, आगूं आसिक न सके चल ॥१२१

अब कहूँ भूखन चरन के, कांबी कड़ली घूंघरी ।
झलकें नंग जुदे जुदे, इन पर झन बाजे झांझरी ॥१२२

एक हीरे की झांझरी, दिल रुचती रंग अनेक ।
नकस कटाव बूटी ले, किन विध कहूँ विवेक ॥१२३

पांच नंग की घूंघरी, दिल रुचती बोलत ।
दिल चाहे रंग देखावत, दिल चाही सोभित ॥१२४

कै रंग कड़ी में देखत, जानों के हेम नंग जड़ित ।
सो सोभित सब दिल चाहे, तिन नए रूप धरत ॥१२५

कै बेल कड़ी में पात फूल, सब नंग नकस कटाव ।
मानो हेम मिलाए के, कियो सो मीहीं जड़ाव ॥१२६

या विध कांबी सलंध, या नंग या धात ।
दिल में जैसा आवत, तैसा नित सोभात ॥१२७

घड़े जड़े ना समारे, दिल चाह्या सब होत ।
दिल चाह्या मीठा बोलत, दिल चाही धरे जोत ॥१२८

कहूँ अनवट[1] पाच के, माहें करत आंभलिया[2] तेज ।
निरखत नख सिख सिनगार, झलकत रेजा रेज ॥१२९

और अंगुरियों बिछिए, करे स्वर रसाल ।
हीरे और लसनिएं, मानिक रंग अति लाल ॥१३०

माहें और रंग हैं कै, कै नकस करें चित्र ।
सोभा पर बलि जाइए, देख देख एह विचित्र ॥१३१

जो सलूकी फनन की, और अंगुरी फनों तली ।
ए बका बरनन कबूं ना हुई, गई अव्वल से दुनी चली ॥१३२

सलूकी नखन की, और छबि अंगुरियों ।
खूबी सिफत चरन की, कही जात न जुबां सों ॥१३३

जोत धरत आकास रोसनी, क्यों कर कहूँ नख जोत ।
मानों सूरज अरस के, कोटक हुए उद्योत ॥१३४

दोऊ अंगूठे चरन के, और खूबी अंगुरियों ।
सोभा सुंदर फनन की, आवत न सिफत मों ॥१३५

मीहीं लीकां देखूं लांक में, इतहीं करूँ विश्राम ।
बलि बलि जाऊँ देख देख के, एही रूह मोमनों ताम[3] ॥१३६

चरन तली लांक एड़ियां, उज्जल रंग अति लाल ।
केहेते छबि रङ्ग चरन की, अजूं लगत न हैड़े भाल ॥१३७

---

१. चरण के अंगूठे का आभूषण । २. दर्पन । ३. आहार ।

दिल चाही खूबी सलूकी, दिल चाही नरम छब ।
दिल चाह्या रंग खुसबोए, रही दिल चाही अंग फब ॥१३८

यों दिल चाहे बस्तर, और दिल चाहे भूखन ।
जब जिन अंग दिल जो चाहे, सो आगूँहीं बन्यो रोसन ॥१३९

जिन अंग जैसा भूखन, दिल चाह्या सब होत ।
खिन में दिल और चाहत, आगूँ तैसी धरे जोत ॥१४०

खिन में सिनगार बदले, बिना उतारे बदलत ।
रंग तित भूखन नए नए, रंग जो दिल चाहत ॥१४१

दिल चाही सोभा धरे, दिल चाही खुसबोए ।
दिल चाही करे नरमाई, जोत करे जैसी दिल होए ॥१४२

रूहें बसत हैं इन कदमों तले, जासों पाइए पेहेचान ।
सब रूहें नूर इन अंग को, ए नूर अंग रेहेमान ॥१४३

ए जो अरवाहें अरस की, पड़ी रहें तले कदम ।
खान पान इनों इतही, रूहें रहें तले हुकम ॥१४४

याही ठौर रूहें बसत, रात दिन रहें सनकूल ।
हक अरस मोमन दिल, तिन निमख न पड़े भूल ॥१४५

हक कदम हक अरस में, सो अरस मोमन दिल ।
छूटे ना अरस कदम, जो याही की होए मिसल[1] ॥१४६

ए चरन राखूं दिल में, और ऊपर हैड़े ।
लेके फिरों नैनन पर, और सिर पर राखों ए ॥१४७

भी राखों बीच नैनन के, और नैनों बीच दिल नैन ।
भी राखों रूह के नैन में, ज्यों रूह पावे सुख चैन ॥१४८

'महामत' कहें इन चरन को, राखों रूह के अन्तसकरन ।
या रूह नैनकी पुतली, बीच राखों तिन तारन ॥१४९

॥ प्रकरण ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ ७६६ ॥

---

१. सम्बन्धी, एक समान ।

## श्री राजजी का सिनगार तीसरा

फेर फेर सरूप जो निरखिए, नैना होंए नहीं त्रिपत ।
मोमन दिल अरस कह्या, लिखी ताले ए निसबत ॥ १

चाहिए निसदिन हक अरस में, और इत हक खिलवत ।
होए निमख न न्यारे इन दिल, जेती अरस न्यामत ॥ २

बरनन किया हक सूरत का, रूह देख्या चाहे फेर फेर ।
एही अरस दिल रूह के, बैठे सिनगार कर ॥ ३

अब निस दिन रूह को चाहिए, फेर सब अंग देखे नजर ।
सूरत छबि सलूकी, देखों भूखन अंग बस्तर ॥ ४

सिनगार किया सब दुलहे, बस्तर या भूखन ।
अब बखत हुआ देखन का, देखों रूह के नैनन ॥ ५

सब अंग देखों फेरके, और देखों सब सिनगार ।
काम हुआ अपनी रूह का, देख देख जाऊँ बलिहार ॥ ६

रूह चाहे बका सरूप की, करके नेक बरनन ।
देखों सोभा सिनगार, पेहेनाए बस्तर भूखन ॥ ७

कलंगी दुगदुगी पगड़ी, देख नीके फेर कर ।
बैठ खिलवत बीच में, खोल रूह की नजर ॥ ८

पहेले देख पाग सलूकी, माहें कै बिध फूल कटाव ।
जोत करी है किन बिध, जानों के नकस नंग जड़ाव ॥ ९

देख कलंगी जोत सलूकी, जेता अरस अवकास ।
सो सारा ही तेज मैं, पूरन भया प्रकास ॥ १०

और खूबी इन कलंगी, और दुगदुगी सलूक ।
और पाग छबि रूह देख के, होए जात नहीं भूक भूक ॥ ११

देख सुन्दर सरूप धनीय का, ले हिरदे कर हेत ।
देख नैन नीके कर, सामी इसारत तोकों देत ॥ १२

नैन रसीले रंग भरे, भौं भृकुटी बंकी अति जोर ।
भाल तीखी निकसे फूटके, जो मारत खैंच मरोर ॥ १३

हँसत सोभित हरवटी, अंग भूखन कै बिवेक ।
मुख बीड़ी सोभित पान की, क्यों बरनों रसना एक ॥ १४

लाल रंग मुख अधुर, तंबोल अति सोभाए ।
ए लालक हकके मुख की, मेरे मुख कहीं न जाए ॥ १५

गौर मुख अति उज्जल, और जोत अतंत ।
ए क्यों रहे रूह छबि देख के, ऐसी हक सूरत ॥ १६

अति उज्जल मुख निलवट, सुन्दर तिलक दिए ।
अति सोभित हैं नासिका, सब अंग प्रेम पिए ॥ १७

निलवट चौक चारों तरफों, रंग सोभित जोत अपार ।
निरख निरख नेत्र रूह के, सब अंग होए करार ॥ १८

देख निलवट तिलक, मुख भौं भासत अति सुन्दर ।
सब अंग दृढ़ करके, ले रूह के नैनों अन्दर ॥ १९

नैन निपट बंकी छबि, अति चंचल तेज तारे ।
रंग भींने अति रस भरे, बका निसबत रूह प्यारे ॥ २०

ए रस भरे नैन मासूक के, आसिक छोड़े क्यों कर ।
कै कोट गुन कटाक्ष में, रूह छोड़ी न जाए नजर ॥ २१

जो देवें पल आड़ी मासूक, तो जानों बीच पड़्यो ब्रह्मांड ।
रूह अन्तराए सहे ना सरूप की, ए जो दुलहा अरस अखंड ॥ २२

नैन सुख देत जो अलेखें, मीठे मासूक के प्यारे ।
मेहेर भरे सुख सागर, रूह तर न सके तारे ॥ २३

मीठे लगें मरोरते, मीठी पापन लेत चपल ।
फिरत अनियारे चातुरी, मान भरे चंचल ॥ २४

बीड़ी लेत मुख हाथ सों, सोभित कोमल हाथ मुंदरी ।
लेत अगुरियाँ छबिसों, बलि जाऊँ सबे अंगुरी ॥ २५

बीड़ो मुख आरोगते, अधुर देखत अति लाल ।
हँसत हरवटी सोभा सुन्दर, नेत्र मुख मछराल[1] ॥ २६

अधबीच आरोगते[2], बचन कहत रसाल ।
नैन बान चलावत सेहेजे, छाती छेद निकसत भाल ॥ २७

मोरत पान रंग तम्बोल, मानों झलके माहें गाल ।
जो नैनों भर देखिए, रूह तबहीं बदले हाल ॥ २८

मरकलड़े[3] मुख बोलत, गौर हरवटी हँसत ।
नैन श्रवन निलवट नासिका, मानों अंग सबे मुसकत ॥ २९

जोत धरत चित्त चाहती, चित्त चाही नरम लगत ।
कै रंग करें चित्त चाहती, खुसबोए करत अतंत ॥ ३०

चित्त चाहे सुख देत हैं, लाल मोती कानन ।
देख देख जाऊँ बारने, ए जो भूखन चेतन ॥ ३१

सुपन सरूप जिन बिध के, ए जो पेहेनत हैं भूखन ।
सो तो अरस में है नहीं, जो सिनगार करें बिध इन ॥ ३२

नए सिनगार जो कीजिए, उतारिए पुरातन ।
नया पुराना पेहेन उतारना, ए होत सुपन के तन ॥ ३३

बारीक बातें अरस की, सो जानें अरवा अरसै के ।
नया पुराना घट बढ़, सो कबूं न अरस में ए ॥ ३४

अरस में सदा एक रस, करें पलमें कोट सिनगार ।
चित्त चाहे अंगों सब देखत, नया पेहेन्या न जूना उतार ॥ ३५

ज्यों अंग त्यों बस्तर भूखन, करें कोट रंग चित्त चाहे ।
अरस जूना न कबूं कोई रंग, देखत पलमें नित नए ॥ ३६

देत खुसबोए खुसाली, श्रवनों अति सुन्दर ।
बात सुनत मेरी रीझत, सुख पावत रूह अन्दर ॥ ३७

---

१. मस्ती से भरा । २. खाते हुए । ३. मुस्कराते हुए ।

जो अटकों इत अंग में, तो जाए न सकों छोड़ कित ।
गुझ गुन कै श्रवन के, रूह इतहीं होवे गलित ॥ ३८

जामा अंग जवेर का, भूखन नंग कै रंग ।
जोत पोहोंचे आकासमें, जाए करत मिनो मिने जंग ॥ ३९

याही विध जामा पटुका, याही बिध पाग बस्तर ।
करें चित्त चाहें अंग रोसनी, अनेक जोत अंग धर ॥ ४०

जामा पटुका चोली बांहेंकी, चीन मोहोरी बंध बगल ।
ए आसिक अंग देख के, आगूं नजर न सके चल ॥ ४१

चोली अंग को लग रही, हार लटके अंग हलत ।
तले हार बीच दुगदुगी, नेहेरें लेहेरें जोत चलत ॥ ४२

बगलों बेली फूल खभे, गिरबान बेली जर ।
पीछे कटाव जो कोतको, रूह छोड़ न सके क्योंए कर ॥ ४३

कहें हार हम हैड़े पर, अति विराजे अंग लाग ।
सुख दें हक सूरत को, ए कौन हमारो भाग ॥ ४४

कंठ हार नंग सब चेतन, देख सोभा सब चढ़ती देत ।
ए सुख रूह सो जानहीं, जो सामी हक इसारत लेत ॥ ४५

ए जंग रूह देख्या चाहें, जोतें जोत लरत ।
कै नंग रंग अवकास में, मिनों मिने जंग करत ॥ ४६

जोत अति जवेरन की, बांहों पर बाजू बंध ।
जोत चली जोत चीर के, कै विध ऐसी सनंध ॥ ४७

हाथ कांडों कड़ी पोहोंचियां, जानों ए जोत इनथें अतंत ।
जोत सागर आकास में, कोई सके ना इत अटकत ॥ ४८

बाजू बंध पोहोंची कड़ी, ए भूखन सोभा अपार ।
नरम हाथ लीकें हथेलियां, क्यों आवे सोभा सुमार ॥ ४९

जुदे जुदे रंगों जोत चले, ए जो नंग हाथ मुंदरी ।
ए तेज लेहेरें कै उठत, ज्यों ज्यों चलवन करें अंगुरी ॥ ५०

क्यों कहूँ जोत नखन की, ए सबथें अति जोर ।
जानों तेज सागर अवकास में, सबको निकसे फोर ।। ५१

रंग देखूं के सलूकी, छबि देखूं के नरम उज्जल ।
जो होए कछुए इस्क, तो इतथें न निकसे दिल ।। ५२

कैसी नरम अंगुरियां पतली, देखों सलूकी तेज ।
आसामान रोसनी पोहोंचाए के, मानों सूर जिमीं भरी रेजा रेज ।। ५३

जो जोत समूह सरूप की, सो नैनों में न समाए ।
जो रूह नैनों में न समावही, सो जुबां कह्यो क्यों जाए ।। ५४

यों बस्तर भूखन अंग चेतन, सब लेत आसिक जवाब ।
केहे सब का लेऊँ पड़ उत्तर, ए नहीं रूह मिने ख्वाब ।। ५५

रद बदल भूखन सों, और करे वस्तरों सों ।
और अंग लग जाए ना सकें, फारग[1] न होएं इनमों ।। ५६

ए बस्तर भूखन हकके, सो सारे ही चेतन ।
सब जवाब लिया चाहिए, आसिक एही लछन ।। ५७

आसिक रूह जित अटकी, अंग भूखन या बस्तर ।
यासों लगी गुपत—गोए[2] में, सो छूटे नहीं क्योंए कर ।। ५८

इस्क बसे सब अंग में, सब बिध देत हैं सुख ।
कै सुख हर एक अंग में, सो कह्यो न जाए या मुख ।। ५९

प्रेम लिए सोभा गुन, सब सुख देत पूरन ।
या वस्तर या भूखन, सुख जाहेर या बातन ।। ६०

सुख इस्क हक जात के, तिनसे अंग सुखदाए ।
बाहेर सुख सब अंग में, ए सुख जुबां कह्यो न जाए ।। ६१

अंग बस्तर या भूखन, सब सुख दिया चाहें ।
कै सुख जाहेर कै बातन, सब मिल प्रेम पिलाएं ।। ६२

---

१. निवृत्त । २. गुभ्र चरचा ।

इस्क देवें लेवें इस्क, और ऊपर देखावें इस्क ।
अरस इस्क जरे जरा, एजो सूरत इस्क अंग हक ॥ ६३

एक अंग जिन देख्या होए, सो पल रहे न देखे बिगर ।
हुई बेसकी इन सरूप की, रूह अंग न्यारी रहे क्यों कर ॥ ६४

सब अंग दिल में आवते, बेसक आवत सूरत ।
हाए हाए रूह रहत इत क्यों कर, आए बेसक ए निसबत ॥ ६५

चारों जोड़े चरन के, ए जो अरस भूखन ।
ए लिएँ हिरदे मिने, आवत सरूप पूरन ॥ ६६

जो सोभावत इन चरन को, ए भूखन सब चेतन ।
अनेक गुन याके जाहेर, और अलेखे बातन ॥ ६७

नंग नरम जोत अतंत, और अतंत खुसबोए ।
ए भूखन चरनों सोभित, बानी चित्त चाही बोलत सोए ॥ ६८

गौर चरन अति सोभित, और सिनगार भूखन सोभित ।
ए अंग संग न्यारे न कबहूँ, अति बारीक समझन इत ॥ ६९

एही ठौर आसिकन को, अरस की जो अरवाहें ।
सो चरन तली छोड़ें नहीं, पड़ी रहें तले पाएं ॥ ७०

अरस रूहें आसिक इनकी, जिन पायो पूरन दाव ।
ठौर ना और रूहन को, जाको लगे कलेजे घाव ॥ ७१

कै रंग नंग बस्तर भूखन के, चढ़ी आकास जोत लेहेर ।
जो जोत नख चरन की, मानों चीर निकसी नेहेर ॥ ७२

केहेती हों इन जुबांन सों, और सुपन श्रवन नजर ।
जो नजरों सूरज ख्वाब के, सो हकें सिफत पोहोंचे क्यों कर ॥ ७३

कट चीन झलके दावन, बैठ गई अंग पर ।
कै रंग नंग इजार में, सो आवत जाहेर नजर ॥ ७४

और भूखन जो चरन के, सो अति धरत हैं जोत ।
नरम खुसबोए स्वर माधुरी, आसमान जिमी उद्योत ॥ ७५

पाउं तली नरम उज्जल, लीकें एड़ी लांक लाल ।
ए रूह आसिक से क्यों छूटही, ए कदम नूर जमाल ।। ७६

तली हथेली हाथ पांउं की, लाल अति उज्जल ।
और बीसों अंगुरियां नरम पतली, नख नरम निरमल ।। ७७

कांड़े कोमल हाथ पांउं के, फने पीड़ी अंग माफक ।
उज्जल अति सोभा लिए, ए सूरत सोभा नित हक ।। ७८

रंग रस इंद्री नौतन, चढ़ता अंग नौतन ।
तेज जोत सोभा नौतन, नौतन चढ़ता जोवन ।। ७९

छबि फब मुख सनकूल, चढ़ती कला देखाए ।
कायम अंग अरस के, सब चढ़ता नजरों आए ।। ८०

ए अंग सब अरस के, अरस बस्तर भूखन ।
अरस जरे जवेर को, सिफत न पोहोंचे सुकन ।। ८१

सब अंग इस्क के, गुन अंग इन्द्री इस्क ।
सब्द न पोहोंचे सिफत, इन बिध सूरत हक ।। ८२

केहे केहे दिल जो केहेत है, तार्थे अधिक अधिक अधिक ।
सोभा इस्क बका तन की, ए मैं केहे न सकों रंचक ।। ८३

अब लग जानती अरस के, हेम नंग लेत मिलाए ।
पैदास भूखन इन बिध, वे पेहेनत हैं चित्त चाहे ।। ८४

एक ले दूजा मिलावही, तब तो घट बढ़ होए ।
सो तो अरस में है नहीं, वाहेदत में नहीं दोए ।। ८५

घड़े जड़े ना समारे, ना सांध मिलाई किन ।
दिल चाहे नंगों के असल, बस्तर या भूखन ।। ८६

ना पेहेन्या ना उतारिया, दिल चाह्या सब होत ।
जब जित जैसा चाहिए, सो उत आगूं बन्या ले जोत ।। ८७

जो रूह कहावे अरस की, माहें बका खिलवत ।
सो जिन खिन छोड़ो सरूप को, कहे उमत को 'महामत' ।। ८८

।। प्रकरण ।। १० ।। चौपाई ।। ८८७ ।।

## श्री सुन्दर साथ को सिनगार लिख्या है

सुन्दर साथ बैठा अचरज सों, जानों एकै अंग हिल मिल ।
अंग अंग सब के मिल रहे, सब सोभित हैं एक दिल ॥ १

जानो मूल मेला सब एक मुख, सब एक सोभित सिनगार ।
सागर भरचा सब एक रस, माहें कै बिध तरंग अपार ॥ २

निलवट बेना चाँदलो, हरी गरदन मुख मोर ।
नैन चोंच सिर सोभित, बीच बने तरफ दोऊ जोर ॥ ३

निरमल मोती नासिका, कै बिध नथ बेसर ।
जोत जोर नंग मिहीं नकस, ए बरनन होए क्यों कर ॥ ४

सोभित हैं सबन के, कानन झलकत झाल ।
माहें मोती नंग निरमल, झांईं उठत माहें गाल ॥ ५

चार चार हार सबन के, उर पर अति झलकत ।
कंठ सरी कंठन में, सबन के सोभित ॥ ६

एक हार हीरन का, दूजा हेम कंचन ।
तीजो हार मानिक को, चौथा हार मोतीयन ॥ ७

कहूँ डोरे कहूँ बादले, कहूँ खजूरे हार ।
कहा कहूँ जवेर अरस के, झलकारों झलकार ॥ ८

हाथ चूड़ी नंग नवघरी, अंगूठिएँ झलकत नंग ।
उज्जल लाल हथेलियाँ, पोहोंचों पोहोंची नंग कै रंग ॥ ९

जैसे सरूप अरस के, भूखन तिन माफक ।
याही रवेस बस्तर जवेर के, ए अंग बड़ी रूह हक ॥ १०

जैसी सोभा भूखन की, कहूँ तैसी सोभा बस्तर ।
कछू पाइए सोभा सरूप की, जो खोले रूह नजर ॥ ११

बस्तरों के नंग क्यों कहूँ, कै जवेरों जोत ।
सबे भई एक रोसनी, जानों गंज अम्बार उद्योत ॥ १२

अतंत नंग अरस के, और नरम जवेर अतंत ।
अतंत अरस रसायन, खूबी खुसबोए अति बेहेकत ॥ १३

कहूँ केते नाम जवेरन के, रसायन नाम अनेक ।
कै नाम भूखन एक अंग, सो कहाँ लग कहूं विवेक ॥ १४

सूरत सकल साथ की, मुख कोमल सुंदर गौर ।
ए छबि हिरदे तो फबे, जो होवे अरस सहूर ॥ १५

रूहें सुंदर सनकूल मुख, नहीं सोभा को पार ।
घट बढ़ कोई न इनमें, एक रस सब नार ॥ १६

कै रंग सोभित साड़ियां, रंग रंग में कै नंग सार ।
भिन भिन झलके एक जोत, कै किरने उठें बेसुमार ॥ १७

हर एक के सिनगार, सिनगार सिनगार कै नंग ।
नंग नंग में कै रंग हैं, रंग रंग में कै तरंग ॥ १८

तरंग तरंग कै किरनें, कै रंग नंग किरने न समाए ।
यों जोत सागर सरूप को, रह्यो तेज पुंज जमाए ॥ १९

अब इनके अंग की क्यों कहूँ, ठौर नहीं बोलन ।
क्यों कहूँ सोभा अखंड की, बीच बैठ के अंग सुपन ॥ २०

रंग तरंग किरने कही, कही तेज जोत जुबां इन ।
प्रकास उद्योत सब सब्द में, जो कह्या नूर रोसन ॥ २१

ज्यों ज्यों बैठियां लग लग, त्यों त्यों अरस परस सुख देत ।
बीच कछू ना रहे सके, यों खैंच खैंच ढिग लेत ॥ २२

जानों सागर सब एक जोत में, नूर रोसन भर पूरन ।
झांईं झलके तेज दरियाव ज्यों, कै उठे तरङ्ग भिन भिन ॥ २३

ऊपर तले की रोसनी, और बस्तर भूखन की जोत ।
और जोत सरूपों की क्यों कहूँ, ए जो ठौर ठौर उद्योत ॥ २४

ऊपर तले थंभ दिवालें, सब जोत रही भराए ।
बीच समूह जोत साथ की, बनी जुगल जोत बीच ताए ॥ २५

ए जोत में सोभा सुंदर, और सरूपों की सुखदाए ।
देख देख के देखिए, ज्यों नख सिख रहे भराए ।। २६

ज्यों दरिया तेज जोत का, त्यों सब दिल दरिया एक ।
एक दिल एक रोसनी, जुबां क्यों कर कहे बिवेक ।। २७

जोत उपली कही जुबांन सो, पर रहस चरित्र सुख चैन ।
सुख पर आतम तब पाइए, जब खुलें अन्तर के नैन ।। २८

एक रस होइए इस्क सों, चलें प्रेम रस पूर ।
फेर फेर प्याले लेत है, स्याम स्यामाजी हजूर ।। २९

क्यों कहूँ सुख सबन के, सब अंगों के एक चित्त ।
अरस परस सुख लेवहीं, अंग नए नए उपजत ।। ३०

साथ समूह की क्यों कहूँ, जाको इस्कै में आराम ।
अरस परस सब एक रस, पीउ बिलसत प्रेम काम ३१

इन धाम के जो धनी, तिन अंगों का सनेह ।
हेत चित्त आनन्द इनका, क्यों कहूँ जुबां इन देह ।। ३२

मुख अन्तर अन्तसकरन के, आवें नहीं जुबांन ।
प्रेम प्रीत रीत अन्तर की, क्यों कर होए बयान ।। ३३

सत सरूप जो धाम के, तिनके अन्तसकरन ।
इस्क तिनके अंग का, सो कछुक करूँ बरनन ।। ३४

नख सिख अंग इस्क के, इस्कै संधों संध ।
रोम रोम सब इस्क के, क्यों कर कहूँ सनंध ।। ३५

अन्तसकरन इस्क के, इस्कै चित्त चितवन ।
बातां करें इस्क की, कछू देखें ना इस्क बिन ।। ३६

तत्व गुन अंग इंद्रियाँ, सब इस्कै के भीगल ।
पख सारे इस्क के, सब इस्क रहे हिल मिल ।। ३७

ए सुख संग सरूप के, जो अन्तर अन्दर इस्क ।
आतम अन्तसकरन बिचारिए, तो कछू बोए आवे रंचक ।। ३८

जो कोई आतम धाम की, इत हुई होए जागृत ।
अंग आया होए इस्क, तो कछू बोए आवे इत ॥ ३९
पीउ नेत्रें नेत्र मिलाइए, ज्यों उपजे आनन्द अति घन ।
तो प्रेम रसायन पीजिए, जो आतम थें उतपंन ॥ ४०
आतम अन्तसकरन विचारिए, अपने अनभव का जो सुख ।
बढ़त बढ़त प्रेम आवही, पर आतम सनमुख ॥ ४१
इतथें नजर न फेरिए, पलक न दीजे नैन ।
नीके सरूप जो निरखिए, यों आतम होए सुख चैन ॥ ४२
तब प्रेम जो उपजे, रस पर आतम पोहोंचाए ।
तब नैन की सैन कछू होवही, अन्तर आंखां खुल जाए ॥ ४३
अन्तसकरन आतम के, जब ए रह्यो समाए ।
तब आतम पर आतम के, रहे न कछू अन्तराए ॥ ४४
पर आतम के अन्तसकरन, पेहेले उपजत है जे ।
पीछे इन आतम के, आवत है सुख ए ॥ ४५
तार्थें हिरदे आतम के लीजिए, बीच साथ सरूप जुगल ।
सुरत न दीजे टूटने, फेर फेर जाइए बल बल ॥ ४६
सोभा मुखारबिन्द की, क्यों कर कहूँ तेज जोत ।
रस भरचो रसीलो दुलहा, जामें नित नई कला उद्योत ॥ ४७
कमी जो कछुए होवही, तो कहिए कला अधिकाए ।
ए तो बढ़े तरंग रंग रस के, यों प्रेम देत देखाए ॥ ४८
बलि बलि सोभा सरूप की, बलि बलि बस्तर भूखन ।
बलि बलि मीठी मुसकनी, बलि बलि जाऊँ खिन खिन ॥ ४९
बलि बलि बंकी पाग की, बलि बलि बंके नैन ।
बलि बलि बंके मरोरत, बलि बलि चातुरी चैन ॥ ५०
बलि बलि तिरछी चितवनी, बलि बलि तिरछी चाल ।
बलि बलि तिरछे बचन के, जिन किया मेरा तिरछा हाल ॥ ५१

बलि बलि छबीली छबि पर, दंत तंबोल मुख लाल ।
बलि बलि आठो जाम की, बलि बलि रंग रसाल ॥ ५२

बलि बलि मीठे मुख की, अंग अंग अमी रस लेत ।
कै बिध के सुख देत हैं, पल पल में कर हेत ॥ ५३

बलि बलि जाऊँ चरन की, बलि बलि हस्त कमल ।
बलि बलि नख सिख सब अंगों, बलि बलि जाऊँ पल पल ॥ ५४

बलि बलि पिआजी के प्रेम पर, बलि बलि चितवन हेत ।
'महामत' बलि बलि सब अंगो, फेर फेर वारने लेत ॥ ५५

॥ प्रकरण ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ ६४२ ॥

## सागर पांचमा इस्कका

पांचमा सागर पूरन, गेहेरा गुझ गंभीर ।
प्याले इस्क दरियाव के, पीवें अरस रूहें फकीर ॥ १

इन रस को ए सागर, पूरन जुगल किसोर ।
ए दरिया सुख पांचमा, लेहेरी आवत अति जोर ॥ २

अति सुख बड़ी रूह को, इस्क तरंग अतंत ।
मुख मीठो अपनी रूह को, रस रसना पिलावत ॥ ३

हेत कर इन रूहन की, प्यारसों बात सुनत ।
सो बचन अन्दर लेयके, मुख सामी बान बोलत ॥ ४

नैनों नैन मिलाए के, अमीरस सींचत ।
अपने अंग रूहें जानके, नेह नए नए उपजावत ॥ ५

सुख केते कहूँ स्यामाजीय के, हक सुख बिना हिसाब ।
ए सुख सोई जानही, जो पिए इन साकी सराब ॥ ६

रस भरी अति रसना, अति मीठी वल्लभ बान ।
ए सुख कह्यो न जावहीं, जो सुख देत जुबांन ॥ ७

कै सुख मीठी बांन के, हक देत कर प्यार ।
ज्यों मासूक देत आसिक को, एक तन यार को यार ॥ ८

नैन रसीले रंग भरे, प्रेम प्रीत भीगल ।
देत है जब हेत सुख, चुभ रहत रूह के दिल ॥ ९

इस्क प्याला रंग रस का, जब देत नैन मरोर ।
फूल पोहोंचे तालू रूह के, कायम चढ़ाव होत जोर ॥ १०

कै सुख अंग सरूप के, कै सुख रंग रसाल ।
कै सुख प्यारी जुबांन के, कै प्याले देत रस लाल ॥ ११

कै सुख अमृत सींचत, ज्यों रोप सींचत बन माली ।
इन बिध नैनों सींचत, रूह क्यों न लेवे गुलाली ॥ १२

जो कछू बोले रूह मुखथें, सो नीके सुनें हक कान ।
ऐसा मीठा जवाब तोहे देवहीं, कोई ना सुख इन समान ॥ १३

अरस परस सुख देवहीं, नाहीं इन सुख को पार ।
ए रस इस्क सागर को, अरस रूहें पीवें बारंबार ॥ १४

ए सुख सागर पांचमा, इस्क सागर दिल हक ।
पेहेले चार देखे सागर, कोई ना हक दिल माफक ॥ १५

हकें तोहे खेल देखाइया, बेवरा वास्ते इस्क ।
क्यों न देखो पट खोलके, नजर खोली है हक ॥ १६

इन ठौर बैठे देखाइया, साहेबी हक बुजरक ।
पैठ हक दिल बीच में, पी प्याले इस्क ॥ १७

तो हकें कह्या अरस अपना, इस्क दिल मोमन ।
सो इस्क करे जाहेर, दिल पैठ हक के तन ॥ १८

इस्क गुझ दिल हकका, सो करे जाहेर माहें खिलवत ।
सो खिलवत ल्याए इत आसिक, करी इस्कें जाहेर न्यामत ॥ १९

इत दुनियां चौदे तबक में, एक दम उठत हैं जे ।
जो हक सहूर कर देखिए, तो सब वास्ते इस्क के ॥ २०

ए इस्क सब हक का, अरस हादी रूहों सों ।
ए अरस दिल जानें मोमन, जो हकको वाहेदत मों ॥ २१

ए किया एते ही वास्ते, तुमारे दिल उपजाया एह ।
ए खेल में देखे जुदे होए, लेने मेरा इस्क सनेह ॥ २२

ए इस्क सागर अपार है, वार न पाइए पार ।
ए लेहेरी इस्क सागर की, हक देवें सोहागिन नार ॥ २३

जो हक तोहे अन्तर खोलावहीं, तो आवे हक लज्जत ।
और बड़े सुख कै अरस के, पर ए निपट बड़ी न्यामत ॥ २४

लेहेरी इस्क सागर की, जो तूं लेवे रूह इत ।
तो तूँ देखे सुख इस्क के, ए होए ना बिना निसबत ॥ २५

और सुख इन लेहेरन को, आवत खिलवत याद ।
इन हक इस्क सागर की, कै नेहेरें सुख स्वाद ॥ २६

यों सुख इस्क सागर का, धनी प्यारें देत रूहन ।
सो इत देखाए मेहेर कर, जो इस्कें किए रोसन ॥ २७

जो सुख इस्क सागर का, माहें हेत प्रीत तरंग ।
ए जो अरस अरवाहों को, आए खिलवत के रस रंग ॥ २८

जो हक तोहे देवें हिंमत, तो रूह तूँ पी सराब ।
ए कायम मस्ती अरस की, जो साकी पिलावे आब[1] ॥ २९

सुख हक इस्क के, जिनको नाहीं सुमार ।
सो देखन की ठौर इत है, जो रूह सों करो विचार ॥ ३०

जेते सुख इस्क के, लेते अरस के माँहिं ।
सो देखन की ठौर एह है, और ऐसा न देख्या काँहिं ॥ ३१

कबूं अरस में न होए जुदागी, ना जुदागी ए न्यामत ।
ए बातें दोऊ अनहोनियां, सो हक हम वास्ते करत ॥ ३२

इस्क पाइए जुदागिएं, सो तुम पाई इत ।
वतन हकीकत सब दई, ऐसा दाव न पाइए कित ॥ ३३

---

१. मस्ती का जल (अमृत) ।

फेर कब जुदागी पाओगे, छोड़ के हक अरस ।
बैठे खेल में पिओगे, हक इस्क का रस ।। ३४

याद करो इस्क को, कायम अरस में लेत जो सुख ।
अलेखे अनगिनती, सो देत लज्जत माहें दुख ।। ३५

जो सहूर करो तुम दिल से, खेल में किए बेसक ।
तो फुरसत न पाओ दमकी, सुख इस्क गिनती हक ।। ३६

ए किया तुमारे वास्ते, जो धनी खोले नजर एह ।
तो कै देखो माहें बातून, हक का प्रेम सनेह ।। ३७

ए नजर तुमें तब खुले, जो पूरन करें हक मेहेर ।
तो एक हक के इस्क बिना, और देखो सब जेहेर ।। ३८

हकें मेहेर बिध बिध करी, पर किन खोली ना नजर ।
सो भी वास्ते इस्क के, करसी बातें हांसी कर ।। ३९

खेल बनत याही बिध, एक भागे एक लरे ।
इन की हांसी बड़ी होएसी, जब घरों बैठ बातां करें ।। ४०

ए खेल सोई हांसी सोई, और सोई हक का इस्क ।
सो सब वास्ते हांसीय के, जो इत तुमें किए बेसक ।। ४१

जो देखे इत आंखां खोल के, तो देखे हक का इस्क अपार ।
सोई हांसी देखे आप पर, तो क्यों कहूँ औरों सुमार ।। ४२

मैं बोहोत हांसी देखी आप पर, अनगिनती हक इस्क ।
इलम धनी के देखाइया, मैं दोऊ देखे बेसक ।। ४३

मोकों धनिएँ देखाइया, सब इस्क चौदे तबक ।
इत जरा न बिना इस्क, अपना ऐसा देखाया हक ।। ४४

जो जागो सो देखियो, मेरी तो निसां[1] भई ।
रूह देखे सो दिल लग न आवही, तो क्यों सके जुबां कही ।। ४५

---

१. आत्म तुष्टि ।

ए तो केहेती हों खेल का, और कहा कहूँ अरस की इत ।
अरस का इस्क तो कहों, जो ठौर जरे की पाउं कित ॥ ४६

मोमन होए सो समझियो, ए बीतक कहें 'महामत' ।
अब बात न रही बोलन की, कह्या चलते जान निसबत ॥ ४७

॥ प्रकरण ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ ६८६ ॥

## सागर छठा खुदाई इलम का

सागर छठा है अति बड़ा, जो खुदाई—इलम[1] ।
जरा सक इनमें नहीं, जिनमें हक हुकम ॥ १

जेता तले हुकम के, ए जो कादर की कुदरत ।
ए सब बेसक तौलिया, सक न पाइए कित ॥ २

आसमान जिमी के बीच में, बेसक हुता न कोए ।
जब लग सक दुनियां मिने, तो कायम क्यों कर होए ॥ ३

अव्वल से आखर लग, इत जरा न कहूँ सक ।
रूह अल्ला के इलम से, हुए कायम चौदे तबक ॥ ४

इस्क काहूँ ना हुता, तो नाम आसिक कह्या हक ।
सो बल इन कुंजीय के, पाया इस्क चौदे तबक ॥ ५

ए दुनियाँ पैदा किन करी, हुती न काहूँ खबर ।
सो सक मेटी सबन की, इलम खुदाई आखर ॥ ६

वेद और कतेब में, कहूँ सुध न हुती मुतलक[2] ।
खोल हकीकत मारफत, किन काढ़ी न सुभे सक ॥ ७

बड़े *सात निसान आखर के, जासों पाइए क्यामत ।
खिताब हादी जाहेर कर, दई सबों को नसीहत ॥ ८

*आजूज *माजूज लेसी सबों, ऊगे *सूरज—मगरब ।
ईसा मारे *दज्जाल को, एक दीन करसी सब ॥ ९

---

१. ब्रह्म ज्ञान । २. बिल्कुल ।

दाभा होसी जाहेर, मेहेदी मोमनों इमामत ।
उड़ावे सूर असराफील, बेसक पाया बखत ॥ १०

काफर और मुनाफक, हँसते थे महंमद पर ।
सोई दिन अब आए मिल्या, जो महंमदें कही थी आखर ॥ ११

कही बसरी[1] मलकी[2] हकी,[3] महंमद तीन सूरत ।
करें सिफायत[4] आखर, खासल खास उमत ॥ १२

करम कांड और सरियत, किन किन लई तरीकत ।
दुनियां चौदे तबक में, किन खोली ना हकीकत ॥ १३

नासूत मलकूत लाए की, ना सुध थी जबरूत ।
नाम पढ़े जानत हैं, कहें बका लाहूत ॥ १४

ए सुध न पाई काहूं ने, क्यों है कहां ठौर विध किन ।
खोज खोज चौदे तबक का, दिल हुआ न किन रोसन ॥ १५

सो इलम खुदाई लुदंनी, पोहोंच्या चौदे तबक ।
सो इतथें मेहेर पसरी, सबे हुए बेसक ॥ १६

अव्वल कह्या फुरमान में, इत काजी होसी हक ।
करसी कायम सबन को, ऐसी मेहेर होसी मुतलक ॥ १७

ए खेल किया किन वास्ते, और हुआ किनके हुकम ।
ए सुध काहूँ ना परी, कहां अरस बका खसम ॥ १८

गिरो रूहें फिरस्ते लैल में, किन वास्ते आए उतर ।
कुंन केहेते खेल पैदा किया, ए किनने किन खातर ॥ १९

किन कौल किया बीच अरस के, कहे अरवाहें जो मोमन ।
सो पढ़े वेद कतेब को, ए खोली ना हकीकत किन ॥ २०

ए इलमें सब विध समझे, सांचा इलम जो हक ।
सब मर मर जाते हुते, किए इलमें बका मुतलक ॥ २१

---

१. मानवीय । २. बुद्धि के मालिक । ३. ब्रह्म ज्ञान के स्वामी । ४. सिफारिश ।

क्यों *सदर—तुल—मुंतहा, क्यों है अरस—अजीम ।
क्यो कौल फैल हकके, क्यों हक सूरत हलीम[1] ॥ २२

क्यों अरस आगूं जोए[2] है, क्यों अरस ढिग है ताल ।
क्यों पसू पंखी अरस के, क्यों बाग लाल गुलाल ॥ २३

क्यों खासल खास उमत, बीच नूरतजल्ला जे ।
क्यों खास उमत दूसरी, जो कही बीच नूर[3] के ॥ २४

ए नाम निमूना सबों लिखे, खुसबोए जिमी उज्जल ।
और कह्या पानी दूध सा, ताल जोए का जल ॥ २५

जोए किनारे जरी देहुरी, पूर जवेर दरखत ।
ए नाम निसान सबे लिखे, पर कोई पावे ना हकीकत ॥ २६

नेक नेक निसान केहेत हों, वास्ते साहेदी महंमद ।
ए पट खुल्या नूर पार का, कहों कहां लग कहूँ न हद ॥ २७

इलम खुदाई लुदंनी, रूह अल्ला ल्याए जित ।
उमियों[4] पट खोल बका मिने, बैठाए कर निसबत ॥ २८

ए बल इन कुंजीय का, काहूँ हुता न एते दिन ।
रूह अल्ला पैगाम[5] उमत को, द्वार खोल्या बका वतन ॥ २९

ए कायम अरस अपार है, जो कहावत है वाहेदत[6] ।
कोई पोहोंचे न अरस रूहों बिना, जिनकी ए निसबत ॥ ३०

ए बल देखो कुंजीय का, जिन बेवरा किया बेसक ।
ए भी बेवरा देखाइया, जो गैब[7] खिलवत का इस्क ॥ ३१

ए बल देखो कुंजीय का, जिन देखाई निसबत ।
ए जो रूहें जात हककी, जिन बेसक देखी वाहेदत ॥ ३२

ए बल देखो कुंजीय का, खूब देखी हक सूरत ।
हक के दिल के भेद जो, सो इलमें देखी मारफत ॥ ३३

---

१. प्यारी । २. जमुना जी । ३. अक्षर ब्रह्म । ४. अनपढ़ । ५. संदेश । ६. अखंड, एकत्व । ७. अन्दर का ।

कहा कहूं बल कुंजीय का, रूहें बड़ी रूह निसबत ।
और हक बड़ी रूह रूहन की, इन इलमें देखी खिलवत ॥ ३४

ए बल देखो कुंजीय[1] का, नीके देख्या हक इस्क ।
जुदे बैठाए लिखी इसारतें, जासों समझें रूहें बेसक ॥ ३५

ए बल देखो इन कुंजीय का, बातें छिपी हक दिल की ।
सो सब समझी जात हैं, हैं अरस की गुझ जेती ॥ ३६

देखो बल इन कुंजीय का, ए जो लिखी रमूजें[2] हक ।
आखर रसूल होए आवही, दे इलम खोलावे बेसक ॥ ३७

ए बल देखो कुंजीय का, रूहें बैठाई जुदी कर ।
आप केहे संदेसे कहावहीं, आप ल्यावें जुदे नाम धर ॥ ३८

बल क्यों कहूँ इन कुंजीय का, जो हक दिल गुझ इस्क ।
तिन दरियाव की नेहेरें, उतरी नासूत[3] में बेसक ॥ ३९

बल कहा कहूँ कुंजीय का, ए जो झूठा खेल रंचक[4] ।
सो रूहों सांच कर देखाइया, बंध बाँधे कै बुजरक ॥ ४०

ए बल देखो कुंजीय का, रूहें बीच चौदे तबक के आए ।
सो इलमें देखाया झूठ कर, बीच अरस के बैठाए ॥ ४१

इन हकका इस्क दुनी मिने, न पाइए लुदंनी[5] बिन ।
बिना इस्क न इलम आवही, दोऊ तौले अरस परस बजन ॥ ४२

ए कुंजी बल अपार है, जिनसों पाया अपार ।
लिया हक दिल गुझ इस्क, जिनको कहूँ न सुमार ॥ ४३

ए इलम कुंजी अरस की, रूह अल्ला ल्याए हकपे ।
माहें कै गुझ हक दिल की, सो देखी इन कुंजी से ॥ ४४

आसमान जिमी के बीच में, बातें बिना हिसाब ।
तिनमें बातें जो हक की, सो लिखी मिने किताब ॥ ४५

---

१. तारतम । २. रहस्य । ३. मृत्यु लोक । ४. जरा । ५. तारतम ज्ञान ।

या जाहेर या बातून, रमूजें या इसारत ।
सो खोल्या सब इन कुंजीएँ, हकीकत या मारफत ॥ ४६

अवल से आखर लग, किया कुंजिएँ सबका काम ।
हैयाती[1] चौदे तबकों, दे कायम भिस्त तमाम ॥ ४७

कहूं दुनियां चौदे तबक में, कह्या न हकका एक हरफ ।
हक सूरत क्यों केहेवही, किन पाई न बका तरफ ॥ ४८

तिन हकके दिल का गुभ जो, सो कुंजिएँ खोल्या इन ।
तो बात दुनी की इत कहां रही, कुंजी ऐसी नूर रोसन ॥ ४९

सदर—तुल—मुंतहा अरस—अजीम, जबरूत[2] या लाहूत[3] ।
इत जरा सक कहूँ ना रही, ए बल कुंजी कूवत[4] ॥ ५०

अरस अजीम के बाग जो, हौज जोए जानवर ।
इत सक जरा न काहू में, मोहोलात या अन्दर ॥ ५१

इन अरसों की भी क्या कहूँ, इन कुंजी अतंत बुभ ।
और बात इत कहां रही, काढ़्या हकके दिल का गुभ ॥ ५२

'महामत' कहें ऐ मोमनों, ए ऐसी कुंजी इलम ।
ए मेहेर देखो मेहेबूब की, तुमको पढ़ाए आप खसम ॥ ५३

॥ प्रकरण ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ १०४२ ॥

## सागर सातमा 'निसबत' का

अब कहूँ दरिया सातमा, जो निसबत[5] भर पूर ।
याको वार न पार काहूँ, जो नूर के नूर को नूर ॥ १

बे सुमार ल्याए सुमार में, ए जो करत हों मजकूर[6] ।
क्यों आवे बीच हिसाब के, जो हक अंग सदा हजूर ॥ २

खूबी क्यों कहूँ निसबत की, वास्ते निसबत खुली हकीकत ।
तो पाई हक मारफत[7], जो थी हक निसबत ॥ ३

---

१. अखंडता । २. अक्षर धाम । ३. परम धाम । ४. शक्ति । ५. सम्बन्ध, घनिष्टता ।
६. बातें । ७. पहचान ।

निसबत असल सबन की, जित निसबत तित सब ।
सब निसबत के वास्ते, इलमें जाहेर किया अब ।। ४

निसबत हककी जात हैं, निसबत में इसक ।
निसबत वास्ते इलम, इत आया बेसक ।। ५

ए हकें किया इस्कसों, कै बंध बांधे जहूर ।
सो जानत हैं निसबती, जो खिलवत हुई मजकूर ।। ६

हकें निसबत वास्ते, कै बंध बांधे माहें खेल ।
सब सुख देने निसबत को, तीन बेर आए माहें लैल ।। ७

अव्वल देखाया लैल[1] में, निसबत जान इस्क ।
दूसरी बेर देखाइया, गुझ इस्क मुतलक ।। ८

वास्ते निसबत बेर तीसरी, खेल देखाया हक ।
इलम बड़ाई इस्क, देख्या गुझ बका का बेसक ।। ९

निसबत वास्ते इस्क, निसबत वास्ते इलम ।
खुसाली निसबत वास्ते, आखर ल्याए खसम ।। १०

ए इलम अन्दर यों केहेत है, ए जो निसबत देखत दुख ।
इन दुख में बका अरस के, हैं हक दिल के कै सुख ।। ११

ए सुख सागर निसबत का, तिनका सुमार न आवे काँहि ।
सब हकें मपाए सागर, पर निसबत तौल कोई नाँहि ।। १२

मापे गेहेरे सागर, जिनको थाह न देखे कोए ।
हक दिल अन्दर पैठ के, मापे इस्क सागर सोए ।। १३

जो हक काहूँ न पाइया, ना किन सुनिया कान ।
पाया न वाके अरस को, जो कौन ठौर मकान ।। १४

सब बुजरगों ढूंढिया, किन पाई न बका तरफ ।
दुनियां चौदे तबक में, किन कह्या न एक हरफ ।। १५

---

१. रात्रि (वृज) ।

तिन हक दिल अन्दर पैठके, माप्या सागर इस्क ।
इन हकके इलमें रोसनी, सब मापे सागर बेसक ।। १६
सो इस्क इलम सुख सागर, वास्ते आए निसबत ।
इन निसबत के तौल कोई, ल्याऊँ कहां से हक न्यामत ।। १७
ए निसबत जो सागर, जानें निसबती मोमन ।
कहूँ थाह न गेहेरा सागर, कोई पावे न निसबत बिन ।। १८
तो क्यों कहूँ जोड़ निसबत की, जो दीजे निसबत मान ।
निसबत हककी जात हैं, जो हक वाहेदत सुभान ।। १९
बोहोत लेहेरी इन सागर की, मेहेर इस्क इलम ।
सोभा तेज सुख कै बका, ए निसबत में जात खसम ।। २०
एह इलम ए इस्क, और निसबत कही जो ए ।
ए तीनों सिफत माहें मोमनों, निसबत हककी जे ।। २१
किन पाया न इन इलम को, किन पाया ना ए इस्क ।
तो क्यों पावे ए निसबत, पेहेले सूरत न पाई हक ।। २२
ए गुझ भेद हक रूहन के, हक दिल की भी और ।
ए जानें हक निसबती, जाको हक कदम तले ठौर ।। २३
जब देखों हक निसबत, तब एकै हक निसबत ।
और हकका हुकम, कछू ना हुकम बिना कित ।। २४
जो कोई हकके हुकम का, ताए जो इलम करे बेसक ।
लेवें अपनी मेहेर में, तो नेक दीदार कबू हक ।। २५
पर कबूं दीदार ना निसबत का, ना काहू को एह न्यामत ।
ए जुबां इन निसबत की, कहा करसी सिफत ।। २६
ए जो सरूप निसबत के, काहूँ न देवें देखाए ।
बदले आप देखावत, प्यारी निसबत राखें छिपाए ।। २७
निमूना इन निसबत का, कोई नाहीं इन समान ।
ज्यों निमूना दूसरा, दिया न जाए सुभान ।। २८

क्यों दीजे निमूना इनका, जो कही हकको जात ।
निसबत इस्क इलम, ज्यों वृख फल फूल पात ॥ २९

सब लगे हैं निसबत को, इस्क इलम हुकम ।
ना तो कैसे इत जाहेर होंए, हम तुम इस्क इलम ॥ ३०

ए सब निसबत वास्ते, जो कछू सब्द उठत ।
या जो नजरों देखत, या जो कानों सुनत ॥ ३१

ज्यों हाथ पाँउँ सूरत के, मुख नेत्र नासिका कान ।
त्यों सब मिल एक सूरत, यों वाहेदत अंग सुभान ॥ ३२

अब कहा कहूँ निसबत की, दिया न निमूना जात ।
और सब्द ना इन ऊपर, अब कहा कहूँ मुख बात ॥ ३३

सिफत अलेखे निसबत, ज्यों सिफत अलेखे हक ।
सब्दातीत न आवे सब्द में, मैं कही इन बुध माफक ॥ ३४

कहिए सारी उमर लग, तो सिफत न आवे सुमार ।
ए दरिया निसबत का, याकी लेहेरें अखंड अपार ॥ ३५

ए बात बड़ी हक निसबत, सो झूठे खेल में नाहिं ।
ए बात होत बका मिने, हक खिलवत के माहिं ॥ ३६

जो खेल में खबर ना हककी, तो निसबत खबर क्यों होए ।
हक आसिक निसबत मासूक, वाहेदत में ना दोए ॥ ३७

ए बात सुने जो खेल में, बड़ा अचरज होवे तिन ।
किन पाई ना तरफ हककी, ए तो हक मासूक वतन ॥ ३८

तीन सूरत *महंमद की, गुझ हकका जानें सोए ।
हक जानें या निसबती, और कोई जानें जो दूसरा होए ॥ ३९

वाहेदत की ए पेहेचान, अरस दिल कह्या मोमन ।
मासूक कह्या महंमद को, जो अरस में याके तन ॥ ४०

'महामत' कहें ऐ मोमनों, ए निसबत इस्क सागर ।
ल्यो प्याले हक हुकमें, पिओ फूल भर भर ॥ ४१

प्रकरण ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ १०८३ ॥

## सागर आठमा मेहेर का

और सागर जो मेहेर[1] का, सो सोभा अति लेत ।
लेहेरें आवें मेहेर सागर, खूबी सुख समेत ।। १

हुकम मेहेर के हाथ में, जोस मेहेर के अंग ।
इस्क आवे मेहेर से, बेसक इलम तिन संग ।। २

पूरी मेहेर जित हककी, तित और कहा चाहियत ।
हक मेहेर तित होत है, जित असल है निसबत ।। ३

मेहेर होत अव्वल से, इतहीं होत हुकम ।
जलूस साथ सब तिनके, कछू कमी न करत खसम ।। ४

ए खेल हुआ मेहेर वास्ते, माहें खेलाए सब मेहेर ।
जार्थे मेहेर जुदी हुई, तब होत सब जेहेर ।। ५

दोऊ मेहेर देखत खेल में, लोक देखें ऊपर का जहूर ।
जाए अन्दर मेहेर कछू नहीं, आखर होत हक से दूर ।। ६

मेहेर सोई जो बातूनी, जो मेहेर बाहेर और माँहि ।
आखर लग तरफ धनी की, कमी कछुए आवत नाँहि ।। ७

मेहेर होत है जिन पर, मेहेर देखत पांचो तत्व ।
पिंड ब्रह्मांड सब मेहेर के, मेहेर के बीच बसत ।। ८

दुख रूपी इन जिमी में, दुख न काहूँ देखत ।
बात बड़ी है मेहेर की, जो दुख में सुख लेवत ।। ९

सुख में तो सुख दायम, पर स्वाद न आवत ऊपर ।
दुख आए सुख आवत, सो मेहेर खोलत नजर ।। १०

इन दुख जिमी में बैठके, मेहेरें देखे दुख दूर ।
कायम सुख जो इकके, सो मेहेर करत हजूर ।। ११

---

१. कृपा ।

मैं देख्या दिल विचार के, इस्क हक का जित ।
इस्क मेहेर से आइया, अव्वल मेहेर है तित ॥ १२

अपना इलम जिन देत हैं, सोभी मेहेर से बेसक ।
मेहेर सब बिध ल्यावत, जित हुकम जोस मेंहेर हक ॥ १३

जाको लेत हैं मेहेर में, ताए पेहेले मेहेरें बनावें वजूद ।
गुन अंग इंद्री मेहेर की, रूह मेहेर फूकत माहें बूद[1] ॥ १४

मेहेर सिंघासन बैठक, और मेहेर चँवर सिर छत्र ।
सोहोबत सैन्या मेहेर की, दिल चाहे मेहेर बाजंत्र ॥ १५

बोली बोलावें मेहेर की, और मेहेरै का चलन ।
रात दिन दोऊ मेहेर में, होए मेंहेरें मेला रूहन ॥ १६

बंदगी जिकर मेहेर की, ए मेहेर हक हुकम ।
रूहें बैठी मेहेर छाया मिने, पिएं मेहेर रस इस्क इलम ॥ १७

जित मेहेर तित सब हैं, मेहेर अव्वल लग आखर ।
सोहोबत मेहेर देवही, कहूँ मेहेर सिफत क्यों कर ॥ १८

ए जो दरिया मेहेर का, बातून जाहेर देखत ।
सब सुख देखत तहां, मेहेर जित बसत ॥ १९

बीच नाबूद दुनीय के, आई मेहेर हक खिलवत ।
तिन से सब कायम हुए, मेहेरै की बरकत ॥ २०

बरनन करूं क्यों मेहेर की, सिफत ना पोहोंचत ।
ए मेहेर हककी बातूनी, नजर माहें बसत ॥ २१

ए मेहेर करत सब जाहेर, सबका मता तौलत ।
जो किन कानों ना सुन्या, सो मेहेर मगज खोलत ॥ २२

बरनन करूँ क्यों मेहेर की, जो बसत हकके दिल ।
जाको दिल में लेत हैं, तहां आवत न्यामत सब मिल ॥ २३

---

१. हस्ती, अस्तित्व ।

बरनन करूँ क्यों मेहेर को, जो बसत है माहें हक ।
जाको निवाजें मेहेर में, ताए देत आप माफक ।। २४

बात बड़ी है मेहेर की, जित मेहेर तित सब ।
निमख ना छोड़ें नजर से, इन ऊपर कहा कहूँ अब ।। २५

जहां आप तहां नजर, जहां नजर तहां मेहेर ।
मेहेर बिना और जो कछू, सो सब लगे जेहेर ।। २६

बात बड़ी हैं मेहेर की, मेहेर होए ना बिना अंकूर ।
अंकूर सोई हक निसबती, माहें बसत तजल्ला नूर ।। २७

ज्यों मेहेर त्यों जोस है, ज्यों जोस त्यों हुकम ।
मेहेर रहत नूर बल लिएं, तहां हक इस्क इलम ।। २८

मींठा सुख मेहेर सागर, मेहेर में हक आराम ।
मेहेर इस्क हक अंग हैं, मेहेर इस्क प्रेम काम ।। २९

काम बड़े इन मेहेर के, ए मेहेर इन हक ।
मेहेर होत जिन ऊपर, ताए देत आप माफक ।। ३०

मेहेरें खेल बनाइया, वास्ते मेहेर मोमन[1] ।
मेहेरें मिलावा हुआ, और मेहेर फिरस्तन[2] ।। ३१

मेहेरें रसूल होए आइया, मेहेरें हक लिए फुरमान ।
कुंजी ल्याए मेहेर की, करी मेहेरें हक पेहेचान ।। ३२

दई मेहेरें कुंजी इमाम कों, तीनों महंमद सूरत ।
मेहेरें दई हिकमत[3], करी मेहेरें जाहेर हकीकत ।। ३३

सो फुरमान मेहेरें खोलिया, करी जाहेर मेहेरें आखरत ।
मेहेरें समझे मोमन, करी मेहेरें जाहेर खिलवत ।। ३४

ए मेहेर मोमनों पर, एही खासल खास उमत ।
दई मेहेरें भिस्त सबन को, सो मेहेर मोमनों बरकत ।। ३५

---

१. ब्रह्म सृष्टि । २. ईश्वरी सृष्टि । ३. बुद्धि ।

मेहेरें खेल देख्या मोमिनों, मेहेरें आए तले कदम ।
मेहेरें क्यामत करके, मेहेरें हँसके मिले खसम ॥ ३६

मेहेर की बातें तो कहूँ, जो मेहेर को होवे पार ।
मेहेरें हक न्यामत सब मापी, मेहेरें मेहेर को नाहीं सुमार ॥ ३७

जो मेहेर ठाढ़ी रहे, तो मेहेर मापी जाए ।
मेहेर पल में बढ़े कोट गुनी, सो क्यों मेहेरें मेहेर मपाए ॥ ३८

मेहेरें दिल अरस किया, दिल मोमन मेहेर सागर ।
हक मेहेर ले बैठे दिल में, देखो मोमिनों मेहेर कादर ॥ ३९

बात बड़ी है मेहेर की, हकके दिलका प्यार ।
सो जाने दिल हकका, या मेहेर जाने मेहेर को सुमार ॥ ४०

जो एक बचन कहूँ मेहेर का, ले मेहेर समझियो सोए ।
अपार उमर अपार जुबाँ, तो मेहेर को हिसाब न होए ॥ ४१

निपट बड़ा सागर आठमा, ए मेहेर को नीके जान ।
जो मेहेर होए तुझ ऊपर, तो मेहेर की होए पेहेचान ॥ ४२

सात सागर बरनन किए, सागर आठमा बिना हिसाब ।
ए मेहेर को पार न आवहीं, जो कै कोट करूं किताब ॥ ४३

ए मेहेर मोमन जानहीं, जिन ऊपर है मेहेर ।
ताको हकको मेहेर बिना, और देखें सब जेहेर ॥ ४४

'महामत' कहें ऐ मोमिनों, ए मेहेर बड़ा सागर ।
सो मेहेर हक कदमों तले, पिओ अमी रस हक नजर ॥ ४५

॥ प्रकरण ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ ११२८ ॥

**प्रकरण तथा चौपाइयों की कुल संख्या—प्रकरण ४३६, चौपाई १४१६५**

**इति श्री महामति श्रीप्राणनाथ जी की 'तारतम बानी' का बारहवाँ ग्रन्थ**

**॥ 'सागर' संपूर्ण ॥**

निजनाम श्री कृष्णजी, अनादि अक्षरातीत ।
सोतो अब जाहेर भए, सबबिध वतन सहित ॥

# ❋ सिनगार[१] ❋

**श्री किताब महासिनगारकी जो हुकमें बरनन किया**

**मंगलाचरण**

बरनन करो रे रूहजी, हकें तुम सिर दिया भार[२] ।
अरस[३] किया अपने दिल को, माहें बैठाओ कर सिनगार ॥ १

रूह चाहे बरनन करूँ, अखंड सरूप की इत ।
सुपने में सत सरूप की, किन कही न हक सूरत ॥ २

रात दिन बसें हक अरस में, मेरा दिल किया अरस सोए ।
क्यों न होएं मोहे बुजरगियां[४], ऐसा हुआ न कोई होए ॥ ३

किन कायम[५] द्वार न खोलिया, अव्वल से आज दिन ।
जो कोई बोल्या सो फना[६] मिने, किन पाया न बका[७] वतन ॥ ४

अरस बका हक बरनन, सो बीच फना जिमी क्यों होए ।
अव्वल से आज दिन लगे, बका सबद न बोल्या कोए ॥ ५

ए चेतन कहावें झूठी जिमिएँ, सो सब जड़ तूं जान ।
जो थिर कहावें अरस में, सो चेतन सदा परवान[८] ॥ ६

ए झूठी रवेसें[९] और हैं, और अरस में और न्यामत[१०] ।
ए किया निमूना अरस जानने, पर बने ना तफावत[११] ॥ ७

---

१. शृङ्गार । २. उत्तरदायित्व । ३. धाम । ४. बड़प्पन । ५. स्थाई । ६. नश्वर जगत ।
७. अखण्ड । ८. सत्य । ९. पद्धति । १०. परमात्मा की देन । ११. अन्तर ।

सतलोक मृतलोक दो कहे, और स्वर्ग कह्या अमृत[१] ।
जो नीके किताबें देखिए, तो ए सब उड़सी असत ॥ ८

इन झूठी जिमी में केहेत हों, साँच झूठ हैं दोए ।
जब आगूं अरस के देखिए, तब इनमें न सांचा कोए ॥ ९

अरस हमेसा कायम, ए दुनी न तीनों काल ।
हुआ है ना होएसी, तो क्यों दीजे अरस मिसाल[२] ॥ १०

ए बारीक[३] बातें अरस की, इत दिल जुबां पोहोंचे नाहें ।
ए हुकम केहेवे हक का, इलम हुकम के माहें ॥ ११

सत सुख कै सरूप में, कै आनन्द आराम ।
कै खूसाली[४] खुबियां[५], अंग छूटे न आठो जाम ॥ १२

अरस सबे है चेतन, हर चीज में सब गुन ।
सब न्यामतें एक चीज में, कमी न माहें किन ॥ १३

इन झूठी जिमी में बरनन, सत सरूप को कह्यो न जाए ।
कबूं किन कानों न सुनी, सो क्यों जीव हिरदे समाए ॥ १४

ए लीला जानें सृष्टि ब्रह्म की, जाए पोहोंच्या होंए तारतम[६] ।
ए दृष्टि पूरन तब खुले, जाए अव्वल आखर इलम ॥ १५

कहे वेद बैराट[७] कछुए नहीं, जैसे आकास—फूल[८] ।
ए चौदे तबक जरा नहीं, ना कछू डाल न मूल ॥ १६

कतेबों भी यों कह्या, चौदे तबक ए जोए ।
एक जरा नजरों न आवही, जाके टूक[९] न होंवें दोए ॥ १७

ऐसा चौदे तबक[१०] का निमूना, क्यों हक को दिया जाए ।
ए सबद झूठी जिमी का, क्यों सकिए अरस पोहोंचाए ॥ १८

कही जाए न सोभा इन मुख, ना कछू दई जाए साख[११] ।
एक जरा हरफ[१२] न पोहोंचही, जो सबद कहिए कै लाख ॥ १९

---

१. अनश्वर । २. उदाहरण । ३. सूक्ष्म । ४. आनन्द । ५. अच्छाइयाँ । ६. प्रकाश वाला ज्ञान । ७. ब्रह्मांड । ८. कल्पना मात्र । ९. टुकड़े । १०. लोक । ११. गवाही (साक्षी) । १२. अक्षर ।

ना अरस बका किन देखिया, ना कछू सुनिया कान ।
तरफ भी किन पाई नहीं, तो करे कौन बयान ॥ २०

एक कह्या अरस—अजीम[1], दूजा सदरतुल—मुंतहा[2] ।
तीसरा कह्या मलकूत,[3] जो अरस फिरस्तों का ॥ २१

ए तीनों अरस मुखथें कहें, पर बेवरा[4] न पासे किन ।
ए दुनियां क्यों समझे, हकीकत[5] खोले विन ॥ २२

हक हुकम जाहेर हुआ, दोऊ—हादी[6] हुए मेहेरबान[7] ।
खुली हकीकत मारफत,[8] तो जाहेर करूँ फुरमान[9] ॥ २३

*तीनों गिरोका[10] बेवरा, एक रूहें[11] और फिरस्ते[12] ।
तीसरी खलक—आम[13] जो, *कुंन केहेते उपजे ॥ २४

रूहें गिरो कही लाहूती,[14] और फिरस्ते जबरूती[15] ।
और गिरो जो तीसरी, जो कही मलकूती[16] ॥ २५

अव्वल खासल खास रूहन की, गिरो फिरस्तों की खास कही ।
और कुंन की तीसरी, ए जो आम खलक भई ॥ २६

दुनियां सरीअत[17] फरज बंदगी,[18] और फिरस्तों बंदगी हकीकत ।
रूहें हकीकत इसक,[19] और इनपे है मारफत ॥ २७

रूहें आसिक सोई लाहूती, जाके अरस अजीम में तन ।
कह्या हकें दोस्त रूहें कदीमी[20], जो उतरे अरस से मोमन ॥ २८

अरस कह्या दिल *मोमन, जो मोमन दिल आसक[21] ।
सो मोमन कछुए न राखहीं, विना अरस बका हक ॥ २९

सोई मोमन जानियो, जो उड़ावे चौदे तबक ।
एक अरस के साहेब बिना, और सब करे तरक[22] ॥ ३०

उतरे हैं अरस से, वे कहे महंमद मेरे भाई ।
सो आखर को आवसी, ए जो एहेल—इलाही[23] ॥ ३१

---

१. परम-धाम । २. अक्षर धाम । ३. बैकुंठ । ४. सही ज्ञान । ५. सच्चाई । ६. दीनो गुरू । ७. दयालु । ८. पूर्ण पहचान । ९. आज्ञा । १०. जातियां । ११. आत्मा । १२. देवदूत । १३. दुनियां । १४. परम धाम की । १५. अक्षर धाम की । १६. जीव सृष्टि । १७. कर्म काण्ड । १८. उपासनां । १९. प्रेम । २०. प्राचीन । २१. प्रेमी । २२. त्याग । २३. ब्रह्म सृष्टि ।

वे फकीर अतीम[1] हैं, मुझे उठाइयो उनों में ।
हक बरकत[2] दुनियाँ मिने, होसी सब इनों से ।। ३२

मोहे इलम दिया हकने, सो इनों को देसी इमाम ।
आखर बड़ाई इनों की, कहे मुसाफ[3] हदीस[4] तमाम[5] ।। ३३

ए माग्या *अलिएँ हकपें, मुझे उठाइयो आखरत ।
मेहेदी के यारों मिने, मैं पाऊँ ए निसबत ।। ३४

इमाम *जाफर *सादिक, उनोंने माग्या हकपें ।
मुझे उठाइयो आखरत, *मेहेदी के यारों में ।। ३५

*मूसा *इबराहीम *इस्माईल, *जिकरिया *एहिया *सलेमान ।
*दाऊदें मांगया मेहेदी जमाना, उस बखत उठाइयो सुभान ।। ३६

लिख्या यों फुरमान में, सब आवेंगे पैगंमर ।
जासी जलती दुनियां सबपें, कोई सके न मदत कर ।। ३७

आखर महंमद छुड़ावसी, और आग न छूटे किन से ।
सब जलें आग दोजख[6] की, ए लिख्या जाहेर फुरमान में ।। ३८

सब पैगंमर सरमिंदे,[7] होसी बीच आखरत ।
इत छिपी न रहे कछुए, खुले पट हकीकत मारफत ।। ३९

पीठ देवे दुनीअ को, सो मोमन मुतलक ।
देखो कौल सबन के, सब बोले बुध माफक ।। ४०

माहें मैले बाहेर उजले, सो तो कहे *मुनाफक[8] ।
मासू अल्ला[9] छोड़ें मोमन, तामें कुफर[10] नहीं रंचक ।। ४१

पाक दिल पाक रूह, जामें जरा न सक ।
जाको ऊपर ना डिंभक,[11] एक जरा न रखे विना हक ।। ४२

सर—भर[12] एक मोमन के, कै कोट मिलो खलक ।
जाको मेहेर[13] करें मोमन, ताए सुपने नहीं दोजख ।। ४३

---

१. अनाथ । २. बढ़ोत्तरी । ३. धर्म ग्रंथ । ४. मुहम्मद के वचन । ५. सब । ६. नरक । ७. लज्जित । ८. मुँह पर कुछ दिल में कुछ । ९. परमात्मा के बिना । १०. इन्कारी । ११. पाखण्ड । १२. बराबर । १३. कृपा ।

तुम सुनो मोमनों वचन, जो धनिएँ कहे मुझे आए ।
साथ आया अपना खेलमें, सो लीजो सबे बोलाए ॥ ४४

मोहे कह्या आप श्री मुख, तेरी अरस से आई आतम ।
तोकों दिया अपनाइत जानके, हक बका अरस इलम ॥ ४५

निज हुकम आया सिर मोमनों, जिनके ताले[1] निज नूर ।
ऐसे ताले हमारी रूह के, क्यों न करें हम हक जहूर[2] ॥ ४६

ब्रह्म सृष्टि हती[3] ब्रज रास में, प्रेम हुतो लक्ष[4] बिन ।
सो लक्ष ल्याए अव्वल को रूह अल्ला, न था आखरी इलम पूरन ॥ ४७

जोलों मुतलक इलम न आखरी, तोलों क्या करे खास उमत ।
पेहेचान करनी मुतलक, जो गैब[5] हक खिलवत ॥ ४८

लिख भेज्या फुरमान में, हक रमूजें[6] इसारत ।
सो पाइए इलम हक के, जब खुली हकीकत मारफत ॥ ४९

जो कीजे बरनन हक बका, होए जोस मेहेर हुकम ।
निसबत हक हादीअ सों, और आखर इसक इलम ॥ ५०

अरस अरवाहों[7] को चाहिए, खोलें रूह को नजर ।
तब देखे आम खलक को, ज्यों खेल के कबूतर ॥ ५१

तो न लेवें निमूना इनका, ना लेवें इन की रसम ।
हक बिना कछुए ना रखें, अरस अरवाहों ए इलम ॥ ५२

इत सब मुतलकियाँ चाहिए, बरनन करना मुतलक ।
लिख्या आखर जाहेर होएसी, सूरत बका जात हक ॥ ५३

लिख्या अव्वल फुरमान में, जाहेर होसी क्यामत ।
जो लों होए इलम मुकैअद[8], तोलों जाहेर न हक मारफत ॥ ५४

जेती चीजें अरस में, सो सब मुतलक न्यामत ।
सो मुतलक इलम बिना, क्यों पाइए हक खिलवत ॥ ५५

---

१. भाग्य । २. प्रकटीकरण । ३. थी । ४. लक्ष्य । ५. परोक्ष । ६. रहस्य । ७. रूहें । ८. कैद ।

ए जो चौदे तबक का बातून[1], तिन बातून का बातून नूर ।
तिनको भी बातून नूर-बिलंद[2], केहेना तिन बिलंद का बातून जहूर ।। ५६

ए बातून अरस बारीकियां, सो होए मुतलकियों इलम ।
अरस बका करें जाहेर, सबों भिस्त[3] देवे हुकम ।। ५७

बरनन करें बका हक की, हम जो अरस अरवा ।
लेवें सब मुतलकियां, हमसों रहे न कछू छिपा ।। ५८

और बात बारीक ए सुनो, अरस छोड़ न आए मोमन ।
और बातें मुतलक[4] खेल की, करसी अरस में देखे बिन ।। ५६

हम झूठी जिमी में आए नहीं, झूठ रहे न हमारी नजर ।
ब्रह्मांड उड़ावे अरस कंकरी, तो रूहों आगे रहे क्यों कर ।। ६०

और माया देखाई हम को, करी वास्ते हमारे ए ।
होसीं पूरन हमारी अरस में, रूहें उमेद करी दिल जे ।। ६१

हम रूहें न आइयाँ खेल में, हक अरस सुख लिए इत ।
हक हुकमें इलम या विध, सुख दिए कर हिकमत ।। ६२

हम तो हुए इत हुकम तले, मैं न हमारी हममें ।
ए मैं बोले हक का हुकम, यों बारीक अरस माएने ।। ६३

हुकम किया चाहे बरनन, ले हक हुकम मुतलक ।
करना जाहेर बीच झूठी जिमी, जित छूटी न कबूं किन सक ।। ६४

दिन एते हक जस गाइया, लुदंनी[5] का बेवरा कर ।
हकें हुकम हाथ अपने लिया, जो दिया था महंमद के सिर पर ।। ६५

।। प्रकरण ।। १ ।। चौपाई ।। ६५ ।।

## हुकमें इसक का द्वार खोल्या है

अब हुकमें द्वारा खोलिया, लिया अपने हाथ हुकम ।
दिल मोमन के आए के, अरस कर बैठे खसम[6] ।। १

---

१. अंदरुनी । २. परम धाम (महान) । ३. बहिश्त । ४. बिल्कुल । ५. ब्रह्म ज्ञान । ६. पति ।

हक अरस दिल मोमन, और अरस हक खिलबत ।
वाहेदत[1] बीच अरस के, है अरस में अपार न्यामत ॥ २

ए साहेदी सुनो, जो लिखी माहें फुरमान ।
अरस कह्या दिल मोमन, अरस में सब पेहेचान ॥ ३

हक हादी रूहें अरस में, और इसक इलम बेसक ।
जोस हुकम मेहेरबानगी, हकीकत मारफत मुतलक ॥ ४

दिल मोमन अरस कह्या, सब अरस में न्यामत ।
सो क्यों न करे दिल बरनन, जाकी हकसों निसबत ॥ ५

सब बातें हैं अरस में, और अरस में वाहेदत ।
हौज[2] जोए[3] बाग अरस में, अरस में हक खिलवत[4] ॥ ६

अरस कह्या दिल मोमन, सो काहे न करे बरनन ।
जिन दिल में ए न्यामत, सो मुतलक अरस रोसन ॥ ७

हम सिर हुकम आइया, अरस हुआ दिल हम ।
एही काम हक इलम का, तो सुख काहे न लेवें खसम ॥ ८

कह्या अरस हमारे दिल को, हैं हमहीं हक हुकम ।
क्यों न आवे इसक हक का, यों बेसक हैयाती[5] इलम ॥ ९

चरन बासा हमारे दिल में, रहें रूह के नैनों माहें ।
क्यों न्यारे हम से रहें, हम बसें हक हैं जांहें ॥ १०

मेरे सब अंगों हक हुकम, विना हुकम जरा नाहीं ।
सोई हुकम हक में, हक बसें अरस में तांहीं ॥ ११

हम अरस परस हैं हक के, ए देखो मोमनों हिसाब ।
हम हकमें हक हममें, और हक बिना सब ख्वाब ॥ १२

हक हुकमें सब मिलाइया, अरस मसाला पूरन ।
हादी रूहें जगावने, करावने हक बरनन ॥ १३

---

१. एकत्व । २. कौसर ताल । ३. यमुना नदी । ४. एकान्त बैठक । ५. अमरत्व ।

आखर मोमन आकल[1], कह्या जिनका दिल अरस ।
तो हक दिल का जो इसक, सो मोमन पीवें रस ॥ १४

विचार करें दिल मोमन, जो अरस मता दिल हम ।
तो हक दिल होसी कौन न्यामत, जो हक वाहेदत खसम ॥ १५

देखो मोमनों के दिल में, कही केती अरस बरकत ।
विचार देखो हक दिल में, क्या होसी हक न्यामत ॥ १६

हक हादी अरस मोमन, सो तो पेहेले हक दिल माहें ।
जो चीज प्यारी रूह को, ताए हक पल छोड़ें नाहें ॥ १७

जो मता[2] कह्या दिल मोमन, सो मोमन दिल समेत ।
सो बसत हक के दिल में, सो हक दिल मता रूह लेत ॥ १८

जो रूह पैठे[3] हक दिल में, सो मगन माहें न्यामत ।
जो तित पड़ी कदी खोज में, तो छूटें ना लग क्यामत[4] ॥ १९

जो सुराही हक की पीवना, सो इसक हक दिल मिने ।
सो मोमन पीवें कोई पैठके, और पिया न जाए किने ॥ २०

कुलफ[5] था एते दिन, द्वार इसक न खोल्या किन ।
सो खोल दिया हकें मेहेर कर, अपने हाथ मोमन ॥ २१

गंज[6] खोलसी इसक का, मोहोर[7] हुती जिन पर ।
लेसी अछूत प्याले मोमन, हकें खोली मोहोर *फजर[8] ॥ २२

ए पिएं प्याले मोमन, हक सुराही सराब ।
लाड़ लज्जत लें अरस की, ए मस्ती माहें आब ॥ २३

हक सुराही ले हाथ में, दें मोमनों भर भर ।
सुख मस्ती देवें अपनी, और बात न इन बिगर ॥ २४

अमल ऐसा इन मद का, अरस रूहें रही छकाए ।
छाके ऐसे नींद सुपन में, जानों अरस में दिए जगाए ॥ २५

---

१. बुद्धिमान । २. पूंजी । ३. घुसे । ४. प्रलय । ५. ताला (कुफल) । ६. खजाना । ७. मुहर । ८. ज्ञानोदय काल ।

पेहेले एक ए हक के दिल में, रूहों लाड़ कराऊँ निस दिन ।
बे सुमार बातें हक दिल में, सब इसक वास्ते मोमन ॥ २६

ए खेल किया वास्ते इसक, वास्ते इसक पेहेचान ।
जुदे किए इसक वास्ते, देने इसक सुख रेहेमान[1] ॥ २७

मोमन उतरे इसक वास्ते, वास्ते इसक ल्याए ईमान ।
ईमान न ल्याए सो भी इसकें, इसकें न हुई पेहेचान ॥ २८

कम ज्यादा सब इसकें, इसकें दोऊ दरम्यान ।
इसकें बंदगी या कुफर, सब वास्ते इसक सुभान ॥ २९

छोटी बड़ी या जो कछू, ए जो चौदे तबक की जहान ।
ए भी हक इसक तो पाइए, जो होए बेसक पेहेचांन ॥ ३०

जो न्यामत हक के दिलमें, तिन का क्योंए ना निकसे सुमार ।
सो सब इसक हक का, रूहों वास्ते इसक अपार ॥ ३१

ए इलम आया जब रूह कों, तब पेहेचान आई मुतलक ।
जो हरफ निकसे दुनी का, सो सब देखे इसक हक ॥ ३२

जब ए इलम रूहों पाइया, इसक हो गया चौदे तबक ।
और देखे न कछूए नजरों, सब देखे इसक हक ॥ ३३

रूह देखे अपने इसकसों, होसी कैसा हक इसक ।
कैसा इलम तोकों भेजिया, जामें सक नहीं रंचक ॥ ३४

*त्रिलोकी *त्रैगुन में, कहूँ नाहीं बेसक इलम ।
सो हकें भेज्या तुम ऊपर, ए देखो इसक खसम ॥ ३५

किए चौदे तबक तुम वास्ते, इन में मता है जे ।
ए भी हक इसक तो पाइए, जो देखो हक इलम ले ॥ ३६

फुरमान भेज्या हकें इसकें, इसकें लिखी इसारत ।
तुमें कुंजी दई हकें इसकें, खोलनें हक *मारफत ॥ ३७

---

१. कृपालु ।

फुरमान कोई न खोल सके, सो भी इसक कारन ।
खिताब[1] दिया सिर एक के, सो भी वास्ते इसक मोमन ।। ३८

सब दुनियाँ हक इसक हुआ, तो देखो अरस में होसी कहा ।
ए आया इलम रूहन पर, हकें भेज्या ए तोफा[2] ।। ३९

विचार किएँ इत पाइए, हुआ एही अरस सहूर ।
वाको लिख्या कुरान में, ए जो कह्या नूर का नूर ।। ४०

ए जाहेर कही हक वाहेदत, हक *हादी *उमत बातन ।
सो करूँ जाहेर बरकत हादियों, पर अव्वल नफा लेसी मोमन ।। ४१

चरन ग्रहों *नूर जमाल के, जिनने अरस किया मेरा दिल ।
सो बयान करत है हुकम, हक सुख लेसी *मोमन मिल ।। ४२

अरस हमेसा कायम, जो हक का हुआ तखत ।
सो कायम दिल मोमन का, जित है हक खिलवत ।। ४३

कदमों लाग करूँ सेजदा, पकड़ के दोऊ पाए ।
हुकम करत हैं मासूक, बीच आसक के दिल आए ।। ४४

मासूक तुमारी अंगना, तुम अंगना के मासूक ।
ए हुकमें इलम दृढ़ किया, अजूं रूह क्यों न होत टूक टूक ।। ४५

इतहीं सेजदा बंदगी, इतहीं जारत[3] जगात[4] ।
इतहीं जिकर हक दोस्ती, इतहीं रोजा खोलात ।। ४६

दिल को तुम अरस किया, तुम आए बैठे दिल माहें ।
हम अरस समेत तुम दिल में, अजूं क्यों जोस आवत नाहें ।। ४७

दिल अरस हुआ हुकमें, तुम आए अपने हुकम ।
इसक इलम सब हुकमें, कहूँ जरा न विना खसम ।। ४८

बुध जागृत इलम हक का, और हकै का हुकम ।
जोस अरस का दिल में, ए सब मिल दिल में हम ।। ४९

---

१. पदवी । २. उपहार । ३. दर्शनार्थ तीर्थ यात्रा । ४. दान पुण्य ।

अब दिल में ऐसा आवत, ए सब करत चतुराए ।
फेर देखूं इन चतुराई को, तो हक विन हरफ न काढ़यो जाए ॥ ५०

हक चतुराई ना चौदे तबकों, हक बका कही न किन तरफ ।
ला मकान सुंन छोड़ के, किन सीधा कह्या न एक हरफ ॥ ५१

हक चतुराई हक इलम, और हकै का हुकम ।
ए तीनों मिल केहेत हैं, है बात बड़ी खसम ॥ ५२

ला मकान *सुंनके परे, हुआ नूर अक्षर ।
कोट ब्रह्मांड उपजे खपे, एक पाउ पल की नजर ॥ ५३

*अक्षरातीत नूर जमाल, ए तरफ जानें अक्षर नूर ।
एक या विना त्रैलोक को, इन तरफ की न काहूँ सहूर ॥ ५४

तो कह्या आगूं हक बुध के, चौदे तबकों सुध नाहें ।
सो बुध जागृत *महंमद *रूह अल्ला, दई मेरे हिरदे माहें ॥ ५५

पातसाही एक खाबंद की, बीच साहेबियां दोए ।
ए वाहेदत की हकीकत, बिना मारफत न जाने कोए ॥ ५६

सो बुध दोऊ अरसों की, दोऊ सरूप थें जो गुझ ।
ए सुख काएम अरस रूहन के, सो कायम कुंजी दई मुझ ॥ ५७

और सुख बारीक ए सुनो, कहे नूर *नूरतजल्ला दोए ।
नूर तजल्ला के अंदर की, सुध नहीं नूर को सोए ॥ ५८

जित चल न सके *जबराईल, कहे आगूं जलत मेरे पर ।
जलावत नूर तजल्ली,[1] में चल सकों क्यों कर ॥ ५९

सो सुध बातून नूरजमाल की, अरस अजीम के अन्दर ।
दोऊ हादियों मेहेर कर, पट खोल दिए अंतर ॥ ६०

जो सुध नहीं नूर जागृत, नूर जमालका बातन ।
सो बेसक सुध हकें मोहे दई, सो मैं पाई वजूद[2] सुपन ॥ ६१

---

१. परमात्मा का तेज । २. शरीर ।

रूहें अंदर अरस अजीम के, जो अरवा बारे हजार ।
हक ऊपर बैठे देखावत, ए जो खेल कुफार ॥ ६२

सो भिस्त दई हम सबन को, कर जाहेर बका अरस इत ।
करें त्रैलोकी त्रिगुन काएम, ब्रह्म सृष्टि की बरकत ॥ ६३

ए बात बारीक अति बुजरक, दोऊ सरूपों सुख बातन ।
करी परीक्षा इसक साहेबी, सुख होसी नूर रूहन ॥ ६४

करसी काएम खाकी बुतको, करके नूर सनमुख ।
इन से अक्षर और मोमन, लेसी काएम अरस के सुख ॥ ६५

ए सुख जानें नूर जमाल, या जानें नूर अक्षर ।
या हम रूहें जानहीं, कहें *महामत हुकमें यों कर ॥ ६६

॥ प्रकरण ॥ २ ॥ चौपाई ॥ १३१ ॥

आसक इन चरन की, आसक की रूह चरन ।
एह जुदागी[1] क्यों सहे, रूह बिना अपने तन ॥ १

जो रूहें अरस की मोमन, तिन सब की ए निसबत ।
दिल मोमन अरस इन माएनों, इन दिल में हक सूरत ॥ २

हक सूरत रूहें मोमन, निसबत एह असल ।
मोमन रूहें कही अरस की, तो अरस कह्या मोमन दिल ॥ ३

ए चरन दोऊ हक के, आए धरे मेरे दिल माहें ।
तो अरस कह्या दिल मोमन, आई न्यामत हक हैं जांहें ॥ ४

ए चरन हुए अरस मासूक, हुआ अरस चरन दिल एक ।
ए वाहेदत जुदागी क्यों होए, जो ताले लिखी ए नेक ॥ ५

अरस अरवाहें जो वाहेदत, सो सब तले हक नजर ।
इसक सुराई हाथ हक के, रूहों पिलावें भर भर ॥ ६

---

१. अलगाव ।

इसक हक के दिल में, सो दिल पूरन गंज अपार ।
असल तन इत जिनों, सोए रस पीवनहार ॥ ७

सराब हक सुराही का, पिया अरवाहों जिन ।
*आठो जाम *चौसठ घड़ी, क्यों उतरे मस्ती तिन ॥ ८

असल अरवाहें अरस की, जो हैं रूह मोमन ।
एक निसबत जानें हक की, जिन मासूक प्यारे चरन ॥ ९

मोमन बासा चरन तले, अरस अरवाहों का मूल ।
मोमन आए इत अरस से, तो फुरमान ल्याए रसूल ॥ १०

तो कह्या मोमन खाना दीदार, पानी पीवना दोस्ती हक ।
तवाफ[१] सेजदा इतहीं, करें रूह कुरबानी मुतलक ॥ ११

रूहें अव्वल आखर इतहीं, मोमन ना दूजा ठौर ।
कहे चौदे तबक ना कछू, बिना वाहेदत ना कछू और ॥ १२

जो अब भी जाहेर ना होती, बका हक सूरत ।
तो क्यों होती दुनी हैयाती, क्यों भिस्त द्वार खोलत ॥ १३

जो दीदार न होता दुनी को, तो क्यों करते इमाम इमामत ।
क्यों जानते क्यामत को, जो जाहेर न होतीं निसबत ॥ १४

अरस बका द्वार न खोलते, तो क्यों होती सिफायत[२] महंमद ।
हक के कौल सबे मिले, जो काफर करते थे रद ॥ १५

कह्या अव्वल महंमद ने, हक अमरद[३] सूरत ।
मैं देखी अरस अजीम में, पोहोंच्या बका बीच खिलवत ॥ १६

हौज जोए बाग जानवर, जल जिमी अरस मोहोलात ।
और अनेक देखी न्यामतें, गुझ जाहेर करी के बात ॥ १७

सो बरनन हुई हक सूरत, जासों *महंमदें करी मजकूर[४] ।
*नव्वे हजार हरफ सुने, नूर पार पोहोंच हजूर ॥ १८

---

१. परिक्रमा । २. सिफारिस । ३. किशोर । ४. चर्चा ।

हक हुकमें कछू जाहेर किए, और छिपे रखे हुकम ।
सो हुकमें अव्वल आखर कों, अब जाहेर किए खसम ॥ १९

सब कोई कहे खुदा एक है, दूजा कहे न कोए ।
कलाम अल्ला कहे एक खुदा, दूजा बरहक[1] महंमद सोए ॥ २०

सो महंमद कहे मैं उमत से, मुझसे है उमत ।
मैं उमत बिना न पी सकों, हक हजूर सरबत[2] ॥ २१

खुदा एक महंमद साहेद[3], मसहूद[4] है उमत ।
ए तीनों अरस अजीम में, ए वाहेदत बीच हकीकत ॥ २२

ए उपले माएने तीन कहे, और चौथा नूर मकान ।
ए बातें मारफत की, सब मिल एक सुभान ॥ २३

रसूलें एता इत जाहेर किया, और हरफ रखे छिपाए ।
हक मेला बड़ा होएसी, सो करसी जाहेर खिलवत आए ॥ २४

बसरी मलकी और हकी, कही महंमद तीन सूरत ।
तामें दो देसी हक साहेदी, हकी खोले सब हक़ीकत ॥ २५

हकी हक अरस करे जाहेर, ऊग्या काएम सूर फजर ।
होसी सब हैयाती, देख काएम खिलवत नजर ॥ २६

ले हकी सूरत हक इलम, करसी जाहेर हक बिसात[5] ।
खिलवत भी छिपी ना रहे, करे जाहेर वाहेदत हक जात ॥ २७

फजर कही जो फुरमाने, सो अरस बका हक दिन ।
जो लों बका तरफ पाई नहीं, तो लों सबों ना रोसन ॥ २८

अब दिन काएम जाहेर हुआ, सबों रोसनी पोहोंची बका हक ।
काएम किए सब हुकमें, बरस्या बका इसक मुतलक ॥ २९

रूह अल्ला चौथे आसमान से, आए खोली सब हकीकत ।
ल्याए इलम लुदंनी, कही सब हक निसबत ॥ ३०

---

१. सत्य निष्ठ । २. अमृत । ३. साक्षी । ४. जिसकी गवाही दो गई हो । ५. वस्तुएँ ।

जो कही महंमद ने, हक जात सूरत ।
सोई कही रूहअल्ला ने, यामें जरा न तफावत ॥ ३१

जो अमरद कह्या महंमदें, सोई कही ईसे किसोर सूरत ।
और सब चीजें कही बराबर, दोऊ मकांन हादी उमत ॥ ३२

हौज जोए बाग अरस के, जो कछू अरस बिसात ।
कहूँ केती अरस साहेदियाँ, इन जुबां कहो न जात ॥ ३३

बरकत कुंजी रूहअल्ला, हुआ बेवरा तीन उमत ।
पूरी उमेदें सबन की, जाहेर होते हक सूरत ॥ ३४

ले ग्वाही दोऊ हादियों की, किया हक बरनन ।
सब कौल किताबों के, हक हुकमें किए पूरन ॥ ३५

वाहेदत अरस अखंड, असल नकल नहीं दोए ।
घट बढ़ अरस में है नहीं, न नया पुराना होए ॥ ३६

रंग नंग रेसम मिलाए के, हेम जवेर कुंदन ।
इन विध बनावे दुनियां, बस्तर और भूखन ॥ ३७

अरस सरूप जो अखंड, याको होए कैसे बरनन ।
एक उतार दूजा पेहेरना, ए होए सुपन के तन ॥ ३८

ए बिध अरस में है नहीं, जो करत हैं नकल ।
ज्यों अंग त्यों बस्तर भूखन, अरस में एकै असल ॥ ३९

ज्यों अंग त्यों बस्तर भूखन, अखंड सरूप के एह ।
इत नहीं भांत सुपन ज्यों, दुनी पेहेन उतारत जेह ॥ ४०

सब चीजें रूह के हुकमें, करत चाह्या पूरन ।
रूह कछुए चित्त में चितवे, सो होत सबे माहें खिन ॥ ४१

ज्यों अंग त्यों बस्तर भूखन, तिन सब अंगों सुख दाएक ।
सोभा भी तैसी धरे, जैसा अंग तैसा तिन लाएक ॥ ४२

हर एक में अनेक रंग, हर एक में सब सलूक[१] ।
कै जुगतें हर एक में, सुख उपजत रूप अनूप[२] ॥ ४३

सब नंग में गुन चेतन, मुख थें केहेना पड़े न किन ।
दिलमें जैसा उपजे, सो आगूं होत रोसन ॥ ४४

अरस सुख जो बारीक, सो जानत अरवा अरस के ।
ए झूठी जिमी जो दुनियां, सो क्यों कर समझे ए ॥ ४५

जेता बस्तर भूखन, सब रंग रस कै गुन ।
रूह कछुए कहे एक जरे को, सो सब आगूं होत पूरन ॥ ४६

अनेक सिनगार एक खिनमें, चित्त चाह्या सब होत ।
दिलमें पीछे उपजे, ओ आगे धरे अंग जोत ॥ ४७

कै रंग रस नरमाई, कै सुख बानी जोत खुसबोए ।
ए अरस बस्तर भूखन की, क्यों कहूँ सोभा सलूकी सोए ॥ ४८

मीठी बानी चित्त चाहती, खुसबोए नरमाई चित्त चाहे ।
सोभा सलूकी चित्त चाही, ए अरस सुख कहे न जाएं ॥ ४९

अरस बका की हकीकत, माहें लिखी *कतेब *वेद ।
खोले जमाने का खावंद, और खोल न सके कोई भेद ॥ ५०

लिख्या वेद कतेब में, सोई खोले जिन सिर खिताब ।
देसी मुक्ति सबन को, करके अदल[३] हिसाब ॥ ५१

सातों सरूप अखंड, मैं बरनन किए सिर ले ।
दो रास पांच अरस अजीम, बोझ दिया न सिर सरूपों के ॥ ५२

जो लों इलम को हुकमें, कह्या नहीं समझाए ।
तो लों सो रूह आप को, क्यों कर सके जगाए ॥ ५३

जब रूह को जगावे हुकम, तब रूह आपै छिप जाए ।
तब रहे सिर हुकम के, यों हुकमें इलम समझाए ॥ ५४

---

१. व्यवहार । २. बेजोड़ । ३. न्याय ।

जाहेर किया हक इलमें, रूह सिर आया हुकम ।
सोई करे हक बरनन, ले हकै हुकम इलम ॥ ५५

हुकमें बेसक इलम, और हुकमें जोस इसक ।
मेहेर निसबत मिलाए के, बरनन करे अरस हक ॥ ५६

एही आसिक करे बरनन, आसिकै सुने इत ।
ए केहेवें लेवें मोमन, या रसूल तीन सूरत ॥ ५७

में हक अरस में जुदे जानती, ल्यावती सबद में बरनन ।
जड़में सिर ले ढूंढ़ती, हक आए दिल बीच चेतन ॥ ५८

कहूँ इनका बेवरा, सिर हुकम लेसी मोमन ।
सो हुकमें समझ जागसी, मिले हुकमें हक वतन ॥ ५९

हुकमें चले हुकम, हुकमें जाहेर निसबत ।
हुकमें खिलवत जाहेर, हुकमे जाहेर वाहेदत ॥ ६०

हुकमें दिल में रोसनी, सुध हुकमें अरस नूर ।
मुकैयद[1] मुतलक[2] हुकमें, हुकमें अरस सहूर ॥ ६१

कोई दम न उठे हुकम विना, कोई हले ना हुकम विना पात ।
तहां मुतलक हुकम क्यों नहीं, जहां बरनन होए हक जात ॥ ६२

हक बातें रूह हुकमें सुने, हुकमें होए दीदार ।
हुकमें इलम आखरी, खोले हुकमें पार द्वार ॥ ६३

ए बरनन होत सब हुकमें, आया हुकमें बेसक इलम ।
हुकमें जोस इसक सबे, जित हुकम तित खसम ॥ ६४

जब ए द्वार हुकमें खोलिया, हुकमें देख्या हक हाथ ।
तब रही ना फरेबी खुदी, वाहेदत हुकम हक साथ ॥ ६५

पेहेले हुकमें इलम जाहेर, हुआ हुकमें हक बरनन ।
में हुकम लिया सिर अपने, अब रूह छिप गई हक इजन[3] ॥ ६६

---

१. कैद किया हुआ । २. रिहा करने वाला । ३. आज्ञा ।

हक बैठे दिल अरस में, कह्या हकें अरस दिल मोमन ।
रूहें पोहोंचाई हक अरस में, हक बैठे अरस दिल रूहन ॥ ६७

हक रूहें बीच अरस के, नहीं जुदागी एक खिन ।
हुकमें नैन कान दीजिए, अब देखो नैनों सुनों वचन ॥ ६८

अब हकें हुकम चलाइया, खुदी[१] फरेबी[२] गई गल[३] ।
रास खेल रस जागनी, हुआ रूहों सुख असल ॥ ६९

कहें हुकमें महामत मोमनों, हकें पोहोंचाई इन मजल[४] ।
कहे *सास्त्र नहीं त्रैलोक में, सो हक बैठे बीच रूहों दिल ॥ ७०

॥ प्रकरण ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ २०१ ॥

## आतम फरामोस[५] से जागेका प्रकरण

ऐसा आवत दिल हुकमें, यों इसके आतम खड़ी होए ।
जब हक सूरत दिल में चुभे, तब रूह जागी देखो सोए ॥ १

हक सूरत बस्तर भूखन, बीच बका अरस के ।
तिनको निरने[६] इन जुबां, क्यों कर केहेवे ए ॥ २

जिन दृढ़ करी हक सूरत, हक हुकमें जोस ले ।
अरस चीज कही सो मेहेरे से, पर बल इन अंग अकल के ॥ ३

जो वचन जुबां केहेंत है, हिस्सा कोटमा[७] ना पोहोंचत ।
पोहोंचे ना जिमी जरे[८] को, तो क्या करे जात[९] सिफत[१०] ॥ ४

किया हुकमें बरनन अरस का, पर दृष्टि मसाला[११] इत का ।
एक हरफ लुगा पोहोंचे नहीं, लग अरस चीज बका ॥ ५

जिन देखी सूरत हक की, इन वजूद के सनमंध ।
जोस हुकम मेहेर देखावहीं, मोमन जानें एह सनंध ॥ ६

सबों सिफत करी जोस अकलें, इन अंग छूटे ना दृष्टि फना ।
कोई बल करो हक हुकमें, पर अरसें क्यों पोहोंचे सुपना ॥ ७

---

१. अहं । २. कपट । ३. मिटना । ४. मंजिल । ५. बेसुध । ६. निर्णय । ७. करोड़वां ।
८. कण, जर्रा । ९. स्वरूप । १०. प्रशंसा । ११. सामग्री (शब्द)

नीद उड़े रहे ना सुपना, और सुपने में देखना हक ।
मेहेर इलम जोस हुकमें, हक देखिए बेसक ॥ ८

पर जेता हिस्सा नीद का, रूह तेती फरामोस ।
जो मेहेर कर हुकम देखावही, तब देखे बिना जोस ॥ ९

हक जानें सो करें, अनहोनी सो भी होए ।
हिसाब किए सुपन में, मुतलक न देखे कोए ॥ १०

ए बात तो कारज कारन, हक जानत त्यों करत ।
असल रूह तन मिलावा, निसबत है वाहेदत ॥ ११

ए हक बातन की बारीकियां, सो हक के दिएँ आवत ।
ना सीखे सिखाएं ना सोहोबतें, हक मेहेरें पावत ॥ १२

अपनी रूहों वास्ते, कै कोट काम किए ।
ए जानें अरवाहें[1] अरस की, जिन नाम निसान लिए ॥ १३

ए जो अरस बारीकियाँ, अरस सहूरें रूह जानत ।
जिन पट खुल्या सो न जानही, बिना हक सिफत ॥ १४

जिन जो देख्या जागते, सो देखे माहें सुपन ।
कानों सुन्या सोभी देखत, याके साथ तो हक इजन ॥ १५

रखे वजूद को हुकम, जेते दिन रख्या चाहे ।
रूहों खेल देखावने, कै विध जुगत बनाए ॥ १६

आतम तो फरामोस में, भई आड़ी[2] नीद हुकम ।
सो फेर खड़ी तब होवहीं, रूह दिल याद आवे खसम ॥ १७

सो साख मोमन एही देवहीं, यों बूझमें भी आवत ।
अनभव भी कछू कहत है, और हुकम भी कहावत ॥ १८

मोमन केहेवें हुकमें, बूझ अनभव पर हुकम ।
हुकम केहेवे सो भी हुकमें, कछू ना बिना हुकम खसम ॥ १९

---

१. रूहें, आत्माएं । २. रूकावट ।

रूह तेती जागी जानियो, जेता दिलमें चुभे हक अंग ।
जो अंग हिरदे न आइया, रूह के तेती फरामोसी संग ॥ २०

तार्थें जो रूह अरस अजीम की, सो क्यों ना करे उपाए ।
ले हक सरूप हिरदे मिने, और देवे सब उड़ाए ॥ २१

इसक बिना रूह के दिल, चुभे ना सूरत हक ।
मेहेर जोस निसबतें, हक हुकमें चुभे मुतलक ॥ २२

मोहे दिलमें हुकमें यों कह्या, जो दिल में आवे हक मुख ।
तो खड़ा होए मुख रूह का, हकसों होए सनमुख ॥ २३

अधुर हरवटी[1] नासिका, दंत जुबां और गाल ।
जो अंग आया हक का दिलमें, उठे रूह अंग उसी मिसाल ॥ २४

जो तैं ग्रहे हक नैन को, तो नजर खुले रूह नैन ।
तब आसिक और मासूक के, होए नैन नैन से सैन[2] ॥ २५

जो हक निलाट आवे दिलमें, और दिलमें आवे श्रवन ।
दोऊ अंग खड़े होएँ रूह के, जो होवे रूह मोमन ॥ २६

भौं भ्रकुटी पल नासिका, सुन्दर तिलक हमेस[3] ।
गौर सोभा मुख चौक की, क्यों कहूँ जोत नूर केस ॥ २७

ए अंग जेते मैं कहे, आवें रूह के हिरदे हक ।
तेते अंग रूह के, उठ खड़े होंए बेसक ॥ २८

पाग बनी- सिर सारंगी,[4] इन जुबां कही न जाए ।
ए जुगत जोत क्यों कहूँ, जो हके बांधी दिल ल्याए ॥ २९

अनंत सोभा सुन्दर, चढ़ती चढ़ती तरफ चार ।
जित देखूं तित अधिक, सोभा न आवे माहें सुमार ॥ ३०

हक हैड़ा[5] हिरदे ग्रहिए, दिलमें रहे दाएम[6] ।
सो हैड़ा अंग रूह का, उठ खड़ा हुआ काएम ॥ ३१

---

१. ओठ के नीचे का भाग । २. संकेत । ३. स्थाई । ४. सारंगी की तरह । ५. दिल । ६ हमेशा ।

जो हक अंग दिलमें नहीं, सो अंग रूह का फरामोस ।
जब हक अंग आया दिलमें, सो रूह अंग आया माहें होस ।। ३२

कटि पेट पांसे[1] हक के, पीठ खभे कांध केस ।
ए दिलमें जब दृढ़ हुए, तब रूह आया देखो आवेस ।। ३३

बाजू मच्छे कोनियां, कांड़े कलाइयां हाथ ।
हक के अंग हिरदे आए, तब रूह खड़ी हुई हक साथ ।। ३४

पोहोंचे हथेली अंगुरी नख, लीकें रंग सलूक ।
हक अंग मीहीं हिरदे बैठे, अब निमख न होए रूह चूक ।। ३५

नख अंगूठे अंगुरियां, नीके ग्रहिए हक कदम ।
सोई नख अंगुरी पांउं रूह के, खड़े होत माहें दम ।। ३६

जब हक चरन दिल दृढ़ धरे, तब रूह खड़ी हुई जान ।
हक अंग सब हिरदे आए, तब रूह जागे अंग परवान ।। ३७

मोहोरी चूड़ी इजारकी, और नेफा इजार बंध ।
हरे रंग बूटी कै नकस, हकें सोभित भली सनंध ।। ३८

क्यों कहूँ जुगत जामें की, हरे पर उज्जल दावन ।
निपट सोभित मीहीं[2] बेलियां, झांई उठत अति रोसन ।। ३९

एक सेत रंग जामा[3] कह्या, माहें जवेर जुगत कै रंग ।
इन जुबां रोसनी क्यों कहूँ, जो झलकत अरस के नंग ।। ४०

बीच पटुका कस्या कमरें, रंग कै बिध छेड़े किनार ।
बेली नकस फूल केते कहूँ, अवकास भरचो झलकार ।। ४१

एक झलकार मुख केहेत हों, माहें कै सलूकी सुखदाए ।
सो गुन गरभित इन जुबां, रंग रोसन क्यों कहे जाए ।। ४२

जामा जुड़ बैठा अंग पर, कोई अचरज खूबी लेत ।
सोभा सलूकी सुख क्यों कहूँ, अंग गौर पर जामा सेत ।। ४३

---

१. पसलियों के नीचे का भाग । २. बारीक । ३. अंगरखा, (वागा) ।

बगलों नकस केवड़े[1], कंठ बेली दोऊ गिरवान[2] ।
ए जुगत जुबां तो कहे, जो कछू होए इन मान ॥ ४४
कटाव कोतकी[3] कांध पीछे, ऊपर फुंदन हारों के ।
रूह जो जागृत अरस की, सुख लेसी बका इत ए ॥ ४५
बांहें चूड़ी और मोहोरियां, चूड़ी अचरज जुगत ।
निपट मीहीं मोहोरीअ से, चढ़ती चढ़ती सोभित ॥ ४६
आए बस्तर हिरदे हक के, रूह अपने पेहेने बनाए ।
तेती खड़ी रूह होत है, जेता दिल में हक अंग आए ॥ ४७
पांच नंग माहें कलंगी, तामें तीन नंग ऊपर ।
एक मध्य एक लगता, पांच रंग जोत बराबर ॥ ४८
ए जो कलंगी सिर पर, लटक रही सुखदाए ।
जो भूखन रूह नजर भरे, तो जानों अरवा देवे उड़ाए ॥ ४९
सात नंग माहें दुगदुगी, सो सातो जुदे जुदे रंग ।
चढ़ती जोत आकास में, करत माहों माहें जंग ॥ ५०
जो रस कलंगी दुगदुगी[4], सोई पाग को रस ।
रंग जुदे जोत बराबर, ए नंग रस नूर अरस ॥ ५१
जो हिरदे आए हक भूखन, जाहेर स्यामाजी के जान ।
कलंगी दुगदुगी राखड़ी, होत दोऊ परवान ॥ ५२
दोऊ मुक्ता फल कान के, करड़े[5] कंचन बीच लाल ।
साड़ी किनारे सेंथे पर, श्रवन पानड़ी झाल ॥ ५३
हक अंग तो मुतलक मारत, पर भूखन लगें ज्यों भाल[6] ।
चितवन जुगल किसोर की, देत कदम नूरजमाल ॥ ५४
मुख बीड़ी आरोगे पान की, लाल सोभे अधुर तंबोल ।
ए रूह दृष्टें जब देखिए, पट हिरदे देत सब खोल ॥ ५५

---

१. एक फूल का नाम । २. अंगरखे का गले से नीचे और छाती से ऊपर का भाग । ३. जरी का काम । ४. बिल्ला (बैज) । ५. जड़े हुए । ६. भाला ।

कहूँ केते भूखन कंठ के, तेज तेज में तेज ।
आसमान जिमी के बीच में, हो गई रोसन रेजा रेज ।। ५६

हार कै जवेरन के, कहूँ केते तिनके रंग ।
कै लेहेरें माहें उठत, ए तो अरस अजीम के नंग ।। ५७

एक एक नंगमें कै रंग, रंग रंग में तरंग अपार ।
तरंग तरंग किरने कै, हर किरने रंग न सुमार ।। ५८

जामें चादर जुड़ रही, ढाँपत नहीं झलकार ।
गिनती जोत क्यों कर होए, नंग तेज न रंग पार ।। ५६

ए रंग जोत किन विध कहूँ, जो ले देखो अरस सहूर ।
सोभा रंग सलूकी सुख, देखो रूह की आंखों जहूर ।। ६०

भूखन हक श्रवन के, और हक कंठ कै हार ।
सोई कंठ श्रवन रूह के, साज खड़े सिनगार ।। ६१

सोभा जुगल किसोर की, दोऊ होत बराबर ।
जो हिरदे सो बाहेर, दोऊ खड़े होत सरभर ।। ६२

बाजूबंध और पोहोंचियां, कड़े जवेर कंचन ।
नंग रंग नाम केते कहूँ, कही जाए न जरा रोसन ।। ६३

मुंदरियाँ दसो अंगुरी, एक छोटी की न केहेवाए जोत ।
अरस जिमी आकास में, हो जात सबे उद्योत ।। ६४

हक के भूखनकी क्यों कहूँ, रंग नंग जोत सलूक ।
आतम उठ खड़ी तब होवही, पेहेले जीव होए भूक[1] भूक ।। ६५

रूह भूखन हाथ के, हक भेले होत तैयार ।
ए सोभा *जुगल किसोर की, जुबां कहे न सके सुमार ।। ६६

चारो जोड़े चरन भूखन, रंग चारो में उठें हजार ।
ए बरनन जुबां तो करे, जो कछुए होए निरवार ।। ६७

---

१. टुकड़े होना ।

बस्तर भूखन हक के, आए हिरदे ज्यों कर ।
त्यों सोभा सहित आतमा, उठ खड़ी हुई बराबर ।। ६८

सुपने सूरत पूरन, रूह हिरदे आई सुभान ।
तब निज सूरत रूह की, उठ बैठी परवान ।। ६९

जब पूरन सरूप हक का, आए बैठा माहें दिल ।
तब सोई अंग आतम के, उठ खड़े सब मिल ।। ७०

बस्तर भूखन सब अंगों, कंठ श्रवन हाथ पाए ।
नख सिख सिनगार साज के, बैठे अरस दिल में आए ।। ७१

जब बैठे हक दिल में, तब रूह खड़ी हुई जान ।
हक आए दिल अरस में, रूह जागे के एह निसान ।। ७२

हक के दिल का इसक, रूह पैठ देखे दिल माहें ।
तो हक इसक सागर से, रूह निकस न सके कांहें ।। ७३

जो हक करें मेहेरबानगी[1], तो इन बिध होए हुकम ।
एता बल रूह तब करे, जब उठाया चाहें खसम ।। ७४

महामत हुकमें केहेत हैं, जो होवे अरस अरवाए ।
रूह जागे का एह उदम[2], तो ले हुकम सिर चढ़ाए ।। ७५

।। प्रकरण ।। ४ ।। चौपाई ।। २७६ ।।

## चरन को अंग तिनमें नख अंग

सखीरी तेज भरयो आकास लों, नख जोत निकसी चीर ।
ज्यों सागर छेद के आवत, नेहेरें निरमल का नीर ।। १

रंग केते कहूं चरन के, आवें न माहें सुमार ।
याही वास्ते खेल देखाइया, रूह देखसी देखनहार ।। २

प्यारे पांउं मेरे पीउ के, देख नख अंगूठे अंगुरियों ।
सो बैठे बीच दिल तखत के, तो अरस कह्या मेरे दिल को ।। ३

---

१. कृपा । २. उद्यम, कोशिश ।

दो अंगूठे आठ अंगुरी, नख सोभित तिन पर ।
नख लगते सिर अंगुरी, ए जोत कहूँ क्यों कर ॥ ४

चरन अंगूठे पतले, और पतली अंगुरियां ।
लाल रंग माहें सोभित, अतंत उज्जलियाँ ॥ ५

देखूं एक एक अंगुरी, आठों अंगुरी दोए पाए ।
कोमल सलूकी मिल रही, ए छबि फब कही न जाए ॥ ६

दोए पांउं बड़ी दो अंगुरी, अंगूठों बराबर ।
तिन थें तीन उतरती, लगती कोमल सुंदर ॥ ७

झलकत नूर बराबर, ऊपर अंगुरियों नख ।
सोभा सलूकी नख जोत की, जुबां कहे न सके इन मुख ॥ ८

अतंत जोत नखन की, ताको क्यों कर कहूँ प्रकास ।
केहे केहे मुख एता कहे, जोत पोहोंची जाए आकास ॥ ९

जो सुंदरता अंगुरियों, और सुंदरता नख जोत ।
ए सोभा न आवे सबद में, केहे केहे कहूँ उद्योत ॥ १०

तेज जोत कछू और है, सोभा सुन्दरता कछू और ।
पर ए अंग नूरजमाल के, याको नहीं निमूना ठौर ॥ ११

जोत में एकै रोसनी, सोभा सुन्दर गुन अनेक ।
सोभा रंग रोसन नरमाई, रस मीठे कै बिवेक ॥ १२

सोभा माहें सलूकियां, और खुसबोए सुखदाए ।
सुख प्रेम कै खुसालियां, इन जुबां कही न जाए ॥ १३

अरस बातें सुख बारीक, सुपन बानी न आवे सोए ।
कछुक जाने रूह अरस की, जो बेसक जागी होए ॥ १४

'महामत' कहें हक हुकमें, ऐसा सुख न दूजा कोए ।
पांउं मासूकके आसिक, पिए रस धोए धोए ॥ १५

प्रकरण ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ २६१ ॥

## चरन हक मासूक की उपली[1] सोभा

फेर फेर चरनको निरखिए, रूह को एही लागी रट ।
हक कदम हिरदे आए, तब खुल गए अन्तर[2] पट ॥ १

गुन केते कहूँ इन चरन के, आवें न माहें सुमार ।
याही वास्ते खेल देखाइया, रूह देखसी देखनहार ॥ २

बरनन करत हों चरन की, अरस सूरत हक जात ।
ए नेक कहूँ हक हुकमें, सोभा सबद न इत समात ॥ ३

कदम तली अति उज्जल, निपट नरम रंग लाल ।
रूहें आसिक इन मासूक की, ए कदम छोड़ें ना नूरजमाल ॥ ४

कही सूक्षम सूरत अमरद की, ए कदम भी तिन माफक ।
रस रंग सोभा सलूकी, देख अरस सहूरें हक ॥ ५

लांक सलूकी दोऊ कदम की, लाल एड़ी निपट नरम ।
गौर रंग रस भरे, जुबां क्या कहे सिफत कदम ॥ ६

सलूकी कदम तलीअ की, ऊपर सलूकी और ।
छबि हक कदम की क्यों कहूँ, ए जो जुबां इन ठौर ॥ ७

हक हादी रूहें निसबत, ए अरस की वाहेदत ।
जो रूह होवे अरस की, सो क्यों छोड़े ए न्यामत ॥ ८

ए कदम ताले मोमन के, लिखी जो निसबत ।
तो आठो जाम रूह अटकी, बीच अरस खिलवत ॥ ९

लग रहे हक कदम को, सोई रूह अरस की ।
ए रस अमृत अरस का, कोई और न सके पी ॥ १०

जो कोई अरवा अरस की, हक कदम तिन जीवन ।
सो जीव जीवन बिना क्यों रहे, जाके असल अरस में तन ॥ ११

१. ऊपर की । २. हृदय के ।

हकें अरस कह्या अपना, जो अरस दिल मोमन ।
सो मोमन उतरे अरस से, है असल निसबत तन ।। १२

ए जो मोमन उतरे अरस से, अरस कह्या दिल जिन ।
हक कदम हमेसा अरस में, ए कदम छोड़े न मोमन ।। १३

हकें तो कह्या अरस दिल को, जो इनों असल अरस में तन ।
हक कदम छूटे दिल से, ताए क्यों कहिए मोमन ।। १४

हक कदम मोमन दिल में, और कदम रूह हिरदे ।
ए कदम नैन पुतली मिने, और रूह फिरत सिर पर ले ।। १५

हकें बैठक कही अपनी, दिल मोमन का जे ।
जिन दिल हक आए नहीं, सो दिल मोमन कहिए क्यों ए ।। १६

आसमान जिमी के लोक का, सब्द छोड़े ना सुरैया[1] को ।
बिन मोमन सब दुनियां, खात गोते फना मों ।। १७

सुरैया पर ला—मकान[2] है, तिन पर नूर अरस ।
अरस पर अरस अजीम, पोहोंचें मोमन इत सरस[3] ।। १८

अरस दिल मोमन तो कह्या, अरस बका सुध ।मोमनों में ।
चौदे तबकों गम नहीं, मोमन आए हक कदमों से ।। १९

सोई कहिए मोमन, जिन दिल हक अरस ।
सो ना मोमन जिन ना पिया, हक सुराहीका रस ।। २०

हकें दिलको अरस तो कह्या, करने मोमन पेहेचान ।
कहे मोमन उतरे अरस से, तन अरस एही निसान ।। २१

रूहें उतरी अपने तनसे, और कह्या उतरे अरस से ।
तन दिल अरस एक किए, हकें कदम धरे दिलमें ।। २२

ए निसबत असल अरस की, हकें जाहेर तो करी ।
दिल मोमन अरस तो कह्या, जो रूहें दरगाह से उतरी ।। २३

---

१. ज्योति स्वरूप । २. शून्य । ३. सुन्दर (अच्छी तरह) ।

खवाब वजूद दिल मोमन, हकें कह्या अरस सोए ।
अरस तन मोमन दिल से, ए केहेने को हैं दोए ॥ २४

मोमन असल तन अरस में, और दिल खवाब देखत ।
असल तन इन दिलसे, एक जरा न तफावत ॥ २५

तो हक सेहेरग से नजीक, ए विध जानें मोमन ।
अरस दिल मोमन तो कह्या, जो निसबत अरस तन ॥ २६

ए बारीक बातें अरस की, ए मोमन जानें हक सहूर ।
तो हक कदम दिल अरसमें, हक सहूरसे नाहीं दूर ॥ २७

ए खवाब देखे सो झूठ है, सत सोई जो माहें वतन ।
सांच बैठी कदम पकड़के, झूठमें न आए आपन ॥ २८

ए विचार देखो मोमनों, हक देखावें अपने सहूर ।
इन दिलको अरस तो कह्या, जो कदम नहीं आपनसे दूर ॥ २९

जो रूह देखे लांक लीकको, तो रूह तितहीं रहे लाग ।
अरस रूहोंको इन लीक बिना, सुख दुनियां लागे आग ॥ ३०

एक लीक भी रूहथें न छूटहीं, तो क्यों छूटे तली कोमल ।
अरस रूहें इन लीक बिना, तबही जांए जल बल ॥ ३१

ए कदम तलीकी जोत से, आसमान जिमी रोसन ।
दिल मोमन इन कदम बिना, अंग हो जाएं सब अगिन ॥ ३२

चकलाई[1] इन कदमकी, कदम तली ऊपर सलूक ।
ए फिराक[2] मोमन ना सहें, सुनते होएं टूक टूक ॥ ३३

सोभा कदम तलीअ की, और सोभा सलूंकी नखन ।
सोभा अंगुरी अंगूठे, क्यों छोड़ें आसक तन ॥ ३४

फना टांकनकी सलूकी, और छबि घूंटी कांड़ों ।
अरस रूहें जुदागी ना सहें, जाके असल तन अरसमों ॥ ३५

---

१. सुन्दरता । २. जुदाई ।

पीड़ी घूंटन पांउ माफक, सोभा अति सुन्दर ।
ए कदम सुध तिने परे, जो रूह बेधी होए अन्दर ।। ३६
विचार तो भी याही को, रूह नजर तो भी ए ।
जो रूह इन कदम की, रहे तले कदमै के ।। ३७
हाथों कदम न छोड़ही, रूह हिरदे माहें लेत ।
हक कदम खैंचें रूहकों, सब अंगों समेत ।। ३८
जेते अंग आसिक के, सो सब कदमों लगत ।
ए गत सोई जानही, जिन रूह अंग खैंचत ।। ३९
कै गुन हक कदममें, सब गुन खैंचें रूहको ।
मासूक गुझ सोई जानहीं, आए लगी जिनसों ।। ४०
पांउ पीड़ी घूंटनकी, जो चकलाई सोभाए ।
जेते अंग आसिक के, तिन सब अंगों देत घाए ।। ४१
क्यों कहूँ पीड़ीअ की, सलूकी सुख जोर ।
ए सुख सब रगन[1] को, और देत कलेजा तोर ।। ४२
घाव लगत टूटत रगां, इन विध रहत जो याद ।
मासूक मारत आसिकको, अरस अंग चरन स्वाद ।। ४३
ए कदम देखे रूह फेर फेर, तली लांक या ऊपर ।
दिल मोमन अरस कह्या, सो या कदमों की खातर ।। ४४
हक कदम अरस दिलमें, सो दिल मोमन हुआ जल ।
अरवा मोमन जीव जलके, सो रूह जल विन रहे न पल ।। ४५
ए बेली फूल रूह मोमन, सो बेल भई हक चरन ।
बेल जुदागी फूल क्यों सहे, यों कदम बिना रहें ना मोमन ।। ४६
जब देखूं कदम रंगको, जानों एही सुख सागर ।
जब देखूं याकी सलूकी, आड़ी निमख न आवे नजर ।। ४७

१. नाडियां ।

जो आड़ी आवे पलक, तो जानों बीच पड़यो ब्रह्मांड ।
ए निसबत हक वाहेदत, जो अरस दिल अखंड ।। ४८

ए कदम ताले मोमन के, सो मोमन हक चरन ।
तो अरस कह्या दिल मोमन, जो रूह असल अरस में तन ।। ४९

सुन्दरता इन कदम की, सो चुभ रही रूह के दिल ।
अरस परस ऐसी हुई, एक निमख न सके निकल ।। ५०

चकलाई इन कदम की, सुख सलूकी देत ।
हिरदे जो रूह के चुभत, रूह सोई जाने जो लेत ।। ५१

अति मीठे रसीले रंग भरे, जानो ए चरन मेहेर करत ।
सुख सोई जाने रूह अरस की, जिन दिल दोऊ पांउ धरत ।। ५२

सो पल पल ए रस पीवत, फेर फेर प्याले लेत ।
ए अमल क्यों उतरे, जाको हक बका सुख देत ।। ५३

ए सुख कायम हकके, जिन दिल एह कदम ।
सोई रूह जाने ए जिन लिया, या जानत एह खसम ।। ५४

कै विधके सुख कदम में, मेहेर कर देत मेहेरबान ।
तो अरस कह्या दिल मोमन, इन पर कहा कहे सुभान ।। ५५

हकें दिल किया अरस अपना, इन पर बड़ाई न कोए ।
ए सुख लें मोमन दुनीमें, जो अरस अजीमकी होए ।। ५६

ए सुख क्या जानें खेल कबूतर, कह्या हकका अरस दिल ।
ए जाहेर हुए सुख जानसी, मोमन मिलावा मिल ।। ५७

कदम मेहेबूब के मोमन, क्यों सहें जुदागी खिन ।
तो हकें कह्या अरस दिलको, कर बैठे अपना वतन ।। ५८

दिया मोमनों बड़ा मरातबा,[1] जेती हक बिसात ।
ले बैठे मोमन दिलमें, सब मता हक जात ।। ५९

---

१. पद (मर्तबा) ।

हक सूरत किन पाई नहीं, ना अरस पाया किन ।
तरफ भी किन पाई नहीं, माहें त्रैलोकी त्रैगुन ॥ ६०

कह्या चौदे तबक जरा नहीं, तो बका सुध होसी किन ।
हक सूरत अरस कायम, सब दिल बीच कह्या मोमन ॥ ६१

हक अंग नूर हादी कह्या, मोमन हादी अंग नूर ।
ए सब हक बका वाहेदत, ज्यों हक नूर जहूर ॥ ६२

ए गुझ थीं अरस बारीकियां, कोई न जाने बका बात ।
सो रूहें आए दुनीमें प्रगटीं, अरस बका हक जात ॥ ६३

कहे हुकम नूरजमाल का, मोहे प्यारे अति मोमन ।
'महामत' कहें दोनों ठौर, हमको किए धंन धंन ॥ ६४

॥ प्रकरण ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ ३५५ ॥

## चरन निसबतका प्रकरण अंदरताई[1]

ए क्यों छोड़ें चरन मोमन, जो हककी वाहेदत ।
आए दुनीमें जाहेर करी, जो असल हक निसबत ॥ १

रूहें उतरी नूर बिलंदसे, कदम नासूतमें भूलत ।
तिन पर रसूल होए आइया, जो असल हक निसबत ॥ २

रूहें अरस भूलीं नासूतमें, ताए हक रमूजें लिखत ।
सो सब मोमन समझहीं, जो असल हक निसबत ॥ ३

रूहें कदम भूली नासूत में, हक ताए भेजे इसारत ।
ताको हादी कहे समझावहीं, जो असल हक निसबत ॥ ४

रूहें अरसकी कदम भूलियां, तिन पर रूह अपनी भेजत ।
अरस बातें कहे समझावहीं, जो असल हक निसबत ॥ ५

फरामोस हुइयां लाहूतसे, रूहअल्ला संदेसे देवत ।
ए मेहेर लेवें मोमन, जो असल हक निसबत ॥ ६

१. आन्तरिक भाव ।

खिताब हादी सिर तो हुआ, फुरमान और न कोई खोलत ।
हक कदम हिरदे मोमनों, जो असल हक निसबत ॥ ७

रूहें भूलियाँ खिलवत खेल में, ताए रूहअल्ला इलम ल्यावत ।
सो कायम करे त्रैलोक को, जो असल हक निसबत ॥ ८

इसक रबद हुआ अरसमें, तो रूहें इत देह धरत ।
रूहें चरन तो पकड़ें, जो असल हक निसबत ॥ ९

आए कदम दिल मोमन, जाको सबद न पोहोंचे सिफत ।
हकें अरस दिल तो कह्या, जो असल हक निसबत ॥ १०

ए बरनन हुकमें तो किया, जो जाहेर करनी खिलवत ।
ए कदम रूहें तो पकड़ें, जो असल हक निसबत ॥ ११

हकें आए किया अरस दिलको, बीच ल्याए कदम न्यामत ।
सिर हुकमें हुज्जत तो लई, जो असल हक निसबत ॥ १२

अरस मोहोल दिलको किया, आए बैठी हक सूरत ।
ए अरस मेहेर तो भई, जो असल हक निसबत ॥ १३

इन कदमों मेहेर मुझपर करी, देखाए दई वाहेदत ।
तो इलम दिया बेसक, जो असल हक निसबत ॥ १४

मोमनों पाई बेसकी, सो इन कदमों की बरकत ।
सो क्यों छूटें मोमनसे, जो असल हक निसबत ॥ १५

इन चरनों किया अरस दिलको, दिल बोलें सुध परत ।
रूहें तो लेवें महंमद सिफायत, जो असल हक निसबत ॥ १६

रूहें कदम पकड़ें हकके दिलमें, पैठ इसक ठौर ढूंढ़त ।
दिल मोमन अरस तो कह्या, जो असल हक निसबत ॥ १७

ए कदम ले दिल मोमन, अरससे ना निकसत ।
ए रूहें जानें अरस बारीकियां, जो असल हक निसबत ॥ १८

रूहें सिरपर कदम चढ़ाएके, अरस मोहोलों में मालत ।
सब गुझ रूहें जानहीं, जो असल हक निसबत ॥ १९

ले चरन दिल अरसमें, सब गलियों में फिरत ।
सब सुध होवे अरसकी, जो असल हक निसबत ॥ २०
रूहें नैन पुतलियों बीचमें, हक कदम राखत ।
एक हुए दिल अरस रूहें, जो असल हक निसबत ॥ २१
दिल अरस किया इन कदमों, इतहीं बैठे कर भिस्त ।
ए न्यारे निमख न होवहीं, जो असल हक निसबत ॥ २२
गुन केते कहूँ इन कदमके, जिन अरस अखंड किया इत ।
ए कदम ताले तिनके, जो असल हक निसबत ॥ २३
तिन भागकी मैं क्या कहूँ, ए जिन दिल कदम बसत ।
धंन धंन कदम धंन ए दिल, जो असल हक निसबत ॥ २४
कै मलकूत वारूँ तिन खाक पर, जिन दिल कदम आवत ।
और दिल अरस न होवही, विना असल हक निसबत ॥ २५
दिल साँच ले सरीअत चले, या पाक होए ले तरीकत ।
दिल अरस न होए विना मोमन, जाकी असल हक निसबत ॥ २६
कोई करो सब जिमिएँ सेजदा, पालो अरकान लग क्यामत ।
पर ए कदम न आवें दिलमें, बिना असल हक निसबत ॥ २७
तेहेत्तर फिरके महंमदके, तामें एकको हक हिदाएत ।
और नारी[1] एक नाजी[2] कह्या, जाकी असल हक निसबत ॥ २८
उत्तम होए खट करम करो, आचार करो विधोगत ।
ब्रह्म चरन न आवें ब्रह्मसृष्टि विना, जाकी ब्रह्मसों निसबत ॥ २९
खटसास्त्र पढ़ो कांड तीनों, करम निहकरम विधोगत[3] ।
ए चरन न आवें ब्रह्मसृष्टि विना, जाकी ब्रह्मसों निसबत ॥ ३०
नव अंग पालो नवधा, ल्यो वैकुंठ चार मुकत ।
ए चरन न आवें ब्रह्मसृष्टि विना, जाकी ब्रह्मसों निसबत ॥ ३१

१. नार्की । २. मुक्त । ३. विधि पूर्वक ।

*वेद *सास्त्र *पुरान पढ़ो, सब पैंडे[1] देखो प्रापत ।
ए चरन न आवें ब्रह्मसृष्टि बिना, जाकी ब्रह्मसों निसबत ।। ३२

कोई वेद पाँचो मुख पढ़ो, कै त्रैगुन जात पढ़त ।
पर ए चरन न आवें ब्रह्मसृष्टि बिना, जाकी ब्रह्मसों निसबत ।। ३३

ब्रह्मसृष्टि कही वेदने, ब्रह्म जैसी तदोगत[2] ।
तौल न कोई इनके, जाकी ब्रह्मसों निसबत ।। ३४

*सुकजी आए इन वास्ते, ले किताब *भागवत ।
ए चरन न आवें ब्रह्मसृष्टि बिना, जाकी ब्रह्मसों निसबत ।। ३५

ब्रह्म ने भेजी *परमहंस पर, वेद अस्तुत बंदोवस्त ।
ए ब्रह्म चरन क्यों छोड़हीं, जाकी ब्रह्मसों निसबत ।। ३६

कही आई उपनिषद इनपें, पूरब रिखी कहे जित ।
धाम बका पाया इनोंने, जाकी ब्रह्मसों निसबत ।। ३७

ब्रह्मसृष्टि मोमन कहे, रूहें लेवें वेद कतेब विगत ।
ए समझ चरन ग्रहें ब्रह्मके, जाकी ब्रह्मसों निसबत ।। ३८

ब्रह्मसृष्टि रूहें नाम दोए, अरस रूहें ए जानत ।
दोऊ जान चरन ग्रहें एकै, जाकी ब्रह्मसों निसबत ।। ३९

पढ़े वेद कतेब को, जोग—कसब[3] ना पोंहोंचत ।
दिल अरस किया जिन कदमों, ए न आवें बिना हक निसबत ।। ४०

दिल अरस कह्या जो मोमन, सो दिल नाजी पाक उमत ।
और इलाज ना इलम कोई, बिना असल हक निसबत ।। ४१

इलम लुदंनी भेजिया, सो मोमन ए परखत ।
परख चरन ग्रहें हकके, जाकी असल हक निसबत ।। ४२

हक हादीकी मेहेर से, भिस्त आठ होसी आखरत ।
पर ए चरन न आवें दिलमें, बिना असल हक निसबत ।। ४३

---

१. मार्ग । २. उसके जैसा । ३. योग की विधि ।

महंमद सूरत हकी बिना, द्वार खुले ना हकीकत ।
ए कदम पावें दिल औलिया, जाकी असल हक निसबत ।। ४४
ए कदम आए जिन दिल में, तित आई हक सूरत ।
ए चौदे तबक पावे नहीं, बिना असल हक निसबत ।। ४५
दिल मोमन क्यों अरस कह्या, ए दुनी ना एता विचारत ।
ए विचार तो उपजे, जो होए हक निसबत ।। ४६
रूहें अरस बुधजी बिना, छलका पावे न कोई कित ।
ए सहूर भी दिल न आवही, बिना असल हक निसबत ।। ४७
रूह अल्ला दज्जालको मारसी, छोड़ावसी उमत ।
कर एक दीन चरन देखावहीं, जाकी असल हक निसबत ।। ४८
अरस सूरत पर सेजदा, करसी मेहेदी इमामत ।
कदम ग्रहे देखावहीं, जाको असल हक निसबत ।। ४९
दोऊ आए बीच हिंदुअनके, जैसे कह्या हजरत ।
ए बेवरा सोई समझहीं, जाकी असल हक निसबत ।। ५०
अरस कह्या दिल मोमन, ले दिल अरस गलियों खेलत ।
सो पावें रूहें लाहूती, जाकी असल हक निसबत ।। ५१
ए कदम पावें रूहें अरसकी, नहीं औरोंकी किसमत ।
ए सोई पावें हक बारीकियां, जाकी असल हक निसबत ।। ५२
एहेल किताब एही कहे, एही पावें हक मारफत ।
एही आसिक होवें मासूककी, जाकी असल हक निसबत ।। ५३
जो रूहें उतरी अरस से, सो कदम ले अरस पोहोंचत ।
देसी भिस्त सबनको, जाकी असल हक निसबत ।। ५४
जो रूहें कही लाहूती, इजने इत उतरत ।
सो पकड़ें कदम इसकसों, जाकी असल हक निसबत ।। ५५
रूहें अरस रबदें इत आइयां, देखो कौन कदम ग्रहे जीतत ।
सो क्यों बिछुड़े इन कदमसों, जाकी असल हक निसबत ।। ५६

याही रब्दें इत आइयां, लेने पीउका बिरहा लज्जत ।
सो पाए कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥ ५७

ए रब्द अरस खिलवत का, रूहें इसक अंग गलित ।
सो क्यों छोड़ें पांउं पकड़े, जाकी असल हक निसबत ॥ ५८

रूहें इन कदम के वास्ते, जीवतेही मरत ।
सो क्यों छोड़ें प्यारे पांउंको, जाकी असल हक निसबत ॥ ५९

याही कदमके वास्ते, रूहें जल बल खाक होवत ।
तो दिल आए कदम क्यों छूटहीं, जाकी असल हक निसबत ॥ ६०

रूहें होवें जिन किन खिलके[1], हक प्रगटे सुनत ।
आए पकड़ें कदम पलमें, जाकी असल हक निसबत ॥ ६१

जब आखर हक जाहेर सुने, तब खिनमें रूहें दौड़त ।
सो क्यों रहें कदम पकड़े बिना, जाकी असल हक निसबत ॥ ६२

जब इमाम आए सुने, तब मोमन रहे ना सकत ।
दौड़के कदम पकड़ें, जाकी असल हक निसबत ॥ ६३

मलकूत बैकुंठ वास्ते, दुनी पहाड़से गिरत ।
तो रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥ ६४

मलकूत बैकुठ वास्ते, दुनी सिर लेत करवत ।
तो रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥ ६५

मलकूत बैकुंठ वास्ते, दुनियां आग पीवत ।
तो रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥ ६६

मलकूत बैकुंठ वास्ते, दुनी जल—भैरव[2] झंपावत[3] ।
तो रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥ ६७

मलकूत बैकुंठ वास्ते, दुनी हेममें[4] गलत ।
तो रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥ ६८

---

१. कौम । २. भैरव कुंड । ३. उछल कर गिरना । ४. बर्फ ।

और इलाज जो कै करो, पर पावे ना बिना किसमत ।
सो हक कदम ताले मोमन, जाकी असल हक निसबत ।। ६९
ए बिन मोमन कदम न पाइए, जो करे कै कोट मेहेनत ।
ए मोमन अरस अजीमके, जाकी असल हक निसबत ।। ७०
रूहें अरसकी कहें वेद कतेब, बिन कुंजी क्योंए न पाइअत ।
सो रूहअल्ला बेसक करी, जाकी असल हक निसबत ।। ७१
हक कदम दिल मोमन, देख देख रूह भीजत ।
एक पाउ पल ना छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ।। ७२
ए कदम रूहें दिल लेअके, देह झूठी उड़ावत ।
कोई दिन रखें वास्ते लज्जत, जाकी असल हक निसबत ।। ७३
मोमन आए अरससे, दुनी क्या जाने ए गत ।
ए कदम ताले ब्रह्मसृष्टिके, जाकी असल हक निसबत ।। ७४
रूहें खाना पीना रोजा सेजदा, इन कदमों हज्ज—जारत[१] ।
और चौदे तबक उड़ावहीं, जाकी असल हक निसबत ।। ७५
ए चरन पेहेचान होए मोमनों, वाही को प्यारे लगत ।
नातो बुरा न चाहे कोई आपको, पर क्या करे बिना हक निसबत ।। ७६
पाए बिछुरे पीउ परदेसमें, बीच हक न डारें हरकत ।
ए करी इसक परीक्षा वास्ते, पर ना छूटे हक निसबत ।। ७७
जिन परदेस में पाँउं पकड़े, ज्यों बिछुरे आए मिलत ।
सो मोमन छोड़ें क्यों कदमको, जाकी असल हक निसबत ।। ७८
जो बिछड़के आए मिले, सो पलक ना छोड़ सकत ।
सो रूहें पाए चरन पीउके, जाकी असल हक निसबत ।। ७९
अरसें सबद न पोहोंचे त्रैलोकका, सो दिल मोमन अरस कहावत ।
ए कदमों बड़ाई दिलको दई, जाकी असल हक निसबत ।। ८०

---

१. दर्शन के लिये तीर्थ यात्रा (हजज्यारत) ।

दिल मोमन एही पेहेचान, दिल कदम छोड़ न चलत ।
तो पाई अरस बुजरगी, जो थी असल हक निसबत ।। ८१

ए कदम नूरजमालके, आई दिल मोमन लज्जत ।
सो मोमन अरवा अरसके, जाकी असल हक निसबत ।। ८२

ए चरन दिलका जीव है, तिन बिन जीव क्यों जीवत ।
तो हकें अरस कह्या दिलको, जो असल हक निसबत ।। ८३

जो निसबती दिल चरनके, तामें जरा न तफावत ।
ए कदम रूहें ल्याई दुनीमें, जाकी असल हक निसबत ।। ८४

हक जाहेर बीच दुनीके, रूहें समझके समझावत ।
हुआ फुरमाया रसूलका, तो जाहेर हुई हक निसबत ।। ८५

चौदे तबक करसी काएम, ए जो झूठे खाकीबुत[१] ।
मोंमन बरकत इन कदमो, जाकी असल हक निसबत ।। ८६

सबों भिस्त दे घरों आवही, रूहे कदम ग्रहें बड़ी मत ।
अरसके तन जो मोमन, जाकी असल हक निसबत ।। ८७

ए काम किया सब हुकमें, अव्वल बीच आखरत ।
हक बका द्वार खोलिया, महामत ले आए निसबत ।। ८८

।। प्रकरण ।। ७ ।। चौपाई ।। ४४३ ।।

## कदम परिक्रमा निसबत

उमर जात प्यारी सुपने, निस दिन पीउ जपत ।
लाल कदम न छोड़ें मोमन, जाकी असल हक निसबत ।। १

मांग लई प्यारी उमर, ए जो रब्द के बखत ।
लाल पाँउ तली छोड़ें क्यों मोंमन, जाकी असल हक निसबत ।। २

पांउ निस दिन छोड़ें ना मोमन, सुपने या सोवत ।
सो क्यों छोड़ें बेसक जागे, जाकी असल हक निसबत ।। ३

१. मिट्टी के पुतले (मनुष्य) ।

जब उड़ी नीद असलकी, हक देखें होए जागृत ।
सुख लेसी खेलका अरसमें, जाकी असल हक निसबत ॥ ४

दीजे परिक्रमा अरस की, मोमन दिल ना सखत ।
सूते भी कदम ना छोड़ही, जाकी असल हक निसबत ॥ ५

सुख आगूं अरस द्वारके, कै विध केल करत ।
सो क्यों छोड़ें चरन हकके, जाकी असल हक निसबत ॥ ६

करें सुपनेमें कुरबानियाँ, ऐसे मोमन अलमस्त[1] ।
सूते भी कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥ ७

सुपने कदम पकड़ के, तापर अपना आप वारत ।
हक करें सुरखरू[2] इनको, जाकी असल हक निसबत ॥ ८

लेवें सुख बाग मोहोलनमें, मलारमें[3] बरखा रुत ।
रूहें क्यों छोड़ें चरन सुपने, जाकी असल हक निसबत ॥ ९

रूहें खेलें मलार बनमें, हक हादीकी सोहोबत ।
ए क्यों छोड़ें चरन मोमन, जाकी असल हक निसबत ॥ १०

मोमन बसें अरस बनमें, ऊपर चाह्या मेह बरसत ।
सो क्यों रहें इन पांउं विना, जाकी असल हक निसबत ॥ ११

रूहें मलार अरस बागमें, उपर सेरड़ियां[4] गरजत ।
रूहें सुपने पांउं न छोड़ही, जाकी असल हक निसबत ॥ १२

रूहें खेलें हक हादी सों बनमें, नूर बीजलियां चमकत ।
सो क्यों रहें हक कदम विना, जाकी असल हक निसबत ॥ १३

हक खेलोंने कै खेलावहीं, कै मोर कला पूरत ।
सो क्यों छोड़ें पांउं हकके, जाको असल हक निसबत ॥ १४

रूहें खेलें अरस के बागमें, कै पसू पंखी खेलावत ।
सो क्यों रहें हक कदम विना, जाकी असल हक निसबत ॥ १५

१. मस्त । २, उऋण । ३. वर्षा ऋतु । ४. बदलियां ।

रूहें सुपने दुनीको न लागहीं, जाको मुरदार[1] कही हजरत ।
ए हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥ १६

ए रूहें हक हादी संग, विध विध बन विलसत ।
ए क्यों छोड़ें कदम मोमन, जाकी असल हक निसबत ॥ १७

खेलने वाली सातों घाटकी, हक प्रेम सुराही पिलावत ।
रूहें सुपने न छोड़ें कदमको, जाकी असल हक निसबत ॥ १८

रूहें सराब हक सुराही का, पैदरपें[2] पीवत ।
बेहोस हुए न छोड़ें कदम, जाकी असल हक निसबत ॥ १९

झूलें पुल मोहोल साम सामी, जल बीच मोहोल झलकत ।
रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥ २०

रूहें रमें किनारे जोएके, हक हादी रूहें झीलत ।
सो सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥ २१

हक हादी रूहें पाट पर, मन चाहे सिनगार साजत ।
रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥ २२

रूहें मिलावा अरस बाग में, देखो किन विध ए सोभित ।
रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥ २३

पसु पंखी बोलें इन समे, कै विध बन गूंजत ।
रूहें सुपने कदम न छोड़ही, जाकी असल हक निसबत ॥ २४

विध विधके कुंज बनमें, हक रूहें खेल करत ।
सो क्यों छोड़ें इन कदम को, जाकी असल हक निसबत ॥ २५

बट पीपल की चौकियां, हक हादी रूहें हींचत[3] ।
रूहें सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥ २६

ताल पाल बन गिरदवाए, ऊपर कै मोहोल देखत ।
सो क्यों छोड़ें हक कदमको, जाकी असल हक निसबत ॥ २७

---

१. मृतक तुल्य । २. निरन्तर । ३. झूलना

सोभा *चारो घाटकी, जित जोए हौज मिलत ।
रूहें सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥ २८

ए जो कहे मेहेराब, घाटों ऊपर सोभित ।
हक कदम हिरदे रूहके, जाकी असल हक निसबत ॥ २९

खेलें *हौज कौसरके बागमें, रुहें बन डारी झूलत ।
हक चरन सुपने न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥ ३०

रुहें खेलें टापूके गुरजमें, जाए झरोखों बैठत ।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत ॥ ३१

खेलें अरस हौज टापू मिने, हक झेलें चांदनी चढ़त ।
रुहें क्यों रहे इन कदम बिना, जाकी असल हक निसबत ॥ ३२

नेहेरें मोहोल ढांपियां, जल चक्राव[1] ज्यों चलत ।
मोमन हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥ ३३

कै मोहोल मानिक पहाड़में, हिसाबमें न आवत ।
ए मोमन कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥ ३४

कै ताल नेहेरें मानिक पर, ढिग हिंडोलों चादरें गिरत ।
ए कदम मोमन क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसवत ॥ ३५

कै भांतों नेहेरें बनमें, सागरों निकस मिलत ।
मोमन खेलें कदम पकड़के, जाकी असल हक निसवत ॥ ३६

कै बड़े मोहोल किनारे सागरों, कै मोहोल टापू झलकत ।
ए मोमन कदम सुख लेवही, जाकी असल हक निसबत ॥ ३७

आगूं बड़ा चौगान बन बिना, दूब के दुलीचों[2] जुगत ।
मोमन दौड़के कदम पकड़ें, जाकी असल हक निसबत ॥ ३८

हक हादी रुहें इन चौगानमें, कै पसुपंखी दौड़ावत ।
मोमन लेवें सुख कदमों, जाकी असल हक निसबत ॥ ३९

---

१. गोल घेरा (भंवर)। २. गलीचा।

कहा कहूँ बाग अरसका, जित कै रंगों फूल फूलत ।
रूहें क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत ॥ ४०
रूहें खेलें फूल बागमें, कै खुसबोए रस बेहेकत ।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत ॥ ४१
विध विधकी बन छत्रियां, जड़ाव चंद्रवा ज्यों चलकत ।
ए कदम सुख सुपने लेवहीं, जाकी असल हक निसवत ॥ ४२
इन बाग तले जो बाग है, ए क्यों कहे जुबां सिफत ।
ए मोमन कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥ ४३
मोर चकोर मैंना कोएली, कै विध बन टहुँकत ।
रुहें कदम सुख सुपने लेवहीं, जाकी असल हक निसबत ॥ ४४
जो खेलें झीलें चेहेबच्चे[1], जल फुहारे उछलत ।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत ॥ ४५
रुहें खेलें लाल चबूतरे, कै रंगों हाथी झूमत ।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत ॥ ४६
कै बाघ चीते दीपे केसरी, बोलें कूदें गरजत ।
रुहें क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत ॥ ४७
कै विध बाजे बजावहीं, इत बांदर नट नाचत ।
रुहें सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥ ४८
कै बड़े पसु पंखी अरस के, कै उड़ें खेलें कूदत ।
रुहें क्यों रहें हक चरन बिना, जाकी असल हक निसबत ॥ ४९
कै विध यों *मधुबनमें, सुख लेवें चित चाहत ।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत ॥ ५०
बड़े मोहोल जो पहाड़से, इत रुहें खेलें कै जुगत ।
सो सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥ ५१

१. जलकुण्ड ।

चार मोहोल बड़े थंभ ज्यों, सो ऊपर जाए मिलत ।
रूहें इत सुख कदमों लेवहीं, जाकी असल हक निसबत ॥ ५२
पहाड़ पुखराजी मोहोलमें, सुख चांदनी लेवत ।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत ॥ ५३
हजार हांसें जित गिरदवाए, बीच मोहोल बड़े विराजत ।
इत रूहें सुख लेवें चरनका, जाकी असल हक निसबत ॥ ५४
अति बड़े चार द्वार चांदनी, कै हाथी हलकों आवत ।
चरन छूटे ना इन खावंदके, जाकी असल हक निसबत ॥ ५५
बड़े पसु पंखी इन चांदनी, हक हादी मोहोला लेवत ।
रूहें ए चरन क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥ ५६
हाथी बाघ चीते दीपे केसरी, कोई जातें गिन ना सकत ।
हक कदम रूहें क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥ ५७
ए निपट बड़ा मोहोल चांदनी, इत कै मिलावे मिलत ।
रूहें न छोड़ें हक कदमको, जाकी असल हक निसबत ॥ ५८
बड़े चार द्वार चबूतरों, क्यों कहूँ देहेलानों सिफत ।
ए सुख लेवें मोमन कदमों, जाकी असल हक निसबत ॥ ५९
ए अति ऊँचे मोहोल बीचके, हक सुख आकासी देवत ।
रूहें ए कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥ ६०
हक हादी रूहें बड़े मोहोलनमें, इन गुरजों सुख को गिनत ।
ए कदम सुख मोमन जानहीं, जाकी असल हक निसबत ॥ ६१
सुख लेत ताल मूल जोएके, कै विध केल करत ।
रूहें क्यों छोड़ें हक चरनको, जाकी असल हक निसबत ॥ ६२
मोहोल बड़े ताल ऊपर, रुहें सुख लेवें हकसों इत ।
ए क्यों छोड़ें हक कदमको, जाकी असल हक निसबत ॥ ६३
दोनों तरफों मोहोल के, आगूं जित दरखत ।
सो क्यों छोड़ें चरन सुपने, जाकी असल हक निसबत ॥ ६४

दोऊ किनारें गुरज दोए, बीच सोले चादरें उतरत ।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत ।। ६५

ऊपर चादरों मोहोल जो, बीच बड़े देहेलान देखत ।
दोऊ तरफों कदम सुख लेवहीं, जाकी असल हक निसबत ।। ६६

अधबीचमें कुंड जो, जित चादरों जल गिरत ।
रूहें छोड़ें ना कदम सुपने, जाकी असल हक निसबत ।। ६७

तले ताल बन बंगले, जल चक्राव ज्यों चलत ।
रूहें सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ।। ६८

कै फुहारे मुख जानवरों, जल तीर ज्यों छूटत ।
क्यों भूलें इत सुख कदमके, जाकी असल हक निसबत ।। ६९

ए जंजीरें जलकी, अदभुत सोभा लेवत ।
क्यों छोड़ें ए कदम मोमन, जाकी असल हक निसबत ।। ७०

उलंघ जात कै चेहेबच्चे, जल साम सामी जात आवत ।
इत कदम सुख मोमन लेवहीं, जाकी असल हक निसबत ।। ७१

जल आवें जाए ऊपरसे, तले हक हादी रूहें खेलत ।
ए सुख क्यों छूटें कदमके, जाकी असल हक निसबत ।। ७२

गिरदवाए बड़े द्वार मेहेराबी, ए मोहोल सोभा लेवत ।
इत खेलें रूहें कदम तले, जाकी असल हक निसबत ।। ७३

इत ताल तले बन छाया मिने, रूहें बीच बगीचों मलपत ।
ए सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ।। ७४

केती चक्रावसे बाहेर, जोए तले चबूतरे निकसत ।
रूहें खेलें तले कदमके, जाकी असल हक निसबत ।। ७५

जोए चबूतरे कुंड पर, ऊपर बन झूमत ।
ए कदम सुख मोमन लेवहीं, जाकी असल हक निसबत ।। ७६

जमुना जल ढांपी चली, ए बैठक सोभा अतंत ।
ए सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ।। ७७

दोऊ किनारे ढांपिल, आगूं जल जोए खुलत ।
रूहें क्यों रहें इन कदम विना, जाकी असल हक निसबत ।। ७८

एक मोहोल एक चबूतरा, जाए जोए पुल तले मिलत ।
रूहें ए कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ।। ७९

जोए इतथें मरोर सीधी चली, अरस आगूं सोभा सरत ।
रूहें क्यों छोड़ें इन कदमको, जाकी असल हक निसबत ।। ८०

दोऊ पुलके बीच में, बड़ी सातो घाटों सिफत ।
रूहें खेलें इत कदमों तले, जाकी असल हक निसबत ।। ८१

नूर और नूरतजल्ला, अरस साम सामी झलकत ।
ए रूहें कदम न भूलें सुपने, जाकी असल हक निसबत ।। ८२

दोऊ दरबारकी रोसनी, अंबर नूर भरत ।
रूहें कदम न भूलें सुपने, जाकी असल हक निसबत ।। ८३

अरस जिमी नूर अपार है, इतके बासी बड़े बखत ।
'महामत' रूहें हक जात हैं, जाकी हक कदमों निसबत ।। ८४

प्रकरण ।। ८ ।। चौपाई ।। ५२७ ।।

## अरस अंदर निसबत चरन

अरस अंदर सुख देवहीं, जो रूहों दिल उपजत ।
सो रूहें कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ।। १

अरस अरवाहें भोम खिलवत, नूर दसो दिस लरत ।
सो क्यों छोड़ें इन कदमको, जाकी असल हक निसबत ।। २

रूहें बारे हजार बैठाएके, हक हांसी को खेलावत ।
सो रूहें कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ।। ३

लें सुख चेहेबच्चे भोम दूसरी, मोहोल बारे सहस्त्र जित ।
सो क्यों छोड़ें रूहें कदमको, जाकी असल हक निसबत ।। ४

१. एकान्त बैठने का स्थान ।

रूहें तीसरी भोम चढ़के, बड़े झरोखों आवत ।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत ॥ ५

कै इंड पलथें पैदा फना, जिन कादर[1] ए कुदरत ।
ए आवें मुजरे इन सरूपके, जाकी असल हक निसबत ॥ ६

नूर मकानसे आवें दीदार को, इत नूरजमाल विराजत ।
रूहें याद कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥ ७

हक बैठें पौढ़ें भोम तीसरी, आगूं झरोखों आरोगत ।
रूहें क्यों छोड़ें इन कदमको, जाकी असल हक निसबत ॥ ८

रूहें अरस अजीमकी, भोम चौथी देखें निरत ।
सो हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥ ९

रूहें अरस अजीमकी, पाँचमी भोम पौढ़त ।
सो सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥ १०

रूहें अरस अजीमकी, भोम छठी कै जुगत ।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत ॥ ११

रूहें अरस भोम सातमी, जो छप्पर खटों हींचत ।
सो सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥ १२

ए अरस भोम आठमी, साम सामी हिंडोलों खटकत ।
ए रूहें सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥ १३

अरस रूहें सुख नौमी भोमें, सुख सिंहासन समस्त ।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत ॥ १४

रूहें रेहेवें अरसमें, जो सुख झरोखों भोगवत ।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत ॥ १५

हक हादी रूहें सुख अरस चांदनी, अरस अंबर जोत होवत ।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत ॥ १६

---
१. सामर्थ्यवान ।

सकल भोम सुख लेवहीं, रूहें हक कदम पकरत ।
सो क्यों रहें इन कदम बिना, जाकी असल हक निसबत ।। १७

आई नजीक जागनी, पीछे तो उठ बैठत ।
हांसी होसी भूली पर, जाकी असल हक निसबत ।। १८

रूहें हुकम ले दौड़िए, मूल तन अरसमें उठत ।
हक हँससी तुम ऊपर, रूहें क्यों भूली ए निसबत ।। १९

आया नजीक बखत मोमनों, क्यों भूलिए हादी नसीहत[1] ।
जो सुपने कदम न भूलिए, हँसिए हकसों ले निसबत ।। २०

लाहा[2] लीजे दोनों ठौरका, सुनो मोमनों कहें महामत ।
क्यों सुपने ए चरन छोड़िए, अपनी असल निसबत ।। २१

।। प्रकरण ।। ९ ।। चौपाई ।। ५४८ ।।

### श्री राजजीकी इजार

असल इजार एक पाचकी, एकै रस सब ए ।
कै बेल पात फूल बूटियां, रंग केते कहूँ इनके ।। १

बेल मोहोरी इजारकी, जानों एही भूखन सुंदर ।
अतंत सोभा सबसे, एही है खूबतर[3] ।। २

इजारबंध नंग कै रंग, कै बूटी कै नकस ।
निरमान न होए इन जुबां, ए बस्तर अजीम अरस ।। ३

अति सोभा अति नरमाई, नंग सोभित नरम पसम ।
अरस चीज न आवे सबदमें, ए नेक केहेत हुकम ।। ४

बेल पात फूल कै विधके, कै विध कांगरी इत ।
जोत न नरमाई सुमार, जुबाँ क्या कहे सिफत ।। ५

नेफा रंग कसूंबका[4], अति खूबी अतलस[5] ।
बेल भरी मोती कांगरी, जानों ए भूखन से सरस ।। ६

---

१. सीख । २. लाभ । ३. बढ़िया । ४. कुसुंभीरंग का । ५. रेशमी वस्त्र ।

ताना बाना रंग रेसम, जवेरका[१] सब सोए ।
बेल फूल बूटी तो कहूँ, जो मिलाए समारे होए ॥ ७

॥ प्रकरण ॥ १० ॥ चौपाई ॥ ५५५ ॥

## खुले अंग सिनगार छबि छाती

रूह मेरी क्यों न आवे तोहे लज्जत, तोको हकें कही अरसकी ।
अरस किया तेरे दिलको, तोहे ऐसी बड़ाई हकें दई ॥ १

जो कदी तैं आई नहीं, तोमें हकका है हुकम ।
हुज्जत[२] दई तोको अरसकी, दिया बेसक अपना इलम ॥ २

बिन जामें देखों अंगको, आसिक सब सुख चाहे ।
बागा[३] पेहेने हमेसा देखिए, कछू ए छबि और देखाए ॥ ३

आसिक इन मासूक की, नए सुख चाहे अनेक ।
निरखे नए नए सिनगार, जानें एक से दूजा बिसेक ॥ ४

जुदे जुदे सुख ले हकके, रूह आसिक क्योंए न अघाए ।
ताथें जुदा जुदा बरनन, सुख आसिक ले दिल चाहे ॥ ५

खाना पीना छिन छिन लिया, प्यार अरस रूहन ।
पल पल मासूक देखना, एही आहार आसिकन ॥ ६

हक बैठे अपने अरसमें, सो अरस मोमनका दिल ।
तो अनेक खूबी खुसालियां, हम क्यों न लेवें मिल ॥ ७

ए जो हक बस्तरकी खूबियां, सो हक अंग परदा जहूर ।
बारीक ए सुख जानें रूहें, जिनपें अरस सहूर ॥ ८

बस्तर भूखन सब पूरन, सुख बिन जामें और जिनस ।
देख देख देखे जो आसिक, जो देखे सोई सरस ॥ ९

कटि कोमल अति पतली, सुंदर छाती गौर ।
देख देख सुख पाइए, जो होवे अरस सहूर ॥ १०

---

१. जवाहिरात के तारों से बुने । २. तकरार । ३. जामा ।

कटि कोमल कही जों पतली, ए सुख सलूकी और ।
ए जुबां सोभा तो कहे, जो कहूँ देखी होए और ठौर ॥ ११

और पेट पांसली हककी, ए कौन भांत कहूँ रंग ।
रूह देखे सहूर अरसके, और कौन केहेवे हक अंग ॥ १२

पांसे पांखड़ीं बगलें, सोंभित बंधों बंध ।
अंग रंग खूबी खुसालियां, पार ना सुख सनंध ॥ १३

ज्यों बरनन सुपन सरूपको, ए भी होत विध इन ।
ए चारों चीज उत हैं नहीं, ना अरसमें ख्वाब चेतन ॥ १४

ए बरनन अरस अंग होत है, ले मसाला इतका ।
तार्थे किन विध रूह कहे, ना जुबां पोहोंचे सबद बका ॥ १५

जो अरवा होए अरसकी, सो कीजो इलम सहूर ।
इलम सहूर जो हकें दिया, लीजो इनसे रूहें जहूर ॥ १६

हकको जेता रूह देखही, सुध तेती ना बुध मन ।
तो सुपन जुबां क्या केहेसी, अंग हक बका बरनन ॥ १७

नरम नाजुक पेट पांसली, क्यों कहूँ खूब रस रंग ।
देत आराम आठो जाम, हक बका अरस अंग ॥ १८

छाती निरखों हककी, गौर अति उज्जल ।
देख हैड़ा खूब खुसाली, तो मोमन कह्या अरस दिल ॥ १९

जिन देख्या हक हैअड़ा, क्यों नजर फेरे तरफ और ।
वाको उसी सूरत बिना, आग लगे सब ठौर ॥ २०

जो हक अंग देख्या होए, हक जमाल[1] न छोड़े तिन ।
जाके अरसकी एक कंकरी, त्रैलोकी उड़ावे त्रैगुन ॥ २१

वह देख्या अंग क्यों छूटही, हक परीक्षा एही मोमन ।
ए होए अरस अरवाहोंसों, जिनके असल अरसमें तन ॥ २२

---

१. सौन्दर्य ।

हक जात अरस उन तनसे, बीच रहत मोमनके दिल ।
अरस मोमन दिल तो कह्या, यों हिल मिल रहे असल ।। २३

दिल हकका और हादीअका, ए दोऊ दिल हैं एक ।
एकै मता दोऊ दिलमें, ए अरस रूहें जानें विवेक ।। २४

जो गंज[1] हकके दिलमें, सो पूरन इसक सागर ।
कोई ए रस और न ले सके, बिना मोमन कोई न कादर ।। २५

तो अरस कह्या दिल मोमन, जो इन दिलमें हक बैठक ।
तो इत जुदागी कहाँ रही, जहां हकै आए मुतलक ।। २६

ए क्यों होए बिना निसबत, इतहीं हुई वाहेदत ।
निसबत वाहेदत एकै, तो क्यों जुदी कहिए खिलवत ।। २७

इतहीं हक मेहेरबानगी, इतहीं हुकम इलम ।
तो इत जोस इसक क्यों न आवहीं, जो हकें दिलमें धरे कदम ।। २८

सोई सहूर अरसका, जो कह्या हक इलम ।
सोई मोमनपें बेसकी, यों अरस रूहें जुदी ना खसम ।। २९

जुबां क्या कहे बड़ाई रूहकी, पर रूहें भूल गई लाड़ लज्जत ।
एक दम न जुदे रहे सकें, जो याद आवे हक निसबत ।। ३०

हक हैड़े के अंदर, मता अनेक अलेखे ।
उपली नजरों न आवहीं, जो लों रूह अंदर ना देखे ।। ३१

क्यों छूटे हक हैअड़ा, मोमन के दिलसे ।
अरस मता जो मोमनका, सब हक हैड़े में ।। ३२

सब अंग देखत रस भरे, प्रेमके सुख पूरन ।
रूह सोई जाने जो देखही, ले हिरदे रस मोमन ।। ३३

ए जो बातून गुन हक दिलमें, सो क्यों आवे मिने हिसाब ।
ए दृष्टि मन जुबां क्या कहे, ए जो मसाला ख्वाब ।। ३४

---

१. खजाना ।

छाती मेरे खसम की, जिन का नाम सुभान ।
जो नेक देखू गुन अंदर, तो तबहीं निकसे प्रान ॥ ३५

जो निध हक हैड़े मिने, सो कै अलेखे अनेक ।
सो सुख लेसी अरसमें, जिन बेवरा लिया इत देख ॥ ३६

हक हैड़ेमें जो हेत है, रूहोंसों प्रेम प्रीत ।
जिन मेहेर होसी निसबत, सोई ल्यावसी प्रतीत ॥ ३७

हक हैड़ेमें इसक, सब अंगों सनेह ।
रूह देखसी हक मेहेरसे, निसबती होसी जेह ॥ ३८

हक हैड़ेमें एही बसे, मैं लाड़ पालों रूहों के ।
ए हक हुज्जत आवे तिनों, तन असल अरस में जे ॥ ३९

हक हैड़े में निस दिन, सुख देऊँ रूहों अपार ।
जिन रूह लगी होए अंदर, सो जानेगी जाननहार ॥ ४०

एक नुकता[1] इलम हक दिल से, आया मेरे दिल माहें ।
इन नूर नुकते की सिफत, कहे न सके कोई क्याहें ॥ ४१

ले नूर नुकतेकी रोसनी, मैं ढूंढ़े चौदे भवन ।
इनमें कहूँ न पाइया, माहें त्रैलोकी त्रैगुन ॥ ४२

इन इलम नुकतेकी रोसनी, नहीं कोट ब्रह्मांडों कित ।
सो दिया मोहे सुपन दिलमें, जो नहीं नूर अक्षर जागृत ॥ ४३

खाक पानी आग वाएको, ए चौदे तबक है जे ।
सो मेरे दिल काएम किए, बरकत नुकते इलम के ॥ ४४

एक बूंद आया हक दिलसे, तिन काएम किए थिर चर ।
इन बूंदकी सिफत देखियो, ऐसे हक दिलमें कै सागर ॥ ४५

एक बूंदने बका किए, तो होसी सागरों कैसा बल ।
तो काहूँ न पाई तरफ किने, कै चौदे तबक गए चल ॥ ४६

---

१. बूंद ।

ऐसे कै सुख हक हैड़े मिने, सो ए जुबां कहे क्योंकर ।
हक हैंड़े बल तो नेक कह्या, जो इत बूंद आई उतर ॥ ४७
कोट ब्रह्मांड का केहेना क्या, जिमी झूठी पानी आग वाए ।
ए चौदे तबक जो मुरदे[1], नुकते इलमें दिए जिवाए ॥ ४८
क्यों कहिए सोभा हकको, ना कछू झूठमें आए हम ।
लेहेजे[2] हुकमें झूठ बैराटको, सांचे किए नुकते इलम ॥ ४९
कही न जाए झूठमें, हक हैड़ेकी सिफत ।
हक सोभा छलमें तो होए, जो सांच जरा होए इत ॥ ५०
तो कह्या वेद कतेबमें, ए ब्रह्मांड नहीं रंचक ।
तो क्यों कहिए आगे इनके, ए जो सिफत दिल हक ॥ ५१
कहूँ सुंदर सोभा सलूकी, कहूँ केते गुन उपले ।
ए सुख न आवे हिसाबमें, ए जो गिरो देखत है जे ॥ ५२
हक छाती सलूकी सुनके, रूह छाती न लगे घाए ।
धिक धिक पड़ो तिन अकलें, हा हा ओ नहीं अरस अरवाए ॥ ५३
हक छाती नरम कोमल, रूह सदा रहे सूर धीर ।
पाए बिछुरे पीउ परदेसमें, हा हा सो रही ना कछू तासीर[3] ॥ ५४
छाती मेरे खसम की, देखी जोर सलूक ।
न्यारे होते निमखमें, हा हा जीवरा न होत टूक टूक ॥ ५५
छाती मेरे मासूक की, चुभी मेरी छाती माहें ।
जो रूह अरस अजीम की, तिनसे छूटत नाहें ॥ ५६
बिछुरे पाए परदेसमें, देखी पीउ अंग छाती ।
अब पलक पड़े जो बिछोहा, हा हा उड़े ना करे आप घाती ॥ ५७
मासूक छाती रूहसे ना छूटही, अति मीठी रंग भरी रस ।
ए क्यों कर छोड़े मोमन, जो होए अरवा अरस ॥ ५८

---

१. नाशवान । २. क्षण । ३. प्रभाव ।

ए अंग मेरे मासूक के, मीठे अति मुतलक ।
ए लज्जत असल याद कर, ए लें अरवा आसिक ॥ ५९

मुख न फेरें मोमन, छाती इन सुभान ।
ए याद करते अनभव, क्यों न आवे असल ईमान ॥ ६०

मासूक छाती निरखते, क्यों याद न आवे अरस ।
विचार किएँ आवे अनभव, जाको दिल कह्यो अरस परस ॥ ६१

हकें अरस कह्या दिल मोमन, अरस में मता हक सब ।
अजूं हक आड़े पट रहे, ए देख्या बड़ा तअजुब[1] ॥ ६२

पट एही अपने दिलको, हकें सोई दिल अरस कह्या ।
हक पट अरस सब दिलमें, अब अंतर कहाँ रह्या ॥ ६३

जो विचार विचार विचारिए, तो हक छाती न दिल अंतर ।
ए पट आड़ा क्यों रहे, जब हुकमें बांधी कमर ॥ ६४

ए क्यों रहे पट अरसमें, पूछ देखो हक इलम ।
ओ उड़ाए देसी पट बीच का, जब रूह हुकमें आई कदम ॥ ६५

एही पट फरामोस का, दिलमें रहा अंतर ।
जब हुकमें बँधाई हिम्मत, तब होस में न आवे क्योंकर ॥ ६६

दिल अरस कह्या याही वास्ते, परदा कह्या जहूर ।
दोऊ दिलके बीचमें, जो दिल देखे कर सहूर ॥ ६७

हक छाती निपट नजीक है, सेहेरगसे नजीक कही ।
हक सहूर किए विना, आड़ी अंतर तो रही ॥ ६८

हक भी कहे दिलमें, अरस भी कह्या दिल ।
परदा भी कह्या दिलको, आया सहूरें बेवरा निकल ॥ ६९

जो पीठ दीजे ब्रह्मांडको, हुआ निस दिन हक सहूर ।
तब परदा उड़या फरामोसका, बका अरस हक हजूर ॥ ७०

---

१. आश्चर्य ।

मेहेबूब छाती की लज्जत, देत नहीं फरामोस ।
फरामोस उड़े आवे लज्जत, सो लज्जत हाथ प्रेम जोस ॥ ७१

इसक जोस और इलम, ए हक हुकम के हाथ ।
तब हक हैड़ा न छूटही, ए सब सुख हैड़े साथ ॥ ७२

ए मेहेर करें जो मासूक, तो रूह हुकमें बांधे कमर ।
तब फरामोसी दूर दिलसे, हक हैड़े चुभी नजर ॥ ७३

ए होए हक निसबतें, रूहों हुकम देवे हिंमत ।
तब फरामोसी रहे ना सके, दे हक छाती लाड़ लज्जत ॥ ७४

इन विध छाती न छूटही, रूहोंसों निस दिन ।
असल सुख हक हैड़े के, ए लज्जत लगे अरस तन ॥ ७५

जोस इसक सुख अरसके, ए लगे रूह मोमन ।
जब ए सबे मदत हुए, तब क्यों रहे पट रूहन ॥ ७६

असल नींद सो फरामोसी, फरामोसी सोई अंतर ।
जो अरस लज्जत आवही, तो इलमें तबहीं जुड़े नजर ॥ ७७

इलम सहूर मेहेर हुकम, ए चारों चीजें होएँ एक ठौर ।
तिन खैंच लिया मता अरसका, पट नहीं कोई और ॥ ७८

अरस तन दिलमें ए दिल, दिल अंतर पट कछू नाहें ।
सुख लज्जत अरस तन खैंचही, तब क्यों रहे अँतर माहें ॥ ७९

सुपन होत दिल भीतर, रूह कहूँ ना निकसत ।
ए चौदे तबक जरा नहीं, ए तो दिलमें बड़ा देखत ॥ ८०

हक छाती रूहथें न छूटही, नजर न सके फेर ।
जो कोई रूह अरसकी, ताएं हक बिना सब अंधेर ॥ ८१

हक छाती में लाड़ लज्जत, और छाती में असल आराम ।
ए सब सुखको रस पूरन, तो रूह लग रही आठों जाम ॥ ८२

रूहों हक छाती चुभ रही, सो देवे लज्जत अरवाहों को ।
असल सुख सागर भयो, देखें अरस आराम सबमों ॥ ८३

ए जो हक हैड़ेकी खूबियां, सो क्या केहेसी बुध माफक ।
पर ए कहे हक हुकम, और हक इलम बेसक ॥ ८४
रूह खड़ी करे हुकम, और बेसक लुदंनी इलम ।
ना तो रूह कहे क्यों नीदमें, हक हैड़ा बका खसम ॥ ८५
*'महामत' कहें बोलूं हुकमें, अरस मसाला ले ।
दरगाही रूहन को, सुख असल देने के ॥ ८६

॥ प्रकरण ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ ६४१ ॥

खभे[1] कंठ मुखारविंद[2] सोभा समूह ॥ मंगला चरन ॥

मुख मेरे मेहेबूब[3] का, रंग अति उज्जल गुलाल ।
क्यों कहूँ सलूकी नाजुकी,[4] नूर तजल्ली[5] नूरजमाल ॥ १
बांहें मेरे मासूक की, प्यारी लगें मेरी रूह ।
हक हुकम यों कहावत, सो वाही जाने हकहू[6] ॥ २
अंग रंग सलूकी सुभानकी, चकलाई उज्जल गौर ।
नाम सुनत इन अंगके, जीवरा न होत चूर चूर ॥ ३
ए छबि अंग अरस के, जोत अंग हक सूरत ।
ए केहेनीमें आवे क्योंकर, जो कही अमरद सूरत ॥ ४
खभे देत दोऊ खूबियां, रूह देख देख होए खुसाल ।
जो नेक आवे अरसकी लज्जत, तो रोम रोम लगे रूह भाल[7] ॥ ५
खभे मच्छे कोनियां, और कलाइयाँ कांड़न ।
पोहोंचे हथेली अंगुरी, नूर क्यों कहूँ नखन ॥ ६
जोत नखन की क्यों कहूँ, अवकास रह्यो भराए ।
तामें जोत नखन की, नेहेरें चलियां जाए ॥ ७
ज्यों ज्यों हाथ की अंगुरी, होत है चलवन ।
त्यों त्यों नख जोत आकासमें, नेहेरें चीर चली रोसन ॥ ८

---

१. कन्धे । २. मुख कमल । ३. प्यारा । ४. कोमलता । ५. आभा (तेज) । ६. सच्चाई ।
७. चोट (भाला) ।

एक अंग जो निरखिए, तो निकस जाए उमर ।
एक अंग बरनन ना होवही, तो होए सरूप बरनन क्यों कर ॥ ९

अति गौर हस्त कमल, अति नरम अति सलूक ।
हस्त चकलाई देखके, जीवरा होत नहीं टूक टूक ॥ १०

कांडे कलाई कोनियां, इन अंग रंग सलूक ।
फेर मच्छे खभे लग देखिए, रूह क्यों न होए भूक भूक ॥ ११

ए अंग सारे रस भरे, सब संधोंसंध[1] इसक ।
सहूर किएँ जीवरा उड़े, अरस अंग वाहेदत हक ॥ १२

जीवरा न समझे अरसको, ना सहूर करे वाहेदत ।
रूहें भूल गई लाड़ लज्जत, ना सुध रही निसबत ॥ १३

## मंगलाचरन तमाम

अब कहूँ कंठ सोभा मुखकी, और इसक सबों अंग ।
आसिक दिल छबि चुभ रही, मासूक रूप रस रंग ॥ १४

ए जो कोमलता कंठकी, क्यों कहूँ चकलाई गौर ।
नेक कह्या जात ख्वाबमें, जो हकें दिया सहूर ॥ १५

गौर केहेतीहों मुखसे, सो देख के अंग इतका ।
ए जुबां दृष्टि इत फनाकी, सोभा क्यों कहे कंठ बका ॥ १६

कंठ गौर कै सुख देवहीं, जो कछू खोले रूह नजर ।
सो होत हकके हुकमें, जिनने करी नजीक फजर ॥ १७

ए जो लज्जत लाड़ की, सोभी हुई हाथ इजन ।
जिन निसबतें बेसक करी, ताए क्यों न आवे लज्जत तन ॥ १८

ना तो बेसक जब निसबत, तब रूह क्यों करे फरामोस ।
ए देह जो सुपन की, छिनमें उड़ावे हक जोस ॥ १९

---

१. जोड़-जोड़ में ।

ए जो देखो सहूर करके, भई आड़ी हक आमर ।
ना तो बल करते धनी बेसक, ए देह ख्वाब रहे क्योंकर ॥ २०

प्रीत रीत इसक की, इसकै सहज सनेह ।
निस दिन बरसत इसक, नख सिख भीजे सब देह ॥ २१

भौं भृकुटी पल पापन, मुसकत लवने[१] निलवट[२] ।
इन विध जब मुख निरखिए, तब खुलें हिरदे के पट ॥ २२

छबि फब नई एक भांतकी, श्रवन गाल मुसकत ।
लाल अधुर मुख नासिका, जानों गौर हरवटी हँसत ॥ २३

हाथ पांउं पेट हैअड़ा, कंठ हार भूखन बस्तर ।
ए सब अंग हकके मुसकत, और नाचत हैं मिलकर ॥ २४

बलि बलि जांउं मुख हकके, सोभा अति सुन्दर ।
ए छबि हिरदे तो आवही, जो रूह हुकमें जागे अंदर ॥ २५

हक मुख छबि हिरदे मिने, जो आवे अंतसकरन ।
तिन भेली लज्जत लाड़ की, आवे अरसके अंग वतन ॥ २६

गौर मुख लाल अधुर, ए जो सलूकी सोभित ।
एह जुबां तो कहे सके, जो कोई होए निमूना इत ॥ २७

कहे जांए न गौर गलस्थल, और अधुर लालक ।
मुख चकलाई हककी, सब रस भरे नूर इसक ॥ २८

लाल जुबां दंत अधुर, हरवटी गौर हँसत ।
जब बातून नजरों देखिए, तब रूह सुख पावत ॥ २९

अधुर हरवटी बीच में, क्यों कहूँ लांक सलूक ।
एही अचरज मोहे होत है, दिल देख न होत भूक भूक ॥ ३०

दोऊ छेद्र चकलाई नासिका, गौर रंग उज्जल ।
तिलक निलाट के रंगों, नए नए देखत माहें पल ॥ ३१

---

१. कनपटी । २. मस्तक ।

नैन रस भरे रंगीले, चंचल चपल भरे सरम ।
ए अरवाहें जानें अरसकी, जो मेहेरम[1] बका हरम[2] ॥ ३२
नेत्र अनियां[3] अति तीखियां, रस इसक भरे पूरन ।
ए खैंचें जिन रूह ऊपर, ताए सालत[4] है निस दिन ॥ ३३
स्याम सेत भौंह लवने, नेत्र गौर गिरदवाए ।
स्याह पुतली बीच सुपेतमें, जंग जोर करत सदाए ॥ ३४
सोभा धरत अति श्रवनों, मोती उज्जल बीच लाल ।
ए मुख रूह जब देखही, तो बलि बलि जाऊँ तिन हाल ॥ ३५
प्यारी बातें करे जब आसिक, हेतें सुनत हक कान ।
क्यों कहूँ सुख तिन रूहके, जो प्यार कर सुनें सुभान ॥ ३६
रूह बात करे एक हक सों, हक देत पड़ उत्तर चार ।
कुरबान जाऊँ हक हादीकी, जासों हक करें यों प्यार ॥ ३७
ए छबि अंग अरस के, जो अंग हक मूरत ।
ए केहेनीमें आवे क्योंकर, जो कही अमरद सूरत ॥ ३८
कांध केस पेच पगरी, पीठ लीक रूप रंग ।
हा हा जीवरा ना उड़े, कहते अरस रेहेमानी अंग ॥ ३९
पाग सोभित सिर हकके, बनी हक दिल चाहेल ।
सो इन जुबां क्यों कहे सके, जाकी दृष्टि अंग इन खेल ॥ ४०
दुगदुगी सोभा तो कहूँ, जो पगड़ी सोभा होए और ।
जोत करे हक दिल चाही, कोई तरह बनी इन ठौर ॥ ४१
ए क्यों आवे जुगत जुबां मिने, क्यों कहूँ एह सलूक ।
जो ए तरह आवे रूह दिलमें, तो तबहीं होवे टूक टूक ॥ ४२
इन पागै में है दुगदुगी, बनी पागै में कलंगी ।
ए जंग करे जोत जोतसों, ए बनाएल हक दिलकी ॥ ४३

---

१. भेदिया । २. अन्तःपुर । ३. किनारे । ४. चुभते हैं ।

कै जिनसें कै जुगतें, कै तरह भांत सलूकी ए ।
कै रंग नंग तेज रोसनी, नूर छायो अंबर जिमी जे ।। ४४

जित चाहिए ठौर दुगदुगी, सब बनी पाग पर तित ।
ठौर कलंगी के कलंगी, सिफत न जुबां पोहोंचत ।। ४५

कै सुख सलूकी इन पागमें, मैं तो कहूँ बिध एक ।
दिल चाही रूह देखत, एक छिनमें रूप अनेक ।। ४६

ना कछू खोली ना फेर बांधी, इन पागै में कै गुन ।
पल पल में सुख दिल चाहे, नए नए देत रूहन ।। ४७

या विध कै सुख देत हैं, या बस्तर या भूखन ।
सुख हक सरूप सिनगारके, किन विध कहूँ मुख इन ।। ४८

तिलक नासिका नेत्र की, केस लवने कांन गाल ।
मुख चौक देख नैन रूह के, रोम रोम छेदे ज्यों भाल ।। ४९

मुख सुंदरता क्यों कहूँ, नूरजमाल सूरत ।
ए बयान दुनीमें क्यों करूँ, ए जो आई अरस न्यामत ।। ५०

ए मुख देख सुख पाइए, उपजत है अति प्यार ।
देख देख जो देखिए, तो रूह पावे करार ।। ५१

जो देखूं मुख सलूकी, तो चुभ रहे रूह माहें ।
ए सुख मुख अरसका, कहे ना सके जुबांए ।। ५२

गौर निलवट रंग उज्जल, जाऊँ बलि बलि मुखारबिंद ।
ए रस रंग छबि देखिए, काढ़त बिरहा निकंद[1] ।। ५३

जो मुख सोभा देखिए, तो उपजत रूह आराम ।
आठो पोहोर आसिक, एही मांगत है ताम[2] ।। ५४

जो गौर रंग देखिए, जुबां कहा कहे हक मान ।
और कछू न देवे देखाई, आगूं अरस सुभान ।। ५५

---

१. नाश करना । २. भोजन ।

हँसत सोभित मुख हरवटी, अति सुन्दर सुखदाए ।
हा हा रूह नजर यासों बांधके, क्यों टूक टूक होए न जाए ।। ५६

अति गौर सुन्दर हरवटी, और अतंत सोभा सलूक ।
बड़ा अचरज ए देखिया, जीवरा सुनत न होए टूक टूक ।। ५७

हरवटी अधुर बीच लांक जो, मुख अधुर दोऊ लाल ।
ए लाली मुख देखे पीछे, हा हा लगत न हैड़े भाल ।। ५८

सोभे हँसत हरवटी, बड़ी अचरज सलूकी मुख ।
रूह देखे अंदर आंखां खोलके, तो उपजे अरस सुख ।। ५९

क्यों कहूँ गौर गालन की, सोभित अति सुन्दर ।
जो देखूं नैन भरके, तो सुख उपजे रुह अन्दर ।। ६०

क्यों कहूँ गालकी सलूकी, क्यों कहूँ गालों का रंग ।
अनेक गुन गालनमें, ज्यों जोत किरन रंग तरंग ।। ६१

बारीक सुख सरुप के, कोई जाने रूह मोमन ।
इसक इलम जोस याही को, जाके होसी अरसमें तन ।। ६२

ए मुख अचरज अदभुत, गुन केते कहूँ गालन ।
ए रुह जाने सुख बारीक, हर गुन अनेक रोसन ।। ६३

रुहके नैन खोलके, देखूं दोऊ गाल ।
आसिक को मासूक का, कोई भेद गया रंग लाल ।। ६४

गाल रंग अति उज्जल, गेहेरा अति कसूंबाए ।
मेहेबूब मुख देखे पीछे, रुह छिन न सहे अंतराए[1] ।। ६५

ए अंग अरस सरुपके, क्यों होए बरनन जिमी इन ।
ए अचरज अदभुत हकें किया, वास्ते अरवा अरसके तन ।। ६६

'महामत' हुकमें केहेत हैं, हक बरनन किया नेक ।
और भी कहूँ हक हुकमें, अब होसी सब विवेक ।। ६७

।। प्रकरण ।। १२ ।। चौपाई ।। ७०८ ।।

---

१. जुदागी ।

## हक मासूकसे श्रवन अंग

श्रवनकी किन विध कहूँ, लेत आसिक इत आराम ।
देख सुन सुख पावहीं, आसिक रूह इन ठाम ॥ १
कानन के गुन अनेक हैं, सुख आसिक बिना हिसाब ।
आठो जाम इत पीवहीं, अरस अरवाहें ए सराब ॥ २
देख कोमलता कान की, नैनों सीतलता होए ।
आसिक इन सरूप के, ए सुख जानें सोए ॥ ३
मासूक का मुख सोभित, देख लवने केस कान ।
पेहेचान वाले सुख पावहीं, देख अरस अजीम सुभान ॥ ४
कानों सुनें आसिक की, दिल दे गुझ मासूक ।
कहे आधा सुकन इसक का, आसिक होए जाए भूक भूक ॥ ५
मुख जुबां मासूक की, सो भी कानों के ताबीन[1] ।
रूह देखे गुन कानन के, जासों हक जुबां होत आधीन[2] ॥ ६
हकें आसिक नाम धराइया, वाको भी अरथ ए ।
मासूक उलट आसिक हुआ, सो भी बल कानन के ॥ ७
हक कहे मेरा नाम आसिक, सो भी सुनके गुझ मोमन ।
ए जानें अरवा अरस की, कहूँ केते कानों गुन ॥ ८
खावंद अरस अजीम का, गुझ सुनत रात दिन ।
ए जो अरवाहें अरस की, कै सुख लेवें कानन ॥ ९
हक आसिक हुआ याही वास्ते, सो रूहें क्यों न सुनें हक बात ।
ए कौन जाने अरस रूहों बिना, कान गुन अंग अख्यात[3] ॥ १०
बोहोत बड़े गुन कानके, विना आसिक न जाने कोए ।
कै गुझ गुन श्रवनके, और कोई जाने जो दूसरा होए ॥ ११

---

१. आज्ञाकारी । २. वश में । ३. अप्रकट ।

और देखो गुन काननके, जब हक देत रूहों कान ।
वाको ले अपनी नजरमें, देखें सनकूल दृष्टि सुभान ॥ १२

सब सुख पावे रूह तिनसों, हुए नेत्र भी कानो तालूक[1] ।
सीतल दृष्टें देखत, ए जो मासूक मलूक[2] ॥ १३

ए सब वरकत कानोंकी, सो सुन रूहकी बान ।
दिल भी हक तहां देत हैं, मेहेर करत मेहेरबान ॥ १४

ए गुन सब काननके, कै गुझ सुख रूह परवान ।
रूहें कै सुख कानों लेत हैं, रेहेमत[3] इन रेहेमान ॥ १५

हक इसक जो करत हैं, सो सब कानोंकी बरकत ।
अनेक सुख हैं इनमें, सो जानें हक निसबत ॥ १६

आसिक जाए कहूँ ना सके, छोड़ सुख हक श्रवन ।
हिसाब नहीं सुख कानोंके, कोई सके न ए गुन गिन ॥ १७

खोल देखो एक इसक को, तो कै सुख अरस अपार ।
सो सुख लेसी कर बेवरा, जो होसी निसबती हुसियार ॥ १८

दिल के सुख केते कहूँ, जो हक दिल दरिया पूरन ।
सब अंग ताबे[4] दिलके, होसी अरसमें हिसाब इन ॥ १९

तो इन जुबां क्यों होवही, हक हादी सागर सुख ।
ए बारीक सुख बीच अरसके, होसी मूल मेलेके मुख ॥ २०

जो अरथ ऊपरका लेवहीं, सो सुख जानें एक हक श्रवन ।
एक एक के कै अनेक, सो कै गुन मगज लेवें मोमन ॥ २१

कै अंग ताबे कानके, कान अंग सिरदार ।
कोई होसी रूह अरसकी, सो जानेगी जाननहार ॥ २२

इलम भी ताबे कानों के, जो इलम कह्या बेसक ।
ए झूठी जिमिएँ सेहेरगसे नजीक, इलमें पाइए इत हक ॥ २३

---

१. सम्बन्ध । २. सुन्दर । ३. कृपा । ४. आधीन ।

कै गुन हैं कानन के, जाके ताबे दिल खसम ।
क्यों सिफत कहूँ इन दिलकी, जिन दिल ताबे हुकम ॥ २४

हुकम इलम ताबे कान के, मेहेर दिल ताबे इसक के ।
क्यों कहूँ इनसे आगे वचन, कानों ताबे भए सागर ए ॥ २५

निकस न सके आसिक, हक के एक अंग से ।
तिन अंग ताबे कै सागर, अरस रूहें पड़ी इनमें ॥ २६

जो सागर कहे ताबे कानके, तिन सागरों ताबे कै सागर ।
जो गुन देखूं हक एक अंग, याथें रूह निकसे क्यों कर ॥ २७

जो गुन मैं केहेती हों, हक अंग गुन अपार ।
अरस रूहें गिनें गुन अंग के, सो गुन आवे न कोई सुमार ॥ २८

सुनो मोमनों एक ए गुन, एक अंग ऊपर के कान ।
अंग अपार कहे कै बातून, अजूं जुदे भूखन सुभान ॥ २९

जैसी सोभा देखों साहेबकी, तैसे कानों पेहेंने भूखन ।
आसमान जिमी के बीचमें, हो रही सबे रोसन ॥ ३०

एक अंगमें कै खूबियाँ, सो एक खूबी कही न जाए ।
तिन खूबी में कै खूबियां, गिनती होए न ताए ॥ ३१

सो खूबियां भी अरस की, जाके कायम सुख अखंड ।
सो काएम सुख इत क्यों कहूँ, ए जो जुबां इन पिंड ॥ ३२

क्यों बरनों अरस अंगको, एक अंगमें अनेक रंग ।
जो देखों ताके एक रंग को, तिन रंग रंग कै तरंग ॥ ३३

सो एक तरंग ना ले सकों, एक तरंगे कै किरन ।
जो देखूं एक किरनको, तो पार न पाऊँ गुन गिन ॥ ३४

एह निमूना देत हों, रूहें जानें जो सिफत करत ।
जथारथ सबद न पोहोंचहीं, तो जुबां पोहोंचे क्यों हक सिफत ॥ ३५

जो कबूं कानों ना सुनी, सो सुन जीव गोते खाए ।
दम ख्वाबी बानी वाहेदत की, सुनते ही उड़ जाए ॥ ३६

श्रवन गुन गंज क्यों कहूँ, जाके तावे हुए कै गंज ।
इन गंजों गुन सुख सो जानहीं, जिन बका हक समझ ॥ ३७

गुन एक अंग न कहे सकों, जो देखों दिल धर ।
तो गंज अलेखे अपार के, सुख कहूँ क्यों कर ॥ ३८

ए जब देखों गुन श्रवना, जानों कोई न इन सरभर ।
सहूर करों एक गुन सुख, तो जाए निकस उमर ॥ ३९

तार्थे सुख और अंगोंके, सो भी लिए दिल चाहे ।
ना तो श्रवन तावे कै गंज हुए, ताको एक गुन दिल न समाए ॥ ४०

ए सुख बिना हिसाबके, ए जानें मोमन दिल अरस ।
ए रस जिन रूहों पिया, सोई जानें रस अरस परस ॥ ४१

जो देखी सारी कुदरत, सो भी इन श्रवनकी बरकत ।
जो विचार करों इन तरफको, तो देखों सबमें एही सिफत ॥ ४२

जो सहूर कीजे हक सिफतें, ए तो हक बका श्रवन ।
ए सुख क्यों आवें सुमार में, कछू लिया दिल अरस मोमन ॥ ४३

जेता सहूर जो कीजिए, सब सिफतें सिफत बढ़त ।
जो कदी आई बोए[1] इसक, तो मुख ना हरफ कढ़त ॥ ४४

कहें हुकमें महामत मोमनों, क्यों कहे जाएं गुन कानन ।
जाके तावें कै गंज सागर, ए सुख सेहे सकें अरसके तन ॥ ४५

॥ प्रकरण ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ ७५३ ॥

हक मासूकके नेत्र अंग

देखों नैना नूरजमाल, जो रूहों पर सनकूल ।
अरवाहें जो अरस की, सो जिन जाओ खिन भूल ॥ १

दिल अरस नाम धराए के, नैना बरनों नूरजमाल ।
हा हा छेद न पड़े छाती मिने, रोम रोम लगे ना रूह भाल ॥ २

---

१. सुगन्धि ।

जो अरवा कहावे अरसकी, सुने बेसक हक बयान ।
हा हा झूठी देहको छोड़के, पोहोचत न तित प्रान ॥ ३

सिफत पाई हक नैन की, हक नैनों में गुन अपार ।
सो गुन अखंड अरस के, ए रंग हमेसा करार[1] ॥ ४

गुन नैंनों के क्यों कहूँ, रस भरे रंगीले ।
मीठे लगें मरोरते, अति सुंदर अलबेले[2] ॥ ५

सोभावंत कै सुख लिए, तेजवंत तारे ।
बंके नैन मरोरत मासूक, सब अंग भेदत अनियारे[3] ॥ ६

मेहेर भरे मासूक के, सोहें नैन सुन्दर ।
भृकुटी स्याम सोभा लिए, चुभ रहत रूह अंदर ॥ ७

जोत धरत कै जुगतें, निहाएत[4] मान भरे ।
लज्या लिए पल पापन, आनंद सुख अगरे[5] ॥ ८

नैनों की गति क्यों कहूँ, गुनवंते गंभीर ।
चंचल चपल ऐसे लगें, सालत सकल सरीर ॥ ९

नूर भरे नैंना निरमल, प्रेम भरे प्यारे ।
रस उपजावत रंगसों, मानों अति कामन[6]—गारे ॥ १०

जब खैंचत भर कसीस[7], तब मुतलक डारत मार ।
इन विध भेदत सब अंगों, मूल तन मिटत विकार ॥ ११

निपट बंकी छबि नैन की, नूरै के तारे कारे ।
सोभें सेत लालक लिएँ, नूर जोत उजियारे ॥ १२

बड़े लंबे टेढ़क लिएँ, अति अनियां सोभे उपर ।
सीतल करुना अमी भरे, मद रंग भरे सुन्दर ॥ १३

सोहत छैल छबीले, कहा कहूँ सलूक ।
एह नैना निरखे पीछे, हा हा जीव न होत भूक भूक ॥ १४

---

१. ठहराव । २. अनूठे । ३. बाँके । ४. अत्यधिक । ५. अधिक । ६. प्रेम युक्त । ७. आकर्षण ।

दया सिंध सुख सागर, इसक गंज अपार ।
सराब पिलाबत नैनसों, साकी ए सिरदार ।। १५

छबि फब इन नैनों की, जो रूह देखे खोल नैन ।
*आठों पोहोर न निकसे, पावे आसिक अंग सुख चैन ।। १६

प्रेम पुंज अति गंज गंभीर, नेत्र सदा सुखदाए ।
जो रूह मिलावे नैन नैनसों, चोट फूट निकसे अंग ताए ।। १७

सीतल दृष्टि मासूक की, जासों होइए सनकूल ।
होए आसिक इन सरूप की, पाव पल न सके भूल ।। १८

नैंन देखें नैन रूहके, तिनसों लेवे रंग रस ।
तब आवें दिलमें मासूक, सो दिल मोमन अरस परस ।। १९

रूह देखे हक नैन को, नेत्र में गुन अनेक ।
सो गुन गिनतीमें न आवहीं, और केहेने को नैन एक ।। २०

कै गुन देखे छबि फबमें, कै गुन माहें सलूक ।
गुन गिनते इन नैनोंके, हा हा अजूं न होए दिल भूक ।। २१

मेरी रूह नैनकी पुतली, तिन नैन पुतली के नैन ।
मासूक राखूं तिन बीचमें, तो पाउं अरस सुख चैन ।। २२

प्रेम प्रीत रस इसक, सब नैनों में देखाई देत ।
ए रस जानें रूह अरसकी, जो भर भर प्याले लेत ।। २३

देख देख जो देखिए, तो अधिक अधिक अधिक ।
नैंन देखें सुख पाइए, जानों सब अंगों इसक ।। २४

ए नैन देख मासूक के, आसिक के सब अंग ।
सुख सीतल यों चुभत, सब अंग बढ़त रस रंग ।। २५

कै गुन बड़े नैनके, और कै गुन नैन टेढ़ाए ।
कै गुन तेज तारन के, कै गुन हैं चंचलाए ।। २६

कै गुन हैं तिरछाई में, कै गुन पापन पल ।
कै गुन सीतल कै मेहेरमें, कै तीखे गुन नेहेचल ।। २७

कै गुन सोभा सुन्दर, कै गुन प्रेम इसक ।
कै गुन नैनों रंग में, कै गुन रस नैन हक ॥ २८

कै गुन नैनों के नूरमें, कै गुन नैनों के हेत ।
कै गुन तीखे कै सीलमें, गुन मीठे कै सुख देत ॥ २९

यों कै गुन केते कहूँ, गुन कों न आवे पार ।
ए भूल देखो अपनी, ए सोभा गुन गिनूं माहें सुमार ॥ ३०

कै गुन नेत्र सुभान के, सो क्यों कहूँ चतुराई इन ।
इत जुबां बल न पोहोंचही, हिस्सा कोटमा एक गुन ॥ ३१

प्यारे मेरे प्रान के, नैंना सुख सागर सलोनें ।
रहे ना सकों बिना रंगीले, जो कसूंबड़ी उजलक में ॥ ३२

जब देखो सीतल नजरों, सब ठरत आसिक के अंग ।
सब सुख उपजे अरस में, हक मासूक के संग ॥ ३३

में नैनों देखूं नैन हकके, हुई चारों पुतली तेज पुंज ।
जब नैन मिलें नैंन नैन में, नूरै नूर हुआ एक गंज ॥ ३४

हक देखें पुतली अपनी, देखूं अपनी पुतलियां ।
मैं हक देखूं हक देखें मुझे, यों दोऊ अरस परस भैयाँ ॥ ३५

हक देखें मेरे नैंन में, पुतली जो अपनी ।
मैं अपनी देखूं हक नैन में, यों दोऊ जुगले जुगल बनी ॥ ३६

अति गौर पापन नैन की, पल बालत देखत सरम ।
गुन गरभित मेहेरें पाइए, रुह हुकमें देखे ए मरम ॥ ३७

स्यांम बंके भौंह नैन पर, रंग गौर जुड़ें दोऊ आए ।
निपट तीखी अनियां नेत्र की, मारे आसिकों बान फिराए ॥ ३८

जब खैंचत नैनां जोड़ के, तब दोऊ बान छाती छेदत ।
अंग आसिक के फूटके, वार पार निकसत ॥ ३९

दमानक[1] ज्यों कहूँ कहूँ, यों पीछली देत गिराए ।
ए चोट आसिक जानही, जो होए अरस अरवाए ॥ ४०

भौंह बंके नैन कमान ज्यों, भाल बंकी सामी तीन बल ।
बान टेढ़े मारत खैंच मरोर के, छाती छेद न गया निकल ॥ ४१

तीर कह्या तीन अँकुड़ा, छाती छेद न गया चल ।
रह्या सीने बीच आसिक के, हुआ काढ़ना रूहों मुस्किल ॥ ४२

केहेर कह्या तीर *त्रिगुड़ा, रह्या सीने बीच भाल ।
रोई रात दिन आसिक, रोतेही बदल्या हाल ॥ ४३

अरस बका तीर त्रिगुड़ा, रह्या अरस रूहों हिरदे साल ।
ना *पांच तत्व तीर *त्रिगुन, ए नैन बान तूरजमाल ॥ ४४

ए बलवान सेहेज के, जो कदी मारें दिलमें ले ।
न जानों तिन आसिक का, कौन हाल होवे ए ॥ ४५

ए बान टेढ़े अव्वल के, और टेढ़े लिए चढ़ाए ।
खैंच टेढ़े मारें मरोर के, सो क्यों न आसिक टेढ़ाए ॥ ४६

कहें गुन महामत मोमनों, नैनां रस भरे मासूक के ।
अपार गुन गिनती मिने, क्यों कर आवें ए ॥ ४७

प्रकरण ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ ८०० ॥

### हक मेहेबूब की नासिका अंग

गौर निरमल नासिका, सोभा न आवे माहें सुमार ।
आसिक जाने मासूक की, जो खुले होंए पट द्वार ॥ १

निपट सोभा नासिका, सोहे तैसाही तिलक ।
और नहीं इनका निमूना, ए सरुप अरस हक ॥ २

कै खुसबोए अरस की, लेवत है नासिका ।
दोऊ नेत्रों के बीच में, सोभा क्यों कहूँ सुन्दरता ॥ ३

---

* १. बन्दूक ।

रंग उजलाई अरस की, झांई झलके कसूंब बका ।
देत सलूकी कै सुख, रूह नैन को नासिका ।। ४

ए छबि फब कोई भांत की, निलाट तिलक बीच नैन ।
ए आसिक नासिका देख के, पावत हैं सुख चैन ।। ५

भौंहें भासत भली भांतसों, पापन पलकों पर ।
ए नैन सोभा नूर जहूर, ए जांने मोमन अंतर ।। ६

अरस फूल सुगंध अनगिनती, हिसाब नहीं कहूँ कोए ।
रसांग चीज सब अरस की, कोई जरा न विना खुसबोए ।। ७

सो खुसबोए सब लेत है, रस प्रेमल[1] सुगंध सार ।
सब भोग विवेकें लेत है, हक नासिका भोगतार ।। ८

ए को जानें रस सबन के, को जानें भोग सबन ।
ए सब भोगी हक नासिका, हक सुख लेत देत रूहन ।। ९

चित्त चाह्या नासिका भूखन, खुसबोए लेत चित्त चाहे ।
चित्त चाही जोत सोभा धरे, सुख आसिक अंग न समाए ।। १०

हक सुख खुसबोए के, कै नए नए भोग लेत ।
ले ले हक विवेक सों, नए नए रूहों सुख देत ।। ११

कैं कै लाड़ रूहन के, लेत देत अरस परस ।
नित नए सुख देत सनेह सों, जानों नया दूजा लिया अरस ।। १२

नित लेत प्रेम सुख अरस में, जानों आज लिया नया भोग ।
यों हक देत जो हम को, नित नए प्रेम संजोग ।। १३

जिमी जल तेज वाए बन, जो कछू बीच आसमान ।
सब खुसबोए नूर में, सुख देत रूहों सुभान ।। १४

'महामत' कहें हक नासिका, याकी सोभा न आवे सुमार ।
कछू बड़ी रूह मोमन जानहीं, जाको निस दिन एही विचार ।। १५

।। प्रकरण ।। १५ ।। चौपाई ।। ८१५ ।।

---

१. अनुरागमयी ।

## हक मासूक की जुबान की सिफत

जाको नामें रसना, होसी कैसी मीठी हक ।
जिनकी जैसी बुजरगी, जुबां होत है तिन माफक ॥ १

केहेनी में न आवही, बिचार देखो मोमन ।
होए जागृत अरवा अरस की, कछू सो देखे रसना रोसन ॥ २

अति मीठी जुबां मासूक की, देत आसिक को सुख ।
कछू अरस सहूरें सुख लीजिए, पर कह्यो न जाए या मुख ॥ ३

ए याद किएँ हक रसना, आवत है इसक ।
जिन इसकें अरस देखिए, सुख पाइए हक मुतलक ॥ ४

और सुख हक दिल में, जाहेर होत रसनाए ।
एह सिफत किन विध कहूँ, जो रहत हक मुख माहें ॥ ५

बोहोत सुख तब पाइए, जब कहें रसना मुख नैन ।
सब पूरन सुख तब पाइए, जब कहें रसना मुख बैन ॥ ६

हर अंग सुख दें हक के, ऊपर जाहेर सुख जुबान ।
बड़ा सुख रूहों होत है, जब हक मुख करें बयान ॥ ७

ए बेवरा पाइए बीच खेल के, कम ज्यादा अरस में नाहें ।
समान अंग सब हक के, ए विचार नहीं अरस माहें ॥ ८

बोहोत बातें सुख अरस के, सो पाइएत हैं इत ।
सुख उमत को अरस में, ए जानती न थी निसबत ॥ ९

सुख जानें न हक पातसाही, सुख जानें ना हक इसक ।
सुख जानें ना रूहें लाड़ के, तो इत इलम दिया बेसक ॥ १०

तो हक अंग सुख खेल में, बेवरा करत हुकम ।
अजूं न आवे नजरों सरूप, ना तो क्यों बरनवाए खसम ॥ ११

हकें हम रूहों वास्ते, अनेक वचन कहे मुख ।
सो रूहें जागे हक इसक का, आपन लेसी अरस में सुख ॥ १२

सुख अनेक दिए हक रसनाएँ, और सुख अलेखें अनेक ।
सो जागे रूहें सुख पावहीं, ताथें रसना सुख बिसेक ॥ १३
हकें खेल देखाया याही वास्ते, सुख देखावने अपने अंग ।
सुख लेसी बड़ा इसक का, रूहें ले विरहा मिलसी संग ॥ १४
दाएम इस्क सबों अपना, रूहें केहेती अपनी जुबान ।
याही रसना बल वास्ते, खेल देखाया सुभान ॥ १५
एक हुकम जुबां के सब हुआ, तिन हुकमें चले कै हुकम ।
सो जेता सबद दुनीय में, ए सब हम वास्ते किया खसम ॥ १६
हक जुबान की बुजरगी, किया खेल में बड़ा विस्तार ।
सो सुख लेसी हम अरस में, जिनको नहीं सुमार ॥ १७
जेती चीज जरा कोई खेल में, सो हक हुकमें हलत चलत ।
सो सुख दिए हक रसनाएँ, हम केती करें सिफत ॥ १८
कलाम अल्ला या हदीसें, सास्त्र पुरान या वेद ।
ए सब सुख लेवें मोमन, हक रसना के भेद ॥ १९
खेल किया याही वास्ते, हकें सुख दिए अपनी जुबान ।
सो मेरी इन जुबान सों, क्यों कर होए बयान ॥ २०
ए बयान होसी बीच अरस के, हम रूहें मिल जासी जब ।
हक जुबान का बेवरा, हम लेसी अरस में तब ॥ २१
बड़े बयान बातैं कै, जो हक जुबांएँ दिए इत ।
इत बेवरा कर जाए अरस में, लेसी लजत बीच खिलवत ॥ २२
ए बारीक सुख अरस के, हक जुबांएँ दई न्यामत ।
और न कोई पावही, विना हक निसबत ॥ २३
हक रूहों को बुलाए के, नजीक बैठाई ले ।
ए जाहेर करत है रसना, ए जो अंतर का सनेह ॥ २४
मीठी जुबां बोलत मासूक, रूहें प्यारी आसिक सों ।
ऐसा मीठा अरस खावंद, जाके बोल चुभें हिरदे मों ॥ २५

प्यारी रसना सों अनेक, प्यारी बातें करें बनाए ।
प्यारे प्यारी रूह बीच में, ए गुन जुबां किने न गिनाए ॥ २६

मीठी जुबां मीठे वचन, मीठा हक मीठे रूहों प्यार ।
मीठी रूह पावे मीठे अरस सुख, जो मीठा करे विचार ॥ २७

प्यारी खिलवत में प्यारी रसना, होत वचन कदीम[1] ।
सो इन जुबां प्यार क्यों कहूँ, जो हक हादी रूहें हलीम[2] ॥ २८

सब अंग जिनके इस्क के, तिनकी कैसी होसी जुबान ।
अरस रूहें जानें जागृत, जो रहें सदा कदमों सुभान ॥ २९

मेरी रूह देखे सहूर कर, जाके नख सिख लग इस्क ।
जुबां कैसी तिन होएसी, और बानी बका अरस हक ॥ ३०

हक रसना बोले जो अरस में, जिन किन को वचन ।
सो सब कारन जानियो, वास्ते सुख रूहन ॥ ३१

खेलावत हक बोलाए के, या पंखी या पसुअन ।
सो सब रूहों वास्ते, सब को एह कारन ॥ ३२

खेलते बोलते नाचते, या देखें खेल लराए ।
सो सब वास्ते रूहन के, कै विध खेल कराए ॥ ३३

कहूँ केती बातें हक रसना, निपट बड़ो विस्तार ।
क्यों कहूँ जो किए रूहोंसों, हक जुबां के प्यार ॥ ३४

हक रसना गुन खेलमें, पाव हरफ को होए न सुमार ।
तो जो गुन रसना अरसमें, ताको क्यों कर पाइए पार ॥ ३५

ए बेवरा जानें रूहें अरसकी, जाको हुआ हक दीदार[3] ।
जाए सिफाएत[4] हुई महंमदकी, याको जाने सोई विचार ॥ ३६

हक रसना गुन जानें रूहें, जाको निस दिन एही ध्यान ।
खेल कबूतर क्या जानहीं, हक रसना के बयान ॥ ३७

---

१. पुराना । २. एकत्व, गंभीर । ३. दर्शन । ४. सिफारिश ।

जो कछू बोलें हक रसना, सो सब वास्ते रूहन ।
और जरा हक दिलमें नहीं, ए जानें दिल अरस मोमन ॥ ३८

जो कछू बोलें हक जुबांए, सो सब रूहों के हेत ।
अरस बोल खेल या चलन, या जो कछू लेत देत ॥ ३९

हुकम कहावे मेरी रूहपे, जो हुई मुझमें बातक ।
सो कहूँ अरस रूहों को, जो दिए सुख रसना हक ॥ ४०

हक रसना के सुख जो, आवें ना गिनती माहें ।
सुख अलेखे अपार, क्यों कहे जांए जुबांए ॥ ४१

मीठी मीठी माहें मीठी मीठी, रस रसीली रसना बान ।
सुख सुखके माहें कै सुख, सुख क्यों कहूँ रसना सुभान ॥ ४२

मोहे इलम दिया आए अपना, तासों प्यार दिया मुझको ।
चौदे तबक काएम किए, केहेलाए मेरी रसना सों ॥ ४३

एक नुकते इलम अपने, दुनी बका कराई मुझसें ।
तो गंज अंबार[1] जो सागर, कैसे होसी हक दिलमें ॥ ४४

जो कोई सबद बीच दुनियां, सो उठे हुकम के जोर ।
ए गुझ सुख हक रसना, कछू मोमन जानें मरोर ॥ ४५

बका करी जो दुनियां, दिया सब को हक इलम ।
सो इलम सिफत करे हमारी, हुकमें किया वास्ते हम ॥ ४६

ए जो बका किए हम वास्ते, जाने काएम होए सिफत ।
सिफत फना की ना रहे, हुकमें हम को दई न्यामत ॥ ४७

मेहेर करी हक रसनाएँ, सो किन विध कहूँ बिस्तार ।
बका सबद जो उचरे, सो देने हम को सुख अपार ॥ ४८

सब के हक हमको किए, हक रसनाएँ बीच बका ।
ए सुख इन मुख क्यों कहूँ, जो दिया हादी रूहोंको भिस्तका ॥ ४९

---

१. ढेर ।

अरस के सुख तो हमेसा, घट बढ़ इत नाहें ।
पर ए नया सुख नई साहेबी, काएम कर दिया भिस्त माहें ॥ ५०

अरस सुख और भिस्तका सुख, ए खेल में दिए सुख दोए ।
इन दोऊ में दिए सुख खेलके, ए हक रसना बिना क्यों होए ॥ ५१

दई भिस्त चौदे तबक को, सबों पूरा इसक इलम ।
सो सब सेवें हम को, सबों बल रसना खसम ॥ ५२

पेहेलें प्यार दिया मुझे इलम सों, मुझपे इलम दिवाए ।
सब दुनियां को आरफ कर, मुझ आगे सबपें कथाए ॥ ५३

ए सब हक रसनाएँ किया, इलम प्यारा लग्या सबन ।
सो इलमें आरफ[1] पूजें मोहे, असल अरस में हमारे तन ॥ ५४

प्यार लग्या मोहे जिनसों, हकें बड़ा किया सोए ।
सो सबपें केहेलाए हुकमें, सब विध सुख दिया मोहे ॥ ५५

ए सुध नहीं अजूं मोमनों, जो सुख दिए हक रसनाएँ ।
हकें सुख दिया आप माफक, सो कह्या जाए न इन जुबांए ॥ ५६

कर काएम हक रसना रस, सचराचर दिया पोहोंचाए ।
यों रसना के सुख हम को, के विध दिए बनाए ॥ ५७

सबों इलम पढ़ाए आलम किए, जिनसों था मेरा प्यार ।
सो सुख हक रसनाएँ दिया, करके बका विस्तार ॥ ५८

ए काएम सुख हक तरफके, हक इलम इस्क हुकम ।
सुख लाड़ लज्जत हुज्जत के, दिए काएम मेरे खसम ॥ ५९

सुध न हुती हक साहेबी, ना सुध इलम वाहेदत ।
सुध ना हुज्जत निसबत, सो सुध दई जुबां खिलवत ॥ ६०

हक बका सुख के विध, अरस में नहीं सुमार ।
बिन बूझे सुख हम लेते, हुते न खबरदार ॥ ६१

---

१. ज्ञानी ।

सो *आठों भिस्त काएम कर, दिए अरस पट खोल मारफत ।
तिनमें पुजाए सुख दिए, कर जाहेर हक निसबत ॥ ६२

हक रसना सुख दिए देत हैं, और सुख देंगे आगूं जे ।
सो इतथें सब हम देखत, सुख केते कहूँ रसना के ॥ ६३

हम रसनाएँ ऐसी सुध दई, हुआ है होसी बका माहें ।
यों खोली अंतर रूह नजर, ऐसी हुई ना रूहोंसों कांहें ॥ ६४

कहूँ केते सुख हक रसना, जैसे आप अलेखे अपार ।
सो सब सुख बकामें रूहों, जाको होए न काहूं सुमार ॥ ६५

ए नेक कह्या बीच खेल के, हक रसना के गुन ।
ए सब बातें मिल करसी, आगूं हक बका वतन ॥ ६६

सुनो महामत रसना रस, और सुनाइयो मोमन ।
जो हुकम कहे तोहे हेत कर, हक रसना के गुन ॥ ६७

॥ प्रकरण ॥ १६ ॥ चौपाई ॥ ८८२ ॥

## हक मासूकके बस्तर

देत निमूना बीच नासूत[1], जानों क्योंए आवे माहें दिल ।
आगूं मेला बड़ा होएसी, लेसी मोमन ए विध मिल ॥ १

एक देऊँ निमूना दुनीका, जो पैदा दुनी में होत ।
धागा होत है रूई का, और जवेरों जोत ॥ २

धागा असल रूई तांतसा, जवेर जैसी जोत नंग ।
हुकमें बनें ताके बस्तर, होए कैसा पेहेनावा हक अंग ॥ ३

पैदा निमूना दुनीय का, अरस जिमिएँ नहीं पोहोंचत ।
दुनी निमूना हक को, ए कैसी निसबत ॥ ४

जामा कहूँ मैं सूत का, के कहूँ कपड़ा रेसम ।
के कहूँ हेम नंग जवेर का, के कहूँ अव्वल पसम ॥ ५

---

१. नश्वर ।

ए पांचो उत पोहोंचें नहीं, जो कर देखो सहूर ।
क्यों पोहोंचे फना जड़ निमूना, ए हक बका चेतन नूर ।। ६

जो कहूँ बका जिमीय के, जवेर या बस्तर ।
सो भी रूह के अंग को, सोभा कहिए क्यों कर ।। ७

जो चीज पैदा जिमी की, सो दूसरी कही जात ।
चीज दूसरी वाहेदत में, कैसे कर समात ।। ८

हक इलमें चुप न कर सकों, और सबद में न आवे सिफत ।
तार्थे हुकम केहेत है, सुनो जामें की जुगत ।। ९

पर कछुक निमूने विना, नजरों न आवे तफावत ।
तो चुप से तो कछू कह्या भला, रूह कछू पावे लज्जत ।। १०

ए दिल में ले देखिए, अरस धागा और नंग ।
जोत न माए आकास में, जो सोभें पेहेने हक अंग ।। ११

बस्तर नहीं जो पेहेर उतारिए, ए हक अंग नूर रोसन ।
दिल चाह्या रंग जोत पोत, अरस अंग बस्तर भूखन ।। १२

ए जो कही जुगत जामे की, हक अंग का रोसन ।
और भांत सुख आसिकों, पेहेने तन बस्तर भूखन ।। १३

नीला रंग इजार का, मीहीं चूड़ी घूंटी ऊपर ।
तिन पर झलके दावन, हरी झांई आवत नजर ।। १४

रंग नंग बूटी कछुए, लगत नहीं हाथ को ।
ए सुख बारीक अरस के, इन अंग का नूर अरस मों ।। १५

जोत करे दिल चाहती, जैसी नरमाई अंग चाहे ।
सोभा धरे दिल चाहती, जुबां खुसबोए कही न जाए ।। १६

चोली अंग को लग रही, सेत जामा अंग गौर ।
चीन[1] से कुसादी[2] दावन, ताको क्योंकर कहूँ जहूर ।। १७

---

१. चुन्नटे । २. खुली ।

पेहेनावा अरस अजीम का, क्यों कहिए माहें सुपन ।
कंकरी एक अरस की, उड़ावे चौदे भवन ॥ १८

बस्तरों में कै रंग हैं, सो हाथ को लगत नाहें ।
और भी हाथ लगें नहीं, जो जवेर बस्तरों माहें ॥ १९

रंग रेसम जवेर जो देखत, सो सब मसाला नंग ।
बस्तर भूखन सब नंगों के, माहें अनेक देखावें रंग ॥ २०

कै बेली किनार में, और कै विध बेली चीन ।
बीच बूटी छापे कै नकस, इन जल की जाने जल मीन ॥ २१

रंग कंचन कमर कस्या, पटुका जो पूरन ।
केते रंग इनमें कहूँ, जानों एही सबे भूखन ॥ २२

सो रंग सारे जवेरन के, कै रंग छेड़े किनार ।
हर धागे रंग कै विध, नहीं रंग जोत सुमार ॥ २३

दोऊ बगलों केवड़े, किन विध कहूँ रोसन ।
कै रंग नंग माहें झलकें, जामा क्यों कहूँ अरस तन ॥ २४

ए सोभा देख सुख उपजे, हक बस्तर या भूखन ।
और इनकी मैं क्यों कहूँ, जो रहत ऊपर इन तन ॥ २५

गिरवान[1] दोऊ देखत, अति सुन्दर अनूपम ।
मुख आगे मासूक के, निरखत अंग आतम ॥ २६

बातें करें सलोनियां, मासूक सलोंने मुख ।
नैन सलोंने रस भरे, कै देत आसिकों सुख ॥ २७

दोऊ बेल दोऊ बगलों पर, जानों कुंदन नंग जड़तर ।
नीले पीले लाल जवेर, सुख पांउं देख नजर ॥ २८

दोऊ बांहें चूड़ी अति सुन्दर, मोहीं मोहीं से लग मोहोरी ।
कै रंग नंग बूटियां, जवेर जवेर बीच जरी ॥ २९

---

१. कंधे पर बंधी डोरी, (तनी) ।

मोहोरी जड़ाव फूल बने, जानों के एही नंग भूखन ।
बेल जामें जो जुगतें, सबथें सोभा अति घन ।। ३०
किन विध जामा लग रह्या, ए जो अंग का जहूर ।
कै नकस बूटी मोहीं बेलियां, रूह कर देखे अरस सहूर ।। ३१
पार न जामें सलूकी, ना कछू नरमाई पार ।
इन मुख गुन केते कहूँ, खूबी तेज न सुगंध सुमार ।। ३२
इन ऊपर जो भूखन, नेक इनकी कहूँ बिगत ।
क्यों नूर कहूँ अरस अंग का, पर तो भी कहूँ नेक मत ।। ३३
धागे बराबर नकस, झीने बारीक अतंत ।
ए फूल बेल तो आवें नजरों, जो अंग अंग खुलें वाहेदत ।। ३४
ए नकस सो जानहीं, नैनों देखें जो होए निसबत ।
ए देखें याद आवही, पेहेले बातें हुई खिलवत ।। ३५
हक पाग जो निरखते, होए अचरज माहें सहूर ।
ए याद किएँ जीव ना उड़े, देख नूरजमाल मुख नूर ।। ३६
हुकमें पाव पल में, पाग कै कोट होत ।
रंग नंग फूल कै नकस, दिल चाहो धरे जोत ।। ३७
हक पाग बनावें हाथ अपने, अरस खावंद दिल दे ।
ए देखें रूह सुख पावत, जब हाथ गौर पेच लें ।। ३८
आसिक चाहे में देखों, हक यों पेच लेत हाथ माहें ।
कै विध फेरें पेच को, कोई इन सुख निमूना नाहें ।। ३९
जो रंग चाहिए जिन मिसलें, सो नंग धरत तित जोत ।
फूल नकस कै कटाव, ए कछू अचरज पाग उद्योत ।। ४०
मध्य चौक जित चाहिए, ऊपर चाहिए चौकड़ी जित ।
बेल पात सब रंग नंग, सोई बनी पाग जुगत ।। ४१
तार्थें हक लेत पेच हाथ में, कोमल अंगुरियों ।
गौर अंगुरी पतली, मीठी सोभें मुंदरियों ।। ४२

पोहोंचे देखूं के अंगुरी, नरमाई देखूं के गौर ।
मुंदरी देखूं के हथेलियां, लीकें देखूं के नख नूर ॥ ४३

चलवन करते हाथ की, नैनों देखत सब सलूक ।
यों देखत मासूक को, अजूं होत न आसिक टूक ॥ ४४

महामत निमूना ख्वाब का, क्यों दीजे हक बस्तर ।
हक नूर न आवे सबद में, पर रह्या न जाए क्योंए कर ॥ ४५

॥ प्रकरण ॥ १७ ॥ चौपाई ॥ ९२७ ॥

## हक[1] मेहेबूब[2] के भूखन

भूखन सबदातीत के, क्यों इत बरनन होए ।
सोभा अरस सरूप की, इत कबहूँ न बोल्या कोए ॥ १

तो क्यों माने बीच दुनियां, ए जो हक जात भूखन ।
रैन अंधेरी क्यों रहे, जब जाहेर हुआ बका दिन ॥ २

अनेक गुन नंग इनमें, रूह दिल चाह्या जब ।
जिन जैसा दिल उपजे, सो होत आगूं से सब ॥ ३

जेती अरवाहें अरस में, ताए मन चाह्या सब होए ।
दिल चितवन भी पीछे करे, आगे बनि आवे सोए ॥ ४

जैसा मीठा लगे मन को, भूखन तैसा ही बोलत ।
गरम ठंढा सब अंग को, चित्त चाह्या लगत ॥ ५

हक बरनन करत हों, कहूँ नया किया सिनगार ।
ए सबद पोहोंचें नहीं, आवत न माहें सुमार ॥ ६

बस्तर और भूखन, ए हक अंग का नूर ।
सो निमख न जुदा होवही, ज्यों सूरज संग जहूर ॥ ७

इन जिमी आसिक क्यों रहे, विना किए अपनों आहार ।
खाना पीना एही आसिकों, अरस रूहों एही आधार ॥ ८

१. सत्य । २. प्यारा ।

सोई कलंगी सोई दुगदुगी, सोभे पाग ऊपर ।
केहे केहे मुख एता कहे, जोत भरी जिमी अम्बर ॥ ९
कैं विध के सुख जोत में, कै सुख सुन्दरता ।
कै सुख तरह सलूकियां, सिफत पोहोंचे न हक बका ॥ १०
मोतिन की जोत क्यों कहूँ, इन जुबां के बल ।
सोभा लेत दोऊ श्रवनों, अति सुन्दर निरमल ॥ ११
मोती जोत अचरज, और अति उत्तम दोऊ लाल ।
जो रूह देखे नैन भर, तो अलबत[1] बदले हाल ॥ १२
कहे जुबां जोत अकास लों, जोतें सोभा कै करोर ।
सो बोल न सके जुबां बेवरा, इन अकल के जोर ॥ १३
ए तो मोती लाल कुंदन, वाहेदत खावंद श्रवन ।
आकास जिमी भरे जोत सों, तो कहा अचरज है इन ॥ १४
चोली अंग सों लग रही, ज्यों अंग नूर जहूर ।
ए लज्जत दिल तो आवही, जो होवे अरस सहूर ॥ १५
एक देख्या हार हीरन का, कै कोट सूरज उजास ।
इन उजास तेज बड़ा फरक, ए सुख सीतल जोत मिठास ॥ १६
हार दूजा मानिक का, जानों उनथें अति सोभाए ।
जब लालक इनकी देखिए, जानों और सबे ढँपाए ॥ १७
तीसरा हार अंग देखिया, अति उज्जल जोत मोतिन ।
जानों सबथें ऊपर, एही है रोसन ॥ १८
जब हार चौथा देखिए, जानों नीलक अति उजास[2] ।
जानों के सरस सबन थें, ए देत खुसाली खास ॥ १९
हार लसनियां[3] पाँचमा, कछू ए सुख सोभा और ।
जानों जोत जिमी आकास में, भराए रही सब ठौर ॥ २०

१. अवश्य । २. उजाला । ३. एक कीमती पत्थर ।

जब नंग देखूं नीलवी[1], जानों एही सुख सागर ।
जोत मीठी रंग सुन्दर, जानों के सब ऊपर ॥ २१

हारों बीच जो दुगदुगी, माहें नव रतन ।
नव जोत नव रंग की, जानों सब ऊपर ए भूखन ॥ २२

ए जोत सब जुदी जुदी, देखिए माहें आसमान ।
सब जोत सों लड़त हैं, कोई सके न काहूँ भान ॥ २३

भूखन सामी न देखिए, जो देख्या चाहे जंग ।
पेहेले देखिए आकास को, तो जुध करत नंग सों नंग ॥ २४

जो कदी पेहेले हार देखिए, तो वाही नजर भरे जोत ।
या विन कछू न देखिए, सब में एही उद्योत ॥ २५

नेक कहूँ बाजू बंध की, जोत न जामें सुमार ।
तो जो नंग बाजू बंध के, सो क्यों आवें माहें विचार ॥ २६

नंग पटली दस रंग की, माहें कै विध के नकस ।
ए सलूकी बेल बूटियां, एक दूजे पें सरस ॥ २७

लटके बाजू बंध फुंदन, झलकत झाबे अपार ।
कै नंग रंग एक झाबे[2] में, सो एक एक बाजू चार चार ॥ २८

तामें नंग कहूँ केते जरी, तिन फुंदन में कै रंग ।
रंग रंग में कै किरने, किरन किरन कै तरंग ॥ २९

बांहें हलते फुँदन लटके, हींचे फुँदन जोत प्रकास ।
बांहें हलते ऐसा देखिए, मानों हींचत नूर आकास ॥ ३०

जो पटलियां पोहोंची मिने, सात पटली[3] सात रंग ।
सो सातो नंग इन भांत के, मानों चढ़ता आकासे रंग ॥ ३१

स्याम सेत नीली पीली, जांबू आसमानी लाल ।
हा हा करते पोहोंची बरनन, अजूं होस लिए खड़ा हाल ॥ ३२

---

१. नीला पत्थर । २. गुच्छा । ३. पट्टी ।

जो एक अंग नीके निरखिए, तो रोम रोम छेदत भाल ।
जो लों देखों उपली नजरों, तो लों बदलत नाहीं हाल ।। ३३

कड़ियां कांड़ों[1] सोभित, तिनकी और जुगत ।
बल ल्याए कै दोरी नंग, रूह निरखें पाइए बिगत ।। ३४

ए नजरों नंग तो आवहीं, जो आवे निसबत प्यार ।
ना तो भूखन हाथ हक के, दिल करसी कहा विचार ।। ३५

जुदे जुदे जवेरन की, दस विध की मुंदरी ।
दोऊ अंगूठों अंगूठिएँ, और मुंदरी आठ अंगुरी ।। ३६

मानिक मोती नीलवी, पाच पांने पुखराज ।
लसनिएँ और मनी, रहे कुंदन माहें विराज ।। ३७

ए दसे अंगुरी मुंदरी, नूर नख अंगुरी पतलियां ।
पोहोंचे हथेली उज्जल लीकें, प्रेम पूरन रस भरियाँ ।। ३८

अब चरनों चारों भूखन, चारों में जुदे जुदे रंग ।
जानों के रस जवेर के, जैसे जोत अरस के नंग ।। ३९

दस रंग नंग माहें झांझरी, ए बानी जुदी झनकार ।
ए सोभा अति अनूपम, अरस के अंग सिनगार ।। ४०

यामें बेल पात नकस कै, कै करकरी फूल कांगरी ।
बानी सोभा सुख देत हैं, घाट अचरज ए झांझरी ।। ४१

और बेली कै नकस, मीहीं मीहीं जुगत जिनस[2] ।
जब नीके कर देखिए, जानों सब में एह सरस ।। ४२

जो सोभावत चरन को, सो केते कहूँ गुन इन ।
कोई घायल अरवा जानही, जो होसी अरस के तन ।। ४३

भूखन अंग अरस के, जानसी कोई आसिक ।
अनेक सुख गुन गरभित, ए अरस सूरत अंग हक ।। ४४

---

१. कड़ा । २. सामग्री ।

दोऊ मिल मधुरे बोलत, लेऊँ खुसबोए के सुनों बान ।
सोभा कहूँ के नरमाई, ए भूखन चरन सुभान ।। ४५
बान मधुरी घूंघरी, ए जुदे रूप रंग रस ।
पांच रंग नंग इनमें, जानों उनमें एह सरस ।। ४६
कै करड़े[1] कै बूटियां, नकस नाके रंग और ।
ए सोभा कहूँ मैं किन मुख, जाको इन चरनों है ठौर ।। ४७
मानो लाल कड़ी मानिक की, माहें कै रंग बेल अनेक ।
सिर पुतलियों लग रहीं, ए सोभा अति विसेक ।। ४८
इन कड़ी के रूप रंग, मीहीं बेल गिनी न जाए ।
मानों पुतली वाही की कांगरी, ए जुगत अति सोभाए ।। ४९
अब कहूँ रंग कांबीय[2] के, पेहेरीं जंजीर ज्यों जुगत ।
जुदे जुदे रंग हर कड़ी, नैना देख न होंए त्रिपत ।। ५०
अनेक कड़ियां जंजीर में, गिनती न आवे ताए ।
कै रंग नंग एक कड़ीय में, बेल जंजीर गिनी न जाए ।। ५१
ए विचार कीजे जब दिलसें, रूह की खोल नजर ।
कड़ी कड़ी के रंग देखिए, गिनते होए जाए फजर ।। ५२
ऊपर खजूरा कड़ियन का, और कै बेली कड़ियों माहें ।
तिन बेलों रंग बेली कड़ियों, ए खूबी क्यों कर कहे जुबांए ।। ५३
तेज जोत सोभा सलूकी, रूह केताक देखे ए ।
खुसबोए नरम स्वर माधुरी, और कै सुख गुझ इनके ।। ५४
पाँच रंग नंग हर कड़ी, कै बेल फूल पात ।
कै कटाव कै बूटियां, इन जुबां गिने न जात ।। ५५
हर कड़ी कै करकरी, सो देखत ज्यों जड़ाव ।
नंग जोत नजरों आवहीं, कै नकस कै कटाव ।। ५६

---

१. उभारदार । २. पैर का आभूषण ।

सखती न देवें चरन को, ना बोझ देवें पाए ।
गुन सुख एक भूखन, इन मुख गिने न जाए ।। ५७
ए देखत अचरज भूखन, बैठे अंग कों लाग ।
ए सोभा कही न जावहीं, कोई देखे जिन सिर भाग ।। ५८
सरूप पुतलियों मोतियों, ऊपर हर जंजीर ।
सोभित सनमुख चेतन, क्यों कहूँ इन मुख नीर ।। ५९
हक चाही बानी बोलत, हक चाही जोत धरत ।
खुसबोए नरमाई हक चाही, हक चाह्या सब करत ।। ६०
जैसे सरूप रूहन के, चरनों लगे गिरदवाए ।
त्यों पुतलियां मोतिन की, कदमों रही लपटाए ।। ६१
सब समूह भूखन जब देखिए, अदभुत सोभा लेत ।
जुबां खूबी क्यों कहे सके, हक दिल चाही सोभा देत ।। ६२
हाथ दीजे भूखन पर, सो हाथों लगत नांहें ।
पेहेने हमेसा देखिए, ऐसे कै गुन हैं इन माहें ।। ६३
अरस तन हाथ अरस तने, एक दूजे परस होए ।
हाथ वस्तर या भूखन, दूजा अरस तने लगे न कोए ।। ६४
और हाथ कोई है नहीं, कह्या वास्ते भूखन के ।
और वस्तर ना कछू भूखन, जो इत निमूना लगे ।। ६५
है एक हमेसा वाहेदत, दूजा जरा न काहूँ कित ।
ए देखत सो भी कछुए नहीं, और कछू ना नजरों आवत ।। ६६
वाहेदत का वाहेदत में, वस्तर भूखन पेहेनत ।
ए नूर है इन अंग का, ए सुंन ज्यों ना नासत ।। ६७
मोहीं बातें अरस सुखकी, सो जानें अरस अरवाए ।
इन जिमी सो जानहीं, जिन मोमन कलेजे घाए ।। ६८
इन जिमी आसक क्यों रहे, वह छिन में डारत मार ।
तो लों रहे सहूर में, जो लों रखे राखनहार ।। ६९

एही काम आसिकन के, फेर फेर करे बरनन ।
विध विध सुख सरूप के, सुख लेवें सिनगार भिन भिन ॥ ७०

एही आहार आसिकन का, एही सोभा सिनगार ।
झीलें[1] सागर वाहेदत में, मेहेर सागर अपार ॥ ७१

महामत देखे बिवेकसों, हक बस्तर और भूखन ।
सब अंग सोभा अंगों की, ज्यों दिल रूह होंए रोसन ॥ ७२

॥ प्रकरण ॥ १८ ॥ चौपाई ॥ ६६६

## जोवन[2] जोस बीड़ी और मासूककी बड़ी छबि

फेर फेर पट खोले हुकमें, निसबत जान रूहन ।
हक मुख अंग इस्कके, ले देखिए अरस अंग तन ॥ १

हक बरनन जिमी सुपने, हुकमें कह्या नेक सोए ।
हक इस्क एक तरंग से, रूह निकस न सके कोए ॥ २

सुन्दर मुख मासूक का, और अंग सबे सुन्दर ।
सो क्यों छूटे आसिक से, जब चुभे हैड़े अन्दर ॥ ३

क्यों कहूँ मुख की सलूकी, और क्यों कहूँ सुन्दरता ।
ए आसिक जाने मासूक की, जिन घट लगे ए घा[3] ॥ ४

मुख चौक सलूकी क्यों कहूँ, कछू जानें रूह के नैन ।
ए सुख सोई जानही, जासों हक करें सामी सैन ॥ ५

सुख पाइए देखें हरवटी, मुख लांक लाल अधुर ।
दंत जुबां बीच तंबोल, मुख बोलत मीठा मधुर ॥ ६

मुख मूंदे अधुर बोलत, बानी प्रेम रसाल ।
आसिक को छबि चुभ रही, जानों हैड़े निस दिन भाल ॥ ७

सहूर कीजे हक अंग रंग, कै तरंग लाल उज्जल ।
देत गौर सुख सलूकी, सोभा क्यों कहूँ विना मिसल ॥ ८

---

१. स्नान करें । २. जवानी । ३. घाव ।

हक मुखथें बोलें वचन, स्वर मीठा निकसत ।
सो सुनत अरस रूहों को, दिल उपजत हक लजत ॥ ९

हक स्वर कैसा होएसी, और कैसी होसी मुख बान ।
मुख बातें क्यों कहूँ रसना, चाहे दिल सुनने सुभान ॥ १०

हक नेक नैन मरोरत, होत रूहों सुख अपार ।
तो बात कहें सुख हक के, सो क्यों कहूँ सुख सुमार ॥ ११

एक रोम रोम हक अंग के, सब सुखै के अम्बार ।
तो सुख सरूप नख सिखलों, रूहें कहा करें दिल विचार ॥ १२

ज्यों रोम सुपन के अंग को, त्यों रोम न अरस अँग पर ।
सब अंग इसक वास्ते, रोम रोम कहे यों कर ॥ १३

अरस पसु या जानवर, रोम होत तिन अंग ।
रोम न रुहों अंग पर, रूहें अंग जानों अरस नंग ॥ १४

जवेर पैदा जिमी से, यों अरस में पैदा न होत ।
ए खूबी हक जहूर की, सो लिए खड़ी सदा जोत ॥ १५

याको नंग निमूना न दीजिए, अरस रूहें वाहेदत ।
इने मिसाल न कोई लागही, जाकी हक हादी जात निसबत ॥ १६

जो देऊँ निमूना अरस का, तो रूहों लगत न कोई बात ।
रूहें अंग हादीय को, हादी अंग हक जात ॥ १७

तिरछा नेक जो मुसकत, तो मार डारत मुतलक ।
जो कदी सनमुख होएँ यों रूह सों, तो क्यों जीवे रूह आसिक ॥ १८

आसिक अटके सब अंगों, देख देख रूप सलूक ।
एक नेक अंग के सुख में, रूह हो जात टूक टूक ॥ १९

सब अंग देखे रस भरे, प्रेम के सुख पूरन ।
रूह सोई जाने जो देखही, ए पीवत रस मोमन ॥ २०

गौर गाल मुख उज्जल, माहें गेहेरी लालक[1] ले ।
ए जुबां मुख सोभा क्यों कहे, अरस अंग हक के ॥ २१
रूह आसिक जिन अंग अटकी, छूटत नहीं क्योंए सोए ।
ए किसी बातों आसिक सों, अंग मासूक जुदे न होए ॥ २२
जेते अंग मासूक के, रूह आसिक रहे तिन माहें ।
रूह आसिक और कहूँ ना टिके, अपने अंग में भी नाहें ॥ २३
करते बातें प्यारी मासूक, हाथ करें चलवन ।
नेत्र भी वाही तरह, चुभ रहत रूह के तन ॥ २४
सब अंग हक के इस्क भरे, क्यों कर जाने जांए ।
होए रूह जागृत अरस की, ताए हुकम देवे बताए ॥ २५
जब बात करें हक रूह सों, तब अंग सबे उलसत ।
करते बातें छिपे नहीं, हक अंगों इस्क सिफत ॥ २६
नेत्र कहे और नासिका, हाथ कहे और मुख ।
और अंग सबे याही विध, केहेते बातें दें सब सुख ॥ २७
सब अंग करत इसारतें, हक अंग रूह सों लगन ।
ए बारीक बातें अरस की, कोई जाने जागृत मोमन ॥ २८
हक अंग जोत की क्यों कहूँ, जो नूर नूर का नूर ।
अंग मीठे प्यारे सुख सलूकी, दे हक हुकम सहूर ॥ २९
कैसी मीठी बानी हक की, कहे प्रेम वचन श्री मुख ।
निसबत जान रमूज के, देत रूहों को सुख ॥ ३०
हक प्रेम वचन मुख बोलते, जोर आवत है जोस ।
ए बानी रूह को विचारते, हा हा अजूं उड़े ना फरामोस ॥ ३१
सब जोस आवे हक बोलते, प्रेम सों गलित गात ।
तिन समें मुख मासूक का, मार डारत निघात[2] ॥ ३२

---

१. लाली । २. प्रहार ।

हक अंग सब नाचत, जोस आवत है जब ।
करें बातें रूह सों उमंगें, मुख छबि देखी चाहिए तब ॥ ३३

जोस हमेसा हक को, रहत सदा पूरन ।
पर आसिक देखे इन विध, रंग चढ़ता रस जोवन ॥ ३४

सरूप मुख नख सिखलों, जोवन जिनस जुगत ।
ए आसिक अंग अरस के, चढ़ती जोत देखत ॥ ३५

जोत तेज धात रंग रस, रूह बढ़ता देखे दाएम ।
अंग अरस इसी रवेस, यों देखे सरूप काएम ॥ ३६

चढ़ता रंग रस तो कहूँ, जो होए नहीं पूरन ।
पर आसिक जाने मासूक की, नित चढ़ती देखे रोसन ॥ ३७

एही लक्षन आसिक के, सब चढ़ते देखे रंग ।
तेज जोत रस धात गुन, और सब पख इंद्री अंग ॥ ३८

हक रस रंग जोस जोवन, चढ़ता सदा देखत ।
अरस अरवा रूहन को, हक प्रेमें देत लज्जत ॥ ३९

घट बढ़ अरस में है नहीं, हक पूरन हमेसा ।
हम इस्कें लें यों अरस में, सब सुख पूरनता ॥ ४०

बीड़ी लई जिन हाथ सों, सोभित पतली अंगुरी ।
तिन बीच जोत नंगन की, अति झलकत हैं मुंदरी ॥ ४१

बीड़ी मुख में मोरत, सुन्दर हरवटी हँसत ।
सोभा इन मुख क्यों कहूँ, जो बीच में बात करत ॥ ४२

एक लालक तंबोल की, क्यों कहूँ अधुर दोऊ लाल ।
दंत सोभित मुख मोरत, खूबी ना इन मिसाल ॥ ४३

लाल उज्जल दोऊ रंग लिए, बीड़ी लेत मुख अंगुरी नरम ।
नेक मुख मूंदे बोलत, अति सुन्दर मुख सरम ॥ ४४

नेक खोलें अधुर मुख बोलत, करें प्यारी बातें कर प्यार ।
सो सुख देत आसिकों, जिनको नहीं सुमार ॥ ४५

सुख देत सब अंग मिल, नैन नासिका श्रवन अधुर ।
हँसत हरवटी भौं भृकुटी, सब दें सुख बोल मधुर ॥ ४६

अदभुत सलूकी इन समे, आसिक पावत आराम ।
आठों जाम हिरदे रूह के, जानों नकस चुभ्या चित्राम[1] ॥ ४७

फेर फेर ए मुख निरखिए, फेर फेर जाऊँ बलिहार ।
ए खूबी खुसाली क्यों कहूँ, इन सुख नाहीं सुमार ॥ ४८

अध—बीच आरोगते, मेवा काढ़ देत मुख थें ।
सरस मेवा केहे देत हैं, आप हाथ मेरे मुख में ॥ ४९

रंग रस यों केहेत हूँ, ए जो मेहेर करत मेहेरबान ।
ए भूल गैयां हम लाड़ सबे, ना तो क्यों रहे छिन विन प्रान ॥ ५०

और काम हक को कोई नहीं, देत रूहों सुख बनाए ।
वाहेदत विना हक दिल में, और न कछुए आए ॥ ५१

सुख देना लेना रूहों सों, और रूहों सों बेवहार ।
ए अरस बातें इन जिमिएँ, कोई विना रूह न लेवनहार ॥ ५२

कोई काम न और रूहों को, एक जानें हक इस्क ।
आठों जाम चौसठ घड़ी, विना प्रेम नहीं रंचक ॥ ५३

हक जात वाहेदत जो, छोड़ें ना एक दम ।
प्यार करें माहों माहें, वास्ते प्यार खसम ॥ ५४

हक अंग चलत मुख बोलते, तब जान्या जात गुझ प्यार ।
ए अरवा अरसकी जानहीं, जाको निस दिन एह विचार ॥ ५५

हक नरम पांउं उठाए के, और धरत जिमी पर ।
ए अरस बीच मोमन जानहीं, जिनको खुसबोए आई फजर ॥ ५६

हक धरत पांउं उठावत, तब जानी जात चतुराए ।
सो समझें हक इसारतें, जो होएं अरस अरवाए ॥ ५७

---

१. चित्रकारी ।

कैसे लगें पाउं चलते, वह कैसी होसी भोम ।
चलते देखे हक चातुरी, हा हा घाए न लगे रोम रोम ॥ ५८

इजार देखत पांउं में, लेत भांई जामें पर ।
हा हा खूबी इन चालकी, ए जुबां कहे क्यों कर ॥ ५९

स्वर भूखन मधुरे सोहे, ए तरह चलत जो हक ।
ए जो देखे रूह नजर भर, तो चाल मार डारत मुतलक ॥ ६०

नख अंगूठे अंगुरी, चलते अति सोभित ।
चाल विचारते अरस की, हा हा अरवा क्यों न उड़त ॥ ६१

अरस दिल मोमन कह्या, ठौर बड़ी कुसाद ।
हक हादी रूहें माहें बसें, असल अरस जो आद ॥ ६२

जेता मता हक का, सो सब अरस में देख ।
सो सब मोमन दिल में, पाइए सब विवेक ॥ ६३

हक हादी रूहें खेलें, उठें दौड़ें करें चाल ।
ए जानें अरवाहें अरस की, जो रहत हमेसा नाल ॥ ६४

जो तोहे कहे हक हुकम, सो तूं देख महामत ।
और कहो रूहन को, जो तेरे तन वाहेदत ॥ ६५

॥ प्रकरण ॥ १६ ॥ चौपाई ॥ १०६४ ॥

## हक मासूकका मुख सागर—मंगला चरण

हक इलम के जो आरफ, मुख नूरजमाल खूबी चाहें ।
चाहें चाहें फेर फेर चाहें, देख देख उड़ावें अरवाहें ॥ १

एही काम आसिकन का, हक इलम एही काम ।
नूरजमाल का जमाल, छोड़ें न आठो जाम ॥ २

खाते पीते उठते बैठते, सोवत सुपन जागृत ।
दम न छोड़ें मासूक को, जाको होए हक निसबत ॥ ३

हक बरनन फेर फेर करें, फेर फेर एही बात ।
एही अरस रूहों खाना पीवना, एही वतन बिसात ॥ ४

जेती रूहें आसिक, रहत हक खूबी के माहें ।
रूह को छोड़ के वजूद, कोई जाए न सके कांहें ।। ५

एही हक इलम को लक्षन, आसिकों एही लक्षन ।
एही इलम इस्क के आरफ, सोई अरस रूह मोमन ।। ६

मंगला चरण सम्पूर्ण

बरनन करो रे रूहजी, मासूक मुख सुन्दर ।
कोमल सोभा अलेखे, खोल रूह के नैन अंदर ।। ७

ललित लाल मुख सागर, कहूँ अचरज के अदभुत ।
ए क्योंकर आवे बानीय[1] में, ए बका सूरत लाहूत[2] ।। ८

मुख गौर भरे कसूँबा,[3] सोभा क्यों कहूँ बड़ो विस्तार ।
रंग कहूँ के सलूकी, ए न आवे माहें सुमार ।। ९

कहूँ सागर मुख जोत का, के कहूँ मेहेर सागर ।
के कहूँ सागर कलाओं का, जुबां केहे न सके क्योंए कर ।। १०

मुख चौक कहूँ के चकलाई, के सीतल सागर सुख ।
के कहूँ सागर रस का, जो नूरजमाल का मुख ।। ११

के कहूँ सागर तेज का, के कहूँ सागर सरम ।
के नूर सागर कहूँ बिलंद, के चँचल गुन नरम ।। १२

कहूँ सजनता के सनकूली, दोस्ती कहूं के प्यार ।
जो जो देखूं नजर भर, सो सब सागर अपार ।। १३

सागर कहूं पाक साफ का, के कहूँ आब—दार[4] ।
हक मुख सागर क्यों कहूं, सब विध पूरन अपार ।। १४

मोमन दिल कोमल कह्या, तो अरस पाया खिताब ।
तो जो दिल मोमन रूह का, तिन कैसा होसी मुख आब ।। १५

---

१. शब्दों में । २. परमधाम । ३. केशरिया रंग, फूल । ४. चमक वाला ।

तिन रूह के नैन को, किन विध कहूँ नूर तेज ।
जो हक नैनों हिल मिल रहे, जाके अंग इस्क रेजा—रेज[1] ।। १६

और हक कदम अति कोमल, पांउं तली जोत अतंत ।
सो रहें रूह नैनों बीच में, सो क्या करे जुबां सिफत ।। १७

केहेवत हुकम इन जुबां, पर ए खूबी कही न जाए ।
ए कहे बिना भी ना बने, बिन कहें रूह बिलखाए ।। १८

इन नैनों सुख बका न देख्या, सुन्या हादियों के मुख ।
सुनी बानी जुबां केहे ना सके, जुबां कहे देख्या सुख ।। १९

कहूँ नूर तेज रोसनी, याकी जोत गई अंबरलों चल ।
माहें गुन गरभित कै सागर, क्यों कहे बिना अंतर बल ।। २०

किन विध कहूँ मुख माड़नी[2], कहूँ सनकूली के सुख पुंज ।
के कहूँ आनंद सागर पूरन, गरुआ[3] गंभीर नूर गंज ।। २१

ए सागर सरूपी मुख मासूक, कै खूबी खुसाली अनेक ।
कै रंग तरंग किरने उठें, ए वही जानें गिनती विवेक ।। २२

इन मुख सागर में कै सागर, सुख आनंद अपार ।
कै सागर सुख सलूकियां, माहें कै गंज अपार अंबार ।। २३

कोई मोमन केहेसी ए क्यों कह्या, हक मुख सोभा सागर ।
सूक्षम सरूप अति कोमल, ललित किसोर सुंदर ।। २४

जो अरवा होए अरस की, सो लीजो दिल धर ।
सूक्षम सूरत सोभा बड़ी, सो सुनियो पड़ उत्तर ।। २५

कह्या निमूना एक भांत का, अंग खूबी इस्क सागर ।
खुसबोए नरम चकलाइयां, सब सागर कहे यों कर ।। २६

जो रंग कहूँ गौर का, तो सागर मेर[4] तरंग ।
जो कहूँ लाल मुख अधुर, हुए सागर लाल सुरंग ।। २७

---

१. जर्रा-जर्रा । २. सजावट । ३. गौरवयुक्त । ४. सुमेरू ।

हक के मुख का नूर जो, सो नूरै सागर जान ।
तेज जोत या सलूकियां, सोभा सागर भरया आसमान ॥ २८

सोभा हक सूरत की, सागर भी कहे न जाएं ।
ए सोभा अति बड़ी है, पर सो आवे नहीं जुबाएं ॥ २९

सागर कहे यों जान के, कहे दुनियां में बड़े ए ।
पड़या सागर से ना निकसे, कही अंग सोभा इन वास्ते ॥ ३०

यों लग्या आसिक एक अंग को, सो तहां ही हुआ गलतान ।
इनमें कबूं ना निकसे, तो कहे सागर अंग सुभान ॥ ३१

ए रस रंग उपले केते कहूँ, कैं बिध जिनस जुगत ।
फेर फेर देख देख देखही, रूह क्योंए न होए त्रिपत ॥ ३२

सेहेज अन्दर के पाइए, मुख देखें हक सूरत ।
रस बस एक हो रही, जो रूहें माहें खिलवत ॥ ३३

जो गुन हक के दिल में, सो मुख में देखाई देत ।
सो देखें अरवाहे अरस की, जो इत हुई होए सावचेत ॥ ३४

मुख बोले पीछे पाइए, जो दिल अन्दर के गुन ।
पर मुख देखें पाया चाहे, जो अन्दर गुझ रोसन ॥ ३५

जो गुन हिरदे अंदर, सो मुख देखें जाने जाए ।
ऊपर सागरता पूरन, तार्थे दिल की सब देखाए ॥ ३६

मुख मीठा सागर पूरन, मुख मीठा सागर बोल ।
मेहेर सागर दृष्टि पूरन, लई इस्क सागर माहें खोल ॥ ३७

यों गुन सागर केते कहूँ, जो देखत सुख कै रंग ।
कै सुख नेहेरें किरना चलें, कै सागर सुख तरंग ॥ ३८

कै रस रंग एक गौर में, एक रंग माहें कै रस ।
क्यों बरनों आगे मोमनो, ए मुख मासूक अजीम अरस ॥ ३९

एक सलूकी में कै चकलाइयां, एक चकलाइएँ कै सलूक ।
ए सरूप केहेते आगे मोमन, दिल होत नहीं टूक टूक ॥ ४०

दोऊ तरफ सोभा कान भूखन, बीच नासिका सोभे दोऊ नैन ।
तिलक निलाट अति उज्जल, दोऊ अधुर मधुर मुख बैन ।। ४१

सिर मुकट एक भांत का, क्यों कहूँ जुबां रंग नंग ।
ना देख सकों नूर नजरों, कै किरने उठें तरंग ।। ४२

केहे केहे जुबां एता कहे, जो जोत भरचा अवकास ।
आसमान जिमी भर पूरन, अब किन विध कहूं प्रकास ।। ४३

इन विध सोभा मुकट की, ए जुबां क्यों करे बरनन ।
सिर सोभे नूरजमाल के, नीके देखें रूह मोमन ।। ४४

ए नंग जवेर केहेत हों, सो सबद सुपन जिमी ले ।
ए अरस जवेर भी क्यों कहिए, जो सिनगार हक बका के ।। ४५

होत जवेर पैदा जिमी से, नंग अरस में इन विध नाहें ।
जोत पूरन अंग ले खड़ी, रूह जैसी चाहे दिल माहें ।। ४६

असल तन जिनों अरस में, सो कर लीजो दिल विचार ।
हक के सिर का मुकट, सो सोभा क्यों आवे माहें सुमार ।। ४७

योंही है बीच अरस के, जिनों जो सोभा प्यारी लगत ।
हर रूहें अरस अजीम की, दिल माफक देखत ।। ४८

तुम इत भी माफक इस्क के, देखियों कर सहूर ।
हिसाब न सोभा मुकट की, ए जुबां क्या करे मजकूर ।। ४९

हक सूरत सलूकी क्यों कहूं, महंमद कही अमरद ।
किसोर कही मसीय ने, सोभा कही न जाए माहें हद ।। ५०

अति सुंदर सूरत अरस की, ताके क्यों कहूँ बस्तर भूखन ।
जामा पटुका इजार, माहें सिफत न आवे सुकन ।। ५१

केहे केहे मुख एता केहे, नूरें के बस्तर ।
में केहेती हों बुध माफक, ज्यादा जुबां चले क्यों कर ।। ५२

सोभा सलूकी मुख की, और । सलूकी भूखन ।
और सलूकी बस्तर की, ए जानें अरवा अरस के तन ।। ५३

रंग बस्तरों तो कहूँ, जो दस बीस रंग होंए ।
इन सुपन जिमी जो बस्तर, तामें कै रंग देखत सोए ॥ ५४
तो अरस बस्तर क्यों रंग गिनों, और करके दिल अटकल ।
बे सुमार ल्याऊँ सुमार में, यों मने करत अकल ॥ ५५
है बड़ी लड़ाई इन बात में, जब सहूर करत अरस दिल ।
रूह तो मेरी इत है नहीं, हुकम केहेवत ऊपर मजल ॥ ५६
जामा अंग को लग रह्या, हार दुगदुगी हैड़े पर ।
ऊपर अति झीनी झलकत, जुड़ बैठी चादर ॥ ५७
जामें ऊपर जो भूखन, जो कंठ पेहेरे हैं हार ।
सो कै नंग जंग करत हैं, अवकास न माए झलकार ॥ ५८
याही जिनस बाजू बंध, और फुंदन लटकत ।
ए सबे हैं एक रस, पर रंग कै विध जंग करत ॥ ५९
हस्त कमल कांडों कड़े, माहें कै रंग कै बल ।
सो रूह लेवे विचार के, आगूं चले न जुबां अकल ॥ ६०
याही विध हैं पोहोंचियां, तिनमें कै रंग नंग कंचन ।
रंग गिनती केहेते सकुचों, जानो क्यों कहूँ सुमार सुकन ॥ ६१
किन विध कहूँ हथेलियां, अति उज्जल रंग लाल ।
केहेते लीकां दिल लरजत[1], ए अंग नूरजमाल ॥ ६२
अंगुरियां हस्त कमल की, याको दिया न निमूना जाए ।
वचन कहूँ विचार के, तो भी रूह पीछे जाए पछताए ॥ ६३
हर एक अंगुरी मुंदरी, हर मुंदरी कै रंग ।
सो जोत भरत आकास को, कहूँ किन विध कै तरंग ॥ ६४
जो जोत नख अंगुरी, जुबां आगे चल न सकत ।
फेर फेर वचन एही कहूँ, अम्बर जोत भरत ॥ ६५

१. कांपता है ।

याही विध नख चरनों के, नख जोत एही सबद ।
एही खूबी फेर फेर कहूँ, क्या करों छूटे न जुबां हद ॥ ६६
कोमलता चरन अंगुरी, और चरन तली कोमल ।
ए दिल रोसन देख के, हा हा खाक न होत जल बल ॥ ६७
चारों भूखन चरन के, माहें रंग जोत अपार ।
दिल न लगे विना गिनती, जानों क्यों ल्याऊँ सोभा सुमार ॥ ६८
सुमार कहे भी ना बने, दिल में न आवे विना सुमार ।
ताथें मुस्किल दोऊ पड़ी, पड़चा दिल माहें विचार ॥ ६९
चरन हक सूरत के, तिन अंगों के भूखन ।
रूह लेसी सोभा विचार के, जाके होसी अरस में तन ॥ ७०
याही वास्ते कहे सागर, सोभा न आवे माहें सुमार ।
सागर सोभा भी न लगे, सबद में न आवे सोभा अपार ॥ ७१
जो सोभा कही हक की, ऐसी हादी की जान ।
हकें मासूक कह्या अपना, सो जाहेर लिख्या माहें फुरमान ॥ ७२
और सोभा जुगल किसोर की, रूह अल्ला ने कही इत ।
उसी इलम से मैं केहेत हों, जो कहावत हुकम सिफत ॥ ७३
गौर गाल सुन्दर हरवटी, फेर फेर देखों मुख लाल ।
अरस कर दिल मोमन, माहे बैठे नूरजमाल ॥ ७४
क्यों कहूँ सागर चातुरी, कै सुख अलेखे उतपंन ।
कै पैदा होत एक सागरें, नए नए सुख नौतन ॥ ७५
हक मुख सब विध सागर, सुख अलेखे अपार ।
ए सुख जानें निसबती, जिन निस दिन एही विचार ॥ ७६
सब सागर सुख मई, सब सुख पूरन परमान[1] ।
अति सोभित सुन्दर, ए जो वाहेदत का सुभान ॥ ७७

१. प्रमाण ।

अंग देखे जेते सूरत के, सो तो सारे इस्क सागर ।
गुन हक बाहेर देखावत, इन बातों मोमन कादर ।। ७८

इस्क देखावें चढ़ता, सब कलाओं सुखदाए ।
घट बढ़ अरस में है नहीं, पर इस्कें देत देखाए ।। ७९

केहेना सुनना देखना, अरस चीज न इस्क बिन ।
जो कछू सुख अखंड, सो सब इस्क पूरन ।। ८०

जो कोई अरस जिमीय में, पसु या जानवर ।
सो सरूप सारे इस्क के, एक जरा न इस्क बिगर ।। ८१

दुनी पंखी बिछोहा ना सहे, वह आगेहीं उड़े अरवा ।
गिरत है आकास से, होत है पुरजा पुरजा ।। ८२

ए पंखी प्रीत दुनीय की, होसी अरस के कैसे जानवर ।
ए निमूनां इत ना बने, और बताइए क्यों कर ।। ८३

पूर असल जिमी बराबर, और उज्जल जोत प्रकास ।
कहूँ कम ज्यादा न देखिए, और जोत भरयो अवकास ।। ८४

पसु पंखी सब में पूरन, दिल चाह्या पूरन बन ।
इन जिमी पसु पंखियों, जिकर करें रोसन ।। ८५

और आसिक वाहेदत के, इन हूँ बड़ी पेहेचान ।
एही खूब खेलौनें हक के, मुख मीठी सुनावें बान ।। ८६

खूबी खुसाली पूरन, सुंदर सोभा चित्रामन ।
नैन श्रवन या चोंच मुख, गान करें निस दिन ।। ८७

इस्क इनों के क्यों कहूँ, जो हक के पिलायल ।
कोई कहे न सके इनों बड़ाई, ए अरस अजीम असल ।। ८८

सब गुन इनों में पूरन, नरम खूबी खुसबोए ।
मुख बानी जोत चित्रामन, ए हकें रिझावें सोए ।। ८९

हाल चाल सब इस्क की, खान पान सब साज ।
सोभा सिनगार सब इस्क के, अरस इस्क को राज ।। ९०

सोभा क्यों कहूँ हक सूरत की, जाको नामै नूरजमाल ।
ए दिल आए इस्क आवत, याको रूहैं बदले हाल ।। ९१

हक सूरत अति सोहनी, अति सुंदर सोभा कमाल ।
बैठे हक इस्क छाया मिने, दूजे इस्क लगे दिल झाल[1] ।। ९२

और कछुए दिल है नहीं, बिना हक वाहेदत ।
और जरा कित कहूँ नहीं, वाहेदत इस्क निसबत ।। ९३

जित रहे आग इस्क की, तित देह सुपन रहे क्योंकर ।
बिना मोमन दुनी न छूटही, दुनी ज्यों बिन जलचर ।। ९४

ब्रह्मसृष्टि घर इस्क में, और दुनियाँ घर कुफर ।
मोमन जलें न आग इस्कें, दुनी जाए जल बर ।। ९५

आग इस्कें जलें ना मोमन, आसिकों इस्क घर ।
इनों लगे जुदागी आग ज्यों, रूहें भागें देख कुफर ।। ९६

रूहें आइयां अरस अजीम से, दई नुकते इलमें जगाए ।
और उमेदां सब छोड़ाए के, हकें आपमें लैयां लगाए ।। ९७

बस्तर भूखन सब इस्क के, इस्क सेज्या सिनगार ।
इस्क हक खिलवत, रूहें हादी हक भरतार ।। ९८

जुगल सरूप जब बैठत, इस्क जानें दिल की सब ।
इस्क बोल काढ़ें जिन हेतका, उत्तर पावे दूजा दिल तब ।। ९९

जुगल सरूप इत बैठत, दोऊ दिलकी पावें मोमन ।
एक वचन मुख बोलते, पावें पड़ उत्तर आधे सुकन ।।१००

इस्क बोलें सुनें इस्क, सब इस्कै की बिसात ।
जो गुझ दिल मासूक की, सो आसिक से जानी जात ।।१०१

मोमन आसिक हकके, सो हकको जानें दें खबर ।
तो हकें किया अरस अपना, जो थे मोमन दिल इन पर ।।१०२

---

१. आग ।

आसिक मासूक दो अंग, दोऊ इस्कें होत एक ।
तो आसिक मासूक के दिल को, क्यों ना कहे गुझ विवेक ॥१०३

तो मोमनों दिल अपना, जीवते अरस केहेलाया ।
जो इस्क मासूक के दिल का, ऊपर सरूपैं देखे पाया ॥१०४

जो कछुए चीज अरसमें, सो सूरत सब इस्क ।
सो लाड़ लज्जत सुख लेत हैं, सब रूहें हादी हक ॥१०५

इस्क सुख अरस बिना, कहूँ पैदा दुनी में नाहें ।
तो हकें नाम धराया आसिक, जो इस्क आपके माहें ॥१०६

यातो इस्क हादी मिने, जाको हकें कह्या मासूक ।
हक का सुकन सुन आसिक, हा हा होत नहीं टूक टूक ॥१०७

सुकजीएँ भी यों कह्या, प्रेम चौदे तबकों नाहिं ।
ब्रह्म सृष्टि ब्रह्म निसबती, प्रेम है तिन माहिं ॥१०८

और इस्क माहिं रूहन, हकें अरस कह्यो जाको दिल ।
हकें दिल दे रूहों दिल लिया, यों एक हुए हिल मिल ॥१०९

ना तो हक आदमी के दिल को, अरस कहें क्यों कर ।
पर ए आसिक मासूक की वाहेदत, बिना आसिक न कोई कादर ॥११०

तो जाहेर लिख्या फुरमान में, रूहें उतरी लाहूत से ।
एहेल—अल्ला तो कहे, जो इस्क है इनों में ॥१११

इस्क है वाहेदत में, कहूं पाइए न दूजे ठौर ।
दूजे ठौर तो पाइए, जो होवे कोई और ॥११२

इस्क निसानी हक की, सो पाइए सांच के माहिं ।
सांच अरस आगूं वाहेदत के, ए झूठ जरा भी नाहिं ॥११३

ए झूठ फरेब कछुए नहीं, जामें आए अहंमद मोमन ।
एह निसानी वाहेदत की, जाके असल अरस में तन ॥११४

इस्क नाम अरस से, खेलमें ल्याए महंमद ।
ए क्या जानें नसल आदम, जो खाकी बुत सब रद ॥११५

ए जाने अरवाहें अरस की, जिनकी इस्क बिलात[1] ।
ए क्या जाने पैदा कुंन की, हक आसिक मासूक की बात ॥११६

अरस इस्क हक हादी रूहें, याकी दुनी न जाने कोए ।
इस्क अरस सो जानहीं, जो कायम वतनी होए ॥११७

दुनियाँ चौदे तबकों, किन निरने करी न सूरत हक ।
तिन हक के दिल में पैठकें, किया जाहेर हक इस्क ॥११८

तो अरस कह्या दिल मोमन, जो जाहेर किया गुझ ए ।
हक हादी गुझ मोमन, कोई और न कादर इनके ॥११९

तो पाया खिताब अरस का, ना तो दिल आदमी अरस क्यों होए ।
ए हक हादी मोमन बातून, और बूझे जो होवे कोए ॥१२०

मुखारबिंद मेहेबूब का, सुख देत हक सूरत ।
जुगल किसोर सोभा लिए, दोऊ बैठे एक तखत ॥१२१

दोऊ सरूप अति उज्जल, कै जोत खूबियों में खूब ।
इस्क कला सब पूरन, रस इस्क भरे मेहेबूब ॥१२२

नैन श्रवन मुख नासिका, चारों अंग गेहेरे गंभीर ।
अरस आकास सिंध तेज का, ताए चारों नेहेरें चलियां चीर ॥१२३

एक मुख के सुख में कै सुख, और कै सुख माहें नैन ।
सुख केते कहूँ नैन अंग के, मुख गिनती न आवे बैन ॥१२४

श्रवन अंदर सुख क्यों कहूँ, जो सुख सागर आराम ।
क्यों निकसे रूह इन से, ए अंग सुख स्यामा स्याम ॥१२५

अंग रूह अरस की नासिका, ए बल जानत रूह को कोए ।
चौदे तबक सुन्य फोड़के, इत लेत अरस खुसबोए ॥१२६

ऐसा बल रूह अरस के, तो बल हक होसी किन विध ।
ए बेवरा जानें पाक मोमन, जिन हक अरस दिल सुध ॥१२७

---

१. अधिक मात्रा ।

सुख कहूँ मीठी जुबान के, के सुख कहूँ लाल अधुर ।
के सुख कहूं रस भरे बचन, जो बोलत माहें मधुर ॥१२८

दोऊ माहों माहें जब बोलत, तब मीठे कैसे लगत ।
कोई रूह जानें अरस की, जित हक हुकम जागृत ॥१२९

जानों के जोवन चढ़ता, ऐसे नित देखत नौतन ।
गुन पख अंग इंद्रियां, बढ़ता नूर रोसन ॥१३०

जानों के पल पल चढ़ता, तेज जोत रस रंग ।
पूरन सरूप एही देखहीं, इस्क सूरत के संग ॥१३१

बंध बंध सब इस्क के, और इस्कै अंगों अंग ।
गुन पख सब इस्क के, सोई इस्क बोलें रस रंग ॥१३२

सब इंद्रियां इस्क की, इस्क तत्व रस धात ।
पिंड प्रकृति सब इस्क के, इस्क भीगे अंग गात ॥१३३

बात विचार सब इस्क के, इस्कै गान इलम ।
अंग क्यों कहूँ इन जिमिएँ, एता भी केहेत हुकम ॥१३४

सब चीजें इत इस्क की, इस्कै अरस बिसात ।
रूहें हादी अंग इस्क के, इस्क सूरत हक जात ॥१३५

सहज सुभाव सब इस्क के, इस्कै की वाहेदत ।
हक सरूप सब इस्क के, इस्कै की खिलवत ॥१३६

मोहोल मंदिर सब इस्क के, ऊपर तले इस्क ।
दसों दिस सब इस्क, इस्क उठक या बैठक ॥१३७

अरस सारा इस्क का, और इस्क रूहों निसबत ।
इस्क बिना जरा नहीं, सब हक इस्क न्यामत ॥१३८

नेक कही हक इस्क की, पर इस्क बड़ा बिस्तार ।
इनको बरनन न होवही, न आवे माहें सुमार ॥१३९

सुनो मोमनों इश्क की, नेक और भी देऊं खबर ।
अरस आसिक मासूक की, ज्यों औरों भी आवे नजर ॥१४०

रब्द हुआ इस्क का, हक हादी की खिलवत माहें ।
इत कम ज्यादा है नहीं, अरस इस्क बेवरा नाहें ॥१४१

ए बेवरा तित होवही, जित बिछोहा होए ।
सो तो वाहेदत में है नहीं, होए बिछोहा माहें दोए ॥१४२

हकें चाह्या करूँ बेवरा, देखाऊँ रूहों को ।
इस्क न पाइए बिना जुदागी, सो क्यों होवे वाहेदत मों ॥१४३

तार्थे दई नेक फरामोसी, रूहों को माहें अरस ।
हांसी करने इस्क की, देखों कौन कम कौन सरस ॥१४४

ए भूठा खेल देखाइया, ए जो चौदे तबक ।
हम जानें आए खेल बीच में, जित तरफ न पाइए हक ॥१४५

इत इस्क कहाँ पाइए, आग पानी पत्थर पूजत ।
ए खेल देख्या एक निमख का, जानों हो गई कै मुदत ॥१४६

भूठ हम देख्या नहीं, भूठ रहे न हमारी नजर ।
पट आड़े खेल देखाइया, सो देने इस्क खबर ॥१४७

ऐसा खेल देखाइया, जानें हम आए माहें इन ।
इश्क हममें जरा नहीं, सुध हक न आप वतन ॥१४८

इन इश्कें हमारे ऐसा किया, ए जो भूठे चौदे तबक ।
तिन सबों काएम किए, ऐसे हमारे इश्क ॥१४९

जलाए दिए सब इश्कें, हो गई सब अग्नि ।
एक जरा कोई ना बच्या, बीच आसमान धरन ॥१५०

हम जानें इश्क न हमपें, हम पर हंससी नूरजमाल ।
हमारे इश्कें ब्रह्मांड का, किया जो ऐसा हाल ॥१५१

इसवास्तें खेल देखाईया, वास्ते बेवरे इस्क के ।
कोई आया न गया हममें, बैठे अरस में देखें ए ॥१५२

कहें महामत हुकमें देखाइया, ऐसीं कर हिकमत[1] ।
हम देख्या इस्क बेवरा, बैठे बीच खिलवत ॥१५३

॥ प्रकरण ॥ २० ॥ चौपाई ॥ १२१७ ॥

## मुखकमल मुकट छबि[2]—मंगला चरण

याद करो हक मोमनो, खेल में अपना खसम ।
हकें कौल किया उतरते, 'अलस्तो बे रब्ब कुंम'[3] ॥ १

तब रूहों बले कह्या, बीच हक खिलवत ।
मजकूर[4] किया हकें तुमसों, वह जिन भूलो न्यामत ॥ २

हुकमें ए कुंजीं ल्याया इलम, हुकमें ले आया फुरमान[5] ।
दई बड़ाई रूहों हुकमें, हुकमें दई भिस्त जहान ॥ ३

हुकमें हादी आइया, और हुकमें आए मोमन ।
और फुरमान भेज्या इनपे, हकें कुंजी भेजी बैठ वतन ॥ ४

और भी हुकमें ए किया, लिया रूह अल्ला का भेस[6] ।
पेहेचान दई सब अरसों की, माहें बैठे दे आवेस ॥ ५

इलम दिया सब अरसों का, कहूँ जरा न रही सक ।
हम हादी मोमन सब मिल, करें जारी वास्ते इस्क ॥ ६

और जेती किताबें दुनीमें, तिन सबों पोहोंची सरत ।
सो सब खोली किताबें हुकमें, केहे दई सबों क्यामत ॥ ७

फिराए दिए सब फिरके, सब आए बीच हक दीन ।
भिस्त दई हम सबन को, ल्याए सब हक पर आकीन ॥ ८

वका तरफ कोई न जानत, ए जो चौदे तबक ।
सो रात मेटके दिन किया, पट खोल अरस हक ॥ ९

ऐसा खेल इन भांतका, यामें गई ना कबूं किन सक ।
ताको साफ किए हम हुकमें, सब जले बीच इश्क ॥ १०

---

१. कौशल । २. शोभा । ३. क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ । ४. चर्चा । ५. आदेश । ६. रूप ।

हम मांगें इस्क वतनी, आई हमपें हक न्यामत ।
हमें ऐसा खेल देखाइया, इत बैठे देखें खिलवत ॥ ११
ऐसे किए हमे इलमें, कोई छिपी न रही हकीकत ।
जाहेर गुझ सब अरसों की, ऐसी पाई हक मारफत ॥ १२
हम झूठी जिमी बीच बैठके, करें जाहेर हक सूरत ।
एही ख्वाब के बीचमें, बताए दई वाहेदत ॥ १३
तो ए झूठी जिमी काएम हुई, ऐसी हक बरकत ।
जानें आगूं कह्या रसूलने, देसी हम सबों भिस्त ॥ १४
इलमें ऐसे बेसक किए, इत बैठे पाइए सुध ।
हम इत आए बिना, देखी खेलकी सब विध ॥ १५
हम तेहेकीक रूहें अरस की, इन इलमें किए बेसक ।
ए देख्या खेल झूठा जान के, क्यों छोड़ें बरनन हक ॥ १६
कह्या रसूले फुरमान में, अरस दिल मोमन ।
हम और क्यों केहेलाइए, बिना अरस हक वतन ॥ १७
तार्थे फेर फेर बरनन, करें हक बका सूरत ।
हुकमें इलम यों केहेवही, कोई और न या बिन कित ॥ १८
छिनमें सिनगार बदलें, करें नए नए रूप अनेक ।
होत उतारे पेहेने विना, ए क्यों कह्यो जाए विवेक ॥ १९
हक सिनगार कीजे तो बरनन, जो घड़ी पल ठेहेराए ।
एक पाव पलमें, कै रूप रंग देखाए ॥ २०
और भी हक सरूप को, इन विध है बरनन ।
रूहें देखें नए नए सिनगार, जिन जैसी चितवन ॥ २१
तार्थे बरनन क्यों करूँ, किन विध कहूँ सिनगार ।
ए सोभा हक सूरत की, काहूं वार न पार सुमार ॥ २२
झूठी जुबांके सबदसों, और माएने लेना बका ।
जो सहूर कीजे हक इलमें, तों कछू पाइए गुझ छिपा ॥ २३

इलम होवे हक का, और हुकम देवे सहूर ।
होए जाग्रत रूह वाहेदत, कछू तब पाइए नूर जहूर ।। २४

ए सुपन देह पांच तत्व की, बस्तर भूखन उपले ऐसे हैं ।
अरस रूह सूरत की, मोहकक[1] पेहेनावा क्या कहे ।। २५

रूह सूरत नहीं तत्व की, जो बस्तर पेहेन उतारे ।
नूर को नूर जो नूर है, कौन तिनको सिनगारे ।। २६

पेहेले दृढ़ कर हक सूरत, ए अंग किन नूरके ।
हक जातके निसबती, बका मोमन समझें ए ।। २७

नूर सोभा नूर जहूर, और न सोभा इत ।
देखो अरस तन अकलें, ए सरूप वाहेदत ।। २८

नाजुकी इन सरूप की, और अति कोमलता ।
सो इन अंग जुबां क्या कहे, नूर जमाल सूरत बका ।। २९

जैसी सरूप की नाजुकी, तैसी सोभा सलूक ।
चकलाई चारों तरफों, दिल देख न होए टूक टूक ।। ३०

आसिक अपने सौकको, विध बिध सुख चहे ।
सोई विध विध रूप सरूप के, नई नई लज्जत लहे ।। ३१

दिल रूहें बारे हजार को, रूप नए नए चाहे दम दम ।
दें चाह्या सरूप सबन को, इन विध कादर खसम ।। ३२

रूहें दिल सब एकै, नए नए इस्क तरंग ।
पिएं प्याले फेर फेर, माहों माहें करें प्रेम जंग ।। ३३

ए बारीक बातें अरस की, बिन मोमन न जाने कोए ।
मोमन भी सो जानही, जाको आई फजर खुसबोए ।। ३४

जो कछू बीच अरस के, पसु पंखी नंग बन ।
सोभा बानी कोमल, खुसबोए रंग रोसन ।। ३५

१. प्रमाणित, अनुसंधाता ।

मैं नरमाई एक फूल की, जोड़ देखो रूह देह संग ।
क्यों जुड़े जिमी सोहोबती,[१] सोहोबत जात हक अंग ।। ३६

क्यों कर आवे बराबरी, खावंद और खेलौने ।
ए मोहकक क्या विचारहीं, जाहेर तफावत इनमें ।। ३७

ए चीजें कहीं सब अरस की, लीजे माहें सहूर कर ।
ए खेलौने रूहन के, नहीं खावंद बराबर ।। ३८

अरस चीज भी लीजे सहूर में, जिन अरस खावंद हक ।
इन अरस की एक कंकरी, उड़ावे चौदे तबक ।। ३९

इत बैठ झूठी जिमी में, झूठी अकल झूठी जुबान ।
अरस चीज मुकर्रर[२] क्यों होवहीं, जो काएम अरस सुभान ।। ४०

अरस चीज न आवे इन अकलें, तो क्यों आवे रूह मूरत ।
जो ए भी न आवे सहूर में, तो क्यों आवे हक सूरत ।। ४१

एक रूहें और खेलौने, देख इत भी तफावत ।
सरत हक हादी रूहें, देख जो कहावें वाहेदत ।। ४२

बका चीज जो काएम, जिन जरा न कबूं नुकसान ।
जेती चीज इन दुनी की, सो सब फना[३] निदान[४] ।। ४३

जेती चीजें अरस की, न होए पुरानी कब ।
नुकसान जरा न होवही, ए लीजे सहूर में सब ।। ४४

तो हक अरस है कह्या, ए चौदे तबक जरा नाहें ।
जो नाहीं सो है को क्या कहे, तार्थे आवत न सबद माहें ।। ४५

जेती चीजैं अरस की, जोत इस्क मीठी बान ।
खूबी खुसबोए हक चाहेल, तहाँ नजीक ना नुकसान ।। ४६

नूर और नूर—तजल्ला, कहे महंमद दो मकान ।
दोए सूरतें जुदी कही, ताको रूह अल्ला दई पेहेचान ।। ४७

१. संगत । २. निश्चित ३. नाश । ४. अन्त में ।

नाजुक नरम तेज जोत में, सलूकी सोभा मीठी जुबान ।
सुन्दर सरूप खुसबोए सों, पूरन प्रेम सुभान ।। ४८

सोई सरूप है नूर का, सोई सूरत हादी जान ।
रूहें सूरत वाहेदत में, ए पूरन इस्क परवान ।। ४९

हक सूरत अति सोहनी, दोऊ जुगल किसोर ।
गौर मुख अति सुन्दर, ललित कोमल अति जोर ।। ५०

और रूहों की सूरतें, जो असल अरस में तन ।
सो सहूर कीजे हक इलमें, देखो अपना तन मोमन ।। ५१

खूबी खुसाली न आवे सबद में, ना रंग रस बुध बान ।
कोई न आवे सोभा सबद में, मुख अरस खावंद मेहेरबान ।। ५२

जैसी है हक सूरत, और तिन बस्तर भूखन ।
जो सोभा देत इन सूरतें, सो क्यों कहे जाए जुबां इन ।। ५३

दिल में जानों दे निमूना, समझाऊँ रूहों को ।
खूबी दुनी की देख के, लगाए देखों अरस सों ।। ५४

हक अंग कैसे बरनवूं, इन झूठी जुबां के बल ।
बका अंग क्यों कर कहूँ, यों फेर फेर कहे अकल ।। ५५

रूप रंग इत क्यों कहिए, ले मसाला इत का ।
ए सुकन सारे फना मिने, हक अंग अरस बका ।। ५६

रूप रंग गौर लालक, कहूं नूर जोत रोसन ।
ए सबद सारे ब्रह्मांड के, अरस जरा उड़ावे सबन ।। ५७

गौर हक अंग कहत हों, ए गौर रंग लाहूत ।
और कहूं सुन्दर सलूकी, ए छबि है अदभूत ।। ५८

चकलाई हक अंगों की, रूप जाने अरवा अरस ।
रूह जागी जाने खेल में, जो हुई होए अरस परस ।। ५९

जो रूह जगाए देखिए, तो ठौर नहीं बोलन ।
जो चुप कर रहिए, तो क्या लें आहार मोमन ।। ६०

मैं देख्या दिल विचार के, सुनियो तुम मोमन ।
देऊँ निमूना दुनी अरस का, दिल देखियो कर रोसन ॥ ६१
कही कोमलता कमलन की, और जोत जवेरन ।
रंग सुरंग जानवरों, कै स्वर मीठी जुबां इन ॥ ६२
कै खुसबोए माहें पंखियों, कै खुसबोए माहें फूलन ।
कै सोभा पसु पंखियों, कै नरमाई परन ॥ ६३
फूल कमल कै पसम, कैसी कोमल दुनी इन ।
फूल अत्तर चोवा[1] मुस्क, जोत हीरा जवेरन ॥ ६४
देखो प्रीत पसुअन की, और देखो प्रीत पंखिअन ।
एक चलें दूजा ना रहे, जीव जात माहें छिन ॥ ६५
छोटे बड़े जीव कै रंग के, जानों के देह कुंदन ।
कै नकस कै बूटियां, कै कांगरी चित्रामन ॥ ६६
इन भाँत केती कहूँ, कै खूबी विना हिसाब ।
ले खुलासा इन का, छोड़ दीजे झूठा ख्वाब ॥ ६७
देख दुनी देखो अरस को, कै रंगों सोभें जानवर ।
सुख सनेह खूबी खुसाली, कै मुख बोलत मीठे स्वर ॥ ६८
जीव जल थल या जानवरों, कै केसों परन ।
रंग खूबी देख विचार के, ले अरस मसाला इन ॥ ६९
इन विध मैं केती कहूं, रंग खूबी खुसबोए ।
परों फूलों चित्रामन, कही प्रीत इनों की सोए ॥ ७०
इन विध देखो निमूना, ए झूठी जिमी का विचार ।
तो कौन बिध होसी अरस में, जो सोभा वार न पार सुमार ॥ ७१
एक देखी विध संसार की, और विध कही अरस ।
सांच आगे झूठ कछू नहीं, कर देखो दिल दुरस्त ॥ ७२

---

१. सुगन्धित तेल ।

साँच भोम की कंकरी, उड़ावे जिमी आसमान ।
कैसी होसी अरस खूबियां, जो खेलोंने अरस सुभान ।। ७३

सो खूब खेलोंने देखिए, इनों निमूना कोई नाहें ।
सिफत इनों ना केहे सकों, मेरी इन जुबांए ।। ७४

कै जुगतें खूबियां, कै जुगतें सनकूल ।
कै जुगतें सलूकियां, कै जुगतें रस फूल ।। ७५

कै जुगतें चित्रामन, ऊपर पर केसन ।
कै मुख मीठी बानियां, स्वर जिकर करें रोसन ।। ७६

जेती खूवियां अरस की, सब देखिए जमाकर ।
लीजे सब पेहेचान के, अन्दर दिल में धर ।। ७७

रंग रस नूर रोसनी, सोभा सुन्दर खूबी खुसबोए ।
तेज जोत कोमल, देख नरम नाजुकी सोए ।। ७८

दिल अरस खुलासा लेय के, और देख अरस रूह अंग ।
रूहों सरभर कोई आवे नहीं, खूबी रूप सलूकी रंग ।। ७९

खेल खावंद कैसी सरभर, जो रूहें अंग हादी नूर ।
हादी नूर हक जातका, मोमन देखें अरस सहूर ।। ८०

सिफत ऐसी कही मोमनों, जाके अकस[1] का दिल अरस ।
हक सुपने में भी संग कहे, रूहें इन विध अरस परस ।। ८१

ए जो मोमन अकस कहे, जानों आए दुनियां माहें ।
हक अरस कर बैठे दिल को, जुदे इत भी छोड़े नाहें ।। ८२

अकस के जो असल, ताए खेलावत सूरत ।
सो हिंमत अपनी क्यों छोड़हीं, जामें अरस की बरकत ।। ८३

दुनी नाम सुनत नरक छूटत, इनोंपें तो असल नाम ।
दिल भी हकें अरस कह्या, याकी साहेदी अल्ला—कलाम[2] ।। ८४

---

१. प्रतिविम्ब । २. ब्रह्म वाक्य ।

इलम भी हकें दिया, इनमें जरा न सक ।
सो क्यों न करें फैल[1] वतनी, करें कायम चौदे तबक ॥ ८५

प्रतिबिंब के जो असल, तिनों हक बैठे खेलावत ।
तहां क्यों न होए हक नजर, जो खेल रूहों देखावत ॥ ८६

आड़ा पट भी हकें दिया, पेहेले ऐसा खेल सहूर में ले ।
जो खेल आया हक सहूर में, तो क्यों न होए काएम ए ॥ ८७

हुए इन खेल के खावंद, प्रतिबिंब मोमनों नाम ।
सो क्यों न लें इस्क अपना, जिन अरवा हुज्जत *स्यामा स्याम ॥ ८८

बड़ी बड़ाई इनकी, जिन इस्कें चौदे तबक ।
करम जलाए पाक किए, तिन सबों पोहोचाए हक ॥ ८९

इनों धोखा कैसा अरस का, जिन सूरतें खेलावें असल ।
खेलाए के खेंचें आपमे, तब असलै में नकल ॥ ९०

नकलें असलें जुदागी, एक जरा है आड़ा पट ।
कह्या सेहेरेग से नजीक, तिन निपट है निकट ॥ ९१

इन सुपने देह माफक, हकें दिल में किया प्रवेस ।
ए हुकम जैसा कहावत, तैसा बोले हमारा भेस ॥ ९२

अरस तनका दिल जो, सो दिल देखत है हम को ।
प्रतिबिंब हमारे तो कहे, जो दिल हमारे उन दिल मों ॥ ९३

ऐसा खेल किया हुकमें, हमारी उमेदां[2] पूरन ।
हम सुख लिए अरस के, दुनीमें आए बिन ॥ ९४

ना तो ऐसा बरनन क्यों करें, ए जो वाहेदत नूरजमाल ।
ना कोई इनका निमूना, ना कोई इन मिसाल ॥ ९५

अरस भोमकी एक कंकरी, तिन आगे ए कछुए नाहें ।
तो क्यों दीजे बका सुभान को, सिफत इन जुबांए ॥ ९६

---

१. कर्म । २. आशाएँ ।

अरस जिमी सब वाहेदत, दूजा रहे ना इनों नजर ।
ज्यों रात होए काली अंधेरी, त्यों मिटाए देवे फजर ॥ ९७

है हमेसा एक वाहेदत, एक बिना जरा न और ।
अंधेर निमूना ना लगत, अंधेर राखत है ठौर ॥ ९८

चौदे तबक कछुए नहीं, वेदों कह्या आकास फूल ।
झूठा देखाई देत है, याको अंकूर ना मूल ॥ ९९

इत वाहेदत कबूं न जाहेर, झूठे हकको जानें क्यों कर ।
सुध वाहेदत क्यों ले सकें, जो उड़ें देखें नजर ॥१००

असल बात वाहेदत की, अरस अरवाहें जानें मोमन ।
इत हक सुध मोमनों, जाके असल अरस में तन ॥१०१

अब तुम सुनियो मोमनों, अरस बिने तुमारी बात ।
वाहेदत तो कहे मोमन, जो रूहें असल हक जात ॥१०२

और एक मता रूहन का, देखो अरस वाहेदत ।
लीजो मोमन दिलमें, ए हक अरस न्यामत ॥१०३

नैन एक रूह के, जो सुख लेवें परवरदिगार ।
तिन सुख से सुख पोहोंचही, दिल रूहों बारे हजार ॥१०४

एक रूह बात करे हकसों, सुख लेवे रस रसनाएँ ।
सो सुख रूहों आवत, दिल बारे हजार के माहें ॥१०५

हक बोलावें रूह एकको, सो सुख पावे अतंत ।
सो बात सुन रूह हकको, सब रूहें सुख पावत ॥१०६

रूह सुख हर एक बात का, हकसों अरस में लेवत ।
सो सुख सुन रूहें सबे, दिल अपने देवत ॥१०७

तो हकें कह्या अरस अपना, मोमनों का जो दिल ।
तो सब ल्याए वाहेदत में, जो यों सुख लेत हिलमिल ॥१०८

इन विध सुख केते कहूँ, अरस अरवा मोमन ।
तो आए वाहेदत में, जो हक कदम तले इनों तन ॥१०९

हकें अरस कह्या दिल मोमन, और भेज दिया इलम ।
क्यों आवें अरस दिल झूठ में, इत है हक का हुकम ॥११०

तार्थें बरनन इन दिल, अरस हक का होए ।
हकके इस्क से जल जाए, और जरा न रेहेवे कोए ॥१११

इन दिल को अरस तो कह्या, जो खोल दिए बका द्वार ।
तार्थें फेर फेर बरनवूं, हक वाहेदत का सिनगार ॥११२

किसोर सूरत हादी हककी, सुंदर सोभा पूरन ।
मुख कमल कहूं मुकट की, पीछे सब अंग बस्तर भूखन ॥११३

नख सिख लों बरनन करूँ, याद कर अपना तन ।
खोल नैना खिलवत में, बैठ तले चरन ॥११४

जैसा केहेत हों हक को, यों ही हादी जान ।
आसिक मासूक दोऊ एक हैं, ए कर दई मसिएँ पेहेचान ॥११५

जुगल किसोर तो कहे, जो आसिक मासूक एक अंग ।
हक छिन में कै रूप बदलें, याही भांत हादी रंग ॥११६

हमारे फुरमान में, हकें केते लिखे कलाम ।
मासूक मेरा महंमद, आसिक मेरा नाम ॥११७

मंगला चरण सम्पूर्ण

केस तिलक निलाट पर, दोऊ रेखा चली लग कान ।
केस न कोई घट बढ़, सोभा चाहिए जैसी सुभान ॥११८

एक स्याम नूर केसन की, चली रोसन बांध किनार ।
दूजी गौर निलाट संग, करें जंग जोर अपार ॥११९

सोभा चलि आई लवने लग, पीछे आई कान पर होए ।
आए मिली दोऊ तरफ की, सोभा केहेवे न समरथ कोए ॥१२०

याही भांत भौंह नेत्र संग, करत जंग दोऊ जोर ।
स्याह उज्जल सरभर दोऊ, चली चढ़ि टेढ़ी अनी मरोर ॥१२१

दोऊ अनियां भौंह केसन की, निलाट तले नैन पर ।
रेखा बांध चली दोऊ किनारी, आए अनियां मिली बराबर ॥१२२

दोऊ नैन किनारी सोभित, घटबढ़ कोई न केस ।
उज्जल स्याह दोऊ लरत हैं, कोई दे ना किसी को रेस ॥१२३

तिलक निलाट न किन किया, असल बन्यो रोसन ।
कै रंग खूबी छिन में, सोभा गिनती होए न किन ॥१२४

देह इन्द्री फरेब की, देखत इल्लत[1] फना ।
सो क्यों कहे बका सुभान मुख, इन अंग की जो रसना ॥१२५

नासिका हक सूरत की, ए जो स्वास देत खुसबोए ।
ब्रह्मांड फोड़ इत आवत, इत रूह बास लेत सोए ॥१२६

बिना मोमन कोई न ले सके, हक नासिका गुन ।
कह्या अरस हक वतन, सो ए किया दिल जिन ॥१२७

हक सूरत की बारीकियां, ए जानें अरस अरवाए ।
हक सूरत तो जान ही, जो कोई और होए इप्तदाए ॥१२८

तीन खूंनें[2] तले नासिका, खूंना चढ़ता चौथा ऊपर ।
ए खूबी जानें रूह अरस की, ए जो अनी आई नमती उतर ॥१२९

दोऊ छेद्रों के गृदवाए, यों पांखड़ी फूल कटाव ।
बीच अनी आई जो नासिका, ए मोमन जानें मुख भाव ॥१३०

इन अनियों और अनी मिली, तिन उतर अनी हुई दोए ।
किनार तले दोऊ छेद्र के, सोभा लेत अति सोए ॥१३१

दोऊ छेद्र तले अधुर ऊपर, तिन बीच लांक खूंने तीन ।
सोई सोभा जाने इन अधुर की, जो होए हुकम आधीन ॥१३२

और तले जो अधुर, दोऊ जोड़ सोभित जो मुख ।
रेखा लाल दोऊ सोभित, रूह देख पावे अति सुख ॥१३३

---

१. बीमारी । २. कोने ।

तले अधुर के लांक जो, मुख बराबर अनी तिन ।
सेत बीच बिंदा खुसरंग, मुख सोभा जानें मोमन ॥१३४

इन तले गौर हरवटी, जानों मुख सदा हँसत ।
ए सोभा जानें अरवाह अरस की, जिन दिल में हक बसत ॥ १३५

ए रंग कहे मैं इन मुख, पर किन विध कहूँ सलूक ।
ए करते मुख बरनन, दिल होत नहीं टूक टूक ॥ १३६

फेर कहूँ हरवटीय से, ज्यों सुध होए मुख कमल ।
हक मुख मोमन निरखहीं, जिन दिल अरस अकल ॥१३७

हरवटी गौर मुख मुतलक, खुसरंग बिंदा ऊपर ।
बीच लांक तले अधुर, चार पांखड़ी हुई बराबर ॥१३८

गौर पांखड़ी दो लांक की, लाल पांखड़ी दो तिन पर ।
अधुर अधुर दोऊ जुड़ मिले, हुई लांक के सरभर ॥१३९

जोड़ बनी दोऊ अधुर की, निपट लाल सोभित ।
तिन ऊपर दो पांखड़ी, हरी नेक टेढ़ी भई इत ॥१४०

दंत सलूकी[1] रंग की, इन जुबां कही न जाए ।
मुख मुरकत दंत देखत, क्या केहे देऊं बताए ॥१४१

क्यों कहूँ रंग रसना, मुख मीठा बोल बोलत ।
स्वाद लेत रस अरस के, जुबां केहे ना सके सिफत ॥१४२

रस जानत सब अरस के, रस बोलत रसना बैन ।
रूहें एक सबद सुनें रस का, तो पावें काएम सुख चैन ॥१४३

नेक अधुर दोऊ खोलहीं, दंत लाल उज्जल झलकत ।
अधुर लाल दोऊ पांखड़ी, जानों के नित मुसकत ॥१४४

दंत उज्जल ऐनक[2] ज्यों, माहें जुबां देखाई देत ।
देख दंत की नाजुकी, अति सुख मोमन लेत ॥१४५

---

१. हिलाते हुए । २. शीशा, दर्पन ।

कबूं दंत रंग उज्जल, कबूं रंग लालक ।
दोऊ खूबी दंतन में, माहें रोसन ज्यों ऐनक ॥१४६

दोऊ बीच अधुर रेखा मुख, कटाव तीन तीन तरफ दोए ।
पांखें रंग सुरंग दोऊ उपली, चढ़ि टेढ़ी सोभा देत दोए ॥१४७

खुस रंग बीच सिंघोड़ा,[1] तले दो अनी ऊपर एक ।
इन दोऊ पांखें खुसरंग, ए कटाव सोभा विसेक ॥१४८

तिन अनी पर दूजी अनी, सोभित सिंघोड़ा सुपेत ।
ऊपर पांखें दोऊ फिरवली, बीच छेद्र सोभा दोऊ देत ॥१४९

इन फूल ऊपर आई नासिका, सो आए बीच अनी सोभाए ।
तिन पर रेखा दोऊ तिलक की, रंग छिन में कै देखाए ॥१५०

दोऊ नेत्र टेढ़े कमल ज्यों, अनी सोभा दोऊ अतंत ।
जब पापन दोऊ खोलत, जानों कमल दोऊ बिकसत ॥१५१

नासिका के मूल में, दोऊ कमल बने अदभूत ।
स्याम सेत झांई लालक, सोभा क्यों कहूँ अंग लाहूत ॥१५२

और कै रंग दोऊ कमल में, टेढ़े चढ़ते निपट कटाव ।
मेहेर भरे नूर बरसत, हक सींचत सदा सुभाव ॥१५३

गौर गलस्थल गिरदवाए,[2] और बीच नासिका गौर ।
स्याह पांखड़ी कमल पर, सोभित टेढ़ियां नूर जहूर ॥१५४

अनी चार दोऊ कमल की, दो बंकी चढ़ती ऊपर ।
अति स्याह टेढ़ी पांखड़ी, कछू अधिक दोऊ बराबर ॥१५५

उजल निलाट तिन पर, आए मिली केस किनार ।
सोहे रेखा बीच तिलक, जुबां कहा कहे सोभा अपार ॥१५६

दोऊ तरफों रेखा हरवटी, आए मिली कानन ।
गौर कान सोभा क्यों कहूँ, नहीं नेत्र जुबां मेरे इन ॥१५७

---

१. तिकोणी बनाकर । २. आस-पास, घेर कर ।

गौर गाल दोऊ निपट, माहें झलकत मोती लाल ।
ए सोभा कानन की क्यों कहूँ, इन जुबां बिना मिसाल ॥१५८

केस रेखा कानों पीछे, बीच में अंग उज्जल ।
हक मुख सोभा क्यों कहिए, इन जुबां इन अकल ॥१५९

मुकुट बन्यो सिर पाचको, रंग नंग तामें अनेक ।
जुदे जुदे दसों दिस देखत, रंग एकपें और विसेक ॥१६०

असल नंग पाच एक है, असल रंग तामें दस ।
दस दस रंग हर दिसें, सोभा क्यों कहूँ जवेर अरस ॥१६१

और मुकुट सिर हक के, केहेनी सोभा तिन ।
सो न आवे सोभा सबद में, मुकुट क्यों कहूँ जुबां इन ॥१६२

दस रंग कहे एक तरफ के, दूजी तरफ दस रंग ।
सो रंग रंग कै किरने उठें, किरन किरन कै तरंग ॥१६३

किन विध कहूँ सलूकियां, हर दिस सलूकी अनेक ।
देख देख जो देखिए, जानों उनथें एह नेक ॥१६४

एक दोरी रंग नंग दस की, ऐसी मूल मुकुट दोरी चार ।
गिरदवाए निलवट पर, मुख क्यों कहूँ सोभा अपार ॥१६५

यामें एक दोरी अव्वल तले, कांगरी दस रंग ता पर ।
तिन दोरी पर बनी बेलड़ी, और कहूँ सुनो दिल धर ॥१६६

इन पर भी दोरी बनी, ता पर बेल और जिनस ।
तिन पर दोरी और कांगरी, जानों उनथें एह सरस ॥१६७

चारों दोरी के रंग कहे, और दस रँग कांगरी दोए ।
और जिनस दो बेल की, रंग बोहोत न गिनती होए ॥१६८

दस रंग कांगरी के कहूँ, चार मनके ऊपर तीन ।
दो तीन पर एक दो पर, ए जानें दस रंग रूह प्रवीन ॥१६९

ए दस रंग के मनके[1] दस, ऊपर एक रंग तले दोए ।
दोए रंग तले तीन हैं, तीन रंग तले चार सोए ॥१७०

इन विध चार दोरी भई, और दोए भई कांगरी ।
दोए बेली कै रंगों की, ए गिनती जाए न करी ॥१७१

ऊपर फिरते फूल कटाव कै, कै बूटियां नकस ।
तिन पर कही जो कांगरी, फिरती अति सरस ॥१७२

तिन ऊपर टोपी बनी, ऊपर चढ़ती अनी एक ।
तले कटाव कै रंग नंग, ए अनी फूल बन्यो विसेक ॥१७३

तीन खूंने तिन ऊपर, दो दोऊ तरफों बीच एक ।
दस दस नंग तिनों में, सो मोमन कहे विवेक ॥१७४

मानिक मोती पाने नीलवी, गोमादिक पाच पुखराज ।
और हीरा नंग लसनियां, बीच मनि दसमी रही विराज ॥१७५

ए दस रंग नंग तिन में, फिरते बने तीन फूल ।
तले डांड़ियां रंग अनेक हैं, ए सोभा देखे हूजे सनकूल ॥१७६

दसो दिसा जित देखिए, मन चाह्या रूप देखाए ।
बिना निमूने इन जुबां, किन बिध देऊँ बताए ॥१७७

जिन रूह का दिल जिन विध का, सोई विध तिन भासत[2] ।
एक पलक में कै रंग, रूह जुदे जुदे देखत ॥१७८

एह मुकुट इन भांत का, पल में करे कै रूप ।
जो रूह जैसा देख्या चाहे, सो तैसा देखे सरूप ॥१७९

में मुकुट कहूँ बुध माफक, ए तो अरस जवेर के नंग ।
नए नए कै भाँत के, कै छिन में बदलें रंग ॥१८०

और विध मुकुट में, रूहें आवें सब मिल ।
सब रूप रंग देखें इनमें, जो चाहे जैसा दिल ॥१८१

---

१. मोती । २. देखत ।

याही भांत सब भूखन, याही भांत बस्तर ।
बस्तर भूखन सब एक रस, ज्यों कुंदन में जड़तर ॥१८२
ए जड़े घड़े किनने नहीं, ना पेहेर उतारत ।
दिल चाहे रंग छिन में, मन पर सोभा फिरत ॥१८३
जिन छिन रूह जैसा चाहत, सो तैसी सोभा देखत ।
बारे हजार देखें दिल चाहे, ए किन विध कहूँ सिफत ॥१८४
मोती करन फूल कुंडल, कहूँ केते नाम भूखन ।
पलमें अनेक बदलें, सुंदर सरूप कानन ॥१८५
जवेर कहे मैं अरस के, और जवेर तो जिमी से होत ।
सो हक बका के अंग को, कैसी देखावे जोत ॥१८६
और नई पैदास अरस में नहीं, ना पुरानी कबूं होए ।
या रसांग या जवेर, जिन जानो अरस में दोए ॥१८७
अरस साहेबी बुजरग, तिनको नाहीं पार ।
ए नूर के एक पलथें, कै उपजे कोट संसार ॥१८८
सो नूर नूरजमाल के, नित आवे दीदार[1] ।
तिन हक के बस्तर भूखन, ए मोमन जानें विचार ॥१८९
जिन मोमन की सिफायत,[2] करी होए मेहेदी महंमद ।
सो जानें अरस बारीकियां, और क्या जाने दुनी जो रद[3] ॥१९०
पेहेनावा नूर जमाल का, बस्तर या भूखन ।
ज्यों नूर का जहूर, ए जानत अरस मोमन ॥१९१
ए कबूं न जाहेर दुनी में, अरस बका हक जात ।
सो इन जुबां इत क्या कहूँ, जो इन सरूप को सोभात ॥१९२
बस्तर भूखन हक के, ए केहेनी में न आवत ।
सिनगार करें दिल चाह्या, जो सबों को भावत ॥१९३

१. दर्शन । २. सुफ़ारिश । ३. रद्दी, खराब ।

तो ए क्यों आवे बानी में, कर देखो सहूर हक ।
ए अरस तनों विचारिए, तुम लीजो बुध माफक ॥१९४

अरस में भी रूहें लेत हैं, जैसी खाहिस जिन ।
रूह जैसा देख्या चाहे, तिन तैसा होत दरसन ॥१९५

बस्तर भूखन किन ना किए, हैं नूर हक अंग के ।
ए क्यों आवें इन केहेनी में, अंग साँई के सोभावे जे ॥१९६

अपार सूरत साहेब की, अपार साहेब के अंग ।
अपार बस्तर भूखन, जो रेहेत सदा अंगों संग ॥१९७

जो सोभा हक सूरत की, सो क्यों पुरानी होए ।
नई पुरानी तित कहावत, जित कहियत हैं दोए ॥१९८

इत कबूं न होए पुराना, ना पैदा कबूं नया ।
दीदार करें रूहें छिन में, छिन छिन दिल चाह्या ॥१९९

जामा पटुका और इजार, ए सबे हैं एक रस ।
कंठ हार सोभा जामें पर, जानों एक दूजे पे सरस ॥२००

कंठ तले हार दुगदुगी, कै विध विध के विवेक ।
कै रंग जंग जोते करें, देखत अलेखे रस एक ॥२०१

जुड़ बैठी जामें पर चादर, सोभा याही के मान ।
ए नाम लेत मैं जुदे जुदे, हक सोभा देख सुभान ॥२०२

बगलों कोतकी कटाव, और बंध बेल गिरवान ।
रंग जुदे जुदे झलकत, रस एकै सब परवान ॥२०३

बांहें बाजू बंध सोभित, रंग केते कहूँ गिन ।
तेज जोत लरें आकास में, क्यों असल निरने होए तिन ॥२०४

क्यों कहूँ सोभा फुंदन, लटकत हैं एक जुगत ।
आहार देत हैं आसिकों, देख देख न होए त्रिपत ॥२०५

या विध कांड़ों पोहोंचियां, या विध कांड़ों बल ।
कै ऊपर रंग जंग करें, तामें गिने न जाय असल ॥२०६

हस्त कमल अति कोमल, उज्जल हथेली लाल ।
केहेते लीकें सलूकियां, हा हा लगत न हैड़े भाल ॥२०७

पतली पांचो अंगुरियां, पांचो जुदी जुगत ।
जुदे जुदे रंग नंग मुंदरी, सोभा न पोहोंचे सिफत ॥२०८

निरमल अंगुरियों नख, ताकी जोत भरी आकास ।
सब्द न इन आगूं चले, क्यों कहूं अरस प्रकास ॥२०९

अब चरन कमल चित्त देय के, बैठ बीच खिलवत ।
देख रूह नैन खोल के, ज्यों आवे अरस लज्जत ॥२१०

इत बैठ निरख चरन को, देख चकलाई चित्त दे ।
नरम तली अति उज्जल, रूह तेरा सुख दायक ए ॥२११

जोत देखी चरन नख की, जाए लगी आसमान ।
चीर चली सब जोत को, कोई न इन के मान ॥२१२

तेज कोई ना सेहे सके, बिना अरस रूह मोमन ।
तेजें उड़े परदा अंधेरी, ए सहें बका अरस तन ॥२१३

अरस तन की एह बैठक, ए जोतै के सींचेल ।
ए अरवा तन सब अरस के, इनों नजरों रहें ना खेल ॥२१४

पांउं देख देख भूखन, कै विध सोभा करत ।
सो नए नए रूप अनेक रंगों, छिन छिन में कै फिरत ॥२१५

चारों जोड़े चरन तो कहूँ, जो घड़ी साइत ठेहेराय ।
छिन में करें कोट रोसनी, सो क्यों आवें माहें जुबांए ॥२१६

हरी इजार माहें कै रंग, ऊपर जामा दावन सुपेत[१] ।
कै रंग झांई देख के, अरस रूहें सुख लेत ॥२१७

फुंदन बंध अति सोभित, माहें रंग अनेक झलकत ।
ए सेत हरे के बीच में, माहें नरम झाबे खलकत ॥२१८

---

१. सफेद ।

जामें दावन सेत झलकत, जों उठत आकास ।
और जोत चढ़ी करती जंग, पीत पटुके की प्रकास ॥२१९

हार सोभित हिरदे पर, बाजू बंध पोहोंची कड़े ।
सुंदर सरूप सिर मुकुट, दिल आसिकों देखत खड़े ॥२२०

चोली चादर हार झलकत, आकास रह्यो भराए ।
तो सोभा मुख मुकुट की, किन बिध कहीं जाए ॥२२१

मीठी सूरत किसोर की, गौर लाल मुख अधुर ।
ए आसिक नीके निरखत, मुख बानी बोलत मधुर ॥२२२

चारों चरन बराबर, सुभान और स्यामा जी ।
गौर सब गुन पूरन, सुन्दर सोभा और सलूकी ॥२२३

तेज जोत नूर भरे, लाल तली कोमल ।
लाल लांकें लीकें क्यों कहूँ, रूह निरखे नेत्र निरमल ॥२२४

चारों तरफों चकलाई, फना अदभुत रूह खैंचत ।
एड़ियां अति अचरज, इत आसिक तले बसत ॥२२५

चारों चरन अति नाजुक, जो देखूं सोई सरस ।
ए अंग नाहीं तत्व के, याकी जात रूह अरस ॥२२६

ए मेहेर करें चरन जिन पर, देत हिरदे पूरन सरूप ।
जुगल किसोर चित्त चुभत, सुख सुन्दर रूप अनूप ॥२२७

जुगल किसोर अति सुन्दर, बैठे दोऊ एक तखत ।
चरन तले रूहों मिलावा, बीच बका खिलवत ॥२२८

महामत कहें मेहेबूब को, जेती अरस सूरत ।
सो सब बैठी कदमों तले, अपनी ए निसबत ॥२२९

॥ प्रकरण ॥ २१ ॥ चौपाई ॥ १४४६ ॥

सिनगार कलस[1] तिन सिनगार बरनन बिरहा रस ॥

क्यों बरनों हक सूरत, अब लों कही न किन ।
ए झूठी देह क्यों रहे, सुनते एह बरनन ॥ १

बरनन आसिक कर ना सके, और कोई पोहोंचे न आसिक बिन ।
हक जाहेर क्यों होवहीं, देखतहीं उड़े तन ॥ २

हक देखें वजूद ना रहे, ज्यों दारू आग से उड़त ।
यों वाहेदत देखें दूसरा, पाव पल अंग न टिकत ॥ ३

हक इश्क आग जोरावर, इनमें मोमन बसत ।
आग असल जिनों वतनी, यामें आठो जाम अलमस्त ॥ ४

जो निस दिन रहे आग में, ताए आगै के सब तन ।
वाको जलाए कोई ना सके, उछरे आगै के वतन ॥ ५

आग जिमी पानी आग का, आग बीज आग अंकूर ।
फल फूल बृक्ष आग का, आग मजकूर आग सहूर ॥ ६

बृक्ष मोमन आग इश्क के, और आग इश्क अरस ।
सब पीवें आग इसक रस, दिल आगै अरस परस ॥ ७

घर मोमन आग इश्क में, हक अगनि के पालेल ।
सोई इश्क आग देखावने, ल्याए जो माहें खेल ॥ ८

जो पैदा हुआ आग का, सो आग में जलत नाहें ।
वह वजूद आग इश्क के, रहें हमेसा आग माहें ॥ ९

सोई बात करें हक अरस की, सहूर या बे सहूर ।
हुए सब विध पूरन पकव[2], हक अरस दिन जहूर ॥ १०

जो हक देखें टिक्या रहे, सोई अरस के तन ।
सोई करें मूल मजकूर, सोई करें बरनन ॥ ११

---

१. सिरमौर । २. अनुभवी, पक्के ।

पर ए देख्या अचरज, जो बिरहा सबद सुनत ।
क्यों तन रह्या जीव बिना, हा हा ए सुनत न अरवा उड़त ॥ १२

आसिक अरवा कहावहीं, तिन मुख बिरहा ना निकसत ।
जब दिल बिरहा जानिया, तब आहि अंग चीर चलत ॥ १३

ए हांसी कराई हुकमें, इश्क दिया उड़ाए ।
मुरदा ज्यों इश्क बिना, गावत बिरहा लड़ाए ॥ १४

कबूं अरस रुहें ऐसी ना करें, जैसी हमसे हुई इन बेर ।
अरस रुहों को बिरहा रसें, हुए बेसक न लैयां घेर ॥ १५

चरन तली की जो लीकें, सो एक लीक न होए बरनन ।
तो मुख से चरन क्यों बरनवूं, जो नूरजमाल का तन ॥ १६

इन चरनों विध क्यों कहूँ, नाजुक निपट नरम ।
ए बरनन करते इन जुबां, हा हा उड़त न अंग बेसरम ॥ १७

चरन केहेती हों मुखथें, जो निरखती थी निस दिन ।
सो समया याद न आवही, क्यों न लगे कलेजे अगिन ॥ १८

चरन अंगूठे चित्त दे, नैनों नखन देखती जोत ।
नजरों निमख न छोड़ती, हा हा सो अब लोहू भी ना रोत ॥ १९

नैंनों अंगुरियां देखती, कोमलता हाथ लगाए ।
सो मेरे नैन नाम धराए के, हा हा जल बल क्यों न जाए ॥ २०

चरन तली रेखा देखती, मेरी आंखों नीके कर ।
ए कटाव किनार पर कांगरी, हा हा नैनां जलें न नाम धर ॥ २१

रंग लाल कहूँ के उज्जल, के देख खूबियाँ होत खुसाल ।
सो देखन वाले नाम धर के, हा हा ओ जलें न माहें क्यों झाल ॥ २२

नाजुक सलूकी मीठी लगे, नैना देखत ना त्रिपताए ।
हा हा ए अनभव दिल क्यों भूले, ए हुकमें भी क्यों पकराए ॥ २३

नाम जो लेते विरह को, मेरी रसना गई ना टूट ।
सो बिरहा नैनों देख के, हा हा गैयां न आंखों फूट ॥ २४

हक बानी कानों सुनती, कानों सुनके करती मैं बात ।
सो अवसर हिरदे याद कर, हा हा नूर कानों का उड़ न जात ॥ २५

क्यों कहूँ चरन के भूखन, अरस जड़ सबे चेतन ।
सोभा सुन्दर सब दिल चाही, बोल बोए नरम रोसन ॥ २६

क्या बस्तर क्या भूखन, असल अंग के नूर ।
हा हा रूह मेरी क्यों रही, करते एह मजकूर ॥ २७

रंग रेसम हेम नंग जवेर, ना तेज जोत सबद लगत ।
एही अचरज अरवाहें अरस की, ए सुनते क्यों ना उड़त ॥ २८

याही भाँत इजार की, भाँत भूखन की सब ।
रूह करें कै दिल चाहे, जैसा रूह चाहे जब ॥ २९

इजार बंध याही रस का, भांत भांत झलकत ।
देख लटकते फुंदन, हा हा अरवा क्यों न कढ़त ॥ ३०

चरन से कमर लग, भूखन या बस्तर ।
हेम जवेर या रेसम, सब एकै रस बराबर ॥ ३१

दिल चाही नरम सोभित, दिल चाही जोत खुसबोए ।
जिन खिन जैसा दिल चाहे, सब विध दें सुख सोए ॥ ३२

कै रंग हैं इजार में, उठत जामें में झांईं ।
अरवाह क्यों सखत हुई, दिल देख उड़त क्यों नाहीं ॥ ३३

आसमान जिमी के बीच में, भरी जोत उठें कै रंग ।
घट बढ़ काहूँ है नहीं, करें दिल चाहे कै जंग ॥ ३४

ए सब विध दिल देखत, करे जुबां अकल बरनन ।
तो भी अरवा ना उड़ी, कोई सखत अंतसकरन ॥ ३५

दिल सखत विना इन सरूप की, इत लज्जत लई न जाए ।
ए हुकम करत सब हिकमत, इत हक ए सुख दिया चाहें ॥ ३६

ए रूह के नैनों देखिए, नाजुक कमर निपट ।
अति देखो सुन्दर चढ़ती, कही जाए न सोभा कट ॥ ३७

कटि कमर सलूकी देख के, नैन क्यों रहें अंग को लाग ।
ए बातें दिल से विचारते, हा हा लगी न दिल को आग ॥ ३८

ए गौर रंग लाल उज्जल, छाती कै विध देत तरंग ।
नाहीं निमूना जोत जवेर, जो दीजे अरस के नंग ॥ ३९

हैड़ा हक का देख कर, मेरा जीव रह्या अंग माहें ।
हा हा मुरदा दिल मेरा क्यों हुआ, ए देख चलया नाहें ॥ ४०

हक हैड़ा देख कर, मेरे हैड़े रहत क्यों दम ।
मांग्या सुख इत देवे को, सो राखत मासूक हुकम ॥ ४१

हाथ पाँउं मेरे क्यों रहे, देख हक हाथ पाँउं ।
हा हा ए जुलम क्यों सह्या, क्यों भूले अवसर दाउ[1] ॥ ४२

चकलाई दोऊ खभन की, अंग उतरता सलूक ।
देख कमर कटि पतली, हा हा दिल होत ना टूक टूक ॥ ४३

में देख्या अंग जामें बिना, नाजुक जोत नरम ।
ए केहेनी में न आवहीं, ए अंग होएँ न मांस चरम[2] ॥ ४४

जामा दावन बांहें चोली, *सिंध सागर रल्या मानो खीर[3] ।
जोत भरी जिमी आसमान, मानो चलसी ऊपर चीर ॥ ४५

चीन मोहोरी बगल या बीच, गिरवान कोतकी नकस ।
सब जामा जानों के भूखन, ठौर एक दूजेपें सरस ॥ ४६

जब जैसा दिल चाहता, तिन खिन तैसा देखत ।
बस्तर भूखन हक अंग के, केहेनी में न आवत ॥ ४७

ए बस्तर भूखन भांत और हैं, अरस अंग का नूर ।
जो सोभा देत इन अंग को, सो क्यों आवे माहें सहूर ॥ ४८

और क्या चीज ऐसी अरस में, जो सोभा देवे सरूप को ।
हक सरभर कछू न आवही, अरस रूहं देखे विचार दिल मों ॥ ४९

---

१. सुयोग । २. चमड़ा । ३. दूध ।

ए निपट बात बारीक है, अरस रूहें करना विचार ।
और कोई होवे तो करे, बात अलेखे अपार ।। ५०

सोभा हक के अंग की, सो अंग ही की सोभा अंग ।
ऐसी चीज कोई है नहीं, जो सोभे इन अंग संग ।। ५१

कहूँ पटुके की सलूकी, के ए भूखन कहूँ कमर ।
ए छबि फब दिल देख के, न जानों रूह रहत क्यों कर ।। ५२

ए कह्या जाए न बस्तर भूखन, ए चीज दुनियां के ।
जो सोभा देत हक अंग को, ताए क्यों नाम धरिए ए ।। ५३

हक के अंग का नूर जो, ए रूहों अरस में सुध होत ।
इत सबद न कोई पोहोंचही, जो कोट रोसन कहूँ जोत ।। ५४

नख अंगुरी अंगूठे, कोई दिया न निमूना जाए ।
जोत क्यों कहूँ इन मुख, रहे अंबर जिमी भराए ।। ५५

पतली अंगुरियां उज्जल, सोभा क्यों कहूँ मुंदरियों मुख ।
ए देखें रूह मोमन, सोई जानें ए सुख ।। ५६

लीकें हथेली उज्जल, सलूकी पोहोंचों ऊपर ।
ए बेवरा केहेते अकल, हा हा अरवा रहत क्यों कर ।। ५७

पोहोंची कांडों कड़े झलकत, हेम जवेर कै रंग रस ।
दिल चाह्या रूप रंग ल्यावहीं, जो देखिए सोई सरस ।। ५८

मोहोरी चूड़ी बांहें बाजू बंध, सोभा बारीक कै बरनन ।
नाम लेत इन चीज का, हा हा अरवा उड़त नां मोमन ।। ५९

हक हुकम राखत जोरावरी[1], बात आई ऊपर हुकम ।
ना तो रहे ना सुन वचन, पर ज्यों जानें त्यों करें खसम ।। ६०

सोभा लेत हैड़े खभे, कर हेत सुनत श्रवन ।
विचार किएँ जीवरा उड़े, या उड़े देख भूखन ।। ६१

---

१. जबरदस्ती ।

गौर हरवटी सुन्दर, या देख के लांक सलूक ।
लाल अधुर देख ना गया, लोहू मेरे अंग का सूक ।। ६२

मुख चौक छबि सलूकियां, सुन्दर अति सरूप ।
गाल लाल अति उज्जल, रंग सुखदाएक सोभा अनूप ।। ६३

निलवट तिलक नासिका, रंग पल में अनेक देखाए ।
दंत बीड़ी मुख मोरत, हा हा जीवरा उड़ न जाए ।। ६४

रंग नासिका की मैं क्यों कहूँ, गुन सलूक अदभूत ।
सुंन ब्रह्मांड को फोड़ के, अरस बास लेत बीच नासूत ।। ६५

नैन सैन जो करत हैं, सामी रूह मोमन ।
ए सैना दिल लेए के, हा हा चिराए न गया ए तन ।। ६६

ए नैन नूरजमाल के, देख सलोंने सलूक ।
ए सुन नैन बिछोड़ा मोमन, हा हा हो न गए भूक भूक ।। ६७

अंबर धरा के बीच में, केस लवने नूर झलकत ।
ए सोभा मुख क्यों कहूँ, कानों मोती लाल लटकत ।। ६८

कानन मोती कहत हों, पल में बदलत भूखन ।
आसिक देखे कै भांतें, सुख देवें दिल रोसन ।। ६९

कानों कड़ी गठौरी[1] मुरकी[2], जुगत जिनस नहीं पार ।
नाम नंग रंग रसायन क्यों कहूँ, रूप छिन में बदले बेसुमार ।। ७०

उज्जल निलाट लाल तिलक, क्यों कहूँ सोभा असल ।
सुन्दर सलूकी सरूप की, माहें आवत ना अकल ।। ७१

पाग कही सिर हक के, और कह्यो सिर मुकुट ।
हा हा जीवरा क्यों रह्या, खुलते हिरदे ए पट ।। ७२

कलंगी दुगदुगी तो कहूँ, जो पगड़ी होए और रस ।
बस्तर भूखन या अंग तीनों, हर एक पे एक सरस ।। ७३

१. गढ़ी हुई । २. छोटी बाली ।

तार्थें रस तो सब एक है, तासें अनेक रंग ।
कलंगी दुगदुगी ठौर अपने, करत माहों माहें जंग ।। ७४

मोमन असल सूरत अरस में, अबलों न जाहेर कित ।
खोज खोज के बुजरक गए, सो अरस रूहें ल्याई हकीकत ।। ७५

नूर खूबी कही केसन की, हक सरूप की इत ।
हा हा मेरा अंग मुरदा ना हुआ, केहेते बका निसबत ।। ७६

नख सिख लों बरनन किया, और गाया लड़ाए लड़ाए ।
मोमन चाहिए बिरहा सुनते, तबहीं अरवा उड़ जाए ।। ७७

जो पर आतम पोहोंचे नहीं, सो क्यों पोहोंचे हक अंग को ।
आसिक और मासूक, कैसी तफावत इनमों ।। ७८

नाजुक सोभा हक की, जो रूह के आवे नजर ।
तो अबहीं तोको अरस की, होए जाए फजर ।। ७९

ज्यों सूरत दिल देखत, त्यों रूह जो देखे सूरत ।
तो बेर नहीं रूह लज्जत, तेरे अंग जात निसबत ।। ८०

फरक नहीं दिल रूह के, ए तो दोऊ रहे हिल मिल ।
रूह तो तेरी अरस में, तो हकें कह्या अरस दिल ।। ८१

तेरा दिल लग्या ज्यों सूरत को, त्यों जो सूरतें रूह लगे ।
तो अबहीं ले रूह लज्जत, एक पलक में जगे ।। ८२

रूह तो तेरी दिल बीच में, तो कह्या दिल अरस ।
सेहेरग से नजीक तो कह्या, जो रूह दिल अरस परस ।। ८३

सूरत केहेते हक की, आगूँ रूह मोमन ।
हा हा रूह मुरग ना उड़या, बरनन करते अरस तन ।। ८४

आगूँ अरवाहें अरस की, करी बातें हक जुबांन ।
हा हा तन मेरा क्यों रह्या, करते खिलवत बयान ।। ८५

रूहें रहें (अरस) दरगाह में, जो दरगाह नूरजमाल ।
ए किया बयान खिलवत का, हा हा रूह रही किन हाल ।। ८६

फेर फेर मेहेबूब देखिए, लगे मीठड़ा मुख मासूक ।
अंग गौर जोत अंबर लों, छबि देख दिल होत भूक भूक ।। ८७

रूप रंग अंग छबि सलूकी, कहे बस्तर भूखन ।
ए केहेते अरवा ना उड़ी, हा हा कैसी हुज्जत[1] मोमन ।। ८८

पांउं लीक केहेते अरवा उड़े, क्यों बरनवी हक सूरत ।
बंध बंध छूट ना गए, हा हा कैसी अरस हुज्जत ।। ८९

कह्या गौर मुख मासूक का, और निलवट असल तिलक ।
हा हा ए बयान करते क्यों जिए, हम में रही नहीं रंचक ।। ९०

बरनन किया श्रवन का, जाके ताबे दिल हुकम ।
मासूक अंग बरनवते, हा हा मोमन रहे क्यों हम ।। ९१

कहे गौर गलस्थल हक के, कै छबि नाजुक कोमलता ।
हा हा रूह इत क्यों रही, मुख देख मासूक बका ।। ९२

बड़ी रूहें देख्या हक को, हकें देख्या सामी नैन ।
हा हा बात करते जीव क्यों रह्या, एह देख नैन की सैन ।। ९३

भौंह स्याह नैन अनियां कहीं, कह्या जोड़ गौर अंग ।
हा हा तन हुकमें क्यों रख्या, हुआ कतल न होते जंग ।। ९४

देखी निरमलता दंतन की, न आवे मिसाल लाल मानिक ।
ज्यों देखत बीच चसमो, त्यों देखी जाए जुबां मुतलक ।। ९५

कबूं हीरा कबूं मानिक, अंग रंग सोभा कै लेत ।
दोऊ निरमल ऐनक ज्यों, परे होए सो देखाई देत ।। ९६

लालक इन अधुर की, हक कबूं दिलों देखावत ।
बंध बंध जुदे होए ना पड़े, मेरा हैड़ा निपट[2] सखत ।। ९७

हक मुख सलूकी क्यों कहूं, छबि सोभित गौर गाल ।
बरनन करते ए सूरत, हा हा लगी न हैड़े भाल ।। ९८

---

१. हठ । २. बिल्कुल ।

मैं कहीं जो मुख माड़नी, और कह्या मुख सलूक ।
ए केहेते सलूकी मेरा अंग, हा हा हो न गया टूक टूक ॥ ९९

कही गौर हरवटी हक की, लांक पर लाल अधुर ।
कही दंत जुबां बीड़ी मुख, हा हा रूह क्यों रही सुन मधुर ॥१००

लाल अधुर कहे मासूक के, सो दिलें भी देखी लालक ।
ए देख लोहू मेरा क्यों रह्या, सूक न गया माहें पलक ॥१०१

कंठ खभे बंध बंध का, नख सिख किया बरनन ।
हा हा जीवरा मेरा क्यों रह्या, टूटचा न अंतसकरन ॥१०२

बरनन किया अरस हक का, मैं हुकम लिया दिल ल्याए ।
केहेते हैड़े की सलूकी, हा हा मेरी छाती न गई चिराए ॥१०३

हकें अरस किया दिल मोमन, ए मता आया हक दिल से ।
हकें दिल दिया किया लिख्या, हा हा मोमन डूब न मुए इनमें ॥१०४

हार कहे हैड़े पर, जोत भरी जिमी आसमान ।
हा हा ए मुरदा जल ना गया, तूर एता होते सुभान ॥१०५

कटि पेट पांसे कहे हक के, ले दिल के बीच नजर ।
हा हा ख्वाबी तन क्यों रह्या, ए दिल को लेकर ॥१०६

कांध पीठ लीक सलूकी, कही इलमें दिल दे ।
हा हा हुकमें ए तन क्यों रख्या, जो हुकम बैठा हुज्जत रूह ले ॥१०७

अरस जवेर की क्यों कहूँ, देखे बाजू बंध के नंग ।
जिमी से आसमान लग, हा हा जीव कतल[1] न हुआ देख जंग ॥१०८

हक हाथों की बरनन करी, मच्छे कोनी कलाई कांड़े ।
ए सुन जीव क्यों रहत है, ले ख्वाब झूठे भांड़े[2] ॥१०९

पोहोंचे लीकें हथेलियां, छबि अंगुरियां नख तेज ।
देखो अचरज मुख केहेते, हो न गया रेजा रेज ॥११०

---

१. काट डालना । २. बर्तन ।

रंग सलूकी भूखन, देख कांड़ों हाथों के ।
ए जोत ले जीव ना उड़या, हा हा बड़ा अचंभा ए ॥१११
कै रंग इजार मासूक की, दावन में झांई लेत ।
छेड़े पटुके दावन पर, हा हा दिल अजूं न घाव देत ॥११२
चरन कमल मासूक के, चित्त में चुभें जिन ।
ए छबि सलूकी भूखन, क्यों कर छोड़े मोमन ॥११३
ए चरन आवें जिन दिल में, सो दिल अरस मुतलक ।
कै मुतलक बातें अरस की, दिल सब विध हुआ बेसक ॥११४
क्यों कहूँ खूबी चरन की, और खूबी भूखन ।
अदभुत सोभा हक की, क्यों न होए अरस तन ॥११५
चकलाई इन चरन की, भूखन छबि अनूपम ।
दिल ताही के आवसी, जाको मुतलक मेहेर खसम ॥११६
जो होवे अरवा अरस की, सो इन कदम तले बसत ।
सराब चढ़े दिल आवत, सो रूह निस दिन रहे अलमस्त ॥११७
निमख न छोड़े चरन को, मोमन रूह जो कोए ।
निस दिन रहे खुमार[1] में, आवत है चरन बोए ॥११८
मासूक के चरनों का, किया बेवरा बरनन ।
जीव उड़या चाहिए केहेते लीक, हा हा क्यों रहे मोमन तन ॥११९
हाथ पांउं मुख हैयड़ा, बस्तर भूखन हक सूरत ।
ए ले ले अरस बारीकियां, हा हा रूह क्यों न जागत ॥१२०
जो जोत कहूँ अंग नंग की, देऊँ निमूना नरम पसम ।
ए तो अरस पत्थर या जानवर, सो क्यों पोहोंचे पर आतम ॥१२१
जो पर आतम पोहोंचे नहीं, सो क्यों पोहोंचे हक अंग को ।
खेलौने और खावंद, बड़ी तफावत इन मों ॥१२२

१. नशा ।

जित आदि अंत न पाइए, तित तेहेकीक होए क्यों कर ।
इत सबद फना का क्या कहे, जित पाइए न अव्वल आखर ॥१२३
ए निरने करना अरस का, तिन में भी हक जात ।
इत नूर अकल भी क्या करे, जित लुदंनी गोते खात ॥१२४
जवेर पैदा जिमीय से, सो भी नहीं कह्या अरस में ।
चौदे तबक उड़ावे अरस कंकरी, इत भी बोलना नहीं तार्थे ॥१२५
जित चीज नई पैदा नहीं, ना कबूं पुरानी होए ।
तित सबद जुबां जो बोलिए, सो ठौर न रही कोए ॥१२६
जो कहूँ हक दिल माफक, तो इत भी सबद बंधाए ।
तार्थे अरस बारीकियां, सो किसी विध कही न जाए ॥१२७
चुप किए भी ना बने, हुकम इलम आया इत ।
और काम इनको नहीं, जो अरस अरवा लै हुज्जत ॥१२८
इलम कह्या जो लुदंनी, सो तो हक का मुतलक ।
इत मोमन मिल पूछसी, क्यों रही रूहों को सक ॥१२९
जो अरस बातें सक हमको, तो हकें क्यों कह्या अरस कलूब[1] ।
मोमन कहे बीच वाहेदत, इन आसिकों हक मेहेबूब ॥१३०
मेहेबूब आसिक एक कहे, वाहेदत भी एक केहेलाए ।
अरस भी दिल मोमन कह्या, ए तो मिली तीनों विध आए ॥१३१
और भी कहूँ सो सुनो, मोमन अरस से आए उतर ।
इलम दिल हकें अपना, अब इनों जुदे कहिए क्यों कर ॥१३२
फुरमान आया इनों पर, अहंमद इनों सिरदार ।
हक बिना कछुए ना रखें, इनों दुनी करी मुरदार ॥१३३
ए सब बुजरगी इनों की, क्यों जुदे कहिए वाहेदत ।
इने *कुंनकी दुनी क्या जानही, रूहें अरस हक निसबत ॥१३४

१. दिल ।

तिन से अरस मता क्यों छिपा रहे, जो दिल अरस कह्या मोमन ।
एक जरा न छिपे दिल से, ए देखो फुरमान वचन ॥१३५

बका पट किने न खोलिया, अव्वल से आज दिन ।
हा हा तन न हुआ टुकड़े, करते जाहेर ए वतन ॥१३६

अरस बका द्वार खोल के, करी जाहेर हक सूरत ।
अंग मेरा रह्या अचरजें, द्वार खोलते वाहेदत ॥१३७

मेरी रूहें कह्या आगे रूहन, सुन्या मैं हक के मुख इलम ।
ए बात केहेते तन ना फटचा, हा हा ए देख्या बड़ा जुलम ॥१३८

यों चाहिए मोमन को, रूह उड़े सुनते हक नाम ।
बेसक अरस से होए के, क्यों खाए पिए करे आराम ॥१३९

हक अरस याद आवते, रूह उड़ न पोहोंचे खिलवत ।
बेसक होए पीछे रहे, हा हा कैसी ए निसबत ॥१४०

क्यों न खेलावें खिलवत में, रूह अपनी रात दिन ।
हक इलमें अजूं[1] जागी नहीं, कहावें अरस अरवा तन ॥१४१

बैठ इन ख्वाब जिमीय में, कहे अरस अजीम का बातन ।
हडी हडी जुदी होए ना पड़ी, तो कैसी रूह मोमन ॥१४२

याद न जेता हक अरस, एही मोमनों बड़ा कुफर ।
हक वाहेदत इलम चीन्ह के, अजूं क्यों देखे दुनी नजर ॥१४३

सुनते नाम हक अरस का, तबहीं अरवा उड़ जात ।
हा हा ए बल देख्या हुकम का, अजूं एही करावे बात ॥१४४

बस्तर और भूखन कहे, हक अंग वाहेदत के ।
ए केहेते बारीकियां अरस की, हा हा तन उड़चा न ख्वाबी ए ॥१४५

बेसक इलम ले दिल में, बरनन किया बेसक ।
हुएँ बेसक रूह ना उड़ी, हा हा पोहोंची न खिलवत हक ॥१४६

---

१. अब तक ।

कहे इलम रूहें इत हैं नहीं, है हुकम तो हक का ।
हुएँ बेसक हुकम क्यों रहे, ले हुज्जत रूह बका ॥१४७

बेसक हुए जो अरस से, और बेसक हुए वाहेदत ।
मुतलक इलम पाए के, हा हा हुकम क्यों रह्या ले हुज्जत ॥१४८

नैन रहे नेन देख के, एही बड़ा जुलम ।
न जानों क्यों सुरखरू[1], करसी हक हुकम ॥१४९

ए बिरहा सुन श्रवन रहे, लगी न सोखा कान ।
हा हा वजूद न गल गया, सुन बिरहा हादी सुभान ॥१५०

संध[2] संध टूटी नहीं, सुनते बिरहा सुकन ।
रोम रोम इन तन के, क्यों न लगी अंग अगिन ॥१५१

बातें इन विरह की, मैं गाई अंग अंग कर ।
अचरज इन निसबतें, अरवा न गई जर बर ॥१५२

मेरे अंग सबे उड़ ना गए, सब देख हक के अंग ।
सेज सुरंगी हक छोड़ के, रही पकड़ मुरदे का संग ॥१५३

क्यों न उड़ी अकल अँग थें, जो बरनन किया अरस हक ।
ए पूरी हांसी बीच अरस के, माहें गिरो आसिक ॥१५४

करी हांसी हकें हम पर, ता विधसों चले न किन ।
अब सो क्योंए न बनि आवही, जो रोऊँ पछताऊँ रात दिन ॥१५५

सोई देखी जो कछू देखाई, अब देखसी जो देखाओगे ।
हँसो खेलो जानों त्यों करो, बीच अरस खिलवत के ॥१५६

मोमन दिल अरस कर के, आए बैठे दिल माहें ।
खुदी रूहों इत ना रही, इत गुनाह मोमनों सिर नाहें ॥१५७

फेर हिसाब कर जो देखिए, तो गुनाह रूहों आवत ।
ए बेवरा है कलस में, मोमन लेसी देख तित ॥१५८

---

१. उऋण । २. जोड़ ।

रूहें मोमन इत आईं नहीं, तिन वास्ते नहीं गुना ।
पर एता गुनाह लगत है, इनों में जेता हिस्सा अरस का ॥१५९

महामत कहें मोमनों पर, करी हांसी हुकमें ।
ना तो अरवाहें इत क्यों रहें, बेसक होए हक से ॥१६०

प्रकरण ॥ २२ ॥ चौपाई ॥ १६०६ ॥

### मोमन[1] दुनीका[2] बेवरा

अरवा आसिक जो अरस की, जाके हिरदें हक सूरत ।
निमख न न्यारी हो सके, मेहेबूब की सूरत ॥ १

और न पावे पैठने, इत बका बीच खिलवत ।
बका अरस अजीम में, कौन आवे विना निसबत ॥ २

और तो कोई है नहीं, विना एक हक जात ।
जात माहें हक वाहेदत, हक हादी गिरो केहेलात ॥ ३

बस्तर भूखन पेहेर के, मेरे दिल में बैठे आए ।
हकें सोई किया अरस अपना, रूह टूक टूक होए बलि जाए ॥ ४

दे बड़ाई मेरे दिल को, हक बैठे अरस कर ।
अपनी अंगना जो अरस की, रूह क्यों न खोले नजर ॥ ५

दम न छोड़े मासूक को, मेरी रूह की एह निसबत ।
क्यों बातें याद दिए न आवहीं, जो करियां बीच खिलवत ॥ ६

जाको अनभव होए इन सुख को, ताए अलबत[3] आवे याद ।
अरस की रूहों को इस्क का, क्यों भूले रस मीठा स्वाद ॥ ७

रूह केहेलाए छोड़े क्यों अपना, क्यों याद दिएँ जाए भूल ।
हकें याही वास्ते, भेज्या अपना नूरी रसूल ॥ ८

हम अरवाहें जो अरस की, तिन सब अंगों इस्क ।
सो क्यों जावे हमसे, जो आड़ा होए न हुकम हक ॥ ९

---

१. ब्रह्म सृष्टि । २. दुनिया के जीव । ३. अवश्यही ।

ए निसबत नूरजमाल से, जो रूह को पोहोंचे रंचक ।
तो लाड़ अरस अजीम के, क्यों भूले मुतलक ॥ १०
पर हुआ हाथ हुकम के, जो हुकम देवे याद ।
हुकमें पेहेचान होवहीं, हुकमें आवे स्वाद ॥ ११
कबूल करी हम हांसी को, और अपनी मानी भूल ।
सब सुध पाई कुंजी से, और फुरमान रसूल ॥ १२
अब हुई पेहेचान हुकम की, एक जरा रही न सक ।
बोझ हम सिर ना रह्या, हक इलमें देखाया मुतलक ॥ १३
अब भूल हमारी जरा नहीं, और हक कर थके हांसी ।
बात आई सिर हुकम के, अब काहे विलखे रूह खासी ॥ १४
देखना था सो सब देख्या, हक इस्क और पातसाई ।
और हांसी रूहों इस्क पर, सब देखी जो देखाई ॥ १५
क्यों न होए हुकम को हुकम, जो पेहेले किया इप्तदाए ।
हुई उमेद सब की पूरन, अब क्यों न दीजें रूहें जगाए ॥ १६
लाड़ हमारे अरस के, हम से न छूटें छिन ।
अकस हमारे के अकस, क्यों लगे दाग तिन ॥ १७
अब जो दिन राखो खेल में, सो याही के कारन ।
इस्क दे बोलाओगे, ऐसा हुकमें देखें मोमन ॥ १८
एक तिनका हमारे अरस का, उड़ावे चौदे तबक ।
तो क्यों न उड़े रूह अकसें, बल इलम लिए हक ॥ १९
जो कदी कहोगे रूहें इत ना हुती, ए तो हुकमें किया यों ।
तो नाम हमारे धर के, हुकम करे यों क्यों ॥ २०
जो कदी हम आइयां नहीं, तो नाम तो हमारे धरे ।
और तिन में हुकम हक का, हक तासों ऐसी क्यों करें ॥ २१
अब तो सब ही करोगे, टालने हमारे दाग ।
तुम रखियां ऐसा जान के, ना तो क्यों रहें पीछे हम जाग ॥ २२

हुकम पर ले डारोगे, तेहेकीक[1] कराओगे दिल ।
दाग अकसों क्यों मिटे, जो हमारे नामों किए सब मिल ।। २३

जो कदी ए दाग धोए डारोगे, मनसा बाचा करमन ।
अकस हमारे नाम के, कदी रूहें बातें तो करसी वतन ।। २४

इन बात की हांसियां, अकस नाम भी क्यों सहे ।
हक विरहा बात सुन के, झूठी देह पकड़ क्यों रहे ।। २५

सो मैं गाया याद कर कर, कबूं पाया न विरहा रस ।
नाम सहें न हुकम सहे, ना कछू सहें अकस ।। २६

और हाँसी सब सोहेली[2], पर ए हांसी सही न जाए ।
अकस भी ना सेहे सकें, जब इलमें दिए पढ़ाए ।। २७

ना रह्या इस्क अपना, ना रह्या वतन सो ।
हक सों भी ना रह्या, तो कहा कहूँ हुकम को ।। २८

तुम हीं आप देखाइया, पेहेचान तुम इलम ।
तुम हीं दई हिम्मत, तुम हीं पकड़ाए कदम ।। २९

तुम हीं इश्क देत हो, तुम हीं दिया जोस ।
सोहोबत भी तुम हीं दई, तुम हीं ल्यावत माहें होस ।। ३०

तुम हीं उतर आए अरस से, इत तुम हीं कियो मिलाप ।
तुम हीं दई सुध अरस की, ज्यों अरस में हो आप ।। ३१

तुम हीं देखाई निसबत, तुम हीं देखाई खिलवत ।
तुम हीं देखाया सुख अखंड, तुम हीं देखाई वाहेदत ।। ३२

खेल भी तुम देखाइया, दई फरामोसी भी तुम ।
तुम हीं जगावत जुगतें, कोई नहीं तुम बिना खसम ।। ३३

काहूँ तरफ न देखाई अपनी, यों रहे चौदे तबक सें दूर ।
सो सहेरग सें नजीक तुम हीं, हमको लिए कदमों हजूर ।। ३४

---

१. निश्चित । २. सहने योग्य ।

मैं भी इत हों नहीं, ए भी कहावत तुम ।
जब दूजे कर बैठाओगे, तब खसम को कहेंगे हम ।। ३५

दूजे तो हम हैं नहीं, ए बोले बेवरा वाहेदत का ।
ज्यों खेलावत त्यों खेलत, ना तो क्या जाने बात बका ।। ३६

ना तो नीद उड़े तन सुपना, ए रहेवे क्यों कर ।
देखो अचरज अदभुत, धड़ बोले सिर बिगर ।। ३७

धड़ एक दोए सुकन[१] कहे, तित अचरज बड़ा होए ।
ए तन बिन बोले रूह अरस की, कहे बानी बिना हिसाबें सोए ।। ३८

सो भी बानी नहीं फना मिने, अरस बका खोल्या द्वार ।
जो अब लग किने न खोलिया, कै हुए पैगम्बर अवतार ।। ३९

अरस रूहें पेहेचान जाहेर, इनों कौल फैल हाल पार ।
सोई जानें पार वतनी, जाको बातून रूहसों विचार ।। ४०

सो पट बका खोलिया, और बोले न बका विन ।
इनों पीठ दै चौदे तबकों, करें जाहेर अरस रोसन ।। ४१

चौदे तबक की दुनी में, बका तरफ न पाई किन ।
सो सबों ने देखिया, किया जाहेर बका दिन ।। ४२

बेवरा किया फुरमान में, और हदीसें महंमद ।
जिने खुली हकीकत मारफत, सोई जाने बातून सबद ।। ४३

महंमद सिखापन ए दई, जो उतरीं अरवाहें सिरदार ।
हक बका सिर लीजियो, छोड़ो दुनियां कर मुरदार[२] ।। ४४

महंमद कहे ऐ मोमनों, ए अरस अरवाहों रीत ।
हक बका ल्यो दिल में, छोड़ो दुनियां कर पलीत[३] ।। ४५

अरस रूहें मोमनों, लई महंमद हिदाएत ।
चौदे तबकों पीठ दे, आए माहें हक खिलवत ।। ४६

---

१. बचन । २. नश्वर, मृतक शरीर । ३. अपवित्र ।

कहे महंमद अरस रूहें, तुम मछली हौज कौसर ।
जो जीव दुनी मुरदार के, सो रहें ना तिन बिगर ॥ ४७

अरस आला दिल मोमन, और दुनी दिल सैतान ।
दे साहेदी महंमद हदीसें, और हक फुरमान ॥ ४८

कहे कुरान दूजा कछुए नहीं, एक हक न्यामत वाहेदत ।
और हराम सब जानियो, जो कछू दुनी लज्जत ॥ ४९

दुनी दोजख दरिया मछली, पातसाह सैतान दिल पर ।
हराम खात है अबलीस, तिन तले दुनी का घर ॥ ५०

औलिया लिल्ला दोस्त, मोमन बीच खिलवत ।
ए अरवाहें अरस की, इनों दिल में हक सूरत ॥ ५१

तो अरस कह्या दिल मोमन, जो काएम हक वतन ।
रूहें कही दरगाह की, जित असल मोमनों तन ॥ ५२

आदम नसल हवा विना, ज्यों मछली जल विन ।
यों असल न छूटे अपनी, कही जुलमत दुनी वतन ॥ ५३

मोमन अरस बका बिना, रेहे ना सकें एक पल ।
जो हौज कौसर की मछली, तिन हैयाती[1] वह जल ॥ ५४

मोमन और दुनी के, कह्या जाहेर बड़ा फरक ।
करे दुनी आहार फना मिने, अरस मोमन बका हक ॥ ५५

आए मोमन नूर विलंद से, और दुनियां कही जुलमत[2] ।
यों जाहेर लिख्या फुरमान में, किन पाई न तफावत ॥ ५६

ए तो जाहेर कुरान पुकारही, और महंमद हदीस ।
ए बेवरा क्या जानहीं, जिन नसलें लिख्या अबलीस ॥ ५७

जो मोमन होते इन दुनी के, तो करते दुनी की बात ।
चलते चाल इन दुनी की, जो होते इन की जात ॥ ५८

---

१. अमरत्व । २. अन्धकार ।

जो यारी होती मोमन दुनी सों, तो दुनीको न करते मुरदार ।
रूहें इनसे जुदी तो हुईं, जो हम नहीं इन के यार ॥ ५९

दुनी चलना इन जिमी का, चलना हमारा आसमान ।
मोमन दुनी बड़ी तफावत, ए जानें मोमन विध सुभान ॥ ६०

हादी मिल्या बोहोतों को, कोई ले न सक्या हादी चाल ।
चलना हादी का सोई चले, जो होवे इन मिसाल ॥ ६१

चलना हादी के पीछल, रखना कदम पर कदम ।
आदमी चले न चाल रूह की, इत दुनी मार न सके दम ॥ ६२

आदमी छोड़ वजूद को, चल सके न रूह की चाल ।
दुनियां बंदी हवाएकी, मोमन बंदे नूरजमाल ॥ ६३

रूहें आइयां बीच दुनी के, धरे नासूती वजूद ।
रूहें चाल न छोड़ें अपनी, जो कदी आइयां बीच नाबूद[1] ॥ ६४

दुनी रूहें एही तफावत, चाल एक दूजे की लई न जाए ।
रूह मोमन पर[2] ईमान के, दुनी पर विन क्यों उड़ाए ॥ ६५

करना दीदार हक का, एही मोमनों ताम[3] ।
पानी पीवना दोस्ती हक की, इनों एही सुख आराम ॥ ६६

मोमन तब लग बंदगी, जो लों आया नहीं इस्क ।
इस्क आए पीछे बंदगी, ए जानें मासूक या आसिक ॥ ६७

आसिक की एही बंदगी, जाहेर न जाने कोए ।
और आसिक भी न बूझही, एक होत दोऊ से सोए ॥ ६८

ए जाहेर है तफावत, जो कर देखो सहूर ।
दुनियां सहूर भी ना कर सके, क्या करे विना जहूर ॥ ६९

मोमन खाना अरस में, हुआ दुनी जिमी में आहार ।
दुनी रोजगार नासूती, जो मोमनों करी मुरदार ॥ ७०

---

१. नश्वर दुनिया । २. पंख । ३. अहार ।

मोमन उतरे नूर बिलंद से, कही दुनी आई जुलमत ।
जो देखो वेद कतेब को, तो जाहेर है तफावत ॥ ७१

मोमन लिखे आसमानी, दुनियां जिमी की कही ।
ना तो वजूद दोऊ आदमी, ए तफावत क्यों भई ॥ ७२

कहे पर इस्क ईमान के, सो मोमन छोड़ें न पल ।
सो दुनी को है नहीं, उत पांउं न सके चल ॥ ७३

हकें फुरमाया चौदे तबक, है चरकीन[1] का चरकीन ।
सो छोड़ें एक मोमन, जिनमें इस्क आकीन ॥ ७४

सो दुनी को है नहीं, जासों उड़ पोहोंचे पार ।
ईमान इस्क जो होवही, तो क्यों रहे बीच मुरदार ॥ ७५

ऊपर तले अरस ना कह्या, अरस कह्या मोमन कलूब[2] ।
ए जानें रूहें अरस की, जिन का हक मेंहेबूब ॥ ७६

दुनी दिल मजाजी कह्या, मोमन हकीकी दिल ।
विना तरफ दुनी क्यों पावही, जो अरसें रहे हिल मिल ॥ ७७

*वेद *कतेब पढ़ पढ़ गए, किन पाई न हक तरफ ।
खबर अरस बका की, कोई बोल्या न एक हरफ ॥ ७८

इंतहाए[3] नहीं अरस भोम का, सब चीजों नहीं सुमार ।
ऊपर तले माहें बाहेर, दसो दिसा नहीं पार ॥ ७९

तो भी दुनियां अरस देखे नहीं, यों देखावत कतेब वेद ।
पावे न *लाम[4] इलम बिना, कोई इन विध का है भेद ॥ ८०

सुध दई महंमदने, अरस पाइए मोमन बीच दिल ।
जिनपें इलम हक का, दिल अरस रहे हिल मिल ॥ ८१

दुनी जाने मोमन दुनी से, ए नहीं बीच इन खलक ।
एता भी ना समझे, पुकारत कलाम हक ॥ ८२

---

१. निन्दित, गंदा । २. दिल । ३. सीमा । ४. श्री देवचन्द्र जी का ज्ञान ।

कहे मोमन उतरे अरस से, इनों दिल में हक सूरत ।
ए अरस में अरस इन दिल में, यों हिल मिल बीच खिलवत ।। ८३

खुली मुसाफ हकीकत, तिन इतहीं हक वाहेदत ।
अरस बरकत सब इतहीं, इतहीं हक निसबत ।। ८४

इतहीं न्यामत मोमनों, सब खुली जो इसारत ।
इतही मेला रूहों असल, इतहीं रूहों क्यामत ।। ८५

ए बारीक बातें रूह मोमन, सो समझें रूह मोमन ।
सो आदमी कहे हैवान, जो इस्क ईमान बिन ।। ८६

दुनी जाने तन मोमन, बैठे हैं हम माहें ।
बोलत हैं बानी बका, ए रूहें तन दुनी में नाहें ।। ८७

रूहें तन माहें अरस बका, और अरस में बैठे बोलत ।
तो नजीक कहे सेहेरग से, देखो मोमन हक हिकमत ।। ८८

इनों तन असल अरस में, इनों दिल में जो आवत ।
सोई इनों के अकस[1] में, सुकन सोई निकसत ।। ८९

मोमन तन असल से, अरस मता कछू न छिपत ।
तो बका सूरज फुरमान में, कह्या फजर होसी इत ।। ९०

ए बारीक बातें अरस की, जो गुजरी माहें वाहेदत ।
हक हादी और मोमन, सो जाहेर हुई खिलवत ।। ९१

तो दुनियां होसी हैयाती[2], ले मोमनो बका बरकत ।
ए बात दुनी क्यों बूझही, ओ जात हक निसबत ।। ९२

ए हक मता रूह मोमन, इनों ताले[3] लिखी न्यामत ।
सो क्यों कर दुनियाँ समझे, कही असल जाकी जुलमत ।। ९३

आब—हैयाती[4] बका मिने, झूठी जिमी आवे क्यों कर ।
दिल आवे अरस मोमन के, और न कोई कादर ।। ९४

१. प्रतिबिंब । २. अखंड । ३. भाग्य । ४. अमृत ।

ए मोहोरे जो खेल के, झूठे खाकी नाबूद ।
आब हैयाती पीय के, क्यों होसी बका बूद[1] ॥ ९५

ए मोहोरे पैदा जो खेल के, हक मोमनों देखावत ।
याही बराबर अकस[2], मोमनों के बका बोलत ॥ ९६

जो तन अरस में मोमनों, सो मता अकसों पोहोंचावत ।
सो अकसों से बीच दुनी के, मोमन मेहेर करत ॥ ९७

आब हैयाती इन विध, अरस से रूहें ल्यावत ।
ए बरकत रूह अल्लाह की, यों अरस मता आया इत ॥ ९८

और बरकत महंमद की, साहेदी देत फुरमान ।
तिन साहेदी से ईमान, पोहोंच्या सकल जहान ॥ ९९

ए इलम जानें रूहें अरस की, और न काहूँ खबर ।
खेल मोहोरे तो कछू हैं नहीं, एक जरे भी बराबर ॥१००

ए खाकी बुत सब नाबूद, इनको काएम किए मोमन ।
आब—हैयाती[3] अरस का, पिलाए के सबन ॥१०१

ऐसा मता मोमन, अरस सेती ल्यावत ।
बुत खाकी सरभर रूहों की, समझे बिना करत ॥१०२

अरस इलम हुआ जाहेर, जब सब हुए रोसन ।
तब अंधेरी और उजाला, जुदे हुए रात दिन ॥१०३

अरस तो दूर है नहीं, कहें दोऊ कतेब वेद ।
अरस में रूहें दुनी फना जिमी, ए इलम लुदंनी जानें भेद ॥१०४

पर ए सुध दुनी में नहीं, तो क्या जाने कित अरस ।
क्यों हक क्यों हादी रूहें, क्यों दिल मोमन अरस परस ॥१०५

बका जिमी जल तेज वाए, और बका आसमान ।
आपन बैठे वाही अरस में, पर नजरों देखें जहान ॥१०६

---

१. अस्तित्व । २. प्रतिबिंब । अमृत (तारतम वाणी) ।

जहान तो कछू है नहीं, है अरस बका हक ।
हक इलम ले देखिए, तो होइए अरस माफक ॥१०७

नाबूद कही जो दुनियां, तिनकी नजर भी नाबूद ।
अरस रूहें हक इलमें, ए आसिकें देखे मेहेबूब ॥१०८

इत आंखें चाहिए हक इलम की, तो हक देखिए नैना बातन ।
नैना बातून खुलें हक इलमें, ए सहूर है बीच मोमन ॥१०९

जिन बेचून बेचगून नजरों, ताए खबर न इलम हक ।
हक इलम देखावे मासूक, इन हाल मोमन कहे आसिक ॥११०

कहे पांच तत्व ख्वाब के, तामें बुजरग केहेलाए के लाख ।
पर अरस बका हक ठौर की, कहूं जरा न पाइए साख ॥१११

ख्वाब पैदा बका जिमी से, पर देखे न बका को ।
एक जरा बका आवे ख्वाब में, तो सब ख्वाब उड़े तिनसों ॥११२

ना तो ख्वाब जिमी बका जिमी सों, एक जरा न तफावत ।
पर झूठ न रहे सांच नजरों, आंखें खुलते ख्वाब उड़त ॥११३

ए जाहेर दुनी जो ख्वाब की, करे मोमनों की सरभर ।
हक देखें जो ना टिके, ताए दूजा कहिए क्यों कर ॥११४

हक देखें जो खड़ा रहे, तो दूजा कह्या जाए ।
दम ख्वाबी दूजे क्यों कहिए, जो नीद उड़े उड़ जाए ॥११५

ए इलमें सुनो अरस बारीकियां, जो सहे अरस हक रोसन ।
ताए भी दूजा क्यों कहिए, कहे कुल्ल मोमन वाहेद तन ॥११६

हक हादी रूहें मोमन, ए अरस में वाहेदत ।
पर ए जानें अरवाहें अरस की, जो रूहें हक खिलवत ॥११७

इतहीं कजा होएसी, इतहीं होसी भिस्त ।
दोजख इतहीं होएसी, दुनी तले नूर नजर क्यामत ॥११८

दम ख्वाबी देखें क्यों बका को, कर देखो सहूर ।
ख्वाब दुनी तब क्यों रहे, जब हुआ दिन बका जहूर ॥११९

दुनी मगज न जाने मुसाफ का, तो देखे अरस को दूर ।
जो जानें हक इलम को, तो देखें मोमन हक हजूर ॥१२०

भिस्त दोजख दोऊ जाहेर, ए लिख्या माहें फुरमान ।
तिन छोड़ी दुनियां हराम कर, जिनों हुई हक पेहेचान ॥१२१

तो तरक करी इनों दुनियां, जो अरस दिल मोमन ।
दुनी जलसी इत दोजख, जब दिन हुआ बका रोसन ॥१२२

हकें दिया लुदंनी जिनको, सो बैठे अरस में बेसक ।
जब कौल पोहोंच्या सरत का, तब होसी दुनी इत दोजख ॥१२३

अरस नासूत दोऊ इतहीं, होसी जाहेर अपनी सरत ।
देखें मोमन दुनी जलती, बीच बैठे अपनी भिस्त ॥१२४

काफर देखें मोमनों भिस्त में, आप पड़े बीच दोजख ।
सुख मोमनों का देख के, जलसी आग अधिक ॥१२५

मोमन दुनी दोऊ आदमी, हुई तफावत क्यों कर ।
ए बेवरा है फुरमान में, पर कोई पावे न हादी बिगर ॥१२६

बीते नब्बे साल हजार पर, मुसाफ मगज न पाया किन ।
तो गए एते दिन रात में, हुआ जाहेर न बका दिन ॥१२७

मोमन उतरे अरस से, इनों दिल में हक सूरत ।
तो अरस कह्या दिल मोमन, खोली हक हकीकत मारफत ॥१२८

दुनी दिल पर अबलीस, और पैदास कही जुलमत ।
काम हाल इनों अंधेर में, हवा को खुदा कर पूजत ॥१२९

कुलफ हवा का दुनी के, दिल आंखों कानों पर ।
ईमान क्योंए न आए सके, लिख्या फुरमान में यों कर ॥१३०

कौल हाल मोमन के नूर में, रूह अल्ला आया इनों पर ।
दिया इलम लुदंनी इन को, खोलने मुसाफ खातर ॥१३१

राह तौहीद पाई इनों नें, जो राह मुस्तकीम—सरात[१] ।
ए मेहेर मोमनों पर तो भई, जो तले कदम हक जात ॥१३२

हुई लानत[२] *अजाजील को, सो उलट लगी सब जहान ।
*अबलीस लिख्या दुनी नसलें, कही ए विध माहें कुरान ॥१३३

देसी पैगम्मर की साहेवी, गिरो अदल से उठाई जे ।
करी हकें हिदायत इन को, बहत्तर नारी एक नाजी ए ॥१३४

तन मोमन अरस असल, आड़ी नीद हुई फरामोस ।
सो नीद वजूद ले उड़या, तब मूल तन आया माहें होस ॥१३५

दुनी तन जुलमत से, इन की असल न बका में ।
जब फरामोसी उड़ी जुलमत, तब जरा न रह्या दुनी सें ॥१३६

अरवाहें जो सुपन की, देखें न जागृत को ।
जो होए जागृत में असल, सो आवें जागृत मों ॥१३७

कही दुनियाँ हुई कुंन सों, सो जुलमत उड़े उड़त ।
ताको भिस्त देसी हादी हुकमें, गिरो मोमिनों की बरकत ॥ १३८

सिफत करेंगे सब कोई, दुनी भिस्त की जे ।
हक हादी रूहें वाहेदत, भिस्त हुई इनों वास्ते ॥१३९

खुदाए कर पूजैगे, बका मिनें बेसक ।
पाक होसी हक इलम सों, करें बंदगी होए आसिक ॥१४०

मोमन उतरे अरस अजीम से, दुनी तिन सों करे जिद ।
ए अरस से आये हक पूजत, दुनी पूजना हवा लग हद ॥१४१

दुनियां दिल अबलीस कह्या, हक अरस दिल मोमन ।
ए जाहेर किया बेवरा, है कुरान में रोसन ॥१४२

अबलीस सोई बतावसी, जिन सों होसी दोजख[३] ।
बोली चाली मोमन अरस की, जासों पाइए बका हक ॥१४३

---

१. सीधा रास्ता, पुल जो बाल से बरीक और तलवार से तेज । २. धिक्कार । ३. नरक ।

बैठे बातें करें अरस की, सोई भिस्त भई बैठक ।
दुनी बातें करे दुनी की, आखर तित दोजख ॥१४४

ए बोहोत भाँत है बेवरा, मोमन और दुनियाँ ।
मोमन नजर बका मिनें, दुनी नजर बीच फना ॥१४५

कहें महामत अरस अरवाहें, किया पेहेले बेवरा फुरमान ।
जिन हुई हक हिदायत, सोई बातून करें बयान ॥१४६

॥ प्रकरण ॥ २३ ॥ चौपाई ॥ १७५२ ॥

## हकीकत[१] मारफत[२]

सोई कहूँ हकीकत मारफत, जो रखी थी गुझ रसूल ।
वास्ते अरस रूहन के, जिन जावें आखर भूल ॥ १

फिरके बनी असराईल, हुए पीछे मूसा मेहेतर[३] ।
एक नाजी[४] नारी सत्तर, कहे फुरमान यों कर ॥ २

याही भांत ईसा के, फिरके बहत्तर कहे ।
एक नाजी तिन में, और नारी इकहत्तर भए ॥ ३

तेहत्तर फिरके कहे महंमद के, बहत्तर नारी एक नाजी ।
नारी जलसी आग में, नाजी हिदायत हक की ॥ ४

जाहेर पेहेचान है तिन की, ले चलत माएने बातन ।
कौल फैल चाल रूह नजर, इनों असल बका अरस तन ॥ ५

फुरमान आया जिन पर, ए सोई जानें इसारत ।
लें मारफत बैठे अरस में, बीच बका खिलवत ॥ ६

इलम कहे खेल उड़ जावे, बका कंकरी के देखे ।
तो अरस रूहों की नजरों, ख्वाब रेहेवे क्यों ए ॥ ७

तो मोमन तन में हुकम, फैल करे लिए रूह हुज्जत ।
वास्ते हादी रूहन के, ए हकें करी हिकमत ॥ ८

---

१. सच्चाई, सच्चा ज्ञान । २. पूर्ण पहचान । ३. महान । ४. परमात्मा से प्रेम करने वाले ।

तो कह्या अरस दिल मोमन, ना मोमन जुदे अरस से ।
पर ए जानें अरवाहें अरस की, जो करी बेसक हक इलमें ॥ ९

बसरी मलकी और हकी, तीन सूरत महंमद की जे ।
ए तीनों सूरत दे साहेदी, आखर अरस देखावें ए ॥ १०

रूहें हक अरस नजरों, हुकम नजर खेल माँहि ।
अरस नजीक रुहों को खेल से, इत धोखा जरा नाँहि ॥ ११

तो हक सेहेरग से नजीक, कोई जाने ना लुदंनी बिन ।
एही लिख्या फुरमान में, यों ही रूह अल्ला कहे बचन ॥ १२

ज्यों ज्यों होवे अरस नजीक, खेल त्यों त्यों होवे दूर ।
यों करते छूटया खेल नजरों, तो रूहें कदम तलें हजूर ॥ १३

नजर खेल से उतरती देखिए, त्यों अरस नजीक नजर ।
यों करते लैल मिटी रूहों, दिन हुआ अरस फजर ॥ १४

ए जो देत देखाई वजूद, रूह मोमन बीच नासूत ।
ए दुनी जाने इत बोलत, ए बैठे बोलें माहें लाहित ॥ १५

तो बातून गुझ लाहूत का, जाहेर सब करत ।
ना तो अरस बका की रोसनी, क्यों होवे जाहीर इत ॥ १६

अरस बका हमेंसगी, हक हादी रूहें वाहेदत ।
ए तीन खेल हुए जो लैल में, ऐसा हुआ न कोई कबूं कित ॥ १७

तो खाकी बुत कायम किए, जो किया वास्ते खेल उमत ।
रूहों पट दे बका बुलाए के, दे चौदे तबकों भिस्त ॥ १८

सिफत करेंगे सब कोई, दुनी भिस्त की जे ।
हक हादी रूहें वाहेदत, भिस्त हुई इनों वास्ते ॥ १९

अरस रूहें हक बिना न रहें, बिरहा न सहें एक छिन ।
जब इलमें हुई अरस बेसकी, रूहें रहें न बिना वतन ॥ २०

जो कदी मोमन तन में हुकम, तो हुकम भी रहे ना इत ।
क्यों ना रहे इत हुकम, हुकम हुकम बिना क्यों फिरत ॥ २१

हुकम आया तन मोमनों, लई अरस रूह हुज्जत ।
ले इत लज्जत अरस हक की, क्यों हुकम रेहे सकत ॥ २२

ए हुकम सो भी मासूक का, सो क्यों जुदागी सहे ।
खिलवत वाहेदत सुध सुन, पल एक ना रहे ॥ २३

ए हुकम तिन मासूक का, जो आप उलट हुआ आसिक ।
सो हुकम बिरहा ना सहे, बिना खावंद एक पलक ॥ २४

ए अरस बका बातें सुन के, एक पलक न रहें अरवाहें ।
रूहों हुकम राखे आड़ा पट दे, हक इत लज्जत देखाया चाहें ॥ २५

रूहों हक पें मांगी लज्जत, सो क्यों रहें देखे बिगर[1] ।
कोट गुनी देखावें लज्जत, जो रूहों मांगी प्यार कर ॥ २६

ना तो इस्क इनों का असल, सब अंगों इस्क रूहन ।
इस्क उड़ावे अंग लज्जत, आया इलम वास्ते इन ॥ २७

हकको काम और कछू नहीं, देवें रूहों लाड़ लज्जत ।
ए तो बिगर चाहे सुख देत हैं, सो मांग्या क्यों न पावत ॥ २८

सुख उपजे कै विध के, आगूँ अरस में बड़ा विस्तार ।
सो रूहें सब इत देखहीं, जो कर देखें नीके विचार ॥ २९

सो बिगर कहे सुख देत हैं, ए तो रूहों माग्या मिल कर ।
इन जिमी बैठाए सुख अरस के, हक देत हैं उपरा ऊपर ॥ ३०

दुनी में बैठाए न्यारे दुनी से, किए ऐसी जुगत बनाए ।
सुख दिए दोऊ ठौर के, अरस दुनी बीच बैठाए ॥ ३१

एक तन हमारा लाहूत में, और नासूत में और तन ।
असल तन रूहें अरस बीच में, तन नासूत में आया इजन ॥ ३२

अरस तन देखें तन नासूती, तन नासूत में जो हुकम ।
सो सुध दै अरस अरवाहों को, इने सेहेरग से नजीक हम ॥ ३३

---
१. बिना ।

दुनियां चौदे तबक में, किन पाई न बका तरफ ।
तिन अरस में बैठाए हमको, जाको कह्यो ना किन एक हरफ ।। ३४

जो जाहेर माएने देखिए, तो बीच पड़्यो ब्रह्मांड ।
एता बिछोड़ा कर दिया, हक अरस और इन पिंड ।। ३५

हुआ बिछोड़ा बीच ब्रह्मांड के, एते पड़े थे हम दूर ।
सो हकें इलम ऐसा दिया, बैठे कदमों तले हजूर ।। ३६

हुकमें कै मता पोहोंचाया, बीच ऐसी जुदागी में ।
हकें न्यामत दे अघाए, कै हांसी करियां हम से ।। ३७

अरस अजीम की कंकरी, उड़ावे चौदे तबक ।
तो तिन को है क्यों कहिए, जो देख ना सके हक ।। ३८

जो हक को देखे ना उड़े, सो दूजा कहिए क्यों कर ।
ए बातें अरस वाहेदत की, पाइए हक इलमें खबर ।। ३९

हकें इलम दिया अपना, सो आया इस्क बखत ।
सो इस्क न देवे बढ़ने, ऐसे किए हिरदे सखत ।। ४०

और जित आया हक इलम, अरस दिल कह्या सोए ।
हक न आवे इस्क बिना, और हक बिना इस्क न होए ।। ४१

अरस कहिए दिल तिन का, जित है हक सहूर ।
इलम इस्क दोऊ हक के, दोऊ हक रोसनी नूर ।। ४२

इस्क इलम बारीकियां, दिल जाने अरस मोमन ।
जो जागी होए रूह हुकमें, ताए लज्जत आवे अरस तन ।। ४३

जो जोरा करे इस्क, तन मोमन देवे उड़ाए ।
दिल सखती बिना अरस अजीम की, इत लज्जत लई न जाए ।। ४४

इस्क नूर जमाल बिना, और जरा न कछुए चाहे ।
इस्क लज्जत ना सुख दुख, देवे वाहेदत बीच डुबाए ।। ४५

ना तो सखत दिल मोमन के, हक करें क्यों कर ।
पर अरस लज्जत बीच दुनी के, लिवाए न सखती[1] बिगर ॥ ४६

एकै नजर मोमन की, हक सुख दिया चाहें दोए ।
रूहें अरस सुख लेवें खेल में, और खेल सुख अरस में होए ॥ ४७

हकें दई जुदागी हमको, इस्क बेवरे को ।
बिना जुदागी बेवरा, पाइए ना अरस मों ॥ ४८

होए न जुदागी अरस में, तो क्यों पाइए बेवरा इस्क ।
ताथें दई नेक फरामोसी, बीच अरस के हक ॥ ४९

हम खेल देखें बैठे अरस में, ए जो चौदे तबक ।
रूह हमारी इत है नहीं, लई परदे में हक ॥ ५०

फेर दिया इलम अपना, जासों फरामोसी उड़जाए ।
खेल में मता सब अरस का, इलमें सब विध दई बताए ॥ ५१

जो रूह हमारी आवे खेल में, तो खेल रहे क्यों कर ।
याको उड़ावे अरस कंकरी, झूठ क्यों रहे रूहों नजर ॥ ५२

देखत है दिल खेल को, लिए अरस रूह हुज्जत ।
फुरमान आया इनों पर, और इलम आया न्यामत ॥ ५३

या विध करी जो साहेब ने, हम हुए दोऊ दरम्यान ।
सुध अरस नासूत की, दोऊ हम को देवें सुभान ॥ ५४

हुकम तन बीच नासूत, हम फरामोस अरस तन ।
नासूत देखें हम नजरों, अरसें पोहोंचे ना दृष्टि मन ॥ ५५

बोले हुकम दावा ले रूह का, बीच तन नासूत ।
ले सब सुध अरस इलमें, देत दुनी में लज्जत लाहूत ॥ ५६

खिलवत निसबत वाहेदत, जेती अरसों हकीकत ।
ए लज्जत हूकमें सिर लेवहीं, अरस रूहें सिर ले हुज्जत ॥ ५७

---

१. कठिनाई, मेहनत ।

यों हुकम नूरजमाल का, अरस सुख देत रूहों इत ।
चुन चुन न्यामत हक की, रूहों हुकम पोहोंचावत ॥ ५८

कै सुख लें हक के खेल में, फेर हुकम पोहोंचावे खिलवत ।
कै अनहोंनी कर सुख दिए, हुकम जान हक निसबत ॥ ५९

कै विध के सुख हुकमें, दोऊ तरफों आड़ा पट दे ।
अरस दुनी बीच रूहों को, दिए सुख दोऊ तरफों के ॥ ६०

ए झूठ न आवे अरस में, ना कछू रहे रूहों नजर ।
तार्थे दोऊ काम इन विध, हकें किए हिकमत कर ॥ ६१

जेती अरवाहें अरस की, हक सेहेरग से नजीक तिन ।
दे कुंजी अरस पट खोलया, हादिएँ किए सब रोसन ॥ ६२

इलम लुदंनी पाए के, अरस रूहें हुई बेसक ।
जगाए खड़े किए अरस में, बीच खिलवत खासी हक ॥ ६३

या तो खड़ी रहे रूह खिलवतें, या तो देवे तवाफ[1] ।
हौज जोए[2] या अरस में, तूँ इन विध हो रहे साफ ॥ ६४

पाक पानी से न होए, ना कोई और उपाए ।
होए पाक मदत तौहीद की, हकें लिख भेज्या बनाए ॥ ६५

फेर फेर हक अंग देखिए, ज्यों याद आवे निसबत ।
है अनभव तो एक अंग का, जो हमेसा वाहेदत ॥ ६६

तार्थे तूँ चेत रूह अरस की, ग्रहे अपने हक के अंग ।
रोहो रात दिन सोहोबत में, हक खिलवत सेवा संग ॥ ६७

जो खावंद अरस अजीम का, ए हक नूरजमाल ।
आए तले झरोखे झांकत, दीदार को नूरजलाल ॥ ६८

जाके पलथें पैदा फना, कै दुनी जिमी आसमान ।
सो आवत दायम[3] दीदार को, ऐसा खावंद नूर मकान ॥ ६९

---

१. परिक्रमा । २. यमुना नदी । ३. हमेशा ।

तिन चाह्या दीदार रूहन का, जो रूहें बीच बड़ी दरगाह ।
ए मरातबा[1] मोमनों, जिन वास्ते हुकम हुआ ।। ७०
देख देख मैं देखया, ए सब करत हक हुकम ।
अरस दिल एता मता लेय के, छिन रहें न बिना कदम ।। ७१
हकें अरस लिख्या मेरे दिल को, क्यों रहे रूह सुन सुकन ।
एक दम ना रहें बिना कदम, पर रूहों ठौर बैठा हक इजन ।। ७२
हुकम कहे सो हुकमें, अरस बानी बोले हुकम ।
रूहों दिल हुकम क्यों रेहे सके, ए तो बैठी तले कदम ।। ७३
खेल तन में हुकम रेहे ना सके, हुज्जत लिए रूहन ।
हुकम हमारे खसम का, क्यों देवे दाग मोमन ।। ७४
पर हक अरस लज्जत तो पाइए, बैठे माग्या खेल में जे ।
सो हुकमें माग्या दे हुकम, हकें करी वास्ते हांसी के ।। ७५
ए बातें होसी सब अरस में, हँस हँस पड़सी सब ।
ए हुकमें करी कै हिकमतें, सब वास्ते हमारे रब्ब[2] ।। ७६
हक मुख हुकमें देख हीं, हुकम देखावे खेल ।
हुकम देवे सुख लुदंनी, हुकम करावे इस्क केल[3] ।। ७७
हुकमें जोस गलवा[4] करे, हुकमें जोर बढ़े इस्क ।
हुकमें इलम रखे सुख को, हुकम प्याले पिलावे माफक ।। ७८
हुकम बेहोस ना करे, हुकम जरा जरा दे लज्जत ।
हुकम पनाह[5] करे सब रूहन, हुकमें जानी जात निसबत ।। ७९
प्याला हुकम पिलावही, करे हुकम रखोपा[6] ताए ।
ना तो इन प्याले की बोएसों, तब ही अरवा उड़ जाए ।। ८०
ए प्याला कबूं किन ना पिया, हम रूहें आइयां तीन बेर ।
ए प्याले पेहेले तो पिए, जो हम थे बीच अंधेर ।। ८१

---

१. दर्जा । २. परमात्मा । ३. खेल । ४. वश में करना । ५. शरण में लेना । ६. सुरक्षित बनाना ।

ए प्याले पिए जायं क्यों जागते, तन तब हीं जाए चिराए ।
बोए भी ना सेहे सके, तो प्याला क्यों पिया जाए ॥ ८२

हुकम जो प्याला देवही, सो संजसें[1] संजसें पिलाए ।
पूरी मस्ती न हुकम देवही, जानें जिन कांच सीसा फूट जाए ॥ ८३

ना तो ए प्याला पीय के, ए कच्चा वजूद न रख्या किन ।
हुकम राखत जोरावरी, प्याला पिलावे रखे जतन ॥ ८४

हुकम मेहेर बारीकियां, ए मैं कहूँ बिध किन ।
नजर हमारी एक बिध की, सब बिध सुध ना रूहन ॥ ८५

हुकम देवे लज्जत, प्याला जेता पिया जाए ।
हर रूहों जतन करे कै बिध, जानें जिन प्याला देवे गिराए ॥ ८६

जिन जेता हजम होवही, ज्यों होए नहीं बेहोस ।
तब ही फूटे कूपा[2] काच का, पाव प्याले के जोस ॥ ८७

सही जाए न बोए जिनकी, सो क्यों सकिए मुख लगाए ।
सो पैंदरपै[3] क्यों पी सके, पर हुकम करत पनाह ॥ ८८

ए अंग लगे प्याला जिनके, सब खलड़ी[4] जाए उतर ।
ना तो ए प्याला हजम क्यों होवही, पर हक राखत पनाह नजर ॥ ८९

ए प्याला कोई न पी सके, जुबां लगते मुरदा होए ।
पर हक राखत हैं जीव को, ना तो याकी खैंच काढ़े खुसबोए ॥ ९०

प्याले पर प्याले पिलावहीं, ताको निस दिन रहे खुमार ।
देवे तवाफ निस दिन, हुकम मेहेर को नहीं सुमार ॥ ९१

बड़ा अचरज इन हुकम का, मुरदे राखत जिवाए ।
मौत सरबत निस दिन पीवहीं, सो मुरदे रखे क्यों जाए ॥ ९२

हुकम मुरदों बोलावत, और ऐसी देत अकल ।
करत नजीकी हक के, मुरदे कहावें अरस दिल ॥ ९३

---

१. धीरे-धीरे । २. बर्तन । ३. निरन्तर । ४. चमड़ी ।

हुकम लाख विधें जतन करे, हर रूहों ऊपर सबन ।
हुकम जतन तो जानिए, जो याद आवे अरस वतन ॥ ८४

जो पेहेले आप मुरदे हुए, तो दुनी करी मुरदार ।
हक तरफ हुए जीवते, उड़ पोहोंचे नूर के पार ॥ ८५

दुनियां इस्क न ईमान, क्यों उड़या जाए बिना पर ।
तो दुनी कही जिमी नासूती, रूहें आसमानी जानवर ॥ ८६

ए दुनियां जो खेल की, छोड़ सुरैया आगे ना चलत ।
सो कायम फना क्यों जानही, जाकी पैदास कही जुलमत ॥ ८७

महामत कहें ऐ मोमनों, बका हासिल[1] अरस रूहन ।
कह्या दिल जिनों का अरस बका, ए मोमन असल अरस में तन ॥ ८८

॥ प्रकरण ॥ २४ ॥ चौपाई ॥ १८५० ॥

मोमनो की सरियत हकीकत मारफत, इस्क रब्द[2] का प्रकरण ॥

इस्क रब्द खिलवत में, हुआ हक हादी रूहों सो ।
सबों ज्यादा इस्क कह्या अपना, तो *तिलसम देखाया रूहों को ॥ १

तिन फरेब[3] में रल[4] गैयां, जित पाइए ना इस्क हक ।
कहे हक मोहे तब पाओगे, जब ल्योगे मेरा इस्क ॥ २

यों हकें छिपाइयां खेल में, दे इलम करी खबरदार ।
रब्द किया याही वास्ते, ल्याओ प्यार करो दीदार ॥ ३

मोमन हकको जानत, नजीक बैठे हैं इत ।
हक कदम हमारे हाथ में, पर हम नजरों न देखत ॥ ४

ए तेहेकीक किया हक इलमें, इनमें जरा न सक ।
यों नजीक जान पेहेचान के, हम बोलत ना साथ हक ॥ ५

ए *फरामोसी फरेबी, हम जान के भूलत ।
हक छिपे हमसों हांसीय को, हा हा ए भूल दिल में भी न आवत ॥ ६

---

१. प्राप्त । २. तकरार । ३. कपट, जादू । ४. मिल गईं ।

बैठे मासूक जाहेर, पर दिल ना लगे इत ।
मासूक मुख देखन को, हा हा नैना भी ना तरसत ॥ ७

सुनने कान ना दौड़त, मासूक मुख की बात ।
इस्क न जानों कहां गया, जो था मासूक सों दिन रात ॥ ८

रूह अंग ना दौड़े मिलन को, ऐसा अरस खावंद मासूक ।
मेहेबूब जुदागी जान के, अंग होत नहीं टूक टूक ॥ ९

जो याद आवे ए कदम की, तो तबहीं जावे उड़ देह ।
कोई बंध पड़्या फरेब का, आवे जरा न याद सनेह ॥ १०

इस्क हमारा कहां गया, जो दिल बीच था असल ।
तिन दिलें सहूर क्यों छोड़िया, जो विरहा न सेहेता एक पल ॥ ११

जो दिल से ए सहूर करें, तो क्यों रहें मिले बिगर ।
अरस बेसकी सुन के, अजूं क्यों रहे नींद पकर ॥ १२

बातें सबे सुपन की, करें जागे पीछे सब कोए ।
पर जागे की बातें सबे, सुपने में कबूं न होए ॥ १३

सो जरे जरे जागृत की, सब बातें होत बेसक ।
नींद रहत अचरज सों, आए दिल में अरस मुतलक ॥ १४

सो कराई मासूकें हमपें, सब अरस बातें सुपने ।
सब गुजरी जो हक हादी रूहों, सो सब करत हम आप में ॥ १५

हुआ जाती सुमरन जिनको, अरस अजीम जैसा सुख ।
निसबत बका नूर जमाल, अजूं क्यों पकड़ रहें देह दुख ॥ १६

ज्यों जाहेर खड़े देखिए, त्यों देखिए इन इलम ।
यों लाड़ लज्जत देवहीं, बैठाए अपने तले कदम ॥ १७

सुपन त्यों का त्यों खड़ा, लिए नींद वजूद ।
अरस मता[1] सब देख्या बका, देह झूठी इन नाबूद[2] ॥ १८

---

१. पूंजी । २. ना चीज, बिना अस्तित्व के ।

जब सुपन से जागिए, तब नीद सबे उड़ जात ।
सो जागे में सक ना रही, करें माहों माहें सुपन बात ॥ १९

ऐसा किया हकें सुपन में, जानों जागे में सक नाहें ।
ऐसी हुई दिल रोसनी, फेर बोलत सुपनें माहें ॥ २०

जानों सुपने नीद उड़ गई, मुरदे हुए वजूद ।
हकें हक अरस देखाइया, सुपन हुआ नाबूद ॥ २१

फेर सुपन तरफ जो देखिए, तो मुरदे खड़े बोलत ।
बातें करें अकल में, ऐसा हुकमें देखाया खेल इत ॥ २२

कबूं कोई न बोलिया, बका बातें हक मारफत ।
दे मुरदों को इलम अपना, सो बातें हुकम बोलावत ॥ २३

हुए वजूद नीद के अरस में, सो नीद दई उड़ाए ।
दे जागृत बातें दिल में, दिल अरसै किया बनाए ॥ २४

असल मुरदा वजूद, भी हक इलमें दिया मार ।
जगाए दिए बीच अरस के, बातें मुरदा करे समार[1] ॥ २५

यों कै बातें हांसीय को, मासूक करत हम पर ।
वास्ते रब्द इस्क के, ए हकें बनाई यों कर ॥ २६

अब जो हिंमत हक देवहीं, तो उठ मिलिए हक सों धाए ।
सब रूहें हक सहूर करें, तो जामें तबहीं देवें उड़ाए ॥ २७

सहूर विना ए रहत है, तेहेकीक जानियो एह ।
ए भी हुकम हक बोलावत, हक सहूरें आवत सनेह ॥ २८

सनेह आएँ झूठ ना रहे, जो पकड़ बैठे हैं हम ।
ए झूठ नजरों तब क्यों रहे, याद आए सनेह खसम ॥ २९

हकें इलम भेज्या याही वास्ते, देनें हक अरस लज्जत ।
सो मांगी लज्जत सब देय के, आखर उठावसी दे हिंमत ॥ ३०

---

१. अच्छी तरह ।

जो हक न देवे हिंमत, तो पूरा होए न हांसी सुख ।
जो रूह भाग जाए आखर लग, हांसी होए न बिना सनमुख ।। ३१
हक हिंमत देसी तेहेकीक, हांसी होए ना हिंमत बिन ।
ए गुझ बातें तब जानिए, हक सहूर आवे हादी रूहन ।। ३२
ए बारीक बातें मारफत की, तिन बारीक का बातन ।
ए बातें होंए हक हिंमतें, हक सहूर करें मोमन ।। ३३
हिंमत तो भी हुकम, रूह हुज्जत सो भी हुकम ।
तन हुकम सो भी हुकम, सब हुकम तले कदम ।। ३४
इलम इस्क सो भी हुकम, सहूर समझ सो हुकम ।
जोस होस सो भी हुकम, आद अंत हुकम तले हम ।। ३५
बातें हकसों अरस में, जो करते थे प्यार ।
सो निसबत कछू ना रही, ना दिल चाहे दीदार ।। ३६
ना तो बैठे हैं ठौर इतहीं, इतहीं किया रब्द ।
पर ऐसा फरेब देखाइया, जो पोहोंचे ना हमारा सबद ।। ३७
इतथें कोई उठी नहीं, बैठा मिलावा मिल ।
बेर साइत एक ना हुई, यों इलमें बेसक किए दिल ।। ३८
इस्क मिलावा और है, और मिलावा मारफत ।
इलमें लई कै लज्जतें, इस्क गरक[1] वाहेदत ।। ३९
तार्थे बड़ी हकीकत मोमनों, बड़ी मारफत लज्जत ।
मोमन लीजो अरस दिल में, ए नेक हुकम कहावत ।। ४०
जो कदी इस्क आवे नहीं, तो मोमन बैठ रहें क्यों कर ।
अरस हकसों बेसक होए के, क्यों रहें इस्क बिगर ।। ४१
इस्क क्यों ना उपजे, पर रूहों करना सोई उदम ।
राह सोई लीजिए, जो पेहेले हादिएँ भरे कदम ।। ४२

१. निमग्न ।

ए तिलसम क्योंए ना छूटही, जहां साफ न होवे दिल ।
अरस दिल अपना करके, चलिए रसूल सामिल ॥ ४३

पाक न होइए इन पानिएँ, चाहिए अरस का जल ।
न्हाइए हक के जमाल में, तब होइए निरमल ॥ ४४

पाक होना इन जिमिएँ, और न कोई उपाए ।
लीजे राह रसूल इस्कें, तब देवें रसूल पोहोंचाए ॥ ४५

अब कहूँ सरियत मोमनों, जिन लई हकीकत हक ।
हक के दिल की मारफत, ए तिन में हुए बेसक ॥ ४६

मोमन उजू जब करें, पीठ देवें दोऊ जहान को ।
हौज जोए जो अरस में, रूहें गुसल[1] करें इनमों ॥ ४७

दम दिल पाक तब होवही, जब हक की आवे फिराक[2] ।
अरस रूहें दिल जुदा करें, और सब से होएँ बेबाक[3] ॥ ४८

चौदे तवक को पीठ देवही, ए कलमा[4] कह्या तिन ।
कलाम अल्ला यों केहेवही, ए केहेनी है मोमन ॥ ४९

ला फना सब ला[5] करें, और इला[6] बका ग्रहें हक ।
ए कलमा हकीकत मोमनों, और हक मारफत बेसक ॥ ५०

नूर के पार नूर तजल्ला, रसूल अल्ला पोहोंचे इत ।
मोमन उतरे नूर विलंद से, सो याही कलमें पोहोंचें वाहेदत ॥ ५१

जब हक बिना कछू ना देखे, तब बूझ हुई कलमें ।
जब यों कलमा जानिया, तब बका होत तिनसे ॥ ५२

ए मोमनों की सरियत, छोड़ें ना हककों दम ।
अरस वतन अपना जानके, छोड़ें ना हक कदम ॥ ५३

*महंमद *ईसा *इमाम, बैत[7] बका[8] निसान ।
सोई तीन सूरत महंमद की, देखावें अरस *रेहेमान ॥ ५४

१. स्नान । २. वियोग । ३. ऋण मुक्त । ४. मंत्र । ५. नहीं है । ६. जो है । ७. घर । ८. अखंड ।

दुनी किबला[1] करे पहाड़ को, और हक तरफों में नाहें ।
अरस बका तरफ न राखत, ए देखें फना के माहें ॥ ५५

हकें देखाया किबला, बीच पाइए मोमन के दिल ।
ऊपर तले न दाएँ बाएँ, सूरत हमेसा असल ॥ ५६

मजाजी[2] और हकीकी[3], दिल कहे भांत दोए ।
एक बेवरा हकी सूरत बिना, कर न सके दूजा कोए ॥ ५७

इतहीं रोजा इत बंदगी, इतहीं जकात[4] जारत[5] ।
साथ हकी सूरत के, मोमनों सब न्यामत ॥ ५८

मोमन हक बिना न देखें, एही मोमनों ताम ।
बंदगी तवाफ सब इतहीं, मोमनों इतहीं आराम ॥ ५९

खाना पीना सब इतहीं, इतहीं मिलाप मजकूर ।
इतहीं पूरन दोस्ती, इतहीं बरसत हक का नूर ॥ ६०

सरूप ग्रहिए हक का, अपनी रूह के अंदर
पूरन सरूप दिल आइया, तब दोऊ उठे बराबर ॥ ६१

ए सरियत अपनी मोमनों, और है हकीकत ।
क्यों न विचार के लेवहीं, हक हादी बैठे तखत ॥ ६२

जो कदी दिल में हक लिया, कछू किया न प्रेम मजकूर ।
क्यों कहिए ताले मोमन, जाको लिख्या बिलंदी नूर ॥ ६३

ए हकीकत मोमनों, और ले न सके कोए ।
बेसक होए बातें करे, तो मजकूर हजूर होए ॥ ६४

जो तूँ ले हकीकत हक की, तो मौत—का[6] पी सरबत ।
मुए पीछे हो मुकाबिल, तो कर मजकूर खिलवत ॥ ६५

जो लों जाहेरी अंग ना मरें, तो लों जागें ना रूह के अंग ।
ए मजकूर रूह अंग होवही, अपने मासूक संग ॥ ६६

---

१. पूज्य स्थान । २. नश्वर । ३. सत्यनिष्ठ । ४. दानदेना । ५. दर्शन करने जाना तीर्थ यात्रा । ६. त्याग ।

कौल फैल आए हाल आइया, तब मौत आई तोहे ।
तब रूह की नासिका को, आवेगी खुसबोए ।। ६७

रूह नैनों दीदार कर, रूह जुबां हक सो बोल ।
रूह कानों हक बातें सुन, एही पट रूह का खोल ।। ६८

ए सहूर करो तुम मोमनों, जब फैल से आया हाल ।
तब रूह फरामोसी ना रहे, बोए हाल में नूरजमाल ।। ६९

बेसक होए दीदार कर, ले जवाब होए बेसक ।
एही मोमनों मारफत, खिलवत कर साथ हक ।। ७०

रूह हकसों वात विचार कर, दिल परदा दे उड़ाए ।
रूह बातें वतन की, कर मासूक सों मिलाए ।। ७१

जो गुझ अपनी रूह का, सो खोल मासूक आगूं ।
यों कर जनम सुफल[1], ऐसी कर हक सों तूँ ।। ७२

सब अंग सुफल यों हुए, करी हकसों सलाह सबन ।
देख बोल सुन खुसबोएसों, जिनका जैसा गुन ।। ७३

जेते अंग आसिक के, सो सारे किए सुफल ।
सोई असल रूह आसिक, जिन मोमन अरस दिल ।। ७४

ए निसबत विना होए नहीं, मासूक सों मजकूर ।
ए मजकूर इन विध होवही, यों कहे हक सहूर ।। ७५

मोमनों हकीकत मारफत, इनमें भी विध दोए ।
एक गरक होत इस्क में, और आरफ लुदंनी सोए ।। ७६

एक इस्क दूजा इलम, ए दोऊ मोमनों हक न्यामत ।
इस्क गरक वाहेदत में, इलमे हक अरस लज्जत ।। ७७

मारफत लुदंनी मोमनों, बंदा हक का कामिल[2] ।
बड़ी बुजरगी इन की, करें बातें हक सामिल ।। ७८

---

१. कृतार्थ । २. योग्य, निपुण ।

सक नाहीं लुदंनीय में, कहे अरस की जाहेर बातन ।
करें हकसों बातें इन बिध, ज्यों करै अरस के तन ॥ ७९

हक दिया चाहें लज्जत, ताए इलम देवें बेसक ।
रूह बातें करे हकसों, देखे हौज जोए हक ॥ ८०

मारफत लुदंनी जिन लई, सो करे हक सहूर ।
सहूर किएँ हाल आवहीं, सो हाल बीच हक मजकूर ॥ ८१

यों हक कहावत मोमनों, नजीक हाल है तुम ।
हक बातें किया चाहें, रूह सों वाहेदत खसम ॥ ८२

पीछे हक सब करसी, रूह सुख लिया चाहे अब ।
सुख लेने को अवसर, पीछे लेसी मोमन सब ॥ ८३

रूह बिरहा छिन एक ना सहें, सो अब चली जात मुद्दत ।
अरस रूहें यों भूल के, क्यों छोड़ें हक मारफत ॥ ८४

मारफत हुई हाथ हक के, क्यों ले सकिए सोए ।
ए दोस्ती तब होवही, जब होए प्यार बराबर दोए ॥ ८५

मारफत देवे इस्क, इस्कें होए दीदार ।
इस्कें मिलिए हकसों, इस्कें खुले पट द्वार ॥ ८६

सोई रब्द जो हकसों किया, वास्ते इस्क के ।
सो इस्क तब आइया, जब हकें दिया ए ॥ ८७

हांसी करी रूहन पर, दे इलम बेसक ।
मासूक हँस के तब मिले, जब हकें दिया इस्क ॥ ८८

महामत कहें ऐ मोमनों, सब बातों का ए मूल ।
ए काम किया सब हुकमें, आए इमाम मसी रसूल ॥ ८९

॥ प्रकरण ॥ २५ ॥ चौपाई ॥ १९३९ ॥

## कलसका कलस

बसरी[1] मलकी[2] और हकी, कही महंमद तीन सूरत ।
कारज सारे सिध किए, अव्वल बीच आखरत ॥ १
ए तीनों मिल किया जहूर, अव्वल आखर रोसन ।
हक बैठे इन इलम में, तो दिल अरस हुआ मोमन ॥ २
ए जुबां में हक की, और बोलत है हुकम ।
हक अरस बरनन तो हुआ, जो वाहेदत बका खसम ॥ ३
गैब खिलवत जाहेर तों हुई, जो हकें कराई ए ।
ए खबर नही नूर को, करी लुदंनिएँ जाहेर जे ॥ ४
बरनन किया अरस का, सो सब हिसाब अरसै के ।
गिनती सो भी अरस की, ए बातें मोमन समझेंगे ॥ ५
या पहाड़ या तिनका, सो सब चीज बिध आतम ।
सब देत देखाई जाहेर, ज्यों देखिए माहें चसम[3] ॥ ६
और भी खूबी रूह नैन की, चीज दसों दिस की देखत ।
पाताल या आसमान की, रूह नजरों सब आवत ॥ ७
रूह का ए ही लछन, बाहेर अन्दर नहीं दोए ।
तन दिल दोऊ एकै, रूह कहियत हैं सोए ॥ ८
दूर नजीक भी अरस के, सो भी पाइए अरस सहूर ।
नैन चरन अंग तीनों हीं, एक यादै में हजूर ॥ ९
चाल मिलाप या दीदार, ए तीनों रूह के नेक ।
जब हीं याद आवही, तब हीं होए माहें एक ॥ १०
यातो जिमी के दूर लग, या नजीक आगूं नजर ।
दूर नजीक सब याद में, ए दोऊ बराबर ॥ ११

१. मानवता सिखाने के । २. ज्ञान के मालिक (देव चन्द्र जी) । ३. आँखे ।

अरस दिल मोमन तो कह्या, जो हक सों रूह निसबत ।
ना तों अरस दिल आदमी का, क्यों कह्या जाए ख्वाब में इत ॥ १२

रूह तन की असल अरस में, अरस ख्वाब नहीं तफावत ।
तो कह्या सेहेरग से नजीक, बीच दुनी ए न्यामत ॥ १३

दिल मोमन अरस तन बीच में, उन दिल बीच ए दिल ।
केहेने को ए दिल है, है अरसैं दिल असल ॥ १४

तो हक नजीक कह्या रूहन को, और नूर नजीक फिरस्तन ।
और आम—खलक[१] देखन को, जो कहे जुलमत से तन ॥ १५

ए तीनों गिरो कही जाहेर, पर ए बीच मारफत राह ।
ए कलाम अल्लाह में बेवरा, योंहीं कह्या रूह अल्लाह ॥ १६

पर आम खलक ना समझे, जाकी पैदास कही जुलमत ।
इलम लुदंनी से जानत, रूह मोमन बीच वाहेदत ॥ १७

इलम नुकते की साहेदी, हक सूरत अरस मारफत ।
सो सब बातें फुरमान में, खोले हकी सूरत हकीकत ॥ १८

बसरी मलकी हकी, जो कही महंमद तीन सूरत ।
दो देवे हक की साहेदी, फरदा रोज क्यामत ॥ १९

नबी नबुवत[२] कुरान माजजा, ए दोऊ साबुत होवें इन से ।
कुरान न खुले बिना खिताब, ना तो लिख्या सब इनमें ॥ २०

इन साहेंदिएं सब मिलसी, हिंदू या मुसलमीन ।
मुआ दज्जाल सब का कुफर, यों सब पाक हुए एक दीन ॥ २१

और भी साहेदी फुरमान में, तबक चौदे जरा नाहिं ।
खेल नाम धरचा सब केहेने को, एक जरा नहीं अरस माहिं ॥ २२

और ठौर न काहूं अरस बिना, अरस न कहूं इंतहाए[३] ।
जो आप कछुए है नहीं, तिन क्यों अरस नजरों आए ॥ २३

---

१. साधारण लोग । २. पैगम्बरी । ३. अन्त ।

ए अरस देखें रूह मोमन, जो उतरे नूर बिलंद से ।
नाहीं क्यों देखे है को, ए तो जाहेर लिख्या किताबों में ॥ २४

बंझा पूत फूल—आकास,[1] और ससिक सिंग ।
कह्या वेद कतेब में, भंग न कछू अभंग ॥ २५

यों असल खेल की है नहीं, ए दिल में देखाई देत ।
किया हुकमें महंमद रूहों देखनें, तो भिस्त में इनों को लेत ॥ २६

हक हुकमें सब बेवरा किया, वास्ते हादी रूहन ।
जो सहूर कीजे मिल महामती, तो लज्जत लीजे अरस तन ॥ २७

॥ प्रकरण ॥ २६ ॥ चौपाई ॥ १६६६ ॥

मता *हक[2] ताला ने मोमनों को दिया ॥

एता मता[3] तुम को दिया, सो जांनत है तुम दिल ।
बेसक इलमें ना समझे, तो सहूर करो सब मिल ॥ १

ए तो देख्या बड़ा अचरज, पाए सुख बका अपार ।
भी बेसक हुए हक इलमें, तो भी छूटे ना नीद बिकार ॥ २

ए बोलावत है हुकम, खुदी भी हुकम की ।
तो हमेसा पाक होए, हक इस्क प्याले पी ॥ ३

खुदी हक हुकम की, सो तो भूले नहीं कब ।
वह काम सोंई करसी, जो भावे[4] अपने रब्ब ॥ ४

हुकम तो है हक का, और खुदी भी ना हुकम बिन ।
खुदी हुकम दोऊ हक के, इत क्या लगे रूहन ॥ ५

हक केहेवे नेकों को, दोस्त रखता हों मैं ।
या खुदी या हुकम, टेढ़ी होए नहीं इनों से ॥ ६

हुकमें लिया भेख रूह का, सो भी हांसी खुसाली रूहन ।
क्यों सिर लेना खुदी हुकम, पाक होए पकड़े चरन ॥ ७

---

१. कल्पना मात्र । २. परमात्मा । ३. पूंजी । ४. अच्छा लगे ।

जब भेख काछ्या रूह का, फैल सोई किया चाहे तिन ।
नाम धराए क्यों रद्द करे, हक एती देत बडाई जिन ॥ ८

ए निस दिन बातें विचारहीं, सोई हुकम हुज्जत मोमन ।
पाक हुआ सो जो अरस दिल, जाके हक कदम तले तन ॥ ९

हुकम तो तन में सही, और लिए रूह की हुज्जत ।
हिस्सा चाहिये तिन का, सो भी माहें बोलत ॥ १०

कह्या दिल अरस मोमन का, दिल कह्या न हुकम का ।
देखो इनों का बेवरा, हिस्से रूह के हैं बका ॥ ११

मोमन तन में हुकम, तामें हिस्से रूह के देख ।
दिल अरस हक इलम, रूह की हुज्जत नाम भेख ॥ १२

जो कदी रूहें इत हैं नहीं, तो भी एता मता लिए आमर[1] ।
सो अरस बका हक बिना, ले हुज्जत रहे क्यों कर ॥ १३

एता मता रुह का, हुकम के दरम्यान ।
तिन का जोरा चाहिये, जो हक आगूं होसी बयान ॥ १४

हांसी न होसी हुकम पर, है हांसी रूहों पर ।
जाको गुनाह पोहोंच्या खिलवतें, कहे कलाम अल्ला यों कर ॥ १५

मोमन बैठे खेल में, अजूं बीच ख्वाब ।
गुनाह पेहेले पोहोंच्या अरस में, करें मासूक रूहें हिसाब ॥ १६

हक हुकम तो है सब में, बिना हुकम कोई नाहिं ।
पर यामें हुकम नजर लिए, और रुह का बड़ा मता या माहिं ॥ १७

जेता हिस्सा तन में जिनका, सो जोरा तेता किया चाहे ।
ए विचार करें सो मोमन, हक हुकम देसी गुहाए[2] ॥ १८

तार्थें हुकम के सिर दोस दे, बैठ न सकें मोमन ।
अरस दिल खुदी से क्यों डरें, लिए हक इलम रोसन ॥ १९

---

१. हुक्म । २. साक्षी ।

गुनाह नूर तजल्ला मिनें, पोहोंच्या रूहों का जित ।
कह्या गुनाह कुफल मुंह मोतिन, दिल महंमद कुंजी खोलत ॥ २०

हिसाब जिनों हाथ हक के, अरस अजीम के मांहि ।
अरस तन बीच खिलवत, ताको डर जरा कहूं नांहि ॥ २१

करी हांसी हकें रूहों पर, जिन वास्ते किया खेल ।
रूहों बहस किया इस्क का, बेर तीन देखाया माहें लैल ॥ २२

हक आगूं कहे महंमद, मोहे अरस में बिना उमत ।
हकें दिया प्याला मेहेर कर, कहे मोहे मीठा न लगे सरबत ॥ २३

हकें दोस्त कहे औलिए[1], भए ऐसे बुजरक ।
इनों को देखे से सवाब[2], जैसे याद किएं होएं हक ॥ २४

जित पर जले जबराईल, पोहोंच्या न बिलंदी नूर ।
बिना रूहें इसारतें खिलवत, दूजा ए कौन जाने मजकूर ॥ २५

अलस्तो बे रब्ब कह्या हक ने, तब जवाब दिया रूहन ।
कोई और होवे तो देवहीं, ए फुरमान कहे सुकन ॥ २६

तुम रूहें जात नासूत में, जाओगे मुझे भूल ।
तब तुम ईमान ल्याइयो, मैं भेजोंगा रसूल ॥ २७

तुम माहों माहें रहियो साहेद[3], इत मैं भी साहेद हों ।
ए जिन भूलो तुम सुकन, मैं फुरमान भेजों तुमको ॥ २८

और साहेद किए हैं फिरस्ते, सो भी देवेंगे साहेदी ।
सो रसूल याद देसी तुमें, जो मेरे आगूं हुई इतकी ॥ २९

ऐसी बड़ाई औलियों, हक अपने मुख दें ।
कोई याको न जाने मुझ बिना, मैं छिपाए तले कबाए के ॥ ३०

मागी हुकमें रूह की हुज्जतें, दीजे दुनी में लाड़ लज्जत ।
सो हक आप मंगावत, कर हांसी जुदाई बीच खिलवत ॥ ३१

---

१. ज्ञानी जन, खुदा के प्यारे । २. पुण्य । ३. गवाह ।

कबूं न जुदागी बीच वाहेदत, ए इलमें किए बेसक ।
तेहेकीक बैठे तले कदमों, न जुदे रूहें हादी हक ॥ ३२

हुआ रब्द वास्ते इस्क, सबों बड़ा कह्या अपना ।
हकें हाँसी करी हादी रुहोंसों, कहे देखो खेल फना ॥ ३३

खेल का जोस आया सबों, इस्क न रह्या किन ।
सब चाहें साहेबी खेल की, हक इस्क न नजीक तिन ॥ ३४

था रब्द सबों इस्क का, हक देत फेर फेर याद ।
रुहें क्योंए न छोड़ें खेल को, दुख लाग्या ऐसा कोई स्वाद ॥ ३५

जब देखिए सामी खेल के, तो बीच पड्यो ब्रह्मांड ।
एती जुदाई हक अरस के, और खेल वजूद जो पिंड ॥ ३६

हक इलमें ए पिंड देखिए, ए पिंड बीच अरस तन ।
एक जरा जुदागी ना रही, अरस वाहेदत बीच वतन ॥ ३७

जाहेर नजरों खेल देखिए, कहूँ नजीक न अरस हक ।
तरफ भी न पाई किनहूं, बीच इन चौदे तबक ॥ ३८

जबथें पैदा भई दुनियां, रही दूर दूर थें दूर ।
फना बका को न पोहोचहीं, ताथें कोई न हुआ हजूर ॥ ३९

दोऊ गिरो उतरीं दोऊ अरस से, रुहें और फिरस्ते ।
हकें इलम भेज्या इनों पर, सो ले दोऊ अरसों पोहोंचे ए ॥ ४०

आए फिरस्ते नूर मकान से, अरस अजीम मकान रुहन ।
कलाम अल्ला हक इलम, ए आए ऊपर रुह मोमन ॥ ४१

दोऊ गिरोह जो उतरी, दोऊ अरसों से आई सोए ।
सो आप अपने अरस में, विना लुदंनी न पोहोंचे कोए ॥ ४२

आप अपने अरस में, जाए ना सके विना इलम ।
तो फुरमान इलम भेजिया, रुहें दरगाही जान खसम ॥ ४३

तो अरस कह्या दिल मोमन, जो पकड्या इलम हक ।
हक सूरत सुध अरसों की, रुहों रही न जरा सक ॥ ४४

सोई मोमन जाको सक नहीं, और दिल अरस हक हुकम ।
पट खोले नूर पार के, आए दिल में हक कदम ॥ ४५
पेहेले पट दे खेल देखाइया, दई फरामोसी हांसी को ।
दिया बेसक इलम अपना, तो भी न आवें होस मों ॥ ४६
इलमें अंदर जगाइया, तिन में जरा न सक[1] ।
कहे हुई है होसी अरसों की, रूहें बैठी कदम तले हक ॥ ४७
इन बातों सक जरा नहीं, तो दिल अरस कह्या मोमन ।
तो भी टले ना बेहोसी, वास्ते हांसी बीच वतन ॥ ४८
बिरहा सुनत रूहें अरस की, तबहीं जात उड़ तन ।
सो गवाए याद कर कर हकें, जो बीतक अरस वतन ॥ ४९
मैं जान्या प्रेम आवसी, विरहे के बचनों गाए ।
सो अव्वल से ले अबलों, बिरहा गाया लड़ाए लड़ाए ॥ ५०
सो गाए बिरहा न आइया, प्रेम पड़्या बीच चतुराए ।
हाँसी कराई हुकमें, वचनों प्यार लगाए ॥ ५१
सो गाए गाए हुआ दिल सखत, मूल इस्क गया भुलाए ।
मन चित्त बुध अहंकारें, गुझ अरस कह्या बनाए ॥ ५२
अरस मता जेता हुता, किया जाहेर नजर मे ले ।
हमें न आया इस्क सुपने, ए किया वास्ते जिन के ॥ ५३
चौदे तबक बेसक हुए, इन बानी के रोसन ।
सो इलम ले कायम हुए, सुख भिस्त पाई सबन ॥ ५४
हक खिलवत गाए से, जान्या हम को देसी जगाए ।
इस्क पूरा आवसी, हकें हांसी करी उलटाए ॥ ५५
जो देते हम को इस्क, तो क्यों सकें हम गाए ।
दिल अरस पोहोंचें रूह इस्कें, तो इत क्यों रह्यो रूहों जाए ॥ ५६

---

१. सन्देह ।

सब अंग हमारे हक हाथ में, इस्क मागें रोए रोए ।
सब अंग हमारे बांध के, हक आप करें हांसी सोए ।। ५७

हम हुकम के हाथ में, हक के हाथ हुकम ।
इत हमारा क्या चले, ज्यों जानें त्यों करें खसम ।। ५८

महामत कहें ऐ मोमनों, हकें भुलाए हांसी को ।
हम दौड़े जान्या लें इस्क, हम को डारे बका इलम मों ।। ५९

।। प्रकरण ।। २७ ।। चौपाई ।। २०२५ ।।

बरनन कराए मुझपें, हकें सब अपने अंग ।
सो विध विध विवेक सों, सो गाया दिल रूह संग ।। १

जो जोरा होए इस्क का, तो निकसे ना मुख दम ।
सो गाए के इस्क गमाइया[1], जोरा कराया इलम ।। २

इलम दिया याही वास्ते, काहूं जरा न रही सक ।
अव्वल से आज लगे, ऐसा कराया हक ।। ३

इस्क हमसे जुदा किया, दिया दुनी को सुख कायम ।
वचन गवाए हमपें, जो हमेसगी दायम ।। ४

नैन श्रवन या रसना, जो अंग किए बरनन ।
तिन इस्क देखाया हक का, और देख्या ना या बिन ।। ५

जो अंग देखे आखर लग, तिनसे देखे चौदे तबक ।
और काहूं न देख्या कछुए, विना हक इस्क ।। ६

बूझी तुमारी साहेबी, दिया सब अंगों इस्क देखाए ।
तुमारे हर अंगें ऐसा किया, रहे चौदे तबक भराए ।। ७

रसनाए इस्क देखाइया, तिन भरचा जिमी आसमान ।
इस्क बिना न पाइए, बीच सकल जहांन ।। ८

---

१. गंवा दिया ।

सब अंग देखे ऐसे हक के, ऐसा दिया इलम ।
हक इस्क सबों में पसरचा, इस्क न जरा माहें हम ॥ ९

यों हर अंग हक के, सब सोए किए रोसन ।
आसमान जिमी के बीच में, कछू देख्या न इस्क बिन ॥ १०

इस्क हमारा हक सों, दिया हुकमें आड़ा पट ।
हक का इस्क हम सों, किया दुनियां में प्रगट ॥ ११

यों हांसी हम पर करी, बनाए हमारे अकस ।
इस्क लिया खैंच के, होसी एही हांसी बीच अरस ॥ १२

हक फेर फेर ऊपर जगावहीं, बिना हुकम न जागे अंदर ।
फेर फेर बड़ाई मांगें इत, हक हांसी करें इनों पर ॥ १३

मागें दुनी में हक लज्जत, सो भी बुजरगी वास्ते ।
इलमें हुए यों बेसक, एक जरा न दुनियां ए ॥ १४

यों जान मांगें फना मिने, लज्जत दुनी में हक ।
यों हुकम हांसी करावही, दे अपना इलम बेसक ॥ १५

आप मंगावें आप देवहीं, ए सब हांसी को ।
ए सब जानें मोमन, सक नहीं इनमों ॥ १६

कैयों पेहेचान होवही, कैयों नहीं पेहेचान ।
सो सब होत हांसीय को, करत आप सुभान ॥ १७

ए किया वास्तें इस्क बेवरे, सो इस्क न आया किन ।
काहूं जोस जरा आइया, काहूं जरा ना किस तन ॥ १८

वास्ते रब्द इस्क के, जो किया बीच खिलवत ।
सो हुकम आड़ा सब दिलों, इस्क न काहूं आवत ॥ १९

इलम दिया सबन को, किया अरस दिल मोमन ।
दूर कर सब हिजाब, आप आए अरस दिल इन ॥ २०

पेहेचान सब अरसों की, अरसों बीच की हकीकत ।
सो जरा छिपी ना रखी, सब दई हक मारफत ॥ २१

पर इस्क न दिया आवने, वास्ते रब्द के ।
हक आएँ इस्क क्यों न आवही, किया हुकमें हांसी को ए ॥ २२

रूहों लज्जत मांगी हकपें, अरस को दुनियां मांहि ।
तो इलम दिया सबों अपना, बिना इलम लज्जत नांहि ॥ २३

जो हक देवें इस्क, इस्क देवे सब उड़ाए ।
सुध न लेवे वार पार की, देवे वाहेदत बीच डुबाए ॥ २४

जब इलम सब आइया, सो कछू सखती देवे दिल ।
तिन सखती तन अरस की, पाइए लज्जत असल ॥ २५

हुकम मांगे देवे हुकम, सो सब वास्ते हांसी के ।
ए बातें होसी सब खिलवतें, इस्क रब्द किया जे ॥ २६

अनेक हकें हिकमत करी, सो इन जुबां कही न जाए ।
होसी हांसी सबों अरस में, जब करसी बातें बनाए ॥ २७

हकें किया सब हांसी को, जो जरे जरा माहें खेल ।
इस्क रब्द के कारने, तीन बेर आए माहें लैल ॥२८

हक हांसी बातें जानें हक, या जाने हक इलम ।
इन इलमें सिखाई रूहों, सो बातें अरस में करसी हम ॥ २९

एही खुलासा[1] सब बात का, हकें किया हांसी को ।
रेहेता रब्द रूहों इस्क का, सब केहेतियां बड़ा हम मों ॥ ३०

याही वास्ते खेल देखाइया, इस्क गया सबों भूल ।
फेर के सब सुध दई, भेज फुरमान रसूल ॥ ३१

इनमें इसारतें रमूजें, सो खोल न सके कोए ।
कुंजी भेजी हाथ रूह अल्ला, इमाम हाथ खोलाया सोए ॥ ३२

हांसी याही बात की, किए सब खेल में खबरदार ।
तो भी इस्क न आवत, हुई हांसी बे सुमार ॥ ३३

---

१. स्पष्टीकरण, सारांश ।

हक इस्क जाहेर हुआ, खेल माहें दम दम ।
और न चौदे तबकों, बिना इस्क खसम ।। ३४
ऐसा इलम हकें दिया, हुआ इस्क चौदे भवन ।
मूल डार पात पसरया, नजरों आया सबन ।। ३५
तले *सात तबक जिमीय के, या बीच ऊपर आसमान ।
मूल वृक्ष पात फूल फैलिया, सब हुआ इस्क सुभान ।। ३६
नजरों आया सबन के, जब पसरया ए इलम ।
तब और न देखे कछू नजरों, बिना इस्क खसम ।। ३७
हकें अरस कह्या दिल मोंमन, ऐसी दई बुजरगी रूहन ।
ढूंढ़ ढूंढ़ थके चौदे तबकों, पर बका तरफ न पाई किन ।। ३८
तबक चौदे में मलकूत, ला हवा सुंन तिन पर ।
ता पर बका नूर मकान, जो नूर जलाल अक्षर ।। ३९
कै ऐसे खेल पैदा फना, होए नूर जलाल के एक पल ।
इन कादर की कुदरत, ऐसा राखत है बल ।। ४०
तरफ अरस अजीम की, कोई जाने ना एक नूर बिन ।
पर गुझ मता न जान ही, जो है नूरजमाल बातन ।। ४१
सो गुझ हक हादीय का, दिया खेल में बीच मोमन ।
तो दिल अरस किया हकें, जो अरस अजीम में इनों तन ।। ४२
हकें अरस की सुध सब दई, पाई हकीकत मारफत ।
हक हादी रूहें खिलवत, ए बीच असल वाहेदत ।। ४३
कहे हुकमें महामत मोमनों, हक इस्क बोले बेसक ।
इस्क रब्द वाहेदत में, हक उलट हुए आसिक ।। ४४

।। प्रकरण ।। २८ ।। चौपाई ।। २०६९ ।।

## हक मेहेबूब के जवाब

रूहों में रे तुमारा आसिक, मैं सुख सदा तुमें चाहों ।
वास्ते तुमारे कै विध के, इस्क अंग उपजाओं ।। १

मैं आसिक तुमारा केहेलाया, मैं लिखे इस्क के बोल ।
मासूक कर लिखे तुमको, सो भी लिए ना तुम कौल[1] ॥ २
अव्वल बीच और आखर, लिखे तीनों ठौर निसान ।
ए बीतक हम तुम जानहीं, भेजी तुमको पेहेचान ॥ ३
दो बेर दुनियां नई कर, किन दो बेर डुबाई जहान ।
तुमको लैलत कदर में, दो बेर किन बचाए तोफान ॥ ४
फेर तीसरी बेर दुनी कर, जिनमें होसी फजर ।
सब विध बेसक करके, तुमें खेल देखाया और नजर ॥ ५
तुम जो अरवाहें अरस की, साथ हक जात निसबत ।
ए जो दोस्ती हक हमेसगी, बीच खिलवत के वाहेदत ॥ ६
कोई तरफ न जाने अरस की, तो मुझे जाने क्यों कर ।
नूरजलाल नूर मकाने, एक इनें मेरे तरफ की खबर ॥ ७
दूजा तरफ तो जानहीं, कोई और ठौर बका होए ।
नहीं क्यों जाने तरफ है की, किन ठौर से तरफ ले कोए ॥ ८
खेल कै कोट एक पल में, देख उड़ावे पैदा कर ।
ऐसी कुदरत नूर जलालपें, नूर मकान ऐसा कादर ॥ ९
ए बातून जो मेरे अरस का, सो सुध नूर को भी नाहें ।
मेरी गुझ अरस जो खिलवत, तुम इन खिलवत के माहें ॥ १०
दोस्ती हक हमेसगी, क्यों भुलाए दई मोमन ।
तुम जो रूहें अरस की, मेरे अरस के तन ॥ ११
अंग हादी मेरे नूर से, तुम रूहें अंग हादी नूर ।
तो अरस कह्या तुम दिल को, जो रूहें वाहेद तन हजूर ॥ १२
और भी लिख्या महंमद को, आसमान से तेहेत—सरा[2] ।
ए बहुविध बेहेरुल—हैवान[3], जल सिर लग कुफर भरया ॥ १३

---

१. वचन । २. पाताल । ३. पशुत्व की पराकाष्ठा, भव सागर के जीव ।

कै विध के माहें हैवान, कै जिन देव इन्सान ।
बीच मरजिया[1] होए काढ़ी सीप, मिने मोती महंमद पेहेचान ॥ १४
सो तुम अजूं न समझे, मैं कर लिख्या मासूक ।
ए सुकन सुन तुम मोमनों, हाए हाए हुए नहीं टूक टूक ॥ १५
बसरी मलकी हकी लिखी, आई महंमद तीन सूरत ।
एक अव्वल दो आखर, सो वास्ते तुम उमत ॥ १६
बंदगी मजाजी और हकीकी, ए जो कहियाँ जुदियां दोए ।
एक फरज[2] दूजा इस्क, क्यों न देख्या बेवरा सोए ॥ १७
ए जो फरज मजाजी बंदगी, बीच नासूत हक से दूर ।
होए मासूक बंदगी अरस में, कही बका हक हजूर ॥ १८
दोस्ती कही हक की, तिन में *समनून[3] पातसाह ।
पातसाह कौन होए विना मासूक, देखो इस्म[4] कुरान खुलासा ॥ १९
अव्वल दोस्ती हक की, लिखी माहें फुरमान ।
पीछे दोस्ती बंदन की, क्यों करी ना पेहेचान ॥ २०
मैं कदीम[5] लिखी मेरी दोस्ती, ए किए न सहूर सुकन ।
तुमको बेसक किए इलमसों, हा हा अजूं याद न आवे रूहन ॥ २१
दोस्त मेरे मोमन, और मासूक हादी बेसक ।
तो नाम लिख्या अपना, मैं तुमारा आसिक ॥ २२
मैं लिख्या है तुम को, जो एक करो मोहे साद[6] ।
तो दस बेर मैं जी जी कहूँ, कर कर तुमें याद ॥ २३
और भी लिख्या मैं तुमको, मैं करत तुमारी जिकर ।
मेरी तुम पीछे करत हो, क्यों कर ना देखी फिकर ॥ २४
ए जो मैं लिखी बुजरगियाँ, सो है कोई तुम विन ।
जित भेजों मासूक अपना, जो चीन्हे मेरे सुकन ॥ २५

१. गोताखोर । २. कर्तव्य । ३. एक नाम । ४. संज्ञा । ५. प्राचीन । ६. स्मरण (याद) ।

मैं किन पर भेजों इसारतें, पढ़ी जाएँ न रमूजें किन ।
तुम जानत हो कोई दूसरा, है विना अरस रूहन ॥ २६

ए जो औलाद आदम की, सब पूजत हैं हवा ।
सो जाहेर लिख्या फुरमान में, क्या तुम पाया न खुलासा ॥ २७

ए जो दुनियां खेल कबूतर, तित भी दिए कुलफ दिल पर ।
पावे हकीकत कलाम अल्लाह की, सो खुले ना लुदंनी बिगर ॥ २८

सो तो दिया मैं तुम को, सो खुले ना विना तुम ।
जो मेरी सुध दयो औरों को, सो चले तुमारा हुकम ॥ २९

सो सुकन हकें अव्वल कहे, अरस में महंमद को ।
केतेक जाहेर कीजियो, बाकी गुझ रखियो दिल मों ॥ ३०

सरा सुकन कराए जाहेर, गुझ रखे बका बातन ।
मूदया[1] रख्या द्वार मारफत का, वास्ते पेहेचान अरस रूहन ॥ ३१

पट बका किने न खोलिया, कै अवतार हुए तिथंकर ।
हक इलम विना क्योंए ना खुले, कै लाखों हुए पैगम्मर ॥ ३२

अरस बका पट खोलसी, आखर बखत मोमन ।
साहेब जमाने की मेहेर से, दिन करसी बका रोसन ॥ ३३

राह देखाई तौहीद की, महंमद चढ़ उतर ।
सोए तुमारे वास्ते, क्यों न देखो सहूर कर ॥ ३४

और जो पैदा जुलमत से, सो तुम जानत हो सब ।
ए क्यों छोड़ें हवा को, जिनों असल देख्या एही रब ॥ ३५

इलम लुदंनी तुमपें, जिन पेहेले पाई खबर ।
और न कोई वाहेदत विना, तो इत आवेंगे क्यों कर ॥ ३६

मेराज हुआ महंमद पर, सो कौल बका के ।
सो साहेदी के दो एक सुकन, बीच मुहककों पसरे ॥ ३७

---

१. बंद ।

बका सुकन सब मेराज[1] के, जाहेर किए सब में।
सब अरस बका मुख बोलहीं, और सुकन ना गिरोह से ॥ ३८
सो खासी गिरो महंमदकी, तामें ए बात होत रात दिन।
मुख छोटे बड़े याही सुकन, और बोले न बका बिन ॥ ३९
बका सबद मुख सब के, सो इलम सब में गया पसर।
सबद फना को न देवे पैठने, ऐसा किया बखत रूहों आखर ॥ ४०
सबद फना गए रात में, किया बका सबदों फजर।
कुफर अंधेरी उड़ उई, बोल पाइए न बका बिगर ॥ ४१
ए कह्या था अव्वल, रसूलें इत आए।
सो रूहें रूहअल्ला इमाम, फजर करी बनाए ॥ ४२
अव्वल कह्या इलम ल्यावसी, आया तिनसे ज्यादा बेसक।
सो नीके लिया मोमनों, पाई अरस मारफत हक ॥ ४३
ए इलम लिए ऐसा होत है, आप बेसक होत हैयात।
और कायम हुए देखे सबको, पावे दीदार बातून हक जात ॥ ४४
देखी अपनी भिस्त आप नजरों, जो होसी बका परवान।
सब करम काटे हक इलमसों, देखी बेसक मेहेर सुभान ॥ ४५
हक तरफ जानें नूर अक्षर, और दूजा न जाने कोए।
पर बातून सुध तिन को नहीं, हक इलम देखावे सोए ॥ ४६
के सुख कायम इन इलम के, आवें न माहें हिसाब।
हक सुराही बका खिलवत में, ए इलम पिलावे सराब ॥ ४७
सो मैं भेज्या तुमें मोमनों, देखो पोहोंच्या इस्क चौदे तबक।
ऐसा इस्क मेरा तुमसों, इनमें पाइए न जरा सक ॥ ४८
यों किया वास्ते ईमान के, आवे आखर रूहन।
सो आए हुआ सबों रोसन, जाहेर बका अरस दिन ॥ ४९

---
१. साक्षात्कार।

अव्वल से बीच अब लग, तरफ पाई न बका की ।
महंमद एता ही बोलिया, जासों ईसा पावें साहेदी ॥ ५०

सो लई रूह अल्ला साहेदी, दूजी साहेदी आप दई ।
त्यों करी इमामें जाहेर, ज्यों सब में रोसन भई ॥ ५१

लई ईसे महंमद की साहेदी, बका जाहेर किया इमाम ।
हक हादी रूहन की, करी खिलवत जाहेर तमाम ॥ ५२

इन आखर दिनों इमाम, बानी बोले न बका बिन ।
सो सिर ले सुकन गिरोहने, कायम किए सबन ॥ ५३

दुनिया चौदे तबक के, दिए इलमें मुरदे उठाए ।
ताए मौत न होवे कबहूँ, लिए बका मिने बैठाए ॥ ५४

बड़ाई इन इलम की, क्यों इन मुख करों सिफत ।
सो आया तुममें मोमनों, जाको सबद न कोई पोहोंचत ॥ ५५

और सराब मेरी सुराही का, सो रख्या था मोहोर[1] कर ।
सो खोलने बोहोतों किया, पर क्यों खोलें कबूतर[2] ॥ ५६

सो रख्या तुमारे वास्ते, सो तुमही ल्यो दिल धर ।
लिखे फूल प्याले तुम ताले, अछूत पियो भर भर ॥ ५७

सराब मेरी सुराही का, सो रूहों मस्ती देवे पूरन ।
दे इलम लुदंनी लज्जत, हक बका अरस तन ॥ ५८

जो बैठे हैं होए पहाड़ ज्यों, सो उड़ाए असराफीलें सूर ।
सूरें खोले मगज मुसाफ के, हुए जाहेर तजल्ला नूर ॥ ५९

तब उड़े काफर हुते जो पहाड़ से, हुए मोमनों बान चूर ।
लगे और बान अरस इलमें, तिन हुए कायम नूर हजूर ॥ ६०

जो लिखी सिफतें फुरमान में, सो सब तुम अरस रूहन ।
और सिफत तो होवही, जो कोई होवे वाहेदत बिन ॥ ६१

---

१. सील बन्दकर । २. माया के जीव ।

चौदे तबक पढ़ पढ़ गए, किन खोली नहीं किताब ।
इसारतें रमूजें क्यों खुलें, देखो किन खोलाई दे खिताब ।। ६२

मुकता हरफ तुम वास्ते, अखत्यार दिया हादी पर ।
जो चौदे तबक दुनी मिले, तो माएने होए न हादी बिगर ।। ६३

जाहेर खिताब हादी पर, दिया वास्ते मोमन ।
सो मुकता—हरफ[1] के माएने, होए न लुदंनी बिन ।। ६४

सो दिया लुदंनी तुम को, तुम खोलो मुकता हरफ ।
मैं अरस किया दिल मोमन, जाकी पाई न किन तरफ ।। ६५

ए जाहेर तुमारा माजजा[2], पढ़े हरफ कर पढ़ते थे ।
ए भेद हक हादी रूहों, बीच खिलवत का जे ।। ६६

सो रख्या तुम्हारे वास्ते, ए खोलो तुम मिल ।
दुनी पावे ना इन तरफ को, सो बीच अरस तुमारे दिल ।। ६७

हक बका मता जाहेर किया, पर ए समझ्या नाहीं कोए ।
कह्या हरफै के बयान में, बिना तालें न पेहेचान होए ।। ६८

ए बयान पुकारे जाहेर, इत पोहोंचे ना दुनी सहूर ।
ए हादी जानें या अरस रूहें, हक खिलवत का मजकूर ।। ६९

तरफ भी किन पाई नहीं, पावे तो जो दूसरा होए ।
तुम तो बीच वाहेदत के, और जरा न कित कहूँ कोए ।। ७०

तुम जानो हम जाहेर, होएँ जुदे हक बिगर ।
हम तुम अरस में एक तन, तुम जुदे होए सको क्यों कर ।। ७१

दुनी जुदे तुमें तो जानहीं, जो तुम जुदे हो मुझ से ।
हम तुम होसी भेले जाहेर, आपन वाहेदत हैं अरस में ।। ७२

मैं तेहेत—कबाए[3] तुमको रखे, कोई जाने न मुझ बिन ।
तुमको तब सब देखसी, होसी जाहेर बका अरस दिन ।। ७३

---

१. सब धर्म ग्रन्थों के निचोड़ । २. चमत्कार । ३. अपने दामनके नीचे ।

जब पेहेले मोको सब जानसी, तब होसी तुमारी पेहेचान ।
हम तुम अरस जाहेर हुएँ, दुनी कायम होसी निदान ॥ ७४

मैं तुमारा मासूक, तुम मेरे आसिक ।
और तुम मासूक मैं आसिक, ए मैं पुकारचा माहें खलक ॥ ७५

है को नाहीं कीजिए, सो तो कबूं न होए ।
नाहीं को है कीजिए, सो कर न सके कोए ॥ ७६

हक आप काजी होए बैठसी, सो क्या सहूर न किए सुकन ।
ला सरीक न बैठे किन में, ना कोई वाहेदत विन ॥ ७७

सहूर विना सब रेहे गया, और सहूर लुदंनी माहें ।
सो तो सूरत हकीयपें, और वाहेदत विना कोई नाहें ॥ ७८

चौदे तबक इतना नहीं, जाके कीजे टूक दोए ।
विना वाहेदत कछू ना रख्या, क्यों ना देख्या लिख्या सोए ॥ ७९

दई कुंजी सनाखत[1] तुम को, मैं भेज्या मासूक रसूल ।
बेसक करियां दे इलम, सो भी गैयां तुम भूल ॥ ८०

तुम बैठे जिमी नासूती, आड़ा मलकूत जबरूत ।
सात आसमान हवा बीच में, मैं बैठा ऊपर लाहूत ॥ ८१

सो दूर राह आसमान लग, बीच ऐसे सात आसमान ।
सो भी राह फिरस्तन की, ऊपर जुलमत ला मकान ॥ ८२

नूर मकान हुआ तिन पर, राह चले ना नूर पर ।
जित पर जले जबराईल, तित वजूद आदम पोहोंचे क्योंकर ॥ ८३

तित पोहोंच्या मेरा मासूक, कै गुझ बातें करी हजूर ।
सो फिरचा तुम रूहों वास्ते, आए जाहेर करी मजकूर ॥ ८४

मैं तुम पें भेजी रूह अपनी, आपन एते पड़े बीच दूर ।
मैं इलम भेज्या बेसक, तुमें दम में लिए हजूर ॥ ८५

---

१. पहचान ।

राह सेहेरग सें देखाई नजीक, दई हादिएँ हकीकत ।
पुल सरात सें फिराए के, पोहोंचाए अरस वाहेदत ।। ८६

ऐसे परदेस में बैठाए के, इन बिध लिखी गुहाए ।
इन धनी की गुहाई ले ले, हा हा उड़त ना अरवाए ।। ८७

मैं साख देवाई दोऊ हादियों पें, सो तुमें मिले सब निसान ।
अब तो बोले सब कागद, योंहीं बोली सब जहान ।। ८८

अब पांचों तत्व पुकारहीं, आई रोड़े बीच आवाज ।
सो सब किए तुम कायम, वास्ते तुमारे राज ।। ८९

इस्क सबों में अति बड़ा, बका भोम चेतन ।
दायम नजर तले नूर के, पेहेचान सबों पूरन ।। ९०

सोए करें तुमारी बंदगी, एही इनों जिकर ।
इनों सिर हक एक तुम हीं, और कोई ना वाहेदत विगर ।। ९१

ए कायम सब आगे ही किए, तुम हादी रूहों वास्ते ।
जो देखो अन्दर बिचार के, तो रूह साहेदी देवे ए ।। ९२

जिन हरबराओ[1] मोमनों, हुकम करत आपे काम ।
खोल देखो आंखें रूह की, जिन देखो दृष्ट चाम ।। ९३

राज रोज रूहन का, जब पोहोंच्या इत आए ।
तखत बैठे साह कहावते, देखो क्यों डारे उलटाए ।। ९४

पैगाम दिए तुम जिन को, जो कहावते थे सुलतान ।
सो पटके उसी हुकमें, जिन फेरया हादी फुरमान ।। ९५

भरत खंड सुलतान कहावते, सो दिए सब फँदाए ।
इन विध उरझे आपमें, सो किनहूँ न निकस्यो जाए ।। ९६

उलट पलट दुनियां भई, तो भी देखत नाहीं कोए ।
काढ़ ईमान कुफर दिया, ए जो सबे दुनी दीन दोए ।। ९७

---

१. घबराओ ।

हुकमें वेद कतेब में, लिखे लाखों निसान ।
सो मिले कौल देखे तुम, हाए हाए अजूं न आवे ईमान ॥ ९८

चाक[1] चढ़ी सब दुनियां, आजूज माजूज हुए जोर ।
सो तुम अजूं न देखत, एता पड़या आलम में सोर ॥ ९९

हुकम ल्याया जो हकीकत, सो क्यों कर ना देख्या सहूर ।
ल्याया तुमारे अरस में, हुकम जबराईल जहूर ॥१००

सेजदा जित सरियत का, तित आए लिखाई पुकार ।
एते किन वास्ते लिखे, ए तुम अजहूँ न किया विचार ॥१०१

किन लिखाए सखत सौगंद, जो सरियत सामी बल ।
तिन सब को किए सरमंदे, हा हा अजूं याद न आवे असल ॥१०२

दुनी बरकत सफकत[2] फकीरों, और अल्ला कलाम ।
उठाए दुनी से जबराईल, ल्याया अपने मुकाम ॥१०३

महंमद मेहेदी ईसा अहंमद, बड़ा मेला इसलाम[3] ।
जित सूर फूक्या असराफीले, होसी चालीस सालों तमाम ॥१०४

किन उठाए हिंदू ठौर सेजदे, किन मिलाए आखर निसान ।
किन खड़े किए मोमन, कराए पूरन पेहेचान ॥१०५

ए झंडा किने खड़ा किया, ए जो हकीकी दीन ।
ए लाखों लोक हिंदूअन के, इन को किनने दिया आकीन ॥१०६

ए जो द्वार अरस अजीम का, किन खोल्या कुंजी ल्याए ।
इलम लुदंनी मसी बिना, और काहूँ न खोल्या जाए ॥१०७

ए जो बुजरगी महंमद की, म्याराज हुआ इन पर ।
महंमद साहेदी ईसे मेहेदी बिना, कोई दूजा देवे क्यों कर ॥१०८

उठे दीन सखत बखत में, पसरया सबों में कुफर ।
करें रूहें कुरबानी इन समे, ए क्यों होए रसूल रब्ब बिगर ॥१०९

---

१. चक्र में फँसी । २. कृपा । ३. अनादि सत्य धर्म ।

किन सुख देखाए अरस के, बहु विध बिना हिसाब ।
अनभव अपना देख के, हा हा अजूं न उड़या ख्वाब ॥११०

उतर आए कही रूह अल्ला, सुख सब अरसों हकीकत ।
पाई हक सूरत की अनभव, दई निसबत मारफत ॥१११

बहु बिध भेज्या फुरमान, तिन में सब अरसों न्यामत ।
खिलवत वाहेदत सुध भई, और सुध दई क्यामत ॥११२

दोऊ हादियों दई साहेदी, मिलाए दिए निसान ।
तो भी लज्जत न पाई रूहों ने, हा हा जो एती भई पेहेचान ॥११३

होज जोए की साहेदी, और जिमी बाग जानवर ।
दई जुदी जुदी दोऊ साहेदी, तो भी दिल गल्या नहीं पत्थर ॥११४

दोए अरस कहे दोऊ हादियों, कही अरसों की मोहोलात ।
कही अमरद और किसोर, ए अरस सूरत हक जात ॥११५

भेज्या बेसक दारू हैयाती, तुम पें मेरे हाथ हबीब[1] ।
किए चौदे तबक मुरदे जीवते, तुम को ऐसे किए तबीब[2] ॥११६

न थी हिंमत आप उठे की, सो तुम उठाए चौदे तबक ।
ऐसा किया बैठ नासूत में, तुमें इनमें रही न सक ॥११७

ऐसे बेसक होए के, तुमें अजूं न अरस लज्जत ।
एता मता ले दिल में, हा हा तुमें दरदा भी न आवत ॥११८

हा हा ए देख्या बल जुलमत का, दिल ऐसा किया सखत ।
ना तो एक साख मिलावते, अरस अरवा तबहीं उड़त ॥११९

स्याबास तुमारी अरवाहों को, स्याबास हैड़े सखत ।
स्याबास तुमारी बेसकी, स्याबास[3] तुमारी निसबत ॥१२०

धंन धंन तुमारे ईमान, धंन धंन तुमारे सहूर ।
धंन धंन तुमारी अकलें, भले जागे कर जहूर ॥१२१

१. प्यारे । २. वैद्य । ३. धन्य ।

अरस बताए दिया तुमको, और बताए दई वाहेदत ।
सहूर इलम कुंजी सब दई, बैठाए माहें खिलवत ॥१२२
एता मता जिन दिया, तिन आप देखावत केती बेर ।
पर तुमें राखत दोऊ के दरम्यान, न तो क्यों रहे मोह अंधेर ॥१२३
बड़ाई तुमारी बका मिनें, निपट दई निहायत[1] ।
तुमें खुदा कर पूजसी, ऐसी और न काहूँ सिफत ॥१२४
ऐसी हुई न होसी कबहूँ, जो तुम को दई साहेबी ।
ए सुध अजूं तुमें ना परी, सुध आगूं तुमें होएगी ॥१२५
तुम खेल में आए वास्ते, करी कायम जिमी आसमान ।
तिन सब के खुदा तुमको किए, बीच सरभर लाहूत सुभान ॥१२६
सो भी पूजें तुमारे अकस को, तुम आए असल वतन ।
तिन सबकी लज्जत तुमें आवसी, सब तले तुमारे इजन[2] ॥१२७
ए सब बातें ले दिल में, और दिलको लिख्या अरस ।
भिस्त करी तुम कायम, होसी तामें बड़ा तुमें जस ॥१२८
तुम दई भिस्त बका ब्रह्मांड को, तिनमें जरा न सक ।
किए नाबूद से आपसे, तो भी गुन जरा न देख्या हक ॥१२९
सो तुमें याद आवसी, ओ तुमें करसी याद ।
तुमें पूजें जिमी बका मिने, अजूं इनका केता ल्योगे स्वाद ॥१३०
तुम मांगी है बुजरगी, तिनसों कोट गुनी दई ।
दे साहेबी ऐसे अघाए, चाह चित्तमें कहूँ न रही ॥१३१
क्यों देवें तुमको साहेबी, बीच जिमी फना मिने ।
तिनसे तुमारी उमेदें, होंए न पूरन तिने ॥१३२
तुम मांगी बीच ख्वाब के, जित आगे अकल चलत नाहें ।
धनी देवें आप माफक, याकी सिफत न होए जुबांए ॥१३३

१. अत्यधिक । २. हुक्म ।

तुम आए तिन जिमीय में, जिनमें न काहूँ सबर ।
पेहेले बिन मांगे दई तुमको, अब होसी सब खबर ॥१३४

खेल देखाया तिन वास्ते, उपजे तुमको चाह ।
ए खेल देख के मागोगे, जानो होवें हम पातसाह ॥१३५

सो कै पातसाह जिमी पर, करें पातसाही बीच नासूत ।
कै तिन पर इंद्र ब्रह्मा फिरस्ते, तापर पातसाह माहें मलकूत ॥१३६

कै कोट मलकूत जात हैं, जबरूत के एक पलक ।
ए सब पातसाही फना मिने, इनों का खुदा नूर हक ॥१३७

नूरजमाल आवें दीदारें, जो आपन बैठे माहें लाहूत ।
तिन चाह्या देखों रूहों इस्क, तुमें तो देखाया नासूत ॥१३८

तुमें नासूत देख दिल उपज्या, करें पातसाही फना में हम ।
मैं दई पातसाही बका मिने, सो अब देखोगे सब तुम ॥१३९

ए सुध तुमको न हुती, तो तुम थोड़ा मांग्या निपट ।
कोट गुना दिया तुमको, खोल देखो अंतर पट ॥१४०

जैसी तुमारी साहेबी, करी मेहेर तिन माफक ।
सुध हुएँ खुसाली होएसी, जो करी अपने मासूक हक ॥१४१

देखो अचरज महामत मोमनों, जो बेसक हुए हो तुम ।
तुमें किन दई एती बुजरगी, दिल अरस कर बैठे खसम ॥१४२

॥ प्रकरण ॥ २९ ॥ चौपाई ॥ २२११ ॥

**प्रकरण तथा चौपाइयों की कुल संख्या—प्रकरण ४६८, चौपाई १६३७६**

**इति श्री महामति श्रीप्राणनाथ जी की 'तारतम बानी' का**

**तेरहवाँ ग्रन्थ**

**॥ सिनगार संपूर्ण ॥**

निजनाम श्री कृष्णजी, अनादि अक्षरातीत ।
सोतो अब जाहेर भए, सबबिध वतन सहित ॥

श्री किताब सिंधीकी जो सिंधी भाषा मिने
आखर फजरकों हजूरने अरज करी है सो
स्वाल जवाब लिखे हैं सो अरस
रूहें हालसों सुनियो, ज्यों
हाल तुमको भी आवे ।

## ❋ सिंधी ❋

आखर[१] वेरा[२] उत्थणजी[३], अंई[४] रूहें छडेजा[५] रांद[६] ।
उत्थी विच्च अरसजे, कोड[७] करे मिडूं[८] कांध[९] ॥ १

धणी मूहजी[१०] रूहजा, हांणे[११] चुआं[१२] कीअ[१३] करे ।
रूहके डिन्यो परडेहडो[१४], चओ[१५] सो दिल धरे ॥ २

इसक डिने[१६] तूं, तो रे इसक न अच्चे[१७] ।
घणुएँ करियां आऊं[१८], कूड न उडे रे सच्चे ॥ ३

कीं करिआं केडा[१९] वंजां[२०], चुआं कीअ करे ।
न पेराइआं[२१] पडूत्तर, न अच्ची सगां[२२] गरे[२३] ॥ ४

सज्जण मूहजी रूहजा, तांजे डिए रूह सांजाए[२४] ।
त हिकै आहि अरवाह के, पेरे तरे पुजाए[२५] ॥ ५

धणी मूहजी रूहजा, गिनी[२६] वेई[२७] विसराई ।
पेईस[२८] ते पेचन में, बडी जार बडाई ॥ ६

---

१. अन्तिम । २. समय । ३. उठना (जागना) । ४. तुम । ५. छोड़ो । ६. खेल (माया) । ७. खुशी । ८. मिलो । ९. धनी । १०. मेरे । ११. अब । १२. कहूँ । १३ कैसे । १४. परदेश । १५. कहो । १६. देने पर । १७. आता है । १८. मैं । १९. कहाँ । २०. जाऊँ । २१. पाती हूँ । २२. सकना । २३ पास । २४. पहचान । २५. पहुँचें । २६. लेकर । २७. गई । २८. पड़ी हूँ ।

मूं मँगी आं डेखारई, करिआं गाल केई ।
हांणे चोराइए त चुआं थी, गाल गरी[१] थी पेई ।। ७

तरसाइए[२] त तरसां मूहके, मूं मंझां[३] कीं न सरचो[४] ।
सभ गाल्यूं आंजे हत्थमें, जाणे तींअ[५] करचो ।। ८

सिकाइए त सिकां,[६] मू में सिकण न कीं ।
रोहोंदिस[७] तेही हालमें, अंई रखंदा[८] जीं ।। ९

हिक सिकां तोहिजे सुखके, जे से संभरे[९] सुख ।
से सुख हिन विसारिआं, हे जे डिठम[१०] डुख[११] ।। १०

हिन सुखे संदियूं[१२] गालियूं, आईन[१३] अलेखे ।
हिअडो[१४] मूं सुजो [१५] थिओ, हिए न अच्चे[१६] ते ।। ११

जे सुख तोहिजी अंखिएँ, डिना अस्सांके तो ।
से सुख कंने[१७] मूं सुआं,[१८] सुजो हिओ न झल्ले[१९] सो ।। १२

जे सुख तोहिजे अरस में, डिना तो गालिन ।
से सभ विअम[२०] विसरी,[२१] सुजे हिअडे न चढिन ।। १३

के पडूत्तर[२२] मूं केआं, के तो केआं कांध ।
से सुजे हिएँ न संभरे, विसरचा मए रांद ।। १४

हिएँ चढ़ाइए तूं, त सभ सुख हिओ झल्ले ।
जे सुख डिए मेहेर करे, त बेओ[२३] केर पल्ले[२४] ।। १५

तो तरसाएँ तरसण, तोके पस्सण[२५] नेण ।
कोड थिए कननके, तोहिजा सुणन मिठडा वेण ।। १६

तो तरसाएँ तरसण, हिअडो मिडन के ।
हे डिनो अच्चे मासूकजो, इसक अरसमें जे ।। १७

विहारे वट ओडडी,[२६] मत्थें डिनो परडेह ।
डिस्सां न सुणिआं गालडी, कीं करिआं चुआं केकेह ।। १८

---

१. भारी । २. विलखाओ । ३. से । ४. पूरा होना । ५. तैसे ही । ६. लालायत हूँ । ७. रहूँगी । ८. रखोगे । ९. याद आना । १०. देखे । ११. दुःख । १२. की । १३. है । १४. दिल । १५. खाली । १६. आता है । १७. कानों से । १८. सुनना । १९. ग्रहण करना । २०. गई । २१. भूल । २२. उत्तर । २३. दूसरा । २४. रोके, पकड़े । २५. देखने को । २६. निकट ।

जे अरवाहें अरस ज्यूं, से सभ मूं अडां[1] न्हारीन ।
आंऊं पस्सां आं अडूं, हे बिठचूं जर[2] हारीन[3] ॥ १९

तो लिख्यो *फुरमानमें, मूं अरस दिल मोमन ।
से सुणी वेण फुरमान जा, मूजो झल्यो दिल रूहन ॥ २०

त केहो पडूत्तर मूहके, चुआं कुरो[4] रूहन ।
रूहें उमेदूं मूंमें, आंके[5] सभ रोसन ॥ २१

हाणे केहडो[6] हाल मूहजो, रूहें केहडो हाल ।
न डेखारे न डिठम, बेओ तो रे *नूरजमाल ॥ २२

तो डिनी सोहेली करे, न तां वाट घणूं विखम ।
हेआं हल्लो सभ सुखन में, रूहें घुरें[7] एह खसम ॥ २३

तो पाण डेखारे डिठम, बेओ कोए न रखे हंद ।
सेहेरग[8] से डेखारे ओडडो, कित करणो पेओ न पंध[9] ॥ २४

तो चुआंओ चुआंथी, मूंजी या उमत ।
अस्सीं इंदासी[10] कोठिआं[11], कोठीने जे[12] भत ॥ २५

रूहें अस्सीं निद्रमें, न तां घणां लाड घुरन ।
अंईं जाणोथा सभ कीं, जे हाल आए रूहन ॥ २६

चायो आंजो चुआंथी, मूं हंद[13] न्हाए कुच्छ्ण ।
संग वेअम विसरी, छडिम ते घुरण ॥ २७

घुरण अच्चे दिल में, पण द्रज्जां[14] तोहिजे द्राए ।
लाड करे त घुरां, जे पस्सां संग सांजाए ॥ २८

रूहें चोंण सभे मूंहके, हाणे आंऊं चुआं केकेह ।
न पस्सां न सुणिआं संडेहडो[15], डिंने पेरे हेठ परडेह ॥ २९

सच्चो सोणे जी थेओं, भाइयां सोणो थेओ सच्चो ।
लाड कोड के से करिआं, अंखिएँ जां न अच्चो ॥ ३०

---

१. तरफ । २. जल । ३. बहा रही हैं । ४. क्या । ५. आपको । ६. कैसा । ७. मांगें । ८. शाहरग, दिल से । ९. रास्ता । १० आएँगे । ११. बुलाने से । १२. जिस तरह । १३. ठिकाना । १४. डरती हूँ । १५. संदेशा ।

कीं करिआं गालडी, जां न पस्सा पांहिजे नेण ।
जे सुणाइए त सुणां, मिठडा तोहिजा वेण ॥ ३१

सुख तोहिजा सिपरी, अच्चे न लेखे में ।
पार न अच्चे अपारजो, कडी न गणिआं के ॥ ३२

गुझांदर[१] रूहन जो, सभे तूं जाणे ।
कुरो चुआं विच्च बड़ी थेई, मूं पांहिजेडी न पाणे ॥ ३३

जा कांध न करे पांहिजो, ऊभी[२] बिअनके चोए ।
डे सुहाग बिअनके, पांण अंगण ऊभी रोए ॥ ३४

बेओ जमारो[३] बडाईमें, बेठी खोए उमर ।
डे बडाइयूं बिअनके, पाण न खुल्यो दर ॥ ३५

थेई धणीसे सुरखरू[४], सेई सुहागिण होए ।
सामर[५] गिने पाणसे, जे आडो पट न कोए ॥ ३६

आंऊं पांहिजी[६] परमें, कीं कीं पाणके भाइयां[७] ।
बडी थीअन विच्चमें, छेडो छडाइयां[८] ॥ ३७

गाल्यूं मूजे[९] दिलज्यूं, सभ तूंहीं सुजाणे[१०] ।
हे सभेई तोहिज्यूं, तो करायूं पाणे ॥ ३८

मथे आंऊं त गिना, जे कीं मूमें होए ।
आंऊं गुझ जांणा पाण विच्च जो, बेओ न जाणे कोए ॥ ३९

मूके बड़ी वधारिए, डिने सभनी[११] में सुहाग ।
कीं डिठम[१२] कीं डिसंदिस, जेडो कंने भाग ॥ ४०

त केहो जवाब *रूहनके, विच्च करिआं की आंऊं ।
न कीं सुणाइए गुझमें, न पांइदडे[१३] धांऊं[१४] ॥ ४१

तो मूके ई बुझाइओ[१५], जे तूं हेकली[१६] थिए ।
त तोसे करिआं गालडी, दीदार पण डिए ॥ ४२

---

१. मन के भेद । २. खड़ी । ३. जीवन । ४. सामने । ५. वह भले । ६. अपने आप में । ७. पहचानती हूँ । ८. छुड़ाया । ९. मेरे । १०. जानते हैं । ११. सब में । १२. देखा । १३. करना । १४. पुकार । १५. समझाया । १६. अकेली ।

आंऊं हेकली कीं थिआं, बी[1] लगाई तो ।
तो रे आए को कित्तई[2], जे हिनके पल्ले[3] सो ॥ ४३

से बस न्हाए मूंहजे, जे कीं करिए से तूं ।
जे कीं जाणे से करचो, मूं में रही न मूं ॥ ४४

थी न सगां हेकली, बी तो लगाई ।
छूटे न तोहिजे तोह रे, मूंजी फिरे न फिराई ॥ ४५

गोता खेंदे[4] वेई उमर, पट[5] सूके रे पाणी ।
जे तो डिंनी हेत करे, सा टरे न सत्राणी[6] ॥ ४६

हे जा पेयम[7] फांई[8] जोर जो, से जा लाहिआं[9] जोर करे ।
भल्ले पेर पिरनजा[10], पण मूंजी टारी कीं न टरे ॥ ४७

धणी मूंहजी रूहजा, मूं से हित गालाए ।
पिरी पस्सण जीं थिए, से तूंहीं डिए[11] उपाए ॥ ४८

हे डात्यूं[12] सभ तोहिज्यूं, इसक जोस अकल ।
मूरा[13] बुझाइए मूंहके, आखर लग असल ॥ ४९

आंऊं अव्वल न आखर, सभनी हंदे तूं ।
हे मुराई[14] भली भत्तें, हे तो डेखारई मूं ॥ ५०

अरज पांहिजी *रूहनजी, सभ तूं हीं कराइए ।
बाहेर मंझ अंतर, सभ तूं ही आइए[15] ॥ ५१

जीं[16] कढे तूं हिआं, जीं पुजाईने घर ।
हल्ले न जरे जेतरी[17], बी केहजी[18] फिकर ॥ ५२

तूं करिए तूं कराइए, तूं पुजाइए पाण ।
जा मथे गिने तिर जेतरी, सा जोए बडी अजाण ॥ ५३

सिकण[19] सडण[20] जीरे[21] मरण, से सभ हत्थ धणी ।
तो चंगी परे डेखारिओ, त मूं न्हारचो नेण खणी ॥ ५४

---

१. दूसरी । २. कहीं भी । ३. पकड़े । ४. खाते हुए । ५. धरती । ६. शत्रु (माया) । ७. पड़ गई । ८. फाँसी । ९. उतारूं । १०. प्रीतम । ११. दे । १२. बकसीस । १३. मूल से । १४. प्रथम से । १५. हैं । १६. जैसे । १७. जितनी । १८. किसकी । १९. तरसना । २०. बुलाना । २१. जीना-मरना ।

कीं करिआं गालडी, जां न पस्सा पांहिजे नेण ।
जे सुणाइए त सुणां, मिठडा तोहिजा वेण ॥ ३१

सुख तोहिजा सिपरी, अच्चे न लेखे में ।
पार न अच्चे अपारजो, कडी न गणिआं के ॥ ३२

गुझांदर[1] रूहन जो, सभे तूं जाणे ।
कुरो चुआं विच्च बड़ी थेई, मूं पांहिजेडी न पाणे ॥ ३३

जा कांध न करे पांहिजो, ऊभी[2] बिअनके चोए ।
डे सुहाग बिअनके, पांण अंगण ऊभी रोए ॥ ३४

बेओ जमारो[3] बडाईमें, बेठी खोए उमर ।
डे बडाइयूं बिअनके, पाण न खुल्यो दर ॥ ३५

थेई धणीसे सुरखरू[4], सेई सुहागिण होए ।
सामर[5] गिने पाणसे, जे आडो पट न कोए ॥ ३६

आऊं पांहिजी[6] परमें, कीं कीं पाणके भाइयां[7] ।
बडी थीअन विच्चमें, छेडो छडाइयां[8] ॥ ३७

गाल्यूं मूजे[9] दिलज्यूं, सभ तूंहीं सुजाणे[10] ।
हे सभेई तोहिज्यूं, तो करायूं पाणे ॥ ३८

मथे आऊं त गिना, जे कीं मूमें होए ।
आऊं गुझ जांणा पाण विच्च जो, बेओ न जाणे कोए ॥ ३९

मूके बड़ी वधारिए, डिने सभनी[11] में सुहाग ।
कीं डिठम[12] कीं डिसंदिस, जेडो कंने भाग ॥ ४०

त केहो जवाब *रूहनके, विच्च करिआं की आऊं ।
न कीं सुणाइए गुझमें, न पांइदडे[13] धांऊं[14] ॥ ४१

तो मूके ईं बुझाइओ[15], जे तूं हेकली[16] थिए ।
त तोसे करिआं गालडी, दीदार पण डिए ॥ ४२

---

१. मन के भेद । २. खड़ी । ३. जीवन । ४. सामने । ५. वह भले । ६. अपने आप में । ७. पहचानती हूँ । ८. छुड़ाया । ९. मेरे । १०. जानते हैं । ११. सब में । १२. देखा । १३. करना । १४. पुकार । १५. समझाया । १६. अकेली ।

आऊं हेकली कीं थिआं, बी[1] लगाई तो ।
तो रे आए को कित्तई[2], जे हिनके पल्ले[3] सो ॥ ४३
से बस न्हाए मूंहजे, जे कीं करिए से तूं ।
जे कीं जाणे से करचो, मूं में रही न मूं ॥ ४४
थी न सगां हेकली, बी तो लगाई ।
छूटे न तोहिजे तोह रे, मूंजी फिरे न फिराई ॥ ४५
गोता खेंदे[4] वेई उमर, पट[5] सूके रे पाणी ।
जे तो डिनी हेत करे, सा टरे न सत्राणी[6] ॥ ४६
हे जा पेयम[7] फांई[8] जोर जो, से जा लाहिआं[9] जोर करे ।
झल्ले पेर पिरनजा[10], पण मूंजी टारी कीं न टरे ॥ ४७
धणी मूंहजी रूहजा, मूं से हित गालाए ।
पिरी पस्सण जीं थिए, से तूंहीं डिए[11] उपाए ॥ ४८
हे डात्यूं[12] सभ तोहिज्यूं, इसक जोस अकल ।
मूरा[13] बुझाइए मूंहके, आखर लग असल ॥ ४९
आऊं अव्वल न आखर, सभनी हुंदे तूं ।
हे मुराई[14] भली भत्तें, हे तो डेखारई मूं ॥ ५०
अरज पांहिजी *रूहनजी, सभ तूं हीं कराइए ।
बाहेर मंझ अंतर, सभ तूं ही आइए[15] ॥ ५१
जीं[16] कढे तूं हिआं, जीं पुजाईने घर ।
हल्ले न जरे जेतरी[17], बी केहजो[18] फिकर ॥ ५२
तूं करिए तूं कराइए, तूं पुजाइए पाण ।
जा मथे गिने तिर जेतरी, सा जोए बडी अजाण ॥ ५३
सिकण[19] सडण[20] जीरे[21] मरण, से सभ हत्थ धणी ।
तो चंगी परे डेखारिओ, त मूं न्हारचो नेण खणी ॥ ५४

---

१. दूसरी । २. कहीं भी । ३. पकड़े । ४. खाते हुए । ५. धरती । ६. शत्रु (माया) । ७. पड़ गई । ८. फाँसी । ९. उतारूं । १०. प्रीतम । ११. दे । १२. बकसीस । १३. मूल से । १४. प्रथम से । १५. हैं । १६. जैसे । १७. जितनी । १८. किसकी । १९. तरसना । २०. बुलाना । २१. जीना-मरना ।

हाणे गाल्यूं मूं जे हालज्यूं, कंदिस आं आंऊं ।
बेओ केर सुणीदो तो रे, जे करिआं बि धांऊं ।। ५५

तो न डेखारचो मूर थी, कोए बेओ ।
मूंजी रूहके *नूरजमाल रे, हंद जरो न कित रेओ[1] ।। ५६

*महामत चोए मेहेबूबजी, जे उपटिए[2] द्वार ।
रूहें गिनी[3] अच्वां[4] पाणसे, जीं अच्चो करिआं करार ।। ५७

प्रकरण ।। १ ।। चौपाई ।। ५७ ।।

रे पिरीअम[5], हत्थ तोहिजडे हाल ।
आएडी वेरां[6] उत्थणजी, हाणे पस्सां *नूरजमाल ।। १

*अरवाहें जा[7] हिन अरस जी, कीं छुडे खिलवत हक ।
जा डेखारिए रूहके, ते में जरो न सक ।। २

हिन[8] अरसजे बाग में, आयूं मुंदचूं[9] मींह[10] ।
हिन वेरां अस्सां के, जुदचूं रख्यूं कींह ।। ३

बडे *अरसजे मोहोलमें, मिडावा रूहन ।
आयासी[11] मोहोल बाग जे, मत्थड़ा मींह झबन[12] ।। ४

अरस बाग जे मोहोल में, झरोखे झांखन ।
तो डिने अस्सां जे दिलमें, हे[13] सुख याद अच्चन[14] ।। ५

चढीनी आयूं सेरडियूं[15], कपरियूं[16] गजन[17] ।
हे सुख डिए रूहन के, वनमें विज्यूं[18] खेवन[19] ।। ६

चढी झरोखे न्हारजे, मींह बसे मत्थें वन ।
वीटी[20] वरियूं वडरियूं[21], हिन वेरां बाग सोहन[22] ।। ७

अरस अग्यां[23] चांदनी, चई चोतरन[24] ।
हिन मुंदचूं मींह संदियूं[25], दोडे चढे ठेकन ।। ८

---

१. रहा । २. खोलिए । ३. लेकर । ४. आऊं । ५. प्रीतम । ६. समय । ७. जो । ८. इस । ९. ऋतु । १०. वर्षा । ११. आकाशी । १२. बरसता है । १३. वे । १४. आते हैं । १५. घटा । १६. बादल । १७. गर्जना । १८. बिजली । १९. चमकना । २०. घेर लिया । २१. बादल । २२. प्यारे लगते हैं । २३. आगे । २४. चबूतरे । २५. की, में ।

अग्यां अरस बागमें, करे कोइलडी टहुंकार ।
ढेली[1] मोर कणकिआं[2], जमुना जोए किनार ॥ ९

मत्थेनी वस्से मीहडो, वानर मोर कुडन[3] ।
कैंनी जातूं जानवर, कै जातूं पसुअन ॥ १०

पसू पंखी हिन अरसजा, ते कीं चुआं चित्राम ।
मिठी मोहें मिठी जिकरें, हे डिए रूहें आराम ॥ ११

वाओ अच्चे बागनमें, डालरियूं उलरन[4] ।
रूहें रांद[5] करीदियूं[6], मत्थें चढचूं लुडन[7] ॥ १२

जानवर जे हिन बाग जा, डारी डारी त्रपन[8] ।
मिठडी चूंजे[9] मिठी वाणिआं, हे रांदिका[10] रूहन ॥ १३

हिन मुदचूं मींह संदियूं, रूहें रांद करीन ।
दोडे कूडे मींहमें, पांहिजे[11] साथ पिरीन[12] ॥ १४

सुखडा जे हिन अरसजा, आईन[13] सभे कमाल[14] ।
रूहें बड़ी रूह विच्चमें, धणी सो *नूरजमाल ॥ १५

सेहेरचूं कपरियूं नूर ज्यूं, मिठडा नूर गजन ।
वसेथ्यूं नूर वडरियूं, वीजडियूं नूर खेवन ॥ १६

मिठडो वाओ नूर जो, अच्चे नूर खुसबोए ।
हे सुख अरस बाग में, कीं चुआं किनारे जोए[15] ॥ १७

महामत चोए मेहेबूबजी, तो परसाएँ पस्सन ।
अंखियूंनी आसा एतियूं, मूंजी रूहजी या रूहन ॥ १८

॥ प्रकरण ॥ २ ॥ चौपाई ॥ ७५ ॥

रे पिरीअम, मंगां सो लाड करे ।
एहेडी किज[16] कां[17] मुदसे[18], खिलंदडी लगां गरे[19] ॥ १

१. लटोर । २. किलोल करना । ३. खुश होना । ४. हिलती हैं । ५. खेल । ६. करती हैं । ७. झूलती हैं । ८. कूदते हैं । ९. चोंचे । १०. खिलौने । ११. अपने । १२. प्रीतम । १३. हैं । १४. मनोहर । १५. जमुना । १६. कर । १७. कुछ । १८. मुझसे । १९. गले ।

तो मूंके चेओ[१] तूं मूहजो, हेडी[२] करे निसबत ।
धणी मूहजे धामजा, आंऊं हांणे को हिन भत ॥ २

एहेडो संग करे मूंहसे, अच्ची डिंनिए सांजाए ।
[३]इलम डिने बेसक जो, त आंऊं को बेठिस हीं[३] पाए ॥ ३

इलम डिने पांहिजो, जे में सक न कांए ।
डिंनिएँ संग साहेबी, हित जाणजे कीं न सांजाए ॥ ४

जे आंऊँ चाहिआं दिलमें, से को न करचो आंईं हित ।
कोठचो[४] को न सुखनसे, जीं थिए न उसीडो[५] हित ॥ ५

मूंके केअज सरखरू[६], से लखे भाइआं[७] भाल[८] ।
रूहें कोठे अच्चा आं अडूं, जीं खिल्ली करिआं गाल ॥ ६

डिठम सुख सोणेमें[९], हिक आंभो[१०] तोहिजो आए ।
मूसे संग केइए हिन भूंअमें, जे डिए हित सांजाए ॥ ७

तूं धणी तूं कांध तूं, मूजो तूं खसम ।
ही मंगांथी लाडमें, जाणी मूर[११] रसम[१२] ॥ ८

कुच्छाइए[१३] त कुच्छांथी, माठ[१४] कराइए तूं ।
को न पस्सांथी कितईं, मत्थे अभ तरे थी भूं ॥ ९

हे सभ तो सिखाइयूं, आंऊं मुराई[१५] अजाण ।
जे कंने[१६] जे केइए, से सभ तूं ही पाण ॥ १०

घणुए भाइआं न कुच्छां, पण कुच्छाइए थो तूं ।
इसक रे कुच्छण कीं रहे, न डिंनी सबूरी मूं ॥ ११

पिरी मत्थें बेही[१७] करे, डेखारचाई हे ख्याल ।
खिल्लण खसम रूहन मत्थां, पस्सी अस्सांजा हाल ॥ १२

अस्सीं हत्थ हुकम जे, तो केयूं फरामोस[१८] ।
जीं नचाए तीं नचियूं, कीं करियूं रे होस ॥ १३

---

१, कहा । २. ऐसा । ३. यह । ४. बुलाश्रो । ५. उदासी । ६. दोष मुक्त । ७. मानती हूँ । ८. ग्रहसान । ९. सुपने में । १०. भरोसा । ११. मूल । १२. रीति । १३. कहलाना । १४. चुप । १५. मूल से । १६. किया । १७. बैठ के । १८. बे सुध ।

हुकम करयो था जेतरो, तीं फिरे असल अकल ।
अकल फिराए सोणे के, तीं फिरे अस्सांजा दिल ॥ १४

पिरी पाण हित अच्ची करे, बेसक डिंने इलम ।
अरस बका हिक हकजो, बेओ जरो न रे हुकम ॥ १५

लख गुणा डिए सिर पर, सो बराकेई[1] गाल ।
अस्सीं फरामोस तो हत्थमें, कोल फेल जे हाल ॥ १६

तेहेकीक[2] केओ तो इलमें, तो धारा[3] न कोई बेसक ।
अरस रूहें अस्सीं कदमों, कित जरो न तो रे हक ॥ १७

गुणा डिठम के पांहिजा, से लाथा[4] तोहिजे इलम ।
कोए पाक न्हाए हिन दुनीमें, से अस्सांके केआं खसम ॥ १८

आसमान जिमी जे विच्चमें, के चेयो न बका[5] जो हरफ[6] ।
एहडो कोए न थेयो, जे तो बका डेखारे[7] तरफ ॥ १९

दुनिआं हिन आलम में, कायम न डिठो के ।
से सभ पाण पुकारिआं, हिन चौडे तबके में ॥ २०

से कायम सभे थेआं, कूडा मोहोरा जे ।
वडी वडाइयूं डिनिए, अस्सां हत्थ कराए ॥ २१

के खेल डेखारे रांद में, इलम डिंने बेसक ।
*भिस्त[8] डियारी[9] अस्सां[10] हत्थां, दुनियां चौडे तबक ॥ २२

डिनिएं वडचूं वडाइयूं, हांणे जे डिए दीदार ।
मिठा वेण सुणाइए वलहा[11], त सुख पस्सूं[12] संसार ॥ २३

हे पण भूल असरांहिजी, जे हिनमें मंगूं सुख ।
बिओ डिस्सण वडो कुफर, गिनी[13] इलम बेसक ॥ २४

खेल त जरो न्हाए कीं, हे इलमें खोली नजर ।
हित बेही मंगूं सुख अरसजा, धणी मिडन कोठे घर ॥ २५

---

१. बल, घुंडी । २. निश्चित । ३. विना । ४. उतर गए । ५. अखंड । ६ शब्द । ७. दिखाए । ८. मुक्त सुख । ९. दिलाया । १०. हमारे । ११. प्रीतम । १२. देखूं । १३. पाकर ।

ढील[1] मंगूं घर हल्लणजो, बिओ खेल में मंगां सुख ।
हिनमें अच्चे थो कुफर, आऊं छडी न सगां रुख[2] ।। २६

हिकडी[3] गाल थेई हिन न्हाएमें, अस्सां न्हाए भारी थेओ ।
त सुख मंगूं हित अरसजा, जे न्हाए[4] के पस्सूं था बेओ[5] ।। २७

आंजी[6] मंगाई मंगां थी, या कुफर यां भूल ।
हे डोरी आंजे हत्थमें, अस्सां दिल अकल ।। २८

जे कीं डिस्सण बोलण, से तो रे सभ बंधन ।
हक इलम चोए[7] पधरो[8], जे विचार करे मोमन ।। २९

धणी मूंहजे धामजा, अस्सां न्हाए चोंणजी[9] गाल ।
अस्सांजा आंजे हत्थमें, कोल फेल जे हाल ।। ३०

*महामत चोए मेहेबूबजी, करचो जे अच्चे दिल ।
जी जांणो तीं करचो, अस्सां जी अकल ।। ३१

।। प्रकरण ।। ३ ।। चोपाई ।। १०६ ।।

रे पिरीअम, मंगां सो लाड करे ।
हेडी किज कां मुंदसे[10], खिलंदडी लगां गरे ।। १

जगाइए इलम से, विच्च सोणे[11] विहारे[12] ।
निद्रडी आई जा हुकमें, जागां कींअ[13] करे ।। २

हे अंगडा[14] सभ सोणेजा, असल कूड़ा[15] जे ।
जोर करिआं धणी परे, त कीं न पुज्जे तो के ।। ३

इलमे न रखी कां सक, मूंजो हल्ले[16] न सोणें में ।
संगडो[17] डेखारे बेसक, आऊं लाड करिआं के से ।। ४

हे पस्सां सभ सोणे में, आऊं विच्च जिमी आसमान ।
से न्हाए चौडे तबके, मूंजो संगडो तूं सुभान ।। ५

---

१. देरी । २. ध्यान । ३. एक । ४. माया । ५. दूसरा । ६. आपकी । ७. कहता है । ८. स्पष्ट । ९. कहना । १०. मुझसे । ११. सुपने में । १२. विठा कर । १३. कैसे । १४. अंग । १५. झूठा । १६. चले । १७. सम्बन्ध ।

मूं धणी मूं हितईं, ओडो[1] डेखारे इलम ।
हत्थ घुरींदे[2] न लहां, न डिस्सां नेणे खसम ॥ ६

हे इलम एहडो[3] आइयो, जेहडो[4] आइए तूं ।
इलम सोणे में को करे, मूं में रही न मूं ॥ ७

रांद सभेई निद्रजीं, जीरचा[5] मरचा[6] वजन[7] ।
सोणे अंगडा अस्सांहिजा, तोके कीं न पुज्जन ॥ ८

हे सोणो तोहिजे हत्थ में, तो हत्थ निद्र इलम ।
तोहिजा सुख सोणे या जागंदे, सभ हत्थ तोहिजे हुकम ॥ ९

हेडी गाल अच्ची लगी, जाणे थो सभ तूं ।
तो पाणे पाण डेखारयो हिकडो, आंऊं त पस्सा तो अडूं ॥ १०

कीं घुरां[8] आंऊं के कणां[9], ओडो न अच्चे तूं ।
बेओ को न पस्सां कितईं, आंऊं विच्च आसमाने मूं ॥ ११

बोलां थी. तो बोलाई, तो अडां[10] पसाइए तूं ।
निद्र *इलम या इसक, तो डिनो[11] अच्चे मूं ॥ १२

जे चओ त बोलियां, न तां मांठ करे रहां ।
जे उपाओ था दिलमें, से तो रे के[12] के चुआं ॥ १३

हुंद[13] न रख्यो कितईं[14] जे से करिआं गाल ।
तो डेखारी डिस[15] तोहिजी, से लख तोहिजां भाल[16] ॥ १४

मूं अवगुण डिठां पांहिजा, गुण डिठम पिरम ।
से बेओ[17] जमारो[18] गंदे[19], उमेद ए रिअम[20] ॥ १५

तो उमेदूं पुजाइयूं[21], जे जो न्हाए सुमार ।
हे तो पांण[22] मंगांइए, तूंही डिअन[23] हार ॥ १६

लाड कोड तो हत्थमें, संग या सांजाए ।
जडे[24] तडे तूंही डिए, बेओ कोए न कितईं आए[25] ॥ १७

१. नजदीक । २. मांगने से । ३. ऐसा । ४. जैसा । ५. जीना । ६. मरना । ७. आना-जाना । ८. मागूं ९. पास से । १०. तरफ । ११. देने पर । १२. किसको । १३. ठिकाना । १४. कहीं । १५ दिशा । १६. अहसान । १७. बीत गया । १८. जोवन । १९. गाते हुए । २०. रह गई । २१. पूरी करें । २२. आप । २३. दाता । २४. जब-तब । २५. है ।

जडे आंणीने ओडडा, तडे पेरो[1] डिने लज्जत ।
हे डिने अच्चे सभ तोहिजो, मूंके बुझाइए सो भत ॥ १८

जीं बुझाइए[2] मूंहके, डे[3] तूं मेहेर करे ।
जे न घुरां[4] तों कंने[5], त को[6] आए बेओ परे ॥ १९

हे तो सिखाई मूं सिखाई, को न घुरां धणी गरे ।
मूं थेयूं हजारूं हुज्जतूं[7], जडे तो डिनो संग करे ॥ २०

संगडो डिठम बेसक, मंझां तोहिजे इलम ।
त चुआं थी हुज्जतूं, जे चाइए थो खसम ॥ २१

हांणे चाह डिए थो दिलके, त दिल करे थो चाह ।
अपार मिठाइयूं तोंहिज्यूं, जे डिंने पाण हत्थांए ॥ २२

महामत चोए[8] मेहेंबूबजी, हे सुणज[9] दिल धरे ।
हांणे[10] हेडी[11] डिज्जम[12] हिंमत, जीं लगी रहां गरे ॥ २३

प्रकरण ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ १२९ ॥

॥ श्री देवचंदजी को मिलाप विछोहा ॥

सांगाए[13] थिदम[14] धाम संगजी, तडे घुरंदिस लाड करे ।
दम न छडिआं तोहके, लगी रहां गरे[15] ॥ १

जासी[16] संग न सांगाए, त रूह केडी[17] सांजाए ।
हे गाल्यूं थिअन सभ मत्थियूं, कीं लाड करे घुरांए ॥ २

हे सभ सांजायूं तो हत्थ, लाड सांगाए या संग ।
कोंल फेल या हाल जो, तो हत्थमें नौ अंग ॥ ३

पेरो केआं जा गालडी, सा रूहके पूरी लगी ।
हिक तो रे को न कितईं, हे तोहिजे इलमें सक भगी ॥ ४

तो घर न्यारो दुनी से, थेयम तोसे संग ।
आसमान जिमी जे विच्चमें, मूंके तो[18] धारा[19] सभ रंज[20] ॥ ५

---

१. पहले । २. समझाना । ३. दे । ४. मांगूं । ५. पास । ६. कौन । ७. दावा । ८. कहते हैं । ९. सुनिए । १०. अब । ११. ऐसी । १२. दीजिए । १३. पहचान । १४. हुई । १५. पास । १६. जब तक । १७. कैसी । १८. आप । १९. बिना २०. दुःख ।

धणा डींह[1] घारिम[2] कुफरमें, कर कूडे[3] से संग ।
कंने[4] सुणी संग तोहिजो, लगो न रूह जे अंग ॥ ६

हे दिल आइम[5] तेहेकीक, जे हेकली[6] थिआं आऊं ।
त खिल्ले कूडे मूं ह से, थिए दम न अघांऊँ[7] ॥ ७

हे तां पाणे[8] पधरी[9], जे आंऊँ हेकली थिआं ।
तडे कीं न अच्चे तो दिलमें, जे आंऊं हिन के सुख डिआं ॥ ८

थिआं हेकली हिन रंजमें[10], मत्थां अभ तरे थी भूं ।
ईं हाल पस्सां पांहिजो, त कीं छुडे हेकली मूं ॥ ९

धणी मूहजे अरसजा, चुआं मूं हेकली जो हाल ।
जीं आंऊं गडजी[11] विछुडिस, सा करिआं आंसे गाल ॥ १०

आंऊं हुईस धणी जे कदमों, तडे संग न सांगाए ।
चेआंऊं धणी भत्तिएँ, पण थीअम न सांजाए ॥ ११

तडे धणिएँ मूके चयो, जे ब जण्यूं आईंन ।
खिल्ले थ्यूं न्हारे रांद अडां, तांजे सांगाईन ॥ १२

*रूहअल्लाएँ ईं चयो, पाण न्हारे कढच्यूं तिन ।
पाणसे न्हारे न कढच्यूं, आंऊं हुइस गालमें हिन ॥ १३

पाण वखत हल्लणजे, याद केआंऊं मूंके ।
चेआऊं ईं जेडिन के, जे कोठे अच्चो हिनके ॥ १४

अच्ची आंऊं पेरे लगी, तडे मूंके चेआंऊं ईं ।
रूह तोहिजी रोए थी, आंऊं पेआं अरसमें कीं ॥ १५

दर माधा[12] अरस जे, आंऊं रोंदी पस्सां हित ।
ते मूं तोके कोठई,[13] आंऊं हल्ली न सगां तित ॥ १६

मूंके चेआंऊं पधरो, सा सुंई[14] गाल सभन ।
पर केर परूडे[15] इसारतूं, संदियूं[16] हिन दोसन ॥ १७

१. दिन । २. बिताए । ३. झूठ । ४. कानों से । ५. हुआ । ६. अकेली । ७. तृप्त होना । ८. आपही । ९. स्पष्ट । १०. दुख । ११. मिले । १२. आगे । १३. बुलाया । १४. सुनी । १५. समझे । १६. की ।

करे मेडो चेआऊं मीठी भत्तें, पण आंऊं निद्र मंझ ।
पण मूं कीं न परूडयो, सर[1] छडे[2] उडचा हंज[3] ॥ १८

ई थीअस आंऊं हेकली, भोणां[4] डोरींदो[5] बेई[6] ।
धणिएं जा मूंके चई, तांजे[7] न्हारे कढां सेई ॥ १९

डोरींदे जे लधिम[8], अरवा कै हजार ।
किन जाण्यो घर नूरजो, के *नूर घर पार ॥ २०

हिनी में जे बे चयूं, *सुंदरबाई सिरदार ।
से पण थेयूं निद्र में, तिनी सुध न सार ॥ २१

डिनी बी में हिकडी, अच्ची गडई मूं ।
जे हाल आए हिन जो, से जाणे थो सभ तूं ॥ २२

आंऊं बेठिस हिनजे घर में, मूंके रख्याई भली भत्त ।
केआँई[9] सभे बंदगी, जाणी तोहिजी[10] निसबत ॥ २३

हिक हिन जे दिल में, द्रढाव[11] वडो डिठम[12] ।
हांणे माधा[13] हत्थ तोहिजे, पण हितरो[14] पेरो[15] केओ पिरम ॥ २४

चेयम हाल हिन जो, जा हिक मूं गडई ।
मूं वेओ जमारो[16] डोरींदे, हुन वी पण खबर सुंई ॥ २५

हे बए जण्यूं मिडी करे, मूके थ्यूं[17] न्हारीन[18] ।
हुन असिधें[19] ईं न विचारयो, हो मूं लांए[20] डुख धारीन[21] ॥ २६

हो हल्लण के उतावरच्यूं, अरस उपटे दर ।
हे कीं रेहेंदच्यूं रंज में, हुन विसरी न्हाए खबर ॥ २७

ते लांए पिरम आंऊं हेकली, मूं बी न गडजी कांए ।
जे तोजो दर उपटे[22], मूज्यूं आसडियूं[23] पुजाए[24] ॥ २८

पिरम[25] हांणे[26] पांण विच्चमें, तूंहीं आइए[27] तूं ।
से तूं जांणे सभ कीं, हे तो सुध डिनी मूं ॥ २९

---

१. सरोवर (संसार) । २. छोड़कर । ३. हंस (श्री देवचंद) । ४. फिरते । ५. ढूढ़ते हुए । ६ दूसरी । ७. कदाचित । ८. मिली । ९. करते हैं । १०. आपका । ११. दृढ़ता । १२. देखा । १३. आगे । १४. इतना । १५. पहले । १६. आयु । १७. हैं । १८. ढूढ़ने में । १९. बे सुध । २०. वास्ते । २१. पा रहे हैं । २२. खुले । २३. आशाएँ । २४. पूरी हों । २५. प्रीतम । २६. अब । २७. हो ।

धणी तूं पस्से थो पांणई, अने कुच्छाइए थो पांण ।
जा करे गाल रे इसक, सा दानाई सभ अँजांण ॥ ३०

दम[१] में चुआं आंऊं हेकली, दम में गडजिम[२] बेई ।
दम में मेडो रूहन जो, न्हारिआं थी त्रेई[३] ॥ ३१

दम में आंऊं बाभाइंदी[४], दम में हित नाहिआं ।
दम में भाइयां[५] मूर थी, तोके थीराइआं[६] ॥ ३२

फिरी पस्सां जा पाण अडां[७], त करिआं कांध से दानाई[८] ।
तडे अच्चो[९] लिकां[१०] थी तो तरे, चुआं हे डिनी धणीजी आई ॥ ३३

धणी मूजी गालिनजी, से सभ तोके आए[११] जांण ।
अव्वल विच्च आखर लग, तो डिनो अच्चे पांण ॥ ३४

हे तो डिन्यूं पांणई, गाल्यूं मूके करण ।
पण जासीं[१२] डिए न इसक, दर खुले न रे वरण[१३] ॥ ३५

ईं हाल डिंने धणी मूहके, जीं गभुराणी[१४] मत ।
जां तो इसक न आइओ, तां कुच्छां[१५] थी सो भत्त ॥ ३६

मांठ[१६] करे पण न सगां, बंधां जा बोले ।
सभ जाणे थो रूहजी, चुआं कुजाडो[१७] दिल खोले ॥ ३७

बेओ को न पस्सां[१८] कितई[१९], सभ अंग ताणीन तो अडूं ।
जे हाल पुजाइए पुंनिस[२०], हाणे को न करिए हेकली मूं ॥ ३८

जे तूं करिए हेकली, भाइए गडजां आंऊं ।
से तां तोहिजी सिखाइल, त पाइआं थी धांऊं ॥ ३९

हे जे कराईयूं गालियूं, एही कोल फेल जे हाल ।
हिन मजलके ओडडी, मूके केइए *नूरजमाल ॥ ४०

पिरी डिए थो जे दिलसें, से माधाई[२१] करिआं पुकार ।
से सभ तूंही कराइए, तो हत्थ कार गुजार ॥ ४१

---

१. पल में । २. मिली । ३. तीसरी । ४. विलखती हूं । ५. समझना । ६ ठहराती हूं ।
७. तरफ । ८. स्यानप । ९. आकर । १०. छिपती । ११. है । १२. जब तक । १३. प्रीतम ।
१४. बालक जैसी । १५. कहूं । १६. चुप । १७. क्या । १८. देखूं । १९. कहीं ।
२०. पहुँचना । २१. पहने ।

लाड कोड आसा उमेदूं, रूहें सभ दिलमें आंईन ।
पण तूं जे ताणिए पांण अडूं, त तोके ईं भांईन ॥ ४२
हे गाल न मूजे हत्थमें, जे कीं करिए से तूं ।
तांजे तूं न खैंचिए, त हे रंज सभे मूं ॥ ४३
बेओ कित न जरे जेतरो, सभ हत्थ तोहिजे हुकम ।
जे तिर[१] जेतरी मू दिलमें, सभ जाणे थो पिरम ॥ ४४
कडे[२] कंदांसो डींहडो, अस्सां रूहें जो संग ।
हे हुज्जतूं करिआं लाडमें, जीं साफ थिए मू अंग ॥ ४५
दिलमें तूं उपाइए, मंगाइए पण तूं ।
मूजी रूह के गालियूं, जे मिठयूं सुणाइए मूं ॥ ४६
तूं चाइए कर सुणाइए, सभ उमेदूं तो हत्थ ।
धणी मूहजे धामजा, तूं सभनी गालें समरथ ॥ ४७
मू चयो भूं आसमान विच्च, आऊं हेकली आइआं ।
जीं न अच्चे दिलमें खतरो[३], से माधाई थी लाहिआं[४] ॥ ४८
बियूं रूहें हिन अरस ज्यूं, से तां आजिज[५] पांणे ।
हे मंझ रूअन रातों डींहा, मूंजी रूहडी थी जाणे ॥ ४९
जे आंऊं न्हारिआं रूहन अडूं, पस्सी इंनी जो हाल ।
रूअन अच्चे मूंह के, से तूं जाणे *नूरजमाल ॥ ५०
आंऊं बी बट[६] भाइआं[७] तिनके, जा उपटे अरस दर[८] ।
कांध लाड पारनज्यूं, मूके डे[९] खबर ॥ ५१
त कीं चुआं बी तिनके, जे मूं अडां पस्सी रोए ।
त चुआं थी हेकली, मूं बट बी न कोए ॥ ५२
पस्सां बाझाइंदयूं हिनके, मूं अच्चे बाझाण ।
ईं दर ओडी कांध अडूं, थेअम वधंदी तांण ॥ ५३

१. जरा । २. कभी । ३. शंका । ४. फर्ज उतारना । ५. विवश । ६. पास । ७. जानू । ८. द्वार । ९. दीजिए ।

हे सभ मेहेर धणीअजी, डिए थो रूह अंदर ।
हे पण आइम भरोसो कांधजो, जीं जाणे तीं कर ॥ ५४
जे मूं करिए हेकली, विच्च आसमाने भूं ।
जे आंऊं पस्सां पांणके हेकली, से सभ करिए थो तूं ॥ ५५
जे तूं जगाइए इलम से, त पस्सां थी हेकली पांण ।
जे कीं करिए संग लाडजो, त थीअम तो अडू ताण ॥ ५६
करे हेकली गडजे[1], सभ तोहिजे हत्थ धणी ।
मूं चेयूं उमेदूं वडियूं, जे तूं न्हारिए[2] नेण खणी[3] ॥ ५७
बेई कित न जरे जेतरी, कांए न रखिए गाल ।
हे तेहेकीक मूंजी रूहके, केइए *नूरजमाल ॥ ५८
चुआं थो रूह मूंहजी, से पण आइम भूल ।
मूंजी आंऊं त चुआं, जे हुआं विच्च अरस असल ॥ ५९
हित न्हाए[4] विच्च बेही[5] करे, आंऊं कीं चुआं मूंके पाण ।
केई थेई सभ तोहिजी, से सभ तोके आए[6] जाण[7] ॥ ६०
हे पण गाल्यूं लाडज्यूं, करिए थो सभ तूं ।
तो रे तोहिजी गालिनजी, दम न निकरे मूं ॥ ६१
आसा उमेदूं जे हुज्जतूं, सभ तूंहीं उपाइए ।
मूंजे मोंहें तेतरीं[8] निकरे, जेतरी[9] तूं चाइए ॥ ६२
चई चई चुआं केतरो, सभ दिलजी तूं जाणे ।
तो रे आइआं हेकली, सभ जाणे थो पांणे ॥ ६३
*महामत चोए मेहेबूबजी, हे डिनीं तो लगाए ।
तूं जागे अस्सी निंद्रमें, जाणे तींअ जगाए ॥ ६४

॥ प्रकरण ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ १९३ ॥

---

१. मिलो । २. देखें । ३. उठाकर । ४. नहीं (माया) । ५. बैठके । ६. है । ७. जानकरी ।
८. उतनी । ९. जितना ।

॥ रूहन जो फेल हाल ॥

धणी मूंहंजी रूहजा, गाल करिआं कोड[१] करे ।
आईंन उमेदूं लाडज्यूं, अच्ची करिआं गरे[२] ॥ १

रूहें बिहारे[३] रांदमें[४], पाण बेठा परडेह[५] ।
सुध न्हाए के रूहके, रांद न अच्चे छेह[६] ॥ २

अस्सां मत्थें आइयो, पिरिअन जो फुरमान ।
मूक्यो आं *रसूलके, डिअन रूहन जाण ॥ ३

लिख्यो आं *फुरमानमें, रमूजें इसारत ।
भत्ती भत्ती ज्यूं गालियूं, सभ अरसजी हकीकत ॥ ४

तो चेयो *रसूल[७] के, तूं थीअज[८] हुनमें अमीन[९] ।
डिज्ज[१०] तूं मूर[११] निसानियूं, जीं अच्चे रूहें आकीन ॥ ५

रूहें लग्यूं जडे रांदमें, विसरी[१२] वेओ[१३] घर ।
आसमान जिमी जे विच्च में, अरस बका न के खबर ॥ ६

तडे मूकियां रूह पांहिजी, जा अस्सांजी सिरदार ।
*कुंजी मूकिआं अरसजी, उपटन[१४] बका द्वार ॥ ७

रूहें पस्सी मूं द्रियूं[१५], रईं[१६] न सगे[१७] रे[१८] रांद ।
कां न विचारे पांण के, मूं सिर केहो[१९] कांध ॥ ८

बडी रूह रूहन के, चई समझाईन ।
पाण न्हायूं हिन रांदज्यूं, घर बकामें आईन ॥ ९

के केआऊं रांदज्यूं गालियूं, समझन के सो भत्त[२०] ।
कांधे मूकी मूंके कोठण[२१], जांणी आंजी[२२] निसबत[२३] ॥ १०

बडी रूह चोए आं कारण, मूं हेडो[२४] केओ पंध[२५] ।
लखे भतें समझाइयूं, पण हिओ न अच्चे हंद[२६] ॥ ११

---

१. हर्ष । २. घर । ३. बिठा कर । ४. खेल (माया) । ५. परदेश । ६. अन्त । ७. संदेश वाहक । ८ होना । ९. अमानतदार । १० देना । ११. मूल (परमधाम) । १२. भूल । १३. गया । १४. खोलने । १५. डरी । १६. रह । १७. सकतीं । १८. विना । १९. कैसा । २०. प्रकार । २१. बुलाने । २२. अपने । २३. सम्बन्धी । २४. इतना । २५. यात्रा । २६ ठिकाने ।

आंऊं आइस[१] आंके[२] कोठण, उपटे बका दर ।
आसमान जिमी जे विच्चमें, जा के[३] के न्हाए खबर ॥ १२

बडी बडाई आंजी, पस्सो केहडो पांहिजो घर ।
हे कूडा[४] कूडी रांदमें, छुडे[५] काएम[६] वर ॥ १३

कै करे रांदज्यूं गालियूं, फिरी फिरी फना डुख ।
पांहिजा काएम अरसजा, कै कोडी[७] डेखारचाई सुख ॥ १४

तोहे रूहें न छडींन रांदके, कां निद्रडी लगई हिन ।
कडे थी न हेडी फकडी[८], मत्थां हिन रूहंन ॥ १५

आंऊं पुकारिआं इंनी कारण, पण इंनी केहो डो ।
आंऊं पण बंधिस रांदमें, करिआं कुजाडो[९] ॥ १६

हिक लधिम गाल पिरनजी, चुआं सभे जेडिन ।
जा लगाइल हिन *हक जी, सा न छुटे पर किन ॥ १७

मूं उमेदूं पिरनज्यूं, लधिम भली पर ।
सुयम[१०] मोहां[११] सज्जणे, जा खिलवत थी घर ॥ १८

परूडिम[१२] पिरन जी, हे जा डेखारचाई रांद ।
अस्सां मत्थें खिल्लण, केइए कुडन[१३] के कांध ॥ १९

इसक धणी जे दिल जो, पेरो[१४] न लधों[१५] पांण ।
त डिखारचाई रांदमें, इसकजी पेहेचान ॥ २०

मूं तेहेकीक आयो दिलमें, अगरो[१६] धणी इसक ।
डिठम[१७] *अरस *खिलवतमें, सा रही न जरो सक ॥ २१

मूं उमेदूं दिलमें, धणी से घारण[१८] ।
को न होंन उमेदूं धणी के, मूंजा लाड पारण ॥ २२

तरसे दिल मूहजो, जाणे कडे धणी पस्सां ।
त कीं न[१९] हूंन कांध के, मिडन[२०] उमेदूं अस्सां ॥ २३

---

१. आई हूँ । २. आपको । ३. किसी को । ४. झूठा । ५. छोड़ कर । ६. अखंड । ७. करोड़ । ८. फजियत । ९. क्या । १०. सुना । ११. मुँह से । १२. समझे । १३. आनन्द । १४. पहले । १५. भाया, मिला । १६. अधिक । १७. देखा । १८. मांगना । १९. हों । २०. मिलना ।

दिल थिए मिडन धणीअसे, जे मूं इसक न हुंड[१] ।
कांध पूरे इसकसे, तिन आए सो गणी चढ ॥ २४

पण हे गाल्यूं आईन रांदज्यूं, ते मूके सिकाइए[२] ।
पांण इसक डेखारे लाडमें, मूके कुडाइए[३] ॥ २५

मूं उमेदूं दिल में, धणी ज्यूं गडजण[४] ।
लाड पारण अस्सांहिजा, आईन अगरच्यूं सज्जण ॥ २६

अंईं सुणोजा जेडियूं, चुआं इसक जी गाल ।
हे सुध न अस्सां अरसमें, धणी केहडी साहेबी कमाल ॥ २७

न सुध केहडो कादर, न सुध केहडी कुदरत ।
न सुध अरस काएम जी, न सुध हक निसबत ॥ २८

सुध न सुख कांधजा, सुध न धणी इसक ।
सुध न अस्सां लाड जी, केहडा पारे हक ॥ २९

सुध न आसा उमेद, सुध न प्रेम प्रीत ।
सुध न अरस अरवाहें के, धणी रखियूं केही रीत ॥ ३०

हे जे हितरूं[५] गालियूं, केयूं इसक जे कारण ।
लाड कोड आसा उमेदूं, रूहन ज्यूं पारण ॥ ३१

जेहडो[६] धणी पांहिजो, तेहडी तेहजी रांद ।
लाड कोड इसक जा, तेहडाईं[७] पारे कांध ॥ ३२

बड़ी गाल धणीअजी, लगी मत्थे आसमान ।
आंऊं रे पाणी भूं सूकीअमें, खांधिम[८] डुब्यूं पांण ॥ ३३

जा सऊर करिआं रूह से, त निपट[९] गरईं[१०] गाल ।
चुआं हित हिन मूंह से, मूंजो खसम *नूरजमाल ॥ ३४

अंईं गाल सुणेजा जेडियूं, मू चरईं ज्यूं चंगी भत्त ।
गाल कंदे[११] फटी न मरां, के कांध से निसबत ॥ ३५

---

१. ठिकाना । २. तरसाते हो । ३. रुला रहे हो । ४. मिलना । ५. इतनी । ६. जैसे । ७. तैसा ही । ८. खा रही हूँ । ९. बिलकुल । १०. बड़ी । ११. करते ।

लाड कोड आसा उमेदूं, आंऊं चुआं मूं माफक ।
पारण[1] बारो मूं धणी, काएम अरस जो हक ॥ ३६

जे आंईं गाल विचारियो, रूहें मेडो करे ।
त रही न सगा किएँ रांदमें, हे कूडा वजूद धरे ॥ ३७

सहूर डिअण मूं हिओ, कठण केआंऊं निपट ।
न तां विचार कंदे हिक हरफजो, फटी पोए[2] न उफट ॥ ३८

सभ अंग डिनाऊं[3] कठण, त रह्यो वंजे[4] आकार ।
न तां सुणी विचारी हे गालियूं, कीं रहे कांधा धार ॥ ३९

इलम डिनाऊं पांहिजो, मए[5] निपट बडो विचार ।
बका न चौडे तबकें, से डिनो उपटे द्वार ॥ ४०

विहारे ते विच्चमें, जो बका वतन ।
करे निसबत हिन कांध से, असल काएम रूह तन ॥ ४१

हे इलम एहडो आइओ, सभ दिल जी पूरण करे ।
डेई इसक मेडे कांध से, घर पुजाए[6] नूर परे ॥ ४२

रूहें पांण न विचारियूं, हिन इलम संदो[7] हक ।
से कीं न करे पूरी उमेद, जे में न्हाए सक ॥ ४३

धणी पांहिजो पांण के, विचारण न डे ।
के[8] के। डींह[9] हिन रांद में, करे थो रखण के ॥ ४४

मूके अकल न इसक, से पट खोल्याईं पांण ।
उघाडचूं अंख्यूं रूहज्यूं, थेयम[10] सभे सुजाण ॥ ४५

न तां केर[11] आंऊँ[12] केर इलम, आंऊँ हुइस के हाल ।
पुजाइए हिन मजलके, मूं धणी *नूरजमाल ॥ ४६

आंऊं हुइस[13] कबोले के घर, ही गंदो[14] वजूद धरे ।
थेयम धणी नूरजमाल घर, जे दर नूर अच्चे मुजरे ॥ ४७

---

१. पूरा करना । २. पड़े । ३. दिए । ४. गया । ५. में (अन्दर) । ६. पहुँचाए । ७. का । ८. कुछ एक । ९. दिन । १०. हो गई । ११. कौन । १२. मैं । १३. हुई । १४. नश्वर ।

बाहेर मंझ अंतर, सभनी हंदे इसक ।
रूह अल्ला डिखारई, बड़ी दोस्ती हक ॥ ४८

मूं फिराक[१] हिन धणी जो, मूंआं अगरो हिन धणी के ।
आंऊं बेठिक धणी नजर में, सिधी न गडजां ते ॥ ४९

मूं फिराक धणी न सहे, मूके बिहारयाई तरे कदम ।
धणी पांहिजी रूहन रे, रई न सगे हिक दम ॥ ५०

मूं धणी रे घारई[२], मूंजो सभ उमर ।
इसक धणी या मूंह जो, पस्स जा पटंतर ॥ ५१

महामत चोए मेहेबूब जी, अस्सां इसक बेवरो ईं ।
मूंजे आंजे दिल जी, आंऊं कंदिस[३] अरज बेई ॥ ५२

॥ प्रकरण ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ २४५ ॥

॥ झगडे जो प्रकरण ॥

वलहा[४] जे आंऊं तोके वलही[५], गिनी[६] बिठे तरे कदम ।
हे मूं दिल डिनी[७] साहेदी, तूं मूं रे रहे न दम ॥ १

डिनी बी[८] साहेदी इलम, त्री[९] तोहिजे इसक ।
चौथी साहेदी रसूल, बियूं कै साहेदियूं हक ॥ २

तोहिजे इलमें मूके ईं चयो, ही रांद केई आं[१०] कारण ।
लाड कोड आसा उमेदूं, से सभेई पारण ॥ ३

बेई न जरे जेतरी, तोहिजें दिलमें गाल ।
लाड उमेदूं रूह दिलज्यूं, से तूं पूरे नूरजमाल ॥ ४

हे चिअम[११] तिर जेतरी, आईन[१२] अलेखे अपार ।
अस्सां सिक्कण[१३] रहे के गालजी, सभ तूंही करण हार ॥ ५

कांध डे तूं हे पडूत्तर[१४], हिन रांदमें बेही[१५] ।
न तां बडा लाड मूंहजा, कीं पारीने[१६] सेई[१७] ॥ ६

---

१. जुदाई । २. गर्वां दी । ३. करूंगी । ४. प्रीतम । ५. प्यारी । ६. लेकर । ७. दी । ८. दूसरी । ९. तीसरी । १०. तुम्हारे । ११. कहती हूं । १२. हैं । १३. तरसने की । १४. जवाब । १५. बैठ कर । १६. पूरा करोगे । १७. वही ।

हुइयूं आसा उमेदूं बडियूं, से थ्ययूं विच्च हित ।
मूं अडां पस्सो न सुणो गालडी, हांणे आऊं चुआं के भत्त ॥ ७

तूं की पारीने वडियूं, जे हितरी न थिए तोह ।
फिरी फिरी मंगाए न डिए, हे के सिर डिआं डोह[1] ॥ ८

हिक मंगां दीदार तोहिजो, बी मिठडी गाल सुणाए ।
कांध मूंहजा दिल डेई, मूंसे हित[2] गालाए ॥ ९

हांणे वडचू उमेदूं अगिआं, कीं पूरयूं कंने[3] कांध ।
हांणे पेरे लगी मंगां एतरो[4], पाए गिच्चीमें[5] पांध[6] ॥ १०

हे गाल आए थोरडी, कीं हेडी बडी केइए ।
आऊं कडी[7] न रहां दम तोरे, से विसरी कीं वेइए ॥ ११

मूंके कुच्छाइए निंद्रमें, तूं पाण जागे थो ।
जे बांभाईए मूं बलहा, त तो इसक अच्चे डो ॥ १२

तूं भाइयूं[8] बेठचूं मूं कंने, माधा[9] मूं नजर ।
जे दिल हिनीजा न्हारिए, त हे विलखे थ्यूं रे वर ॥ १३

हिक लेखे मूं न्हारिओ, मूं न्हाए गुन्हे जो पार ।
त रूसी रहे मूंसे वलहो, मूंके करे गुन्हेगार ॥ १४

आंईं बिचारे न्हारजा, आंहिजे मोहजा वेण ।
तांजे[10] अस्सी[11] विसरयां, तपण[12] आंहिजा सेण ॥ १५

मूंके इलम डेई पांहिजो, केइए खबरदार ।
से न्हारिम जडे सहूरसे, त कांध आऊं न गुन्हेंगार ॥ १६

धणी तो डिनी निंद्रडी, ते विसरया सभ कीं ।
जो नचाए तीं नच्चियूं, कुरो[13] करियूं अस्सीं[14] ॥ १७

अस्सां इसक निंद्रडी विसारिओ, अच्ची मए हिन रांद ।
इसक तोहिजो डिखारिओ, पस्स मूंहजा कांध ॥ १८

---

१. दोष । २. यहाँ । ३. करोगे । ४. इतना । ५. गले में । ६. कपड़ा । ७. कभी भी । ८. जानते हो । ९. सामने । १०. कदाचित । ११. हम । १२. तो भी । १३. क्या । १४. हम ।

तनडा अस्सांजा तो कंने, पण दिलडा अस्सांजा कित ।
से कीं फिकर न करयो, के हाल मूंहजो चित्त ॥ १९

डुख न डिस्से आकार, दिलडा डुख पस्सन ।
से डुख डिस्से दिल रांदमें, डुख न बकामें तन ॥ २०

दिल अस्सांजा सोणेमें[1], से था डुख पस्सन[2] ।
से पस्सो था नजरों, जे गुजरे दिल रूहन ॥ २१

डिंनी अस्सांके निद्रडी, इसक न रई सांजाए[3] ।
आं जागंदे प्यारचूं पांहिज्यूं, तो डिन्यूं कीं भुलाए ॥ २२

डोह न अच्चे सुतडे[4], जागंदे मत्थें डो ।
अस्सीं डुख डिस्सू[5] आं[6] डिस्संदे, कीं चोंजे[7] आसिक सो ॥ २३

से कीं विचार न करयो, बडो आंजो इसक ।
मासूक केआं रूहन के, को न भजो[8] अस्सांजी सक ॥ २४

आसिक न्हारे नजरे, मासूक बेठो रोए ।
हेडी कडे उलटी, आसिक से न होए ॥ २५

मूजा लाड कोड पारणजा, आं सिर सभ मुद्दार ।
डिए डोह अस्सांके, जे अस्सां सुध न सार ॥ २६

मूके इलमें चओ भली परे, कोंए न्हाए डोह रूहन ।
केओ थ्यो सभ कांध जो, अस्सी सभ मंझ इजन[9] ॥ २७

इसक बंदगी या गुणा, से सभ हत्थ हुकम ।
रांद कारिए निद्रमें, हित केहो डोह अस्सां खसम ॥ २८

बेसक डिंने इलम, जगाया दिल के ।
इलम न पुज्जे रूहसी, सभ हत्थ हुकम जे ॥ २९

रूहसी पुज्जी[10] न सगे[11], आयो न्हाएमें इलम ।
जो सऊर करिआं इलम, त हित जरो न रे हुकम ॥ ३०

---

१. सुपन । २. देखना । ३. पहचान । ४. सोए हुए । ५. देखना (पाना) । ६. आपके ।
७. कहिए । ८. समाधान । ९. आज्ञा । १०. पहुँचना । ११. सके ।

जे कीं केओ से हुकमें, से हुकम आं हत्थ थेओ ।
हिक जरो रे तो हुकमें, आए न कोए बेओ ॥ ३१

तो केओ[1] से थेओ[2], तो केओ थिए[3]—थो ।
थींदो[4] से पण तो केओ, तो रे कित्त न को ॥ ३२

तेहेकीक[5] मूं ईं बुझिओ, मूके बुझाई तो इलम ।
थेओ थिएथो जे थींदो, से हल चल सभ हुकम ॥ ३३

एहडो[6] बडो मूं धणी, को न न्हारिए संभारे ।
वेण सुणाइए वलहा, मूं सामों न्हारे ॥ ३४

धणी को न करचो मूं दिलजी, आंऊं अटकां[7] थी हिन गाल ।
तूं पुज्जे सभनी गालिएँ, आंऊं कीं तरसां हिन हाल ॥ ३५

जे आंऊं मंगां सऊर में, तांजे मंगां बे अकल ।
लाड सभे तो पारण, जे अच्चे मूजे दिल ॥ ३६

दिल चाहे मूं हिक्कडी, को न पारिए लख गुणी ।
तूं कीं लिके[8] मूह थी, तो जेडो[9] मूं धणी ॥ ३७

आंऊं धणिआंणी तोहिजी, मूं घर अरस अजीम ।
मूं कोडचूं उमेदूं वडियूं, तूं तेआं कोड[10] गण्यूं को न डिअम ॥ ३८

तो भायो[11] हे उमेदूं मगंदचूं, नयूं नयूं दिल धरे ।
हिन जिमी न ध्रापदचूं[12], आंऊं डींदुस कींअ करे ॥ ३९

हेडो जाणी दिल में, पेरोई ढँके द्वार ।
न कीं सुणाइए गालडी, न कीं डिए दीदार ॥ ४०

ते दर ढँके मूरजो, अस्सां अंखे कंने डिने पट ।
तो भायों घुरंदयूं धणी परे, बेठो जाणी वट ॥ ४१

रूहें हिन जिमीअ में, ध्रापे न के भत्त ।
ईं जाणी लिके मूह थी, हिअडो केआं सखत ॥ ४२

---

१. किया । २. हुआ । ३. होता है । ४. होगा । ५. निश्चित । ६. इतने । ७. रुकते । ८. छिपे । ९. जैसा । १०. करोड़ । ११. समझना । १२. तृप्त होना ।

हे पट डिस्सी मूं न्हारिम, उमेद न आसा कांए ।
जगाइए ते वखत, मत्थां डिने डोह पुजाए ॥ ४३

मूं घर अरस अजीम, नूरजमाल मूं कांध ।
लाड पारण मूंहजा, मूं कारण केई रांद ॥ ४४

तो इलमें चयो लाड पारींदो[1], ते में सक न कांए ।
जे जे भत्तें मूं न्हारिओ, इलमें सभे डिनी पुजाए ॥ ४५

पण हित अच्ची[2] इलम अटक्यो, जे कडी[3] न अटके कित ।
मूं न्हारे न्हारे न्हारिओ, त अच्ची अटक्यो हित ॥ ४६

हित डोह[4] न कोए इलमजो, न कीं डोह विचार ।
हे घुंडो[5] तोहिजे हुकम जी, सा छुटे न कांधाधार ॥ ४७

गाल गुझांदर ईं थेई, तूं पांणई जांणें ।
हे गुझच्यूं गाल्यूं तो रे, के के चुआं हांणे ॥ ४८

तूं धणी मूं इसकजो, तूं धणी सऊर इलम ।
तूं धणी वतन रूहजो, हे गुझ के के चुआं खसम ॥ ४९

सिकाए[6] सिकाए मूंहके, को द्रजंदो[7] द्रजंदो डिए ।
लाड मगंदच्यूं रांदमें, तो अटके ईं हिए ॥ ५०

हिक बडो मूंके अचरज, मूंजा लाड पारीने कीं ।
मूंके जगाए मंगाइए डिअणके, मत्थां पुजाइए डींह ॥ ५१

रांद डिखारिए उमेद के, जगाइए लाड पारण ।
विलखाइए सुणन वेण के, रूआं दीदार कारण ॥ ५२

कांध उमेदूं वडियूं, मूं दिल में थो पाइए[8] ।
धणी पांहिजे डोह के, मूं मोंहां थो चाइए[9] ॥ ५३

आंऊं पण द्रजंदी, न डिआं आंके डोह ।
बंग[10] पांहिजो पांणई, मूं मोंहां चाइए थो ॥ ५४

---

१. पालने को । २. आकर । ३. कभी । ४. दोष । ५. झांकड़ी । ६. तरसाना । ७. डरते । ८. पैदा करना । ९. कहलाते । १०. फर्ज ।

तोबा[1] तोवा करिआं, जिन भुलां चुकां हांण ।
हल्लां[2] धणी जे हुकमें, जीं सुख भाइए पांण ॥ ५५

पेरो[3] हुई गाल कोलजी, थेई थींदी सभ चोयम ।
द्रजां चोंदे[4] अगरी[5], जीं न अच्चे दिल पिरम ॥ ५६

कोल फेलजी वही वेई, हाणे आई मत्थे हाल ।
हांणे कुच्छण[6] मुकाबिल, हित हल्ले न अगरी गाल ॥ ५७

घणों द्रप[7] भुल चुक जो, ही हक्कजी खिलवत ।
सच्चो रच्चे[8] सच्च से, भूल न हल्ले हित ॥ ५८

इलम पांहिजो डेई करे, मूके रोसन तो केई ।
ते झोडो करिआं कांध से, विच्च रांद जे बेही ॥ ५९

तोहिजे इलमें आंऊं सिखई[9], गिडम[10] वकीली सभन ।
मूजो इतवार[11] सभनी, आयो तोहिजी रूहन ॥ ६०

दावो मूजो या रूहन जो, सभनी बटां[12] आंऊं ।
आंऊं गुझ जांणां सभ तोहिजी, कीं पेर डिए पांउं ॥ ६१

खिलवत जांणां अरस जी, कोल फेल हाल असल ।
तोजी गुझ न रही कां मूह थी, दावो तो मू बिच्च अदल ॥ ६२

तूं सच्चो तो गाल्यूं सच्यूं, अने सच्चो तो हल्लण ।
मूं तो दावो सरे सच्चजो, झल्यम सच्चो दावन ॥ ६३

तूं सच्चा सच्च गालाइज, सच्च बोलाइज मूं ।
सच्च दावो सच्च साहेद, सच्च जांणे सभनी सच्चा तूं ॥ ६४

हिन न्हाएके केइए सच्च, जे हित आया सच्चा पांण ।
मूसे सच्च को न करिए, मूजा सच्चडा सेण[13] सुजांण ॥ ६५

जोर अस्सां से को करिए, जडे आई गाल सरे ।
सोई सच्चो अमीन[14], जो सच्ची गाल करे ॥ ६६

---

१. पश्चाताप । २. चलूं । ३. पहले । ४. कहते । ५. अधिक । ६. बोलना । ७. डर । ८. मिल जाए । ९. सीखी । १०. ली । ११. विश्वास । १२. तरफ से । १३. साजन । १४. जामिन (अमानतदार) ।

पांण चाइए नालो[1] हक, बेओ तो नाम रेहेमान ।
आंऊं मंगां हक पडूत्तर, मूके डे मेहेरबान ।। ६७

सच्चा सच्चो मूके रसूल, मत्थे सच्च अदल[2] ।
मूं सच्च दावो दोस[3] से, सच्चडा थी मुकाबिल ।। ६८

तेकेकीक न्या[4] अस्सांहिजो, डोह आयो मत्थे कांध ।
पण तोरो[5] थ्यो तो हथ्थ में, ते मूजो हल्ले न मए रांद ।। ६९

सरो सच्च साहेब जो, हित सच्चो हल्लणो हक्क ।
हे कूडा[6] काजी[7] रांद में, भाइए करियां हिन माफक ।। ७०

एहेडी हिन अदालत, आंऊं करण कीं डिआं ।
हे दावो तो मूं विच्च जो, सच्चडो मूजो मिआं[8] ।। ७१

हाणे दाई[9] मुद्दई[10] बे जणां, जां मुकाबिल न हूंन ।
तूं बेठो मत्थे तोरो गिनी, हे बेठच् हिकल्यूं रूंन ।। ७२

सिकां[11] सडां[12] दीदार के, बो सुणन के गाल ।
मूं वजूद *नासूत में, तूं धणी बका नूरजमाल ।। ७३

भगो पण तूं न छुटे, मंगां हक निआए ।
सरो[13] घुरे[14] सच्च सभनी, या गरीब या पातसाए ।। ७४

सरे सच्च न्हार जे, हे जो सरो सुभान ।
भोंणें[15]—भजंदो मूंहथी, पांण चाइए रेहेमान ।। ७५

मूं इलम खटाई[16] तोहिजे, से भाइयां तोहिजा आसान ।
तोके बंधों मूं रांद में, कीं छुटे भगो सुभान ।। ७६

आंऊं झल्ले ऊभी निआंके, हल्लण न डयां[17] अहक[18] ।
मूं कंने जोर सरे इलम जो, मूं तोके खटयों बेसक ।। ७७

जे निआं सामो न्हारिए, त पट न रखे दम ।
त हक केई न्हारिजे, हल्लाए हक हुकम ।। ७८

---

१. नाम । २. न्याय । ३. मित्र । ४. न्याय । ५. हुकूमत । ६. झूठे । ७. न्यायाधीश । ८. स्वामी । ९. दोषी । १०. दावेदार । ११. तरसना । १२. बिलखना । १३. न्यायलय । १४. चाहे । १५. भागते-फिरते । १६. जिताया । १७. देंगे । १८. अन्याय ।

सरो—तोरो होए अदल, निआं थिए तित ।
हे गाल्यूं गुझांदर अरस ज्यूं, किआं कढां गुहाई हित ॥ ७९

हित साहेद तूंहीं तोहिजो, खिलवत में न बेओ ।
जे बंग होए मूह जो, से मूंजे सिर डेओ ॥ ८०

झोडो करिआं कांध से, जे तो झोडाई ।
तूं दाई तूं मुद्दई, हित तूंहीं गुहाई ॥ ८१

भोंणों लिकंदो मूह थी, आए निआं गाल घणी ।
लाड कोड मंगां तो कने, अच्च मुकाबिल मूं धणी ॥ ८२

तांजे मुकाबिल न थिए, मूं थी छुटे न कीं ।
पांण वतन बिनीजो[1] हिकडो, तूं मूंहजो पिरी[2] ॥ ८३

तूं सच्चो धणी मूं सिर, तोके पुज्जां मए रांद ।
लाड पाराइआं पाँहिजा, तूं मूं सिर सच्चो कांध ॥ ८४

आऊं धणिआंणी तोहिजी, डे तूं मूं जीरे[3] अंग ।
मूं मुए पुठो[4] जे डिए, हे केडी निसबत संग ॥ ८५

लाड़ कोड़ सभे त परे, जे मूंसे गडजे हित ।
वडो सुख थिए साथ के, मांगां जांणी निसबत ॥ ८६

सच्चो सांजाए तूं करिए, समरथ तूं सुजाण ।
संग जांणी करिआं लाडडा, डिने छुटे मेहेरबान ॥ ८७

तूं मेहेबूब लाडो कांध मूं, चौडे तबके सुंई[5] निसबत ।
हांणे लिके थो के गालके, लाड जाहेर मंगे महामत ॥ ८८

मूं दुलहिन के जाहेर तो केई, मूं दुलहा जाहेर तूं थेओ ।
पांहिज्यूं[6] रूहें जाहेर तो केयूं, तो रे आए न को बेओ ॥ ८९

तूं लज्ज करिए केह जी, या अरस तांजे हित ।
तो निसबत अरसां से, बेओ कोए न परसां कित ॥ ९०

१. दोनों का । २. प्रीतम । ३. जिन्दा । ४. पीछे । ५. सुना । ६. अपनी ।

आंईं चोंदा तूं की घुरे, हिन न्हाएमें लाड ।
आंऊं त घुरां तो लगाई, हिनमें हुकमें डे सवाद ॥ ८१

अस्सी आयासीं[1] रांद में, त लाड मंगूं मए हिन ।
अस्सीं कीं कीं डिस्सूं हिनके, आंईं[2] इंनी[3] पस्सेजा जिन ॥ ८२

आंईं लज्ज कंदा[4] इनजी, त आं पण लगी ए ।
आंके पण ए न छुटी, गिनी[5]—वेईं अस्सां के जे ॥ ८३

हांणे हितरचूं गाल्यूं को करचो, को झोडो वधारचों ।
हे झोडो सभे त चुके, जें अस्सांजा लाड पारचो ॥ ८४

तूं कित्तेई[6] भगो न छुटे, अरसमें मूं माध[7] ।
लाड पाराइआं पांहिजा, पुजी[8] पल्लो[9] पांध[10] ॥ ८५

आंईं कितेई छुटी न सगे, आंऊं किएँ[11] न छडियां आं ।
महामत चोए मूं दुलहा, पार सघरा[12] लाड अस्सां ॥ ८६

॥प्रकरण ॥ ७॥ चौपाई ॥ ३४१ ॥

## बाब जाहेर थिअणजा

*रूह अल्ला डिन्यूं निसानियूं, जे लिख्यूं मए फुरमान ।
से सभ मिडाए दाखला[13], करे डिंनाऊं पेहेचान ॥ १

न तां केर[14] रांद केडी[15] आए, हे रूहें को जांणे ।
डिअण अस्सांके सुखडा, तो उपाइए[16] पांणे ॥ २

न कीं जाणूं रांद के, आं दिल उपाई पांण ।
डिअण अस्सांके सुखडा, हे दिलमें आएम जांण ॥ ३

हे जा हित रांदडी, केइआं अस्सां कारण ।
त अस्सां कीं पसाइए डुखडां, अस्सीं आयासी न्हारण ॥ ४

केआंऊं वडी रांदडी, कागर मूक्चो कीं हित ।
डिअण साहेदी[17] सभनी, लिख्या लखे भत्त ॥ ५

---

१. आए हैं । २. आप । ३. इनको । ४. करते । ५. ले-गई । ६. कहीं । ७. सामने । ८. पकड़कर । ९. दामन । १०. कपड़ा । ११. कैसे भी । १२. सब । १३. प्रमाण । १४. कौन । १५. कैसा । १६. उपजाया । १७. साक्षी ।

पांण केआं को पधरो, उपटे बका दर ।
मूकियां रूह अरस जी, डेई संडेहो[१] कुंजी[२] कागर[३] ॥ ६

मांधा जणाया सभ के, डिअण के आकीन ।
ईंदो[४] रब्ब आलम[५] जो, सभ कंदो[६] हिक्क दीन ॥ ७

हिन जिमीमें पातसाई, कंदो चारीस साल ।
चई[७] खूंटे पुंना[८] कागर, जाहेर केयांऊं गाल ॥ ८

अस्सी आया आंजे हुकमें, मंझ लैलत कदर ।
सो साल रख्या ढ़ंकई, जाहेर केआं आखर ॥ ९

हजार साल दुनीजा, सो हिकडो डींह रब्ब जो ।
से डींह रात बए गुजरया, केआं जाहेर रोज फरदो ॥ १०

सा कुंजी कागर मूं डेई, उपटे बका दर ।
मूं गडचूं[९] से गिनी[१०] आइस[११], रूहें छत्ते[१२] घर ॥ ११

मूं धणी जाहेर थेओ, दीन दुनी सुरतान ।
गाल सुंई सभनी, हिंदू मुसलमान ॥ १२

वडी रांद डिखारिए, अस्सां वडचूं करे ।
त पस्सूं वडाई अँखिएं, जे सभ दुनियां सई[१३] फिरे ॥ १३

पेरां कागर कें मूंके, आकीन डिअण के सभन ।
से निसान पुंना सभनी, केआं रांदमें रोंसन ॥ १४

हे रोसन सभे पस्सीं करे, अस्सां दावो थेओ तोसे ।
तांजे मुकाबिल न थिए, त आंऊं पल्लो पुजां के ॥ १५

तांजे मूं कूडी करिए, त हितरो कुजाडे के के ।
त हेडा कागर सभनी, कुरे के लिखे ॥ १६

जे मूं कूडी करिए, त भले कूडी कर ।
तो पांहिजो नालों डेई, को लिखे कागर ॥ १७

---

१. संदेशा । २. चाबी (तारतम) । ३. धर्म ग्रन्थ । ४. आवेगा । ५. संसार । ६. करेगा । ७. चारों खूंटों । ८. पहुँचे । ९. मिली । १०. लेकर । ११. आई हूँ । १२. महाराजा छत्रसाल । १३. दुहाई ।

पट अरस अजीम जो, मुराई[१] कीं उघाडे ।
जे मूं कोठिए[२] लिकंदी, त आंऊं को न अच्चां लिके ॥ १८

एहेडी हुई तो दिलमें, त मूंके जाहेर को केइए ।
इलम डेई मूं मंझ बेही, वेण वडा को कढे ॥ १९

कोई तोके वेण विंगो[३] चोए, त से आंऊं सहां कीं ।
मूं साहेदचूं सभ तोहिज्यूं, गिडचूं मूर मुराई ॥ २०

डेई लुदंनी[४] इलम, मूके परी परी समझाइए ।
को हेडचूं गाल्यूं मूं मुहां, दुनिआंमें कराइए ॥ २१

सभ जोर पांहिजो डेई करे, मूके कंमर बंधाइए ।
बाकी रे कम थोरडे, मूके को अटकाइए ॥ २२

जे न थिए मुकाबिल मूंहसे, थिए कम हिन वेर ।
त हिनी तोहिजे कागरें, पांण के सच्चो चोंदा[५] केर ॥ २३

लाड अस्सांजा रांदमें, तो पूरा सभ केआं ।
जाहेर तो मुकाबिलें, हितरे[६] बंग[७] रह्या ॥ २४

मूं हिए[८] सल्ले[९] अगियूं गाल्यू, से वलहा कुरो चुआं ।
सुंदरबाई हल्ली विलखंदी, पण से कंने कीं न सुंआ[१०] ॥ २५

*सुंदरबाई जे वखतमें, मायाएँ वडा दुख डिना ।
भत्ती भत्ती विलखई, हे डिस्सी दुखडा किना ॥ २६

आंऊं पण हुइस दुखमें, पण न सांगाएम[११] आंसे ।
मूं बे खबरी न जाणयो, से तो हांणे हिए चढ़ाया जे ॥ २७

उलटचो आं कागर में, लिख्यो सुंदरबाई जो डो[१२] ।
ते कागर न वांचयो, पण मूं पांहिजे कंने सुंओ ॥ २८

से दुख सह्या अस्सां रांदमें, तांजे सेई डिए आखर ।
से पण चाडिआं सिर मत्थे, त सेहेंदो हिओ निखर[१३] ॥ २९

---

१. पहले से । २. बुलाना । ३. टेढा । ४. तारतम ज्ञान । ५. कहेगा । ६. इतना । ७. कमी ।
८. दिल । ९. चुभतो है । १०. सुना । ११. पहचान । १२. दोष । १३. कठोर ।

ते लाएं॰ घणों को चुआं, तोके सभ मालुम ।
से सभ तोहिजे हुकमें, अस्सां केआं कम[२] ॥ ३०

जे सो भेरां[३] आंऊं विसरई, त—पण आंहिजा सेंण ।
पस्स तूं हिए पांहिजे, जे तो चेया वेण ॥ ३१

हे पण कंदे गाल्यूं लाडज्यूं, तांजे विसरां थी ।
संग जांणी मूर जो, थिए थीं गुस्तांगी[४] ॥ ३२

हांणे जे करिए हेतरी, जीं जेडियूं[५] सभे पस्सन ।
कर सच्चा अच्ची मुकाबिलो, सुख थिए अस्सां रूहन ॥ ३३

हांणे निपट आए थोरडी, सुण कांध मूहजी गाल ।
डेई दीदार गाल्यूं कर, मूं वर नूरजमाल ॥ ३४

हांणे जे लाड अस्सां जा, ब्या सच्चा जे पारीने ।
मूं तेहेकीक आंभो[६] तोहिजो, मूंके निरास न कंने ॥ ३५

तूं पारीने उमेदूं वडियूं, अस्सां ज्यूं तेहेकीक ।
पण ते लांए थी विलखां, मत्थां आयो कौल नजीक ॥ ३६

तूं थी धणी मुकाबिल, को रखे थोरडे बंग ।
मूं गिन्यूं[७] साहिदयूं तोहिज्यूं, कै केअम[८] दुनी से जंग ॥ ३७

पोरचां[९] तां सभ ईंदा[१०], सभ सच्ची चोंदा से ।
जे अस्सां बेठे अच्चे दुनिआं, जे कीं डिस्सूं रांद ए ॥ ३८

हितरो त आएम तेहेकीक, पोए मूं गाल सच्ची सभ चोंदा ।
अस्सां हल्ले पोरचां, हत्थडा घणूं गोहोंदा[११] ॥ ३९

पण असल पांहिजी गिरोमें, जा रूहअल्ला चई ।
*सकुमारबाई गडवी[१२], अज्जां[१३] सा पण न्हा रसई[१४] ॥ ४०

न तां कम सभ पूरो केओ, अने करिए पण थो ।
कंने पण तेहेकीक, से पूरो आंभो आए तो ॥ ४१

---

१. वास्ते । २. काम । ३. बार । ४. बे अदबी । ५. सखियाँ (साथी) । ६. विश्वास । ७. लेकर । ८. किया । ९. पीछे । १०. आवेंगे । ११. मलेंगे । १२. मिली । १३. अभी । १४. समझी ।

महामत चोए मूं वलहा, तोसे करिआं लाड़ कोड ।
केअम गुस्तांगो रांदमें, जे तो बंधाई होड[१] ॥ ४२

॥ प्रकरण ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ ३८३ ॥

॥ *मारकंडजो द्रष्टांत

चई सुंदरबाई अस्सां के, मारकंड जो हकीकत ।
ईं दर थी आंके खोलिआं, आंजो पण ईं बीतक ॥ १

निमूनो मारकंड जो, चयो सुंदरबाई भली भत्त ।
सुकदेव आंदो[२] आं कारण, हे जे पस्सो था हित ॥ २

जे कीं गुजरचो मारकंड के, विच्च जिमी हिन अभ[३] ।
से गुझ दिलजो निद्रमें, डिठो नारायणजी सभ ॥ ३

डेखारी नारायण जी, माया मारकंड के ।
जे कीं डिठो रिखी निद्रमें, सभ चई नारायणजी से ॥ ४

अस्सी पण बेठा आं अगिआं, निद्रडी डिनी आं अस्सा ।
हे जा डिस्सो था निद्रमें, से कुरो[४] खबर न्हाए आं ॥ ५

धणी बेठा आयो विच्चमें, सभ नजरमें पाए ।
असां दिलजी को[५] न करचो, आंजे दिलमें तां आए ॥ ६

अस्सां दिलज्यूं गालियूं, से कुरो आं डिठयूं न्हाए ।
से कीं आंई सहो था, जे विलखण थिए अस्सांए ॥ ७

आंई बेठा सुणो गालियूं, अस्सां के को विधें दिल ल्हाए[६] ।
को न करिए मूं दिलजी, आंजे दिलमें केही[७] आए ॥ ८

मारकंड माया मंझां, जडे[८] किएं न निकरी सगे ।
तडे[९] गिडाई रिखी के पांणमें, मंझ पेही मारकंड जे ॥ ९

अस्सां जा डिठी रांदडी, आंईं पस्सी तेहजो सूल[१०] ।
मूके अस्सां के फुरमान, हत्थ पांहिजे तूरी रसूल ॥ १०

---

१. मुकाबिला । २. ल्याए । ३. आसमान । ४. क्या । ५. क्यों । ६. उतार । ७. कैसी ।
८. जब । ९. तब । १०. पीड़ा ।

लखे भत्ते लिखिआं, कै इसारतें रमूजें ।
सभ हकीकत मूकिआं, भाइए मान किएं समझे ॥ ११
पोए मूकिआं रूह पांहिजी, जा अस्सांजो सिरदार ।
कुंजी आंणे अरस जी, खोल्याई बका द्वार ॥ १२
जे निसानियूं फुरमानमें, से डिनाई[1] सभ निसान ।
सुंदरबाई कै भत्तें, करे डिनाऊं पेहेचान ॥ १३
ईं चुआं आऊं केतरो, अलेखे आईन ।
बिनी[2] कोल मिडी करे, डिनाऊं द्रढ आकीन ॥ १४
दिलडा अस्सां जा जागया, पण पुज्जे[3] न रूह सी ।
से हुकम हत्थ आंहिजे, हल्ले न अस्सां जो कीं ॥ १५
मारकंड जे दिलजी, सभ नारायण जी चई ।
जडे याद डिनी मारकंड के, तडे हिक दम निद्र न रई ॥ १६
उडी वेई *मारकंड के, निद्रडी कंदे[4] विचार ।
तोहे सुध अस्सां न थिए, जे डिनाऊं उपटे द्वार ॥ १७
तो डिसंदे आंऊ विलखां, सभ सुध डिनी आं हित ।
वलहा याद अज्जां को न अच्चे, को डिना हिअडो सखत ॥ १८
धणी मूहजे धामजा, अंईं चओ करिआं तीं ।
अस्सां के हिन रांदमें, मुझाए रख्यां कीं ॥ १९
गाल मिठी वलहा, सुणाए डेखार[5] धाम ।
दीदार डेअम[6] पांहिजो, मूं अंगडे थिए आराम ॥ २०
आंऊं चुआं बे[7] केहके[8], तूं मूजो[9] धणी आईए ।
तूं सुणी ईं को करिए, ईं वार बार को चाइए ॥ २१
सुंदरबाईएं जे चयो, मूं दिल पण डिनी गुहाए ।
सभ गाल्यूं अस्सां जे दिलज्यूं, धणी तो खबर सभ आए ॥ २२

---

१. दिए । २. दोनों । ३. पहुँचे । ४. करते । ५. दिखाइऐ । ६. दीजिए । ७. दूसरे । ८. किसको । ९. मेरा ।

हे गालियूं आंई डिस्सी करे, कीं मांठ करे रहां ।
अरस संग सारे[1] करे, आंई विछोहा कीं सहां ॥ २३
अरस अस्सांके विसरचो, अने विसरचा तो कदम ।
पण तो को संग विसारियो, कीं विसारिआं खसम ॥ २४
दिलडो अरस संग जो, अस्सां मत्थां कीं लाथां[2] ।
पुकारींदे न न्हारिओ, अस्सां विच्च हेडी को पातां[3] ॥ २५
किते वेयूं[4] हो[5] गालियूं, जे अरस विच्च केयूं ।
तांजे अस्सीं विसरचा, आंके विसरी की वेयूं ॥ २६
करिआं गुस्तांगी वडियूं, पण हिअडो चायो तोहिजो चए ।
जे मूं जगाए सामों न्हारिओ, त मूं रूहडी कीं रए ॥ २७
चरई[6] थी चुआं थी, जिन डुखे जो मूंहसे ।
तो डिखारचो हिक्क तोहके, आंऊं चुआं बे केहके ॥ २८
चंगी भली आइआं, चरई ते चुआं ।
भुले चुके वेण निकरे, जिन डुखे जो मुआं ॥ २९
ईं करे विहारिआं, हितरो पण न सहां ।
त कीं घुरंदिस[7] लाडडा, कीं पारीने[8] अस्सां ॥ ३०
बिआ लाड मूं विसरचा, पस्सी तोहिजो हाल ।
न कीं डिए दीदार, न कीं सुणाइए गाल ॥ ३१
तोके आंऊं न पस्सां, न कीं कंने सुणिआं ।
हितरो पण न थेअम, त विआ[9] केरा लाड मंगां ॥ ३२
मंगां जाणी संगडों[10], जे तो डेखारचो ।
हांणे विच्च बेही सभ जगाइए, हांणे कारचूं[11] को कारचो[12] ॥ ३३
मंगां थी पण द्रजंदी[13], मूं मत्थां हेडी थेई ।
हे सगाई निसबत, आंके विसरी कीं वेई ॥ ३४

---

१. जानकार । २. उतारा । ३. डाल दी । ४. गई । ५. वो, वह । ६. दीवानी । ७. मांगू । ८. पालेगे । ९. दूसरा । १०. सम्बंध । ११. पुकार । १२. कराते हो । १३. डर ।

मूके निद्रडी विसारिओ, पण तूं कीं विसारिए ।
तो दिल से को उतारियूं, ही वार वार को चाइए ॥ ३५
हेडो घुंडी[1] दिलमें, कीं पाए बेठो पांण[2] ।
आऊं कडीं न रहां दम तो रे, हेडी को करे मूंसे हांण[3] ॥ ३६
मूं मत्थां हेडो कीं केइए, केहडो आएम डो ।
जे गाल होए आं दिलमें, से मूं मांधा[4] को न कढो ॥ ३७
अगे सुंदरबाई हल्लई, रोंदी कर—करंदी[5] ।
हांणे मूंसे ईं को करचो, करे हेडी मेहेरबानगी ॥ ३८
माधा डिखारई रांद रातमें, हांणे जाहेर केआं फजर ।
हे गालियूं केयूं सभ मेहेरज्यूं, सा लाथाऊं की नजर ॥ ३९
हांणे जीं जांणे तीं मूं कर, पण बदल मूहजो हाल ।
तीं कर जीं पस्सां तोहके, जीं सुणिआं मिठडी गाल ॥ ४०
केडा[6] विंजां[7] के के चुआं, बिओ को न डिखारे हंद ।
तूं बेठो मूं भर[8] में, आऊं केडा विंजां करे पंध[9] ॥ ४१
वट[10] बेठा न सुणो, न कीं न्हारचो नेणन ।
न पुज्जी सगां पांध के, न की सुणिआं कनन ॥ ४२
मूजा पुज्जे न हत्थ अंगड़ा, त रहां कींअ करे ।
कोठाइए कागर मूकी करे, कीं बेहां धीरज धरे ॥ ४३
पेरो[11] पांणे जांणी हिन के, हाणे करिए हल्लणजी वेर ।
पुकारींदे न डेओ, पस्सण पांहिजा पेर ॥ ४४
गाल निपट आए थोरडी, हेडी भारी को केइए ।
सभनी गाले समरथ, पण दिल घुंडी केईं रखिए ॥ ४५
आंईं डुखोजा[12] दिलमें, जडे चुआं घुंडी जो वेण ।
पण कीं करिआं कीं चुआं, मूं अडां न्हारचो न खणी[13] नेण ॥ ४६

---

१. गांठ । २. आप । ३. अब (हानि) । ४. सामने । ५. विलखते हुए । ६. कहां । ७. जाऊं । ८. पास में । ९. दूर । १०. पास । ११. पहले । १२. दुखी होगे । १३. उठा कर ।

जा पर चओ सा करिआं तूं पांण कराइए थो ।
हे पण तूंहीं चाइए, मूं मत्थे कीं अच्चे डो ॥ ४७

हेडी रांद डिखारई, मए वर[१] कोडी[२] लख हजार ।
कीं करिआं कीं चुआं, मूजा धणी काएम[३] भरतार ॥ ४८

जे अपार वराका[४] तोहिजा, मूं हिकडी गँठ न छुटे ।
लखे भत्ते न्हारिआं, तो रे जोडी न जुडे ॥ ४६

जे वराका लाहिए[५], त आंऊं बेठिस तरे कदम ।
को न वराको कित्तईं, ईं आएम मूजा खसम ॥ ५०

चुआं रुआं के न्हारिआं, बेठो आइए मूं वट ।
लाहिए दममें तूंहीं धणी, अंखे कंने जा पट[६] ॥ ५१

सो वराके हिकडी, गाल ईं आइए ।
मूजो हल्ले न तिर जेतरो, हे पण चुआं थी तोहिजे चाइए ॥ ५२

तूं बंधे तूं छुडाइए, लित बी कांए न गाल ।
जीं फिराइए तीं फिरे, कोल फेल जे हाल ॥ ५३

हांणे मोंह थीं मंगां मूं धणी, मूजा सुणज सभ स्वाल ।
महामत चोए मूं लाडडा, धणी पार तूं नूरजमाल ॥ ५४

॥ प्रकरण ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ ४३७ ॥

॥ आसिकजा गुनाह ॥

सुणो रूहें अरस जी, जा पांणमें वीती आए ।
जेहेडी लटी[७] पांण केई, एहेडी करे न बी कांए[८] ॥ १

चुआं तेहजो बेवरो, सुणजा कन डेई ।
डिठम से सहूर से, सहूर आंईं पण करेजा सेई ॥ २

पोए[९] जा दिल अच्चे पांहिजे, पांण करियू सेई[१०] ।
भुली रोए तेहेकीक, हत्थडा मत्थें डेई ॥ ३

---

१. बल । २. करोड़ों । ३. अखंड । ४. पेंच । ५. उतारें । ६. परदा । ७. उलटी । ८. कोई । ६. फिर । १०. वही ।

ते लाएँ[१] कीं भूल जे, आए हत्थ अवसर ।
पोए को पछताए जे, पेरो हल्लजे न न्हारे नजर ॥ ४

गिरो पांहिजी आसिक, चांऊं मंझ हिनी ।
जा पर पस्सां पांहिजी, त अस्सां हे अकल के डिनी ॥ ५

खबर गिंनी[२] धणीअजी, डिनी[३] लोकन के ।
आसिक के हे उलटी, पांण के लगी जे ॥ ६

मिठो गुझ मासूक जो, आसिक केके[४] न चोए ।
पडोसन पण न सुणे, ईं आसिक गुझो रोए ॥ ७

*आसिक चोजे[५] तिनके, थिए पिरी उत्तां कुरबान ।
सए[६] भत्ते *मासूक जा, सुख गुझां गिने पांण ॥ ८

जे कोडी[७] पोन[८] कसाला, त करे न केके जांण ।
गिंनी काएम सुख धणीअजा, बोले ना के सांण ॥ ९

गिंनी गुझां सुख पिरनजा, रहे मंझ सैअन ।
पांण गुझ मासूक जो, न बुझाए बिअन ॥ १०

तिनी के पण न चोए, जे हिन सुखज्यूं आईंन ।
त चुआं कुजाडो[९] तिनके, जे बाहेर धांऊं[१०] पाईन ॥ ११

मासूक कोठे[११] पांण के, पाण भायूं[१२] हित रहूं ।
गिंनी सुख मासूक जो, दुनिआं के चऊं ॥ १२

कडी[१३] आसिक हेडी[१४] न करे, कांध कोठींदे पांहीं[१५] रहे ।
सुख छडे बका धणीअजा, डुख कुफरमें पए[१६] ॥ १३

जे के वलहो[१७] होए मासूक, तेहजा[१८] वलहा लगे वेण ।
से कीं डिए डुझणे[१९], जे वलहो होए सेण ॥ १४

आसिक कडी न करे, हेडी अवरी[२०] गाल ।
चोंणों[२१] गुझ लोकन के, पाए विछोडो नूरजमाल ॥ १५

---

१. वास्ते । २. पाकर । ३. दिया । ४. किसीं को । ५. कहिए । ६. सौ । ७. करोड़ों । ८. पड़ें । ९. क्या । १०. पुकार । ११. बुलावें । १२. जानें । १३. कभी । १४. ऐसी । १५. पीछे । १६. पड़ कर । १७. प्यारा । १८. उनके । १९. दुश्मन । २०. उलटी । २१. कहे ।

आसिक गुझ मासूक जो, गिने थी रोए रोए ।
डिस्सों ऊंधी अकल आसिकजी, विंजो[१] बिअनके चोए ॥ १६

हे निपट निवरच्यूं[२] गालियूं, थिए थ्यूं पांण हत्थां ।
जेडी थेई रांदमें पांण से, हेडी थेई न के मत्थां ॥ १७

आसिक चाए पांण के, हेडी करे न कोए ।
कोठी न वंजे कांधजी, सा निखर[३] भाएजा[४] जोए[५] ॥ १८

गुझ पिरी जो आसिक, कडी न केके चोए ।
जे पोन कसाला कोडई, त वर मंझाईं रोए ॥ १९

हिक गुझ केओसी[६] पधरो, बिओ कोठींदे न वेयूं[७] ।
हेडी हिक्कडी कोए न करे, से पांण हत्थां बए थेयूं ॥ २०

हेडी पांण के न घटे[८], पांण चायूं अरसज्यूं ।
जे सऊर[९] करे डिठम, त हेडो जुलम[१०] करिएथ्यूं ॥ २१

पांण चऊं कूडी[११] दुनिआं, ते में हेडी केई न के ।
उलटियूं बे अकल्यूं, थेयूं पांण सच्चीअ से ॥ २२

जडे गुणा डिठम पांहिजा, ड्रिनिस[१२] घणूं हिकार[१३] ।
तरसी न्हारचम हक अडां[१४], किअम पांण पुकार ॥ २३

गुणा डिठम पांहिजा, धणी जा आसान[१५] ।
उमर वेई धांऊं पांईदे, जफा[१६] डिठम जांण ॥ २४

किने न केओ कडई, हेडो अधम कम ।
डिस्सी डोह पांहिजो, फिरी करियूं कीं जुलम ॥ २५

डाई[१७] जोए कीं करे, डिस्सी अँखिएँ डोह[१८] ।
जीं जांणे तीं करे, मत्थे हुकम धणी जो ॥ २६

पांण फिरी जा न्हारिआं, त गाल थेई हत्थ धणी ।
हित बे केहजो न हल्ले, जे करे दानाई[१९] घणी ॥ २७

---

१. जाकर । २. अनुचित । ३. अविश्वासी । ४. कहलाए । ५. स्त्री । ६. किया । ७. गई । ८. योग्य । ९. समझ । १०. अपराध । ११. झूठी । १२. डरी । १३. एक बार । १४. तरफ । १५. अहसान । १६. नुकशान । १७. स्यानी । १८. अपराध । १९. चतुराई ।

न्हारचम इलम धणीअ जो, सभ हुकमें केयो ख्याल ।
बिओ कोए न कितईं, रे हुकम नूरजमाल ॥ २८

गुणा डिठम पांहिजा, जडे न्हारचम दिल धरे ।
हे पण गुणो खुदीअ जो, जे फिरी न्हारचम सऊर करे ॥ २९

गुणा डिठम पांहिजा, जडे थेअम जांण[1] ।
गुणा डिठम से पण खुदी, तरसीस[2] पस्सी पांण ॥ ३०

गुणा केअम[3] अजांणमें, गुणा डिठम मए[4] अजांण ।
दम न चुरे[5] रे हुकम, जडे धणी पूरी डिंनी पेहेचान ॥ ३१

जांण गिडम[6] से पण खुदी, आंऊं जुदी थिआं[7] हिनसे ।
जुदी रहां त पण खुदी, खुदी किएं न निकरे हिनमें ॥ ३२

महामत चोए हे मोमिनों, कोई कितईं[8] न धणी रे ।
फिरी फिरी लख भेरां[9], न्हारचम सऊर करे ॥ ३३

॥ प्रकरण ॥ १० ॥ चौपई ॥ ४७० ॥

## खुदीजी पेहेचान

लखे भत्ते न्हारचम, खुदी[10] वंजे न किएं केई ।
हे मूर[11] मंझां कीं निकरे, जा कांधे डेखारई बेई ॥ १

जे घुरां[12] इसक, त हित पण पस्सां पांण ।
हे पण खुदी डिठम, जडे थेअम हक पेहेचान ॥ २

हक पेहेचान के के थेई, हित बिओ न कोई आए ।
जे कढे बारीकियूं खुदियूं, डे थो हक सांजाए[13] ॥ ३

तन पांहिजा[14] अरसमें, से तां सुतां निद्रमें ।
जागे थो हिक्क खावंद, ही निद्रडी आंदी[15] जे ॥ ४

डेई रूहें के निद्रडी, डिखारचांऊं हे रांद ।
हे केर[16] डिस्से थो रांद के, हित को आए[17] हुकम रे *कांध ॥ ५

१. पहचान । २. डरी । ३. किएँ । ४. में । ५. चले । ६. ली । ७. होऊँ । ८. कहीं भी । ९. बार । १०. अहं । ११. मूल से । १२. मांगूं । १३. पहचान । १४. हमारा । १५. दी, आई । १६. कौन, क्या । १७. है ।

पांण तां सुत्यूं अरस में, तरे धणी कदम ।
जे रमे रमाडे रांदमें, बिओ कोए आय रे हुकम ॥ ६

धणी या रांद विच्चमें, पडदो तो वजूद ।
पुठ[1] डेई हकके ही पस्सो, हे जो न्हाए कीं नाबूद[2] ॥ ७

हित हुकम हिक्कडो हकजो, उनहीं हकजो इलम ।
हुकम इलम या रांद के, पस्सो बिठियूं तरे कदम ॥ ८

चोए इलम कुंजी अंईं, पट पण आयो अंई ।
अकल आंजी अगरे, पस्सो उलटी या सई ॥ ९

हे *रांद हुकम इलमजी, पांण के सुतडे डिखारे ।
खिल्लण विच अरस जे, पांण के रांदचूं थो कारे ॥ १०

हित बेओ कोए न कितईं, सभ डिस्से हुकम इलम ।
जे उडे नाबूद हुकमें, त पस्सो बिठचूं तरे कदम ॥ ११

धणी द्वार डिन्नो अस्सां हत्थमें, बिओ इलम डिनाऊं जांण ।
त कीं सहूं आडो पट, को न उपटचों पांण ॥ १२

जे रे हुकम पट खोलिआं, त द्रज्जां[3] खुदी जे गुने ।
न तां कुंजी डिनाऊं हत्थ आसिक, सा मासूक विछोडो कीं सहे ॥ १३

जे होयम जरो इसक, त न पस्सां खुदी हुकम ।
पण हिक न्हाएम[4] इसक, बिओ पस्सां आडो हुकम इलम ॥ १४

न तां जे दर उपटिआं, पस्सण धणी रेहेमान ।
कीं न्हारिआं वाट[5] हुकमजी, धणी डिनी कुंजी पेहेचान ॥ १५

सुकेमें डिआं कीं डुब्बियूं, जें अच्चिम इसक ।
त हुकम खुदी न्हाए गुणो, दर दंम न रखे बेसक ॥ १६

इसक मंगां त गुणो, खुदी पण गुनेगार ।
हुकम इलम जे न्हारियां, त आऊं बंधिस बिनी[6] पार ॥ १७

---

१. पीठ । २. ना चीज, माया । ३. डरती हूँ । ४. नहीं है । ५. राह (प्रतीक्षा) । ६. दोनों ।

जे सऊर करे न्हारियां, त खुदी मंगण तरे हुकम ।
त दर उपटे पांहिजो, गडजां[1] को न खसम ॥ १८

खुदी गुणो हुकमें, घुरां[2] कुच्छां[3] हुकम ।
पट लाहियां[4] या जे करियां, सभ हुकमें चयो इलम ॥ १९

हित खुदी न गुणो के सिर, दर उपट या ढँक ।
पस्स पिरी या रांद के, आखर ईं चोए इलम हक ॥ २०

सभ डिनो दिल मोमन जे, जो मोमन दिल अरस ।
पस्स पाण पांहिजे दिलमें, दिल मोमन अरस परस ॥ २१

अरस दिल मोमन जो, जे पस्से अरस *मोमन ।
चाहिए कोठियां[5] हक अरसमें, त तो पेरो[6] न्हाए तन ॥ २२

महामत चोए हे मोमनों, धणिएं पूरी केई खिल्ल[7] ।
पिरी पस्सो या रांद के, हक बिठो अरस तो दिल ॥ २३

॥ प्रकरण ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ ४९३ ॥

॥ हुकमजी पेहेचान ॥

ताडो[8] कुंजी ना दर उपटण, समझाए डिनी सभ तो ।
बिठा आयो मूं दिलमें, जीं जांणो तीं गडजो ॥ १

सेहेरग से ओडडो, आड़ो पट न द्वार ।
उघाड़िए अँख समझजी, डिसंदी[9] न डिस्से भरतार ॥ २

हुकम इलम खेल हिक्कडो, बिओ कोए न कित्तईं दम ।
हित रूह न कोए रूहनजी, जे कीं थेयो से सभ हुकम ॥ ३

पांहिज्यूं सुरत्यूं हुकम, ही रांद डेखारे हुकम ।
रमे रांद मोहोरा हुकमें, डेखारे तरे कदम ॥ ४

जे अरवाएं अरस जी, से सभ हकजी आमर[10] ।
अस्सां हुज्जत गिडी अरस जो, अग्यां बिठ्यूं हक नजर ॥ ५

१. मिल जाएँ । २. माँगें । ३. बोलना । ४. उतारना । ५. बुलाना । ६. पहले । ७. हँसी । ८. ताला । ९. देखती हुई । १०. हुकम ।

अरवा अर्स्सा जी आमर, गुण अंग इंद्री आमर ।
अस्सी डिस्सूं सभ आमर के, रांद डिखारे पट कर ॥ ६

हित अच्चे अरवा अरस जी, त उडे चौडे तबक ।
हुकमें नाम धराओ रूहन जो, हे हुकम केओ सभ हक ॥ ७

कूड़ न अच्चे अरस में, रूह माधा[1] न रहे कूड़ दम ।
न्हारयम अंतर मंझ बाहेर, कित जरों न रे हुकम ॥ ८

डिठयो डिखारयो हुकमें, अस्सीं थेआ हुकम ।
न्हाए न थ्यो न थींदो, की धारा[2] हुकम खसम ॥ ९

हुकमें डिखारयो हुकम के, ते हुकमें डिठो हुकम ।
*भिस्त *दोजख थी हुकमें, आखर सुख थेओं सभ दम ॥ १०

नाला[3] रूहें[4] फिरस्ते[5] जा, धरया हक आमर ।
पुंना[6] पांहिजी निसबतें[7], हुकमें पुजाया[8] उपटे दर ॥ ११

अस्सीं उत्थी बिठां अरसमें, अस्सां के हुकमें डिनों याद ।
हुकमें हुकम खेल डिखारिओ, हुकमें हुकम आयो स्वाद ॥ १२

हे बारीक गालियूं हुकम ज्यूं हुकम थेओ सभमें हक ।
अस्सीं अरसमें सिर गिनी[9] करे, केयूं गालियूं बेसक ॥ १३

अस्सां अरस न छड्यो, धारा थेआंसी बेसक ।
रूहें न आयूं रांदमें, अस्सां चई गाल मुतलक[10] ॥ १४

हे भत[11] सभ हुकमें के ई, रांद डेखारी खिलवत में घर ।
गाल्यूं खिलवत ज्यूं केयूं रांदमें, जो हक दिल गुझांदर ॥ १५

गालियूं सभे रांद ज्यूं, थींदयूं मए खिलवत ।
थींदा खिलवत में सुख खेलजा, गिडा खेलमें सुख निसबत ॥ १६

अस्सां न छड्यों अरस के, रांदमें पण आयूं ।
थेओ विछोडों अरसमें, रांदमें पण न आयूं ॥ १७

---

१. सामने । २. विना । ३. नाम । ४. ब्रह्मसृष्टि । ५. ईश्वरी सृष्टि । ६. पहुँचा । ७. संबंध । ८. पहुँचाया । ९. लेकर । १०. निस्संदेह । ११. तरह, विधि ।

हे भत्य सभ हुकमें, परी परी कारे ।
कारण वाद इसक जे, डिना बए हंद डिखारे ॥ १८

पातसाही पांहिजी, डिखारी भली पर ।
कीं चुआं वडाई हकजी, मूं धणीं वडो कादर[1] ॥ १९

महामत चोए हे मोमिनों, पाण के बिहारे तरे कदम ।
खिल्ल कंदा[2] वडी अरसमें, जे केई हुकम इलम ॥ २०

॥ प्रकरण ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ ५१३ ॥

## *हक *हादी *रूहोंजी सिफत

कांध[3] रूह भाइयां[4] सिफतकरियां, तोहिजी हितथिए न सिफत[5] किएं केई ।
से न्हारचम जडे बेवरों करे, आंऊं उरझी ते में रही ॥ १

ही दिलजी गाल के से करियां, रूहजी तूं जांणें ।
कुच्छण भेणी[6] लाथिए[7], कांध चओ से चुआं हांणें ॥ २

उताइआं[8] *आलम[9] में, मूं जेडो[10] केई[11] न कांए[12] ।
अज्जां[13] तरसे मूं जिंदुओ[14], हे केही पर[15] तोंहिजी आए ॥ ३

पांण जेड्यूं[16] डिंने दातड्यूं[17], से डिठ्यूं मूं नजर ।
अज्जां मंगाइए मूं हत्थां, मूं कांध एहडो[18] कादर ॥ ४

जे वड्यूं केइए हिन रांदमें, तिनी ज्यूं कै कोडी[19] सिफतूं कन ।
से *वडा[20] मंगन खाक पेरनजी[21], अस्सां अरस रूहन ॥ ५

सिरदार ते रूहन में, मूके केइए कांध ।
वडी वडाई डिंनिएं, अच्ची मए हिन रांद ॥ ६

हे जे वड्यूं केइए हिन आलममें, हिनज्यूं सिफतूं त्तिनी न पुजन ।
से वडा वड्यूं सिफतूं करीन[22], पुज्जे न खाक मोमन ॥ ७

ते में वडो मूके केइए, मूंजो सिफत न थिए मए रांद ।
जे ए सिफत न पुज्जे, त सिफत तोहिजी करियां कीं कांध ॥ ८

---

१. सामर्थ्यवान । २. करेंगे । ३. पति । ४. जानें । ५. महिमा । ६. फर्ज । ७. उतारती हूँ । ८. ऊपर उठाया । ९. दुनियां । १०. जैसी । ११. करी । १२. किसी को । १३. अभी भी । १४. जीव । १५. विधि । १६. जैसी । १७. देन, नियामतें । १८. ऐसा । १९. करोड़ों । २०. महापुरुष । २१. चरणों की । २२. करते है ।

जा न्हाए अकल हिन आलम में, सा डिनिएं मूके मत[1] ।
जे से आऊं सभ समझी, काएम आलम सिफत ।। ९

गाल आंजी जाणूं अस्सीं, जे डिन्यूं अस्सां के इलम ।
कांध हित न भेणी[2] कुच्छण, गाल्यूं गरे थीदयूं[3] खसम ।। १०

महामत चोए मूं धणी, मूके वडी डेखारई रांद ।
कर मूसे मिठयूं गालियूं, मूंजा मिठडा मियां[4] कांध ।। ११

।। प्रकरण ।। १३ ।। चौपाई ।। ५२४ ।।

यह १३वें प्रकरणका हिन्दी अनुवाद किरंतन किताबके १०६वें प्रकरण में देखना

## अथ तीन प्रकरण सिंधी के हिन्दी पद्य में अनुवाद

### आसिकके गुनाह

सुनो रूहें अरस की, जो अपनी बीतक ।
जो हमसे लटी[5] भई, ऐसी करे न कोई मुतलक[6] ।। १

कहूं तिनका बेवरा, सुनियो कानों दोए ।
ए देख्या मैं सहूर कर, तुम भी सहूर कीजो सोए ।। २

पीछे जो दिलमें आवे साथ के, आपन करेंगे सोए ।
भूली रोवे तेहेकीक[7], गए हाथ पटकते रोए ।। ३

तिसवास्ते क्यों भूलिए, हाथ आए अवसर ।
जो पीछे जाए पछतावना, क्यों आगे देख न चलें नजर ।। ४

अपनी गिरो आसिक, कहावत हैं मिने इन ।
चलना देख कहत हों, ए अकल दई तुमें किन ।। ५

लेनीं हकीकत[8] हक की, और देनी इन लोकन ।
आसिक को ए उलटी, जो करत हैं आपन ।। ६

मीठा गुझ मासूक का, काहूं आसिक कहे न कोए ।
पड़ोसी भी ना सुनें, यों आसिक छिपी रोए ।। ७

---

१. मति (समझन) । २. ठिकाना । ३. होंगी । ४. महबूब (प्रीतम) । ५. भूल, उलटी ।
६. बिलकुल । ७. निश्चित । ८. यथार्थ ज्ञान ।

आसिक कहिए तिन को, जो हक पर होए कुरबान ।
सौ भांतें मासूक के, सुख गुझ लेवे सुभान ।। ८

जो पडे कसाला कोटक, पर कहे न किनको दुख ।
किसीसों ना बोलही, छिपावे हक के सुख ।। ९

गुझ सुख लेवे हक के, रहे सोहोबत मोमन ।
अपना गुझ मासूक का, कबूं कहें न आगे किन ।। १०

तिन आगे भी ना कहे, जो हक के खबरदार ।
पर कहा कहूं मैं तिनको, जो बाहेर करे पुकार ।। ११

हक बोलावें सरत[1] पर, आपन रेहेने चाहें इत ।
लेवें गुझ मासूक का, कहें दुनियाँ को हकीकत ।। १२

ऐसी आसिक कबूं ना करे, पीछे रहे बुलावते हक ।
दुख कुफरमें पड़ के, सुख बका छोड़े इसक ।। १३

प्यारा जिनको मासूक, तिनके प्यारे लगें वचन ।
सो कबूं न केहेवे और को, मासूक प्यारा जिन ।। १४

आसिक कबूं ना करे, ऐसी उलटी बात ।
केहेने सुख लोकन को, पाए बिछोहा हक जात ।। १५

आसिक गुझ मासूक का, सो लेवत है रोए रोए ।
ऐसी उलटी अकल आसिक की, सुख कहे औरों को सोए ।। १६

ए निपट बातें रिजालियां[2], सो आपन करो दिल धर ।
जैसी हुई हमसे खेलमें, तैसी हुई न किनके सिर ।। १७

आसिक कहावे आपको, फेरे बोलावना भरतार ।
जाए न बोलाई खसम की, सो औरत बे-इतबार[3] ।। १८

गुझ मासूक का आसिक, सो केहेना न कासों होए ।
जो कै पडें कसाले, तो बाहेर माहें रोए ।। १९

---

१. समय । २. अनुचित । ३. अविश्वासी ।

एक तो गुभ्झ जाहेर किया, और गैयाँ न बोलावते सोए ।
ऐसी एक भी कोई ना करे, सो आपन करी दोए ॥ २०

रूहों को ऐसी न चाहिए, अरस को कहावें हम ।
सहूर करके देखिआ, तो हम किया बडा जुलम ॥ २१

हम कहें झूठी दुनियाँ, तिनमें ऐसी करे न कोए ।
जो उलटी हम सांचों से भई, ऐसी झूठोंसे न होए ॥ २२

मैं देख तकसीर[1] अपनी, पेहेलें देख डरी एक बार ।
देख डरी सामी हक, तब मैं किया पुकार ॥ २३

मैं देखे गुनाह अपने, हक के देखे एहसान ।
उमर गई पुकारते, बीच हलाकी[2] जहान ॥ २४

कबहूँ किनहूँ ना किए, ऐसे काम अधम ।
देख गुनाह अपने, फेर किए जुलम ॥ २५

स्यानी जोरू क्यों करे, जान के गुनाह ए ।
खावंद जाने त्यों करें, हुआ बस हुकम के ॥ २६

जो फेर देखें आपन, तो ए हुई हाथ धनी ।
और किसीका ना चले, जो कोई करे स्यानप[3] घनी ॥ २७

मैं देख्या इलम हक का, तो ए सब हुकम के ख्याल ।
और ना कोई कहूँ, बिना हुकम नूरजमाल ॥ २८

ए गुनाह देखे अपने, जब देख्या दिल धर ।
ए भी गुनाह खुदीअ का, जब फेर देख्या सहूर कर ॥ २९

गुन्हे भी अपने तब देखे, जब मैं हुई हुसियार ।
देखी हुसियारी ए भी खुदी, डरी हुई खबरदार ॥ ३०

गुन्हे किए अजान में, गुन्हे देखे सो भी अजान ।
दम न ले बीच हुकमें, जब हकें पूरी दई पेहेचान ॥ ३१

१. गुनाह (कर्म) । २. दुख दायी (संसार) । ३. चतुराई ।

पेहेचान लई सो भी खुदी, मैं न्यारी हुई तिनसे ।
न्यारी होत सो भी खुदी, ए खुदी निकलत नाही मैं ॥ ३२

महामत कहें ऐ मोमनों, कोई नाहीं हक बिगर ।
लाख बेर मैं देखिआ, फेर फेर सहूर कर ॥ ३३

॥ प्रकरण ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ ५५७ ॥

॥ मैं खुदीकी पेहेचान ॥

मैं लाखों बिध देखिया, कहूँ खुदी क्योंए न जाए ।
ए क्यों जावे पेड़से, जो दूजो हकें दई देखाए ॥ १

जो मैं मांगों इसक को, तो इत भी आप देखाए ।
ए भी खुदी देखी, जब इलमें दई समझाए ॥ २

हक पेहेचान किनको हुई, इत दूसरा कौन केहेलाए ।
ऐसी काढी बारीकी खुदियां, हक भी पेहेचान कराए ॥ ३

तन तो अपने अरस में, सो तो सोए नीद में ।
जागत हैं एक खावंद, ए नीद दई जिनने ॥ ४

दे कर नीद रूहन को, खेल देखावत नजर ।
तो ए खेल कौन देखत, कोई है बिन हुकम कादर ॥ ५

आपन सोए हैं अरसमें, तले हक कदम ।
ए जो खेल खेलावे खेलमें, कोई है बिना हक हुकम ॥ ६

इत हुकम एक हक का, और हकै का इलम ।
हुकक इलम या खेल को, देखो सोइयां तले कदम ॥ ७

कहे इलम तुमहीं पट, तुमहीं कुंजी पट की ।
कुल्ल अकल दई तुम को, देखो उलटी या सीधी ॥ ८

बीच खेल और खावंद, पट तुमारा वजूद ।
पीठ दे हक को ए देखत, जो ना कछू है नाबूद ॥ ९

ए खेल हुकम इलम का, हमें नीदमें देखावत ।
करने हाँसी अरस में, खेल में भुलावत ॥ १०

इत दूसरा कोई कहूँ नहीं, सब देख्या इलम हुकम ।
जो ए उड़े नाबूद हुकमें, तो बैठे देखो आगे खसम ॥ ११

हकें द्वार दिया हाथ अपने, और दई इलम पूरी पेहेचान ।
तो क्यों सहें आड़ा पट, क्यों न खोलें द्वार सुभान ॥ १२

जो पट खोलूं हुकम विना, लगत खुदी गुन्हें डर ।
ना तो हाथ कुंजी दै आसिक के, हक बिछोहा सहें क्यों कर ॥ १३

जो होए मुझमें इसक, तो देखो न खुदी हुकम ।
एक नाहीं मोपें इसक, तो आड़ा देखों हुकम इलम ॥ १४

ना तो द्वार खोल के, आगे देखें न अरस रेहेमान ।
इत क्यों देखों राह हुकम की, हकें दई कुंजी पेहेचान ॥ १५

गोते न खांऊं बिना जल, जो आवे इसक ।
तो हुकम खुदी ना कछू गुना, पट दम न रखे बेसक ॥ १६

इसक मागूं तो भी गुना, और खुदी ए भी गुनाह होए ।
जो देखों हुकम इलम को, मोहे बाँध लई बिध दोए ॥ १७

देखों सहूर खुदी मांगना, ए दोऊ तले हुकम ।
तो खोल दरवाजा अपना, क्यों न मिलों अपने खसम ॥ १८

खुदो गुनाह सब हुकमें, मागूँ बोलूं सब हुकम ।
पट खोलूं या जो करूँ, सब हुकम कहे इलम ॥ १९

इत खुदी न गुनाह किन सिर, या ढाँप खोल तेरे हाथ ।
देख खावंद या खेल को, हुकम इलम तेरे साथ ॥ २०

सब मोमनों को सौंपिया, कह्या मोमन दिल अरस ।
देख आप दिल विचार के, दिल मोमन अरस परस ॥ २१

दिल मोमन का अरस है, जो देखे अरस मोमन ।
हक चाहें बैठाया अरस में, तो तेरा आगेही नहीं तन ॥ २२

महामत कहें ऐ मोमिनों, हकें हाँसी करी पूरन ।
देख खावंद या खेल को, ए कुंजी तेरा दिल मोमन ॥ २३

॥ प्रकरण ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ ५८० ॥

## हुकमकी पेहेचान

ताला द्वार न कुंजी खोलना, समझाए दई सबों आप ।
दिल अपने में हक बसें, ज्यों जाने त्यों कर मिलाप ॥ १

सेहेरग से नजीक, आड़ा पट न द्वार ।
खोली आंखें समझ की, देखती न देखे भरतार ॥ २

हुकम इलम खेल एकै, और कोई न कहूँ दम ।
इत रूह न कोई रूहन की, जो कछू होए सो हुकम ॥ ३

अपनी सुरतें हुकम, खेलावत हुकम ।
खेलत सामी हुकमें, ए देखावत तले कदम ॥ ४

अरवाहें जो कोई अरस की, सो सब हक आमर ।
हम हुज्जत लै सिर अरस की, बैठी आगूं हक नजर ॥ ५

अरवा हमारी आमर, गुन अंग इंद्री आमर ।
हम देखें सब आमर, हक देखावत पट कर ॥ ६

जो इत अरवा होए अरस की, तो उड़ावे चौदे तबक ।
रूहें नाम धराए हम, ऐसा हुकमें कर दिया हक ॥ ७

झूठ न आवे अरस में, सांच नजरों रहे न झूठ ।
देख्या अंतर माहें बाहेर, कहूँ जरा न हुकमें छूट ॥ ८

देख्या देखाया हुकमें, और हम भी भए हुकम ।
ना हुआ ना है ना होएगा, बिना हुकम खसम ॥ ९

हुकमें देखाया हुकम को, तिन हुकमें देख्या हुकम ।
*भिस्त *दोजख उन हुकमें, आखर सुख सब दम ॥ १०

जिन नाम धराया हुकमें, रूहें फिरस्ते सिर पर ।
पोहोंचे अपनी निसबतें, द्वार बका खोल कर ॥ ११

हम उठ बैठे अरस में, हमको हुकमें दिया सब याद ।
हुकमें हुकम खेल देखाया, सो हम में हुकमें आया स्वाद ॥ १२

यों मिहीं बातें के हुकम की, हुआ हुकम सबमें एक ।
अरसमें हम सिर ले उठे, सब सिर ले कहे विवेक ।। १३

हम जुदे न हुए अरस से, और जुदे हुए बेसक ।
हम रूहें खेल देख्या नहीं, और खेल की बातें करी मुतलक ।। १४

इन विध सब हुकमें कर, खेल देखाया खिलवत अंदर ।
बातें खिलवत की करीं खेलमें, जो गुझ हक के दिल भीतर ।। १५

और खेल की बातें सब, होसी बीच खिलवत ।
लेसी खेलका सुख खिलवत में, लिया खेलमें सुख निसबत ।। १६

छोड़्या नहीं अरस को, और खेलमें भी गैयां ।
अंतराए भी हुई अरस से, और जुदियां भी न भैयां ।। १७

ए विध सब हुकम की, हुकमें किए बनाए ।
वास्ते इसक रबद के, दोऊ ठौर दिए देखाए ।। १८

और साहेबी अपनी, देखाई नीके कर ।
क्यों कहूँ बड़ाई हक की, मेरा खसम बड़ा कादर ।। १९

महामत कहें ऐ मोमिनों, हकें बैठाए तले कदम ।
करसी हाँसी बीच अरस के, जो करी हुकमें इलम ।। २०

।। प्रकरण ।। १६ ।। चौपाई ।। ६०० ।

प्रकरण तथा चौपाइयों का सम्पूर्ण संकलन—प्रकरण ४८४,

चौपाई १६८७६

इति श्रीमहामति श्रीप्राणनाथजी की 'तारतम बानी' का

चौदहवां ग्रन्थ

।। सिंधी संपूर्ण ।।

निजनाम श्री कृष्णजी, अनादि अक्षरातीत ।
सोतो अब जाहेर भए, सबबिध वतन सहित ।।

# ❋ मारफत[१] सागर ❋

**ढूंढे शब[२] म्याराज[३] को, शब म्याराजमें सब ।**
**सो शब म्याराज जाहेर करी, सो शब म्याराज देखसी अब ।।**

**मसौदा**

[ ए किताब मारफत सागर, जो हकताला[४] के हुकम से पैदा हुई । हादी के दिलपर आप बैठ के बिगर हिजाब[५] बारीक बातें, 'चौपाई मुँह से केहेवाई । सो कलाम[६] ज्यों आवते गए, त्यों यारो ने लिखें, और हादी फेर प्यार से सुनते गए । सो सुन सुन के हुकम से, हाल अपने पर, अरस बका लाहूती[७] का लेते गए, और जामा नाजुक होता गया । सो इहाँ तांइ के आखर इस आलम नासूत सेती कूच करके, अपने रूहानी आलम बका वतन हमेसगी, असलू मिलाप के आराम पकड्या, और ए 'चौपाई' जो नाजिल[८] होती गई थीं सो मसौदे[९] त्योंही के त्योंही रहे । सो अब हक हादी के हुकम से मोमनोंने इसके बाब[१०] बांधें हैं, माफक अकल अपनी के । पर ए जो 'चौपाई' हादीने फुरमाई थी, तिनमें एक हरफ ज्यादा या कम नहीं किए । अब मोमन इस 'चौपाइयों' के हरफ-हरफ के माएने मगज, जाहेर के और बातून के लेयके, हक के हुकम से हादी के कदमों कदम धरेंगे । किस वास्ते के मोमन हादी के अंग नूर हैं, और नूर बिलंद से उतरे हैं । तो चढ़ना इनों को जरूर है, और अरस बका के पट हादी ने, इलम लुदंनी[११] से खोल दिए हैं । आप हक ने नाजी[१२] फिरके को हिदायत करके, निसबत मोमन असलू तन, जो बीच अरस के हक हादी के कदम तले बैठें हैं । सो देखाए दई है, रूह की नजर से । जिनसों हक ताला ने बका खिलवत बीच, कौल अलस्तो बे रब्ब कुम का किया, तब कालूबला भी रूह मोमनों की ने कह्या है । और कलाम अल्ला, और हदीसों, और कैयों किताबों के बातूनी[१३] मगज माएने । हादी ने वारस मोमनों को, रूह की नजर खोल के, दिल हकीकीपर साहेदियों सेती नकस[१४] किया है । और दिल अरस कह्या है । और दुनियां मुरदार भी नजीक मोमनों के है । तिस वास्ते जो हादी तुमको बुलावन आए थे । सो पट बका का खोल के, आगें से केतेक यारों को लेके पधारे हैं । तो मोमनों को जरूर कदमों कदम धरना है । हुकम हक हादी के सेती । ]

---

१. पूर्ण पहचान । २. रात्रि । ३. मेराज, साक्षात्कर । ४. परमात्मा । ५. पर्दा । ६. वचन । ७. परमधाम का । ८. अवतरित । ९ पांडुलिपि । १०. प्रकरण । ११. तारतम वाणी । १२. ब्रह्मसृष्टि । १३. गूढ़ार्थ । १४. अंकित ।

## खिलवतकी रद—बदलें[१]

पेहेले कहूँ अव्वल की, हक हादी हुकम ।
मोमन दिल अरसमें, हकें धरे कदम ।। १
जो कह्या आयतों हदीसों, और किताबों बोल ।
जिन पर मोहोर महंमद की, सो कहूँ फुरमाए कौल ।। २
एक दूजी को मनसूक[२], करे आएत आएत कों ।
तिसवास्ते लेऊँ चुन चुन, जो सिरें[३] रखी सबमों ।। ३
सो सुध पाइए लुदंनी से, देखे ना उपली नजर ।
जो सिफली[४] के दिल मजाजी[५], बिन इलम देखें क्यों कर ।। ४
हुकमें कहूँ ता दिन की, जो हक हादी रूहों खिलवत ।
अबलों जाहेर न कहूँ, ए बका मता वाहेदत ।। ५
जब नहीं कछू पैदा हुआ, जिमी या आसमान ।
और ना कछू चौदे तबक, फिरस्ते दुनी जहान ।। ६
ना तब चारो चीज को, किनहूँ समारे ।
ना कछू चाँद ना सूरज, ना पैदा सितारे ।। ७
ना कोई कहे *बेचून को, नाहीं *बेचगून ।
ना केहेने वाला *बेसबीका, नाहीं बेनिमून ।। ८
ना खाली तब हवा सुंन, नाहीं ला मकान ।
ना कछू किया तब हुकम, ए जो कह्या कुंन[६] सुभान ।। ९
एक बका नूर मकान, आगूं नूर तजल्ला ।
रह्या जबराईल हद नूर की, आगूं पोहोंचे रसूल अल्ला ।। १०
जबरूत[७] लाहूत[८] दोऊ बका, हादी रूहें लेवें लज्जत ।
ए पातसाई हक की, बीच नूर वाहेदत ।। ११

---

१. संवाद । २. रद्द । ३. श्रेष्ठ । ४. नीच । ५. भौतिक । ६. "हो जा" आज्ञा । ७. अक्षर धाम । ८. परमधाम ।

जब न्यामत पाई हक की, खुली मुसाफ हकीकत ।
तब सबे विध पाइए, हक अरस मारफत ॥ १२

जिन को हक मेहेर, सो आप करें हिदायत[1] ।
सों सबे विध बूझहीं, अरस बका निसबत ॥ १३

अरस दिल एही हकीकी, अरस रूहें मोमन ।
रहें दरगाह बीच असल, सूरत अरस तन ॥ १४

खासलखास रूहें कहीं, ए *अहंमद उमत ।
भाई कहे महंमद के, हक खासी खिलवत ॥ १५

देखो बड़ाई महंमद, मासूक केहेवें हक ।
इन के सरभर[2] दूसरा, कोई नहीं बुजरक ॥ १६

दो हिजाब[3] जर मोती के, बीच राह साल सत्तर ।
हक महंमद दोऊ हिजाबमें, आखर बातें करी इन बेर ॥ १७

ए लिख्या सिपारे आममें, करी बातें हक महंमद ।
सो मोमन आयत देख के, सकसुभे[4] करें रद ॥ १८

हक महंमद के बीचमें, कहे आड़े पट दोए ।
सत्तर साल बीच राह कही, जाहेरी माएने निसां क्यों होए ॥ १९

जो लों मुसाफ हकीकत, खोले नहीं वारस[5] ।
कोई पावे ना बिना लुदंनी, हक महंमद रूहें अरस ॥ २०

ए हादी हमेसगी[6], अरस बका हक जात ।
नूर रूहें वाहेदत, इत और न कछू समात ॥ २१

हुई मजकूर अरसमें, सो सब वास्ते इस्क ।
अरस हक हादी रूहें, ए साहेबी बुजरक ॥ २२

खिलवत हक हादीय की, जो इस्क रूहों असल ।
ए बातून बारीक वाहेदत की, इत पोहोंचे ना फना[7] अकल ॥ २३

१. आदेश । २. बराबर । ३. पर्दे । ४. शंकाएं । ५. उतराधिकारी । ६. सदा से । ७. नश्वर ।

रूहों कह्या हक हादीय सों, हम तुमारे आसक[१] ।
तुम हमारे मासूक[२], इनमें नाहीं सक ।। २४
तब कह्या बड़ी रूहने, इस्क मेरा ताम[३] ।
हक रूहों की मैं आसिक, मेरा याहीमें आराम ।। २५
तब हकें कह्या हादी रूहों को, तुम मासूक मेरे दिल ।
इत इस्क मेरा पाए ना सको, जो सहूर[४] करो सब मिल ।। २६
नूर मकान नूर हक का, जित है नूर—जलाल[५] ।
तिन दिल हकें यों चाह्या, देखें इस्क नूर—जमाल[६] ।। २७
कैसा इस्क बड़ी रूहसों, कैसा इस्क रूहों साथ ।
इस्क हादी का हक से, कैसा हकसों इस्क जमात ।। २८
ए इस्क रमूज[७] रहे हमेसा, हक हादी रूहन ।
ए बेवरा[८] क्योंए न होवही, बीच वाहेदत इस्क पूरन ।। २९
तब हकें दिलमें यों लिया, मैं देखाऊं अपना इस्क ।
और पातसाही अपनी, ए देखें रूहें मुतलक[९] ।। ३०
बका अरस में जुदागी, सो तो कबूं न होए ।
ए बेवरा नहीं *वाहेदतमें, होए कम ज्यादा बीच दोए ।। ३१
ए मजकूर अव्वल का, हँसते करें सब कोए ।
पर कम ज्यादा वाहेदत में, बेवरा क्योंए न होए ।। ३२
हक आसिक हादीय का, और आसिक रूहन ।
ऐसा हक का सुकन[१०], क्यों सहें बंदे मोमन ।। ३३
चाहिए मोमन आसिक हक के, और आसिक हादी के ।
बड़ी रूह भी आसिक हक की, सीधा इस्क बेवरा ए ।। ३४
*वाहेदत कहिए इनको, एक इस्क तन मन ।
जुदागी जरा नहीं, *वाहेदत में पाव छिन ।। ३५

---

१. प्रेमी । २. प्यारा । ३. सर्वस्व (खुराक) । ४. समझ । ५. अक्षर ब्रह्म । ६. अक्षरतीत ब्रह्म । ७. भेद । ८. वर्णन । ९. बिल्कुल । १०. वचन ।

मैं छिपाऊं तुम को, बैठो पकड़ कदम ।
तुम इस्कै से पाओगे, आए मिलो माहें दम ॥ ३६

उतर जब तुम देखोगे, लैलत कदर के माहें ।
और जिमी औरै आसमान, देखो प्रतिबिंब तांहें ॥ ३७

फरामोसी[1] क्यों होएसी, क्या जुदे होसी माहें खेल ।
तुमको क्यों हम भूलेंगे, ए कैसी है कदर—लैल[2] ॥ ३८

कह्या हकें रूहन को, तुम उतरो माहें लैल ।
बैठो पकड़ कदम, देखोगे माहें खेल ॥ ३९

देखो और जिमीय को, औरैं आसमान ।
सो सब फना बीच में, दुनिआं सकल जहांन ॥ ४०

तित कानों सुने जायंगे, ए जो चौदे तबक ।
कोई हमारे अरस की, तरफ न पावे हक ॥ ४१

देखो जिमी दमी आदमी, खलक तमासा ।
ए खाली बीच बसत हैं, मुरदों का बासा ॥ ४२

ए ना कछू पेहेले हुते, ना होसी आखर ।
खेल ऐसा देखो बीच, माहें लैलत कदर ॥ ४३

रूहें देखें झूठ फरेब[3] को, कै भांत तमासा ।
लाख विधों के खोजहीं, कोई पावे ना खुलासा[4] ॥ ४४

ए जो दुनी देखो खेलती, आवे जाए हुकम ।
झूठा वजूद ना रेहेवही, चले कर गिनती दम[5] ॥ ४५

आवे जाए माहें खेलही, अपने बल उमर ।
ढूंढ़्या फेर न पाइए, ए मुआ क्यों कर ॥ ४६

कोई आप न चीन्हीं, ना चीन्हे हक वतन ।
ना चीन्हे तिन जिमीय को, ऊपर खड़ा है जिन ॥ ४७

---

१. बेसुधी । २. लैलुतकदर । ३. छल (माया) । ४. स्पष्टीकरण । ५. श्वास ।

कहें आप तुम भूलोगे, उन जिमी में जाए ।
रहोगे बीच नासूत के, उतहीं उरभाए ॥ ४८

चलना जेता रात का, अमल[१] जो सरियत[२] ।
दिन मारफत हुए विना, कछुए ना सूभत ॥ ४९

बिना इस्कें सूभे नहीं, ए जो रात का अमल ।
ए राह चलसी लग फजर, तोरे[३] के बल ॥ ५०

बातून जब तुम देखोगे, खोलसी रूह नजर ।
लैलत कदर के *तकरार, तीसरे होसी फजर ॥ ५१

लिखों हकीकत खिलवत की, आखर होसी जो सब ।
कहां से लिख भेज्या खसमें, कहोगे आए हम कब ॥ ५२

ए इस्क तो पाइए, जो पेहेले मोकों जाओ भूल ।
तुम ले बैठो जुदागी, मैं भेजों तुम पर रसूल ॥ ५३

*रसूल आवेगा तुम पर, ले मेरा फुरमान ।
आए मेरे अरस की, देसी सब पेहेचान ॥ ५४

तब दिलमे राखियो, खबरदारी तुम ।
इसारतें[४] के रमूजें[५], लिख भेजेंगे हम ॥ ५५

तुम पर भेजोंगा फुरमान, मासूक के हाथ ।
अरस कुंजी नूर रोसन, भेजों रूह मेरी साथ ॥ ५६

द्वार सबे खोलसी, होसी नूर रोसन ।
देखोंगे हक सूरत, और असल तन ॥ ५७

तुम कहोगे कहां खसम, कैसा खेल कौन हम ।
देसी साहेदी रसूल रूहअल्ला, जो खिलवत करी हम तुम ॥ ५८

हादी[६] मीठे सुकन हक के, कहेगा तुमें रोए रोए ।
तुम भी सुन सुन रोएसी, पर होसमें न आओ कोए ॥ ५९

---

१. व्यवहार । २. कर्मकांड । ३. प्रतिबन्ध । ४. संकेत । ५. गुह्य भेद । ६. सतगुरु ।

तुम कहोगे रसूल को, हम क्यों आए कहां वतन ।
मलकूत[1] बिना कछू और है, आगे तो खाली हवा सुंन ॥ ६०

मैं भेजों रूह अपनी, इलम देसी समझाए ।
तब मूल कुल्ल अकल, असराफील ले आए ॥ ६१

आयतें हदीसें रसूल, और किताबें सब ।
खोलसी इसारतें रमूजें, होसी पेहेंचान तब ॥ ६२

देखाए फरामोसी तारीकी[2], ऊपर देऊं मेरा इलम ।
जासों मुरदे होवें जीवते, सो दे हाथ हैयाती[3] तुम ॥ ६३

जो कछू आखर होएसी, तुम देत हो आगूं बताए ।
सो क्यों हम भूल जाएंगे, जो लेत हैं दिल लगाए ॥ ६४

दूर तो कहूँ न करोगे, बैठे कदम तले ।
फेरें तुमारा फुरमाया[4], हम ऐसी क्यों करें ॥ ६५

करें हुसियारी आपुस में, हम देखें खेल जुदागी ।
देखें हक डारें क्यों जुदागी, हम बैठे सब अंग लागी ॥ ६६

इन विध एक दूजी सों, करी सबों मसलहत[5] ।
अपन मोमन सब एक तन, बीच कहां पैठे गफलत[6] ॥ ६७

मैं भूलों तो तूं मुझे, पलमें दीजे बताए ।
तूं भूले तो मैं तुझे, देउँगी तुरत जगाए ॥ ६८

हम देखेंगे हक इस्क, और पातसाही हक ।
सो आपन मिल देखसी, ऐसा सुख हक का मुतलक ॥ ६९

हम रूहों को देखाइए, बड़ा इस्क हक ।
और पातसाही हक की, ए जो बड़ी बुजरक ॥ ७०

हम कदम छोड़ के, कहूँ जाए न सकें दूर ।
बैठे इत देखें सबे, बीच तजल्ला नूर ॥ ७१

---

१. बैकुंठ । २. अन्धकार । ३. अमरत्व । ४. आदेश । ५. सलाह । ६. अज्ञान ।

कहें हक देखो खेल लैल का, बैठे अरस में इत ।
पीछे देखो सरत पर, सूरज मारफत ॥ ७२

राह रसूल बतावहीं, मेरे अरस चढ़ उतर ।
तब तुम महंमद के, कदम लीजो दिल धर ॥ ७३

रात अमल तब मेट के, करसी इलम फजर ।
देखोगे दिन मारफत, खोल देसी रूह नजर ॥ ७४

रद बदल आपुसमें, कर बैठे मजकूर[1] ।
कोल किया बीच खिलवत, हकें अपने हजूर[2] ॥ ७५

हकें करी रूहें साहेद[3], और फिरस्ते साहेद ।
आप भी बीच साहेद, कौल किया वाहेद ॥ ७६

इस्क का अरस अजीममें, रब्द हुआ विलंद[4] ।
तो बेबरा देखाया इस्क का, म[illegible] फरेबी फंद ॥ ७७

आप बैठे दिल देय के, ऊपर बारे हजार ।
होसी हांसी सब म्याराजमें, जिन को नहीं सुमार ॥ ७८

महामत कहें ए मोमनों, याद करो खिलवत सुकन ।
जो किया कौल[5] *अलस्तो बे रब्ब, मिल हक हादी रूहन ॥ ७९

॥ प्रकरण ॥ १ ॥ चौपाई ॥ ७९ ॥

## इलम लुदंनी नुकता तारतम

तिस वास्ते दुनी पैंदा करी, दई दूर जुदागी जोर ।
हमें नजीक लिए सेहेरग[6] से, यों इलमें देखाया मरोर ॥ १

अरस बका बीच ब्रह्मांड के, सुध चौदे तबकों नाहें ।
सो हम को नजीक सेहेरग से, पट खोल लिए बका माहें ॥ २

जाहिरियों नजर जाहेर, धरी ऊपर सात आसमान ।
हक छोड़ नजीक सेहेरग से, पूजी हवा तारीक मकान ॥ ३

---

१. चर्चा । २. निकट । ३. गवाह । ४. ऊँचा (जोर से) । ५. प्रण । ६. दिल की रक्त शिरा ( अतिनिकट ) ।

रूहें अरस से उतरीं, बीच *लैलत कदर ।
तिनमें रूह अल्लाह की, भेजी सिरदार कर ॥ ४
ल्याए इलम लुदंनीं, खोली हक हकीकत ।
खोले पट सब अरसों के, हक दिन मारफत ॥ ५
उतरे खेल देखन को, रूहें जिन के इजन[1] ।
सो ढूंढ़े हक सहूरसे, अरस रूहें मोमन ॥ ६
लेवें सब साहेदियाँ, *हदीसाँ *महंमद ।
और आयतें कुरान की, सूरतें मगज सबद ॥ ७
लिखे आयतों हदीसों, हक के सुकन ।
समझेगी सोई रूहें, जाके असल अरस में तन ॥ ८
इसारतें और रमूजें, लिखे कै किस्से निसान ।
सोए पाओ तुम हदीसों, और आयतों कुरान ॥ ९
करें किताबें जाहेर, खुलासे पुकार ।
बिन मोमन बिन लुदंनी, करे सो कौन विचार ॥ १०
ए और कोई बूझे नहीं, बिना अरस के तन ।
जो नूर बिलंद से उतरीं, दरगाही रूहें मोमन ॥ ११
नूर—कुंजी[2] आए पीछे, *ईसे का अमल ।
साल सत्तर ढाँप्या रह्या, आगूँ चल्या महंमदी मिल ॥ १२
आए हुआ इत रोसन, ऊपर अपनी सरत ।
अव्वल आखरी इलमें, करी जाहेर क्यामत ॥ १३
एही बका अरस की, हक करें हिदायत ।
खुली खिलवत गैब की, हक की वाहेदत ॥ १४
लिख्या सिपारे आठमें, मोमनों की हकीकत ।
हुई ढील *फजर वास्ते, करी जाहेर गैब[3] खिलवत ॥ १५

---

१. हुक्म । २. तारतम ज्ञान । ३. परोक्ष (पार) ।

खोल बका अरस मोहोलात, और बाग हौज जोए ।
मोमन देखें जिमी जंगल, पसू पंखी सोए ॥ १६

सूरत आतेना—कलकौसर,[१] लिखी आम सिपारे ।
सो आए देखो तुम महंमदी, खोले नूर पार द्वारे ॥ १७

कह्या होसी जाहेर, अरस रूहें मोमन ।
उतरे नूर बिलंद से, करें सब अरस रोसन ॥ १८

जो कह्या *महंमदें, *लैल *म्याराज माहीं ।
सोई कौल रूह अल्ला ने, कहे रूहों के तांई ॥ १९

जब इन दोऊ[२] मरदों ने, मिल साहेदी दई ।
तब मेरे दिल अरस में, जरा सक ना रही ॥ २०

तो इन रूहों मोमनों, दिल अरस केहेलाया ।
जो हक इलम लुदंनी, मेरे दिल आगूं ही आया ॥ २१

तब कह्या हुई *फजर, ऊग्या हक बका दिन ।
तब सूरज *मारफत के, करी गिरो रोसन ॥ २२

कौल कहे सो सब हुए, और भी कह्या होत ।
रूह अल्ला ल्याए इलम, भरे जिमी आसमान जोत ॥ २३

*रूहअल्ला अरस अजीम से, नूर आला[३] ले आए ।
सोए नूर कोई क्यों कर, सकेगा छिपाए ॥ २४

हवा अंधेरी बीच रात के, ऊग्या मारफत सूर ।
भरे जिमी और आसमान, दुनियां पूर नूर ॥ २५

ऐसी करी बीच आलम[४], रूह अल्ला के इलम ।
मारया कुली दज्जाल को, जो करता था जुलम ॥ २६

फुरमाया सो सब हुआ, जो कछू कह्या महंमद ।
तो जो किया रूहअल्लाने, दज्जाल को रद्द ॥ २७

---

१. एक अध्याय (कुरान का) । २. श्री देवचन्द्र और मुहम्मद सा० । ३. सर्वोत्तम । ४. ब्रह्मांड ।

कुरान माजजा नबी नबुवत[1], साबित होए हुएँ एक दीन ।
ईसा करसी हक इलमें, आवसी सबों आकीन ॥ २८

फुरमाया सो सब हुआ, ऊपर अपनी सरत ।
कौल रसूल के फिरवले, आई ए आखरत ॥ २९

कौल किए हक हादीने, माहें खिलवत रूहन ।
सो दिल महंमद मोमनों, हुआ पूर रोसन ॥ ३०

एक गिरो रूहें अरस से, हुकमें आई जो इत ।
जिन ऊपर रसूल, ल्याए किताबत ॥ ३१

तिन रूहों के बीचमें, रूहअल्ला सिरदार ।
सोए लिखी माहें हदीसों, जो कही परवरदिगार ॥ ३२

सोए करी जाहेर, रसूलें इत आए ।
सोई *रूहअल्ला सुकन, ल्याए मोमनों बताए ॥ ३३

सो तो आया हक का, लुदंनी—इलम[2] ।
लिख्या दिल अरस पर, मोमनों बिना कलम ॥ ३४

सोए लिख्या कुरानमें, बाईसमें सिपारे ।
लिखियाँ आयतां जंजीरां[3], बयान न्यारे न्यारे ॥ ३५

जो देखेगा दिल दे, आयतां जंजीरां मिलाए ।
माएने मगज मुसाफ के, होसी नूर रोसन ताए ॥ ३६

ऐसा अब लग कबहूँ, हुआ नहीं रोसन ।
सो हक हादी जानत, या जानें रूहें मोमन ॥ ३७

जब हक का इलम, हुआ जाहेर ए ।
तिन इलमें काएम करी, दुनी फानी[4] हुती जे ॥ ३८

ए सुकन बातून जिन को, दिल बीच सोहाए ।
सो सुनके तबहीं, एक दीनमें आए ॥ ३९

१. पेगम्बरी । २. तारत्तम ज्ञान । ३. कड़ियां । ४. नश्वर ।

बका अरस हक सूरत, हुआ नूर रोसन ।
सोए सरत जाहेर हुआ, *फरदा रोज का दिन ॥ ४०
जो कलाम[1] अल्लाह में, फुरमाई फजर ।
सो खुली हक इलमें, रूह बातून[2] नजर ॥ ४१
हुआ खासलखास जो, रूह मोमनों मेला ।
बहतर से जुदा कह्या, नाजी फिरका अकेला ॥ ४२
जिन को लिखी आयतों हदीसों, हिदायत हक ।
हकें इलम अपना, तिन को दिया बेसक ॥ ४३
सोई मोमन अरस के, उतरे नूर बिलंद ।
ताको टाली हक इलमें, झूठ फरेबी फंद ॥ ४४
हुई मोमनों को पूरन, तौहीद[3] की मदत ।
सो लेवें दुनियां मिने, हक अरस लज्जत ॥ ४५
नाहीं मोमनों कबहूँ, दुनियां का दिमाग ।
जाको हक इलमें, किए सबों को पाक ॥ ४६
ए जो मोमन हकीकी, सो कहे अरस दिल ।
सो तो पाक हमेसगी, रूहें अरस निरमल ॥ ४७
सिपारे सत्ताईसमें, लिख्या नीके कर ।
सो लीजो तुम मोमनों, बीच अरस दिल धर ॥ ४८
अरसमें सूरत मोमनों, जो कहे हैं असल ।
तिन पाया बीच नासूत, बका हाहूती—फल[4] ॥ ४९
और गिरो फिरस्तन की, मुतकी[5] परहेजगार ।
ए भी आए लैलत कदर में, तीनों तकरार ॥ ५०
आम खलक जो तीसरी, पैदा जो जुलमात ।
सो अटके वजूद में, पकड़े पुल सरात ॥ ५१

---

१. कुरान । २. अन्तर । ३. एकेश्वर । ४. परमानन्द । ५. सयंमी ।

रूहें जो दिल हकीकी, कहे अरसमें तन ।
अरस जिनों के दिल कहे, सोई रूहें मोमन ॥ ५२

लिखी इनों की बुजरगी, मुसाफ माहें सिफत ।
बीच महंमद की हदीसों, लिखी बड़ी इज्जत ॥ ५३

महामत कहें ऐ मोमनों, तुमें करी हिदायत[1] हक ।
और कहूँ फिरके पैगंमरों, जो चलाए हुए बुजरक ॥ ५४

॥ प्रकरण ॥ २ ॥ चौपाई ॥ १३३ ॥

## बाब फिरकों का

फिरके नारी तो कहे, ए जो बीच कुरान ।
बहत्तर बांटे होए के, सबे हुए हैरान ॥ १

सिपारे चौबीस में मिने, लिखी सूरत अबलीस[2] ।
जल थल सबों में ए कह्या, याको पूजें कर जगदीस ॥ २

कह्या दरिया जंगल से, नेहेरें चलें दज्जाल ।
सो नेहेरें जंगल से क्यों चलें, ए फिरके चले इन हाल ॥ ३

ए जो कहे बनी—आदम[3], सब पूजत डाली हवा ।
कह्या निकाह अबलीस से, दुनियां जो दाभा ॥ ४

कह्या गधा जो दज्जालका, ऊँचा लग आसमान ।
एही हवा तारीकी सिर सबों, जासों पैदा ए जहान ॥ ५

तो दुनियां ताबे दज्जाल के, सोई पातसाह दिलों पर ।
दुनी सिफली[4] अबलीस बिना, एक दम न सके भर ॥ ६

राह अंधेरी रात की, सब की चली सरियत ।
बैठा दिल पर दुसमन, लेने न दे हकीकत ॥ ७

ए जो बीच दुनी के, जाहेर परस्त जेता ।
तिन फिरकों सबों का, खुलासा एता ॥ ८

---

१. आदेश । २. शैतान । ३. इन्सान । ४. नीच ।

जो हुए पैगम्मर रात के, सुरैया न उलंघी किन ।
जो जेते लग पोहोंचिया, सोई पैगाम दिए तिन ।। ९

पैगंमर या और कोई, जो हुए रात में बुजरक ।
किन नूर पार पोहोंच के, ले खबर न दई बका हक ।। १०

तरफ न कही किन ने, तो पट खोले क्यों कर ।
ए हुए जो बड़े रात के, तिन सब की एह खबर ।। ११

मनसूख[1] कही जो किताबें, रात में आईं जे ।
इन उमतें सब रानी[2] कही, जिन मागे माजजे रात के ।। १२

एक करी किताबें मनसूख, वाही नाम की करी हक ।
तिन उमतें सब रानी गई, अब कहो क्यों भागे सक ।। १३

करी अगली किताबें मनसूख, आखर सोई पैगंमर ल्याए ।
नफा पाया सब खलकों, आखर चारों किताब पढ़ाए ।। १४

देखो मनसूख कही किन माएनों, क्यों मोहोर करी कहीं हक ।
सो लिख्या कौल तौरेतमें, जासों नफा लेसी खलक ।। १५

अब कौन मनसूख को हक, ए दुनी सिफली क्यों समझाए ।
एक हरफ बिना लुदंनी, बिना वारस न बूझा जाए ।। १६

याही नाम की किताबें, याही नामें ल्याए पैगंमर ।
ए जो कही बड़ाई इनोंकी, सो सब बीच आखर ।। १७

जब पट खोल्या महंमदें, सो नूर बूंदें लई जिन ।
तिन दिए पैगाम हक के, सबमें किया बका दिन ।। १८

जाकी बड़ाई लिखी कुरान में, किताबों और पैगंमर ।
जापर मोहोर महमंद की, सो सबों देसी फल *फजर ।। १९

कै बड़े कहे पैगंमर, पर एक महंमद पर खतम ।
कै फिरके हर पैगंमरों, गिरो सब कहे *नाजी हम ।। २०

---

१. रद्द । २. बहिष्कृत ।

सबों एक हादी हिदायत, सबों गिरोमें नाजी एक ।
ए कौन जाने बिना अरस दिल, ए नबी नाजी दोऊ नेक ॥ २१
नेक सुनों तुम मोमनों, बीच लिख्या तफसीर[1] ।
सो देखो चौथे सिपारे, दिल पाक करो सरीर ॥ २२
रसूलें कह्या *जालूत को, तुम में पीछे मूसा के ।
कहो फिरके केते हुए, मोहे देओ खबर ए ॥ २३
तब कह्या जालूत ने, देखों मैं किताब ।
सोई देख के कहोंगा, करो जिन सिताब ॥ २४
तब कह्या रसूलें किताब, जले या चोरी जाए ।
तब क्यों करो इमामत[2], देखो दिल सों ल्याए ॥ २५
ईसा के पीछे फिरके, पूछा रसूलें *जानिक को ।
कहे फिरके पैंतालीस, जानिकें रसूल सों ॥ २६
फेर कह्या रसूल ने, ए सुध नहीं तुमें किन ।
ए नीके मैं जानत, माएने किताब इन ॥ २७
पीछे मूसा के इकहत्तर, तामें फिरका नाजी[3] एक ।
और सत्तर नारी[4] कहे, ए समझो विवेक ॥ २८
बहत्तर ईसा के भए, नाजो एक तिन में ।
और नारी फिरके इकहत्तर, कह्या रसूलें जानिक से ॥ २९
यों तिहत्तर मेरे होवहीं, नारी बहत्तर नाजी एक ।
ताको हिदायत हक की, जो हुआ नेकों में नेक ॥ ३०
मूसे ईसे रसूल के, सबों नारी कहे फिरके ।
कह्या एक नाजी तिनों में, खासलखास अरसका जे ॥ ३१
गिनती फिरके केते कहूँ, कै हुए बीच जहूदान[5] ।
कहे ताबे[6] दज्जाल के, जलसी जो कुफरान ॥ ३२

---

१. कुरान का हुसैन द्वारा अनुवाद (तशरीह) । २. नेतृत्व । ३. मुमुक्षु (ब्रह्मसृष्टि) । ४. नरक गामी । ५. यहूदी । ६. आधीन ।

यों एक नाजी अव्वल से, पाया वाही ने फल आखरत ।
वास्ते नूर नबीय के, देखाए करी क्यामत ।। ३३

लिख्या सिपारे अठार में, कुरान माजजा नबी नबुवत ।
एक दीन जब होएसी, तब होसी साबित ।। ३४

कहे रसूल कौल हकके, सबे करों एक दीन ।
सोए कौल तोड़्या दुनी, जिनों रह्या न आकीन ।। ३५

माएना ऊपर का पोहोंचे नहीं, बीच अरस बका ।
नजर बांध फना बीच, हुए जिद्द कर तफरका[१] ।। ३६

हुई हिदायत हक की, एक नाजी को बातन ।
खोल नजर रूह की, देखाए अरसतन ।। ३७

कौल[२] किए रूहों सों, उतरते हक ।
सो सिर लिए अपने, मजाजी खलक ।। ३८

बुजरगी अरस रूहों की, सिर अपने लेवें ।
सिफत एक नाजीय की, सो बहत्तरों को देवें ।। ३९

जबराईल जित अटक्या, आगूँ पोहोंच्या नाहें ।
सोए जाने दुनियां हम, पोहोंचें तिन ठौर माहें ।। ४०

दुनियां जो जुलमत की, आगूँ होने चाहे तिन ।
जो ल्याया रूहल—अमीन[३], कलाम अल्ला रोसन ।। ४१

राह न देखे उपले माएनों, बीच अंधेरी रात ।
सोए रहे बीच नासूत, घेरे *पुल—सरात ।। ४२

ए देत देखाई दुनी फना, ए जो बीच नासूत[४] ।
ऊपर फना सब फिरस्ते, ए जो कह्या मलकूत[५] ।। ४३

ए खाली जो तिन ऊपर, ला हवा सुंन ।
ए जुलमत[६] तिन बीचमें, चौदे तबक पलन[७] ।। ४४

---

१. विरोध । २. वादा । ३. परमात्मा का जोश (जिबरील) । ४. मृत्युलोक । ५. बैकुंठ । ६. अन्धकार । ७. पलना, झूला ।

ए लिख्या दूजे सिपारे, आयत के माहें ।
सक सुभे होवे जिन को, सो देखे जाए तांहें ॥ ४५

ए छल महंमद गिरो को, हकें देखाया ।
सोए खेल कुंन हुकमें, याही वास्ते बनाया ॥ ४६

ए छल फरेब तो कह्या, राह न सूझे रात ।
ए गुम हुए ढूंढ़े फना बीच, आड़ी हुई जुलमात ॥ ४७

ढूंढ़्या चौदे तबकों, पाई न किन तरफ ।
बका का बीच दुनियां, कोई बोल्या न एक हरफ ॥ ४८

और सुरैया सितारा, कह्या उलंघ्या न किन ।
सो देखो सिपारे सोलमें, काहूँ छोड़ी न सरे—सुंन[1] ॥ ४९

म्याराज हुआ महंमद पर, कै किए जाहेर बयान ।
और रखे छिपे हुकमें, वास्ते हादी गिरो पेहेचान ॥ ५०

तेहेतसरा[2] से हवा लग, एक फिरस्ता[3] खड़ा इन कद ।
ए बड़का सबन का, तो पोहोंचा हवा सिर हद ॥ ५१

इन फिरस्ते के कै सिर, सिर सिर कै मोंहों ।
मोंह मोंह के जुबान कही, ए देखो इसारत फिरस्तों ॥ ५२

एक इनसे बड़े कहे, ऐसे जाएँ जाकी नाकमें ।
तो भी उने सुध ना पड़े, अंदर फिरके मोंह निकसें ॥ ५३

ए मसनंद[4] मलकूत की, फिरस्ता एक पातसाह ।
कोई बुजरग पोहोंचे इनलों, और पांउं कटे पुल—सराह[5] ॥ ५४

जो आवत अरवा नासूतमें, पकड़े वजूद नाबूद[6] ।
सो ले सरियत चढ़ न सके, छूटे न फना वजूद ॥ ५५

ले तरीकत पोहोंचे मलकूत, सो किन लई न जाए ।
करे बोहोत दौड़ आप वास्ते, ले निजस न ऊँचा चढ़ाए ॥ ५६

---

१. शरीअत । २. पाताल । ३. अजाजील (बिस्नू) । ४. गादी । ५. पुलसरात । ६. नश्वर ।

ए बीच फना के सब कहे, हवा समेत पलना ।
ए दिन रात *आजूज माजूज, खाए सब करसी फना ॥ ५७

मारफत सागर क्यों कहूँ, करो सरेमें पुकार ।
इन हक ठौर के नाम धर, पूज फिरके हुए बेसुमार ॥ ५८

कोई कहे विस्नु नारायन, कोई अरहंत[१] बतावे ।
कोई देवी देव पत्थर, पानी आग पुजावे ॥ ५९

कोई कहे बेचून है, और बेचगून ।
भी कहे बेसव्बी है, और बेनिमून ॥ ६०

कोई कहे निराकार है, और निरंजन ।
कोई कहें अहं बका, सबमें ब्रह्म निरगुन ॥ ६१

ए जो पैदा मोह तत्व, कही तारीकी जुलमात ।
कौल दूजा हवा ला मकान, जहां से पैदा रात ॥ ६२

ए जो उरझी दुनी रात की, न पावे तौहीद राह ।
तो लिख्या सिपारे उनईसमें, बनी आदम पूजे सब हवाए ॥ ६३

दिया हवा[२] का कुलफ[३], ईमान के द्वारे पर ।
ए खोलेगा सोई सिरदार, याको पीठ दे पैगंमर ॥ ६४

चारों चीज पूजी रात की, पानी खाक पत्थर अगिन ।
आकास पूज्या कैयों नाम धर, निराकार हवा ला सुंन ॥ ६५

ए हवा सुंन जुलमत कही, एही हिजाब[४] रात अंधेर ।
ऊपर तले बीच दुनियां, फिरवली गिरदवाए फेर ॥ ६६

ए सबे बीच अंधेरी, किन तरफ न पाई हक ।
काहूँ न पाया अरस बका, कैं हुए रात बीच बुजरक ॥ ६७

तिन पर नूर अक्षर, जो कायम जबरूत ।
तापर अरस अजीम, जो कह्या बका—हाहूत[५] ॥ ६८

---

१. जिन, बुद्ध । २. माया । ३. ताला । ४. पर्दा । ५. रंग भवन ।

ए जो ठौर दोऊ कायम, कहे अरस हक ।
सो ल्यावे फना बीच वजूद, ए जो फानी खलक ।। ६९
फिरस्ता जबराईल, पैगंमरों सिरदार ।
सो माहें पैठ ना सक्या, अरस अजीम द्वार ।। ७०
ना तो महंमद की हिमायतें[1], आगूं चल्या एक कदम ।
तिन राह पांच सै साल की, काटी माहें दम ।। ७१
आगूं चलते तिन यों कह्या, जल जाएं मेरे पर ।
सो बीच जाए ना सक्या, ए जो अरस अकबर[2] ।। ७२
ए साहेदी लिखी जाहेर, *ग्याराज नामें माहें ।
सरहद[3] जबरूत की, फिरस्ते छोड़ी नाहें ।। ७३
गुनाह पोहोंच्या तिन अरसमें, इन दरगाह रूहन ।
दिल हकीकी ए कहे, अरस कलूब[4] मोमन ।। ७४
खासोंमें खासे कहे, रब्बानी[5] उमत ।
खिलवत हक हादी रूहें, अरस हक वाहेदत ।। ७५
कह्या हदीसों आयतों, द्वार न खोल्या किन ।
अव्वल बीच या आखर, खुले न रसूल बिन ।। ७६
जंजीरां द्वार भिस्तकी, अव्वल खोले महंमद ।
दिल साफ करो ए देख के, ले हदीस साहेद ।। ७७
जेता कोई पैगंमर, रसूल नबी औलिए[6] ।
गोस[7] कुतब वली अंबिए, नबी नसीहत[8] सिर सब के ।। ७८
कै बड़े कहावें पीर फकीर, कै आरफ[9] उलमा ।
यार असहाब[10] कै खलीफे, हादी महंमद है सब का ।। ७९
रसूलें बुजरगी अपनी, दई कै जहूदों को ।
पर ओ छोड़ बड़ाई अपनी, आए नहीं कदमों ।। ८०

---

१. पक्षपात । २. महान । ३. सीमा । ४. दिल । ५. खुदाई । ६. खुदा के मित्र ।
७. न्यायधीश । ८. उपदेश । ९. ज्ञानी । १०. भक्त ।

कै कहावें खावंद कलमें, कै साहेब सहीफे[१] किताब ।
होए न काम महंमद विना, जिन सिर आखरी खिताब ॥ ८१

जहूद नसारे पैगंमर, कै केहेलावे रात माहें ।
दिन ऊगे महंमद बुर्राक[२] के, आगूं दौड़े सब जाएं ॥ ८२

देखो नामे म्याराजमें, किताब सिकंदर ।
अस्वार महंमद की जलेबमें[३], चलें प्यादे[४] पैगंमर ॥ ८३

बैठावें आठो भिस्तमें, छोटा बड़ा जो कोए ।
जो जैसा तैसी तिनो, महंमद पोहोंचावें सोए ॥ ८४

या दोऊ गिरो दोऊ अरसों की, जो बका ठौर है दोए ।
फिरस्ते रूहें उतरीं लैलमें, सो भी सूरत हक्की से होए ॥ ८५

एही फजर दिन मारफत, सब आवें माहें दीन ।
तबहीं मुआ दज्जाल, आया सबों आकीन ॥ ८६

एक कुरान का माजजा[५], और नबीकी नबुवत ।
अव्वल फुरमाया सब हुआ, तब होए साबित[६] ॥ ८७

आयतें हदीसें सब कहें, खुदा एक महंमद बरहक[७] ।
और न कोई आगे पीछे, बिना महंमद बुजरक ॥ ८८

ए जो कहे लाखों हो गए, रातमें पैगंमर ।
पैगाम ल्यावे कोई हक का, तो क्यों न करे फजर ॥ ८९

कहे लाखों पैगंमर हो गए, कै और लिखे बुजरक ।
किन बका पट न खोलिया, दिए किने पैगाम हक ॥ ९०

बका तरफ न पाई काहूं ने, तो द्वार खोले क्यों कर ।
क्यों बका बिन कहे बड़े रात में, क्यों किन तरफ न कही पैगंमर ॥ ९१

*म्याराज एक महंमद पर, दूजे हुआ न किन ऊपर ।
*म्याराज हुए बिना पैगंमरों, पैगाम दिए क्यों कर ॥ ९२

---

१. छोटे धर्म ग्रंथ । २. मेराज की सवारी । ३. साथ ४. पैदल । ५. चमत्कार । ६. सत्यसिद्ध । ७. सत्य निष्ठ ।

अजूं खड़ियां इनों की उमतें[1] पूजें पानी आग पत्थर ।
सो तो कही सब रांनियां[2], मांगे माजजे किया कुफर ।। ८३
लिख्या सिपारे दूसरे, बखत नूह पैदास ।
तब कही सब कुफरान, इसलाम न गिरो कोई खास ।। ८४
कह्या एक गिरो थी मोमन, ले आदम लग तोफान ।
आगूं अमल[3] इबराहीम के, हुती सबें कुफरान ।। ८५
मोमन गिरो एक नूह के, जिनो बीच था स्याम ।
सो पार हुई किस्ती चढ़, जो चालीस जुफ्त[4] तमाम ।। ८६
कहे एही चालीस तूबे[5] पर, जो दरखत जिमी बीच स्याम ।
यामें न होए कोई कम, जाकी सिफत लिखी अल्ला कलाम ।। ८७
आदम नूह तोफान लग, एक गिरोह थी नूह अमल ।
सो पार हुई किस्ती चढ़, और काफर डूबे सब जल ।। ८८
सो भी गिरो कही महंमद की, लिखी हदीसों महंमद ।
आखर कह्या नूह गिरो की, महंमद देसी साहेद ।। ८९
इबराहीम के अमलमें, ना इसलाम गिरो दीन ।
कही एक लड़की *निमरूद की, कछू ल्याई थी आकीन ।।१००
लिख्या फलाने सिपारे, इबराहीम के अमलमें ।
और मुसलमान कोई ना हुता, तो लई वारसी[6] जहूदोंने ।।१०१
मगज देखो मुसाफ का, सबों महंमद हिदायत ।
आसमान जिमी या जो कछू, और न काहूं नसीहत ।।१०२
ए तीनों सूरत महंमद की, करें सब पर हिदायत ।
तो लिख भेज्या हक ने, क्यों हलाक[7] होए उमत ।।१०३
जो बीच जिमी आसमानके, महंमद हिदायत सब पर ।
भाई महंमद अरस खिलवत, नसीहत और न इन विगर ।।१०४

---

१. समुदाय । २. त्यागी । ३. प्रभाव काल । ४. जोड़े । ५. एक पवित्र वृक्ष । ६. उत्तराधिकार । ७. नष्ट, हत ।

करी अगली किताबें मनसूख, कहे जमाने रद ।
ना नूह तोफान पीछे मोमन, जो लों आए महंमद ॥१०५

कह्या तब ल्याए कै ईमान, कै रहे ईमान बिगर ।
केतेक पीछे ल्याए थे, ईमान इस्माइल पर ॥१०६

सो ईमान तोलों चलया, *एहिया[१] आया बखत जिन ।
तब मजाजी[२] दुनी का, ईमान न रह्या किन ॥१०७

सो *एहिया *ईसे[३] पर, पेहेले ल्याया ईमान ।
कायम किया तिन दीन को, ए देखो दिल से बयान ॥१०८

दुनी कहे पैगंमर हो गए, लिखी सिफतें इनों आखर ।
ए बका बातून क्यों बूझहीं, जो फँदे बीच माएनों ऊपर ॥१०९

जेता माएना मुसाफ का, किया नजूम[४] और बातन[५] ।
सो पढ़े कहें किस्से हो गए, डालें बीच नाबूद दिन ॥११०

किस्से आखरी कलाम अल्लाह के, जिन खोलें होसी हैयात[६] ।
सो पढ़े कहें होए गए, जित दुनी रांनी बीच जुलमात ॥१११

जो कहे किस्से हो गए, दाग[७] देऊँ तिन नाक ।
लिख्या सिपारे उनतीसमें, राह गुम हुआ नापाक ॥११२

लिख्या *नूरनामें मिने, रूह मुरग किया गुसल ।
पर झारे बूंदें गिरीं, सो खड़े हुए पैगंमर मिल ॥११३

सो मुरग रूह महंमद की, तहां से बरसी बूंदें नूर ।
सो नूर से हुए पैगंमर, इनों दे पैगाम किया जहूर ॥११४

लाख ऊपर चौबीस हजार, कहे उठे बूंदों के ।
पैगाम दिए तिनों आखर, जो बका पट महँमदें खोले ॥११५

जो हो गए एते पैगंमर, तो क्यों रही अबलों रात ।
तो तबही बका दिन कर, उड़ाय देत जुलमात ॥११६

---

१. (श्री प्राणनाथ) । २. नश्वर । ३. (श्री देवचन्द्र जी) । ४. ज्योतिष । ५. गूढ़ार्थ ।
६. अमर । ७. गर्म लोहा लगाना ।

एही गिरो पैगंमरों आखरी, कही जो खासल खास ।
जाकी सिफत हदीसों आयतों, पेड़ नूर बिलंद से पैदास ॥११७

नूर—अनामिन—अल्ला[1] तो कह्या, कुल—सैयन—मिन्नूरी[2] ।
करे इन का दावा दिल मजाजी, देखो अकल इनों सहूरी ॥११८

महंमद नूर हक का, यों गिरो महंमद का नूर ।
जिन किया दावा इन का, सो रहे दूर से दूर ॥११९

तार्थे जो कछू कह्या मुसाफमें, सो सब आखरी[3] सिफत ।
सो क्यों बूझे दिल मजाजी, जिनों पाई न हक मारफत ॥१२०

जो लों ले ऊपर के माएने, तो लों छोड़ ना सके फना ।
हक हादी पाए बिना, दुनी उड़ जात ज्यों सुपना ॥१२१

महामत कहें मोमनों पर, बरसत बदली नूर ।
हक बका अरस अजीम, पट खोल लिए हजूर ॥१२२

॥ प्रकरण ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ २५५ ॥

## बाब तीनों[4] गिरोके फैल हाल मकान

जो लों पट न खोल्या बका का, तो लों फना दुनी बीच रात ।
मारफत दिल महंमद, करे दिन देखाए हक जात ॥ १

पेहेलें सरत करी महंमदें, हक हम आवेंगे आखर ।
द्वार खोलें तब हक बका, करें दिन सिफायत[5] फजर[6] ॥ २

तबहीं दुनी पाक होएसी, तबहीं होसी एक दीन ।
जब मुआ सबोंका सैतान, तब आया सबों आकीन ॥ ३

इत इमाम करें इमामत, हक बका सूरत देखाए ।
करें मोमनात[7] मोमन सेजदा, कराए इस्कें खुदी उड़ाए ॥ ४

देखा देखी का सेजदा, किया होवे जिन ।
कह्या हाड पीठका सींग ज्यों, पीठ नरम न होवे तिन[8] ॥ ५

१. मैं खुदा के नूर से । २. मेरे नूर से गिरो । ३. आखिरी मुहम्मद (श्री प्राणनाथ) । ४. तीन समुदाय ब्रह्म, ईश्वरीय, जीव । ५. सिफारिश । ६. सुबह । ७. मोमिनों को । ८. (दाभ तुल अर्ज) ।

कह्या चमड़ी टूटे पीठ की, सिर ना नीचा होए ।
कही सेर छाती मुरग गरदन, ए पीठ हाड़ चमड़ी तोड़त दोए ॥ ६

हक इलमें पट खोल के, सब को चिन्हाए करे दिन ।
अरसों भिस्तों हद अपनी, करी क्यामत उठाए बका तन ॥ ७

लिख्या बीच कुरान के, हक करें आप जो चाहे ।
दई पातसाही बनी *इस्माईल को, लई बनी *असराईल से छिनाए ॥ ८

और लिख्या हदीसों आयतों, ले माएने मुसाफ बातन ।
सोई होसी हक नजीकी, जो दिल मोमन अरस तन ॥ ९

जेता कोई हक अरस दिल, सो कहे मरद मोमन ।
सो देखो हक इलम से, खोल रूह नजर बातन ॥ १०

रूहें हजूर लई पट खोल के, बीच अरस बका वतन ।
याद हादी सोई देत हैं, जो कहे हकें सुकन ॥ ११

कहे अव्वल उतरते रूहों को, रद बदल है जेह ।
सो लिखी हदीसों आयतों, सूरतें देत साहेदियां एह ॥ १२

खोल्या नूर पार इमामें, अरस अजीम बका द्वार ।
कराया सेजदा हजूर, इस्क पूरा दे प्यार ॥ १३

हक हजूर रूहों नें, लई सेजदे बड़ी लज्जत[1] ।
किया रूहों हैयाती[2] सेजदा, ए आखरी इमामत ॥ १४

देखो साहेदी हदीसों आयतों, उन्तीसमें सिपारे ।
उमतें किया सेजदा, खोल अरस बका द्वारे ॥ १५

कहूँ हुकमें साहेदी, जो हकें फुरमाई ।
सो देखो आयतों हदीसों, ज्यों दिल होवे रोसनाई ॥ १६

सेजदा कराया इमामें, ऊपर हक कदम ।
ए आसिक रूहों सेजदा, करें खासलखास[3] दम दम ॥ १७

---

१. आनन्द । २. अखंड । ३. ब्रह्म सृष्टि ।

एते दिन अरस—अजीम[1] का, किन कह्या न एक हरफ ।
अबलों चौदे तबक में, पाई न काहूँ तरफ ॥ १८

ए हरफ सो केहेवही, जो रूह बका की होए ।
नूर बूंदें महंमद की, और क्यों कर लेवें कोए ॥ १९

देखो दिल बिचार के, हदीसें कुरान ।
दिल हकीकी अरस तन बिना, होए नहीं पेहेचान ॥ २०

लिख्या सबों किताबों, हद ऊपर सुकन ।
ए जानें सब अरस दिल, जो लुदंनिएं[2] किए रोसन ॥ २१

तीन ठौर गिरो तीन के, बेवरा देखो दिल ल्याए ।
एक आम दूजे नूरी फिरस्ते, गिरो जित महंमद पोहोंचे जाए ॥ २२

सरियत[3] तरीकत[4] हकीकत[5], और हक मारफत[6] ।
इन चारो की बिने[7] इसलाम, जुदी जुदी कही जुगत ॥ २३

इन चारों की बिने इसलाम, जो हादी न देवें बताए ।
तब लग अपने मकान को, क्यों कर पोहोंचें जाए ॥ २४

सरियत बीच रात के, अमल चलाया नेक ।
मुसरक होने ना दिया, हक कह्या एकका एक ॥ २५

पांच बिने इसलाम की, दुनी सिर करी फरज ।
दिल मजाजी यों जानत, हम देत पीछला करज ॥ २६

किन किन लई तरीकत, पर कोई जाए न सक्या बीच दिन ।
ना खुले हकीकत मारफत, तो क्यों पावे फजर रोसन ॥ २७

सरियत बिने इसलाम की, पाक करे वजूद ।
तरीकत पोहोंचे मलकूत लों, आगे होए न बका मकसूद[8] ॥ २८

बिने इसलाम हकीकत, सो खोले बातून रूह नजर ।
पोहोंचे बका नूर मकान, खास गिरो फिरस्तों फजर ॥ २९

---

१. परमधाम । २. तारतम वाणी । ३. कर्मकांड । ४. उपासना । ५. सत्य ज्ञान । ६. पहचान । ७. रीति, नियम । ८. प्राप्ति ।

इसलाम बिने हक मारफत, पोहोंचावे तजल्ला नूर ।
ए मकान आसिक रूहों का, गिरो खासलखास हजूर ॥ ३०

इत इस्क विना पोहोंचे नहीं, बिना हक हादी निसबत ।
इलम लुदंनी फुरमाए से, पोहोंचे अरस बका खिलवत ॥ ३१

मोमन मुस्लिम मुनाफक[1], बिन ईमान सोई हैवान[2] ।
ए आखर हिदायत हादी बिना, पोहोंचे न अपने मकान ॥ ३२

खासलखास गिरो रूहें, अरस अजीम सूरत हक ।
और गिरो खास फिरस्तों, रहें नूर मकान बुजरक ॥ ३३

कुंन केहेते पैदा हुई, ए जो खलक आम ।
जो कही जुलमत से, तीसरी दुनी तमाम ॥ ३४

जेता पैदा जुलमत से, ए जो मजाजी दिल ।
सो दिल हकीकी[3] मोमन मिने, कबहूँ ना सके मिल ॥ ३५

सिपारे इकईसमें लिख्या, जाहेर बंदगी बयान ।
पर हादी देखाएँ देखिए, मोमन करें पेहेचान ॥ ३६

राह रूहांनी[4] बिने बातून, न पाइए बिना हकीकत ।
सो हादी देखाए देखिए, गुझ साहेदी बका मारफत ॥ ३७

कही *निमाज करें छे विध की, दो सरियत एक तरीकत ।
आगू एक हकीकत, दोए बका मारफत ॥ ३८

तिन तीन निमाजका बेवरा, एक कही नफसानी[5] ।
दूजी पाक करत है, वजूद जिसमानी[6] ॥ ३९

दिल बंदगी तरीकत तीसरी, मलकूत पोहोंचे पाक होए ।
दिल मजाजो जुलमत लों, आप अकल न छोड़ें कोए ॥ ४०

अब बेवरा तीन निमाज का, खोले भेद की हकीकत ।
करत निमाज जबरूत में, बीच बका फिरस्ते पोहोंचत ॥ ४१

---

१. नास्तिक । २. पशु । ३. परमात्मा के अंग । ४. आत्मिक । ५. इन्द्रिय भोग ।
६. शारीरिक ।

बंदगी रूहांनी और छिपी, जो कही साहेदी हजूर ।
ए दोऊ बंदगी मारफत की, बीच तजल्ला नूर ॥ ४२

ए आसिक गिरो रूहें—रब्बानी[१], बीच नूर तजल्ला माहें ।
दई साहेदी महंमदें म्याराज में, जो हकें केहेलाई मसी जुबाएँ ॥ ४३

एही कुंजी कलाम हक इलम, खोले सब मगज किताब ।
आगूं अरस दिल मोमनों, सो खोले जिन हादी खिताब ॥ ४४

कहे हदीस निमाज का, भेद न पाया किन ।
हादी तीन सूरत आए बिना, काहूँ खोली नहीं बातन ॥ ४५

अग्यारैं सदी दस साल कम, तो लों खोल्या न पट कुरान ।
पाक बिना मत छुइयो, ए दिल दे करो बयान ॥ ४६

सिपारे सत्ताईस में, लिख्या बीच फुरमान ।
पाक[२] बिना मत छुइयो, यों कहे हजरत कुरान ॥ ४७

अब लग दुनी यों जानिया, माएने न पाए किनने ।
तो बोले जुदे आरफ, जो सक है सबोंमें ॥ ४८

और किए मोहककों[३] माएने, जुदे जुदे दिल ल्याए ।
तिन सबों से तेहेकीक, माएने गुझ क्यों समझाए ॥ ४९

कह्या याही के तरजुमें[४], जो दिल घसे न छाती से ।
तब लों छिपा मता ए तो रह्या, जो जाहेर न किया किनने ॥ ५०

तब से परदा मोंह पर, रह्या हजरत मुसाफ[५] के ।
सो सदी अग्यारहीं लग, किन दीदार न पाया ए ॥ ५१

पाक न होए पानी खाक से, और इलाज न पाकी कोए ।
बिना पाक न हुकम छुए का, एक पाक हक से होए ॥ ५२

कह्या मुसाफ नजदीक हक के, सो हक नजीक खोलाए ।
ना पाक इत आए ना सके, ए इन पाकी खोल्या जाए ॥ ५३

---

१. ब्रह्म सृष्टि । २. पवित्र । ३. खोजी । ४. अनुवाद । ५. कुरान ।

हादी मोमनों बीचमें, पाइए हक इस्क ईमान ।
ए पाकी है मोमनों, होए खाली सोर जहान ॥ ५४

पेहेला दीदार होए मोमनों, बीच आखरी पैगंमर ।
ए मुसाफ कह्या आखरी, देवे दीदार आखर ॥ ५५

बखत महंमद के उठने, और आवें अस्हाब[१] ।
तब सो खोले मुसाफ को, पोहोंचे लग कोसे[२] नकाब ॥ ५६

ए पट खोल करें जाहेर, तब हुई तौहीद मदत ।
दिल पाक करो इन आबसों[३], मुसाफ तब मोंह देखावत ॥ ५७

कह्या हक सेहेरग से नजीक, सो हक अरस मोमन दिल ।
ना ऊपर तले दाएँ बाएँ, ए बतावें मुरसद[४] कामिल[५] ॥ ५८

जब पट अपने मोंह से, किया मुसाफें[६] दूर ।
तब नूर बका जाहेर हुआ, और तजल्ला नूर ॥ ५९

जब मोंह मुसाफें खोलिया, तब पट न आड़े[७] हक ।
तब दीदार पावे दुनियाँ, जो हक इलमें हुई बेसक ॥ ६०

दुनी तरफ न पावे हक की, और मुसाफ हुआ पास हक ।
हक मुसाफ आड़े ए पट, सो पट उड़े देखे खलक ॥ ६१

हक नजीक सेहेरग से, पर तरफ न पावे कोए ।
ढूंढ्या अव्वल से अब लग, पर किन बका न रोशन होए ॥ ६२

सब सय फना कही, क्यों बका कह्या ढिग तिन ।
जिमी बका अरस ढिग फना, ए सकसुभे रही सबन ॥ ६३

ए मुरसद[८] कामिल बिना, और न काहूँ खोलाए ।
अब हादिएँ पट तो खोल्या, जो गिरो सरतें पोहोंची आए ॥ ६४

मुसाफ उठया तो उत से, जो बिकर[९] रही फुरकान[१०] ।
याके वारस मसी मोमन, जो कहे एहेल फुरमान ॥ ६५

---

१. साहिब (अनुयायी) मित्र । २. परमात्मा को पर्दे में देखा । ३. जल (अमृत) । ४. गुरु । ५. निपुण । ६. धर्म ग्रन्थ । ७. रुकावट । ८. निपुण गुरु । ९. कुंवारी (अनदेखी) । १०. कुरान ।

तो जुदे जुदे कहे जंजीरों, देखो दाखले[1] मिलाए ।
पेहेचान जंजीर जंजीरों, ज्यों दिल पाक होवे ताए ॥ ६६

*मौजदीन[2] ने भेजी हदीसें, देने मुरीद[3] आकीन ।
तालिब[4] होए सो देखियो, करी जाहेर कुतबदीन[5] ॥ ६७

कह्या हदीसमें रसूलें, स्वाल किया *उमर ।
सरा तरीकत हकीकत, तीनो की देओ खबर ॥ ६८

पांच बिने कही तीनों की, जाहेर किए बयान ।
निसाँ होए तालिब की, देखो अरस दिल पेहेचान ॥ ६९

कह्या उठें पैगंमर अस्हाब, एहीं आखरी किताब ।
खोलें बीच आखरी उमत, जिन सिर आखरी खिताब ॥ ७०

नूर सागर सूर मारफत, सब दिलों करसी दिन ।
रात गुमराही[6] कुफर मेट के, करे चौदे तबक रोसन ॥ ७१

हक मारफत दिन होएसी, दिल महंमद सूर नूर ।
हक अरस बका जाहेर किए, मिटी हवा तारीक[7] देख जहूर ॥ ७२

तो कलाम अल्ला की आयतें, और हदीसें महंमद ।
ए मोमन देखो दिल अरसमें, ले मुसाफ मगज साहेद ॥ ७३

कहूँ बेवरा आदम औलाद, तिनमें कही विध तीन ।
सोई समझें हक इलमें, जिनमें इस्क आकीन ॥ ७४

कही एक गिरो पैदा जुलमतसे, तिन के फैल हाल जुलमत ।
सो दुनी बिन कछू ना देखत, दुसमन दिल पर सखत ॥ ७५

दूजी गिरोह फिरस्तन की, भई पैदा नूर मकान ।
उतरी लैलत कदरमें, सो ताबें[8] न होए सैतान ॥ ७६

गिरो तीसरी नूर बिलंदसे, ताके कौल फैल हाल नूर ।
रूहें अरस दिल उतरी लैलमें, करें हमेसा हक जहूर ॥ ७७

---

१. प्रमाण । २. *मुइनुद्दीन । ३. शिष्य । ४. जिज्ञासु । ५. एक नाम । ६. राह भटकना । ७. अन्धकार । ८. आधीन ।

कहे मोमन नूर सूरतमें, जो बीच अरस हमेसगी ।
एक तन मोमन अरसमें, दूजी सूरत सुपन की ॥ ७८

तो कहे सेहेरग से नजीक, खासलखास बंदे हक के ।
किए अरस तन से रूबरू[1], जो नूर बिलंद से उतरे ॥ ७९

जाकी न असल अरसमें, सो सेहेरग से नजीक क्यों होए ।
वह फना बका को क्यों मिले, वाकी अकलमें न आवे सोए ॥ ८०

हकें कह्या छब्बीसमें सिपारे, मैं मेरे बंदोंसे अकरब[2] ।
वे मोमन एक तन अरसमें, ताए सेहेरग से नजीक रब्ब ॥ ८१

रूबरू होना अरस तन से, इन फना वजूद नासूत ।
नजीक न होए बिना अरस तन, नूर लाहूत परे हाहूत ॥ ८२

दुनी असल जिनों तारीकी, सो इलमें करो पेहेचान ।
ताको नजीक सेहेरग से, खाली हवा ला मकान ॥ ८३

नाहीं करे बराबरी है की, क्यों मिले दाखला[3] ताए ।
बका नीद उड़े उठें अरसमें, फना नीद उड़े उड़ जाए ॥ ८४

सुपन उड़े जब मोमनों, उठ बैठें अरस वजूद ।
कहे खासे बंदे दरगाही रूहें, कदमों हमेसा मौजूद ॥ ८५

लिख्या है हदीसमें, मोमन असल अरस माहें ।
ताको मोमन जिन कहो, जाकी असल अरसमें नाहें ॥ ८६

ए वेद कतेब पुकारहीं, कोई पोहोंच्या न अपनी अकल ।
बिना हादी गोते खावहीं, जो तन मोमन अरस असल ॥ ८७

तो क्यों पोहोंचें दिल मजाजी, जाकी पैदास कही जुलमत ।
सो चाहे बिना हादी असल, जबराईल न पोहोंच्या जित ॥ ८८

तो कही रात दुनी इन वास्ते, दिए बंदगी फरज लगाए ।
ले तरीकत चल कोई ना सक्या, गए पांउं *पुलसरातें कटाए ॥ ८९

---

१. सन्मुख । २. निकट । ३. प्रवेश, उपमा ।

तरीकत भी ले ना सके, सो रातै की बरकत ।
जो तरीकत ले पोहोंचे मलकूत, तो भी आड़ी हवा जुलमत ।। ९०
ले हिसाब दई हैयाती[१], कह्या वास्ते महंमद नूर ।
भिस्त तो कही तले नूर के, रखे दिल बीच बका जहूर[२] ।। ९१
खास गिरो फिरस्तन की, ए जो नूर मकान ।
सो पोहोंचे बका बीच नूर के, ले हक इलम ईमान ।। ९२
हक हकीकत मारफत, रूहें इस्कें राह लई जाए ।
सो बिन चलें पांऊं हक बका, दै सेहेरग से नजीक बताए ।। ९३
हक खासलखासों को, खेल देखावें लैल का ।
नूर—तजल्ला[३] बीचमें, खेल देखें बैठ बीच बका ।। ९४
ए क्या जानें मजाजी दुनियां, जो तारीकी से पैदास ।
वाके दाखले मिलावे आपमें, जो अरस रूहें खासलखास ।। ९५
आयतों हदीसों माएने, जो देखो हक इलम ले ।
तो खासलखास खासे आम की, तीनों जाहेर देखाई दें ।। ९६
हुकम हुआ तीनों गिरोह को, कर महंमद हिदायत ।
हकीकत और तरीकत, तीसरी जो सरियत ।। ९७
खासलखासों दे हिकमत[४], ज्यों रहे न सुभेसक ।
बिगर वास्ते पोहोंचें बीच, अरस अजीम बका हक ।। ९८
तरीकत देखाओ खास दूजी को, केहे मीठी हलीमी[५] जुबांन ।
तेरा हुकम न फेरे ए गिरो, पोहोंचाओ बका नूर मकान ।। ९९
और जिद कर आम खलक सों, वे तेरे सामी ल्यावें हुज्जत[६] ।
ताए समझाओ जिदसों, जो जाहेरी चले सरियत ।।१००
लिखी तीनों की अकलें, और तासों पाए जो फल ।
सो लिखी बीच आयतों मुसाफ, सो देखो मोमन अरस दिल ।।१०१

---

१. अमरत्व । २. प्रकटीकरण । ३. परमधाम । ४. बुद्धिमता । ५. नम्र । ६. हठ ।

सरियत तरीकत हकीकत, ए तीनों एहेल कुरान ।
जिन जो पाई अकल, तिन तैसी हुई पेहेचान ॥१०२

जो आयत *हब्बूनी हब्बहूंम, तिन किए तरजुमें[१] तीन ।
पेहेचान जैसी तैसी मजल, फल सोई देवे आकीन ॥१०३

बीच लिख्या हदीसों आयतों, हक खिलवत के सुकन[२] ।
सो क्यों पावें दिल दुसमन, बिना अरस दिल मोमन ॥१०४

बिना हक हादी निसबत, कोई होए न सके दाखिल ।
मारफत पाइए मुसाफ की, जो हक दें कुल्ल अकल ॥१०५

लिख्या सिपारे तीसरे, *इबराहीम पूछा हक से ।
ए जो मरत है दुनियां, क्यों कर मुरदे उठें ॥१०६

तब लिख्या आया आयतमें, बाजे पैदा कलमें कुंन ।
एक कहे एक हाथ से, कहे बाजे दो हाथन ॥१०७

एक गिरो इप्तदाए[३] से, मौजूद से ले आए ।
दूजी गिरो खिलकत[४] और से, इनों वास्ते करी पैदाए ॥१०८

ए तीनों गिरो का बेवरा, देखो दाखले मिलाए ।
एक कुंन दूजे पाक फिरस्ते, तीसरा असल खुदाए ॥१०९

एक हाथ सूरत महंमद की, दूजे दो हाथ सूरत दोए ।
ए तीनों कही हाथ से, ए दोए तीन एक सोए ॥११०

कोई कहे कहां कह्या हाथ से, देखो सिपारे तेईसमें ।
देखो सहूर कर मोमनों, कह्या *आदम पैदा हाथ से ॥१११

महामत कहें हक इलमें, बेवरा कह्या नेक ए ।
दो गिरो पोहोंचाई दोऊ अरसोंमें, औरों पट खोले भिस्त आठों के ॥११२

॥ प्रकरण ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ ३६७ ॥

१. अनुवाद । २. वचन । ३. आदि काल से । ४. जनता ।

## बाब तीनों फिरस्तों का बयान[1]

तीनों फिरस्तों का बेवरा, लिख्या बीच कुरान ।
सो खोल हकीकत मारफत, हादी मोमनों देवें पेहेचान ।। १

बयान बड़े बोहोत निसान, ताथें जुदे जुदे लिखे जात ।
एक दूजे के आगे जो कहिए, तो कागदमें न समात ।। २

जुदी जुदी सनंधों[2] साहेदी, हकें भेजी कै किताब ।
जासों पढ़ा या अनपढ़ा, रोसन होए सिताब ।। ३

छिपाया देखाऊं जाहेर, जो हकें फुरमाए ।
त्यों देखाऊं कर माएना, ज्यों छोटे बड़े समझी जाए ।। ४

हलाल[3] हराम[4] दोऊ छिपे हुते, सो बयान किए हुकम ।
ले अकल असराफील, नबी कदमों धरे कदम ।। ५

हक साथ में आऊंगा, असराफील ईसा इमाम ।
लिखे फैल[5] सबन के, जासों पेहेचानिए तमाम ।। ६

यों केती कहूँ निसानियां, हैं हिसाब बिन ।
पर ए मीठा लगसी मोमनों, औरों लगसी सखत सुकन ।। ७

ए कह्या आयतों हदीसों, जिन सिर आखरी खिताब ।
जाहेर देखावें दिन कर, खोल माएने मगज[6] किताब ।। ८

यों दिन बका जाहेर हुआ, तब देखसी सब निसान ।
नजरों आवसी क्यामत, होसी रोसन सबों पेहेचांन ।। ९

कहे बिगर[7] ना रेहे सकों, जो हक हादी फुरमाए ।
हक बका के अरसों के, पट *महंमद मसी[8] खोलाए ।। १०

ए इसारत कोई न समझया, ना तो जाहेर दई बताए ।
कह्या गुनाह किया अजाजीलें, सो सब दिलों करी खताए[9] ।। ११

---

१. वर्णन । २. प्रमाण । ३. वैध, जाइज । ४. अवैध । ५. कर्म । ६. गूढ़ार्थ । ७. बिना । ८. धर्मावतार (श्री प्राणनाथ) । ९. दोष ।

अव्वल आए कही महंमदें, कह्या आगूं होसी बड़े निसान ।
सो भी वास्ते रूह मोमनों, देख के ल्यावें ईमान ।। १२

जबराईल साथ रसूल के, आया बीच अव्वल ।
कुरान ल्याया बीच रात के, चलाया सरा[1] अमल ।। १३

एक *जबराईल फिरस्ता, और *महंमद पैगंमर ।
राह देखाई मोमनो, अरस चढ़ उतर ।। १४

जबराईल नूर मकान लग, आगूं न सक्या चल ।
ना तो ल्यावने वाला मुसाफ का, कहे आगे जाँऊँ तो जाएं पर जल ।। १५

जबराईल जबरूत से, ए भी असल नूर मकान ।
सोहोबत करी महंमद की, तो ल्याया हक फुरमान ।। १६

जो रूह अरस *महंमद की, तिन को न सक्या पेहेचान ।
तो न आया बड़े नूरसें, छोड़या न नूर मकान ।। १७

चल न सक्या जबराईल, रह्या हद जबरूत ।
मासूक[2] कह्या महंमद को, सो पोहोंच्या बका हाहूत ।। १८

सो वतन रूह मोमनों, जित पोहोंच्या न *जबराईल ।
एक महंमद संग आखरी, बीच पोहोंच्या *असराफील ।। १९

इत और न कोई पोहोंचिया, ए हक हादी मोमन वतन ।
तो असराफील आइया, करने बका सबन ।। २०

महंमद सिफायत[3] सब को, कुल्ल सैयन महंमद नूर ।
सो बिन फिरस्ते क्यों होवहीं, तो लिया बीच रूह हजूर ।। २१

तो अव्वल आखर महंमद, महंमद सब अवसर ।
सब नूर इन का कह्या, कोइ बखत न इन बिगर ।। २२

साथ महंमद मेहेदी *असराफील, ले मगज मुसाफी बल ।
तो आया बीच अरस अजीम के, पोहोंच्या बड़े नूर असल ।। २३

---

१. कर्म कांड । २. प्यारा । ३. सिफारिश ।

ना तो *असराफील है नूर का, क्यों फिरस्ता सके आगे आए ।
पर मगज मुसाफी नूरमें, रूह महंमद लिया मिलाए ।। २४

ए नूरी तीनों फिरस्ते, इनों को असल एक ।
ए किया महंमद मोमनों वास्ते, हक इलमें पाइए विवेक ।। २५

कह्या सेजदा कर आदम पर, जो सब के अव्वल *आदम ।
अजाजीलें देख्या आपको, तो न पकड़े रसूल कदम ।। २६

हकें आप पढ़ाइया, अंगुली से आदम को ।
दे इलम नाम पढ़ाए, सक न सुझे इनमों ।। २७

हुकम हुआ आदम को, कहे फिरस्तों आगे नाम ।
करें तुझ पर सेजदा हैयाती, मिल कर सब तमाम ।। २८

सो पढ़े कहें नाम आदमें, जाहेर किए सब पर ।
तब फिरस्तों किए सेजदे, एक *अबलीस बिगर ।। २९

जो किए होते एते सेजदे, ऊपर उस आदम ।
जाको हक करें एता बड़ा, सो क्यों रद्द करे हुकम ।। ३०

हैयात हुए के होसी आखर, जो हुए नाम जाहेर सब पर ।
तो बूझ[1] हैयाती दुनियां, ए सरे से छिपी रही क्यों कर ।। ३१

ए किस्से आखरत के, पढ़े डारें गुजरों में ।
काम *क्यामत का रोसन, होसी इन किस्सों से ।। ३२

जो हक के सब फिरस्ते, किया सेजदा आदम पर ।
तो अबलो तिन हुकम से, सरा[2] होत नहीं मुनकर[3] ।। ३३

कहूँ हकीकत फिरस्तों, मोमनों करो पेहेचान ।
तबक चौदे फिरस्ते, तिल जेता न खाली मकान ।। ३४

जेता कोई फिरस्ता, बीच हैवान[4] या इनसान ।
बिन फिरस्ते जरा नहीं, बीच जिमी या आसमान ।। ३५

---

१. समझ । २. शराअ-नियम । ३. अस्वीकार करना । ४. पशु ।

एक छोटी बड़ी बूंद पानी की, सो भी फिरस्ता सब ल्यावत ।
या जड़ों दरखतों फिरस्ते, या पर पांऊं पेट चलत ॥ ३६

देखो सहूर कर मोमनों, हक के सब फिरस्ते ।
ए बखत करसी आखर, किन नबी पर किए सबों सेजदे ॥ ३७

पेहेचानो अजाजील को, सेजदा न किया आदम पर ।
दूर हुआ ले लानत, सो सबों लगी क्यों कर ॥ ३८

फिरस्तों अजाजील सिरदार, अबलीस जिनों वकील ।
पोहोंचाया सबों सय[1] दिलों, पलक न करी ढील ॥ ३९

ना किया अजाजीलें सेजदा, तो सब रहे सेजदे बिन ।
सब दुनियां तावें[2] तिन के, ताथें किया न सेजदा किन ॥ ४०

तो लानत हुई तिन को, वजूद देख गया भूल ।
देख्या न तरफ रूह की, वह तो हक का नूरी रसूल ॥ ४१

हकें आदम कह्या रसूल को, वह तो अबलीसें[3] किया ख्वार ।
गेहूँ खिलाए काढ़्या भिस्त से, कर के गुन्हेगार ॥ ४२

हिरस[4] हवा मोर सांप जिद, साथ निकस्या अबलीस ले ।
क्यों हकें इन आदम पर, नूरी पे कराए सेजदे ॥ ४३

जिन सब जिमी पर सेजदे, किए हक पर बेसुमार ।
उन आदम के वास्ते, क्या हक नूरी को देवें डार ॥ ४४

एता देखाया जाहेर कर, दई नूरी को लाँनत ।
दुनी तो न खोले आंख दिल, जो असल पैदा जुलमत ॥ ४५

जो लों ले ऊपर के माएने, दुनी छूटे न उपली नजर ।
तो भी न लेवें बातून, जो यों लिख्या जाहेर कर ॥ ४६

तो कह्या मजाजी दिल को, गोस्त का टुकड़ा ।
तिन दिलों पातसाह दुसमन, और दिल तो कह्या मुरदा ॥ ४७

---

१. कपट । २. आधीन । ३. शैतान । ४. लालच ।

कही लानत[1] अजाजील को, सो लगी सब दुनियां को ।
एती फिरस्ते की पाक बंदगी, क्यों दुनी मारी जाए इनसों ॥ ४८

गुनाह एक अजाजील के, क्यों सब दुनी मारी जाए ।
पाक सरा[2] हक अदल,[3] सो ऐसे क्यों फुरमाए ॥ ४९

पाक फिरस्ते पाक सेजदे, बे सुमार किए हक पर ।
तिन बदले दुनी को दोजख, क्यों देवें कादर[4] ॥ ५०

जो न लेवें हकीकत, नजर खोल बातन ।
तो लों अंधेरी ना मिटे, दिल होए नहीं रोसन ॥ ५१

ए कलाम नजूम और बातून, माहें हक हकीकत ।
हक इलमें खोले रूह नजर, तब दिल ऊगे बका मारफत ॥ ५२

ए तीनों फिरस्ते नूर से, हुए पैदा तीनों तालब[5] ।
जिन जैसा चीन्हया महंमद को, तिन तैसा पाया मरातब[6] ॥ ५३

जिन जैसी करी दोस्ती, तिन तैसी पाई बखसीस[7] ।
दूर नजीक या अंदर, देखो माएने आयत हदीस ॥ ५४

बंदगी का फल मांगिया, नूरी फिरस्ते हक पें ।
तिन बदले दुनी सब दोजख, क्यों डारो जाए आगमें ॥ ५५

ए इन्साफ सरा ना करे, दुरुस्त[8] माएने बातन ।
उपले माएने ले आप सिर, सिफत जो मोमन ॥ ५६

ना तो अजाजील भी नूर से, दे गुमाने डारया दूर ।
एक रह्या दरम्यान[9] में, एक माहें आया हजूर[10] ॥ ५७

हकें महंमद मोमनों वास्ते, कै मेंहेर कर खेल देखाए ।
एक दूर किए इनों वास्ते, एक नजीक लिए बोलाए ॥ ५८

मोमनों की सरियत में, आया *मैकाईल बुध बल ।
पीछे बीच हकीकत, आया *जबराईल सामिल ॥ ५९

---

१. धिक्कार । २. कानून (नियम) । ३. न्याय । ४. सामर्थ्यवान (कृपालु) । ५. चाहने वाले । ६. पद । ७. अनुदान । ८. ठीक । ९. बीच में । १०. निकट ।

आखर आए *असराफीलें, खोले मुसाफ मारफत द्वार ।
दिन बका किया जाहेर, खोले अरस[1] अजीम नूर पार ॥ ६०

महामत कहें ऐ मोमनों, कही हकीकत फिरस्तों ।
अब कहूँ कजा[2] और फितना[3], जो उठया बरारबमों[4] ॥ ६१

॥ प्रकरण ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ ४२८ ॥

## बाब कजाका

जैसा अमल[5] रात का, चाहिए ज्यों चलाया ।
बीच सरे जबराईलें, किया हक का फुरमाया ॥ १

रसूलें सरा रात का, चलाया हक अदल ।
जब रसूल जबराईल ले चले, अब क्यों चले अदल अमल ॥ २

कजा कही तीन सख्स की, एक भिस्ती[6] दोए दोजख[7] ।
भिस्ती हक को चीन्ह के, अदल कजा करी हक ॥ ३

कही कजा दूजे सख्स की, हक से करी चिन्हार ।
पर अदल कजा तो भी ना हुई, तो लिख्या बीच नार ॥ ४

तीसरे जो कजा करी, अपनी जाहिल[8] अकल ।
सो तो कह्या दोजखी, आगे कजा न सकी चल ॥ ५

कह्या साहेदी भी रवा[9] नहीं, जिन को नहीं ईमान ।
और रवा नहीं खूनी की, ना रवा खुदी गुमान ॥ ६

कही अदल यों साहेदी, कहां साहेद पाइए सोए ।
इन जमाने नुकसानमें, अदल कजा क्यों होए ॥ ७

अब्दुल्ला बिन उमरें, छोड़ कजा दिया जवाब ।
सोए लिख्या बीच हदीसों, सुनों तिनों का सबाब[10] ॥ ८

कहे *उस्मान सुन *अब्दुल्ला, कजा करता था *उमर ।
सो तो तेरी वारसी, तूँ छोड़े क्यों कर ॥ ९

---

१. परमधाम । २. न्याय । ३. उपद्रव । ४. अरब देश । ५. चलन । ६. बहिश्त । ७. नरक । ८. अज्ञान । ९. स्वीकृत । १०. पुण्य ।

कहे अब्दुल्ला उस्मान को, कजा[1] न मुझ से होए ।
मैं पाई खबर रसूल से, कर सकसी[2] ना अदल कोए ।। १०

कजा करते उमर को, कदी सूझत नाहीं सुकन[3] ।
तब पूछत जाए रसूल को, सो सब करत रोसन ।। ११

रसूल अदल कछू चाहते, तब जबराईल ल्यावत खबर ।
तो कजा करता था उमर, जो रसूल थे सिर पर ।। १२

बोहोत कही उस्मानने, कजा न करी कबूल ।
मैं इन्साफ अदल कर ना सकों, तो कहां पाऊं जबराईल रसूल ।। १३

कजा अदल कही हक की, सो इत चली एते दिन ।
कही साहेदी इन भांत की, आगे क्यों चले रसूल बिन ।। १४

और भी देखो साहेदी, जो रसूलें फुरमाए ।
जब हक ईमान तरफ देखिए, तो अब क्यों कजा करी जाए ।। १५

कह्या रसूलें *माज को इमन, अदल कजा करो जाए ।
क्यों कर करेगा अदल, सो मोकों कहो समझाए ।। १६

तब कह्या *माज बिन जबलें, करूँ कजा देख मुसाफ ।
कहे रसूल जो तूँ अटके, तो क्यों करे इन्साफ ।। १७

सुंनत जमात राह लेय के, करूँ कजा अदल ।
कहे रसूल जो इत अटके, कहे करूँ अपनी अकल ।। १८

तब मारचा रसूलें छाती मिने, केहे के *अल्हमदो लिल्लाह[4] ।
कही रजामंदी खुदाए की, है सिर रसूल अल्लाह ।। १९

तार्थे अव्वल कजा महंमद लग, पीछे अदल क्यों होए ।
हक तरफ का सिलसिला[5], क्यों कर पाइए सोए ।। २०

जबराईल साथ महंमद, सो तो हुए बीच परदे ।
अब अदल कजा बीच दुनी के, कौन चलावे ए ।। २१

---

१. न्याय । २. सकेगा । ३. वचन । ४. (अल्हमदो लिल्लाह) खुदा बचाए । ५. क्रम ।

रह्या अदल इस दिनलों, कहे हदीस महंमद ।
आगे अदल ना चल सके, याही लग थी हद ॥ २२

पीछे जमाने रसूल के, पैदा होसी बलाए[1] बतर[2] ।
अदल न चले तिनमें, एक रसूल बिगर ॥ २३

कह्या जमाना आवसी, झूठा और नुकसान ।
यार अस्हावों कतल, तलवार उठसी जहान ॥ २४

जब रसूल आवें फेर कर, खोलसी द्वार हकीकत ।
खतम है याही पर, होवे तबहीं अदालत ॥ २५

सब बखतों कहे रसूल, अव्वल वीच आखर ।
कही कजा रसूल जुबांए, करे सांच सबों पैगंमर ॥ २६

देखावें खोल मुसाफ दिल, सक[3] कुफर उड़ावे सब का ।
कर कजा साफ अदल, सो पावे तौहीद राह ॥ २७

कजा करे फजर कर, हकीकी अदालत ।
सबों दिलों करे अदल, दिल सूर महंमद मारफत ॥ २८

सब शय सिर महंमद की, आखर कही हिदायत ।
और छोटा बड़ा जो कोई, कही महंमद इमामत ॥ २९

नबियों सिर नबी कह्या, सिर पैगंमरों पैगंमर ।
आगे होए लेसी सब को, बीच बका पट खोल कर ॥ ३०

पेहेलें कबर से मैं उठूं, मेरे भाइयों की खातर ।
ज्यों काम करता हों अव्वल, त्यों करोंगा उठ आखर ॥ ३१

मैं नजूम कह्या भाइयों वास्ते, पीछे कूच किया दुनी से ।
सोई भाइयों आगे नजूम, आए खोलों मेरा मैं ॥ ३२

रसूलें कह्या *अबीजर को, कहां रेहेता मेरा गम[4] ।
कह्या मैं नहीं जानत, कहो रसूल अल्ला के तुम ॥ ३३

---

१. अपत्ति । २. बुरी । ३. शंका । ४. दुःख, चिन्ता ।

फेर कह्या रसूल ने, मेरा गम है भाइयों माहें ।
कहे अबीजर ऐसे भाई, सो क्या अब इत नाहें ।। ३४

रसूल कहे आखर आवसी, कह्या क्यों पेहेचानों तिन ।
कहे बड़ी सिफत है तिन की, वाकी पेसानी[1] रोसन ।। ३५

तब *अबाबक्कर यारों कह्या, क्या भाई न तुमारे हम ।
रसूल कहे भाई और हैं, यार हमारे तुम ।। ३६

जो हकें इलम मोहे दिया, सो देसी इमाम भाइयों को ।
बलाए दफे[2] दुनी रिजक[3], सो भी हक करें वास्ते इनों ।। ३७

बिन खुदी बिन गुमांन, और साफ दिल ईमान ।
सरे दो साहेद चाहिए, ऐसे सिदक[4] मुसलमान ।। ३८

ऐसे तो पाइए बीच फजर, जो अरस दिल कहे मोमन ।
करें कजा मुसाफ ले, सो भी बीच गिरो इन ।। ३९

तो कजा उतलों अटकी, ताही दिन बदल्या बखत ।
रसूल खड़े थे ले सिदक, पीछे उठे फितुए[5] आखरत ।। ४०

पीछले सरे दीन मनसूख[6], सबों किए जो थे बीच रात ।
आए पैगंमर सब इत, कर दिन उड़ाई जुलमात ।। ४१

ए सिपारे उनतीसमे, सब लिखे हैं सुकन ।
ए बेवरा करे लुदुंनी, वारस जो अरस तन ।। ४२

सांचे साहेद इन उमतें, हककी कजा अदल ।
यों कजा महंमद जुबांए, करें सिफायत अरस दिल ।। ४३

एक दोन होसी याही से, द्वार खोले हकीकत ।
दिन देख सिपारे तीसरे, डूबी खुदी रात जुलमत ।। ४४

मैं मैं करता रात का अमल, कह्या गैर हक था नाबूद[7] ।
सूर ऊगें मारफत सब मिले, हुआ सबों मकसूद[8] ।। ४५

---

१. मस्तक । २. दूर होना । ३. सम्पति । ४. निश्छल । ५. दंगा । ६. रद्द । ७. नश्वर ।
८. उद्देश्य पूर्ति ।

मोमन नजीकी हक के, जाको हकें दई विलायत[1] ।
तूर पार जाको वतन, करें आखर अदालत ॥ ४६

विलायत दई हकें इनको, यासों चीज पाइए इसलाम ।
तो हिजाब[2] न आड़े वजूद, हिजाब न आड़े काम ॥ ४७

हिजाब न रह्या बीच फकीरी, ऐसा हक इलम बेसक ।
यों नजीक खुदाए के, अदल कजा करे हक ॥ ४८

महामत कजा अदल, करे रसूल तीन सूरत ।
बसरिएँ मांग्या जिदंनी[3] इलम, कजा हकी सूरत जुबां क्यामत ॥ ४९

॥ प्रकरण ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ ४७७ ॥

## बाब फितनेका

मांगी रसूलें रेहेमत[4], जिमी स्याम इमन[5] ।
तब अरज करी आरबों, नबी दिया न जवाब तिन ॥ १

फेर मांगी रसूलें रेहेमत, जिमी स्याम इमन को ।
तब फेर अरज करी आरबों, क्या है बरारबमों ॥ २

तब फुरमाया रसूल ने, है फितना सोर तुम माहें ।
स्याम इमन जिमी बचोगे, और खैर काहूं नाहें ॥ ३

सोए देखोगे जाहेर, मेरे पीछे बीच करन ।
सोई पातसाई यारों की, होसी फितना बीच खलीफन ॥ ४

रसूल खड़े टेकरी[6] पर, कह्या देखत यारो तुम ।
कह्या हक जानें या रसूल, जानत नाहीं हम ॥ ५

कह्या रसूलें हदीसमें, ए जो सैतान का फितना ।
सो आवत बीच बरारब, मैं देखत हों इतना ॥ ६

आवेगा बरसात ज्यों, छोड़े न कोई घर ।
मैं केहेता हों तुम देखियो, ऐसा होसी मुझ बिगर ॥ ७

---

१. परदेश । १. पर्दा । ३. हठ पूर्ण । ४. कृपा । ५. यमन (हिन्दुस्तान) । ६. टीला ।

कह्या मेरी उमतमें, उठेगी तरवार ।
सो रेहेसी लग आखर, ऐसा होसी बखत ख्वार ।। ८

और कह्या बीच हदीस के, मेरे पीछे होसी इमाम ।
मैं डरता हों तिन से, गुम करसी गिरो तमाम ।। ९

दुनियां भी ऐसी होएसी, दिल अबलीस सेतान ।
वजूद होसी आदमी, दिल कहूँ न पाइए ईमान ।। १०

नाम मेरा चलावसी, कहेंगे तरीका महंमद ।
*सुंनत जमात कौल तोड़ के, जुदे पड़सी कर जिद ।। ११

केहेसी हम *सुंनत जमात हैं, राह छोड़सी बीच की असल ।
मेरा तरीका छोड़ के, चलसी अपनी अकल ।। १२

जब हुए हिजाबमें[1] रसूल, तबहीं खतरा पड़चा बीच यार ।
तबहीं आया बीच फितनां[2], पड़ी जुदागी बीच चार ।। १३

सफर बखत रसूल के, तीन हुए न खबरदार ।
बखत गए आए खडे, लगे करने और विचार ।। १४

*अली आए खड़ा कबर पर, काढ़ के जुलिफकार[3] ।
कह्या न छोड़ोंगा किनको, आइयो होए हुसियार ।। १५

तब चारों अपने हुए, हुआ फितना बीच जोर ।
सफर पीछे रसूल के, दिन दिन बाढ़चा सोर ।। १६

अब देखो विचार के, कैसा बीच पड़चा इनमें ।
ऐसी दुनी दोस्ती भी ना करे, जैसी हुई जमात से ।। १७

तीन यारों के जुदे हुए, करके बीच करार ।
हमहीं सुंनत जमात हैं, खासी उमत खासे यार ।। १८

इतथें अली के जुदे हुए, बैठ फितने किया पसार ।
कै हुइयां लड़ाइयां जमातमें, कै कतल किए तरवार ।। १९

---

१. पर्दे में (शरीर छोड़ा) । २. फिसाद । ३. तलवार ।

लेने को बुजरगियां, जमात मारी समसेर[१] ।
मारे मराए यार अस्हाबों, ऐसा फितने किया अंधेर ॥ २०

कोई न छोड़या घर आरब, बीच फितना हुआ सबमें ।
कह्या हदीसों सोई हुआ, सबुर[२] न किया किननें ॥ २१

ए सब फुरमाया हुआ, देखो आयतों हदीसों विचार ।
सो आए सदी लग आखरी, आई किबले[३] से पुकार ॥ २२

ए नीके दिल विचारियो, माएना हदीसों आखरत ।
फसल आई अरसों भिस्तों की, हुआ दिल हक बका मारफत ॥ २३

महामत कहें ऐ मोमनों, कही फितने की हकीकत ।
अब कहूँ सातों निसान, जिन पर मुद्दा[४] क्यामत ॥ २४

॥ प्रकरण ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ ५०१ ॥

### बाब[५] चारों निसानका[६]—*दाभतलअर्जका निसान

आए लिखे बड़ी दरगाह[७] से, इसलाम के खलीफों पर ।
उठी बरकत मुसाफ सफकत[८], दुनी हुई ईमान[९] बिगर ॥ १

बाकी रह्या क्या इसलाममें, जब हक मता लिया छीन ।
सो लिखे सखत सौं खाएके, उठ्या हमसे नूर भंडा आकीन ॥ २

निसान लिखे क्यामत के, होसी जाहेर दाभा जिमी से ।
जब नूर भंडा हादी ले गए, बाकी रही हैवानी[१०] जिमीमें ॥ ३

ए निसान बातून[११] अव्वल कहे, सो मिले सब आए ।
पर मुसाफ हकीकत जो खुले, तो आंखों देख्या जाए ॥ ४

सेर छाती पीठ गीदड़, मुरग गरदन हाथी कान ।
सिर सींग तीखे आंखे सुअर, ए कह्या मुंह आदमी बिना ईमान ॥ ५

सब अंग कहे हैवान के, और मुंह कह्या इनसान ।
होसी गए यकीन ए तबीयतें, ए देखो खुलासे निसान ॥ ६

---

१. कृपान । २. सन्तोष । ३. मक्का । ४. आशय । ५. प्रकरण । ६. (कियामत के) ।
७. मक्का । ८. अनुकम्पा । ९. श्रद्धा । १० पशुता । ११. गुह्यार्थ ।

दाभतल का निसान, ए देखो दिल धर ।
इनका तालिब[1] न देखे इने, माएने खोले बिगर ॥ ७

जानवर तो ए है नहीं, लिखी हैबानी तबीयत ।
तो कह्या तालिब न देखसी, दुनी दाभा[2] आखरत ॥ ८

दाभा गधासों निसबत, एहेल जिमी दुनी जे ।
बिना यकीन बिन मुसाफ, कही जिमी जाहेर दाभा ए ॥ ९

हैवान अकल दाभा जिमी, होसी जाहेर सिफली[3] के ।
सो दाभा ताबे दज्जाल के, देखो निसान खुलासे ॥ १०

दुनी कही सिफलीय की, तिन जिमी न छोड़ी जाए ।
ज्यों जीव खारे का खारे जल, त्यों मीठे का मीठे समाए ॥ ११

बाएँ हाथ *आसा[4] *मूसे का, हाथ दांहिने मोहर[5] *सलेमान ।
मोहोर करसी पेसानी[6] जिनकी, मुंह उज्जल तिन रोसन ॥ १२

स्याह मुंह होसी तिन का, आसा चुभावे जिन ।
उज्जल स्याह मुँह अपने, केहेसी रात और दिन ॥ १३

स्वाल किए इत जाहेरी, मोहोर आसा होसी दिल रूए[7] ।
बाहेर स्याह मुंह उजले, क्यों कर देखे कोए ॥ १४

मोमन कहे सुन मुस्लिम, भिस्त दोजख होसी सोभी दिल ।
आग भिस्त ना इस्मतें[8], बाहेर मुह छिपे स्याह उज्जल ॥ १५

कह्या सूरत बाहेर बदले, जब दिल दई आग लगाए ।
सो बाहेर फैल करे कै विध, सके न कोई छिपाए ॥ १६

अपने हाथ मुँह अपना, मोहोर करे क्यों कर ।
स्याह मुँह भी कहे हाथ इन, क्यों सब मुद्दा कह्या इन पर ॥ १७

छिपी बातें थी दिलमें, ए देखो जाहेर करी पुकार ।
जोस दे न हादी का छिपने, या जीत या हार ॥ १८

---

१. जिज्ञासु । २. पशु तुल्य मानव । ३. नीच । ४. लाठी । ५. ठप्पा सिक्का । ६. मस्तक । ७. मुंह । ८. नाम ।

एही दाभा दुनी सिफलीं, सब केहेसी अपने मुख ।
जो जैसा तैसा तिनों, छिपे न आखर दुख सुख ।। १९

जब एही बातून[1] जाहेर हुआ, पेहेचान पोहोंची माहें सब ।
सब एक हैयातीय[2] का, करसी सेजदा तब ।। २०

दज्जाल का निसान

कह्या दज्जाल[3] अस्वार गधे पर, काना आंख न एक ।
हक को न देखे आंख जाहेरी, रूह नजर न बातून नेक ।। २१

अजाजील काना तो रांनियां[4], जो बातून नजर करी रद्द ।
देख्या उपली आंखसों, आदम वजूद गलद[5] ।। २२

गधा बड़ा दज्जाल का, कह्या ऊँचा लग आसमान ।
पानी सात दरियाव का, पोहोच्या नहीं लग रांन[6] ।। २३

गधा एता बड़ा तो है नहीं, कह्या हवा तारीक मकान ।
ए जो कुंन केहेते पैदा हुई, सिफली दुनी जहान ।। २४

ना तो एता बड़ा गधा, होसी कैसा कद दज्जाल ।
तो दज्जाल गधा जब गिर पड़े, तले दुनी रहे किन हाल ।। २५

लानत[7] जो अजाजील की, ले अबलीस बैठा दिल ।
सो राह न लेने देवे बातून, जो जोर करें सब मिल ।। २६

सोई दाभा या गधा दज्जाल, अबलीस दिलों पातसाह ।
सो दुनी आंख फोड़ी दुसमने, लेने देवे न बातून राह ।। २७

ना तो लानत जो अजाजील की, सो दुनी को लगे क्यों कर ।
सो वास्ते ताबे[8] दज्जाल के, हुई बातून आंख बिगर ।। २८

दुनी सेजदा न किया, रूह *महंमद *आदम पर ।
इन भी देख्या वजूद को, ना खोले बातून नजर ।। २९

---

१. भेद । २. (अखंड भूमि) । ३. शैतान । ४. बहिष्कृत । ५. मिथ्या । ६. जांघ ।
७. धिक्कार । ८. आधीन ।

तो हुआ दिलों पर पातसाह, सोई राह चलावत ।
जिन राह चलते अबलीस को, दूर किया दे लानत ।। ३०

इन बिध लगी लानत, अजाजील की दुनी को ।
जैसी हुई सिरदार से, हुई तैसी ताबे हुएसों ।। ३१

सिपारे उनईस में, कह्या निकाह[१] आदम हवा ।
सो पसरी बीच दुनीके, इत अबलीस जो ।पैदा ।। ३२

जेता कोई बनी आदम, कह्या निकाह इबलीस से ।
कह्या दुनी बीच अबलीस, लोहू ज्यों तनमें ।। ३३

कह्या वजूद होसी आदमी, सैतान अमल दिल पर ।
दुनी होसी इन बिधकी, कहे बीच हदीस पैगंमर ।। ३४

दोऊ तरफों कह्या पेटमें, और दुनी हाथ बीच दोए ।
इन बिध रहें बीच आदम, याको किन बिध मारे कोए ।। ३५

कह्या पैदा आदम हवा से, याकी असल बिध इन ।
सो बाहेर ढूंढ़ें माएना जाहेरी, बिना मगज सुकन[२] ।। ३६

और हदीसमें यों कह्या, दुनी राह देखे जाहेर दज्जाल ।
माएना न पावें ढूंढ़े जाहेर, कहे हम लड़सी तिन नाल[३] ।। ३७

सोई सूरत धुआं दज्जाल, दुनी तिन दई उरझाए ।
मुसाफ बरकत ईमान बिन, छूटी आखर हक हिदायत ताए ।। ३८

*क्यामत फल जिनसों गया, उलट बलाए[४] लगी आए ।
आग नजर आई दोजख, रही बद—फैल[५] देहेसत[६] भराए ।। ३९

धुआं करे मार दिवाना, कह्या ऐसेही ईमान बिन ।
छूटी मुसाफ नसीहत बरकत, तब ऐसा क्यों न होए हाल तिन ।। ४०

कहे अबलीस मैं घेरोंगा, राह मारों तरफ चार ।
वह जाने लई राह दीन की, इन बिध देऊं राह मार ।। ४१

---

१. विवाह । २. वचन । ३. साथ । ४. आपत्ति । ५. कुकर्म । ६. डर ।

ढूंढ़े जाहेर निसान जाहेरी, सो तो कहे क्यामत के दिन ।
जो कोई ताबे दज्जाल के, ताए रूह आंख नहीं बातन ॥ ४२
सिपारे चौबीस में, बड़ी साहेबी दज्जाल ।
पोहोंचे दरियाव जंगलों, चले याके फिरके[1] नेहेरें मिसाल[2] ॥ ४३
जो लिख्या अव्वल ताले[3] मिने, सोई दुनी से होए ।
और बात फुरमाए बिना, क्यों कर करे कोए ॥ ४४

## सूरज मगरबका निसान

कह्या मगरब ऊगसी सूरज, दुनियां के दिल पर ।
नाहीं रोसनी तिनमें, तब होसी बखत आखर ॥ ४५
सूरज ऊग्या मगरब दिलों, कह्या रोसनी नाहीं तित ।
तो अकस सूरज की अंधेरी, सो गया ईमान रही जुलमत[4] ॥ ४६
रोसन बिना सूरज कह्या, ऊग्या दिलों पर जे ।
सो आई पुकार मगरब से, देखो निसान जाहेर हुए ए ॥ ४७
ए कह्या रसूलें इसारतों, ऐसा होसी बखत आखर ।
मता[5] ले जासी जबराईल, तब रेहेसीं अंधेर दिलों पर ॥ ४८
कह्या सूरज होसी मगरब का, तिनमें नहीं रोसन ।
होसी गुलबा[6] जोर दज्जालका, तब ईमान न रेहेसी किन ॥ ४९
जाहेरी देखें सूरज जाहेर, अजूं मगरब ऊग्या नाहें ।
देखें न माएना अंदर, कह्या रोसनी नहीं तिन माहें ॥ ५०
तब सूरज पना क्या रह्या, कहो बिन रोसनीं अंधेर ।
सो गया ईमान रह्या कुफर, तिन लई दुनियां घेर ॥ ५१

---

१. सम्प्रदाय । २. समान । ३. भाग्य । ४. अज्ञानान्धकार । ५. पूंजी । ६. प्रभाव ।

## *आजूज *माजूजका निसान

कह्या जो *आजूज[1] *माजूज[2], जाहेर होसी आखर ।
खाए जासी सब सय को, ऐसा होसी बखत फजर ॥ ५२

दिवाल कही अष्टधात की, चाटें आजूज माजूज दायम ।
पीछे रहे जैसी कागद, सुभां[3] देखें त्योंहीं कायम ॥ ५३

आजूज माजूज जुफ्त[4], गिनती लाख चार ।
सब पी जासी दुनी पानी ज्यों, टूटे दिवाल न रहे लगार ॥ ५४

तीन फौजां तिन होएसी, तूला[5] तावा[6] सावा[7] की ।
दुनी जिमी सब खाए के, तीर आसमान चलावसी ॥ ५५

बड़ा कह्या सब चीज से, और आजूज सौ गज का ।
चाटे दिवाल अष्टधात की, कहे सुभां तोडूं इन्साअल्ला[8] ॥ ५६

कह्या और भी बड़ा सब चीजोंसे, माजूज बड़ा गज एक ।
तंग—चस्म[9] चाटे दिवाल को, पीछे फेर कागद जैसी देख ॥ ५७

ए कही औलाद *याफिस की, बेटा नूह नबी का जे ।
जो बाप कह्या तुरकस्थान का, देखो मिलाए कबीला ए ॥ ५८

इन्साअल्लाताला जो लों ना कहे, तो लों तोड़ न सके दिवाल ।
इन्साअल्लाताला केहेसी आखर, तब टूटसी कागद मिसाल ॥ ५९

आजूज माजूज जाहेर हुए, जो नाती नूह पैगंमर ।
खात जात हैं दुनी को, क्यों देखें बातून विगर ॥ ६०

सोए निसान क्यों देखिए, ऊपर जाहेरी नजर ।
जाए ना इलम हक का, सो देखें क्यों कर ॥ ६१

निसान सब जाहेर हुए, जो दुनी देखे सहूर[10] कर ।
जो खोल देखे आंखें रूहकी, तो देखे हुई फजर ॥ ६२

---

१. (दिन) । २. (रात) । ३. प्रातः । ४. जोड़ा । ५. (तुलूअ) उदय (सुबह) । ६. शक्तिशाली (दोपहर) । ७. उद्दंड (रात) । ८. परमात्मा ने चाहा । ९. कम देखना । १०. विवेक ।

निसान सब जाहेर हुए, आई बड़ी दरगाह से पुकार ।
चाक चढ़ी सब दुनियाँ, पर क्यों देखे बिना बिचार ।। ६३

हुए हिजाब[1] आदम अकलें, हक गुझ पाइए हक इलम ।
ले ले माएने दुनी उपले, तासों जाहेर होत जुलम ।। ६४

एता दिल मजाजी न बूझहीं, जो नाती नूह नबी के ।
ए निजस हराम क्यों खाएसी, क्यों पावें माएना जाहेरी ए ।। ६५

पढ़े करें माएना आजूज माजूज, जो नाती नूह नबी के ।
सो क्यों खाए नापाक[2] दुनियां, पाक पैगंमर जादे[3] ।। ६६

पढ़े दुनी मुसाफ आखरी, खोले माएना बीच मुस्लिम ।
कहे पाकों को कुफर, होए ऐसा जाहेरी माएनों जुलम ।। ६७

होत जुलम मायनों जाहेरी, तो भी छोड़ें ना ए सनंध ।
क्या करें हक इलम बिना, कह्या देखीता[4] ही अंध ।। ६८

इनमें लिखी इसारतें, निसान पाइए नजर बातन ।
लिए ऊपर के माएने, क्यों पाइए क्यामत दिन ।। ६९

पढ़े कहें दिन क्यामत, हकें रखे अपने हाथ ।
या तो हक आपै खोलहीं, या हादी खोलें जो हक साथ ।। ७०

हक हाथ दिन तो कहे, जो हकें आप छिपाए ।
सो निसान पाए दिन पाइए, सो जाहेर दुनी क्यों देख्या जाए ।। ७१

जो जोहेरी देखें जाहेर, माएने तो छिपे निसान ।
निसान देखोगे दिन क्यामत, सो क्यों होए जाहेरियों पेहेचान ।। ७२

जो क्यामत देखावते जाहेर, तो निसान भी करते जाहेर ।
तो करते नायों इसारतें, जो दुनी देखावते बाहेर ।। ७३

बड़ा कह्या सब चीजों से, ले जिमी लग आसमान ।
दिन बीच दुनी की दौड़त, सौ तरफ खाहिस जहान ।। ७४

---

१. पर्दा । २. अपवित्र । ३. पुत्र । ४. देखकर भी ।

बड़ा कह्या इन माएनों, करी रोसन आकास जिमी ।
सौ गज कहे सौ तरफों को, दौड़े खाहिस[1] दिन आदमी ।। ७५

योंहीं कह्या बड़ा माजूज, हुई रात आकास जिमी ले ।
दुनी आंख मूंदे बीच रात के, भई दिस मानिंद[2] एक गज के ।। ७६

जो सय आई दिनमें, तिन सबों खाहिस सौ तरफ ।
सोई सबों एक तरफ रातकी, देखो माएने कर हरफ ।। ७७

जो कह्या सौ गज का, सो सब से बड़ा क्यों होए ।
और भी कह्या सबसे बड़ा, तो क्यों एक गज कह्या सोए ।। ७८

दिवाल कही दुनी उमर[3], ए टूटें रहे न कोए ।
खाएंगे एही सबन को, उमर चाट काटत हैं दोए ।। ७९

जाहेरी कहें दिवाल, हद बांधी सिकंदर ।
सो जाहेर किन देखी नहीं, बिन माएने खुले अंदर ।। ८०

ए रात दिन काल दुनी के, एही काटें दायम[4] उमर ।
एही खासी सब सय को, दिन पूरे कर फजर ।। ८१

आजूज माजूज हुए जाहेर, केता किया दुनी पर मार ।
अजूं न देखे दुनी स्याह दिल, जो पड़ी आलममें[5] एती पुकार ।। ८२

औलाद कही याफिस की, जाके भाई स्याम हाम ।
ए तीनों से पैदा सब दुनी, ए लिख्या बीच अल्ला कलाम ।। ८३

ए तीनों भाइयों की पेहेचान, दुनी को होसी हक इलमें ।
एक दीन होसी सबे, जब लई बूझ[6] सबों दिलमें ।। ८४

जो लों ले ऊपर के माएने, तो लों कबूं न बूझी जाए ।
सक छोड़ न होवे साफ दिल, जो पढ़े सौ साल ऊपर जुबांए ।। ८५

इसारतें रमूजें अल्लाह की, सो लेकर हक इलम ।
सो खोले रूहअल्लाह की, जिन दिल पर लिख्या बिना कलम ।। ८६

---

१. इच्छा । २. तरह । ३. आयु । ४. हमेशा । ५. ब्रह्मांड । ६. समझ ।

महामत कहे ऐ मोमनों, खोल दिए चार निसान ।
और भी तीन केहेत हों, ले बातून देखो दिल आन ॥ ८७

॥ प्रकरण ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ ५८८ ॥

बाब तीन निसानका—*रूहअल्ला *इमाम *असराफील

चारों निसान ए कहे, और देखो कहे जो तीन ।
ईसा इमाम असराफील, जिन खड़ा किया झंडा दीन[1] ॥ १

निसान लिखे दिन क्यामत, सो तो रखे हक हादी हाथ ।
या हादी खोलें हक इलमें, या खोलें *सुंनत—जमात[2] ॥ २

तो लिखाया जाहेर कर, इतथें उठया झंडा नूर ।
खड़ा किया बीच हिंदके, हुआ आसमान जिमी जहूर ॥ ३

निसान लिखे सो सबे मिले, जो क्यामत के फुरमाए ।
ताए नफा न देवे तोबा[3] पीछली, जो अव्वल झंडे तले न आए ॥ ४

लिख्या फलाने सिपारे, दिन हुए तोबा नफा नाहिं ।
जो अव्वल आया नूर झंडे तले, सो आया गिरो नाजी माहिं ॥ ५

कुल्ल अकल हक इलमें, होए पैदा बका हक दिन ।
इन इलमें जहान जुलमती[4], करी हिदायत[5] रोसन ॥ ६

जब हक झंडा नूर महंमदी, बीच खड़ा हुआ हिंद के ।
तब अकस नूर ईमान का, रह्या अंधेर कुफर पीछे ॥ ७

तो भी न विचारें दिल मजाजी, जो सखत लिख्या सौं खाए ।
हक हादी उठाया वह झंडा, जिन रात के अमल[6] चलाए ॥ ८

हक हादी बिना झंडा हकीकी, और किने न खड़ा किया जाए ।
सो इन बखत सदी आखरी, जिन झंडे रात के दिए उठाए ॥ ९

वह झंडा जो जाहेर, सो भी हक—हादी[7] बिना कौन उठाए ।
जिन जैसी नीयत[8], तिन तैसी दई पोहोंचाए ॥ १०

---

१. धर्म । २. (ब्रह्म-सृष्टि) । ३. प्रत्यश्रित । ४. अज्ञानी । ५. उपदेश आदेश ।
६. (कर्मकांड) । ७. सतगुरु । ८. संकल्प ।

लिखियां ए बुजरगियां, जो कहियां बीच आखरत ।
सो कहें हाथ हमारे, दुनी फल पावसी क्यामत ॥ ११

कहें हम खासी उमत, और हमहीं वारस[1] कुरान ।
कजा करत हैं हमहीं, हमहीं खावंद ईमान ॥ १२

ए लिखे जाहेर माएने, सूरज ऊगसी दिलों पर ।
पहाड़ पूजें हम निसान, बैत—बका[2] देखावें फजर ॥ १३

हम देखें राह निसान की, जो कहे बड़े क्यामत ।
देखें पैदा बैत अल्लाह से, जो हमसों करी सरत ॥ १४

लिखे निसान कौल क्यामत के, ले माएने बातन ।
सो माएना मगज पाए बिना, समझ न परी किन ॥ १५

सात निसान बड़े कहे, जासों पाइए क्यामत ।
सो दुनी तब देखसी, ऊगे सूरज—मारफत[3] ॥ १६

तो लों अंधेरी रात की, छूटे नहीं क्योंए कर ।
देखें निसान बातून माएने, तब पावें दिन आखर ॥ १७

जो लों लिया जाहेरियों, माएना ऊपर का ।
तब लग फना बीचमें, हुए जिद कर तफरका[4] ॥ १८

कौल तोड़ जुदे हुए, तो नारी कहे बहत्तर ।
लिख्या जलसी आगमें, और कहा कहे इन ऊपर ॥ १९

हक अरस बका तब पाइए, जो खुले हक हकीकत ।
दिन हुएँ सब देखिए, सूरज उगे मारफत ॥ २०

सूरज उग्या मगरब दिलों, होसी जाहेर दाभा जिमी सें ।
अजूं देखें नहीं दज्जाल को, जो जाहेर हुआ सबमें ॥ २१

नूर झंडा महंमदी इमामें, किया खड़ा हकीकी—दीन[5] ।
क्यों दाखले मिले दिल मजाजी[6], दिल दुसमन तोड़े यकीन ॥ २२

---

१. दावेदार । २. परमधाम । ३. तारतम ज्ञान । ४. फूट । ५. सत्य धर्म । ६. माया के दास ।

सूर[1] बाजत *असराफील, क्यों सुने दिल कान बिगर ।
ओतो ले ले माएने बातून, निसान धरे कौल पर ।। २३
तो कह्या रसूलें हदीसमें, सूर देसी पहाड़ उड़ाए ।
सो पहाड़ जरे ज्यों खाली मिने, फिरें उड़ते ना ठेहेराए ।। २४
तो मुसाफ मगज[2] असराफीलें, किए जाहेर कै विध गाए ।
तो एक सूरें दुनी फना[3] करी, किए दूजे सूरें कायम उठाए ।। २५
ए पहाड़ जरे ज्यों हुए, क्यों देखे बिना दिल विचार ।
पहाड़ कहे कुफर[4] खुदी[5] के, सो हुए पाक जरे[6] ज्यों निरवार ।। २६
पाक जो होवें इन विध, जब उड़े गुमान कुफर ।
पाक[7] हलके हुए बोझ डालके, तब आए बीच नूर नजर ।। २७
लिया दुनी पें ईमान, और दुनियां की बरकत ।
खैंच लिया कुरान को, और फकीरों की सफकत[8] ।। २८
खैंच लिया एता मता, तो भी न हुई खबर ।
क्यों देखे मजाजी दुनियां, जो लों बातून नहीं नजर ।। २९
बड़ी दरगाह से नामें *वसियत, पुकार करी केती आए ।
तो भी न बिचारें दिल मजाजी, जो ऐसे लिखे सखत सौं खाए ।। ३०
हिसाब कह्या होसी हिंदमें, पुरसिस[9] करसी हक ।
हक इलम ले रूहअल्ला, करसी सबों बेसक ।। ३१
कै बुजरग कहावते रातमें, बैठे बैतअल्ला[10] ले ।
हक हममें बैठ करें हिसाब, जानें हमहीं सिर सब के ।। ३२
कहे पहाड़ कुफर खुदी के, बिना हक इलमें जाहेर बढ़े ।
तब हकें मता छीन ले, पहाड़ किए हलके ।। ३३
जब यों बुजरग हलके हुए, हिसाब दिए पाक होए ।
कुफर खुदी जब उड़ गई, गुसल[11] किया सब अंग धोए ।। ३४

---

१. नरसिंघा । २. गूढ़ार्थ । ३. नष्ट । ४. अधर्म । ५. अहंकार । ६. जर्रा, कण । ७. पवित्र । ८. कृपा । ९. पूंछ-ताछ । १०. खुदा का घर । ११. स्नान ।

जिन जैसा चीन्ह्या महंमद को, तासों तैसी रखी चिन्हार[१] ।
यों बदला पाए देखिए, या जीत या हार ॥ ३५

हिसाब किया देखे नहीं, हादिएँ करी फजर ।
किए फैल पुकारे बुजरग, बिना ईमान न देखे नजर ॥ ३६

क्योंए न आवे पढों इमान, करें ना दिल सहूर ।
तो छीन ले भेजी वारसी[२], आप मोमनों हाथ हक नूर ॥ ३७

लिख्या सिपारे दूसरे, कहे असराफ[३] मूसा एक हम ।
महंमद मेला और कर, देखें क्यों चलावें हुकम ॥ ३८

मिलावा महंमद का, ए जो मिले दरवेस[४] ।
देखें हम बिना काम महंमद का, क्यों कर जावे पेस[५] ॥ ३९

जो मुनाफक[६] ताना मारते, कौल करते थे रद ।
मारे याही सुकन से, अब नूर झंडा महंमद ॥ ४०

रसूल ताना ए सुन के, फेर मेहेर कर बुलाए ।
वह तो भी टेढ़ाई ना छोड़ें रसूल मेहेर न छोड़ें ताए ॥ ४१

तब आयत भेजी हक ने, ल्याया *जबराईल ।
सो देखो आयत में, हक केहेसी *असराफील ॥ ४२

लिख्या सखत सौं खाए के, गया हमसों ईमान मुसाफ ।
सो हादिएँ देखाया झंडा अपना, करसी हिंद में हक इन्साफ ॥ ४३

सो भी लिख्या दिन क्यामत, यों वारसी दै पोंहोंचाए ।
सो देखो सिपारे बाईसमें, जो *उमीयों[७] रोसन किए आए ॥ ४४

खोज्या ढूंढ्या ना पढ़े, दिए मोमनों हिस्से कर ।
जो एता झंडा किया रोसन, तो भी देखे न दुनी नजर ॥ ४५

ए सोई हुआ जो फुरमाया, आगूँ भी फुरमाया होए ।
सो जरा न छूटे फुरमाएसे, तुम देखोगे सब कोए ॥ ४६

---

१. पहचान । २. उत्तराधिकार । ३. कुलीन । ४. संत फकीर । ५. वश । ६. कपटी । ७. बे पढ़े ।

कुरान ल्यावे आखर, आवसी फुरमान—बरदार[१] ।
अमल करे कहे माफक, वाको सक नहीं वार पार ॥ ४७

एता दिल मजाजी न बूझहीं, सोई खोले रमूजें[२] किताब ।
ए बड़े काम कौन करसी, बिना आखरी खिताब ॥ ४८

ए अव्वल से आखर लग, दुनी मुई मरेगी जे ।
कर कजा इन मुसाफसों, कौन उठावसी मुरदे ॥ ४९

जो लों न चीन्हे *महंमद को, तो लों सुध ना जमाने ।
तब लग सुध न बका फना, ना सुध नफा नुकसाने ॥ ५०

सो पाइए बातून माएने, उपले[३] आखर नुकसान ।
हक इलमें दिन होवे सब सुध, बिन इलम रात हैवान ॥ ५१

ए माएना मुसाफ सोई करे, हकें भेज्या जिन ऊपर ।
कुंजी इलम आई जिनपें, सोई खोल दे खुसखबर[४] ॥ ५२

रसूल आखरी अल्लाह का, ल्याया आखरी किताब ।
खोले रूहअल्ला आखरी, दे मेहेदी को लिया सवाब[५] ॥ ५३

आई कुंजी इलम इमामपें, जिन सिर आखरी खिताब ।
कजा महंमद जुबांए, सब पीवसी सरबत—आब[६] ॥ ५४

लिख्या सिपारे तीसरे, ले देखो हक अकल ।
सरा[७] तोरा बनी *असराईलका, हकें दिया बनी *इस्माईल ॥ ५५

फुरकान दई *हारून को, सो देखो कौल आखर ।
कोई कहे *किस्से हो गए, सो कहे बेकौली[८] बे खबर ॥ ५६

किस्से कुरान तौरेत के, पढ़े डालत पीठ पीछल ।
कहे हो गए किस्से रातमें, यों इनों खोया फजर बका फल ॥ ५७

जेता मुसाफ माएना, सब नजूम और बातन ।
सो खोले काम क्यामतके, दिन होसी सबों रोसन ॥ ५८

---

१. आज्ञाकारी । २. भेद । ३. (शब्दार्थ) । ४. शुभ सूचना । ५. पुण्य । ६. अमृत । ७. धर्म तुला । ८. वचन तोड़ने वाला ।

लिख्या सिपारे आठमें, तो लो पढ़या नहीं कुरान ।
मगज मुसाफ पाए बिना, सुध ना नफा नुकसान ॥ ५९

ए किन भेज्या कौन आइया, ल्याया फुरमान किन ऊपर ।
साल हजार नव्वे लग, ए पाई ना किन खबर ॥ ६०

जाहेर कह्या ईसा आखर, आए करसी एक दीन ।
एही दज्जाल को मारसी, एही देसी सबों यकीन ॥ ६१

मुरदे एही उठावसी, करसी साबित[१] नबुवत[२] ।
और साबित कुरान माजजा, ए करसी *ईसा हजरत ॥ ६२

अब देखो कुरान वारसी, लिख्या आखर बोझ सिर इन ।
ए कौन करे मसी[३] बिना, रात उड़ाए के दिन ॥ ६३

फुरमान आया *ईसे पर, देखो साहेदी हदीस ।
वह लेने न देवे माएने मगज, जिनों दिल दुसमन अबलीस[४] ॥ ६४

सो ईसा कह्या आखरी, जो करत आखर के काम ।
करनी माफक सब को, देसी फल मुसाफ तमाम ॥ ६५

ए कही ईसे की आखर, अब कहूँ इप्तदाए[५] ।
तिन वाएदे रसूलें, फुरमान दिया पोहोंचाए ॥ ६६

कह्या हकें मासूक भेजोंगा, उतरते रूहों अरस से ।
सिरदार तिनमें *रूहअल्ला, हकें तासों कौल किया आपमें ॥ ६७

कहे रसूल रूहअल्ला वास्ते, ल्याया आखरी फुरमान ।
रूहअल्ला इमाम आवसी, ले हक इलम पढ़सी कुरान ॥ ६८

मारसी सबों का सैतान, तब होसी एक दीन ।
सुभेसक[६] भाने लुदंनी[७], होसी सब दिलों पाक यकीन ॥ ६९

ए हक कौल कहे रसूलें, जो रूहोसों किया इप्तदाए ।
सो कुंजी दई दिल मसिएँ, क्यों औरों खोल्या जाए ॥ ७०

---

१. प्रमाणित । २. पैगंमरी । ३. धर्म गुरू । ४. शैतान । ५. आरम्भ से । ६. शंका ।
७. तारत्तम बानी ।

कुरान बारस मोमन कहे, पढ़या या उमी होए ।
बिन अरस रूहें हक न्यामत, दूजा ले न सके, कोए ॥ ७१

हक फुरमान मासूक ल्याइया, कुंजी रूहअल्ला साथ ।
सो *इमाम खोलें बीच अरस रूहों, जो एक तन *सुंनत जमात ॥ ७२

जब आवें यार ले महंमद, पट खोल दे मुसाफ दीदार ।
काजी कजा तब होएसी, ए दूजा कौन खोल देवे द्वार ॥ ७३

कहे *महंमद मैं अवल, *रूहअल्ला आवसी आखर ।
एहेलबेती[1] मेहेदी बीचमें, गिरो राखी पनाह कर ॥ ७४

मजाजियोंमें ले मुसाफ, क्या हक कजा करसी बीच रात ।
जब हक हादी आई उमत, तबहीं उड़ी जुलमात[2] ॥ ७५

आया फुरमान *रूहअल्ला पर, करसी एही क्यामत के काम ।
मार दज्जाल एक दीन कर, देसी हैयाती[3] तमाम ॥ ७६

अव्वल ल्याया *एहिया, *ईसे पर यकीन ।
कहें पढ़े सो हो गया, जिन दई जिंदगानी[4] दीन ॥ ७७

एही गिरो पैगंमरों आखरी, जिन लई महंमद बूंदें नूर ।
ए सोई उतरे अरस से, जिन किए कौल[5] हजूर ॥ ७८

कह्या आखर पैगंमर आवसी, देसी साहेदी आप उमत ।
जो आए कौल कर हक से, तब जाहेर होसी क्यामत ॥ ७९

निसान बड़ा ईसा आखरी, और एही आखरी किताब ।
महंमद मेहेदी आखरी, इमाम आखरी खिताब ॥ ८०

एही बड़े पहाड़ दो निसान, बका बतावें बैत अल्ला ।
दे मुसाफ मगज साहेदियां, दिन देखावें नूर तजल्ला ॥ ८१

कह्या आवसी *असराफील, आखरी बड़ा निसान ।
जो फूंके जिमी पहाड़ उड़ावसी, दूजे फूंके कायम करे जहान ॥ ८२

---

१. परमधाम वाले । २. अन्धकार । ३. मोक्ष । ४. जीवन । ५. प्रतिज्ञा ।

असराफील चिन्हाएसो, मगज मुसाफी गाए ।
चौदे तबक एक सूर से, करके साफ उड़ाए ॥ ८३
जब सूर बाजे दूसरा, देवे हक चिन्हाए[1] ।
तिन सबों कायम किए, रही आठो भिस्त भराए ॥ ८४
आया असराफील आखर, साथ आखरी इमाम ।
माएने मगज मुसाफके, किए जाहेर सब तमाम ॥ ८५
हकें ऐसा साथ *इमाम के, दिया फिरस्ता मरद ।
उड़ावे जिमी पहाड़ जड़ मूल से, सो होसी फिरस्ता कैसे कद ॥ ८६
आठों भिस्त कायम करी, बजाए दूजा सूर ।
बरस्या आब सबन पर, अरस अजीम का नूर ॥ ८७
हैयात किए सब इन ने, ए जो कहे बुजरक ।
और बका सब को किए, जिमी आसमान खलक[2] ॥ ८८
आठो *भिस्त बका करी, कर रोसन जहूर ।
पेहेचानो ए फिरस्ता, ले हक इलम सहूर ॥ ८९
आसमान जिमी जड़ मूल से, एक फूंकें देवे उड़ाए ।
कायम करे सब दूजे फूंके, बका भिस्तमें उठाए ॥ ९०
ए साथ महंमद मेहेदी के, फिरस्ता आया आखर ।
क्यों न चीन्हो तुम इन को, जो करसी दिन फजर ॥ ९१
कह्या गाए *असराफील मुसाफ, किए जाहेर मगज कुरान ।
या से पाक होए दुनी क्यामतें, फल पाया सुभान[3] ॥ ९२
ए पहाड़ निसान आखरी, जिन देखाई बका बिसात[4] ।
दुनी पहाड़ पूजे जाहेरी निसान, कर बैठे बका बीच रात ॥ ९३
*म्याराज हुआ *महंमद पर, सोई सब हकीकत ।
हुए इलमें अरस दिल औलियों[5], उगी बका हक सूरत ॥ ९४

---

१. पहचान कराए । २. जनता । ३. परमात्मा । ४, वस्तुएँ । ५. धर्माधिकारी ।

अब देखसी सब नजरों, दोऊ झंडों करी पुकार ।
बातून झंडा नूर का, पोहोंच्या बिलंद नूर पार ।। ८५

दुनी जाहेरी झंडे की, तिन पाऊं कटाए *पुलसरात ।
लई ना हक हकीकत, और वजूदें चल्या न जात ।। ८६

महामत कहें ऐ मोमनों, हादिएँ खोले क्यामत निसान ।
हक अरस बका जाहेर हुए, फिरस्ते नूरै नूर किया जहान ।। ८७

।। प्रकरण ।। ६ ।। चौपाई ।। ६८५ ।।

### झंडा हकीकी खड़ा हुआ हिंदमें

जाए इलम पोहोंच्या हक का, ताएं हुई हक हिदायत ।
सो आया फिरके नाजी मिने, झन्डा दीन—हकींकी[1] जित ।। १

लिखी कुरानमें हकीकत, होसी खोले एक दीन ।
जब ऊग्या सूर *मारफत का, आवसी देख सबों यकीन ।। २

दीदार हुआ हक सूरत का, देख अरस नजर बातन ।
न्यामत अरसोंकी सबे, लैं अरस दिल मोमन ।। ३

कहें आयतें हदीसें जाहेर, नूर झन्डा *महंमदी जे ।
दिन दिन घड़ी घड़ी पल पल, नूर बढ़ताई देखोगे ।। ४

*महंमद नूर है हक का, कुल सैयन महंमद नूर ।
इन झण्डे कौल महंमद के, आखर किया चाहिए जहूर ।। ५

*लैलत कदर बीच मोमनों, आए खोली रूह नजर ।
हक इलम ले रूहअल्ला, करी इमामें फजर ।। ६

जब लिया माएना बातून, रूह नजर खुली तब ।
दिन मारफत हुआ आलममें, नूर रोसन किया अब ।। ७

तब सबोंने देखिया, जो कछू हक बिसात ।
हक खिलवत जाहेर हुई, अरस बका हक जात ।। ८

---

१. सत्य धर्म ।

फुरमाया[१] सब हो चुक्या, मिले सब निसान ।
हादी करसी जाहेर, खोल माएने मगज कुरान ॥ ६

भण्डा नूरका महंमदी, ताए कबूं न होए नुकसान ।
जेते दिन जित फुरमाया, रह्या तेते दिन तित ईमान ॥ १०

और ठौर हुकमें खड़ा किया, सो जाए लग्या नूर आसमान ।
जो एक ठौर कदी न देखिए, तो और ठौर बिलंद[२] हुआ जान ॥ ११

लिख्या जाहेर हदीसमें, नूर भण्डा निसान ।
सो हदीस देखे सेंती, करसी दिल पेहेचान ॥ १२

अव्वल भंडा कह्या सरियत, जाके तले दुनी पाक होए ।
जो रहत तले फुरमाए के, ताकी सिफत करे सब कोए ॥ १३

पर सरियत[३] भंडा नासूतमें, पोहोंच्या न लग मलकून[४] ।
पकड़े *पुल सरात ने, छोड़ ना सके नासूत ॥ १४

जो लेवे राह तरीकत[५], ताके फैल हाल दिल से ।
सो पाक होए पोहोंचे मलकूत, फिरस्तों के अरसमें ॥ १५

बीच चौदे तबकों, कहे सात आसमान[६] ।
कोई सुरैया[७] उलंघ ना सक्या, देखो सोलमें सिपारे बयान ॥ १६

आसमान जिमी बीच फना के, हवा लग ला—मकान[८] ।
ला लग पोहोंचे तरीकत, मुसाफ हकीकत बका बयान ॥ १७

देखो सिपारे तीसरे, होवे हकीकत[९] सों एक दीन ।
सो आन मिलाए हुकमें, आए तले मारफत[१०] भण्डे यकीन ॥ १८

फुरमाया सरियत तरीकत, किया रात बीच अमल ।
ना पोहोंचे बका दिन को, बिन हकीकत अरस असल ॥ १९

माएने हकीकत मुसाफके[११], पावें हक के इलम ।
सो पोहोंचें जबरूतमें[१२], होए सुध हक हुकम ॥ २०

---

१. कहा गया । २. ऊँचा । ३. कर्मकांड । ४. बैकुन्ठ । ५. उपासना । ६. लोक । ७. ऊंचा सितारा (ज्योति स्वरूप) । ८. शून्य । ९. यथार्थ ज्ञान । १०. पूर्ण पहचान । ११. धर्मग्रंथ । १२. अक्षरधाम ।

गिरो[१] फिरस्ते नजीकी, बका नूर मकान ।
उतरे मलायक[२] इत थें, सो पोहोंचसी कर पेहेचान ।। २१

जब हक इलमें मारफत खुली, तब देख्या बका अरस सूर ।
सो सूर हुआ सिर सबनके, बरस्या बका हक नूर ।। २२

खासलखास अरस अजीम, हक सूरत नूरजमाल ।
इत हादी रूहें खिलवत, ए वाहेदत[३] जात कमाल[४] ।। २३

इन विध झण्डा खड़ा किया, हादी मोमनों इत आए ।
औलिए अंबिए पैगंमर, गोस[५] कुतब[६] मिले सब धाए ।। २४

आगूं जिन बंदगी करी, ए सोई जमाना बुजरक ।
सो देखो इत हक कदमों, कोई पीछा रहे न माँहें खलक ।। २५

अब दुनियां पीछी क्यों रहे, जब हुई हक कजाए ।
हुआ सब पर हुकम महंमदी, सो सब लेसी सिर चढ़ाए ।। २६

उठी कही जेती न्यामतें, सो आईं बीच हिंदुस्तान ।
झन्डा महंमदी नूर का, नूर रोसन ईमान ।। २७

बेसक मेला इत होएसी, महंमद सरा अदल ।
तिन कायम करी दुनी फानी को, ले हक इलम अकल ।। २८

जो कह्या सरा दीन महंमदी, तामें सकसुभे कोई नाँहि ।
सो सब सुध देवे हक बका, सक सुभे न अरस दिल माँहि ।। २९

ना सक *महंमद दीनमें, ना सक *महंमद सरियत ।
ना सक *सुंनत जमातमें, कहे यों *हदीस आयत सूरत ।। ३०

अब क्यों झन्डा छिप्या रहे, हुआ जाहेर तजल्ला नूर[७] ।
जाहेर किया नूर अरस का, अरस दिल महंमद जहूर ।। ३१

खिलवत भी जाहेर करी, जो हक पातसाही वाहेदत ।
छिपी सब जाहेर हुई, जो हक दिल बीच न्यामत ।। ३२

---

१. समुदाय । २. फिरिस्ते । ३. अद्वैत का प्रकटी करण (रूहें) । ४. पूर्ण । ५. उच्च साधु ।
६. विद्वान । ७. तेज (परमधाम) ।

सिपारे चौथे मिने, कही गैब[1] हक खिलवत ।
सो जाहेर करसी मोमन, उतर के आखरत ॥ ३३

हुई ढील होते फजर, वास्ते आवने हक न्यामत ।
सो आया अरस बका मता, हुआ बीच बारहीं सदी बखत ॥ ३४

भई रोसनाई रूहअल्लाह की, सुरू दसई अग्यारहीं विस्तार ।
होते सदी बीच बारहीं, आया बका मता बेसुमार ॥ ३५

भन्डा महंमदी नूर का, सो पोहोंच्या नूर—बिलंद[2] ।
हुआ दिन दिल महंमद मारफत, उड़े रात फरेबी फंद[3] ॥ ३६

सिपारे उनईसमें, लिखे एक ठौर बयान तीन ।
ए जो देखो दिल देय के, तो दिल नकस[4] होए यकीन ॥ ३७

आवे अरस यकीन हक महंमद पर, जो देखो हकीकत मारफत ।
इलम लुदंनी हक के, होए हक हिदायत ॥ ३८

इन विध भन्डा महंमदी, खड़ा हुआ बीच हिंदुस्तान ।
चौदे तबक जुलमत परे, नूर पोहोंच्या लाहूत आसमान ॥ ३९

महामत कहें मदीने से, लिखे खलीफों पर फुरमान ।
उठी दुनी बरकत सफकत फकीरों, और कलाम—अल्ला[5] ईमान ॥ ४०

॥ प्रकरण ॥ १० ॥ चौपाई ॥ ७२५ ॥

## भंडा सरियतका उठचा

कह्या भन्डा उठचा ईमानका, कौल किया जिन सरत ।
*महंमद *मेहेदी *इमाम आए, लिखे आए नामें *वसीयत ॥ १

यों हादी लिखे कर जाहेर, दिन देखाए देवें क्यामत ।
सो लिखे सखत सौं[6] खाए के, सो भी वास्ते इन बखत ॥ २

मेहेनत करी महंमद ने, और *असहाबों[7] यार ।
भंडा खड़ा किया दीन का, तले आई दुनी बे सुमार ॥ ३

---

१. छिपी । २. परमधाम । ३. कपट । ४. अंकित । ५. कुरान । ६. सौगन्ध । ७. साथी ।

दुनियां जो जैसी हुती, सो तिसी विध लई समझाए ।
तोरा[१] किया सिर सबन के, दई सरियत राह चलाए ॥ ४

अग्यारै सदी लग अमल, चल्या सरियत का ।
सो फरदा रोज सदी बारहीं, कौल पोहोंच्या फजर का ॥ ५

सो नूर झंडा बीच हिंद के, किया खड़ा नूर इसलाम[२] ।
इत आईं सब न्यामतें, और आया अल्ला कलाम ॥ ६

तो दरगाह से खादम[३] बुजरकों, लिखे सखत सौं खाए ।
सो जमाना सदी अग्यारहीं, किनें न देख्या दिल ल्याए ॥ ७

करी अव्वल लिख इसारतें, दूजे लिख्या केहेर[४] देखाए ।
तीसरे उठाया झंडा यकीन, चौथे हिंदमें खड़ा किया आए ॥ ८

लिख्या अपने हाथों तेहेकीक[५], गईं चारों हक न्यामत ।
सिर देखें राह गजब[६] की, क्यों न अजूं आवत ॥ ९

जाहेरी कहें अजूं न आइया, हक सेती गजब ।
यकीन बिना देखें नहीं, जो छीन लिया मता सब ॥ १०

दुनी बरकत सफकत फकीरों, और लिया छीन कुरान ।
बाकी इसलाममें क्या रह्या, जो रह्या न काहूँ ईमान ॥ ११

अजूं राह देखें गजब की, जानें हुआ नहीं फुरमाया ।
इसलाम मता सब से गया, तो भी नजरों किनहूँ न आया ॥ १२

जुदे पड़े राह बीच रात के, जिद फितने[७] खोया यकीन ।
तो दुनी बरकत सफकत फकीरों, हक कलाम लिए छीन ॥ १३

ईमान बिना देखें नहीं, रही या गई न्यामत ।
नफा नुकसान तो देखहीं, जो होए इसलाम लज्जत[७] ॥ १४

सुध न पाइए बिना लज्जत, नफा या नुकसान ।
निसबत रहे ना जुबान की, जहां हक मारफत नहीं पेहेचान ॥ १५

---

१. प्रतिबन्ध । २. सत्य धर्म । ३. सेवक । ४. ईश्वरीय कोप । ५. निश्चित । ६. आपत्ति । ७. फसाद । ८. मजा ।

अजूं चाहे दुनियां माजजा[1], देखे न खड़ा झंडा नूर ।
तब उतथें अकस[2] पुकारिया, कहे हुए इसलाम से दूर ॥ १६
फजर हुए खुले हकीकत, खुले हकीकत होए क्यामत ।
हुए हक बका अरस जाहेर, सूर ऊग्या दिन मारफत ॥ १७
फुरमान जबराईल ल्याइया, बरारब[3] से बीच हिंद ।
आए नूर झन्डा खड़ा किया, गया कुफर फरेबी फंद ॥ १८
सरा चल्या हक हुकमें, किया कौल जिन सरत ।
सो आए पोहोंची सदी बारहीं, भई *फरदा रोज क्यामत ॥ १६
यों झन्डा नूर बिलंद का, किया खड़ा हक हादी मोमन ।
देखावे नामें *वसियत, नूर हिंदमें बरस्या रोसन ॥ २०
मुसाफ मता *महंमदी मोमनों, पोहोंच्या वारसी[4] आखरी *इमाम ।
झंडा पोहोंच्या अरस[5] अजीम लग, देखाए हक बका अरस तमाम ॥ २१
अरस देखाया चढ़ उतर, हुआ *म्याराज *महंमद पर ।
क्यों दुनी देखे दिल मजाजी, बिन खोले रूह नजर ॥ २२
जेता अरस दिल मोमन, बिन म्याराज न काढ़ें बोल ।
बिन पूछे देवें सब को, अरस अजीम पट खोल ॥ २३
करने हैयात[6] सबन को, देवें हक इलम बेसक ।
सो पोहोंचे बका बीच भिस्तके, नूर नजर तले हक ॥ २४
जो आया झंडे तले महंमदी, सो तबहीं कायम होत ।
देख्या सब हक दिल मता, हुई अरस अजीम बीच जोत ॥ २५
अपनी सूरत देखी अरस की, जो रूहें तले हक कदम ।
जब सूर ऊग्या हक मारफत, तब सब आए तले हुकम ॥ २६
महामत कहें ऐ मोमनों, कही दो झन्डों की बिगत[7] ।
अब खोल देऊं *फरदा रोज की, जो फुरमाई थी इसारत[8] ॥ २७

प्रकरण ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ ७५२ ॥

---

१. चमत्कार । २. अक्सा मस्जिद । ३. अरब देश । ४. उत्तराधिकारी । ५. परमधाम । ६. मुक्त, अमर । ७. वर्णन । ८. संकेत ।

## बाब *फरदा—रोज का

फरदा[१] रोज पेहेले कह्या, ए जो वखत क्यामत ।
एक दिन एक रात की, फजर है आखरत ॥ १

साल हजार दुनीय के, गिनती चाँद और सूर ।
सो हक के एक दिनमें, आवे नूर—बिलंद[२] से नूर ॥ २

इन किल्ली रूहअल्ला अरस के, पट खोल करे रोसन ।
खोली हकीकत मारफत, किया अरस बका हक दिन ॥ ३

दिन रब्बका दसमी सदी लग, दुनियाँ के साल—हजार ।
मास हजार लैल[३] के, तीसरे तकरार ॥ ४

कछू मास हजार से बेहेत्तर[४], ए जो कही लैलत कदर ।
ए फरदा रोज क्यामत, ए जो कही फजर ॥ ५

दसमी सदी भी हिसाबमें, गिनतीमें आई ।
इतथें सुरू हुई, *रूहअल्ला की रोसनाई ॥ ६

हजार मास जो लैल के, हुए सदी अग्यारहीं भर ।
लिखी जो इसारतें, भई पूरी मिल बेहेत्तर ॥ ७

और आई सदी बारहीं, इनमें फजर भई ।
लिख्या मुसाफ बीच आयतों, और हदीसोंमें कही ॥ ८

*असराफील गावे फुरकान[५], जाहेर करे निसान ।
मगज मुसाफ के बातून, कर देवे पेहेचान ॥ ९

खुलासा मुसाफ का, *असराफील बतावे ।
तब सूरज मारफत का, हक अरस दिल नजरों आवे ॥ १०

तो हदीसें हक इलम की, भाँत भाँत करे बड़ाई ।
बाब[६] भिस्त जो हैयाती, सो याही कुंजीसों खोल्या जाई ॥ ११

---

१. कल । २. परमधाम । ३. लैल तुल कद्र । ४. कुछ अधिक । ५. कुरान । ६. प्रकरण ।

हक इलम जो लुदंनी, बका अरस असल ।
एही दानाई[1] हक की, कही जो कुल्ल अकल ॥ १२

ठौर सबों के सब को, फिरस्ता बतावे ।
पाक असराफील इन विध, कुरान को गावे ॥ १३

खासलखास रूहें उमत, गिरो फिरस्तों खास कहावे ।
गिरो रूहों गिरो फिरस्ते, दोऊ अपने ठौर पोहोंचावे ॥ १४

एही सुनत जमात, महंमद बेसक दीन ।
सकसुभे ना इनमें, जित *असराफील अमीन[2] ॥ १५

ए जो सुनत जमात, होए सके न जुदे खिन ।
ए गिरो फोड़ क्यों जुदे पड़ें, जिनों असल अरसमें तन ॥ १६

कै सरे अमल बीच रात के, चली जो सुभेसक[3] ।
सो फजर हक इलमें, बेसक करी खलक ॥ १७

## छे दिनकी पैदास

*पैदास कही छे दिन की, सो इन आलम का विस्तार ।
दिन जुमा के बीचमें, पाई साइत[4] जो कही अपार ॥ १८

आए एक साइत लैलत कदरमें, उसी साइतमें दूजी बेर ।
उसी साइतमें तीसरे इन इंड, महंमद आए इत फेर ॥ १९

एक दिन कह्या रब्ब का, दुनी के साल हजार ।
इतथें आगे लैलत कदर, ए जो फजर तीसरे तकरार ॥ २०

एक कौलमें कहे तीन दिन, सो भी बीच साइत इन ।
इन रोज रब्ब कर जारत[5], पोहोंचें अपने वतन ॥ २१

और तीन दिन कहे रसूललों, चौथे रूहअल्ला आए इत ।
रोज पांचमें इमामें जमा किए, सो पाई जुमा बीच साइत ॥ २२

---

१. चातुर्य । २. धरोहर वाला । ३. शंका । ४. घड़ी । ५. जियारत तीर्थयात्रा ।

छठे दिन मोमन जमा हुए, तब गिरो आई सब कोए ।
सो साइत जुमा बीच खोलके, इस्कें पोहोंचे पाक होए ।। २३
कहे तीन रोज तीन तकरार के, चौथे फरदा रोज फजर ।
दे दीन दुनी सबों सलामती[१], पाक हुए खोले रूह नजर ।। २४
छे दिन कहे और कौलमें[२], कह्या तिन का बेवरा[३] ए ।
हादी मोमन कर सबों बका, अपने अरस बका पोहोंचेंगे ।। २५
ए रोज कहे बंदगीय के, आए पोहोंचे सावचेत होए ।
ए दिन समझ रोजे रखे, कह्या तिन पर गुनाह न कोए ।। २६
एही भूल फना दुनी की, डाले बीच निजस[४] अल्ला कलाम ।
तरफ न पावे जिन की, कहे सो हम बका इसलाम ।। २७
दुनी यों खेलाई हक ने, क्या करे बिना अखत्यार[५] ।
ए सब कछू हाथ कादरके[६], वही नचावनहार ।। २८
रात दिन फुरमाए हक ने, आप अपने हिसाब ।
सो डाले बीच निजस, ए जो रात का ख्वाब ।। २९
छे रोज कहे एक कौलमें, और तीन रात कौल एक ।
ए हिसाब होए बीच फजर, हुएँ जाहेर साहेब नेक ।। ३०
कहे एक कौलमें दोए दिन, बीच कही जो रात ।
ए हिसाब दे सब फजर, सो कही क्यामत बीच साइत ।। ३१
ए दिन देखो हक के, जो कहे हैं बातन ।
कह्या अरस हक दिल मोमनों, देखो कलाम अल्ला रोसन ।। ३२
हकें काम लिया जो दिलमें, सो जब हुआ पूरन ।
मकसूद[७] सबों हो रह्या, तब वाही फजर कह्या दिन ।। ३३
जब थें आया रसूल हक का, तिन बीच हुए कै काम ।
जहाँ जो पूरन हुआ, दिन सोई कह्या अल्ला कलाम ।। ३४

---

१. आशीर्वाद । २. वचन । ३. निर्णय वर्णन । ४. अपवित्र । ५. अधिकार । ६. सामर्थ्यवान । ७. सन्तोष, आशय पूर्ति ।

जो बात निजस नाबूद[1], हक कलाम न कहे तिनमें ।
जो हक दोस्त गिरो मासूक, कहे हक कलाम तिन से ।। ३५

कह्या हदीस कुदसीयमें[2], जब बंदा करे फिकर ।
वह फिकर मुझसों रखे, हकें फुरमाया यों कर ।। ३६

कहे हदीस कुदसी, और आयतें हदीसें सूरत ।
इन का रोजा निमाज हक दोस्ती, एक जरा न बिना मारफत ।। ३७

आंखें दई हकें इन को, और दिए कान अकल ।
ज्यों दुनियां मुद्दा[3] वजूद, पर त्यों कहे मोमन साहेब दिल ।। ३८

जेते अंग हैं वजूद के, तेते अंग बातुन[4] दिल ।
नजर खुली जब रूह की, हुआ दिल मोमन अरस असल ।। ३९

हाथ पांऊं बाहेर अंदर, सब अँगों हक नूर ।
कहे इन विध मोमन अरसमें, जिन का हक आप करें जहूर ।। ४०

महामत कहें ऐ मोमनों, हादी खोल दिए दिन बातन ।
क्यामत दिन जाहेर कर, देखाया अरस बका वतन ।। ४१

।। प्रकरण ।। १२ ।। चौपाई ।। ७६३ ।।

## बाब हादी—गिरोकी[5] पेहेचान

भाई महंमद के मोमन, कोई था न उस बखत ।
तो सरा चल्या तोरे[6] बल, कह्या हम फेर आवसी आखरत ।। १

मोमन का दुनी मजाजी, उठाए न सके भार ।
मारे उसी सिरक[7] से, तो कहे बीच नार ।। २.

तब रसूल खोलत जो माएने, हकीकत मारफत ।
तो तबहीं होती फजर, जाहेर होती क्यामत ।। ३

आए सदी बीच आखरी, जो रसूले करी थी सरत ।
बखत[8] हुआ बीच बारही, भई फरदा रोज क्यामत ।। ४

---

१. नश्वर । २. हदीस का नाम । ३. गरज । ४. अन्तर के । ५. ब्रह्मसृष्टि । ६. प्रतिबन्ध । ७. शिर्क-बहुदेव पूजा । ८. समय ।

ए इसारतें हक मुसाफ की, पाइए खुले हकीकत मारफत ।
ए हक इलमें पाइए मेहेरसे, जो होए मूल निसबत ॥ ५

ए अरस गुझ बिना लुदंनी, क्यों कर बूझया जाए ।
हक खिलवत बातें गैब की, दें अरस दिल मोमन बताए ॥ ६

वाहेदत भी इनको कहे, जो हादी हक जात ।
त्यों नूर हादी का उमत, इन बीच और न समात ॥ ७

सुनत जमात इन को कहे, गिरो एक तन जुदी न होए ।
ए हक इलमें बेसक हुए, याकी सरभर[1] करे नारी सोए ॥ ८

वाहेद तन मोमन कहे, एही जमात *सुनत ।
एही फिरका नाजी कह्या, इनों हक हिदायत[2] ॥ ९

ए जो कौल तोड़ बहत्तर हुए, कहें हम सुंनत जमात ।
दिन मारफत हुए पछताएसी, सिर पटकें जिमीसों हाथ ॥ १०

मेहेरबान ना देवें दुख किन को, मारे सबों तकसीर[3] ।
क्या राए राने पातसाह, क्या मीर पीर फकीर ॥ ११

सुनत जमात जात हक की, ए मुख से कहें हम सोए ।
कह्या गुनाह बड़ा इन कौल का, तो कह्या जलना याको होए ॥ १२

कुंन केहेते जुलमत से, कहे पलमें पैदा मोहोरे खेल ।
सो सरभर करें हक जात की, तो लटकाए गलेमें जेल[4] ॥ १३

और गिरो महंमद मोमनों, ए उन पर हुए मेहेरबान ।
तो दोस्त कहे दुसमनों, ए मोमनों बड़ी पेहेचान ॥ १४

एही औलिया अंबिया, एही कहे हैयात[5] ।
दूजा हैयात जरा नहीं, बिना वाहेदत हक जात ॥ १५

कोई कायम जरा दूजा कहे, सो मुसरक[6] और काफर ।
एक जरा कोई कहूँ नहीं, वाहेदत हक बिगर ॥ १६

---

१. बराबरी । २. आदेश । ३. दोष । ४. बन्धन । ५. मुक्त । ६. देव पूजक ।

जो पातसाही हक की, नूर तजल्ला नूर ।
इन दोऊ अरसों बका जिमी, सो सब वाहेदत नूर हजूर ॥ १७

वाहेदत[1] की रूहों बास्ते, खेल झूठा देखाया और ।
सो रूहें वाहेदत भूलके, जाने झूठाई हमारा ठौर ॥ १८

एही कबीला एही घर, एहीं पूजें पानी आग पत्थर ।
जानें याही फना नासूत को, कछू नाही इन बिगर ॥ १९

आसमान जिमी बीच फना के, ए सबमें सबद पुकार ।
फेर याही को दूजा कहें, जो हक इलमें न खबरदार ॥ २०

मोमन और दुनीं के, एहा तफावत[2] ।
मोमन तन अरसमें, दुनी तन पेड़ गफलत[3] ॥ २१

मोमन सुरत[4] पीछी फिरे, उठ खड़ा होंए अरस तन ।
जों दुनियां दम[5] पीछी फिरे, तो जाए ला मकान बीच सुंन ॥ २२

एक तन मोमन अरस मे, दूजा तन सुपन ।
लैल फरामोसी बीचमें, भूल गए अरस तन ॥ २३

दे हक इलम जगाए मोमनो, देखी अरस बका न्यामत ।
एक जरा छिपी ना रही, देखी अरस हक खिलवत ॥ २४

सकसुभे कछू ना रही, पट बका दिए सब खोल ।
दई साहेदी आयतों हदीसों, सो सब रूहअल्ला कहे बोल ॥ २५

वजूद मोमन जो ख्वाब के, सो किए रूबरू[6] अंग असल ।
खोले बातून देखे रूह नजरों, किए दोउ मुकाबिल ॥ २६

सेहेरग[7] से नजीक हक इनको, जाकी असल हक कदम ।
जो हुआ असल पर हुकम, सोई नकल देत इत दम ॥ २७

असल दुनी जिन गफलत, ताए इलमें करो पेहेचान ।
ताको नजीक सेहेरग से, सुंन हवा ला मकान ॥ २८

---

१. अद्वैत लीला। २. अन्तर। ३. अज्ञान। ४. ध्यान। ५. प्राण। ६. सम्मुख।
७. दिल की रक्त नाड़ी।

नहीं करे बराबरी हैं की, क्यों मिले दाखला[१] ताए ।
है नींद उड़े उठे अरस में, फना नीद उड़े उड़ जाए ॥ २९

सुपन उड़े जब मोमनों, उठ बैठे अरस वजूद ।
खासलखास बंदे नजीकी, ए कदमों हमेसा मौजूद ॥ ३०

ए रूहें फिरस्ते दो गिरो, जो बीच उतरी लैलत कदर ।
और दुनी फूंके उड़ावे असराफील, दूजी फूंके उठावे बका कर ॥ ३१

महंमद कहे भाई मेरे, आवेंगे आखरत ।
गिरो—रब्बानी[२] अहंमदी, याकी बीच आयतों हदीसों सिफत ॥ ३२

खेल किया महंमद वास्ते, जैसे खेल के कबूतर ।
खासलखास गिरो रब्बानी, वह इनों की करे बराबर ॥ ३३

खेल किया महंमद वास्ते, महंमद आया वास्ते उमत ।
ताए एक दम न्यारी ना करें, मेहेर कर धरी तीन सूरत ॥ ३४

इन उमत भाइयों वास्ते, महंमद आए तीन बेर ।
दुनी क्या जाने बिना निसबत[३], बिना इलम रात अंधेर ॥ ३५

जब जोड़े मिले मुकाबिल, तब जाहेर हुए रात दिन ।
रात कुफर फना मिट गई, हुआ हक बका अरस रोसन ॥ ३६

असल जाकी अरस में, सो सेहेरग से नजीक होए ।
जो पैदा तारीकी[४] हवा से, क्यों हक नजीक आवे सोए ॥ ३७

सोई फना कही दुनियां, जाकी असल अरसमें नाहें ।
सोई हैयात हमेसगी, जाकी असल अरस बका माहें ॥ ३८

वे इंतजार उसी कौल के, ढूंढ़त फिरें रात दिन ।
आराम न होए बिना मिले, जेती रूह मोमन ॥ ३९

महंमद मोमनों वास्ते, ले आया फुरमान ।
इलम किल्ली ल्याए रूह अल्ला, किए छिपे जाहेर बयान ॥ ४०

---

१. उपमा, प्रवेश । २. ब्रह्मसृष्टि । ३. सम्बन्ध । ४. अन्धकार ।

एते दिन किन ना कह्या, के रसूल आया इन पर ।
ना किन फुरमान सिर लिया, ना किन लई खबर ॥ ४१

नब्बे साल हजार पर, जब लग बीते दिन ।
एते दिन किन ना कह्या, जो कुरान न पकड़्या किन ॥ ४२

बोहोतों किया कुरान अपना, ना किन लई हकीकत ।
ना किन पाया इलम हक का, न किन खोली मारफत ॥ ४३

जो रूहें उतरीं अरस सें, तामें केते कहे पैगंमर ।
सिरदार सबों में रूहअल्ला, कहें हदीसें यों कर ॥ ४४

ए हुज्जत[1] जाहेर किन ना करी, हम रूहें अरससें आईं उतर ।
कौल किया हकें हमसों, बोलावें बखत फजर ॥ ४५

कह्या रसूलें रूहअल्ला, माहें सिरदार सब रूहन ।
मैं फुरमान ल्याया इनों पर, ए करसी साफ सबन ॥ ४६

मारे एही दज्जाल को, और एही करें एक दीन ।
साफ करें सब दिलों को, हक पर देवें यकीन ॥ ४७

एही खोलें हकीकत मारफत, करे माएना जाहेर बातन ।
करें अरस बका हक जाहेर, एही फजर कही हक दिन ॥ ४८

मेट दई रात अंधेरी, और अगले अमल[2] सरे दीन ।
हक बका अरस चिन्हाए, ऐसे हक इलमें किए अमीन ॥ ४९

हकें करी अरसमें रूहोंसों, पेहेलें रदबदल[3] ।
सो इलमें जगाए दिल अरस कर, हकें दई कुल्ल[4] अकल ॥ ५०

जल बिन जल जीव ना रहे, ना थल बिन जीव थल ।
तो अरस रूहें अरस[5] बिन क्यों रहें, जिनों हक बका अरस असल ॥ ५१

ढूंढ़ें अपने रसूल को, और अपना फुरमान ।
और ढूंढ़ें हक इलम को, जासों बातून होए बयान ॥ ५२

---

१. हठ, दावा । २. चलन । ३. बातचीत । ४. पूर्ण । ५. परमधाम ।

राह देखें रूह अल्लाह की, और ढूंढ़ें आखरी इमाम ।
हक हकीकत मारफत, चाहें फल क्यामत तमाम ॥ ५३

फना बीच से निकस के, बीच आवें बका असल ।
दुनी दुख छोड़ लें हक सुख, ए रूहें क्यों छोड़ें अपना फल ॥ ५४

दिल बका या फना दम, सब असल अपनी चाहे ।
कोई दोजख[1] कोई भिस्तमें[2], या कोई अरस बीच उठाए ॥ ५५

ए जो फना मोहोरे खेल के, मैं मेरी कर खेलत ।
याही को देखें सुनें, सुध ना बका वाहेदत ॥ ५६

रूहें गिरो तिनमें मिल गईं, हक बका न जानें तरफ ।
चौदे तबक फना बीच, कोई कहे न बका एक हरफ ॥ ५७

ना थे अव्वल ना होसी आखर, ए जो बीचमें देत देखाए ।
सो भी कहे किताबें अबहीं, आखर देसी उड़ाए ॥ ५८

अव्वल आखर नाबूद, बीच फरेब सो भी नाबूद ।
सो बरकत महंमद मोमनों, पाए कायम[3] भिस्त वजूद[4] ॥ ५९

ओ उतरे कहे अरस से, ए कुंन केहेते पैदास ।
जाहेर देखी तफावत, ए आम वे खासलखास ॥ ६०

असल तन इनों अरसमें, ठौर ठौर लिखी इसारत[5] ।
बीच जंजीरों[6] मुसाफ की, करें आयतें इनों सिफत ॥ ६१

तो जाहेर करी बीच लैल के, हक की गैब खिलवत ।
फजर होसी इत थें, दिन याही हक मारफत ॥ ६२

अव्वल फुरमाया रसूल को, कहो हरफ तीस हजार ।
राह चलाओ रात की, बका फजरें रखो करार ॥ ६३

राह रात की चलाओ सरियत, ले तरीकत पोहोंचे हकीकत ।
तब फजर दिल महंमद, दिन होसी मारफत ॥ ६४

---

१. नर्क । २. (बहिश्त) मुक्ति स्थल । ३. अखंड । ४. शरीर । ५. संकेत । ६. कड़ियां ।

सिपारे उनईसमें, लिख्या रात हवा मजकूर ।
सूरज महंमद दिल मारफत, उड़े रात हवा देख नूर ॥ ६५

अग्यारें सदी जानें आरफ[1], लिखी हदीसों बीच सरत ।
इस राह पोहोंचावे हकीकत, होसी फजर दिन मारफत ॥ ६६

दुनी हजार साल हक दिन के, कही सौ साल एक रात ।
बारें फरदा रोज फजर, होंए जाहेर हादी हक जात ॥ ६७

और पेहेलें छिपे रखाए हक ने, ए जो हरफ तीस हजार ।
सो दिल बीच रखे महंमदें, कह्या तुमहीं पर अखत्यार ॥ ६८

तीस हजार और गुझ कहे, ताकी आई न किन को बोए ।
जबराईल से छिपाए, आखर जाहेर किए सोए ॥ ६९

ए साहेदी नामें म्याराजमें, बीच लिखे माएने बातन ।
हक इसारतें रमूजें, सो बूझे हादी या मोमन ॥ ७०

हक इलम लुदंनी जिन पें, सोई समझे हक रमूज[2] ।
जो तन खिलवत अरस के, सोई जानें हक दिल गुझ ॥ ७१

एही करें खिलवत जाहेर, दूर करें तारीकी रात ।
क्यों फना रहे बका नजरों, ऊग्या सूर बका हक जात ॥ ७२

अरस न्यामत जाहेर हुई, जोए[3] कौसर अरस हौज[4] ।
हक इलमें कछू ना छिपे, किया जाहेर फरदा रोज ॥ ७३

ए जो दुनी पैदा जुलमत, सो इनों की करे सरभर ।
मजाजी क्यों होए सके, रूहें हक बराबर ॥ ७४

ए जो मोमन नूर बिलंद के, दिल जिनों अरस हक ।
सरभर इनों की दुनी करे, हुआ सिर गुनाह बुजरक ॥ ७५

जब लिया बातुन माएना, खोलो रूह नजर ।
तब हुआ अरस दिल मोमनों, जाहेर हुई फजर ॥ ७६

---

१. विद्वान । २. भेद । ३. यमुना । ४. ताल, (हौज कौसर) ।

ए जो अमल चलते थे रात के, ले राह सरियत ।
सो हुए सब मनसूख[1] खोले हकीकत ॥ ७७

कह्या फजर को होएसी, फरदा रोज आखरत ।
होसी खोलें हकीकत, हक अरस लज्जत ॥ ७८

सो आए जब इत दिन में, भया नूर रोसन ।
सिफायत महँमद की, फजर पोंहोंची तिन ॥ ७९

तो कह्या अमल रात का, सुध आप ना हक ।
हुता ना इलम लुदंनी, जिनसे होइए बेसक ॥ ८०

हक इलम से होत है, अरस बका दीदार ।
पट खोलत सब वार[2] के, और नूर के पार ॥ ८१

सुध होए हक कुदरत, और आप चिन्हार ।
इलम लुदंनी हक का, खोल देवे सब द्वार ॥ ८२

कायम न्यामत हक की, न थी रात के माँहि ।
अमल दुनीमें सरियत, चल्या है तब ताँहि ॥ ८३

बुत पुजावते रात के, गई जड़ मेख तिन ।
सो क्यों जाहेरी आगे चल सके, हुए हक दिन रोसन ॥ ८४

झंडा खड़ा था दीन का, मक्के मदीने ।
सो जमात ले सरियतें, पकड़्या था यकीने ॥ ८५

हुकम किया था रसूल ने, जिन पड़ो जुदे तुम ।
सो कौल तोड़ बहत्तर हुए, रात के मुस्लिम ॥ ८६

इन मजाजी जमात ने, छोड़े हक हादी कदम ।
सो टूक टूक जमात जुदी हुई, हा हा ऐसा किया जुलम ॥ ८७

हा हा देख्या न हक हादी सामी, ना हदीसें कुरान ।
तो आए लिखे नामें *वसियत, ना रह्या किन का ईमान ॥ ८८

---

१. रद्द । २. इस पार ।

एक सात जने ईमानसों, मुए मुसलमान ।
आए पोहोंच्या सोई बखत, जो कह्या था नुकसान ।। ८९

और लिख्या जो पीछे रहे, तिन दिलों नहीं यकीन ।
सोए लिख्या सौं खाए के, अब लग था झंडा दीन ।। ९०

जो कह्या था रसूल ने, सोई हुआ बखत ।
आए लिखे नामें *वसियत, जाहेर करी *क्यामत ।। ९१

तो आए नामें *वसियत, जो पेहेलें फुरमाए ।
सोए देखो बीच आयतों, दिलसों अरथ लगाए ।। ९२

ए जो मजाजी दुनियाँ, क्या करसी विचार ।
तो क्यों देखे बिना मारफत, बीच राह अंधार ।। ९३

जिनों मुसाफ लुदंनी खोलिया, पाई हकीकत ।
तब जानो फजर हुई, आए पोहोंची सरत ।। ९४

तुम जुदे जिन पड़ो, रहियो गिरोह साथ ।
सो होएगा दोजखी, जो छोड़सी जमात ।। ९५

सो तो जिद कर जुदे हुए, फिरके बहत्तर ।
ताको *नारी आयतों हदीसों, लिख्या है यों कर ।। ९६

सो देवाई हादिएँ साहेदी, पुकारे सिरदार ।
फैल कहे तिनो मुख अपने, दुनी सब हुई ख्वार[1] ।। ९७

कह्या दुनी पढ़सी, आप दिल विचार ।
चिठी लेसी पीछली हाथ में, केहेसी फैल[2] पुकार ।। ९८

फिरका जो तेहेत्तरमां, कह्या नाजो हक इलम ।
मोमन दिलों पर लुदंनी[3], लिख्या बिना कलम ।। ९९

तिन दिलों पर सूरज, ऊग्या मारफत ।
जिनो पाई अरस इलमें, हक की हिदायत ।। १००

---

१. दुर्दशा । २. कर्म । ३. *तारतम ।

रूहें फिरस्ते अरस के, सोई महंमद दीन ।
तिनमें सक सुभे नहीं, नूर पूर यकीन ॥१०१

ए जो बेसक महंमदी, सुंनत जमात ।
वाहेदत तन कुल्ल मोमन, छोड़ें न हाथों हाथ ॥१०२

वसियत—नामें आए के, इत करी पुकार ।
राह बीच की छोड़ बहत्तर हुए, छूट गया करार ॥१०३

नाजी फिरका हक इलमें, बेसक हुआ एक ।
मारफत माएना म्याराज का, सब पाया विवेक ॥१०४

वसियत—नामें में सखत, लिखे सौगंद खाए ।
सो कौन देखे नाजी बिना, दिल सों अरथ लगाए ॥१०५

सो नूर झंडा खड़ा कर, इत दिया देखाए ।
सो ईमान बिना देखे नहीं, पीछे रोसी पछताए ॥१०६

सो नूर झंडा खड़ा हुआ, बीच हिंदुस्तान ।
जित जबराईल ले आइया, न्यामत चारों कुरान ॥१०७

जिमी आरब से ल्याइया, दुनियां की बरकत ।
और न्यामत बड़ी ल्याया, फकीरों की सफकत ॥१०८

ए जो दुनियां बरकत, सो तो कह्या ईमान ।
और फकीरों की सफकत्त, सो आखर मेहेर मेहेरबान ॥१०९

उतथें उठाए जबराईल, ल्याया बीच हिंद ।
गिरो सितारे महंमदी, कहे जो सूरज चंद ॥११०

चांद सूरज दोऊ हादी कहे, महंमदी सूरत ।
कही गिरो सितारों की, खासलखास उमत ॥१११

सिपारे सत्ताईसमें, जाहेर कह्या रोसन ।
सो तुम देखो अरस दिलमें, जाहेर हक हादी मोमन ॥११२

कह्या बीच हिंद के, हक करसी हिसाब ।
खासलखास उमत, सब लेसी सवाब ॥११३

अव्वल कह्या रसूलें, कजा होसी इत ।
दीदार तब तिन होएसी, खोले हक मारफत ॥११४

सिपारे उनईसमें, लिख्या सूरज मारफत ।
सो दिल रोसन महंमद का, होसी खोलें हकीकत ॥११५

ज्यादा हुआ फुरमाए[1] से, जो कौल किया अव्वल ।
सो जोड़ देखो आयतों हदीसों, ले दिल अरस अकल ॥११६

और भी देखो साहेदी, ए जो लिखी आयत ।
ए जो किस्से कुरान के, आयतें सूरत ॥११७

और सुकन[2] बोलों नहीं, बिना हक फुरमाए ।
सोई देखेगा मोमन, जो दिल अरस केहेलाए ॥११८

महामत कहें ए मोमनों, देखो अपनी निसबत ।
असल तन अरसमें, जो हक की गैब[3] खिलवत ॥११९

॥ प्रकरण ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ ६१२ ॥

## बाब असराफील का

तो *असराफीलें आखर, कुरान को गाया ।
ऐसा बड़ा काम तो किया, जो आखर को आया ॥ १

तो रसूल ने अव्वल, ऐसा फुरमाया ।
सो अपनी सरत पर, फिरस्ता आखरी आया ॥ २

लिख्या फलाने सिपारे, ऐसी खुस[4] न कबूं आवाज ।
ए फिरस्ता कबूं न आइया, ए जो आया आज ॥ ३

जो कौल फुरमाया अव्वल, सो अब आए के किया ।
सूर बजाए दिल साफ से, सुकन सिर लिया ॥ ४

मगज जो मुसाफ का, जाहेर किया छिपाया ।
गाया खुस आवाजसों, कौल सिर चढ़ाया ॥ ५

---

१. कहे से । २. वचन । ३. छिपी । ४. प्रसन्न ।

लिख्या चारों पैगंमर, सरत अपनी आए ।
तिनों भी सिर हुकम, ल्याए हैं बजाए ॥ ६
पढ़ें किताबें अपनी, पैगंमर तीन ।
सो आए बीच आखर, ए जो हकीकी[1] दीन ॥ ७
आया *असराफील आखर, *महंमद *मेहदी साथ ।
मुसाफ असराफील को, दिया अपने हाथ ॥ ८
हुआ सोई सरत पर, पैगंमरों मिलाप ।
सो पढ़ें किताबें फुरमाए से, अपनी ले आप ॥ ९
एक तौरेत और अंजीर, तीसरी जो जंबूर ।
सोए किया सब जाहेर, छिप्या था जो नूर ॥ १०
एक *मूसा और रूहअल्ला[2], तीसरा जो *दाऊद ।
ए तीनों पैगंमर, आए बीच जहूद ॥ ११
ए किताबें जो आखरी, आखरी रसूल ल्याए ।
सो मगज मुसाफ जाहेर कर, असराफीलें गाए ॥ १२
सो साहेदी सिपारे चौंबीसमें, लिखियां ठौर ठौर ।
हक हादी मोमन बिना, जाने कौन और ॥ १३
म्याराज किन पर ना हुआ, पैगंमर आखरी बिन ।
और पैगंमर कै हुए, कै कहावें रोसन ॥ १४
पर ए जो अरस अजीम, रहें हमेंसा मोमन ।
ए रूहें नजीकी हक के, इनों अरस बीच तन ॥ १५
महंमद की हदीसमें, खबर दई भांत इन ।
कह्या सिरदार रूहअल्ला, बीच अरस रूहन ॥ १६
बीच बका लाहूत[3] में, जो हैं रूहें मोमन ।
तीन सूरत महंमद की, सो कहे एक तन ॥ १७

---

१. सत्य धर्म । २. ईसा (श्री देवचन्द्र) । ३. परमधाम ।

अव्वल सूरत एक बसरी, पीछे सूरत मलकी ।
कही तीसरी आखर, सूरत जो हकी ॥ १८

ए तीनों बातूनमें एक हैं, जो देखिए हकीकत ।
तब सबे सुध पाइए, होए बका मारफत ॥ १९

ए सबे बीच अरस के, कहावें वाहेदत ।
एक तन रूहें अरस की, हक हादी सूरत ॥ २०

और न कोई पोहोंचिया, बड़े अरस में इत ।
आगे जाए *जबराईल ना सक्या, कहे पर मेरे जलत ॥ २१

और हुए कै फिरस्ते, और कै पैगंमर ।
जिन किनों पाई बुजरगी, ना जबराईल बिगर ॥ २२

और सबे तावे कहे, जबराईल के ।
जिन देव या आदमी, या बुजरग फिरस्ते ॥ २३

खास उमत *महंमद की, जो कही अरस रब्बानी ।
दूजो गिरो फिरस्तन की, जो कही नूर मकानी ॥ २४

और बुजरग फिरस्ता आखरी, कह्या जो असराफील ।
किए जाहेर मगज मुसाफ के, सक सुभे न आड़ी खील ॥ २५

*असराफीलें बीच अरस के, सब हकीकत लई ।
सो मगज मुसाफ के, गाए के जाहेर कही ॥ २६

ना तो जबराईल महंमद पर, कलाम अल्ला ले आया ।
पर माएना छिपा जो मगज, सो असराफीलें पाया ॥ २७

देखो पैगंमर आखरी, रसूल केहेलाया ।
सो *असराफीलें गाए के, बातून सब बताया ॥ २८

कह्या पैगंमर आखरी, *असराफील भी आखर ।
ए जुदे क्यों होवहीं, देखो सहूर कर ॥ २९

असराफील फिरवल्या, अरस अजीम के मांहि ।
और *जबराईल जबरूत की, हद छोड़ी नांहि ॥ ३०

एक नूर और नूरतजल्ला, कहे ठौर दोए ।
ए नाहीं जुदे वाहेदत से, हैं बका बीच सोए ॥ ३१

एक जाहेर आम खास ज्यों, और अंदर खिलवत ।
ए सोई जानें हक अरस की, जाए खुली मारफत[१] ॥ ३२

जिनों खुले मगज मुसाफ के, माएने हकीकत ।
सक सुभे तिन को नहीं, जिनों हुई हक हिदायत ॥ ३३

सक सुभे क्योंए भाजे नहीं, हक इलम बिन ।
ना तो मिलो सब आदमी, या देव फिरस्ते जिन ॥ ३४

असराफील के अम लमें, सक सुभे नहीं कोए ।
क्यामत फल पाया इतहीं, मगज मुसाफी सोए ॥ ३५

आखर फल जो पावहीं, कहे सोई कुरान ।
दिन होवे तिन मारफत, हक अरस पेहेचान ॥ ३६

तो कह्या असराफील, आवसी आखर ।
सो फल लैलत कदर का, पाया तीसरे फजर ॥ ३७

लिखे सबों के मरातबें[२], ए जो बीच फुरमान ।
सोए जानें रूहें मोमन, या जानें हादी सुभान ॥ ३८

ए जो गिरो फिरस्तन की, जाको नूर मकान ।
रूहें बीच नूर तजल्ला, सूरत रेहेमान ॥ ३९

जबराईल आइया, सबों पैगंमरों पर ।
सो रह्या बीच नूर के, ना चल्या महंमद बराबर ॥ ४०

और कोई अरस अजीममें, पोहोंच ना सकत ।
जित हक हादी रूहें, *महंमद *तीन सूरत ॥ ४१

और मोमन बोल ना बोलहीं, एक *म्याराज[३] बिन ।
जिनपें इलम हक का, लुदंनी रोसन ॥ ४२

---

१. पूर्ण पहचान । २. दर्जे । ३. दीदार ।

सोई अरस हक का, हादी रूहों वतन ।
इत हक हादी रूहों सूरत, अरस के तन ॥ ४३

फिरस्ते अरस सूरत नहीं, जुदी इनों असल ।
पैदास कही फिरस्तन की, पेड़ से नकल ॥ ४४

रूहें असल हक कदमों, है अरसमें सूरत ।
तो कहे हक हादी रूहें, अरस की वाहेदत ॥ ४५

बीच अरस अजीम के, सूरत बका हक ।
मोमन हक इलम से, चीन्हें मुतलक[१] ॥ ४६

मोमन अरस रूहों जैसा, कोई नहीं बुजरक[२] ।
हक इलम यों केहेवही, इनमें नाहीं सक ॥ ४७

लिख्या अमेतसालूनमें[३], बड़ाई रूहन ।
देखो इत दिल देय के, निसाँ करो मोमन ॥ ४८

हक हादी वाहेदत बीच में, कहे जो मोमन ।
इलम कहे इनों सिफतें, और नाहीं सुकन ॥ ४९

सोई कहिए अरस वाहेदत, जो हैं हक की जात ।
हक हादी रूहों बीचमें, कोई और न समात ॥ ५०

पातसाही एक हक बिना, और नहीं कोई कित ।
दूजा हुकम कादर का, कै करत कुदरत ॥ ५१

सो करें जाहेर हक की, कै भाँतों सिफत ।
फानी छल झूठा नजरों, हुकमें देखत ॥ ५२

महंमद रूहों को देखाए के, करसी सब फना ।
आँखाँ खोलें ज्यों उड़ जाए, नींद का सुपना ॥ ५३

चौदे तबक की दुनियां, और जिमी अंबर ।
ऐसे खेल पैदा फना, होवें कै नूर नजर ॥ ५४

---

१. बिल्कुल । २. बड़ा । ३. एक अध्याय (कुरान) ।

फिरस्ते देव जिन आदमी, ए जो चौदे तबक ।
पैदा फना हो जात हैं, नूर के पलक ॥ ५५

कायम एक वाहेदत, हक की पातसाही ।
दूजी काहूँ कितहूँ, जरा कही न जाई ॥ ५६

देखाया रूहन को, देखो नौमें सिपारे ।
ए हक हादी रूहें निसबती, जो बंदे अपने प्यारे ॥ ५७

हक बिना जो कछू कहे, सो होवे मुसरक[१] ।
और जरा नहीं कहूँ कितहूँ, यों कहे इलम हक ॥ ५८

हुकमें देत देखाई, कुदरत पसारा ।
ए देखत सब पैदा फना, हक न्यारे[२] से न्यारा ॥ ५९

सिपारे ओगनतीस में, हकें लिख्या है जेह ।
सो देखो नीके कर, अपना दिल देय ॥ ६०

जब आई आयत हकीकत, तब पीछली करी मनसूख[३] ।
ए हुकम तोड़े सो क्यों देखे, जो फोड़ जमात हुए टूक टूक ॥ ६१

हादी देखाएँ भी तो देखे, जो दिल होए यकीन ।
सो सखत बखत ऐसा हुआ, जो छोड़ फिरे सब दीन ॥ ६२

न मानो सो देखियो, अगले अमल सरे दीन ।
मनसूख लिख्या सबन को, जो गए छोड़ यकीन ॥ ६३

लिख्या सिपारे तीसरे, होसी खोलें हकीकत ।
एक दीन होसी सबे, कही इन सरत ॥ ६४

दुनी राह न पावे रात की, जाहेर फना नाबूद ।
ऊग्या दिन मारफत का, सबों हुआ मकसूद ॥ ६५

दूर किए तारीकी[४] रात के, सितारा करता था मैं मैं ।
डुबाया मारफत सूरजें, नाबूद डूब्या मैं मैं से ॥ ६६

---

१. बहु देव पूजक । २. अलग । ३. रद्द । ४. अज्ञानान्धकार ।

सो सितारा सरियत[1] का, करता था रात की रोसन ।
सो नाबूद[2] हुआ देख सूरज, ऊगे मारफत दिन ॥ ६७

अरस बका देखाए के, करसी सबों हैयात ।
असराफील खोल मुसाफ, करसी सिफात[3] ॥ ६८

कलाम—अल्ला[4] का बातून, देखो हक इलम ले ।
महंमद सिफायत रूहों को, इनों करसी विध ए ॥ ६९

चारों किताबों के माएने, और माएने चारों वेद ।
लिख्या सबोंमें जुदा जुदा, क्यामत एकै भेद ॥ ७०

किताबें दुनियां मिने, कहूँ केती गिनती अनेक ।
तिन सबोंमें आखरी, कलाम—अल्ला विसेक ॥ ७१

तिन सब किताबों बीचमें, बिध बिध लिखी क्यामत ।
तिन सबों जिकर करी, आखर बडी सिफत ॥ ७२

*असराफीलें मुसाफ का, किया जाहेर खुलासा ।
तो हुआ ए नजीकी, खासों में खासा ॥ ७३

जिन देव या आदमी, या जिमी आसमान फिरस्ते ।
तीन सूरत महंमद की, हैं हादी[5] सिर सब के ॥ ७४

या जिमीन का तिनका, या बड़ा दरखत ।
कही सिर सबन के, *महंमद हिदायत ॥ ७५

जमाना खाली नहीं, बिना *महंमदी कोए ।
करत रोसन सबन में, चिराग[6] नबी की सोए ॥ ७६

इन बिध केहेवें हदीसें, और हक फुरमान ।
ले मगज माएना मोमन, सब बिध करें पेहेचान ॥ ७७

लिख्या आयतों सूरतों, और हदीसों माहिं ।
हादी इन महंमद बिना, और कोई किन सिर नाहिं ॥ ७८

---

१. कर्म कांड । २. सत्ता हीन । ३. सिफारिश । ४. कुरान । ५. सत्यगुरु श्री देव चन्द्र जी । ६. दीपक ।

तो अव्वल कह्या महंमद, और बीच आखर ।
खाली नहीं बिना खलीफे[१], महंमद के बिगर ॥ ७९

यों लिख्या बीच हदीस के, जो मैं काम करता हों अब ।
सो मैं आखर आए के, तमाम करोंगा सब ॥ ८०

मैं आऊँगा यारों वास्ते, खोलों नजूम मेरा मैं ।
मेरे कूंच[२] नजूमी कोई ना रह्या, मेरा नजूम[३] खुले मुझ से ॥ ८१

मोमन जिन जिन मुलकों, जुदी जुदी जुबाँ[४] ले आए ।
ताही जुबां से तिन को, *महंमद[५] दें समझाए ॥ ८२

नूर *महंमद कह्या हक का, दुनी सब महंमद नूर ।
जरा एक *महंमद बिना, नहीं काहूँ जहूर ॥ ८३

कही सूरत महंमद की, खावंद जमाने तीन ।
इन तीनों सिर खिताब, गिरो—रब्बानी[६] हकीकी दीन ॥ ८४

बसरी मलकी और हकी, ए तीनों एक सूरत ।
ए तीनों *महंमद की, बीच अरस वाहेदत ॥ ८५

और गिरो रूहें फिरस्ते, दोऊ कही अरस रब्बानी ।
माहें तीन सूरत *महंमद की, जिन मुरग बूंदें लै पेहेचानी ॥ ८६

ए तीनों सूरत दोऊ गिरो मिने, कहे जो सिरदार ।
ए सब हक इलमें, कर देखो बिचार ॥ ८७

ए दूजा खेल जो दुनियां, बीच जिमी आसमान ।
ए तो नाहीं कछुए, एक जरे भी समान ॥ ८८

लिख्या चौथे सिपारे, *चौदे—तबक[७] कहे जे ।
ए जरे जेता नहीं, दो टूक[८] होवें जिन के ॥ ८९

रात अंमल सरियत का, चल्या लुदंनी बिन ।
हक इलमें रात मेट के, किया जाहेर बका दिन ॥ ९०

---

१. राजा और धर्म गुरु । २. मृत्यु के बाद । ३. ज्योतिष । ४. भाषा । ५. आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथ । ६. ब्रह्म सृष्टि । ७. चौदह लोक । ८. टुकड़े ।

कह्या दिल महंमद का, सूरज मारफत ।
हकीकत खोले पीछे, होसी हक लज्जत ॥ ९१

एही लुदंनी हक इलम, करसी फजर[1] ।
देखसी मोमन अरस को, रूह की खोल नजर ॥ ९२

ए सिपारे उनईसमें, लिखी हकीकत ।
सो आए देखो नीके कर, जो कह्या दिन मारफत ॥ ९३

दरम्यान जो साया[2] कही, कह्या आगे ऊग्या दिन ।
सूरज दिल महंमद का, हुआ नूर रोसन ॥ ९४

ए जो चल्या बीच रात के, अमल सरियत ।
सो कहे दिल मजाजी, जो पैदा जुलमत ॥ ९५

अरस दिल मोमन कहे, सो दिल हकीकी जेता ।
रूहें फिरस्ते अरस से, इजने[3] उतरे तेता ॥ ९६

रूहें गिरो दरगाह बीच, अरस अजीम जेताई[4] ।
एही अरस दिल हकीकी, महंमद के भाई ॥ ९७

एही बीच वाहेदत के, खिलवत खुदाई ।
जो हक हादी रूहन की, नूर बका पातसाई ॥ ९८

अव्वल हादी रूहनसों, कौल हैं हक के ।
सोए लिखी रदबदलें, कहें आयतें हदीसें ए ॥ ९९

रूहें हमेसा रहत हैं, अरस बका दरगाह मिने ।
ए रदबदल हकसों, करी उतरते तिने ॥१००

अरस अजीम नूर बिलंद से, रूहें उतरीं जब ।
ए माएने आयत हदीस में, लिख भेज्या है तब ॥१०१

हक हादी रूहनसों, जो हुई मुकाबिल[5] ।
सो सुकन सब कुरानमें, लिखी रद—बदल ॥१०२

---

१. सुबह । २. परछांई । ३. हुक्म से । ४. जितने । ५. बराबरी ।

हकें लिख भेजी साथ हादी के, रूहों ऊपर इसारत ।
और कोई समझे नहीं, बिना हक वाहेदत ॥१०३

ए समझे कहिए तिन को, जो कोई दूसरा होए ।
ए बारीक बातें वाहेदत की, केहेते बंधाए सोए ॥१०४

ए सुकन बिना समझे, केहेते होए मुसरक ।
ए बारीक बातें खिलवत की, अरस की गुझ हक ॥१०५

ए बातून माएने हक के, जानें हादी मोमन ।
होए ना और किन को, बिना अरस के तन ॥१०६

दूजा तो कहूँ जरा नहीं, कहिए किन की बिध बात ।
कहें वेद कतेब और हदीसें, कुछ नहीं बिना हक जात ॥१०७

ए जो खुदी बीच दुनी के, मैं तैं करत ।
ए वेद कतेबों देखिया, जरा न काहूँ कित ॥१०८

लिख्या वेद कतेब में, ए चौदे तबक जे ।
बंझापूत[1] सींग—खरगोस[2], बोहोत भाँतों कह्या ए ॥१०९

बसरी मलकी और हकी, ए कही सूरत तीन ।
इनों किया हक इलम से, *महंमद बेसक दीन ॥११०

और भी करी बेसक, ए जो *सुंनत जमात ।
इनों लई सब दिलमें, बेसक अरस बिसात[3] ॥१११

तब हुआ रूहन का, हक अरस कलूब[4] ।
याही हक अरसमें, रूह नजरों मिले मेहेबूब[5] ॥११२

तब सुंनत जमात की, बातें सबे बनि आई ।
महंमद की तीन सूरतें, करी पूरी पनाही[6] ॥११३

अव्वल रोसन रसूल, रूहअल्ला आखर ।
गिरो पाक करी बीच इमामें, दुनी सचराचर ॥११४

---

१. बांझ का बेटा । २. (जो नहीं है) । ३. वस्तुएं । ४. दिल । ५. प्यारा । ६. शरण ।

तीन सूरत महंमद की, मिल फुरमाया किया ।
भिस्त खोल दुनी फानी[1] को, कायम सुख दिया ॥११५

चौदे तबक के बीचमें, तरफ न पाई किन ।
हादी गिरो अरस बीचमें, बैठाए इलमें कर रोसन ॥११६

सेहेरग से नजीक हक अरस, बीच हक इलम देवे बैठाए ।
ऐसा इलम[2] लुदंनी, *रूहअल्ला ले आए ॥११७

रूह अल्ला आप उतर, इलम ल्याए हक ।
तिन समझाई सब उमतें, हक कौल बेसक ॥११८

तीन सूरत महंमद की, मिल करी ऐसी सिफात ।
उमत पोहोंचाई दोऊ वतनों, दुनी सब करी हैयात[3] ॥११९

अव्वल भी *महंमद कह्या, बीच और आखर ।
*वेद *कतेब सबों कौलों, केहेवत योंहीं कर ॥१२०

हक कहे मुख अपने, महंमद मेरा मासूक ।
ए हक गुझ मोमन जानहीं, जो दिल आसिक हैं टूक टूक ॥१२१

महामत कहें ऐ मोमनों, रूहें आसिक इस्क वतन ।
बहस करी रूहों इस्क की, आसिक इस्क के तन ॥१२२

॥ प्रकरण ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ १०३४ ॥

**प्रकरण तथा चौपाइयों का सम्पूर्ण संकलन—प्रकरण ४९८, चौपाई १८०१०**

१. नश्वर । २. तारतम वाणी । ३. अमर ।

जो हक हुकम से भाई केसवदासने रिवाइत करी है। जो हादीने जुबांन मुबारकसेंती 'चौपाई' एक हजार चौतीस (१०३४) फुरमाई थी, सो यार मोमनोंने इसके बाब चौदे (१४) माफक अकल अपनी के गम दिल से बांध कर किताब तमाम करी। अब भाई मोमन इस चौपाइयों के हरफ हरफ के माएने मगज जाहेर के और बातून के, रूह की नजर खोलके लेंगे दिल अरसमें। और हक के बेसक इलम लुदंनीसों बिचारेंगे और फैलमें ल्यावेंगे, तबहीं हाल ले हादी के कदमों कदम धरेंगे। किस वास्ते के आखरके मोमन आकल हैं, और हिदायत हक की लई हैं। सब बिधों कामिल हैं। जिनके दिल अरस में सूरत खुदाए की ऊगी है। और ए कलाम भी हादी ने मोमनोंको कहे हैं। तो हुकम से मोमनों को जरूर सिर लेना है। तिस वास्ते जो कोई अरवा अरस अजीम की होए और इलम लुदंनीसों जाग्रत हुई होए। और हुकम मदत करे और हक हादी हिंमत देवें, तो सुरत हक हादी के कदमों बाँध के। इस फानी वजूद को उड़ावें। और बीच अरस अजीम के उठ खड़ी होए। और मिलाप हमेसगी का सुख लेवें। हादी ने दरवाजा बका का खोल्या है। केतेक यारों को लेय के आप अरस सिधारे। और अपने जो तन हैं, तिन को बुलावते हैं। ताकी साख ए चौपाई क्यामत नामें की—

**सुनत बिछोहा हादी का, पीछा साबित राखे पिंड।**
**धिक धिक पड़ो तिन अकलें, वह नाहीं वतनी अखंड॥**

और आज हमारे हादी को बीच परदेके हुए दो महीने और दस रोज हुए। सो आज हमारे मेहेबूब की साल गिरेका दिन है। याने जन्म उच्छव छेहंतरमा तमाम हुआ। पचहत्तर बरस और नौ महीने और वीस रोज। इस फानी के बीच हम गिरो रब्बानी के वास्ते। कै कसाले सेहे सेहे गुजरान किया। और कै न्यामतें बका की। इन रूहों के वास्ते जाहेर करी। सो कहाँ लों लिखों बानीमें जाहेर लिख्या है, जो देखेंगा तिनकी निसां होएगी। सदी महंमद सलिल्लाह अलेह वसल्लमकी अग्यारे सै और छे (११०६) महीना मुहर्रम, तारीख सत्ताईसमी (२७) पोहोर दिन चढ़ते और हिंदवी तारीख सम्वत सत्रह सै इक्यावन बरस (१७५१) भादरवा वदि चौदस (१४) वार गुरौ, पहर दिन चढ़ते किताब मारफत सागर तमाम हुई। हुकम हक हादी के सें—चौपाई एक हजार चौतीस (१०३४) मुकाम परनामें। लिखतंग गिरो रब्बानी की पांउं खाक हमेसा चाहत केसवदास की परनाम कोटान कोट डंडवत साथ सब को अविधारजोजी प्रीत की रीतसों झाझा सनेह प्यारसे।

**इति श्रीमहामति श्रीप्राणनाथजी की 'तारतम बानी' का**

**पन्द्रहवाँ ग्रन्थ**

## ॥ मारफत सागर संपूर्ण ॥

निजनाम श्री कृष्णजी, अनादि अक्षरातीत ।
सोतो अब जाहेर भए, सबबिध वतन सहित ।।

# ❋ छोटा क्यामतनामा ❋

### मोमन दुनीका बेवरा[1]

जो नूरपार अरस—अजीम[2], ए जो बेवरा क्यामत का ।
मोमन दुनी की तफावत[3], ए फना ओ बीच बका ।। १

जब लाहूत[4] से रूहें उतरीं, कह्या *अलस्तो बे रब्ब कुंम ।
नासूत[5] जिमीमें जाए के, जिन मुझे भूलो तुम ।। २

तब रूहों बले कह्या, हम भूलें नहीं क्योंए कर ।
तुम साहेद[6] किए रूहें फिरस्ते, पल रहे न सकें तुम बिगर[7] ।। ३

तुम खावंद हमारे सिर पर, अरस अजीम बका वतन ।
हम क्यों भूलें सुख काएम, तुमारे कदमों हमारे तन ।। ४

हकें कौल किया भेजों मासूक, तिन के साथ फुरमान[8] ।
भेज इलम लेऊँ जगाए, देसी रूह अल्ला सब पेहेचान ।। ५

हाथ रसूल के फुरमान, रूह अल्ला साथ इलम ।
हादी करावें हजूर बंदगी, खोले पट हक के हुकम ।। ६

तीनों सूरत *महंमद की, तिन जुदी जुदी करो पुकार ।
रूहें फिरस्ते लेवें सब साहेदियां, जो लिख भेजी परवरदिगार ।। ७

बसरी[9] मलकी[10] और हकी[11], ए तीनों के जुदे खिताब ।
एक फुरमान ल्याई दूसरी कुंजी, तीसरी खोले किताब ।। ८

---

१. वर्णन । २. परमधाम । ३. अन्तर । ४ परमधाम । ५. मृत्युलोक । ६. गवाह । ७. बिना । ८. आदेश । ९. मानवी (मुहम्मद सा०) । १०. ज्ञान के स्वामी (श्री देवचन्द्र) । ११. स्वयं परमात्मा (श्री प्राणनाथ) ।

लिख भेजी रमूजें[1] इसारतें, दो गिरो[2] तीन सूरत पर ।
दूसरा बका की न खोल सके, ए वाहेदत गुझ खबर ॥ ९

हजरत आएँ आया सब कोई, और ले चलेंगे सब ।
ए लिखियां जो इसारतें, फुरमाया फिरे न कब ॥ १०

चले *लैलत कदर से, *तकरार जो अव्वल ।
सो भेलें[3] दुनीके क्यों चले, जो उमत अरस असल ॥ ११

गिरो बचाई साहेब ने, तले *कोहतूर *हूद तोफान ।
बेर दूजी किस्ती पर, चढ़ाए उबारी सुभान[4] ॥ १२

अब आई बेर तीसरी, तिनका सुनो बिचार ।
पेहेचान बिना गिरो क्या करे, या यार या सिरदार ॥ १३

या अरस आपकी पेहेचान, या हक हादी रूहें निसबत ।
गिरो खासी उतरी अरस से, और दुनी पैदा जुलमत ॥ १४

दिल मोमन अरस कह्या, सैंतान दुनी दिल पर ।
क्यों गिरो दुनी भेली चले, भई तफावत यों कर ॥ १५

ना पेहेचान ना निसबत[5], दुनी गिरो असल दुसमन ।
एक हक न छोड़ें उमत, दुनी दुनियां बीच वतन ॥ १६

निसबत इन तफावत, भेलें चलें क्यों कर ।
दुनी जिमी गिरो आसमानी, दुनी के पाँऊँ गिरो के पर ॥ १७

एक ईमान दूजा इसक, ए पर[6] मोमन बाजू दोए ।
पट खोल पोहोंचावे लुदंनी[7], इन तीनों में दुनी पें न कोए ॥ १८

ए दुनी चले चाल वजूद की, उमत[8] चले रूह चाल ।
लिख्या एता फरक कुरानमें, दुनी उमत इन मिसाल ॥ १९

कह्या दुनियां दिल मजाजी[9], सो उलंघे ना जुलमत ।
दिल अरस हकीकी मोमन, ए कहे कुरान तफावत ॥ २०

---

१. भेद । २. ब्रह्म और ईश्वरीय सृष्टि । ३. साथ । ४. परमात्मा । ५. सम्बन्ध । ६. पंख । ७. तारतम ज्ञान । ८. ब्रह्म सृष्टि । ९. भौतिक ।

इनमें रूह होए जो अरस की, सो क्यों रहें दुनीसों मिल ।
कौल फैल हाल तीनों जुदे, तामें होए ना चल विचल ।। २१

जो मोमन देखें राह दुनी की, सो रूह नहीं अरस तन ।
दुनियाँ घर जुलमत[1] से, मोमन अरस वतन ।। २२

पेहेले चल्या सैयद[2] अकेला, तब तो थी सरियत ।
अब अकेले क्यों छोड़िए, गिरो पोहोंची दिन मारफत ।। २३

पेहेले एक जहूद बुजरग, तिन पीठ न छोड़ी महंमद ।
यार असहाब न चल सके, ताकी दे मसनवी[3] साहेद ।। २४

जहूद कहिए क्यों तिन को, जो करे ऐसे फैल ।
आगे हुआ सबन के, कदम छोड़ी ना महंमद गैल ।। २५

तिन खुली रूह नजर, जाए हकें बखसी बातन[4] ।
इन राह सोई चलसी, जो हक अरस दिल मोमन ।। २६

दिल मजाजी जो कहे, ताको अरस दिल कबूं न होए ।
सो आए न सके वाहेदत में, जिन दिल अबलीस कह्या सोए ।। २७

रसूलें राह बताई *मेराजमें, अरस लेसी सोई मोमन ।
देखाई चढ़ उतर, जो हकें खिलवत कहे सुकन ।। २८

मजकूर[5] करी *महंमद ने, हक हादी बीच रूहन ।
हकें कह्या उतरते रूहों को, सो सब मुसाफ करे रोसन ।। २९

जो पोहोंच्या इन खिलवतें, दिल हकीकी इन राह ।
इत दिल मजाजी आए ना सके, जित अबलीस[6] दिलों पातसाह ।। ३०

भूले करें जाहेरियों सिफत, सुध न परो बातन ।
मारफत सूरज ऊगे बिना, क्यों देखें बका अरस तन ।। ३१

तो दें बड़ाई जाहेर परस्तको, जो समझे नही हकीकत ।
हक इलम आए बिना, सो क्यों समझे मारफत ।। ३२

---

१. अज्ञानान्धकार । २. मुहम्मद सा० । ३. कुरान की आएतें । ४. अन्तर-दृष्टि । ५. चर्चा । ६. शैतान ।

सरियत करें फरज बंदगी, करें जाहेर मजाजी दिल ।
तरफ न पावे बका अरस की, ए फानी[1] बीच अंधेर असल ॥ ३३
दिन हकीकी जो मोमन, सो लें माएने बातन ।
हक इलम इसक हजूरी, रूहें चलें बका हक दिन ॥ ३४
फेर आए रसूल स्याम मिल, सोई फेर आए यार ।
देख निसबत पांचों दुनीमें, क्यों छोडें असल अरस प्यार ॥ ३५
कहें महंमद पेहेंले जब मैं चलों, यार आए मिलें खिन माहें ।
ए वाहेदत[2] को साहेदी, जाग्या जुदा रेहेंवे नाहें ॥ ३६
मैं अव्वल जो चलों, साथ आए मिलें सब कोए ।
तो सिफत दुनियां मिने, खासी गिरोकी होए ॥ ३७
इत मैं चलों जो अव्वल, कर यारोंसों सहूर ।
तो खूबी होए तेहेकीक[3], नूर पर नूर सिर नूर ॥ ३८
खूबी खुसाली अधिक, और ज्यादा सोभा संसार ।
ले प्याला रूह जगाए के, ल्यो इसक चलो हादी[4] लार ॥ ३९
पोहोंचें नहीं अंग दिल के, ताथें रूह अंग लीजे जगाए ।
तो लों आपा ना मरे, जोलों खुदी न देवे उड़ाए ॥ ४०
जब उठें अंग रूह के, सो तूं जागी जान ।
आई अरस अंग लज्जत, तिन पूरी भई पेहेंचान ॥ ४१
जो अंग होवे अरस की, उपजत नहीं अंग आहे ।
बारे हजार रूहन में, सो काहेंको आप गिनाए ॥ ४२
करवट लेंते सूते नीदमें, नाला[5] मारत जे ।
याद बिगर किएँ अंग आवहीं, स्वाद आसिक मासूक के ॥ ४३
जो होए आवे मोमन रूह से, सो कबूं ना और से होए ।
इत चली जो रूह जगाए के, सो सोभा लेवे ठौर दोए ॥ ४४

---

१. नश्वर । २. अद्वैत लीला । ३. निश्चित । ४. सतगुरू । ५. आवाज़ ।

देख बिछोहा हादी का, पीछा साबित राखे पिंड ।
धिक धिक पड़ो तिन अकलें, सो नहीं वतनी अखंड ॥ ४५

ए जाहेर देखावें दोस्ती, जाए रूह न अंदर पेहेचान ।
ए मोमन रूहें जानहीं, जाको अरस दिल कह्यो सुभान ॥ ४६

रूहें दम बिछोहा ना सहें, जो होए बका की असल ।
रूह हादी की चलते, अरवा आगूं हीं जाए चल ॥ ४७

दिल हकीकी रहे ना सकें, जो आया लुदंनी दरम्यान ।
दिल मजाजी[1] क्या करे, हुआ फरक जिमी आसमान ॥ ४८

कोई छोड़े ना अपनी असल, पोहोंचे सिफलीका[2] मलकूत ।
जबरूती जबरूत में, रूहें लाहूती लाहूत ॥ ४९

बेवरा लिख्या मुसाफ में, लिखे जुदे जुदे बयान ।
दिल मजाजी क्या समझे, जाको मुरदार कह्या फुरकान ॥ ५०

ए उपले पानी उजूसे[3], हुआ न कोई पाक ।
ए पानी न पोहोंचे दिलको, क्या होए ऊपर धोए खाक ॥ ५१

किताबों सबों यों कह्या, अरसें पोहोंचे रूह पाक ।
दिल मजाजी इन जिमी के, मिल जाए खाकमें खाक ॥ ५२

खाक कछू न पावहीं, रूह तो अपने बीच असल ।
कोई देखे सहूर[4] करके, तो पोहोंचे हादी कदमों नसल ॥ ५३

गुम हुई जिनोंकी अकलें, होए नजीक न तिनों हक ।
जान बूझ न छोड़े इन जिमी, तिन से रेहेनी न होए बेसक ॥ ५४

कदी केहेनी कहे मुख से, बिन रेहेनी न होवे काम ।
रेहेनी रूह पोहोंचावही, केहेनी लग रहे चाम ॥ ५५

केहेनी सुननी गई रातमें, आया रेहेनी का दिन ।
बिन रेहेनी केहेनी कछुए नहीं, होए जाहेर अरस बका तन ॥ ५६

---

१. इहलोक । २. आम जीव । ३. शुद्धि । ४. समझ ।

केहेनी करनी चलनी, ए होंए जुदियां तीन ।
जुदा क्या जाने दुनी कुफरकी, और ए तो इलम आकीन ।। ५७

अरस सब जाहेर हुआ, नूर तजल्ला हक ।
*रूहअल्ला *महंमद *मेहेदीने, उड़ाए दई सब सक ।। ५८

सूर ऊग्या *मारफत का, *महंमद मेहेदी दिल ।
नूर अंधेर जुदे हुए, जो रहे थे रातके मिल ।। ५९

कुफर[1] और ईमान की, सुध न थी बीच रात ।
अब सुध परी सबन को, जाहेर हुई हक जात ।। ६०

ना सुध मोमन मुसलिम, न सुध काफर मुनाफक[2] ।
सो सुध हुई सबन को, किया बेवरा -इलम हक ।। ६१

हक इलम मारफत का, जाहेर किया नबी दिल नूर ।
कुफर काढ़ ईमान दिया, ऊग्या दिल मोमन अरस सूर ।। ६२

खोली इलमें सब किताबें, या *कतेब या *वेद ।
सब खोले मगज[3] मुसाफ के, माहें छिपे हुते जो भेद ।। ६३

जेता कोई पैगंमर, सो सब जहूदों माहें ।
इसलाम मोमन सब याही में, कोई जाहेरियों में नाहें ।। ६४

जाकी करे मुसाफ सिफतें, औलिए[4] अबिए[5], पैगंमर ।
सो हुए सब जहूदों मिनें, जो देखे बातून[6] सहूर कर ।। ६५

जिने लिए माएने बातून, हुआ पैगंमर सोए ।
उमत औलिए अंबिए, बिन बातून न हुआ एक कोए ।। ६६

जाहेरी बड़े जानें आपको, और समझें नहीं हकीकत वतन ।
हक इलम आया नहीं, तोलों होए नहीं रोसन ।। ६७

कह्या जाहेर माहें दुनियां, और बातून माहें हक ।
ए वेद कतेब पुकारहीं, हक इलम कहे बेसक ।। ६८

---

१. अधर्म । २. नास्तिक । ३. गूढ़ार्थ । ४. ज्ञानी । ५. अवतार । ६. भावार्थ ।

ए नूर जाहेर तो हुआ, जब कुराने खोली हकीकत ।
रात मेटके दिन किया, सो दिल महंमद सूर मारफत ।। ६९

कौल किया हकें रूहों सों, बीच बका बतन ।
सो साएत आए मिली, जाहेर हुआ अरस तन ।। ७०

एक खुदी[1] थी दुनी में, दूजी सुभे[2] सक ।
करते फैल तरफ हवा के, पीठ दिए अरस हक ।। ७१

सो खुदी काढी जड़मूल से, हुए जाहेर हक इलम ।
सक सुभे कछू न रही, हुई सब में एक रसम ।। ७२

जुदी जुदी जातें कहावहीं, फेल करते जुदे नाम धर ।
सो रात मेटके दिन किया, हुई जाहेर सबों फजर ।। ७३

जिनों खुली नजर रूह की, सोई पोहोंचे अरस हक ।
जिनों छूटी न नजर जाहेरी, सो पड़े दुनी बीच सक ।। ७४

जिनों खुली हकीकत मारफत, सो सहे ना बिछोहा खिन ।
और हक इलम खोल्या आखरी, ए बीच असल अरस तन ।। ७५

जो जाग उठ बैठा हुआ, जगाया हक इलम ।
सो हादी बिना पल एक ना रहे, छोड़ न सके कदम ।। ७६

सब साहेदी दई जो हदीसों, और अल्ला कलाम ।
सो साहेदी ले पीछा रहे, तिन सिर रसूल न स्याम ।। ७७

जिनों लुदंनी पोहोंचिया, लिया बका अरस भेद ।
सो क्यों गिरोसों जुदा परे, जाए परे कलेजें छेद ।। ७८

जाए खुली हकीकत[3] मारफत[4], पाई अरस पेहेचान ।
सो क्यों सहे बका बिछोहा, जिनों नीद उड़ी निदान ।। ७९

ए पोहोंच्या मता सब रूहों को, जब पोहोंचाया इलम हक ।
इत सक जरा ना रही, पोहोंच्या हक बका मुतलक[5] ।। ८०

---

१. अहंकार । २. शंकाएं । ३. यथार्थ ज्ञान । ४. पहचान । ५. नितान्त ।

जाको हक इलम पोहोंचिया, तिन हुआ सब दीदार ।
अंतर कछुए ना रह्या, वह पोहोंच्या नूर के पार ॥ ८१

जाको हक इलम आया नहीं, ताए पट रह्या अंतराए[1] ।
हक नजीक थे सेहेरग से, तहां से दूर ले गए उठाए ॥ ८२

रूह ठौर है रूह के, ए जो लेती इत दम ।
सो गया असल जुलमतें, जिनों सुध परी ना हक कदम ॥ ८३

लिया लुदंनी जिनने, सो क्यों सोवे कबर माहें ।
जिनें मूल सरूप देख्या अपना, उठ जागे सोवे नाहें ॥ ८४

वाको तो फजर हुई, हुआ बका[2] सूरज दीदार ।
मिल्या कौल अव्वल का, जो किया था परवरदिगार ॥ ८५

जो उठी *क्यामत को, सो क्यों सोवे ऊगे दिन ।
आया असल तन में, बीच बका वतन ॥ ८६

जो कदी वह आगे चली, जिमी बैठी वह जिमी माहें ।
पांचों पोहोंचे पांचोंमें, रूह अपनी असल छोड़े नाहें ॥ ८७

यों इलम समझावते, जो कोई न समझत ।
तिन मजाजी दिल पर, जिन करो नसीहत[3] ॥ ८८

काफर मुसलिम मोमन, जो ए जुदे न होते तीन ।
तो अरस तन और जिमीके, क्यों पाइए कुफर आकीन ॥ ८९

अरस बका तन मोमन, दुनियां फना जिमी तन ।
ताकी केहेनी रेहेनी क्यों होवे, क्यों होए एक चलन ॥ ९०

जो हक अरस दिल मोमन, मिल के करो सहूर ।
कही जिमी तले की दुनियां, रूहें नूर पार तजल्ला—नूर[4] ॥ ९१

मोमन और दुनीअ के, चाहिए सब विध जुदागी ।
दुनियां पैदा जुलमत से, रूहें उतरी अरस अजीम की ॥ ९२

---

१. दूरी । २. अखंड । ३. शिक्षा । ४. परमधाम ।

ए सब बातें याद राखियो, फल बखत आखरत ।
चलते फरक जो ना होवे, तो रूहों की क्यों करें हक सिफत ।। ९३

मर मर सब कोई जात हैं, चाहिए मोमनों मौत फरक ।
दुनियां बीच गफलत[१] के, मोमन जागें दिल अरस हक ।। ९४

जो रूह होसी मोमन, चल्या चाहिए सावचेत ।
कह्या काफर स्याह मुंह आखर, मुख मोमन नूर सुपेत ।। ९५

मेला मजाजी दिलों का, ए चले बांधी जात कतार ।
ए अरस दिल हकीकी जीवते, क्यों चलें भांत मुरदार ।। ९६

बीच फना जीवों के, क्यों रहें बका अरस तन ।
पल इनमें रेहे ना सकें, जिन सिर बका वतन ।। ९७

जो दुनियां दिल मजाजी, या उनके सिरदार ।
ना पोहोंचें फना बका मिने, ए हक कौल[२] परवरदिगार[३] ।। ९८

मोमन उतरे नूर बिलंदसे, ए दुनी पैदा जुलमत ।
सांच भूठ क्यों मिल सके, क्यों रास[४] आवे सोहोबत ।। ९९

सांचे सांचा मिल चलें, मिले भूठा भूठों माहें ।
जो जैसा तैसी सोहोबत, इनमें धोखा नाहें ।।१००

अरस दिल मोमन कह्या, दुनी दिल पर अबलीस ।
ए सैतान दोस्त न किसी का, जो काट देवे कोई सीस ।।१०१

लाहूत बका फना नासूत, ए तोल देखो दोए ।
चरकीन[५] जिमीसें निकसके, क्यों न लीजे बका खुसबोए ।।१०२

जान बूभके भूलिए, इलम पाए बेसक ।
देखो दिल बिचार के, क्यों राजी करोगे हक ।।१०३

जीवते मारिए आपको, यों सबद पुकारत हक ।
जो जीवते न मरेंगे मोमन, तो क्या मरेंगे मुनाफक[६] ।।१०४

१. बेसुधि । २. वचन । ३. परमात्मा । ४. अनुकूल । ५. त्याज्य । ६. कपटी ।

फुरमाए कलाम सब रूहों को, ए मोमन करें सहूर ।
इन अंधेरी से निकस के, क्यों न जैए पार नूर ॥१०५

हक हुकम हादी चलावते, क्यों न लीजे अरस राह ।
मूल सरूप ले दिलमें, उड़ाए दीजे अरवाह[१] ॥१०६

चलना सबों सिर हक है, ए जान्या सबों तेहेकीक[२] ।
पर आप बस कोई न चल्या, चले एक दूजेकी लीक ॥१०७

जो कोई इत जागिया, सो क्यों चले पर—वस ।
सब सावचेत सुरत बांधके, बीच उठिए अपने अरस ॥१०८

जो जागी इत होएसी, तिनका एही निसान ।
मूल सरूप ले सुरतमें, पट खोलिए कर पेहेचान ॥१०९

भला कहे दुनियां मिने, न भूलिए अपने तन ।
हक हादी रूहें बीच खिलवत[३], उठिए बीच बका वतन ॥११०

जो मसलहत[४] कर चलिए, अरस रूहें मिल कर ।
अपनी जुदाई दुनी से, सो क्यों होए इन बिगर ॥१११

अपनी जुदाई दुनी से, किया चाहिए जहूर ।
दोऊ एक राह क्यों चलें, वह अंधेरी एह नूर ॥११२

महामत कहें सुनो मोमनों, मेहेर हककी आपन पर ।
सब अंगों देखो तुम, तब खुले रूह नजर ॥११३

॥ प्रकरण ॥ १ ॥ चौपाई ॥ ११३ ॥

॥ बाब पैगंमरोंका

जेते पैगंमर भए, जिनों पोहोंचाया हक पैगाम[५] ।
पाई *जबराईल से[६] बुजरगी, जो पोहोंच्या नूर मुकाम[७] ॥ १

हकीकत कुरान की, सो पोहोंची ठौर नूर ।
आगे हक के दिल की, सो मारफतमें मजकूर ॥ २

---

१. रूह । २. निश्चित । ३. एकान्त बैठक (मूल मिलावा) । ४. सलाह । ५. सन्देश ।
६. परमात्मा का जोश । ७. ठिकाने ।

हुआ *मेराज *महंमद पर, तिनमें बका सब बात ।
*महंमद पोहोंच्या हजूर, तहाँ देखी हक जात ॥ ३

देखे मोती[1] पूर नूर से, कह्या मुंहपर कुलफ[2] तिन ।
इन कुलफ को खोलेगा, तेरा दिल रोसन ॥ ४

गुनाह तेरी उमत का, कुलफ मुंह मोतिअन ।
देख दाहिने हाथ पर, जो हक मुख कहे सुकन[3] ॥ ५

किस वास्ते फिकर करे, देख दाहिने हाथ पर ।
कुलफ मोतियोंके मुंह पर, सब नूर आया महंमद नजर ॥ ६

हकें कह्या गुनाह किया उमतें, कह्या कुलफ ऊपर दिल ।
ए जो दई फरामोसी[4] खेलमें, जो उतरते मांग्या रूहों मिल ॥ ७

कहूं पेहेले जंगल जरी जवेर, रोसन नूर झलकत ।
जोए किनारें दरखत, पाक खुसबोए बेहेकत ॥ ८

देख्या हौज अरस का, देहुरियाँ गिरदवाए ।
और जंगल पूर मोतिन से, दिया महंमद को देखाए ॥ ९

इहाँ लग साथ जबराईल, पोहोंच्या इन मकान ।
कहे आगे मेरे पर जलें, चढ़ सक्या न चौथे आसमान ॥ १०

महंमद की बुजरगी, बीच इन कलाम ।
और कही हकीकत, आखर आवने *ईसा इमाम ॥ ११

पाया बीच नासूत के, हजरत—ईसे[5] दीदार ।
दई कुंजी बका की, देखे *लैलतकदर तीन तकरार ॥ १२

हक बैठे आए अंदर, पट अरस दिए सब खोल ।
जो कही मारफत महंमदें, सो रूहअल्ला कहे सब बोल ॥ १३

जो हुकमें किए नबिएँ जाहेर, दूजे रखे रसूल पर अखत्यार ।
और गुझ रखे जो तीसरे, सो कहे रूहअल्ला कर प्यार ॥ १४

१. (ब्रह्मात्माएँ) । २. ताला (खामीयाँ) । ३. वचन । ४. बेसुधि । ५. (श्री देवचन्द्र जी) ।

अब कहूँ रूहअल्लाह को, जिन दई महंमद साहेदी ।
मेरा दिल उनसे रोसन हुआ, पाई न्यामत बका दोऊ की ।। १५

जित जबराईल ना चल सक्या, आगे परे न पाए ।
सोए ठौर देखे सबे, बरकत रूहअल्लाए ।। १६

हौज जोए आई नजरों, और नूर—जलाली[1] हद ।
इलम ईसे के देखाया, और मुसाफ हदीस महंमद ।। १७

और जो मजकूर[2] हुई अंदर, कौल कहे इसारत ।
ए साहेदी हादी मोमन बिना, तो ए किनकी को खोलत ।। १८

देखी सूरत अमरद[3], तासों किया मजकूर ।
सोए दुनीमें महंमदें, सब म्याराजें किया जहूर ।। १९

दुनियां चौदे तबकमें, जाकी तरफ न पाई किन ।
सो सब मेराजमें, रसूलें करी रोसन ।। २०

पर ए बानी सो समझे, जो पोहोंच्या होए इन मजल[4] ।
और क्यों समझें ए माएने, जो इन राहमें जात हैं जल ।। २१

इत पोहोंच्या ईसा रूहअल्लाह, सो भी महंमद की सूरत ।
ताको हकें कही रूह अपनी, जाको खावंद खिताब आखरत ।। २२

महंमद कहे ईसा आवसी, और महंमद मेहेदी इमाम ।
मार दज्जाल[5] कुफर दुनी का, एक दीन[6] करसी तमाम ।। २३

एक दीन तब होवही, जब साफ होवे सब दिल ।
ए हक बिना न होवही, जो चौदे तबक आवें मिल ।। २४

सोए खिताब *रूहअल्लाका, यातो *महंमद सिर खिताब ।
या तो सिर *इमाम के, जो आखर खोलसी किताब ।। २५

सोई खोले ए माएने, जिन लई मजल इन ठौर ।
ए बानी वाहेदत की, दूजा केहेते जल मरे और ।। २६

१. अक्षर ब्रह्म । २. चर्चा । ३. किशोर । ४. मंजिल । ५. शैतान । ६. धर्म ।

ए जो औलाद आदम की, दिल मजाजी[1] ऐसा दुसमन ।
पूजत सब हवा को, सो क्यों सुनी जाए फुरकान[2] इन ॥ २७

हक महंमद मोमन मुसाफ, ए पेहेचान होसी जब ।
झूठ सांच दोऊ मिल रहे, पाउ पलमें जुदे होसी तब ॥ २८

ए सब पैदा *महंमदके नूरसे, अव्वल आखर सोई नूर ।
एक साएत न खाली नूर बिना, तब दुनी देखे जब होसी जहूर ॥ २९

सिर खिताब जमाने खावंद, सो करसी मुसाफ[3] जहूर[4] ।
झूठ दूर होए रात अंधेरी, सब देखें हक अरस ऊगे सूर ॥ ३०

सब की जुबांसे महंमद, सब पर करसी हिदायत ।
ए सुकन लिखे सब किताबों, पर क्यों समझे दम गफलत ॥ ३१

अव्वल आखर बीच महंमद, इत सब जाने दुनी कलाम ।
हकें मासूक कह्या महंमद को, सो क्यों समझे दुनी आम ॥ ३२

जेता कोई रूह मोमन, जाए पोहोंच्या हक इलम ।
सो बात समझे हक अरसकी, जिन दिल पर लिख्या बिना कलम ॥ ३३

और जाहेर दिल जो मजाजी, सो भी कहे गोस्त टुकड़े ।
सो क्यों सुनसी केहेसी क्या, जो कहे अंधे बेहेरे मुरदे ॥ ३४

दिल मोमन अरस कह्या, उतरे भी अरस से ।
हक बैठक इनों दिल पर, ए सिफत न आवे जुबांमें ॥ ३५

कह्या दुनी निकाह अवलीससे, दिल मजाजी तिन पैदास ।
जेती औलाद आदम की, पूजे हवा चले लिबास[5] ॥ ३६

कह्या महंमद हक के नूर से, नूर महंमद के मोमन ।
हक हादी रूहें वाहेदत, इत मिले न दूजा सुकन ॥ ३७

कहें तिहत्तर फिरके महंमद के, एक नाजी नारी बहत्तर ।
नाजीको हिदायत हक की, खड़ा बीच राह के पर ॥ ३८

---

१. इह लोक । २. कुरान । ३. धर्म ग्रंथ । ४. प्रकटी करण । ५. वेष देखते हैं ।

और तफरका[1] भए, चले कौल तोड़ कर ।
दाएँ बाएँ चलाए दुसमनें, मारे गए हक बिगर ॥ ३९

मेराज हुआ महंमद पर, कोई और न आया ढिग इन ।
सो आखर ईसा इमामें, किए मेराजमें सब मोमन ॥ ४०

खूबियाँ आखर बखत की, किन मुख कही न जाए ।
खूबी कहिए तिन की, जो सबद माहें समाए ॥ ४१

अव्वल जमाने के सैयद, ओर बड़े केहेलाए पैगंमर ।
पर सो बराबरी कर न सके, जो आई उमत[2] महंमद की आखर ॥ ४२

लिख्या सब कुरान में, माएने मगज सबद ।
क्या जाने अव्वल कतार ज्यों, दुनी बांधी जाए माहें हद्द ॥ ४३

रूहअल्ला मुरदे उठावत, हक का हुकम ले ।
आखर अपने हुकम उठावहीं, मोमन महंमद के ॥ ४४

इन बिध लिख्या जाहेर, तो भी देखे ना खुलासा ।
सब बोले फनामें रात को, किया उमतें फजर बका ॥ ४५

जो लिखी सबे बुजरगिआं[3], सो सब बीच आखर ।
सो गिरो नाजी महंमद की, लिखे नामे याके फैलों पर ॥ ४६

अव्वल आखर क्यामत लग, कह्या नूर चढ़ता नबी का ।
खाली न जमाना महंमद बिना, ए बीच मुसाफ हदीस लिख्या ॥ ४७

ए जाहेर करे सोई बुजरगी, कह्या जिनका दिल अरस ।
आखर सोई नजीकी मोमन, जो अरस—मता[4] के वारस[5] ॥ ४८

मोमन उतरे नूर बिलंदसे, कौल किआ हकसों जिन ।
कह्या रसूल तुम पर आवसी, सो करसी तुमें चेतन ॥ ४९

और भेजोंगा फुरमान, सब इतकी हकीकत ।
और इसारतें रमूजें, मासूक देसी तुमें मारफत ॥ ५०

---

१. पृथक । २. ब्रह्म सृष्टि । ३. बड़ाइयां । ४. ब्रह्म ज्ञान । ५. उत्तराधिकारी ।

दुनिया पैदा कलमे कुंन से, असल उनों जुलमत ।
जिन मिल जाओ तिन में, तुम हादी मुझसे निसबत[1] ।। ५१

तुम आपमें रहिओ साहेद, और गवाही फिरस्ते ।
मैं भी साहेद तुम में, तुम जिन भूलो सुकन ए ।। ५२

याद कीजो मेरे अरसको, और निसबत हक हादी ।
इलम देऊँ मैं अपना, जासों सक रहे न जरे की ।। ५३

खेल किया तुम वास्ते, ज्यों बाजीके कबूतर ।
जिन मिल जाओ तिनमें, ओ तुम नहीं बराबर ।। ५४

हांसी इसही बात की, मेरा इलम तुमकों जगाए ।
तुम बका[2] करोगे दम—खेलके[3], पर सकोगे न आप उठाए ।। ५५

ऐसा फरेब देखावसी, तुम हूजो खबरदार ।
तुम जिन भूलों आप अरस मुझे, मैं तुमारा परवरदिगार ।। ५६

हम कबूं न भूलें तुमको, बैठेंगे पकड़ कदम ।
हम तुमारे ऐसे आसिक, तुमें छोड़ें नहीं एक दम ।। ५७

तुम साहेब हमारे ऐसे मासूक, हम ऐसे तुमारे आसिक ।
तुमकों क्यों हम भूलेंगे, और देओगे इलम वेसक ।। ५८

ए तो बड़ी हांसी कोई खेलमें, जो ऐसी होए हमसे ।
मोमन रहिओ साहेद[4], ए हक कौल करत हममें ।। ५९

लिख्या इन बिध जाहेर, तो भी पावें न खेल कबूतर ।
अकल न पोहोंचे इनोंकी, सो भी लिख्या लिखन—हारे यों कर ।। ६०

सबद लिखे जो बुजरगों, सो सब आखरी उमत का ।
रात सबद सब फनाके, सबद आखरी दिन बका ।। ६१

सो ए बड़ाई सब उमतकी, जो कही महंमदकी आखर ।
वह खावंद कहे खेलके, ए खेलके कबूतर ।। ६२

---

१. सम्बन्ध । २. अखंड । ३. नश्वर जीव । ४. गवाह ।

एता फरक कह्या जाहेर, तो भी करें इनकी सर—भर[१] ।
वह फरक मुरदे ज्यों जीवते, पर क्या करें अकल बिगर ॥ ६३

फुरमान ल्याया हकका, महंमद आया किन ऊपर ।
एती खबर किने ना करी, जोलो हुई आखर ॥ ६४

बीती सदी अग्यारहीं, ल्याये रसूल फुरमान ।
बड़े उल्मा[२] आरफ कहावहीं, पर पड़ी न काहूं पेहेचान ॥ ६५

पढ़सी को फुरमान को, लेसी को हकीकत ।
कलाम अल्ला को खोलसी, को लेसी हक मारफत ॥ ६६

जोलों फुरमान खोल्या नहीं, तोलों रात है सब में ।
एही फुरमान करसी फजर, जब लिया हाथ हादीने ॥ ६७

कौल तोड़ जुदे किए कुफरें, मेटे मसी[३] तफरका ।
एक दीन तब होएसी, दिन ऊगे अरस बका ॥ ६८

ए अव्वल कह्या महंमदने, आए ईसा मारसी दज्जाल ।
साफ दिल होसी सबों, कराए दीदार नूरजमाल ॥ ६९

इमाम इमामत उमतकी, करसी अरस अजीम ऊपर ।
ए होसी हैयाती सेजदा, तब हुई तमाम फजर ॥ ७०

जो अरससे रूहें उतरीं, तामें था रूहअल्ला सिरदार ।
कह्या तुम पर रसूल भेजोंगा, हकें यों कौल किया करार ॥ ७१

इन विध लिख्या जाहेर, पर किने न किया बयान ।
ए होए तिनहीं से जाहेर, हकें जिन पर भेज्या फुरमान ॥ ७२

खिताब रसूली महंमद पर, तमामी आखरी मेहेदी खिताब ।
ए ले इलम आखरी हकका, महंमद मेहेदी खोले किताब ॥ ७३

फुरमान हकें लिख भेजिया, दिया हाथ रसूल के ।
रूह अल्ला पर भेजिया, किन खबर न पाई ए ॥ ७४

---

१. बरावरी । २. विद्वान । ३. सत्यगुरु श्री देवचन्द्र जी ।

ए आगे फुरमाया रसूलें, कौल तोड़ होसी तफरका।
एक नाजी बहतर नारी लिखे, पर किन पाया न खुलासा[1] ॥ ७५

कौल सोई तोड़ेंगे, जिनों होसी मजाजी दिल।
होसी जुदे बुजरगी वास्ते, कह्या फिरसी फिरके मिल मिल ॥ ७६

जाहेर लिख्या मिस्कातमें[2], मैं डरों पीछले इमामों से।
गुम राह करसी दुनी को, ऐसे बुजरग होसी आखरमें ॥ ७७

होसी दिल सैतान का, और वजूद आदमी का।
लोहू सैतान ज्यों बीच वजूद, ए बीच हदीस लिख्या ॥ ७८

तरफ चारों बीच वजूद के, लिख्या विध विध कर।
यों दुनी निगली सैतान ने, एक हकें मोमन बचाए फजर ॥ ७९

भांत भांत आलम में, रसूलें करी पुकार।
बिना मोमन कोई न कादर, जो सुनके होए हुसियार ॥ ८०

जिन विध लिख्या कुरानमें, हदीसों में भी सोए।
ए अरस दिल मोमन जानहीं, जो नूर बिलंदसे उतरया होए ॥ ८१

आखर खिताब सिर रसूलें,[3] दूजा सिर *मेहेदी इमाम।
इन विध खावंदी रूहअल्लाहकी, ए तीनों एक दीन करसी तमाम ॥ ८२

ए अव्वल कह्या रसूलें, पर क्यों पावे मजाजी दिल।
ना बूझें हक हादी रूहोंकी, जो चौदे तबक मथे मिल ॥ ८३

कहि कहि रसूलें फेर कही, ज्यों समझें सब कोए।
ए बूझे हक हादी रूहें, और बूझे जो दूसरा होए ॥ ८४

कहे हादी हक इलमसे, ज्यों एक हरफें बूझे सब बयान।
पर नफस[4] मजाजी क्या जानही, जाके दिल आँख बुध न कान ॥ ८५

जो रूह होवे अरस अजीमकी, नूर बिलंदसे उतरी।
सोई समझे हक इसारतें, और खबर न काहूँ परी ॥ ८६

---

१. स्पष्टीकरण। २. एक किताब। ३. आखिरी मुहम्मद (श्री प्राणनाथ)। ४. इन्द्रिय।

ना तो इन बिध कही जो रसूलें, ज्यों सबों समझी जाए ।
जाको असल ना दिल अकल, तिन हक कौल क्यों समझाए ।। ८७

जो हक मुख आपें कही, करता हों इसारत ।
सो हकको हादी बिना, और न कोई समझत ।। ८८

हकें लिखे समझ इसारतें, या ल्याया समझे सोए ।
या समझें आई जिन पर, और बूझे जो दूसरा होए ।। ८९

तो एते दिन बूझी नहीं, साल बीते नब्बे हजार पर ।
क्यों समझे औलाद आदमकी, हक दिल छिपी खबर ।। ९०

निकाह हवासों[1] कही *आदमकी, निकाह अबलीस औलाद—आदम[2] ।
पूजे हवा खाहिस ले अपनी, जेता बुजरग आदम हर दम ।। ९१

तो रही छिपी बीच्र फुरमानके, निकाह अबलीस सोहोबत अकल ।
सो क्यों पावें मगज मुसाफका, कहे मुरदे मजाजी दिल ।। ९२

जिन गेहूँ खाया कौल तोड़के, आदम तिन नसल ।
सो क्यों पावें रमूजें[3] हकको, जो लिख्या बीच्र अरस असल ।। ९३

ए फुरमान रूहअल्ला पर, ल्याया हकका रसूल ।
इमाम खिताब खोले किताब, परे न मारफत भूल ।। ९४

खोली अग्यारहीं सदी मिनें, ए जो किताब फुरकान ।
मार दज्जाल करे एक दीन, मिलाए क्यामत निसान ।। ९५

इमाम *मसी मिल रसूल, मार दज्जाल करसी फजर ।
रोज *फरदा सदी बारहीं, खोली बातून उमत नजर ।। ९६

काफर कौल क्यामत के, जानते थे झूठ कर ।
सो सरत महंमद की सत हुई, अग्यारहीं सदी आखर ।। ९७

कोई एक कौल महंमद का, हुआ न चल—बिचल[4] ।
पर क्यों बूझें औलाद आदमकी, जिनकी अबलीस नसल ।। ९८

---

१. माया । २. मानव । ३. भेद । ४. असत्य ।

साँचे कौल महंमदके, फिर—बले सब पर ।
जो कछू कह्या सो सब हुआ, पर समझे नहीं काफर ॥ ९९

दीदार हुआ मुरदे उठे, आए हक इलम ।
भिस्त दोजख कही त्यों हुई, किया हिसाब चलाए हुकम ॥१००

कौल केतेक आए मिले, और केतेक हैं मिलने ।
भूल परे ना किसी कौलकी, रसूलें कह्या तिनमें ॥१०१

निसान मिले सब बातून, अब जाहेर होसी सब ।
*दाभतल अरज काफरों, स्याह मुंह करसी तब ॥१०२

जब खोले मगज[1] मुसाफके[2], द्वार हकीकत मारफत ।
एही दिन ऊगें होसी जाहेर, देखसी दुनी क्यामत ॥१०३

महामत कहें ऐ मोमनों, जिन जागी भूलो कोए ।
राह अरस इसक न छोड़िए, ज्यों सोभा लीजे ठौर दोए ॥१०४

॥ प्रकरण ॥ २ ॥ चौपाई ॥ २१७ ॥

॥ प्रकरण तथा चौपाइयों का संपूर्ण संकलन—प्रकरण ५००, चौपाई १८२२७ ॥

इति श्रीमहामति श्रीप्राणनाथजी की 'तारत्तम बानी' का सोलहवाँ ग्रन्थ ( भाग १ )

## ॥ छोटा क्यामतनामा संपूर्ण ॥

१. गूढ़ार्थ । २. धर्म ग्रन्थ ।

निज नाम श्री कृष्ण जी, अनादि अक्षरातीत ।
सोतो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहित ।।

# ❋ बड़ा *क्यामतनामा ❋

खास उमतसों कहियो जाई, उठो मोमनों *क्यामत आई ।
केहेतीहों माफक[1] कुरान, तुमारे आगे करों बयान ।। १

जो कोई खास उमत सिरदार, खड़े रहो होए हुसियार ।
*वसीयत नामे देवें साख, अग्यारैं सदी होसी बेबाक[2] ।। २

बरकत दुनियाँ और कुरान, और फकीरों की मेहेरबान ।
ए दरगाह[3] से आया बयान, जबराईल ले जासी अपने मकान ।। ३

और तिन दिन होसी, अंधाधुंध[4], द्वार तोबाके होसी बंध ।
कह्या होसी और रवेस[5], तब कोई किसी का नाहीं खेस[6] ।। ४

अब कहोजी बाकी क्या रह्या, निसान क्यामत का जाहेर कह्या ।
पातसाई *ईसा बरस चालीस, लिख्या सिपारे अठाईस ।। ५

क्या हिंदू क्या मुसलमान, सब एक ठौर ल्यावें ईमान ।
सो क्या होसी उठे कुरान, ए बिचार देखो दिल आन ।। ६

नव से नब्बे हुए बितीत, तब हजरत ईसा आए इत ।
सो लिख्या सिपारे अग्यारहें माहें, मैं खिलाफ बात कहोंगा नाहें ।। ७

*रूहअल्ला पेहेनें जामें[7] दोए, ए लिख्या कुरानमें सोई होए ।
ए लिख्या छठे सिपारे माहें, धोखेवाला जाए देखो ताहें ।। ८

ए जो बरस ईसा की कही, तिनकी तफसीर[8] कर देऊँ सही ।
दस अग्यारहीं बारहीं के तीस, ईसा पातसाही बरस चालीस ।। ९

---

१. अनुसार । २. हिसाब चुकाना । ३. मक्का । ४. अनियमित जीवन । ५. रीति । ६. अपना । ७. (शरीर) । ८. तफ्सील, विवरण ।

सत्तर बरस और जो रहे, सो तो *पुल—सरात के कहे ।
मोमन चलें बिजलीकी न्यात, मुतकी[1] भी घोड़ेकी भाँत ।। १०

और जो जाहेरी उमत रही, दस बिध तिनको दोजख कही ।
पुल—सरात कही खाँड़े की धार, गिरें कटे नहीं पावे पार ।। ११

अमेतसालून्में कह्या ए, जाए देखो दीदे[2] दिलके ।
ए जाहेर कह्या बयान, पर हिरदे अंधे न सके पेहेचान ।। १२

दसई' *ईसा अग्यारहीं *इमाम, बारहीं सदी[3] फजर तमाम ।
ए लिखी बीच सिपारे आम, तीसमा सिपारा जाको नाम ।। १३

आए ईसा महंमद और इमाम, सब कोई आए करो सलाम ।
पर न देखो आंखों जाहेरी, दिल दीदे देखो चित्त धरी ।। १४

*अजाजीलें देख्या वजूद[4], तो आदमको न किया सजूद[5] ।
सेजदे किए तिन बेहद, सो सारेही हुए रद्द ।। १५

जो उनने देख्या आकार, तो लगी लानत[6] और हुआ खुआर[7] ।
तब अजाजीलें माग्या बचन, के आदम मेरा हुआ दुसमन ।। १६

इनकी औलादकी मारों राह, सबके दिल पर होऊँ पातसाह ।
आदम अजाजीलसों ऐसी भई, आठमें सिपारेमें जाहेर कही ।। १७

फेर तुम वाहीकी लेत अकल, पर क्या करो तुम जो वाहीकी नसल[8] ।
तुम दज्जाल बाहेर ढूंढ़त, वह दिल पर बैठा ले लानत ।। १८

ऊपर माएने न होए पेहेचान, ए तुम सुनियो दिलके कान ।
हमेसाँ आवत हैं ज्यों, अब भी फेर आए हैं त्यों ।। १९

सब पेगंमर जहूद खिलके[9], बिचार देखो दीदे दिलके ।
ओ तो आए हिंदुओं दरम्यान, जिनको तुम केहेते कुफरान ।। २०

तुम ढूंढ़ो अपने खिलके माहें, तामें तो साहेब आया नाहें ।
जिनको तुम कहते काफर जात, सो सबकी करसी सिफात[10] ।। २१

---

१. ईश्वरीय सृष्टि । २. आँखे । ३. मु०सा० के बाद (सन) । ४. शरीर । ५. नमन । ६. धिक्कार । ७. अपमानित । ८. औलाद । ९. जाति । १०. सिफारिश ।

रब्ब ना रखे किसीका गुमान, ओ तो गरीबों पर मेहेरबान ।
परदा लिख्या हजरत के रूए[1] पर, तिनकी क्या तुमको नहीं खबर ॥ २२
परदा लिख्या वास्ते आवने हिंदुओं माहें, ए पढ़े इसारत समझत नाहें ।
जो देखत हैं जेर जबर, सो हकीकत पावें क्यों कर ॥ २३
ऐसी हिंदुओं की कही सिफत, आखर हिंदुओंमें मुलक नबुवत ।
और आप हजरत रसालत[2] पनाह[3], जहूद फकीरों में पातसाह ॥ २४
पाँचमें सिपारे एह बयान, न मानो सो जाए देखो कुरान ।
और हिंदवी किताबोंमें यों कही, बुध[4] कलंकी आवेगा सही ॥ २५
आएके करसी एक रस, मसरक मगरब होसी बस ।
कोऊ केहेसी क्या दोऊ होसी एक बेर, तिनका भी कर देऊँ निबेर ॥ २६
ए इसारत खोले निज बुध, बिना हादी न पाइए सुध ।
घोड़ेको लिख्या कलंकी कर, ताकी किनकों नहीं खबर ॥ २७
जोतिष कहे *विजिया अभिनंद, सब कलिजुगको करसी निकंद[5] ।
अंजीर[6] कहे *ईसा बुजरक, सो आएके करसी हक ॥ २८
जहूद कहें *मूसा बड़ा होए, ताके हाथ छूटें सब कोए ।
यों सारोंने रसम जुदी कर लई, सबे बुजरगी धनीकी कही ॥ २९
यों उरझे जुदे नाम धर, रब्ब आलमका आया आखर ।
अपनी अपनीमें समझे सब, जुदा न रह्या कोई अब ॥ ३०
सब किताबों दई साख, जुदे नाम जुदी लिखी भाख ।
सत असत दोऊ जुदे किए, माया ब्रह्म चिन्हाएके दिए ॥ ३१
दोनों जहानमें थी उरझन, करमकांड सरीयत चलन ।
करी हकीकत मारफत रोसन, साफ किए आसमान धरन ॥ ३२
ब्रह्मांडको भान्यो खिलाफ[7], सब जहानको कियो मिलाप ।
गवाही खुदाकी खुदा देवे, करे बयान हुकम सिर लेवे ॥ ३३

---

१. मुँह । २. संदेश वाहक । ३. शरण । ४. बुद्ध निष्कलंक । ५. संहार । ६. अंजील ।
७. विरोध ।

सब पूजसीं साहेब सरत, कलाम अल्ला यों केहेवत ।
ए लिख्या तीसरे सिपारे, खोले अरस—अजीम[1] के द्वारे ॥ ३४
*लैलत—कदरके *तीन तकरार, तीसरे फजरमें कार गुजार ।
रूहों फिरस्तों वजूद धरे, *लैलत कदरके माहें उतरे ॥ ३५
खैर[2] उतरी महीने हजार, गिरो दोऊ भई सिरदार ।
हुकम दिया साहेब इनके हाथ, भई सलामती इनके साथ ॥ ३६
यों केती गवाही देऊँ कुरान, *इन्ना इन्जुलनामें एह बयान ।
तीसरे तकरारकी भई फजर, अग्यारैं सदीमें देखो नजर ॥ ३७
और पेहेले सिपारेमें लिखी, सो तुम क्या नहीं देखी ।
साहेदी कुंन की देवे जोए, खास उमत का कहिए सोए ॥ ३८
अब जो कोई होवे खास उमत, देवे गवाही सो होए साबित ।
उड़ाए गफलत हो सावधान, छोड़ो पढ़ोंका गुमान ॥ ३९
हकुल्यकीन[3] और *सुंनी जोए, पेहेले ईमान ल्यावेगा सोए ।
पीछे जाहेर होसी साहेब, तब तो ईमान ल्यावेंगे सब ॥ ४०
भिस्त दोजख जाहेर भई, नफा किसीको न देवे कोई ।
ले हिरदे हादीके पाए, छत्रसाल यों कहे बजाए ॥ ४१

॥ प्रकरण ॥ १ ॥ चौपाई ॥ ४१ ॥

एक तो कहे अल्ला कलाम, जाहेरी—माएनों[4] का नाहीं काम ।
दूजे तो इसारत[5] कही, इत हुज्जत काहूकी ना रही ॥ १
तीसरे जंजीरों करी जिकर, पोंहोंचे न चौदे तबकों की फिकर ।
सोए परोवनी मोतियों माहें, खुदा बिन दावा किनका नाहें ॥ २
केहेंलावें काजी पढ़े कुरान, अल्ला रसूल ना उमत पेहेंचान ।
ना कुरान ना आप चिन्हार, एहेल—किताब[6] यों कहावें दीनदार[7] ॥ ३

१. परमधाम । २. कृपा । ३. पूर्ण विश्वास वाले । ४. शब्दार्थ । ५. संकेत । ६. कतेब को मानने वाले । ७. धार्मिक ।

जाहेरी माएने लिए अंधेर, जाको लानत लिखी बेर बेर ।
ढांपे कुरानकी रोसनाई, अंदर सैतानें एही सिखाई ॥ ४

दिल पर दुसमन हुआ पातसाह, मारी दीन इसलामकी राह ।
हुए हिरस[1] हवाके बंदे, किए सैताने देखीते अंधे ॥ ५

सब अंगों बैठा दुसमन जोर, दिलके दीदे दिए फोर ।
दुसमनें छोड़या ना कोई ठौर, चोदे तबकों इनकी दौर ॥ ६

उबरीं एक रूहें उमत, दूजी गिरो फिरस्तोंकी इत ।
जिनमें इमाम हुआ आखरी, हिन्दू फकीरोंमें पातसाही करी ॥ ७

देखाई राह तौरेत कुरान, कुफर सबोंका दिया भान ।
ल्याया नहीं जो यकीन, सो जल दोजख आए मिने दीन ॥ ८

जो थी चौदे तबकों अंधेर, भान्यो सैतानी उल्टो फेर ।
कराया सबोंको सेजदा, जाहेर किया जो साहेब है सदा ॥ ९

खासी गिरो नूरजमालमें[2] लई, नूरजलाल[3] ठौर दूजी को दई ।
तीसरी जो सब दुनियां कही, करी नूर नजर तले सही ॥ १०

भिस्तां[4] बांट दइयां इन बिध, काम सबोंके किए यों सिध ।
कहे छत्ता पेहेलें जो ल्यावे ईमान, खास उमतका सोई जान ॥ ११

॥ प्रकरण ॥ २ ॥ चौपाई ॥ ५२ ॥

लिख्या चौथे सिपारे, सुख उमत को खुदा के सारे ।
कहे मक्केके काफर, आराम करें बैठे बीच घर ॥ १

जो पूजें मक्के के पत्थर, इनों एही जान्या सांच कर ।
और जिनको खुदाएकी पेहेचान, सहें दुख न छोड़ें ईमान ॥ २

तिनकी तसल्लीके[5] कारण, महंमद को हुआ इजन[6] ।
और इसलाम कहे दरवेस[7], कही खास उमत इन भेस ॥ ३

१. लालच । २. परमधाम । ३. अक्षरधाम । ४. बहिश्तें । ५. सन्तोष । ६. हुकम । ७. सिद्ध फकीर ।

याकी मुराद कही इसलाम, यों कह्या माहें अल्ला कलाम ।
कोई कर ना सके भेव[१], जो देवें महंमदको फरेब ॥ ४

बीच आवें जाएँ सौदागर, वास्ते फानी फल कुफर ।
काफर होंए सिताबी दूर, मोमन साहेब के हजूर ॥ ५

सो काफर पड़ें माहें दोजख, आखर को जो ल्यावें सक ।
जो मोमन हैं खबरदार, डरते रहें परवरदिगार ॥ ६

बीच आखरत के बुजरगी, हुई है इस उमतकी ।
सांची गिरो जो है हक, तहां बाग भिस्त बुजरक ॥ ७

दूध सहतकी[२] नदियां चलें, बागों बीच दरखतों तले ।
है इसलाम को मेहेमानी, होसी खुदाकी मेहेरबानी ॥ ८

जहां बिध बिधकी हैं न्यामत, मेवा मिठाइयां बीच भिस्त ।
करके तमासा नूर, इसलाम साहेबके हजूर ॥ ९

जो हमेसां दरगाह के, ए बीच भिस्त खुदाएके ।
और जाहिद[३] जो चाहें भिस्त, आसिकों दीदारकी कस्त[४] ॥ १०

जो कहे हैं नेकोंकार, पाया छिपा भला दीदार ।
जो फुरमान—के—बरदार[५], सोई नेक गिरो सिरदार ॥ ११

ए जो कहीं किताबें तीन, तिनपर है हकका आकीन ।
सिफत जमाने पैगंमर, रखना बीच खुदाएका डर ॥ १२

अंजीर तौरते और कुरान, इन पर होए आया फुरमान ।
जो हवसेका पातसाह, पाई इन किताबोंसे राह ॥ १३

इनकी जो करे उमेद, मुराद[६] इसलाम पावे भेद ।
जो कहे दोस्त साहेब महल, नजीक खुदाएके खासे फैल ॥ १४

सबद न छोड़े ए महंमद, वास्ते फानी दुनियां रद्द ।
वास्ते नेकी आखरत, कबूं न छोड़ें खास उमत ॥ १५

---

१. अन्तर । २. शहद । ३. संयमी । ४. कामना । ५. आज्ञाकारी । ६. मनोकामना ।

अदा हुए सब फरज, तब सिरसे छूट्या करज ।
खुसालियां[1] इनों होसी घनी, भिस्त खजाना पाया अपनी ॥ १६

इनों का होसी सिताब, नजीक खुदाएके हिसाब ।
सब बंदगी एही मोमन, जो अंदर के मारे दुसमन ॥ १७

एहो कही तुम हकीकत, ए कबूल करो हुकम सरीयत ।
आप रखो पांउं उस्तवार[2], मैदान लड़ाई हो हुसियार ॥ १८

ए जो बैठा माहें सबन, एही खुदाएका हैं दुसमन ।
काफर करे बोहोतक सोर, तो मोमनोंसों न चले जोर ॥ १९

बाजे नजीक अरज निमाज, और डरें नहीं हुकम आवाज ।
निमाज पीछे कह्या यों कर, खुदाएका तुम राखो डर ॥ २०

फुरमान बरदारी ल्यावे जोए, सिताब छुटकारा पावे सोए ।
जिनों कुरानकी पाई खबर, तिनों कह्या यों दिल धर ॥ २१

नफसोंसे[3] करो सबर, मारो हिरस हवा परहेज कर ।
दिलसे दृढ़ करो सबर, साबित बंदगी मौला पर ॥ २२

बंदगी वाले खुदाए राखत, बलाए—सेंती[4] सलामत[5] ।
कजाएका सिर लेओ हुकम, हक मिलावे को रूह तुम ॥ २३

दूर करो जो बिना हक, करो उस्तवारी जो बुजरक ।
लुत्फ मेहेरबान पाओ भेद, छूटो तिनसे जो है निखेद[6] ॥ २४

खुदाए बीच वजूद हिजाब[7], रूह तुमारी बैठा दाब ।
पीछे फनाके फाएदा सब, दौलत खुदाए बका पाओ जब ॥ २५

बका चाहे सो फना होए, बिना फना बका न पावे कोए ।
छोड़ो नाचीज जो कमतर[8], ताथें फना होऊ बका पर ॥ २६

ढांपे थे जो एते दिन, हनोज—लों[9] न खोले किन ।
बातून जो कुरानके स्वाल, सो जाहेर किए छत्रसाल ॥ २७

॥ प्रकरण ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ ७६ ॥

---

१. खुशहाली । २. दृढ़ता से । ३. इन्द्रियों से । ४. आपत्ति से । ५. सुरक्षित । ६. निषिद्ध । ७. पर्दा । ८. घटिया । ९. अब तक ।

तीसरे सिपारे बड़ा जहूर, *इमाम सुलतान का मजकूर ।
सो *महमूद गजनबी सुलतान, मिले इमाम सुख हुआ जहान ॥ १

लागन[१] हिंदू मुसलमान, महमूद गजनबी सुलतान ।
ढाए हिंदुओंके खाने—बुत[२], दिलमें इमामकी जारत[३] ॥ २

अपने जमाने था उस्तवार, कुतब औलियों का सिरदार ।
बंदगी माहें था बड़ा, सफ[४] तलेकी रेहेता खड़ा ॥ ३

तलब[५] द्वा फातियाओं[६] की कर, चाहता था तोअजमंतिसा[७] अवसर ।
फकीर सुलतानसों बातें भई, तब आकीन आया सही ॥ ४

इमामें कह्या यों कर, पेसकसी[८] ल्यावें हम घर ।
बस्ती कोस पांच हजार, मुलक मदीने कै सेहेर बाजार ॥ ५

एक हजार सात सै हाथी, लाख घोड़े सूरमें साथी ।
एती आएके पेसकसी करी, ओढ़के पुरानी कमरी ॥ ६

आप होएके नंगे पाए, तलेकी सफमें खड़ा आए ।
आजिज[९] होए नमाया सीस, कहे मोको करो बखसीस ॥ ७

कहे मोको सबूरी देओ, फकीरों के मिलावे में लेओ ।
दुनियां थें आजाद किया, फकीरों के मिलावे में लिया ॥ ८

तोअजमंतिसामें सही, गजनबी को बखसीस[१०] भई ।
इमाम पेहेचान करो रोसन, संसे भान देऊँ सबन ॥ ९

देऊँ कुरानकी साहेद, बिना फुरमान न काढ़ों सबद ।
छठे सिपारेमें एह सनंध, *ईसा नुस्खेका खावंद ॥ १०

और साहेदी देऊँ तीसरी, एहेल किताबें दिल में धरी ।
दस और एक सिपारा जित, एह सब्द लिखे हैं तित ॥ ११

बरस नव से नव्वे हुए जब, मोमन गाजी[११] आए तब ।
रूह अल्ला आए तिन मिसल, दूसरा जामा[१२] होसी मिल ॥ १२

---

१. युद्ध । २. मूर्त्ति मन्दिर । ३. दर्शनों की अभिलाषा । ४. लाइन । ५. चाह । ६. प्रार्थना । ७. एक आयत । ८. भेंट । ९. नम्र । १०. अनुदान । ११. धर्म योद्धा । १२. शरीर ।

बंदगी ए करसी कबूल, एकको हजार देवें इन सूल ।
ए दूजा जामा ईसेका होए, बातून माएने पाइए सोए ॥ १३

चौथी साहेदी नामें नूर, हुआ रूहअल्ला का नुस्खा जहूर ।
नव सै नव्वे नब मास ऊपर, ए नुस्खा लिया मिसल मातबर[1] ॥ १४

असराफील इत बीच इमाम, ए नुस्खे इलमकी किताबें कलाम ।
एक रोज आए खाने किताब, कह्या पोहोंचाओ नुस्खा सिताब ॥ १५

*महंमद गजनबी सुलतान, ओ नुस्खा हासिल करे परवान ।
जब नुस्खा उनने सही किया, पंद्रह रोज सामें आएके लिया ॥ १६

तब अव्वल आखरकी मिली सब जहान, मिले तित हिंदू मुसलमान ।
और भी मिली अनेक जात, सब कोई नुस्खा करे विख्यात[2] ॥ १७

केतोंक अपना किया कुरान, करे निछावर बुजरग जान ।
इत पांच सै जुलजुलाटहू[3], संग रसूल के असलू रूह ॥ १८

ए बखत हुआ कही क्यामत, दोस्त खाना दाना पोहोंचीं सरत ।
गुनाह सुलतान के किए सब माफ, लिया नुस्खा हुआ साफ ॥ १९

बारे हलके थे जो बंध, किए आजाद छूटे माया फंद ।
लाख नंगों के दिए सिरो पाए, हुआ सुख दुख सबों जाए ॥ २०

पचास हजार बाग किए खैरात, बरकत नुस्खे भई सिफात ।
हवेलियां[4] जो थी बैरान, सो कियाँ खड़ियां हुए मेहेरबान ॥ २१

ए जो बात कुराने कही, सो में जाहेर करी सही ।
इनका बयान करे आलम, बिना फरमाया करे जालम ॥ २२

तुम माएने ऊपरके यों लिए, किस्से कुरानके पेहले हो गए ।
जो जमाने हुए मनसूख, ए रोसनी तित क्यों डारो चूक ॥ २३

ए जो *इमाम गजनबी का मजकूर, लिख्या आखरत को होसी जहूर ।
सो मजकूर कहें होए गया, जो जाहेर क्यामतमें कह्या ॥ २४

---

१. विश्वसनीय (ब्रह्म सृष्टि) । २. प्रकट । ३. तेजोमय । ४. (शरीर रूपी महल) ।

उमी[1] आप पढ़ें कुरान, सुनो जाहेरियों दिलके कान ।
काजी कजा पर आया आखर, खोल दिल दीदे देखो नजर ।। २५

ल्याओ आकीन कहें *छत्रसाल, असल पाक हुए निहाल ।। २६

प्रकरण ।। ४ ।। चौपाई ।। १०५ ।।

लिख्या माहें नामें *नूर, जाए देखो महंमद का जहूर[2] ।
आरफ[3] कहावें मुसलमान, पावें नहीं हिरदा कुरान ।। १

महंमद मुरग कह्या आसमान, ए नीके कर देऊँ पेहेचान ।
इन मुरगने किया गुसल, धोए पर अरक निरमल ।। २

तिन मुरगने झटके अपने पर, ता बूंदोंके भए पैगंमर ।
एक लाख भए बीस हजार, जिनों पैगाम दिए सिरदार ।। ३

कलाम[4] अल्लाहकी तो एह नकल, देखो दुनियाँ की अकल ।
महंमदको करहीं औरों समान, इन दुनियाँकी ए पेहेचान ।। ४

जो कहावें महंमदके बंदे, सो भी न चीन्हें हिरदेके अंधे ।
कहावें जाहेरी मुसलमान, गिनें महंमदको औरों समान ।। ५

ऊपर माएने ले भूले जाहेरी, कलाम अल्लाकी सुध ना परी ।
पेहेले कही जो तुम दिलमें आनी, तुम जो जानी मुसलमानी ।। ६

पाले अरकांन[5] मसले बावन, तुम वाही को जानो मोमन ।
उजू निमाज रोजा फरज, ए तो इन पर धरचा करज ।। ७

और भी इनों मुसलमानी करी, सोभी देखो चलन जाहेरी ।
ए लानत लिखी माहें फुरमान, सो बड़ी कर पकड़ी मुसलमान ।। ८

सरीयत यों कहे *इभराम[6], जिनों किए थे बद—फैल[7] काम ।
जिन अंगों लोप्या[8] फुरमान, सो सारे किए नुकसान ।। ९

*इबराहीम सिर ए लानत कही, सो पढ़ों *सुंनत बड़ी कर लई ।
जिन लानत दई ऊपर तकसीर[9], सो सोभा लई मुल्लां मीर पीर ।। १०

---

१. बे पढ़े । २. प्रकाश । ३. विद्वान । ४. कुरान । ५. आधार भूत नियम । ६. इब्राहीम । ७. कुकर्म । ८. न माना । ९. गुनाहं ।

ए पावें नहीं अल्ला कहानो, इन याहीमें कर लई मुसलमानी ।
लानत करी ऊपरकी बानी, इनों सोई भली कर मानी ॥ ११

पढ़े आलम आरफ कहावें, पर एक हरफको अरथ न पावें ।
मुखथें कहें किताबें चार, पर हिरदे अंधे न करें बिचार ॥ १२

तौरेत अंजीर और जंबूर, चौथी कलाम—अल्ला जहूर ।
ए चारों उतरियां जिन पर, चारों नाम कहे पैगंमर ॥ १३

*मूसा *ईसा और *दाऊद, ए चारों आए बीच जहूद ।
और आखरी कहे महंमद, खतम किया इत बांधी हद ॥ १४

मनसूख[1] तीन कही तिन मिने, फुरकान एक यों भने ।
समझे ना किताबोंके तांईं, क्या लिख्या है माएनों माहीं ॥ १५

तौरेत लिखी ठौर बीसक कही, जुदे जुदे नामों पर दई ।
ता बीच कहे अल्ला कलाम, कौल क्यामत इनपर इसलाम ॥ १६

अब को मनसूख और को कही हक[2], जाहेरी कोई न हुआ बेसक ।
और भी तुमको कहूँ हक, बिना पाए मगज[3] न छूटे सक ॥ १७

कुरान लिख दिया चार ठौर, भी किताबें दैयां ठौर और ।
अब को अव्वल को कलाम आखरी, ए नीकें तुम ढूंढ़ो जाहेरी ॥ १८

किस्से कुरानके डारो तित, रद्द जमाने हो गए जित ।
ताए क्यों कहो यों कर, जो रोसनी होसी आखर ॥ १९

लिख्या अठारमें सिपारे, ले ऊपर के माएने सो हारे ।
ऊपर माएने ले देवे सैतान, ताको कहिए बे फुरमान ॥ २०

जो कोई होसी बे फुरमान, नेहेचे सो दोजखी जान ।
ताको ठौर ठौर लानत लिखी, सो जाहेरिओं हिरदेमें रखी ॥ २१

अब और कहूँ सो सुनो, महंमद को क्यों औरोंमें गिनो ।
गिरो[4] महंमद तो होए पेहेचान, जो मगज माएने पाओ कुरान ॥ २२

१. रद्द । २. सत्य । ३. गूढ़ार्थ । ४. ब्रह्मसृष्टि ।

एक लाख भए बीस हजार, जिनों पैगाम दिए सिरदार ।
*सात कलमें वाले पैगंमर, गिरो सबों की कही काफर ॥ २३

उनों करी बे फुरमानी, तार्थे गिरो सबों की रानी[1] ।
अमेत सालून जो सूरत, तामें लिखी यों हकीकत ॥ २४

महंमद की जो उमत भई, दस बिध दोजख तिनकों कही ।
यामें फिरके कहे बहत्तर, तामें एक मोमन लिए अंदर ॥ २५

कौन गिरो अंदर लई, और कौन काफर हुए सही ।
वाही सूरत में कही *पुल सरात, कौन गिरो चली बिजली की न्यात ॥ २६

को निकसी घोड़े ज्यों पार, और कौन कटी पुल सरात की धार ।
खास गिरो साहेबें सराही, गिरो दूजी पीछे लगी आई ॥ २७

और सैताने पीछी फिराई, सो सब दोजखको चलाई ।
ऐसे उलमा[2] सबही कहें, माएना बातून कोई ना लहे ॥ २८

अठारहें सिपारे लिख्या हरफ, बिना मगज न पावें आरफ ।
बिना मगज ना महंमद पेहेचान, बिना मगज ना पढ्या कुरान ॥ २९

बिना मगज न पाइए फुरकान, किन वास्ते आया फुरमान ।
एह वास्ता पाइए तब, मगज माएनें खुलें जब ॥ ३०

खोल न सकें पढ़ें अल्ला कलाम, सो खोलें उमी सब मेहेर इमाम ।
अव्वल एही बांधी सरत, खुले माएने जाहेर होसी क्यामत ॥ ३१

किन खोले न माएने कबूं कुरान, पावें न हकीकत करें बयान ।
पढ़ें आलम आरफ कै जन, पर एक हरफ न खोल्या किन ॥ ३२

अब देऊँ दरवाजे खोल, कहूँ हकीकत बातून बोल ।
जासों जाहेर होवे मारफत, दिन पाइए रोज क्यामत ॥ ३३

साहेबी देवे अल्ला कलाम, सब दुनियां कबूल[3] करे इसलाम[4] ।
खोले माएने बातून हकी, मोमन जाहेर करों बुजरगी ॥ ३४

---

१. बहिष्कृत । २. ज्ञानी । ३. स्वीकार करे । ४. सत्य धर्म ।

लिख्या सब माएने बातन, सो हनोज[1] लों ना खोले किन ।
सब खूबिआं हैं बातन, खुलें मगज सबों भई रोसन ।। ३५

अव्वल खूबी अल्ला कलाम, दूजो खूबी गिरो इसलाम ।
तीसरी खूबी तीन हादी वजूद, आखर आए बीच जहूद ।। ३६

*रसूल *रूहअल्ला और *इमाम, ए तीनों एक कहे अल्लाकलाम ।
बसरी[2] मलकी[3] और हकी[4], तीनों तरफ साहेब के साकी ।। ३७

*आदम *नूह *मूसा *इभराम, और *अलो भेला माहें इमाम ।
महंमद ईसा पेहेले कहे, ए सातो कलमा आए इत भेले भए ।। ३८

जेता कोई पैगंमर और, सारी सिफतें याही ठौर ।
सतरहें सिपारे यों कह्या, बिना महंमद कोई आया न गया ।। ३९

और लिख्या अठारमें सिपारे, महंमद नाम पैगंमर सारे ।
सब पैगंमरोंको जो सिफत दई, सो सिफत सब रसूल[5] की कही ।। ४०

एह मगज खोल्या कुरान, सुनो हिंदू या मुसलमान ।
जो उठ खड़ा होसी सावचेत, साहेब ताए बुजरगी देत ।। ४१

कहे छत्ता तिनका अंकूर, नूर तजल्ला माहें जहूर ।। ४२

।। प्रकरण ।। ५ ।। चौपाई ।। १४७ ।।

हो सैयां फुरमान ल्याए हम, आए वतनसे वास्ते तुम ।
इनमें खबर है तुमारी, हकीकत देखो हमारी ।। १

सिफत रसूल अल्ला कलाम, रूहअल्ला ईसा पाक इमाम ।
कही खास उमत महंमद, जाकी सिफतको न पोहोंचे सबद ।। २

सोई कहूँगी जो लिख्या कुरान, सबद न काढूं बिना फुरमान ।
या तो कहूँ महंमद हदीस, भला मानो या करो रीस[6] ।। ३

दे साहेदी कहूँगी हक, सो देखो कुरान जाए होवे सक ।
अब लों जाहेर थी सरीअत, खोले माएने बातून हकीकत ।। ४

---

१. अब तक । २. मुहम्मद सा० । ३. श्री देवचन्द्र । ४. श्री प्राणनाथ । ५. आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथ । ६. गुस्सा ।

अब सबमें जाहेर हुई क्यामत, खुले कलाम तब पोहोंची सरत ।
लिख्या सिपारे सोलमें मिने, आगे राह न पाई किने ॥ ५

ए जो चौदे तबक की जहान, इनकी फिकर लग आसमान ।
जब लग आए रसूल महंमद, किने न छोड़ी *अकसा मसजिद ॥ ६

और लिख्या मेराजनामे माहीं, जब हुआ मेराज रसूलके तांई ।
रसूल चले पांऊं सिर दे, संग एक जबराईल ले ॥ ७

चौदे तबक की खबर भई, ला[1] मकान हवा को कही ।
निराकार कहिए सुंन, एही बेचून बेचगून ॥ ८

छोड़ याको आगे को गए, नूर—बनमें[2] दाखिल भए ।
जबराईल रह्या इन ठौर, ला मकान से ए मकान और ॥ ९

आगे चल न सक्या क्योंए कर, नूर तजल्ला[3] जलावे पर ।
तहां पोहोंचे रसूल एक, तित अनेक इसारतें कही बिवेक ॥ १०

लिख्या दरिया मीठा मिसरीसे पाक, तित कह्या मुरग चोंचमें खाक ।
गिरो फिरस्तों करी इसारत, खाक वजूद नूर—खिलकत[4] ॥ ११

और कह्या देख दाहिनी तरफ, मोतिन[5] के मुंह पर कुलफ ।
पूछा रसूलें कुलफ क्यों दिया, तेरी उमतें गुनाह कर लिया ॥ १२

इनकी किल्ली[6] तेरा दिल, खुले कुलफ[7] जब आओ मिल ।
सब हकीकत बीच किताब, पर पावें सोई जिन पर होए खिताब ॥ १३

और कै बातें खुदाएसे करी, लिए नब्बे हजार हरफ दिल धरी ।
तीस हजार का हुआ हुकम, जाहेर करो दुनियांमें तुम ॥ १४

और कहे जो तीस हजार, ए तुम पर रख्या अखत्यार[8] ।
बाकी रहे जो तीस हजार, आखर इन पर है मुद्दार[9] ॥ १५

सो क्यामत पर बांधे निसान, एही सरत जब खुल्या कुरान ।
अमेत—सालूनमें[10] एह बात, बिध बिध कर लिखी बिख्यात[11] ॥ १६

---

१. शून्य । २. अक्षरधाम । ३. तेज । ४. ब्रह्मसृष्टि । ५. ब्रह्मात्माएँ । ६. चाबी । ७. ताला ।
८. अधिकार । ९. आशय । १०. कुरान का अध्याय । ११. स्पष्ट ।

रूहें कही बारे हजार, बुजरगी का नहीं सुमार ।
जिनकी इच्छासों फिरस्ता होए, बड़ा सबनका कहिए सोए ॥ १७

सो रूहें दरगाहके माहें, ऐसे नजीकी और कोई नाहें ।
सो रूहें आदमी सकल, ए आदमी इनकी नकल ॥ १८

और लिख्या अठारमें सिपारे, नूर बिलंदसे उतारे ।
काम हाल करें नूर भरे, नूर ले दुनियांमें बिस्तरे ॥ १९

और जो अंधेरीसे[1] पैदा भए, काफर नाम तिनोंके कहे ।
फिरे मनके फिराए उलटे फेर, काम हाल उनों का अंधेर ॥ २०

और लिख्या वाही सिपारे, ए कुरान से न होएँ न्यारे ।
फिरस्ते उतरे वास्ते कुरान, फिरस्तों ऊपर आया फुरमान ॥ २१

फौज फिरस्तोंकी भरी नूर, *असराफील बजावे सूर ।
और तीसमें सिपारे एह बयान, इन्ना इन्जुलना सूरत परवान ॥ २२

फिरस्ते नजीकी जो बुजरक, साथें हुकम धनीका हक ।
उतरे *लैलत कदरके माहें, *तीन तकरार रातके जांहें ॥ २३

रूहों फिरस्तों वजूद धरे, जोस धनीका ले उतरे ।
रात[2] नूर भरी कहीयत ए, जित *रूहअल्लाके तन जो कहे ॥ २४

एक तकरार *हूदके घर, दूजे तकरार *नूह किस्ती पर ।
तीसरा तकरार ए जो फजर[3], जित रूहें फिरस्ते पैगंमर ॥ २५

खैर[4] उतरी महीने हजार, गिरो दोए भई सिरदार ।
हुकम दिया सब इनके हाथ, भई सलामती[5] इनके साथ ॥ २६

आखर मिलावा साहेब इत, रूहें फिरस्ते पैगंमर जित ।
याही सिपारे छत्तीसमी सूरत, नीके कर तुम देखो तित ॥ २७

तीन सरूप खुदाएके कहे, तीनों तकरार रूहों बीच रहे ।
एक बृज बाल दूजा रास किसोर, तीसरे बुढ़ापनमें भोर ॥ २८

---

१. माया । २. लैल तुल कदर । ३. जागनी की सुबह । ४. कृपा । ५. संरक्षण ।

दोए सरूप कहे मिने और, किल्ली कुरान ल्याए इन ठौर ।
पांच सरूप मिले इत नूर, असल बीज माहें अंकूर ।। २९

वजूद आदम का जैसा खाक, पांच *पच्चीसों इनके पाक ।
आठमें सिपारे एह बयान, लिख्या जाहेर बीच कुरान ।। ३०

एह दज्जाल जो अजाजील, सबमें दम इनका कमसील[१] ।
न करे सेजदा ऊपर आखरी आदम, फेरचा जाहेर कलाम अल्लाका हुकम ।।३१

माहें गया सबनको खाए, पढ़े ढूंढ़त जुदा ताए ।
जाहेरियों न देवे देखाए, ऊपर माएने दिए भुलाए ।। ३२

*दाभतल अर्ज माएने बातन, मुख आदमका गधी तन ।
बातन माएने कही क्यामत, देखसी खुले हकीकत ।। ३३

*दज्जाल एक आंख जाहेरी, कै बिध तिनकों लानत[२] करी ।
नाहीं दज्जाल आंख बातूनी, जासों मारफत[३] पाइए धनी ।। ३४

खोलने न दे आंख अंदर, दिल पर दुसमन जोरावर ।
पातसाई[४] करे सबोंके दिल पर, ए जो बैठा ले कुफर ।। ३५

दुसमन राह मारे इन हाल, भूले देखे बाहेर दज्जाल ।
छठे सिपारे लिख्या इन पर, ईसा मारसी इन काफर ।। ३६

करसी राज चालीस बरस, सब जहान होसी एक रस ।
साहेबी उमतकी साल दस, पीछे चौदे तबकों बाढ़चो जस[५] ।। ३७

अखंड भिस्त इत जाहेरी, होए रोसन सबमें बिस्तरी[६] ।
दुनियां दौड़ मिली सब धाए, छूट गए वरन[७] भेख ताए ।। ३८

कह्यो न जाए धनीको विलास, पूरी साथ सकलकी आस ।
लीला विनोद करसी हांस, ए सुख उमत लेसी खास ।। ३९

ले दौड़े रोसनी दासानुदास, ले जाए पवन ज्यों उत्तम वास ।
इसक न खाने देवे स्वांस, ज्यों अगनी न छोड़े दाना घास ।। ४०

---

१. नीच । २. धिक्कार । ३. पूर्ण पहचान । ४. राज्य । ५. यश । ६. फैली । ७. जातिपांति ।

जाए पड़े प्रेमके फांस, ज्यों सूके लोहू गल जाए मांस ।
पीछे तीसों[1] नूर बरसात, तिन आगूं आवसी पुल—सरात ॥ ४१

सत्तर बरस लों आग जलाए, तब फिरस्ते दिए चलाए ।
अजाजील बिरहा आग जल, पीछे असराफीलें किए निरमल ॥ ४२

आगे असराफीलें काएम किए, तेरहीमें नूर नजर तले लिए ।
नूर नजर तले हुए सुध, आए माहें जाग्रत बुध ॥ ४३

नतीजा पावें सब कोए, सो हुकम हाथ छत्रसालके होए ॥ ४४

॥ प्रकरण ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ १६१ ।

हुइयां सोभा तेरी सोहागनियां, इन जुबां न जाए बरनियां ।
ए जो मिलावा माननियां, ताए बड़ाइयां देयां धनियां ॥ १

कदम हादीके[2] मेरे सिर पर, जो सब दीनों का पैगंमर ।
हजरत ईसा रूहअल्ला नाम, कहूँगी जो कह्या अल्ला कलाम ॥ २

रसूल रूहअल्ला और इमाम, इन तीनों मिल मोकों दई ताम[3] ।
मैं सिर पर एही लिए कलाम, आए कुंजी बकाकी करी इनाम ॥ ३

ए साहेदी सिपारे सूरत, जो उतरियां अल्ला आएत ।
या तो हदीसें कहूँ महंमद, या बिन और न कहूँ सबद ॥ ४

बावन मसले जो कहे अरकान[4], जो बजाए ल्यावें मुसलमान ।
तिनका कौल था एते दिन, सांचे पाक दिल किए जिन ॥ ५

ए बंदगी कही सरीयत, याको फल पावें खुले हकीकत ।
जब खोले दरवाजे मारफत, पोहोंची सरत आई क्यामत ॥ ६

और लिख्या सिपारे पांचमें, सो नीके कर देखो तुमें ।
कृपा भई हिंदुओं पर घनी, जित आखरको आए धनी ॥ ७

सब पैगंमर आए इत, कह्या सब मुलक नबुवत ।
जो कोई आया पैगंमर, सो सारे जहूदोंके[5] घर ॥ ८

---

१. तीस वर्ष बि०, सं० १७४०-१७७० । २. सत्गुरु । ३. आहार । ४. धर्म के नियम । ५. अमुसलिम ।

ज्यों अव्वल त्योंहीं आखर, सोभा सारी महंमद पर ।
ए तुम देखो नीके कर, सारे कुरानमें एही खबर ॥ ९

लोक ढूढ़ें माहें मुसलमान, सूझत नाहीं जो लिख्या कुरान ।
अव्वल सिपारे एह सुध दई, सो मैं जाहेर करहों सही ॥ १०

हरफ अलफ लाम और मीम, ए तीनों एक कहे अजीम[१] ।
जिन न जान्या एह जहूर, सो काट कुरानसे किए दूर ॥ ११

याको जाने खुदा एक, ऐसो बांध्यो बंध बिवेक ।
कलाम अल्लाएँ ऐसी कही, आलम आरफकी हुज्जत[२] ना रही ॥ १२

और लिख्या है बीच कुरान, दूसरे सिपारेमें एह बयान ।
इनका जित खोल्या है द्वार, तिनका दिल दे करो बिचार ॥ १३

ए महंमदको दिया खिताब, माएने खोले सब किताब ।
सो माएने रुजू[३] उमतसे होए, खासी उमत कहिए सोए ॥ १४

महंमदकी इनपें पेहेचान, भली भाँत समझें कुरान ।
जैसे पेहेचाननेका हक, इन उमतको कोई नहीं सक ॥ १५

जिनको किताब दई तौरेत, सब दुनियां को एही सुख देत ।
माहें लिख्या सिपारे उन्तीस, जाए देवें खुदा तासों कैसी रीस[४] ॥ १६

आए *ईसा रूहअल्ला पैगंमर, गिरो जहूदों बनी *असराईल पर ।
जो गिरो बनी असराईलकी भई, सो औलाद *याकूबकी कही ॥ १७

हुए सामिल रसूल महंमद, रूहअल्ला इस्म[५] हुआ *अहमद ।
संग रोसन तौरेत कुरान, सो रान्या[६] जाए न हुई पेहेचान ॥ १८

भए जहूदों के बड़े बखत, पाई बुजरगी आए आखरत ।
जाहेर हुए इत इमाम हक, सोई काफर जो ल्यावे सक ॥ १९

उल्लू न चाहे ऊग्या सूर, जिन अंधोंका दुसमन नूर ।
ए सुन वाका न ल्यावे ईमान, सोई चमगीदड़ उल्लू जान ॥ २०

---

१. सबसे ऊँचे । २. हठ । ३. लगाए जाना । ४. बराबरी । ५. नाम । ६. बहिष्कृत ।

महंमद के कहावें मुसलमान, ए जो जाहेरी लिए ईमान ।
जो तौहीद का[1] कलमा कहे, उमत सरीकी[2] लिए रहे ॥ २१

जो होए इसक आकीन साबित, तोभी झूठी ए सरीकत ।
सिरें[3] न पोहोंच्या इनका काम, ऐसा लिख्या माहें अल्ला कलाम ॥ २२

सिपारे तीसरेमें कही, पांच वजेह[4] की पैदास भई ।
दुनियां हुई केहेते कलमें[5] कुंन, एक एक हाथ एक दो हाथन ॥ २३

एक सरूप कह्या एक हाथ, दो हाथ सरूप मिले दो साथ ।
*रसूल *रूहअल्ला और *इमाम, एक सरूप तीनों बिध नाम ॥ २४

एक गिरो आई मूलथें कही, सो मौजूद रूहें दरगाह को सही ।
दूजी गिरो कही खिलकत और, सो मलाएक मुतकी नूर ठौर ॥ २५

तीसमें सिपारे लिखी ए बिध, सो क्यों पावे बिना हिरदे सुध ।
नूह नबी के बेटे तीन, तिनमें स्याम सलाम अमीन ॥ २६

मुसलिम किस्ती पार पोहोंचाए, काफर तोफानें दिए डुबाए ।
ए तीनों मिल दुनियाँ रची और, तीनों आए जुदे जुदे ठौर ॥ २७

चाँद कह्या आरब फारस, रोसन स्याम लियो बड़ो जस ।
चाँद आरब दूजा कौन होए, इत महंमद बिना न पाइए कोए ॥ २८

पेहेले किस्ती दई पोहोंचाए, इत फुरमान ल्याए रसूल केहेलाए ।
हिसाम चाँद कह्या हिंदुस्तान, ए जो पूज्या हिंदुओं साहेब जान ॥ २९

याफिस आया तुरकस्थान, तो न सक्या कोई पेहेचान ।
*आजूज माजूज औलाद इन, तीन फौजां होए खासी सबन ॥ ३०

तीसरे सिपारे लिखे ए बोल, पढ़े न देखें दिल आँखें खोल ।
*नूह का बेटा बुजरग स्याम, जाको दोनों जहानमें रोसन नाम ॥ ३१

स्याम ल्याए चीजें दोए, चौदे तबकों न पाइए सोए ।
एक देवे अल्ला की गवाही, दूजे करे बयान हुकम चलाई ॥ ३२

---

१. एकेश्वर वाद का । २. बराबरी । ३. पूर्णता को । ४. तरह । ५. वचन ।

पूछे रसूल सों दोए सुकन, सो साहेब ने किए रोसन ।
ए दोनों बात खुदाए से होए, इनको पूजेंगे सब कोए ।। ३३

*तोफतलकलाम जो है किताब, ए लिख्या तिस बीच आठमें बाब ।
उमतें सब पैगंमरों की मिली, सब दिलों आग दोजखकी जली ।। ३४

जलती सब पैगंमरोंपें गई, पर ठंढक दारू काहूँ थें ना भई ।
हाथ झटक के कह्या यों कर, हम सब सरमिंदे पैगंमर ।। ३५

सब दुनियाँ को एही दिआ जवाब, महंमद इनको लेसी सवाब ।
सब दुनियां जलती *महंमदपें आई, दोजख आग रसूलें छुड़ाई ।। ३६

सबको सुख महंमदें दिए, भिस्तमें नूर नजर तले लिए ।
कहे छत्ता अपनाएत कर, जिन कोई भूलो ए अवसर ।। ३७

हुई फजर मिट गई रात, भूले बड़ो करसी पछताप ।। ३८

।। प्रकरण ।। ७ ।। चौपाई ।। २२९ ।।

लिख्या सिपारे आखरे सात—दसमी[1] सूरत, रोसन कुरान लिखी हकीकत ।
जो मोमनों का लिख्या मजकूर, सोए कहूँ सब देखो जहूर ।। १

पाई खलासी[2] मोमन, हुआ मकसूद[3] सबन ।
ऐसे होवें जो कोई, सांची बंदगीमें सोई ।। २

रखो खुदाए का डर, बंदे सेजदे पर नजर ।
किया कबूल[4] एह जहूर, दरगाह साहेब के हजूर ।। ३

पैगंमर हजरत, निमाज अदा इन सरत ।
ऊपर से आएत आई, तब नजर आसमान से फिराई ।। ४

किया सेजदा मूल वतन, जो दरगाह बड़ी है रोसन ।
यों कह्या बीच लवाब[5], ए हमेसां मूल सवाब ।। ५

जो बका साहेब का घर, रखो दीदे धनी नजर ।
ए सेजदा तब पाइए, खूबी घर की देखी चाहिए ।। ६

---

१. सत्तरहवीं (१७ वीं) । २. छुटकारा । ३. सन्तोष । ४. स्वीकार । ५. एक किताब ।

जब ए हुई खुसाली, तब भूले सेजदे खाली[1] ।
निमाज के बखत दिल धर, छूटी दाएँ बाएँ नजर ।। ७

हुआ साहेब का करम[2], पाया भेद बीच हरम[3] ।
हुई कबूल निमाज इन हाल, हुए साहेब सों खुसहाल ।। ८

सिरसे छूट गया करज, हुए मोमन बेगरज ।
छूटा मूल जो हुकम, हुआ सेजदा हजूर कदम ।। ९

इनकी करता हों तफसीर[4], जुदे कर देऊँ खीर और नीर ।
पेहले था बहरूल्हैवान[5], तब तो तिनमें था फुरमान ।। १०

अब दरिया हुआ हक[6], इनमें न रहे किसी की सक ।
दरिया हक बीच मजकूर, कह्या जाहेर खुसाली नूर ।। ११

सुरत दाएँ बाएँ भान, सिर आगूँ धरिया आन ।
खड़ा रहे दोऊ हाथ पकर, सो सके हजूर बातां कर ।। १२

हुआ साहेबसों परस[7], दिलसे छूटी हवा हिरस ।
भेद पाया सिरर[8] हक, मासूकी दरिया बीच हुआ गरक ।। १३

सोए रोसन जहूर निसान, खूबी नूर बिलंद गलतान ।
एह बात जिनोंने पाई, बीच तेहेकीक के फुरमाई ।। १४

अव्वल एही है निमाज, जो गुजरे साहेब सिर ताज ।
मिले वाहीके तालिब[9], हुआ चाहिए दोस्त साहेब ।। १५

जबतें एह आसा मेटी, तब तो तूँ साहेबसों भेटी[10] ।
जो लों कछू देखे आप, तो लों साहेबसों नहीं मिलाप ।। १६

जो लों कछुए आपा रखे, तो लों सुख अखंड न चखे ।
तसबी[11] गोदड़ी करवा, छोड़ो जनेऊ हिरस हवा ।। १७

दोऊ जहानको करो तरक[12], एक पकड़ो जो साहेब हक ।
या हँस कर छोड़ो या रोए, जिन करो अंदेसा[13] कोए ।। १८

---

१. शून्य । २. कृपा । ३. रंग महल । ४. विवरण । ५. पशु वृत्ति । ६. सत्य । ७. स्पर्श । ८. मर्म । ९. चाहने वाले । १०. मिली । ११. माला । १२. रद्द । १३. शंका ।

जो ए काम तुमसे होए, तब आई वतन खुसबोए ।
और फैल भूठे जो कोई, काफर गुस्सेसों कहे सोई ।। १९

कहत इमाम केसरी, खुदा इन वास्ते नई आएत करी ।
खासा सोई है बुजरक, ए साहेब कहें बेसक ।। २०

और जो कोई साहेबसों फिरे, काम दुनीका दिलमें धरे ।
याही में पावे आराम, सोई रहे छल बाजी काम ।। २१

साफ कौल इनोंके फैल, यामें नाहीं जरा मैल ।
ऐसी जो कोई धनी मिलक, तिनों जगात देनी हक ।। २२

देना है ठौर बुजरक, आप सदका देना बलक ।
छोटा बड़ा जो नर नार, ए सबन पर है करार[1] ।। २३

ऐसी गिरों जो दरगाहीं, ताए रखना आप दृढ़ाई ।
जेती बातें हैं हराम[2], ए नजीक नहीं तिन काम ।। २४

या अपना या बिराना, सब परहेज किया दिल माना ।
तिस वास्ते ऐसी जानी, हाथ साहेबके बिकानीं ।। २५

दाहिनी तरफ जो हैं हक, लड़कियां[3] तिनकी मिलक[4] ।
निगाह रखें जानो सुपना, इंद्रियों से आप अपना ।। २६

इन भांत किया दिल धीर, उपजे नहीं कोई तकसीर[5] ।
इन भांतकी जो है औरत, तिन पाया रोज सरत ।। २७

और सुख ना नफसों आराम, और रह्या न चाहें बे काम ।
और जेता कोई बद—काम, सो नफसानी[6] हिरस हराम ।। २८

जो ए काम ढूंढे बद फैल, काफर चाहें उलटी गैल ।
ऐसे जो हैं सितमगार[7], पाया न समया हुए खुआर ।। २९

और जो कोई गिरो पाक आकीन, किया अमानत बीच अमीन ।
इत कही जो इसारत, ए जो पाक कही उमत ।। ३०

---

१. प्रतिज्ञा । २. निषिद्ध । ३. रूहें । ४. सम्पत्ति । ५. गुनाह । ६. इन्द्रियों से । ७. अत्याचारी ।

ए पैदास अमानत हक, इत रोजा रब्बानी[1] बेसक ।
याही बीच निमाज असल, रखें आप कर गुसल ।। ३१

इनके साथ बीच हक, कोई बांधे कौल खलक ।
निगाह[2] रखें खड़ा रहें आप, सूरत आएत करें मिलाप ।। ३२

कोई निगाह रखे निमाज करे, हमेसां कबहूं ना फिरे ।
रखे अदब बंदगी सरत, फुरमाया[3] अदा सोई करत ।। ३३

मूलथें बंदगी करे जिकर, करे सिफत निकोई[4] आखर ।
ए जो मुतकी[5] मुसलमान, करी इसारत ऊपर ईमान ।। ३४

बंदगी एही है बुजरक, दूजी पाक गिरो बीच हक ।
गिरो मोमन जमे करें, छे सिफतें वारसी धरें ।। ३५

और जेती कोई वारसी नाम, सो ना पकड़ें हाथ हराम ।
जिनों किया साहेब तेहेकीक, लई मिरास[6] अल्ला नजीक ।। ३६

जिनों भिस्त बिलंदी पाई, गिरो बड़े मरातबे पोहोंचाई ।
लै औरों भिस्त मिरास, जो रहे मोमन बीच विलास ।। ३७

बिना मोमन ए जो और, ताको दोजख भिस्त बीच ठौर ।
और काफर दोजखमें जल, देखें भिस्ती मरें जल ।। ३८

भिस्ती देखें दोजखियों दुख, देखें मोमन होवें सुख ।
यों कह्या बीच मिसलजादल, पावे ईमान बीच मिसल ।। ३९

जो सके ना सांच कर, सो जले दोजख माहें काफर ।
भिस्त दोजखी दूरथें देखें, त्यों त्यों जलें आप विसेखें ।। ४०

ए जो कहे भिस्त वारस, रेहेने वाले भिस्त हमेस ।
इन आदमकी पैदास, किया बीच खलकके खास ।। ४१

खैंच किया सबोंके आगे, मोमन इनपे पेसवा लागे ।
बीज मिट्टी दुनियां की न्यांत, पर ए पाक साफ कही जात ।। ४२

---

१. ईश्वरीय । २. ध्यान । ३. आदेश । ४. नेकी । ५. संयमी । ६. उत्तराधिकार । ७. पद ।

एक किया इसकी नकल, दूजा पाक कह्या असल ।
आया इन तरफ बहार, जिने पकड़्या पाक करार ।। ४३

नुस्खे रेहेमत मदतगार, इन ठौर भया उस्तवार ।
तीन सरूप की एह बयान, ए सो कहे एक के दरम्यान ।। ४४

सिफत तीनोंकी जुदी कही, सो सब बुजरगी एक पर दई ।
ज्यों बसरी मलकी हकी, त्यों रसूल रूहअल्ला इमाम पाकी[1] ।। ४५

न पावें ऊपर माएने जाहेरी, ए मगजोंसों इसारत करी ।
एक सरूप अवस्था तीन, ज्यों लड़का ज्वान बुढ़ापन कीन ।। ४६

तीन सरूप चढ़ती उतपनी, बढ़ती बढ़ती कही रोसनी ।
खोली राह आखर बागकी, तंगसेंती पोहोंचे बुजरकी ।। ४७

बिध बिधकी न्यामत पोहोंचाई, और कै तरबियत[2] फुरमाई ।
लड़केसेंती पोहोंचे ज्वान, रख्या कदम हक बयान ।। ४८

पाई सेखी हुए बुजरक, नेक न सक करते हक ।
लाएक खुदाएके करी सिफत, पैदा किया अरस दोस्त ।। ४९

कुरसी फिरस्ते *लोहकलमी, काएम सितारा आसमान जिमी ।
पीछे आदमके पैदा भया, जात पाकसे दोस्त कह्या ।। ५०

बुजरगी दलील फुरमाई, आदम पर बखसीस बड़ाई ।
मेहेर करी ऊपर सूरत, तिनकी करी न जाए सिफत ।। ५१

जो कह्या इनसेती नूर, सच्चे सूर कहावें जहूर ।
इनका रंग है तवकल[3], सिर बिलंदी ताज सकल ।। ५२

और मिले गिरदवाए लोक, हुआ बुजरगीका गलेमें तोक[4] ।
ए बखसीस औरसे रोसन, उन सुने गैबके सुकन ।। ५३

एह बात ए पैदास कही, सो सिफत सब महंमद पर भई ।
ए तीनों सिफत भया रसूल, ए सजीवन मोती कह्या अमोल ।। ५४

---

१. पवित्र । २. आनन्द । ३. ईश्वरीय विश्वास । ४. फंदा ।

इन मोती को मोल कह्यो न जाए, ना किनहूँ कानों सुनाए ।
सोई जले जो मोल करे, और सुनने वाला भी जल मरे ।। ५५

बाजे कहे साहेब इसक, ए सबसे जुदा आदम हक ।
जैसे जात पाक सुभान, एह मरातबा किया बयान ।। ५६

हद्द सबोंकी करी जुबान, क्यों कर कहे ए सिफत जहान ।
अब क्यों कहूँ मैं इनकी बात, जो कह्या आदम पाक जात ।। ५७

सो अफताली महंमदका भया, जो आदम ऐसा बुजरग कह्या ।
ए पैदा हुआ कारन महंमद, एही रसूलकी कही हद्द ।। ५८

जो सिफत आदमकी कही न जाए, तो महंमदकी क्यों कहूँ जुबांए ।
ए दोऊ सिफत सरूप जो एक, तीसरा साकी[1] इनमें देख ।। ५९

*ईसा *आदम *महंमद नाम, ए तीनों एक मिल भए *इमाम ।
और जो कहे मुरदों की भाँति, साकी प्याले होसी कलपांत ।। ६०

सो सारे फना आखर, जेती वस्त कही जाहेर ।
जिन माएने लिए ऊपर, सोए वजूद कों रहे पकर ।। ६१

जाहेर जिनकी भई नजर, क्यामत बदला कह्या तिन पर ।
करे जिमीन सात आसमान, वास्ते महंमद उमत दरम्यान ।। ६२

सात हजार राह फिरस्ते, करी इसारत दुनी क्यामतें ।
अब खुदाएनें यों कर कह्या, मैं आसमान जिमीसे जुदा रह्या ।। ६३

जेती कोई पैदाईस कुंन, मोको तिन थें जानो भिन ।
मैं ना इनमें ना इनके संग, बेसुध कहे सब इनके अंग ।। ६४

मेरे इनसों नहीं मिलाप, मैं बेखबरोंमें नाहीं आप ।
मैं इनसों नहीं गाफिल[2], ए दुख सुखमें रहे मिल ।। ६५

सिरक[3] इनों की मैं जानों सही, बिना खबर याको जरा नहीं ।
ऊपर से उतरचा पानी, तिन से नेकी बंदों की जानी ।। ६६

---

१. पिलाने वाला (हक) । २. बेखबर । ३. बहुईश्वर पूजा ।

मरतबा[१] इनों देऊँ उस्तबार[२], इन पानी से होए करार ।
*इब्बन अब्बास करे बयान, आया पानी इन दरम्यान ॥ ६७
पाँच नेहेरें जबराईल पर, आईयां भिस्त से उतर ।
पांचों कही जुदे जुदे ठौर, बिना इमाम न जाने और ॥ ६८
उतरियां सरूप पांच चसमें, रहियां एक भिरने सच्चमें ।
हिंद बलख और कही मिसर, कौल पाया करार पत्थर ॥ ६९
ए मेला हुआ आखर दिन, तब नफा मसलहत[३] होए सबन ।
दजला फिरात जुदी कही, जाहेरी माएने भेली न भई ॥ ७०
चसमें पहाड़ जारी करे, चसमें काएम पानी भरे ।
कह्या जिमी ए बादल पानी, जिनसे साबित भई जिंदगानी ॥ ७१
उतरचा पानी ऊपर ले जाए, सब कर सके जो कछू चाहे ।
इन बीरजमें[४] होवे आप, और दूर दूनी संग नहीं मिलाप ॥ ७२
इन समे उतरचा *आजूज, और संग इनके माजूज ।
पीछे उतरचा जबराईल, लेवे सबको न करे ढील ॥ ७३
एक मक्के का काला पत्थर, कुरान और खुदाए का घर ।
और ठौर कह्या *इभराम, और यार महंमद आराम ॥ ७४
पीछले जेते गए दिन, बाकी कोई न रेहवे किन ।
एक बेर फना सब किए, फेर काएम उठाए के लिए ॥ ७५
ए पांचों नेहेरें कही जो पानी, जिनसे दुनियाँ भई जिंदगानी ।
बागोंने[५] ताजगियां[६] पाई, सो भी पानी हादिएँ पिलाई ॥ ७६
सो भी कहे भिस्त के बाग, जिनसे खेती पायो सुहाग ।
इनकी मैं करों तफसीर, जुदे कर देऊँ खीर और नीर ॥ ७७
उमत लाहूती[७] कही अंगूर, दूजी जबरूती[८] कही खजूर ।
मलकूतीको[९] खेती कही, इनकों बड़ाई उनथें भई ॥ ७८

१. दर्जा । २. दृढ़ । ३. सलाह । ४. वीर्य । ५. (अतृप्त आत्माएँ) । ६. (अमर ज्ञान से तृप्ति) । ७. ब्रह्म सृष्टि । ८. ईश्वरी सृष्टि । ९. जीव सृष्टि ।

दोऊ काएम भई उमत, उठे बीच हादी क्यामत ।
तीसरी काएम भई दुनियां और, तिन सबों की हज्ज[1] इन ठौर ॥ ७९
और दुनियां ने सब फसल पाई, उमत बाग हासल[2] आई ।
एह खुदाए का बरस्या नूर, देखो छत्ते का जहूर ॥ ८०
हुआ खुदाए के हजूर, बात याही की हुई मंजूर ॥ ८१

॥ प्रकरण ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ ३१० ॥

लिख्या सिपारे[3] सूरतों[4], और आएतों[5] देखो जाए ।
*क्यामत कलाम—अल्लाह[6] में, ठौर ठौर दई बताए ॥ १
अब लों तारीख आखर की, न पाई कुरानथें किन ।
सो *रूहअल्ला के इलमसे, जाहेर हुई सबन ॥ २
सबों सिपारों क्यामत, एही लिख्या है मजकूर ।
पर क्यों पाइए हादी बिना, कलाम अल्ला का नूर ॥ ३
आगूँ नव सदीअ के, कह्या होसी रूहों मिलाप ।
बुजरग मिलावा होएसी, देवें दीदार खुदाए आप ॥ ४
बाकी दसमी सदीअ के, सवा नव साल रहे ।
गाजी मिसल मोमन की, रूहअल्ला उतरे कहे ॥ ५
रूहअल्ला रोसन ज्यादा किया, दूजा अपना नाम ।
एक बदले बंदगी हजार, ए करसी कबूल[7] इमाम ॥ ६
बीच अग्यारहीं सब रोसनी, ज्यों ज्यों मजल[8] भई जित ।
हक न्यामत लई हादियों, त्यों लिखी कुरानमें तित ॥ ७
एक जामा हजरत ईसे का, मिल दोए हुए तिन ।
मुदतें एक जुदा हुआ, साल सतानबे पोहोंचे इन ॥ ८
किताब इलाही उतरी, गैब से आई इत ।
महीने आठ लों उत जुध हुआ, चले मदीने से इन सरत ॥ ९

---

१. तीर्थ यात्रा । २. प्राप्ति । ३. परिच्छेद । ४. अध्याय । ५. वाक्य । ६. कुरान । ७. स्वीकार । ८. मंजिल ।

पाँच किताबें पेहेचान से, हुकमें हाथ दई ।
ए साल निन्यानबे लिख्या, गंज[1] छिपे जाहेर भई ।। १०

लकब[2] *इद्रीस जान्या गया, सौ सालकी मजल ।
जित तीस वरक[3] खुदाए के, हुए थे नाजल[4] ।। ११

*टोना किया महंमद पर, अग्यारे गाँठ लगाए ।
वह गांठें छूटे बिना, काहूँ ना सकें जगाए ।। १२

दसपर एक सदी भई, छूट गईं गांठें सब ।
आमर[5] महंमद आखर हुई, ठौर पोहोंचे मोमन सब ।। १३

दस और दोए *बुरज कहे, वह बारहीं सदी क्यामत ।
क्यों पावे बंधे जाहेरी, बुजरग[6] इन सरत ।। १४

दसमी से दोए भए, सो हादी होए बुजरक ।
आखर जमाना करके, पोहोंचाए सबों हक ।। १५

इन बीच जो गुजरे, तिन बरसों की तफसीर ।
दस अग्यारहीं तीस बारहीं, और सत्तर की जंजीर[7] ।। १६

इन दसों उमत खासी चली, दुनी चली तीस भए जब ।
*पुल सरात सत्तर कहे, पोहोंची आखर फिरस्तों तब ।। १७

पीछे तेरही में उठ खड़े, सुख काएम पोहोंचे सब ।
आठो भिस्त बिवेकसों, हुए नजरों न छूटे अब ।। १८

।। प्रकरण ।। ६ ।। चौपाई ।। ३२८ ।।

चौथे सिपारे में लिखी, सो रोसनी मैं दिल में रखी ।
जाहेर करों वास्ते उमत, खोलों बातून आई सरत ।। १

केतों के मुंह उजले भए, केतों के मुंह काले कहे ।
कैयों आकीन कै मुनकर[8], यों लिख्या होसी आखर ।। २

---

१. खज़ाना । २. उपाधि । ३. पृष्ठ । ४. अवतरित । ५. हुक्म । ६. बड़े लोग । ७. कड़ी । ८. न मानना ।

हक तालाने किया फुरमान, डाटत हैं कीने[1] कुफरांन ।
अंजीर तौरेत से जो फिरे, काफर हुए खरे ॥ ३

काफर दिलमें कीना आनें, अंजीर तौरेत पर मारे ताने ।
जो खुदाएका पैगंमर, तिनसे फिरे सो हुए काफर ॥ ४

जुबां आकीन क्यामत न मानें, ऊपर इसलाम के कीना आनें ।
उनसे जो हुए मुनकर, सोई गिरो कही काफर ॥ ५

मुनकर हुकम और *क्यामत, हुए नाहीं नेक[2] बखत ।
फंद माहें हुए गिरफतार, भमर हलाकी[3] पड़े कुफार ॥ ६

उस्तवार[4] न पाई सुंनत[5], ए जो हुए बद बखत ।
सुपेत मुंह कहे मोमन, पाई राह जमातसे तिन ॥ ७

नव सदीके आगे रोसन, कह्या होसी भिस्तका दिन ।
अरफा आगे रोज भिस्त, जाहेर होसी सबों सरत ॥ ८

रूहोंका होसी मिलाप, जो बीच दरगाहके आप ।
होसी अल्ला का दीदार, मिलसी तीनों इत सिरदार ॥ ९

ए हमेसां भिस्तके, नहीं बराबर कोई इनके ।
सुपेत मुंह रहें मस्त, खुदाएकी राह पर करी है कस्त[6] ॥ १०

जो गुजरचा बीच इन सूरत, खबर हुकम हकीकत ।
ए जो कही आएत साहेब, सो पढ़ी मैं कहे *महंमद ॥ ११

॥ प्रकरण ॥ १० ॥ चौपाई ॥ ३३६ ॥

ए रोज नाहीं खिलाफ, होसी नव सदी आगूं मिलाप ।
कलाम अल्लाका जाहेर नूर, अग्यारे सिपारे का जहूर ॥ १

ए लिख्या वास्ते सबब[7] इन, बदले नेक खूब कारन ।
बीच राह हकके एक, तिन नेकोंका बदला नेक ॥ २

---

१. द्वेष । २. भाग्यावान । ३. तबाही । ४. दृढ़ता । ५. कर्म कांड (इन्द्रिय निग्रह) । ६. मेहनत । ७. कारण ।

उनसों ज्यादा मिल्या है तित, बोहोतक सवाब[1] लेना हैं इत ।
बोहोताएत बीच यों नाबिएँ, सो मिसल—गाजियों[2] बीच जाहेर किए ॥ ३

तिन पर बंदगी एक करे कोए, सो हजार बंदगियों से नेक होए ।
तिनको सवाब बड़ा बुजरक, देवे साहेब एही हक ॥ ४

नव सै नव्वे हुए बरस, और नव मास उतरे सरस ।
तिनसे दूसरा होए मकबूल[3], सो ए बंदगियां करे कबूल ॥ ५

सो बखसीस करे सब ए, बदले एक के हजार दे ।
इनके बराबर ऐसे कर, कोसिस करे खुदाकी राह पर ॥ ६

खिलाफ राह चलें काफर, दुनियाँ को देखावें डर ।
ए जो सरत कही इस दिन, इस बखत उतरे मोमन ॥ ७

होए आवाज लड़ाई बखत, तिस पर मोमन करें कस्त ।
कस्त करें सब आरब, ए आएत उतरी है तब ॥ ८

ना—रवा[4] मोमन ना चाहें, घर छोड़ बाहेर लड़नेको जाए ।
होए सेहेर उजाड़ बखत सोए, खाने पीने की ढील होए ॥ ९

पोहोंचे जब एह सरत, बाहेर न जाना तिन बखत ।
हर एक जमात बोहोत मेला, हर इन किस्सों मुराद[5] किबला[6] ॥ १०

जिन सिर कह्या वह गाम, तिन छोड़ न जाएं लड़ाई काम ।
बाकी लोक पीछे जो रहे, जब वह तलव दानाई चहे ॥ ११

जो कोई उन गामके हैं, तिनको इलम दीनका कहे ।
सवा नव बरस दसमीके वाकी, इतथें मजकूर भई है ताकी ॥ १२

॥ प्रकरण ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ ३५१ ॥

कुरान तफसीर *हुसेनी, बुजरक एह पेड़से[7] केहेनी ।
मरद[8] तीनों पर है मुद्दार, जो कलाम अल्ला कहे सिरदार ॥ १

---

१. पुण्य । २. ब्रह्मसृष्टि । ३. स्वीकृत । ४. अनुचित । ५. आशय । ६. पूज्य स्थान ।
७. गुरु से । ८. मुहम्मद सा०, श्री देवचन्द्र, श्री प्राणनाथ ।

ए तीनों सूरत हैं एक, सो रसूल तीनों सरूप बिसेक ।
सब नामों बुजरगी लिखी जित, मगज[1] खुले सब देखो तित ।। २

ल्याए फुरमान केहेलाए रसूल, पर ताए खुले जाए खिताब मूल ।
ए इलम ले रूहअल्ला आया, खोल माएने इमाम केहेलाया ।। ३

दसमी के सवा नव बरस, ता दिन पैंदास सरूप सरस ।
पीछे जो तीसरा हुआ तमाम, वह चांद ए सूरज आखरी इमाम ।। ४

कहूँ कुरान देखियो अंदर, पट उड़ाऊँ आड़ा अंतर ।
उस *ईसे पीछे जो उस्तवारी, सो तो काएदे[2] खुदा के सिफत सारी ।। ५

बुनियाद[3] रसूल सोई आखरी, ए सिफत सारी इनकी करी ।
इन इमाम औलाद जो यार, पाक दरूद[4] करे हुसियार ।। ६

एक से इसारत दूसरे, बिलंद[5] अस्थाने खुसखबरे ।
इन देहुरी की सब चूमसी खाक, सिरदार मेहेरबान दिल पाक ।। ७

आगे चलने की निसानी, पातसाह नजीक दरगाह पेहेचानी ।
मिल्या कह्या मुलक पातसाही, सो खासी गिरो रूहें दरगाही ।। ८

उतपंन अपनी बड़ी दौलत, औलाद यार दोऊ बाजू उमत ।
बड़े साहेब की इत पातसाही, जाहेर हुआ खंभ खुदाई ।। ९

जिनमें हुकम किआ इसलाम दीन, दौलत दई सबों आकीन ।
मोती कह्या डब्बे बुजरक, उतहीं का सितारा हक ।। १०

दबदबे[6] का रोसन सूर, मेहेरबानगी साया खुदाए का नूर ।
ए सारे जो कहे निसान, सो पावे हदीसों होए पेहेचान ।। ११

सिरदार अस्वार इज्जत मैदान, आली सेर इन दरगाह का जान ।
इन पातसाह ऐसा जमाना, बखसीस चाहे बखत की पना ।। १२

इन गुलजारी[7] की खुस्बोए, रोसन होवे दिल रूह दोए ।
सब दुनियां में अकल इन, करे पसारा एक रोसन ।। १३

---

१. गूढ़ार्थ । २. नियम । ३. नींव । ४. दुआ । ५. ऊँचे । ६. रोब । ७. फुलवाड़ी ।

चांद सूरज दोऊ कही दौलत, मिने चार बिलंदी और मिलत ।
जबराईल रोसन वकील, बुध नूर की असराफील ॥ १४
रूहअल्ला ईसे का नूर, महंमद हुकम सदा हजूर ।
ए इमाम की सब कही सिफत, मोमन मुतकी[1] दोऊ साथें उमत ॥ १५
ढूंढ़ेगे हरघड़ी मरतबा[2], दुनियां सिर रसूल दबदबा ।
बिलंद दुनियां का हुआ आसमान, होए चाह्या मरतबा पावे पेहेचान ॥ १६
इन सरूप पर खुदाए का प्यार, दोनों जहान का खबरदार ।
पाया साहेब थें नेक बखत, दोऊ जहान बुजरगी पावे इत ॥ १७
सब रोसनाई तमामिअत, पाई बुजरगी कर कर कस्त ।
ल्याया मुंह सब किताब, नजर चारों पर खुलो सिताब ॥ १८
जवेर बयान तोहफे[3] हुकम, चार जिलदों पर दई खसम ।
तलब पाकी की पकड़ी, तरबीयत[4] तमामिअत[5] पाई बड़ी ॥ १९
पेहेली जिलद तमामिअत, ले हाथ बिलंद पनाह पोहोंचत ।
कबूलियत पाइए जित, बोहोत साथ मिलावत ॥ २०
लिखना बाकी जिल्दका है, सो तले तरजुमें लिखना कहे ॥
जुदियां कर मिलाइयां जंजीर, सो कौन पावे बिना *महंमद फकीर । २१
पेहेली तारीख पाई बुजरक, मेहेरम[6] थें तिन पाया हक ।
इस थें बरस सत्तानबे, तित दूजे जामें जाहेर भए ॥ २२
गैब[7] आवाज हुई इसारत, उतरी इलाही[8] इन सरत ।
आठ महीने हुए इन पर, तब पेहेली किताब भई मुयसर[9] ॥ २३
ए जो आलम जात खुदाई, गरीबी परेसानी बंदों पर आई ।
आगे हुसेन किया बयान, वास्ते रसूल हाथ फुरमान ॥ २४
ए जो दूसरे जामे[10] की कही, तहां पांच बुजरगी भेली भई ।
आगे दिन कहेंने क्यामत, सोई खोलों मैं हकीकत ॥ २५

॥ प्रकरण ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ ३७६१॥

---

१. संयमी । २. पदवी । ३. उपहार । ४. शिक्षा । ५. पूर्णता । ६. नजदीकी । ७. परोक्ष । ८. आकाशवाणी । ९. प्राप्त । १०. (शरीर) ।

ए सिपारे पेहेले की कही, जंजीर सोलमें की मिलाऊँ सही ।
तहां लिख्या है इन अदाए[१], बिना देखाए समझी न जाए ।। १

न था मैं परवरदिगार मेरे, बीच साहेब याद तेरे ।
काएदा[२] उमेद गया सब भूल, मुझ ऐसे की द्वा करी कबूल ।। २

तुम कबूल में तरबिअत पाई, खसलत[३] तुमारी इनमें आई ।
भी देखियो तुम एह बचन, हजरत ईसे जो कहे रोसन ।। ३

तेहेकीक मुझको है ए डर, खलक अपनी जो है हाजर ।
पीछे मेरे मोहीम[४] खैरात, जो बर पाए करे दीन की बात ।। ४

पातसाही मेरी बीच उमत, कबूल करने को बजाए ल्यावत ।
पीछे मेरे मौत के कहे हजरत, चाहिए खलीफा इस बखत ।। ५

न जननेवाली मेरी औरत, अठानबे बरस की मजल है इत ।
और बस—बखस[५] ना कर, नजीक तेरे तेहेकीक मुकरर[६] ।। ६

फरजंद मेरे ऐसा होए, साहेब दीन हुकम का सोए ।
लेवे मिरास[७] इमामत, लेवे मुझसे हकीकत ।। ७

एह मिरास कही मिलकत, इलम की लेवे हिकमत ।। ८

।। प्रकरण ।। १३ ।। चौपाई ।। ३८४ ।।

औलाद *याकूब कह्या *इस्हाक, इनों का कबीला है पाक ।
पेहेले कही एही मजकूर, और बिध लिखी कर रोसन नूर ।। १

ए जो मिलाइयां हैं जंजीर, सोई जुदे कर देऊँ खीर और नीर ।
एही अगली फेर और बिध लिखी, सोई समझी चाहिए दिल में रखी ।। २

भेद न पाइए बिना तफसीर[८], ए दई सिच्छा[९] महंमद फकीर ।
खासा मुरीद ए जब भया, बेटा नजरी *एहिया को कह्या ।। ३

ईसा को कर गाया खसम, कलाम अल्ला ताए कहे हुरम[१०] ।
कुरान किताबें जिकर किया, नाम लिख्या ताको *जिकरिया ।। ४

---

१. विधि । २. नियम । ३. विशेषता । ४. नाममात्र । ५. विवाद । ६. नियत, स्थापित । ७. उत्तराधिकार । ८. विवरण । ९. शिक्षा । १०. निकटतम ।

जो बेटा नसली ईसे का था, सो कलाम अल्ला कहे जुदा रह्या ।
इन बिध केती कहूँ जंजीर, कुरान के भांतों तफसीर ॥ ५

हादिएँ इनको ऐसा किया, फरजंद मेरे मुद्दा लिया ।
हे परवरदिगार मेरे, कबूल हुआ रजामंदी[1] तेरे ॥ ६

अव्वल कौल इनके बेसक, जिनमें राजी होवे हक ।
पीछे इसके सेजदे सिर, द्वा करे जारी कर कर ॥ ७

करम खुदाए का साहेब सेजदे, पोहोंच्या कौल मोंह वाएदे ।
इन समे सब कबूल करे, एह द्वा दिल सारी धरे ॥ ८

खुसखबरी तोहे जिकरिया, देता हों मैं यों कर कह्या ।
ए बेटा तुझे बखसिया, कह्या नाम उसका *एहिया ॥ ९

पैदा किया *एहिया को देख, आगू वह मैं नाम एक ।
बीच ल्याए *जादल—मिसल[2], भांत बुजरगी नाम नकल ॥ १०

आगू इसके ऐसा नहीं नाम, ना माफक इसके कोई काम ।
बोहोत हुए कह्या इन रसम[3], कोई हुआ न आदमी इस इसम[4] ॥ ११

बल्क एही है बुजरक, किया खुदाए पैगंमर हक ।
ना कछू मेहेतारीने पाले, बापके ना हुए हवाले ॥ १२

इमाम सालबी से नकल आई, आगू इस थें नकल फुरमाई ।
पीछे उसके ऐसा चहावे, बुजरगी बीच जहूरके ल्यावे ॥ १३

पीछे उसके एते नाम लेवे, खासोंमें खासगी देवे ।
भाँत भाँत नाम जुदे बे सुमार, अपनें नामें सब किए उस्तवार ॥ १४

आखर अपने काम मजबूत, ए अरस परस नाम कह्या मेहेमूद ।
आखर बुजरगी महंमद पर आई, खासी उमत महंमदें सराही ॥ १५

इसम धरेका माएना एह, ऐसी सबी[5] कोई और न देह ।
ए तिस वास्ते ऐसा कह्या, गुनाह कस्त कोई जाहेर न भया ॥ १६

---

१. अनुमति । २. एक किताब । ३. रीति । ४. नाम । ५. उपमा (सूरत) ।

हो साहेब मेरे जिकरिया यों केहेवे, मेरे फरजंद क्यों ऐसा होवे ।
मेरी औरत है इन हाली, सो तो नहीं जनने वाली ॥ १७
अब मैं पोहोंच्या उमेद एती, बुजरगी पाइए इनसेती ।
ना कछू एती थी खबर, ना देहेसत लई दिल धर ॥ १८
मोहे गरीबी और नातवान[1], ए बड़ाई आपसों होए पेहेचान ।
होए पेहेचान जो मेरी चाहे, बिलंद करने जो कुदरत उठाए ॥ १९
कहे फिरस्ते खुदाके हुकम, ऐ जिकरिया कह्या जो तुम ।
ए बात योंहीं कर है, बुढ़ापा नातवानी कहे ॥ २०
ए तेरे खुदाएने कह्या, पैदा करने काम फरजंदका भया ।
कह्या बीच इस सिनसे[2], आसान खुदाके दो सखसोंसे ॥ २१
तो सांचा एहिया पैदा किया, नाबूदसेंती बूदमें लिया ।
बुजरगी सों खुदाएने कही, *जिकरिया फरजंद पोंहोंच्या सही ॥ २२
खुस्खबरीसों हुआ खुसाल, पेहेले ना सुध थी वजूद इन हाल ।
ए बात जाहेर न जानी कबे, दूजे फेरे पोहोंचे इन मरातबे ॥ २३
कहे *जिकरिया साहेब मेरे, किन विध बाका होसी तेरे ।
मेरी निसानीकी खबर जेह, मोहे नहीं पड़त मालूम एह ॥ २४
कह्या खुदाएने निसानी तेरी, न सकेगा कहे हकीकत मेरी ।
मरदोंसें बात न होवे इन, केहेनी तीन रात और चौथा दिन ॥ २५
ए बेटे नसली[3] की जंजीर, ए पावें गिरो वचिछन[4] वीर ।
लैलत कदरके तीन तकरार, दिन फजरका खबरदार ॥ २६
ए क्या जाने फरजंद पेगंमरी, ए खिताब दिया एहिया नजरी ॥ २७

॥ प्रकरण ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ ४११ ॥

छिपके साहेब कीजे याद, खासलखास नजीकी स्वाद ।
बड़ी दुआ छिपके माहें ल्याए, सब गिरोहसों करे छिपाए ॥ १

१. कमजोर । २. आयु । ३. वंशज । ४. असाधारण ।

बरस निन्यानबेलो सरम, न करी जाहेर होए के गरम ।
बरस निन्यानबे हकी हुरम, साथ ईसाके समझियो मरम[1] ॥ २
सोए ना जननेवाली कही, तलब[2] बेटे की राखे सही ।
बूढ़ा ईसा आवाज करे, आस्ती आवाज कोई ना दिल धरे ॥ ३
पाँच जिल्दें इन मजलें पाई, तो लों बात करी छिपाई ।
जेता कछू केहेता पुकार, सुनने वाला न कोई सिरदार ॥ ४
आवाज उनकी थी इन पर, चाहें आप कोई लेवे खबर ।
ए सुनियो दूजी विख्यात, दूजे जामेंकी कहूँ बात ॥ ५
कह्या सुनो मेरे परवरदिगार, धोए हाड़ बुढ़ापे नार ।
खंभमें वजूद इन घर, बूढ़े हाड़ सुस्त इन पर ॥ ६
कह्या होवे वजूद तमाम, इन थें भली भांत होवे काम ।
जो सिर मेरा हुआ सुपेत, तरफ रोसनी नहीं अचेत ॥ ७
अंदर ज्वानी है रोसन, कांह ज्यों पकड़े अगिन ।
उसही झलकार थें मकबूल[3], बूढ़े रोसनी न गई भूल ॥ ८

॥ प्रकरण ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ ४१६ ॥

ए जंजीर सिपारे सोलमें माहें, बरस सौ की मजल है जांहें ।
याद करो माहें कुरान, किस्से *इद्रीसकी पेहेचान ॥ १
बेटा नवासे साहेब का, बाप दादा नूह था ।
अबनूस था उसका नाम, इद्रीस लकब[4] कह्या इस ठाम ॥ २
ए लकब दिया है सांच कारन, मालूम हुआ वास्ते इन ।
अव्वल खत यों लिख्या कलाम, नजूम दरजी पना किया इसलाम ॥ ३
तीस वरक[5] हुए नाजल[6], ऊपर जामें कहे असल ।
बीच किताब ल्याए इद्रीस, पीछे आदमके सौ बरीस[7] ॥ ४

१. भेद । २. चाह । ३. स्वीकृत । ४. उपाधि । ५. पृष्ठ । ६. अवतरित । ७. वर्ष ।

तेहेकीक वह था कहे खलक, एही सांच कहेगा हक ।
पोहोंचाया चौथे आसमान, बीच मेराज भिस्त पेहेंचान ॥ ५
पैगंमरकी दरगाह साबित, रसूल इद्रीस फुरमाए मिले इत ॥ ६

॥ प्रकरण ॥ १६ ॥ चौपाई ॥ ४२५ ॥

कह्या आम सिपारे माहें, *अग्यारे सदी लिखी है जाँहें ।
हुकम हादीके खोलों इसारत, पाइए कौल जाहेर क्यामत ॥ १
दावा हुआ हजरत के सेती, ए करार बांध्या सरत एती ।
नाम हजरत के सेहेर[1] कही, अग्यारे गिरह रस्सी पर दई ॥ २
रस्सी रखी कूएँ के माहें, ऊपर पत्थर दिया तांहें ।
जबराईलें कही खबर, भेज्या अली कुएँ गया उतर ॥ ३
अली रस्सी ल्याया ऊपर, गिरह अग्यारे सदी हुई नजर ।
अग्यारे आएत आई ततपर, भेजी खुदाएने जबराईल खबर ॥ ४
इन पढ़ने रसूल खबर भई, हर आएत हर गिरह खुल गई ।
उमर रजीअल्ला[2] करी नकल, अजब आएत आई सकल ॥ ५
वास्ते रद्द करने को सेहेर, खोली गांठें छूटे पैगंमर ।
इनसे पनाह[3] पकड़ी मैं, सो तिनकी फजर करी जिने ॥ ६
फलक[4] चीज केहेत हैं एक, हुआ चाहे दोऊ देखो विवेक ।
महंमद ले उठे उमत खास, सो तो पोहोंचे साहेब विलास ॥ ७
पीछे रह्या जो पत्थर घास, सो इन दुनियां की पैदास ॥ ८

॥ प्रकरण ॥ १७ ॥ चौपाई ॥ ४३३ ॥

सिपारा आम आधा पूरन, फजर मक्कीए[5] सूरत रोसन ।
खास उमत आगे करों बयान, ले रोसनी मारो सैतान ॥ १
सौगंद खाई बीच होंनें फजर, द्वा दोस्तों बखत नजर ।
फजर बंदगी होसी आराम, जीव दिल पावे इसलाम ॥ २

१. जादू का मंत्र । २. मु० सा० का साथी । ३. शरण । ४. आकाश । ५. कुरान का अध्याय ।

पेहेला रोज कौल हुरमत[1], सो हादी देखावे रोज क्यामत ।
जिस बरस बीच होए फजर, पेहेले जिलहज थें खुली नजर ॥ ३

पेहेले दिनकी कही दसमी रात, दसमी सदी बीच आए साख्यात ।
इन दसमी से अग्यारमी भई प्रभात, मिले दोस्तों सों करी बिख्यात ॥ ४

दूसरे सरूप मिल करी कस्त, हाजी[2] मस्कीनों को देखाई वस्त ।
कह्या *अरफेका अगला दिन, वास्ते ईद अग्यारहीं रोसन ॥ ५

पढ़ना द्वा[3] वजीफा जित, सब चाह्या हाजियों का होवें इत ।
पाक होवे सबोंका दम, तब जाहेर होवे ईद खसम ॥ ६

पेहेला रोज क्यामत बयान, सो हजार बरसकी इसारत जान ।
दोऊ सरूप कहे दो अंगुली, दसमीसे दूजी अग्यारहीं मिली ॥ ७

दोऊ मिल अग्यारहीं भई, सब सालेह[4] मेलाइयां बीच कही ।
*कलीमअल्ला[5] रोसनी दसमी मिनें, अग्यारमोमें ऊग्या दिनें ॥ ८

रातमें सब रोसनी जुदी भई, इब्राहीम साल्हे[6] मिल फजर कही ।
भी फजर कही रोसनी बादल, बरस्या नूर *रूहअल्लासों मिल ॥ ९

बरस्या बादल नूर रोसन, गिरे आंझू[7] सरमिंदे सबन ।
सब रोवें होवें पसेमान[8], एही हाल होसी सारी जहान ॥ १०

॥ प्रकरण ॥ १८ ॥ चौपाई ॥ ४४३ ॥

साखी—तीन दिन कहे जो बुजरग, सो तीनों सूरत के दिन ।
रसूल से *क्यामत लगे, ए जो किए रोसन ॥ १

याद करो खुदाएके तांईं, तकबीर[9] कहों दिन गिने हैं जांहीं ।
ए तीन दिन जो हैं बुजरक, पीछे *ईद जुहा के हक ॥ २

नज़ीक इमाम आजम के कही, *पीछे निमाज सुबहकी भई ।
*अरफासे *असर ईद दिन, दोए साहेब भए कौल इन ॥ ३

---

१. मर्यादा । २. मोहताज तीर्थ यात्री (मोमिन) । ३. प्रार्थना । ४. पवित्रात्मा (मोमिन) ।
५. (श्री देवचन्द्रजी) । ६. एक पैगम्बर । ७. आंसू । ८. लज्जित । ९. विवरण ।

सुबह सेंती अरफेका दिन, आखर ताईं असर इन ।
बाँधी उमेद बड़ी आगूं आवन, भई तीनों दिन निमाज पूरन ॥ ४

इन मसलें साफी इमाम, माफक दूजे साहेबका नाम ।
सिताबी[1] जो करे कोई, तो रोज मिलावा लेवे सोई ॥ ५

अग्यारहीं बारहीं *जिल्हज्ज करे, सो गुनाह कछू ना धरे ।
बाजे हैं जाहिल[2] आरब, बातें करें सिताबी तब ॥ ६

गिरोह एक बखत आखर, आबिद को खुदाए कह्या यों कर ।
सिताबी होवे रुखसद[3], तुझ पर गुनाह नाहीं कद ॥ ७

और जो कोई ढील करे ताँहीं, तीन रात रहे मजल माहीं ।
तिनको नहीं कछुए आजार[4], तेहेकीक योंहीं है निरधार ॥ ८

इनमें जो कोई परहेज करे, पीछे अदा के हज्ज गुनाहसे डरे ।
जो कोई खतरों से फिरचा होए, परहेज करे आराम वास्ते सोए ॥ ९

बाकी जेती रही उमर, तिनमें रखे खुदाएका डर ।
क्यामत को होवें जाहेर, पोहोंचेंगे बदले यों कर ॥ १०

॥ प्रकरण ॥ १९ ॥ चौपाई ॥ ४५३ ॥

## अथ तारीख नामा

जिनको क्यामत की है सक, क्यों कर उठसी यह खलक ।
बात नहीं ए बरकरार[5], काफर न देखें ए विस्तार ॥ १

न देखें अपना हवाल[6], कै पैदा किए आदमी डाल ।
खुदाए खाक पाक से पैदा किया, तिन बूंदका ए बिस्तार कर दिया ॥ २

एह तमाम जो पैदाइस कही, तिनका खुलासा कर देऊँ सही ।
जिनसेती होवे मकसूद, इन नाबूद सेती ल्याया बूद ॥ ३

तिनमें बाजे कहे बेसुध, तिनको कबूं न आई बुध ।
इनमें खुदाए किए दोए, क्यामत काम दूजे से होए ॥ ४

---

१. जल्दी । २. अज्ञानी । ३. बिदा । ४. मुसीबत । ५. निश्चित । ६. हाल, दशा ।

साहेब चाहे सो करे, निपट माहें नजरमें धरे ।
ए खुदाए पेहेले किया करार, जमाना होसी सिरदार ॥ ५

खावंद होएके करसी काम, तिनका अव्वल सेती धरिया नाम ।
बाहेर ल्याया तुमारे तांई, छिपा लड़का था पेट माहीं ॥ ६

निहाएत[1] था नातवान[2], ना बर पाएगी ना काम पेहेचान ।
सब तरबिअत[3] तुमको किया, पोहोंचे कुदरत तमाम हाथ दिया ॥ ७

तूँ था बीच कोम जाहिल, तित खुदाएने दई अक्ल ।
बरस बारहीं के लिए तीस, दस लिए अग्यारहीं के किए चालीस ॥ ८

तुममें से कोई होएगा ऐसा, जो पोहोंच के करेगा वफा[4] ।
बीच ज्वानियां आगूं ज्वान, बाहेर फेर हुए निदान ॥ ९

॥ प्रकरण ॥ २० ॥ चौपाई ॥ ४६२ ॥

लिख्या आम सिपारे सूरत, आठईं माहें मजकूर क्यामत ।
सौंह करी साहेब आसमान, ए इसारत बारें सदीमें निदान ॥ १

दो हादी दसमी सदी से आए, उमत तिनमें लई मिलाए ।
दस ऊपर दोए *बुरज जो कही, इनमें हादी उमत मजकूर भई ॥ २

दस और दोए जुदे कहे, ए इसारत जिनकी सोई लहे ।
ए बुरज कहे दस और दोए, ए गिनती मजल चांदकी सोए ॥ ३

या दरिया या आसमान सब, ए कौल साहेब का न भूलें कब ।
ए सौगंद खाए के करी सरत, एही रोज जो कही क्यामत ॥ ४

फेर फेर कह्या सौं खाई, अल्ला की साहेदी देवाई ।
खुदाए देखता है सबन, और जानता है सबन के मन ॥ ५

ग्वाही भी साहेब की कही, सौंह भी खुदाए की खाई सही ।
एक कौल बीच बंदा कह्या, पैगंमर भी एही भया ॥ ६

॥ प्रकरण ॥ २१ ॥ चौपाई ॥ ४६८ ।

१. बहुत ही । २. कमजोर । ३. पालन । ४. प्रतिज्ञा पालन ।

## अमेतसालून[1]

महंमदें जाहेर करी दावत, डर फुरमाया रोज क्यामत ।
पढ़चा खलक ऊपर कुरान, ए तीनों मानें नहीं फुरमान ॥ १
काफर पूछें मोमनोंसों ले, ना पूछे रसूलको दिल दे ।
खुदाए तालाने कह्या यों कर, किस चीज से पूछें काफर ॥ २
कुरान चीज ऐसी बुजरक, फेर तिनमें ल्यावें सक ।
रसूल को नाम धरें काफर, किवता झूठा जादूगर ॥ ३
ए बुजरग बुनियाद नबुवत, बीच कौल दरगाह बड़ी सिफत ।
कोई कहे पैगंमर है, कोई साएर[2] दिवाना कहे ॥ ४
कोई कोई क्यामत को मानें, कोई कोई सामे मारें तानें ।
एक गिरो मिने नबुवत, कहे छुड़ावेंगे वे क्यामत ॥ ५
केतेक साहेबसों बैठे फिर, केतेक क्यामत से मुनकर ।
बाजों को दुनियां हैयात, बाजे सक ल्यावें इन बात ॥ ६
खुदाए की सौंह खाए के कही, के क्यामत नजीक आई सही ।
पेहेली नीयत अकीदे[3] अपनी, झूठा कौल ना करे धनी ॥ ७
जिमी को कह्या बिछान, तिन पर ल्यावसी तीनों जहान ।
पहाड़ मेखां[4] कही उस्तवार, पैदा किया दुनियां नर नार ॥ ८
तो नसल तुमारी बाकी रहे, स्याह सुपेत छोटे बड़े कर कहे ।
कोई खूब कोई किए बुरे, नींद रात ताजगियां करे ॥ ९
रात निकोइयों[5] को भाने, कूबत हैवानी की आने ।
बंदगी इनसे होवे दूर, सब ढांपे अंधेर मजकूर ॥ १०
साहेब फतुआंत[6] का यों कहे, साहेब रातों के तले रात रहे ।
इनकी नजरों न छिपे दुसमन, जो कोई हैं साहेब के तन ॥ ११

---

१. कुरान का अध्याय । २. कवि । ३. विश्वास । ४. खूंटे । ५. भलाई करने वाले । ६. न्याय ।

रातों चलने वाले कहे सेखल इसलाम, करें परदा दुनियां सों चलें आराम ।
दिन के तांईं कह्या बाजार, इत बे इन्साफी चलन हार ॥ १२

ए जो चलें रातों के यार, मैं इन बंदे पाकों की जाऊँ बलिहार ।
कह्या जो साहेब का दिन, वह बखत तलब करें मोमन ॥ १३

इनहीं में ढूंढ़ें हासिल[1], इस दिन उमत की फसल ।
इनके तले सातो आसमान, ए सारों के ऊपर जान ॥ १४

और खलक जो इनके तले, तिन खलक को होए जुलजुले[2] ।
पैदा किया आफताब[3] रोसन, ए दिन हुआ वास्ते मोमन ॥ १५

इनके साथ उतरचा बादल, सो नूर बादलियां रोसन जल ।
तिनकी पैदास कही दाना घास, ए कही इसारत तीनों पैदास ॥ १६

गेहूँ जौ और कह्या घास, काफर फिरस्ते रूहें उमत खास ।
फिरस्ते जौ गेहूँ इसलाम, और घास कह्या सब काफर तमाम ॥ १७

मोती दरयाव से काढ़चा *महंमद, इन विध इत लिख्या सबद ।
घास कह्या सब चारा हैवान, गिरो दोऊ उतरी दरियाव से जान ॥ १८

याही को बाग दरखत कहे, नजीक मिलाप के लपेटे गए ।
इनों के बीच चले हुकम, रोज क्यामत को जाहेर खसम ॥ १९

बरकरार[4] किया हुकम बखत, ए इसारत जाहेर कही क्यामत ।
ए फसल परहेजगार मोमन, काफरों के तंबीह के दिन ॥ २०

इस रोज फूंके करनाए[5], असराफील सूर कुरान के गाए ।
एक सूरें आखर हुई सबन, दूजे सूरें उठे सब तन ॥ २१

सब उठे कबर थें अपनी, काएम किए क्यामत के धनी ।
इमाम सालबी कहे यों बनी, रसूल पूछे उमत अपनी ॥ २२

कहे क्यामतमें सबे उठाए, दस बिध फैल पूछे जाए ।
बांदर सूरत होसी सुकन चीन, जिनों हिरदे में नहीं आकीन ॥ २३

---

१. प्राप्ति । २. दैवी प्रकोप भूकम्प । ३. सूर्य । ४. निश्चित । ५. नरसिंघा ।

सुअर सूरत हरामखोर कहे, जो कबूं हलाल[1] के ढिग ना गए ।
गधे सूरत कहे हराम कार, जिनके बुरे फैल रोजगार ॥ २४
सूद खानेवाले हुए अंधे, उसी खैंच से दोजख फँदे ।
न किया सेजदा न सुनी पुकार, सो हुए बेहेरे[2] पड़े दोजख मार ॥ २५
गूँगे कहे जालिम हुकम, वे सबके तले न ले सकें दम ।
पढ़े जुबाँ काटे पीब लोहू बहे, झूठे फैल मुख सीधे कहे ॥ २६
मलें दोजखी हाथ पांऊं दोए, ताए देखें भिस्ती[3] अचरज होए ।
उड़न वाले कहे मोमन, मुतकी भी पड़ोसी कहे तिन ॥ २७
ताए हर भांत रंज पोहोंचाया जिन, सो लटके बीच सूली अगिन ।
चुगलखोर[4] काटे हाथ पांऊं, और सखती दिलोंको लगसी घाउ ॥ २८
ए दस भांतकी कही दोजख, जो बे फुरमान हुए हक ।
जिनहूँ फैल जैसे किए, तिनको बदले तैसे दिए ॥ २९
फुरमाया केतेक फेर उठाए, तकब्बरों[5] दोजख हमेसगी पाए ।
और जो कहे मोतिन के घर, सो खासी गिरो साहेबके दर ॥ ३०
उनको जो लगे रहे, सो मुतकी बूंदों मिले कहे ।
जिनों इनोंकी दोस्ती लई, साहेबें पातसाही तिनको दई ॥ ३१
और भी सुनो दूजी जंजीर, दिल दे देखो खीर और नीर ।
ए जो दुनियांका कह्या आसमान, दो टुकड़े दिल कह्या जहान ॥ ३२
ए रोज है निपट सखत, यों जुलजुला होसी क्यामत बखत ।
बीच हवाके पहाड़ उड़ाए, ए जो दुनियां में बुजरग केहेलाए ॥ ३३
बुजरगों धोखा क्योंए न जाए, तो बखत ऐसा दिया देखाए ।
फितुए[6] इनोंके जावें तब, ऐसा कठिन बखत देखें जब ॥ ३४
ठंढे वजूद होवें वर पाए, तब हकीकत देखें आए ।
सब दुनियां हुई गुन्हेगार, यों देख्या बखत दोजखकार ॥ ३५

१. उचित । २. बहरे । ३. बहिश्त में रहने वाले । ४. निन्दक । ५. अभिमानी । ६. फसाद ।

अब जो सुनो खास उमत, खड़े रहो दोजख एक बखत ।
जिन भागो गोसे रहो खड़े, देखो दोजखियों खजाने बढ़े ॥ ३६

भिस्त रजवान[1] मोमन निगेहवान[2], दोजख खजाना पोहोंचे कुफरान ।
तहां तांई बखत पोहोंचे सबन, पैदरपें[3] जले अगिन ॥ ३७

गुजरे हैं हद्दसों काफर, दूर दराज जानी थी आखर ।
दुख लंबे हुए तिन कारन, यों मता पाया दोजखियों हाल इन ॥ ३८

करे मोअलम[4] नकल अपनी जुबांए, सांची जिकर जो कही खुदाए ।
जब मगज माएने लीजे खोल, तब पाइए इसारत बातून बोल ॥ ३९

साखी—दुनियां की उमर कही, अव्वल सिपारे माहीं ।
सात हजार साल चालीस, नीके देखियो तांहीं ॥ ४०

तैंतालीस जुत्फ जो कहे, हर जुत्फ[5] सत्तर बहार[6] भए ।
हर बहार सात सौ बरस लए, हर बरस तीन सौ साठ दिन दए ॥ ४१

याके एकईस लाख सात हजार दिन, आदम पीछे मजल इन ।
ए रसूलके आएकी मजल, ए गिनती कर तुम देखो दिल ॥ ४२

पांच हजार ताए बरस भए, आठ सौ सैंतालीस ऊपर कहे ।
त्रेसठ बरस उमर के लिए, छे हजार नव्वे कम किए ॥ ४३

इतथें रसूलें करी सफर, इनके आगे की करों जिकर ।
अग्यारहीं के जब बाकी दस, तब दुनियां उमर सात हजार बरस ॥ ४४

इत थें अमल भयो इमाम, चालीस बरसों फजर तमाम ।
जोड़ा पर जोड़ा गुजरे, दुनियां उमर इत लों करे ॥ ४५

तिनमें जो दस बरसों फजर, सब दुनियां भई एक नजर ।
तीस बरस जब अग्यारहीं पर, तब दुनियां सब भई आखर ॥ ४६

सत्तर बरस पुल सरात के कहे, सो उठने क्यामत बीचमें रहे ।
*पुल सरात दुख कहिए क्यों कर, काफर जलें जुलजुले[7] आखर ॥ ४७

---

१. रखवाला । २. संरक्षक । ३. निरंतर । ४. शिक्षक । ५. जोड़ा । ६. हिस्सा ।
७. भूकम्प, और ज्वालाएं ।

दस और दोए बुरज जो कहे, सो बारहीं क्यामत के पूरे भए ।
ए तीसरी बड़ी फिरस्तों की फजर, पीछे उठ खड़ी दुनियां नूर नजर ॥ ४८

॥ प्रकरण ॥ २२ ॥ चौपाई ॥ ५१६ ॥

दिन क्यामत के पूरे कहे, सो खास उमतवालोंने लहे ।
क्यों लहे जाको लिखी दोजख, जावे नहीं तिनोंकी सक ॥ १
पुरसिसका[1] दिन साहेब देखावे, क्यामत रोज दूजा कोई न पावे ।
पांच सूरत लिखी आम सिपारे, ए समझें पाक दिल उजियारे ॥ २
ए पांचो नेक अमल जो करें, सो भिस्ती फुरमान से ना टरें ।
और झूठा काम बदफैली करे, सो दोजखकी आगमें परे ॥ ३
हमेसां दोजखी बदकार[2], रोज क्यामत के हुए खुआर ।
ए दिन किने न किया मुकरर्र, ताए पेहेचानो जिन दई खबर ॥ ४
कोई न जाने राह न जाने दिन, इन समे हादिएँ किए चेतन ।
उस दिन बदला होवे अति जोर, हाथों सीधे साहेब करे मरोर ॥ ५
तित पोहोंचके सुध दई तुमें किन, बुजरगी दई इत इन ।
निहायत इस रोजकी कोई न पावे, ए पातसाह पुरसिसका देखावे ॥ ६
किनको नफा न देवे कोए, तब कोई न किसी के दाखल होए ।
कूवत[3] तिन समे कहुँए जाए, तो कोई नफा किसी को न सके पोहोंचाए ॥ ७
हुकम हादीका साहेब फुरमान, करें सिफायत खुदा मोमनों पेहेचान ।
मोमन आकीनदारोंको चाहें, हकमें भी उनहीं को मिलाए ॥ ८
जब जाहेर हुआ रोजा और हज्ज, तब काजिएँ खोल्या मुसाफ मगज ।
ए बात साहेबें छत्रसालसों कही, घर इमाम बिलंदी छत्तांको दई ॥ ९

॥ प्रकरण ॥ २३ ॥ चौपाई ॥ ५२५ ॥

१. हिसाब, पूछ ताछ । २. दुराचारी । ३. हिम्मत ।

नौमी आगे अरफा ईद कही, ले दसमी आगूं सब लीला भई ।
मजलें सब अग्यारहीं के मध, सो कहे कुरान विवेक कै विध ॥ १

ए अग्यारहीं बीच बड़ो विस्तार, प्रगटे बिलंद सब सिरदार ।
सब न्यामतें सिफतें दई सितार[1], उतरियां आएतें जो उस्तवार ॥ २

छिपा था बुजरग बखत, जाहेर हुआ रोज देखाई क्यामत ।
अग्यारहीं सुख ले चले सिरदार, पीछे बारहीं में जले बदकार ॥ ३

जिन पाई राह रोज क्यामत, सो उठे फजर के नूर बखत ।
फजर पीछे जब ऊग्या दिन, तब तो तोबा तोबा हुई तन तन ॥ ४

तब तो दरवाजा मूंदके गया, पीछे तो नफा काहू को न भया ।
सब जले जल्या अजाजील, जाए उठाया असराफील ॥ ५

एक सूरें उड़ाएके दिए, दूसरे तेरहीमें काएम किए ।
यों क्यामत हुई जाहेर दिन, *महंमदें[2] करी उमत रोसन ॥ ६

॥ प्रकरण ॥ २४ ॥ चौपाई ॥ ५३१ ॥

॥ प्रकरण तथा चौपाइयों का संपूर्ण संकलन—प्रकरण ५२४, चौपाई १८७५८ ॥

इति श्रीमहामति श्रीप्राणनाथजी की 'तारतम बानी' का सोलहवाँ ग्रन्थ ( भाग २ )

## ॥ बड़ा क्यामतनामा संपूर्ण ॥

१. परमात्मा, (दोष मुक्त) । २. हकी सूरत महामति प्राणनाथ ।

# महामति प्राणनाथ प्रणीत तारतम वाणी

# साहित्य-कोश

## परिशिष्ट

महामति प्राणनाथ प्रणीत तारतम वाणी में विश्व की दोनों धार्मिक परम्पराओं का अनूठा संगम है। हिन्दू धर्म ग्रन्थ 'वेद' (चारों वेद, उपनिषद, शास्त्र और पुराण) तथा कतेब (जंबूर, तौरेत, अंजील और कुरान) अपना अलग अस्तित्व रखते हुए तारतम वाणी में एकाकार हो गए हैं। वेद का अन्तिम मान्य धर्म ग्रन्थ श्री मद्‌भागवत् है। उसमें पहले आए धर्म ग्रन्थों का सार निहित है। बृज और रास लीला के द्वारा आत्मा की परम गोपनीय अनुभूति का सरल भाषा में दिग्दर्शन कराया गया है। तारतम वाणी 'श्री रास' किताब से शुरू होती है। 'कतेब' का अन्तिम ग्रन्थ कुरान है। उसमें शेष तीनों किताबों के सार के साथ एकेश्वरवाद की दृढ़ता से स्थापना और कियामत का निश्चयीकरण है। मृतकों का जिन्दा होना कियामत का जाहिरी अर्थ लिया जाता है। आत्मा का शरीर रूपी कबर से उठकर परमात्मा के सामने नमन करना रूहानी कियामत है। वास्तव में रूहानी कियामत—आत्म जागृति ही सभी धर्म ग्रन्थों का सार और धर्म की आखिरी मंजिल है। तारतम वाणी का अन्तिम ग्रन्थ 'कियामतनामा' है। आत्म जागृति को ही उन्होंने 'कियामत' माना है। श्रीमद्‌भागवत और कुरान दोनों महामति के ज्ञानकी पुष्टि करते हैं। दोनों को स्वामी जी ने अपने ज्ञान की कसौटी और फुरमान, ईश्वरीय आदेश स्वीकार किया है।

हिन्दू धर्म ग्रन्थों ने विजयाभिनन्द निष्कलंक अवतार और कतेब ने आखिरी जमाने के खाविन्द इमाम मेहदी से जो अपेक्षा की है वह हमें महामति के जीवन में पूर्ण होती दिखाई देती है। धर्म की न समझ में आने वाली गुत्थियों को सुलझाकर, धर्म को सरल-साधारण भाषा में साधारण मनुष्य का जीवन बना दिया है। विभिन्न धर्म ग्रन्थों के ज्ञान-सूत्रों में तादात्म्य बताकर, उनकी कड़ियों को जोड़कर उन्होंने विश्व धर्म का एक अद्वितीय शास्त्र दिया है। वेद और कतेब के कथानकों में एकता दर्शाई है। शैतान, दज्जाल, कलियुग और माया सब एक

हैं और इन सब का प्रतीक मन है ऐसा बताकर उसे वश में करने का सरल उपाय बता दिया है। अन्तिम अवतार के बताए मार्ग पर चलकर मोक्ष साधारण दिनचर्या के समान सहज प्रतीत होने लगता है।

महान आत्माओं, अवतारों, योगियों, और पैगम्बरों ने अपने अन्तिम समय यह कामना की थी परमात्मा हमें अन्तिम अवतार के युग में फिर जन्म लेने का सौभाग्य दे। महामति ने दावा किया कि वे सब मुझ में और मेरे आस-पास के लोगों में प्रकट हुए हैं।

धर्म ग्रन्थों के कुछ सांकेतिक शब्द और कथानक ऐसे हैं कि उनका शब्दार्थ भर लिया जाय तो वे या तो समझ ही नहीं आते अथवा उनमें कोई महत्व ही नजर नहीं आता। महामति ने उनका गूढ़ार्थ बताकर उनकी महानता और सौन्दर्य को उभारा है। वेद और कतेब के पढ़ने वाले उन बातिनी मायनों को न समझ पाने के कारण उलझ कर रह गए। तारतम वाणी को पढ़ने वाले जिज्ञासु लोग वेद और कतेब का साथ-साथ अध्ययन करते हैं तो उलझनों को सहज ही में सुलझा लेते हैं। ब्रह्मज्ञान के सूत्र और अन्तिम अवतार के विषय में संकेत भी छिटपुट बिखरे मिलते हैं। महामति ने उन सब को चुनकर उनको लड़ियों में पिरो दिया है।

> "न खुले अकेले वेद से, न खुले अकेले तारतम।
> वेद तारतम दोऊ मिले, तब मिटे अन्तर भ्रम॥" नवरंग स्वामी
> "जंजीरा मुसहाफ की, मोतियों में पिरोइए जब।
> जिन्सों जिन्स मिलाइए, पाइए मगज माइने तब॥"
>
> "कीर्तन" 'महामति प्राणनाथ'

वेद और कतेब में जो सांकेतिक भाषा में कहा गया या कहने को बाकी रख दिया गया वह महामति ने सीधी सरल भाषा में कह डाला। उन्होंने सही धार्मिक दृष्टिकोण दिया। आत्मपथ की सर्वोच्च मन्जिल पर सहज ही पहुँच जाने का उपाय बता दिया उन सब को संग लेकर तारतम वाणी 'कुलजम स्वरूप' 'सागर' के रूप में लहरा उठी।

वेद और कतेब के जिन पात्रों और पारिभाषिक शब्दों को महामति ने उभारा उनका वर्णमाला के अनुसार यहाँ संक्षिप्त परिचय दिया है। पूर्ण परिचय

के लिए उन्हें उनके मूल ग्रन्थों में ही देखना चाहिए। यहाँ तो मात्र उतना ही कहा है जितना महामति के लक्ष्य को स्पष्ट करने के लिए आवश्यक था। मूल ग्रंथ में उन शब्दों पर *(सितारे) का चिह्न लगाया गया है।

'अ'

*अंगद :—राम की सहायता के लिए आई सुग्रीव की सेना का महान पराक्रमी बानर सेनापति। रावण के दरबार में इनका पांव कोई हिला न सका। इनका पराक्रम बता कर महामति ने परमधाम के पशुओं की शक्ति का अनुमान लगाने की प्रेरणा दी है।

*अंजील :—अंजीर, इंजील-ईसामसीह की किताब। इसमें पुरानी और नई दोनों किताबों का जोड़ है। महामति की वाणी में अंजील के सन्दर्भ हैं। सांकेतिक शब्दों की व्याख्या है। आखिरी जमाने के खाविंद ईसा रूह अल्ला देवचन्द्र जी के ज्ञान और श्रीमद्भागवत पर आधारित 'रास' किताब को महामति ने 'अंजील वाणी' की संज्ञा दी।

*अक्रूर :—श्रीकृष्ण के रिश्ते में चाचा लगते थे। कंस के आदेश से श्री-कृष्ण को रथ में बिठाकर मथुरा ले गए थे। कृष्ण को मृत्यु के मुँह में ले जाने के विचार से संकुचित हो रहे थे। कृष्ण ने जल में अपना वास्तविक रूप दिखाकर ढाढ़स बंधाया।

*अक्षर :—न नाश होने वाली सत्ता-अक्षर ब्रह्म। सच्चिदानन्द के सत्य अङ्ग अपनी इच्छा शक्ति से क्षण भर में करोड़ों ब्रह्माण्डों को बना कर मिटा देते हैं। ब्रह्म और ब्रह्म सृष्टि की प्रणय-लीला देखने की अभिलाषा से बृज में श्रीकृष्ण के रूप में अवतरित हुए। अक्षरातीत के आवेश को धारण कर अखंड वृन्दाबन में रास लीला की। गोकुल में रास की प्रतिबिम्ब-लीला में केवल अक्षर ब्रह्म का ही आवेश है। इनकी इच्छा शक्ति से ही मोह सागर में नारायण की उत्पत्ति और फिर उनसे समस्त संसार की रचना होती है।

*अक्षरातीत—पूर्णब्रह्म-परमात्मा। चिद्घन स्वरूप अनादि सत्ता। सत्य और आनन्द इनके अंग हैं। आनन्द अंग श्यामा अपनी बारह हजार ब्रह्म-प्रियाओं के साथ स्वामी का मनोरंजन करती हैं। अक्षर ब्रह्म नित्य इनके दर्शन के लिए आते हैं। श्री मद्भगवद्गीता के उत्तम पुरुष यही अक्षरातीत ब्रह्म हैं। तारतम वाणी में इन्हें 'श्री राज जी' कहा गया है।

*अजराईल—संहार के देवता रुद्र अनेक फिरिश्ते और गण इनके इस काम के लिए नियुक्त हैं।

*अजाजील—अक्षर ब्रह्म के नूरी फिरिश्तों में से एक। कसुल-अंबिया किताब के अनुसार यह एक बड़ा ही साहसी और प्रभावशाली फिरिश्ता था। एक दिन फिरिश्तों ने खुदा की किताब (तखती) 'लोहमहफूज' में देखा कि खुदा किसी फिरिश्ते को आज्ञा न मानने के कारण बहिश्त से निकाल देगें। डर कर सभी रोने लगे। अजाजील ने कहा हम खुदा से यह सजा अपने लिए मांग लेंगे। अजाजील ने पाताल से बहिश्त तक हर कदम पर खुदा को सिज्दा किया था। खुदा ने मिट्टी से आदम का पुतला बनाकर उसमें रूह फूंकी और सभी फिरिश्तों को उसके सामने नमन करने की आज्ञा दी। अजाजील के सिवा सब ने हुक्म माना अजाजील को बहिश्त से निकाल दिया गया। तब से वह आदम की औलाद का शत्रु बना उसे खुदा की ओर नहीं झुकने देता—इस किस्से की पुष्टि कुरान और इंजील से होती है।

महामति प्राणनाथ ने इस कथानक का स्पष्टीकरण किया है। आदम के पुतले को महानता देने का राज यह था कि उसमें उन्होंने अपनी रूहों-ब्रह्मात्माओं को उतारना था। उन्हें नश्वर ब्रह्माण्ड की लीला दिखाकर वे ब्रह्मात्माओं को अपनी सत्ता का परिचय दिलाना चाहते थे। यह कथानक एक बीती घटना न होकर अंजील और कुरान में दिया गया एक संकेत था जिसमें भविष्य वाणी की गई कि आदम संसार में अवतरित होंगे और अजाजील उनके सामने शिर न झुकाएगा। श्री देवचन्द्र और प्राणनाथ ही वे आदम हुए।

अविनाशी आनन्द में अधिक उमंग और नवीनता लाने के लिए आत्माओं के ध्यान को परमधाम से पल भर के लिए हटाकर नश्वर में लगाना आवश्यक था। उनका मन परमात्मा और परमधाम से हटाकर, उनका प्रेम सदा आनन्द बिहार भुलाकर उन्हें क्षणिक सुखों के लिए दीवानी बना देने का कार्य कोई शक्तिशाली फिरिश्ता ही कर सकता था। अजाजील को यह काम सौंपा गया। परमात्मा की आज्ञा से उनकी शक्ति के सहारे वह अपने कार्य में सफल रहा।

अजाजील भूल्या नहीं, पर हुक्मे भुलाया ताय।<br>
वह तो सिर ले हुक्म, खड़ा है एक पाय॥ (म० प्रा० खुलासा, मारिफत)

इमाम मेंहदी के ज्ञान ने आत्माओं को सत्य और झूंठ की परख करा कर नश्वर का मोह छुड़ा कर अखण्ड परमधाम की ओर खींचा और अजाजील के प्रभाव से उनको मुक्त किया।

अजाजील को तिलस्मी दुनिया बनाकर आत्मा को फंसा लेने के कारण माया कहा गया। सारा संसार विष्णुमय है। अजाजील उसमें जीव रूप में व्याप्त है। मन इबलीस है। शरीर की पुष्टि और वासनाओं की तृप्ति के लिए संसार और देवी-देवाओं की उपासना में लगा है। मन को स्वामी जी ने इबलीस की संज्ञा दी है। ब्रह्म आत्माओं के मन को ब्रह्म के ध्यान से हटाकर अपनी पूजा कराने वाले विष्णु को अजाजील फिरिश्ता कहा (दे० खुलासा दो नामा) अजाजील या इबलीस को भला-बुरा न कहकर विवेक से अपनी राह खोज लेने का उपाय महामति ने अपनी वाणी में बताया है। माया की आंकड़ी का रहस्य मिलते ही उससे मुक्त हो जाना सहज हो जाता है।

*अठाइस कुण्ड—नरक के अठाइस कुण्ड जिनमें शरीर छोड़ने के उपरान्त बुरे काम करने वाले जीवों को डाला जाएगा ऐसा माना जाता है। वास्तव में नरक के चौरासी कुण्ड हैं। इनमें पापी जीवों को असहनीय यातनाएँ भोगनी पड़ती हैं। श्रीमद्भागवत की कथा कहते हुए श्री शुकदेव मुनि ने राजा परीक्षित को इनका परिचय देना चाहा अठाइस कुण्डों का परिचय सुनकर परीक्षित कांप उठा शेष छप्पन का वर्णन जाना न जा सका (कीर्त्तन पौराणिक)।

*अठारह वर्ण—चार मुख्य वर्ण-ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य-शूद्र तथा चौदह उपवर्ण जो प्राचीन काल में अपने गुण और कर्म के अनुसार माने जाते थे। कालान्तर में जन्म से ही उन्हें मानकर जाति बना दिया गया। उनकी अनेक उप-जातियां बन गई हैं।

*अठोतर सौ पक्ष—आत्म जागृति के एक सौ आठ सोपान। महामति प्राणनाथ ने माला के एक सौ आठ मोतियों को आत्मा की अवस्थाओं का प्रतीक माना है। पहले इक्यासी पक्ष नश्वर संसार में विचरण करते हुए इससे ऊपर उठने के लिए हैं। इसका व्योरे से वर्णन 'प्रकाश' किताब के 'अठोतर सौ पक्ष' और वृत्तान्त मुक्तावलि-'बृजभूषण' के चर्चा के प्रहर को पढ़ने से मिलता है—भक्ति नौ प्रकार की है। उनको तीन गुणों के अनुसार सत्ताइस खण्डों में विभाजित किया जा सकता है। भक्ति करने वाले तीन तरह की भावनाओं से

पूर्ण होते हैं—कोई पुष्टि के लिए इस पथ पर आता है, कोई प्रवाह में बहा चला आता है और कोई मर्यादा पालन के लिए अग्रसर होता है। इस प्रकार नवधा भक्ति करने वाला तम से सत की ओर और प्रवाह से पुष्टि की ओर बढ़ता हुआ इक्यासी सोपान चढ़कर नश्वर विश्व की अन्तिम मंजिल पार पहुँच जाता है। इसके ऊपर शून्य और निराकार के उपासकों का ठिकाना है। उन्हें भी पार कर लेने पर अक्षर ब्रह्म और अक्षरातीत के धाम-परमधाम के पच्चीस पक्षों में विचरण होता है। इन पच्चीस खंडों का वर्णन "परिक्रमा" में बड़ी सुन्दरता से हुआ है। (दे० पच्चीस पक्ष)

*अथर्व वेद—अथर्व वेद चारों वेदों में अन्तिम है। इसमें ब्रह्म का विशेष रूप से प्रतिपादन किया गया है। महामति के अनुसार अथर्व वेद सब विद्याओं का सार है। उनकी वाणी के अन्तिम ग्रन्थ कियामत नामा को भी अथर्वन वेद की संज्ञा दी गई है। अथर्व वेद में यज्ञ कर्म करते हुए संसार से ऊपर उठने की शिक्षा दी गई है। कियामतनामा में उठाने वाले परमात्मा को पहचान कर अपना ध्येय मोक्ष पा लेने का आवाहन है।

*अद्वैत—सत्ता केवल परमात्मा की है, दूसरा कुछ नहीं, जो है वह ब्रह्म ही है।

*अपताली—इफतियाली-आरोपित जिसने और किसी का नाम या गुण धारण किया हो। महामति प्राणनाथ जिन्होंने सभी अवतारों और पैगम्बरों के गुणों और नामों को धारण करके उनके द्वारा अन्तिम अवतार के लिए निर्धारित कार्य को किया।

*अब्दुल्ला बिन उमर—खलीफा उमर का बेटा अब्दुल्ला—जब बड़ा हुआ तो उस्मान नामक व्यक्ति ने उसे बताया कि तुम्हारे पिता न्यायाधीश थे तुम्हें भी जनता का न्याय करना चाहिए अब्दुल्ला ने कहा उमर तो रसूल से पूछ कर न्याय करते थे। मैं किस योग्यता और बल पर यह न्याय करूँ। पीड़ित को शरण और न्याय देना पुण्य का काम है परन्तु यदि मुझसे सच्चा न्याय न हुआ तो गुनाह लगेगा—ऐसा कह कर उसने न्यायाधीश के पद को अस्वीकार कर दिया। (दे० मिश्कात-आखिरत कजा)

*अबलीस—इबलीस। शैतान, मन। (दे० अजाजील)

*अमरद :—अम्रद-किशोर। महामति प्राणनाथ ने परमात्मा को किशोर

स्वरूप माना। वेद मंत्रों में युवा इन्द्र (ब्रह्म) के सूत्र हैं बाइबिल के यूहना के प्रकाशित वाक्य में यहोवा के लिए कहा है—मैंने वहाँ सात दीवटों के बीच सिंहासन पर मनुष्य के युवा पुत्र जैसा एक पुरुष देखा जो पांव तक वस्त्र पहने था। उसका मुख प्रकाशवान था और वह सुनहला पटुका बांधे था। हदीसों में मुहम्मद को हुए मेराज के वर्णन में संकेत मिलता है कि उन्होंने हक की अमरद (किशोर पुरुष सरीखी) जुल्फें देखीं और उनके किशोर स्वरूप का दर्शन किया।

*अरकान—कुरान पर आधारित धर्म के बावन आधार भूत नियम।

*अरफा—अरफ ईद-प्रभु प्रार्थना पर कई गुणा फल पाने का दिन। शरीयती मुसलमान जिल्हज महीने की नवीं तिथि को अरफ ईद कहते हैं। परन्तु कुरान में स्पष्ट लिखा है कि आखिरत में कियामत के दिन विश्वास लाने वालों को बंदगी का कई गुणा फल मिलेगा महामति प्राणनाथ ने मु० सदी दसवीं और ग्यारहवीं को अरफाईद कहा है। इमाम मेंहदी की शरण आने वालों को बहिश्तों के सुख मिले।

*अरवाहें—रूहें-ब्रह्मात्माएँ-अक्षरातीत के आनन्द अंग श्यामा की बारह हजार कलाएँ।

*अरस—अर्श ब्रह्मलोक-अक्षरधाम।

*अरस अजीम—अर्श अजीम-परमधाम।

*अलस्तो बेरब कुम—'क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ।' परमात्मा ने आत्माओं को संसार में भेजने के पूर्व यह प्रश्न किया तो रूहों ने 'बेशक' कहा परन्तु दुनिया में वे परमात्मा को छोड़ कई देवी-देवताओं की पूजा में लग कर अपना वचन भूल गईं।

*अलहम दो लिल्लाह अलमद्दो लिल्ला—'खुदा बचाए' यह शब्द मुहम्मद साहब ने जबल के बेटे माज से उस समय कहा था जब वे यमन देश में न्यायाधीश के पद पर जा रहे थे। मुहम्मद साहब ने पूछा न्याय कैसे करोगे कहा कुरान देखकर। पूछा उसमें न मिला तो? कहा हदीसों में देखकर। पूछा वहां भी न मिला तो? तो कहा अपनी अकल से करूंगा। तब रसूल सा० ने कहा अपनी अक्ल-मनमानी करने वालों से खुदा बचाए। मनमानी करने वाले दुनिया में बे-इन्साफी करेंगें। खुदा खुद ही आकर अन्तिम दिन कियामत के समय न्याय करेंगे। वही असली न्याय होगा।

*अलिफ लाम मीम—कुरान के हर अध्याय से पूर्व कुछ सांकेतिक अक्षर हैं जिनका अर्थ 'खुदा के सिवा कोई नहीं जानता' ऐसा कहा गया है । कियामत के समय इनका भेद इमाम मेहदी खोलेंगें—महामति ने अलफ लाम मीम का अर्थ यह बताया है :—

"अलिफ कह्या अहमद को, रूहअल्ला ईसा लाम ।
मीम मेहदी पाक सों, यह तीन मिल भए इमाम ॥"

मुहम्मद अलिफ, श्री देवचन्द्र जी लाम और श्री प्राणनाथ जी मीम परमात्मा के तीनों स्वरूपों का इमाम मेहदी में प्रकटीकरण है यही इस अक्षर का सांकेतिक अर्थ है । (दे० अहमद)

*अली :—मुहम्मद साहब के जमाई । उन्होंने मुहम्मद साहिब के ज्ञान को समझा । उनकी मृत्यु के उपरान्त उनकी कब्र के लिए फिसाद करने वालों से डट कर लड़े थे ।

महामति प्राणनाथ के ज्ञान को जीवन में उतारने के कारण छत्रसाल को भी महामति ने 'अली' कहा ।

"अली बली शेर दरगाह का, जो दरगाह बड़ी खुदाए ।"

ऐसा कहकर स्वामी जी ने छत्रसाल को परमात्मा के दरबार का शेर बताया ।

*अष्टकुली—संसार के बड़े आठ पहाड़ों को कहा गया है ।

*अष्ट सिद्धि—योग से मिलने वाली आठ शक्तियाँ । अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशत्व और वशित्व ।

*अष्टधातु—सोना, चांदी, तांबा, रांगा, जस्ता, सीसा, लोहा और पारा । शरीर की आठ धातुएँ—रस, रक्त, मांस, मज्जा, मेद, अस्थि, वीर्य और ओज । तारतम वाणी में शरीर की आठ धातुओं की ओर संकेत है ।

*अस्राइल :—इस्राईल-इब्राहीम का छोटा बेटा इसहाक था । इसहाक के पुत्र याकूब को इस्राईल की उपाधि मिली । इस्राईल का अर्थ है खुदा से लड़ने वाला । कहा जाता है कि याकूब जब ससुराल से घर जा रहा था तो एक व्यक्ति उसके साथ सारी रात लड़ता रहा । प्रातः उसने अपना परिचय दिया । वह कोई दैवी व्यक्ति था । इस्राइल के वंश में ही सभी पैगम्बर हुए । केवल हजरत मुहम्मद ही इस्माइल के वंशज थे । महामति प्राणनाथ ने ब्रह्म आत्माओं के अधिकार के

लिए सिन्धी ग्रन्थ में परमात्मा से झगड़ा किया। इब्राहीम के बड़े बेटे का पैगम्बरी का अधिकार छोटे बेटे को प्राप्त हुआ उसी प्रकार धर्म की बातिन अर्थ मसनद स्वामी जी को मिली। इस रूप में महामति ने कतेब में वर्णित कथानक का प्रकट होना बताया है। अन्य पैगम्बरों के साथ इस्राईल का भी अपने में अवतरण घोषित किया है।

*असराफील :—इस्राफील-कुरान में कहा है कि कियामत के समय इस्राफील नामक फिरिश्ता दो बार सूर-नरसिंघा फूंकेगा। पहली बार में पहाड़ रुई के समान उड़ जाएँगे और दूसरी बार दुनिया फिर कायम होगी। महामति ने अपनी किताब 'मारिफत सागर' में कियामत के सात निशानों के स्पष्टीकरण में असराफील के सूर फूंकने का रहस्य बताया है। वे कहते हैं कि अस्राफील अक्षर-ब्रह्म के ज्ञान का फिरिश्ता है। इमाम मेहदी में ही उसका प्रकटीकरण हुआ है। सत्य ज्ञान और ब्रह्मज्ञान के संकेतों के प्रकट होने से धर्मग्रन्थों के मनमाने अर्थ लगाने वाले पाखंडी लोगों के कुफ्र और खुदी के पहाड़ उड़ गए और अनादि सत्य सनातन धर्म (दीन इस्लाम) की स्थापना हुई। इस्राफील ने संसार को विवेक की तुला दी जिससे सत्य और झूठ में अन्तर समझ कर मानव सत्य पथ पर आरूढ़ हो सके। यह कार्य वही व्यक्ति कर सकता है जिसमें सत्य धर्म के लिए कार्य करने वाली सभी शक्तियों का समावेश हो। महामति में उन शक्तियों का मिलन है—

"इश्क ईमान धनी धाम को, जोश जाग्रत पहचान।
सो तोले धनी धाम को, यों कहे कुरान निशान॥"

इस्राफील के दो बार सूर फूँकने का वर्णन बुखारी मुस्लिम, मिस्कात में है।

*अस्व उजले :—निष्कलङ्क अवतार श्वेत अस्व पर सवार होंगे अभिप्राय सत्य धर्म से है (दे० निष्कलंक)

*अहमद :—परमात्मा के हुक्म और नूर के स्वरूप मुहम्मद जब ईसारूहअल्लाह श्री देवचन्द्र में मिले तो अहमद कहलाए अहमद मेहदी में मिले तो इमाम हुए—

"महमद मिलया ईसे मिने, तब अहमद हुआ श्याम।
अहमद मिल्या मेहदी मिने, ए तीन मिल भए इमाम॥"

( महामति प्राणनाथ )

मुहम्मद की 'बसरी' (मनुष्यता सिखाने वाली), मलकी (विश्वधर्म के ज्ञान

के मालिक) और हकी (स्वयम् परमात्मा की विभूतियों के धारण करने वाले) सूरत यही 'अहमद' हैं।

*अहल किताब :—अहिलए किताब—किताब वाले। कुरान में जंबूर, तौरात और अंजील को मानने वालों को 'अहिलए किताब' कहा गया है। महामति का कहना है किताब को मान लेना ही पर्याप्त नहीं उनके बातनी अर्थों को समझ कर जीवन में उतारने वाले ही वास्तव में किताबों (धर्म ग्रन्थों) के वारिस और मानने वाले कहे जा सकते हैं। उनके विचार में सभी धर्म ग्रंथों के मर्म को 'मोमिन' 'ब्रह्म सृष्टि' ही समझ सके। वही सही मायनों में अहिलए किताब हैं।

'आ'

*आजूज-माजूज :—(याजूज माजूज) कुरान के एक कथानक के अनुसार 'याजूज माजूज' दो जातियां थीं, जो पहाड़ के पीछे से आकर लोगों पर हमला करतीं थीं। लूट-मार मचाती थीं। उन्हे रोकने के लिए दो पहाड़ों के बीच अष्ट धातु की दीवार बनाई गई। उसे भी वे थोड़ा-थोड़ा तोड़ जाते थे। उनकी गिनती चार लाख के लगभग कही गई। यूहन्ना के प्रकाशित वाक्य में भी लिखा है कि 'हजार साल बाद' दोनों जातियाँ सारे संसार में फैल जाएंगी। स्वर्ग से आग उतर कर उन्हे भस्म करेगी।

महामति ने याजूज-माजूज को दिन-रात माना है। तूला, तांबा, सांबा को क्रम से प्रातः दोपहर सांय कहा याजूज दिन सौ गज का और माजूज रात एक गज की इसलिए कही गई है कि दिन में इन्सान के कार्य क्षेत्र का विस्तार अधिक होता है। रात को मात्र चिन्तन ही शेष रह जाता है। यह दिन रात मानव शरीर की अष्ट धातु की दीवार को चाटते रहते हैं। सांय होने तक वह दीवार (शरीर) एक गज भर रह जाती है। सुबह तोड़ेगें ऐसा कह कर याजूज-माजूज छोड़ देते हैं। जब तक ईन्शाल्लाताला, नहीं कहेंगे तब तक वह दीवार टूटेगी नहीं। सुबह होते ही वह फिर से ज्यों की त्यों हो जाती है। आत्मा इस तन के मोह में पड़ी है। सुबह (ज्ञान का अरुणोदय) होते ही जब आत्मा शरीर की नश्वरता पहचान कर परमात्मा का नाम लेगी तो इस शरीर के बन्धन से मुक्त हो जाएगी। अष्ट धातु की दीवार यह नरतन आत्मा और परमात्मा के बीच रुकावट न बन कर परमात्मा का घर बन जाएगा। याजूज-माजूज फिर चिन्ता के कारण न रह जाएगें।

आठों बहिश्त—(दे० बहिश्त)

*आदम—आदि मानव। कतेब के अनुसार 'आदम' पहला मानव था। जिसे खुदा ने स्वयं बनाया और फरिश्तों को उसके सामने नमन करने के लिए कहा। सभी फरिश्ते झुक गए। अजाजील ने शिर न झुकाया। उसे लानत देकर बहिश्त से निकाल दिया।

इसी आदम ने जब खुदा का हुक्म न मान कर वर्जित फल खा लिया तो बहिश्त से निकाला गया अजाजील का दास बन कर वह खुदा से विमुख हो गया। कियामत के समय स्वयं खुदा आकर अजाजील को नष्ट करेंगे ऐसा कतेब में कहा गया है।

महामति प्राणनाथ ने श्री देवचन्द्र जी को आदम कहा। खुदा ने अपनी रूह फूँक कर उन्हें पहले श्री देवचन्द्र और फिर दूसरे जामा में प्राणनाथ के रूप में भेजा—अजाजील (फरिश्तों—देवी-देवताओं और स्वार्थ) की पूजा करने वाले अजाजील के दास, उसके ही समान मानवों ने उन्हें पहचाना नहीं और शिर न झुकाया—तभी उन्हें लानत मिली। वे सब बहिश्तों के सुख से वंचित हुए। इमाम मेंहदी का ज्ञान अजाजील की शक्तियों को नष्ट कर मानव में आत्म बल जगाता है और उसे उसके योग्य पद पर ले जाता है। श्यामा और रूहों (आदम) का वर्जित फल खाना महामति के अनुसार बड़ी चाह से दुःख पूर्ण विश्व देखने की अभिलाषा करना है। परमात्मा ने अपनी शक्ति द्वारा आदम (श्री देवचन्द्र जी) को अन्य आत्माओं को जगाने की प्रेरणा दी। (दे० ईसा रूह अल्लाह)

*आदि नारायण :—जब अक्षर ब्रह्म ने सृष्टि रचना का भाव मन में लिया तो सबसे पूर्व मोह सागर का विस्तार हुआ। उस मोह रूपी जल में अक्षर की सुरत (ध्यान) का अंडा हजारों वर्ष तक तैरता रहा। उस अंडे के फूटने पर आदि नारायण की उत्पत्ति हुई ऐसा माना जाता है। नारायण शेष नाग की शैय्या पर विराजमान हैं और लक्ष्मी सदा इनकी सेवा में लीन रहती हैं। नारायण नाम इसलिए पड़ा क्योंकि इनका घर जल में है। इनकी नाभि से कमल निकला। कमल से ब्रह्मा जी की उत्पत्ति हुई। और फिर अन्य देवता प्रकट हुए। उन देवताओं से सृष्टि रचना, पालन और संहार होता है। आदि नारायण ही क्षर ब्रह्मांड के अधिपति हैं। आदि नारायण स्वयं अक्षर ब्रह्म की स्तुति करते हैं। लक्ष्मी ने इनके उपास्यदेव के विषय में जानने की इच्छा प्रकट की। नारायण ने कृष्ण के रूप में अवतार लिया—रुक्मिणी के रूप में लक्ष्मी प्रकट हुई। विवाह

के समय मङ्गलगीत में वृज की स्तुति गाई गई। तब श्रीकृष्ण ने संकेत द्वारा बता दिया कि वृज लीला में श्रीकृष्ण के अन्दर जिस शक्ति का प्रकटीकरण हुआ था वही मेरे उपास्यदेव हैं। (दे० "प्रकाश"—लक्ष्मी जी का दृष्टांत)

इस कथानक में बताया गया है कि समस्त संसार जिनकी उपासना करता है वे अक्षर ब्रह्म की और अक्षर ब्रह्म अक्षरातीत की स्तुति करते हैं। उन अक्षरातीत की संगी ब्रह्मात्माओं का साधारण लोगों से बहुत ही श्रेष्ठ आचरण होना चाहिए।

*आफ्ताब :—सूर्य। वाणी में मारिफत का ज्ञान सूर्य। सम्प्रदायों में फूट डालने वाले अज्ञान को मिटा कर सत्यज्ञान का प्रकाश दिखाने वाला महामति का ज्ञान सूर्य।

*आसबाई—रास मण्डल की एक आत्मा का नाम विशेष सेवा के लिए जाना गया है।

*आसा—असा—हजरत मूसा की चमत्कारिक लाठी जिसने कभी सांप बनकर, कभी समुद्र सोखिकर उनके अभियान में सहायता दी। महामति प्राणनाथ की अद्वैत ब्रह्म (तौहीद) की आध्यात्म ज्ञान की लाठी जिससे दुविधाओं और शङ्काओं का अन्त हो गया। उनके न्याय की लाठी काफिरों को दण्डित करती है। कुरान में कहा गया है कि इमाम मेहदी के एक हाथ में मूसा की लाठी दूसरे में सुलेमान की मुहर होगी। जिसे यह लाठी छुएगी वह नरक जाएगा। मुहर से छुए जाने वाले का मस्तक उज्ज्वल होगा।

'इ'

*इद्रीस—कुरान पारा सोलह, सूरा उन्नीस में इद्रीस का उल्लेख है। वे दर्जी थे। सच्चे ईमानदार और परिश्रमी थे। लोगों को निष्काम भाव से सेवा व्रत लेकर कपड़े सी दिया करते थे। कतरनों को जोड़ कर गरीब जनता का तन ढकने को वस्त्र बना देते थे। कहते हैं उन्हें खुदा के यहाँ से उत्तम आहार मिलता था। वह भविष्य वानी के लिए भी प्रसिद्ध थे। जनता में उन्हें बड़ा सम्मान प्राप्त था। उन्होंने कहा था कि आदम के सौ वर्ष बाद जो आएगा वह सत्य कहेगा और लोगों को चौथे आसमान पहुँचाएगा। इद्रीस नूह के पौत्र और नवासे साहब के पुत्र थे। उनका नाम अबनूस था। सत्यवादी होने के कारण उन्हें इद्रीस का खिताब मिला।

आखिरत के इद्रीस महामति प्राणनाथ हैं ईसा रूह अल्ला श्री देवचन्द्र जी के जन्म के १०० वर्ष बाद उन्होंने इद्रीस का खिताब पाया। उन्होंने वेद और कतेब के सत्य ज्ञान के उद्धरणों को कतर-ब्योंत कर ब्रह्म ज्ञान की एक सुन्दर झूल बना दी। जन्म-मरण के चक्कर में पड़े जीवों को मोक्ष का सरल सुगम मार्ग बताया। ब्रह्म सृष्टि के लिए अखण्ड-परमधाम का ज्ञानामृत ला कर उनकी अतृप्त आत्माओं को तृप्त किया। झूठ कुफ्र और फरेब की कियामत करके सत्य की स्थापना की। इस प्रकार इद्रीस और मुहम्मद दोनों का कहा सत्य हुआ।

*इन्द्र कोप—अपनी पूजा बन्द हो जाने पर इन्द्र ने ब्रज भूमि पर सात दिन-रात पानी बरसाया। श्री कृष्ण ने अपने प्रिय जनों को बचा लिया। (दे० हूद तोफान)

*इन्द्रावती—महामति प्राणनाथ। श्री मेहराज ठाकुर की परमधाम की रूह का नाम। परमधाम की चतुर विचिक्षण आत्मा हैं। संसार में भी सदा सबकी आगेवान सखी बनी रहीं। रास लीला में स्वामी श्री कृष्ण और सखियों को नई-नई कीड़ाओं से रिझाने वाली इन्द्रावती प्रेम और चतुराई से स्वामी को भी वश में कर लेती हैं। उनके अन्तर्ध्यान हो जाने पर उत्साह दिलाकर सखियों को ऐसा खेल खेलाया कि स्वामी फिर से मुग्ध हुए चले आए।

जागनी के ब्रह्माण्ड में ब्रह्म और ईश्वरीय सृष्टि को जगाने और संसार के जीवों को मोक्ष देने का भार इनके शिर पर रखा गया। बड़ी ही दक्षता से इन्द्रावती ने उसे निबाहा। इतने बड़े काम को योग्यता के निबाहने के लिए इन्हें बड़ी तपस्या से अपने शरीर और जीव को तैयार करना पड़ा। अन्य रूहों को इकट्ठी करने के काम में लग कर परमात्मा के एकान्त मिलन के सुख से भी वंचित रह जाना पड़ा। कीर्त्तन के एक प्रकरण 'साहिब तेरी साहिबी भारी' और सिंधी वाणी में इस बात का दुःख प्रकट हो गया है। फिर भी अपनी संगी आत्माओं को साथ जगा ले जाने के प्रयास में अन्तिम समय तक लगे रहे।

तारतम वाणी में रास, प्रकाश किताब, षटऋतु, कलश गुजराती, तक इन्द्रावती की छाप है। इसके बाद सूरत में धर्म का भार स्वतंत्र रूप से लेने के लिए जब विवश हो गए तो इन्द्रावती ने अपने गुरुदेव और उनमें बैठे अपने प्रियतम परमात्मा के स्वरूप में अपने अस्तित्व को मिला दिया। इन्द्रावती

महामति में एक हो गई। शेष वाणी महामति के नाम से कही गई। (दे० प्राणनाथ, महामति)

*इब्बन अब्बास—इब्बन अब्बास नामक खलीफे के पुत्र थे। इनके कथानक का वर्णन जिस किताब में है—उसमें भी इन्हीं का नाम दिया गया है। तभी स्वामी जी ने 'इब्बन-अब्बास' में यह बयान ऐसा कहकर इनके कथानक से अपनी बात को पुष्ट किया है।

*इभराम—इब्राहीम-कतेब के पहले पैगम्बर थे। अरब देशों में एकेश्वर वाद के पहले प्रचारक थे। बाल्यावस्था में ही मूर्तियों को तोड़कर मूर्ति पूजा का खण्डन किया। सत्य निष्ठ और परमात्मा पर दृढ़ विश्वास वाले थे। स्वप्न में परमात्मा का आदेश पाकर अपने प्यारे पुत्र की बलि देने का उपक्रम किया। परीक्षा में सफल हुए। परमात्मा ने पुत्र के बदले पशु-बलि स्वीकार की ऐसा माना जाता है। इब्राहीम के समय से ही खतना का चलन शुरू हुआ। कससुल अम्बिया के अनुसार इब्राहीम अपनी छोटी साली से विवाह करना चाहते थे उसने विवाह करना तभी स्वीकार किया जब उन्होंने वादा किया कि वे किसी से, उसकी बहन से भी पत्नी की तरह सम्बन्ध न रखेंगे। बाद में परिस्थिति वश उन्होंने पहली पत्नी के पास रात व्यतीत की। दूसरी पत्नी ने पंचों से न्याय की मांग की। उस युग में कानून का उल्लंघन करने वाले को अंग-भंग की सजा दी जाती थी। एक तो पैगम्बर दूसरे अपनी ही पत्नी से सम्बन्ध होने के कारण उनको कड़ी सजा न देकर केवल (सुनंत) खतना कराने का आदेश दिया गया। बाद में लोगों ने एक प्रथा के रूप में उसे अपना लिया।

अंजील में 'खतना' शब्द इन्द्रिय निग्रह के लिए भी प्रयुक्त हुआ है। (दे० सुनंत) मुहम्मद सा० द्वारा किए कार्यों को सुंनत कहा जाता है।

महामति प्राणनाथ ने इब्राहीम पैगम्बर का फिर से उठना श्री देवचन्द्र जी में माना है। श्री देवचन्द्र जी ने देवी-देवताओं की पूजा छुड़वा कर अक्षरातीत परमात्मा की उपासना करवाई। विश्वधर्म के वे आदि प्रवर्त्तक बने। धर्म के लिए इनके मुँहबोले पुत्र मेहराज ने अपना जीवन बलिदान किया। कुरान पारा २४, सूरा १६, आयत १२०, में कहा है—'वह फिर अच्छे लोगों में आएगा'।

*इमन—यमन—इस देश में आदि की जातियां रहती थीं। वे परमात्मा को छोड़ देवी-देवताओं की मूर्त्तियां बना कर पूजने लगीं। हूद पैगम्बर की शिक्षा

को यमन देश के लोगों के सिवा किसी ने न माना । मुहम्मद साहिब ने कहा श्याम यमन जिमी में जाकर ही बचोगे । शेष सब जगह कुफ्र फैल जाएगा । हदीसों में कहा है "मुझे पूर्व से ठण्डी हवा आ रही है" । महामति ने कहा उनका संकेत पूर्व की संयम पूर्ण धरती श्रीकृष्ण के भारत देश की ओर ही था । जहाँ इमाम मेहदी बुद्ध निष्कलंक अवतार ने आकर धर्म के नाम पर चल आडम्बरों को दूर किया । श्याम यमन वही धरती है जहाँ स्वयम् परमात्मा श्रीकृष्ण फिर से आए ।

स्याम यमन जिमी बचोगे, और खैर काहूँ नाहें—

(मारफत सागर महामति प्राणनाथ)

*इमाम :—प्रभु प्रार्थना के लिए प्रेरित करने वाला ।

*इमाम मेहदी :—महामति प्राणनाथ जिन्होंने संसार की ओर से लोगों का मन मोड़ कर एक परमात्मा की ओर लगाया । सब धर्म ग्रन्थों के सूत्र एकत्र कर संसार को एक विश्व धर्म का शास्त्र दिया । पाखण्ड को दूर करके सत्य सनातन धर्म की स्थापना की । मिस्कात किताब में कियामत की निशानियों में लिखा है 'मेरे बाद कोई होगा जिसका नाम मेरे नाम से होगा । वह सब निशानियां खोलकर बताएगा । धरती को न्याय से भर देगा । अरब देश पर कब्जा करेगा' । महामति ने अरब देश में अवतरित ज्ञान पर अपना अधिकार जताकर सही रूप में उसका प्रदर्शन करके वहाँ की बरकत-शफकत, बढोतरी कृपा को अपने हाथ में कर लिया और उसे दिल खोलकर वितरण किया—हदीसों में भी ऐसा कहा है कि इमाम मेहदी के पास जो भी जाकर कहेगा कि 'मुझे दो' । मेहदी उसे झोलियां भर कर इतना देंगे कि वह संभाल न पाएगा । (एक बंदगी का हजार फल)

*इल्म लदुंनी :—खुदाई ज्ञान-ब्रह्म ज्ञान-तारत्तम वाणी ।

*इल्लल्ला :—इल्लअल्ला । परे आगे । नूरअला नूर-नूर-अक्षर ब्रह्म के आगे अक्षरातीत परमात्मा !

'ला इलाह इल्लल्ला, मुहम्मदुर्रसूलुल्ला ।'

मुहम्मद साहिब का बताया 'कलिमा' मंत्र जिसका जाहिरी अर्थ लिया जाता है नहीं है जिसके बराबर कोई उस खुदा के, रसूल मुहम्मद हैं ।

महामति प्राणनाथ के अनुसार 'कलिमा' और भी गहरे अर्थ लिए हुए है । वे कहते हैं 'कलिमा' कहता है 'ला'--नहीं है जो अर्थात् क्षर ब्रह्माण्ड, 'इलाह'--

उससे परे अर्थात् नूर--अक्षर ब्रह्म, इल्लल्ला--उससे भी पार नूर अला नूर--अक्षरातीत ब्रह्म - के रसूल - संदेश देने वाले मुहम्मद हैं ।

उनके अनुसार 'कलिमा' अक्षरातीत परमात्मा की ओर संकेत करता है ।

*इल्हाम परमात्मा या उसके फिरिश्ते द्वारा कहलाया ज्ञान । कुरान को इल्हामी किताब कहा गया है । शुकदेव मुनि द्वारा किया रास का वर्णन इल्हाम से हुआ ।

कुरान धर्म ग्रन्थ उस किताब को मानता है जिसमें पैगाम, इल्हाम और गैब (परोक्ष ज्ञान) तीनों का समावेश हो । महामति की वाणी में तीनों का समावेश है । तारतम वाणी इल्हामी ज्ञान है ।

*इस्लाम—शान्ति चाहने वाला, परमात्मा की आज्ञा के सामने झुकने का आदेश देने वाला धर्म । 'दीन इस्लाम' शब्द का स्वामी जो ने अपनी वाणी में खुल कर प्रयोग किया है । उन्होंने दीन इस्लाम को एक संकुचित अर्थ में एक सम्प्रदाय के लिये प्रयोग न करके अनादि सत्य सनातन धर्म के अर्थ में अपनाया है । अपने विशाल अर्थ में दीन इस्लाम वह धर्म है जो संकीर्णता के घेरे से मुक्त करके मानव जाति को एक सूत्र में पिरो सके । महामति का ज्ञान सत्य धर्म और एक विश्व धर्म प्रवर्तन की ओर उठाया एक ठोस कदम है । उसी को उन्होंने वाणी में और लालदास जी ने 'बीतक में' 'दीन इस्लाम' कह कर सम्बोधन किया । आत्मा को शान्ति (आनंद) देने वाले धर्म के लिए स्वामी जी ने दूसरा नाम 'निजानंद सम्प्रदाय' दिया ।

*इसहाक—इसहाक और इस्माइल हज़रत इब्राहिम के दो पुत्र थे । छोटे होने पर भी इसहाक को पिता की विरासत और धर्म मय जीवन की अशीश मिली । महामति ने अन्तिम समय इब्राहीम का प्रकटी करण देवचन्द्र में माना । इस्माइल की तरह बिहारी जी पिता की योग्यता न पा सके । प्राणनाथ उनके ज्ञान और धर्म की विरासत पाने वाले इसहाक कहलाये । (दे० यैहिया)

'ई'

*ईसा : कु० मरियम के पुत्र, ईसाई धर्म के प्रवर्तक एक पैगम्बर थे । प्रेम और सेवा का अनूठा दर्शन मानव जाति को दे गए । वे शूली पर चढ़ गये परन्तु अन्याय और झूठ के आगे सिर न झुकाया । उन्होंने अपने पुनः आकर सुराज्य स्थापित करने की घोषणा की । महामति ने इनका फिर से प्रकटीकरण श्री देव

चन्द्र जी में माना है । उन्हें ही तारतम वाणी में ईसा रूह अल्लाह कह कर सम्बोधित किया है । श्री देवचन्द्र और श्री प्राणनाथ ने संसार में सुराज्य स्थापित करने का नुस्खा दिया जिसका प्रयोग करके महाराजा छत्रसाल ने बुंदेलखण्ड में धर्म पर आधारित आदर्श राज्य स्थापित किया था ।

*ईद :—शरीयती मुसलमानों का रमजान के बाद आने वाला खुशी का त्योहार जिसमें सब एक दूसरे से गले मिलते हैं ।

ईद अरफा :—कुरान में तीन दिन बड़े कहे गये । अरफा का दिन, जिस दिन हज होती है । जिल्हज महीने के नवें दिन के बाद असरईद की निमाज होती है । दसवीं के दिन ईदुल अज़्हा या ईद-कुर्बां मनाई जाती है । हज की खुशी में लोग पशु बलि चढ़ाते हैं ।

स्वामी जी ने इन तिथियों और त्योंहारों का बातिनी अर्थ बता कर इनका महत्व बहुत बढ़ा दिया है । तारतम वाणी के अनुसार अरफ ईद मोमिनों के संसार में अवतरण का दिन है । मुहम्मद साहिब के बाद दसवीं सदी में श्री देवचन्द्र मोमिनों के साथ अवतरित हुए । ग्यारहवीं, शताब्दी असरईद की रात है । रात इसलिये कहा क्योंकि ब्रह्मज्ञान अवतरित तो हुआ परन्तु लोगों ने पहचाना नहीं । बारहवीं शताब्दी में फज्र की निमाज और ईदुल-अज़्हा हुई । इस दिन (ग्यारहवीं शदी मु० के अन्त में) हरिद्वार में कुंभ के अवसर पर बुद्ध निष्कलंक और बारहवीं के आरम्भ में पन्ना में इमाम मेंहदी को लोगों ने पहचाना । फज्र की निमाज हुई । लोगों ने इकट्ठे मिलकर एक ही ब्रह्म अक्षरातीत परमात्मा को नमन किया । कुर्बानी के दिन सब ने अपने आपको कुर्बान किया । मन के पशु की बलि चढ़ा दी । परमधाम की निआमतें ब्रह्मज्ञान और साक्षात्कार पा कर खुशी से ईद मनाई । आत्म जागृति ही तो सबसे बड़ी ईद है । तुच्छ नश्वर वस्तुओं का बलिदान करके अखण्ड सुखों को प्राप्त किया । परमधाम से बिछुड़ी आत्माओं का पुनः मिलन । दसवीं, ग्यारहवीं और बारहवीं सदी मुहम्मदी में तीनों ईद मनाई गयी ।

(दे० कियामतनामा बड़ा प्र० १८, १९)

'उ'

*उग्रसेन :—राजा कंस के पिता और श्रीकृष्ण के नाना थे । कंस ने इन्हें बन्दी बना दिया था । श्री कृष्ण ने कंस को मार कर इन्हें बन्धन मुक्त किया और पुनः राज्य दिलाया ।

*उत्तम बाई :—श्री प्राणनाथ जी—मेहराज ठाकुर के छोटे भाई ऊधव जी की परमधाम में रूह का नाम। एक झूठे आरोप पर मेहराज ठाकुर के साथ इन्हें भी जेल में डाल दिया गया था। वहीं इसी नजर बन्दी (हब्सा) में बाणी का अवतरण आरम्भ हो गया तो ऊधव जी ने सामलिया भाई के साथ उसे कोयले से दीवारों पर लिखना शुरू कर दिया। बाद में कागज और स्याही की व्यवस्था हो जाने पर उसे कागज पर उतार लिया। जेल के अन्दर ही इन्हें श्री प्राणनाथ जी की पहचान हुई।

*उमर :—मुहम्मद साहिब के चार खलीफों में एक थे। यह उस युग के माने हुए न्यायाधीश थे। इनके पुत्र अब्दुला की वार्ता पहले दी जा चुकी है। उमर रजी अल्ला ने कुरान की अन्तिम विशेष ग्यारह आयतों की नकल की।

(दे० "कियामतनामा" पृष्ठ १७)

*उमत-उम्मत :—अनुयायी। एक विशेष प्रकृति या प्रवृत्ति के लोग। वेद में तीन तरह की सृष्टि बताई गयी है। कतेब में तीन तरह की उम्मत मानी गयी है। महामति ने भी तीन तरह की सृष्टि या उम्मत मानी है। अक्षरातीत परमात्मा के प्रेम में रहने वाली ब्रह्मसृष्टि अक्षर ब्रह्म की उपासना करने वाली ईश्वरीय सृष्टि और अपने स्वार्थ के लिये देवी देवताओं की उपासना करने वाली जीव सृष्टि है। अन्य सब लोगों को भी इसी श्रेणी में गिन लिया गया है। ब्रह्मात्माएँ, देवी देवता (फिरिश्ते) तथा संसार के मानव तीन तरह की सृष्टि है। बृज, रास और जागनी लीला में मानवों में ब्रह्म और ईश्वरीय का अवतरण हो जाने से संसार में भी उनके गुण और शक्तियों में अन्तर आ जाने पर दुनिया के लोगों की भी तीन सृष्टियां हो गयीं।

*उमी-उम्मी :—जो पढ़ा लिखा न हो उसे उम्मी कहा जाता है। सांसारिक विद्या न पढ़ पाने के कारण मुहम्मद साहिब को उम्मी कहते थे। महामति प्राणनाथ ने अपने उन साथियों को उम्मी का खिताब दिया जो वेद और कतेब को पढ़े तो न थे परन्तु ब्रह्म ज्ञान पा जाने से वेद कतेब के गूढ़ार्थ खोलने लगे।

*उसमान :—हजरत मुहम्मद के एक विशेष साथी। हजरत मुहम्मद की दो बेटियाँ इनके निकाह में आईं। उसमान बड़े शर्मीले थे। हजरत उसमान को उनके शत्रुओं ने शहीद कर दिया।

'ऊ'

*ऊधव :—श्री कृष्ण के चचेरे भाई और प्रिय सखा। निर्गुण ब्रह्म के

उपासक थे। गोपियों की श्री कृष्ण के लिये व्याकुलता और विरह का हाल सुनकर उन्हें निर्गुण उपासना सिखाने के लिये गये। उनका प्रेम देख कर उनका ज्ञानी होने का अभिमान चूर हो गया। ब्रज भूमि से वे श्री कृष्ण के ही नहीं गोपियों के भी भक्त बन कर लौटे।

*ऊधव ठाकुर—मेहराज ठाकुर के छोटे भाई। (दे० उत्तम बाई)

'ऋ'

*ऋषभ देव—अवतार कोटि के ऋषि आदि जैन तीर्थंकर थे। वे कुलकर नेमि के पुत्र, पराक्रमी विवेकवान कुशल राजा बने। उन्होंने राज्य और कृषि व्यवस्था चलाई अनेक वर्षों तक राज्य करने के उपरांत अपने ज्येष्ठ पुत्र भरत को राज्य दे कर परिव्रज्या ली। उन्होंने अन्तःकरण की शुद्धि और वासना रहित जीवन पर विशेष बल दिया। जैन धर्म ग्रन्थों में उन्हें ही धर्म का प्रवर्तक माना। अन्य धर्मों को वे उनके धर्म की शाखाएँ मानते हैं। महामति प्राणनाथ ने कहा कि उन जैसा विवेकी सिद्ध फिर कोई न हुआ। उनके बाद के लोग रूढ़िग्रस्त होकर मार्ग से हट गये ("पुराने कीर्तन") ऋषभ देव का सबसे बड़ा पुत्र भरत चक्रवर्ती राजा बना। अन्य निन्नानबे पुत्रों ने परिव्रज्या ली।

'ए'

*एहिया यैहिया—हजरत इब्राहिम के पुत्र इसहाक और जकरिया के पुत्र यैहिया के जन्म का कथानक एक जैसा ही है। परमात्मा से उनको वृद्ध, न जनने वाली उम्र में पुत्र की प्राप्ति हुई। खुदा के वरदान से प्राप्त पुत्र संयमी, धर्मनिष्ठ सत्यवादी और धर्म परम्परा को बढ़ाने वाला हुआ। परमात्मा की राह पर ही उसका पूरा जीवन बलिदान हुआ।

(बाइबिल—उत्पत्ति। कुरान पारा ३ सूरा ३७ आ० ४१)

महामति प्राणनाथ ने अपने आपको श्री देवचन्द्र जी का इसहाक और यैहिया के जैसा ईश्वरीय प्रदत्त पुत्र माना है। तारतम वाणी के अनुसार वह कथानक भूतकाल की बीती घटना नहीं वरन् उन्ही की ओर संकेत है कि आखिरत में ऐसा होने वाला है। श्री देवचन्द्र जी के अपने वंशज पुत्र ने नहीं वरन् नजरी बेटे ने उनके धर्म को बढ़ाया। कुरान आदि किताबों में उनका जिक्र किया गया इसलिये श्री देवचन्द्र जी को जिकरिया का पद मिला।

## 'ऐ'

*ऐन का ऐन :—ऐन और गैंन उर्दू वर्णमाला के दो अक्षर हैं जिनकी बनावट एक जैसी होती है। केवल गैंन पर लगे बिन्दु का ही अन्तर होता है। स्वामी जी ने इन दो अक्षरों का उदाहरण देकर यह बताया कि आत्मा परमात्मा का अंग शुध्द और निर्मल है। शरीर धारण कर लेनें पर ऐन से गैंन (दागदार) बन जाती है। प्रेम पूर्वक स्वामी से मिल जाती है। तो वैसी की वैसी शुद्ध हो जाती है।

वाणी में मुहम्मद साहिब और श्री देवचन्द्र जी के लिये इन शब्दों का प्रयोग हुआ है। परमात्मा का संदेश देनें के लिये उन्होंनें शरीर धारण किया तो गैंन दागदार बनें। संदेश देकर वापिस लौट गये तो शुध्द निर्मल ऐन से ऐन ही बन गये।

*कंस :—श्री कृष्ण के मामा एक अत्याचारी राजा थे। अपने पिता को कैद में डाल कर स्वयं राजा बन गए। अपनी बहिन श्री कृष्ण की माँ को उनके पति वासुदेव सहित जेल में डाल रखा था। उनके सात पुत्रों के जन्म लेते ही उसनें मार डाला। क्योंकि उनसे उसको अपनी मृत्यु की आशंका थी। श्री कृष्ण ने उनको मार कर अपने नाना, अपने माता पिता एवं सारे संसार को अन्याय से मुक्त किया।

*कजा :—न्याय कुरान में तीन तरह का न्याय और न्याय करनें वाले बताए गये हैं। एक न्याय परमात्मा के हुक्म से दूसरा धर्म ग्रन्थों को देखकर किया जाता है। औंर तीसरी तरह का न्याय लोग अपनी चतुराई एंव अक्ल से करतें हैं। तीनो क्रम से उत्तम मध्यम और निकृष्ट हैं। यह भी कहा है कि अन्तिम समय स्वयं इमाम मेंहदी सारे संसार का न्याय करेंगें और वही असली न्याय होगा। कियामत के समय होनें वाली कजा की भी सब बाट देखते रहें हैं। उस दिन सबकी सीमाए निर्धारित हो गयीं। शंका की कहीं गुंजाइश न रही।

*कतेब :—किताबें :—चार किताबें आसमानीं कहीं गयीं हैं। अरब देशों में अवतरित चार धर्म ग्रन्थों को कतेब की संज्ञा दी गई हैं। दाउद पैगम्बर की जबूर, हजरत मूसा की तौरेत ईशा की अंजील और रसूल मुहम्मद साहिब की किताब कुरान है। इन चारों को स्वामी जी नें प्रमाणित ग्रन्थ मान कर अपनी वाणी में स्थान-स्थान पर उनके संदर्भ दिए है। इन चारों में अन्तिम कुरान को अपने न्याय की कसौटी भी मान लिया है।

*कबीरः मध्यकालीन संत थे । निर्गुण विचारधारा के उच्चकोटि के संत और विचारक थे इनकी वाणी में कहीं-कहीं सगुण उपासना का पुट भी है । साम्प्रदायिकता की संकीर्ण भावनाओं से ऊपर उठकर ही ब्रह्म को पहचाना जा सकता है । ऐसा इनका विश्वास था । इनके शिष्यों में सभी जातियों और वर्गों के लोग थे । उसयुग की साधारण भाषा में इनकी वाणी मन को मुग्ध करने वाली है । ब्रह्म विषयक रहस्यमय पद भी हैं । हिन्दू और मुसलमान दोनों उन्हें अपने-अपने पक्ष का मानते थे । वे दोनो से अलग थे । महामति ने इन्हें पंच महान आत्माओं में माना है ।

*कयामत—कियामत प्रलय या हश्र कादिन कुरान और बाइबिल के अनुसार कियामत के समय सबकुछ मिट जाएगा । और पुनः सुराज्य, ईश्वरीय-राज्य की स्थापना होगी उस समय कब्र से मुर्दे उठाए जाएगें और स्वयं परमात्मा उनका न्याय करेंगे । कुरान में संकेतों के द्वारा कियामत का समय निर्धारित किया गया है । वह समय मुहम्मद साहिब के बाद दसवीं ग्यारहवीं और बारहवीं सदी में कहा गया है । ( दे० कुरान 'सूराअल फज्र' )

महामति ने कियामत का बातिनी अर्थ जाहिर किया है । इसके लिए कतेब की साक्षी भी दी है । बाईबिल रोमियों' में कहा है कि रूह को शरीर छोड़ देने पर उसके कर्मों के अनुसार पार्थिव या नूरी चतेन-शरीर मिलता है । महमति प्राणनाथ ने बताया कि शरीर छोड़ देने के बाद नहीं-इसी नश्वर शरीर रूपी कब्र में मृतक के समान सोई आत्मा का जाग जाना ही कियामत है । महामति के ज्ञानने धर्म के नाम पर प्रचलित अंधविश्वासों का भण्डा फोड़ किया । क्षुद्र ज्ञान के बल पर अपने अहङ्कार में मस्त धर्म प्रचारकों के कुफ्र और खुदी अहङ्कार के पहाड़ रुई के समान उड़ा दिए । संसार में फैली गुटबंदी और साम्प्रदायिकता की आग को शान्त करने वाला ज्ञान दिया । संसार में एक ही सत्य सनातन धर्म दीन इस्लाम' निजानन्द धर्म की स्थापना की । एक विश्व धर्म का अनूठा दर्शन तारतम वाणी हमें दी । कियामत के समय इमाम मेहदी और कलियुग के अन्तिम प्रहरमें कल्कि अवतार से जो अपेक्षा थी वह महामति के जीवन और वाणी से पूरी हुई । उनके ज्ञान के प्रकाश में जो अपने धर्म के मर्म को समझ जाएगा उसकी रूहानी कियामत होगी । यहीं दुनिया में अखण्ड सुखों का आनन्द लेकर शरीर छोड़ देने पर उसे बहिश्तों में चेतन ( नूरी ) तन मिलेगा । कतेब में कही कियामत का रहस्य और मुद्दआ यही है ।

कियामत के सात निशान :— १. कब्र से मुर्दे उठेगें और उनका न्याय किया जाएगा । २. दाभ तुल अर्ज पैदा होगा उसे इमाम मेहदी ठिकाने लगाएगें । ( दे० दाभ तल अर्ज ) ३. इसरा फील-सूर फूंकेगा ( दे० असराफील ) ४. काना दज्जाल गधे पर सवार आएगा और इमाम मेहदी उसे मारेंगें ( दे० दज्जाल ५. पश्चिम से सूर्य उदय होगा । उसमें प्रकाश नही होगा परन्तु वह सारे संसार पर छा जाएगा । यह संकेत पश्चिमी सभ्यता की ओर है । इमाम मेहदी के मारफत सूर्य के निकलने से उसका प्रभाव नहीं रहेगा । ६. पूर्व में सत्य धर्म का झंडा गाड़ा जाएगा यह संकेत भारत भूमि की ओर था । ७. याजूज-माजूज प्रकट होगें जो अष्ट धातु की दीवार को निरन्तर चाटा करेगें । इमाम मेहदी के आगमन से संसार उनके भय से मुक्त होगा ( दे० आजूज-माजूज )

महामति प्राणनाथ ने कियामत के निशान स्पष्ट किए, उनका अभिप्रेत अर्थ बताया तथा अपने युग में उन सबका प्रकट होना साक्षी देकर सिद्ध किया ।

(दे० मारफत सागर प्र० कयामत के निशान)

*कलमा—कलिमा—वचन वाक्य । मुसलिम सम्प्रदाय का मंत्र ।

(दे० इल्लिल्ला)

महामति ने तारतम वाणी को भी परमात्मा द्वारा कहलाए वचन होने के कारण कलिमा कहा और वादा किया :—

'जिन ए कलिमा सत किया, मैं तिन का जामिन ।'

जिन्होंने सत्य वचनों पर विश्वास किया, उन्हें जीवन में उतारा स्वयं परमात्मा उनकी गवाही देने उतर आएगें । यही नहीं वे लोग अन्य लोगों को भी अन्तिम न्याय के दिन बचा लेगें ।

'बांग आवाज कानों सुनी, कुफ्र कहिए/क्यों ताए ।
सो रूह आखिर कजा समें, औरों भी लेंसी बचाए ॥'

*कलीमुअल्लाह :—कलीमुल्ला—खुदा से बातें करने वाला । हजरत मूसा । कियामत के समय परमात्मा के वचन कहने वाले । उनसे बातें करने वाले बड़े मूसा महामति प्राणनाथ जी । उन्होंने जबूर किताब की भविष्य वाणी को सत्य किया ।

*कल्याण बाई :—बृज के सुदामा की पत्नी ।

*कांध :—पति-स्वामी, प्रीतम । महामति ने परमात्मा को आत्मा का पति मानकर 'कांध' शब्द से सम्बोधित किया है ।

*कागर :—कागज पत्र, संदेश । महामति ने कुरान और भागवत को कागर कहा । उनमें परमात्मा का ब्रह्मात्माओं के नाम संदेश है ।

*काजी :—न्यायाधीश । कतेब के अनुसार आखिरत में संसार का न्याय करने वाले स्वयं परमात्मा जो इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथ जी के रूप में प्रकट हुए ।

*काबा :—मक्का में बनी दरगाह जहाँ शरीअती मुसलमान हज करने जाते हैं । मोमिनो का काबा परमधाम है ।

महामति ने आत्मा का काबा अर्श अजीम—परमधाम बताया । उन्होंने आदेश दिया कि संसार के सब लोगों को परमात्मा के चरणों में ही झुकना चाहिए । और परमधाम की हज और जियारत (परिक्रमा) की दिल में चाह रखनी चाहिए ।

*काल माया :—अक्षर ब्रह्म की नश्वर ब्रह्माण्ड बनाने की कला ।

*काला पत्थर :—मक्का के काबा में स्थित काला पत्थर जिसे आदम के साथ अर्श से उतरा माना जाता है । शरीअती मुसलमान हज्ज के समय उसको चूमते (बोसा देते) हैं । मोमिनों के लिए महामति ने अपने अर्श दिल में हक के कदमों का बोसा ही वास्तविक 'सिज्द' माना है ।

काला पत्थर वाणी में कठोर दिल वालों के लिए भी प्रयुक्त हुआ है :—

पत्थर काले ढिग हुते, सो भी हुए टूक टूक ।

*कालू बला :—"बेशक है" (दे० अलस्तो बेरब कुम) !

*कासिद :—पत्र या पैगाम देने वाला । हजरत मुहम्मद ने संसार को ब्रह्म सृष्टि का पैगाम दिया इसलिए उन्हें कासिद कहा गया ।

*किब्ला :—पूजा का स्थान । मोमिनों का किब्ला अर्श परमधाम है या उनका दिल जब वह अर्श बन गया हो ।

'कु'

*कुंवर बाई :—श्री देवचन्द्र जी की माता जी का नाम था । वे बड़ी ही श्रद्धालु भक्त और साध्वी महिला थीं । बाल्यकाल से ही पुराणों की कथाएँ सुना

कर उन्होंने बालक देवचन्द्र के मन में श्रद्धा और भक्ति के बीज बो दिए जो समय पाकर प्रस्फुटित हुए और संसार में एक अनूठे ज्ञान का शास्त्र दे गए ।

*कुदसी :—एक हदीस का नाम ।

*कुन—'होजा' । कुरान के अनुसार खुदा ने 'कुन' कहा और सृष्टि की रचना हो गई ।

कुन की दुनिया—नश्वर माया के जीव । नश्वर सृष्टि ।

*कुबला—कंस के दरबार के द्वार का महा शक्तिशाली हाथी जिसे श्री कृष्ण ने मारा था ।

*कुमारिका—अक्षर ब्रह्म की कला शक्तियां । इन्हें ही ईश्वरीय सृष्टि कहा गया है । फरिश्तों के रूप में ये शक्तियां प्रकट होती हैं । ब्रज लीला में इन्होंने श्री कृष्ण का पूर्ण प्रेम पाने के लिए उपवास किया तो रास लीला में ब्रह्म सृष्टि द्वारा धारण किए शरीरों में प्रवेश पाकर रास का आनन्द पाया । रास लीला के बाद वेद ऋचाओं के रूप में पुनः ब्रज भूमि पर ही अक्षर ब्रह्म की शक्ति के साथ रास लीला की । (दे० प्रकाश—प्रकट वाणी)

*कुलजम—मिश्र की नील नदी । अपनी लाठी के चमत्कार और परमात्मा की कृपा से हजरत मूसा अपने अनुयायियों को लेकर जब निकलने लगे तो कुलजम नदी ने मार्ग दे दिया । मिश्र के अत्याचारी राजा फिरऔन की सेना उनकी देखा-देखी उसमें घुस पड़ी । सेना के बहुत से लोग डूब कर मर गए । जो बचे वे भाग गए । कुलजम का अर्थ सागर है । नील नदी को विशाल पाट के कारण यह नाम दिया गया । महामति की वाणी कुलजम स्वरूप के नाम से भी जानी जाती है । परमात्मा और ब्रह्म सृष्टि के स्वरूप का सागर के समान विशालता लिए हुए वर्णन इसमें है । जीव को मोक्ष आत्मा को परमानन्द देने वाले अमृतमय वचनों का यह सागर है । नील नदी के समान मोमिन इसमें उतर कर पार हो जाते हैं । पापी जन अपनी उचित सजा पाकर, प्रायश्चित से शुद्ध होकर राह पा सकते हैं । इस तरह तारतम वाणी सही अर्थों में 'कुल्जम' है । संसार के सभी धर्म ग्रन्थों को साथ लिए हुए, उनके सारांश और अभिप्रेत अर्थ स्पष्ट करने वाली वाणी 'कुलजमा स्वरूप' भी कही जाती है । इसी एक ग्रन्थ सागर में संसार के सभी धर्म ग्रन्थों का इतना सुन्दर समावेश हुआ है कि सभी अपना अस्तित्व रखते हुए इसमें एकाकार हो गए हैं ।

*कृष्ण—बृज और रास लीला के केन्द्र बिन्दु । गीता ज्ञान के उपदेशक । शास्त्रों में श्री कृष्ण की विभूतियों का वर्णन है । उनकी लीलाओं में उनमें अलग शक्तियों का समावेश रहा । महामति ने इसे श्रीकृष्ण की त्रिधा लीला कहा है । श्रीकृष्ण की लीला और शक्ति भेद से तीन स्वरूप माने हैं ।

कंस के कारागार में जिस चतुर्भुज स्वरूप ने दर्शन देकर वासुदेव और देवकी को आने वाले बालक का परिचय दिया वे विष्णु के स्वरूप थे । प्रकट होने वाले बालक गोलोक के अवतार थे । गोकुल में नन्द घर में बृज लीला करने वाले श्रीकृष्ण में अक्षरातीत परमात्मा का आवेश और अक्षर ब्रह्म की आत्मा थी ।

बृज और रास लीला के श्रीकृष्ण में अक्षरातीत और अक्षर ब्रह्म की शक्तियां रहीं । गोपियों के रूप में ब्रह्म सृष्टि के ध्यान 'सुरिता' का उनमें प्रवेश था । रास लीला खेलने के बाद अक्षरातीत का आवेश और ब्रह्मसृष्टि की 'सुरिता' परमधाम लौट गए । गोकुल में लौट कर अक्षर ब्रह्म की शक्ति ने सात दिन तक गोपियों में प्रविष्ट वेद ऋचाओं के साथ रास लीला की । इसी रास लीला को संसार ने देखा । गोकुल से मथुरा श्रीकृष्ण के यही स्वरूप पधारे । कंस वध के उपरान्त गोपाल वेश उतारते ही अक्षर ब्रह्म की शक्ति तिरोहित हो गई । कृष्ण एक योगिराज के रूप में द्वारिका के राजा बने । जरासंध से युद्ध के समय श्रीकृष्ण को अपने स्वरूप का ध्यान आया । तब विष्णु भगवान अपनी सोलह कलाओं सहित श्रीकृष्ण में अवतरित हुए । यहीं से विष्णु अवतार की लीला होती है । गीता के उपदेशक कृष्ण ने अक्षर ब्रह्म और अक्षरातीत उत्तम पुरुष की ओर संकेत तो किया उनकी लीला का वर्णन नहीं कर पाए । "वह उत्तम पुरुष तो अन्य ही हैं" इतना ही कहा है । श्री देवचन्द्र जी को मिले तारतम मंत्र के 'श्रीकृष्ण' अक्षरातीत परमात्मा श्रीकृष्ण हैं । वही अनादि सनातन एकमात्र पुरुष हैं । शेष सब लीलाएँ तो उनकी प्रकृति रचित स्वरूपों की ही हैं । परम मोक्ष और परमधाम के आनन्द की प्राप्ति के लिए अक्षरातीत श्रीकृष्ण की ही उपासना करनी चाहिए । (दे० प्रकाश प्रकट वाणी)

*केशरबाई—रास और जागनी में इन्द्रावती के संग-संग रहने वाली एक आत्मा ।

*कोसर—कौसर—कुण्ड-तालाब ।

परमधाम का 'हौज कौसर' ताल जिसका सांकेतिक परिचय कुरान में

दिया गया है। तारतम वाणी के 'परिक्रमा' ग्रन्थ में इसका सुन्दर वर्णन है। 'यमुना' इसी हौज कौसर में समा जाती है। कौसर की पाल और द्वीप का वर्णन मन को मोह लेने वाला है।

*कोहतूर—नूह तोफान के बाद नूह की किश्ती इसी पर्वत पर लगी। इसी को शास्त्रों में गोवर्धन पर्वत कहा जिसके नीचे श्रीकृष्ण ने बृज को बचाया। (दे० खुलासा दो नामा)

'ख'

*खट प्रमाण—षट प्रमाण। संसार में किसी भी वस्तु को जानने और पहचानने के छः साधन हैं देखना, सुनना, सूंघना, स्वाद लेना, स्पर्श करना और सोचना या मन से ग्रहण करना। शास्त्रों में कहा गया है कि जो कुछ भी इन साधनों से जाना जा सकता है वह नश्वर होने से ब्रह्म नहीं है। ब्रह्म के अनुभव या वर्णन के लिए ये सहायक तो हैं परन्तु इनको प्रमाण नहीं माना जा सकता।

*खट सास्त्र—(दे० षट दर्शन)

*खलील अल्लाह—खलीलुल्ला—परमात्मा का मित्र। हजरत इब्राहीम को एकेश्वरवाद की स्थापना के लिए यह खिताब मिला। कियामत के समय एक ही ब्रह्म अक्षरातीत परमात्मा की उपासना कराने वाले श्री देवचन्द्र जी और दूसरे जामे (शरीर) में श्री प्राणनाथ जी को यह पद मिला।

*खिज्र—एक महा ज्ञानी व्यक्ति थे। इन्हें भविष्य की घटनाओं का पता रहता था। पैगम्बर मूसा इनसे मिले थे ऐसा वर्णन एक किस्से में मिलता है। मूसा ने अपने ज्ञान का घमण्ड किया तो उनको हजरत खिज्र से मिलने को कहा गया उनसे मिल कर मूसा ने माना कि 'खिज्र' का इल्म बड़ा है।

*खिलवत—खलवत—एकान्त मिलन।

परमधाम में रूहों और परमात्मा के एकान्त बैठने के स्थान को खिलवत खाना या मूल मिलावा की हवेली कहा है। महामति के एक ग्रन्थ का नाम 'खिलवत' है। इसमें परमात्मा से एकान्त बैठ कर की बातें हैं। अपने आपको-अपने अहङ्कार को उसमें मिला देने का सहज, सरल उपाय बताया है। उसमें एक हो जाना ही 'खिलवत' का आनन्द है।

'ग'

*गजनी सुल्तान—तफसीर हुसैनी में सुल्तान और इमाम का कथानक

है। जिसे भविष्य वाणी के रूप में माना जाता है। उसमें कहा गया है कि सुल्तान इमाम के पास बड़े नम्र भाव से आता था कि धर्म स्थापना का नुस्खा—'मंत्र' और आखिरत में फकीरों में उठाए जाने का फल उसे मिले। वह बहुत दिन तक नंगे पांव जा कर निमाज पढ़ने वालों में सबसे पिछली कतार में खड़ा होता रहा। उसने पुण्य कमाने के लिए मूर्ति घरों को तोड़ा ताकि मुझे इमाम का दर्शन प्राप्त हो जाय। उसने अपनी धन सम्पदा दान कर दी। परीक्षा में पूरा जान इमाम ने उसे 'नुस्खा' दिया जिसकी सहायता से वह संसार में सत्य धर्म और अपने राज्य में शान्ति लाने में सफल हुआ।

महमूद गजनी सुल्तान ने अपने आप को वह सुल्तान मानकर हिन्दुओं के मन्दिरों को नष्ट किया। सवाब पाने के लालच में अन्य मतावलम्बियों पर अत्याचार किए। उसको धर्म का 'नुस्खा' प्राप्त न हो सका।

वास्तव में यह संकेत महाराजा छत्रसाल और श्री प्राणनाथ जी की ओर है। महाराजा ने बड़ी मेहनत से वेद और कतेब के ज्ञान को एक सिद्ध करने का मंत्र पाया। हिन्दुओं से बहुदेव और मूर्ति पूजा छुड़ा दी। और मुसलमानों के अन्याय और अत्याचार छोड़कर धर्म का सत्य स्वरूप को समझने का आदेश दिया। वे ही सच्चे अर्थों में महामति के वचनों के अनुसार जीवन जी सके। उन्होंने उनकी आज्ञा को मान कर धर्म और जाति भेद से रहित समाज और राज्य की स्थापना की। (दे० कियामत नामा बड़ा प्र० ४)

*गरुड़—भगवान विष्णु का वाहन जो मन से भी तेज चाल चलता है। शीघ्रगामी आत्मा के लिए भी गरुड़ शब्द का प्रयोग हुआ है।

*ग्वाल—गोपालन करने वाले। श्रीकृष्ण के सखा। स्वयं श्रीकृष्ण गौवों का पालन करने के कारण गोपाल* कहलाए।

*गांग जी भाई—श्री देवचन्द्र जी के पहले शिष्य थे। उनके साथ श्री मद्भागवत की कथा श्रवण करते थे। श्री देवचन्द्र जी के मुख से परमधाम और परमात्मा का वर्णन सुन कर स्वयं भी दर्शन करने का सौभाग्य इन्हें सब से पहले मिला। इन्होंने सद्गुरु को अपने घर में रख कर उनकी बहुत सेवा की। अपना तन मन धन उनके चरणों पर चढ़ा दिया।

परमधाम में इनका नाम धनबाई है। महामति ने प्रकाश ग्रंथ में :—
'धन धन धनबाई को अवतार' कह कर इनकी स्तुति की है।

*गाजी—धर्म योद्धा। धर्म के लिए कुर्बान होने वाले। कियामत के समय धर्म के आडम्बरों कुफ्र और अहंकार से लड़ने वाले ब्रह्मसृष्टि (मोमन)।

*गिरे भूने मुर्ग आसमान से—मूसा जब अपनी कोम को लेकर फिरौन के राज्य से निकल पड़े तो कई बार खुदा ने उन्हें चमत्कारिक ढंग से भोजन दिया ऐसा माना जाता है। एक बार लोगों ने मूसा से कहा। हम साधारण भोजन करके तंग आ गए हैं हमें बढ़िया भोजन खिलाइये उस दिन आसमान से भूने हुए मुर्ग गिरे और लोग भोजन करके तृप्त हुए।

महामति ने इस कथानक का भी अभिप्रेत अर्थ कियामत के समय बताया। पुरानी घिसी पिटी रूढ़ियों को धर्म मान कर लोग तंग आ चुके थे। उन्हें सत्य ज्ञानरूप अमृत तथा परमधाम के आनन्द का आसमानी—पारलौकिक आहार तारतम वाणी में मिला। भूखी अशान्त अतृप्त आत्माओं के लिए परमधाम से मनोनुकूल आहार मिला।

*गोसे :—एकान्त में अति पास।

दो गोसे फर्क कमान :—हदीसों में वर्णन आया है कि मुहम्मद साहिब को परमात्मा का दीदार हुआ तो उन दोनों के बीच कमान भर का अन्तर था।

*गौरी :— महादेव की पत्नी, एक देवी। उन्होंने महान तपस्या से अपने पति को प्राप्त किया। ब्रह्म सृष्टि को इनका उदाहरण दे कर अपने प्रियतम परमात्मा की ही आराधना करने का आदेश दिया है।

*गोवर्धन ठाकुर :—मेहराज ठाकुर के बड़े भाई। पहले यह ही सद्गुरु की शरण में आए मेहराज ठाकुर को श्री देवचन्द्र जी की शरण में इन्होंने ही पहुँचाया।

इनका परमधाम का नाम गुणवंती बाई है।

मोसों गुणवंती बाइयें किए गुण, ऐसा कह कर महामति ने वाणी में इनका उपकार माना है।

‘च’

*चंपावती :—रास मंडल की एक आत्मा।

*चतुर्मुख :—चार मुख वाले देवता ब्रह्मा जी जिनके चारों मुखों से चारों वेदों का उच्चारण हुआ ऐसा माना जाता है। ब्रह्मा जी भी कालान्तर में मृत्यु को प्राप्त होते हैं तो साधारण वस्तुओं का विश्वास करना व्यर्थ है ऐसा कह कर महामति ने संसार की असारता की ओर संकेत किया है।

*चसमें :—चश्में--स्रोत, झरने ।

पैगम्बर मूसा अपनी जाति के लोगों को ले कर जा रहे थे तो राह में पानी कहीं दिखाई न दिया । लोग प्यास के मारे व्याकुल हो उठे । मूसा ने पहाड़ में अपनी चमत्कारिक लाठी मारी तो उसमें से पानी के बारह सोते फूट निकले । बारह कबीलों में हर एक को एक स्रोत बांट दिया गया ।

महामति प्राणनाथ की उम्मत ब्रह्मसृष्टि इस संसार की सत्य ज्ञान और प्रेम विहीन बंजर धरती में प्यासी तड़प रही थी । उनके लिए ब्रह्मज्ञान के पारलौकिक चश्में फूटे । ब्रह्मात्माओं को परमधाम का आनन्द तो मिला ही संसार के जीवों के लिए भी मोक्ष के द्वार खुल गए ।

*चांडूल :—कंस की सभा का पहलवान जिसे श्री कृष्ण ने पछाड़ कर मार दिया ।

*चार आश्रम :— ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास ।

चार आसमान :—मलकूत--बैकुण्ठ ।

जबरूत--अक्षरधाम ।

लाहूत--परमधाम

हाहूत--रंग महल, अक्षरातीत परमात्मा और रूहोंका खास महल ।

*चार मुक्त :—चार प्रकार की मुक्ति । सालोक्य । अपने आराध्या देव के धाम में रहना । सामीप्य :—उनके अति निकट रहना । सारूप्य । उनके जैसा रूप मिल जाना । सायुज्य :—उनके स्वरूप में विलीन हो जाना ।

यह चार मुक्ति बैकुंठ लोक की ही मानी जाती है ।

चार वर्ण :—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र । इनके अतिरिक्त चौदह उपवर्ण अपने कर्मों के अनुसार माने गए हैं ।

*चौदह तबक : चौदह लोक -- सात पाताल, मृत्युलोक और छः देवलोक ।

*चौदह विद्या :— नृत्य, संगीत, पढ़ना, सीना, घर सजाना, भाषाओं का सीखना, युद्ध, अस्त्र बनाना, औषधि, चित्रकारी, कढ़ाई, बुनाई, खेती, पुष्प सजाना और शृंगार ।

ब्राह्मणों की चौदह विद्याएं यह हैं । चार वेद, छः वेदांग, मीमांसा, न्याय धर्मशास्त्र और पुराण ।

*चौबीस सहस्त्र कुमारिका :—अक्षर ब्रह्म की कलाएँ ईश्वरीय सृष्टि ।

'छ'

*छत्तीस हजारः—में बारह हजार ब्रह्म श्रृष्टि और चौबीस हजार ईश्वरीय श्रृष्टि ।

*छत्रसाल :—महाराजा छत्रसाल महामति प्राणनाथ के प्रमुख शिष्यों में से एक थे । वे वीर चंपत राय और वीरांगना सारंधा के पुत्र थे । बाल्यकाल से ही धर्म और मातृ भूमि की रक्षा के लिए प्राण हथेली पर लिए फिरते रहे । कई बार सैन्य संगठन करके छोटे सेराज्य की स्थापना की इसी उद्देश्य से शिवाजी से भी मिलने गए । महामति प्राणनाथ ने इन्हे ज्ञान, और आत्मबल, और तलवार प्रदान की । उनके आशीर्वाद स्वरूप पन्ना के हीरे के स्वामी बने । उनसे मिलने के बाद महाराजा का शीश जो उठा तो फिर किसी के सामने झुका नहीं । सम्राट् औरंगजेब ने अपने लड़कों से कहा था कि छत्रसाल से सामना करने से बचते रहना । उसके साथ खुदाई ताकत है । छत्रसाल बड़े ही शूर वीर, योद्दा और भक्त थे । वे कवि भी थे । विद्वानों का बड़ा सम्मान करते थे । औरंगजेब के साथ उस की नीति के कारण युद्ध किया । हिन्दू मुस्लिम प्रजा को बच्चों के समान रखा । वे धर्म समन्बय के प्रतिपादक थे ।

*छर-क्षर नश्वर ब्रह्माण्ड । अक्षर ब्रह्म की कल्पना में यह ब्रह्मांड उनके पलक झपकने केसमय में करोड़ों बन कर मिट जाते हैं । वास्तव में अक्षर और अक्षरातीत के धाम में समय परिवर्तन और ह्रास नहीं होता । यहाँ युग व्यतीत हो जाने पर भी वहाँ वही समय है ।

*जंबूर :—ज़बूर-- वह आसमानी किताब जो हज़रत दाउद पर उतरी । यह किताब अब पुरानी बाइबल का अंग बन चुकी है । दाउद बड़े अच्छे गायक थे । उनके भजन आज भी गिरजा घरों में गाए जाते हैं ।

आखिरी ज़माने के दाउद पैगम्बर महामति प्राणनाथ की प्रकाश किताब को किताब जंबूर कहा गया है । 'प्रकाश' 'कुल्जम स्वरूप-तारतम वाणी'—का दूसरा ग्रन्थ है ।

*जगात :—जकात--शरीयत के अनुसार अपनी आय का चालीसवाँ भाग धर्म के लिए दान देने का आदेश कुरान में है ।

अपना सब कुछ, स्वयं अपने को भी धर्म के लिए बलिदान कर देना, मोमिनो की ज़कात है ।

*जदुराय :— यादवों के राजा श्री कृष्ण ।

*जनक :—विदेह राजा जनक श्रीराम के ससुर और सती सीता के पिता थे । अपने तपोबल से शरीर के विकारों से मुक्त और देहाभिमान से ऊपर उठ जाने के कारण विदेह कहलाए । महर्षि वेदव्यास ने शुकदेव मुनि को इन्हें अपना गुरु बनाने के लिए प्रेरणा दी थी । जनक ब्रह्म मुनियों का बहुत सम्मान करते थे । उनके यहाँ सदैव गोष्ठियाँ और यज्ञ हुआ ही करते थे । ऐसा कहा जाता है कि जनक आग पर भी चल सकते थे । इनका पाँव जलता नहीं था इस बात पर उन्हें कुछ अभिमान आ गया । नवनाथ योगियों ने इनका अभिमान दूर करने के लिए परीक्षा ली तो इनका मान भंग हो गया । आग में जाते ही इनके पांव जलने लगे । तब योगियों ने इनकी भर्तस्ना की । [दे० कीर्तन पुराने] । पौराणिक कीर्तनों में इस कथा को दे कर महामति ने स्पष्ट किया है कि साधक को कभी भी अभिमान नहीं करना चाहिए ।

*जबराइल—जिबरील-अक्षरधाम का एक फिरिश्ता । अक्षरातीत परमात्मा के सत्य अंग का आवेश । इसी के द्वारा मानव के मुख से ब्रह्म ज्ञान के बोल निकलते हैं ।

कुरान की आयतें मुहम्मद साहिब ने जिबरील की सहायता से कहीं । शुकदेव मुनि ने रास का वर्णन इसी दैवी शक्ति के सहारे किया । महामति की सम्पूर्ण वाणी परमात्मा के आवेश में कही गई ।

मुहम्मद साहिब के मेराज (साक्षात्कार) के समय जिबरील उन्हें अक्षरधाम की सीमा जोए (यमुना) तक ले गए । आगे न जा सके । आगे परमधाम में जोश से नहीं प्रेम से जाना होता है ।

*जबरूत—अक्षर ब्रह्म लोक ।

*जमुना जी—परमधाम और अक्षरधाम के बीच बहती नदी (दे० यमुना)

*जमपुरी—यम लोक । पापी जनों को नरक भेजने से पूर्व उनके कर्मों का हिसाब उनको यहाँ दिखाया जाता है ।

*जरासंध—श्री कृष्ण के समय का एक पराक्रमी राजा जो बार-बार श्री कृष्ण से युद्ध करने चढ़ आता था । हार कर श्रीकृष्ण से क्षमा मांग कर लौट जाता था—सत्तरह बार ऐसे हुआ । अठारहवीं बार जरासंध ने एक षड़यंत्र के फलस्वरूप श्री कृष्ण को हरा दिया ।

श्रीकृष्ण ने अपनी शक्तियों का स्मरण किया। बैकुण्ठ से विष्णु अपने रथ सुदर्शन चक्र आदि उनकी सोलह कलाओं सहित उनमें उतर आए। विष्णु की पूर्ण शक्ति का अवतार यह श्री कृष्ण ही महामति द्वारा बताए श्री कृष्ण के तीन स्वरूपों में अन्तिम है। जरासंध के शरीर के दोनों भाग बीच से जुड़े थे। भीम से द्वन्द युद्ध करा कर श्री कृष्ण ने उन दोनों को अलग करवा दिया तभी जरासंध की मृत्यु संभव हो सकी। (दे० श्रीमद्भागवत)

*जसोदा—श्री कृष्ण की पालने वाली माता। श्री कृष्ण की बाल लीला देखने का सौभाग्य उन्हें मिला।

*जहूद—यहूदी—पैगम्बर मूसा के अनुयायी। इब्राहीम के छोटे पुत्र के बेटे इस्राइल के वंशज। अरब देशों में जितने भी पैगम्बर हुए वे इस्राइल के वंश में पैदा हुए। इस्माइल के वंश में केवल मुहम्मद साहिब हुए।

मुसलमान लोग यह समझते हैं कि इमाम मेहदी उनमें ही प्रकट होंगे। इसीलिए उन्होंने प्राणनाथ की बातों का विश्वास नहीं किया। महामति ने बताया कि हमेशा की तरह इस बार भी आखिरी पैगम्बर का अवतरण यहूदों में हो गया है। ऐसा लगता है कि महामति ने 'यहूदी' शब्द का विशाल अर्थों में प्रयोग अमुस-लिम जातियों के लिए किया है। यहूदी कहने से उनका अभिप्राय 'हिन्दू' से ही था।

"तुम ढूंडो अपने खिलके माहें, तामे तो साहिब आया नाहें"

'बीच हिन्दुओं भेष फकर'

'आप हजरत रसालत पनाह, जहूद फकीरों में पातशाह।'

(दे० कियामत नामा बड़ा)

*जांबू—जाम्बवन्त। सुग्रीव की सेना के एक वानर सेनापति जिन्होंने राम की सहायता की।

*जाटी—पंजाब के जाटों के संत गुरु नानक। कबीर के बाद मध्यकालीन युग में पंजाब में एक उच्च कोटि के संत हुए। सिख पंथ के प्रवर्तक और पहले गुरु। इनकी वाणी पंजाब और सिंध में बहुत लोग पढ़ते हैं। नम्रता, प्रेम, सेवा, दास भाव और परोपकार की भावना सिखाने में इनकी वाणी अपूर्व है। श्री देव-चन्द्र जी अपने शिष्यों को कबीर और जाटी आदि संतों के पद सुनाया करते थे ऐसा महामति ने कहा है।

सिख गुरुद्वारों में आज भी गुरुनानक की वाणी को बड़े प्रेम से गाया जाता है ।

*जादल मिस्ल—एक किताब का नाम । जादल मिस्ल में लिखा है कि पापियों को नरकों में देख कर मोमिनों को बहुत दुःख होता है । वे परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि इन्हें दुःख से छुटकारा दिया जाए । मोमिनों की कृपा दृष्टि पड़ने से दोजखियों को सुख होता है परन्तु मोमिनों को सुखी देखकर वे ईर्ष्या करते हैं और उनकी आग कई गुणा भड़क उठती है ।

*जामवंत—सुग्रीव की सेना का एक पराक्रमी सेनापति । संसार के शूर-वीर वानरों के नाम गिना कर महामति ने परमधाम के पशु पक्षियों के पराक्रम का अनुमान लगाने की प्रेरणा दी है ।

*जानिक—और जालूत दो व्यक्ति मुहम्मद साहिब के शिष्यों में से थे । एक दिन बातचीत करते हुए उन्होंने जालूत से पूछा कि मूसा के कितने फिरके बन गए ? जालूत ने कहा किताब देख कर बताऊंगा । मुहम्मद साहिब ने कहा कि किताब जल जाए या चोरी हो जाए तो क्या करोगे । फिर जानिक से पूछा ईसा मसीह के कितने फिरके हैं तो उन्होंने पैंतालीस बताए । मुहम्मद ने उन्हें भी कहा ठीक नहीं है । फिर मुहम्मद सा० ने बताया कि मूसा के इकहत्तर और ईसा के बहत्तर हुए । मेरे बाद तिहत्तर फिरके होंगे । इन सब में एक नाजी फिरका होगा शेष सब नारी (नारकीय) नरकों में जाने वाले होंगे । महामति ने इस प्रसंग को इस तरह स्पष्ट किया है कि हर सम्प्रदाय में थोड़े ही लोग उच्चकोटि के व्यक्ति होते हैं । शेष सब प्रवाह में बहते हुए अपने कर्मों से नरकगामी बनते हैं । नाजी फिरका ब्रह्म सृष्टियों का है ऐसा उनका मत है ।

*जिकरिया—जकरिया एक पैगम्बर का नाम (दे० एहिया)

*जिल्हज—हिजरी कैलेन्डर का वह मास जिसमें हज्ज होती है ।

*जेजिया—जजिया एक प्रकार का टैक्स जो मुसलिम सम्राट् अमुसलिम प्रजा से उनके जान और माल की रक्षा के लिए लेते थे । कुरान में गरीब और मुहताज लोगों से कर लेने की मनाही की गई है । कालान्तर में अत्याचारी शासकों ने कुरान द्वारा अनुमोदित जजिया कर को मनमानी करने और प्रजा पीड़न का साधन बना लिया । महामति ने अपने 'किरंतन' ग्रन्थ में जजिया का इसी रूप में उल्लेख किया है ।

*जोए—कुरान में जुए अमृत की नदी बताई गई है जिसका जल धर्म में विश्वास लाने वालों को मिलेगा। महामति ने इसे परमधाम की यमुना बताया है। परिक्रमा किताब में इसके मूल, प्रवाह, किनारों और पुलों का बड़ा हृदयग्राही वर्णन है।

*जोगमाया—केवल ब्रह्म की आनन्द योगमाया वह शक्ति है जो नूरमय चेतन ब्रह्मांडों की रचना करती है। रास का मंडल इसी शक्ति ने बनाया। बृन्दा-बन, गोपियों के स्वरूप श्रृङ्गार सब इसी शक्ति ने तय्यार किए। रास लीला अक्षर ब्रह्म के हृदय में अखंड हो गई और योगमाया अपने ब्रह्मांड सहित केवल-ब्रह्म में लीन हो गई।

'ट'

*टापू—द्वीप। कतेब में हूद तोफान का वर्णन है। ईश्वरीय कोप के समय हूद पैगम्बर ने धार्मिक लोगों को किश्ती में सवार कराया और उन्हें टापू पर पहुँचा दिया। अधर्मी लोग डूब गए। महामति ने अपने खुलासा ग्रन्थ में पुराणों और कतेब, के किस्सों का मिलान करते हुए बताया है कि बृज लीला के उपरान्त ब्रह्मांड प्रलय हो गया। ब्रह्मसृष्टि को श्री कृष्ण योगमाया की नाव में बिठा कर बृन्दाबन और अखंड बृजमंडल में ले गए। अखंड बृजमंडल ही वह टापू है।

(दे० खुलासा दोनामा)

टापू तारतम वाणी की परिक्रमा किताब में भी आया है। हौज कौसर ताल (जिसमें यमुना समाती है) में चौसठ पांखुरी के कमल के फूल जैसा बड़ा ही सुन्दर द्वीप है। शुक्ल पक्ष की चौदहवीं रात को यहां विहार होता है।

*टोना—हदीसों में यह वर्णन है कि एक लड़की ने मुहम्मद साहिब के बाल लेकर टोना किया। उसमें ग्यारह गाठें लगा दीं। उन बालों को कुएं में रख दिया। मुहम्मद साहिब से किसी ने प्रश्न किया कि कियामत कब होगी। वे मौन रहे। टोना के कारण बोल ही न पा रहे थे। अली को पता चल गया। वह रस्सी लेकर कुएं में उतर गए। बालों को बाहर लाए। एक एक गांठ खुलने पर एक एक आयत उतरती गई। उन आयतों को बड़े महत्व का माना जाता है।

महामति ने बताया कि उन ग्यारह गांठों और ग्यारह आयतों में कियामत के समय की ओर संकेत है। मुहम्मद साहिब ने संकेत में बता दिया कि ग्यारहवीं सदी में कियामत होगी।

'ठ'

*ठकुरानी जी—अक्षरातीत परमात्मा की आनन्द अंग श्यामा। बारह हजार ब्रह्मसृष्टि इनके ही अंग हैं। अपनी अंगी आत्माओं के साथ अनेक लीलाएं करके प्रियतम को रिझातीं हैं। बृज और रास लीला में राधा के रूप में और जागनी लीला में श्री देवचन्द्र जी के रूप में इनका अवतरण हुआ।

'त'

*तकरार—किसी बात का दोहराया जाना, बार बार कहना या होना। परमात्मा के सामने आत्माओं ने संसार देखने की इच्छा को तीन बार दोहराया। फलस्वरूप उन्हें संसार में तीन बार आना पड़ा। बृज, रास और जागनी लीला को तारतम वाणी में तीन तकरार कहा है।

कतेब के अनुसार पहली बार हूद के घर, दूसरी बार किश्ती पर और तीसरी बार कियामत के समय मोमिनों के बचाए जाने का बयान है।

*तामसियां—जोशीले स्वभाव की रूहें।

तारत्तम वाणी—तारत्तम्म—तर और तम का भाव। तारत्तम वाणी अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाले ज्ञान को कहा गया है। महामति की वाणी। तारत्तम वाणी है। विविधता में एकता—अनेक को एक सूत्र में बांधने वाला यह ज्ञान तारतम्य से पूर्ण है। तारत्तम वाणी न्यून और अधिक, नहीं और है, माया और ब्रह्म के स्वरूप का निर्णय करने वाली है।

*त्रिगुण—तीन गुण—सतो गुण, रजो गुण, और तमो गुण। संसार के लोगों के स्वभाव में अन्तर इन्हीं तीनों गुणो के कम अधिक होने के कारण होता है। सत गुण शान्ति और ज्ञान का प्रतीक है, रजो गुण ऐश्वर्य और प्रगतिशीलता का द्योतक है तो तमो गुण आलस्य और प्रमाद को प्रकट करने वाला है।

*त्रिदेवा—ब्रह्मा—सृष्टि रचना करने वाले, विष्णु—सृष्टि का पालन करने वाले, और शिव—संहार के देवता हैं।

*त्रिपुरारि—शिव। त्रिपुर नामक राक्षस का वध करने के कारण यह नाम पड़ा।

*त्रिलोकी—तीन [illegible] पाताल, मर्त्य और स्वर्ग।

*तिलसम—जादू [illegible]या से दिखाया खेल।

*तीर्थंकर—जैन महर्षि।

*तीन सृष्टि—ब्रह्म, ईश्वरीय और जीव ।

*तीन सूरत—परमात्मा के हुक्म और नूर के स्वरूप मुहम्मद के तीन स्वरूप । पहले अरब देश में मानवता का ज्ञान देने वाले मुहम्मद साहिब । दूसरे परमधाम का ज्ञान लाने वाले मल्की स्वरूप श्री देवचन्द्र जी और तीसरे हकी स्वरूप श्री प्राणनाथ जी ।

*तोपतल कल्लाम—एक किताब का नाम । इसके आठवें प्रकरण में लिखा है कि कियामत के समय दोजख की आग में जलती सब दुनिया अपने पैगम्बरों और देवी देवताओं के पास जाएगी कि हमें इस आग से बचाओ । मुहम्मद के सिवा कोई भी सहायता न कर पाएगा । छत्रसाल कहते हैं आखिरी मुहम्मद प्राणनाथ सबको मोक्ष देने के लिए पधारे हैं भूलने वाले पछताएंगे ।

(कियामत नामा बड़ा प्र० ७ चौ० ३४)

*तीसरी लीला—ब्रज लीला—अक्षरातीत परमात्मा और रूहों की पहली लीला है । रास दूसरी और महामति के साथ रूहों की जागनी को तीसरी लीला कहा गया है ।

*तौरात—तौरेत—पैगम्बर मूसा की किताब जिसमें धर्म के दस सिद्धान्त हैं । महामति प्राणनाथ की 'कलस' नाम की चौथी किताब ।

*तौहीद—एकेश्वर बाद । परमात्मा के अतिरिक्त किसी को नमन न करना ।

*तौहीद आब—एक ही पूर्ण ब्रह्म परमात्मा की उपासना का ज्ञानामृत परमात्मा का एकांगी प्रेम ।

'द'

*दजला फिरात—इराक देश की दो नदियां जिन्होंने मरु भूमि को हरा भरा किया । कुछ देर चलने के बाद वे एकाकार हो गईं ।

कुरान में इन नदियों के उल्लेख का अभिप्राय महामति के अनुसार यह है कि विश्व की मरु भूमि में वेद और कतेब की दो धार्मिक परम्पराओं का अवतरण हुआ और तारतम वाणी में उनका मिलन हो जाने से संसार को सुख प्राप्त हुआ ।

आत्म प्रेम विहीन विश्व की मरुभूमि में बृज और रास की प्रेम लीलाओं का अवतरण भी दजला फिरात नदियों के रूप में माना जाता है ।

*दज्जाल—अजाजील फिरिश्ते का खुदा विरोधी सांसारिक रूप । दे० अजाजील । कुरान में कियामत की निशानियों में एक यह भी कही गई है कि काना दज्जाल गधे पर सवार होकर आएगा । उसका गधा इतना ऊँचा होगा कि सात सागरों का पानी उसकी कमर तक भी नहीं पहुँचेगा । वह दज्जाल सबको गुमराह करेगा । कियामत के समय इमाम मेंहदी आकर उसे मारेंगे । सारे संसार में फैले उसके साम्राज्य को खत्म करेंगे । महामति प्राणनाथ कहते हैं कि इतना बड़ा । दज्जाल और गधा तो हो नहीं सकता और फिर हो भी तो जब वह मर कर गिरेगा तो नीचे दुनिया का क्या हाल होगा । मानव मन ही इतना बड़ा दज्जाल है । वह अहंकार रूप गधे पर सवार है । अहंकार की ऊँचाई का कोई पारावार नहीं । यही मन सबको गुमराह करता है । इसे काना इसलिए कहा कि संसार की ओर तो आंख खुली है परमात्मा की ओर बंद किए है । जाहिरी लोग कहते हैं कि ऐसा दज्जाल जब आएगा तो उसके साथ लड़ेंगे । वे यह नहीं जानते कि वह लानती तो मानव की गुण अंग इन्द्रियों को वशीभूत किए उनका राजा बना बैठा है । महामति ने उसे मारने का सीधा सरल उपाय तारतम वाणी में बताया है । आत्म शक्ति को पहचान लेने से, विवेक की दृष्टि से देखने मात्र से दज्जाल का खोखलापन सामने आ जाता है । फिर उससे मुक्त होने में समय नहीं लगता ।

(दे० खुलासा और मारिफत सागर कियामत के निशान)

*दधीचि—एक महान शिवभक्त ऋषि थे । प्रजापति कर्दम की कन्या शान्ति तथा अथर्वा ऋषि की संतान थे । इनके घोर तप को भंग करने के लिए इन्द्र के सारे अस्त्र बेकार हो गए । वे निष्काम भाव से तप कर रहे थे ।

उन दिनों वृत्रासुर राक्षस ने देवताओं को बहुत परेशान किया । उसे वर मिल चुका था कि वह किसी भी अस्त्र से मारा नहीं जा सकेगा । उससे आतंकित देवता दधीचि की शरण में आए । उन्होंने योग द्वारा शरीर छोड़ दिया । जंगली जानवर उनके मांस को नोच कर खा गए । अस्थि पिंजर से बने वज्र नामक अस्त्र से वृत्रासुर मारा गया । (कल्यान संस्कृति अंक)

*दर्शन—छः हैं । (दे० षट् दर्शन)

*द्वैत—दुई का भाव । परमात्मा और माया को दो अलग शक्तियां मानना ।

*दाऊद पैगम्बर—महाप्रतापी यिशे के बेटे थे । इनका कद ठिगना था ।

बचपन में भेड़ें चराते हुए वंशी बजाते थे। इनका स्वर मधुर था। बड़े सुन्दर गीत गाते थे। बड़े बहादुर थे। गुलेल से पत्थर मार कर जंगली जानवरों को मार देते थे पलिश्ती राजा जालूत को भी पत्थर से ही मार गिराया। शाउल के बाद दाउद सम्राट् बने। बड़े सत्यनिष्ठ और न्यायकारी राजा कहलाए। सुलेमान जैसे धर्मनिष्ठ, आज्ञाकारी और भविष्यवेत्ता के पिता बने। इनके भजन बाईबल संहिता में हैं। आज भी बड़े प्रेम से गाए जाते हैं।

आखिरत में दाउद पैगम्बर महामति में फिर प्रकट हुए। महामति की दूसरी किताब 'प्रकाश' को जंबूर की संज्ञा मिली।

दाभ तुल अर्ज—दाब्ब दुल अर्ज—कियामत के समय धरती पर प्रकट होने वाला जीव। कुरान और हदीसों के अनुसार इसकी आखें सुअर की, गर्दन मुर्गी की, छाती शेर की और पीठ गीदड़ की होगी। मुँह इन्सान के जैसा और अंग जानवरों जैसे होंगे। (मुसलिम—मिस्कात कियामत के निशान)

महामति ने इस संकेत का स्पष्टीकरण किया है। वे कहते हैं कि कियामत के समय दुनिया में ऐसे लोगों का बाहुल्य होगा जो देखने में इन्सान लगेंगे परन्तु गुण सब पशुओं के होंगे। इमाम मेहदी के रूप में महामति ने मानव को इन पशुवृतियों से मुक्त होने का उपाय बताया। कुरान में मक्के से दाभा के पैदा होने का संकेत भी है। मुहम्मद साहिब के बाद वहाँ जो फितने और उपद्रव हुए उन्हीं की ओर मुहम्मद साहिब ने संकेत किया है ऐसा प्रतीत होता है। (मारिफत सागर कियामत के निशान)

*दीन—सत्य धर्म।

*दीन इसलाम—आदि सत्य सनातन धर्म जो सारी मानव जाति के लिए एक ही है। परमात्मा ने मानव को सांसारिक आकर्षणों और दुर्बलताओं से बचने के लिए जो नियम बताए वही हर युग में सभी जातियों पर लागू होते हैं। भाषा और देशकाल के कारण इनमें भेद दिखाई देता है। महामति ने एक ही सनातन धर्म है यह रहस्य संसार को बताया। उसे उन्होंने कहीं दीन इसलाम और कहीं निजानन्द सम्प्रदाय का नाम दिया। अपनी वाणी में उन्होंने स्थान-स्थान पर दीन इस्लाम शब्द का प्रयोग [illegible] सम्प्रदायों के लिए नहीं उसके विशाल किया है।

*देव चन्द्र जी—महामति प्राणनाथ के गुरु। श्री मत्तु मेहता और कुंवर

बाई जी के पुत्र। अक्षरातीत की आनन्द अंग श्यामा और सुन्दर बाई के अवतार।

*धन बाई—(दे० गांग जी भाई)।

*धूम्रकेतु—पुच्छल तारा जिसके पृथ्वी के निकट आ जाने पर विनाश होता है। शास्त्रों में कहा है जब धूम्रकेतु निकट आएगा और क्षय मास। (११ मास का वर्ष) होगा तभी निष्कलंक अवतार होंगे। महामति ने सं० १७३५ में शास्त्र वेत्ताओं को धूम्रकेतु और क्षय मास की ओर ध्यान दिलाया।

*नजरी—नजर में लिया गया। मुंह बोला। दत्तकपुत्र। महामति ने स्वयं अपने आपको श्री देवचन्द्र जी का नजरी बेटा माना। सतगुरु के धर्म और ज्ञान की विरासत इनको मिली।

*नबी—धर्म गुरु पैगम्बर मुहम्मद साहब।

*नब्बे हजार हर्फ—महामति ने कहा है कि मुहम्मद साहब को मेराज हुआ तो उन्होंने खुदा से नब्बे हजार हर्फ सुने। तीस हजार कर्म काण्ड के उन्होंने स्पष्ट कर दिए। ज्ञान के तीस हजार संकेतों में कहे। तीस हजार मारिफत के स्वयं आखिर जमाने के खाविंद कहेंगे ऐसा उन्होंने कहा। (देखो :—कससुल अंबिया पृष्ट २८८)

*नमाज—निमाज—पूजा, उपासना छः तरह की है और अलग-अलग ठिकाने पहुँचाने वाली है।

१. शरीर के सुखोपभोग के लिए की गई पूजा।

२. मन और इंद्रियों को शुद्ध करने के लिए की गई प्रार्थना।

३. नियम बद्ध उपासना, संयम पूर्ण जीवन जीते हुए पूजा करना।

इन तीनों प्रकार की उपासनाओं (निमाजों) से बैकुंठ तक पहुँचना हो जाता है परन्तु अविनाशी धाम में जाना नहीं होता है।

४. सत्य ज्ञान के भेद जान कर बंदगी करने वाले अक्षरधाम में जाते हैं।

५. ६. आत्मीय प्रेम से छिप कर बंदगी करने वाले मोमिन में हैं वही परमधाम के वारिस कहे गए। (दे० मारिफत सागर प्र० ४, चौ० ३८।४२)

*नरक—पापी लोगों को मारने के बाद मिलने वाला कष्टों से भरा जीवन। वेद और कतेब ने ऐसे लोगों के लिए भयंकर यातनाएं बताए हैं। (दे० अठाइस कुंड और दोजख)

*नरसैंया—नरसी मेहता। मध्यकालीन युग के एक माने हुए भक्त थे।

इनका जीवन पूर्ण रूप से भगवान को समर्पित था। उनकी कृपा से जो कुछ मिल जाता नरसी उसी में संतुष्ट हो कर अपना सारा समय उनकी आराधना में बिता देते थे। भगवान का मंदिर बनाने के लिए इन्हें कुछ धन की आवश्यकता हुई। संयोग से उसी दिन उनके गाँव में कोई सेठ आए। वे उस गाँव के किसी सेठ के पास कुछ रुपया रखना चाहते थे। वे किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश में थे जो उन्हें किसी दूसरे शहर की हुंडी दे दे। बच्चों ने शरारत से नरसी मेहता के पास भेज दिया। पूछने पर नरसी ने बताया कि मैं सांवलिया सेठ के सिवाय किसी को नहीं जानता। सेठ जी उन्हीं के नाम की हुंडी लेकर चल दिए। श्री कृष्ण ने सांवलिया सेठ बन कर भक्त की लाज रख ली। नरसी मेहता की महामति ने उसके ब्रज लीला के वर्णन के कारण बहुत प्रशंसा की है। श्री देवचन्द्र जी अपने शिष्यों को "नरसैयां" के पद सुनाते थे।

नव अंग—शरीर के नौ द्वार जिनसे भीतर का मल बाहर निकलता है।

*नवधा भक्ति—नौ प्रकार से की जाने वाली भक्ति—श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद सेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य और आत्म निवेदन। इन सब से आगे प्रेम पूर्वक माधुर्य भाव से प्रियतम को रिझाना होता है।

*नवनाथ—नाथ सम्प्रदाय और सिद्ध सम्प्रदाय में नवनाथ आदि ८४ सिद्ध प्रसिद्ध हैं। गोरखनाथ सब से अधिक प्रसिद्धि पा गए।

*नव निधि :—कुबेर की नौ निधियां-पद्म, महापद्म, शंख मकर कच्छप मुकुंद, कुंद, नील और खर्व। साधना के पथ पर अष्ट सिद्धि, नव निधि शीघ्र ही प्राप्त हो जाती परन्तु सच्चा साधक अपने पथ पर इन्हें रुकावट मान कर इनको तुच्छ मानता है। इनकी ओर देखता भी नहीं।

*नवयोगी—पहुचे हुए सिद्ध थे। विदेहराज जनक के दरबार में जाकर उसका बिदेह होने का गर्व दूर करने का वर्णन शास्त्रों में आता है। दे० जनक।

विदेह राज नेमि का यज्ञ में जा कर उसे ज्ञान देने का वर्णन जैन ग्रन्थ में मिलता है।

*नवरंग बाई—परमधाम की नृत्य और संगीत में दक्ष आत्माओं की नायिका। संसार में नवरंग स्वामी श्री मुकुंद दास जी के रूप में इनका अवतरण हुआ। मुकुंद दास जी अच्छे संगीतकार और कवि थे। महामति प्राणनाथ जी के प्रमुख शिष्यों में से थे उन्होंने तारतम मंत्र की सहायता से वेद, शास्त्र और पुराणों

के गूढ़ रहस्य खोले। इनकी वाणी का कई पुस्तकों में संकलन हुआ हैं। इनके प्राप्य पदों की संख्या चौबीस हजार बताई जाती है। मुकुंददास जी महामति के संदेश को जन जन तक पहुँचाने का प्रयास करते रहे। ऐसा करने में इन्हें बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। महामति के अटूट प्रेम के कारण इन्होंने सब कुछ सहन किया। बिहार प्रदेश में विशेष और सारे प्रणामी समाज में इनके पद बड़े प्रेम से गाए जाते हैं।

*नसली—वंशज। बिहारी जी श्री देवचन्द्र जी के नसली पुत्र थे। पिता के समान योग्यता न होने से वे उनके मुक्त ज्ञान को आगे न बढ़ा सके श्री मेहराज ठाकुर को यह गौरव प्रदान हुआ।

*नाजी फिरका :— कतेब के प्रत्येक ग्रन्थ में एक समुदाय को अन्य लोगों से श्रेष्ठ बताया गया है उसे नाजी फिरके का नाम दिया गया है। शेष लोग अपने कर्मों के कारण नारी—नरक गामी कहे गए। महामति ने इन्हें ही मोमिन या ब्रह्म सृष्टि बताया। यह फिरका किसी एक सम्प्रदाय की बपौती नहीं। किसी भी सम्प्रदाय में इनका अवतरण हो सकता है। अपने कर्मों और रहनी से वे लोग अपने आप पहचाने जाते हैं। यही आत्माएँ परमधाम की अधिकारिणी कही गई। शास्त्रों के ब्रह्ममुनि और' गीता के स्थित-प्रज्ञ यही 'नाजी' फिरका हैं।

*नाबूद—अस्तित्वहीन—क्षण भंगुर।

'नाबूद सेती बूद में लिया'। अस्तित्वहीन, नश्वर जीव को अखण्ड कायमी बहिश्तों के सुख मिले क्षण भंगुर संसार में पड़ी ब्रह्मात्माओं को अखण्ड परमधाम ले गए।

*नारद—विष्णु के मन का स्वरूप। उनकी स्तुति में लीन एक चंचल देवता। मनुष्य के मन को भी नारद की उपाधि दी जाती है। (दे० अजाजील)

*नारायण—जिसका घर जल है। (दे० आदि नारायण)

*नारी—नरक गामी। असंयमी—और दुष्ट लोग नरक की अग्नि में जलते हैं।

*नासूत—मृत्यु लोक। यह नश्वर दुनिया।

*निमरूद—इब्राहीम के युग का एक पराक्रमी नास्तिक सम्राट जिसने धार्मिक लोगों को बहुत कष्ट दिए। उसने इब्राहीम को आग में डलवा दिया परन्तु

परमात्मा की कृपा से वे बच गए। निमरूद की लड़की को इब्राहीम पर विश्वास था।

*निरंजन—अक्षर ब्रह्म के स्थूल स्वरूप में काल निरंजन का वास है। इसी से संसार की उत्पति और इसी में लय हो जाता है।

*निराकार निर्गुण—ब्रह्म जिसे कहा जाता है वह विराट पुरुष, क्षर ब्रह्मांड का कारण शरीर है। विराट पुरुष का कार्य शरीर साकार सगुण ब्रह्मांड है और कारण शरीर निराकार। अनेक प्रकाश केन्द्रों को प्रकाश देने पर भी अन्तःकरण में अन्धकार से पूर्ण है। इसका उद्‌गम मोह और नींद से है।

माया जब साम्यावस्था में होती है तो निर्गुण निराकार कही जाती है। इच्छा ज्ञान और क्रिया में प्रकट होने पर सगुण और साकार बन जाती है।

*निष्कलंक अवतार—शास्त्रों में कलियुग के अन्त में विजियाभिनन्द निष्कलंक अवतार के प्रकटीकरण का वृत्तान्त है। उन्हें कल्कि अवतार की संज्ञा भी दी गई है। कल्कि घोड़े को कहा जाता है। उनके विषय में लिखा है कि वे घोड़े पर स्वार होंगे। उनके हाथ में तलवार होगी। वे कलियुग का हनन करेंगे। सब धर्म ग्रन्थों का सार दे कर वे विश्व में एक धर्म की स्थापना करेंगे। धर्म के अन्धविश्वासों और धर्म के नाम पर पाखंड का प्रचार करने वालों पर विजय प्राप्त करेंगे। धर्म ग्रंथों का ज्ञान घोड़ा है। उनके जाहिरी अर्थ (शब्दार्थ) लेना उनका कलंक है। तारतम बानी की तलवार लेकर बुद्ध जी ने धर्म की हकीकत (मर्म) और मारिफत—बातिनी अर्थ समझाया। धर्म के अश्व पर स्वार हुए तो उसका कलंक मिटगया। (वृहदारण्य श्रुति ४५ पद्‌म पुराण श्री मद्‌भागवत)।

सनंध, खुलासा कीर्तन और कियामतनामा में महामति ने वेद और कतेब में संकेतों में बताए समय को स्पष्ट करके सिद्ध कर दिया कि वे ही इमाम मेंहदी और विजियाभिनन्द निष्कलंक अवतार हैं। संसार में एक धर्म की स्थापना के लिए संसार में अब तक प्रकटित सभी पैगम्बरों अवतारों का प्रकटीकरण एक ही 'पुरुष' महामति में हुआ। उन्होंने कर्म उपासना और ज्ञान के तीन पग पर खड़े धर्म रूप अश्व पर स्वार होकर उसका प्रेम रूप चौथा पग धरती पर सीधा खड़ा किया। उसे प्रेम के पंख दे कर अक्षरातीत के धाम की ओर उड़ने योग्य बनाया। पाखंड और अधर्म का नाश कर कलियुग के पांव काट दिए। तारतम ज्ञान की तलवार से उसका हनन किया। साधना पथ की कटुता और कठोरता को प्रेम का

सहज सरल मार्ग बता कर उसे निष्कलंक बनाया। अनेक इष्ट देवों और अज्ञान के कारण द्वेष फैलाने वाले सम्प्रदायों के चक्कर से निकाल कर विश्व को एक 'सत्य सनातन धर्म' 'दीन इसलाम', 'निजानन्द धर्म' दिया। सुर असुर, मुसलिम, काफिर सब के लिए मुक्ति द्वार खोल दिए। इस प्रकार वेद और कतेब ने अन्तिम अवतार से जो अपेक्षा की थी उन सभी कार्यों को पूरा कर दिया। सब धर्मों का सार देने वाली उनकी वाणी ही स्वसम वेद है।

हरिद्वार के पूर्ण कुम्भ के अवसर पर सं० वि० १७३५, में सभी हिन्दू सम्प्रदायों पर सैद्धान्तिक विजय प्राप्त करके विजियाभिनन्द का शाका चलाया। और पन्ना नरेश छत्रसाल के दरबार में एकत्रित मुसलिम सम्प्रदाय के विद्वानों को अपने इमाम मेंहदी होने का प्रमाण दिया। उनका दिया हुआ प्रमाण पत्र (ताम्र पत्र) आज भी पन्ना में सुरक्षित है।

*नूर—सच्चिदानन्द परमात्मा के स्वरूप के तेज का प्रकाश। अक्षर ब्रह्म को नूरजलाल और अक्षरातीत को नूर जमाल या नूर अलानूर कहा है। कस्सुल-अंबिया के अनुसार खुदा ने अपने हुक्म का स्वरूप मुहम्मद को बनाया और फिर उनसे नूर पैदा किया। महामति ने परमात्मा की नूर और हुक्म की शक्तियों का परमधाम में प्रकटीकरण मुहम्मद में माना। मुहम्मद के इसी स्वरूप की महिमा अपनी वाणी में गायन की है।

परमात्मा को नूर जमाल कहा गया उनके अंग से उत्पन्न आत्माएँ ब्रह्म सृष्टि, तेज से उत्पन्न परमधाम नूर तजल्ला और नूर का प्रकाश अक्षर ब्रह्म नूर जलाल कहा गया। इस तरह नूर से ही फिरिश्तों की सृष्टि हुई और फिरिश्तों से समस्त ब्रह्मांड की रचना हुई। यह नूर ही समस्त रचना के मूल में है। संसार की रचना में नूर है, ज्ञान विज्ञान, ब्रह्मज्ञान सब खुदा के नूर, जोश और हुक्म की ही करामात हैं।

*नूर नामा—इसलाम धर्म की एक किताब जिसमें लिखा है कि मुर्ग ने दरिया में गोता लगा कर पर झटके तो बूंदों से एक लाख बीस हजार पैगम्बर पैदा हुए। उनसे अपार सृष्टि की रचना हुई। वह मुर्ग चोंच में खाक लिए बैठा है। सब अन्धकार न हो जाए इसलिए खाक को छोड़ता नहीं।

महामति ने इस प्रसंग का स्पष्टीकरण इस प्रकार किया है—मुहम्मद खुदा का नूर हैं।

उनकी रूह ने हक के मेहर के दरिया में गोता लगाया। उनसे फिरिश्तों की सृष्टि हुई। वही फिरिश्ते संसार की रचना, पालन और संहार करते हैं। संसार उन्हें देवी देवता समझ कर उनकी पूजा करता है।

आत्मा रूपी मुर्ग ने चोंच में खाक पकड़ी अर्थात नरतन धारण किया। परमात्मा और परमधाम इसे दिखाई नहीं पड़ता। नश्वर माया ही सब कुछ प्रतीत होती है। शरीर छोड़ देने से सब खत्म हो जाएगा, कुछ रहेगा नहीं इस विचार से इसे छोड़ता नहीं।

इस कथानक में यह बताने का प्रयास किया गया है कि संसार का जीवन उस अनादि अनन्त जीवन की तुलना में कुछ भी नहीं है। इसका मोह व्यर्थ है।

*निर्गुण—परमात्मा को आकार और गुण से रहित मानना।

*नूर बिलंद—परमधाम।

*नूह—नूह तोफान—महाप्रलय के समय बचा लिए जाने वाले पैगम्बर। खुदा के आदेश से इन्होंने एक किश्ती बना कर अच्छे लोगों के साथ संसार के प्रत्येक जीव, पशु पक्षी के जोड़े और बनस्पति के बीज को बचा लिया। शास्त्रों में इसी कथानक को मनु की कथा के रूप में लिखा गया है।

नूह के तीन बेटे कहे गए। शाम, हाम और यापिस। इन्हीं से समस्त सृष्टि रचना हुई ऐसा माना जाता है। "खुलासा दोनामा"

*नौतनपुरी—आजकल इसे जामनगर कहा जाता है। यहीं श्री देवचन्द्र जी को साक्षात्कार हुआ। तारत्तम वाणी का अवतार और महामति प्राणनाथ (श्री मेहराज ठाकुर) का जन्म हुआ (दे० बीतक श्री लालदास)

'प'

पच्चीस—सांख्य शास्त्र के अनुसार आत्मा और चौबीस तत्व ही सृष्टि रचना के कारण हैं। चौबीस तत्वों में पंच महाभूत—पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश।

पंच तन्मात्राएँ—गन्ध, रूप, रस, स्पर्श और शब्द।

दश इन्द्रियां—हाथ, पांव, मुख, उपस्थ, वायु यह पांच कर्मेन्द्रिय हैं। नासिका, चक्षु, कान, त्वचा और रसना यह पांच ज्ञानेन्द्रिय हैं।

इनके अतिरिक्त चार अन्तःकरण—मन, चित्त, बुद्धि और अहंकार हैं।

कहीं-कहीं दश इन्द्रियां उनके दश देवता और चार अन्तःकरण, इनको चौबीस और पच्चीसवीं आत्मा इस प्रकार भी पच्चीस तत्व कहे गए हैं।

महामति ने इन्हें ही पच्चीस कह कर 'पांच पच्चीस हुए उल्टे' संसार के जीवों के, और 'पांच पच्चीसों इनके पाक' ब्रह्म सृष्टि के कहे हैं।

संसार में लगे, उल्टे हुए, पांच तत्व और पच्चीस अंगों को सीधे परमात्मा में लगाने का उपाय तारत्तम वाणी बताती है।

*पच्चीस पक्ष—परमधाम के पच्चीस खंड जिनमें ब्रह्मात्माएँ सदा विचरण करती हैं और अखंड आनन्द प्राप्त करती हैं। संसार में रह कर भी चिंतन द्वारा वे आनन्द प्राप्त होते हैं। नश्वर का मोह छुड़ा कर अविनाशी का आकर्षण देने के लिए महामति ने असीम को सीमा में बांधकर शब्दातीत का शब्दों में वर्णन किया है।

परमधाम के पच्चीस पक्ष यह हैं—अक्षर धाम, रंग महल, पुखराजी पहाड़—यमुना सातों घाट सहित, हौज कौसर ताल, तीन विशाल बन, फूलबाग, नूरबाग, दूब दुलीचा पश्चिम की चौगान आदि, चौबीस हांस का महल, मानिक पहाड़, ज्वाहिरों के महल और नहरें, चार हार हवेली, आठ सागर और उनके बीच आठ महान भूमि खंड। इन सब का विस्तृत हृदय-ग्राही वर्णन परिक्रमा किताब तथा लालदास महाराज, और युगलदास जी की विरत (परमधाम वर्णन) में दिया गया है। पढ़ने मात्र से एक अलौकिक आनन्द मिलता है। मन सीमित के घेरे से निकल कर असीम का अनुभव करने लगता है। सांसारिक एश्वर्य तुच्छ और फीके लगने लगते हैं। आत्मा परमधाम की जियारत-परिक्रमा के लिए लालायित हो उठती है।

*पच्चीस पक्ष यह है—रंग महल, हौज कौसर, कुंज निकुंज बन, ज्वाहिरों की नहरें मनिक पहाड़, पश्चिम की चौगान, महान बन, पुखराज, जमुना, आठ सागर और आठ जिमी (महान भूमि खंड)।

*परदा—बाईबल में लिखा है कि जब आखिरी जमाने के खाविंद आएंगे तो वे किसी को दिखाई नहीं देंगे। वे आसमान से राज्य करेंगे। उनका प्रताप धरती पर फैलेगा। कुरान में भी लिखा है कि इमाम मेहदी को कोई पहचान न पाएगा। उनके रूए (मुंह) पर पर्दा रहेगा।

महामति प्राणनाथ जी कहते हैं कि आखिरी पैगम्बर के मुंह पर पर्दा यही है कि वे अपने साधारण मानव वेश के कारण पहचाने नहीं गए। फिर ईसाई और मुसलमान लोग यह समझते हैं कि इमाम मेहदी उनके सम्प्रदाय में आएंगे। हमेशा पीड़ित जातियों में ही परमात्मा की शक्तियाँ अवतरित होती हैं इस नियम के अनुसार अन्तिम अवतार उस युग में पीड़ित हिन्दु सम्प्रदाय में ही अवतरित हुए। परन्तु उनका ज्ञान सार्वभौम है। समस्त ब्रह्मांड को मोक्ष देने का दावा करता है। सभी मतावलम्बियों की कमियों की ओर संकेत करके उन्होंने उन्हें दूर करने का उपाय बताया है। तो भी कुछेक मुसलिम लोगों के सिवा अन्य मुसलिम वर्ग के लोगों ने उनके ज्ञान को मानने से इन्कार कर दिया। हिन्दु लोगों ने उन्हें पूरा सम्मान देते हुए उनकी धर्म समन्वयात्मक नीति को अपनाया। मुसलिम और ईसाई लोगों के लिए वे पर्दे में ही रह गए।

"पर्दा लिख्या हजरत के रूए पर, सो वास्ते आवने हिन्दुओं माहें।
जाहिर परस्त जो आरब, सो इसारत समझे नाहें।" 'महामति।'

*परमहंस :—ब्रह्मात्माएं जीवन्मुक्त। गीता के तत्व दर्शी और स्थित प्रज्ञ।

*परसराम :—परशुराम :—जमदाग्नि ऋषि के पुत्र अवतार कोटि के ऋषि थे। कुछ क्रोधी स्वभाव के थे। हाथ में सदा परशु नाम का अस्त्र रखने के कारण परशुराम कहलाए। इन्होंने संसार को हैयय वंश के क्षत्रियों से रहित कर देने की सौगन्ध खाई थी। सीता स्वयंवर के समय शिव जी का धनुष टूट जाने से कुपित हुए। श्री राम की परीक्षा लेने दौड़े आए। श्री राम के शील सौजन्य से प्रभावित हो कर लौट गए। ऐसा कहा जाता है कि परशुराम जी ने अपनी मृत्यु को तो जीत लिया है परन्तु अभीतक मोक्ष प्राप्त नहीं कर पाए। आजकल भी वे तपस्या करते हैं। महामति ने इनका उल्लेख, 'पुराने कीर्तनों' में महेश्वरी जैन संतों को उपदेश देते हुए किया है। उन्होंने उन्हें यह समझाने का प्रयास किया है कि शरीर को कष्ट देने से मुक्ति नहीं मिलती। संसार की असारता को समझ कर विवेक पूर्ण जीवन जीते हुए सहज में मुक्ति मिल जाती है। इतने बड़े अवतारी पुरुष परसराम जी को तपस्या करते युग बीत गए परन्तु अब तक उनके कर्मों के बन्धन नहीं छूटे। आप लोग व्यर्थ में अपने शरीर को कष्ट दे कर आत्म हत्या के भागी बन रहे हो अपनी आत्माकी पहचान होते ही इस तुच्छ माया से मुक्त हो सकते हो। देखो: 'कीर्तन' पुराने। ( पौराणिक )

*प्राणनाथ :—प्राणों के नाथ स्वामी अक्षरातीत परमात्मा, ब्रह्मात्माओं के प्राणनाथ हैं । श्री देवचन्द्र जीने उन्हें प्राणनाथ कहा । परमात्मा का प्रकटी करण श्री देवचन्द्र जी में मान कर महामति ने उन्हें प्राणनाथ कहा । मेहराज ठाकुर ही प्राणनाथ हैं । ऐसा मान कर सुन्दर साथ उन्हें प्राणनाथ कह कर सम्बोधन करते थे । उनका अपना नाम उनकी आत्मा का नाम और अस्तित्व प्राणनाथ में विलीन हो गया । परमात्मा की बुद्धि और आवेश पाकर मेहराज महामति प्राणनाथ हो गए । तारत्तम वाणी महामति प्राणनाथ प्रणीत है । ऐसा वाणी में स्थान-स्थान पर संकेत है । प्राणनाथ शब्द में परमात्मा श्री देवचन्द्र और मेहराज सब का समावेश है ।

*परीक्षत :—अर्जुन के पौत्र और अभिमन्यु के पुत्र थे । वे पराक्रमी और ईश्वर भक्त राजा थे । कलियुग के प्रभाव में आकर इन्होंने एक ऋषि के गले में मरा हुआ सांप डाल दिया । ऋषि के पुत्र ने शाप दिया कि सातवें दिन तक्षक के काटने से आपकी मृत्यु हो जाएगी । श्री शुकदेव जी से श्री मद्‌भागवत की कथा एक सप्ताह में सुन कर इन्होने प्राण त्याग दिए संसार का मोह और मृत्यु का भय छूट जाने से बैकुंठ लोक में गए इन्हीं के राज्य में कलियुग का प्रारम्भ माना जाता है । कलियुग ने इनके राज्य में प्रवेश किया तो इन्होंने उसे अपने पराक्रम से खदेड़ देना चाहा । उसके अनुनय विनय करने पर उसे पांच वस्तुओं में रहने की आज्ञा दी :— सोना, चोरी का धन, जुआ, मदिरा और वैश्या का घर । सोने का मुकुट पहने हुए थे इसलिए क्रोध में आकर कलियुग के चंगुल में फंस गए और अपराध कर बैठे । वास्तव में पुराणों में ऐसी ही सुन्दर कहानियों द्वारा मनुष्य को बुरी बातों और बुरी वस्तुओं से बचने की प्रेरणा दी गई है ।

*पांच तत्व :—आकाश, अग्नि, वायु, जल और पृथ्वी । इन्ही पंच भूतों से सृष्टि रचना हुई ।

*पांच नहरें :—हदीस में जिक्र है कि आसमान से कियामत के समय नहरें उतरेंगी जो संसार को हरा भरा कर देंगी । महामति ने कहा कि संसार में अतृप्त, अशान्त आत्माओं को तृप्त करने के लिए परमात्मा की पांच शक्तियों का अवतरण हुआ । बुद्धि, नूर, जोश हुकम और इश्क । संसार में इनका अवतरण बृज और रास के स्वरूप श्री कृष्ण, मुहम्मद साहिब, श्री देवन्द्रजी और प्राणनाथ जी में हुआ तारत्तम वाणी रूपी अमृत बहने से संसार की प्रेम विहीन बंजर धरती

हरीं भरी हो उठी। यही संसार को मुक्ति देने वाले स्वरूप हैं। यह पाँच नदियाँ महामति में मिल गई।

*पुंनू—पंजाबी लोक कथा के नायक। ससी के प्रेमी।

*पुराण—प्राचीन वृतान्त। सृष्टि, लय, मनवन्तरों तथा ऋषि मुनियों और राजाओं के वंशों और चरित्रों के वर्णन से युक्त हिन्दु धर्म ग्रंथ। संख्या में अठारह हैं। अन्तिम पुराण श्रीमद्भागवत को महामति ने सभी पुराणों का सार माना और तारतम वाणी के प्रमाण और पुष्टि रूप में स्वीकार किया। श्रीमद्-भागवत की रास लीला का ब्योरे से वर्णन करते हुए ही 'वाणी' का प्रारम्भ हुआ है। श्री रास आत्मा और परमात्मा के आनन्द की लीला है। धर्म शास्त्रों का लक्ष्य आत्मा को उसी आनन्द तक पहुँचा देना है।

*पुरुषोत्तम—उत्तमपुरुष अक्षरातीत परमात्मा। गीता में श्री कृष्ण ने अक्षर ब्रह्म से आगे सर्वोपरि सत्ता का उल्लेख किया है। उसी को पुरुषोतम कहा। उसी पुरुषोत्तम 'कृष्ण' के स्वरूप, लीला और धाम का वर्णन तारतम वाणी में है।

*पुलसरात—पुलेसिरात—कुरान में कहा है कि पुलेसिरात वह पुल है जो आखिरत में संसार और अर्श के बीच (नरक को पार करने के लिए) कायम होगा। मोमिन उस पर बिजली की नाई उड़कर पार हो जाएंगे। संयमी धार्मिक लोग घोड़े की चाल चलकर पार हो जाएंगे। दुराचारी लोग उसकी तलवार के समान तेज और सूई की नोक की तरह पतली धार पर कट कर नरकों की आग में गिर जाएंगे।

पुलसिरात वास्तव में कठिन धर्म मार्ग है। जिस पर चलने के लिए बड़े साहस की आवश्यकता है। तारतम वाणी के पुराने कीर्तनों में बैकुंठ की राह का कुछ ऐसा ही वर्णन है।

*पूतना—राजा कंस द्वारा श्री कृष्ण का वध करने के लिए भेजी गई एक राक्षसी जो सुन्दर स्त्री का वेश धारण करके, अपने स्तनो में विष लगा कर श्री कृष्ण के प्राण लेने के लिए आई थी। श्री कृष्ण ने दूध के साथ उसके प्राणों को भी पी लिया। श्री कृष्ण के द्वारा स्तन पान किए जाने के कारण उसे मुक्ति मिली। पूतना पिछले जन्म में राजा बलि की कन्या थी। किसी शाप के कारण उसे राक्षस योनि मिली। श्री कृष्ण ने किसी कारण प्रसन्न हो कर उसको वरदान देना

चाहा तो उसने उनके जैसा पुत्र मांगा। श्री कृष्ण ने उसे मार कर राक्षस योनि से मुक्त किया और स्तन पानकर माता की गति प्रदान की।

*पैगम्बर—मानव को खुदा का पैगाम, (संदेश), ज्ञान देकर धर्म मार्ग पर चलाने वाला व्यक्ति। पैगम्बरों की संख्या बहुत बड़ी है। हर युग और हर देश में पैगम्बर होते हैं। कुरान में सात पैगम्बरों को बड़ा माना है। उन्हें कलिमा वाले पैगम्बर माना है। महामति ने भी तारतम वाणी में उनका उल्लेख किया है और कहीं-कहीं उनके ज्ञान की चर्चा की है। वे सात पैगम्बर : इब्राहीम, यैहिया, दाउद, सुलेमान, मूसा, ईसा और मुहम्मद हैं। इन्हें कलिमा वाले पैगम्बर इसलिए कहा गया है क्योंकि इन्होंने एक ही खुदा को नमन करने का आदेश दिया। अक्षरातीत परमात्मा के सिवा किसी की सत्ता को स्वीकार नहीं किया। महामति के अन्दर एकेश्वरवाद की दृढ़ता से स्थापना के लिए इन सबका फिर से प्रकटीकरण हुआ। अक्षरातीत परमात्मा का नाम ही वह कलिमा है जिसका महामति ने प्रचार किया।

*पैदाइश—सृष्टि रचना, उत्पत्ति। कुरान के अनुसार खुदा ने 'कुंन' ('हो जा') कहा और सृष्टि की रचना हो गई। बाईबल में कहा है कि परमात्मा ने छः दिन में सृष्टि को बनाया और सातवें दिन विश्राम किया। शास्त्रों के अनुसार परमात्मा की माया मूल प्रकृति ने सृष्टि रचना की। मानव के बनाने और सृष्टि में उसके अवतरण के विषय में भी थोड़ा बहुत अन्तर है। वास्तव में प्रत्येक मत 'रचना' के किसी एक पहलू पर विचार करता है। महामति ने सब बातों को किसी न किसी रूप में अपना कर उनका स्पष्टीकरण किया है। ध्वनि की गूंज का सृष्टि रचना में पर्याप्त हाथ है। इसे विज्ञान ने भी स्वीकार किया है। परमात्मा का सत्य अंग अक्षर ब्रह्म अपने चिन्तन से ही अनेकों ब्रह्मांड बना कर मिटा देते हैं। 'कुन' कहने से ब्रह्मांड का बन जाना कोई बड़ी बात नहीं। परमात्मा की माया ही इस ब्रह्मांड के देवो देवताओं को बनाती है और फिर उनके द्वारा सृष्टि रचना करती है।

'विष्णु ब्रह्मा रुद्र जनमे, हुई तीनों की नार।'............
'पुरुष अंग छुह्यो नहीं, पर जायो सब ब्रह्मांड॥'............

*माया से मोह अहंकार, इनसे तीन गुण, पांच तत्व और इन सब से

सृष्टि की रचना हुई महामति ने इस बात को स्वीकार किया है। वैसे माया एक तिलसम, इन्द्रजाल से अधिक कुछ नहीं है। संसार भी पल-पल बदलता हुआ कोई विशेष अस्तित्व या सत्ता नहीं रखता है। इस तिलसम या खेल को रचयिता ने किसके लिए क्यों खड़ा किया इस रहस्य को सुलझाते हुए स्वामी जी ने बाईबल के सात दिन का रहस्य खोला है। ब्रह्म सृष्टि (ब्रह्मात्माएं) ब्रह्मानन्द में निमग्न थीं। उनके आनन्द में रस बढ़ाने के लिए, कुछ नवीनता लाने के लिए सृष्टि रचना हुई। ब्रह्म आत्माओं का अवतरण और परमधाम में लौट जाना सात दिन में पूरा हुआ। प्रथम दिवस ब्रह्मात्माएं गोपिकाओं के रूप में बृज भूमि में अवतरित हुईं। दूसरे दिन रास मंडल में आनन्द लीला की। तीसरे दिन मुहम्मद साहिब ने पैगाम दिया। चौथे दिन रूहें श्री देवचन्द्र जी के साथ जागनी के ब्रह्मांड में उतरीं। पांचवें दिन इमाम मेंहदी ने रूहों को इकट्ठा किया। छठे दिन मोमिन जमा हुए और फज्र-आत्मा जागनी-की लीला हुई। सातवें दिन खेल देख कर घर लौटने पर सबने बिश्राम-आनन्द पाया। (मारिफत प्र० १३, छः दिन की पैदाइश)

*पैदाइश पांच तरह की—कुरान में पांच तरह की उत्पत्ति बताई गई है परन्तु बड़े-बड़े विद्वानों को पूछने पर भी वे बता नहीं पाते कि इसका रहस्य क्या है। महामति ने बताया कि ब्रह्मात्माओं की सृष्टि खुदा के अंग से। ईश्वरीय सृष्टि (फिरिश्ते) उनके नूर से पैदा हुए। संसार के मानव भी तीन तरह के हैं। जिन जीवों पर ब्रह्मात्माएँ उतरीं उन्हें दो हाथ से, जिनमें फिरिश्ते आए वे एक हाथ से और साधारण जीव 'कुन' 'होजा' कह देने से पैदा हो गए। संसार में विविधता लाने के लिए ही इतने प्रकार से सृष्टि को बनाया गया। अपने गुण और कर्मों को देख कर प्रत्येक व्यक्ति अनुमान लगा सकता है कि उसकी रचना कैसे हुई है। बिना लक्ष्य के जीवन बिताने वाले कलियुग और दज्जाल के गुलाम 'कुन' की सृष्टि है। संयमी लोग एक हाथ की और परमात्मा से ही प्रेम करने वाले लोग दो हाथ से बनाए गए।

*प्रह्लाद—आसुरी स्वभाव वाले अत्याचारी और अहंकारी राजा हिरण्य-कश्यप के पुत्र थे। पिता की पूजा छोड़ कर भगवान विष्णु की उपासना करने के कारण पिता के कोप के भाजन बने। हिरण्यकश्यप ने पुत्र को असहनीय कष्ट दिए। अन्त में भगवान ने नृसिंह अवतार धारण करके आततायी का वध किया।

प्रह्लाद एक भक्त, वीर और कर्मठ राजा थे। उन्होंने बहुत वर्षों तक न्याय पूर्वक राज्य किया।

'फ'

*फजर—फज्र—सुबह, ऊषाकाल।

अज्ञान की रात्रि के बाद सत्यज्ञान का प्रातःकाल।

कुरान में लैलतुलकद्र की रात के बाद सुबह का आना लिखा है। कुरान सूरा अल फज्र में दस रातों के बाद लैलतुलकद्र की रात लिखी है। उसके बाद सुबह का आना कहा है। एक रात सौ साल की होती है। मुहम्मद साहिब के नौ सौ नब्बे वर्ष बाद (दसवीं सदी) लैलतुलकदरि की रात एक सौ साल तक रही। इसमें ब्रह्म, ब्रह्मसृष्टि और ब्रह्मज्ञान अवतरित हुआ। ग्यारहवीं सदी तक रात रही। बारहवीं सदी में फज्र हुई। आत्माएं जाग्रत हुई और परमात्मा को एक साथ प्रेम पूर्वक नमन, करने (सिज्दा में) झुक गईं। अन्ध विश्वासों और कुरीतियों को ही धर्म मानने वालों ने ज्ञान का प्रकाश देख कर अपनी आत्मा को जगाया।

*फरदा रोज—फर्दाए कियामत। कल का रोज। मुहम्मद साहिब से किसी ने पूछा कियामत कब होगी उन्होंने फर्दा रोज अर्थात् कल कहा। दुनिया का हजार साल रब का एक दिन। हजार महीने की लैलतुल कदरि की रात के बाद फज्र। महामति के अनुसार फर्दा रोज बारहवीं शताब्दी हि० के पहले तीस वर्ष हैं। जब तारत्तम ज्ञान (मारिफत ज्ञान सूर्य) का प्रकाश अच्छी तरह संसार ने देखा इसी को तारत्तम वाणी में जागनी लीला का नाम दिया गया।

*फिरस्ता—फिरिश्ते—देवता लोग। अक्षर ब्रह्म की शक्तियां जो सृष्टि रचना, पालन और संहार का कार्य करती हैं।

अक्षर ब्रह्म की ईश्वरीय सृष्टि के लिए कतेब में फिरिश्ता और वेद (शास्त्रों) में कुमारिका शब्द का प्रयोग हुआ है।

*फुरमान—फर्मान—आदेश। परमात्मा के आदेश से कहे वचन।

महामति प्राणनाथ ने कुरान और भागवत दोनों को फर्मान कहा है।

*फूलबाई—महामति प्राणनाथ—मेहराज ठाकुर की धर्म पत्नी। बड़ी पतिव्रता और साध्वी स्त्री थीं। पति की साधना में हर प्रकार की सहायता और

बलिदान के लिए सदा तत्पर रहीं। बिहारी जी श्री देवचन्द्र जी की गादी पर बैठे। उनमें पिता की सी योग्यता नहीं थी। संकीर्ण भावनाओं वाले क्रोधी व्यक्ति थे। किसी व्यक्ति को निर्दोष उन्होंने समाज से निकाल दिया। वह व्यक्ति मेहराज ठाकुर की शरण में आया। उनकी अनुपस्थिति में फूलवति ने उन्हें आश्रय दिया और फिर से 'सुन्दरसाथ' में प्रवेश दिलाने का वादा किया। बिहारी जी उन पर भी कुपित हुए। मेहराज ठाकुर को आदेश मिला कि या तो अपनी पत्नी को त्याग दो या आप भी समाज छोड़ दो। अपने सद्गुरु और सुन्दरसाथ के प्रेम के कारण मेहराज ठाकुर घर छोड़ देने पर विवश हुए। फूलवती ने उनके विरह में प्राण त्याग दिए। कुछ वर्ष बाद मेहराज ठाकुर को बिहारी जी का साथ छोड़ना पड़ा। वे उनकी संकीर्ण भावनाओं के साथ चल न सके।

कहा जाता है कि फूलबाई की आत्मा ही दूसरे शरीर में तेज कुंवरि के रूप में प्राणनाथ की दूसरी पत्नी बनी। उन्होंने स्वयं स्वामी जी को अपना परिचय दे कर उनका वरण किया। स्वामी जी उनको अस्वीकार न कर सके। जीवन भर वे स्वामी जी के साथ रहीं।

'ब'

*बंझा पूत, सींग ससक—बांझ के पुत्र और खरगोश के सींग की तरह जिसका अस्तित्व नहीं है अर्थात् माया। 'ए सब सींग शशक, बंझा पूत वैराट।'

इस अस्तित्व हीन माया ने महान शक्तिशाली आत्माओं को वशीभूत कर लिया।

*बज्रलेप—प्राचीनकाल में दिया जाने वाला एक दण्ड जिसमें जीवित मनुष्य की पीठ को छीलकर मुर्दा चिपका दिया जाता था। व्यक्ति सड़कर मृत्यु को प्राप्त हो जाता था। महामति ने चेतन आत्मा के साथ माया और जड़ शरीर का लगा होना बज्रलेप माना है। बज्रलेप न उतरने वाले पलास्तर को भी कहते हैं।

*बरण अठारह—(दे० अठारह वर्ण)

*ब्रह्म सृष्टि :—अक्षरातीत परमात्मा के आनन्द अंग श्यामा की अंगी आत्माएँ जो अपनी कलाओं से श्री 'राज श्यामा' को रिझाती हैं। अक्षर ब्रह्म का दुःख सुखमय विश्व देखने के लिए संसार में तीन बार इनका अवतरण हुआ। बकर में इन्हें ही 'मोमिन' और 'नाजी फिरका' कहा गया।

*बलभद्र :—बलराम, श्री कृष्ण के बड़े भाई। वसुदेव और रोहिनी के पुत्र थे। इन्हें शेषनारायण भगवान का अवतार माना जाता है। इन्हीं नारायण की आत्मा व्यास जी में अवतरित हुई उन्होंने संसार को बहुमूल्य ग्रन्थों का संकलन दिया। दे० वेद व्यास। अपने कंधे पर 'हल' रखने के कारण बलभद्र हलधर कहलाए। महाभारत के युद्ध में इन्होंने किसी ओर से भी न लड़ने का फैसला किया था। तो भी इस बात का इन्हें ध्यान रहा कि युद्ध में अन्याय नहीं होना चाहिये। महामति ने अपने खुलासा ग्रन्थ में इनका गीता भागवत ज्ञान के रचयिता व्यास जी की आत्मा के रूप में उल्लेख किया है। 'खुलासा, दोनामा।'

*बल्लभाचार्य (दे० वल्लभाचार्य)

*बलि :—महान दानी राजा। अपने त्याग और दान के कारण देवताओं की ईर्ष्या के पात्र बन गए। इन्द्र के कहने पर विष्णु भगवान 'बौने' का रूप धारण करके इनकी परीक्षा के लिए चले आए। उन्होंने बलि से तीन पग पृथ्वी मांगी। बलि के राजगुरु ने उन्हें पहचान कर बलि को सावधान किया परन्तु बलि वचन देकर पीछे न हटे। विष्णु भगवान ने विराट् स्वरूप से दो पग में पाताल से देवलोक तक सब को नाप लिया तीसरे पग के लिए बलि ने अपना सिर आगे कर दिया। वामन अवतार ने पांव के बोझ से उन्हें पाताल भेज दिया। वे वहीं राज्य करने लगे। भगवान के चरण छू लेने से इनकी कीर्ति अमर हो गई।

बलि का नाम महामति ने महान राजाओं में गिना है जिन्होंने बड़े कष्ट सहन करके महान पद और आराध्य देव का अनुग्रह प्राप्त किया।

*बसरी :—मुहम्मद साहिब को महामति ने खुदाई हुक्म की बसरी 'मानवी' सूरत माना। अरब देश में, अपने दुर्गुणों के कारण, पशु बने मानवों को अच्छे इन्सान बनने की शराअ (कर्मकांड) दिया। अनेकेश्वर और देवताओं की पूजा छुड़ा कर एक परमात्मा को नमन करना सिखाया।

वशिष्ठ—(दे० वशिष्ठ)

*बहरूल हैवान :—पशुवृति के लोगों का समुद्र। मुहम्मद साहिब से पहले अरब देश के लोगों के लिए यह शब्द प्रयुक्त हुआ।

*बहिश्त :—अखंड मुक्ति धाम। इनमें मुमुक्ष जीव अखंड आनन्द प्राप्त करते हैं।

बहिश्तें चार अनादि काल से थीं। चार बहिश्तें जागनी लीला के बाद बनाई गई।

१. बिहिश्त मल्कूती—फिरिश्तों की है। इसे ही बैकुंठ धाम कहा गया।

२. बृज लीला की बहिश्त। हूद पैगम्बर की बहिश्त यही है।

३. रास लीला की बहिश्त नूह पैगम्बर की बहिश्त कही गई।

४. अवतारों की बहिश्त। पंच वासनाएं यहीं हैं।

५. उन जीवों के लिए बनाई गई जिनमें ब्रह्म सृष्टि अवतरित हुई।

६. उन जीवों के लिए बनी जिनमें ईश्वरीय सृष्टि आई।

७. पैगम्बरों की बहिश्त।

८. अन्य जाग्रत जीवों के लिए बनाई गई बहिश्त।

जो लोग इनमें जाने योग्य कर्म न कर पाएंगें उन्हें नरक की अग्नि में जलना पड़ेगा। ऐसा वेद और कतेब का मत है।

*बिजियाभिनन्द :—विजियाभिनन्द :—कलियुग के अन्तिम चरण में हुए अवतार महामति प्राणनाथ जी। दे० 'निष्कलंक'।

*बिने :—मुसलिम धर्म के पांच मूल नियम। शरीयती मुसलमान यथा-शक्ति इनका पालन करते हैं।

१. निमाज : पांच बार दिन में खुदा के सामने नमन करना और दुआ मांगना।

२. रोजा : वर्ष में एक माह व्रत उपवास करके गरीबों को भोजन खिलाना।

३. जकात : धर्म की राह पर अपनी आय का चालीसवां भाग दान देना।

४. हज्ज : । जीवन में एक बार पवित्र स्थान मक्का की यात्रा पर अवश्य जाना।

५. जियारत : दरगाहों और धर्म स्थानों के दर्शन और परिक्रमा-भ्रमण करना।

महामति ने इन पांच नियमों का आध्यात्मिक महत्व बताया है। इनको नियम मान कर कर्ज के रूप में निबाहने में कोई विशेषता नहीं। मनुष्य को अपनी आत्मिक उन्नति के लिए उन्हें प्रेम पूर्वक सहज में ही करना चाहिये। दिन रात

प्रभु का प्रेम से मन में स्मरण हो, कम खाकर, परिग्रह न करके अपना सब कुछ दूसरों की सेवा में लगाया जाए, मन गुण अंग इन्द्रियों को शुद्ध और वश में रख कर जीवन व्यतीत किया जाए तो मन ही मन्दिर और ऐसा मनुष्य जहां भी हो वह जगह तीर्थ बन जाती है। ऐसे मनुष्य का जीवन ही जियारत हो जाता है। जीवन परमात्मा का हो जाता है तो नियम पालन करने के लिए परिश्रम नहीं करना पड़ता। जीवन सहज ही शुभ की ओर प्रेरित हो जाता है।

जाहिरी शराअ से शरीर और मन पवित्र करके बातिनी शराअ से परमधाम की हज्ज और जियारत करना ही मानव जीवन का लक्ष्य होना चाहिये। साधारण लोगों की शराअ शरीर से, फिरिश्तों की मन से और मोमिनों की आत्मा से होती है।

*बिहारी जी :—श्री प्राणनाथ के सद्गुरु श्री देवचन्द्र जी के पुत्र थे। इन्हें परमधाम की रत्न बाई की आत्मा माना जाता है। श्री देवचन्द्र जी के बाद इन्हें ही गादी पर बैठाया गया। इनके संकुचित विचारों के कारण साथियों की संख्या कम होने लगी। प्राणनाथ जी भी अधिक समय तक इनका साथ निभा न सके। उन्होंने खुले दिल से श्री देवचन्द्र जी का कार्य भार अपने सिर लिया और सदगुरु द्वारा सौंपे कार्य को किया।

*बुर्ज :—आकाश में नक्षत्र हैं जिनकी संख्या बारह बताई जाती है। बुर्ज का मूल अर्थ प्रदर्शन या प्रकट होना है। सूरा अल बुरुज में मुहम्मद साहिब ने बारह बुर्ज की कसम खा कर बारहवीं सदी में कियामत के प्रकटीकरण की ओर संकेत किया है ऐसा महामति ने अपने कियामत नामा के अन्तिम प्रकरण में उल्लेख किया है।

*बुर्राक :—वह आसमानी घोड़ा जिस पर सवार होकर मुहम्मद साहिब ने अर्श-परमधाम की सैर की। कलियुग के अन्त में श्वेत अश्व पर सवार हो कर कल्कि अवतार कलियुग का हनन करेंगे ऐसा वर्णन शास्त्रों में आया है। बुर्राक का अर्थ श्वेत या शुभ्र भी होता है। श्वेत अश्व से अभिप्राय निष्कलंक धर्ममय जीवन भी लिया जा सकता है। ऐसे जीवन में ही परमात्मा और परमधाम का दर्शन संभव है।

*बेत अल्लाह—बैतुल्लाह :—खुदा का घर। शरीयती मुसलमान मक्का में काबा को बैतुल्लाह मानते हैं और उसी की ओर मुँह करके सिज्दा करते हैं।

महामति ने बैत अल्लाह अर्श परमधाम को ही बताया है। हर समय उसको याद रखना ही, उसे अपना मूल और अपनी मंजिल मानना ही उसकी ओर मुँह करके सिज्दा करना है। उसकी ओर पीठ न हो अर्थात् वह कभी ध्यान से दूर न हो यही उपासना का ध्येय है।

*बेचून बेचूं :—अनुपम। कोई उपमा न दे पाने के कारण परमात्मा को निर्गुण निराकार कह दिया जाता है। स्वामी जी ने इस धारणा का खंडन किया है। बेचूं-बेचगूं बेशब्बीह, बे निमून परमात्मा की अद्वितीय सत्ता की घोषणा करते हैं इन्हें ब्रह्म के निराकार होने का प्रमाण मानना भूल है।

बैकुंठ :—नारायण और लक्ष्मी का निवास स्थान। धर्ममय जीवन व्यतीत करने वालों को उनके धाम में मुक्ति मिलती है।

बोहना सलेमान :—पैगम्बर दाउद के पुत्र। बड़े ही न्यायकारी और कुशल शासक थे। पशु पक्षियों की भाषा भी समझते थे। इनके जैसा सम्राट् इनके वंश में फिर नहीं हुआ।

'भ'

भभीखण—विभीषण। लंका के राजा रावण के छोटे भाई विभीषण श्री राम के भक्त थे। रावण को उन्होंने सीता जी को लौटा देने की सलाह देने पर लात खाई। श्रीराम जब सीता को लौटाने के लिए रावण से युद्ध कर रहे थे तो यह श्रीराम से आ मिले। नीति वश श्रीराम ने पूछा कि "मैं आपका विश्वास कैसे करूँ ?" विभीषण ने कहा कि 'मैं कपट करूँ तो कलियुग में ब्राह्मण बनूं।" श्रीराम ने रोका-इतनी कठिन सौगन्ध मत खाओ। रावण की मृत्यु पर विभीषण ही लंका के राजा बना दिए गए। वे बड़े सत्यनिष्ठ राजा थे।

*भागवत :—श्री मद्भागवत। नारद मुनि की प्रेरणा से व्यास जी ने इस ग्रन्थ की रचना की। वेद शास्त्र और अनेक धर्म ग्रन्थों का विन्यास कर लेने पर भी व्यास जी का मन अशान्त रहा। अन्त में श्री कृष्ण की लीलाओं का वर्णन करके उनका मन आनन्दित हुआ। श्री मद्भागवत में श्री कृष्ण की बृज और रास लीला का इतना मधुर वर्णन है कि शुष्क नीरस हृदय भी रसिक बन जाता है। जीवन में माधुर्य आ जाता है। श्री शुकदेव मुनि श्री मद्भागवत के साथ एकाकार हो गए। उन्होंने इसकी साप्ताहिक कथाओं द्वारा श्री कृष्ण भक्ति का प्रचार

देश के कोने-कोने में किया । राजा परीक्षत भी श्री मद्‌भागवत का साप्ताहिक पारायण सुन कर बैकुंठ लोक को गए ।

श्री मद्‌भागवत में सभी हिन्दू धर्म ग्रन्थों का सार सरल मधुर ऐतिहासिक कहानियों के रूप में दिया गया है ।

महामति प्राणनाथ ने श्री मद्‌भागवत को तारतम वाणी के प्रमाण के रूप में स्वीकार किया है । हिन्दू लोगों को अपनी पहचान और धर्म की सही दिशा दिखाने के लिए इसी धर्मग्रन्थ में से प्रमाण दिये । उनके प्रमुख शिष्य श्री मुकुंद दास जी ने औरंगाबाद में राना भावसिंह हाड़ा के राज पुरोहितों को श्री मद्‌-भागवत में से चालीस प्रश्न दे कर उनके धर्म ज्ञान के नकली खोल को दूर किया । महामति प्राणनाथ ने श्री मद्‌भागवत से उन प्रश्नों का हल दिया जिन्हें उनसे पहले कोई बता न सका । कई कथानकों और सांकेतिक शब्दों का गुह्य और अभिप्रेत अर्थ बताया । कतेब और पुराणों के कथानकों और धर्म सिद्धान्तों में समानता दिखा कर 'धर्म एक है', भाषा भेद के कारण अनेक दिखाई पड़ते हैं इस तथ्य को संसार के सामने रखा । श्री देवचन्द्र जी ने चौदह वर्ष निष्ठा पूर्वक श्री मद्‌भागवत की कथा सुनी । कथा में ही उन्हें एक दिन साक्षात्कार हुआ और तारतम मंत्र मिला ।

*भारत :—महा-भारत व्यास मुनि द्वारा रचित महान धर्म ग्रन्थ इसमें कौरव पांडव युद्ध के बहाने मानव मन में निरंतर चल रहे अच्छाई और बुराई के बीच द्वंद का हृदयग्राही वर्णन है । श्री कृष्ण उसकी आत्मा हैं और अर्जुन जीव । संसार के मोह में फंसे जीव का दिशा भटक जाना स्वाभाविक है । श्री कृष्ण सच्चे गुरु, प्रिय सखा और हितैषी पथ पर्दशक बन कर उसे सीधी राह दिखाते हैं । उनकी ही प्रेरणा और कृपा से पांडव कम शक्तिशाली और संख्या में कम होते हुए भी कौरवों पर विजय प्राप्त करते हैं । सच्चे लोग कम और निर्बल होते हुए भी आत्मिक शक्ति, प्रभु कृपा और दृढ़ निश्चय के सहारे अपने प्रबल शत्रुओं से लोहा ले सकते हैं । यह शिक्षा हमें महाभारत के एक अंग श्री मद्‌भगवत गीता से मिलती है । महाभारत में कहानियों में ही मानव के लिए एक ऐसे कर्म कांड का प्रतिपादन किया है जिसके अनुसार जीवन जी कर वह सही मानव कहला सकता है । गीता में निष्काम कर्म योग द्वारा मुक्ति प्राप्त करने का उपाय भी बताया गया है ।

महाभारत के अठारह पर्व हैं।

महामति प्राणनाथ ने महाभारत का उल्लेख करते हुए कहा है कि ऐसा अपूर्व ग्रन्थ रच कर भी व्यास मुनि का मन शान्त न हुआ। ज्ञान ग्रन्थों के पठन रचना से मानव के मन में अहंकार का सूक्ष्म आवरण आ जाता है। अहंकार अशान्ति का कारण बन जाता है। प्रभु प्रेम, उनके प्रति आत्म समर्पण से वह अहंकार नष्ट होता है। व्यास मुनि ने श्री मद्भागवत की रचना की, कृष्ण भक्ति में सराबोर हुए तभी उनका जीवन सफल हुआ ऐसा उन्होंने स्वीकार किया।

*भैरव झांप :—ऊंचे पहाड़ से नीचे खाई में कट कर गिरना एक तपस्या मानी गई है।

'म'

*मतु मेहता :—श्री देवचन्द्र जी के पिता। उत्तम कायस्थ जाति के बड़े धर्म निष्ठ और धनाढ्य व्यापारी थे। उमरकोट और भोजनगर के बीच बहुमूल्य वस्तुओं का व्यापार करते थे। देवचन्द्र जी इनके इकलौते पुत्र थे। उनको परमात्मा की खोज में, धर्म मार्ग पर देखकर इन्होंने उन्हें प्रोत्साहित किया। इन्होंने उन्हें कहा कि आप जिस महान उद्देश्य की ओर अग्रसर हुए हैं उसमें लगे रहिये। आपको धन की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं मैंने जितना कमाया है वह तुम्हारे जीवन काल में समाप्त नहीं हो सकता। उनके लिए ही वे अपना उमरकोट का घर छोड़कर भोजनगर और फिर जामनगर आकर बस गये। श्री देवचन्द्र जी श्री प्राणनाथ के सद्गुरु और प्रणामी धर्म (निजानन्द सम्प्रदाय) के आदि प्रवर्तक हैं।

*मन्सूक :—रद्द, निरस्त।

कुरान में कुछ पुरानी आयतों को मन्सुख बताया गया है। ऐसा लिखा है कि खुदा ने कहा कि "जब हम कोई आयत मन्सुख करते हैं तो उससे बेहतर या उस जैसी कोई दूसरी आयत भेज देते हैं"। कुरान में उससे पहले उतरी किताबों का सारांश तथा उनमें आए धार्मिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन कर दिया गया है। अन्तिम ग्रंथ के आ जाने पर पहले ग्रंथों की आवश्यकता कम हो जाती है ऐसा कह कर कुरान ने उन्हें मन्सूक माना कुरान सूरा—२ और ५ आयत—१०२ और ३। महामति की तारतम वाणी में वेद और कतेब के धार्मिक सिद्धान्तों का उल्लेख, संकेतो का स्पष्टीकरण करते हुए जो बातें कही नहीं गई

थीं उन्हें भी कह कर एक पूर्ण विश्व धर्म का ज्ञान संसार को दे दिया गया है। इसके पढ़ने के बाद सभी धर्म ग्रंथों को न भी पढ़ा जाए तो विशेष अन्तर नहीं पड़ता। इसे महामति के शब्दों में कहें तो :—

"अवतार से उत्तम हुआ, तहाँ अवतार का क्या काम।
जहाँ जमा हुआ सब शब्दों का, बाकी नेक न रख्या नाम॥"

सीधी भाषा में :—'हाथी के पांव में सबका पांव।'

तारतम वाणी ने सबको अपने में समेट कर उन धर्म ग्रंथों से अपेक्षित बातों को पूरा कर दिया है। तो भी उन ग्रंथों को मूल रूप में देखने पर महामति की वाणी का सौंदर्य उभर कर आ जाता है कि उन्होंने किस खूबसूरती से संसार के सभी धर्म ग्रंथों के संदर्भों का ताना बाना बुन कर 'विश्व धर्म' की 'झूल' बुन दी है।

पिछली किताबें मन्सूक बताते हुए भी उन सब किताबों को उन्होंने तारतम वाणी में और सब पैगम्बरों को अपने में देखा है। उन ग्रंथों को प्रमाण रूप में स्वीकार करके मारिफत ज्ञान सूर्य के प्रकट होते ही कर्मकांड और शरा‌अ का प्रतिपादन करने वाले सितारों का प्रकाश फीका पड़ गया।

*मयराज :—अर्श की सैर, साक्षातकार। मेराज।

हदीसों में मुहम्मद साहिब के मेराज का वर्णन है। एक बार वे सो कर उठते ही निमाज के लिए वुज़ू कर रहे थे कि उन्हें लगा कि वे जिबरील के कंधों पर सवार हो कर आसमान की सैर को गए। वहाँ उन्होंने स्वर्ग, नरक तथा अन्य लोक देखे। अर्श-परमधाम की सैर भी की। हौज देखा, जोय देखी और बड़े सुन्दर अमृतमय बृक्ष देखे। सुन्दर आभूषणों को पहने सुन्दर बिछौनों पर विराजमान हुरें-रूहें देखीं जिनकी सेवा के लिए अनेक सेवक खड़े हैं। अपने पुरखों, फरिश्तों और अन्य लोगों को कर्मों का फल भोगते देखा। इतना सब देख कर लौट आने पर उन्होंने देखा कि जिस पानी से उन्होंने वुज़ू किया था वह अभी हिल रहा था ओर जिस बिछौने से वे उठे थे वह भी अभी गर्म था। ('हलता है उजु जल') (महामति प्राणनाथ)

मन की चाल से भी आत्मा की रफ्तार बड़ी तीव्र होती है इसी से वे पलक झपकने की देर में इतना सफर तय कर पाए।

ब्रह्मसृष्टि के संसार में अवतरण से पूर्व मुहम्मद को खड़ा करके परमात्मा

ने परमधाम में जो जल्वा उन्हें दिखाया महामति ने उसे मेराज कहा है। उसी मेराज में खुदा ने उन्हें फरामोशी में पड़ी रूहें दिखाकर कहा इन्हें मेरा ज्ञान देकर तुम्हें जगाना होगा। अन्तिम अवतार के रूप में श्री देवचन्द्र जी और श्री प्राणनाथ को मेराज हुआ। उनकी कृपा से संसार में रहते हुए ब्रह्मसृष्टि ने भी परमधाम का साक्षात्कार किया। और संसार के जीवों को मोक्ष मिला।

*मर्जिया—गोताखोर, समुद्र में गोता लगा कर मोती लाने वाला।

महामति प्राणनाथ संसार के असंख्य धर्मग्रन्थों के समुद्र में गोता लगा कर सत्यज्ञान के मोती चुनने वाले मर्जिया हुए। उसी उपलब्धि में उन्हें एक बहुमूल्य मोती मुहम्मद साहिब मिले जिनका मूल्य स्वयं उनको मानने वाले लोग भी कम ही जानते हैं।

"बीच मर्जिया होय काढ़ी सीप, मिने मोती मुहम्मद पहचान।"

भवसागर में बेसुद्ध पड़ी रूहों को जगा कर परमधाम ले जाने वाले मर्जिया भी श्री प्राणनाथ जी हैं।

*मलकूत—बैकुंठ लोक। शुभ कर्म करने वाले मरने के बाद यहाँ जाते हैं।

*मसीह—ईसा मसीह। मुर्दों को जिलाने वाला।

कियामत के समय के मसीह श्री देवचन्द्र जी हैं जो मृतक समान शरीरों में पड़ी आत्माओं के लिए परमधाम से अमरत्व प्रदान करने वाली औषधि (तारतम वाणी) लाए।

*मसरक, मगरब—पूर्व पश्चिम। पूर्व पश्चिम में उदित दो धार्मिक परम्पराओं का महामति में मिलन। कतेब और वेद तारत्तम वाणी में एकाकार हो गए।

पश्चिम में उगा सूर्य निस्तेज होगा तभी कियामत आएगी ऐसा कुरान में कहा है।

कुरान की शिक्षा को अरब के लोग भूल गए तभी कियामत का दौर शुरू हुआ।

पश्चिम की सभ्यता का सूर्य संसार पर छा गया। उसकी अज्ञानमयी सभ्यता संसार में फैल गई तभी कियामत आई ऐसा भी कहा जा सकता है।

*महमद—मुहम्मद साहिब। परमधाम में खुदा के हुक्म और नूर के स्वरूप मुहम्मद साहिब जो संसार में तीन स्वरूपों में विविध शक्तियां ले कर

अवतरित हुए । अरब में खुदा का पैगाम लाकर पशुवृतियों के मानवों को मानवता सिखाने वाले, बसरी स्वरूप महंमद साहिब । परमधाम का ज्ञान लाने वाले, मल्की स्वरूप, श्री देवचन्द्र जी और कियामत के समय रूहों को जागृत ज्ञान दे कर परमधाम ले जाने वाले, हकी स्वरूप, श्री प्राणनाथ जी ।

महमद—अनन्त आनन्द का स्वरूप सच्चिदानन्द की आनन्द अंग (हमद-जिसकी प्रशंसा की गई) उस श्यामा के सत अंश को अक्षरातीत परमात्मा ने अपना हुक्म और जोश तथा अक्षर की बुद्धि देकर परमधाम में खड़ा किया । महामति ने उसे महमद कहा । उसकी दायीं ओर बेसुध (फरामोश) श्यामा जी और उनके अंग रूहों को दिखा कर कहा इन्हें तुम्हें जगाना है । महामति ने इसी लीला को साक्षात्कार दर्शन या मेराज कहा है । (दे० नूर, नूरनामा, मेराज, रसूल)

पैगम्बरों की सृष्टि इसी महंमद से हुई । इन्हीं महंमद की प्रशंसा तारत्तम वाणी में स्थान-स्थान पर की गई है ।

"और गिरो रूहें फिरिस्ते, ए दोऊ कही रब्बानी ।
तामें तीन सूरत महंमद की, जिन मुर्ग बूंदे लई पहचानी ॥"

वाणी की अमृत रूपी बूंदे गिरने से विश्व के सभी जीवों को मोक्ष का महामंत्र मिला । महंमद के तीन स्वरूप ही इन बूंदों का सार और रहस्य जानते हैं । वे ही उसके रस में पगे हैं ।

संसार की रचना करने वाले, इनमें नाना रूप धारण कर खेलने और खेल देखने वाले तथा तीनों सृष्टि को ज्ञान देकर अपने-अपने ठिकाने पहुँचाने वाले परमात्मा के हुक्म के स्वरूप महंमद ही हैं । तारत्तम वाणी में महंमद का उल्लेख कई रूपों में हुआ है । सनंध ग्रन्थ में परमात्मा का हुक्म बजा लाने के कारण महंमद साहब को माशूक कहा ।

*महमूद गजनी—(दे० गजनी सुलतान)

*महामति—महान बुद्धि वाले । बड़ी अक्ल वाले ।

बड़ी अक्ल की परिभाषा शास्त्रों में इस प्रकार दी है :—

"बड़ी मत सो कहिये ताए, श्री कृष्ण जी सों प्रेम उपजाए ।"

बड़ी बुद्धि अक्षर की बुद्धि को कहा गया । अक्षर ब्रह्म अक्षरातीत प्रभु के ज्ञान के स्वरूप हैं । सारे संसार के ज्ञान का उद्गम उन्हीं से हुआ ।

महामति में अक्षरातीत परमात्मा की पंच शक्तियों का समावेश हुआ। उन्हीं शक्तियों के कारण ही वे संसार को तारतम वाणी दे सके।

श्री राजजी का आवेश, आत्म दुल्हिन, (श्यामा श्री देवचन्द्र जी के रूप में), परमात्मा का नूर, और उनका हुक्म तथा अक्षर की बुद्धि यह पांचों शक्तियां संसार में अवतरित होंगी वेद कतेब में कहा सत्य सिद्ध हुआ। महामति श्री प्राणनाथ में इन सब शक्तियों का प्रकटीकरण हुआ। उन्हीं की कृपा से अवतरित वाणी पर 'मेहराज ठाकुर' की नहीं महामति की छाप है। उनमें बैठ कर स्वयं परमात्मा ही कह रहे हैं। अपना अस्तित्व मिटा कर मेहराज और 'श्री इंद्रावती' महामति में एकाकार हो गए हैं। मैं, अहं (खुदी) के मिटते ही ब्रह्म स्वरूप हो जाता है। महामति का उपदेश यही कहता है।

*महा वाक्य :—वेदों में तीन वाक्यों को महा वाक्य कहा गया है। वेदान्त का सार वही हैं।

१. तत्वमसि :—तत्व ही है।

२. अहं ब्रह्मास्मि :—मैं ही ब्रह्म हूँ।

३. खल्विदं ब्रह्म :—घट-घट में ब्रह्म व्यापक है। जो है सब ब्रह्म का ही रूप है।

स्वामी जी ने अपने वेदान्त के कीर्तनों में इन परिभाषाओं का सही रूप बताया है। परमात्मा ही एक मात्र सत्ता हैं। उनके सिवा जो भी दिखाई देता सब माया है। जो है नहीं और दिखाई देती है उसे ब्रह्म मानना भूल है। संसार में जो भी दिखाई देता है वह मिट जाने वाला है इसलिए सब को ब्रह्म का स्वरूप नहीं माना। सबमें ब्रह्म ही है तो अज्ञान क्यों है और शास्त्र किसके लिए आए।

नश्वर का रूप पहचान कर, संसार के मोह से ऊपर उठ कर जो सत्ता अनुभव में आती है वही ब्रह्म है। उनके सिवा कुछ है ही नहीं। उसकी माया से प्रतीत होती हैं।

*माजजा :—मोजिजा :—चमत्कार।

कुरान में कुछ ऐसे वाक्य और शब्द आए हैं जो खुदाई करामात और चमत्कार प्रतीत होते हैं। वास्तव में वे कियामत के समय को बताने के लिए सांकेतिक शब्द हैं। उन शब्दों को स्वामी जी ने स्पष्ट किया है। कुरान में कहा है कि 'जब वे मोजिजे जाहिर होंगे तभी कियामत होगी।' कियामत के समय प्रकट

होने वाले संकेत चमत्कार प्रतीत होते हैं महामति के ज्ञान प्रकाश में देखने से उनका रहस्य खुल जाता है ।

*माज बिन जबल :—जबल का बेटा माज ।

*माज को इमन :—यमन देश का माज ।

इनकी वार्ता पढ़ने के लिए देखिए अल्हम दो लिल्लाह ।

*मानकदे—श्री प्राणनाथ का रास मण्डल का नाम ।

*मारकंडेय :—एक ऋषि थे । नारायण से इन्होंने माया दिखाने की प्रार्थना की । ज्यों ही वे नदी में स्नान करने गए माया के वशीभूत हो गए । इन्होंने अपने आप को एक धोबिन के रूप में पाया । कई बच्चों को जन्म दिया । कष्टमय जीवन से तंग आकर आत्म हत्या पर उतारू हुए तो अपने वास्तविक स्वरूप में आ गए । पर लौटे तो माँ ने कहा 'बेटा जल्दी आ गए ।'

मारकंडेय की कथा पुराणों में माया का स्वरूप बताने के लिए कही गई है । महामति प्राणनाथ जी ने इनकी कथा का उदाहरण देकर बताया है कि ब्रह्म सृष्टि की भी यही दशा हुई है । परमात्मा जब आत्मा में प्रवेश करके उसे जगाएँगे तो वह अपने आप को परमधाम में बैठा पाएगी । वहां तो वही घड़ी है जब उन्हें संसार में उतारा गया परन्तु यहां ऐसा प्रतीत होता है मानों कई कल्प बीत गए हों । (दे० 'सिन्धी' मारकंडेय का दृष्टांत)

*मारफत :—मारिफत :—अध्यात्म ज्ञान, पूर्ण पहचान । आत्मा की सबसे ऊँची अवस्था जिससे परमधाम (लाहूत) में पहुँचना हो जाता है ।

मारिफत सागर महामति का वह ग्रन्थ है जिसमें कियामत के अन्तर निहित अर्थ को खोला गया है । कियामत से गुजर कर ही रूह मारिफत में आती है । विवेक पूर्ण ज्ञान से जाग कर खड़ा होना ही रूहानी कियामत है ।

*मुकुंद स्वामी—दे० नवरंग बाई ।

*मुजदीन—मुइनुदीन । एक धर्म निष्ठ व्यक्ति थे । मुहम्मद साहिब की कुछ हदीसों का संग्रह उनके पास था । उनके शिष्यों को मुहम्मद साहिब की बातें स्पष्ट करके उन पर विश्वास दिलाने के लिए उन्होंने कुछ हदीसें भेजीं । जिनको कुतुबदीन ने प्रकट किया । उस हदीस में लिखा था कि उमर ने मुहम्मद साहिब से प्रश्न किया कि शरीयत, तरीकत और हकीकत क्या है । इन तीनों की पांच बिने (पूजा पद्धति) अलग क्यों बताई है और वह कैसी है । मुहम्मद साहिब ने कहा कि कियामत के

समय आखरी पैगम्बर इस रहस्य को खोलेंगे। तब नूर का सागर, मारिफत का दरिया बह उठेगा। सबके मन का संशय और अज्ञान का अन्धकार मिट जाएगा। इमाम आकर लोगों को गुमराही से बचाएंगे।

महामति ने आकर यह सब भेद खोल दिए। मारिफत का ज्ञान सूर्य उदय होने से ज्ञान का अरुणोदय हो गया। दे० निमाज, बिने पांच में।

कुरान को समझ कर किसी ने अपनाया नहीं इसलिए उसकी बरकत शफकत इमाम ने मोमिनों को दे दी। दे० मारिफत प्र० ४, चौ० ६५।

*मुर्ग चोंच में खाक—आत्मा रूप मुर्ग ने नरतन धारण किया।

दे० नूर नामा।

*मुरारी—श्री कृष्ण का नाम। मुरा नामक राक्षस को मारने के कारण यह नाम पड़ा।

*मुष्टक—कंस के दरबार का एक पहलवान जिसे कृष्ण ने पलक झपकने की देर में मार डाला। उसके मरने से कंस को डर लगने लगा कि यह मुझे भी मार देगा।

*मूल प्रकृति—अक्षर ब्रह्म की वह शक्ति जो पल भर में अनेकों ब्रह्मांड बना लेती है। इसी को माया, महामाया आदि नामों से पुकारा गया। इसी मूल प्रकृति से पहले मोह फिर अहंकार, फिर तीन गुण, पांच तत्व, फिर तीन देवता और उन तीनों से संसार की रचना पालन और संहार होता है।

*मूसा :—यहूदियों के पैगम्बर, तौरात के रचयिता। दास जाति में पैदा हुए।

मिश्र के राजा फिरौन की बहन के हाथों पालन पोषण हुआ। अपनी दास जाति को आततायी सम्राट् के नगर से रातों रात खुदा के सहारे निकाल ले गए। परमात्मा ने उन्हें अलौकिक शक्ति दी जिसके कारण कई मुसीबतों से बच गए। अन्त में सुन्दर शहर बसा कर अपनी कौम को आबाद किया।

मूर्ति पूजा के मूसा कट्टर विरोधी थे। एकेश्वरवाद का इन्होंने दृढ़ता से प्रतिपादन किया। दस मूल धार्मिक सिद्धान्त मूसा ने कतेब को दिए जो वेदों के धर्म के दस अंगो से मिलते जुलते हैं। मूसा ने भी यही कहा है कि अन्तिम समय में फिर आऊंगा और न्याय के दिन अपनी गिरोह की गवाही दूंगा। महा-

मति ने दावा किया है कि मूसा मुझ में है। उन्होंने अपनी किताब 'कलश' को 'तोरेत' का नाम दिया।

*मेकाइल :—सृष्टि की उत्पत्ति के देवता ब्रह्मा।

दे० 'खुलासा' 'दो नामा'

*मेहराज ठाकुर :—महामति प्राणनाथ का जन्म का नाम। मेहराज ठाकुर केशव ठाकुर और धनबाई के पुत्र थे। विलक्षण प्रतिभा के कारण छोटी उमर में ही साँसारिक ज्ञान में पारंगत हो गए। बारह वर्ष की अवस्था में अपने बड़े भाई गोवर्धन ठाकुर के साथ सदगुरु श्री देवचन्द्र जी की शरण में आए। उन्होंने देखते ही उच्चात्मा 'इन्द्रावती' के लक्षण पहचान लिए और मंत्र सुना दिया। धीरे धीरे धर्म के रहस्य इनपर खुलते गए। परमात्मा और परमधाम का साक्षात्कार करने के लिए मेहराज ने कठोर साधना की। अन्त में इस बात को जान गए कि प्रभु को पाने के लिए तपस्या की नहीं एकाग्र मन से पूर्ण समर्पण की आवश्यकता होती है। सदगुरु के वचन इनकी प्रेरणा और उनकी आज्ञा का पालन इनका जीवन बन गया।

उनकी आज्ञा से ही मेहराज अरब देश में गए। चार वर्ष वहां रह कर लौट आए। भारत में आकर जामनगर के राजा के दीवान बने। संसार के बन्धन इन्हें बहुत देर तक बांधे न रख सके। इनका तन मन धन सदगुरु और उनके शिष्यों सुन्दरसाथ के लिए समर्पित था। तो सद्गुरु के धाम गमन के उपरान्त उनके अमूल्य उपदेशों को जनता तक पहुँचाने के लिए अपना जीवन अर्पित कर दिया। जनता ने भी इन्हें परमात्मा का स्वरूप जान कर 'प्राणनाथ' कह कर पुकारा।

इनकी पत्नी का नाम फूल बाई था। बिहारी जी के कोप के कारण इन्हें प्राण छोड़ देने पड़े। दूसरी बार इनका विवाह तेज कुंवर से हुआ। वे अपने जीवन के अन्त तक इनकी सेवा में रहीं।

मेहराज छोटी आयु में ही बड़े सुन्दर पद और साखियां गाया करते थे। सद्गुरु की स्तुति में उन्हें मिलते ही इन्होंने 'जानहुन कोड़ धड़, धड़धड़कोड़ मत्थन पद गाथा था। श्री देवचन्द्र जी इन्हें साखीवाला कहते थे।

श्री देवचन्द्र जी के धामगमन उपरान्त राजा ने झूठी चुगुली पर विश्वास करके इन्हें कैद कर लिया। उसी समय उसे युद्ध के लिए जाना पड़ा। मेहराज

एक वर्ष बिना सुनवाई के नजरबन्द रहे। वही 'हबसा' में वाणी अवतरित हुई। इनकी वाणी परमात्मा प्रेरित है। तभी उसमें महामति की छाप है। महामति से अभिप्राय इनके सद्गुरु और उनके मन पर विराजमान परमात्मा ही हैं। महामति की वाणी सभी धर्मग्रन्थों का सार देती हुई, उनके रहस्यों को सुलझाती है। परमात्मा के विषय में वेद कतेब के मौन को भंग करती हुई उनके स्वरूप और धाम का स्पष्ट मनो मुग्धकारी, सरल भाषा में परिचय देती है। इनकी वाणी राग रागनियों से पूर्ण और सहज ही में गायी जा सकती है।

गुजरात निवासी होते हुए भी इनकी अधिकतरवाणी उस समय की बोलचाल की भाषा हिन्दुस्तानी में है। उसे इन्होंने नागरी लिपी में लिखवाया। सिंधी, गुजराती और अरबी में कही इनकी वाणी को भी इन्होंने नागरी लिपि में लिखवा कर देश की भाषा समस्या का कितना सुंदर हल दिया। औरंगजेब को उसकी धर्मान्धता से मुक्त करने के लिए इन्होंने अपने शिष्यों को भेजा। इनकी वाणी सभी धर्म ग्रंथों में समन्वय लाने के लिए एक अपूर्व 'दर्शन' है। वेद और कतेब में जिस अतिम अवतार के आगमन के लिए भविष्य वाणी की गई है वह शक्ति मेहराज ठाकुर में ही प्रकट हुई। दे० महामति। इंद्रावती। इनका जीवन काल वि० सं० १६७५-१७५१ है।

*मेहदी :—धर्म गुरु, सद्गुरु,

इमाम मेहदी आखरी पैगम्बर जिनका कियामत के समय आना लिखा था और जिनका प्रकटीकरण महामति में हुआ। दे० इमाम मेहदी।

*मोजदीन—मुइनुदीन दे० मुजदीन।

*मोतिन के मुहें कुल्फ—मुहम्मद साहब को जब मेराज हुआ तो परमात्मा ने कहा कि दाहिनी ओर देखो। मोती के समान रूहों के मुँह पर कुल्फ (फरामोशी) हैं। तेरा ज्ञान इनकी फरामोशी को दूर करेगा।

*मोदी तेजपाल :—श्री कृष्ण के समय में एक बनिया जो मथुरा और गोकुल के बीच व्यापार करता था।

*मोमिन :—कुरान के अनुसार परमात्मा को प्रेम करने और उसकी राह पर सब कुछ कुर्बान कर देने वाले को मोमिन कहा है। गीता ने इसे स्थित प्रज्ञ ब्रह्म निष्ठ का पद दिया। शास्त्रों के ब्रह्म मुनि वे ही हैं। महामति ने ब्रह्म सृष्टि को ही मोमिन माना क्योंकि उनके समान परमात्मा को प्रेम और कौन

कर सकता है। दुनिया में मोमिन, मुसलिम (धर्मनिष्ठ) और काफिर तीन तरह के आदमी बताए गए हैं।

*मोरध्वज :—एक ईश्वर भक्त और संतों की सेवा करने वाले राजा थे। साधुजन की हर प्रकार की सेवा करने के लिए तय्यार रहते थे। एक बार देवताओं ने इनकी परीक्षा लेने के लिए साधुवेष धारण किया और इन्हें कहा कि अपने इकलौते पुत्र का दायां अंग स्वयं काट कर हमारे शेर के लिए आहार दीजिए। राजा ने बिना अश्रुपात किए उनकी आज्ञा का पालन किया। देवताओं के आशीर्वाद से इनका पुत्र जी उठा और राजा को अमर पद मिला।

*मोह तत्व :—सृष्टि रचना से पूर्व मोह तत्व उत्पन्न हुआ उसी से सृष्टि बनी।

*यमुना :—परमधाम की चौड़े पाट और सुसज्जित किनारों वाली सुन्दर नदी जिसे कुरान में जोए कहा है। इसका विस्तृत वर्णन 'परिक्रमा' किताब में देखिए।

यह नदी अक्षरधाम और परमधाम के बीच में बहती है। पुखराज पहाड़ से निकल कर हौज कौसर ताल में मिल जाती है।

*याकूब :—(दे० अस्राईल।

*यापिस :—पैगम्बर नूह का बेटा। ईरान देश में इसकी संतान फैली ऐसा माना जाता है। कुरान में इसी की औलाद में याजूज और माजूज जातियां हुई ऐसा कहा गया है।

*याहिया :—(दे० एहिया)

*युधिष्ठर :—पांडवों के बड़े भाई। सत्यवादी होने के कारण धर्मराज के अवतार कहे गए। महाप्रतापी राजा थे। इनके राजसूय यज्ञ में देवताओं ने भाग लिया ऐसा माना जाता है।

*यूसुफ :—याकूब का सबसे छोटा और प्यारा पुत्र। भाइयों ने डाह में आकर उसे कुंड में डाल दिया सौदागरों ने निकाला। वह मिश्र में चला गया। उसकी भविष्य वाणी, स्वप्न जानने की विद्या और बुद्धिमत्ता से प्रसन्न होकर फिरौन राजा ने उसे मंत्री बना लिया पिता के देश में अकाल पड़ने पर यूसुफ ने सबको अपने पास बुलालिया भाइयों ने सदा बुरा व्यवहार किया परन्तु यूसुफ ने हमेशा उन्हें सुख दिया।

महामति प्राणनाथ ने यूसुफ आदि अवतारी महापुरुषों का अपने में प्रकटीकरण माना है।

'य'

'बनी असराइल जिकरिया, यहिया यूसुफ इस्माइल।
बख्त बदलया दाऊद आए, हुए जाहिर नूर जमाल॥
इसहाक एहिया इद्रीस, आए बोहना सलेमान।
मुल्क हुआ नवीयन का, मार दिया सैतान॥
(कीर्तन प्र० ६१, चौ० १५—१६)

'र'

*रघुपति :—रघुवंश में उत्पन्न राजा दशरथ के पुत्र श्री राम। ये विष्णु के चौदह कला युक्त अवतार माने गए हैं। उन्होंने आदर्श मानवता का अनूठा उदाहरण संसार के सामने रखा। तुलसी और बाल्मीकि रामायण हिन्दुओं के धर्म ग्रंथ बन गए हैं। इन ग्रंथों में बड़े सुन्दर शब्दों में इनका जीवन वृत्त लिखा है।

*रत्न बाई :—बिहारी जी की आत्मा का नाम।

*रत्नावती :—रास लीला की एक आत्मा।

*रसूल :—पैगम्बर मुहम्मद साहिब। (दे० महंमद और नूर)

*राई :—एक सती नारी।

*राज जी, अक्षरातीत परमात्मा, समस्त ब्रह्मांडों के राजाधिराज को महामति ने 'श्री राज जी' कहा। कुरान और बाइबल में भी उन्हें सब का सम्राट् माना है।

*राधा :—बृज और रास लीला की नाइका श्री कृष्ण की प्रेयसी। राधा आत्मा का नाम है जो परमात्मा से अलग होकर संसार में आई। उसके लिए उसके प्रियतम कृष्ण रूप होकर आए और बृज रास लीला दिखाकर परमधाम ले गए। सच्चिदानन्द परमात्मा की आनंद अंग श्यामा ही राधा रूप में अवतरित हुईं। संसार में इनके पिता बृषभानु जी और माता प्रभावति थीं।

*राम :—विष्णु की चौदह कलाओं से युक्त अवतारी पुरुष जिन्होंने अपने जीवन से आदर्श मानव बनने की शिक्षा दी। (दे० रामायण)

*रास लीला :—आत्माओं और परमात्मा की प्रणय क्रीड़ा जो योगमाया

के ब्रह्मांड में चेतन शरीरों द्वारा की गई। श्री मद्भागवत और तारतम वाणी के ग्रंथ में इसका बड़ा सुन्दर वर्णन है। अक्षर ब्रह्म को अखंड परमधाम की लीला का परिचय दिलाने के लिए ही इस लीला का आयोजन किया गया।

*रुकमणी :—द्वारिका पति श्री कृष्ण की पटरानी। शेषशायी नारायण की लक्ष्मी का अवतार, मानी गई। नारायण से भी बड़ी सत्ता कौन है इसका परिचय पाने के लिए अवतार लिया। श्री कृष्ण से विवाह के समय मंगल गान में उस शक्ति का परिचय पाया। (दे० लक्ष्मी जी का दृष्टांत, "प्रकाश")

*रुकमांगद :—एक महान भक्त राजा।

रूह अल्लाह :—श्री देवचन्द्र जी के रूप में अवतरित सच्चिदानंद परमात्मा की आनंद अंग श्यामा जिन्होंने ब्रह्म सृष्टि के साथ संसार को भी मुक्त कर देने वाला ज्ञान दिया। (दे० ईसा रूह अल्लाह)

रूहल अमीन :—सत्य निष्ट रूह, जिबरील को यह खिताब मिला।

आखिरत में यह सत्ता इमाम मेहदी श्री प्राणनाथ जी में आने से कियामत के समय के रूहलअमीन वही कहलाए।

*रोहिनी :—वसुदेव की पत्नी और बलराम की माता। बलराम के जन्म के समय वे कंस के भय से गोकुल में रहीं थी।

*लखमी :—लक्ष्मी— (दे० रुकमणी)

*ललिता :—श्री प्राणनाथ के साथियों में एक ब्रह्मात्मा। वे बड़े सुंदर भजनों की रचना करतीं थीं और मधुर स्वर से गायन करतीं थीं। उनका एक पद तारतम वाणी के कीर्तन ग्रंथ में है।

*लाडबाई—परमधाम में पाक कला में निपुण एक आत्मा।

*लालबाई—परमधाम की शृङ्गार में प्रवीण एक आत्मा।

*लाहूत—परमधाम।

*लीलबाई—श्री देवचन्द्र जी की पत्नी और विहारी जी की माता थीं। श्री देवचन्द्र जी के वचनों पर इन्हें पूर्ण विश्वास था। इन्हें परमात्मा का दीदार हुआ। सुन्दर साथ से इन्हें बड़ा स्नेह था।

*लुंदनी—इल्म—ब्रह्म ज्ञान। परमात्मा द्वारा कहलाया गया ज्ञान। तारत्तम वाणी इल्म लुंदनी है। इसमें ब्रह्म, ब्रह्मधाम, और ब्रह्म शक्तियों का ब्योरे से वर्णन है।

*लैलत कदर—लैलतुल कदरि कियामत की फज्र से पूर्व की रात जो कुरान में हजार महीने से बेहत्तर (अधिक) बताया गया है। महामति ने इसे वि० सं० १६३८ से १७३५ तक माना है। इसी समय ब्रह्मज्ञान, रूहें और फिरिश्ते संसार में अवतरित हुए। इसके बाद मारिफत की फज्र में उन्होंने मोमिनों को इकट्ठा किया। कुरान : लैलतुलकदरि।

लैलतुल कदरि के तीन तकरार कहे गए। तीन बार कद्र की रात हुई।

अर्थात् लैलतुल कदरि की रात तीन खंडों में पूर्ण हुई।

पहली बार बृज में नंद जी के घर जिसे हूद तोफान कहा गया।

दूसरी बार रास लीला के मंडल में। नूह की किश्ती के ब्यान में।

योगमाया का ब्रह्मांड बना कर रूहों को आनन्द दिया और काफिर डूब गए।

तीसरी बार जागनी के संसार में अखंड ज्ञान के द्वारा इसी ब्रह्मांड में अखंड सुखों की वर्षा की।

*लोह माफूज :—कुरान के अनुसार खुदा के पास रखी वह किताब जिसमें सबका भूत, भविष्य और वर्तमान लिखा है। महामति ने कुरान को लौह माफूज कहा। इसमें लिखी बातें सत्य हुई। उनका रहस्य महामति ने खोला।

*लौह कलमी :—परमात्मा की क़लम से लिखी गई बात जो कभी बदली नहीं जा सकती। कियामत का होना उन बातों में से एक है।

*वज्र लेप :—प्राचीन युग में दिया जाने वाला दंड जिसमें जिंदा व्यक्ति के साथ मृतक को चिपका दिया जाता था। थोड़े दिन में सड़ कर जीवित व्यक्ति भी मर जाता था। महामति ने माया (जड़) का चेतन आत्मा से लगा होना वज्र लेप माना है जो मरने पर ही छूट सकता है।

न छूटने वाले पलस्तर को भी वज्रलेप कहते हैं।

'व'

*वल्लभाचार्य :—वैष्णव धर्म के प्रवर्तक श्री कृष्ण के परम भक्त थे। उनके शिष्य उनको कृष्ण का अवतार ही मानते हैं। इन्होंने श्री मद्भागवत की बड़ी सुन्दर टीका की है। महामति प्राणनाथ ने वल्लभाचार्य की प्रशंसा करते हुए उनके अनुयायिओं से अनुरोध किया है कि आप उनकी वाणी का रहस्य समझने की कोशिश करें। बाह्य शुद्धि से परमात्मा नहीं मिलते। मन को शुद्ध करके आत्मा

को जगाना पड़ता है। कर्मकांड में फंसकर मनुष्य अपने जीवन के वास्तविक उद्देश्य को भूल जाता है। दे० कीर्तन 'वचन विचारी' मीठड़ी वल्लभाचार्य वानी।

*वशिष्ठ मुनि :—श्री रामचन्द्र जी के गुरु थे। श्री राम के जीवन पर इनका बहुत प्रभाव था। उनके राज्य में इनकी हर आज्ञा का पालन होता था।

वशिष्ठ बड़े धर्म और उच्च कोटि के ऋषि थे। योग वशिष्ठ इनका उच्च कोटि का ग्रन्थ है। योग की साधनाओं का वर्णन करते हुए उसमें सात भूमिका बताई गई हैं जिन्हें योग द्वारा पाया जा सकता है। पांचवीं को केवल विदेही कहा है। योग द्वारा पिंड ब्रह्मांड से ऊपर उठ कर उसे योगी जन प्राप्त करते हैं। छठी और सातवीं भूमिका के विषय में वशिष्ठ मौन हैं। महामति ने सातवीं और आठवीं भूमिका अक्षरधाम और परमधाम को माना है। तारतम वाणी में उनका बड़ा सुन्दर वर्णन है।

वशिष्ठ ऋषि की सहनशक्ति असीम थी। कहते हैं एक अन्य ऋषि विश्वामित्र ने इनके सौ पुत्रों को मार डाला परन्तु हर बार यह उन्हें क्षमा करते रहे। उनके घर आने पर इन्होंने उनका स्वागत किया और प्रशंसा की। ऋषि अपनी करतूत पर लज्जित हुए। और क्षमा मांगी—इस पर उन्होंने उनको राज ऋषि के स्थान पर ब्रह्म ऋषि कहा। दे० कीर्तन पुराने।

*वसीअत नामे :—सम्पति की विरासत सम्बन्धी लेख।

श्री लालदास कृत बीतक (श्री प्राणनाथ जी का जीवन चरित्र) में लिखा है कि महामति के जीवनकाल और औरंगजेब के शासनकाल में मक्का से खलीफों के नाम चार वसीअतनामे आए जिनमें लिखा था कि हमने आकाश वाणी सुनी है कि कुरान की बरकत, फकीरों की शफकत यहां से उठ कर हिन्द में चली गई। एक पत्र में औरंगजेब को इस बात की खोज करने का आग्रह किया गया था कि वहां कोई ऐसे व्यक्ति पैदा हुए हों तो उनकी खबर दी जाए। कहते हैं इसी पत्र को पढ़ कर औरंगजेब ने शेख खिदर को उनका पता लेने भेजा था।

इन वसीअत नामों का समय वि० सं० १७१२, १७३१, १७३५ और १७४४ माना जाता है। पत्र में यह भी लिखा था कि लगता है कियामत का समय हो गया। औरंगजेब पर इन पत्रों का कुछ प्रभाव पड़ा तो भी उसके काजी मुल्लाओं ने उन पत्रों को जाहिर नहीं होने दिया। सत्य को हर युग में प्रकट होने से रोका गया है।

*वसुदेव—श्री कृष्ण के पिता। इन्हीं के नाम से श्री कृष्ण वासुदेव कहलाए। देवकी से इनके विवाह के समय राजा कंस ने आकाशवाणी सुनी कि देवकी का पुत्र तुम्हारा काल बनेगा। बस अपने बहन और बहनोई को कैद में डाल दिया। इनकी आठवीं संतान श्री कृष्ण थे। उन्होंने कंस को मार कर माता-पिता को जेल से छुड़ाया।

*वाला जी—पति, स्वामी अक्षरातीत परमात्मा।

*वाहेदत—अद्‌वैत, अद्‌वैत का प्रकाश। रूहें और परमधाम सब को मिला कर एक वाहिदत ही कहा जाता है। ब्रह्म ही सत्य है। उसके सिवा कुछ नहीं। ब्रह्मसृष्टि और ब्रह्मधाम उसके अंग रूप और उसका तेज हैं। यह नश्वर संसार उसकी माया है, उसकी सत्ता का आभास मात्र है। उस एक की सत्ता ही वाहिद की वाहिदत है।

*विष्णु—संसार को धन, एश्वर्य और आहार देकर पालने वाले देवता। ब्रह्म को भूल समस्त संसार इनकी ही पूजा करता है। देवता लोग भी इनका प्रभाव मानते हैं। इन्हीं के मन का स्वरूप नारदमुनि हैं। मानव मन को नारद कहीं टिकने नहीं देते और परमात्मा से दूर रखते हैं इसीलिए महामति ने विष्णु को अजाजील फिरिस्ता और नारद को इबलीस कहा। दे० अजाजील। खुलासा, दोनामा।

*वेद—विद्‌या। चार वेद।

ऋग वेद में स्तुति के मंत्र हैं। यजुर्वेद में यज्ञ के मंत्र हैं। सामवेद में गायन विद्या के गाए जाने वाले मंत्र हैं। अथर्व वेद में औषधि, युद्ध विद्या और विज्ञान के मंत्र हैं। वेद मंत्रों की संख्या अस्सी हजार से अधिक मानी जाती है। अधिकतर मंत्र कर्मकांड के हैं। छः हजार श्लोक ब्रह्म का प्रतिपादन करने वाले माने जाते हैं। इन्हीं मंत्रों का स्पष्टीकरण वेदान्त में हुआ। वेदान्त में अद्‌वैत ब्रह्म और सब में ब्रह्म व्यापक है इस बात पर अधिक जोर दिया गया है।

*वेद व्यास—वेदों का विन्यास करने वाले एक महान ऋषि। वे धर्मज्ञ पराशर ओर वसु कन्या सत्यवती के पुत्र थे। वेदों के मंत्र सुन कर गुरु शिष्य परंपरा से कंठस्थ किए जाते थे। कई वेद मंत्रों को लोग भूलने लगे थे। महर्षि ने बहुत से योग्य विद्वानों को एक बहुत बड़ी कन्दरा में इकट्‌ठा किया। वेद के मंत्रों को लिपि बद्ध कराया। फिर उन्हें विषय के अनुसार अलग खंडों में विभक्त किया।

उन्हीं के अनूठे प्रयास से वेद आज तक जनता के हाथों में हैं। उन्हें वर्तमान रूप में लाने का श्रेय उन्हीं को है। ब्रह्मज्ञान सम्बंधी श्लोकों को चुन कर वेदांत की रचना भी उन्होंने ही कराई। अनेकों उपनिषिद् उनकी देख-रेख में लिखे गए।

इतना हो चुका तो उन्होंने पाया कि वेद और उपनिषिदों का ज्ञान साधारण जन की समझ में नहीं आ सकता। उन्होंने अपने साथियों की सहायता से उन्हीं सूत्रों को मूल में रख कर सुंदर कथाओं से पूर्ण अनेक पुराणों की रचना करा डाली। बड़े-बड़े पंडितों को समझ में न आने वाली अध्यात्म की बातें साधारण बुद्धि के लोग घर-घर में पढ़ने और कहानियों की तरह सुनाने लगे।

इतना सब कर लेने पर भी महर्षि का मन शांत न हुआ। "दाझ न मिटो तिन व्यास की तो उदयो भागवत सार"। नारद मुनि की सलाह मान कर उन्होंने भक्ति रस से पूर्ण कृष्ण लीला को श्री मद्भागवत में लिखा। ज्ञानी होने का मान भंग हुआ। पूर्ण प्रेम और समर्पण के भाव से आत्मा श्री कृष्ण प्रेम में रंग कर शांत हुई। (दे० भागवत)

*वृषभान—श्री राधा जी के पिता।

*शब मेराज—दर्शन या साक्षात्कार की रात। मुहम्मद साहिब को जिस रात में मेराज हुआ उसे शबे मेराज कहा जाता है। महामति प्राणनाथ ने लैलतुल-कद्र की रात को भी मेराज की रात माना है। इस शुभ रात (जो सौ वर्ष तक रही) में ब्रह्म, ब्रह्मज्ञान और ब्रह्मसृष्टि का संसार में अवतरण हुआ। यहीं बैठे सबने परमात्मा और परमधाम का दीदार पाया। ऐसा ब्रह्मज्ञान संसार को मिला जिससे अखंड आनंद की प्राप्ति होती है। ब्रह्मज्ञान से परमात्मा को पहचान लेना ही संसार में आत्माओं का आधार था। इसी की सहायता से उन्हें इस ब्रह्मांड में अलौकिक सुख मिले। (दे० मेराज, लैलतुल कद्र)

महामति के शब्दों में—'ढूंढ़ें सब मेराज को, शब मेराज में सब।<br>
सो शब मेराजजाहिर करी, सो शब मेराज देखसी अब।<br>
(सनंध ग्रंथ)

महामति ने 'शबे मेराज' को रूहों के दीदार की रात कहा।

श्री देवचंद्र जी को साक्षात्कार हुआ और स्वयं परमात्मा श्री कृष्ण ने तारत्तम मंत्र दिया वह रात शबे मेराज है।

*षट कर्म—ब्राह्मणों के छः कर्म-पढ़ना—पढ़ाना, यज्ञ करना, कराना, और दान देना और लेना।

*षट दर्शन—छः शास्त्र या धर्म ग्रंथ।

कपिल का सांख्य शास्त्र।

पातंजली का योग शास्त्र।

कणाद ऋषि का वैशेषिक।

गौतम का न्याय।

जैमिनी का पूर्व मीमांसा।

व्यास का उत्तर मीमांसा (वेदांत)।

इनके अतिरिक्त छः नास्तिक दर्शन भी माने जाते हैं उनके नाम—चार्वाक, जैन, माध्यमिक, योगाचार, सौतांत्रिक और वैभाषिक हैं।

*श्यामा—अक्षरातीत, सच्चिदानंद परमात्मा की आनंद अंग (अद्र्धांगी) श्यामा ब्रज और रास में श्री राधा के रूप में अवतरित हुई। जागनी के ब्रह्मांड में श्री देवचंद्र जी के रूप में प्रकट होकर संसार को मुक्ति का (तारतम) मंत्र दिया। (दे० देवचंद्र)

*शालिवाहन—एक पराक्रमी राजा जिनके नाम से सम्वत चलता है।

*शाहरग—दिल के अंदर रक्त ले जाने वाली नाड़ी। दिल के अति निकट मोमिनों के लिए खुदा शाहरग से भी निकट है।

*शिव :—महादेव, संसार का संहार (कल्यान) करने वाले देवता।

सदाशिव बृज मंडल में श्री कृष्ण का दीदार करने आए थे। उन्होंने यशोदा जी को श्री कृष्ण का वास्तविक परिचय देना चाहा। श्री कृष्ण की माया से वे फिर भूल गई। सदाशिव के मन में ही बृज लीला का अखंड होना माना जाता है। महामति ने पंच महान आत्माओं (वासनाओं) में इन्हें माना है।

*शून्य :—चौदह लोक, अष्टावरण, महाविष्णु आदि से भी परे अनन्त अपार शून्य समष्टि है। अनन्त विश्वों के स्थूल, सूक्ष्म, कारण, महाकारण का इसी में लय होता है। सूर्य के प्रकाश में तैरते रजकण की तरह असंख्य ब्रह्मांड इसमें उड़ते फिरते हैं। व्यापक और अमूर्त होने पर भी योगियों द्वारा देखी जा सकती है। फरामोशी नींद आदि माया के जो रूप हैं शून्य भी उन्हीं में से एक है।

'मोह अज्ञान भरमना, कर्म काल और सुंन
ए नाम सारे नींद के, निराकार निर्गुण' महामति प्राणनाथ ।

"स"

*सकुंडल :—परमधाम की एक आत्मा जिसका अवतरण छत्रसाल जी में माना जाता है। श्री देवचंद्र जी ने कहा था कि दो रूहें बड़े आनंद से खेल में मग्न हैं। उन्हें जगा लेने पर परमधाम में लौटना होगा। सकुंडल तो जागी परन्तु साकुमार का जागना तुरंत न हो सका ।

महाराजा छत्रसाल एक परमभक्त, शूरवीर और सत्यनिष्ठ राजा थे। साहित्य और संगीत से विशेष लगाव रखने वाले विद्वान और कवि थे। औरंगजेब की सेनाओं के साथ अनेकों युद्ध करके बुंदेलखंड के राज्य को सुदृढ़ और विस्तृत बनाया ।

महामति प्राणनाथ को अपने महलों में रख कर उनकी राजाओं के समान सेवा की। जीवन भर उनके आदेशों का पालन करते रहे। उनकी सभा में लोग एक साथ कुरान और गीता पढ़ते थे।

*सृगाल :—शृगाल। एक भक्त बनिया थे। कोढ़ी हो जाने पर भी परमात्मा का उपकार मानते रहे। इनका जीवन प्रभुमय था।

*संजम पुरी :—यमपुरी। यहां सब के कर्मो का लेखा जोखा होता है।

*सच्चिदानंद :—सत् चिद् आनंद का सामूहिक रूप पूर्ण ब्रह्म परमात्मा।

सत्य अंग अक्षर ब्रह्म चिद ( चेतन ) की प्रेरणा से अनेकों ब्रह्मांडों की रचना करते हैं।

आनंद अंग श्यामा चिद् से प्रेरित अनेक आनंद मयी लीलाओं का आयोजन करती हैं।

*सदर तुल मुंतहा :—सिद्र तुल मुंतहा कुरान के अनुसार यह एक ऐसा नूरी वृक्ष है जिसपर अक्षय नूरी फल लगते हैं। उसकी शीतल नूरमयी छाया सब ओर फैली है। सब ओर नूर ही नूर बरसता है ।

महामति प्राणनाथ ने इसे अक्षर ब्रह्म का नूरी धाम बताया है।

*सदाशिव—महादेव—पंच वासनाओं में एक। अक्षर ब्रह्मा के मन की वह अवस्था जिसमें बृज रास लीला अखण्ड हुई।

*सनकादिक—ब्रह्मा जी के चार मानस पुत्र। सनक-सनंदन, सनातन और सनत्कुमार। इन्होंने वेदों का प्रचार किया।

*सनंध—तारतम वाणी का पांचवां ग्रंथ। कतेब के प्रमाण देकर अवतरित यह पहला ग्रंथ है। इसकी वाणी को महामति के साथियों ने मस्जिद में गाकर औरंगजेब को सत्यधर्म पर लाने का प्रयास किया। सनंध शब्द प्रमाण, सनद के रूप में प्रयुक्त हुआ है। गुजराती वाणी में विधि रीति आदि अर्थो में भी आया है।

समतून—शमऊन पातसाह एक बड़े ही त्यागी संयमी राजा हुए। जीवन भर रोजे रख कर जनता की सेवा करते रहे। बड़े ही शक्ति शाली थे। शरीर पर बाल बहुत थे। उनकी पत्नी ने उनकी मृत्यु का राज़ बता कर काफिरों से मरवाना चाहा परंतु परमात्मा की कृपा से वे बच गए उनकी आयु हजार महीने बढ़ गई। जीवन भर सत्य धर्म का प्रचार और कपटियों (काफिरों) से लड़ते रहे।

"कस्सुल्ल अंबिया" १६०७ (२२७-२२८)

कियामत के समय के समऊन पातशाह महामति प्राणनाथ ने संसार में 'सत्य सनातन धर्म' 'दीन इसलाम' 'निजानंद धर्म' की स्थापना की। कष्ट झेल कर भी अपनी मंजिल की ओर बढ़ते रहे।

सफी अल्लाह :—सफी उल्लाह :—खुदा का मित्र। हज़रत आदम को यह उपाधि मिली। कियामत के समय के सफीअल्लाह श्री देवचंद्र जी हैं। वे खुदा के अंग स्वयं श्यामा जी के अवतार हैं।

स्याम :—शाम—अरब का एक देश। हज़रत नूह के तीन पुत्रों में से एक जो नूह तोफान के हिंद में बस गए। पूर्व की सारी जनता इन्हीं की संतान मानी जाती है। इन्हीं को महामति ने श्री कृष्ण जी श्याम कहा।

*सरा तोरा :—शराअ—कर्मकांड के नियम। महामति के आने से पूर्व कर्मकांड को ही धर्म मान लिया गया था। लोग कुछ धार्मिक क्रियाएँ करके धार्मिक कहलाने लगते थे। महामति ने धर्म के नियमों का अंतर्निहित अर्थ बताया। शरीयत और तरीकत कर्म उपासना से ऊपर उठ कर हकीकत (सत्य ज्ञान) और मारिफत (पूर्ण पहचान) की ओर बढ़ने का मार्ग सुझाया। शारीरिक कर्मकांड को छुड़ा कर आत्म पथ पर चलाया।

*सलेमान (सुलेमान) :—पैगम्बर सुलेमान हज़रत दाउद के पुत्र थे।

बड़े न्यायकारी, धर्मनिष्ठ और चमत्कारी राजा थे। इनके न्याय की बड़ी धाक थी। इनकी मुहर का सब जगह सम्मान था।

कुरान में लिखा है कि आखिरी पैगम्बर के पास सलेमान की मुहर होगी। जिसे उससे छुआ जाएगा वह बहिश्त में जाएगा। महामति ने अपने दया पूर्ण न्याय से सिद्ध कर दिया कि आखिरी जमाने के सलेमान वे ही हैं। उनको ही खुदा ने संसार को मोक्ष प्रदान करने की मुहर (ठप्पा) अधिकार दिया।

*ससुई :—पंजाब लोक गाथा, की नायिका सस्सी-पुन्नू की प्रेमिका।

*साकुमार :—परमधाम की एक रूह जिसका श्री देवचंद्र जी ने बड़े घराने में उत्पन्न होना बताया था। महामति प्राणनाथ ने उसे औरंगजेब में जान कर उसे जागृत ज्ञान देने का प्रयास दिया। मन से तो वह इनके ज्ञान से प्रभावित हुआ परन्तु शराअ के बन्धन को काट कर इनके निकट न आ सका।

*सात कलिमा वाले पैगम्बर :—आदम, नूह, इब्राहीम, मूसा, ईसा मुहम्मद और अली। इन सब ने एकेश्वर बाद का प्रतिपादन किया।

महामति ने सत्य ज्ञान के प्रकटीकरण के लिए इन सबका अपने में प्रकटीकरण माना है।

*सात तबक :—पृथ्वी के नीचे के सात पाताल।

*सात भूमिका :—योग वशिष्ठ में कही योग की सात अवस्थाएँ।

१. शुभेच्छा-वैराग्य पूर्ण मोक्ष की इच्छा को शुभेच्छा कहा।

२. बिचारणा :—शास्त्रों के अध्ययन मनन सत्सङ्ग के संग, विवेक वैराग्य और अभ्यास पूर्वक सदाचार में प्रवृत्त होना।

३. शुभेच्छा और विचारणा द्वारा अनासक्त, होकर विचरण करना।

इसे तनुमानसा कहा। इसमें मन शुद्ध होकर स्वच्छता को प्राप्त होता है।

४. सत्वा पति :—उक्त उपायों से चित्त शुद्ध होकर सत्य स्वरूप परमात्मा में तद्रूप होता है।

५. चारों भूमिकाओं के सिद्ध होने पर स्वाभाविक अभ्यास से चित्त वाह्य संस्कारों से असंग होता है अन्तःकरण समाधि में आरूढ़ होता है।

६. पदार्थ भावना—किसी पदार्थ का बाहर-भीतर भान न होना।

७. दूसरों के प्रयत्न पर भी भेद रूप······की सत्ता स्फूर्त्ति की उपलब्धि

नहीं होती। आत्मभाव में स्वाभाविक निष्ठा रहती है। इसे अन्तःकरण की तुर्यगा अवस्था कहते हैं।

'भरत मुक्ति' भूमिका से आभार

पांचवीं अवस्था केवल विदेही को स्वीकार किया। महामति ने छठवीं और सातवीं भूमिकाएँ अक्षरधाम और परमधाम को माना। जिसका वर्णन योग वशिष्ठ में स्पष्ट न हो सका। 'कीर्त्तन पुराने'।

सात निशान :— (दे० कियामत)

*सालेह :—एक नेक और परहेजगार पैगम्बर। इन्होंने भी कियामत के समय होने वाली फज्र की ओर संकेत किया है। (दे० फज्र)

*सावित्री :—सत्यवान की एक आदर्श सती नारी। अपने सतित्व के बल पर सत्यवान को मौत के मुँह से (यमराज के हाथों से) निकाल लाई। महामति ने सती नारियों का उदाहरण दे कर बताया है कि साधारण मनुष्य की सती पत्नी में इतना साहस और बल है तो परमात्मा से अनन्य भाव से प्रेम करने वाली आत्मा की शक्ति का पारावार कौन पा सकता है तो परमात्मा से इन्हीं सतियों की तरह प्रेम करने की सीख उन्होंने दी।

*सिकंदर :—सिकंदर महान जिसने दुनिया के बहुत बड़े भाग पर अधिकार करके पानी में भी अपना झंडा गाड़ दिया। वह आबे हयात (अमृत) की खोज में बहुत भटका परन्तु उसे पा न सका।

वास्तव में आबे हयात तो मारिफत का ज्ञान है जो जीव को जन्म मरण के चक्कर से छुड़ाने वाला है।

*सिसुपाल :—शिशुपाल—चेदिराज। कंस को उग्रसेन ने अपने राज्य के लिए अपशकुन जान कर दूर जंगल में फिकवा दिया था। चेदिराज ने उसका पालन किया। एक शिशु का पालन करने के कारण शिशुपाल कहलाए। कृष्ण के यह बुआ के पुत्र थे। उन्होंने उसके एक सौ दोष क्षमा कर देने का वचन अपनी बुआ को दिया। युधिष्ठर के राजसूय यज्ञ में शिशुपाल ने श्री कृष्ण को सौ गालियां दीं। श्री कृष्ण वचन पूरा करने के लिए चुपचाप सुनते रहे। अन्त में अपने सुदर्शन चक्र से उसका गला काट डाला। उनकी प्राण ज्योति बैकुंठ में जाकर वापिस लौट आई। श्री कृष्ण विष्णु के अंश नहीं पूर्ण अवतार थे। वह ज्योति श्री कृष्ण के मुख में समा गई।

महामति ने यह उदाहरण देकर स्पष्ट किया है कि बृज और रास के बाद श्री कृष्ण अक्षर या अक्षरातीत ब्रह्म के नहीं विष्णु भगवान के सोलह कला सम्पूर्ण अवतार थे। "प्रकाश, प्रकट वाणी"

*सुग्रीव :—राजा बलि का भाई जिसने रावण विजय में श्री राम की सहायता की। दे० रामायण।

*सुन्नत :—शब्दार्थ में मूत्र इन्द्री के अग्र भाग का काटना सुन्नत कहलाता है। शरीयती मुसलमानों में यह प्रथा प्रचलित है। इब्राहीम के समय से इसका चलन हुआ। अपनी दूसरी पत्नी को दिए वचन के भंग होने से उन्हें पंचों ने इसकी आज्ञा दी। दे० इमराम। बाद में लोगों ने इसे एक प्रथा बना लिया। इसलाम की शराअ और धर्म पद्धति के लिए भी सुन्नत शब्द का प्रयोग होता है। वह काम जो महंमद ने किया हो उसे सुन्नत कहा। बाईबल में (यिर्मयाह ४) इसे मन के संयम और इन्द्रिय निग्रह के लिए प्रयोग में लाया गया है। 'तू तो मन का खतना कर'। वास्तव में इन्द्रिय निग्रह ही आध्यात्मिक सुन्नत है। कर्मकांड के नियम जब केवल रिवाज बन कर रह जाते हैं तो वे मनुष्य को शारीरिक, मानसिक या आत्मिक स्तर पर ऊँचा उठाने में जरा भी सहायता नहीं करते। महामति ने जाहिरी चलन को छोड़ कर कर्मकांड के आध्यात्मिक पक्ष को समझने का आग्रह किया है। दे० कियामत 'नामा'।

*सुंनत जमात :—सुंनत या खतना करने वाले संयमी और धर्मनिष्ठ लोग।

महामति ने स्वयं सिद्ध संयम से पूर्ण ब्रह्म सृष्टि को सुंनत जमात कहा है।

*सुदामा :—बृज मंडल में श्री कृष्ण के एक मित्र।

*सुंदरबाई :—श्री देवचन्द्र जी की आतमा का नाम। दे० देवचन्द्र।

*सुंदर साथ :—सुंदरबाई की साथी आत्माएँ—ब्रह्मसृष्टि—सुंदर साथ कही गई। महामति ने अपने साथियों को सुंदरसाथ कहा। तारतम मंत्र लेने पर शिष्य नहीं साथी बन जाते हैं। प्रणामी समाज में एक दूसरे को साथी या सुंदर साथ शब्द से सम्बोधन करने का चलन है।

श्यामा श्री राजजी का अंग और सुंदरसाथ श्यामा के अंग। इस तरह सुंदर साथ की सेवा स्वयं परमात्मा की सेवा मानी जाती है। महामति ने अपनी

रूह को भूल जाने पर कड़ी फटकार दी है परन्तु सुन्दरसाथ के चरण पकड़ कर उन्हें जगाया है।

"तुम सयाने मेरे साथ जी, जिन रहो विषय रस लाग।
पांव पकड़ कहे इन्द्रावति, उठ खड़े रहो जाग॥"

*सुंन—शून्य—दे० शून्य।

*सूर—नरसिंघा—कुरान के अनुसार कियामत के समय इस्राफील द्वारा दो बार नरसिंघा फूंका जाएगा। पहली बार में पहाड़ उड़ जाएंगे। सब नष्ट हो जाएगा। दूसरी बार में फिर सत्य पर आधारित संसार स्थापित होगा। पहाड़ रुई की तरह हल्के हुए उड़े फिरेंगे।

महामति प्राणनाथ ने इसका अभिप्रेत अर्थ यह बताया कि इस्राफील फिरिस्ता जब मारिफत ज्ञान को प्रकट करेगा तो कुफ्र और खुदी—दम्भ और अहंकार से पूर्ण, थोथे कर्मकांड को ही धर्म मानने वाले ज्ञान के पहाड़ उड़ जाएंगे। अर्थात वे अपना महत्व खो बैठेगें। धर्म के नाम पर चलने वाले अधर्म को जड़ से उखाड़ कर महामति ने सत्य ज्ञान की स्थापना की। संसार को "सत्य सनातन धर्म" "दीन इसलाम" का ज्ञान दिया।

इस प्रकार महामति के अन्दर बैठ कर ही इस्राफील ने नरसिंघा फूंका।

*सुरैया—कुरान के अनुसार संसार की सीमा पर सबसे ऊँचा एक सितारा। इसे कोई पार नहीं कर सकता।

शास्त्रों में वर्णित ज्योति स्वरूप को महामति ने वह सितारा माना है। ज्योति स्वरूप का वर्णन विराट पट दर्शन में है।

*हदीसा—कुरान सम्बन्धित ग्रंथ जिनमें कुरान सम्बन्धित प्रश्नों को स्वयं महंमद सा० ने सुलझाया।

*हनुमान—सुग्रीव की सेना के एक वानर सेनापति। श्री राम से मिलने के बाद उनके भक्त बन गए। उसके बाद उन्हीं के साथ रह कर एक सच्चे सेवक की तरह उनकी सेवा करते रहे। रावण की अशोक वाटिका में सीता जी के पास अंगूठी इन्होंने ही पहुँचायी। युद्ध में लक्ष्मण जी के मूर्छित हो जाने पर हिमालय से संजीवनी बूटी के साथ पहाड़ भी उठा ले गए। महामति ने इनका परिचय इस संदर्भ में दिया है कि संसार में ऐसे बलवान हुए हैं तो परमधाम के पशु पक्षियों के बल का तो कहना ही क्या।

*हब्हुनी हब्हुम—एक आयत जिसके तीन अनुवाद किए जाते हैं। तीन प्रकार के मानव की, तीन विधि के पूजा के तीन अलग फल बताए गए हैं।

(दे० खुलासा प्र० ४—चौ० १०३)

*हब्सा का पातशाह :—हबश : अफ्रीका का एक देश है जहां इसलाम के प्रचार के आरम्भिक काल में शत्रुओं से तंग आकर मुहम्मद साहिब के शिष्यों ने शरण ली थी। कुरान में यह जिक्र भी आया है कि हब्सा का पातशाह मोमिनों को कियामत के समय पनाह देगा। हब्सा का अर्थ कैद या कारावास होता है। श्री प्राणनाथ को वाणी का अवतरण हब्सा में ही प्रारम्भ हुआ। वहीं परमात्मा का स्वरूप इनके चित्त में समा गया। इस प्रकार हब्सा में अवतरित 'महामति' स्वयं परमात्मा ने संसार को माया (दज्जाल) के चंगुल से बचने के लिए शरण दी। बाईबल में वर्णित अन्तिम अवतार ईसा मसीह का अध्यात्मिक राज्य वहीं हब्सा से शुरू हुआ।

*हरा हुल्ला :—नूरानी वस्त्र जो आत्माएं परमधाम में पहनती हैं।

हरा हुल्ला सफेद गुदड़ी :—आत्मा का नूरमयी पोशाक और वैराग्य की गुदड़ी जो श्री देवचन्द्र जी और महामति प्राणनाथ ने स्वयं भी पहनी और मोमिनों को भी धारण करवाई।

*हरिचंद :—राजा हरिश्चन्द्र। महाप्रतापी सत्यवादी राजा थे। उन्होंने स्वप्न में दिए गए वचन का पालन करने के लिए अपनी पत्नी, पुत्र और स्वयं को भी बेच डाला। डोम के घर में नौकरी की। सत्य की परीक्षा में सफल होने पर देवताओं ने इनका सब कुछ लौटा दिया।

महामति ने सत्यवादी, त्यागी राजाओं और महापुरुषों का उदाहरण देते कहा है कि सत्य के लिए कष्ट सहन कर बदले में उन्होंने और कुछ नहीं मांगा। केवल यह चाहना उनके मन में थी कि बुद्ध निष्कलंक अवतार के युग में, उनके साथियों में हमारा पुनः जन्म हो।

*हादी :—राह दिखाने वाले सद्गुरु श्री देवचंद्र जी। श्यामा जी को भी हादी कहा गया।

*हारुन :—हजरत मूसा के भाई। मूसा को परमात्मा ने अपनी जाति को आततायी फैरुन के कब्जे से निकाल ले जाने की आज्ञा दी तो उन्होंने खुदा से

कहा कि मेरी जबान तुतलाती है। फैरुन से बात करने और उससे निबटने के लिए मुझे मेरा भाई हारुन दीजिए।

कियामत के समय के मूसा महामति के साथ हारुन के रूप में महाराजा छत्रसाल रहे। उन्होंने महामति के अभियान में उनकी बड़ी सहायता की। उनके वचनों को जीवन में उतारा। राज्य में धर्म समन्वय का आदर्श प्रस्तुत किया।

(दे० बीतक श्री लालदास)

*हिजाब :—पर्दा।

महम्मद साहिब को जब मेराज हुआ तो उनके और परमात्मा के बीच जरी और मोतियों के दो हिजाब कहे गए। महामति ने श्री देवचंद्र जी और अपनी आत्माओं और परमात्मा के बीच अपने शरीरों को ही दो पर्दे माना। आत्मा शरीर के मोह में पड़ कर परमात्मा से दूर हो जाती है। उन दोनों पर्दों के बीच का सफर सत्तर वर्ष का बताया है। श्री देवचंद्र जी को तारतम ज्ञान मिलने से श्री प्राणनाथ के धामगमन तक सत्तर वर्ष का समय होता है। पहचान होने के बाद शरीर एक पर्दा दिखाई देता है।

परमात्मा से मिल कर वह पर्दा सही अर्थ में दूर होता है।

*हिन्दुस्तान :—प्राचीन युग में और अंग्रेजी राज्य में हिन्दुकुश हिन्द महासागर और बर्मा तक फैला हुआ प्रदेश हिन्दुस्तान कहा जाता था। सिन्धु से ही हिन्दु शब्द उच्चारण में आया। उसके आसपास बसे लोग हिन्दू और उस प्रदेश को हिन्दुस्तान कहा गया।

वेद शास्त्रों में तो भारतवर्ष की महिमा गायन की ही हुई है हदीसों में भी हजरत मुहम्मद ने कहा मुझे हिन्द की ओर से ठंडी हवा आ रही है। संकेत भारत में इमाम मेहदी के प्रकटीकरण की ओर था।

*हिन्दुस्तानी :—हिन्दुस्तान की वह भाषा जो मध्य युग में समाज और परिवार में नित्य प्रति व्यवहार और बोलचाल में आती थी। खड़ी बोली का वह स्वभाविक रूप था। इसमें अरबी फारसी उर्दू आदि भाषाओं के शब्दों का बाहुल्य था। महामति प्राणनाथ ने कठिन और साधारण व्यक्ति की समझ में न आने वाली संस्कृत और अरबी, फारसी को छोड़ हिन्दुस्तानी भाषा में ही अपने ज्ञान को जनता तक पहुँचाया। ब्रह्मज्ञान वैसे ही जल्दी समझ में नहीं आता। उसे

कठिन भाषाओं में कह कर पंडित जन भोले लोगों को आत्मा की पहचान से वंचित कर देते हैं ऐसा उनका मत था। उन्होंने आत्म जागृति के इच्छुक लोगों को कठिन भाषाओं को सीखने के परिश्रम से मुक्ति दिलाई। इतना वृहत ग्रंथ इस भाषा में पहला माना जाता है।

हिन्दुस्तानी और देश में अन्य प्रचलित भाषाओं में वाणी कह कर उसे उन्होंने ने नागरी लिपि में ही लिपिबद्ध कराया।

*हीरबाई :—श्री देवचंद्र जी के जीवनकाल में एक जागृत आत्मा। स्वयं श्री कृष्ण इनके हाथ से पकाया परोसा भोजन आकर ग्रहण करते थे ऐसा माना जाता है। एक बार मिट्टी की हांडी फूट जाने पर श्री कृष्ण ने उन्हें सोने की हांडी दी। बस इनके मन में अभिमान आ गया। उसी दिन से श्री कृष्ण का दीदार होना बंद हो गया। फिर वे सद्गुरु की शरण में आई और अपने मन को अभिमान के मल से निर्मल किया।

श्री कृष्ण भक्तों के मन में जरा भी अभिमान नहीं रहने देते इस बात को इस लीला ने स्पष्ट कर दिया।

*हुसैनी तपसीर (तफसीर) :—कुरान की हुसैन द्वारा की गई व्याख्या। महामति प्राणनाथ ने इसी अनुवाद को तारतम वाणी के लिए प्रमाण माना। दिल्ली के उर्दू बाजार से इसे लिया गया था यह वर्णन बीतकों में आता है। इसकी सहायता से औरंगजेब के मंत्रियों के लिए रुक्के (पत्र) तय्यार किए गए थे। यह फारसी भाषा में थी।

*हूद—एक पैगम्बर। जब आठ दिन तक प्रलय का आतंक छाया रहा तो अपनी कौम को लेकर एक पर्वत (कोहतूर) पर चले गए। अच्छे लोग बच गए। काफिर डूब गए।

महामति ने इस कथानक को पुराणों के इंद्रकोप का ही रूप माना है। हूद ही सरदार नंदबाबा थे। उनके पुत्र श्री कृष्ण ने इंद्र कोप के समय बृज को गोवर्धन पर्वत को उंगली पर धारण करके बचाया। '(दोनामा प्रकरण खुलासा)'

*हौज कौसर—परमधाम का सागर के समान महान सरोवर जिसमें यमुना समा जाती है। इसका बड़ा ही मनोमुग्धकारी वर्णन महामति के परिक्रमा ग्रंथ में है। कुरान में भी हौज का सुंदर बयान है।

—:०:—

# प्रणामी साहित्य

## महामति प्राणनाथ प्रणीत 'तारत्तम बानी' (कुलजम स्वरूप)

प्रणामी जगत में महामति प्राणनाथ अक्षरातीत पुरुषोत्तम श्री कृष्ण निष्कलंक बुद्ध, दाऊद, मूसा, ईसा तथा महंमद के एक ही व्यक्ति में अवतरित दिव्य रूप में पूज्य हैं। महामति प्रणीत 'कुलजम स्वरूप' या तारत्तम बानी अन्य किसी भी धर्म ग्रन्थ की तरह मान्य और सिक्खों की गुरु बानी की तरह पूजित है। प्रणामी मन्दिरो में 'कुलजम' ग्रन्थ की ही पूजा होती है। किसी मूर्ति की स्थापना मन्दिर में नहीं होती न प्रणामी मूर्ति पूजा करते हैं।

प्रणामी तीर्थ स्थानों (पन्ना, मध्य प्रदेश, जामनगर और सूरत, गुजरात) में निजानन्द श्री देव चन्द्र जी और महामति श्री प्राणनाथ जी के जन्म के उपलक्ष मे नेपाल, असम, बगाल, बिहार उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, मध्य प्रदेश और गुजरात से 'साथी' (सुन्दर साथ) एकत्र होते हैं। इनकी जयंतियों को प्रणामी मन्दिरों में आरम्भ से ही धूम-धाम से मनाया जाता था। अब उन्हें सार्वजनिक स्थानों में भी मनाने के आयोजन होते हैं। 'विश्व धर्म संगम' की सभाओं में प्रणामी नवयुवकों ने महामति का परिचय दिया। पिछले दिनों दिल्ली महानगरी में आयोजित एक सभा में राष्ट्रपति श्री वी० वी० गिरि की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की गई। 'अखिल भारतीय प्रणामी परिषद्' का गठन हुआ है और अब "श्री प्राणनाथ प्रकाशन" की ओर से महामति प्राणनाथ की बानी का द्वितीय संस्करण आपके सामने प्रस्तुत है। कुछ वर्ष पूर्व इसके प्रथम संस्करण का प्रकाशन हुआ था तब से प्रणामी तथा अन्य जिज्ञासु विद्यार्थियों की इस बानी के शोध कार्य की ओर रुचि बढ़ी है। आशा है निकट भविष्य में "श्री प्राणनाथ प्रकाशन" आपको महामति प्राणनाथ सम्बन्धी साहित्य भेंट कर सकेगा।

साहित्य :—सत्य धर्म प्रवर्तक, समाज सुधारक राजनीतिज्ञ होने के साथ-साथ महामति प्राणनाथ में साहित्य की उच्च प्रतिभा थी। आप बहु भाषा विद् थे। संस्कृत, हिन्दी, गुजराती, सिन्धी, पंजाबी, फारसी, अरबी भाषा और शब्दों का उन्होंने बड़ी दक्षता से प्रयोग किया है। संगीत, काव्य, रचना छन्द, अलंकार और मुहावरों आदि के प्रयोग की दृष्टि से 'कुलजम' एक अनूठा ग्रंथ है। उनकी सम्पूर्ण बानी राग रागिनियों में गायन की जाती है। प्रायः प्रकरणों के आरम्भ में गाने वालों की सुविधा के लिए राग रागिनियों के नाम भी आए हैं। सीधी सरलता से समझ आ जाने वाली भाषा में उन्होंने संसार को ब्रह्मज्ञान दिया यही कारण है कि उनकी इतनी भाषाओं में कही बानी के भाव उनके सभी प्रान्तों के शिष्य आसानी से समझ लेते है। भाषा की क्लिष्टता वाक् चतुर्य और वाह्यालंकार आपको पसन्द नहीं थे।

प्रेम लक्षणा भक्ति द्वारा आत्मानन्द की प्राप्ति, वेद पक्ष (वेद, उपनिषिद्, गीता भागवत) और कतेब पक्षा (जंबूरतौरेत, बाइबल और कुरान) की समन्वयात्मक अभिनव व्याख्या, समाज सुधार की भावना, हरिजनोद्धार राष्ट्र भक्ति आपके साहित्य के मुख्य वर्ण्य विषय हैं। एक अपूर्व अध्यात्म दर्शन देने के साथ-साथ युग-युग में संसार में उपस्थित होने वाली समस्याओं का समाधान हमें "तारत्तम बानी" से मिलता है। सभी दृष्टियों से आपकी प्रतिभा का क्षेत्र व्यापक है।

कृतियां :—महामति के चौदह ग्रन्थों का संकलन 'कुलजम स्वरूप' में है। प्रकाश और कलश प्रथम गुजराती में अवतरित हुए स्वयं महामति ने उनका हिन्दी अनुवाद पद्य में किया। दोनों भाषाओं के

दो-दो ग्रंथ आ जाने से संकलन में संख्या सोलह हो गई है। चार ग्रन्थ गुजराती में, एक सिन्धी में, कुछ प्रकरण अरबी भाषा में तथा शेष बानी मध्य कालीन खड़ी बोली या उर्दू मिश्रित हिन्दी (हिन्दवी) में अवतरित हुई। समस्त ग्रंथ में १८७५८ चौपाइयां हैं। १६१२ पृष्ठों का यह एक वृहत् ग्रन्थ है जिनका विवरण इस प्रकार है :—

| | नाम | बिस्तार प्र० | बिस्तार चौ० | रचना काल वि० सं० | भाषा | स्थान |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | रास (अंजील) | ४७ | ६१३ | १७१५ | गुजराती (बन्दीगृह) | जामनगर |
| २ | प्रकाश (जंबूर) | ३७ | १०६८ | १७१५ | गुजराती " | " |
| ३ | षट् ऋतु | १५ | २३० | १७१५ | गुजराती " | " |
| ४ | कलश (तौरात) | १२ | ५०६ | १७२६ | गुजराती | सूरत |
| ५ | प्रकाश | ३७ | ११८५ | १७३५ | हिन्दी खड़ी रूपान्तरण | अनूप शहर |
| ६ | कलश | २४ | ७७१ | १७३५ | हिन्दी खड़ी रूपान्तरण | अनूप शहर |
| ७ | सनंध (सनद) | ४२ | १६६१ | १७३५ | हिन्दी (खड़ी) कुरान की प्रमाणों सहित व्याख्या तक हिन्दी | अनूप शहर |
| ८ | किरंतन | १३३ | २१०३ | १७१५–१७४० | कुछ प्रकरण गुजराती सिन्धी पद्यों में ललित काव्य | अनूप शहर |
| ९ | खुलासा | १८ | १०२० | १७४० | वेद कतेब समन्वय | पन्ना |
| १० | खिलवत | १६ | १०७४ | १७४०–४१ | (आत्मा परमात्मा की एकान्त गोष्ठी) | पन्ना |
| ११ | परिक्रमा | ४३ | २४८४ | १७४०–४१ | परमधाम वर्णन | पन्ना |
| १२ | सागर | १५ | ११२८ | १७४४ | (परमात्मा और रूहों के रूप गुण शृंगार के सागर) | पन्ना |
| १३ | सिनगार | २९ | २२१० | १७४२ | (परमात्मा का स्वरूप वर्णन) | पन्ना |
| १४ | सिन्धी | १६ | ६०० | १७४३ | (परमात्मा के सामने रूहों की ओर से हुज्जत) | पन्ना |
| १५ | मारफत सागर | १४ | १०३४ | १७४७–४८ | हिन्दी (कुरान के वातिनी अर्थ हकीकत मारिफत का ज्ञान) | पन्ना |
| १६(क) | कियामत नामा छोटा | २ | २१७ | १७४७ | हिन्दुस्तानी कतेब की बातों का स्पष्टीकरण | — |
| १६(ख) | कियामत नामा बड़ा | २४ | ५३१ | १७४७ | हिन्दुस्तानी | चित्रकूट |

विजयाभिनंद निष्कलंक अवतार इमाम मेहदी के प्रकटी करण की घोषणा। कियामत के बातिनी (अभिप्रेत) अर्थ की व्याख्या उपर्युक्त ग्रन्थों में रास प्रकाश, षटऋतु कलश कीर्तन ग्रन्थ का सम्बन्ध वेद पक्ष से है। सनंध, खुलासा, मारफत और कियामत नामा का सम्बन्ध कतेब से है। खिलवत, परिक्रमा सागर, सिनगार, सिन्धी में आत्मा को अपरोक्षानुभूति, परमात्मा और परमधाम का सांसारिक शब्दों में वर्णन है। वेद और कतेब के गुह्यार्थ स्पष्ट करते हुए आत्मिक रहनी (दिन चर्या) का सरल सुगम मार्ग सुझाया है। महामति की खड़ी बोली तत्कालीन संतों की भाषा से निखरी हुई और आधुनिक हिन्दुस्तानी के अति निकट है।

कुलजम पद्य साहित्य है इसके अतिरिक्त महामति द्वारा प्रणीत गद्य साहित्य भी है। श्री प्राण नाथ जी ने कुरान की तपसीर हुसैनी का अभिप्रेत अर्थ बताते हुए अनुवाद शुरू किया था। विषय भाषा आदि की दृष्टि से यह महत्वपूर्ण है जो वि० सं० १७५८ में संकलित प्रति के अन्त में परिशिष्ट के रूप में जुड़ी है। सम्प्रदाय में इसे तीसरा कियामतनामा भी कहते है। मध्यकालीन पद्यात्मक गद्य का यह अनूठा प्रतीक है।

शेख मीराजी का किस्सा:—संवाद शैली, गद्य रचना सरल खड़ी बोली में १७ वीं शताब्दी में लिखे इस ग्रन्थ में हिन्दू मुसलमान धर्म की गुत्थियों को सुलझाया गया है। यह ग्रन्थ व्याकरण पद रचना, वाक्य रचना, भाषा शैली की दृष्टि से हिन्दी उर्दू का प्राचीनतम प्रभावित ग्रंथ है। यह ग्रंथ अभी तक प्रकाशित नहीं है।

महामति प्राणनाथ के पत्र '—महामति ने कई विशेष व्यक्तियों को बड़े लम्बे पत्र लिखे जो विषय और भाषा की दृष्टि से बड़े महत्वपूर्ण हैं। इनमें बिहारी जी (अपने गुरु पुत्र) जसवंत सिंह राठौर (औरंगजेब का हिन्दू सेनापति) और शेख इसलाम के नाम लिखे पत्र विशेष हैं। जसवंत सिंह राठौर को पत्र काबुल में भेजा था इसमें 'तारतम' के सिद्धान्त दर्शन, उपासना पद्धति और राष्ट्रीयता का बोध है तो शेख इसलाम के पत्र में कुरान की नयी व्याख्या और धर्म समन्वय का प्रतिपादन है।

इस प्रकार महामति के साहित्य और दर्शन का राष्ट्रीय, सांस्कृतिक विश्व धर्म दर्शन और विश्व शान्ति के लिए विशेष महत्व है। इसका उचित मूल्यांकन किया जाए तो राष्ट्र भाषा के विकास, धर्म समन्वय और मानव एकता में बड़ी सहायता मिल सकती है।

अन्य प्रणामी साहित्य :—प्रणामी समाज में श्री प्राणनाथ जी के समय से ही साहित्य रचना होती रही है। लगभग पचास वर्षो से तो उसका मुद्रण और प्रकाशन भी हो रहा है। तो भी आधुनिक ढंग से साहित्य रचना की ओर प्रणामी विद्वानो ने अधिक ध्यान नहीं दिया। समाज में "तीन जीवन स्वरूपों" (श्री देव चन्द्र जी, महामति प्राणनाथ और महाराजा छत्रसाल के महामति मिलन उपरान्त जीवन) के वृत्तों की भरमार है। कुछ अप्रकाशित प्राचीन और अर्वाचीन साहित्य भी पड़ा है। जो भी प्राप्य पुस्तकें हैं उनकी सूची यहां दी जा रही है :—

जीवन वृत्त (बीतकें) :—

१. विद्वत दमनिः—इस ग्रंथ की भाषा संस्कृत है। इसमें प्रश्नोत्तर के रूप में अध्यात्म दर्शन है। इसके रचयिता भट्टाचार्य हैं। इसका हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करने की योजना बन रही है।

२. श्री जयराम भाई कंसारा (करुणावती) ने श्री देवचन्द्र जी का जीवन चरित्र तथा ब्रज रास का भाव पूर्ण वर्णन किया है। यह ग्रंथ भरोड़ा जामनगर तथा सूरत गुजरात में हस्तलिखित रूप में पड़ा है।

३. नवरंग स्वामी श्री मुकन्ददास जी का साहित्य ३६००० चौ० में अनेक ग्रंथों मैं संकलित है। अब तक तो कई प्रणामी मन्दिरों में वह हस्तलिखित ही प्राप्य था। कुछ वर्ष पूर्व प्रणामी धर्म पत्रिका (जामनगर) के वार्षिक अंकों के रूप में उनकी वानी प्रकाशित हुई है। इनके ग्रंथों में महामति के दृष्टिकोण से गीता वेदान्त और पुराणों का विवेचन किया गया है।

४. श्री देव चन्द्र जी तथा बिहारी जी के युग का साहित्य जामनगर में राजमन्दिर वालों के पास अप्रकाशित पड़ा है।

५. महामति के जीवन वृत्तों के रूप में कई ग्रंथ प्राप्य हैं। श्री लालदास जी, श्री मुकन्द दास जी, श्री वृज भूषण कृत वृतान्त मुक्तावली, लल्लू भाई जी कृत वर्तमान दीपक आदि 'बीतकें' प्राचीन हैं। आधुनिक युग में पं० कृष्ण दत्त जी शास्त्री के निजानन्द चरितामृत, डा० राजबाला खुराना "प्राणनाथ" और उनका साहित्य, आधुनिक पं० मिश्री लाल कृत श्री प्राणनाथ का जीवन और साहित्य प्रस्तुत संपादक (प्रो० जयसवाल) द्वारा लिखित प्रथम और द्वितीय प्रणाम लाल दास कृत बीतक से उनके जीवन का परिचय मिलता है।

६. श्री लाल दास जी कृत जामुल मारफत का जामनगर (खीजड़ा मन्दिर) से प्रकाशन हो चुका है।

७. महात्मा अमर (ब्रह्मावती) कृत ज्ञान मोक्षानन्द का लाल जी राजा एण्ड संस बाँकुरा पं० बंगाल से प्रकाशन हो चुका है।

८. जीवन मस्तान की कुछ पंचकों का प्रकाशन हो चुका है। प्रणामी तीर्थ स्थानों (जामनगर, पन्ना, सूरत) में प्राप्य हैं। इन पंचकों में कृष्ण भक्ति तथा प्रणामी धर्म सिद्धान्तों पर कुछ प्रकाश पड़ता है।

९. पं० कृष्ण दत्त जी शास्त्री ने अपना सम्पूर्ण जीवन प्रणामी साहित्य के शोध और प्रकाशन में व्यतीत किया है। उनकी निजानन्द चरितामृत के अतिरिक्त विराट पट दर्शन, प्रणामी धर्म सिद्धान्त, कृष्ण तत्व मीमांसा बड़ा मंसौदा आदि प्रमुख हैं।

१०. आनन्द सागर पं० कृष्ण मणि जी कृत प्राप्य है। इसमें परमधाम की लीला का संक्षिप्त परिचय है।

११. परमधाम के पट (नकशे) पहले हाथ से चित्रित किए जाते थे। महाराज मंगल दास जी (सूरत, गुजरात) ने उन्हें सुन्दर चित्रों में रचना करवा कर प्रकाशित करवाया। परमधाम वर्णन तो कई शास्त्र ग्रंथों में मिलता है परन्तु नाप जोख कर चित्र बनाना प्रणामी धर्म के विद्वानों की ही विशेषता है।

इन पट्टों को समझने के लिए महामति का परिक्रमा ग्रंथ श्री लाल दास जी की छोटी बड़ी वृत तथा श्री जुगल दास जी की 'वृत' (बिरत) बड़े सहायक ग्रंथ हैं।

१२. छत्रसाल एक महान कवि थे उनकी कविताओं के कुछ संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

१३. श्री हंसराज जी ने 'मेहराज चरित' एक सुन्दर ग्रन्थ की रचना की है।

१४. भरोड़ा (गुजरात) में महाराज कृष्ण प्रियाचार्य जो भरोसा दास जी के नाम से जाने जाते हैं ने श्री प्राणनाथ विषयक ग्रन्थों की शोध की है। उनके पास प्रकाशित और अप्रकाशित ग्रन्थों का एक बड़ा संग्रह है।

१५. कृष्ण देव जी ने महामति का जीवन और धर्म सिद्धान्त का परिचय देते हुए विज्ञान सरोवर नामक ग्रन्थ प्रकाशित कराया था।

१६. मास्टर देव कृष्ण ने पांच छः हजार भजन, महामति की गीतों में बीतक तथा मैं परनामी हूँ लिख कर प्रणामी समाज की महान सेवा की।

१७. विमला मेहता ने "गुरु भक्त शौर्य पुन्ज छत्रसाल" एक उपन्यास तथा "श्री प्राणनाथ वचनामृत परिचय" लिख कर महामति और छत्रसाल के जीवन का परिचय तथा उनकी बानी का सारांश दिया।

१८. भाटापारा (म०प्र०) में सेठ रणछोड़ जी वीर जी के पास बहुत सा साहित्य पड़ा है जो गुजराती और हिन्दी दोनों भाषाओं में हैं।

१६. समय-समय पर कई संतों के भजन और वाणियां छोटी पुस्तकों के रूप में प्रकाशित हुई जो तीर्थ स्थानों पर मिल सकती हैं। इन तीर्थ स्थानों पर बहुत सा प्राचीन साहित्य पड़ा है जिस पर शोध कार्य होना चाहिये।

प्रचार प्रकाशन और शोध कार्य के अभाव के कारण प्रणामी साहित्य, साहित्यकारों और इतिहास लेखकों की दृष्टि से ओझल रहा। प्राणनाथ प्रकाशन एक नई संस्था के रूप में इस ओर अग्रसर होगा ऐसी आशा है।

संयोजिका
श्रीमती विमला मेहता
डी० १६३ डिफेन्स कालोनी
नई दिल्ली

—:०:—

मुद्रक : पी० सी० मिड्ढा, मिड्ढा प्रेस, ८-ए, दरियाबाद (कल्यानी देवी) इलाहाबाद-३

# शुद्धि पत्र

'तारत्तम बानी' को शुद्ध छपाने का भरसक प्रयास किया गया—तो भी दृष्टि दोष या प्रेस की भूल के कारण जो अशुद्धियाँ रह गई उनके लिए क्षमा चाहते हुए शुद्धि पत्र दिया जा रहा है। कई स्थानो पर 'ब' के स्थान व छप गया है। कई जगह दो अक्षर जुड़ गए हैं। उन्हें इंगित नहीं किया गया। अन्य प्रकट में दिखने वाली भूलें छपवा दी हैं। श्रद्धालु पाठक गण उन्हें देख कर मूल प्रति में पेन या पेन्सिल से सुधार लेवें। बड़े अक्षरों को काट कर चिपकाया भी जा सकता है। कष्ट के लिए क्षमा करेंगे।

विनीता :—विमला मेहता

| पृष्ठ संख्या | चौ० नं० | अर्थ नं० | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|---|
| १३ | १० | | वस्लभनी | वल्लभनी |
| ५१ | ३ | | डुती | हुती |
| ८६ | ४ | | नं० तो पर | वासना पर चाहिए |
| ८८ | १८ | | माहरा | महारा |
| १३० | | | होडं बालियों | होड़बालियों |
| १७४ | २ | | अंबररियों | अंबरियो |
| १७५ | १८ | | व्रजलेषण | वज्रलेपणा |
| १८६ | ३६ | | अलर्गा | अलगां |
| १८७ | | ८ | कड़ीप | पकड़ |
| २२२ | २७ | | नहीें | नहीं |
| २४४ | | | सुंवरबाई | सुँदरबाई |
| २५५ | ७ | | रीसन | रोसन |
| २५५ | १७ | | ट्रक ट्रक | टूक टूक |
| २६० | २२ | | फेर | फेरा |
| २८२ | ४ | | डालें | डालैं |
| ३०४ | २५ | | दुस्मन | दुश्मन |

| पृष्ठ संख्या | चौ० नं० | अर्थ नं० | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|---|
| ३१३ | ८८ | | जाभ्या | जान्या |
| ३१६ | १२२ | | सूपने | सुपने |
| ३७४ | ११ | | द्दड़ | द्दढ़ |
| ३७८ | ३३ | | कछ | कछु |
| ३८४ | ७३ | | अखड | अखंड |
| ४०६ | ६ | | अल्लाम का अर्थ गूढ़ ज्ञानी | |
| ४२० | ७२ | | माहे | मोहे |
| ४३४ | ६ | १० | वार्षिक | शाला |
| ४३७ | ४ | | केहेवि | केहेवे |
| ४८८ | १७ | | दजालें | दजालें |
| ५१२ | १८ | | उल्यियो | उलटयो |
| ५१८ | ६१ | | ए कसूरत | एक सूरत |
| ५४५ | २३ | | हाथ | साथ |
| ५६४ | ४ | ५ | मयांदा | मर्यादा |
| ६६५ | ७ | | मेंरी | मेरी |
| ६६६ | २६ | | कुरबारन | कुरबान |
| ६८४ | ३ | | ब्रह्मडं | ब्रह्मंड |
| ७०७ | | ६ | हिस्दु | हिन्दु |
| ७०८ | | १ | गुह्म | गुह्य |
| ७३६ | | २५ | रंद्र | रंध्र |
| ७३७ | | २४ | शंभाल | संभाल |
| ८१२ | | २ | मनीदशा | मनोदशा। |
| ८५० | ११ | | पर | पट |
| ८८८ | १८ | | मोहरे | मोहरे |
| ८८१ | ५४ | | | |
| प्रथम पंक्ति | | | सरफ | तरफ |

| पृष्ठ संख्या | चौ० नं० | अर्थ नं० | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|---|
| ८९१ | ६२ | | बेंशक | बेशक |
| ९१९ | | ४ | परमात्मा | जिसका वर्णन नहीं हो सकता |
| ६२० | १४ | | इल्क | इश्क |
| ९२६ | १० | | पैगंगर | पेगंबर |
| ९४८ | ४६ | | सैं ने | सैंने |
| ९५१ | २२ | | फै | कै |
| ९६९ | ३२ | | वाल | बात |
| ९७० | ४२ | | वडी | बड़ी |
| ९७९ | ७६ | | बेठ | बैठ |
| १००० | ९ | | सा भी | सामी |
| १००५ | ४ | | सुखपला | सुखपाल |
| १०१९ | | १ | सभान | खुली, विस्तृत |
| १०२२ | १९ | | आबें | आवें |
| १०९२ | ५९ | | माहोल | मोहोल |
| १११५ | | ३ | कामदेव | पुष्प पराग |
| ,, | | ४ | मिलकर | मसल कर |
| ११३७ | १९ | | कहू ँ | कहूँ |
| ११४३ | | ७ | (फरिश्ते की) | (श्री देवचन्द्र जी |
| ११४७ | ५२ | | बड़ी | बोड़ी |
| ११५४ | ७ | | से | के |
| ११६६ | ६ | गिलम पर अर्थ नं० २ चाहिए | | |
| १२०३ | १८ | | हर्कें | हर्कें |
| १२०९ | ३८ | | घर | धर |

| पृष्ठ संख्या | चौ० नं० | अर्थ नं० | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|---|
| १२३५ | | १ | किथा | किया |
| १३३२ | १४१ | १ | हिलाते हुए | फबन |
| १३३३ | | १ | बनाकर | बनावट |
| १३३९ | २१९ | | जो | जोत |
| १३६६ | १५ | | लाहित | लाहूत |
| " | १६ | | जाहीर | जाहिर |
| १३९० | | १ | सार्ांश | सारांश |
| १४२६ | ४९ | | बैठिक | बैठिस |
| १४३३ | ८७ | | सरची | सच्ची |
| १४३७ | ४० | | न्हा रसई | न्हार सई |
| १४६२ | | ४ | संकेत | संकेल |
| १४६४ | ७७ | | म | माहें |
| १४७३ | ३ | | विश्नु | विष्णु |
| १४७७ | | २ | त्यागी | त्याग दी गई |
| १५०८ | | ३ | प्रत्यश्रित | प्रायश्चित |
| १५१७ | १४ | | मलकून | मलकूत |
| १५१९ | | | अर्थ नं० ३ | फरेबी पर है |
| १५३८ | ३५ | | अम लमें | अमल में |
| १५५६ | १ | नं० ६ 'से' पर नहीं | | जिबरील पर चाहिए |
| १५८९ | ३७ | | | नं० ७ मरातबे पर चाहिए |